मुग़ल कालीन भारत

बाबर

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

इन्ही लेखक की

समकालीन एवं निकट समकालीन फ़ारसी तथा अरबी इतिहासों की टिप्पणियों और समीक्षा सहित अनूदित मध्यकालीन भारतीय इतिहास की प्रमुख पुस्तकें

आदि तुर्क कालीन भारत (१२०६-१२९०)

(अ) तबकाते नासिरी, तारीखे फीरोजशाही (ब) तारीखे फख्रुद्दीन मुबारक शाह, आदाबुलहर्ब वश्शुजाअत, ताजुल मआसिर, दीवाने वस्लुल हयात, केरानुस्सादेन (स) फुतूहुस्सलातीन, इब्ने बत्तूता—यात्रा-विवरण मूल्य ८ रु०

●

ख़लजी कालीन भारत (१२९०-१३२०)

(अ) तारीखे फीरोजशाही (ब) मिफताहुल फुतूह, खजायनुल फुतूह, दिवल रानी तथा खिज्र खा, नुह सिपेहर, तुगलुक नामा, फुतूहुस्सलातीन, इब्ने बत्तूता—यात्रा-विवरण (स) तारीखे मुबारकशाही, तारीखे फिरिश्ता, जफरुल वालेह मूल्य ८ रु०

●

तुग़लुक़ कालीन भारत - भाग १ (१३२०-१३५१)

(अ) तारीखे फीरोजशाही, फुतूहुस्सलातीन, रसायदे बद्रे चाच, सियरुल औलिया (ब) इब्ने बत्तूता—यात्रा-विवरण, मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार (स) तारीखे मुबारकशाही, तारीखे मुहम्मदी, बुरहाने मआसिर, तारीखे सिन्ध, तबकाते अकबरी, मुन्तखबुत्तवारीख, तारीखे फिरिश्ता मूल्य १० रु०

●

तुग़लुक़ कालीन भारत - भाग २ (१३५१-१३९८)

(अ) तारीखे फीरोजशाही (बरनी) तारीखे फीरोजशाही (अफीफ) तारीखे मुबारकशाही, तारीखे मुहम्मदी, जफर नामा भाग २ (ब) फतावाये जहादारी, फुतूहाते फीरोजशाही, (स) तबकाते अकबरी, तारीखे सिन्ध

परिशिष्ट

खैरुल मजालिस, इन्शाये माहरू, दीवाने मुतहर,
सुल्तान फीरोज शाह तथा उसके उत्तराधिकारियों के सिक्के मूल्य १३ रु०

●

उत्तर तैमूर कालीन भारत - भाग १ (१३९९-१५२६)

(अ) तारीखे मुबारकशाही, तबकाते अकबरी (ब) वाकेआते मुश्ताकी, तबकाते अकबरी, तारीखे दाऊदी, तारीखे शाही, अफ्सानये शाहान मूल्य ११ रु०

●

उत्तरी भारत के स्वतंत्र प्रांतीय राज्य (१३९९-१५२६)

(जौनपुर, कालपी, मालवा, गुजरात, सिन्ध, मुल्तान, कश्मीर एव बगाल) तबकाते अकबरी, तारीखे फिरिश्ता, तारीखे मुहम्मदी, वाकेआते मुश्ताकी, मिरआते सिकन्दरी, जफरुल वालेह, तारीखे सिन्ध, रियाजुस्सलातीन मूल्य १६ रु०

प्रकाशक

हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

मुग़ल कालीन भारत

बाबर

(१५२६-१५३० ई०)

HISTORY OF THE MUGHUL RULE IN INDIA
BABUR
(1526-1530)

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकारों द्वारा

(बाबर, मीर अला उद्दौला, गुलबदन बेगम, अबुल फ़ज़्ल, ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद, रिज़्कुल्लाह मुश्ताकी, अब्दुल्लाह, अहमद यादगार, ख्वन्द मीर, मीर्ज़ा हैदर, मुल्ला अहमद, आसफ खा तथा मीर मुहम्मद मासूम नामी)

अनुवादक
सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी
एम० ए०, पी एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

प्रकाशक
हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी
अलीगढ़
१९६०

Publication of the Department of History, Aligarh Muslim University, No. 19

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol VIII

HISTORY OF THE MUGHUL RULE IN INDIA

BABUR

(1526-1530)

By Saiyid Athar Abbas Rizvi, M A, Ph D

FIRST EDITION

1960

PRINTED AT THE SAMMELAN MUDRANALAYA, PRAYAG

FOR THE DEPTT OF HISTORY, ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डाक्टर ज़ाकिर हुसेन ख़ां

राज्यपाल बिहार

के

कर कमलों में

सादर समर्पित

भूमिका

देहली के सुल्तानो के समय के फारसी तथा अरबी इतिहासो के अनुवाद के ६ भागो के प्रकाशन के उपरान्त अब मुग़ुल बादशाहो के इतिहास से सम्बन्धित आधारभूत सामग्री का अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है और इस राज्य के प्रथम बादशाह बाबर का इतिहास प्रस्तुत है। पिछले ६ ग्रथो की सराहना यद्यपि देश तथा युरोप के भी विद्वानो ने की है और इस कार्य को बडा महत्वपूर्ण बताया है किन्तु कुछ लोगो को इन ग्रथो के विषय मे बडे विचित्र भ्रम हो गये हैं। परन्तु जो ग्रथ प्रकाशित हो चुके हैं उनमे से किसी पर भी दृष्टि डाल ली जाय तो भ्रम का कोई भी स्थान नही रह जाता। प्रत्येक ग्रथ कई खडो मे विभाजित किया गया है और हर ग्रथ के प्रथम खड मे समकालीन आधारभूत सामग्री का बिना कोई वाक्य छोडे हुये अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार कुछ महत्वपूर्ण ग्रथ पूरे के पूरे हिन्दी भाषा मे आ गये हैं। इनमे मिनहाज सिराज की "तबकाते नासिरी" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), ज़ियाउद्दीन बरनी की "तारीखे फीरोज़शाही", इब्ने बत्तूता की यात्रा का विवरण (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), "मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), अफ़ीफ की "तारीखे फीरोजशाही" एव "फ़ुतूहाते फीरोज़शाही" सम्मिलित है। "तारीखे मुबारकशाही", "तारीखे मुहम्मदी", "तबकाते अकबरी", "वाकेआते मुश्ताकी", "तारीखे दाऊदी", "तारीखे शाही" तथा "अफ़सानये शाहान" के देहली के सुल्तानो से सम्बन्धित पूरे भागो का हिन्दी भाषान्तर प्रकाशित हो गया है। एसामी की "फ़ुतूहुस्सलातीन" और अमीर ख़ुसरो की रचनाओ मे से "दीवाने वस्तुल हयात", "केरानुस्सादेन", "मिफ्ताहुल फ़ुतूह", "खज़ायनुल फ़ुतूह", "दिवलरानी खिज्र खा", "नुह सिपेहर" तथा "तुगलुकनामा" का सक्षिप्त भाषान्तर तैयार किया गया है और केवल उन्ही शेरो का अनुवाद नही किया गया है जो भाषा के सौन्दर्य की दृष्टि से लिखे गये थे और जिनमे कोई भी ऐतिहासिक विवरण प्राप्त नही। कुछ ऐसे ग्रथो का भी अनुवाद किया गया है जिनका इलियट के समय मे पता न था और या जो उसकी दृष्टि से महत्वपूर्ण न थे। इन्ही मे "तारीखे फख्रुद्दीन मुबारक शाह", "आदाबुल हर्ब वश्शुजाअत", "ज़फरुल वालेह", "सियरुल औलिया", "खैरुल मजालिस" तथा "इन्शाये माहरू", "फतावाये जहादारी" तथा "दीवाने मुतहर" सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त अन्य आवश्यक ग्रथो के अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये हैं। तीमूर के बाद के उत्तरी हिन्दुस्तान के स्वतत्र प्रातीय राज्यो के इतिहास से सम्बन्धित आवश्यक ग्रथो का भी बिना कुछ छोडे हुये अनुवाद किया गया है। मूलग्रथो की पृष्ठ-सख्या कोष्ठ मे लिख दी गई हैं।

जिन ग्रथो के सक्षिप्त अनुवाद किये गये हैं उनका अनुवाद करते समय इस बात का प्रयत्न किया गया है कि कोई भी राजनैतिक घटना अथवा सास्कृतिक, सामाजिक एव आर्थिक महत्व की बात छूटने न पाये। अग्रेजी अनुवाद के ग्रथो म पारिभाषिक शब्दो के अग्रेज़ी अनुवाद मे दोष रह गये हैं। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास मे अनेक भ्रमपूर्ण रूढियो को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियो से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दो को मूल रूप ही मे ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दो की व्याख्या टिप्पणियो मे कर दी गई है। समकालीन मिथ्या प्रवादो का

भूमिका

देहली के सुल्तानो के समय के फारसी तथा अरबी इतिहासो के अनुवाद के ६ भागो के प्रकाशन के उपरान्त अब मुगुल बादशाहो के इतिहास से सम्बन्धित आधारभूत सामग्री का अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है और इस राज्य के प्रथम बादशाह बाबर का इतिहास प्रस्तुत है। पिछले ६ ग्रथो की सराहना यद्यपि देश तथा युरोप के भी विद्वानो ने की है और इस कार्य को बडा महत्वपूर्ण बताया है किन्तु कुछ लोगो को इन ग्रथो के विषय मे बडे विचित्र भ्रम हो गये हैं। परन्तु जो ग्रथ प्रकाशित हो चुके है उनमे से किसी पर भी दृष्टि डाल ली जाय तो भ्रम का कोई भी स्थान नही रह जाता। प्रत्येक ग्रथ कई खडो मे विभाजित किया गया है और हर ग्रथ के प्रथम खड मे समकालीन आधारभूत सामग्री का बिना कोई वाक्य छोडे हुये अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार कुछ महत्वपूर्ण ग्रथ पूरे के पूरे हिन्दी भाषा मे आ गये हैं। इनमे मिनहाज सिराज की "तबकाते नासिरी" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), जियाउद्दीन बरनी की "तारीखे फीरोज़शाही", इब्ने बत्तूता की यात्रा का विवरण (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), "मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), अफीफ की "तारीखे फीरोजशाही" एव "फुतूहाते फीरोज़शाही" सम्मिलित हैं। "तारीखे मुबारकशाही", "तारीखे मुहम्मदी", "तबक़ाते अक्बरी", "वाकेआते मुश्ताकी", "तारीखे दाऊदी", "तारीखे शाही" तथा "अफसानये शाहान" के देहली के सुल्तानो से सम्बन्धित पूरे भागो का हिन्दी भाषान्तर प्रकाशित हो गया है। एसामी की "फुतूहुस्सलातीन" और अमीर खुसरो की रचनाओ मे से "दीवाने बस्तुल हयात", "केरानुस्सादैन", "मिफताहुल फुतूह", "खज़ायनुल फुतूह", 'दिवलरानी खिज्र खा", "नुह सिपेहर" तथा "तुगलुक-नामा" का सक्षिप्त भाषान्तर तैयार किया गया है और केवल उन्ही शेरो का अनुवाद नही किया गया है जो भाषा के सौन्दर्य की दृष्टि से लिखे गये थे और जिनमे कोई भी ऐतिहासिक विवरण प्राप्त नही। कुछ ऐसे ग्रथो का भी अनुवाद किया गया है जिनका इलियट के समय मे पता न था और या जो उसकी दृष्टि से महत्वपूर्ण न थे। इन्ही मे "तारीखे फख्रुद्दीन मुबारक शाह", "आदाबुल हर्ब वश्शुजाअत", "ज़फरुल वालेह", "सियरुल औलिया", "खैरुल मजालिस" तथा "इन्शाये माहरू", "फतावाये जहादारी" तथा "दीवाने मुतहर' सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त अन्य आवश्यक ग्रथो के अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये हैं। तीमूर के बाद के उत्तरी हिन्दुस्तान के स्वतत्र प्रातीय राज्यो के इतिहास से सम्बन्धित आवश्यक ग्रथो का भी बिना कुछ छोडे हुये अनुवाद किया गया है। मूलग्रथो की पृष्ठ-सख्या कोष्ठ मे लिख दी गई हैं।

जिन ग्रथो के सक्षिप्त अनुवाद किये गये हैं उनका अनुवाद करते समय इस बात का प्रयत्न किया गया है कि कोई भी राजनैतिक घटना अथवा सांस्कृतिक, सामाजिक एव आर्थिक महत्व की बात छूटने न पाये। अग्रेजी अनुवाद के ग्रथो मे पारिभाषिक शब्दो के अग्रेजी अनुवाद मे दोष रह गये हैं। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास मे अनेक भ्रमपूर्ण रूढियो को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियो से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दो को मूल रूप ही मे ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दो की व्याख्या टिप्पणियो मे कर दी गई है। समकालीन मिथ्या प्रवादो का

विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासो के आधार पर टिप्पणियो मे किया गया है। नगरो के नाम प्राय समकालीन रूप मे ही रहने दिये गये हैं। अपरिचित स्थानो की व्याख्या भी टिप्पणियो मे कर दी गई है किन्तु खेद है कि कुछ व्याख्याए इसलिये न की जा सकी कि जिस समय अनुवाद प्रकाशित हुए उस समय मुझे कुछ आकर ग्रथ न मिल सके। "खलजी कालीन भारत" का इतिहास तो बडी ही विचित्र परिस्थिति मे प्रकाशित हुआ। इस कारण उसमे व्याख्याओ की कमी है किन्तु अगले सस्करण मे इसका समाधान कर दिया जायेगा।

बाबर के इतिहास से सम्बन्धित आधारभूत सामग्री का अनुवाद करते समय इन्ही सिद्धान्तो को सामने रक्खा गया है। बाबर के इतिहास के लिये उसकी आत्मकथा हमारी जानकारी का बडा ही महत्व-पूर्ण साधन है। बाबर ने इस ग्रथ की रचना चगताई तुर्की भाषा मे की थी, किन्तु अब्दुर्रहीम खानखाना ने अकबर के आदेशानुसार इसका फारसी भाषान्तर बडी योग्यता से तैयार किया था। प्रस्तुत अनुवाद यद्यपि फ़ारसी भाषान्तर से किया गया है किन्तु मूल तुर्की तथा मिसेज़ बेवरिज एव ल्युक्स किंग के अनुवादो से भी सहायता ली गई है। नाम तो सब के सब तुर्की ग्रथ से लिये गये है और उनकी हिज्जे मे तुर्की उच्चारण का ध्यान रक्खा है।

यह ग्रथ यद्यपि बाबर के हिन्दुस्तान के इतिहास से सम्बन्धित है किन्तु इस कारण कि काबुल की विजय के उपरान्त ही उसका हिन्दुस्तान से सम्पर्क प्रारम्भ हो गया था, ९१० हि० से अन्त तक के पूरे बाबर नामा का अनुवाद भाग "अ" मे प्रस्तुत किया जा रहा है किन्तु बाबर के व्यक्तित्व को समझने के लिये उसकी प्रारम्भिक आत्मकथा का भी ज्ञान परमावश्यक है अत भाग "द" मे इसका भी अनुवाद कर दिया गया है। केवल कुछ थोडे से ऐसे पृष्ठो का जो पूर्ण रूप से ऊज़बगो के इतिहास से सम्बन्धित थे, अनुवाद नही किया गया है। ऐसे अशो के विषय मे उचित स्थान पर उल्लेख कर दिया गया है। भाग "ब" के अनुवाद मे "नफायसुल मआसिर", गुल बदन बेगम के "हुमायू नामा", "अकबर नामा" तथा "तबकाते अकबरी' के बाबर से सम्बन्धित सभी पृष्ठो का अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। बाबर को समझने के लिये अफगानो के दृष्टिकोण का ज्ञान भी परमावश्यक है अत भाग "स' मे अफगानो के इतिहास से सम्बन्धित "वाकेआते मुश्ताकी", "तारीखे दाऊदी", तथा "तारीखे शाही" का अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। परिशिष्ट म "हबीबुस् सियर", "तारीखे रशीदी", 'तारीखे अलफी" तथा "तारीखे सिन्ध" के आवश्यक उद्धरणो का अनुवाद किया गया है। प्रोफेसर रश ब्रुक विलियम्स द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त "एहसनुस् सियर" नामक ग्रथ की मिथ्या का खडन भी परिशिष्ट ही मे किया गया है।

पिछले ग्रथो का प्रकाशन डा० ज़ाकिर हुसेन खा, भूतपूर्व उप-कुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सतत् प्रयत्नो के फलस्वरूप हुआ। डा० रामप्रसाद त्रिपाठी मुझे "खलजी कालीन भारत" के प्रकाशन के बाद से सर्वदा ही प्रोत्साहन देते रहे है। इन दोनो महानुभावो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य है। इस ग्रथमाला की तैयारी मे अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर नूरुल हसन, एम० ए०, डी० फिल् (आक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता मिली है। उन्होंने मेरी कठिनाइयो को दूर किया और अपने सत्परामर्श एव अपनी मृदु आलोचनाओ द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की है। अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की रिसर्च तथा पब्लिकेशन कमेटी के अध्यक्ष एव अलीगढ विश्वविद्यालय के उप कुलपति कर्नल सैयिद बशीर हुसेन ज़ैदी एव अन्य सदस्यो ने इस ग्रथ के प्रकाशन मे जो सहृदयता प्रदर्शित की उसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हू। पुस्तको के मिलने की समस्त कठिनाइया विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रही। उनको धन्यवाद देना भी मेरा कर्तव्य है। राजनीति-विभाग के

भूतपूर्व प्रोफेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

प्रूफ की देखभाल का कार्य श्री श्रवण कुमार श्रीवास्तव द्वारा बडी ही सलग्नता से होता रहा। इसके लिये मैं उन्हे भी विशेष धन्यवाद देता हू। सम्मेलन मुद्रणालय प्रयाग के मैनेजर श्री सीताराम गुण्ठे ने अपने प्रेस कर्मचारियो के सहयोग से इस पुस्तक की छपाई मे जिस परिश्रम और उत्साह को प्रदर्शित किया, उसके लिये मैं उनका आभारी हू।

अपने इस कार्य मे मुझे अपने सभी मित्रो से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। स्थानाभाव के कारण मैं उनके नाम नही लिख सका हू, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भावो से परिचित हैं।

सचिव
स्वतन्त्रता सग्राम इतिहास
परामर्श समिति, नजरबाग
लखनऊ
मार्च १९६०

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

कि ५ घडी रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त जब तरावीह् समाप्त हो गई तो क्षण भर पश्चात् बहुत बडा तूफान आ गया। वर्षा ऋतु के गहरे काले बादल आकाश मे छा गये और इतने ज़ोर की हवा चली कि केवल थोडे ही से खेमे खडे रह गये। उस समय वह अपने शिविर म कुछ लिखने जा रहा था। उसे कागज़ तथा लिखें हुए खड को एकत्र करने का भी अवसर न मिल सका और खेमा गिर पडा। पुस्तक के खड जल मे बुरी तरह भीग गये और बडी कठिनाई से एकत्र किये जा सके। उसने उन्हें सिंहासन के ऊनी कालीन की तहो के बीच मे करके सिंहासन पर रख दिया और ऊपर से बहुत से कम्बल लाद दिये।[1]

बाबरनामा की ९ अक्तूबर १५१९ ई० की एक टिप्पणी से पता चलता है कि बाबर सर्वदा कुछ न कुछ लिखा करता था।[2] इसका ज्ञान उसके मित्रो को भी था। इसी कारण बाबर का एक घनिष्ठ मित्र ख्वाजा कला उससे "उन वकाय की, जिनकी वह रचना करता रहता था, प्रार्थना किया करता था।[3] "बाबरनामा" मे उसने सत्य के महत्त्व को विशेष रूप से व्यक्त किया है। वह लिखता है कि "इस इतिहास मे मैं इस बात पर दृढ रहा हू कि हर बात जो लिखू वह सच लिखू और जो घटना जिस प्रकार घटी हो उसका ठीक ठीक उसी प्रकार उल्लेख करू। इस कारण यह आवश्यक हो गया कि जो कुछ अच्छा बुरा ज्ञात हुआ, उसे लिख दू।"[4] बाबरनामा के अध्ययन से पता चलता है कि उसने इस सिद्धात का पूर्ण रूप से पालन किया और किसी स्थान पर किसी घटना को छिपाने अथवा उस पर पर्दा डालने का प्रयत्न नही किया। बाबरनामा एक ऐसा दर्पण है जिसमे मित्र-शत्रु सभी के रूप रग, वेष-भूषा अपनी प्राकृतिक दशा मे दृष्टिगत होती है। खेद है कि उसके ४७ वर्ष तथा १० मास के जीवन काल मे से लगभग १८ वर्ष का ही वृत्तान्त मिलता है। और वह भी बीच बीच मे अधूरा है। जिन वर्षों का इतिहास मिलता है वे इस प्रकार हैं —

(१) ८९९ हि० (१४९३-९४ ई०) से ९०८ हि० (१५०२-३ ई०)।

(२) ९१० हि० (१५०४ ५ ई०) से ९१३ हि० (१५०७ ८ ई०) और ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) का केवल थोडा सा प्रारम्भिक हाल, यहा तक कि अन्तिम वाक्य भी पूरा नही हो सका है।

(३) ९२५ हि० (१५१९ ई०) से ३ सफर ९२६ हि० (२४ जनवरी १५२० ई०) तक का हाल। इस प्रकार ९२६ हि० के केवल १ मास तथा ३ दिन का इतिहास उपलब्ध है।

(४) १ सफर ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) से १२ रजब ९३४ हि० (२ अप्रैल १५२८ ई०) तक का हाल।

(५) ३ मुहर्रम ९३५ हि० (१८ सितम्बर १५२८ ई०) से ३ मुहर्रम ९३६ हि० (७ सितम्बर १५२९ ई०) तक का इतिहास। इस प्रकार ९३६ हि० के प्रथम मास के केवल तीन दिन का हाल मिलता है। ९३५ हि० के इतिहास मे भी बीच-बीच मे कई-कई दिनो का हाल नही मिलता।

१ बाबर नामा (प्रस्तुत अनुवाद, बाबर नामा के समस्त हवाले इसी अनुवाद के दिये गये हैं) पृ० ३३०।
२ बाबर नामा पृ० १२४।
३ बाबर नामा पृ० ३१०।
४ बाबर नामा पृ० ३१६।

बाबर के जन्म से मृत्यु तक के जिन वर्षों का हाल बाबरनामा मे नही मिलता, वे इस प्रकार हैं :—

(१) जन्म (१४ फरवरी १४८३ ई०) से सिंहासनारोहण रामजान ८९९ हि० (जून १४९४ ई०) तक का इतिहास।

(२) ९०८ हि० (१५०३ ई०) से ९०९ हि० (१५०४ ई०) तक का हाल।

(३) ९१४ हि० (१५०८ ई०) से ९२५ हि० (१५१९ ई०) तक का विवरण।

(४) ४ सफर ९२६ हि० (२५ जनवरी १५२० ई०) से ३० मुहर्रम ९३२ हि० (१६ नवम्बर १५२५ ई०) तक का हाल।

(५) १३ रजब ९३४ हि० (३ अप्रैल १५२८ ई०) से २ मुहर्रम ९३५ हि० (१७ सितम्बर १५२८ ई०) तक का हाल।

(६) ९३५ हि० (१५२८-२९ ई०) के निम्नाकित दिनो का इतिहास :—

(क) १, २ मुहर्रम ९३५ हि० (१६, १७ सितम्बर १५२८ ई०)।

(ख) २१ मुहर्रम ९३५ हि० (६ अक्तूबर १५२८ ई०) से २६ मुहर्रम ९३५ हि० (११ अक्तूबर १५२८ ई०)।

(ग) ६ सफर ९३५ हि० (२० अक्तूबर १५२८ ई०) से ८ सफर ९३५ हि० (२२ अक्तूबर १५२८ ई०)।

(घ) ११ सफर ९३५ हि० (२५ अक्तूबर १५२८ ई०) से २० सफर ९३५ हि० (३ नवम्बर १५२८ ई०)।

(च) २९ सफर ९३५ हि० (१२ नवम्बर १५२८ ई०) से ८ रबी-उल-अव्वल (२० नवम्बर १५२८ ई०)।

(छ) १५ रबी-उल-अव्वल (२७ नवम्बर १५२८ ई०) से १८ रबी-उल-अव्वल (१ दिसम्बर १५२८ ई०)।

(ज) २४ रबी-उल-अव्वल (७ दिसम्बर १५२८ ई०) से २८ रबी-उल-अव्वल (११ दिसम्बर १५२८ ई०)।

(झ) १३ रबी-उस्मानी (२५ दिसम्बर १५२८ ई०) से १५ रबी-उस्सानी (२७ दिसम्बर १५२८ ई०) तक।

(ट) ६ जमादि-उल-अव्वल (१६ जनवरी १५२९ ई०) से ९ जमादि-उल-अव्वल (१९ जनवरी १५२९ ई०) तक।

(ठ) १९ शव्वाल (२५ जून १५२९ ई०) से ३० शव्वाल (६ जुलाई १५२९ ई०) तक।

(ड) ५ जीकाद (११ जुलाई १५२९ ई०) से ११ जीकाद (१७ जुलाई १५२९ ई०) तक।

(ढ) २० जीकाद (२७ जुलाई १५२९ ई०) से ४ जिलहिज्जा (१० अगस्त १५२९ ई०) तक।

(ण) ११ जिलहिज्जा (१७ अगस्त १५२९ ई०) से २९ जिलहिज्जा (४ सितम्बर १५२९ ई०) तक।

(७) ४ मुहर्रम ९३६ हि० (८ सितम्बर १५२९ ई०) ६ जमादि-उल-अव्वल ९३७ हि० (२६ दिसम्बर १५३० ई०) तक।

वावरनामा की हस्तलिखित प्रतिया

"बाबरनामा" की जितनी सम्भावित प्रतिया हो सकती हैं उनम से रायल एशियाटिक सोसायटी लदन की १९०० ई० की पत्रिका मे मिसेज बेवरिज ने निम्नांकित हस्तलिपिया की ओर ध्यान आकृष्ट कराया —

(१) वाबर के हाथ की लिखी हुई पोथी।
(२) ख्वाजा कला को भेजी गई पोथी।
(३) हुमायू के हाथ की लिखी हुई पोथी।
(४) एल्फिन्स्टन की पोथी।
(५) ब्रिटिश म्युजियम लन्दन की पोथी।
(६) इडिया आफिस की पोथी।
(७) एशियाटिक सोसायटी बगाल की पोथी।
(८) मैसूर की पोथी।
(९) बिबिलोथिका लिडसियाना की पोथी।
(१०) हैदराबाद की पोथी।
(११) सेंट पीटर्स वर्ग विश्वविद्यालय की पोथी।
(१२) सेंट पीटर्स बग के फारेन आफिस की पाथी।
(१३) सेंट पीटर्स वर्ग के एशियाटिक सोसायटी म्युजियम की पोथी।
(१४) बुखारा की पोथी।
(१५) नजरवे तुर्किस्तान की पोथी।[१]

१—बाबर के हाथ की लिखी हुई पोथी--सम्भवत बाबर ने दो पोथिया तैयार की होगी। पहिली पोथी दैनन्दिनी के रूप म रही होगी जिसमे वह दैनिक घटनाओ का वृत्तान्त उसी रात मे अथवा शीघ्र ही जब उसे अवसर मिलता होगा लिखता जाता होगा। तदुपरान्त उसने दैनन्दिनी के प्रारम्भिक भाग मे उचित सशोधन करके प्रत्येक वर्ष का विवरण लेखो के रूप म लिखना प्रारम्भ कर दिया होगा। इस प्रकार उसके ग्रथ की कम से कम दो पोथिया रही हागी। इन दोनो पोथियो का अब पता नही।[२] सम्भवत दोना ही नष्ट हो गईं और अब उनके मिलने की कोई आशा नही।

२—ख्वाजा कला की पोथी--बाबर ने ४ मार्च १५२९ ई० के विवरण मे लिखा है कि उसने अपने घनिष्ठ मित्र ख्वाजा कला के पास शहरक के हाथ अपनी आत्मकथा की प्रतिलिपि प्रषित की। इस पोथी मे मार्च के बाद की घटनाओ की कोई आशा की ही नही जा सकती। यह पोथी विशेष रूप से उसी के लिये तैयार की गई थी।[३] इस पोथी का भी अब कोई पता नही।

१ A S Beveridge, 'Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar's Memoirs" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1902) p 653
२ A S Beveridge, 'The Haydarabad Codex of the Babar Nama" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1905) p 753
३ बाबर नामा पृ० ३१०।

३—हुमायूँ की पोथी—हुमायूँ की पोथी के विषय मे यह कहना बडा कठिन है कि वह बाबर की हस्तलिखित पोथियो मे ही से कोई पोथी अपने पास रखता था, अथवा उसके लिये अलग से कोई पोथी तैयार कराई गई थी किन्तु यह निश्चय है कि उसके पास जो पोथी रहती थी उसमे उसने कुछ टिप्पणियाँ भी लिखी थी। जब वह ४८ वर्ष का था तो उसने अपने जीवनकाल के १८व वर्ष की निम्नांकित घटना के विषय मे अपनी पोथी मे यह टिप्पणी लिख दी —

इसी पडाव पर इसी दिन हुमायूँ ने अपने चेहरे पर अस्तुरा अथवा कैंची लगवाई। क्योकि स्वर्गीय (बाबर) ने अपने मुख पर अस्तुरा लगने का उल्लेख किया है अत उनका अनुकरण करते हुए मैं इसकी चर्चा करता हूँ। उस समय मेरी अवस्था १८ वर्ष की थी। अब मेरी अवस्था ४८ वर्ष की है। मुहम्मद हुमायूँ।[१]

(आहजरत के खते मुबारक की नकल)[२]

सम्भवत एल्फिन्स्टन की हस्तलिपि हुमायूँ की पोथी की प्रतिलिपि रही होगी जिसम कातिब ने इस टिप्पणी का भी मूल ग्रथ के साथ ही नकल कर दिया। मीर्जा अब्दुर्रहीम खान खाना न भी अपना फारसी भाष न्तर सम्भवत हुमायूँ की पोथी अथवा उसकी नकल से तैयार किया होगा। कारण कि उसमे भी यह टिप्पणी प्रा त है।

४—एल्फिन्स्टन की पोथी—इसी पोथी से डा० लेईडन ने बाबर की आत्मकथा के कुछ अशो का अनुवाद तैयार किया और बाद मे अर्सकिन ने इसी पोथी के आधार पर अपने अनुवाद म उचित सशोधन किये। इसे एल्फिन्स्टन ने पेशावर म १८०९ ई० म क्रय किया था। यह सम्भवत १५४३ ई० तथा १५९३ ई० के मध्य मे तैयार की गई होगी। यह अब एडिम्बरा की एडवोकेट लाइब्रेरी में है।[३]

५—ब्रिटिश म्युजियम लदन की पोथी—यह पोथी पूरी नही है अपितु इसमे केवल थोड से ही पृष्ठ है।

६—इडिया आफिस की पोथी—इडिया आफिस (लन्दन) की पोथी भी बडी ही महत्वपूर्ण है। कुछ लोगो का अनुमान है कि यह पोथी मैसूर के टीपू सुल्तान के पुस्तकालय मे रही होगी किन्तु अन्य लोगो का विचार है कि यह बहुत बाद की लिखी हुई है।

७—एशियाटिक सोसायटी बगाल की पोथी—इस पोथी के विषय मे कुछ लोगो का मत है कि यह टीपू सुल्तान के पुस्तकालय मे रही होगी किन्तु मिसेज बेवरिज का मत है कि इसे टीपू सुल्तान के पुस्तकालय की पोथी कहना बडा कठिन है।[४]

१ बाबर नामा पृ० १५१।

२ इसे कातिब ने अपनी ओर से लिखा।

३ A S Beveridge "Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar's Memoirs" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1902) pp 653 655, A S Beveridge "The Haydarabad Codex of the Babar Nama" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1905) pp 754-762
A S Beveridge "Further Notes on the Babar Nama Manuscripts" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1907) pp 131-144 King Lucas *"Memoirs of Zehir ed-Din Muhammad Babur"* (Oxford 1921) Vol I, p X.

४ A S Beveridge "The Haydarabad Codex" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1906) p 84

८—**मैसूर के टीपू सुल्तान की पोथी**—क्योंकि उपर्युक्त दोनो पोथियो को मैसूर के टीपू सुल्तान के पुस्तकालय की पोथी कहना सम्भव नही अत इस पोथी के विषय मे यह समझ लेना चाहिये कि इसका मिलना असम्भव है।

९—**बिबिलोथिका लिंडेसियाना की पोथी**—यह पोथी १८६५ ई० मे क्रय की गई थी, और यह अपूर्ण है।

१०—**हैदराबाद की पोथी**—हैदराबाद की पोथी सर सालार जग के पुस्तकालय से मिसेज़ बेवरिज को प्राप्त हुई जो लगभग १७०० ई० मे नकल की गई थी। मिसेज बेवरिज ने इस पोथी का सावधानी से निरीक्षण करके इसे फोटो-मुद्रण विधि से गिब मेमोरियल सीरीज़ के प्रथम ग्रथ के रूप मे प्रकाशित कर दिया है। इसके विषय मे उसने एक लेख सर्वप्रथम रायल एशियाटिक सोसायटी की १९०२ ई० की पत्रिका मे प्रकाशित किया। समस्त उपलब्ध हस्तलिखित पोथियो की तुलना करके वह इसी निष्कर्ष पर पहुँची कि हैदराबाद की इस पोथी से अधिक पूर्ण कोई अन्य पोथी नही।[1] इसी के आधार पर उसने अपना प्रसिद्ध अग्रज़ी अनुवाद भी प्रकाशित किया।

११—**सेंट पीटर्स बर्ग की हस्तलिपि**—यह हस्तलिपि जिस पोथी से तैयार की गई थी वह १०२६ हि० (१६१७ ई०) मे नकल की गई थी। इसे डा० जार्ज जैकब केहर ने १७३७ ई० मे तैयार किया था। यद्यपि केहर तुर्की न जानता था तथापि यह पोथी उसके परिश्रम का बहुत बडा प्रमाण है। किन्तु जिस पोथी से यह प्रतिलिपि तैयार हुई उसका अब कोई पता नही। इस पोथी से इल्मिन्सकी ने बाबरनामा का तुर्की सस्करण १८५७ ई० मे प्रकाशित किया। पेवेट डा कोर्टेले ने बाबरनामा का फ्रांसीसी अनुवाद इसी सस्करण के आधार पर तैयार किया।

१३—**सेंट पीटर्स बर्ग के एशियाटिक सोसायटी म्युज़ियम की पोथी**—यह पोथी ११२१ हि० (१७०९ ई०) मे बुखारा मे तैयार हुई थी। इस पोथी के प्रारम्भ मे ईश्वर की स्तुति इत्यादि से सम्बन्धित कुछ वाक्य भी प्राप्त है जो अन्य पोथियो मे नही मिलते। सभवत इन्हे नकल करने वाले ने अपनी ओर से जोडा होगा।

१४—**बुख़ारा की पोथी**—बुख़ारा की पोथी के विषय मे मिसेज़ बेवरिज ने लिखा है कि इस विषय मे विद्वानो मे बहुत सी निराधार बाते प्रसिद्ध अवश्य है किन्तु निश्चयपूर्वक इस पोथी के विषय मे कुछ कहना बडा कठिन है।

१५—**नजरबे तुर्किस्तान की पोथी**—इस पोथी के विषय मे भी कोई प्रामाणिक ज्ञान नही। कहा जाता है कि इसे मुल्ला अब्दुल वहहाब अखून्द गजदवानी ने मगलवार ५ रजब ११२१ हि० (१२ अगस्त १७०९ ई०) को तैयार किया।[2]

१ A S Beveridge "Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar's Memoirs" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1902) pp 655-659

A S Beveridge "The Haydarabad Codex of the Babar Nama" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1905) pp 741-752

२ A S Beveridge "The Haydarabad Codex of the Babar Nama" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1906) pp 79-93, A S Beveridge "The Babar Nama" (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1908) pp 73-98, King, L *"Memoirs of Zehir-ed-Din Muhammad Babur"*, pp X-XIII.

ग्रथ का नाम

बाबरनामा से इस बात का पता नही चलता कि बाबर ने अपने इस ग्रथ का क्या नाम रक्खा था। ख्वाजा क्ला को इस ग्रथ की हस्तलिपि भेजते समय भी उसने इस ग्रथ का कोई नाम नही लिखा। गुलबदन बेगम के "हुमायूँ नामा" मे भी इस पुस्तक का कोई नाम नही मिलता। बाबरनामा मे 'वाकेआत तथा गुल्बदन बेगम के हुमायूँ नामा मे 'वाकेआ नामा' शब्द का प्रयोग हुआ है। अकबर नामा तथा अन्य फारसी के ग्रथों मे भी इस प्रसग मे वाकेआत शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु इससे यह निश्चयपूर्वक पता नही चलता कि इस ग्रथ का नाम "वाकेआते बाबरी" रहा होगा। "हुमायूँ नामा", "अकबर नामा' तथा "पादशाह नामा" इत्यादि ग्रथो के अनुकरण मे इस ग्रथ का भी नाम कुछ पाडुलिपियो मे बाबर नामा लिखा हुआ है। अन्य पोथियो मे "तुजुके बाबरी" भी मिलता है अत यह पुस्तक हिन्दुस्तान मे मध्य काल मे तो "वाकेआते बाबरी" के नाम से प्रसिद्ध रही किन्तु अब अधिकाश "बाबर नामा" अथवा "तुजुके बाबरी" शब्द का प्रयोग होता है।

बाबर नामा की भाषा

बाबरनामा तथा मीर्जा हैदर दोनो के वृत्तात से पता चलता है कि बाबर अपनी माता को आधा चगताई तथा आधा मुगुल समझता था और यदि वह इस प्रकार के कबीले की शब्दावली का अपने लिये प्रयोग करता तो अपने आपको आधा तीमूरिया तुर्क तथा आधा चगताई बताता। हिन्दुस्तान म उसके द्वारा जिस वश का राज्य स्थापित हुआ उसे वह या तो तुर्क वश और या तीमूरिया कहता। वह उसे अपनी नानी के सम्बध से मुगूल, मुगुल अथवा मुगल न कहता। बाबरनामा मे जहा भी उसे अवसर मिला वह मुगुलो पर चोट करने से नही चूका है। हुमायूँ तो खुल्लम खुल्ला मुगुलो की निन्दा करता था। इस प्रकार बाबर जो भाषा बोलता था और जिस भाषा म उसने बाबर नामा की रचना की वह चगताई तुर्की है। इस भाषा मे यद्यपि गद्य एव पद्य के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रथो की रचना हुई किन्तु इस भाषा को आमू एव सिर नदी[१] के भू-भाग के मध्य मे उन्नति प्राप्त हुई जहाँ पहिले फारसी बोली जाती थी अत इस भाषा मे फारसी तथा अरबी के शब्द बहुत बडी सख्या मे मूल रूप मे ले लिये गये हैं। बाबर नामा की तुर्की मे जो उस समय की भाषा का शुद्धतम रूप है लगभग एक तिहाई शब्द अरबी तथा फारसी से उद्धृत है। सरल एव प्रभावशाली शब्दो तथा स्पष्ट वाक्यो को वह लेख का बहुत बडा गुण समझता था। हुमायूँ के पत्रो की आलोचना करते हुये उसने उसे लिखा था कि, 'तेरे पत्रो के अस्पष्ट होने का कारण यह है कि वे जटिल होते हैं। भविष्य मे तू उन्हे जटिल बनाये बिना लिख और सरल एव स्पष्ट शब्दो का प्रयोग कर। इस प्रकार तेरे तथा तेरे पत्र पढने वालो के कष्ट म कमी हो जायेगी।"[२]

बाबर नामा की रचना शैली

बाबरनामा मे दो विभिन्न प्रकार की रचना शैली मिलती है। ८९९ हि० (१४९३–९४ ई०) से ९१४ हि० (१५०८–९ ई०) तक का विवरण इतिहास के रूप मे है और प्रत्यक वर्ष की समस्त घट-

१ The Oxus and Jaxartes, "आक्सस तथा जक्सर्टिस"।
२ बाबर नामा पृ० २८६।

८—मैसूर के टीपू सुल्तान की पोथी—क्योंकि उपयुक्त दोनो पोथियो को मसूर के टीपू सुल्तान के पुस्तकालय की पोथी कहना सम्भव नही अत इस पोथी के विषय म यह समझ लेना चाहिये कि इसका मिलना असम्भव है।

९—*बिब्लिओथिका लिंडसियाना की पोथी*—*यह पोथी १८६५ ई० म क्रय की गई थी* और यह अपूण है।

१०—हैदराबाद की पोथी—हैदराबाद की पोथी सर सालार जग के पुस्तकालय से मिसेज बेवरिज को प्राप्त हुई जो लगभग १७०० ई० म नकल की गई थी। मिसेज बेवरिज ने इस पोथी का सावधानी से निरीक्षण करके इसे फोटो मुद्रण विधि से गिब मेमोरियल सीरीज के प्रथम ग्रथ के रूप म प्रकाशित कर दिया है। इसके विषय म उसने एक लेख सवप्रथम रायल एशियाटिक सोसायटी की १९०२ ई० की पत्रिका म प्रकाशित किया। समस्त उपलब्ध हस्तलिखित पोथियो की तुलना करके वह इसी निष्कष पर पहुँची कि हैदराबाद की इस पोथी से अधिक पूण कोई अन्य पोथी नही।[१] इसी के आधार पर उसने अपना प्रसिद्ध अग्रजी अनुवाद भी प्रकाशित किया।

११—सेंट पीटस बग की हस्तलिपि—यह हस्तलिपि जिस पोथी से तैयार की गई थी वह १०२६ हि० (१६१७ ई०) मे नकल की गई थी। इसे डा० जाज जकब केहर ने १७३७ ई० म तयार किया था। *यद्यपि केहर तुर्की न जानता था तथापि यह पोथी उसके परिश्रम का बहुत बडा प्रमाण है।* किन्तु जिस पोथी स यह प्रतिलिपि तैयार हुई उसका अब कोई पता नही। इस पोथी से इल्मिन्सकी ने बाबरनामा का तुर्की सस्करण १८५७ ई० म प्रकाशित किया। पेवेट डा कोटेले ने बाबरनामा का फ्रासीसी अनुवाद इसी सस्करण के आधार पर तयार किया।

१३—सेंट पीटस बग के एशियाटिक सोसायटी म्युजियम की पोथी—यह पोथी ११२१ हि० (१७०९ ई०) म बुखारा म तैयार हुई थी। इस पोथी के प्रारम्भ मे ईश्वर की स्तुति इत्यादि से सम्बन्धित कुछ वाक्य भी प्राप्त हैं जो अन्य पोथियो मे नही मिलते। सभवत इन्हे नकल करने वाले ने अपनी ओर से जोडा होगा।

१४—बुखारा की पोथी—बुखारा की पोथी के विषय मे मिसेज बेवरिज ने लिखा है कि इस विषय म विद्वानो म बहुत सी निराधार बात प्रसिद्ध अवश्य है किन्तु निश्चयपूवक इस पोथी के विषय म कुछ कहना बडा कठिन है।

१५—*नजरब तुर्किस्तान की पोथी*—*इस पोथी के विषय म भी कोई प्रामाणिक ज्ञान नही।* कहा जाता है कि इसे मुल्ला अब्दुल वहहाव अखून्द गजदवानी ने मगलवार ५ रजब ११२१ हि० (१२ अगस्त १७०९ ई०) को तयार किया।[२]

१ A S Beveridge Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar s Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society London 1902) pp 655 659
A S Beveridge The Haydarabad Codex of the Babar Nama (Journal of the Royal Asiatic Society London 1905) pp 741 752

२ A S Beveridge The Haydarabad Codex of the Babar Nama (Journal of the Royal Asiatic Soc ety London 1906) pp 79 93 A S Beveridge The Babar Nama (Journal of the Royal Asiatic Society London 1908) pp 73 98 King L *Memoirs of Zehir ed Din Muhammad Babur* , pp X XIII

ग्रथ का नाम

वाबरनामा से इस बात का पता नही चलता कि बाबर ने अपने इस ग्रथ का क्या नाम रक्खा था। ख्वाजा कला को इस ग्रथ की हस्तलिपि भेजते समय भी उसने इस ग्रथ का कोई नाम नही लिखा। गुलवदन बेगम के "हुमायूँ नामा" मे भी इस पुस्तक का कोई नाम नही मिलता। बाबरनामा मे 'वाकेआत' तथा गुल्बदन बेगम के हुमायूँ नामा मे 'वाकआ नामा' शब्द का प्रयोग हुआ है। अक्बर नामा तथा अन्य फारसी के ग्रथो मे भी इस प्रसग मे वाकेआत शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु इससे यह निश्चयपूर्वक पता नही चलता कि इस ग्रथ का नाम "वाकेआते वाबरी" रहा होगा। "हुमायूँ नामा", "अक्बर नामा" तथा "पादशाह नामा" इत्यादि ग्रथो के अनुकरण मे इस ग्रथ का भी नाम कुछ पाडुलिपियो मे बाबर नामा लिखा हुआ है। अन्य पोथियों मे "तुजुके बाबरी" भी मिलता है अत यह पुस्तक हिन्दुस्तान मे मध्य काल मे तो "वाकेआते बाबरी" के नाम से प्रसिद्ध रही किन्तु अब अधिकाश "बाबर नामा" अथवा "तुजुके बाबरी" शब्द का प्रयोग होता है।

बाबर नामा की भाषा

बाबर नामा तथा मीर्जा हैदर दोनो के वृत्तात से पता चलता है कि बाबर अपनी माता को आधा चगताई तथा आधा मुगूल समझता था और यदि वह इस प्रकार के कबीले की शब्दावली का अपने लिये प्रयोग करता तो अपने आपको आधा तीमूरिया तुर्क तथा आधा चगताई बताता। हिन्दुस्तान म उसके द्वारा जिस वश का राज्य स्थापित हुआ उसे वह या तो तुर्क वश और या तीमूरिया कहता। वह उसे अपनी नानी के सम्बध से मुगूल, मुगुल अथवा मुगल न कहता। बाबरनामा मे जहा भी उसे अवसर मिला वह मुगुलो पर चोट करने से नही चूका है। हुमायूँ तो खुल्लम खुल्ला मुगुलो की निन्दा करता था। इस प्रकार बाबर जो भाषा बोलता था और जिस भाषा मे उसने बाबर नामा की रचना की वह चगताई तुर्की है। इस भाषा मे यद्यपि गद्य एव पद्य के अनेक महत्वपूर्ण ग्रथो की रचना हुई किन्तु इस भाषा को आमू एव सिर नदी[१] के भू-भाग के मध्य मे उन्नति प्राप्त हुई जहाँ पहिले फारसी बोली जाती थी अत इस भाषा मे फारसी तथा अरबी के शब्द बहुत बडी सख्या मे मूल रूप मे ले लिये गये हैं। बाबर नामा की तुर्की मे जो उस समय की भाषा का शुद्धतम रूप है, लगभग एक तिहाई शब्द अरबी तथा फारसी से उद्धृत हैं। सरल एव प्रभावशाली शब्दो तथा स्पष्ट वाक्यो को वह लेख का बहुत बडा गुण समझता था। हुमायूँ के पत्रो की आलोचना करते हुये उसने उसे लिखा था कि, "तेरे पत्रो के अस्पष्ट होने का कारण यह है कि वे जटिल होते हैं। भविष्य मे तू उन्हें जटिल बनाये बिना लिख और सरल एव स्पष्ट शब्दो का प्रयोग कर। इस प्रकार तेरे तथा तेरे पत्र पढने वालो के कष्ट मे कमी हो जायेगी।"[२]

बाबर नामा की रचना शैली

बाबरनामा मे दो विभिन्न प्रकार की रचना शैली मिलती है। ८९९ हि० (१४९३-९४ ई०) से ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) तक का विवरण इतिहास के रूप मे है और प्रत्येक वर्ष की समस्त घट-

१ The Oxus and Jaxartes, "आमूदरिया तथा सीरदरिया"।
२ बाबर नामा पृ० २८९।

नाओ के विषय मे अगले वर्षो के वृत्तात मे सकेत मिल जाता है जिससे पता चलता है कि जो पृष्ठ नष्ट हो गये उनमे उनका सविस्तार उल्लेख अवश्य रहा होगा, अन्यथा वह उनकी ओर कदापि सकेत न करता।

वावर नामा के फारसी अनुवाद

सर्वप्रथम शेख जैन वफाई ख्वाफी ने, जो वावर का सद्र था, वावरनामा के उस भाग का जो हिन्दुस्तान से सम्बधित है, काव्यमय फारसी भापातर तैयार किया। शेख जैन ख्वाफी ने ही कनवाह के युद्ध के "फतहनामा" की रचना की थी जिसमे काव्यमय भाषा मे इस युद्ध की चर्चा की गई है। उसकी मृत्यु ९४० हि० (१५३३–३४ ई०) मे हुई और वह आगरा मे दफन हुआ।[1]

इस अनुवाद की अभी तक तीन ही हस्तलिखित प्रतिया का पता चल सका है। एक हस्तलिपि रिजा पुस्तकालय रामपुर मे है जो सम्भवत उपलब्ध पोथियो मे प्राचीनतम है। दूसरी पोथी ब्रिटिश म्युजियम लदन मे है[2] और तीसरी पोथी का उल्लेख बलोशे के हस्तलिखित ग्रथो की सूची के चौथे भाग के २१५४ न० पर हुआ है।[3]

बाबरनामा का दूसरा फारसी अनुवाद मीर्जा पायदा हसन गजनवी ने ९९४ हि० (१५८६ ई०) मे बिहरोज खा के आदेशानुसार, जो बाद म नौरग खा की उपाधि द्वारा सुशोभित तथा जूनागढ का हाकिम नियुक्त हुआ[4] प्रारम्भ किया किन्तु वह केवल प्रथम ६ वर्षो तथा ७वें वर्ष के एक खड का अनुवाद कर सका। बाद मे मुहम्मद कुली मुगूल हिसारी ने इसे पूरा किया।

इसकी हस्तलिखित पोथिया का उल्लेख, ब्राउन,[5] रियु[6] ईथे[7] एव बाडलीएन[8] के कैटलागो मे है। उपर्युक्त चार पोथियो के अतिरिक्त किसी अन्य पोथी का पता नही।

सबसे प्रसिद्ध फारसी अनुवाद मीर्जा अब्दुर्रहीम खाने खाना बिन बैराम खा खाने खाना का है जिसने इसे अबुल फज़ल के "अक्बर नामा" के लिये अकबर के आदेशानुसार प्रारम्भ किया और इसे पूरा करके नवम्बर १५८९ ई० के अन्तिम सप्ताह मे अक्बर को काबुल मे लेजाकर समर्पित किया। उसने इस समर्पण के लिये वडा ही उत्तम अवसर चुना, कारण कि अक्बर इस समय अपने दादा बाबर के मकबरे के दर्शनार्थ काबुल गया हुआ था और वापस होते हुये बारीक आब मे ठहरा था जहा बाबर १५२५ ई० मे हिन्दुस्तान आते हुये ठहर चुका था।

मीर्जा अब्दुर्रहीम खाने खाना, बैराम खा खाने खाना का पुत्र तथा अकबर का सेनापति, हिन्दी एव फारसी का उच्चकोटि का कवि, साहित्यकार एव साहित्यकारो का बहुत बडा आश्रयदाता था। उसका जन्म लाहौर मे सफर ९६४ हि० (दिसम्बर १५५६ ई०) मे हुआ और मृत्यु देहली मे १०३६

१ अब्दुल कादिर बदायूनी: मुतखबुत्तवारीख भाग १ पृ० ३४१, ४७१-७२, तबकाते शाहजहानी, सफीनये खुशगो।
२ Rieu, III, 2926 b.
३ Blochet, IV, 2154.
४ उसकी मृत्यु १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) में हुई।
५ Browne, Supplement 1351.
६ Rieu, II, 799 b.
७ Ethe, 215.
८ Bodleian, 179.

हि० (१६२७ ई०) मे हुई। अब्दुल बाकी निहावन्दी ने मआसिरे रहीमी मे उसका एव उसके समकालीन कवियो का सविस्तार उल्लेख किया है।

बाबरनामा का अनुवाद उसने बडी सावधानी, योग्यता एव परिश्रम से तैयार किया। अक्षरश मूल पर ध्यान रखने की वजह से कही कही भाषा जटिल तथा वाक्य लम्बे लम्बे हो गये है। बहुत से तुर्की शब्दो के, जो उस समय अधिक प्रचलित रहे होगे, मूल रूप से प्रयोग के कारण अनुवाद को समझने मे कठिनाई भी होती है किन्तु मूल तुर्की के भावार्थ एव शब्दार्थ को जिस योग्यता से उसने प्रस्तुत किया है, उसकी प्रशसा उसके सभी समकालीनो ने की है और हिन्दुस्तान मे, जहा तीमूरियो ने फारसी भाषा का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था, बाबर की आत्मकथा को अब्दुर्रहीम खाने खाना के अनुवाद द्वारा ही प्रसिद्धि प्रा त हुई और मूल तुर्की की हस्तलिखित पोथिया भी विरले ही मिलती है।

इस अनुवाद की हस्तलिखित प्रति युरोप एव एशिया के अधिकाश हस्तलिखित ग्रथो के पुस्तकालयो मे उपलब्ध हैं, जिनमे बहुत सी सचित्र भी है। यह १३०८ हि० (१८९० ई०) मे बम्बई से प्रकाशित भी हो चुकी है किन्तु सम्भवत यह सस्करण किसी बडी खराब हस्त-लिपि से किया गया और उसे शुद्ध रूप से छापने का भी अधिक प्रयत्न नही हुआ अत इसकी उपयोगिता बडी कम हो गई है। प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद मे अलीगढ विश्वविद्यालय की हस्तलिखित प्रति से अधिक सहायता ली गई है।

अग्रेज़ी अनुवाद

डा० जान लेईडेन १८०५ ई० के लगभग बाबरनामा की ओर आकृष्ट हुआ। १८१० ई० के लगभग उसने अपना अग्रेज़ी अनुवाद प्रारम्भ किया और इस कार्य की ओर अधिक ध्यान दे सका किन्तु अगस्त १८११ ई० मे उसकी मृत्यु हो गई। लगभग इसी समय विलियम अर्सकिन ने जेनरल सर जान माल्कम तथा एल्फिन्स्टन के आग्रह पर फारसी अनुवाद से अग्रेजी भाषातर प्रारम्भ किया। १८१३ ई० के अन्त मे उसने अग्रेजी अनुवाद समा त कर लिया। इसी समय उसे डा० लेईडेन के अनुवाद की पाडुलिपि भी मिल गई। इस पाडुलिपि ने उसके कार्य को बडा कठिन बना दिया कारण कि उसके अनुवाद तथा डा० लेईडेन के अनुवाद मे बडा अन्तर था, किन्तु अर्सकिन ने इस कारण कि लेईडेन ने अपना अग्रजी भाषातर तुर्की से तैयार किया था, अपने अनुवाद मे उचित सशोधन किये। जब वह अपना कार्य समाप्त कर चुका तो उसी समय एल्फिन्स्टन ने उसके पास बाबरनामा की अपनी तुर्की हस्तलिखित पोथी भेज दी। अर्सकिन अब यह कार्य करते करते बहुत थक गया था किन्तु उसने फिर भी अपने अनुवाद को तुर्की मूल ग्रथ से मिलाना प्रारम्भ किया। इस कार्य मे भी उसे बडी कठिनाई का सामना करना पडा, कारण कि फारसी अनुवाद डा० लेईडेन के अनुवाद की अपेक्षा अधिक शुद्ध था। अत उसने अपने अनुवाद मे पुन आवश्यक सुधार किये[1] और १८२६ ई० मे यह ग्रथ लन्दन से प्रकाशित हुआ।

दूसरा अग्रेज़ी भाषातर मिसेज़ बेवरिज ने हैदराबाद के सर सालार जग बहादुर के पुस्तकालय की बाबरनामा की तुर्की हस्तलिखित पोथी के आधार पर, जिसे उसने फोटो मुद्रण विधि द्वारा छपवा कर प्रस्तावना एव नामानुक्रमणिका सहित गिब मेमोरियल सीरीज मे १९०५ ई० म प्रकाशित कराया था, तैयार किया। सर्वप्रथम यह अनुवाद निम्नाकित चार खण्डा मे प्रकाशित हुआ —

१ John Leyden and W Erskine *"Memoirs of Zehir-ed-Din Muhammad Babur"* (London 1826), pp X-XII

(१) बाबरनामा का वह भाग जो बाबर की काबुल विजय से पूर्व के इतिहास से सम्बधित है (फरगाना का भाग) · १९१२ ई०।
(२) काबुल विजय से हिन्दुस्तान विजय तक का भाग · १९१४ ई०।
(३) हिन्दुस्तान विजय से अन्त तक का भाग · १९१७ ई०।
(४) प्रस्तावना, नामानुक्रमणिका इत्यादि १९२१ ई०।

चारो भाग ल्युजेक एँड को० लन्दन द्वारा विक्रय हेतु दो भागों मे विभाजित किये गये। प्रथम भाग मे प्रस्तावना एव पहले दो खड तथा दूसरे भाग मे तीसरा खड, परिशिष्ट एव नामानुक्रमणिका सम्मिलित हैं।[१] मूल तुर्की के अनुवाद एव विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियो के कारण यह अनुवाद बडा ही महत्व-पूर्ण है।

१९२१ ई० मे ही ल्युक्स किंग ने भी लेईडेन एव अर्सकिन के अनुवाद का सशोधित सस्करण टिप्पणियों सहित दो भागो मे आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित कराया। इसके प्रथम भाग मे ८९९ हि० से ९११ हि० तक की आत्मकथा है और दूसरे भाग मे ९१२ हि० से ९३७ हि० तक की आत्मकथा एव परिशिष्ट और नामानुक्रमणिका है।

ल्युक्स किंग ने लेईडेन एव अर्सकिन के अनुवाद को, पेवेट डा कोर्टेले के बाबरनामा के फ्रांसीसी भाषा के अनुवाद से, जो १८७१ ई० मे पेरिस से प्रकाशित हुआ था, बडी सावधानी से मिलाकर, दोनो अनुवादो मे जहा जहा अन्तर मिला, उसे पाद टिप्पणियो मे स्पष्ट कर दिया है। साधारण अन्तर को टेढे अक्षरो मे मूल अनुवाद मे ही सम्मिलित कर लिया गया है। अर्सकिन की टिप्पणियो मे से अधिकाश उसी प्रकार रहने दी गई है किन्तु जो टिप्पणियाँ किंग के समय तक निराधार प्रमाणित हो चुकी थी, उन्हे उसने नही सम्मिलित किया। इनके अतिरिक्त उसने स्वय कुछ व्याख्यात्मक टिप्पणिया भी लिखी। लेईडेन एव अर्सकिन के अनुवाद मे नामो की हिज्जे मे भी उसने कुछ सुधार किये।[२] मिसेज बेवरिज तथा किंग के अनुवाद मे मिसेज बेवरिज का अनुवाद ही अधिक शुद्ध तथा उपयोगी है।

बाबर नामा तथा बाबर

बाबर की प्रारम्भिक शिक्षा

वीरता, पौरुष, अदम्य साहस, सहनशीलता, सहृदयता, सौजन्य, प्रतिभा एव विद्वत्ता सरीखे गुण जितने बाबर मे पाये जाते थे, उतने किसी अन्य व्यक्ति मे विरले ही रहे होंगे। उसका जन्म ६ मुहर्रम ८८८ हि० (१४ फरवरी, १४८३ ई०) को हुआ। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा का उल्लेख न तो बाबरनामा मे है और न अन्य किसी समकालीन ग्रथ म, किन्तु उसकी विद्वत्ता एव रचनाओ से ही उसकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा के विषय मे अनुमान लगाया जा सकता है। उसके पिता उमर शेख मीर्जा के वातावरण मे दो विद्वानो का विशेष हाथ दिखाई पडता है। एक उसके ससुर यूनुस खा का और दूसरे ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार का जिन्होंने बाबर का नामकरण किया था। ख्वाजा की ८९५ हि० (१४९१ ई०)

१ "*The Babur Nama in English*" (London 1922).
२ Lucas King: "*Memoirs of Zehir-ed-Din Muhammad Babur*" (Oxford 1921), (सर ल्युक्स किंग· मेमोआएर्स आव जेहीरेद्दीन मुहम्मद बाबुर, आक्सफर्ड–१९२१ ई०) पृ० XI-XIV.

मे, जब बाबर की अवस्था ७ वर्ष की ही थी, मृत्यु हो गई किन्तु बाबर पर ख्वाजा की छाप आजीवन बनी रही। ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के एक शिष्य ख्वाजा मौलाना काजी की, जिनका नाम अब्दुल्लाह था बाबर ने भूरि भूरि प्रशसा की है। बाबर उन्हे बहुत बडा सन्त समझता था[1] और उन्ही के प्रभाव से वह सिहासनारूढ होने के उपरान्त न तो मदिरापान की ओर आकृष्ट हुआ और न शरा के विरुद्ध तथा सदिग्ध भोजनो का सेवन किया।[2]

उसका नाना यूनुस खा विद्वत्ता, चित्रकला, सगीत एव अन्य कलाओ से रुचि के लिये बडा प्रसिद्ध था। यद्यपि यूनुस खा की मृत्यु ८९२ हि० (१४८७ ई०) मे हो गई थी किन्तु उसने बाबर के पिता उमर शेख मीर्जा के जीवन को जिस प्रकार प्रभावित किया, उससे बाबर को भी बडा लाभ हुआ। बाबर को शाह हुसेन मीर्जा के हिरात के दरबार से भी अत्यधिक प्रेरणा मिली होगी। शाह हुसेन के दरबार के विद्वानों का उसने बडा विशद् विवरण दिया है। उसके दरबार के कवियो एव विद्वानो की रचनाओ से बाबर भली भाति परिचित था। उसकी माता कूतलूक निगार खानम, जिससे वह बडा प्रभावित था, यूनुस खा की पुत्री थी। कूतलूक निगार खानम को तुर्की एव फारसी का उत्तम ज्ञान रहा होगा। १५०८ ई० तक वह बाबर का प्रत्येक कठिनाई मे साथ देती रही। कूतलूक निगार खानम की माता ईसान दौलत बेगम से भी बाबर का कुछ समय तक बराबर सम्पर्क रहा। बाबर की बडी बहिन खानजादा बेगम भी, जो उससे ५ वर्ष बडी थी, बाबर के पूरे जीवन-काल मे उसका साथ देती रही और उसने बाबर के जीवन पर नाना प्रकार के प्रभाव डाले।[3]

१२ वर्ष की अवस्था ही मे अपने पिता की मृत्यु के कारण सिहासनारूढ होने के उपरान्त उसे आजीवन राज्य के लिये सघर्ष ही करना पडा।, अत उसने अधिकाश उन परिस्थितियो तथा समस्याओ से शिक्षा प्राप्त की जिनका उसे समाधान करना पडा। प्राकृतिक दृश्य तो उसे सर्वदा प्रभावित करते रहे।

धार्मिक विचार

उसे ईश्वर पर अटूट विश्वास था जिसका प्रमाण उन समस्त घटनाओ से मिलता है जिनका उल्लेख उसने अपने इतिहास मे किया है। अपने सिहासनारोहण के बाद की प्रथम घटना के विषय मे ही उसने लिखा है कि, "पवित्र तथा महान् ईश्वर अपनी पूर्ण शक्ति से बिना किसी मनुष्य के एहसान के मेरे समस्त कार्य उचित रूप से सपन्न कराता आ रहा है।"[4] "यदि समस्त ससार की तलवारे चलें तो भी एक नस तक नही कट सकती यदि ईश्वर की इच्छा न हो"[5] एक ऐसा मूल मत्र था जो उसे कभी उदासीन न होने देता था। अनेक अवसरो पर वह अपने शत्रुओं की सेना की सख्या पर ध्यान दिये बिना ही ईश्वर के भरोसे पर अग्रसर होता हुआ दिखाई पडता है। १५०७–८ ई० के कधार के युद्ध मे मुकीम के विरुद्ध सेना सहित अग्रसर होते समय उसने इसी विश्वास का प्रदर्शन किया और "बाबरनामा" मे इस शेर को उद्धृत किया

१ बाबर नामा पृ० ४८३।
२ बाबर नामा पृ० ४६४, ६९।
३ बाबर नामा पृ० ४७४।
४ बाबर नामा पृ० ४८३।
५ बाबर नामा पृ० ७१।

शेर

"चाहे थोड़े हो, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है
उसके दरबार में किसी की कोई शक्ति नही।"[1]

८ दिसम्बर, १५२५ ई० को जब वह अत्यधिक रुग्ण हो गया और रक्त थूकने लगा तो उसने यह अनुभव किया कि यह चेतावनी उसे ईश्वर की ओर से प्राप्त हुई है और यह कष्ट उसके कुकर्मों ही का परिणाम है। उसने तत्काल ईश्वर से क्षमा-याचना करते हुए कुरान शरीफ का यह वाक्य उद्धृत किया[2] "हे ईश्वर, हमने *आत्मा के प्रति अत्याचार किया है, यदि तू हमें क्षमा न करेगा और हमारे प्रति दया न* करेगा तो हम निःसदेह उन लोगो मे होगे जो कि नष्ट होने वाले है।" सुल्तान इबराहीम लोदी की पराजय के विषय मे उसने लिखा है कि, "इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एव बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं, अपितु इसे ईश्वर की महान् दया एव अनुकम्पा मानते है।"[3]

"बाबरनामा" के अध्ययन से पता चलता है कि वह नमाज़ तथा रोज़े की कभी उपेक्षा न करता था। ९०० हि० (१४९४–९५ ई०) मे उसने उन समस्त भोजनो का सेवन भी त्याग दिया जो शरा के विरुद्ध अथवा सदिग्ध थे यहा तक कि वह चाकू, चम्मच एव दस्तरख्वान के विषय मे भी सावधान रहता था। इस समय से वह तहज्जुद की नमाज़ भी बहुत कम त्यागता था।[4] उसने जिन लोगो के विषय मे बाबर नामा म कुछ लिखा है उनके नमाज़-रोज की विशेष रूप से चर्चा की है। ९३३ हि० (१५२६–२७ ई०) के वृत्तात मे उसने लिखा है कि, 'मैंने अपनी ११ वर्ष की अवस्था मे लेकर इस वर्ष तक कभी भी दो वर्षो तक एक ही स्थान पर ईद न मनाई थी। पिछले वर्ष मैंने आगरा म ईद मनाई थी। इस वर्ष इस उद्देश्य से कि इस नियम मे विघ्न न पड जाये मैं मास के अन्त मे सीकरी ईद मनाने के लिए पहुँच गया।"[5] नमाज, रोज़े के साथ साथ वह हाफिजो द्वारा कुरान का पाठ भी सुना करता था।[6] ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के "मुबीन" नामक ग्रथ की उसने पद्य मे रचना अपनी आत्मा की तृप्ति हेतु ही की।[7] इसके अतिरिक्त वह अन्य अरबी "दुआओ' का भी पाठ किया करता था।[8]

वह सूफियो तथा आलिमो से बडा प्रभावित था और जब उसे अवसर मिलता वह सूफियो के मज़ारो के दर्शनार्थ पहुँच जाता था। ९२० हि० (१५१४ ई०) मे जब उसने चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो मीर सैयिद अली हमदानी के मज़ार के दर्शनार्थ पहुँचा।[9] १८ अगस्त, १५०८ ई० को

१ बाबर नामा पृ० ८२।
२ बाबर नामा पृ० ५३६।
३ बाबर नामा पृ० ५६४।
४ बाबर नामा पृ० ४६४।
५ बाबर नामा पृ० २५८।
६ बाबर नामा पृ० ६१, ११५।
७ बाबर नामा पृ० १३५-१३६।
८ बाबर नामा पृ० २५६।
९ बाबर नामा पृ० २३।

उसने ख्वाजा खावन्द सईद के मजार का तवाफ किया।[१] इबराहीम लोदी पर विजय के उपरान्त २४ अप्रैल, १५२६ ई० को उसने शेख निजामुद्दीन औलिया के मजार की परिक्रमा की।[२] २५ अप्रैल, १५२६ ई० को वह ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के रौजे पर पहुँचा।[३] अप्रैल १५२८ ई० को उसने शेख शरफुद्दीन यहया मुनेरी के मजार का तवाफ किया।[४] ग्वालियर के प्रसिद्ध सूफी शेख गौस से भी उसके बडे अच्छे सम्बन्ध थे।[५] एक अन्य आलिम मीर रफीउद्दीन सफवी से भी वह बडा प्रभावित था और उनकी समस्त सिफारिशो को स्वीकार कर लेता था।[६] उसे योगियो के विषय मे भी जानकारी प्राप्त करने से रुचि थी। जनवरी १५०५ ई० मे वह बीगराम पहुँचकर गूर खत्तरी के योगियो के तीर्थस्थान के दर्शनार्थ जाना चाहता था किन्तु इसमे वह सफल न हो सका।[७] १६ मार्च १५१९ ई० को जब वह फिर वहा पहुँचा तो उसने प्रयत्न करके गूर खत्तरी के दर्शन किये।[८]

बाबर का चरित्र

बाबरनामा के अध्ययन मे बाबर के चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। उसने अपनी भूलो तथा अपने दोषो को बडे मार्मिक शब्दो मे स्वीकार किया है। उसे अपनी अज्ञानता स्वीकार करने मे कोई सकोच न होता था। हिरात मे बदी उज्ज़मान मीर्जा की दावत मे पका हुआ काज़ लाया गया किन्तु उसे काज़ को काटना एव टुकडे टुकडे करना न आता था अत उसने उसे उसी प्रकार छोड दिया किन्तु मीर्जा के पूछने पर कि, "क्या उसे काज़ पसन्द नही ?" उसने नि सकोच उत्तर दे दिया कि, "मैं उसे काटना नही जानता।"[९]

उसने अपने प्रथम विवाह के सम्बध मे अपनी झेंप एव सुशीलता का जो वर्णन दिया है वह अत्यधिक रोचक है[१०] किन्तु उमसे भी अधिक दिलचस्प बाबुरी नामक तरुण से उसकी प्रेम-कथा है। इस समय उसकी अवस्था १६–१७ वर्ष की थी। वह लिखता है कि, "मैं उन्माद एव झेंप मे उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता था ? मुझ मे इतनी शक्ति भी तो न थी कि उसका उचित रूप से स्वागत ही कर लेता। एक दिन प्रेम के उन्माद म मैं अपने मित्रो के साथ एक गली मे जा रहा था। अचानक मेरा और उसका सामना हो गया। झेंप एव घबराहट मे मेरी यह दशा हो गई कि मैं उससे आख भी न मिला सका और न एक शब्द कह सका। झेंप तथा घबराहट मे मुहम्मद सालेह के इस शेर का स्मरण करता हुआ उसे छोड कर चल दिया —

१ बाबर नामा पृ० ११६।
२ बाबर नामा पृ० १५८।
३ बाबर नामा पृ० १५६।
४ बाबर नामा पृ० ३२१।
५ बाबर नामा पृ० २२०।
६ बाबर नामा पृ० २१६।
७ बाबर नामा पृ० ३४।
८ बाबर नामा पृ० १०६।
९ बाबर नामा पृ० ११६।
१० बाबर नामा पृ० ५२८।

शेर

"चाहे थोडे हो, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है
उसके दरबार मे किसी की कोई शक्ति नही।"[1]

८ दिसम्बर, १५२५ ई० को जब वह अत्यधिक रुग्ण हो गया और रक्त थूकने लगा तो उसने यह अनुभव किया कि यह चेतावनी उसे ईश्वर की ओर से प्राप्त हुई है और यह कष्ट उसके कुकर्मों ही का परिणाम है। उसने तत्काल ईश्वर से क्षमा-याचना करते हुए कुरान शरीफ का यह वाक्य उद्धृत किया[2] "हे ईश्वर, हमने आत्मा के प्रति अत्याचार किया है, यदि तू हमे क्षमा न करेगा और हमारे प्रति दया न करेगा तो हम नि सदेह उन लोगो मे होगे जो कि नष्ट होने वाले हैं।" सुल्तान इबराहीम लोदी की पराजय के विषय मे उसने लिखा है कि, "इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एव बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं, अपितु इसे ईश्वर की महान् दया एव अनुकम्पा मानते है।"[3]

"बाबरनामा" के अध्ययन से पता चलता है कि वह नमाज तथा रोज़े की कभी उपेक्षा न करता था। ९०० हि० (१४९४–९५ ई०) मे उसने उन समस्त भोजनो का सेवन भी त्याग दिया जो शरा के विरुद्ध अथवा सदिग्ध थे यहा तक कि वह चाकू, चम्मच एव दस्तरख्वान के विषय मे भी सावधान रहता था। इस समय से वह तहज्जुद की नमाज भी बहुत कम त्यागता था।[4] उसने जिन लोगा के विषय मे बाबर नामा मे कुछ लिखा है उनके नमाज़-रोजे की विशेष रूप से चर्चा की है। ९३३ हि० (१५२६–२७ ई०) के वृत्तात मे उसने लिखा है कि, "मैंने अपनी ११ वर्ष की अवस्था से लेकर इस वर्ष तक कभी भी दो वर्षो तक एक ही स्थान पर ईद न मनाई थी। पिछले वर्ष मैंने आगरा मे ईद मनाई थी। इस वर्ष इस उद्देश्य से कि इस नियम म विघ्न न पड जाये मै मास के अन्त मे सीकरी ईद मनाने के लिए पहुँच गया।"[5] नमाज, रोज़े के साथ साथ वह हाफिज़ो द्वारा कुरान का पाठ भी सुना करता था।[6] ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के "मुबीन" नामक ग्रथ की उसने पद्य मे रचना अपनी आत्मा की तृप्ति हेतु ही की।[7] इसके अतिरिक्त वह अन्य अरबी 'दुआओ' का भी पाठ किया करता था।[8]

वह सूफियो तथा आलिमा से बडा प्रभावित था और जब उसे अवसर मिलता वह सूफियो के मजारो के दर्शनार्थ पहुँच जाता था। ९२० हि० (१५१४ ई०) म जब उसने चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो मीर सैयिद अली हमदानी के मज़ार के दर्शनार्थ पहुँचा।[9] १८ अगस्त, १५०८ ई० को

१ बाबर नामा पृ० ८२।
२ बाबर नामा पृ० १३६।
३ बाबर नामा पृ० १६४।
४ बाबर नामा पृ० ४६४।
५ बाबर नामा पृ० २५८।
६ बाबर नामा पृ० ६१, ११५।
७ बाबर नामा पृ० १३५-१३६।
८ बाबर नामा पृ० २५६।
९ बाबर नामा पृ० २१।

उसने ख्वाजा खावन्द सईद के मजार का तवाफ किया।[1] इबराहीम लोदी पर विजय के उपरान्त २४ अप्रैल, १५२६ ई० को उसने शेख निजामुद्दीन औलिया के मजार की परिक्रमा की।[2] २५ अप्रैल, १५२६ ई० को वह ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के रौजे पर पहुँचा।[3] अप्रैल १५२८ ई० को उसने शेख शरफुद्दीन यहया मुनेरी के मजार का तवाफ किया।[4] ग्वालियर के प्रसिद्ध सूफी शेख गौस से भी उसके बडे अच्छे सम्बन्ध थे।[5] एक अन्य आलिम मीर रफीउद्दीन सफवी से भी वह बडा प्रभावित था और उनकी समस्त सिफारिशो को स्वीकार कर लेता था।[6] उसे योगियो के विषय मे भी जानकारी प्राप्त करने से रुचि थी। जनवरी १५०५ ई० मे वह बीगराम पहुँचकर गूर खत्तरी के योगियो के तीर्थस्थान के दर्शनार्थ जाना चाहता था किन्तु इसमे वह सफल न हो सका।[7] १६ मार्च १५१९ ई० का जब वह फिर वहा पहुँचा तो उसने प्रयत्न करके गूर खत्तरी के दर्शन किये।[8]

बाबर का चरित्र

बाबरनामा के अध्ययन से बाबर के चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। उसने अपनी भूलो तथा अपने दोषो को बडे मार्मिक शब्दो मे स्वीकार किया है। उसे अपनी अज्ञानता स्वीकार करने में कोई सकोच न होता था। हिरात मे बदी उज्जमान मीर्जा की दावत मे पका हुआ काज लाया गया किन्तु उसे काज को काटना एव टुकडे टुकडे करना न आता था अत उसने उसे उसी प्रकार छोड दिया किन्तु मीर्जा के पूछने पर कि, "क्या उसे काज पसन्द नही ?" उसने नि सकोच उत्तर दे दिया कि, "मैं उसे काटना नही जानता।"[9]

उसने अपने प्रथम विवाह के सम्बध म अपनी झेंप एव सुशीलता का जो वर्णन दिया है वह अत्यधिक रोचक है[10] किन्तु उससे भी अधिक दिलचस्प बाबुरी नामक तरुण से उसकी प्रेम कथा है। इस समय उसकी अवस्था १६-१७ वर्ष की थी। वह लिखता है कि, 'मैं उन्माद एव झप मे उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता था ? मुझ म इतनी शक्ति भी तो न थी कि उसका उचित रूप से स्वागत ही कर लेता। एक दिन प्रेम के उन्माद म मैं अपने मित्रो के साथ एक गली मे जा रहा था। अचानक मेरा और उसका सामना हो गया। झेंप एव घबराहट मे मेरी यह दशा हो गई कि मैं उससे आख भी न मिला सका और न एक शब्द कह सका। झप तथा घबराहट मे मुहम्मद सालेह के इस शेर का स्मरण करता हुआ उसे छोड कर चल दिया —

१ बाबर नामा पृ० ११६।
२ बाबर नामा पृ० १५८।
३ बाबर नामा पृ० १५६।
४ बाबर नामा पृ० ३२१।
५ बाबर नामा पृ० २२०।
६ बाबर नामा पृ० २११।
७ बाबर नामा पृ० ३४।
८ बाबर नामा पृ० १०६।
९ बाबर नामा पृ० ११६।
१० बाबर नामा पृ० ५२८।

शेर

"चाहे थोडे हो, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है
उसके दरबार मे किसी की कोई शक्ति नही।"[1]

८ दिसम्बर, १५२५ ई० को जब वह अत्यधिक रुग्ण हो गया और रक्त थूकने लगा तो उसने यह अनुभव किया कि यह चेतावनी उसे ईश्वर की ओर से प्राप्त हुई है और यह कष्ट उसके कुकर्मों ही का परिणाम हैं। उसने तत्काल ईश्वर से क्षमा-याचना करते हुए कुरान शरीफ का यह वाक्य उद्धृत किया[2] "हे ईश्वर, हमने आत्मा के प्रति अत्याचार किया है, यदि तू हमे क्षमा न करेगा और हमारे प्रति दया न करेगा तो हम नि सदेह उन लोगो मे होंगे जो कि नष्ट होने वाले हैं।" सुल्तान इबराहीम लोदी की पराजय के विषय मे उसने लिखा है कि, "इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एव बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं, अपितु इसे ईश्वर की महान् दया एव अनुकम्पा मानते हैं।"[3]

"बाबरनामा" के अध्ययन से पता चलता है कि वह नमाज तथा रोज़े की कभी उपेक्षा न करता था। ९०० हि० (१४९४–९५ ई०) मे उसने उन समस्त भोजनो का सेवन भी त्याग दिया जो शरा के विरुद्ध अथवा सदिग्ध थे यहा तक कि वह चाकू, चम्मच एव दस्तरख्वान के विषय मे भी सावधान रहता था। इस समय से वह तहज्जुद की नमाज़ भी बहुत कम त्यागता था।[4] उसने जिन लोगो के विषय मे बाबर नामा मे कुछ लिखा है, उनके नमाज़-रोज़े की विशेष रूप से चर्चा की है। ९३३ हि० (१५२६–२७ ई०) के वृत्तात मे उसने लिखा है कि, "मैंने अपनी ११ वर्ष की अवस्था से लेकर इस वर्ष तक कभी भी दो वर्षों तक एक ही स्थान पर ईद न मनाई थी। पिछले वर्ष मैंने आगरा मे ईद मनाई थी। इस वर्ष इस उद्देश्य से कि इस नियम मे विघ्न न पड जाये मैं मास के अन्त मे सीकरी ईद मनाने के लिए पहुँच गया।"[5] नमाज़, रोजे के साथ साथ वह हाफिजो द्वारा कुरान का पाठ भी सुना करता था।[6] ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के "मुबीन" नामक ग्रथ की उसने पद्य मे रचना अपनी आत्मा की तृप्ति हेतु ही की।[7] इसके अतिरिक्त वह अन्य अरबी "दुआओं" का भी पाठ किया करता था।[8]

वह सूफिया तथा आलिमो से बडा प्रभावित था और जब उसे अवसर मिलता वह सूफियो के मज़ारो के दर्शनार्थ पहुँच जाता था। ९२० हि० (१५१४ ई०) मे जब उसने चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो मीर सैयिद अली हमदानी के मज़ार के दर्शनार्थ पहुँचा।[9] १८ अगस्त, १५०८ ई० को

१ बाबर नामा पृ० ८२।
२ बाबर नामा पृ० १३६।
३ बाबर नामा पृ० १६४।
४ बाबर नामा पृ० ४६४।
५ बाबर नामा पृ० २५८।
६ बाबर नामा पृ० ६१, ११५।
७ बाबर नामा पृ० १३५-१३६।
८ बाबर नामा पृ० २५६।
९ बाबर नामा पृ० २१।

उसने ख्वाजा खावन्द सईद के मजार का तवाफ किया।[1] इबराहीम लोदी पर विजय के उपरान्त २४ अप्रैल, १५२६ ई० को उसने शेख निज़ामुद्दीन औलिया के मजार की परिक्रमा की।[2] २५ अप्रैल, १५२६ ई० को वह ख्वाजा कुतुबुद्दीन वख्तियार काकी के रौज़े पर पहुँचा।[3] अप्रैल १५२८ ई० को उसने शेख़ शरफुद्दीन यहया मुनेरी के मज़ार का तवाफ किया।[4] ग्वालियर के प्रसिद्ध सूफी शेख़ गौस से भी उसके वडे अच्छे सम्बन्ध थे।[5] एक अन्य आलिम मीर रफीउद्दीन सफवी से भी वह बडा प्रभावित था और उनकी समस्त सिफारिशो को स्वीकार कर लेता था।[6] उसे योगियो के विषय मे भी जानकारी प्राप्त करने से रुचि थी। जनवरी १५०५ ई० मे वह बीगराम पहुँचकर गूर खत्तरी के योगियो के तीर्थस्थान के दर्शनार्थ जाना चाहता था किन्तु इसमे वह सफल न हो सका।[7] १६ मार्च १५१९ ई० को जब वह फिर वहा पहुँचा तो उसने प्रयत्न करके गूर खत्तरी के दर्शन किये।[8]

बाबर का चरित्र

बाबरनामा के अध्ययन से बाबर के चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। उसने अपनी भूला तथा अपने दोषो को वडे मार्मिक शब्दो मे स्वीकार किया है। उसे अपनी अज्ञानता स्वीकार करने मे कोई सकोच न होता था। हिरात मे वदी उज्जमान मीर्ज़ा की दावत मे पका हुआ काज लाया गया किन्तु उसे काज को काटना एव टुकडे टुकडे करना न आता था अत उसने उसे उसी प्रकार छोड दिया किन्तु मीर्ज़ा के पूछने पर कि, "क्या उसे काज पसन्द नही ?" उसने नि सकोच उत्तर दे दिया कि, "मैं उसे काटना नहीं जानता।"[9]

उसने अपने प्रथम विवाह के सम्बध मे अपनी झेंप एव सुशीलता का जो वर्णन दिया है वह अत्यधिक रोचक है[10] किन्तु उससे भी अधिक दिलचस्प बाबुरी नामक तरुण से उसकी प्रेम-कथा है। इस समय उसकी अवस्था १६–१७ वर्ष की थी। वह लिखता है कि, "मैं उन्माद एव झेंप मे उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता था ? मुझ म इतनी शक्ति भी तो न थी कि उसका उचित रूप से स्वागत ही कर लेता। एक दिन प्रम के उन्माद मे मैं अपने मित्रो के साथ एक गली मे जा रहा था। अचानक मेरा और उसका सामना हो गया। झेंप एव घवराहट मे मेरी यह दशा हो गई कि मैं उससे आख भी न मिला सका और न एक शब्द कह सका। झेंप तथा घवराहट मे मुहम्मद सालेह के इस शेर का स्मरण करता हुआ उसे छोड कर चल दिया —

१ बाबर नामा पृ० ११६।
२ बाबर नामा पृ० १५८।
३ बाबर नामा पृ० १५६।
४ बाबर नामा पृ० ३२१।
५ बाबर नामा पृ० २२०।
६ बाबर नामा पृ० २१६।
७ बाबर नामा पृ० ३४।
८ बाबर नामा पृ० १०६।
९ बाबर नामा पृ० ११६।
१० बाबर नामा पृ० ५२८।

शेर

"चाहे थोडे हो, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है
उसके दरबार मे किसी की कोई शक्ति नही।"[1]

८ दिसम्बर, १५२५ ई० को जब वह अत्यधिक रुग्ण हो गया और रक्त थूकने लगा तो उसने यह अनुभव किया कि यह चेतावनी उसे ईश्वर की ओर से प्राप्त हुई है और यह कष्ट उसके कुकर्मों ही का परिणाम हैं। उसने तत्काल ईश्वर से क्षमा-याचना करते हुए कुरान शरीफ का यह वाक्य उद्धृत किया[2] "हे ईश्वर, हमने आत्मा के प्रति अत्याचार किया है, यदि तू हमे क्षमा न करेगा और हमारे प्रति दया न करेगा तो हम नि सदेह उन लोगो मे होगे जो कि नष्ट होने वाले है।" सुल्तान इबराहीम लोदी की पराजय के विषय मे उसने लिखा है कि, "इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एव बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं, अपितु इसे ईश्वर की महान् दया एव अनुकम्पा मानते हैं।"[3]

"बाबरनामा" के अध्ययन से पता चलता है कि वह नमाज तथा रोजे की कभी उपेक्षा न करता था। ९०० हि० (१४९४–९५ ई०) मे उसने उन समस्त भोजनो का सेवन भी त्याग दिया जो शरा के विरुद्ध अथवा सदिग्ध थे यहा तक कि वह चाकू, चम्मच एव दस्तरख्वान के विषय मे भी सावधान रहता था। इस समय से वह तहज्जुद की नमाज भी बहुत कम त्यागता था।[4] उसने जिन लोगो के विषय मे बाबर नामा मे कुछ लिखा है उनके नमाज़-रोज़ें की विशेष रूप से चर्चा की है। ९३३ हि० (१५२६–२७ ई०) के वृत्तात मे उसने लिखा है कि, "मैंने अपनी ११ वर्ष की अवस्था से लेकर इस वर्ष तक कभी भी दो वर्षों तक एक ही स्थान पर ईद न मनाई थी। पिछले वर्ष मैंने आगरा मे ईद मनाई थी। इस वर्ष इस उद्देश्य से कि इस नियम मे विघ्न न पड जाये मैं मास के अन्त मे सीकरी ईद मनाने के लिए पहुँच गया।"[5] नमाज, रोजे के साथ साथ वह हाफिजो द्वारा कुरान का पाठ भी सुना करता था।[6] ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के "मुबीन" नामक ग्रथ की उसने पद्य मे रचना अपनी आत्मा की तृप्ति हेतु ही की।[7] इसके अतिरिक्त वह अन्य अरबी "दुआओ" का भी पाठ किया करता था।[8]

वह सूफियो तथा आलिमों से बडा प्रभावित था और जब उसे अवसर मिलता वह सूफियो के मजारो के दर्शनार्थ पहुँच जाता था। ९२० हि० (१५१४ ई०) मे जब उसने चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो मीर सैयिद अली हमदानी के मज़ार के दर्शनार्थ पहुँचा।[9] १८ अगस्त, १५०८ ई० को

१ बाबर नामा पृ० ८२।
२ बाबर नामा पृ० १३६।
३ बाबर नामा पृ० १६४।
४ बाबर नामा पृ० ४६४।
५ बाबर नामा पृ० २५८।
६ बाबर नामा पृ० ६१, ११५।
७ बाबर नामा पृ० १३५-१३६।
८ बाबर नामा पृ० २५६।
९ बाबर नामा पृ० २३।

उसने ख्वाजा खावन्द सईद के मजार का तवाफ किया।[1] इबराहीम लोदी पर विजय के उपरान्त २४ अप्रैल, १५२६ ई० को उसने शेख निजामुद्दीन औलिया के मजार की परिक्रमा की।[2] २५ अप्रैल, १५२६ ई० को वह ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के रौजे पर पहुँचा।[3] अप्रैल १५२८ ई० को उसने शेख शरफुद्दीन यहया मुनेरी के मजार का तवाफ किया।[4] ग्वालियर के प्रसिद्ध सूफी शेख गौस से भी उसके बड़े अच्छे सम्बन्ध थे।[5] एक अन्य आलिम मीर रफीउद्दीन सफवी से भी वह बडा प्रभावित था और उनकी समस्त सिफारिशो को स्वीकार कर लेता था।[6] उसे योगियो के विषय मे भी जानकारी प्राप्त करने से रुचि थी। जनवरी १५०५ ई० मे वह बीगराम पहुँचकर गूर खत्तरी के योगियो के तीर्थस्थान के दर्शनार्थ जाना चाहता था किन्तु इसमे वह सफल न हो सका।[7] १६ मार्च १५१९ ई० को जब वह फिर वहा पहुँचा तो उसने प्रयत्न करके गूर खत्तरी के दर्शन किये।[8]

बाबर का चरित्र

बाबरनामा के अध्ययन से बाबर के चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। उसने अपनी भूलो तथा अपने दोषो को बडे मार्मिक शब्दो मे स्वीकार किया है। उसे अपनी अज्ञानता स्वीकार करने मे कोई सकोच न होता था। हिरात मे बदी उज्जमान मीर्जा की दावत म पका हुआ काज लाया गया किन्तु उसे काज को काटना एव टुकडे टुकडे करना न आता था अत उसने उसे उसी प्रकार छोड दिया किन्तु मीर्जा के पूछने पर कि, 'क्या उसे काज पसन्द नही?" उसने नि सकोच उत्तर दे दिया कि, "मैं उसे काटना नही जानता।'[9]

उसने अपने प्रथम विवाह के सम्बध मे अपनी झेंप एव सुशीलता का जो वर्णन दिया है वह अत्यधिक रोचक है[10] किन्तु उससे भी अधिक दिलचस्प बाबुरी नामक तरुण से उसकी प्रेम-कथा है। इस समय उसकी अवस्था १६–१७ वर्ष की थी। वह लिखता है कि, "मैं उन्माद एव झेंप मे उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता था? मुझ म इतनी शक्ति भी तो न थी कि उसका उचित रूप से स्वागत ही कर लेता। एक दिन प्रेम के उन्माद म मैं अपन मित्रो के साथ एक गली मे जा रहा था। अचानक मेरा और उसका सामना हो गया। झेंप एव घबराहट मे मेरी यह दशा हो गई कि मैं उससे आख भी न मिला सका और न एक शब्द कह सका। झेंप तथा घबराहट मे मुहम्मद सालेह के इस शेर का स्मरण करता हुआ उसे छोड कर चल दिया —

१ बाबर नामा पृ० ११६।
२ बाबर नामा पृ० १५८।
३ बाबर नामा पृ० १५६।
४ बाबर नामा पृ० ३२१।
५ बाबर नामा पृ० २२०।
६ बाबर नामा पृ० २१६।
७ बाबर नामा पृ० ३४।
८ बाबर नामा पृ० १०६।
९ बाबर नामा पृ० ११६।
१० बाबर नामा पृ० ५२८।

शेर

"जब मैं अपने माशूक को देखता हूँ तो झेंप जाता हूँ,
मेरे मित्र मेरी ओर देखते है और मैं दूसरो की ओर।"[१]

सिंहासनारूढ होने के बाद ही उसे घोर कष्टो एव विषम परिस्थितियो का सामना करना पडा। उसने हर आफत और मुसीबत का बडे धैर्य से मुकाबला किया। जितने वर्षों तक वह फरगाना के राज्य के लिये सघर्ष करता रहा उसे असाधारण कठिनाइयो का सामना करना पडा। किन्तु उसने कभी हिम्मत न हारी। १४९७–९८ ई० के वृत्तान्त मे अपनी असफलताओ की जो समीक्षा उसने की है उससे उसके सकल्प का पूर्ण परिचय मिल जाता है। वह लिखता है, "क्योकि मुझे राज्य पर अधिकार करने तथा बादशाह बनने की आकाक्षा थी अत मैं एक या दो बार की असफलता से निराश होकर बैठा न रह सकता था।"[२]

हिरात से काबुल लौटते समय पर्वतीय यात्रा के समय उसे जितने कष्ट भोगने पडे उतने कष्ट सम्भवत उसने अपने जीवन-काल मे कभी न भोगे थे। उसने इन कष्टो के विषय मे स्वय एक शेर की रचना भी की है —

शेर

"भाग्य का कोई ऐसा कष्ट अथवा हानि नही है जिसे मैंने न भोगा हो,
इस टूटे हुए हृदय ने सभी को सहन किया है। हाय! कोई ऐसा कष्ट
भी है, जिसे मैंने न भोगा हो।"[३]

किन्तु वह किसी भी कठिनाई के समय हताश न हुआ। इसके साथ साथ उसे अपने मित्रो का इतना अधिक ध्यान था कि उसने उनसे पृथक् होकर अपने लिये किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचना स्वीकार न किया। इसी यात्रा मे जब उससे आग्रह किया गया कि वह बरफ से बचने के लिये गुफा मे प्रविष्ट हो जाय तो उसने सोचा कि जब उसके कुछ आदमी बरफ तथा तूफान मे फँसे हुए है तो यह कैसे हो सकता है कि वह उस गरम स्थान मे शरण ले। जो कुछ कष्ट अथवा कठिनाई होगी उसका वह मुकाबला करेगा। इस अवसर पर फारसी की एक लोकोक्ति ने कि "मित्रो के साथ मरना ईद के समान होना है" उसके साहस को और भी बढा दिया।[४]

आराम के समय वह अपने पिछले कष्ट कभी न भूलता था। १५०१–२ ई० मे शैबानी को समरकन्द समर्पित करके जब वह अपनी माता को लेकर वहा से चल खडा हुआ तो रात्रि मे यात्रा करता हुआ घोडे से गिर पडा किन्तु तत्काल उठ कर सवार हो गया। यह दशा तथा पिछली घटनायें उसकी आखो के सामने स्वप्न के समान घूमती रही। इतने कष्ट भोगने के उपरान्त जब वह दीज़क नामक छोटे से स्थान पर पहुँचा तो उसे जो सतोष प्राप्त हुआ उसकी चर्चा वह इस प्रकार करता है —"हमे अपने जीवन-

१ बाबर नामा पृ० ५२६।
२ बाबर नामा पृ० ५१८।
३ बाबर नामा पृ० ६६।
४ बाबर नामा पृ० ६७।

काल मे इतना सतोप कभी न प्राप्त हुआ था। पूरे जीवन मे शान्ति तथा अल्प-मूल्यता के महत्व का इतना अनुभव न हुआ था। जब कठिनाई के उपरान्त सुख एव परिश्रम के उपरान्त निश्चिन्तता प्राप्त होती है तो बडा आनन्द आता है। चार-पाँच बार मुझे इसी प्रकार कठिनाई के उपरान्त सुख एव परिश्रम के उपरान्त निश्चिन्तता प्राप्त हुई। प्रथम शान्ति यही थी। इतने बडे शत्रु के कष्ट तथा भूख की परेशानी से मुक्त होकर हमे सुख शान्ति एव निश्चिन्तता प्राप्त हो गई।"[१]

उसके स्वभाव मे अत्यधिक सरलता भी पाई जाती थी। बादशाह होने के बावजूद उसे अपने मित्रो के घर रात्रि व्यतीत करने मे कोई सकोच न होता था, यहा तक कि वह नागरिको के घरो तक म सो जाता था।[२] उसके अदम्य साहस एव वीरता का अनुमान उन समस्त घटनाओ से लगाया जा सकता है जिनका उसने १२ वर्ष की अवस्था से ही सामना करना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु जिन्ही जिन्ही अवसरो पर उसने जिस वीरता का प्रदर्शन किया वह आश्चर्यजनक है। तुर्कमान हजारा के मुकाबले के समय वह बिना कवच धारण किये ही अपने कुछ साथियो को लेकर बढता चला गया। वह लिखता है कि "हमारे ऊपर से बाण उड उड कर जाने लगे। यूसुफ अहमद चिन्ता प्रकट करते हुए प्रत्येक से कहता था कि तुम लोग इस प्रकार नगे ही जा रहे हो, हमने दो बाणो को तुम्हारे सिर पर से गुजरते हुए देखा है। मैंने कहा चिन्ता मत करो, ऐसे बहुत से बाण मेरे सिर पर से गुजर चुके है।"[३] नदियो को तैर कर पार करना वह साधारण बात समझता था। प्रयाग मे उसने केवल ३३ हाथ मार कर गगा नदी पार कर ली।[४] विजय पश्चात् वह अपने शत्रुओ से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता था। १४९७–९८ ई० मे समरकन्द विजय कर लेने के उपरान्त उसने वहा के अमीरो के प्रति उसी प्रकार कृपा-दृष्टि रक्खी, जिस प्रकार उनके प्रति पूर्व मे की जाती थी।[५] सुल्तान इबराहीम पर विजय के बाद बाबर ने उसकी माता के प्रति बडा ही उत्तम व्यवहार किया।[६] जब इबराहीम की माता ने उसे विष दिला दिया तभी उसने उसके एव इबराहीम के परिवार वालो के प्रति कठोरता प्रदर्शित की।[७]

निरीक्षण शक्ति

उसकी निरीक्षण शक्ति एव जिज्ञासा भी बडी अद्भुत थी। काबुल तथा हिन्दुस्तान की वनस्पति, पशु, पक्षी तथा तत्सम्बन्धी अन्य बातो का उल्लेख उसकी तीव्र निरीक्षण शक्ति एव जिज्ञासा का प्रमाण है। प्रत्येक नई वस्तु जो उसके समक्ष आ जाती थी उसका वह उत्साहपूर्वक निरीक्षण करता था। ११ मार्च १५१९ ई० को उसने झेलम पार करने के उपरान्त बालटियो सहित रहँट देखा और कुएँ से पानी निकलवाकर पानी निकालने की विधि के विषय मे प्रश्न किये तथा बार बार पानी निकलवाया।[८] १४ अगस्त १५१९ ई० को कोहदामन की सैर के समय ख्वाजा सेहयारान के समीप एक सर्प मारा गया

१ बाबर नामा पृ० ५४७।
२ बाबर नामा „ १२०।
३ बाबर नामा „ ५१।
४ बाबर नामा „ ३१२
५ बाबर नामा „ ५१४।
६ बाबर नामा „ १६१ १६२।
७ बाबर नामा „ २२३।
८ बाबर नामा „ १०५।

जो मनुष्य के बाजू के बराबर मोटा तथा एक कूलाच के बराबर लम्बा था।[1] बाबर ने उसका भी ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया।

उसे जिन स्थानो को देखने का अवसर प्राप्त हुआ, उनसे सम्बन्धित उसने बहुत सी कहानियो का उल्लेख किया है। जूद[2], घक्कर[3], सेहयारान[4], सफेद कोह[5], लमगान[6], कश्मीर[7] तथा सिवालीक[8] के विषय मे उसने बताया है कि उनके यह नाम क्यो पडे। इस प्रसग मे उसने विभिन्न भाषाओ एव उच्चारण की समस्याओ के ज्ञान का भी परिचय दिया है। उसने यह लिखा है कि किस प्रकार कूनार, नूरगल, बजौर, सवाद तथा उसके आस पास यह प्रसिद्ध था कि जब वहा किसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है और उसके जनाजे को उठाया जाता है तो यदि वह दुराचारिणी नही होती तो जनाजा उठाने वाले चारो आदमियो को लाश इस प्रकार हिला देती है कि यदि वह प्रयत्न करके अपने आपको रोके न रखें तो लाश गिर पडती है और यदि वह दुराचारिणी होती है तो वह लाश नही हिलती।[9]

जब तक वह किसी बात के विषय मे पूर्ण रूप से पूछताछ एव अनुसधान न कर लेता था उस समय तक वह उसके विषय मे सतुष्ट न होता था। जिस वर्ष उसने काबुल तथा गजनी विजय किया और कोहाट, बन्नू के मैदान तथा अफगानो के प्रदेश को नष्ट-भ्रष्ट करता हुआ दूकी तथा आबे इस्तादा के मार्ग से गजनी पहुचा तो लोगो ने उसे बताया कि गजनी के एक ग्राम मे एक ऐसी कब्र है जहा दरुद पढते ही वह हिलने लगती है। उसने जाकर निरीक्षण किया तो उसे अनुभव हुआ कि कब्र हिल रही है। अन्त मे ज्ञात हुआ कि यह मजार के मुजाविरो की धूर्तता है। उन लोगो ने कब्र पर एक प्रकार का मच बनवा दिया था जो धक्का देने पर हिल जाता था। उसके हिलने से कब्र उसी प्रकार हिलती हुई ज्ञात होती थी जिस प्रकार नौका पर बैठे हुए लोगो को नदी-तट हिलता हुआ अनुभव होता है। उसने मुजाविरो को आदेश दिया कि वे मच मे दूर हट जायें। तदुपरान्त दरुद का पाठ हुआ किन्तु कब्र न हिली। उसने आदेश दिया कि कब्र से मच हटा दिया जाये और उस पर एक गुम्बद का निर्माण कर दिया जाये। मुजाविरो को चेतावनी दे दी गई कि वे पुन इस प्रकार का कोई कार्य न करें।[10] इसी प्रकार उसने गजनी के उस झरने के विषय मे भी पता लगवाया जिसके बारे में बताया जाता था कि यदि उसमें कोई गदी तथा अशुद्ध वस्तु डाल दी जाये तो तत्काल बडे जोर का तूफान उठ खडा होता है और जल तथा बरफ की वर्षा होने लगती है। वह लिखता है कि "एक अन्य इतिहास मे मैंने पढा है कि जब सुबुक्तिगीन को हिन्द के राय ने घेर लिया तो उसने आदेश दिया कि झरने मे गदी तथा अशुद्ध वस्तुए डाल दी जायें। फलत तूफान के साथ जोर की वर्षा

१ बाबर नामा पृ० ११६।
२ बाबर नामा ,, ६८।
३ बाबर नामा ,, १०४।
४ बाबर नामा ,, २४।
५ बाबर नामा ,, १६।
६ बाबर नामा ,, २०।
७ बाबर नामा ,, १६८।
८ बाबर नामा ,, १६८।
९ बाबर नामा ,, २१।
१० बाबर नामा ,, २६।

होने लगी और वरफ गिरने लगी। इस उपाय से उसने शत्रु को भगा दिया। मैंने गजनी मे अत्यधिक पता लगवाया किन्तु किसी ने भी झरने के विषय मे मुझे कोई सूचना न दी।"[१]

पशुओ एव पक्षियो के स्वभाव के विषय मे भी जो बातें उसे बताई जाती, यदि वे बुद्धि-सगत न होती तो वह उनपर विश्वास न करता था। वह लिखता है कि, "हमारा विचार था कि तोता अथवा मैना उतनी ही बातें कर सकते है, जितनी उन्हे सिखा दी जायें। वे स्वय सोच कर कोई बात नही कर सकते। इस समय मेरे एक निकटतम सेवक अबुल कासिम जलायर ने मुझे एक बडी विचित्र बात बताई। एक ऐसे ही तोते का पिंजडा सम्भवत ढक दिया गया था। वह कहने लगा, मेरे मुँह को खोलो। मेरा दम घुटता है। इसका उत्तरदायित्व बताने वाले पर है। जब तक कोई स्वय अपने कानो से न सुन ले वह विश्वास नही कर सकता।"[२] उसने इस बात का भी, जो उसके देश मे प्रसिद्ध थी कि "गैंडा अपने सीग पर हाथी को उठा सकता है" खडन किया है।[३]

प्राकृतिक दृश्य

उसे प्राकृतिक दृश्य भी अत्यधिक प्रभावित करते रहते थे। प्रकृति के खुले हुए पृष्ठ उसकी प्रतिभा एव उसके ज्ञान मे वृद्धि का साधन थे। काबुल के वृत्तात मे उसने काबुल के रमणीक दृश्यो की भूरि-भूरि प्रशसा की है। कोहदामन की सैर के प्रसग मे उसने काबुल तथा गुलबहार के रमणीक दृश्यो की तुलना करते हुए निम्नाकित शेर उद्धृत किया है —

शेर

"हरियाली एव खिले हुए फूलो के कारण बहार मे काबुल स्वर्ग बन जाता है,
इसके बावजूद बारान तथा गुलबहार की बहार अद्वितीय होती है।"

इसी दृश्य से प्रभावित होकर उसने एक गजल की भी रचना की जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है —

गजल

'मेरा हृदय गुलाब की कली के समान, खून के छीटो से रगा हुआ,
चाहे यहा लाखो बहारें क्यो न आयें मेरे हृदय की कली नही खिल सकती।"[४]

यद्यपि आगरा तथा फतहपुर सीकरी के मैदान उसके रमणीयता-प्रिय स्वभाव को अधिक सतुष्ट न कर सके किन्तु भारतवर्ष मे प्रविष्ट होने के पूर्व ही जब २९ जुलाई १५१९ ई० को पर्वत श्रेणी की चोटी से दक्षिण की ओर देखने पर करमाश के उस पार हिन्दुस्तान की वर्षा के गहरे गहरे बादल दिखाई पडे तो उसका हृदय खिल उठा।[५] प्रकृति, घास के मैदानो, पर्वतो एव वृक्षो को जो सौन्दर्य एव रमणीयता

१ बाबर नामा पृ० २७।
२ बाबर नामा ,, १७७।
३ बाबर नामा ,, १७३।
४ बाबर नामा ,, १०६।
५ बाबर नामा ,, १७४।

प्रदान कर देती थी, उन्हे बाबर की तीव्र दृष्टि जिस प्रकार समझ सकी है उसका अनुमान बाबरनामा के अध्ययन के बिना सम्भव नही। १६ नवम्बर, १५१९ ई० को अस्तरगच के नीचे बागे पादशाही की सैर के समय सेब के एक छोटे से वृक्ष ने शरद् काल के कारण जो उत्तम रूप धारण कर लिया था, उसके विषय मे वह लिखता है कि, "वह वृक्ष इतना सुन्दर बन गया था कि यदि कोई चित्रकार उसका चित्र बनाना चाहता तो भी सम्भव न था।"[1] सेना वालो के घाटी की तलहटी मे पडाव करने के समय आग जलाने के कारण रात्रि म जो एक विचित्र सी दीपावली दृष्टिगत होने लगती थी उससे भी वह बडा प्रभावित होता था।[2]

चरित्रो का अध्ययन

"बाबरनामा" द्वारा बाबर के अमीरो एव उसके समकालीन अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियो की जीवनियो एव चरित्र पर भी प्रकाश पडता है। उसने जिन लोगो की चर्चा की है, उनके व्यक्तित्व को थोडे से शब्दो मे इस प्रकार स्पष्ट कर दिया है कि उनके सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत हो जाते हैं। उनके रूप रग, वेष भूषा, आचार-व्यवहार, गुण अवगुण एव चरित्र का पूरा ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो प्रभाव वह अपने थोडे से शब्दो से छोड जाता है उसका मुकाबला अन्य लोगो के लम्बे चौडे लेख भी नही कर सकते। अपने पिता उमर शेख मीर्ज़ा के चरित्र का उल्लेख करते हुए बाबर को यह लिखने मे कोई भी सकोच न हुआ कि "जीवन के अन्तिम काल मे वे माजून का अत्यधिक सेवन करने लगे थे। नशे की तरग मे वे बहक जाया करते थे। वे बडे रसिक व्यक्ति थे और प्रेमियो के अनेक गुण उनमे पाये जाते थे।"[3] उसने उमर शेख मीर्ज़ा[4], सुल्तान अहमद मीर्ज़ा[5] सुल्तान महमूद मीर्ज़ा[6] एव सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा[7] के चरित्र, व्यवहार, अन्त पुर, सतान, पदाधिकारियो एव अमीरा का बडी कुशलता से वर्णन किया है, और प्रत्येक के व्यक्तित्व गुण एव दोष को भली भाति व्यक्त कर दिया है। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के युग की उसने भूरि भूरि प्रशसा की है। वह लिखता है 'उसका युग बडा ही आश्चर्यजनक था। इसमे खुरासान, विशेष रूप से हेरी विद्वानो एव अद्वितीय कवियो से परिपूर्ण था। जो कोई भी जिस कार्य मे हाथ डालता उसका उद्देश्य यही होता कि वह उसे उन्नति के शिखर पर पहुँचा दे।"[8]

हुमायूँ की उसने केवल कुछ ही स्थानो पर चर्चा की है और उसके विषय मे किसी स्थान पर अलग से कुछ नही लिखा है किन्तु उसके सक्षिप्त विवरण से इस बात का पता चल जाता है कि उसने अपने पुत्रो के जीवन को सुधारने का कितना अधिक प्रयत्न किया। हुमायूँ के १५२५ ई० मे निश्चित अवधि से अधिक ठहर जाने के कारण उसने २५ नवम्बर १५२५ ई० को क्रोध प्रदर्शित करते हुए एव ताडनायुक्त पत्र

१ बाबर नामा पृ० ११० ।
२ बाबर नामा ,, १३७ ।
३ बाबर नामा ,, ४७२-४७३ ।
४ बाबर नामा , ४७३-४८२ ।
५ बाबर नामा ,, ४८५ ४६० ।
६ बाबर नामा ,, ४६४-४६८ ।
७ बाबर नामा ,, ५७६-५६६ ।
८ बाबर नामा ,, ४५३ ।

भेजे और उसके ३ दिसम्बर १५२५ ई० को पहुँचने पर उसे बहुत फटकारा।[1] उसकी आज्ञा के बिना हुमायूं ने १५२७ ई० मे काबुल जाते हुए देहली पहुंच कर खज़ाने पर अधिकार जमा लिया था। बाबर ने इस घटना पर बडा खेद प्रकट किया और उसे परामर्श देते हुए कठोर पत्र लिखे।[2] हुमायूं के नाम जो पत्र उसने लिखा उसमे हुमायूं की भूलो की ओर विस्तार से उसका ध्यान आकृष्ट कराया है। उसके एकान्तवास की निन्दा करते हुए उसने उसे लिखा कि "ईश्वर को धन्य है कि अब तुम लोगो के लिये प्राण खतरे मे डालने तथा तलवार चलाने का अवसर आ गया है। जिस कार्य का अवसर मिल जाये उसकी उपेक्षा नही करनी चाहिए।" सम्भवत हुमायूं एकान्तवास ग्रहण करना चाहता था किन्तु बाबर ने उसे फटकारते हुए लिखा कि "तू अपने पत्रो मे एकान्तवास-एकान्तवास की चर्चा करता रहता है। एकान्तवास पादशाही का बहुत बडा दोष है। पादशाही के बधन से बडा कोई बधन नही। एकान्तवास राज्य के लिये उचित नही।" इस प्रसग मे उसने शेख सादी का एक शेर भी उद्धृत किया —

शेर

"यदि तेरे पाव मे जजीर पडी हो तो तू एकान्तवास ग्रहण कर,
यदि तू अकेला यात्रा कर रहा हो तो जिस प्रकार तेरी इच्छा हो, तू कर।"[3]

बाबर के आदेशानुसार हुमायूं ने इससे पूर्व उसे एक पत्र लिखा था जिसमे भाषा की अनेक अशुद्धियां की थी। बाबर ने उन अशुद्धियो की ओर ध्यान दिलाते हुए उसे सावधानी से पत्र लिखने का परामर्श दिया।[4]

समालोचनायें

बाबर ने अपने समकालीन अनेक कवियो एव साहित्यकारो की चर्चा तथा उनकी कृतियो की समालोचना की है। अपने समकालीन फारसी कवियो एव साहित्यकारो मे वह मौलाना अब्दुर्रहमान जामी से बडा प्रभावित था।[5] उसने उनके विषय मे केवल ४–५ वाक्य ही लिखे हैं किन्तु उनके महत्व को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया है। तुर्की साहित्य मे अली शेर नवाई अद्वितीय हैं। बाबर ने उसकी रचनाओ का विस्तार से उल्लेख करते हुये उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की है।[6] वह न तो साधारण शेर पसन्द करता था और न अत्यधिक शेरो की रचना कर लेने वाला से प्रभावित होता था। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की कविताओ के विषय मे उसने लिखा है कि, "उसने एक दीवान की रचना कर ली थी, किन्तु उसके शेरो मे कोई रस न था। इस प्रकार की कविता से कविता न करना अच्छा होता है।"[7] इसी प्रकार मौलाना सैफी बुखारी नामक हिरात के एक कवि के विषय मे वह लिखता है, "वह पूरा मुल्ला था और अपनी

१ बाबर नामा १३७।
२ बाबर नामा २५७।
३ बाबर नामा पृ० २८८–२८९।
४ बाबर नामा ,, २८९।
५ बाबर नामा ,, ५८८।
६ बाबर नामा ,, ५७८–७९।
७ बाबर नामा ,, ४९५।

प्रदान कर देती थी, उन्हे बाबर की तीव्र दृष्टि जिस प्रकार समझ सकी है उसका अनुमान बाबरनामा के अध्ययन के बिना सम्भव नही। १६ नवम्बर, १५१९ ई० को अस्तरग्रच के नीचे बागे पादशाही की सैर के समय सेब के एक छोटे से वृक्ष ने शरद् काल के कारण जो उत्तम रूप धारण कर लिया था, उसके विषय मे वह लिखता है कि, "वह वृक्ष इतना सुन्दर बन गया था कि यदि कोई चित्रकार उसका चित्र बनाना चाहता तो भी सम्भव न था।"[1] सेना वालो के घाटी की तलहटी मे पडाव करने के समय आग जलाने के कारण रात्रि मे जो एक विचित्र सी दीपावली दृष्टिगत होने लगती थी उससे भी वह बडा प्रभावित होता था।[2]

चरित्रो का अध्ययन

"बाबरनामा" द्वारा बाबर के अमीरो एव उसके समकालीन अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियो की जीवनियो एव चरित्र पर भी प्रकाश पडता है। उसने जिन लोगो की चर्चा की है, उनके व्यक्तित्व को थोडे से शब्दो मे इस प्रकार स्पष्ट कर दिया है कि उनके सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत हो जाते हैं। उनके रूप रग, वेष भूषा, आचार-व्यवहार, गुण-अवगुण एव चरित्र का पूरा ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो प्रभाव वह अपने थोडे से शब्दो से छोड जाता है उसका मुकाबला अन्य लोगो के लम्बे-चौडे लेख भी नही कर सकते। अपने पिता उमर शेख मीर्जा के चरित्र का उल्लेख करते हुए बाबर को यह लिखने म कोई भी सकोच न हुआ कि "जीवन के अन्तिम काल मे वे माजून का अत्यधिक सेवन करने लगे थे। नशे की तरग मे वे बहक जाया करते थे। वे बडे रसिक व्यक्ति थे और प्रेमियो के अनेक गुण उनमे पाये जाते थे।"[3] उसने उमर शेख मीर्जा[4], सुल्तान अहमद मीर्जा[5] सुल्तान महमूद मीर्जा[6] एव सुल्तान हुसेन मीर्जा[7] के चरित्र, व्यवहार, अन्त पुर, सतान पदाधिकारियो एव अमीरो का बडी कुशलता स वर्णन किया है, और प्रत्येक के व्यक्तित्व गुण एव दोष को भली भाति व्यक्त कर दिया है। सुल्तान हुसेन मीर्जा के युग की उसने भूरि-भूरि प्रशसा की है। वह लिखता है "उसका युग बडा ही आश्चर्यजनक था। इसमे खुरासान, विशेष रूप से हेरी विद्वानो एव अद्वितीय कवियो से परिपूर्ण था। जो कोई भी जिस कार्य मे हाथ डालता उसका उद्देश्य यही होता कि वह उसे उन्नति के शिखर पर पहुँचा दे।'[8]

हुमायूँ की उसने केवल कुछ ही स्थानो पर चर्चा की है और उसके विषय म किसी स्थान पर अलग से कुछ नही लिखा है किन्तु उसके सक्षिप्त विवरण से इस बात का पता चल जाता है कि उसने अपने पुत्रो के जीवन को सुधारने का कितना अधिक प्रयत्न किया। हुमायूँ के १५२५ ई० मे निश्चित अवधि से अधिक ठहर जाने के कारण उसने २५ नवम्बर १५२५ ई० को क्रोध प्रदर्शित करते हुए एव ताडनायुक्त पत्र

१ बाबर नामा पृ० ११० ।
२ बाबर नामा ,, १३७ ।
३ बाबर नामा ,, ४७२-४७३ ।
४ बाबर नामा , ४७३-४८२ ।
५ बाबर नामा ,, ४८५-४६० ।
६ बाबर नामा ,, ४६४-४६८ ।
७ बाबर नामा ,, ५७६-५६६ ।
८ बाबर नामा ,, ४५३ ।

भेजे और उसके ३ दिसम्बर १५२५ ई० को पहुँचने पर उसे बहुत फटकारा।[१] उसकी आज्ञा के बिना हुमायूँ ने १५२७ ई० मे काबुल जाते हुए देहली पहुच कर खजाने पर अधिकार जमा लिया था। बाबर ने इस घटना पर बडा खेद प्रकट किया और उसे परामर्श देते हुए कठोर पत्र लिखे।[२] हुमायूँ के नाम जो पत्र उसने लिखा उसमे हुमायूँ की भूलो की ओर विस्तार से उसका ध्यान आकृष्ट कराया है। उसके एकान्तवास की निन्दा करते हुए उसने उसे लिखा कि "ईश्वर को धन्य है कि अब तुम लोगो के लिये प्राण खतरे म डालने तथा तलवार चलाने का अवसर आ गया है। जिस कार्य का अवसर मिल जाये उसकी उपेक्षा नही करनी चाहिए।" सम्भवत हुमायूँ एकान्तवास ग्रहण करना चाहता था किन्तु बाबर ने उसे फटकारते हुए लिखा कि "तू अपने पत्रो म एकान्तवास एकान्तवास की चर्चा करता रहता है। एकान्तवास पादशाही का बहुत बडा दोष है। पादशाही के बधन से बडा कोई बधन नही। एकान्तवास राज्य के लिये उचित नही।" इस प्रसग मे उसने शेख सादी का एक शेर भी उद्धृत किया —

शेर

"यदि तेरे पाव मे जजीर पडी हो तो तू एकान्तवास ग्रहण कर,
यदि तू अकेला यात्रा कर रहा हो तो जिस प्रकार तेरी इच्छा हो, तू कर।"[३]

बाबर के आदेशानुसार हुमायूँ ने इससे पूर्व उसे एक पत्र लिखा था जिसमे भाषा की अनेक अशुद्धिया की थी। बाबर ने उन अशुद्धियो की ओर ध्यान दिलाते हुए उसे सावधानी से पत्र लिखने का परामर्श दिया।[४]

समालोचनायें

बाबर ने अपने समकालीन अनेक कवियो एव साहित्यकारा की चर्चा तथा उनकी कृतिया की समालोचना की है। अपने समकालीन फारसी कविया एव साहित्यकारो मे वह मौलाना अब्दुर्रहमान जामी से बडा प्रभावित था।[५] उसने उनके विषय में केवल ४–५ वाक्य ही लिखे हैं किन्तु उनके महत्व को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया है। तुर्की साहित्य मे अली शेर नवाई अद्वितीय हैं। बाबर ने उसकी रचनाओ का विस्तार से उल्लेख करते हुये उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की है।[६] वह न तो साधारण शेर पसन्द करता था और न अत्यधिक शेरो की रचना कर लेने वालो मे प्रभावित होता था। सुल्तान महमूद मीर्जा की कविताओं के विषय मे उसने लिखा है कि, "उसने एक दीवान की रचना कर ली थी, किन्तु उसके शेरो म कोई रस न था। इस प्रकार की कविता से कविता न करना अच्छा होता है।'[७] इसी प्रकार मौलाना सैफी बुखारी नामक हिरात के एक कवि के विषय मे वह लिखता है, "वह पूरा मुल्ला था और अपनी

१ बाबर नामा २३७
२ बाबर नामा २५७।
३ बाबर नामा पृ० २८८–२८९।
४ बाबर नामा ,, २८९।
५ बाबर नामा ,, ५९८।
६ बाबर नामा ,, २७८–७९।
७ बाबर नामा ,, ४६५।

मुल्लाई के प्रमाण मे उन ग्रथो की सूची प्रस्तुत किया करता था जिनका उसने अध्ययन किया था। . उसने फारसी अरूज़ के विषय मे भी एक रचना की जो यद्यपि सक्षिप्त है किन्तु एक प्रकार से बकवास है।"[1]

कविता

बाबर ने युवावस्था से ही कविता करनी प्रारम्भ कर दी थी। बाबुरी नामक एक तरुण के प्रेम उन्माद मे १४९९–१५०० ई० मे उसने फारसी तथा तुर्की के शेरो की रचना प्रारम्भ कर दी थी। इस अवसर पर उसने फारसी के जिन शेरो की रचना की उनमे से एक शेर इस प्रकार है —

शेर

"मेरे समान कोई आशिक खराब तथा अपमानित नही हुआ है,
कोई माशूक तेरे समान निष्ठुर एव उपेक्षणीय नही हुआ है।"[2]

१५००–१५०१ ई० के वृत्तात में वह लिखता है कि, "उन दिनो मे मैं जी बहलाने के लिये एक दो शेर की रचना कर लेता था किन्तु मैं गजल न पूरी कर सका था। मुल्ला बीनाई के उत्तर मे मैंने इस साधारण सी रुबाई की रचना की और उसे उसके पास भेज दिया।"[3] १५०१–२ ई० मे उसने एक पूरी गजल की भी रचना कर ली जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है —

शेर

"अपनी आत्मा के अतिरिक्त मैंने किसी भी मित्र को विश्वास-योग्य नही पाया,
अपने हृदय के अतिरिक्त किसी को भी मैंने भरोसे के काबिल नही पाया।'[4]

१५१९ ई० मे उसने अपनी कविताओ को दीवान के रूप मे सकलित कर लिया और ९ जुलाई, १५१९ ई० को अपनी इस रचना को पूलाद सुल्तान के पास उपहार स्वरूप भेजा। उसके अन्तिम पृष्ठ पर उसने निम्नाकित शेर लिख दिये —

शेर

'हे मन्द समीर यदि तू उस सरो के कक्ष मे प्रविष्ट हो सके,
तो मेरी याद उसे दिला दे, उसके वियोग मे मेरा हृदय टुकडे टुकडे।
उसे बाबर की चिन्ता नही, बाबर को इसकी आशा है,
कि एक दिन ईश्वर उसका फौलाद का हृदय पिघला देगा॥"[5]

वह कविता द्वारा अपने जीवन की अन्य कठिनाइयो को भी भुला देता था। रुग्णावस्था मे वह कविता करके अपना जी बहलाया करता था। २२ अक्तूबर, १५२७ ई० को कम्प ज्वर से पीडित होकर उसने निम्नाकित रुबाई की रचना की —

१ बाबर नामा पृ० ५६२।
२ बाबर नामा „ ५२६।
३ बाबर नामा „ ५३६।
४ बाबर नामा „ ५५३।
५ बाबर नामा „ ११६।

शेर

"दिन के समय मेरे शरीर मे ज्वर उग्र रूप धारण कर लेता है,
रात्रि के आगमन पर निद्रा मेरे नेत्रो को छोडकर चली जाती है।
मेरे दुख एव मेरे सतोष के समान ये दोनो,
जब एक बढता है तो दूसरी कम हो जाती है।"[१]

वह आशु कवि था। कविता के लिये उसे अधिक परिश्रम न करना पडता था। किसी न किसी दृश्य अथवा परिस्थिति से प्रभावित होकर ही वह कविता करता था। ८ जून, १५०८ ई० को उसने इसी प्रकार निम्नाकित रुबाई की रचना करके उसे शाह हसन के पास भेज दिया —

रुबाई

"मेरे मित्र इस दावत मे उस गुलाव के उद्यान की सुन्दरता का आनन्द उठाते हैं,
जब कि मैं उनका साथ देने के आनन्द से वचित हूँ।
किन्तु फिर भी साथ रहने के सब आनन्द उपलब्ध हैं,
मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हे कोई हानि न पहुँचे।'[२]

इसी प्रकार वह फरमानो के हाशियो पर भी शेर लिखा दिया करता था। २७ सितम्बर, १५०८ ई० को उसने ख्वाजा कला के पास जो फरमान बजौर भेजा उसके हाशिये पर निम्नाकित शेर लिख दिया —

शेर

"हे मन्द समीर उस सुन्दर मृगी से मधुर वाणी मे कह दे,
तू ने हमारे सिर को पर्वत एव वन मे दे दिया है।"[३]

कभी कभी वह हास्यरस की कविताए भी किया करता था। "मुबीन" की रचना के प्रसग मे ८ दिसम्बर, १५२५ ई० का वृत्तात देते हुये उसने लिखा है कि, "इससे पूर्व अच्छा-बुरा, गम्भीर परिहास जो कुछ भी मेरी समझ मे आता, दिल बहलाने के लिये पद्य के रूप मे लिख डालता था। जिन दिनो मैं "मुबीन" की कविता के रूप मे रचना कर रहा था, मेरी मन्द बुद्धि को अनुभव हुआ तथा मेरे दुखी हृदय मे यह आया कि खेद है कि जिस वाणी से इतने उत्कृष्ट विचारो की रचना की जाती है, उसका इन नीच शब्दो के लिये प्रयोग किया जाय! खेद है कि जिस हृदय मे इतने उत्कृष्ट विचार आते हो उसमे इतने नीच विचार आयें।'[४] सम्भवत उसने इस घटना के बाद इस प्रकार की कविताए न लिखी किन्तु इससे पूर्व भी उसे व्यग्य एव परिहास हेतु इस प्रकार की कविताओ से बडी रुचि थी। काबुल के कुलकीना नामक रमणीक स्थान के विषय मे उसने ख्वाजा हाफ़िज़ शीराजी के एक शेर का निम्नाकित हास्यजनक अनुकरण तैयार किया —

१ बाबर नामा पृ० १३१-१३२।
२ बाबर नामा ,, ११५।
३ बाबर नामा ,, १२३।
४ बाबर नामा ,, १३५-१३६।

शेर

"क्या ही अच्छा समय था वह जब कि थोडे दिन तक बिना किसी चिन्ता के,
हम कुलबीना निवासी रहे अपनी थोडी सी कुख्याति के साथ।"[१]

जिस समय वह अत्यधिक मदिरापान कर लेता था तो इस प्रकार की कविता की उपेक्षा वह कर भी कैसे सकता था। ८ दिसम्बर, १५२५ ई० को उसने निम्नांकित व्यग्यपूर्ण शेर की रचना की —

शेर

"तुझ सरीखे बदमस्त करने वाले को कोई क्या करे?
कोई बैल वाला किसी गधी को क्या करे?"[२]

मदिरा-पान

मदिरा-पान का भी बाबर के जीवन मे बडा महत्वपूर्ण स्थान था। प्रारम्भ म तो वह मदिरापान करता ही न था और ख्वाजा खावन्द सईद नामक पर्वत के आचल की मदिरा के विषय मे सम्भवत उसे स्वय कभी न चख सकने के कारण उसने "बाबरनामा" मे अन्य लोगो की प्रशसा को इस प्रकार दोहराया है —

शेर

"मदिरा का स्वाद मादक ही जानता है,
जो मादक नही है उसे इसका स्वाद क्या मालूम?"[३]

१५०६ ई० मे जब वह हिरात पहुचा तो उस समय भी वह मदिरापान न करता था। सुल्तान हुसेन के पुत्रो की मदिरापान की गोष्ठिया बडी ही मनोरजक एव हृदयग्राही थी। बदी उज्जमान मार्जा तथा मुजफ्फर मीर्जा की मदिरापान की गोष्ठियो मे वह उपस्थित हुआ किन्तु वह वहा मदिरापान न कर सका, परन्तु मदिरापान की उसे उसी समय ही तीव्र इच्छा होने लगी थी। मुजफ्फर मीर्जा की मदिरा पान की गोष्ठी का उल्लेख करते हुए उसने लिखा है कि, "जब मदिरा का नशा अधिक चढ गया तो महफिल मे गरमी आ गई। उन्होने मुझमे भी मदिरापान कराना चाहा और अपने साथ घसीटना चाहा। यद्यपि मैंने इस समय तक मदिरापान न किया था और उसके आनन्द एव स्वाद को भलीभाति न जानता था किन्तु मुझे मदिरापान की इच्छा होने लगी थी और इस घाटी की सैर करने को मेरा दिल चाहने लगा था। मुझे मदिरापान से बाल्यावस्था मे कोई रुचि न थी। मुझे उसके आनन्द तथा नशे का काई ज्ञान न था। कभी कभी मेरे पिता मुझसे मदिरापान करने के लिये कहते तो मैं कोई न कोई बहाना बना देता और यह पाप न करता। उनकी मृत्यु के उपरान्त ख्वाजा काजी के चरणो के आशीर्वाद से मैं पवित्र जीवन

१ बाबर नामा पृ० १४।
२ बाबर नामा „ १३५।
३ बाबर नामा „ १५।
४ बाबर नामा „ ५८।

व्यतीत करता रहा। मैं उस समय सदिग्ध भोजन का भी प्रयोग न करता था तो मदिरापान का पाप कर ही कैसे सकता था ? अन्त मे जब युवावस्था की मस्ती तथा वासना की तृप्ति हेतु मैं मदिरापान की ओर आकृष्ट हुआ तो उस समय कोई ऐसा न था जो मुझे आग्रह करके पिलाता और न किसी को मेरी रुचि का ज्ञान था। यद्यपि मेरी हार्दिक इच्छा मदिरापान की होती थी किन्तु ऐसे कार्य को जिसको अभी तक न किया हो यकायक ही प्रारम्भ कर देना मेरे लिये कठिन था। मैंने इस समय यह सोचा कि 'अब मीर्जा लोग मुझसे आग्रह कर रहे है और हम हेरी सरीखे सुन्दर नगर मे है जहा भोग विलास की समस्त सामग्री उपलब्ध है तो यदि हम ऐसे स्थान पर भी मदिरापान न करेंगे तो फिर कब करेगे ?' मैंने मदिरापान करने का सकल्प कर लिया किन्तु मैंने यह सोचा कि 'मैंने बदी उज्जमान मीर्जा के घर मे उसके हाथ से, जो मेरे बड़े भाई के समान था, मदिरा न पी थी। यदि मैं उसके छोटे भाई के घर उसके हाथ से मदिरापान करता हूँ तो यह उसे अच्छा न लगेगा।' यह सोचकर मैंने अपने असमजस को उनके समक्ष प्रस्तुत कर दिया। उन्होंने इस कठिनाई को न्याय-सगत समझते हुए उस महफिल मे मुझसे मदिरापान के लिये आग्रह न किया और यह निश्चय हुआ कि जब मैं दोनो मीर्जाओ के साथ हूँ तो मैं उनके आग्रह पर मदिरापान करूँ।"[1] किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस बार हिरात मे मदिरापान न प्रारम्भ कर सका।

"बाबरनामा" के ९१४ हि० (१५०८–९ ई०) तक के उपलब्ध वृत्तात मे मदिरापान का कहीं उल्लेख नही। ९१५ हि० से ९२४ हि० तक का वृत्तात बाबरनामा मे प्राप्त नही। ९२५ हि० (१५१९ ई०) के वृत्तांत में १२ जनवरी, १५१९ ई० को मदिरापान की चर्चा हुई है।[2] सम्भवत उसने ९१५ हि० से ९२५ हि० के मध्य में मदिरापान प्रारम्भ किया। मुजफ्फर मीर्जा की गोष्ठी मे जो आकाक्षा उसने अपने हृदय मे दबा रक्खी थी उसकी तृप्ति उसने किस प्रकार की, सम्भवत यह उल्लेख यदि बाबरनामा मे होता को अवश्य ही बडा रोचक होता। १५१९ ई० ही मे वह अत्यधिक मदिरापान करता हुआ दृष्टिगत होता है। मार्च, १५१९ ई० की एक मदिरापान की गोष्ठी के बाद उसकी जो दशा हो गई उसका उल्लेख उसने इस प्रकार किया है "हम सोने के समय की नमाज तक पीते रहे। तदुपरान्त नौका से उतर कर मदिरा के नशे मे चूर हम लोग घोडो पर सवार हो गये और अपने हाथो मे मशालें लेकर नदी तट से घोडों को सरपट दौडाते हुए नशे में कभी इस ओर और कभी उस ओर लुडकते शिविर तक पहुँचे। मैंने वास्तव मे बहुत पी ली होगी कारण कि जब लोगों ने मुझे दूसरे दिन बताया कि हम लोग मशालें लिये घोडो को सरपट भगाते हुए अपने शिविर में पहुँचे थे तो मैं इस घटना का स्मरण न कर सका। अपने खेमे मे पहुँचकर मैंने अत्यधिक कै की।"[3] इस समय तक वह इतना अधिक मदिरापान करने लगा था कि जब अप्रैल मे ज्वर के कारण सम्भवत उसके मदिरापान पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया तो वह अन्य लोगों को मदिरापान करते हुए देखकर ही आनन्द का अनुभव किया करता था।[4] वह युवावस्था के लिए मदिरा परमावश्यक समझता था। दरवेश मुहम्मद सारबान नामक युवक से उसने बडे रोचक ढग से इस विषय मे १५ अगस्त १५१९ ई० को पूछा कि, "कूतलूक ख्वाजा की दाढी तुम्हें लज्जा दिलाती है। वह दरवेश तथा वृद्ध है किन्तु फिर भी सर्वदा मदिरापान करता रहता है। तुम सिपाही तथा युवक हो,

१ बाबर नामा पृ० ६२।
२ बाबर नामा ,, ६२।
३ बाबर नामा ,, १०५।
४ बाबर नामा ,, ११४।

तुम्हारी दाढी अभी काली है, किन्तु तुमने कभी मदिरापान न किया, इसका क्या अर्थ है?"[1] किन्तु बाबर ने अपना यह भी नियम बना लिया था कि जो कोई मदिरापान न करता था उससे वह मदिरापान के लिये आग्रह भी न करता था।[2] उसे मदिरापान के विषय मे नाना प्रकार की परीक्षाओ मे भी बडा आनन्द आता था। १४ नवम्बर, १५०९ ई० को उसने एकान्त मे मदिरापान का अनुभव करने के लिए तरदी बेग को मदिरा लाने के लिये भेजा। तरदी बेग ने उसे जब यह सूचना दी कि हुलहुल अनीगा नामक एक स्त्री उसके साथ मदिरापान करना चाहती है तो उसे बडा आश्चर्य हुआ किन्तु उसने स्त्री के मदिरापान की परीक्षा के लिये उसे बुलवा लिया। वह लिखता है कि "हमने शाही नामक एक कलन्दर को भी तथा कारेज के एक आदमी को, जो रबाब अच्छा बजा लेता था, बुलवाया। सायकाल की नमाज के समय तक कारेज के पीछे एक पुश्ते पर मदिरापान होता रहा। तदुपरान्त हम लोग तरदी बेग के घर पहुँचे और दीपक के प्रकाश मे लगभग सोने की नमाज के समय तक मदिरापान करते रहे। यह गोष्ठी बडे स्वतत्र रूप से आयोजित हुई और इसमे कोई भी दिखावा न था। मैं लेट गया। अन्य लोग दूसरे घर मे चले गये और वहा नक्कारा बजने तक मदिरापान करते रहे। हुलहुल अनीगा आ गई और मुझे बहुत परेशान किया। मैंने अपने आपको इस प्रकार नीचे गिरा दिया मानो मैं अत्यधिक मदिरापान कर गया हूँ और उससे मुक्त हो गया। मेरी यह इच्छा थी कि मैं किसी को पता न चलने दूँ और अस्तरगच अकेला चला जाऊ किन्तु यह सम्भव न हो सका कारण कि लोगों को इस बात का पता चल गया। अन्ततोगत्वा मै नक्कारा बजने पर तरदी बेग तथा शाहज़ादे को सूचना देकर रवाना हो गया।"[3]

मदिरा के लिये वह रमणीक वातावरण भी परमावश्यक समझता था और आकर्षक स्थान पर केवल वह दूसरो को सतुष्ट करने ही के लिये मदिरापान करता था।[4] उसने जब मदिरापान प्रारम्भ किया तो सम्भवत यह सकल्प कर लिया था कि वह ४० वर्ष की अवस्था मे मदिरापान त्याग देगा। ९२६ हि० (१५१९–२० ई०) मे जब ४० वर्ष पूरे होने मे केवल एक ही साल रह गया तो मदिरापान त्यागने के पूर्व वह पूर्ण रूप से जी भर कर मदिरापान कर लेना चाहता था। वह लिखता है कि "मेरी यह इच्छा थी कि मैं ४० वर्ष की अवस्था मे पहुच कर मदिरापान त्याग दूँ, क्योकि अब केवल एक ही वर्ष रह गया था अत मैं अत्यधिक मदिरापान करने लगा था।"[5] अत्यधिक मदिरापान के समय भी वह इस बात का ध्यान रखता था कि लोग नशे मे अधिक बहकने न पायें।[6] मित्रो के साथ मदिरापान सर्वदा आनन्द-वर्धक होता ही है। बादशाह होने के बावजूद भी उसे मित्रों के साथ मदिरापान करने मे कोई सकोच न होता था। वह चाहता था कि उसके मित्र उसकी गोष्ठी के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर मदिरापान न करें। २५ अप्रैल, १५१९ ई० को उसने इस विषय मे अपने मित्रो से शपथ भी ली।[7]

इस प्रसग मे उसके स्वभाव की सरलता का पता ९ जुलाई (१५१९ ई०) की इस घटना मे भी चलता है. जब दिन ढलने के समय कुछ सवार देहे अफगान मे नगर की ओर जाते हुए दिखाई पडे, पता

१ बाबर नामा पृ० ११६, पृ० २३२ भी देखिये।
२ बाबर नामा ,, १९६, १७२।
३ बाबर नामा ,, १२७।
४ बाबर नामा ,, १३२।
५ बाबर नामा ,, १३०।
६ बाबर नामा ,, १०३, १२१।
७ बाबर नामा ,, ११३।

चला कि उसका एक मित्र दरवेश मुहम्मद सारवान मीर्ज़ा खान वैस का दूत बनकर उसकी सेवा मे आ रहा है। बाबर ने छत से ही चिल्लाकर उसे पुकारा "दूत की प्रथाओ एव नियमितताओ को छोडकर बिना किसी सकोच के तुरन्त आ जाओ।"[1]

मदिरा के अतिरिक्त वह माजून तथा अरक का भी प्रयोग करता था किन्तु इन तीनो चीज़ो का वह कभी साथ साथ सेवन न करता था।[2]

२५ फरवरी १५२७ ई० को राणा सागा से युद्ध के समय उसे मदिरापान से तोबा करनी पडी जिसका उल्लेख उसने पद्यो मे इस प्रकार किया है —

शेर

"कब तक तू पाप से स्वाद लेती रहेगी,
तोबा स्वाद से शून्य नही है, इसे चख।"

पद्य

"वर्षों तक कितने पापो ने तुझे अपवित्र किया,
कितनी शान्ति तुझे पापो ने दी?
कितना तू अपनी वासनाओ का दास रहा,
कितना तेरा जीवन व्यर्थ गया?"

× × ×

"अब तू गाजियो के समान सकल्प करके अग्रसर हुआ है,
तू ने अपने मुख मे अपनी मृत्यु देख ली है।
जो कोई मृत्यु को दृढतापूर्वक पकडने का सकल्प कर लेता है,
तू जानता है कि उसमे क्या परिवर्तन हो जाता है?"[3]

किन्तु वह माजून का सेवन बराबर करता रहा।[4] मदिरा त्याग देने के कष्ट को वह कभी भुला न सका और उसने सम्भवत अफीम का भी अधिक मात्रा मे प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था।[5] २४ अक्तूबर, १५२७ ई० के वृत्तात मे वह लिखता है कि उसने पारे का भी प्रयोग किया।[6] फरवरी १५२९ ई० को उसने ख्वाजा क्लां के नाम जो पत्र लिखा उसमे इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उसे इस कारण मदिरापान न करने का परामर्श दिया कि बिना मित्रो के मदिरापान का आनन्द ही क्या? वह लिखता है कि, "वास्तव मे मदिरा की गोष्ठी की पिछले दो वर्षों तक मुझे अपार एव असीम अभिलाषा रही, यहा तक कि मदिरा की इच्छा से मेरे नेत्रो मे आसू आ जाते थे। ईश्वर को धन्य है कि इस वर्ष मुझे इस कष्ट से मुक्ति

१ बाबर नामा पृ० ११६।
२ बाबर नामा ,, २०४, १४७।
३ बाबर नामा ,, २३०।
४ बाबर नामा ,, २५४, २५५, २६२, २७६, २८०, २६१, ३१०, ३११, ३२४।
५ बाबर नामा ,, २७५।
६ बाबर नामा ,, २८२।

प्राप्त हो गई। सम्भवत. यह उस अनुवाद का आशीर्वाद है जिसकी मैंने पद्य मे रचना की थी। तू भी मदिरापान त्याग दे। मदिरापान एव आनन्द-मगल की गोष्ठियाँ यदि मित्रो एव साथियो के साथ हो तो फिर इनका क्या कहना, किन्तु अब तू किसके साथ आनन्द मना सकता है, यदि तू शेर अहमद तथा हैदर कुली के साथ इन गोष्ठियो का आनन्द लेता हो तो फिर तेरे लिये मदिरापान का त्याग कठिन न होना चाहिये।"[१] इससे एक वर्ष पूर्व उसने अपने विचार एक रुबाई मे इस प्रकार व्यक्त किये थे —

रुबाई

"मदिरा से तोबा करके मैं बडे असमजस में हूँ,
कैसे कार्य करना चाहिये, मुझे ज्ञान नही, इतना व्याकुल मैं हूँ।
जबकि अन्य लोग तोबा करते हैं और त्याग की शपथ लेते हैं,
मैंने त्याग के विषय मे शपथ ली है, और मैं तोबा करता हूँ॥"[२]

शिकार

सैनिक जीवन मे शिकार को बडा ही महत्व प्राप्त है। उसने बाबरनामा मे अनेक स्थानो पर शिकार का विवरण दिया है। काबुल के वृत्तान्त में उसने पक्षियो तथा मछलियों के शिकार का विशेष रूप से उल्लेख किया है। अन्य स्थानो पर भी उसने मछलियों तथा अन्य पशुओ के शिकार की बार बार चर्चा की है। कमरगह अथवा घेरा बना कर शिकार खेलने की प्रथा उस समय अत्यधिक प्रचलित थी। सुल्तान फीरोज शाह के इस प्रकार के शिकार के घेरो का शम्स सिराज अफीफ ने भी उल्लेख किया है।[३] बाबर ने भी अपने शिकार के घेरो की चर्चा की है। कट्टवाज के इसी प्रकार के शिकार के एक घेरे का उल्लेख उसने ९१३ हि० (१५०७-८ ई०) के वृत्तात मे किया है।[४] २५ मार्च के वृत्तान्त मे उसने चीते के शिकार की भी चर्चा की है। वह लिखता है कि "चीते की आवाज़ सुन कर घोडे भय के कारण भडक गये और अपने सवारो को लेकर इधर उधर कन्दराओ एव गुफाओ मे गिरने लगे। चीता पुन जगल मे प्रविष्ट हो गया। उसे बाहर निकालने के लिए हमने एक भैंसे के लाने का आदेश दिया और उसे जगल के सिरे पर बधवा दिया। चीता पुन दहाडता हुआ आया। प्रत्येक दिशा से उस पर बाणो की वर्षा की गई। मैंने अन्य लोगो के साथ बाण चलाया। खलवी नामक एक पदाती ने उसके ऊपर भाले का वार किया किन्तु चीते ने भाले को चबा लिया और भाले की नोक को तोड डाला। बाण खाकर वह झाडियो मे घुस गया और वहाँ बैठा रहा। बाबा यसावल नगी तलवार लेकर उसके समीप तक बढता चला गया। चीते ने जस्त लगाई। बाबर ने उसके सिर पर तलवार का वार किया। अली सीस्तानी ने उसके कूल्हे पर प्रहार किया। चीता नदी मे कूद पडा तथा जल मे मार डाला गया। उसे जल के बाहर निकाला गया और उसकी खाल खीच ली गई।"[५]

१ बाबर नामा पृ० ३०६-०७।
२ बाबर नामा पृ० ३०६।
३ शम्स सिराज अफ़ीफ़ : "तारीखे फ़ीरोजशाही" (कलकत्ता) पृ० ३१५-३२६ (रिजवी : "तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग २" अलीगढ़ १९५७ ई०) पृ० १३५-१३६।
४ बाबर नामा पृ० ७७।
५ बाबर नामा पृ० १०६।

हिन्दुस्तान मे कलहरा नामक मृग के शिकार की स्थानीय विधि, जिसका उसने उल्लेख किया है बडी ही रोचक है।[१] पक्षियो के शिकार का भी उसने कई स्थानो पर उल्लेख किया है। पक्षियों का शिकार अधिकाश बाज अथवा शिकरों द्वारा किया जाता था। २६ मार्च १५१९ ई० के वर्णन से उसने एक बाज के उड जाने पर खेद प्रकट किया है।[२]

वन पशुओ के स्वभाव के अध्ययन से भी उसे बडी रुचि थी और वह उनके विषय मे शोध किया करता था। हाथी तथा गैंडे के विषय मे वह कहता है कि "मैं सोचा करता था कि यदि हाथी की किसी गैंडे से मुठ-भेड करा दी जाये तो क्या हो?" १० दिसम्बर १५२५ ई० को सिंध नदी को पार करने के पूर्व उसे यह अवसर मिल गया किन्तु महावतो के आगे बढने पर गैंडे ने हाथी का सामना न किया और दूसरी ओर भाग गया।[३]

आमोद-प्रमोद

"बाबरनामा" से उस समय के आमोद-प्रमोद तथा सैर तमाशो का भी पता चलता है। उसने अपने समय के शतरज एव चौसर इत्यादि के कई खिलाडियो का उल्लेख किया है। नाना प्रकार के शिकार तथा बाज इत्यादि उडाने के साथ साथ खेलो मे उसने मेढक फाद[४] की भी चर्चा की है। शाह हुसेन के दरबार के आमोद-प्रमोद का उसने सविस्तार वर्णन किया है। अपने पिता उमर शेख मीर्जा के कबूतर उडाने तथा इसी प्रकार के अन्य खेलो से रुचि की भी चर्चा की है[५] किन्तु सम्भवत उसे इन बातो से अधिक रुचि न थी। वह अपना खाली समय कविता, मदिरापान एव सगीत मे व्यतीत करता था परन्तु कविता, मदिरापान एव सगीत उसके मनोरजन के साधन ही थे, उनके द्वारा कभी भी उसके किसी कार्य मे बाधा नही पडी। उसने पहलवानो तथा मल्लयुद्ध का कई स्थानो पर उल्लेख किया है और मल्लयुद्ध से अपनी विशेष रुचि प्रकट की है।[६] हिन्दुस्तान के बाज़ीगरो का भी उसने विस्तार से विवरण दिया है और उनकी कला की सराहना की है।[७]

बाबर की अन्य रचनाये

दीवान एव बाबरनामा के अतिरिक्त उसकी एक अन्य महत्वपूर्ण रचना "मुबीन" है जिसे उसने ९२८ हि० (१५२२ २३ ई०) मे पूरा किया। यह तुर्की पद्य मे है और फ़िक़्ह की समस्याओ से सम्बन्धित है। मीर अला उद्दौला ने नफायसुल मआसिर मे लिखा है, "उन्होने (बाबर ने) फ़िक़्ह के विषय पर 'मुबीन' नामक पुस्तक की रचना की। इसमे हज़रत इमामे आज़म[८] के सिद्धातो की पद्य मे रचना की।"[९]

१ बाबर नामा पृ० १७४।
२ बाबर नामा ,, ११०।
३ बाबर नामा ,, ११७।
४ बाबर नामा , ४८०।
५ बाबर नामा ,, ४७२-४७३।
६ बाबर नामा ,, ३०८, ३११, ३१२, ३१६।
७ बाबर नामा ,, २६५।
८ इमाम अबू हनीफ़ा।
९ नफ़ायसुल मआसिर (प्रस्तुत अनुवाद) पृ० ३५२।

किन्तु उसने दृढतापूर्वक अपने साथियो के विरोध का मुकाबला किया। उसने अपने साथियो मे कहा, "राज्य एव दिग्विजय बिना साधन तथा अस्त्र शस्त्र के सम्भव नही। बादशाही तथा शासन बिना सेवको तथा अधीनस्थ राज्य के नही प्राप्त हो सकते। कई वर्षों के सघर्ष, कठिनाइयो, लम्बी चौडी यात्रा, अपने आप तथा अपनी सेना को रणक्षेत्र मे झोक कर एव घोर युद्ध के उपरान्त हमने ईश्वर की कृपा से शत्रुओ की इतनी बडी सख्या को इस आशय से पराजित किया कि ऐसे विस्तृत प्रदेशो तथा राज्यो को अपने अधिकार मे कर ले। अब आज क्या हो गया है और कौन सी ऐसी विपत्ति आ गई है कि उस देश को जिसे प्राणो की बाजी लगा कर विजय किया है अकारण छोड कर चले जायें ? क्या हमारे भाग्य मे यही लिखा है कि हम सर्वदा काबुल मे दरिद्रता के कष्ट भोगते रहे ? अब आज से मेरे किसी हितैषी को ऐसी बात न करनी चाहिए किन्तु जिस किसी मे शक्ति नही है और उसने जाना निश्चय कर लिया है तो फिर उसे रुकना भी न चाहिए।"[1] सम्भवत उसके सहायक भी उसके आक्रमणो को केवल लूट मार एव धन एकत्र करने का साधन समझते थे किन्तु उसने हिन्दुस्तान पर राज्य करना निश्चय कर लिया था। उसे सुल्तान महमूद *गजनवी सरीखे बादशाहो पर आश्चर्य होता था जो हिन्दुस्तान तथा खुरासान को विजय कर लेने के उपरान्त* भी गजनी ही को अपनी राजधानी बनाये रहे।[2] सम्भवत ख्वाजा कला काबुल के लिए इतना बेचैन था कि वह हिन्दुस्तान मे किसी प्रकार रहना ही न चाहता था। उसने लौटते समय अपने देहली के भवन पर यह शेर लिखवा दिया—

शेर

यदि मैं कुशलतापूर्वक सिन्ध पार कर लू,
तो मेरा मुह काला हो जाये यदि मैं हिन्द की इच्छा करू।"

बाबर ने उसके इस व्यग्य की कटु आलोचना करते हुए एक अन्य रुबाई की रचना की जिसमें उसने ख्वाजा कला को इस प्रकार फटकारा—

रुबाई

सैकडो धन्यवाद दे हे बाबर, कि उदार क्षमा करने वाले ने,
प्रदान किये है तुझ सिन्द *तथा हिन्द और बहुत से राज्य।*
यदि तू (ख्वाजा) नही सहन कर सकता है इन स्थानो की गरमी
यदि तू कहे, मुझे ठडी दिशा देखनी है' तो वहा गजनी है।'[3]

बाबर की नेतृत्व-शक्ति

हिन्दुस्तान की विजय मे उसने अद्भुत नेतृत्व शक्ति एव सैन्य सगठन की योग्यता भली भाति प्रदर्शित की है किन्तु इसके पूर्व भी वह अनेक अवसरो पर इस प्रकार की योग्यता का प्रदर्शन कर चुका था। ९१३ हि० (१५०७-८ ई०) में उसने ५-७ हजार अश्वारोहियो को, जो अपने घोडो को सरपट भगाये

१ बाबर नामा पृ० २०४।
२ बाबर नामा ,, २६
३ बाबर नामा , २०५।

आयतो एव अनावश्यक शब्दो के जाल के कारण इसके द्वारा बाबर के योग्य एव कुशल सैनिक होने का प्रमाण भली-भाति नही मिल पाता और युद्ध की केवल साधारण सी रूप-रेखा प्रस्तुत हो जाती है। अपने पूर्व के अभियानो के समय भी वह मार्गों एव घाटो का बडी सावधानी से प्रबन्ध कराता था। नौकायें एकत्र कराने एव पुलो के निर्माण की ओर वह विशेष ध्यान देता था।

तोप-खाना

बाबर को सब से अधिक अपने तोपखान एव बन्दूको पर विश्वास था। ९१४ हि० से ९२४ हि० तक का वृत्तान्त नष्ट हो जाने के कारण इस बात का पता नही चलता कि उसने सर्वप्रथम बन्दूक का प्रयोग अपनी सेना मे कब से प्रारम्भ किया। तोप बन्दूक एव जजीरो से जुडी हुई गाडियो का प्रयोग आटोमन सुल्तान सलीम ने चाल्दिरान के युद्ध मे शाह इस्माईल सफवी के विरुद्ध १ रजब ९२० हि० (२२ अगस्त १५१४ ई०) को किया।[1] उस्ताद अली कुली ने सम्भवत यह युद्ध देखा था और उनकी उपयोगिता के विषय मे उसने बाबर को सतुष्ट कर दिया होगा। "बाबरनामा" मे बदूक के प्रयोग का सर्वप्रथम उल्लेख ६ जनवरी १५१९ ई० के वृत्तान्त में किया गया है। वह लिखता है कि "क्योकि बजौरी लोगो ने कभी तुफग न देखा था अत सर्वप्रथम उन्होने उसकी कोई चिन्ता न की अपितु जब उन्होने उसकी आवाज सुनी तो उसकी खिल्ली उडाते हुए बडा ही अनुचित व्यवहार किया। उस दिन उस्ताद अली कुली ने तुफग द्वारा पाच आदमियो की हत्या कर दी और वली खाज़िन ने दो आदमियो की। अन्य तुफग चलाने वालो ने भी तुफग चलाने मे बडी कुशलता दिखाई और ढाल, ज़िरह बक्तर एव कुसारु की आड मे आदमियो की निरन्तर हत्या की। लगभग ७-८ अथवा १० बजौरी तुफग द्वारा रात तक मार डाले गये। इसके बाद ऐसा हुआ कि तुफग चलने के कारण एक सिर भी दृष्टिगत न होता था।'[2]

इबराहीम के युद्ध मे उस्ताद अली कुली ने अपनी कुशलता का पूर्ण परिचय दिया। तूलगमा एव तोप तथा बन्दूक के प्रयोग ने इबराहीम की एक लाख की सेना को कुछ ही घटो मे तहस-नहस कर दिया। रूम की प्रथानुसार गाडियो को जोडने के लिए जजीर उपलब्ध न होने के कारण कच्ची खाल की रस्सियो का प्रयोग किया गया।[3]

बाबर ने यह भली-भाति समझ लिया था कि उसकी सफलता का मूल मत्र तोपखाने की उन्नति ही है अत इस विषय मे नित्य नये प्रयोग होते रहते थे। इबराहीम लोदी की पराजयोपरान्त उस्ताद अली कुली को ब्याना तथा अन्य किलो के विरुद्ध जिन्होने अभी तक अधीनता स्वीकार न की थी, प्रयोग हेतु एक बडी तोप के ढालने का आदेश दिया गया। २२ अक्तूबर १५२६ ई० को बाबर स्वय इस तोप के ढालने का दृश्य देखने पहुचा किन्तु यह शोध सफल न हो सका। बाबर की उपस्थिति मे अपने प्रयोग को असफल होते हुए देख कर उस्ताद अली कुली आत्महत्या कर लेना चाहता था किन्तु बाबर उसकी उपयोगिता को भली-भाति समझता था अत उसने उसे प्रोत्साहन देते हुए खिलअत प्रदान की और इस प्रकार उसे इस झेप से मुक्ति दिलाई।[4] १० फरवरी १५२७ ई० को जब उस्ताद अली कुली ने यह तोप तैयार कर ली

१ हबीबुस्सियर भाग ३ खंड ४ पृ० ७८।
२ बाबर नामा ,, ९१।
३ बाबर नामा ,, १५३ १५८।
४ बाबर नामा ,, २१६।

तो वाबर उससे पत्थर चलाने का दृश्य देखने स्वय पहुचा।[1] उस्ताद अली कुली बराबर उन्नत तोपें बनाने का प्रयत्न किया करता था[2] किन्तु सम्भवत बाबर के समय तक तोप से पत्थर के गोले दागे जाते थे, धातु के गोलों का उस समय तक प्रयोग प्रारम्भ न हुआ था। अन्य तोपो की परीक्षा तथा पत्थर चलाने के दृश्य को देखने के लिए, जब भी बाबर को अवसर मिलता तो वह पहुच जाता था।[3] तोप चलाने के लिये उचित व्यवस्था हेतु मुहसिलों तथा बेलदारो की नियुक्ति का उसने कई स्थानो पर उल्लेख किया है।[4]

बाबर की राजनीति

"बाबरनामा" से बाबर के राजनीति सम्बन्धी दृष्टिकोण एव राज्य के सिद्धान्तो के ज्ञान पर भी प्रकाश पडता है। वह राज्य मे किसी प्रकार के साझे को बडा असम्भव समझता था। सुल्तान हुसैन की मृत्यु के उपरान्त उसके उत्तराधिकारियो ने शासन प्रबन्ध की जो व्यवस्था बनाई उससे वह किसी प्रकार सहमत न हो सका।[5] उसके पूर्वज अपने समस्त आचार-व्यवहार मे चिंगीज़ी तोरे[6] का सर्वदा पालन करते रहते थे। बाबर ने उनके सम्बन्ध मे लिखा है कि "यद्यपि इसके लिये कोई दैवी आदेश नही है जिसका अनिवार्य रूप से पालन ही किया जाय किन्तु फिर भी व्यवहार के अच्छे नियमो का, चाहे जिसने भी उन्हें बनाया हो, पालन करना ही चाहिये।"[7]

अपने समस्त मुख्य अभियानो के पूर्व वह परामर्श गोष्ठी भी आयोजित करता रहता था और लोगो के परामर्श को ध्यानपूर्वक सुनता था। काबुल पर अधिकार जमाने के पूर्व उसे शासन प्रबन्ध का अधिक अनुभव न था। काबुल एव गज़नी पर अधिकार प्राप्त हो जाने के उपरान्त उसने वहा से ३० हज़ार खरवार[8] अनाज की वसूली का आदेश दे दिया। वह स्वय लिखता है कि, "हम लोगो को उस समय फसल तथा उत्पत्ति का कोई ज्ञान न था और यह मालगुज़ारी बडी ही अधिक थी। इस कारण देश को अत्यधिक हानि उठानी पडी।"[9] वह जिस स्थान को विजय करता वहा के स्थानीय शासन प्रबन्ध की प्रथाओं का पालन करना प्रारम्भ कर देता था। भीरा की विजय के उपरान्त २२ फ़रवरी को उसने भीरा के प्रतिष्ठित लोगो तथा चौधरियो को बुलवा कर यह आदेश दिया कि वे चार लाख शाहरुख़ी माले अमान[10] के रूप मे प्रस्तुत करें और इसके लिये उसने मुहसिल नियुक्त कर दिये।[11] उन्हे इस बात का आदेश दिया गया कि वे इस प्रदेश को इस कारण कि वह किसी समय तुर्कों के अधीन रह चुका था, अपना

१ बाबर नामा पृ० २२८।
२ बाबर नामा ,, २६०।
३ बाबर नामा , २६६-२७०।
४ बाबर नामा ,, २२६, २३६, २५५।
५ बाबर नामा ,, ५४।
६ चिंगीज़ी विधान।
७ बाबर नामा पृ० ७८।
८ गधे के बोझ के बराबर।
९ बाबर नामा पृ० ३३।
१० किसी प्रकार की हानि न पहुचाये जाने के सम्बन्ध मे कर।
११ बाबर नामा पृ० १०१।

ही समझ कर उसमे किसी प्रकार की लूट मार की अनुमति न दें।[1] वह अपनी प्रजा पर कर की वसूली मे किसी प्रकार के अत्याचार के पक्ष मे न था।[2] उसका आदेश था कि यदि कोई रैयत के समान अधीनता स्वीकार कर ले तो उससे उसी प्रकार व्यवहार करना चाहिये; जो अधीनता न स्वीकार करे उसे आज्ञाकारिता स्वीकार करने पर विवश किया जा सकता है तथा उसका दमन हो सकता है।[3] व्यापारियों के प्रति उसकी बडी सहानुभूति थी। वह उन्हे किसी प्रकार की हानि न पहुचने देना चाहता था।[4]

पानीपत के युद्ध के पूर्व जो कुछ भी धन सम्पत्ति प्राप्त होती थी उसका अधिकाश भाग वह लोगो मे बाट दिया करता था। ५ मार्च को हुमायू के हमीद पर विजय प्राप्त कर के लौटने के उपरान्त उसने उसे हिसार फीरोज़ा तथा उसके अधीनस्थ स्थान एव एक करोड नक्द धन पुरस्कार स्वरूप प्रदान कर दिया।[5] आगरा के खजाने को भी उसने इसी प्रकार बडी उदारता से लोगो को बाट दिया[6] और अपने आपको कलन्दर कहलाने मे गर्व का अनुभव किया करता था। हिन्दुस्तान मे भी उसने प्रचलित शासन पद्धति का अनुसरण किया और विभिन्न प्रदेशो को पूर्ण रूप से अधिकार मे करने तथा वहा शाति स्थापित रखने के लिये अक्तादार एव शिक्दार[7] नियुक्त किये। कुछ प्रदेश खालसा[8] मे सम्मिलित कर लिये गये। किन्तु फिर भी उसके निर्माण कार्यों तथा दान पुण्य के कारण उसे धन के अभाव का सर्वदा ही सामना करना पडा। २२ अक्तूबर १५२८ ई० के वृत्तान्त मे वह लिखता है कि "इस बीच मे सिकन्दर तथा इबराहीम के देहली एव आगरा के खज़ानो का अन्त हो गया। अत बृहस्पतिवार ८ सफर को यह शाही आदेश हुआ कि प्रत्येक वजहदार युद्ध की सामग्री, अस्त्र शस्त्र एव बन्दूक तथा तोप चलाने वालो के वेतन हेतु अपनी वजह मे से १०० में से ३० दीवान मे दाखिल कर दें।"[9]

डाक का प्रबन्ध तुर्कों के राज्य की बहुत बडी विशेषता है। इब्ने बत्तूता न अपनी यात्रा के विवरण मे मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्य काल के डाक के प्रबध की भूरि-भूरि प्रशसा की है।[10] बाबर ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिया। १७ दिसम्बर १५२८ ई० के वृत्तान्त मे वह लिखता है कि "बृहस्पतिवार ४ रबी-उस्सानी को यह निश्चय हुआ कि चीकमाक बेग, शाही तमगाची के नवीसिन्दे के साथ आगरा से काबुल के मार्ग की दूरी की नाप करे। यह आदेश दिया गया कि ९-९ कुरोह पर १२ कारी ऊचा मीनार तैयार किया जाये। उन पर एक चार दरे का निर्माण किया जाये। १८-१८ कुरोह पर छ घोडे डाक चौकी के लिये बाधे जायें। डाक के प्रबन्धको तथा माईसो एव घोडो के दाने के व्यय का प्रबन्ध इस प्रकार किया जाये कि यदि वह स्थान जहा घोडे बाधे जायें खालसे के परगने के समीप हो तो इन वस्तुओं की वहा से व्यवस्था की जाये अन्यथा जिस बेग के परगने मे वह स्थान हो, वह उसकी व्यवस्था करे।"[11]

१ बाबर नामा पृ० १०२।
२ बाबर नामा ,, ११४।
३ बाबर नामा ,, २०६।
४ बाबर नामा ,, ७८, १२६।
५ बाबर नामा ,, १५१।
६ बाबर नामा ,, २०१।
७ बाबर नामा ,, २२०, २६६, १६०।
८ बाबर नामा ,, २२०, २६६।
९ बाबर नामा ,, २८२।
१० इब्ने बत्तूता : यात्रा विवरण, पेरिस १९४९ ई० (पृ० ६५-६८), रिजवी - "तुगलुक कालीन भारत' अलीगढ १९५६ ई०) पृ० १५७ ५६।
११ बाबर नामा पृ० २६२।

राजदूतो के प्रति वह जिस प्रकार व्यवहार करता था[1] उससे पता चलता है कि उसे अपने पूर्वजो के राज्य तथा मध्य एशिया की राजनीति से बडी गहरी रुचि थी और भारतवर्ष पहुच कर वह कभी भी अपने पूर्वजो के राज्य को न भुला सका। हुमायू के नाम जो पत्र उसने लिखा उसमे अपनी नीति को स्पष्ट कर दिया है किन्तु ख्वाजा कला को जो पत्र लिखा है उसमें इस बात पर अधिक जोर दिया गया है कि उसकी बहुत बडी अभिलाषा यह है कि वह उस क्षेत्र मे पहुच जाये। वह लिखता है कि, "हिन्दुस्तान के मामले थोडे बहुत सुलझते जा रहे हैं। परमेश्वर से आशा है कि यहा के कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जायेंगे। ईश्वर ने चाहा तो इन कार्यो के सुव्यवस्थित होते ही मैं उस ओर तुरन्त प्रस्थान कर दूगा।"[2] इसी पत्र मे उसने उन कार्यो की एक सूची भी भेजी है जिन्हे उसने ख्वाजा कला के लिये परमावश्यक बताया है।[3] इनमे खजाना एकत्र करने को अत्यधिक महत्व दिया है। उन बातो के, जिनका आदेश दिया गया है, अध्ययन से पता चलता है कि बाबर को उस समय तक अपने विभिन्न अनुभवो के आधार पर शासन प्रबन्ध एव राज्य-व्यवस्था का बडा अच्छा ज्ञान हो गया था।

हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाने के बाद भी उसने यहा के शासन प्रबध मे थोडा बहुत योगदान भी किया। घटा बजाने की प्रथा म उसने एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया जिससे अवश्य ही बडा लाभ हुआ होगा। वह लिखता है कि "मैंने आदेश दे दिया कि रात्रि तथा बदली मे घडी के उपरान्त पहर का भी चिह्न बजाया जाय। उदाहरणार्थ रात्रि के प्रथम पहर की तीसरी घडी को बजाने के उपरान्त घडियाली लोग जरा सा ठहर कर पहर का चिह्न बजा दें जिससे यह पता चल जाये कि यह तीसरी घडी पहले पहर की है, इसी प्रकार रात्रि के तीसरे पहर की चार घडी बजा कर घडियाली ठहर जायें और तीसरे पहर का चिह्न बजायें, जिससे यह पता चल जाये कि यह चौथी घडी रात के तीसरे पहर की है। इस व्यवस्था से बडा लाभ हुआ। जो कोई रात मे जाग जाता था और घटा सुनता था उसे पता चल जाता था कि यह रात के किस पहर की कौन सी घडी है।'[4] आगरा, चन्दवार, ब्याना तथा उस क्षेत्र मे डोल से सिंचाई होती थी किन्तु उसने अपने आगरा के उद्यानो मे रहँट लगवा कर सिंचाई की व्यवस्था कराई।[5]

बाबर के पूर्व के हिन्दुस्तान के राज्य

बाबरनामा से सुल्तान इबराहीम लोदी एव उसके अमीरो के राज्य का भी हाल ज्ञात होता है। बाबर ने कई स्थानो पर अफगानो के राज्य की शक्तिहीनता एव विद्रोहो की चर्चा की है। और इस बात को भली भाति स्पष्ट कर दिया है कि उसे किस प्रकार उनको दबाने मे कठिनाई का सामना करना पडा। अपने पूर्व के दो आक्रमणकारियो, सुल्तान महमूद एव सुल्तान मुइज्जुद्दीन मुहम्मद साम (शिहाबुद्दीन) के साधनो एव सेना का उल्लेख करते हुए उसने अपने साधनो की तुलना की है।[6] उसने अपने समकालीन शासको मे अफगानो के अतिरिक्त गुजरात, दकिन (दक्षिण), मालवा, बगाल, विज्यानगर एव राणा

१ बाबर नामा पृ० २६३।
२ बाबर नामा „ ३०४।
३ बाबर नामा „ ३०५।
४ बाबर नामा „ १६६।
५ बाबर नामा „ १७१।
६ बाबर नामा „ २१३।
७ बाबर नामा „ १६४।

सागा के राज्यों की चर्चा की है।[1] बाबरनामा द्वारा हिन्दुस्तान के तुर्कों एव अफगानो की सैन्य-व्यवस्था का भी पता चलता है। सुल्तान इबराहीम लोदी से युद्ध के प्रसग मे वह लिखता है, "हिन्दुस्तान मे यह प्रथा है कि ऐसे महान् सकटो के अवसरो पर धन दे कर, इच्छानुसार सेना भरती कर ली जाती है। वह 'हिन्दी' कहलाते हैं।"[2] सेना रखने की विधि की चर्चा करते हुये वह लिखता है,"हिन्दुस्तान के प्रचलित नियम के आधार पर १ लाख की विलायत वाले १०० अश्वारोही और करोड की विलायत वाले १०,००० अश्वारोही रखते थे। काफिरो के इस नेता ने जो स्थान विजय कर लिये थे, वे १० करोड के थे अत उसके पास १००,००० अश्वारोही होने चाहिए।"[3] बाबरनामा मे तत्कालीन विभिन्न प्रातो की जमा (राजस्व) की भी चर्चा की गई है।[4] इस कारण कि आईने अकबरी के अतिरिक्त अकबर के पूर्व के इतिहासो मे राजस्व के सम्बन्ध मे इतना भी ज्ञान किसी ग्रथ से नहीं प्राप्त होता बाबरनामा का यह वृत्तान्त अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बाबरनामा से यह भी पता चलता है कि उस समय तक हिन्दुस्तान के समस्त आमिल[5], कारीगर एव श्रमिक हिन्दू होते थे। माल्गुजारी की वसूली मे तुर्कों के राज्य मे भी बडी कठिनाई होती थी। अला उद्दीन के तत्सम्बन्धी कठोर नियम बडे प्रसिद्ध हैं। बाबरनामा के वृत्तातानुसार हिन्दुस्तान के मैदान के बहुत से भागो मे बडे बडे काटेदार जगल होते थे जहा परगनों के निवासी शरण ले लेते थे और विद्रोह कर देते थे तथा कर नही अदा करते थे।[6] देहली के सुल्तानो के इतिहासो मे मवास[7] शब्द का इसी प्रसग मे बडा अधिक प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ यही काटेदार जगल है। इसके अतिरिक्त हलचल एव अशाति के समय भी इसी प्रकार के सुरक्षित स्थानो का प्रयोग होता था। कोटला की बडी झील की चर्चा करते हुये वह लिखता है कि, इसके एक ओर से दूसरे ओर (की कोई वस्तु) नही दिखाई पडती। इसके मध्य मे एक टीला है। इसके चारो ओर बहुत सी छोटी-छोटी नौकायें थीं। झील के समीप के ग्रामो के निवासी हलचल तथा अशाति के समय नौकाओ पर बैठ कर उसी टीले पर चले जाते है। हमारे आगमन पर भी नौकाओं मे बैठ कर कुछ लोग झील के मध्य मे चले गये।"[8]

बाबरनामा से यह भी पता चलता है कि सुल्तान सिकन्दर ने अपने राज्यकाल मे धौलपुर मे एक बाध का निर्माण कराया था जहा ऊचाई पर वर्षा का जल एकत्र होता था, जिससे एक बहुत बडी झील बन जाती थी। इस झील के पूर्व मे एक उद्यान भी था।[9]

हिन्दुस्तान का भूगोल, पशु-पक्षी, वनस्पति इत्यादि

बाबरनामा द्वारा हिन्दुस्तान के भूगोल पर भी पर्याप्त प्रकाश पडता है। उसने काबुल से पानीपत

१ बाबर नामा पृ० १६४ १६६।
२ बाबर नामा „ १५४।
३ बाबर नामा „ २३८।
४ बाबर नामा „ २०० २०१।
५ कर वसूल करने वाले।
६ बाबर नामा पृ० १७१।
७ मिनहाज सिराज "तबकात नासिरी" (कलकत्ता १८७३-८१ ई० पृ० २८७, रिजवी "आदि तुर्क कालीन भारत' (अलीगढ १६५६) पृ० ६४।
८ बाबर नामा पृ० २५४।
९ बाबर नामा पृ० २७४।

और देहली तक के समस्त मुख्य स्थानो का विवरण दिया है और साथ ही साथ उन स्थानों के महत्व को भी स्पष्ट किया है। भूगोल का उल्लेख करते हुए उसने भारतवर्ष की स्थिति, उत्तरी पर्वत, अरावली तथा नदियो की चर्चा की है।[१] नदियो के साथ साथ उसने सिंचाई के साधनो का भी उल्लेख किया है। नहर, रहँट, चरसा तथा डोल की विधि पर विस्तार से प्रकाश डाला है।[२] उसका ग्रामो के वसने तथा उजडने का विवरण बडा ही रोचक है।[३] हिन्दुस्तान के वन पशुओ मे से हाथी, गैंडे, जगली भैंसे, नील गाय, कोतह पाईचा, कलहरा, मृगो, गीनी गाय, के उल्लेख के साथ साथ बन्दर, नवल तथा गिलहरी की भी चर्चा की है। और उनके स्वभाव को भी भली भाति व्यक्त किया है।[४] पक्षियो मे मोर, तोते, शारक, लूजा, दुर्राज, कजाल, फूलपैकार, जगली मुर्ग, चील्सी, शाम, बूदना, खर्चल, चर्ज, बागरीकरा, ढीग, सारस, मानेक, लगलग, बुजक, गर्मपाई, शाह मुर्ग, जुम्माज, आलाकारगा, चमगादड, नीलकठ एव कोयल का विवरण दिया है।[५] जल-जतुओ मे उसने शेरआबी सियाहसर, घडियाल, खूकेआबी तथा मछलियो और मेढको की चर्चा की है।[६] फलो मे आम की प्रशसा उसके पूर्व भी अन्य विद्वान् कर चुके हैं। अमीर खुसरो ने आम के सम्बन्ध मे कविता की भी रचना की है और इब्ने बतूता ने भी अपने पर्यटन-वृत्तात में आमा का उल्लेख किया है।[७] बाबर ने आम के विषय मे बडा ही रोचक विवरण दिया है। इसी प्रकार नारगी, कटहल, जामुन का विवरण इब्ने बतूता के यात्रा-वर्णन में भी मिलता है किन्तु बाबर का विवरण अधिक रोचक एव उपयोगी है। "बाबरनामा" मे आम, केले, इमली, महुए, खिरनी, जामुन, कमरख, कटहल, बडहल, बेर, करौंदा, पानीआला, गूलर, आमला, चिरौंजी का भी उल्लेख हुआ है।[८] खुरमे तथा नारियल तथा ताड[९] के विषय मे उसने बडे विस्तार से लिखा है और इनके पारस्परिक अन्तर तथा द्रव पदार्थ के विषय मे भी प्रकाश डाला है।[१०] नारगी के साथ साथ उससे मिलते जुलते हुये फलो, लीमू, तुरज, सतरे, गलगल, जानबीरी, सादाफल, अमृतफल, करना एव अमलबेद का भी उसने उल्लेख किया है।[११] फूलो मे जासून, कनेर, केवडा, यासमन, एव नरगिस का विवरण दिया है।[१२] भारतवर्ष की ऋतुओ, सप्ताह के दिन, समय विभाजन, तोल तथा सख्या का भी उल्लेख "बाबरनामा" मे प्राप्त है।[१३]

१ बाबर नामा पृ० १६७-१६८।
२ बाबर नामा ,, १७०-१७१।
३ बाबर नामा ,, १७१-१७२।
४ बाबर नामा ,, १७२ १७५।
५ बाबर नामा ,, १७६-१८३।
६ बाबर नामा ,, १८३ १८४।
७ इब्ने बतूता: "यात्रा विवरण" पृ० १२५-१३०, रिजवी "तुगलुक कालीन भारत भाग १" पृ० १३७-१३६।
८ बाबर नामा पृ० १८४-१८६।
९ बाबर नामा ,, १८६-१९१।
१० बाबर नामा ,, १८६-१९१।
११ बाबर नामा ,, १९१-१९३।
१२ बाबर नामा ,, १९३-१९४।
१३ बाबर नामा ,, १९४-१९६।

हिन्दुस्तान की आलोचना

बाबर ने हिन्दुस्तान को आकर्षण से शून्य बताया है। वह लिखता है कि "यहा के निवासी न तो रूपवान् होते हैं और न सामाजिक व्यवहार मे कुशल होते हैं। ये न तो किसी से मिलने जाते है और न कोई इनमे मिलने आता है। न इनमे प्रतिभा होती है और न कार्य-क्षमता। न इनमे शिष्टाचार होता है और न उदारता। कला कौशल मे न तो किसी अनुपात पर ध्यान देते हैं और न नियम और गुण पर। न तो यहा अच्छे घोडे होते हैं और न अच्छे कुत्ते, न अगूर होता है, न खरबूजा, और न उत्तम मेवे। यहा न तो बरफ मिलती है और न ठडा जल। यहा के बाजारो मे न तो अच्छी रोटी ही मिलती है और न अच्छा भोजन ही प्राप्त होता है। यहा न हम्माम हैं, न मदरसे, न शमा, न मशाल और न शमा दान। शमा तथा मशाल के स्थान पर यहा बहुत से मैले कुचैले लोगो का एक समूह होता है जो डीवटी कहलाते हैं। वे अपने बायें हाथ मे एक छोटी सी तीन पाव की लकडी लिये रहते हैं। उसके एक किनारे पर मोमबत्ती की नोक के समान एक वस्तु लगी रहती है। इसमे अगूठे के बराबर एक मोटी सी बत्ती लगी रहती है। वे अपने दायें हाथ मे एक तुम्बी सी लिये रहते हैं। उसमे एक बारीक छेद होता है जिससे जब बत्ती को तेल की आवश्यकता होती है तो उस पर बडी पतली धार से तेल टपकाया जाता है।"[1] उसने अपनी इस टिप्पणी मे केवल अपनी कठिनाइयो का ही विवरण दिया है। सम्भवत काबुल की याद के साथ साथ उसे वहा के इन आरामो की *भी याद आती होगी।*[2] *किन्तु जहा तक मदरसो के अभाव एव यहा के कलाकारो का सम्बन्ध है, उसका* विवरण निराधार है। फीरोज़शाह[3] के समकालीन मुतहर ने फीरोज़शाह के मदरसो की भूरि-भूरि प्रशसा की है। पिछले ३०० वर्षों मे हिन्दुस्तान मे जितने सुन्दर महलो एव मस्जिदो का निर्माण हुआ, उन्हे देखने का उसे अवसर प्राप्त ही न हो सका। हिन्दुस्तान मे उसका अधिक सम्पर्क अफगानो से हुआ जिन्होने उसके साथ बराबर विश्वासघात किया अत उनकी निन्दा करना उसके लिये स्वाभाविक ही था। कलाकारो के सम्बन्ध मे उसने अपने ही विवरण का आगे चल कर स्वय खडन किया है। वह लिखता है कि "हिन्दुस्तान का एक बहुत बडा गुण यह है कि यहा हर प्रकार एव हर कला के जानने वाले असख्य कारीगर पाये जाते है। प्रत्येक कार्य तथा कला के लिये जातिया निश्चित हैं जो अपने पिता और पिता के पिता के समय से वही कार्य करती चली आ रही हैं। मुल्ला शरफ ने तीमूर बेग की पत्थर की मस्जिद के निर्माण के विषय मे इस बात पर बडा अधिक ज़ोर दिया है कि इसमे अज़रबाईजान, फारस, हिन्दुस्तान तथा अन्य देशो के २०० पत्थर काटने वाले रोज़ाना काम करते थे किन्तु केवल आगरा मे ही इसी आगरा के पत्थर काटने *वालो मे से ६८० व्यक्ति मेरे आगरा के भवनो के निर्माण मे कार्य करते थे। मेरे आगरा, सीकरी, ब्याना,* दौलपुर, ग्वालियर तथा कोल के भवनो के निर्माण मे १४९१ पत्थर काटने वाले रोज़ाना कार्य करते थे। इसी प्रकार हिन्दुस्तान मे प्रत्येक प्रकार के अगणित शिल्पकार तथा कारीगर हैं।"[4]

१ बाबर नामा पृ० १९८–१९९।
२ देखिये बाबर नामा पृ० ३०४, ख्वाजा कला के नाम पत्र "उन देशों की रमणीक वस्तुओं को कोई, जब कि उसने पाप न करने की शपथ ले ली है, किस प्रकार भूल सकता है? कोई खरबूजों एव अंगूरों के स्वाद को जिनका सेवन हलाल है, किस प्रकार भूल सकता है? इस अवसर पर मेरी सेवा में एक खरबूज़ा लाया गया। उसे काट कर खाने के पश्चात् मैं बड़ा प्रभावित हुआ और मेरी आँखों मे आंसू डबडबा आये।'
३ रिज़वी : 'तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २" पृ० ५०५–५०७।
४ बाबर नामा पृ० २००।

मौसमो मे वर्षा ऋतु की प्रशसा करते हुए वह लिखता है, "पानी बरसने के समय तथा वर्षा ऋतु मे बडी ही उत्तम हवा चलती है। स्वास्थवर्धक तथा आकर्षक होने के कारण इसकी तुलना असम्भव है।[१] गरमी के विषय में भी वह लिखता है, "यहा बल्ख तथा कधार के समान तेज़ गरमी नही पडती और जितने समय तक वहा गरमी पडती है उसकी अपेक्षा यहा आधे समय तक भी गरमी नही रहती है।"[२]

हिन्दुस्तान में निर्माण-कार्य

उसे हौज़, चबूतरे, नहर, बाध एव भवनो के निर्माण से बडी रुचि थी। काबुल तथा गज़नी मे और हिन्दुस्तान आते हुए उसने विभिन्न स्थानो पर बहुत सी इमारतें, चबूतरे इत्यादि बनवाये। हिन्दुस्तान पहुच कर उसने आगरा, सीकरी, धौलपुर, कोल, ग्वालियर तथा अन्य स्थानो पर अनेक निर्माण-कार्य करवाये।

उसकी राजधानी आगरा का वर्तमान रूप सुल्तान सिकन्दर लोदी के समय से ही प्रारम्भ हुआ था। इससे पूर्व राजधानी देहली मे रहती थी। सुल्तान फीरोज़ शाह तुगलुक के राज्यकाल के अन्तिम वर्षों से ही उत्तरी भारत के विभिन्न प्रदेश स्वतत्र होने लगे थे। अन्तिम सैयिद सुल्तान की बादशाही तो देहली मे पालम ही तक सीमित रह गई थी। सुल्तान बहलोल का अधिक समय विद्रोहियो के दमन मे व्यतीत हुआ। सुल्तान सिकन्दर लोदी के समय मे यद्यपि बहुत से भाग विद्रोहियो से मुक्त हो गये थे किन्तु उसके राज्य मे शाति स्थापित न हो सकी थी।[३] अपने पूर्वी राज्यो को वश मे रखने के लिये तथा इटावा, ग्वालियर, ब्याना, कालपी एव मेवात के अधिक निकट रहने और मालवा तथा राजपूतो के स्वतत्र राज्यो पर दृष्टि रखने के उद्देश्य से सुल्तान सिकन्दर लोदी को आगरा को बसाने की आवश्यकता पडी किन्तु लोदियो के राज्यकाल मे आगरा को अधिक उन्नति न प्राप्त हो सकी। वहा के भवन भी सम्भवत देहली के भवनो की अपेक्षा सुन्दर न थे अत बाबर की उनके प्रति घृणा स्वाभाविक ही थी। लोदी सुल्तानो ने उपयोगिता की दृष्टि से जो भी निर्माण-कार्य किये होगे वे बाबर को अपनी ओर आकृष्ट न कर सके अत उसने आगरा मे विशेष रूप से उद्यान, भवनो, हम्माम, कुओ इत्यादि का निर्माण कराया। उसने अपने निर्माण-कार्य के लिये सिकन्दर लोदी के आगरा के निकट ही यमुना के उस पार उचित भूमि की स्वय खोज की। यद्यपि जो भूमि चुनी गई वह उसे पसन्द न थी किन्तु किसी अन्य अच्छी भूमि के अभाव के कारण उसे वही भूमि चुननी पडी।[४] उसने वहा जो चारबाग अथवा शाही बाग लगवाया उसका नाम हश्त बहिश्त रक्खा। आगरा मे उसने महल बनवाये। हम्मामो के निर्माण से तो उसे बडी ही खुशी हुई। वह लिखता है, "मुझे हिन्दुस्तान की तीन बातो से बडी घृणा थी—गरमी, आधी तथा धूल। इन तीनो से हम्मामो द्वारा ही रक्षा हो सकती है। यहा धूल तथा आधी का कहा प्रवेश ? गरमी मे यह इतना अधिक ठडा हो जाता है कि लोग ठडक के कारण कांपने लगते हैं।"[५] खलीफा, शेख जैन, यूसुफ अली तथा अन्य अमीरो को भी जहा

१ बाबर नामा पृ० १९८।
२ बाबर नामा ,, २००।
३ अब्दुल्लाह : "तारीखे दाऊदी", (अलीगढ) पृ० ३९-४०, रिज़वी : "उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग १" (अलीगढ १९५८) पृ० २६३।
४ बाबर नामा पृ० २११।
५ बाबर नामा ,, २१२।

वही कोई अच्छी भूमि मिली वही उन्होंने हौज़ सहित बडे सुडौल तथा उत्तम कुओ एव भवनो इत्यादि का निर्माण करा लिया। लाहौर तथा दीबालपुर के समान रहँट यहा भी मगवाकर लगवाये गये।[1] एक प्रकार के बडे कुंए जिसे वाई कहते हैं, उस समय बडे प्रचलित थे। इब्ने बतूता ने कोल के अतिरिक्त जुरफत्तन की भी एक वाई का उल्लेख किया है।[2] बाबर ने भी अपने आगरा के चारबाग के निर्माण के पूर्व ही एक वाई का निर्माण प्रारम्भ करा दिया था। इसमे रहँट भी लगवाया गया जिसके द्वारा जल किले की चहारदीवारी से होता हुआ ऊपर के उद्यानो मे जाता था।[3] धौलपुर मे उसने २२ अगस्त १५२७ ई० को पहाडी को कटवाकर एक छतदार अष्टाकार हौज़ के निर्माण का आदेश दिया।[4] उसने वहा एक मस्जिद भी बनवाई। ५ अक्तूबर १५२८ ई० को वह उस छतदार हौज़ का निरीक्षण करने के लिये स्वय पहुचा। उसका प्रवेश द्वार भली-भाति सीधा न हुआ था। उसने कुछ पत्थर काटने वालो को बुलवा कर आदेश दिया कि वे हौज़ के नीचे की सतह चिकनी कर के उसमे जल भर दें और जल की सहायता से दीवार को एकसा कर दें। इस प्रकार बाबर ने स्वयं अपनी देख-रेख मे दीवारो को चिकना कराया।[5] इसी प्रकार सीकरी मे भी उसने अप्रैल १५२७ ई० के पूर्व ही बाग लगवाने का आदेश दे दिया था[6] किन्तु जब १४ अक्तूबर १५२८ ई० को वह सीकरी पहुचा तो वह बाग की दीवार तथा कुए के निर्माण-कार्य से सतुष्ट न हुआ अत जिन लोगो के सिपुर्द यह कार्य किया गया था, उनको उसने ताडना भी दी।[7]

बागो मे फल तथा पौधे लगाने से भी उसे बडी रुचि थी। काबुल मे पहुँचने के उपरान्त उसने वहा आलू बालू की कलमें[8] लगवाई। १५२३–२४ ई० मे उसने जब पहाड खा को पराजित करके लाहौर तथा दीपालपुर को विजय किया तो बागे-वफा मे, जो उसने काबुल मे सम्भवत १५०८–९ ई० मे लगवाया था, केले ले जाकर लगवाये। इसके पूर्व उसने वहां गन्ने भी लगवाये थे[9] और उसे अपने इस प्रयास मे बडी सफलता मिल चुकी थी। उसने गन्ने बुखारा तथा बदख्शा मे भी भिजवाये। हिन्दुस्तान मे भी उसने काबुल की ओर के फलो को लगवाने का प्रयत्न किया। उसने बल्ख के खरबूजा बोने वाले को बुलवाकर आगरा मे खरबूजे लगवाये। २४ जून १५२९ ई० को जब वह कुछ खरबूजे लेकर उपस्थित हुआ तो बाबर बडा प्रसन्न हुआ। इसी प्रकार उसने आगरा के हश्त बहिश्त नामक उद्यान मे उत्तम अगूर की बेलो के लगाने का भी आदेश दिया था। २४ जून १५२९ ई० के वृत्तात मे वह लिखता है कि 'शेख गूरन ने मुझे टोकरी भर कर अगूर भेजे जो बुरे न थे। हिन्दुस्तान मे इस प्रकार के खरबूजे तथा अगूर उगाकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई।"[10]

१ बाबर नामा पृ० २१२।
२ रिजवी: "तुगलुक कालीन भारत भाग १" पृ० २६१, २८४।
३ बाबर नामा पृ० २१२-२१३।
४ बाबर नामा ,, २५६।
५ बाबर नामा ,, २८०, देखिये पृ० २६९ भी।
६ बाबर नामा ,, २५५।
७ बाबर नामा ,, २८३।
८ बाबर नामा ,, १५।
९ बाबर नामा ,, १६।
१० बाबर नामा ,, ३३७।

हिन्दुस्तान के नगरो तथा कस्बो का ज्ञान

उसने काबुल से पानीपत तथा देहली से आगरा के अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर भी आक्रमण के कारण हिन्दुस्तान के विभिन्न नगरो एव कस्बों का निरीक्षण किया। वह १५२६ ई० ही मे पूर्व की ओर अफग़ान विद्रोहियो के दमन हेतु स्वय प्रस्थान करना चाहता था किन्तु हुमायूँ के इस कार्य हेतु तैयार हो जाने के कारण उसने उस ओर प्रस्थान न किया।[1] ११ फरवरी १५२७ ई० को उसने राणा सागा से युद्ध करने के लिये आगरा से सीकरी की ओर प्रस्थान किया।[2] इस युद्ध की विजय के उपरान्त वह मेवात की ओर रवाना हुआ। इस अभियान के समय उसने अलवर, मानस-नी फीरोजपुर तथा कोटला की सैर की। वहा से लौटते समय उसने कुहरा एव टोडा होते हुये बसावर और चौसा के मध्य के एक पहाडी झरने पर भी रात्रि व्यतीत की और ब्याना तथा सीकरी होते हुए २५ अप्रैल १५२७ ई० को आगरा पहुच गया।[3]

२२ अगस्त १५२७ ई० को उसने धौलपुर की सैर हेतु प्रस्थान किया और वहा से बारी तथा चम्बल के मध्य की पहाडी पार करके बीच के स्थानो की सैर के उपरान्त बारी लौट आया। बारी ही मे वह आबनूस के वृक्ष को देखकर, जो सफेद रग का था, बडा प्रभावित हुआ। २७ अगस्त, १५२७ ई० को वह फतहपुर सीकरी वापस पहुच गया।[4]

सितम्बर १५२७ ई० मे वह कोल तथा सम्बल की सैर के लिये रवाना हुआ और २७ सितम्बर को कोल मे पडाव किया। तदुपरान्त वह अतरौली पहुचा और १ अक्तूबर १५२७ ई० को गगा नदी पार करके सम्बल के ग्रामो मे प्रविष्ट हुआ। ५ अक्तूबर को वह सिकन्दरा होता हुआ मार्ग ही मे बहाना करके अन्य लोगो से पृथक् होकर घोडा भगाता हुआ आगरा से पूर्व एक कोस पर अकेला ही पहुच गया।[5] ९ दिसम्बर १५२७ ई० को उसने चदेरी पर आक्रमण के उद्देश्य से प्रस्थान किया और जलेसर, कनार घाट होता हुआ, १ जनवरी १५२८ ई० को कालपी के पास एक कोस पर उतरा। चदेरी के मार्ग मे उसने ईरिज, बान्दीर एव कचवा की सैर की।[6] कचवा को बाबर ने एक बडा ही विचित्र स्थान बताया है।[7] उसने चदेरी तथा उसके किले का भी सक्षिप्त विवरण दिया है।[8]

चन्देरी मे ही पूर्व के अफगान विद्रोहियो के समाचार के कारण उसे स्वय उस ओर प्रस्थान करना पडा। आगरा वापस हुये बिना ही वह २३ फरवरी को कनार नामक घाट पर पहुच गया। कालपी से पूर्व की ओर के इस अभियान के प्रसग मे उसने कन्नौज, बागरमऊ, लखनऊ एव अवध का उल्लेख किया है।[9] वह इस बार पूर्व की ओर बक्सर[10] तक पहुच गया था। सम्भवत वह कुछ और आगे भी

१ बाबर नामा पृ० २१०।
२ बाबर नामा ,, २२६।
३ बाबर नामा ,, २५३-२११।
४ बाबर नामा ,, २५८-२५६।
५ बाबर नामा ,, २६१।
६ बाबर नामा ,, २६२ २६३।
७ बाबर नामा ,, २६४।
८ बाबर नामा ,, २६६-२६८।
९ बाबर नामा ,, २६६-२७२।
१० बाबर नामा ,, ३१६।

गया हो और उसने इस प्रसग मे बहुत से नगरो का उल्लेख किया हो किन्तु २ अप्रैल, १५२८ ई० के उपरान्त का "बाबरनामा" का वृत्तात नष्ट हो गया है अत अब इस महत्वपूर्ण विवरण की प्राप्ति की कोई आशा नही।

२० सितम्बर, १५२८ ई० को उसने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। धौलपुर मे निर्माण-कार्य का निरीक्षण करते हुए वह २६ सितम्बर १५२८ ई० को ग्वालियर पहुच गया और २७ सितम्बर को ग्वालियर के राजाओ के महलो की सैर की। उसने मानसिंह के भवन, रहीमदाद के मदरसे तथा बागीचे, उरवा घाटी और उसकी मूर्तियो तथा हिन्दुओ के मदिरो की सैर का उल्लेख किया है। इसी यात्रा से लौटते समय उसने धौलपुर के छतदार हौज को ठीक कराया तथा सीकरी के उद्यान के निर्माताओ को ताडना दी।[1]

१३ जनवरी १५२९ ई० को धौलपुर मे उसे बिहार की पराजय के समाचार प्राप्त हुए, अत वहा से लौटकर उसने २० जनवरी १५२९ ई० को पूर्व की ओर प्रस्थान कर दिया। २७ जनवरी १५२९ ई० को वह आगरा के अनवारा नामक ग्राम मे पहुचा। इस यात्रा के प्रसग मे उसने आबापुर, चन्दवार, फतहपुर, रापरी, जाकीन, इटावा, मूरी, अदूसा[2], जमन्दना, कालपी, केक्कूरा, चचावली, दीरापुर, चपरकदा एव आदमपुर परगने, कुररह, कडे के कुरिया नामक परगने, फतहपुर हसुआ, सराय मुडा, दुगदुगी, कुसारू, कडा, कोह, प्याग के सीर-औलिया नामक परगने, प्याग, गगा-यमुना के सगम, लवाएन, टोस तथा गगा के सगम, नुलीवा, विन्तित, नानापुर, चुनार, आराल, बनारस, बिलवा घाट, गोमती तथा गगा के सगम, मदन बनारस[3], गाजीपुर, चौसा, कर्मनासा नदी, बक्सर, भोजपुर बिहिया, आरा, मुनेर, गगा तथा सरयू के सगम, हल्दी घाट, सिकन्दरपुर, चतुरमुक, कुन्दीह, चौपारा (छपरा), सारन एव वापस होते हुये गाजीपुर, जलेसर अथवा चकसर, परसरू नदी, टोस, दलमूद, कुररह, आदमपुर परगने, कालपी, फतहपुर (रापरी) की चर्चा की है।[4] इनमे से अनेक स्थानो की रोचक घटनाओ का भी उल्लेख किया है।

१ बाबर नामा पृ० २७३-२८१।
२ बाबर नामा , ३०० ३०४।
३ जमनिया।
४ बाबर नामा पृ० ३०८-३३७।

ख्वन्द मीर

हबीबुस् सियर

हबीबुस् सियर मे आदम के समय से लेकर रबी-उल-अव्वल ९३० हि० (जनवरी-फरवरी १५२४ ई०) तक का इतिहास दिया गया है। यह १ इफ्तिताह (प्रस्तावना) ३ मुजल्लद (भाग) एव १ इख्तिताम (परिशिष्ट) मे विभाजित है।

इफ्तिताह सृष्टि

मुजल्लद १

जुज्ब (खड)

अ पैगम्बरो का इतिहास
ब ईरान तथा अरब के इस्लाम के पूर्व के बादशाहो का इतिहास
स हजरत मुहम्मद का इतिहास
द प्रथम चार खलीफाओ का इतिहास।

मुजल्लद २

जुज्ब

अ १२ इमामो का इतिहास
ब बनी उमय्या का इतिहास
स बनी अब्बास का इतिहास
द अब्बासियो के समकालीन वशो का इतिहास।

मुजल्लद ३

जुज्ब

अ तुर्किस्तान के खानो, चिंगेज खा तथा उसके उत्तराधिकारियो का इतिहास
ब मिस्र के ममलूको, किरमान करा खिताइयो, मुजफ्फरी वश, लुरिस्तान के अतावको, रुस्तमदार के बादशाहो, माजन्दरान के बादशाहो, सरबदारो एव कुर्तो का इतिहास
स तीमूर तथा उसके उत्तराधिकारियो से सुल्तान हुसैन के पुत्रो तक का इतिहास।
द शाह इस्माईल सफवी का इतिहास।

इख्तिताम ससार की विचित्र एव आश्चर्यजनक बाते।

गयासुद्दीन बिन हुसामुद्दीन मुहम्मद "ख्वन्दमीर" का जन्म हिरात मे ८८० हि० (१४७५-७६

गया हो और उसने इस प्रसग मे बहुत से नगरो का उल्लेख किया हो किन्तु २ अप्रैल, १५२८ ई० के उपरान्त का "बाबरनामा" का वृत्तात नष्ट हो गया है अत अब इस महत्वपूर्ण विवरण की प्राप्ति की कोई आशा नही।

२० सितम्बर, १५२८ ई० को उसने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। धौलपुर मे निर्माण-कार्य का निरीक्षण करते हुए वह २६ सितम्बर १५२८ ई० को ग्वालियर पहुच गया और २७ सितम्बर को ग्वालियर के राजाओ के महलो की सैर की। उसने मानसिंह के भवन, रहीमदाद के मदरसे तथा बागीचे, उरवा घाटी और उसकी मूर्तियो तथा हिन्दुओ के मदिरो की सैर का उल्लेख किया है। इसी यात्रा से लौटते समय उसने धौलपुर के छतदार हौज को ठीक कराया तथा सीकरी के उद्यान के निर्माताओ को ताडना दी।[1]

१३ जनवरी १५२९ ई० को धौलपुर मे उसे बिहार की पराजय के समाचार प्राप्त हुए, अत वहा से लौटकर उसने २० जनवरी १५२९ ई० को पूर्व की ओर प्रस्थान कर दिया। २७ जनवरी १५२९ ई० को वह आगरा के अनवारा नामक ग्राम मे पहुचा। इस यात्रा के प्रसग मे उसने आबापुर, चन्दवार, फतहपुर, रापरी, जाकीन, इटावा, मूरी, अदूसा[2], जमन्दना, कालपी, केक्कूरा, चचावली, दीरापुर, चपरकदा एव आदमपुर परगने, कुररह, कडे के कुरिया नामक परगने, फतहपुर हसुआ, सराय मुडा, दुगदुगी, कुसारू, कडा, कोह, प्याग के सीर-औलिया नामक परगने, प्याग, गगा-यमुना के सगम, लवाएन, टोस तथा गगा के सगम, नुलीवा, किन्तित, नानापुर, चुनार, आराल, बनारस, बिलवा घाट, गोमती तथा गगा के सगम, मदन बनारस[3], गाजीपुर, चौसा, कर्मनासा नदी, बक्सर, भोजपुर, बिहिया, आरा, मुनेर, गगा तथा सरयू के सगम, हल्दी घाट, सिकन्दरपुर, चतुरमुक, कुन्दीह, चौपारा (छपरा), सारन एव वापस होते हुये गाजीपुर, जलेसर अथवा चकसर, परसरू नदी, टोस, दलमूद, कुरारह, आदमपुर परगने, कालपी, फतहपुर (रापरी) की चर्चा की है।[4] इनमे से अनेक स्थानो की रोचक घटनाओ का भी उल्लेख किया है।

१ बाबर नामा पृ० २७३-२८१।
२ बाबर नामा , ३०० ३०४।
३ जमनिया।
४ बाबर नामा पृ० ३०८-३३७।

ख्वान्द मीर

हबीबुस् सियर

हबीबुस् सियर में आदम के समय से लेकर रबी-उल-अव्वल ९३० हि० (जनवरी-फ़रवरी १५२४ ई०) तक का इतिहास दिया गया है। यह १ इफ़्तिताह (प्रस्तावना) ३ मुजल्लद (भाग) एवं १ ख़ातिमा (परिशिष्ट) में विभाजित है।

इफ़्तिताह — सृष्टि

मुजल्लद १

जुज़ (खंड)

- अ पैग़म्बरों का इतिहास
- ब ईरान तथा अरब के इस्लाम के पूर्व के बादशाहों का इतिहास
- स हज़रत मुहम्मद का इतिहास
- द प्रथम चार ख़लीफ़ाओं का इतिहास।

मुजल्लद २

जुज़

- अ १२ इमामों का इतिहास
- ब बनी उमय्या का इतिहास
- स बनी अब्बास का इतिहास
- द अब्बासियों के समकालीन वंशों का इतिहास।

मुजल्लद ३

जुज़

- अ तुर्किस्तान के ख़ानों, चिंगेज़ ख़ाँ तथा उसके उत्तराधिकारियों का इतिहास
- ब मिस्र के ममलूकों, किरमान के क़ुतलुग़ ख़िताइयों, मुज़फ़्फ़री वंश, लुरिस्तान के अताबकों, रुस्तमदार के बादशाहों, माज़न्दरान के बादशाहों, सरबदारों एवं कुर्तों का इतिहास
- स तीमूर तथा उसके उत्तराधिकारियों से सुल्तान हुसैन के पुत्रों तक का इतिहास।
- द शाह इस्माईल सफ़वी का इतिहास।

ख़ातिमा — संसार की विचित्र एवं आश्चर्यजनक बातें।

ग़यासुद्दीन बिन हुमामुद्दीन मुहम्मद 'ख़्वान्दमीर' का जन्म हिरात में ८८० हि० (१४७५-७६

ई०) के लगभग हुआ था। उसने मीर अली शेर नवाई के आश्रय मे शिक्षा प्राप्त की। मीर अली शेर[1] ने ९०४ हि० (१४९८-९९ ई०) मे उसे अपने समस्त ऐतिहासिक ग्रथो के अध्ययन की अनुमति दे दी थी। वह सुल्तान हुसेन के ज्येष्ठ पुत्र मीर्जा बदी उज्ज़मान मीर्जा की भी कुछ समय तक सेवा करता रहा। शैबानी खा द्वारा हिरात की विजय (१५०७ ई०) तथा शाह इस्माईल सफवी की शैबानी खा पर विजय (१५१० ई०) का उसने स्वय निरीक्षण किया था। ९२० हि० (१५१४ ई०) मे वह गर्जिस्तान के बस्त नामक ग्राम मे साहित्यिक कार्यों मे व्यस्त रहा। १५०८ ई० मे वह हिन्दुस्तान पहुचा और बाबर ने उसका सहर्ष स्वागत किया। वह बाबर के बगाल के १५२९ के अभियान मे उसके साथ था। वह हुमायू के साथ उसके गुजरात के अभियान पर भी गया किन्तु १५३५-३६ ई० मे वापस होने के उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई और वह अपनी इच्छानुसार देहली मे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के मज़ार के समीप दफ्न हुआ।

वह रौज़तुस् सफा नामक ग्रथ के लेखक मीर ख्वन्द का नाती था। उसने अपने नाना के सुप्रसिद्ध ग्रथ रौज़तुस् सफा का भी सक्षिप्त सस्करण तैयार किया था अत हबीबुस् सियर एव रौजतुस् सफा दोनो ग्रथ बहुत बडी सीमा तक एक दूसरे से मिलते हैं। लेखक के समकालीन इतिहास के लिये हबीबुस् सियर की उपेक्षा असम्भव है। बाबर नामा के जिन वर्षों के इतिहास के पृष्ठ नष्ट हो गये हैं, उनके अध्ययन के लिए हबीबुस् सियर बडा ही महत्त्वपूर्ण साधन है।

यद्यपि उसने हबीबुस् सियर की रचना ९२७ हि० (१५२०-२१ ई०) म ही प्रारम्भ कर दी थी किन्तु उसने इसमे रबी-उल-अव्वल ९३० हि० (जनवरी फरवरी १५२४ ई०) तक का इतिहास दिया है। अत इसका कुछ भाग हिन्दुस्तान म अवश्य ही लिखा गया होगा। उस भाग मे जिसमे बाबर तथा शाह इस्माईल सफवी के सम्बन्ध पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है वह बाबर के विरुद्ध किसी असत्य बात का उल्लेख कदापि न कर सकता था।

मीर्ज़ा हैदर

तारीखे रशीदी

मीर्ज़ा हैदर, जिसे बाबर ने हैदर मीर्ज़ा लिखा है दूगलात कबीले से सम्बन्धित था। उसका जन्म ताशकन्द मे ९०५ हि० (१४९९-१५०० ई०) मे हुआ। उस समय उसका पिता मुहम्मद हुसेन गूरगान महमूद खा की ओर से काशगर का हाकिम था। अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त ९१५ हि० (१५०९ ई०) मे वह बाबर के पास, जो उसकी माता की एक बहिन का पुत्र था, काबुल पहुच गया। ९१८ हि० (१५१२ ई०) मे वह सुल्तान सईद खा के दरबार के सेवको मे सम्मिलित हो गया। सुल्तान सईद खा ९२० हि० (१५३३ ई०) म काशगर का खान हुआ और उसने 'मीर्ज़ा हैदर" को बदख्शा, तिब्बत इत्यादि के अभियान पर भेजा। जब ९३९ हि० (१५३३ ई०) मे सुल्तान सईद खा के स्थान पर अब्दुर्रशीद खा सिंहासनारूढ हुआ तो वह लाहौर भाग गया। ९४६ हि० (१५३९-४० ई०) मे वह हुमायू के पास आगरा पहुच गया और उसने हुमायू के साथ शेरशाह के विरुद्ध कन्नौज के युद्ध मे भाग

१ उसकी मृत्यु ९०६ हि० (१५०१ ई०) मे हुई।

लिया। ९४८ हि० (१५४१ ई०) मे उसने कश्मीर विजय कर लिया और वहा एक स्वतत्र राज्य स्थापित कर लिया। ९५८ हि० (१५५१ ई०) मे विद्रोहियों ने उसकी हत्या कर दी।

मीर्ज़ा हैदर की "तारीखे रशीदी" एन० इलियेस तथा ई० डेनीसन रास के अग्रेजी अनुवाद के कारण बडी प्रसिद्ध हो गई है और इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ है। यह दो भागों मे विभाजित है —

१—प्रथम भाग कश्मीर मे ९५२ हि० (१५४६ ई०) मे तैयार हुआ। इसमे मुगुलिस्तान एव काशगर के मुगूल शासको का इतिहास तुगलुक तिमूर (सिंहासनारोहण ७४८ हि०/ १३४७-४८ ई०) से अब्दुर्रशीद के समय तक का, जिसको यह ग्रथ समर्पित हुआ, इतिहास है।

२—दूसरे भाग मे उन घटनाओ का विवरण है जो कि इतिहासकार के जीवनकाल मे ९४८ हि० (१५४१ ई०) तक घटी।

उन वर्षों के इतिहास के अध्ययन के लिये जिनके पृष्ठ बाबरनामा से नष्ट हो गये है, इस इतिहास की उपेक्षा असम्भव है। इसके अतिरिक्त बाबर के पूर्वजो एव बाबर से सम्बन्धित अन्य घटनाओ का भी उसने बडे रोचक ढग से उल्लेख किया है। हुमायू के कन्नौज के युद्ध एव हुमायू तथा उसके भाइयो के सम्बन्ध के इतिहास और कश्मीर तथा तिब्बत के वृत्तान्त ने इस ग्रथ को अत्यधिक बहुमूल्य बना दिया।

यह ग्रथ अभी तक प्रकाशित नही हुआ है। अनुवाद अलीगढ विश्वविद्यालय की हस्तलिपि से किया गया है किन्तु अग्रेजी अनुवाद से भी सहायता ली गई है।

मीर अला उद्दौला बिन यहया सैफी हुसेनी कज़वीनी

नफायसुल मआसिर

नफायसुल मआसिर लेखक के समकालीन कवियो की जीवनियो तथा उनके पद्यो के उद्धरणो का सकलन है। लेखक ने इसकी रचना ९७३ हि० (१५६५-६६ ई०) मे प्रारम्भ की और सम्भवत ९९८ हि० (१५८९-९० ई०) मे यह रचना समाप्त हुई। ब्रिटिश म्यूजियम के कैटलाग के लेखक रियु[१] के अनुसार इसकी रचना ९७३ हि० (१५६५-६६ ई०) एव ९८२ हि० के बीच मे हुई किन्तु लेखक न अपनी इसी रचना मे मीर सैयिद अली गजकी की मृत्यु का उल्लेख किया है जो ३ मुहर्रम ९९८ हि० (१२ नवम्बर १५८९ ई०) मे हुई। अपने समकालीन कवियो के अतिरिक्त लेखक ने पहिले के भी महत्वपूर्ण कवियो का उल्लेख किया है। उसने अपनी प्रस्तावना मे लिखा है कि उसे कविता से बडी रुचि थी और वह बाल्यावस्था ही से कवियो के शेरो को रटा करता था। इसके अतिरिक्त उनकी जीवनियो के विषय मे भी वह टिप्पणियां सुरक्षित करता जाता था किन्तु वह किसी ग्रथ की रचना न कर सका। हिन्दुस्तान पहुच कर पादशाह गाजी अकबर के प्रोत्साहन से जो कुछ सकलित किया था उसकी रचना उसने पुस्तक के रूप मे कर डाली।[२] उसने यह भी लिखा है कि पहिले के कवियो का उल्लेख 'तोहफये सामिया'[३] नामक

१ Rieu Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum, Vol III, p 1022

२ नफ़ायसुल मआसिर, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्त लिपि पृ० ४ ब—६ अ।

३ तोहफ़ये सामिया अथवा तोहफ़ये सामी, लेखक अबुनसर साम मीर्ज़ा (तेहरान १९३६ ई०)। इसकी रचना लगभग ९५७ हि० (१५५० ई०) में हुई।

मे जो कुछ लिखा था उस पृष्ठ को फाड डाला।[1] इसके अतिरिक्त मीर्जा अजीज कोका की भी टिप्पणिया मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने उद्धृत की हैं।[2] इन आलोचनाओ के बावजूद मुन्तखबुत्तवारीख के तीसरे भाग का कवियो से सम्बन्धित पूरे का पूरा इतिहास अधिकाश नफायसुल मआसिर ही पर आधारित है।

अकबर के राज्यकाल के इतिहास के लिये तो वह हमारा प्राचीनतम सूत्र है। मुहम्मद आरिफ कधारी का इतिहास भी ९८७ हि० (१५७९ ई०) के लगभग लिखा गया और उसमे केवल १५७९ ई० तक का ही इतिहास दिया गया है। बायजीद की "तारीखे हुमायू" मे ९९९ हि० (१५९१ ई०) तक का इतिहास है। हुमायू के समय के इतिहासो मे भी ख्वन्दमीर के 'हुमायू नामा" अथवा "कानूनए हुमायूनी"[3] के अतिरिक्त उस समय तक कोई अन्य इतिहास न लिखा गया था। नफायसुल मआसिर का ऐतिहासिक भाग ९८२ हि० (१५७४-७५ ई०) तक ही आता है और यदि यह मान लिया जाय कि ऐतिहासिक भाग की रचना लगभग इसी समय समाप्त हुई और कुछ कवियो तथा गायको की जीवनिया उदाहरणार्थ उरफी, गजकी इत्यादि बाद मे जोडी गयी तो यह बात प्रमाणित हो जाती है कि यह इतिहास आरिफ कधारी के इतिहास के पूर्व ही लिखा जा चुका था। मुहम्मद आरिफ कधारी के इतिहास तथा नफायसुल मआसिर का सावधानी से मुकाबला करने पर पता चलता है कि आरिफ कधारी ने नफायसुल मआसिर ही पर अपने इतिहास को आधारित किया है। इस बात मे तो कोई सदेह है ही नही कि अला उद्दौला ने अपना इतिहास ९७३ हि० मे लिखना प्रारम्भ किया और मुहम्मद आरिफ कधारी अकबर की सेवा मे ९८५ हि० (१५७७-७८ ई०) मे प्रस्तुत किया गया था।

यद्यपि जिन घटनाओ का उल्लेख नफायसुल मआसिर मे किया गया है वे हम "अकबर नामा" तथा अन्य स्थानो पर भी मिल जाती हैं किन्तु हुमायू तथा अकबर के समय का प्राचीनतम इतिहास होने के कारण इसकी उपेक्षा असम्भव है। हुमायू की कजवीन की यात्रा एव हुमायू तथा शाह तहमास्प के सम्बन्ध पर भी नफायसुल मआसिर से प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त होता है। उसने महत्वपूर्ण घटनाओ की तिथियो के सम्बन्ध मे कवियो की शेरो को भी उद्धृत किया है जिससे उनके विषय मे किसी प्रकार का कोई सदेह नही रह जाता।

सर वूलजले हेग ने मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३ के अनुवाद मे इस ग्रथ को अप्राप्य बताया है।[4] डा० स्प्रेंगर ने अवध के नवाबो के पुस्तकालय के ग्रथो की जो सूची तैयार की थी उसमे इस ग्रथ का उल्लेख किया है किन्तु उसने उस हस्तलिपि की तारीख नही लिखी है।[5] नफायसुल की प्राचीनतम हस्तलिपि अलीगढ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय मे है। इस हस्तलिपि मे २७४ वरक हैं और यह १० रबी-उल-अव्वल १०५८ हि० (४ अप्रैल १६४८ ई०) को नकल की गई थी। यह पुस्तक किसी समय आजाद

१ मुंतखबुत्तवारीख भाग ३, पृ० ३२८।
२ मुंतखबुत्तवारीख भाग ३, पृ० २७३, ७७, २७८।
३ ख्वन्दमीर की मृत्यु १५३५ ई० में हुई।
४ Sir Wolseley Haig "*Muntakhab-ut-Tawarikh*" Vol III (Calcutta 1925) p 239
५ Sprenger, A "*A Catalogue of the Arabic, Persian and Hindustani Manuscripts*" Vol I (Calcutta 1854), pp 46-55

बिलग्रामी[1] के पास भी रह चुकी है और उनका १४ सफर ११८६ हि० (१७ मई १७७२ ई०) का एक नोट भी पुस्तक मे मौजूद है। नोट के साथ साथ आजाद बिलग्रामी की एक मोहर भी इस पुस्तक मे है। दूसरी महत्वपूर्ण हस्तलिपि रिज़ा लाइब्रेरी रामपुर में है। यद्यपि यह हस्तलिपि अलीगढ विश्वविद्यालय की हस्तलिपि के बाद मे तैयार की गई थी किन्तु इसमे अकबर का इतिहास अलीगढ की हस्तलिपि की अपेक्षा अधिक पूर्ण है। नफायसुल मआसिर की एक अधूरी हस्तलिपि जिसमे केवल बाबर से अकबर तक का इतिहास है, ब्रिटिश म्युजियम लदन के पुस्तकालय मे भी प्राप्य है। ब्रिटिश म्युजियम पुस्तकालय की प्रति का ऐतिहासिक भाग तथा रामपुर की हस्तलिपि का ऐतिहासिक भाग दोनो एक दूसरे के समान हैं। इसकी एक अन्य प्रतिलिपि का उल्लेख ऊज़बेग सोवियट सोशलिस्ट रिपब्लिक की ऐकेडेमी आफ साइस के पुस्तकालय मे भी प्राप्य है। इन हस्तलिपियो के अतिरिक्त अभी तक किसी अन्य हस्तलिपि का पता नही चल सका है। अनुवाद उस पाडुलिपि से किया गया है जो अनुवादक ने अलीगढ, रामपुर एव ब्रिटिश म्युजियम की हस्तलिपियो के आधार पर प्रकाशन हेतु तैयार किया है।

गुलबदन बेगम

हुमायू नामा

गुल्बदन बेगम जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह की पुत्री थी। उसकी माता का नाम दिलदार बेगम था। उसका जन्म लगभग १५२३ ई० मे हुआ था। उस समय बाबर को काबुल पर अधिकार जमाये हुए १९ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। कून्दूज तथा बदख्शा भी उसके अधिकार म थे। १५१९ ई० मे उसने बजौर पर भी अधिकार जमा लिया था और एक वर्ष पूर्व कधार का भी स्वामी हो चुका था। १५०८ ई० मे उसने पादशाह की उपाधि धारण कर ली थी।

दिलदार बेगम के तीन पुत्रिया तथा दो पुत्र हुए। सबसे बडी पुत्री का नाम गुलरग बेगम था। उसके बाद भी उसके एक पुत्री ही हुई जिसका नाम गुलचेहरा रक्खा गया। १५१९ ई० म उसके पुत्र हिन्दाल का जन्म हुआ। उसके बाद गुल्बदन बेगम पैदा हुई। दूसरा पुत्र आगरा मे हिन्दुस्तान मे पैदा हुआ और उसका नाम अलवर रक्खा गया किन्तु १५२९ ई० मे उसकी मृत्यु हो गई।

नवम्बर १५२५ ई० को जब बाबर की सेनाए हिन्दुस्तान की विजय हेतु काबुल से रवाना हुई तो उसकी अवस्था लगभग दो वर्ष की थी। बाबर ने हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करते समय अपने परिवार को काबुल ही मे छोड दिया था। इस प्रकार वह तीन वर्ष से कुछ अधिक समय तक अपने पिता से पृथक् रही। १५२८ ई० मे अन्त पुर को काबुल से हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने का आदेश हुआ। किन्तु यात्रा की व्यवस्था एव अन्य कारणो से तत्काल प्रस्थान न हो सका। २१ जनवरी १५२९ ई० मे हुमायू की माता माहम चल खडी हुई। २२ मार्च को बाबर को उन लोगो के काबुल से प्रस्थान करने के विषय मे प्रामाणिक समाचार प्राप्त हुए। माहम ने यात्रा अधिक तेजी से की और २६ जून को यह काफिला आगरा पहुच गया।

१ हस्सानुल हिन्द मीर गुलाम अली आजाद बिन सैयिद मुहम्मद नूह हुसैनी वास्ती बिलग्रामी हनफी चिश्ती का जन्म २६ जून १७०४ ई० में बिलग्राम में हुआ। उनकी रचनाओं में "सर्वे आजाद" एवं 'खज़ानये आमेरा" बड़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी मृत्यु १५ सितम्बर १७८६ में हुई।

१५३० ई० मे बाबर की मृत्यु हो गई। *गुलबदन बेगम तथा अन्त पुर की अन्य स्त्रियो की* देख-रेख का भार हुमायू के कन्धो पर पडा। हुमायू ने जिस योग्यता से अपने कर्तव्य का पालन किया, उसकी गुलबदन बेगम ने भूरि-भूरि प्रशसा की है। गुलबदन बेगम का विवाह खिज्र ख्वाजा चगताई से हुआ जो हुमायू का अमीरुल उमरा था। हुमायू की मृत्यु के उपरान्त अकबर के शासन काल मे भी गुलबदन बेगम को अत्यधिक आदर-सम्मान प्राप्त रहा। १५७५ ई० मे वह हज के लिये मक्का रवाना हुई। कुछ दूर तक अकबर स्वय इस काफिले को पहुचाने गया। इस यात्रा मे उसके साथ बैराम खा की विधवा तथा अब्दुर्रहीम खाने खाना की माता सलीमा सुल्ताना बेगम भी थी जिससे बाद मे अकबर ने विवाह कर लिया था। लौटते समय इन लोगो को अधिक कठिनाई का सामना करना पडा और मार्च १५८२ ई० को वे फतहपुर सीकरी पहुच गये। जिलहिज्जा १०११ हि० (७ मई, १६०३ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई।

अकबर नामा के लिये सामग्री एकत्र करने के उद्देश्य से बहुत से लोगो को अकबर ने यह आदेश दिया कि उन्हे बाबर तथा हुमायू के विषय मे जो कुछ स्मरण हो, उसे वे लिपिबद्ध करें। इस आदेशानुसार मेहतर जौहर आफताबची द्वारा रचित "तज्किरतुल वाकेआत" एव बायजीद ब्यात द्वारा रचित "तारीखे हुमायू" अब भी प्राप्य हैं। गुलबदन बेगम के हुमायू नामा की रचना भी इसी आदेशानुसार हुई। गुलबदन बेगम ने लिखा है कि, जिस समय हज़रत फिरदौस मकानी परलोकगामी हुए, उस समय उसकी अवस्था लगभग ८ वर्ष की थी अत उनके विषय मे उसे बहुत कम स्मरण रह गया था किन्तु शाही आदेशानुसार जो कुछ उसने सुना अथवा जो कुछ स्मरण रह गया उसे लिपिबद्ध किया है। उसने अपनी रचना को दो भागो मे विभाजित किया—एक मे बाबर का इतिहास और दूसरे मे हुमायू का इतिहास। बाबर के इतिहास के विषय मे उसने स्वय लिखा है कि मेरे बाबा हज़रत बादशाह ने अपने वाकेआत मे अपना इतिहास लिख दिया है अत उनका इतिहास केवल आशीर्वाद हेतु लिपिबद्ध किया जा रहा है। फिर भी बाबर के विषय मे भी उसका इतिहास बडा ही महत्वपूर्ण है। उसने कई घटनाओ का बडे ही रोचक ढग से विवरण दिया है। सुल्तान इबराहीम की पराजय के उपरान्त बाबर ने दिल खोल कर दान दिया और काबुल तथा एराक के अपने किसी सम्बन्धी को भी इस समय वह न भुला सका। काबुल स बहुत दूर आगरा मे रहते हुए भी वह अपने सम्बन्धियो से जिस प्रकार स्नेहपूर्वक व्यवहार करता था वह उसे उस समय भी पूर्ण रूप से स्मरण था। गुलबदन बेगम के हुमायू नामा से पता चलता है कि उसने असस को तीन बार पादशाही वज़न की एक बडी अशर्फी प्रदान की जो कि उसकी आखें बाध कर उसके गले मे लटका दी गई। इससे पूर्व बाबर के आदेशानुसार उसे केवल यही बताया गया था कि उसके लिये एक ही अशर्फी *भेजी गई है। वह इस बात से बडा दुखी था किन्तु जब अशर्फी उसकी गरदन मे पडी तो उसको खुशी का* ठिकाना न रहा। बाबर जिस प्रकार अपने परिवार वालो से स्नेह करता था उसका पता यद्यपि बाबरनामा से भी चलता है किन्तु हुमायू नामा से इसकी और भी पुष्टि होती है। वह हर रोज शुक्रवार को अपने परिवार की बेगमा को देखने जाया करता था। गरमी की अधिकता के कारण माहम ने एक दिन उससे कहा कि "यदि एक शुक्रवार को न आओगे तो क्या हो जायगा। बेगमे इस बात से रुष्ट न होगी।" बादशाह ने माहम की बात स्वीकार न की और कहा कि, "सुल्तान अबू सईद मीर्जा की पुत्रियो को जो अपने पिता और भाईया से पृथक् हो चुकी है यदि मैं प्रोत्साहन न दूगा तो कौन देगा।" आगरा मे महलो के निर्माण के समय भी उसे बेगमो का विशेष ध्यान था और उसने ख्वाजा कासिम मेमार को उनके महलो के निर्माण के विषय मे खास ध्यान देने के लिये आदेश दिया।

गुलबदन बेगम ने काबुल से आगरा की यात्रा की कई रोचक घटनाओ का उल्लेख किया है जिनसे पता चलता है कि बाबर कितनी उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। हुमायू से बाबर को जितना

अधिक स्नेह था उसका मार्मिक विवरण सर्व प्रथम हुमायू नामा मे ही हुआ है और अक्बर नामा मे उसे अधिक विस्तार से लिखा गया है। गुल्बदन बेगम के वृत्तात से पता चलता है कि बाबर की मृत्यु उसी विष के प्रभाव से हुई थी जो इबराहीम की माता ने उसे २१ दिसम्बर १५२६ ई० को दिया था। अपनी रुग्णावस्था मे भी उसे हिन्दाल की कितनी प्रतीक्षा थी और यह जानने के लिए कि हिन्दाल कितना बडा हो गया है वह कितना उत्सुक था इसका पता केवल हुमायू नामा से ही चलता है। इस प्रकार बाबर के सम्बन्ध मे गुलबदन बेगम ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर जो कुछ भी लिखा है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यदि उसने यह रचना न की होती तो बाबर के विषय मे हमारी जानकारी कितनी अधूरी रह जाती इसका अनुमान केवल हुमायू नामा के अध्ययन से ही लगाया जा सकता है।

मुल्ला अहमद तथा आसफ़ खां इत्यादि

तारीखे अलफी[1]

अक्बर के राज्यकाल की इस प्रसिद्ध रचना मे मुहम्मद साहब की मृत्यु[2] से लेकर ९९७ हि० (१५८८-८९ ई०) तक की मुख्य घटनाओ का इतिहास है। अक्बर के राज्यकाल मे इस्लाम के एक हज़ार वर्ष पूरे हो रहे थे अत उसने हज़रत मुहम्मद की मृत्यु से इस एक हज़ार वर्ष के प्रत्येक वर्ष का अलग अलग हाल लिखवाने की योजना बनाई। ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) मे उसने इतिहासकारो तथा विद्वानो का एक बोर्ड यह कार्य करने के लिए नियुक्त किया। हजरत मुहम्मद की मृत्यु के बाद के प्रथम वर्ष के इतिहास की रचना नकीब खां[3] के, दूसरे वर्ष के इतिहास की रचना शाह फतहुल्ला शीराजी[4] के, तीसरे वर्ष की रचना हकीम हुमाम[5] के, चौथे वर्ष के इतिहास की रचना हकीम अली[6] के, पाचवे वर्ष के इतिहास की

१ एक हज़ार वर्ष का इतिहास।

२ हज़रत मुहम्मद की मृत्यु।

३ मीर गयासुद्दीन अली इब्न अब्दुल लतीफ़, मीर यहया कज़वीनी का पौत्र था। वह अपने पिता मीर अब्दुल लतीफ़ के साथ १५५६ ई० में अक्बर के दरबार में पहुचा और अकबर का बहुत बड़ा विश्वास-पात्र हो गया। ९८८ हि० (१५८० ई०) में उसे नकीब खा की उपाधि प्रदान हुई। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी के अनुसार अरब तथा ईरान मे कोई भी इतिहास के ज्ञान में उसका मुकाबला न कर सकता था। वह अक्बर को पुस्तकें पढ पढकर सुनाया करता था। महाभारत का फ़ारसी अनुवाद भी उसी की देख रेख में हुआ। १०२३ हि० (१६१४ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई। (बदायूनीः "मुतख़-बुत्तवारीख़ भाग ३", पृ० ९९, शाह नवाज खाँ: "मआसिरुल उमरा भाग ३" पृ० ८१२-८१७)।

४ शाह फ़तहुल्ला शीराज़ी शीराज़ से दक्षिण-भारत में पहुँचा और बीजापुर के अली आदिल शाह के दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गया। ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) मे वह अक्बर के निमन्त्रण पर अक्बर के दरबार में उपस्थित हुआ। वह भी अक्बर का बहुत बड़ा विश्वास-पात्र हो गया। अक्बर के राज्यकाल के राजस्व के सुधारों में टोडर मल के समान बहुत बड़ा हाथ था। वह वैज्ञानिक, दार्श-निक एव इजीनियर भी था। उसने इलाही सवत् का पचांग तयार किया और बहुत सी मशीनों का आविष्कार किया। उसकी मृत्यु ९९७ हि० (१५८८-८९) में हो गई। (बदायूनी : "मुतख़बुत्तवारीख़ भाग २" पृ० ३१५ १८, ३६९, भाग ३ पृ० १५४, शाह नवाज़ खां "मआसिरुल उमरा भाग १" पृ० १००-१०५)

५ हकीम हुमाम इब्न मीर अब्दुर्रज्ज़ाक गीलानी हकीम अबुल फ़तह गीलानी का अनुज था और वह अपने बडे भाई के साथ हिन्दुस्तान पहुँचा। अपने बडे भाई के समान वह भी अकबर का बहुत बड़ा विश्वास-पात्र था।

६ हकीम अली गीलानी अपने समय का सुप्रसिद्ध चिकित्सक था और इब्ने सीना के क़ानून नामक ग्रंथ की टीका तैयार की थी। वह बड़ा कुशल इजीनियर था और उसने अकबर के राज्यकाल के ३९वें वर्ष में

रचना हाजी इबराहीम सरहिन्दी[1] के, छठे वर्ष के इतिहास की रचना निजामुद्दीन[2] अहमद के और सातवें वर्ष के इतिहास की रचना मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी[3] के सिपुर्द हुई। इसी क्रम से ३५ वर्ष के इतिहास की रचना इन लोगों को सौंपी गई किन्तु यह योजना सफल न हो सकी अतः ९९३ हि० (१५८५ ई०) में हकीम अबुल फतह की सिफारिश पर इस इतिहास की रचना, मुल्ला अहमद थट्टवी के सिपुर्द हो गई। मुल्ला अहमद ने, जो भाग पूर्व में लिखे जा चुके थे उनमें भी सुधार किये और ग़ाज़ान खा (१२९५-१३०४ ई०) के समय तक का इतिहास लिखा किन्तु ९९६ हि० (१५८८ई०) में उसकी हत्या कर दी गई। सम्भवतः मुल्ला अहमद ने अपनी रचना नकीब खा की देखरेख में की, तदुपरान्त आसफ खा ने ९९७ हि० (१५८८-८९ ई०) तक का शेष इतिहास लिखा। १००० हि० (१५९१-९२ ई०) में मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी को इस रचना में संशोधन करने का आदेश दिया गया। लाहौर के मुल्ला मुस्तफा कातिब को भी उसका सहायक बना दिया गया। मुल्ला अहमद ने जो कुछ लिखा था उसका इन लोगों ने दो वर्ष के भीतर संशोधन कर लिया। साथ ही साथ आसफ खा ने स्वयं जिस भाग को लिखा था, उसमें भी सुधार कर दिये। इसके प्राक्कथन की रचना अबुल फज़्ल ने की। "तारीखे अल्फी" में निम्नलिखित तीन विशेषताएं हैं—

(१) इसमें जिस संवत् का प्रयोग किया गया है वह रेहलत संवत् है जो हज़रत मुहम्मद की मृत्यु से प्रारम्भ किया गया है।

(२) घटनाओं का विवरण प्रत्येक वर्ष के अधीन अलग अलग किया गया है। विभिन्न वंशों तथा देशों का इतिहास पृथक् नहीं लिखा गया है।

(३) अकबर के आदेशानुसार इस बात का प्रयत्न किया गया है कि जो कुछ भी लिखा जाय वह यथा-सम्भव निष्पक्ष भाव से लिखा जाय। जो कुछ लिखा जाता था उसे पढ़वाकर अकबर स्वयं सुनता रहता था और इस बात की जाच कर लेता था कि जो कुछ भी लिखा गया है वह निष्पक्ष भाव से लिखा गया है अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त अकबर ने यह भी आदेश दे दिया था कि इस इतिहास की रचना सरल एवं सुबोध भाषा में की जाय तथा अतिशयोक्ति एवं अरबी और फारसी के शेरों इत्यादि को उद्धृत करके ग्रंथ को भारी भरकम बनाने का प्रयत्न न किया जाय।

यद्यपि इतने बड़े इतिहास में इस बात की आशा नहीं की जा सकती कि इसमें जिन घटनाओं का उल्लेख किया गया है वे अन्य स्थानों पर न मिल सकेंगी किन्तु फिर भी इस ग्रंथ के विद्वान् लेखकों ने अपने सूत्रों का बड़ी सावधानी एवं निष्पक्ष भाव से प्रयोग किया है। किन्हीं किन्हीं देशों तथा कालों का पूरा

एक आश्चर्यजनक हौज़ का निर्माण किया। वह भी अकबर का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था। अकबर की अंतिम रुग्णावस्था के समय अकबर की चिकित्सा उसी के सिपुर्द थी। उसकी मृत्यु १०१८ हि० (१६०९ ई०) में हो गई। बदायूनी 'मुन्तख़बुत्तवारीख़, भाग ३", पृ० १६६।

१ हाजी इबराहीम सरहिन्दी अकबर के दरबार के प्रसिद्ध आलिमों में से था और अकबर के राज्यकाल के प्रारम्भ में मख्दूमुल मुल्क शेख अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी एवं शेख अब्दुन्नबी के समान उसे भी असीमित अधिकार प्राप्त थे। अकबर के एबादत खाने के वाद विवाद में वह बड़ा ही महत्वपूर्ण भाग लिया करता था। उसकी मृत्यु ६६४ हि० (१५८६ ई०) में हुई। (बदायूनी "मुन्तख़बुत्तवारीख़, भाग २" पृ० १८७ ८८)।

२ "तबकाते अकबरी" का लेखक।

३ "मुन्तख़बुत्तवारीख़" का लेखक।

इतिहास एक ही स्थान पर लिख दिया गया है और घटनाओ को तोड़ कर विभिन्न वर्षों मे विभाजित करने का प्रयत्न नही किया गया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के इतिहास, अफगान सुल्तानों के इतिहास एव हिन्दुस्तान के सुल्तान के राज्य के पतन के उपरान्त के प्रातीय राज्यो का इतिहास अलग अलग नही दिया गया है। अपितु विभिन्न वर्षो के अन्तर्गत एक ही स्थान पर दे दिया गया है। मुगुलो का इतिहास बडे विस्तार से दिया गया है। कही कही कुछ महत्वपूर्ण घटनाए भी छूट गयी हैं किन्तु बहुत से स्थानो पर ऐसी घटनाए भी दी गई हैं जिनका उल्लेख अन्य इतिहासो मे नही मिलता।

मुल्ला अहमद अपने समय का एक बहुत बडा विद्वान् था। उसके पूर्वज सुनी थे किन्तु वह अपनी युवावस्था मे शीआ हो गया था। २२ वर्ष की अवस्था मे वह थट्टा से ईरान पहुचा और वहा के बहुत से स्थानो की सैर की तथा वहा के प्रसिद्ध विद्वाना से मिला। तदुपरान्त वह शाह तहमास्प सफवी के दरबार के सेवका मे सम्मिलित हो गया। जब शाह तहमास्प सफवी का उत्तराधिकारी शाह इस्माईल द्वितीय सुन्नी हो गया और उसने शीओ का दमन प्रारम्भ कर दिया तो मुल्ला अहमद ईरान से एराक, मदीना तथा मक्का पहुचा। तदुपरान्त वह दक्षिणी भारत मे गोलकुडा के कुतुबशाही सुल्तानों के दरबार के सेवको मे सम्मिलित हो गया। ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) मे वह अकबर के दरबार मे उपस्थित हुआ। ९९६ हि० (१५८८ ई०) मे मीर्ज़ा फौलाद बरलास नामक एक कट्टर सुन्नी ने उसकी हत्या कर दी। मुल्ला अहमद ने "खुलासतुल हयात" नामक दर्शन शास्त्र सम्बन्धी एक ग्रथ की भी रचना की।

मीर्ज़ा कियामुद्दीन जाफर बेग जो आसफ खा की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ, ९८५ हि० (१५७७-७८ ई०) मे अकबर की सेवा मे पहुचा। वह कज़्वीन का निवासी था। अकबर तथा जहागीर के राज्यकाल में उसे मुख्य सैनिक पद प्राप्त रहे। १०२१ हि० (१६१२-१३ ई०) मे बुरहानपुर मे उसकी मृत्यु हो गई। सेनापति एव विद्वान् होने के साथ साथ वह कवि भी था और उसने "खुसरो व शीरी' नामक एक मसनवी की भी रचना की।

"तारीखे अलफी" अभी तक प्रकाशित नही हुई है। इसकी हस्तलिखित प्रतिया हिन्दुस्तान, ईरान एव युरोप के फारसी हस्तलिखित ग्रथो के पुस्तकालयो मे भी प्राप्य हैं। आगे के पृष्ठो मे बाबर के इतिहास से सम्बन्धित भाग का अनुवाद ब्रिटिश म्युजियम लदन एव अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ की हस्तलिखित लिपि के आधार पर किया गया है।

अबुल फ़ज़्ल

अकबर नामा

शेख अबुल फज़्ल अल्लामी, शेख मुबारक नागौरी का पुत्र तथा शेख अबुल फैज़ फैज़ी[1] का छोटा भाई था। उसका जन्म ६ मुहर्रम ९५८ हि० (१४ जनवरी, १५५१ ई०) को आगरा मे हुआ। अकबर

१ शेख अबुल फ़ैज़ 'फ़ैज़ी" का जन्म आगरा में ९५४ हि० (१५४७ ई०) में हुआ। अकबर ने उसे मलेकुश्शुअरा (कवियों के सम्राट्) की उपाधि प्रदान कर दी थी। कविताओं के अतिरिक्त उस समय के दरबार के संस्कृत ग्रंथों के फ़ारसी अनुवाद की योजना में भी उसका बहुत बड़ा हाथ था। उसने निज़ामी के "सिकन्दर नामा" के समान "अकबर नामा" नामक काव्य की रचना प्रारम्भ की जो उसके खमसे (५ मसनवियों के संग्रह) की पाँचवी मसनवी थी किन्तु केवल उसका एक संक्षिप्त सा भाग ही लिखा जा सका और १० सफ़र १००४ हि० (१५ अक्तूबर १५९५ ई०) को आगरा में ही उसकी मृत्यु हो गई।

के शासन काल के १९वें वर्ष (१५७३-७४ ई०) मे वह अकबर के दरबार मे प्रस्तुत किया गया और शीघ्र ही अकबर का बहुत बडा विश्वासपात्र एव मित्र बन गया। अकबर के समय के कट्टर आलिमो के जोर को तोडने मे उसने अकबर की बडी सहायता की और अकबर के "सुलहकुल"[1] के सिद्धान्तो के निरूपण एव प्रचार मे उसका बहुत बडा हाथ था। उस समय के समस्त विद्वान् एव लेखक उसकी योग्यता से प्रभावित थे। उसने दक्षिण मे सराहनीय सैनिक सेवाए भी सम्पन्न की और वहीं से लौटते समय उसे शाहजादा सलीम ने, जिसने बादशाह होकर जहागीर की उपाधि धारण की, ४ रबी-उल-अव्वल १०११ हि० (२२ अगस्त १६०२ ई०) को वीर सिंह देव नामक बुन्देला सरदार द्वारा उसकी हत्या करा दी। वीर सिंह देव ने शेख अबुल फजल का सिर सलीम के पास इलाहाबाद भेज दिया। ग्वालियर के समीप अन्तरी मे उसकी लाश दफन कर दी गई।

अकबर नामा के अतिरिक्त उसने "एयारे दानिश" की रचना की जो कि "अनवारये सुहैली"[2] का ही सरल एव सुबोध रूप है। महाभारत के अनुवाद तथा "तारीखे अलफी" के प्राक्कथन की भी उसी ने रचना की। उसकी रचनाओं मे उसके पत्रो का सग्रह, जिसे उसकी बहिन के पुत्र अब्दुस्समद बिन अफ़जलमुहम्मद ने १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) मे सकलित किया, बडा प्रसिद्ध है।[3] यह सकलन "मुकातेबाते अल्लामी", "इन्शाए अबुल फज़ल" अथवा "मुकातेबाते अबुल फजल" के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीन भागो मे विभाजित है—

१. अकबर की ओर से बादशाहो तथा अमीरो के नाम पत्र।

२ बादशाहो तथा अमीरो के नाम उसके अपने पत्र।

३ विभिन्न ग्रथो के सम्बन्ध मे टिप्पणिया तथा गद्य के अन्य नमूने।

उसकी एक अन्य रचना भी "रुक्काते अबुल फजल"[4] अथवा "अबुल फजल के पत्रो का सकलन" के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु इसमे सभी पत्र जाली है और किसी ने अबुल फजल की प्रसिद्धि से लाभ उठा कर उसके नाम से यह रचना तैयार कर दी है। फैजी के पत्रो के लताएफे फैजी[5] नामक ग्रथ मे अबुल फजल की एक अन्य रचना "मुनाजात"[6] भी सम्मिलित है।

उसकी सब से अधिक प्रसिद्ध रचना "अकबर नामा" तथा "आईने अकबरी" ही हैं। उसने अकबर नामा का जिस क्रम से विभाजन किया था उसके अनुसार "आईने अकबरी" अकबर नामा का तीसरा भाग है किन्तु यह पृथक् ग्रथ ही के नाम से अधिक प्रसिद्ध है।

"अकबर नामा" निम्नांकित भागो मे विभाजित है—

१ सभी से मेल।

२ अनवार सुहैली, शेख हुसेन वाएज काशिफ़ी की बड़ी प्रसिद्ध रचना है। यह कलीला व दिमना नामक प्रसिद्ध ग्रंथ का अनुवाद है जिसमें बड़ी काव्य-मय भाषा का प्रयोग किया गया है।

३ इसका सकलन १०११ हि० (१६०२ ई०) में प्रारम्भ कर दिया गया था।

४ खुदाबख्श बाकीपुर के कैटलाग के संकलनकर्त्ता ने इसे बड़ा ही अप्राप्य ग्रथ बताया है और इसका नाम चौथा दफ्तर अथवा अबुल फ़ज़ल के पत्रों का चौथा भाग रक्खा है किन्तु नवलकिशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित रुक्काते अबुल फ़ज़ल तथा चौथा दफ्तर दोनों एक ही ग्रथ हैं।

५ लखनऊ एव अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिखित पोथियों का सग्रह।

६ डा० एस० ए० ए० रिजवी "मुनाजाते अबुल फ़ज़ल" मेडीवल इंडिया क्वार्टरली अलीगढ न० ३ (पृ० १—३७ फ़ारसी, व पृ० ११२—१२३ अंग्रेजी)

१—अकबर के जन्म, उसके पूर्वजो तथा अकबर के शासनकाल के १७ वें वर्ष तक का इतिहास जो कि निम्नाकित २ खडो मे विभाजित है—

(अ) अकबर का जन्म, तीमूरियो की वशावली, बाबर तथा हुमायू के राज्य का सविस्तार हाल।

(ब) अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर १७वें वर्ष तक के मध्य तक का हाल। यह भाग शाबान १००४ हि० (अप्रैल १५९६ ई०) अथवा अकबर के शासन काल के ४१वें वर्ष मे पूरा हुआ।

२—अकबर के शासनकाल के १७वें वर्ष के मध्य से लेकर ४६वें वर्ष तक का उल्लेख।

प्रथम भाग के अ और ब खडो को साधारण रूप से अबुल फज़ल के समय के कुछ बाद से ही भाग १ और भाग २ के रूप मे अलग अलग नकल किया जाने लगा था और उसके दूसरे भाग को उपर्युक्त क्रम से तीसरा भाग कहा जाता था।

"अकबर नामा" का तीसरा भाग "आईने अकबरी" है किन्तु अबुल फज़ल ने "अकबर नामा" के साथ साथ इसकी भी रचना प्रारम्भ कर दी थी किन्तु इसने एक पृथक् ग्रथ का ही रूप धारण कर लिया है। इसमे अकबर के राज्य के शासन के सम्बन्ध के आकडे तथा राज्यव्यवस्था सम्बधी अन्य नियमों एव समस्याओ का विस्तार से उल्लेख किया गया है।

अबुल फज़ल की इन रचनाओ के लिए अकबर ने अपने राज्य के बहुत से लोगो को इस बात का आदेश दिया कि उन्हें बाबर तथा हुमायू के विषय मे जो कुछ भी जानकारी हो उसे लिपिबद्ध करके अकबर के समक्ष प्रस्तुत करें। इन्ही रचनाओ मे गुलबदन बेगम का "हुमायूं नामा," मेहतर जौहर की "तज़-किरतुल वाकेआत" एव बायज़ीद की "तारीखे हुमायू" अब भी प्राप्त है। इस आदेशानुसार कुछ अन्य ग्रथ भी लिखे गये होंगे जो अब हमे प्राप्य नही। इसके अतिरिक्त अकबर के शासनकाल के १९वें वर्ष से वाकेआत नवीसी के अधिनियम भी तैयार हो गये।[1] उस समय के समस्त अभिलेख एव अमीरो के नाम पत्र, फरमान, शासन सम्बन्धी अन्य कागजात अबुल फजल को प्राप्त थे अत उसने अपने इतिहास के सकलन के लिये जिस सामग्री का प्रयोग किया है वह बडी ही विस्तृत थी। इसके साथ साथ अबुल फज़ल ने अपनी सामग्री के प्रयोग मे जिस परिश्रम एव जिस वैज्ञानिक नीति से काम लिया है वह बडी ही आश्चर्यजनक है। जहा तक अकबर की राजनीति एव उसके व्यक्तिगत जीवन की कुछ विशेष बातो का सम्बन्ध है वहा उसने सत्य को भली भाति स्पष्ट नही किया है किन्तु फिर भी उसके शब्दों के जाल से मूल घटना का पता साधारण परिश्रम से चल जाता है। हुमायू के इतिहास के लिये उसने जितनी महत्वपूर्ण सामग्री का प्रयोग किया उसका अनुमान उसकी रचना एव अन्य प्राप्य ग्रथो की तुलना करके ही भली भाति लगाया जा सकता है। बाबर के इतिहास के लिये उसने "तुजुके बाबरी", "तारीखे रशीदी", "नफायसुल मआसिर" तथा अन्य ग्रथो का भली भाति प्रयोग किया है और समस्त घटनायें सक्षिप्त रूप मे बडे क्रम से लिपिबद्ध की है।

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

तबकाते अकबरी

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद के पिता का नाम ख्वाजा मुहम्मद मुकीम हरवी था। वह बाबर का

१ अकबर नामा भाग १, पृ० १०।

के शासन काल के १९वें वर्ष (१५७३-७४ ई०) मे वह अकबर के दरबार मे प्रस्तुत किया गया और शीघ्र ही अकबर का बहुत बडा विश्वासपात्र एव मित्र बन गया। अकबर के समय के कट्टर आलिमो के ज़ोर को तोडने मे उसने अकबर की बडी सहायता की और अकबर के "सुलहकुल" के सिद्धान्तो के निरूपण एव प्रचार मे उसका बहुत बडा हाथ था। उस समय के समस्त विद्वान् एव लेखक उसकी योग्यता से प्रभावित थे। उसने दक्षिण मे सराहनीय सैनिक सेवाए भी सम्पन्न की और वही से लौटते समय उसे शाहजादा सलीम ने, जिसने बादशाह होकर जहागीर की उपाधि धारण की, ४ रबी-उल-अव्वल १०११ हि० (२२ अगस्त १६०२ ई०) को बीर सिंह देव नामक बुन्देला सरदार द्वारा उसकी हत्या करा दी। बीर सिंह देव ने शेख अबुल फजल का सिर सलीम के पास इलाहाबाद भेज दिया। ग्वालियर के समीप अन्तरी मे उसकी लाश दफन कर दी गई।

अकबर नामा के अतिरिक्त उसने "एयारे दानिश" की रचना की जो कि "अनवारये सुहैली"[२] का ही सरल एव सुबोध रूप है। महाभारत के अनुवाद तथा "तारीखे अलफी" के प्राक्कथन की भी उसी ने रचना की। उसकी रचनाओ मे उसके पत्रो का सग्रह, जिसे उसकी बहिन के पुत्र अब्दुस्समद बिन अफज़लमुहम्मद ने १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) मे सकलित किया, बडा प्रसिद्ध है।[३] यह सकलन "मुकातेबाते अल्लामी", "इन्शाए अबुल फजल" अथवा "मुकातेबाते अबुल फजल" के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीन भागो मे विभाजित है—

१ अकबर की ओर से बादशाहो तथा अमीरो के नाम पत्र।

२. बादशाहो तथा अमीरो के नाम उसके अपने पत्र।

३ विभिन्न ग्रथो के सम्बन्ध मे टिप्पणिया तथा गद्य के अन्य नमूने।

उसकी एक अन्य रचना भी "रुक्काते अबुल फजल"[४] अथवा "अबुल फज़ल के पत्रो का सकलन" के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु इसमे सभी पत्र जाली हैं और किसी ने अबुल फजल की प्रसिद्धि से लाभ उठा कर उसके नाम से यह रचना तैयार कर दी है। फैज़ी के पत्रो के लताएफे फैज़ी[५] नामक ग्रथ मे अबुल फजल की एक अन्य रचना "मुनाजात"[६] भी सम्मिलित है।

उसकी सब से अधिक प्रसिद्ध रचना "अकबर नामा" तथा "आईने अकबरी" ही है। उसने अकबर नामा का जिस क्रम से विभाजन किया था उसके अनुसार "आईने अकबरी" अकबर नामा का तीसरा भाग है किन्तु यह पृथक् ग्रथ ही के नाम से अधिक प्रसिद्ध है।

"अकबर नामा" निम्नाकित भागो मे विभाजित है—

१ सभी से मेल।

२ अनवार सुहैली, शेख हुसेन वाएज़ काशिफ़ी की बड़ी प्रसिद्ध रचना है। यह कलीला व दिमना नामक प्रसिद्ध ग्रंथ का अनुवाद है जिसमें बड़ी काव्य-मय भाषा का प्रयोग किया गया है।

३ इसका संकलन १०११ हि० (१६०२ ई०) में प्रारम्भ कर दिया गया था।

४ खुदाबख्श बांकीपुर के कैटलाग के संकलनकर्त्ता ने इसे बड़ा ही अप्राप्य ग्रंथ बताया है और इसका नाम चौथा दफ्तर अथवा अबुल फ़ज़ल के पत्रों का चौथा भाग रक्खा है किन्तु नवलकिशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित रुक्काते अबुल फ़ज़ल तथा चौथा दफ्तर दोनों एक ही ग्रंथ हैं।

५ लखनऊ एवं अलीगढ़ विश्वविद्यालय, हस्तलिखित पोथियों का संग्रह।

६ डा० एस० ए० ए० रिज़वी : "मुनाजाते अबुल फ़ज़ल" मेडीवल इंडिया क्वार्टरली अलीगढ़ नं० १ (पृ० १—३७ फ़ारसी, व पृ० ११२—१२३ अंग्रेज़ी)

१—अकबर के जन्म, उसके पूर्वजों तथा अकबर के शासनकाल के १७ वें वर्ष तक का इतिहास जो कि निम्नांकित २ खंडों में विभाजित है—

(अ) अकबर का जन्म, तीमूरियों की वंशावली, बाबर तथा हुमायूं के राज्य का सविस्तार हाल।

(ब) अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर १७वें वर्ष तक के मध्य तक का हाल। यह भाग शाबान १००४ हि० (अप्रैल १५९६ ई०) अथवा अकबर के शासन काल के ४१वें वर्ष में पूरा हुआ।

२—अकबर के शासनकाल के १७वें वर्ष के मध्य से लेकर ४६वें वर्ष तक का उल्लेख।

प्रथम भाग के अ और ब खंडों को साधारण रूप से अबुल फ़ज़्ल के समय के कुछ बाद से ही भाग १ और भाग २ के रूप में अलग अलग नक़ल किया जाने लगा था और उसके दूसरे भाग को उपर्युक्त क्रम से तीसरा भाग कहा जाता था।

"अकबर नामा" का तीसरा भाग "आईने अकबरी" है किन्तु अबुल फ़ज़्ल ने "अकबर नामा" के साथ साथ इसकी भी रचना प्रारम्भ कर दी थी किन्तु इसने एक पृथक् ग्रंथ का ही रूप धारण कर लिया है। इसमें अकबर के राज्य के शासन के सम्बन्ध के आंकड़े तथा राज्यव्यवस्था सम्बंधी अन्य नियमों एवं समस्याओं का विस्तार से उल्लेख किया गया है।

अबुल फ़ज़्ल की इन रचनाओं के लिए अकबर ने अपने राज्य में बहुत से लोगों को इस बात का आदेश दिया कि उन्हें बाबर तथा हुमायू के विषय में जो कुछ भी जानकारी हो उसे लिपिबद्ध करके अकबर के समक्ष प्रस्तुत करें। इन्हीं रचनाओं में गुलबदन बेगम का "हुमायूं नामा," मेहतर जौहर की "तज़-किरतुल वाक़ेआत" एवं बायज़ीद की "तारीख़े हुमायू" अब भी प्राप्त हैं। इस आदेशानुसार कुछ अन्य ग्रंथ भी लिखे गये होंगे जो अब हमें प्राप्य नहीं। इसके अतिरिक्त अकबर के शासनकाल के १९वें वर्ष में वाक़ेआत नवीसी के अधिनियम भी तैयार हो गये।[1] उस समय के समस्त अभिलेख एवं अमीरों के नाम पत्र, फ़रमान, शासन सम्बन्धी अन्य कागज़ात अबुल फ़ज़्ल को प्राप्त थे अतः उसने अपने इतिहास के संकलन के लिये जिस सामग्री का प्रयोग किया है वह बड़ी ही विस्तृत थी। इसके साथ साथ अबुल फ़ज़्ल ने अपनी सामग्री के प्रयोग में जिस परिश्रम एवं जिस वैज्ञानिक नीति से काम लिया है वह बड़ी ही आश्चर्यजनक है। जहां तक अकबर की राजनीति एवं उसके व्यक्तिगत जीवन की कुछ विशेष बातों का सम्बन्ध है वहां उसने सत्य को भली भांति स्पष्ट नहीं किया है किन्तु फिर भी उसके शब्दों के जाल से मूल घटना का पता साधारण परिश्रम से चल जाता है। हुमायूं के इतिहास के लिये उसने जितनी महत्वपूर्ण सामग्री का प्रयोग किया उसका अनुमान उसकी रचना एवं अन्य प्राप्य ग्रंथों की तुलना करके ही भली भांति लगाया जा सकता है। बाबर के इतिहास के लिये उसने "तुज़ुके बाबरी", "तारीख़े रशीदी", "नफ़ायसुल मआसिर" तथा अन्य ग्रंथों का भली भांति प्रयोग किया है और समस्त घटनायें संक्षिप्त रूप में बड़े श्रम से लिपिबद्ध की हैं।

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

तबक़ाते अकबरी

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद के पिता का नाम ख़्वाजा मुहम्मद मुक़ीम हरवी था। वह बाबर का

१ अकबर नामा भाग १, पृ० १०।

बडा विश्वासपात्र तथा दीवाने बयूतात था। बाबर की मृत्यु के उपरान्त जब हुमायू ने गुजरात विजय कर लिया और १५३५ ई० मे मीर्ज़ा अस्करी को अहमदाबाद प्रदान कर दिया तो ख्वाजा मुकीम को उसका वज़ीर नियुक्त किया। १५३९ ई० मे जब हुमायू शेरशाह से चौसा के युद्ध मे पराजित होकर आगरा पहुँचा तो ख्वाजा मुहम्मद मुकीम उसके साथ था। ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार ख्वाजा मुकीम अकबर के राज्यकाल के १२वें वर्ष में आगरा मे राज्य-सेवा कर रहा था।[1]

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद ने अपने जन्म के विषय मे किसी स्थान पर कोई प्रकाश नही डाला है किन्तु बदायूनी के अनुसार निज़ामुद्दीन अहमद की मृत्यु ४५ वर्ष की अवस्था मे अकबर के शासनकाल के ३८वें वर्ष मे अर्थात् २३ सफर १००३ हि० (७ नवम्बर १५९४ ई०) को हुई।[2] इस प्रकार उसकी जन्म-तिथि ९५८ हि० अथवा १५५१ ई० होती है। हमे ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद की बाल्यावस्था तथा बाद की शिक्षा के विषय मे भी कोई प्रामाणिक ज्ञान नही किन्तु "तबकाते अकबरी' के अध्ययन से पता चलता है कि ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद को अवश्य ही अपने समय के बडे-बडे विद्वानो द्वारा शिक्षा प्राप्त हुई होगी। जिस समय वह गुजरात मे था तो बदायूनी के अनुसार अमानी[3], वकाई[4], हयाती[5] तथा सरफी[6] सरीखे कवि उसके द्वारा आश्रय प्राप्त करते रहते थे। अकबर ने उसे "तारीखे अलफी" के सकलन-कर्ताओ के बोर्ड मे भी सम्मिलित किया था।[7]

वह एक उच्च कोटि का सैनिक था और उसने अकबर के विभिन्न अभियाना मे महत्व-पूर्ण भाग लिया। अकबर के राज्यकाल के २९वें वर्ष मे वह गुजरात का बख्शी नियुक्त किया गया। ९९६ हि० (१५८७-८८ई०) मे अकबर ने उसे दरबार मे बुलवा लिया और वह उसकी सेवा मे लाहौर म जहा वह उस समय था, उपस्थित हुआ। उसे नित्यप्रति उन्नति प्राप्त होती रही और सम्भवत अजमेर गुजरात तथा मालवा की खालसा की भूमि की देखरेख भी उसके सिपुर्द कर दी गई। ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) मे उसे शम्साबाद परगना जागीर के रूप मे प्रदान हुआ। १५९१-९२ म जब राज्य के बख्शी आसफ खा को काबुल के अभियान हेतु नियुक्त किया गया तो निज़ामुद्दीन अहमद को उसके स्थान पर बख्शी नियुक्त कर दिया गया। निज़ामुद्दीन अहमद अकबर के साथ कश्मीर तथा लाहौर मे कुछ समय तक रहा किन्तु ४५ वर्ष की अवस्था मे १४ सफर १००३ हि० (२९ अक्तूबर १५९४ ई०) को लाहौर के समीप ज्वर से पीडित होकर वह २३ सफर (७ नवम्बर १५९४ ई०) को रावी नदी के तट पर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

निज़ामुद्दीन अहमद ने "तबकाते अकबरी" के प्राक्कथन मे लिखा है कि उसने इस ग्रन्थ म उन घटनाओं का विवरण दिया है जो हिन्दुस्तान मे इस्लाम के अभ्युदय अर्थात् ३६७ हि० (९७७ ७८ ई०) से १००१ हि० (१५९२-९३ ई०) तक घटी, किन्तु वास्तव मे इसमे ३७७ हि० (९८७-८८ ई०) से लेकर १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) तक का भारतवर्ष का इतिहास उपलब्ध है। सम्भवत लेखक

१ "तबकाते अकबरी भाग २" पृ० २११।
२ "मुन्तखबुत्तवारीख भाग २" (कलकत्ता) पृ० ३९५-९६।
३ "मुन्तखबत्तवारीख भाग ३' (कलकत्ता) पृ० १९८।
४ वही पृ० १९६—१९७।
५ वही पृ० २११।
६ वही पृ० २६०।
७ ' मुन्तखबुत्तवारीख भाग २" पृ० ३१८।

ने १००१ हि० मे इसकी रचना समाप्त कर ली थी और १००२ हि० की घटनाए बाद मे जोड दी। इस इतिहास को उसने ९ खडो मे विभाजित किया—

प्रस्तावना—गज़नवियो का इतिहास

१—देहली का इतिहास १००२ हि० (१५९३ ई०) तक।

२—दक्षिण का इतिहास ७४८ हि० (१३४७ ई०) से १००२ हि० (१५९३ ई०) तक।

३—गुजरात के सुल्तानो का इतिहास ७९३ हि० (१३९० ई०) से ९८० हि० (१५७३ ई०) तक।

४—मालवा के सुल्तानो का इतिहास ८०९ हि० (१४०६ ई०) से ९७७ हि० (१५६९ ई०) तक।

५—बगाल के सुल्तानो का इतिहास ७४१ हि० (१३४० ई०) से ९८४ हि० (१५७६ ई०) तक।

६—जौनपुर के सुल्तानो का इतिहास ७८४ हि० (१३८२ ई०) से ८८१ हि० (१४७६ ई०) तक।

७—कश्मीर के सुल्तानो का इतिहास ७४७ हि० (१३४६ ई०) से ९९५ हि० (१५८६ ई०)।

८—सिंध के सुल्तानो का इतिहास ८६ हि० (७०५ ई०) से १००१ हि० (१५९२ ई०) तक।

९—मुल्तान के सुल्तानो का इतिहास ८४७ हि० (१४४३ ई०) से ९२३ हि० (१५१७ ई०) तक

अन्त मे वह भौगोलिक विवरण भी लिखना चाहता था किन्तु सम्भवत उस भाग की वह रचना न कर सका कारण कि किसी प्राप्य हस्तलिखित पोथी मे यह विवरण नही मिलता।

"अकबर नामा" के अतिरिक्त उसने निम्नांकित २८ इतिहासो पर "तबकाते अकबरी" को आधारित किया है—

१—तारीखे यमीनी
२—तारीखे ज़ैनुल अख्बार
३—रौज़तुस्सफा
४—ताजुल-मआसिर
५—तबकाते नासिरी
६—खज़ायनुल फुतूह
७—तुगलुक्नामा
८—तारीखे फीरोज़शाही (ज़िया बरनी)
९—फुतूहाते फ़ीरोज़शाही
१०—तारीखे मुबारकशाही
११—फुतूहुस्सलातीन
१२—तारीखे महमूदशाही हिन्दवी (मन्डवी, रियु के अनुसार)
१३—तारीखे महमूदशाही खुर्द हिन्दवी (मन्डवी, रियु के अनुसार)
१४—तारीखे महमूदशाही गुजराती
१५—मआसिरे महमूदशाही गुजराती
१६—तारीखे मुहम्मदी
१७—तारीखे बहादुरशाही
१८—तारीखे बहमनी
१९—तारीखे नासिरी

२०—तारीखे मुजफ्फरशाही
२१—तारीखे मीर्ज़ा हैदर
२२—तारीखे कश्मीर
२३—तारीखे सिन्ध
२४—तारीखे बाबरी
२५—वाकेआते बाबरी
२६—तारीखे इबराहीमशाही
२७—वाकेआते मुश्तावी
२८—वाकेआते हज़रत जनत आशियानी हुमायूं बादशाह।

इन ग्रथो में "तारीखे महमूदशाही मन्डवी", "तारीखे महमूदशाही खुर्द मन्डवी", 'तबकाते बहादुर शाही", तथा "तारीखे महमूदशाही गुजराती", 'मआसिरे महमूदशाही गुजराती", "तारीख बहमनी" का अभी तक कोई पता नही चल सका है और कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनका नाम अभी कुछ वर्षों से ही लिया जाने लगा है और केवल १ या २ प्रतिया कहीं कहीं उपलब्ध हो रही है। इस प्रकार "तबकाते अकबरी" मे जो सामग्री सकलित है वह उन इतिहासो के अभाव के कारण जो अब उपलब्ध नहीं है, अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त निज़ामुद्दीन अहमद मे कट्टरपन तथा पक्षपात एव इसी प्रकार के अन्य दोष जो उसके बहुत से समकालीन एव पूर्व के इतिहासकारो मे पाये जाते थे, बहुत कम पाये जाते हैं। मालवा के सुल्तान महमूद को पराजित करने के उपरान्त राणा सागा ने उसे केवल मुक्त ही नहीं कर दिया अपितु उसका राज्य भी उसे वापस कर दिया। इससे पूर्व गुजरात के सुल्तान मुज़फ्फर ने भी सुल्तान महमूद का सहायता प्रदान की थी। सुल्तान मुज़फ्फर तथा राणा सागा दोनो के पौरुष एव उदारता की तुलना करते हुए निज़ामुद्दीन अहमद ने राणा सागा की उदारता एव पौरुष को सुल्तान मुजफ्फर की उदारता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण बताया है और राणा सागा की भूरि-भूरि प्रशसा की है।[1] यद्यपि उसके एक अन्य समकालीन "मिरआते सिकन्दरी" के लेखक सिकन्दर बिन मझू ने इसी घटना का उल्लेख करते हुए यह लिखा है कि राणा सागा ने सुल्तान महमूद को इस कारण मुक्त कर दिया कि उसे गुजरात एव देहली के सुल्तानो का भय था।[2] निज़ामुद्दीन अहमद ने समस्त घटनाए ऐतिहासिक क्रम को दृष्टि मे रखते हुए अत्यधिक छान-बीन के उपरान्त लिपिबद्ध की हैं। गुजरात मे बहुत समय तक निवास करने के कारण उसे गुजरात एव मालवा के विषय मे विशेष जानकारी थी। कश्मीर तथा पंजाब मे भी वह कुछ समय तक रहा। इस प्रकार उसने विभिन्न प्रान्तो का जो इतिहास लिखा है उसमे से बहुत कुछ अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है। उसकी भाषा सरल है और उसने यथासम्भव पक्षपात से बचने का प्रयत्न किया है। "तारीखे फ़िरिश्ता" तथा अन्य बाद के बहुत से इतिहासकारो ने उसी के इतिहास के आधार पर अपने इतिहासो की रचना की।

निज़ामुद्दीन अहमद ने बाबर का इतिहास "अकबरनामा" एव "बाबरनामा" पर आधारित किया है किन्तु बाबर के जीवनकाल की एक अन्तिम घटना के लिये जिसका सूत्र उसका पिता मुहम्मद

१ "तबकाते अकबरी भाग ३" (पृ० १०३—१०४), रिजवी: "उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २" (पृ० २३८)।
२ "मिरआते सिकन्दरी" पृ० १५४—१५५, रिजवी: "उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २" (पृ० ३५६)।

मुकीम था, बडा महत्व प्राप्त है। यह घटना निज़ामुद्दीन अली खलीफा के षड्यन्त्र से सम्बन्धित है जिसके अनुसार उसने हुमायू के स्थान पर महदी ख्वाजा को सिंहासनारूढ करने की योजना बनाई थी। निज़ामुद्दीन के अनुसार इस षड्यन्त्र का खडन उसके पिता मुहम्मद मुकीम ही के प्रयत्न के फलस्वरूप हुआ। अपने पिता के इस कारनामे का उसने विस्तार से उल्लेख किया है। इस घटना का समर्थन "अकबर नामा" मे भी हुआ है किन्तु अबुल फज़ल ने इसे कोई अधिक महत्व नही दिया है।

मीर मुहम्मद मासूम नामी

तारीख़े सिन्ध

मीर मुहम्मद मासूम नामी बिन सैयिद सफाई अल हुसैनी अल तिरमिजी अल भक्करी, भक्कर के एक शेखुल इस्लाम का पुत्र था। ९९१ हि० (१५८३ ई०) म वह अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त गुजरात पहुचा और 'तबकाते अकबरी' के लेखक निज़ामुद्दीन अहमद का मित्र हो गया। वह १५९५-९६ ई० म अकबर के दरबार के सेवको मे सम्मिलित हो गया और २५० का मसब प्राप्त किया। १०१२ हि० (१६०३-४ ई०) म उसे शाह अब्बास सफवी के पास राजदूत बना कर ईरान भेजा गया। जब वह वहा से वापस आया तो जहागीर ने उसे अमीरुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। वह १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) म भक्कर लौट गया और सम्भवत उसी के कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गयी।

'तारीखे सिन्ध' म जिसे 'तारीखे मासूमी' भी कहा जाता है, उसने सिन्ध के सुल्ताना का इतिहास जो मुसल्माना की विजय से लेकर अकबर के शासन-काल तक राज्य करते रहे दिया है और इसे चार खडो म विभाजित किया है —

१. सिन्ध की विजय।
२ हिन्दुस्तान के बादशाहा द्वारा नियुक्त गवर्नरो का इतिहास ८०१ हि० (१३९९ ई०) तक, तथा सूमरा एव सुम्मा वशो का इतिहास ९१६ हि० (१५१० ई०) तक।
३ अरगून वश का इतिहास, सुल्तान महमूद खा ९८२ हि० (१५७४ ई०) तक तथा थट्टा के कुछ सुल्ताना का इतिहास ९९३ हि० (१५८५ ई०) तक।
४ सिन्ध का इतिहास, ९८२ हि० (१५७४ ई०) से अकबर की विजय १००८ हि० (१५९९ १६०० ई०) तक।

मीर मुहम्मद मासूम को सिन्ध के इतिहास का विशेष ज्ञान था और उसने अपनी जानकारी के आधार पर सिन्ध की प्राचीन एतिहासिक छोटी छोटी घटनाओ को सकलित करके अपना इतिहास तैयार किया है। सम्भवत ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की मित्रता से भी उसे बडा लाभ हुआ होगा और उसने अपने इतिहास का यथासम्भव बिना किसी पक्षपात के प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

शेख़ रिज्कुल्लाह मुश्ताकी

वाक़आते मुश्ताकी

शेख़ रिज्कुल्लाह मुश्ताकी बिन सादुल्लाह देहलवी का जन्म ८९७ हि० (१४९१ ९२ ई०) म

२०—तारीखे मुज़फ्फरशाही
२१—तारीखे मीर्ज़ा हैदर
२२—तारीखे कश्मीर
२३—तारीखे सिन्ध
२४—तारीखे बाबरी
२५—वाकेआते बाबरी
२६—तारीखे इबराहीमशाही
२७—वाकेआते मुश्ताकी
२८—वाकेआते हज़रत जन्नत आशियानी हुमायू बादशाह।

इन ग्रथो में "तारीखे महमूदशाही मन्डवी", "तारीखे महमूदशाही खुर्द मन्डवी', 'तबकाते बहादुर शाही", तथा "तारीखे महमूदशाही गुजराती", "मआसिरे महमूदशाही गुजराती', 'तारीखे बहमनी" का अभी तक कोई पता नही चल सका है और कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनका नाम अभी कुछ वर्षों से ही लिया जाने लगा है और केवल १ या २ प्रतिया कही कही उपलब्ध हो रही हैं। इस प्रकार "तबकाते अकबरी" मे जो सामग्री सकलित है वह उन इतिहासो के अभाव के कारण जो अब उपलब्ध नही हैं, अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त निज़ामुद्दीन अहमद मे कट्टरपन तथा पक्षपात एव इसी प्रकार के अन्य दोष जो उसके बहुत से समकालीन एव पूर्व के इतिहासकारो मे पाये जाते थे, बहुत कम पाये जाते है। मालवा के सुल्तान महमूद को पराजित करने के उपरान्त राणा सागा ने उसे केवल मुक्त ही नही कर दिया अपितु उसका राज्य भी उसे वापस कर दिया। इससे पूर्व गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर ने भी सुल्तान महमूद को सहायता प्रदान की थी। सुल्तान मुजफ्फर तथा राणा सागा दोनो के पौरुष एव उदारता की तुलना करते हुए निज़ामुद्दीन अहमद ने राणा सागा की उदारता एव पौरुष को सुल्तान मुजफ्फर की उदारता से कही अधिक महत्वपूर्ण बताया है और राणा सागा की भूरि-भूरि प्रशसा की है।[1] यद्यपि उसके एक अन्य समकालीन "मिरआते सिकन्दरी" के लेखक सिकन्दर बिन मझू ने इसी घटना का उल्लेख करते हुए यह लिखा है कि राणा सागा ने सुल्तान महमूद को इस कारण मुक्त कर दिया कि उसे गुजरात एव देहली के सुल्तानो का भय था।[2] निज़ामुद्दीन अहमद ने समस्त घटनाए ऐतिहासिक क्रम को दृष्टि म रखते हुए अत्यधिक छान-बीन के उपरान्त लिपिबद्ध की हैं। गुजरात म बहुत समय तक निवास करने के कारण उसे गुजरात एव मालवा के विषय मे विशेष जानकारी थी। कश्मीर तथा पजाब मे भी वह कुछ समय तक रहा। इस प्रकार उसने विभिन्न प्रान्तो का जो इतिहास लिखा है उसमे से बहुत कुछ अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है। उसकी भाषा सरल है और उसने यथासम्भव पक्षपात से बचने का प्रयत्न किया है। "तारीखे फिरिश्ता" तथा अन्य बाद के बहुत से इतिहासकारो ने उसी के इतिहास के आधार पर अपने इतिहासो की रचना की।

निज़ामुद्दीन अहमद ने बाबर का इतिहास "अकबरनामा" एव "बाबरनामा" पर आधारित किया है किन्तु बाबर के जीवनकाल की एक अन्तिम घटना के लिये जिसका सूत्र उसका पिता मुहम्मद

१ "तबकाते अकबरी भाग ३" (पृ० १०३—१०४), रिजवी: "उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २" (पृ० २३८)।
२ "मिरआते सिकन्दरी" पृ० १५४—१५५, रिजवी: "उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २" (पृ० ३५६)।

मुकीम था, बडा महत्व प्राप्त है। यह घटना निज़ामुद्दीन अली खलीफा के षड्यन्त्र से सम्बन्धित है जिसके अनुसार उसने हुमायू के स्थान पर महदी ख्वाजा को सिंहासनारूढ करने की योजना बनाई थी। निज़ामुद्दीन के अनुसार इस षड्यन्त्र का खडन उसके पिता मुहम्मद मुकीम ही के प्रयत्न के फलस्वरूप हुआ। अपने पिता के इस कारनामे का उसने विस्तार से उल्लेख किया है। इस घटना का समर्थन "अकबर नामा" मे भी हुआ है किन्तु अबुल फज़ल ने इसे कोई अधिक महत्व नही दिया है।

मीर मुहम्मद मासूम नामी

तारीख़े सिन्ध

मीर मुहम्मद मासूम नामी बिन सैयिद सफाई अल हुसैनी अल तिरमिजी अल भक्करी, भक्कर के एक शेखुल इस्लाम का पुत्र था। ९९१ हि० (१५८३ ई०) मे वह अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त गुजरात पहुचा और 'तबकाते अकबरी' के लेखक निज़ामुद्दीन अहमद का मित्र हो गया। वह १५९५-९६ ई० म अकबर के दरबार के सेवको मे सम्मिलित हो गया और २५० का मसब प्राप्त किया। १०१२ हि० (१६०३-४ ई०) मे उसे शाह अब्बास सफवी के पास राजदूत बना कर ईरान भेजा गया। जब वह वहा से वापस आया तो जहागीर ने उसे अमीरुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। वह १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) मे भक्कर लौट गया और सम्भवत उसी के कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गयी।

'तारीखे सिन्ध' मे जिसे 'तारीखे मासूमी' भी कहा जाता है, उसने सिन्ध के सुल्तानो का इतिहास, जो मुसलमाना की विजय से लेकर अकबर के शासन-काल तक राज्य करते रहे, दिया है और इसे चार खडो मे विभाजित किया है —

१. सिन्ध की विजय।
२ हिन्दुस्तान के बादशाहो द्वारा नियुक्त गवर्नरो का इतिहास ८०१ हि० (१३९९ ई०) तक, तथा सूमरा एव सुम्मा वशो का इतिहास ९१६ हि० (१५१० ई०) तक।
३. अरगून वश का इतिहास, सुल्तान महमूद खा ९८२ हि० (१५७४ ई०) तक तथा थट्टा के कुछ सुल्तानो का इतिहास ९९३ हि० (१५८५ ई०) तक।
४ सिन्ध का इतिहास, ९८२ हि० (१५७४ ई०) से अकबर की विजय १००८ हि० (१५९९-१६०० ई०) तक।

मीर मुहम्मद मासूम को सिन्ध के इतिहास का विशेष ज्ञान था और उसने अपनी जानकारी के आधार पर सिन्ध की प्राचीन ऐतिहासिक छोटी छोटी घटनाओ को सकलित करके अपना इतिहास तैयार किया है। सम्भवत ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद की मित्रता से भी उसे बडा लाभ हुआ होगा और उसने अपने इतिहास को यथासम्भव बिना किसी पक्षपात के प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

शेख रिज़्कुल्लाह मुश्ताकी

वाक़आते मुश्ताकी

शेख रिज़्कुल्लाह मुश्ताकी बिन सादुल्लाह देहलवी का जन्म ८९७ हि० (१४९१-९२ ई०) मे

हुआ। उसका पिता सादुल्लाह खाँ जहाँ के पुत्र अहमद खाँ का आश्रित था।[1] शेख रिज़कुल्लाह भी बहुत से अफ़गान अमीरों का विश्वासपात्र था और उनकी गोष्ठियों में उपस्थित रहा करता था। वह दरवेशों के समान जीवन व्यतीत करता था और अपने समकालीन दरवेशों की गोष्ठियों में उपस्थित रहा करता था। उसकी मृत्यु २० रबी-उल-अव्वल ९८९ हि० (२४ अप्रैल १५८१ ई०) को हुई। वह हिन्दी तथा फारसी दोनों भाषाओं में कविताएं करता था। हिन्दी कविताओं में उसने अपना उपनाम "राजन" रक्खा था।

उसने अपने इतिहास की भूमिका में लिखा है कि वह अपने समकालीन योग्य व्यक्तियों की सेवा में उपस्थित रहा करता और उनकी बातों से लाभान्वित होता रहता था। उसने उनसे कुछ विचित्र कहानियां तथा आश्चर्यजनक घटनाएं सुनीं और उनमें से कुछ स्वयं अपनी आंखों से देखीं। उन विद्वानों एवं महान् व्यक्तियों के निधन के उपरान्त वह उन कहानियों का उल्लेख अन्य लोगों से किया करता था। बाद में अपने किसी मित्र के आग्रह पर उसने उन कहानियों को पुस्तक के रूप में संकलित किया और उसका नाम "वाक़ेआते मुश्ताक़ी" रखा। इसमें सुल्तान बहलोल के राज्यकाल से लेकर सुल्तान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के राज्यकाल तक की विभिन्न घटनाओं का उल्लेख है। इसमें लोदी वंश के सुल्तानों, बाबर, हुमायूं, अकबर तथा सूर वंश के सुल्तानों से सम्बन्धित विभिन्न कहानियों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त माल्वा के गयासुद्दीन खलजी तथा नासिरुद्दीन खलजी एवं गुजरात के मुज़फ़्फ़र शाह से सम्बन्धित भी कुछ कहानियों का उल्लेख किया गया है। रिज़कुल्लाह मुश्ताक़ी ने किसी स्थान पर भी इस बात का दावा नहीं किया है कि उसने किसी इतिहास की रचना की है। केवल उसने कहानियों का संकलन किया है। लोदी सुल्तानों से सम्बन्धित बहलोल, सिकन्दर तथा इबराहीम के सम्बन्ध में अनेक कहानियों एवं घटनाओं का विवरण दिया गया है। यद्यपि उसने अपनी इस पुस्तक की रचना अकबर के राज्यकाल में की किन्तु उसके पिता का तथा स्वयं उसका अफ़गान अमीरों से विशेष सम्पर्क था। वे उनके आश्रित रह चुके थे अतः उसने जिन कहानियों का विवरण दिया है वे बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं और अफ़ग़ानों के समय के किसी अन्य प्रामाणिक इतिहास के अभाव में कहानियों के इस संकलन की उपेक्षा नहीं की जा सकती। कहानियों के प्रसंग में उस समय की राजनैतिक घटनाओं के साथ साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की भी झाँकी मिल जाती है। सुल्तानों से सम्बन्धित कहानियों के साथ साथ रिज़्कुल्लाह ने अमीरों से सम्बन्धित बहुत सी कहानियों का उल्लेख किया है और इस प्रकार बहुत से अमीरों के व्यक्तित्व को बड़े स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है।

यद्यपि उसकी कहानियों में बहुत सी अद्भुत तथा अलौकिक कहानियां भी हैं जिन्हें पढ़े बिना यह विश्वास ही नहीं हो सकता था कि किस प्रकार उस युग के लोग इन बातों पर विश्वास करते थे, तथापि इन्हीं कहानियों में कहीं कहीं शासन प्रबन्ध संबधी भी बहुत सी बातें प्राप्त हो जाती हैं। इनसे पता चलता है कि सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में गुप्तचर विभाग कितना अधिक उन्नत था कि बादशाह को साधारण सी साधारण बात का भी पता चल जाता था और सीधे-सादे अफ़ग़ान इस बात पर आश्चर्य किया करते थे कि उसे यह समाचार किस प्रकार प्राप्त होते हैं। अतः उन्हें विश्वास था कि सुल्तान अवश्य ही किसी न किसी अलौकिक शक्ति का स्वामी है जिसके कारण उसको इन बातों का पता चल जाता है।

१ "वाकेआते मुश्ताकी" पृ० ५८।

जहा तक बाबर के इतिहास का सम्बन्ध है शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी ने बडे ही सक्षिप्त रूप मे कुछ कहानियो का उल्लेख किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से इन कहानियो को अधिक महत्व नही दिया जा सकता किन्तु फिर भी बाबर के प्रति अफगान इतिहासकारो के दृष्टिकोण का इन कहानियों से भली भाति पता चलता है।

वाकेआते मुश्ताकी की किसी भी प्रतिलिपि का भारतवर्ष मे अभी तक पता नही चल सका। *इसकी केवल दो प्रतिया ब्रिटिश म्युजियम मे प्राप्य हैं। ब्रिटिश म्युजियम के रियु के कैटलाग के दूसरे* भाग के पृ० ८०२ ब पर जो हस्तलिखित ग्रथ है, उसके रोटोग्राफ के आधार पर अनुवाद किया गया है किन्तु ब्रिटिश म्युजियम मे एक अन्य प्रतिलिपि भी, "वाकेआते मुश्ताकी" की है जिसके कुछ अश उपर्युक्त प्रतिलिपि से भिन्न हैं और कहीं कहीं वे उपर्युक्त प्रतिलिपि से अधिक स्पष्ट भी हैं अत अनुवाद करते समय उस प्रतिलिपि का भी प्रयोग किया गया है।

अब्दुल्लाह

तारीखे दाऊदी

"तारीखे दाउदी" के लेखक ने अपने इतिहास मे किसी स्थान पर भी अपना पूरा नाम नही लिखा है, केवल एक घटना के सम्बन्ध मे अब्दुल्लाह शब्द का उल्लेख किया है जिससे प्रामाणिक रूप से तो यह नही कहा जा सकता कि इतिहासकार का नाम अब्दुल्लाह ही रहा होगा किन्तु ऐसा अनुमान होता है कि सम्भवत उसका नाम अब्दुल्लाह होगा। उसने यह देखकर कि अफगान सुल्तानो के विषय मे लोग शनै शनै भूलते जा रहे है, अपने इतिहास की रचना की किन्तु "वाकेआते मुश्ताकी" के समान इसमे भी अलौकिक कहानियों की भरमार है और अधिकाश कहानिया सम्भवत "वाकेआते मुश्ताकी" ही से प्राप्त की गई हैं। तिथियों के सम्बन्ध में भी उसने बडी भूलें की है और इस सम्बन्ध मे निजामुद्दीन अहमद की "तबकाते अकबरी" उसकी इस रचना से अधिक महत्वपूर्ण है। उसने अपना यह इतिहास बगाल के अन्तिम अफगान सुल्तान दाऊद शाह बिन सुलेमान शाह (१५७२-७६ ई०) को समर्पित किया किन्तु इसकी रचना उसने जहागीर के राज्यकाल मे प्रारम्भ की।

शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी के *समान बाबर के सम्बन्ध मे अब्दुल्लाह ने भी जिन कहानिया का* उल्लेख किया है वे ऐतिहासिक दृष्टि से निराधार है किन्तु इनसे पता चलता है कि अफगान इतिहासकार किस प्रकार इन कहानियो पर विश्वास रखते थे। सम्भवत अफगानों मे मुगलो के विरुद्ध इसी प्रकार के निराधार प्रचार किये गये होंगे।

अहमद यादगार

तारीखे शाही

अहमद यादगार ने अपने विषय मे यह लिखा है कि वह सूर बादशाहो का एक प्राचीन सेवक था। उसने अपने पिता के विषय मे लिखा है कि वह १५३६-३७ ई० मे बाबर के तीसरे पुत्र मीर्जा अस्करी के गुजरात के अभियान के समय उसका वजीर था। उसने अपनी "तारीखे शाही" अथवा "तारीखे सलातीने अफागेना" की रचना दाऊद शाह बिन सुलेमान शाह के सकेत पर की किन्तु यह रचना जहागीर के राज्यकाल में ही समाप्त हुई। इसमें सुल्तान बहलोल लोदी (१४५१-१४८८ ई०), सिकन्दर

लोदी (१४८८-१५१७ ई०), इब्राहीम लोदी (१५१७-१५२६ ई०), शेरशाह (१५३९-१५४५ ई०) इस्लाम शाह (१५४५-१५५२ ई०), फीरोज शाह (२ मास), आदिल शाह (१५५२-१५५३ ई०), इब्राहीम सूर (१५५३-१५५४ ई०), सिकन्दर शाह (१५५४ ई०) का इतिहास लिखा गया है। इसके साथ साथ बाबर, हुमायूं तथा अकबर के इतिहास में भी सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं का उल्लेख कर दिया गया है किन्तु उसका मुख्य उद्देश्य अफगान सुल्तानों के इतिहास की रचना थी।

अफगान सुल्तानों के अन्य इतिहासकारों के समान अहमद यादगार के इतिहास में भी बहुत सी अलौकिक घटनाओं का विवरण मिलता है और कुछ घटनाएं तो पूर्णतः "वाक़ेआते मुश्ताक़ी" से उद्धृत ज्ञात होती हैं। अहमद यादगार ने "तारीखे निज़ामी (तबक़ाते अकबरी)" तथा "मादेनुल अख्बार" को अपनी रचना का आधार बनाया है। सम्भवतः "मादेनुल अख्बार" से तात्पर्य अहमद बिन बहबल बिन जमाल कम्बोह की "मादने अख्बारे अहमदी" अथवा "मादने अख्बारे जहांगीरी" से है जिसकी रचना १०२३ हि० (१६१४ ई०) में हुई।

जहां तक बाबर के इतिहास का सम्बन्ध है अहमद यादगार की 'तारीखे शाही," शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताक़ी की "वाक़ेआते मुश्ताक़ी" एवं अब्दुल्लाह की "तारीखे दाऊदी" से भी अधिक महत्व की है। इसमें बाबर के हिन्दुस्तान में सिंहासनारूढ़ होने के उपरान्त तीसरे वर्ष (९३५ हि०) का कुछ हाल दिया गया है और इस बात का उल्लेख किया गया है कि बाबर उस वर्ष लाहौर पहुंचा और उसने कैथल के मन्दाहरों के विरुद्ध सेनाएं भेजीं। इस वर्ष का विवरण न तो बाबरनामा में प्राप्य है और न अन्य मुग़ल तथा अफगान इतिहासों में। इस विषय में हमारी जानकारी का एकमात्र साधन "तारीखे शाही' है किन्तु इस कारण कि अफगान इतिहासकार ऐतिहासिक तथ्यों एवं निराधार कहानियों में कोई अधिक भेद-भाव नहीं कर सके हैं जब तक अन्य सूत्रों से भी इस घटना की पुष्टि न हो जाये इसको ऐतिहासिक तथ्य समझना बड़ा कठिन है किन्तु फिर भी अहमद के इतिहास की उपेक्षा सम्भव नहीं।

विषय-सूची

भाग अ

भाग ब

भाग स

भाग द

परिशिष्ट

बाबर नामा या तुज़ुके बाबरी

६१० हि०

(१४ जून १५०४ ई०—४ जून १५०५ ई०)

बाबर का फ़रगाना त्यागना

(जून जुलाई) मे फरगाना छोड कर खुरासान की ओर प्रस्थान करने के उद्देश्य से
जो हिसार की ग्रीष्म ऋतु की चारागाह है उतरा। इस पडाव पर मैं २३वें वर्ष
मैंने अपने मुख पर अस्तुरा फिरवाया[1]। छोटे बडे जो आशा लगाये हुए मेरे साथ
० से अधिक तथा ३०० से कम थी। उनमे से अधिकाश लोग पैदल थे। उनके हाथो
क[2] तथा शरीर पर चापान[3] थे। हम लोग इस सीमा तक दीनता को प्राप्त हो गये
ही खेमे रह गये थे। मेरा खेमा मेरी माता के लिये लगाया जाता था। मेरे बैठने
र पर अलाचूक[4] लगाया जाता था।

लोगो ने खुरासान की ओर प्रस्थान करना निश्चय कर लिया था किन्तु उस समय जो
जिस दीन अवस्था को प्राप्त हो गये थे उसमे हिसार देश तथा खुसरो शाह के सहायको
थी। कोई न कोई हिसार अथवा मुगूलो के कबीलो और जत्थो से प्रति दिन आकर
ससे हमारी आशायें बधी रही। उसी समय पशागर का मुल्ला बाबा जिसे मैंने
दूत बना कर भेजा था, उसके पास से वापस आया। खुसरो शाह ने जो बातें कही
प न हो सकता था किन्तु मुगूल कबीला तथा जत्था की बातें सतोषजनक थी।
तीन-चार पडाव आगे बढ कर हम लोगो ने हिसार के समीप ख्वाजा एमाद नामक

घाटी की चरागाह।

1. सार तुर्की कबीलों में पहले पहल मुख पर अस्तुरा फिरवाने के समय बड़ा आनन्द
जाता है और समारोह होता है, किन्तु बाबर की दशा इतनी शोचनीय हो गई थी कि
प्रकार के समारोह का प्रवन्ध नहीं किया गया।

2. कमाये हुये चमड़े के बूट। सीरगीज के पहाड़ी एव कारवान वाले यात्रा के समय ऐसे
करते हैं।

3. साधारण पहनावा, लम्बा कोट।

4. जिसके डंडे मोड़ कर रख लिये जाते हैं और जो सुगमतापूर्वक तह करके एक स्थान से
ले जाया जा सकता है।

५. ९ हि० (१५०३-४ ई०) के आक्रमण के कारण खुसरो शाह की शक्ति को बड़ा धक्का

स्थान मे पडाव किया। मुहिब अली कूरची[1], इस पडाव पर, ख़ुसरो शाह के पास से आया। हम लोग ख़ुसरो शाह के राज्य से होकर दो बार गुज़र चुके थे। यद्यपि वह अपनी कृपा तथा उदारता के लिये प्रसिद्ध था किन्तु उसने मेरे प्रति वह सौजन्य प्रदर्शित न किया जो वह साधारण से साधारण लोगो के प्रति प्रदर्शित किया करता था। क्योंकि हम लोगो को उस देश वालों तथा कबीलों से आशायें थी अत हम लोग प्रत्येक पडाव पर विलम्ब करते जाते थे। इस कठिनाई के समय शेरीम तगाई, जो हमारे समस्त साथियो की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठित था, इस कारण कि वह ख़ुरासान न जाना चाहता था, हमसे पृथक् हो जाने के विषय मे सोचने लगा। सरे पुल की पराजय के उपरान्त[2] जब मैंने समरकन्द की रक्षा हेतु प्रस्थान किया तो उसने अपने परिवार को अपने पास से भेज दिया था, और अकेला हो गया था। वह कायर था और कई बार इसी प्रकार व्यवहार कर चुका था।

ख़ुसरो शाह के एक सम्वन्धी का बाबर से मिल जाना

जब हम लोग कबादियान पहुँच गये तो ख़ुसरो शाह के एक छोटे भाई बाक़ी चग़ानियानी ने, जो चग़ानियान, शहरे सफ़ा तथा तिरमिज़ का हाकिम था, करशी के ख़तीब[3] को मेरे पास भेज कर मेरे प्रति निष्ठा प्रदर्शित की और हमसे मिल जाने की इच्छा प्रकट की।

जब हमने अमू नदी को ऊबाज नामक घाट पर पार कर लिया तो वह स्वय मुझसे भेंट करने आया। उसके कहने पर हम लोग नदी के नीचे तिरमिज़ के सामने की ओर रवाना हुए। बिना किसी संकोच के उसने वहाँ वालो के परिवार को धन सम्पत्ति सहित हमारे पास बुलवा लिया।[4] इसके उपरान्त हम लोग साथ-साथ काहमर्द तथा बामियान की ओर जो उस समय उसके पुत्र अहमदे कासिम[5] के अधीन थे रवाना हुए। अहमदे कासिम ख़ुसरो शाह का भागिनेय था। हमने समस्त सामान तथा परिवार वालो को काहमर्द घाटी के अजर नामक किले मे सुरक्षा की दृष्टि से छोड कर, जिस ओर भी आक्रमण करना उचित हो उधर आक्रमण करना निश्चय किया। ईबक मे यार अली बलाल जो ख़ुसरो शाह के पास से भाग कर चला आया था, बहुत से वीरो सहित हमारे साथ आकर मिल गया। वह इससे पूर्व भी मेरे साथ रह चुका था और कई बार मेरे समक्ष तलवार चलाने की कला का प्रदर्शन कर चुका था किन्तु इस समय जब हम मारे मारे फिर रहे थे[6], वह हमसे पृथक् हो गया था और ख़ुसरो शाह के पास चला गया था। उसने मुझे बताया कि जितने मुग़ल ख़ुसरो शाह के अधीन हैं, वे सब मेरे हितैषी हैं। इसके अतिरिक्त जब हम लोग ज़िन्दान घाटी में पहुचे तो कम्बर अली बेग, जो कम्बर अली मिलाख़ के नाम से प्रसिद्ध था, भाग कर हमारे पास चला आया।

काहमर्द की घटनायें

तीन चार पडाव पार करने के उपरान्त हम लोग काहमर्द पहुंचे और अपने परिवार तथा असबाब

१ अस्त्र-शस्त्र की देख रेख करने वाला।
२ ६०६ हि० (१५०० १५०१ ई०)।
३ वह व्यक्ति जो नमाज के ख़ुत्बे (एक प्रकार का प्रवचन) पढ़ता है।
४ उनमें बाबर के चाचा महमूद की विधवा तथा परिवार वाले सम्मिलित थे ।
५ सम्भवतः बाक़ी के पुत्र अहमद का पुत्र।
६ फ़रग़ाना एव समरक़न्द का राज्य खोकर।

को अजर मे छोड दिया। जब हम लोग अजर मे थे तो जहाँगीर मीर्जा का विवाह सुल्तान महमूद मीर्जा तथा खानज़ादा बेगम की पुत्री[1] से कर दिया गया। जहाँगीर मीर्जा की मगनी उसके साथ मीर्ज़ाओं[2] के जीवन काल ही मे हो चुकी थी।

इसी बीच मे बाकी बेग मुझसे निरन्तर इस बात का आग्रह करता रहता था कि एक राज्य मे दो बादशाहो का होना तथा एक सेना मे दो सेनापतियो की उपस्थिति सर्वदा अशान्ति एव विनाश का कारण रहती है। यह कहा जाता है कि दो दरवेश एक कमली मे सो सकते हैं किन्तु दो बादशाह एक इकलीम[3] मे नही समा सकते।

शेर

"यदि कोई ईश्वर का भक्त आधी रोटी खाता है,
तो वह दूसरी आधी दरवेशों को दे देता है।
यदि कोई बादशाह सातों इकलीमों को भी विजय कर ले,
तो वह एक अन्य इकलीम (विजय करने का) स्वप्न देखा करता है।'[4]

बाकी बेग ने कहा, 'आशा की जाती है कि आज कल मे खुसरो शाह के समस्त सेवक एव अश्वारोही पादशाह (बाबर) की सेवा मे उपस्थित हो जाएगे। हमारे साथ अनेक षड्यन्त्रकारी हैं उदाहरणार्थ अयूब बेगचीक के पुत्र एव कुछ अन्य लोग। वे लोग मीर्ज़ाओं[5] की आपस की शत्रुता एव वैमनस्यता का कारण रह चुके हैं। यदि इसी समय जहाँगीर मीर्जा को कुशलतापूर्वक खुरासान की ओर विदा कर दिया जाय तो फिर पश्चात्ताप एव परेशानी न उठानी पडेगी।" क्योकि मेरे स्वभाव मे यह बात थी कि चाहे मेरे भाई अथवा सम्बन्धी, छोटे या बडे मेरे साथ कुछ ही क्यो न करें, मैं उन्हें कोई हानि नही पहुँचाता, अत मैंने उसकी बात स्वीकार न की। यद्यपि इसके पूर्व मुझमे तथा जहाँगीर मीर्जा मे सेवको तथा राज्य के विषय मे अत्यधिक मतभेद तथा विरोध रह चुका था किन्तु इस बार वह फरगाना से मेरे साथ आ रहा था और एक सगे सम्बन्धी एव सेवक के समान व्यवहार कर रहा था और कोई ऐसी बात न हुई थी जिससे उसके प्रति मुझे असन्तोष होता। यद्यपि बाकी बेग ने बडा आग्रह किया किन्तु मैंने स्वीकार न किया। अन्त मे जैसा कि बाकी बेग ने कहा था वही हुआ। वे षड्यन्त्रकारी अर्थात् यूसुफ़ एव अयूबे बहलूल मेरा साथ छोड कर जहागीर मीर्जा से मिल गये और उन्होने विरोध एव विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया। वे जहागीर मीर्जा को मुझसे पृथक् करा कर खुरासान ले गये।

सुल्तान हुसैन मीर्जा के पत्र

उन्ही दिनो सुल्तान हुसैन मीर्जा के पास से बदी-उज्-ज़मान मीर्ज़ा, मेरे, खुसरो शाह तथा जुन्नून बेग के नाम लिखे हुये लम्बे लम्बे पत्र पहुचे जो मेरे पास आज तक सुरक्षित हैं। इन सब पत्रो मे एक ही बात इस प्रकार लिखी थी

१ अली बेगम।
२ महमूद तथा उमर शेख के जीवनकाल में, ८९५ हि० (१४९० ई०) में।
३ जलवायु के प्रदेश। मध्यकालीन भूगोलवेत्ताओं के अनुसार संसार सात इक्लीमों में विभाजित था।
४ यह शेर सादी की 'गुलिस्ताँ' के प्रथम अध्याय की तीसरी कहानी से उद्धृत है।
५ महमूद के पुत्र, जिनके अधीन बाक़ी रह चुका था।

"सुल्तान अहमद मीर्ज़ा, सुल्तान महमूद मीर्ज़ा तथा ऊलूग बेग मीर्ज़ा तीनो भाइयो ने मिलकर मेरे ऊपर आक्रमण किया। मैंने मुर्ग़ाब तट की इस प्रकार रक्षा की कि मीर्ज़ा लोग निकट पहुच जाने के बावजूद सफलता न प्राप्त कर सके और वापस लौट गये। यदि अब ऊज़बेग आक्रमण करेंगे तो मैं मुर्ग़ाब तट की पुन रक्षा कर लूँगा। बदी-उज्-ज़मान मीर्ज़ा, बल्ख, शिबर्ग़ान तथा अन्दिखूद की रक्षा अपने आदमियो द्वारा कराये और स्वय गिरज़वान, ज़ग घाटी और उस ओर के पर्वतीय प्रदेश की रक्षा करे।" क्योकि उसे पता चल चुका था कि मैं भी उसी क्षेत्र मे पहुँच गया हूँ अत उसने मुझे लिखा था कि, "आप काहमर्द, अजर तथा उस ओर के पर्वतीय प्रदेश की रक्षा करें। खुसरो शाह अपने विश्वासपात्रो को हिसार तथा कुन्दूज़ मे नियुक्त कर दे। उसका अनुज वली बदख्शा तथा खुतलान की पहाडियो की रक्षा करे। इस प्रकार ऊज़बेग लोग भाग जायेंगे और कुछ भी न कर सकेंगे।"

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के इन पत्रो ने हमे चिन्ता मे डाल दिया। कारण कि उस समय तीमूर बेग के राज्य मे सुल्तान हुसेन के समान कोई प्रतापी बादशाह न था। उसकी आयु, सेना की शक्ति तथा राज्य को देखते हुए कोई भी उसका मुकाबला न कर सकता था। आशा की जाती थी कि उसके राजदूत निरतर आ आ कर यह आदेश पहुचाया करेंगे, "तिरमिज़, किलीफ तथा कीरकी के घाटो पर इतनी नौकाओ का प्रवन्ध कर दो", "पुल बधवाने की जितनी सामग्री हो सके एकत्र करो', "तूकूज़ ऊलूम के ऊपर के घाटो की भली भाति रक्षा करो।" इन आदेशो का उद्देश्य उन लोगो को, जो वर्षों के ऊज़बेगो के आक्रमण के कारण हतोत्साहित हो चुके हैं, पुन प्रोत्साहित करना होगा,' किन्तु सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा सरीखे बादशाह के जो तीमूर बेग के स्थान पर शासन कर रहा था, शत्रु पर आक्रमण करने की बात त्याग कर प्रतिरक्षा की बात करने पर फिर किसी कबीले अथवा जत्थे को क्या आशाये रह सकती थी।

हमने अपने साथियो एव सहायको मे से भूखे तथा कमज़ोर लोगों, घर के सैनिको, माल-असबाव, बाकी बेग एव उसके पुत्र मुहम्मद कासिम, उसके सैनिको और कबीले वालो तथा उनके असबाव को अजर पहुचा कर वही छोड दिया और हम अपने सैनिको को लेकर चल खडे हुए।

बाबर के सहायको में वृद्धि

खुसरो शाह के मुग़लों के पास से निरन्तर लोग आ आ कर यह समाचार पहुँचाते थे कि मुग़ल लोग पादशाह के प्रति निष्ठावान् हैं। वे लोग तालीखान[२] से प्रस्थान कर के इशकीमीश[३] तथा फूलूल की ओर रवाना हो गये हैं। पादशाह प्रयत्न कर के शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जाय कारण कि खुसरो शाह के अधिकाश सैनिक छिन्न-भिन्न हो चुके हैं और पादशाह की सेवा मे उपस्थित होने के लिये आ रहे है।" उसी समय समाचार प्राप्त हुए कि शैबाक खा ने अन्दिजान पर अधिकार जमा लिया है और हिसार तथा कुन्दूज़ पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान करने वाला है। यह सुन कर खुसरो शाह कुन्दूज़ मे न

१ शैबाक ने ६०६ हि० (१५०३-४ ई०) मे खुसरो शाह को बदख्शा की पहाडियों मे भगा दिया था किन्तु कुन्दूज़ पर अधिकार न जमाया था। खुसरो शाह वहाँ पहुँच गया था और अभी तक वहीं ठहरा रहा।

२ तालीकान।

३ इशकीमीश कुन्दूज़ से दक्षिण पूर्व की ओर लगभग १५ मील पर है। यह तालीखान से ३० मील दक्षिण में है।

ठहर सका और अपने समस्त सैनिकों को लेकर काबुल की ओर प्रस्थान कर दिया। उसके कून्दूज से प्रस्थान करते ही उसके प्राचीन, योग्य तथा निष्ठावान् सेवक मुल्ला मुहम्मद तुर्किस्तानी ने उसकी, दौबाक खा के लिये, प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी।

जिस समय हम शमतू के मार्ग से किज़ील-सू[1] की ओर पहुँचे तो ३-४ हज़ार मुग़ुल कुटुम्ब जो खुसरो शाह के सहायक थे, और जा हिसार तथा कून्दूज में थे, सपरिवार आ कर हमारी सेवा में सम्मिलित हो गये।

कम्बर अली का पदच्युत किया जाना

कम्बर अली बेग जिसका कई बार उल्लेख हो चुका है बडी ही मूर्खतापूर्ण बातें किया करता था। बाकी बेग को उसका आचरण पसन्द न था। बाकी बेग की प्रसन्नता के लिए उसे विदा कर दिया गया। उसका पुत्र अब्दुश् शकूर जहागीर मीर्ज़ा का सेवक बना रहा।

खुसरो शाह का बाबर की सेवा मे उपस्थित होना

खुसरो शाह ने जब यह सुना कि मुग़ुल जत्थे मुझसे मिल गये है तो वह नि सहाय होगया। उसने काई अन्य उपाय न देख कर अपने जामाता अयूब के याकूब[2] को राजदूत बना कर भेजा और सेवा भाव तथा निष्ठा प्रदर्शित करते हुए मेरे पास सन्देश प्रेषित किया कि यदि मैं वचन दूँ तो वह मेरी सेवा में सम्मिलित हो जायगा। उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया कारण कि बाकी चगानियानी बडा प्रभावशाली व्यक्ति था। यद्यपि वह अपने आपको मेरा हितैषी प्रदर्शित करता था किन्तु वह अपने भाई का भी पक्ष लिया करता था अत उससे इस शर्त पर सन्धि हो गई कि उसके प्राणो को काई हानि न पहुचाई जायेगी। वह अपनी धन सम्पत्ति म से जो कुछ लेना चाहे उससे उसे न रोका जायगा। याकूब को विदा कर देने के उपरान्त हम लोग किज़ील-सू से प्रस्थान करके उस स्थान पर उतरे जहाँ यह नदी अन्दराब से मिलती है।

दूसरे दिन रबी उल-अव्वल मास के मध्य (अगस्त १५०४ ई० के अन्त) मे थोडे से अश्वारोहियो एव असबाब सहित मैं अन्दराब के पार हुआ और दूशी के निकट एक बहुत बडे चुनार (के वृक्ष) की छाया म आसीन हुआ। दूसरी ओर से खुसरो शाह बडे वैभव के साथ अत्यधिक आदमियो सहित आया। नियम तथा प्रथानुसार वह दूर से उतर पडा। भेंट के पूर्व वह तीन बार घुटनो के सहारे से झुका[3] और विदा होते समय भी इसी प्रकार तीन बार घुटनो के सहारे से झुका। मुझसे कुशल क्षेम पूछने के उपरान्त वह एक बार घुटना के सहारे झुका। जब वह अपने उपहार प्रस्तुत कर चुका तो वह पुन घुटना के सहारे झुका। उसने जहाँगीर मीर्ज़ा तथा मीर्ज़ा खान (वैस) के प्रति भी इसी प्रकार व्यवहार किया। वह आलसी वृद्ध, जो वर्षो से राज्य से लाभान्वित हो रहा था, जिसे बादशाही के सभी अधिकार प्राप्त थे केवल अपनी बादशाही का खुत्बा ही न पढवा सका था, २५-२६ बार इसी प्रकार निरन्तर घुटने के सहारे झुकने तथा आने जाने के कारण थक गया। वह गिरने ही वाला था। उसका इतने वर्षो का राज्य एव

१ सम्भवत सुर्खाब। यह नदी सुर्ख किले से होती हुई पश्चिम म काहमर्द के समीप से बहती है और अन्दराब नदी में दूशी के नीचे गिरती है।

२ अयूब के पुत्र याकूब।

३ अभिवादन किया।

भाग खडा हुआ था और लमगान की ओर तुर्कगानी अफगानों के साथ था, पजहीर के मार्ग से आगे बढने से रोकने के लिए ठहरा हुआ था। यह समाचार पाते ही मध्याह्नोत्तर की दोना नमाजा के मध्य मे हम लोग चल खडे हुए और रात भर यात्रा करके प्रात काल तक हूपियान[1] दर्रे को पार कर लिया।

इससे पूर्व मैंने सुहैल[2] के कभी दर्शन न किये थे। जब मैं दर्रे से बाहर निकला तो हमे नीचे की ओर एक चमकता हुआ तारा दृष्टिगत हुआ। मैंने कहा, 'सम्भवत यह सुहैल नही है।" लोगो ने बताया कि यही सुहैल है। बाकी चगानियानी ने यह शेर पढा

शेर

हे सुहैल ! तू कब तक चमकता है और कब निकलता है,
तेरी आख सौभाग्य का चिह्न है उस व्यक्ति के लिये जिस पर पड जाय।'

जब सूर्य एक नेजा चढ गया[3] तो हम लोग सन्जिद घाटी मे पहुँचे और वहा उतर पडे। शत्रु के विषय मे भेद लाने वाल जिन वीरा को मैंने पूर्व से भेज दिया था उनकी मुठभेड करा बाग[4] के नीचे ऐकरीयार के समीप शेरक के आदमिया से हो गई। साधारण सी झडप के उपरान्त हमारे आदमिया का विजय प्राप्त हो गई। उन्होने अपने शत्रुओ को भगा दिया। ७० ८० वीरा को घाडो से गिरा कर बन्दी बना लिया गया। शेरक भी बन्दी बना लिया गया। हमने उसको क्षमा कर दिया और वह हमारी सेवा मे प्रविष्ट हो गया।

मुग़ल जत्थो का पहुँचना

खुसरो शाह ने अपने जिन जिर्गा तथा जत्था और मुगूल समूह का उनकी चिन्ता न करके, कून्दूज म छाड दिया था उनकी सख्या ५-६ थी। एक जत्था बदख्शा वाला का था—यह रूस्ता हज़ारा था, जो सैयिदीम अली दरबान[5] के साथ पजहीर[6] दर्रे से होता हुआ इसी पडाव पर मेरे पास पहुँचा। उसने मेरी अधीनता स्वीकार कर ली। दूसरा जत्था अयूब के यूसुफ तथा अयूब के बहलूल के साथ इसी पडाव पर पहुँचा और उसने भी मेरी अधीनता स्वीकार कर ली। एक अन्य जत्था खुतलान से खुसरो शाह के अनुज वली[7] के साथ पहुचा। मुगूल कबीला का एक जत्था जो ईलानचक निकदीरी

कर लिया किन्तु अन्य बेगों ने शेरीम की हत्या कर दी। इसके उपरान्त जो उथल पुथल हुई उसके कारण जुन्नून बेग अरग़न के पुत्र मुहम्मद मुकीम अरग़न ने ९०८ हि० (१५०२ ३ ई०) मे काबुल पर अधिकार जमा लिया और अब्दुर्रज्जाक मीर्जा की एक बहिन से विवाह कर लिया।

१ 'ऊपीयान, चारीकार से थोड़ी दूर उत्तर की ओर, परवान के मार्ग में।
२ अफ़गानिस्तान का एक विशेष सितारा। वहाँ वाले दक्षिण को जुनूब नहीं अपितु 'सुहैल' कहते हैं। इसके उदय से इन लोगों का एक मौसम प्रारम्भ होता है और बड़ा शुभ समझा जाता है।
३ लगभग ९ १० बजे दिन।
४ काला उद्यान।
५ द्वारपाल।
६ हिन्दूकुश की पर्वतीय शृंखलाओं में, कीरचाक के पूर्व में, जिस मार्ग से बाबर आया था।
७ वली पराजित होकर ख्वास्त पहुँचा था और कून्दूज मे महमूद बेग ऊजबेग के पास रक्षा हेतु पत्र लिखे। 'शैबानी नामा' का लेखक मुहम्मद सालेह उसे कून्दूज ले गया। वह कून्दूज से समरकन्द भेज दिया गया।

तथा कुन्दूज मे था, वह भी आ गया। अन्तिम दो जत्थे अन्दराब तथा सरे-आब से पजहीर दर्रे से होते हुए आये। सरे-आब मे जत्थे वाले आगे आगे थे। बली उनके पीछे-पीछे आ रहा था। उन लोगो (मुगूल जत्थो) ने मार्ग रोक लिया और उसमे युद्ध करके उसे पराजित कर दिया। वह स्वय ऊजबेगो के पास भाग गया। शैबाक खा ने समरकन्द के चौराहे पर उसका सिर कटवा दिया। उसके शेष सभी सहायक पराजित तथा लुटे हुए जत्थे वालो के साथ इसी पडाव पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुए और उन्होने अधीनता स्वीकार कर ली। उन लोगो के साथ यूसुफ बेग भी उपस्थित हुआ।

काबुल पर अधिकार

उस पडाव से प्रस्थान करके हम लोग करा बाग की आक सराय नामक चरागाह मे उतरे। खुसरो शाह के आदमी अत्याचार तथा उद्दडता के आदी थे। उन्होने अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। अन्त मे मैंने सैयिदीम अली दरबान के एक बडे उपयोगी आदमी को जबरदस्ती तेल का एक घडा ले लेने के अपराध मे खूब पिटवाया। उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। उसके उदाहरण से अन्य लोग शान्त हो गये।

हमने उस पडाव पर लोगो से काबुल पर तत्काल आक्रमण कर देने के विषय मे परामर्श किया। सैयिद यूसुफ तथा कुछ अन्य लोगो का मत था कि शीत ऋतु के निकट होने के कारण हम लोग सर्वप्रथम लमगान की ओर प्रस्थान करें। वहा से जैसा उचित होगा किया जायेगा। बाकी बेग तथा कुछ अन्य लोगो का मत था कि हम लोग तत्काल काबुल चले चलें। यह मत स्वीकार कर लिया गया। हम लोग वहाँ से प्रस्थान करके आबा कूहक मे उतरे।

मेरी माता तथा असबाब जो काहमर्द मे रह गया था हमारे पास आबा कूहक पहुँच गया। वे बडे खतरे मे थे। उसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है शेरीम तगाई को खुसरो शाह के साथ इस आशय से भेज दिया गया था कि वह खुसरो शाह को खुरासान की ओर भेज कर काहमर्द से मेरे परिवार वालो को ले आये। जब वह दर्रे दहाना पहुँचा तो शेरीम ने देखा कि वहा उसका कोई अधिकार नही चलता। खुसरो शाह उसके साथ काहमर्द की ओर जहा उसका भागिनेय अहमदे कासिम था चल खडा हुआ। उसने अहमदे कासिम को इस बात पर तैयार किया कि वह मेरे परिवार वालो के साथ दुर्व्यवहार करे। बाकी बेग के बहुत से मुगूल सेवको ने जो इन परिवारो के साथ काहमर्द मे थे गुप्त रूप से शेरीम तगाई से मिल कर निश्चय किया कि वे खुसरो शाह तथा अहमदे कासिम को बन्दी बना लें। खुसरो शाह तथा अहमदे कासिम को इसकी सुन गुन मिल गई। वे उस मार्ग से, जो काहमर्द की घाटी से होता हुआ अजर दर्रे की ओर जाता है, खुरासान भाग गये। शेरीम तगाई तथा मुगूलो का उद्देश्य भी यही था। खुसरो शाह के भय से मुक्त होने के उपरान्त जो लोग परिवारो के साथ थे, उन्हें लेकर वे अजर के बाहर चल खडे हुए किन्तु जब वे काहमर्द पहुँचे तो साकान्वी कबीले वालो ने शत्रुता प्रदर्शित करते हुए मार्ग रोक दिया और अधिकाश परिवारो को जो बाकी बेग के आदमियो से सम्बन्धित थे, लूट लिया गया। कूले बायजीद के एक छोटे पुत्र तोजक को उन लोगो ने बन्दी बना लिया। वह तीन चार वर्ष उपरान्त काबुल पहुँचा। लुटे तथा दुखी परिवारो ने कोपचाक दर्रे को हमारे समान पार किया और हमसे आबा कूहक में आकर मिल गये।

वहाँ से प्रस्थान करके एक रात पडाव करके हम लोग चालाक नामक चरागाह मे ठहरे। परामर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि काबुल का अवरोध कर लिया जाय। हम लोग वहाँ से चल खडे हुए। सेना के मध्य भाग के जितने आदमी भी थे, उन्हें लेकर मैं स्वय हैदर तकी के उद्यान तथा

कुले बायजीद बकावल[1] के मकबरे के मध्य मे उतरा। जहाँगीर मीर्ज़ा सेना की दाईं पक्ति के सैनिको सहित मेरे चार बाग मे उतरा। नासिर मीर्ज़ा सेना की बाईं पक्ति के साथ कूतलूक कदम के मकबरे मे उतरा।[2] हमारे आदमी मुकीम के पास जा-जा-कर बात करते थे। कभी वह उनसे कोई बहाना बना देता था और कभी चिकनी-चुपडी बातें कर देता था। शेरक की पराजय के उपरान्त उसने अपने पिता तथा बडे भाई के पास तुरन्त आदमी दौडा दिये थे। क्योंकि उसे उनसे सहायता की आशा थी, अत वह टाल-मटोल करने लगा था।

एक दिन सेना के मध्य, दायें तथा बायें भाग की पक्तियो को आदेश दे दिया गया कि वे अस्त्र-शस्त्र धारण करके तथा अपने घोडो को भी लोहे की झूल इत्यादि पहना कर नगर के समीप पहुच जायें और अपने सामान तथा तैयारी का इस आशय से प्रदर्शन करें कि भीतर वाले आतकित हो जायें। जहागीर मीर्ज़ा तथा सेना के दायें भाग वाले कूचा बाग से होते हुए सीधे बढते चले गये। क्याकि सेना के मध्य भाग के समक्ष नदी थी अत मैं उन लोगों को लेकर कूतलूक कदम के मकबरे से होता हुआ एक पुश्ते के सामने की ऊँची भूमि पर पहुचा। सेना का अग्र भाग कूतलूक कदम के पुल पर एकत्र हुआ—यद्यपि उस समय वहाँ कोई पुल न था। जब वीर लोग अपना प्रदर्शन करते तथा घोडो को भगाते हुए चिर्म गरा द्वार तक पहुँचे तो थोडे से लोग जो बाहर निकले हुए थे, युद्ध न कर सके और भाग कर किले के भीतर प्रविष्ट हो गये। बहुत से काबुली जो मनोरजन हेतु बाहर एक ऊचाई पर थे, बडी तेज़ी से किले के भीतर भाग खडे हुए जिसके कारण अत्यधिक धूल उडी। फाटक तथा पुल के मध्य मे बहुत से गड्ढे खोद दिये गए थे जिन्हें लकडियो तथा घास से भर कर बन्द कर दिया गया था। सुल्तान कुली चूनाक तथा बहुत से अन्य वीर जब उधर से घोडा दौडाते हुए पहुचे तो गिर पडे। दाईं ओर की पक्ति के एक दो वीरो ने कुछ लोगों से जो गलियो एव उद्यानो मे थे, तलवार के एक-दो हाथ चलाये किन्तु इस कारण कि युद्ध का आदेश न था, वे इतना ही करके लौट आए।

किले वाले अत्यधिक आतकित तथा भयभीत हो गये। मुकीम ने बेगो को मध्यस्थ बना कर अधीनता स्वीकार कर ली तथा काबुल समर्पित कर देना निश्चय कर लिया। उसका मध्यस्थ बाकी बेग मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। हमने अपनी कृपाओ तथा प्रोत्साहन द्वारा उनकी शकाओ तथा भय का अन्त करा दिया। यह निश्चय हुआ कि कल वे अपने समस्त सेवको, अश्वारोहियों तथा धन-सम्पत्ति सहित किले से निकल जायें और किला हमे सौप दें। जो लोग खुसरो शाह से सम्बन्धित थे, वे अनुशासनहीनता तथा उद्दडता ही जानते थे। हमने मुकीम तथा उसके परिवार वालो[3] एव उनके सेवको तथा धन-सम्पत्ति को किले के बाहर निकालने के लिए जहागीर मीर्ज़ा, नासिर मीर्ज़ा एव अन्य प्रतिष्ठित लोगो को नियुक्त किया। उनके शिविर का तीपा[4] मे प्रबन्ध कर दिया गया। जब मीर्ज़ा तथा बेग लोग दूसरे दिन प्रात काल फाटक पर पहुचे तो उन्हें वहा सर्वसाधारण की अत्यधिक भीड तथा शोर-

१ वह व्यक्ति जो बादशाह के भोजन का प्रबन्ध करता था।
२ बाबर ने यहाँ उन स्थानों के नाम लिखे हैं जो उसने याद में प्राप्त किये। ६१० हि० मे बकावल जीवित था। चार बाग बाबर ने ६११ हि० (१५०५-६ ई०) में क्रय किया और कूतलूक कदम कन-वाह के युद्ध में ६३३ हि० (१५२७ ई०) में उपस्थित था।
३ मुकीम की एक पत्नी ऊलूग बेग काबुली की पुत्री तथा बाबर की चचाज़ाद बहिन थी। दूसरी बीवी ज़रीफ़ खातून, माह चूचूक की माता थी।
४ आक़ सराय के मार्ग पर काबुल से ६ मील उत्तर में।

गुल दिखाई दिया। उन लोगों ने एक आदमी को मेरे पास भेज कर कहलाया, "जब तक आप न आयगे, इन लोगों को कोई भी न रोक सकेगा।" अन्त मे मैं स्वय घोडे पर सवार हुआ। चार-पाच व्यक्तियों को वाण का लक्ष्य बनवाया और एक दो व्यक्तियों के टुकडे-टुकडे करा दिये। कोलाहल शान्त हो गया। मुक़ीम सपरिवार अपनी धन-सम्पत्ति सहित सुरक्षित तोपा पहुँच गया।

रबी-उल-आखिर के अन्तिम १० दिनो (नवम्बर १५०४ ई०) मे ईश्वर ने अपनी कृपा द्वारा बिना किसी युद्ध के काबुल, गज़नी तथा उनके अधीनस्थ स्थान प्रदान कर दिये।

काबुल

काबुल चौथी इकलीम मे कृषि योग्य भूमि के मध्य मे स्थित है।[1] इसके पूर्व मे लमगानात[2], परशावर[3], हश्त नगर तथा हिन्दुस्तान के कुछ प्रदेश हैं। इसके पश्चिम मे पर्वतीय प्रदेश है जिनमें करनूद[4] तथा गूर सम्मिलित है जहा हज़ारा तथा निकदीरी नामक कबीले निवास करते हैं। उत्तर दिशा मे हिन्दूकुश पर्वत, कून्दुज़ तथा अन्दराब प्रदेशों को पृथक् करता है। दक्षिण मे फरमूल, नग़र[5], बनू तथा अफ़ग़ानिस्तान[6] हैं।

नगर तथा आस-पास के स्थान

काबुल स्वय बडी छोटी सी विलायत[7] है। इसका सब से अधिक विस्तार पूर्व से पश्चिम तक है। यह चारों ओर से पर्वतों से घिरा हुआ है। नगर की दीवारें एक पहाडी तक चली गई हैं। नगर के दक्षिण-पश्चिम मे एक छोटी सी पहाडी है। क्योंकि इस पर्वत की चोटी पर काबुल के (हिन्दू) शाह ने एक किले का निर्माण कराया था अत इसे शाह काबुल कहते हैं। शाह काबुल, दूर्रीन के सकरे मार्ग से प्रारम्भ होता है और देहे याकूब के सकरे मार्ग पर समाप्त होता है। इसका घेरा २ शरई[8] होगा। इस पर्वत के आचल मे बाग ही बाग हैं। मेरे चाचा ऊलूग बेग मीर्ज़ा तथा उनके अतका वैस के समय मे इस पर्वत के आचल मे एक नहर निकाली गई थी। जो उद्यान इस पर्वत के आचल मे हैं, वे इस नहर से हरे भरे रहते हैं। नहर एक ऐसे स्थान पर समाप्त होती है जोकि बडे ही एकान्त मे है। वह स्थान कुल्कीना कहलाता है। वहाँ अत्यधिक बलात्कार होता रहता है। ख्वाजा हाफ़िज़[9] के एक शेर का यह हास्यजनक अनुकरण मैंने तैयार किया:

१ फ़रगाना के सिरे पर स्थित बताया गया है।
२ वे स्थान जिनका 'लमगान' मुख्य स्थान है।
३ पेशावर।
४ यह नाम स्पष्ट नहीं।
५ नग़र।
६ बाबर का अफ़गानिस्तान से तात्पर्य उन प्रदेशों से है जहां अफ़ग़ान कबीले निवास करते हैं। वे काबुल से परशावर को जाने वाले मार्ग के दक्षिण में स्थित थे।
७ प्रदेश, राज्य।
८ ४ मील।
९ ख्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद फ़ारसी के बड़े प्रसिद्ध कवि हुये हैं। उनका जन्म शीराज़ में हुआ था और १३८९ ई० में शीराज़ ही में उनकी मृत्यु हुई।

शेर

"क्या ही अच्छा समय था वह जब कि थोड़े दिन तक बिना किसी चिन्ता के,
हम कुलकीना निवासी रहे अपनी थोड़ी सी कुख्याति के साथ।"

नगर के दक्षिण तथा शाह काबुल के पूर्व मे एक बहुत बड़ा तालाब है जिसकी परिधि एक शरई[1] होगी। पर्वत के उस ओर मे जिधर नगर है तीन छोटे-छोटे झरने निकलते है। इनमे से दो कुलकीना के समीप हैं। एक के ऊपर ख्वाजा शमू[2] का मकबरा है और दूसरे के ऊपर ख्वाजा ख़िज्र[3] की कदमगाह[4] है। काबुल वाले यहाँ मनोरंजन हेतु जाया करते हैं। तीसरा झरना ख्वाजा रौशनाई नामक स्थान पर है जो ख्वाजा अब्दुस समद के समक्ष है। शाह काबुल की पहाड़ी से एक छोटा-सा पर्वतीय टीला निकला है। उसे उकाबैन कहते हैं। उसके अतिरिक्त एक अन्य छोटी-सी पहाड़ी है जिस पर काबुल का किला है। भव्य चहारदीवारी से घिरा हुआ नगर इसके उत्तरी सिरे पर है। यह एक विचित्र ऊंचाई पर बड़े ही उत्कृष्ट वायुमंडल मे स्थित है। भव्य तालाब जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, उसके सामने है। सियाह संग, सुग कूरगान तथा चालाक नामक चौरस घास के मैदान भी उसके सामने हैं। जब यह चौरस घास के मैदान हरे भरे रहते है तो बड़ा ही सुन्दर दृश्य उपस्थित करते हैं। ग्रीष्म ऋतु मे काबुल मे उत्तरी वायु कभी कम नहीं होती और इसे लोग परवान वायु कहते है। भीतरी किले के उत्तरी दिशा के घरों की खिड़कियों के लिये यह बड़ी ही उत्तम वायु है। काबुल के किले की प्रशंसा करते हुए मुल्ला मुहम्मद तालिब मुअम्माई[5] इस शेर को, जिसकी रचना बदी उज्ज़मा मीर्ज़ा के लिये हुई थी, पढ़ा करता था.

शेर

"काबुल के दुर्ग मे मदिरापान करो और प्याला निरन्तर चलाते रहो,
कारण कि (काबुल) पर्वत भी है, नदी भी है, नगर भी है और मैदान भी है।"[6]

काबुल के व्यापार

जिस प्रकार अरब वाले अरब के अतिरिक्त समस्त स्थानों को अजम कहते हैं उसी प्रकार हिन्दुस्तान वाले हिन्दुस्तान के अतिरिक्त समस्त स्थानों को खुरासान कहते हैं। हिन्दुस्तान तथा खुरासान के स्थल मार्ग मे दो व्यापार की मंडियाँ हैं—एक काबुल दूसरी कन्धार। काबुल मे काशगर, फरगाना,

१ २ मील।
२ हुई की हस्तलिखित पोथी की एक टिप्पणी के अनुसार 'ख्वाजा शम्सुद्दीन जाबाज़'।
३ एक पैग़म्बर जिनके विषय में मुसलमानों का विश्वास है कि वे अब भी जीवित है और भूले भटके यात्रियों को मार्ग दर्शाते हैं।
४ ख्वाजा ख़िज़्र के कदम के चिह्नों के कारण पवित्र।
५ वह बाबर की सेवा में प्रविष्ट होने के पूर्व बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा का सद्र था। उसकी मृत्यु ६१८ हि० (१५१२ ई०) में कुले मलिक के युद्ध मे हुई जिसमे उबैदुल्लाह ऊज़बेग ने बाबर को पराजित कर दिया था।
६ यह शेर इस प्रकार है :
'बख़ुर दर अर्के काबुल मै, म गर्दा कासा पै दर पै,
कि हम कोह अस्तो हम दरिया व हम शहर अस्तो हम सहरा।'

तुर्किस्तान, समरकन्द, बुखारा, बल्ख, हिसार तथा बदख्शा से कारवान आते रहते है। कन्धार मे कारवान खुरासान से आते हैं। यह देश खुरासान तथा हिन्दुस्तान के मध्य मे स्थित है। यह बडा अच्छा व्यापारिक केन्द्र है। यदि व्यापारी खिता[1] अथवा रूम[2] जायें तो उनको अधिक लाभ नहीं हो सकता। प्रत्येक वर्ष ७-८ अथवा १० हज़ार घोडे काबुल आते रहते हैं। हिन्दुस्तान से भी १०-१५-२०,००० घर वालों के कारवान आते रहते हैं। वे हिन्दुस्तान से दास, सफेद कपडे, मिश्री, साधारण तथा उत्तम प्रकार की शक्कर तथा सुगन्धित जडें लाते हैं। बहुत से व्यापारी १० पर ३० एवं ४० लाभ[3] प्राप्त कर के भी सतुष्ट नही होते। खुरासान, रूम, एराक तथा चीन की वस्तुयें काबुल में मिल जाती हैं। हिन्दुस्तान का तो काबुल बाज़ार ही है।

जल-वायु तथा पैदावार

काबुल मे पास ही पास गरम तथा ठडे दोनों प्रकार के प्रदेश हैं। काबुल से एक दिन की यात्रा के उपरान्त मनुष्य ऐसे स्थान पर पहुँच सकता है जहाँ कभी भी बर्फ नही गिरती अथवा दो ज्योतिष के घटों मे यात्रा करके वह ऐसे स्थान पर पहुँच सकता है जहाँ उस समय तक जब तक अत्यधिक गरमी नही पडती, बर्फ कभी पिघलती ही नही।

नगर के समीप ही विभिन्न स्थानों पर गरम जल-वायु तथा ठडी जल-वायु दोनों ही के फल मिल जाते हैं। ठडी जलवायु के फलों मे अगूर, अनार, सेब, जर्द आलू, बिही, शफ़ताल्, आलू बालू तथा चहार मगज़, काबुल तथा काबुल के अधीनस्थ स्थानों में मिल जाते हैं। मैंने आलू-बालू की कलमें मगवा कर यहाँ लगवाईं। वे भलीभाति बढी और खूब उन्नति की। गरम जलवायु के फलों मे लोग लमगानात से नगर में नारगी, चकोतरा, अमरूक तथा गन्ने लाते हैं। मैंने गन्ने मगवाकर यहाँ लगवाये। निज्र अऊ से जील गूज़ा तथा पर्वतीय प्रदेशों से अत्यधिक मधु काबुल में आता है। लोग मधुमक्खी के छत्ते भी रखते हैं। केवल ग़ज़नी की ओर से मधु नही आता।

काबुल की श्वेत चीनी अच्छी होती है। यहाँ की बिही तथा आलू बडे ही उत्तम होते हैं। बादरंग भी इसी प्रकार बडे उत्तम प्रकार का होता है। यहाँ एक प्रकार का अगूर होता है जिसे अगूर जल[4] कहते हैं। वह बडे ही उत्तम प्रकार का होता है। काबुल की मदिरा बडी मस्त कर देने वाली होती है। ख्वाजा खावन्द सईद नामक पर्वत के आचल की मदिरा अपनी तेजी के लिये प्रसिद्ध है। इस अवसर पर मैं केवल अन्य लोगों की प्रशसा को ही दोहरा सकता हू :

शेर

"मदिरा का स्वाद मादक ही जानता है,
जो मादक नही है उसे इसका स्वाद क्या मालूम।"[5]

१ उत्तरी चीन।
२ टर्की विशेष रूप से ट्रेबीज़ोंद के समीप के प्रात।
३ ३०० अथवा ४०० प्रतिशत।
४ 'साहिबी' नामक एक प्रकार के अगूर की समरकन्द के फलों में बाबर ने प्रशसा की है। एक अन्य प्रकार का अंगूर काबुल में होता है जो 'हुसैनी' कहलाता है। इसमें बीज नहीं होते।
५ बाबर ने इस स्थान पर अपने ९३३ हि० (१५२७ ई०) में मदिरापान त्याग देने की ओर सकेत किया है।

काबुल मे कृषि अच्छी नही होती। यदि बीज का चौगुना या पचगुना प्राप्त हो जाय तो इसे लोग बडा अच्छा समझते हैं। *यहाँ खरबूजा भी अच्छा नही होता किन्तु यदि खुरासान का बीज बोया* जाय तो बुरा भी नही होता।

यहाँ की जलवायु बडी ही उत्तम है। ससार मे कोई अन्य स्थान ऐसा नही है जहाँ की जल वायु इतनी उत्तम हो। गरमी मे भी कोई पोस्तीन पहने विना रात्रि मे नही सो सकता। यद्यपि कुछ स्थानो पर अत्यधिक बर्फ गिरती है, किन्तु ठड बहुत अधिक नही होती। समरकन्द तथा तबरेज़ दोनो ही अपनी उत्तम जलवायु के लिये बडे प्रसिद्ध हैं किन्तु वहाँ बडी अधिक ठड होती है।

काबुल के घास के मैदान

काबुल के चारो ओर बडे ही उत्तम घास के मैदान हैं। सूग कूरगान नामक मैदान काबुल के उत्तर-पूर्व मे २ कुरोह[1] पर है *जोकि बडा ही उत्तम है। यहा की घास घोडा के लिये बडी अच्छी होती* है और मच्छर भी बहुत कम होते हैं। उत्तर पश्चिम मे कोई एक शरई[2] पर चालाक नामक मैदान है, यह बहुत बडा है किन्तु यहा मच्छर घोडा को बडा कष्ट पहुचाते हैं। पश्चिम मे दुर्रीन है। वास्तव मे वहा दो मैदान हैं तीपा तथा कश नादिर। यदि यह दो भी सम्मिलित कर लिये जाय तो कुल ५ मैदान हो जायेंगे। दोनो मैदान काबुल से एक एक शरई पर होगे। वे यद्यपि छोटे छोटे हैं किन्तु यहा घोडा के लिए उत्तम घास प्राप्य रहती है और मच्छर भी नही होते। काबुल के घास के मैदानो मे इनके समान उत्तम मैदान नही है। पूर्व मे सियाह सग नामक मैदान है। इसके तथा चिर्म गरा द्वार के मध्य मे कूतलूक कदम का मकबरा है।[3] गरमी मे यहा मच्छरा की बहुतायत हो जाती है अत यह अधिक काम का नही है। इस मैदान से मिला हुआ कमरी नामक मैदान है। यदि काबुल के घास के मैदानो मे इसे भी सम्मिलित कर लिया जाय तो कुल छ मैदान हो जायेंगे किन्तु इनकी सख्या चार ही बताई जाती है।

हिन्दूकुश के दर्रे

काबुल एक बडा ही दृढ प्रदेश है। इस प्रदेश पर शत्रुओ का शीघ्र आक्रमण करना बडा कठिन है। हिन्दूकुश पर्वत से होकर, जो काबुल को बल्ख, कुन्दूज़ तथा बदख्शा से पृथक् करता है सात दर्रे हैं। इनमे से तीन दर्रे पजहीर से निकलते हैं, उदाहरणार्थ खवाक जो सब के ऊपर है उससे नीचे तूल बाज़ारक है। उनमे से तूल नामक दर्रा सब से उत्तम है। किन्तु मार्ग सब से अधिक लम्बा है। इसी कारण इसे तूल कहते है। सब से सीधा दर्रा बाज़ारक का है। तूल के समान यह भी सरे-आब तक पहुचा देता है। क्योकि यह पारन्दी से होकर गुज़रता है अत स्थानीय लोग इसे पारन्दी कहते है। एक अन्य मार्ग परवान के ऊपर जाता है। परवान तथा ऊचे ऊचे पर्वतो के मध्य मे, छोटे छोटे दर्रे हैं। वे हफ्त-बचा कहलाते हैं। *अन्दर से दो मार्ग आकर मुख्य दर्रे के नीचे मिल जाते हैं। ये मार्ग हफ्त-बचा से होते हुए* परवान तक चले जाते हैं। इस मार्ग की यात्रा बडी कठिनाई मे की जा सकती है। गूरबन्द से भी तीन मार्ग निकलते हैं। परवान के बाद ही दूसरा मार्ग, जो यगी यूल कहलाता है, वालियान से होता हुआ

१ ४ मील।
२ २ मील।
३ वह कनवाह के युद्ध में सम्मिलित था अत वह मार्च १५२७ ई० के बाद ही दफ्न हुआ होगा।

खिनजन तक जाता है। इसी के ऊपर कीपचाक मार्ग है जो उस स्थान को काटता है जहा अन्दराब तथा सुर्ख आब (किज़ील-सू) का सगम है। यह भी बडा ही उत्तम मार्ग है। तीसरा मार्ग शिब्रतू दर्रे को जाता है। जो इस मार्ग से ग्रीष्म ऋतु मे यात्रा करते है वे बामियान तथा सैगान हो कर जाते है किन्तु जो लोग इससे शीत ऋतु मे यात्रा करते हैं वे आबदरा हो कर जाते हैं। शिब्रतू के अतिरिक्त हिन्दूकुश के सभी मार्ग शीत ऋतु मे तीन चार मास तक बन्द हो जाते है कारण कि घाटी की तलहटी से जब कि जल अधिक होता है तो किसी भी मार्ग से यात्रा नही की जा सकती। यदि कोई उन दिनो घाटी की तलहटी से न जाना चाहे अपितु हिन्दूकुश को पर्वत की ओर से पार करना चाहे तो उसकी यात्रा बडी ही कठिन हो जाती है। शरत् ऋतु के तीन चार महीने, जब बर्फ कम तथा जल अधिक नही रहता, बडे ही उत्तम होते हैं। चाहे पर्वत हो अथवा घाटी की तलहटी, काफिर लुटेरे कम सख्या मे नही मिलते।

काबुल से खुरासान को कन्धार होता हुआ मार्ग जाता है। यह पूर्णत समतल है और इसमे कोई दर्रा नही है।

हिन्दुस्तान के दर्रे

हिन्दुस्तान की ओर से काबुल को चार मार्ग जाते हैं। एक मार्ग खैबर पर्वत से होता हुआ एक नीचे के दर्रे से, दूसरा बगश की ओर से, तीसरा नग्र[1] की ओर से और चौथा फरमूल की ओर से। अन्तिम तीनो दर्रे भी नीचे हैं। सिन्द के तीन घाटो से उन मार्गों पर पहुँचा जा सकता है। जो लोग नीलाब[2] घाट से यात्रा करते हैं वे लमगानात होकर आते हैं।[3] शीत ऋतु मे लोग सिन्द नदी (हारू)[4] घाट से पार करते है। यह स्थान उस स्थान के ऊपर है जहा काबुल नदी से सिन्द नदी मिलती है। इस घाट से पार करने से काबुल नदी भी पार करनी पडती है। मैंने अपने हिन्दुस्तान के बहुत से अभियानो के समय उन घाटो को पार किया, किन्तु अन्तिम अभियान के समय जब मैंने सुल्तान इबराहीम को पराजित करके हिन्दुस्तान विजय किया तो मैंने नीलाब पर नौकाओं द्वारा नदी पार की।[5] इस स्थान के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान से सिन्द नदी नौका के बिना पार नही की जा सकती। जो लोग दीनकोट[6] पर नदी पार करते है वे बगश होकर जाते है। जो लोग चौपारा नामक स्थान पर नदी पार करते हैं वे यदि फरमूल के मार्ग से जाते हैं तो गजनी पहुच जाते हैं और यदि दश्त[7] के मार्ग से जाते हैं तो कन्धार पहुच जाते है।

१ नग़ज़।
२ अटक के १५ मील नीचे।
३ सम्भवतः दो मार्गों से, या तो खैबर नीनगनहार-जगदालीक मार्ग से और या काबुल नदी के उत्तरी तट से गोश्ता होकर।
४ सम्भवतः हारून, अटक के लगभग १० मील ऊपर।
५ ६३५ हि० (१५२५ ई०) में।
६ सम्भवत. यह स्थान धान कोट तथा मुअज़्ज़म नगर दोनों नामों से प्रसिद्ध है। यह सिंध के पूर्वी तट पर काला बाग के समीप रहा होगा।
७ आधुनिक दामन।

काबुल-निवासी

काबुल में विभिन्न बहुत-सी कौमें पाई जाती हैं। घाटियों तथा मैदानों में तुर्क, ईमाक[1] तथा अरब हैं। नगर तथा कुछ ग्रामों में सार्त कबीले वाले रहते हैं। बहुत से अन्य भागों तथा ग्रामों में पशाई, पराजी, ताजीक, बीर्की तथा अफगान बसे हैं। पश्चिमी पर्वतों में हजारा तथा निक्दोरी कबीले पाये जाते हैं जिनमें कुछ मुग़ूली भाषा बोलते हैं। पर्वतों के उत्तरी-पूर्वी भाग में काफिरिस्तान है उदाहरणार्थ कितूर तथा गिबरिक। दक्षिण में अफगान कबीले निवास करते हैं।

काबुल में ११-१२ भाषायें बोली जाती हैं। अरबी, फारसी, तुर्की, मुग़ूली, हिन्दी, अफगानी, पशाई, पराजी, गिब्री, बीर्की तथा लमगानी। यह नहीं कहा जा सकता कि किसी अन्य देश में भी इतनी कौमें तथा इतनी विभिन्न भाषायें पाई जाती हैं अथवा नहीं।

काबुल के भाग

काबुल में १४ तूमान हैं। समरकन्द, बुखारा तथा उन प्रदेशों के आस-पास के स्थान जोकि एक बहुत बड़ी विलायत[2] के अधीन होते हैं, तूमान कहलाते हैं। अन्दिजान, काशगर तथा उसके आसपास उसे ऊरचीन कहते हैं। हिन्दुस्तान में उसे परगना कहते हैं। बजीर, सवाद तथा हश नगर कभी काबुल के अधीन रहे होंगे। किन्तु अब अफगानों के कारण उनमें से कुछ नष्ट भ्रष्ट हो गये हैं और कुछ अफगानों के अधीन हो गये हैं। अब उन्हें विलायत[3] नहीं कहा जा सकता।

काबुल के पूर्व में लमगानात हैं जिनमें ५ तूमान तथा २ बुलूक[4] कृषि-योग्य भूमि के हैं। सब से बड़ा तूमान नीनगनहार[5] है। कुछ इतिहासों में इसे नगरहार भी लिखा गया है। इसके दारोगा[6] का निवास स्थान अदीनापूर[7] में है जो काबुल से पूर्व की ओर लगभग १३ योगाच[8] पर है। काबुल से नीनगनहार का मार्ग बड़ा कठिन है। तीन-चार स्थानों पर छोटे छोटे पहाड़ी दर्रे हैं और तीन-चार स्थानों पर बड़ा ही सकरा मार्ग है। जब तक इस मार्ग पर कोई आबादी न थी, खिरिलची तथा अन्य अफगान डाकू यहा लूट मार किया करते थे। जब से मैंने कूरूक साई के नीचे का भाग करातू आबाद करा दिया तब से यह मार्ग सुरक्षित हो गया। इस मार्ग पर 'बादाम चश्मा' नामक दर्रे के कारण गरम तथा ठंडी जल-वायु के प्रदेश पृथक् हो जाते हैं। इस दर्रे के उस भाग में जो काबुल की ओर है बर्फ गिरती रहती है तथा लमगानात की ओर कूरूक साई में बर्फ नहीं गिरती। इस दर्रे को पार करते ही एक दूसरा *संसार दृष्टिगत होने लगता है। वहाँ के वृक्ष, पौधे, पशु तथा लोगों के रस्म रवाज अन्य ही प्रकार के हैं।* नीनगनहार में ९ जल धारायें बहती हैं। यहा चावल तथा अनाज की उत्तम फसलें होती हैं। यहा सतरा, चकोतरा तथा अनार बड़ी अधिक संख्या में होते हैं। ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) में मैंने एक चार बाग

१ मुग़ुल कबीले।
२ *यहाँ जिले से तात्पर्य है।*
३ आबाद प्रदेश।
४ तूमान से छोटा भाग।
५ काबुल नदी से मिला हुआ, दक्षिण में।
६ हाकिम।
७ इसका प्राचीन रूप सम्भवतः 'उद्यानपुरा' है।
८ लगभग ८२ मील।

का निर्माण कराया जो बागे वफा[1] के नाम से प्रसिद्ध है। यह एक पुश्ते पर अदीनापूर के किले के समक्ष दक्षिण की ओर है। इसके मध्य मे सूर्ख रूद है। वहा भी सतरे, चकोतरे तथा अनार बडी अधिक सख्या मे होते हैं। जिस वर्ष मैंने पहाड खा को पराजित करके लाहौर तथा दीपालपूर को विजय किया[2] तो मैंने केले लाकर यहाँ लगवाये। वे भलीभाति उन्नति कर गये। इस वर्ष के पूर्व मैंने वहाँ गन्ने लगवाये थे। वे भी बडे अच्छे हुए। उनमे से कुछ बुखारा तथा बदख्शा[3] भेज दिये गये थे। बाग ऊचाई पर स्थित है और निकट ही जल बहता है तथा हल्की ठड पडती है। बाग के मध्य मे एक छोटा सा पुश्ता है। बाग के मध्य म इसी पुश्ते से होकर एक पनचक्की के योग्य जल धारा बहती है। उद्यान के मध्य मे जो चार चमन हैं वे इसी पुश्ते के ऊपर स्थित हैं। बाग के दक्षिण-पश्चिम म एक हौज है जो १० × १० के आयतन[4] म है। इसके चारो ओर सतरे के और कुछ अनार के वृक्ष हैं। यह पूरा भाग एक त्रिपत्ती के आकार के घास के चौरस मैदान से घिरा हुआ है। यह उद्यान का सब से अधिक उत्तम भाग है। जब सतरे पक जाते हैं तो यहाँ का दृश्य बडा ही रमणीक हो जाता है। नि सदेह यह बाग बडे ही उत्तम स्थान पर लगा हुआ है।

नीनगनहार के दक्षिण मे सफेद कोह है। यह पर्वत नीनगनहार और बगश को एक दूसरे से पृथक करता है। इस पर्वत मे सवार होकर यात्रा नही की जा सकती। इस पर्वत से ९ जल-धारायें निकलती हैं। इस पर्वत को सफेद कोह[5] कहने का कारण यह है कि इसकी बर्फ कभी भी कम नही होती। इस पर्वत की तलहटिया मे जरा भी वर्फ नही गिरती। वर्फ की सीमा से इस स्थान तक आधे दिन मे यात्रा की दूरी है। इसके आस-पास के बहुत से स्थानो की जल वायु बडी ही उत्तम है। यहाँ का जल बडा ठडा होता है और बर्फ की आवश्यकता नही होती।

अदीनापूर के दक्षिण म सूर्ख रूद[6] बहती है। किला ऊचाई पर स्थित है और रूद की ओर से ४०-५० कारी[7] की खडी ऊचाई पर है। इसके उत्तर म अलग पहाडी के टुकडे हैं। यह किला बडा ही दृढ है। यह पर्वत नीनगनहार तथा लमगानात[8] के मध्य मे स्थित है। जब काबुल मे वर्फ गिरती है तो इस पवत की चोटी पर भी वर्फ गिरती है। लमगान निवासी काबुल मे वर्फ गिरने के विषय मे, इस पर्वत की चोटी की वर्फ के कारण, अवगत हो जाते हैं।

काबुल से लमगानात की यात्रा के उद्देश्य से यदि लोग कूरूक साई से यात्रा करें तो एक माग

१ इस बाग के लगवाने का कहीं कोई और उल्लेख नहीं मिलता। यह कार्य ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) के महमन्द के आक्रमण के समय प्रारम्भ किया गया होगा। इस वर्ष के निष्ठावान् सहायकों के नाम पर सम्भवत बाबर ने इसका नाम 'बाग़े वफ़ा' रक्खा।

२ ९३० हि० (१५२३-२४ ई०) का वर्णन कहा नहीं मिलता। सफ़र ९२६ हि० से सफ़र ९३२ हि० (जनवरी १५२० से नवम्बर १५२५ ई०) के पृष्ठ नष्ट हो गये हैं।

३ सम्भवत हुमायूँ के पास जो उस समय बदख्शा का हाकिम था।

४ सम्भवत १० गज़ × १० × १० गज़।

५ श्वेत पर्वत।

६ सुर्ख रूद सफ़ेद कोह मे निकलती है और जगदालीक तथा गंडमक के मध्य मे काबुल नदी में गिरती है।

७ लगभग ४०-५० गज़।

८ ख़ास लमग़ानात। यह पर्वत श्रेणी विभिन नामों से प्रसिद्ध है। फ़ारसी में इसे सियाह कोह (काला पर्वत) कहते हैं जिसका अर्थ तुर्की नाम 'करा ताग़' के समान 'बिना बर्फ़ का' होगा। ताजीक लोग इसे 'बाग़े अ़रा', अफ़ग़ान "कन्दा गुर' तथा लमग़ानी "कोहे बूलान" कहते हैं।

मिलेगा जो दीरी दर्रे से होकर बारान को बूलान पर काटता हुआ लमगानात मे चला जाता है। दूसरा मार्ग करा-तू से होता हुआ कूरूक साई के नीचे नीचे बारान नदी को ऊलूग नूर पर काटता है और फिर लमगानात को बादे पीच[1] दर्रे से चला जाता है। यदि लोग निज्र अऊ से होकर यात्रा करें तो उन्हें बद्र अऊ तथा करा नकारिक होते हुये बादे पीच नामक दर्रे से जाना पडेगा।

यद्यपि नीनगनहार, लमगान तूमान के पाच तूमानो मे से एक है किन्तु लमगानात से केवल तीन तूमान समझे जाते हैं।

तीन तूमानो मे से एक अली शग तूमान है। उसके उत्तर मे हिन्दूकुश से मिले हुए बहुत बडे बडे पर्वत हैं जो बर्फ से ढके रहते हैं। यहा काफिर कौम वाले निवास करते हैं। काफिरिस्तान से अली शग के निकटतम मील (पर्वत) है जहा से अली शग धारा निकलती है। हज़रत नूह पैगम्बर के पिता मेहतर लाम की कब्र अली शग तूमान मे है। कुछ इतिहासो मे उसे लमक एव लमकान लिखा गया है। कुछ लोग काफ[2] के स्थान पर गैन[3] बोलते हुए भी देखे गये हैं। इसी कारण इस प्रदेश को लमग़ान कहते हैं।

दूसरा तूमान अलगार है। काफिरिस्तान का जो भाग इससे निकटतम है वह गवार कहलाता है। यहाँ की जल-धारा गवार से निकलती है। यह जल-धारा अली शग की जल-धारा से मिल कर बहती हुई मदरावर के नीचे बारान नदी मे मिलती है। मदरावर लमगानात का तीसरा तूमान है।

लमगान के दो बुलूकों मे एक नूर घाटी है। यह बडा अद्वितीय स्थान है। इसका किला घाटी के मुह पर एक चट्टान की नोक पर स्थित है। इसके दोनो ओर जल-धारायें हैं। यहाँ का चावल ढालू पुश्तो पर बोया जाता है जहा केवल एक मार्ग से पहुचा जा सकता है। यहाँ सतरे, चकोतरे और गरम जल वायु के प्रदेश के फल बडी अधिक सख्या मे होते हैं। कही कही खजूर के भी वृक्ष होते हैं। किले के दोनो ओर जो जल धारायें बहती हैं उनके किनारे-किनारे बहुत बडी सख्या मे वृक्ष लगे हैं। इनमे से अधिकाश अमलूक के वृक्ष हैं। इनके फल को कुछ तुर्क लोग करा ईमीश कहते हैं। यहाँ यह अत्यधिक सख्या मे होते हैं किन्तु अन्य स्थान पर लेश मात्र भी नही होते। इस घाटी मे अगूर भी होते हैं। अगूर की बेल वृक्षो पर चढा दी जाती है। इनसे जो मदिरा निकलती है वह लमगान की मदिरा के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ दो प्रकार के अगूर होते हैं अरह ताशी तथा सूहान ताशी। अरह ताशी पीलापन लिये रहते हैं किन्तु सूहान ताशी उत्तम प्रकार के लाल रग के होते हैं। अरह ताशी की मदिरा का नशा बडा आनन्दवर्धक होता है। किन्तु दोनो जितनी प्रसिद्ध हैं उतनी उत्तम नही है। इसकी कदराओं मे से एक के ऊपर बन्दर भी होते हैं। इससे ऊपर बन्दर कही नही मिलते। इससे पूर्व यहाँ वाले सूअर भी पालते थे किन्तु हमारे राज्य-काल में उन्होने यह कार्य त्याग दिया है।

लमगान का एक अन्य तूमान नूर गल सहित कूनार है। यह तूमान लमगानात से कुछ पृथक् स्थित है। इसकी सीमायें काफिरिस्तान से मिली हैं। यद्यपि यह अन्य तूमानो के बराबर है और यहाँ का राजस्व भी कम है किन्तु लोग वह भी अदा नही करते। चगान सराय नदी उत्तर-पूर्व के मध्य से

१ यह पर्वत भी भिन्न-भिन्न नामों से प्रसिद्ध है।
२ क (ك)।
३ ग (غ)।

काफिरिस्तान होती हुई बामा नामक बुलूक मे पहुचती है और वहा बारान नदी मे मिल कर पूर्व की ओर बहती है। नूर गल इस नदी के पश्चिम मे है और कूनार पूर्व की ओर।

मीर सैयिद अली हमदानी[1]—ईश्वर की उन पर दया हो—यात्रा करते हुए यहाँ पहुचे और कूनार से एक शरई[2] पर मृत्यु को प्राप्त हो गये। उनके शिष्यों ने उनका शव खुतलान ले जाकर दफन कर दिया। जिस स्थान पर उनकी मृत्यु हुई वहा उन्होंने एक मजार का निर्माण करा दिया। मैंने ९२० हि० (१५१४ ई०) मे जब चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो इस मजार का तवाफ[3] किया।

इस तूमान मे सतरो, चकोतरो तथा धनिये के पौधो की बहुतायत रहती है। तेज़ मदिरायें काफिरिस्तान से लाई जाती हैं।

यहा के लोग एक विचित्र बात की चर्चा किया करते हैं जो असम्भव ज्ञात होती है किन्तु यह ज्ञान विभिन्न सूत्रो से प्राप्त हुआ है। मुल्ता कुन्दी[4] के ऊपर समस्त पर्वतीय प्रदेश मे उदाहरणार्थ कूनार, नूर गल, बजौर, सवाद तथा उसके आस-पास यह प्रसिद्ध है: जब यहा किसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है और उसके जनाज़े को उठाया जाता है तो वह यदि दुराचारिणी नही है तो जनाज़ा उठाने वाले चारो आदमियो को इस प्रकार हिला देती है कि यदि वे प्रयत्न कर के अपने आपको रोके न रहे तो लाश गिर पडती है और यदि वह दुराचारिणी होती है तो फिर लाश नही हिलती। मैंने यह बात केवल कूनार वालो से नही सुनी है अपितु बजौर, सवाद तथा समस्त पर्वतीय प्रदेश वाले यही बात कहते हैं। हैदर अली बजौरी ने, जो बजौर का सुल्तान था और जिसने उस प्रदेश पर भली भाति शासन किया, अपनी माता की मृत्यु पर कोई शोक और दु ख प्रकट न किया और न काले वस्त्र धारण किये और आदेश दिया कि "उसका जनाज़ा तैयार कर के उठाया जाय, यदि वह न हिला तो मैं उसे जलवा दूगा।" जब उसका जनाज़ा तैयार कर के उठाया गया और प्रयानुसार हिलने लगा तो उसने यह सुन कर ही काले वस्त्र धारण किये तथा शोक प्रकट किया।

एक अन्य बुलूक चगान सराय है जोकि एक छोटा सा ग्राम है और जिसमे थोडी सी भूमि है। यह काफिरिस्तान के मुह पर है। यहा के निवासी यद्यपि मुसलमान हैं किन्तु काफिरो से मेल जोल के कारण उन्ही के रीति-रवाजो का पालन करते हैं। एक बहुत बडी धारा यहाँ उत्तर-पूर्व से बजौर के पीछे से पहुचती है और पीच नामक एक छोटी सी जल-धारा काफिरिस्तान से होती हुई आती है। यहाँ पीलापन लिये हुई तेज़ मदिरा मिलती है किन्तु वह नूर घाटी की मदिरा के समान नही होती। इस ग्राम मे अगूर के बाग नही होते। यहाँ की मदिरायें काफिरिस्तान नदी के ऊपर से तथा पीचे काफिरिस्तान से आती हैं।

जब मैंने चग़ान सराय पर अधिकार जमा लिया तो पीच के काफिर यहाँ के ग्राम वालो को

१ एक प्रसिद्ध सूफ़ी जो हमदान से भागकर १३८० ई० में कश्मीर पहुँचे। उनकी मृत्यु १३८४ ई० में हुई।

२ २ मील।

३ कुछ हस्तलिखित पोथियों में ६२० हि० और कुछ में ६२५ हि० है। दोनों में से कोई तारीख ठीक ज्ञात नहीं होती। यह घटना ६२४ हि० (१५१८ ई०) में घटी होगी।

४ मुल्ता कुन्दी के विषय में बाबर की टिप्पणी:
'क्योंकि मुल्ता कुन्दी, नूर गल सहित कूनार के तूमान का निचला भाग बताया जाता है अत' नीचे (नदी पर) का भाग नूर तथा अतर घाटी से सम्बन्धित है।'

मिलेगा जो दीरी दर्रे से होकर बारान को बूलान पर काटता हुआ लमगानात मे चला जाता है। दूसरा मार्ग करा-तू से होता हुआ कूरूक साई के नीचे नीचे बारान नदी को ऊलूग नूर पर काटता है और फिर लमगानात को बादे पीच' दर्रे से चला जाता है। यदि लोग निज्र अऊ से होकर यात्रा करें तो उन्हें बद्र अऊ तथा करा नकारिक होते हुये बादे पीच नामक दर्रे से जाना पडेगा।

यद्यपि नीनगनहार, लमगान तूमान के पाच तूमानो मे से एक है किन्तु लमगानात से केवल तीन तूमान समझे जाते हैं।

तीन तूमानो मे से एक अली शग तूमान है। उसके उत्तर मे हिन्दूकुश से मिले हुए बहुत बडे बडे पर्वत हैं जो बर्फ से ढके रहते हैं। यहा काफिर कौम वाले निवास करते हैं। काफिरिस्तान से अली शग के निकटतम मील (पर्वत) है जहा से अली शग धारा निकलती है। हज़रत नूह पैगम्बर के पिता मेहतर लाम की कब्र अली शग तूमान मे है। कुछ इतिहासो मे उसे लमक एव लमकान लिखा गया है। कुछ लोग काफ[२] के स्थान पर गैन[३] बोलते हुए भी देखे गये हैं। इसी कारण इस प्रदेश को लमगान कहते हैं।

दूसरा तूमान अलगार है। काफिरिस्तान का जो भाग इससे निकटतम है वह गवार कहलाता है। यहाँ की जल-धारा गवार से निकलती है। यह जल-धारा अली शग की जल-धारा से मिल कर बहती हुई मदरावर के नीचे बारान नदी मे मिलती है। मदरावर लमगानात का तीसरा तूमान है।

लमगान के दो बुलूको मे एक नूर घाटी है। यह बडा अद्वितीय स्थान है। इसका किला घाटी के मुह पर एक चट्टान की नोक पर स्थित है। इसके दोनो ओर जल-धारायें हैं। यहाँ का चावल ढालू पुश्तो पर बोया जाता है जहा केवल एक मार्ग से पहुचा जा सकता है। यहाँ सतरे, चकोतरे और गरम जल वायु के प्रदेश के फल बडी अधिक सख्या मे होते हैं। कही कही खजूर के भी वृक्ष होते है। किले के दोनो ओर जो जल-धारायें बहती हैं उनके किनारे-किनारे बहुत बडी सख्या मे वृक्ष लगे हैं। इनमे से अधिकाश अमलूक के वृक्ष हैं। इनके फल को कुछ तुर्क लोग करा ईमीश कहते हैं। यहाँ यह अत्यधिक सख्या मे होते हैं किन्तु अन्य स्थान पर लेश मात्र भी नही होते। इस घाटी मे अगूर भी होते हैं। अगूर की बेल वृक्षों पर चढा दी जाती है। इनसे जो मदिरा निकलती है वह लमगान की मदिरा के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ दो प्रकार के अगूर होते हैं अरह ताशी तथा सूहान ताशी। अरह ताशी पीलापन लिये रहते हैं किन्तु सूहान ताशी उत्तम प्रकार के लाल रग के होते हैं। अरह ताशी की मदिरा का नशा बडा आनन्दवर्धक होता है। किन्तु दोनो जितनी प्रसिद्ध हैं उतनी उत्तम नही हैं। इसकी कदराओं मे से एक के ऊपर बन्दर भी होते हैं। इससे ऊपर बन्दर कही नही मिलते। इससे पूर्व यहाँ वाले सूअर भी पालते थे किन्तु हमारे राज्य-काल में उन्होंने यह कार्य त्याग दिया है।

लमगान का एक अन्य तूमान नूर गल सहित कूनार है। यह तूमान लमगानात से कुछ पृथक् स्थित है। इसकी सीमायें काफिरिस्तान से मिली हैं। यद्यपि यह अन्य तूमानो के बराबर है और यहाँ का राजस्व भी कम है किन्तु लोग वह भी अदा नही करते। चगान सराय नदी उत्तर-पूर्व के मध्य से

१ यह पर्वत भी भिन्न-भिन्न नामों से प्रसिद्ध है।
२ क (ک)।
३ ग (غ)।

काफिरिस्तान होती हुई कामा नामक बुलूक मे पहुचती है और वहा बारान नदी मे मिल कर पूर्व की ओर बहती है। नूर गल इस नदी के पश्चिम मे है और कूनार पूर्व की ओर।

मीर सैयिद अली हमदानी[1]—ईश्वर की उन पर दया हो—यात्रा करते हुए यहाँ पहुचे और कूनार से एक शरई[2] पर मृत्यु को प्राप्त हो गये। उनके शिष्यो ने उनका शव खुतलान ले जाकर दफन कर दिया। जिस स्थान पर उनकी मृत्यु हुई वहा उन्होंने एक मजार का निर्माण करा दिया। मैंने ९२० हि० (१५१४ ई०) मे जब चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो इस मजार का तवाफ[3] किया।

इस तूमान मे सतरो, चकोतरो तथा धनिये के पौधो की बहुतायत रहती है। तेज मदिरायें काफिरिस्तान से लाई जाती हैं।

यहा के लोग एक विचित्र बात की चर्चा किया करते हैं जो असम्भव ज्ञात होती है किन्तु यह ज्ञान विभिन्न सूत्रो से प्राप्त हुआ है। मुल्ता कुन्दी[4] के ऊपर समस्त पर्वतीय प्रदेश मे उदाहरणार्थ कूनार, नूर गल, बजौर, सवाद तथा उसके आस-पास यह प्रसिद्ध है: जब यहा किसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है और उसके जनाजे को उठाया जाता है तो वह यदि दुराचारिणी नही है तो जनाजा उठाने वाले चारो आदमियो को इस प्रकार हिला देती है कि यदि वे प्रयत्न कर के अपने आपको रोके न रहे तो लाश गिर पडती है और यदि वह दुराचारिणी होती है तो फिर लाश नही हिलती। मैंने यह बात केवल कूनार वालो से नही सुनी है अपितु बजौर, सवाद तथा समस्त पर्वतीय प्रदेश वाले यही बात कहते है। हैदर अली बजौरी ने, जो बजौर का सुल्तान था और जिसने उस प्रदेश पर भली भाति शासन किया, अपनी माता की मृत्यु पर कोई शोक और दुःख प्रकट न किया और न काले वस्त्र धारण किये और आदेश दिया कि "उसका जनाजा तैयार कर के उठाया जाय, यदि वह न हिला तो मैं उसे जलवा दूगा।" जब उसका जनाजा तैयार कर के उठाया गया और प्रथानुसार हिलने लगा तो उसने यह सुन कर ही काले वस्त्र धारण किये तथा शोक प्रकट किया।

एक अन्य बुलूक चगान सराय है जो कि एक छोटा सा ग्राम है और जिसमे थोडी सी भूमि है। यह काफिरिस्तान के मुह पर है। यहा के निवासी यद्यपि मुसलमान हैं किन्तु काफिरो से मेल जोल के कारण उन्ही के रीति-रवाजो का पालन करते हैं। एक बहुत बडी धारा यहाँ उत्तर-पूर्व से बजौर के पीछे से पहुचती है और पीच नामक एक छोटी सी जल-धारा काफिरिस्तान से होती हुई आती है। यहाँ पीलापन लिये हुई तेज मदिरा मिलती है किन्तु वह नूर घाटी की मदिरा के समान नही होती। इस ग्राम मे अगूर के बाग नही होते। यहाँ की मदिरायें काफिरिस्तान नदी के ऊपर से तथा पीचे काफिरिस्तान से आती हैं।

जब मैंने चगान सराय पर अधिकार जमा लिया तो पीच के काफिर यहाँ के ग्राम वालो की

१ एक प्रसिद्ध सूफी जो हमदान से भागकर १३८० ई० में कश्मीर पहुँचे। उनकी मृत्यु १३८४ ई० में हुई।

२ २ मील।

३ कुछ हस्तलिखित पोथियों में ६२० हि० और कुछ में ६२५ हि० है। दोनों में से कोई तारीख ठीक ज्ञात नहीं होती। यह घटना ६२४ हि० (१५१८ ई०) में घटी होगी।

४ मुल्ता कुन्दी के विषय में बाबर की टिप्पणी:
क्योंकि मुल्ता कुन्दी, नूर गल सहित कूनार के तूमान का निचला भाग [illegible] है [illegible] नीचे (नदी पर) का भाग नूर तथा अतर घाटी से सम्बन्धित है।

सहायतार्थ आये थे। वहाँ मदिरा का इतना अधिक प्रयोग होता है कि प्रत्येक काफिर मदिरा की चमडे की मशक ग्रीवा मे लटकाये रहता है और जल के स्थान पर मदिरा का सेवन करता है।

कामा[1], यद्यपि कोई पृथक् जिला नही है किन्तु नीनगनहार के अधीन है। यह भी बुलूक कहलाता है।

निज्र अऊ एक अन्य तूमान है। यह काबुल के उत्तर मे पर्वतीय प्रदेश मे स्थित है। उसके पीछे पर्वतीय प्रदेश मे केवल काफिर ही निवास करते हैं। यह एकात स्थान है। यहा अगूर तथा फल बहुत बडी सख्या मे होते हैं। यहा के लोग अत्यधिक मदिरा तैयार करते हैं किन्तु वे इसे उबाल लेते हैं। शीत ऋतु मे ये लोग पक्षियो को मोटा कर लेते हैं। वे अत्यधिक मदिरापान करते हैं, नमाज नही पढते, मूर्ख तथा काफिरो के समान होते हैं।

निज्र अऊ के पर्वतो मे अरचा, चिलग़ोजा, बिलूत तथा खनजक बडी अधिक सख्या मे होते हैं। इनमे से उपर्युक्त तीन निज्र अऊ के ऊपर नही होते अपितु नीचे उगते हैं और हिन्दुस्तानी वृक्ष हैं। चिलगोज़े की लकडी यहाँ के निवासियो के लिये दीपक का काम देती है। यह मोमबत्ती के समान जलती है और बडी ही आश्चर्यजनक लकडी है। इन पर्वतो मे उडने वाली गिलहरी पाई जाती है। यह चिमगादड से बडी होती है और चिमगादड के पख के समान इसके बाहुओ तथा टागो के मध्य मे एक पर्दा होता है। लोग इसे कभी कभी लाते थे। कहा जाता है कि यह एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक नीचे की ओर गिज़[2] के समान उडती है। मैंने स्वय इसे कभी उडते नही देखा। एक बार हमने एक गिलहरी वृक्ष पर रख दी। वह हाथों-पैरो से वृक्ष को पकड कर चल दी। जब लोग उसके पीछे दौडे तो वह अपने पखो को फैला कर नीचे उतर आई और उसे कोई हानि नही पहुँची, मानो वह उड कर आई हो। निज्र अऊ पर्वत की एक विचित्र वस्तु लूखा पक्षी है। उसे बू कलमून[3] भी कहते है। कारण कि इसके सिर तथा दुम के बीच मे चार पाच परिवर्तनशील रग रहते हैं जो कबूतर की गरदन के समान चमकदार होते हैं। यह लगभग कब्के दरी[4] के बराबर होता है। हिन्दुस्तान का कब्के दरी ज्ञात होता है। लोग इसके विषय मे इस विचित्र घटना का उल्लेख करते हैं शीत ऋतु मे यह पर्वत के आचल मे उतर आता है। जब यह उड कर किसी अगूर के बाग के उस पार पहुच जाता है तो फिर यह नही उड पाता और पकड लिया जाता है। निज्र अऊ मे एक प्रकार का चूहा होता है जिसे मुश्क का चूहा कहते हैं। इसमें से मुश्क[5] के समान सुगन्धि आती है। मैंने स्वय उसे नही देखा है।

एक अन्य तूमान पजहीर नामक है। यह पजहीर मार्ग पर काफिरिस्तान के समीप स्थित है। काफिर लुटेरे इसी मार्ग से यात्रा करते हैं। क्योंकि काफिर लोग यहाँ के अत्यधिक निकट है, अत वे यहाँ से कर भी वसूल करते हैं। जिस बार मैंने हिन्दुस्तान को विजय किया[6] तो काफिरो ने पजहीर पहुच कर यहा अत्यधिक मनुष्यो की हत्या कर दी और यहा बडा उपद्रव मचाया।

एक अन्य तूमान गूरबन्द है। उस प्रदेश मे कूतल को बन्द कहते है। गूर की ओर इसी कूतल से

१ इसे नीनगनहार के अधीन रखना चाहिये था।
२ कम दूर जाने वाला बाण जो छोटे छोटे पक्षियों के शिकार के काम आता है।
३ गिरगिट की तरह सदा रग बदलने वाला।
४ पहाड़ी चकोर जिसकी चाल बड़ी सुन्दर होती है।
५ कस्तूरी।
६ १५२६ ई०।

यात्रा की जाती है, इसी कारण इसे गूरबन्द कहते हैं। इसकी घाटियों के सिरों पर हज़ारा लोग निवास करते हैं। इसमें बहुत थोड़े से ग्राम हैं और यहाँ से बहुत कम राजस्व प्राप्त होता है। कहा जाता है कि गूरबन्द के पर्वतों मे चादी तथा नीलम की खानें पाई जाती हैं।

इसके अतिरिक्त हिन्दूकुश पर्वत के दामन मे ग्राम[1] भी हैं जिनमे ऊपर की ओर मीता-कचा तथा परवान एव नीचे की ओर दूरनाम, कुल १२ अथवा १३ है। उन ग्रामो में अत्यधिक फल होते हैं। उन समस्त ग्रामो मे मदिरा भी होती है। ख्वाजा खान सईद की मदिरा सब से अधिक तेज होती है। समस्त ग्राम पर्वत के नीचे स्थित है। कुछ से माल गुज़ारी मिल जाती है किन्तु सभी से नही प्राप्त की जा सकती कारण कि वे पर्वतो मे अत्यधिक दूरी पर स्थित है।

पहाडियो के आचल तथा बारान नदी के बीच मे दो समतल भूमि के टुकडे हैं एक कुर्रत ताजियान और दूसरा दश्ते शेख कहलाता है। क्योंकि यहाँ एक प्रकार की बाजरे की सी हरी घास अधिक मात्रा मे उगती है अत यहाँ तुर्क तथा मुग़ल कबीले आते रहते हैं।

इन पहाडियों के आचल मे नाना प्रकार के रगों के लाले के फूल खिले रहते हैं। एक बार मैंने उन्हें गिना था। ३२ अथवा ३३ विभिन्न किस्मे निकली। हमने एक का नाम लाल गुल बू रख दिया कारण कि उसकी सुगन्धि लाल गुलाब के फूल के समान थी। यह दश्ते शेख के एक भूमि के टुकडे पर बिना लगाये उगता है और किसी अन्य स्थान पर नही निकलता। इसके अतिरिक्त इन्ही पहाडियो के आचल मे परवान से नीचे १०० पखडियों वाला लाला होता है। वह भी गूरबन्द के सकीर्ण मार्ग के निकासी के स्थान पर होता है। इन दो भूमि के समतल टुकडो के मध्य मे एक छोटी सी पहाडी है जिसे ख्वाजये रेगे रवा कहते है। इसमे ऊपर से नीचे तक एक बालू की पट्टी चली गई है। लोग कहते हैं कि ग्रीष्म ऋतु मे इससे नक्कारे की ध्वनि निकलती रहती है।

कुछ ग्राम काबुल के अधीन भी हैं। नगर के दक्षिण-पश्चिम मे बर्फ से ढके हुए पर्वत है जहाँ निरन्तर बर्फ गिरा करती है। एक वर्ष की बर्फ दूसरे वर्ष तक जमी रहती है। बहुत ही कम वर्ष ऐसे होते हैं जब कि दूसरे वर्ष की बर्फ पहले वर्ष पर न पडे। जब काबुल के बर्फ के भडारो की बर्फ समाप्त हो जाती है तो इसी पर्वत से बर्फ लाकर लोग जल ठडा करते हैं। यह छ शरई[2] पर स्थित होगा। बामियान पर्वत के समान यह भी दुर्गम है। हरमन्द, सिन्द, कुन्दूज की दूगआवा तथा बल्ख-आब इसी पर्वत से निकलती हैं। इस प्रकार एक ही दिन मे चारो नदियो का जल पिया जा सकता है।

इसी पर्वत की श्रेणियो में से एक श्रेणी के आचल मे काबुल के अधीनस्थ अधिकाश ग्राम स्थित हैं। इनमे अगूर बडी अधिक सख्या मे होते हैं। यहा प्रत्येक प्रकार के फलो का बाहुल्य रहता है। इन ग्रामो मे इस्तालीफ तथा अस्तरगच के समान कोई अन्य ग्राम नही है। सम्भवत इन्ही दोनों को ऊलूग बेग मीर्ज़ा[3] अपना खुरासान तथा समरकन्द कहा करता था। पमगान एक अन्य उत्तम स्थान है। इस्तालीफ तथा अस्तरगच के समान यहाँ फल तथा अगूर तो नही होते किन्तु यहाँ की उत्तम जल-वायु को देखते हुए इसकी तुलना उससे नही हो सकती। पमगान पर्वत की श्रेणियाँ बर्फ से ढकी रहती हैं। इस्तालीफ का मुकाबला बहुत कम ग्राम कर सकते हैं। इसके मध्य मे एक बहुत बडी धारा बहती है।

१ ये ग्राम किसी तूमान में सम्मिलित नहीं हैं।
२ १२ मील।
३ तीमूर के पुत्र मीर्ज़ा शाह रुख़ का पुत्र जो ज्योतिष के ज्ञान के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। वह १४४७ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ और १४४६ ई० में उसके पुत्र अब्दुल्लतीफ़ मीर्ज़ा ने उसकी हत्या करा दी।

यहाँ उसके उत्तराधिकारियों, सुल्तान मसऊद[1], तथा सुल्तान इबराहीम[2] की भी क़ब्रें है। ग़ज़नी मे अत्यधिक पवित्र मज़ार हैं। जिस वर्ष मैंने काबुल तथा ग़ज़नी विजय किया[3] और कोहाट, बन्नू के मैदान तथा अफ़ग़ानो के प्रदेश को नष्ट-भ्रष्ट करता हुआ दूकी तथा आबे इस्तादा के मार्ग से ग़ज़नी पहुँचा तो लोगो ने मुझे बताया कि ग़ज़नी के एक ग्राम मे एक ऐसी क़ब्र है जहाँ दुरूद[4] पढते ही वह हिलने लगती है। मैंने जा कर निरीक्षण किया तो मुझे अनुभव हुआ कि क़ब्र हिल रही है। अन्त मे ज्ञात हुआ कि यह मज़ार के मुजाविरो की धूर्तता है। उन लोगो ने क़ब्र पर एक प्रकार का मच बनवा दिया था जो धक्का देने पर हिल जाता था। उसके हिलने से क़ब्र उसी प्रकार हिलती हुई ज्ञात होती थी जिस प्रकार नौका पर बैठे हुए लोगो को नदी-तट हिलता हुआ अनुभव होता है। मैंने मुजाविरो को आदेश दिया कि वे मच से दूर हट जायँ। तदुपरान्त बहुत दुरूद पढी गई किन्तु क़ब्र न हिली। मैंने आदेश दिया कि क़ब्र से मच हटा दिया जाय और उस पर एक गुम्बद का निर्माण कर दिया जाय। मुजाविरो को चेतावनी दे दी गई कि वे पुन इस प्रकार का कोई कार्य न करें।

ग़ज़नी बडा ही साधारण स्थान है। यह बडी ही आश्चर्यजनक बात है कि जिन बादशाहा ने हिन्दुस्तान तथा ख़ुरासानों[5] को विजय कर लिया था वे भी इन स्थानो को छोड कर ग़ज़नी सरीखे साधारण स्थान को अपनी राजधानी बनाये रहे। सुल्तान महमद के राज्य-काल मे यहा तीन चार बाध रहे होंगे। एक बाध उसने ग़ज़नी नदी के उत्तर-पश्चिम मे कोई तीन यीगाच[6] की दूरी पर बनवाया। यह लगभग ४०-५० क़ारी[7] ऊंचा तथा ३०० क़ारी लम्बा होगा। यहाँ जल एकत्र कर लिया जाता था और आवश्यकतानुसार कृषि हेतु दिया जाता था। जब अलाउद्दीन जहाँसोज़ ग़ूरी ने इस देश को अपने अधिकार मे किया[8] तो उसने इसे नष्ट करा दिया। उसने सुल्तान महमूद के उत्तराधिकारियो के बहुत से मक़बरे जलवा दिये और नष्ट करवा डाले। ग़ज़नी नगर को जलवा दिया तथा नष्ट-भ्रष्ट करवा डाला। वहाँ के निवासियों को लूट कर उनकी हत्या करा दी। ग़ज़नी को नष्ट-भ्रष्ट कराने में उसने कोई कसर उठा न रक्खी। उस समय से यह बन्द वीरान है। जिस वर्ष मैंने हिन्दुस्तान विजय किया उस वर्ष इस बाध की मरम्मत हेतु ख़्वाजा कला द्वारा धन प्रेषित किया[9]। ईश्वर की कृपा से आशा है कि यह पुन कार्य-योग्य हो जायेगा।

एक दूसरा बाध सख़न नामक है जो २-३ यीगाच[10] की दूरी पर नगर के पूर्व मे है। यह दीर्घकाल

१ सुल्तान महमूद का पुत्र जो १०३० ई० में ग़ज़नी में सिंहासनारूढ हुआ। १०४१ ई० में उसकी हत्या करा दी गई।
२ सुल्तान मसऊद का पुत्र जो अपने भाई फ़र्रुख़ज़ाद के बाद १०५६ ई० में सिंहासनारूढ हुआ। उसकी मृत्यु १०८८ ई० में हुई।
३ ९१० हि० (१५०४-५ ई०)।
४ दुआ और सलाम विशेष रूप से मुहम्मद साहब, उनकी सतान तथा मित्रों पर।
५ वे देश जो ख़ुरासान के साथ सम्मिलित थे।
६ लगभग १८ मील।
७ गज़।
८ ५५० हि० (११५२ ई०) में।
९ १५२६ ई०।
१० १२-१८ मील।

से खराब पड़ा है और अब इसका ठीक कराना सम्भव नहीं। एक अन्य बाध सरे देह है जो अब भी कार्ययोग्य है।

पुस्तकों मे लिखा है कि गज़नी मे एक ऐसा झरना है जिसमे यदि गदी तथा अशुद्ध वस्तुयें डाल दी जायें तो तत्काल बड़े ज़ोरों का तूफान उठ खड़ा होता है और जल तथा बर्फ की वर्षा होने लगती है। एक अन्य इतिहास मे मैंने पढ़ा है कि जब सुबुक्तिगीन को हिन्द के राय[1] ने घेर लिया तो उसने आदेश दिया कि झरने मे गदी तथा अशुद्ध वस्तुयें डाल दी जाय। फलत तूफान के साथ ज़ोर की वर्षा होने लगी और बर्फ़ गिरने लगी। इस उपाय से उसने शत्रु को भगा दिया।[2] मैंने गज़नी मे अत्यधिक पता लगवाया किन्तु किसी ने भी झरने के विषय मे मुझे कोई सूचना न दी।

इन देशो मे गज़नी तथा ख़्वारिज़्म ठड के लिये उसी प्रकार प्रसिद्ध हैं जिस प्रकार दोनों एराक तथा अज़रबाईजान मे सुल्तानिया एव तबरेज़ हैं।

जुरमुत एक अन्य तूमान है। यह काबुल से दक्षिण की ओर १२-१३ यीगाच[3] पर और गज़नी के दक्षिण-पूर्व मे ७-८ यीगाच[4] पर है। यहाँ के दारोगा[5] का मुख्य स्थान गीरदीज मे है। गीरदीज के किले के मध्य मे अधिकाश घर तीन चार मज़िलो के हैं। वे बड़े दृढ हैं। जब वहाँ के निवासियो ने नासिर मीर्ज़ा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तो उसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। यहाँ के निवासी ऊग़ान शाल है। वे अनाज की कृषि करते है किन्तु न तो अगूर के बाग लगाते है और न अन्य फलो के। शेख़ मुहम्मद मुसलमान की क़ब्र एक झरने पर बरकिस्तान नामक पर्वत के आचल मे, जो तूमान के दक्षिण मे है, एक ऊचे स्थान पर है।

फरमूल एक अन्य तूमान है। यह बड़ा साधारण स्थान है। यहाँ के सेब बुरे नही होते। ये मुल्तान तथा हिन्दुस्तान भेजे जाते हैं। हिन्दुस्तान मे अफगानों के राज्यकाल मे जिन शेख ज़ादों का अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान हुआ था, वे फरमूल के शेख मुहम्मद मुसलमान की सतान से थे।

एक अन्य तूमान बगश है। इसके चारो ओर अफगान लुटेरे आबाद हैं। उदाहरणार्थ खूगियानी, ख़िरिल्ची, तूरी तथा लन्दर। दूर स्थित होने के कारण यहाँ के लोग स्वेच्छा से राज-कर नही अदा करते। मुझे कुछ महान् कार्य करने थे, उदाहरणार्थ कन्धार, बलख, बदख़्शा तथा हिन्दुस्तान की विजय। अत मुझे बगश वालो को आज्ञाकारी बनाने का अवकाश न मिल सका। यदि ईश्वर ने चाहा तो अवकाश मिलते ही मैं उन बगश लुटेरो को ठीक कर दूगा।

काबुल के बुलूको मे एक आला साई है जो निज्र अऊ से २-३ शरई[6] पूर्व मे स्थित है। निज्र अऊ से सीधा मार्ग जो आला साई को जाता है, जब कूरा नामक स्थान तक पहुँचता है तो वह एक छोटे से दर्रे मे प्रविष्ट हो जाता है। वह दर्रा उस क्षेत्र के गरम जलवायु तथा ठडी जलवायु के भागो को पृथक् करता है। इस दर्रे से पक्षी ऋतु के परिवर्तित हो जाने पर एक भाग से दूसरे भाग मे पहुँच जाते है। उस समय पीचगान निवासी बहुत से पक्षियों को पकड़ लेते हैं। पीचगान निज्र अऊ के अधीन है।

१ राजा जयपाल।
२ लगभग ३७८ हि० (९८८ ई०) में राजा जयपाल ने गज़नी पर आक्रमण किया था।
३ ७२-७८ मील।
४ ४२-४८ मील।
५ हाकिम।
६ ४-६ मील।

शिकार इस प्रकार किया जाता है : दर्रे के मुह पर थोडी थोडी दूर पर चिडीमारो के छिपने के लिये स्थान बना दिये जाते है। जाल के एक कोने को ५-६ गज की दूरी पर दृढतापूर्वक बाध दिया जाता है और दूसरे कोने को भूमि पर पत्थर से दबा दिया जाता है। जाल के दूसरे भाग मे चौडाई की ओर आधी दूर तक ३-४ गज लम्बी लकडी बाध दी जाती है। लकडी का एक सिरा वह चिडीमार अपने हाथ मे लिये रहता है जो पत्थर के पीछे छिपा रहता है। पत्थर मे इस प्रकार दरारें छोड दी जाती हैं कि वह उसमे से देखता रहता है। जब पक्षी निकट आ जाते है तो वह जाल को जितना ऊँचा उठा सकता है, उठा देता है। पक्षी जाल मे स्वय फस जाते हैं। कभी कभी इतने पक्षी फस जाते हैं कि उनके ज़िबह[1] करने का समय तक नही मिलता।

उस क्षेत्र मे आला साई के अनार बडे प्रसिद्ध हैं। यद्यपि वहाँ के अनार अधिक अच्छे नही होते, किन्तु उस क्षेत्र मे आला साई के अनारो से अच्छे अनार किसी अन्य स्थान पर नही होते। वहा के अनार हिन्दुस्तान भेजे जाते हैं। वहाँ के अगूर भी बुरे नही होते। निज्र अऊ की अपेक्षा आला साई की मदिरा अधिक अच्छी तथा तेज होती है।

बद्र अऊ भी एक अन्य बुलूक है। वह आला साई की बगल मे स्थित है। वहाँ फल नही होते। वहाँ के निवासी काफिर हैं और अनाज की कृषि करते हैं।

काबुल के कबीले

जिस प्रकार तुर्क तथा मुग़ुल कबीले खुरासान तथा समरकन्द के खुले मैदानो मे निवास करते हैं उसी प्रकार काबुल मे हज़ारा तथा अफगान लोग निवास करते है। हज़ारा लोगों मे सब से बडे 'सुल्तान मसऊदी हज़ारा' हैं और अफगानो मे 'महमन्द'।

काबुल की जमा

काबुल की जमा जो कृषि, तमगा तथा खुले मैदानो के निवासियो द्वारा प्राप्त होती है कुल मिला कर ८ लाख शाहरुखी[2] है।

काबुल के पर्वतीय प्रदेश

अन्दराब, ख्वास्त तथा बदख्शानात के पर्वतीय प्रदेशा मे अरचा[3] होती है। पूर्वी काबुल के बहुत से झरनो तथा पुश्तो पर ऐसी घास होती है जोकि सुन्दर फर्श के समान प्रतीत होती है। अधिकाश स्थाना पर बूता काह होती है जो घोडो के लिये बडी लाभदायक होती है। अन्दिजान प्रदेश मे लोग बूता काह की चर्चा किया करते थे, किन्तु इस नाम के पडने का मुझे कोई कारण ज्ञात न था। काबुल मे ज्ञात हुआ कि क्योंकि यह घास नरम गुच्छो के समान होती है अत इसे बूता काह कहते है। यहाँ के पर्वतो के शिखर हिसार, खुतलान, फरग़ाना, समरकन्द तथा मुग़ुलिस्तान के शिखरा के समान है। यद्यपि फरग़ाना

१ 'बिस्मिल्लाहो, अल्लाहो अक्बर' कह कर गला काटना।

२ एक रुपया २½ शाहरुखी के बराबर होता था। एक शाहरुखी को १० पेंस के बराबर माना जाता है। योरोपियन विद्वानों ने यहाँ का राजस्व ३३ ३३३ पौंड ६ शिलिंग ८ पेंस बताया है।

३ देवदार अथवा चीड़।

तथा मुग़ुलिस्तान के शिखरो की इन शिखरो से कोई तुलना ही नही की जा सकती किन्तु पर्वत तथा शिखर सभी एक प्रकार के हैं।

इन पर्वतों से भिन्न अऊ, लमग़ानात तथा सवाद के पर्वत इस दृष्टि से पृथक् हैं कि यहाँ देवदार, चिलग़ोज़े, जैतून, बिलूत तथा ख़नजक के वृक्ष बडी अधिक सख्या मे होते हैं। यहाँ की घास भी विभिन्न प्रकार की होती है। यह बडी घनी तथा लम्बी-लम्बी होती है और न घोडो के काम की होती है और न भेडो के काम की। यद्यपि ये पर्वत पूर्व उल्लिखित पर्वतो के समान ऊँचे नहीं है और देखने में बडे साधारण ज्ञात होते है किन्तु ये अत्यन्त दृढ हैं। जो भाग पुश्तो के समान ज्ञात होते है वे भी बडी कडी चट्टान के हैं, जिन पर घोडे पर सवार होकर जाना बडा कठिन है। उन पर्वतीय प्रदेशो में हिन्दुस्तान के बहुत से पशु पक्षी पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ तोता, मैना, मोर, लूजा, बन्दर, नील गाय, कुत्ता पाई[1] इत्यादि। इन पशु-पक्षियो के अतिरिक्त जिनका ऊपर उल्लेख किया गया कुछ ऐसे पशु-पक्षी भी पाये जाते हैं जिनके विषय मे हिन्दुस्तान मे भी कभी कुछ नही सुना गया।

काबुल के पश्चिम जिन्दान घाटी, सूफ घाटी, गरज़वान तथा गर्जिस्तान सभी के पर्वत एक ही प्रकार के हैं। उनके अधिकाश घास के चौरस मैदान घाटियो मे हैं। इन पर्वतो तथा पुश्तो पर वैसी घास नही होती जैसी घास का उल्लेख किया जा चुका है। यहा उस प्रकार के वृक्षो के झुड भी नही हैं। यहाँ की घास घोडो तथा भेडो के लिये बडी अच्छी होती है। इन पर्वतो के ऊपर जहाँ हर प्रकार की कृषि होती है ऐसी समतल भूमि प्राप्य है जहाँ घोडे दौडाये जा सकते हैं। इस पर्वतीय प्रदेश मे कीयिक[2] अत्यधिक सख्या मे होते है। यहाँ की घाटियो की तलहटियाँ अत्यन्त दृढ हैं और पर्वत इस प्रकार खडे है कि ऊपर से यहाँ तक पहुचना असम्भव है। यह बात बडी ही विचित्र है कि अन्य पर्वतो के दृढ स्थान पर्वतों के ऊपर ऊँचे स्थानो पर होते हैं किन्तु इनके दृढ स्थान नीचे की ओर हैं। ग़ूर, करनूद तथा हज़ारा के पर्वत भी एक ही प्रकार के है। उनके अधिकाश चौरस घास के मैदान उनकी घाटियों मे है। वहाँ वृक्ष बडो कम सख्या मे होते हैं। वहाँ अरचा की लकडी भी अच्छी नही होती। वहाँ की घास घोडो तथा भेडो को बडी रुचिकर होती है। उन पर्वतो की अपेक्षा जिनका उल्लेख किया जा चुका है ये पर्वत इस दृष्टि से पृथक् हैं कि यहाँ के दृढ स्थान नीचे नही है।

ख़्वाजा इस्माईल के पर्वत, दश्त, दूकी तथा अफ़गानिस्तान के पर्वत जो काबुल के दक्षिण-पूर्व में हैं, सब एक ही प्रकार के हैं। वे छोटे-छोटे है। हरियाली भी कम और जल का भी अभाव रहता है। ये वृक्षो से शून्य तथा भद्दे हैं और किसी काम के नही है। ये पर्वत यहाँ के निवासियो के अनुकूल है जैसा कि कहा जाता है, "तीग बूलमा पूचा सूस बूलमास"[3]। ससार मे इस प्रकार के व्यर्थ के पर्वत बहुत कम होंगे।

काबुल की ईंधन के योग्य लकडियाँ

काबुल मे यद्यपि बडे कडाके का जाडा पडता है और बर्फ भी अधिक गिरती है किन्तु ईंधन की लकडी बडी अधिक सख्या मे निकट ही मिल जाती है। यदि जाने आने के लिये एक दिन मिल जाय तो ख़नजक, बिलूत, बादामचा तथा करकन्द की लकडी लाई जा सकती है। इनमे ख़नजक की लकडी सब

१ हिन्दुस्तान के पशुओं का वर्णन ६३२ हि० के इतिहास के सम्बन्ध में किया गया है।
२ जंगली भेंडें तथा बकरे।
३ 'संकीर्ण विचार वाले के लिये तंग स्थान बड़ा फैला होता है'।

से अच्छी होती है। इसमे से जलते समय अच्छी लपट निकलती है। इसके धुयें से भी सुगन्धि निकलती है। इसका कोयला भी बडी देर तक जलता रहता है। गीले होने पर भी यह लकडी जल जाती है। विलूत भी जलाने मे बडा उत्तम होता है। यद्यपि खनजक की अपेक्षा इसमे से अच्छी लपट नही निकलती किन्तु जलने में बडा अच्छा होता है और कोयला भी अत्यधिक होता है। इसमे से सुगन्धि भी निकलती है। जलते समय इसकी यह विशेषता है कि जब इसकी पत्तीदार शाखायें जलाई जाती हैं तो वे बडी विचित्र आवाज से जलती है। वे जलती जाती है और ऊपर से नीचे तक पतगे छूटते जाते हैं। इसके जलाने मे बडा आनन्द आता है। बादामचा की लकडी सब से अधिक मिलती है और अधिक प्रचलित है किन्तु इसकी आग देर तक नही ठहरती। करकन्द छोटी तथा काटेदार झाडी होती है। इसकी गीली तथा सूखी दोनो प्रकार की लकडियाँ जलाई जाती हैं। समस्त गज़नी वाले इसी लकडी का ईंधन के रूप मे प्रयोग करते हैं।

पशु-पक्षी

काबुल की कृषि-योग्य भूमि पर्वतों के मध्य मे स्थित है और ये पर्वत बडे बडे बाधो के समान हैं। इन पर्वतो की घाटिया की तलहटी मे अधिकाश ग्राम तथा बस्तियाँ है। इन पर्वतो पर कीयिक[1] तथा आहू[2] बडी कम सख्या मे होते हैं। इन पर्वतो मे ग्रीष्म तथा शीत ऋतु के मध्य मे कीशील कीयिक, अरकारगल्चा भागते फिरते हैं। साहसी जवान उनके शिकार हेतु कुत्ते एव बाज़ लेकर जाते हैं। खुर्द काबुल तथा सूर्ख रूद की ओर एक प्रकार का जगली गधा होता है। किन्तु सफेद कीयिक नही पाये जाते। गज़नी मे दोनो ही पाये जाते हैं। जिस प्रकार के मोटे ताजे सफेद कीयिक गज़नी मे मिलते है वैसे किसी अन्य स्थान पर बहुत कम मिलते हैं।

गरमी मे काबुल मे पक्षियो के शिकार के स्थान भरे रहते हैं। अधिकाश पक्षी बारान नदी के तट पर पहुँच जाते हैं कारण कि इसके पूर्व तथा पश्चिम दोनो ही दिशाओ मे पर्वतीय प्रदेश है। बारान नदी के सामने हिन्दूकुश का बहुत बडा दर्रा है। इस दर्रे के अतिरिक्त कोई अन्य दर्रा नही है। इसी कारण समस्त पक्षी इसी स्थान से गुज़रते हैं। जब उत्तरी हवायें चलती है अथवा हिन्दूकुश मे थोडे से बादल आ जाते है तो वे दर्रे को पार नही कर सकते। ऐसे अवसरो पर वे सब के सब बारान नदी के मैदान मे उतर पडते है। उस समय स्थानीय लोग अत्यधिक पक्षियो को पकड लेते है। बारान नदी के तट पर शीत ऋतु के अन्त मे बहुत बडी सख्या मे मुर्गाबिया आती है जो बडी मोटी ताज़ी होती हैं। तदुपरान्त कुलग, करकरे तथा अन्य बडे पक्षी बहुत बडी सख्या मे पहुँच जाते है।

पक्षियो का शिकार

कुलग के लिये बारान नदी के किनारे डोरियाँ लगा दी जाती है और डोरिया द्वारा अत्यधिक सख्या मे कुलग पकड लिये जाते हैं। अऊकार, करकरे तथा कूतान भी बहुत बडी सख्या मे डोरिया द्वारा पकड लिये जाते हैं। पक्षिया के पकडने का यह बडा ही विचित्र ढग है। जितनी दूर तक एक बाण पहुँच सकता है उतनी दूर तक वे लोग एक डोरी बट डालते हैं। डोरी के एक सिरे पर बाण तथा दूसरे सिरे पर

१ जगली बकरे तथा भेंड़ें।
२ मृग।

बील्दूरगा[1] बाध देते हैं। तदुपरान्त क्लाई के बराबर मोटा तथा एक बालिश्त लम्बा लकडी का टुकडा लेकर डोरी को बाण के सिरे से लेकर बील्दूरगा के सिरे तक ल्पेट देते हैं। फिर वे लकडी निकाल लेते हैं और डोरी मे छल्ले बने रह जाते हैं। बील्दूरगा को हाथ मे मजबूती से पकड कर पक्षी के झुड की ओर बाण फेंका जाता है । यदि डोरी का छल्ला पक्षी की ग्रीवा अथवा पखो मे फस जाता है तो पक्षी नीचे गिर पडता है। बारान पर सभी लोग पक्षी इसी प्रकार पकडते है। इस प्रकार पक्षियो के पकडने मे बडा परिश्रम करना पडता है। इसके लिये वर्षा की रातो की आवश्यकता होती है। इन रातो मे पक्षी वन-पशुओ के भय से रात भर प्रात काल तक बडे नीचे-नीचे उडते रहते हैं। रात भर वे बहती हुई नदी पर उडते रहते हैं। बहता हुआ जल उनको मार्ग दर्शाता रहता है। भय के कारण वे जल के ऊपर तथा जल तक सवेरे तक उडते रहते हैं। जब वे इस प्रकार ऊपर जाते तथा नीचे आते रहते हैं तो डोरी फेंक दी जाती है। मैंने एक बार रात्रि म डोरी फेंकी। डोरी टूट गई। पक्षी का भी पता न चला। प्रात काल टूटी हुई डोरी तथा पक्षी मिल गया। उन्हें मेरे पास लाया गया। इस प्रकार बारान नदी के निवासी अत्यधिक कुलग पकड लेते हैं। इससे वे पगडी के लिये परो की कलगी बनाते है जो काबुल से खुरासान मे बिकने जाती हैं।

इन चिडिया का शिकार करने वाला के अतिरिक्त बहुत से दास भी चिडीमारी का कार्य करते हैं। इनके २००-३०० घराने हैं। इन्हें तीमूर बेग के किसी उत्तराधिकारी ने मुल्तान से बारान पर ला कर बसाया था। इनका व्यवसाय चिडीमारी है। ये तालाब खोद कर अन्य पक्षियो को फसाने के लिये पालतू पक्षी तालाब के भीतर डाल देते हैं, ऊपर से जाल बिछा देते है। प्रत्येक युक्ति से ये अत्यधिक चिडिया पकडते हैं। केवल चिडीमार ही चिडिया नही पकडते अपितु बारान का प्रत्येक निवासी यही कार्य करता है। चिडियाँ, डोरिया जाल तथा अन्य युक्तियो से पकडी जाती है।

मछलियो का शिकार

पक्षिया के समान इसी मौसम म बारान की मछलिया भी एक स्थान से दूसरे स्थान को जाती हैं। बहुत सी मछलियाँ जाल द्वारा तथा बहुत सी जल म चीग[2] बाध कर पकड ली जाती हैं। शरद् ऋतु म कऊलान कऊयिरऊगा नामक पौधा पूर्ण रूप से बढ जाता है और इसमें फल निकल आते हैं तो लोग इसके १० २० गट्ठे[3] तथा हरी शाखाओ के २०-३० गट्ठे ले जाकर, उन्हें टुकडे टुकडे करके जल म डाल देते हैं। जैसे ही वे उन्हें जल मे डालते हैं मछलियाँ जो मस्त रहती है उन्हें खाने लगती हैं। लाग जल म प्रविष्ट होकर इन मछलिया को पकड लेते है। नीचे की ओर किसी उचित स्थान पर किसी छेद मे पूर्व ही से अगुली के बराबर मोटी चीग लगा दी जाती है। उसके एक सिरे पर पत्थर रख दिये जाते हैं। जल चीग पर से लहरें मारता हुआ बहता रहता है किन्तु जो मछलियाँ तैरती हुई आती रहती हैं वे चीग ही पर रुक जाती हैं। गुल बहार परवान तथा इस्तालीफ मे इसी प्रकार मछलियाँ पकडी जाती हैं।

लमगानात मे शीत ऋतु मे इस विचित्र विधि से मछलियाँ पकडी जाती हैं जिन स्थाना पर जल ऊपर से गिरता होता है वहाँ घर के बराबर गड्ढे बना लिये जाते है। खाना पकाने की भट्ठी के पाया के समान उस गड्ढे मे पत्थर छोड दिये जाते हैं। उसके ऊपर भी पत्थर चुन देते हैं। जल के नीचे केवल

१ एक छोटी, गोल सिर की कील जो रस्सी को फिसलने से रोके रहती होगी।
२ एक प्रकार की लकडी।
३ सम्भवत फल के।

एक छेद रह जाता है। जल पत्थरो की दराजो से बहता रहता है किन्तु मछलियाँ इस छेद के अतिरिक्त कही से नही आ जा सकती। इस प्रकार यह एक तरह का मछलियो का तालाब बन जाता है और शीत ऋतु मे आवश्यकतानुसार वहाँ से ३०-४० मछलियाँ निकाल ली जाती हैं। जिस स्थान पर आवश्यकतानुसार छेद रक्खा जाता है उसके अतिरिक्त मछली के तालाब को चारो ओर से धान के प्याल मे बाध कर दृढ कर दिया जाता है और उस पर पत्थर रख दिये जाते हैं। छेद के द्वार पर जाल के समान कोई चीज बिन दी जाती है। उसके दोनो सिरो को एक स्थान पर कर के बाध दिया जाता है। उसके मध्य मे एक दूसरी नलकी को जाल से बाध कर दृढ़ बना दिया जाता है। इस प्रकार छेद को जाल द्वारा बन्द कर दिया जाता है। मछली छोटे टुकड़े से बडे में प्रविष्ट हो जाती है और फिर उससे नहीं निकल पाती। भीतर के मुह का दूसरा मार्ग इतना सकरा होता है कि मछली उसमे एक बार प्रविष्ट हो कर पुन घूम नहीं सकती कारण कि भीतरी मुह के किनारे बडे नुकीले होते हैं। टहनियों का जाल लगा देने तथा मछली के तालाब को प्याल की डोरी से दृढ कर देने के उपरान्त जो मछलियाँ भीतर होती हैं वे पकडी जा सकती है और जो भागने का प्रयत्न करती है वे टहनियों के जाल मे फस जाती हैं, कारण कि उनके निकलने का कोई अन्य मार्ग नही होता। मछलियाँ पकडने की यह विधि हमने किसी अन्य स्थान पर नही देखी।

ऐतिहासिक वर्णन

मुकीम का प्रस्थान तथा भूमि का वितरण

काबुल पर अधिकार जमा लेने के कुछ दिन उपरान्त मुकीम ने कन्धार जाने की अनुमति मागी। क्योकि वह सन्धि तथा प्रतिज्ञा के उपरान्त बाहर निकला था अत उसे उसके सहायको, धन-सम्पत्ति एव अन्य बहुमूल्य वस्तुओ सहित उसके पिता[1] तथा बडे भाई[2] के पास जाने की अनुमति दे दी गई।

उसके प्रस्थान के उपरान्त काबुल का राज्य मीर्ज़ाओ तथा अतिथि बेगों[3] मे बाँट दिया गया। जहागीर मीर्ज़ा को गज़नी तथा उसके अधीनस्थ एव समीप के स्थानो मे नियुक्त कर दिया गया। नासिर मीर्ज़ा को नीनगनहार के तूमान, मदरावर, नूर घाटी, कूनार, नूर गल तथा चगान सराय प्रदान कर दिये गये। कुछ बेगों तथा अमीरो को जिन्होंने छापा मार युद्ध में हमारा साथ दिया था और काबुल तक हमारे साथ आये थे उन्हें ग्राम तियूल[4] के रूप मे प्रदान किये गये। विलायत किसी को भी प्रदान नही की गई[5]। केवल इसी अवसर पर मैने अतिथि बेगों तथा अपरिचित बेगों के प्रति प्राचीन सेवकों तथा अन्दिजान निवासियो की अपेक्षा अधिक कृपा दृष्टि नही प्रदर्शित की अपितु मैं सर्वदा से ही, जब परमेश्वर मेरे प्रति दया प्रदर्शित करता था, इसी प्रकार का आचरण करता चला आया हूँ। यह बडे आश्चर्य की

१ शाह बेग।
२ जुन्नून।
३ मिहमान बेगलार। इस शब्द का प्रयोग बाबर ने सर्वप्रथम इसी स्थान पर किया है और सम्भवतः ख़ुसरो शाह के सहायकों के उससे मिल जाने के कारण इस शब्द का प्रयोग किया गया है।
४ जागीर।
५ सम्भवत: इसका अर्थ यह है कि उसने काबुल की भूमि अपने ही अधिकार में रक्खी, और केवल क़िला ही नहीं अपितु काबल के तूमान भी अपने हाथ में रक्खे होंगे।

बात है कि इस पर भी लोग निरन्तर मेरी इस प्रकार कटु-आलोचना करते रहते हैं मानों मैं प्राचीन सेवक तथा अन्दिजान निवासियों के अतिरिक्त किसी के प्रति कोई कृपा-दृष्टि नहीं प्रदर्शित करता। एक लोकोक्ति[1] है कि "वह शत्रु ही कैसा है जो सब कुछ नहीं कहता, और वह स्वप्न ही कैसा है जिसमें सब कुछ नहीं दिखाई देता।"

शेर

"नगर के फाटक को बन्द किया जा सकता है,
विरोधियों का मुह नहीं बन्द किया जा सकता।"

बहुत से कबीले तथा जत्थे समरकन्द, हिसार तथा कुन्दुज से काबुल में आ गये थे। काबुल एक छोटा-सा देश है। यह तलवार का देश है लेखनी का नहीं।[2] यहाँ से इतने सब कबीले वालों के लिये धन प्राप्त करना असम्भव था अतः यह उचित ज्ञात हुआ कि इन कबीलों के परिवार वालों के लिए खाद्य सामग्री प्राप्त कर ली जाय तदुपरान्त वे सुगमतापूर्वक सेना के साथ इधर-उधर धावों पर जा सकेंगे। तदनुसार यह निश्चय हुआ कि काबुल तथा गज़नी एवं उसके अधीनस्थ स्थानों से ३०,००० खरवार[3] अनाज वसूल किया जाय। हम लोगों को उस समय फसल तथा उत्पत्ति का कोई ज्ञान न था और यह माल्गुज़ारी बड़ी ही अधिक थी। इस कारण देश को अत्यधिक हानि हुई।

उन्हीं दिनों मैंने बाबरी[4] नामक हस्त-लिपि का आविष्कार किया।

हज़ारा पर धावे

सुल्तान मसऊदी हज़ारा पर अत्यधिक घोड़ों तथा भेड़ों की प्राप्ति कर के रूप में लगाई गई थी। उसे वसूल करने के लिये अधिकारी भेजे गये। कुछ दिन उपरान्त उन अधिकारियों ने सूचना भिजवाई कि हज़ारा लोग कर नहीं अदा करते तथा विद्रोह कर रहे हैं। क्योंकि इसी कबीले वाले इसके पूर्व गज़नी तथा गोरबंद के मार्ग पर छापा मार चुके थे अतः हम लोग सुल्तान मसऊदी हज़ारा वालों पर अचानक आक्रमण करने के उद्देश्य से सवार हो गये। मैदान मार्ग की यात्रा करके हमने रात्रि में निर्ख़ दर्रे को पार कर लिया और प्रातःकाल की नमाज़ के समय हम जालतू के समीप उन पर टूट पड़े। यह आक्रमण इच्छानुसार (सफल) न हो सका। हम लोग सगे सूराख के मार्ग से वापस आ गये। जहांगीर मीर्ज़ा को वहां से गज़नी जाने की अनुमति दे दी गई। जब हम लोग काबुल पहुँच गये तो दरिया खां का पुत्र यार हुसैन भीरा से हमारी सेवा में उपस्थित हुआ।

हिन्दुस्तान की ओर प्रथम बार प्रस्थान

जब कुछ दिन उपरान्त सेना का निरीक्षण हो गया तो ऐसे लोगों को, जो देश के विषय में पूर्ण

१ तुर्की लोकोक्ति।
२ 'यहाँ कर केवल तलवार द्वारा प्राप्त हो सकता है लिखित आदेशों द्वारा नहीं'।
३ गधे के बोझ के बराबर। अर्सकिन के अनुसार एक बोझ में ७०० पौंड आते हैं।
४ निज़ामुद्दीन तथा बदायूनी ने भी इस हस्त लिपि का उल्लेख किया है और लिखा है कि बाबर ने इस लिपि में एक कुरान शरीफ़ नक्ल करके मक्का उपहार स्वरूप भेजा था। बदायूनी के अनुसार उसके समय (अकबर के राज्य काल) में किसी को इसका ज्ञान न था।

५

रूप से परिचित थे, वुलवाक्‌र देश की प्रत्येक दिशा के विषय मे प्रश्न किया गया। कुछ लोगो का मत था कि दश्त[1] की ओर प्रस्थान किया जाय, कुछ बगश को उचित समझते थे और कुछ ने हिन्दुस्तान के विषय मे परामर्श किया। विचार-विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि हिन्दुस्तान की ओर आक्रमण किया जाय।

शाबान मास (९१० हि०, जनवरी १५०५ ई०) मे जब सूर्य कुम्भ राशि मे था तो हम लोगो ने काबुल से हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया। बादाम चश्मा तथा जगदालीक[2] के मार्ग से छ पडाव पार करने के उपरान्त हम लोग अदीनापूर पहुचे[3]। उस समय तक मैंने कोई गरम देश अथवा हिन्दुस्तान के सीमान्त के प्रदेश न देखे थे। नीनगनहार हमको एक दूसरा ही ससार दृष्टिगत हुआ—अन्य प्रकार की घास, अन्य प्रकार के वृक्ष तथा अन्य ही प्रकार के पशु-पक्षी एव वहा के कबीलो तथा जत्थो के अन्य प्रकार के रीति-रवाज। *हम लोग आश्चर्य-चकित हो गये और वास्तव मे आश्चर्य का विषय ही था।*

नासिर मीर्ज़ा, जो इससे पूर्व अपनी विलायत को जा चुका था, मेरी सेवा मे अदीनापूर मे उपस्थित हुआ। हम अदीनापूर मे इस आशय से कुछ समय तक ठहर गये कि जो आदमी पीछे रह गये हैं वे भी आ जाय। इसके अतिरिक्त हमें उस कबीले के एक दल की प्रतीक्षा थी जो हमारे साथ काबुल तक आया था और इस समय लमगानात मे शीत ऋतु व्यतीत कर रहा था। जब सब लोग आ गये तो जुए शाही के नीचे पहुच कर हमने कूश गुम्बज़ मे पडाव किया। वहा नासिर मीर्ज़ा ने यह कह कर ठहर जाने की अनुमति मागी कि वह अपने आश्रितो एव सहायको का कुछ प्रबन्ध कर के दो-तीन दिन उपरान्त पीछे-पीछे पहुच जायेगा। कूश गुम्बज़ से प्रस्थान कर के जब हम लोग गरम चश्मे पर उतरे तो वहा गागियानी का सब से बडा सरदार एक फज्जी[4], जो कारवान वालो के साथ आया था, लाया गया। उसे मार्ग दर्शाने के उद्देश्य से साथ ले लिया गया। एक दो पडावो के उपरान्त खैबर को पार करके हम लोग जाम[5] पहुचे।

हमने गूर खत्तरी[6] के विषय मे कहानिया सुन रक्खी थी। यह योगियो तथा हिन्दुओ का एक तीर्थ स्थान बताया जाता था जहा वे बडी दूर दूर से जाकर सिर तथा दाढी मुडवाते थे। जाम मे उतरते ही मैं तत्काल बीगराम[7] की सैर हेतु रवाना हो गया। मैंने वहा के बडे वृक्ष का निरीक्षण किया और आस पास के स्थानो की सैर की। मैंने गूर खत्तरी के विषय मे बहुत पूछा किन्तु हमारे मार्ग दर्शक मलिक बू सईद कमरी[8] ने कुछ न बताया। जब हम अपने शिविर मे लगभग पहुच गये तो उसने ख़्वाजा मुहम्मद अमीन को बताया कि वह स्थान बीगराम मे है। उसने सकरे मार्गों तथा भयानक कदराओ के कारण कुछ न बताया। ख़्वाजा ने तत्काल उसे डाट फटकार कर जो कुछ उसने कहा था, वह हमे बता दिया किन्तु दूरी तथा दिन के समाप्त हो जाने के कारण हम लोग वापस न जा सकते थे।

१ मेहतर सुलेमान के पूर्व एव पश्चिम का भूभाग। बाबर का अभिप्राय दामन से है।
२ यह काबुल से पेशावर तथा अटक का सीधा माग है।
३ जगदालीक दर्रा शताब्दियों से काबुल तथा नीनगनहार को पृथक् करता चला आया है।
४ यह शब्द निश्चित रूप से नहीं पढा जा सका है।
५ जामरूद (जाम जल धारा)।
६ बाबर ने ६२५ हि० (१५१६ ई०) में इस स्थान का निरीक्षण किया।
७ बीगराम नाम के चार स्थान हूपियान, काबुल, जलालाबाद तथा पेशावर के समीप हैं।
८ सम्भवत सिंध नदी पर स्थिति 'कमरी'।

कोहाट के विरुद्ध प्रस्थान

इस मंजिल पर हमने इस विषय पर विचार विमर्श किया कि हम सिन्द नदी पार करें या किसी अन्य स्थान की ओर प्रस्थान करें। बाकी चगानियानी ने निवेदन किया कि हम लोग नदी पार किये बिना और केवल रात ठहर कर कोहाट पहुच जाय। वहा बहुत से धनी कबीले रहते हैं। इसके अतिरिक्त उसने बहुत से काबुलियों को प्रस्तुत किया जिन्होंने उसके मत का समर्थन किया। हमने इस स्थान के विषय मे कभी कुछ न सुना था। क्योंकि हमारे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने कोहाट की ओर आक्रमण करने की सलाह दी और अपने मत की पुष्टि साक्षियों द्वारा कराई थी अत हमने सिन्द पार करके हिन्दुस्तान की ओर अग्रसर होने के विचार त्याग दिये। जाम से प्रस्थान करके हमने बारा नदी पार की और मुहम्मद नामक पर्वत से होते हुए दर्रे के समीप पडाव किया। उस समय गागियानी अफगान पश्शावर मे थे किन्तु वे हमारी सेना के भय से पहाडी के आचल मे भाग गये। उनके एक सरदार ने इस पडाव पर उपस्थित होकर हमारे प्रति अभिवादन किया। हमने उसे भी फज्जी के साथ मार्ग दर्शाने के लिये ले लिया। हम आधी रात मे शिविर से रवाना हो गये और प्रात काल मुहम्मद फज्ज को पार करके कल्बे के समय कोहाट पर टूट पडे। हमारे आदमियों को अत्यधिक मवेशी तथा भैंसें प्राप्त हुईं। बहुत से अफगान बन्दी बना लिये गये। मैंने उन्हें एकत्र करके मुक्त कर दिया। कोहाट वालो के घरो मे अपार अनाज प्राप्त हुआ। हमारी सेना के अग्र भाग ने सिन्द नदी तक धावा मारा। वे लोग एक रात वहा ठहर कर दूसरे दिन हमारे पास आ गये। हमको बाकी चगानियानी ने जो आश्वासन दिलाया था, वह पूरा न हुआ। वह अपनी योजना के कारण बडा लज्जित हुआ।

कोहाट में दो रात तथा दिन तक ठहरने तथा अग्र भाग के वापस आ जाने के उपरान्त हमने इस विषय पर विचार विमर्श किया कि अब किस दिशा की ओर प्रस्थान करना चाहिये। हमने बगश तथा बन्नू के आस-पास के अफगानों पर आक्रमण करके या तो नग्र और या फरमूल के मार्ग से काबुल वापस जाना निश्चय किया।

कोहाट मे दरिया खा के पुत्र यार हुसेन ने जो काबुल मे मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ था, आकर निवेदन किया कि, "दिलाज़ाक, यूसुफ ज़ाई तथा गागियानी कबीले वालो को फरमान लिख दिये जायें ताकि जब मैं बादशाही तलवार को सिन्द नदी के उस पार चलाऊ तो वे मेरा विरोध न करें।" मैंने उसकी इच्छानुसार उसे फरमान देकर कोहाट से विदा कर दिया।

तहाल के विरुद्ध प्रस्थान

कोहाट से निकल कर हम लोग हगू के मार्ग से ऊपर की ओर बगश के लिये रवाना हुए। कोहाट तथा हगू के मार्ग के मध्य मे एक घाटी है। उसके दोनो ओर पर्वत हैं। जब हम इस घाटी मे घुसे तो कोहाट एव आस-पास के अफगान जो दोनों पर्वता के आचल मे एकत्र हो गये थे, बडे ज़ोर-ज़ोर से युद्ध-नाद लगाने लगे। मलिक बू सईद कमरी, जो समस्त अफगानो के विषय मे भली भाति जानता था, हमारा मार्ग दर्शक था। उसने निवेदन किया कि, "आगे दाईं ओर एक पृथक् पहाडी है। यदि अफगान लोग इन पर्वता के आचल से वहा पहुच जायें तो हम लोग उन्हें घेर कर बन्दी बना लेंगे। ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ। अफगान लोगों की जब हमसे मुठभेड हुई तो वे उसी पर्वत पर, जो पृथक् था, पहुच गये। मैंने जवानो के एक दल को आदेश दिया कि वे दोनो पर्वतो तथा पहाडी के मध्य की भूमि पर अधिकार जमा लें। दूसरी सेना वालो को आदेश दिया कि वे उस ओर तथा इस ओर अर्थात् प्रत्येक दिशा से अग्रसर

होकर अफगानो को नष्ट-भ्रष्ट कर दें। चारो ओर से आक्रमण हो जाने के कारण वे युद्ध भी न कर सके। १००-२०० अफगान नीचे उतार लाये गये। कुछ लोग तो जीवित लाये गये किन्तु अधिकाश के सिर लाये गये। जब अफगान लोग युद्ध करने मे असमर्थ हो जाते हैं तो वे अपने शत्रु के समक्ष अपने दातो मे घास दबा कर उपस्थित होते हैं। इस प्रकार वे यह प्रकट करते हैं कि "हम तुम्हारी गऊ हैं।" हमने इस प्रथा को यहा पर देखा। अफगान लोग जब युद्ध करने मे असमर्थ हो गये तो अपने दातो के नीचे घास दबा कर उपस्थित हुए। जो लोग हमारे समक्ष बन्दी बनाकर लाये गये थे उनके विषय मे आदेश दिया गया *कि उनके सिर काट डाले जायें और हमारे शिविर मे उनके सिरों का स्तम्भ तैयार कर दिया गया।*

दूसरे दिन वहा से प्रस्थान करके हम आगे चल दिये और हगू के समीप पडाव किया। इस क्षेत्र के अफगानो ने एक पहाडी पर सगुर का निर्माण कराया था। मैंने प्रथम बार सगुर की चर्चा काबुल मे पहुच कर सुनी थी। ये लोग पर्वत मे एक दृढ स्थान बना लेने को सगुर कहते हैं। हमारे आदमी सीधे सगुर तक धावा मारते चले गये। उन्होने उसे नष्ट कर दिया और १००-२०० उद्दड अफगानो की हत्या कर दी। वहा भी सिरो का एक स्तम्भ बनवाया गया।

हगू से प्रस्थान कर के और एक रात्रि ठहर कर हम लोग बगश के नीचे तील[1] नामक स्थान पर पहुचे। वहा भी हमारे आदमियो ने पहुच कर समीप के अफगानो पर धावे मारे। उनमे से कुछ सगुर से बिना अधिक सामान के लौट आये।

बन्नू में

वहा से प्रस्थान करके हम लोग बिना किसी मार्ग के, एक पडाव करने के उपरान्त प्रात काल एक ढालू स्थान पर शीघ्रातिशीघ्र पहुच गये। मार्ग छोड कर दूर के सकरे रास्ता से होते हुए दूसरे दिन हम लोग बन्नू पहुँच गये। सेना वाला, ऊट तथा घोडो ने पर्वत की ऊचाई तथा सकरे मार्गों के कारण अत्यधिक कष्ट भोगे। जो मवेशी लूट मे प्राप्त हुए थे उनमे से *अधिकाश मार्ग मे छूट गये।* प्रचलित मार्ग हमारे दाई ओर एक-दो कोस पर होगा। जिस मार्ग से हमने यात्रा की वह सवारी की यात्रा के योग्य न था। क्योकि कभी-कभी चरवाहे तथा गल्लेबान इन सकरे मार्गों से अपनी भेडो के गल्ले तथा झुड ले जाया करते थे, अत इस मार्ग को लोग गोसफन्द लियार[2] कहते थे। अफगानी भाषा मे मार्ग को लियार कहते हैं। हमारे बहुत से आदमियो का विचार था कि इस बायें हाथ के मार्ग से यात्रा मलिक बू सईद कमरी की दुष्टता के कारण करनी पडी।

बन्नू तथा ईसा खेल प्रदेश

बगश के पर्वतो से निकलते ही बन्नू मिल जाता है। यह एक समतल स्थान है। इसके उत्तर में बगश तथा नग्र की पहाडिया हैं। बगश जल धारा बन्नू मे प्रविष्ट हो कर यहा की भूमि को उपजाऊ बना देती है। उनके दक्षिण (पूर्व) मे चौपारा तथा सिन्द नदी स्थित हैं। उनके पूर्व में दीन कोट है। (दक्षिण)-पश्चिम मे दश्त (मैदान) है। वह बाजार तथा ताक कहलाता है। बन्नू मे कुरानी, कीवी, सूर, ईसा खेल तथा निया जाई अफगान कबीले कृषि करते हैं।

१ तहाल।
२ भेड़ों का मार्ग।

बन्नू पहुचने पर हमे यह समाचार प्राप्त हुए कि इस मैदान के कबीले वाले उत्तरी पर्वत मे सगुर बना रहे हैं। जहागीर मीर्ज़ा के अधीन एक सेना उनके विरुद्ध भेजी गई। कीवी नामक सगुर पर पहुच कर उन्होंने एक क्षण मे उसे अपने अधिकार मे कर लिया और अत्यधिक आदमियो के सिर काट कर वे लोग मेरी सेवा मे आ गये। उन्हें अत्यधिक (सफेद) कपडे प्राप्त हुए। बन्नू मे भी सिरो का एक स्तम्भ बनवाया गया। सगुर की विजय के उपरान्त, कीवी का सरदार शादी खा अपने दातो मे घास दबाये हुए मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और अधीनता स्वीकार कर ली। मैंने समस्त बन्दियो को क्षमा कर दिया।

कोहाट की विजय के उपरान्त यह निश्चय हुआ था कि हम लोग बगश तथा बन्नू पर धावे मार कर नग्र अथवा फरमूल के मार्ग से लौट जायें। बन्नू की विजय के पश्चात्, उन लोगो ने, जो उस ओर की समस्त दिशाओं के विषय मे जानते थे, निवेदन किया कि "दश्त भी निकट ही है। वहा का मार्ग भी अच्छा है और वहा की जन-सख्या भी अधिक है।" अत यह निश्चय हुआ कि दश्त को विजय कर लेने के उपरान्त फरमूल के मार्ग से काबुल वापस होना चाहिये।

दूसरे दिन प्रात काल हमने प्रस्थान किया और उसी नदी[1] पर स्थित ईसा खेल ग्राम मे पडाव किया किन्तु वहा के निवासी हमारे आगमन के विषय मे सुन कर चौपारा पर्वत की ओर चल दिये थे। हमने वहा से प्रस्थान करके चौपारा के आचल मे पडाव किया। हमारी सेना के अग्र भाग ने पहाडी मे प्रविष्ट होकर ईसा खेल सगुर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और भेडा, गल्लो तथा अन्य असबाब को अपने अधिकार मे कर लिया। उसी रात्रि मे ईसा खेल अफगानो ने हमारे ऊपर छापा मारा किन्तु इस अभियान मे हमारे पहरे का प्रबन्ध इतना उत्तम था कि वे लोग सफलता प्राप्त न कर सके। हम लोग इतने सावधान रहते थे कि रात्रि मे हमारी सेना का दायाँ, बायाँ, मध्य तथा अग्र भाग इस प्रकार रहता था मानो वे उसी समय घाडा से उतरे हो। प्रत्येक उसी स्थान पर रहता था जिस स्थान पर वह रण-क्षेत्र मे रहता। प्रत्यक अपने स्थान पर तैयार रहता था। पदाती शिविर के चारो ओर खेमो से एक बाण के मार की दूरी पर रहते थे। प्रत्येक रात्रि मे सेना इसी प्रकार रक्खी जाती थी और हर रात मे मेरे घर के तीन-चार सैनिक बारी बारी मशालें लिये चक्कर लगाया करते थे। मैं भी प्रत्येक रात्रि मे एक बार चक्कर लगाता था। यदि कोई भी अपने स्थान पर न मिलता था तो उसकी नाक कटवा ली जाती थी और उसे सेना के चारो ओर घुमाया जाता था। दायें बाजू की सेना जहागीर मीर्ज़ा के अधीन रहती थी। बाकी चगानियानी, शेरीम तगाई, सैयिद हुसेन अकबर तथा अन्य बेग उसके साथ रहते थे। मीर्ज़ा खान के अधीन बायें बाजू की सेना रहती थी। अब्दुर्रज़्ज़ाक मीर्ज़ा, कासिम बेग तथा अन्य घर के बेग उसके साथ रहते थे। मध्य भाग किसी बडे बेग के अधीन न रहता था। उसमें सब घर के बेग रहते थे। सैयिद कासिम ईशक आका सेना के अग्र भाग मे रहता था। बाबा ऊगूली, अल्लाह बीरदी तथा कुछ अन्य बेग उसके साथ रहते थे। सेना छ भागो मे विभाजित रहती थी। प्रत्येक भाग बारी-बारी रात तथा दिन मे पहरा देता था।

पर्वत के उस आचल से पश्चिम की ओर प्रस्थान करके हम लोग बन्नू तथा दश्त के मध्य म एक बिना जल के मैदान मे ठहरे। सेना वाला ने सूखे जल की धारा के मार्ग को १ से १½ गज तक खोद कर अपने तथा मवेशियो के लिये जल निकाला। यह घटना केवल यही नही घटी अपितु हिन्दुस्तान की समस्त नदियो की यही विशेषता है। १ अथवा १½ गज खादने पर जल निकल आता है। ईश्वर की यह

[1] कूराम नदी।

विचित्र लीला है कि जहा बडी बडी नदियों के अतिरिक्त जल की धारायें नही हैं, सूखे जल के मार्ग मे इस प्रकार खोदने से जल प्राप्त हो जाता है।

हम दूसरे दिन प्रात काल उस सूखी जल धारा से चल दिये। मध्याह्नोत्तर के समय हमारे कुछ आदमी जो बिना अधिक सामान इत्यादि के तेज़ी से यात्रा कर रहे थे, दश्त के ग्रामो मे पहुच गये। उन्होंने कुछ ग्रामो पर छापे मारे और वहा से गल्ले, असबाब तथा उन घोडों को ले आये जो व्यापार हेतु पाले गये थे। बोझ लादने वाले पशु, ऊट तथा अन्य वीर जो पीछे रह गये थे शिविर मे रात भर, प्रात काल तथा दूसरी रात तक आते रहे। जब हम लोग वहा ठहरे हुए थे तो चारा इत्यादि का प्रबन्ध करने वाला अग्र दल, भेडें तथा मवेशी, दश्त के ग्रामो से छीन कर लाया। मार्ग मे अफगान व्यापारियो से जो उन्हें मिल गये, वे अत्यधिक सफेद कपडे, सुगन्धित जडें, शकर, तीपूचाक तथा घोडे[1], जो व्यापार हेतु तैयार किये गये थे, छीन लाये। हिन्दी मुग़ूल, ख्वाजा खिज्र नोहानी नामक एक प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यापारी को घोडे से गिरा कर उसका सिर काट कर ले आया। एक बार शेरीम तगाई की, जो अग्र भाग वालो के पीछे पीछे जा रहा था, एक अफगान से मार्ग मे मुठभेड हो गई। उसने शेरीम पर इस प्रकार तलवार का वार किया कि उसकी तर्जनी कट गई।

काबुल की ओर वापसी

जिस स्थान पर हम लोग थे वहा से दो मार्गों के विषय मे कहा जाता था कि वे गज़नी को जाते थे। एक सगे सूराख मार्ग था जो विर्क होता हुआ फरमूल को जाता था। दूसरा गूमाल से होता हुआ फरमूल को जाता था किन्तु विर्क होकर न जाता था। जितने दिन भी हम दश्त मे रहे निरन्तर वर्षा होती रही। गूमाल मे इतनी अधिक बाढ आ गई थी कि हम लोग जिस घाट पर पहुचे उसे पार करना बडा कठिन था। इसके अतिरिक्त जो लोग मार्ग से परिचित थे, उन्होने निवेदन किया कि गूमाल मार्ग से यात्रा करने पर, इस नदी को कई बार पार करना पडेगा। जल के इतना अधिक हो जाने के कारण यह सर्वदा ही कठिन होगा और इस मार्ग के विषय मे कोई बात निश्चय-पूर्वक नही कही जा सकती। उस समय यह बात निश्चय न हो सकी कि किस मार्ग से यात्रा की जाय। मेरा विचार था कि दूसरे दिन यह बात निश्चय हो जायेगी। दूसरे दिन जब कूच का नक्कारा बज जायेगा तो हम लोग घोडो पर सवार हो जायेंगे और मार्ग के विषय मे विचार-विमर्श करते जायेंगे। दूसरे दिन ईदे फितर (७ मार्च १५०५ ई०) थी। मैं ईद के स्नान मे व्यस्त हो गया। जहागीर मीर्ज़ा तथा बेग लोग मार्ग के प्रश्न पर वाद विवाद करते रहे। कुछ लोगो का मत था कि मेहतर सुलेमान नामक पर्वत, पहाडियो तथा मैदान के मध्य मे है। यदि हम उसकी नाक की ओर से मुड जायें तो हमे एक समतल मार्ग मिल जायेगा, यद्यपि इस मार्ग से दूरी मे कुछ पडावो का अन्तर पड जायेगा। उस मार्ग से यात्रा करना निश्चय करके वे चल खडे हुए। मेरे स्नान के समाप्त होने के पूर्व समस्त सेना घोडा पर सवार होकर चल खडी हुई थी और अधिकाश ने गूमाल को पार भी कर लिया था। हम लोगो मे से किसी ने भी वह मार्ग न देखा था। किसी को भी इस बात का ज्ञान न था कि वह दूर है अथवा निकट। हम लोग केवल किंवदती के आधार पर चल खडे हुए थे।

१ सम्भवत यहाँ तीपूचाक घोड़ों तथा साधारण घोड़ों से तात्पर्य है।

ईद की नमाज गूमाल नदी के तट पर पढी गई। उस वर्ष नव रोज़[1] भी ईदे फितर के कुछ ही दिन उपरान्त पड रहा था। उनके लगभग एक दूसरे के कुछ दिन उपरान्त होने के विषय मे, मैंने निम्नांकित (तुर्की) पद्य की रचना की

शेर

"वैराम[2] का चन्द्रमा उसके लिये सौभाग्यशाली है जो चन्द्रमा अपने चन्द्रमुखी प्रियतम दोनों का मुख देखता है,
मेरे लिये वैराम का चन्द्रमा दुखदायी है कारण कि मैं तेरे मुख तथा तुझसे दूर हू।
हे बाबर! अपने सौभाग्य का स्वप्न देख जब तेरी दावत है तेरे नव-वर्ष एव मुख का मिलन,
उससे उत्तम सैकडो नव-वर्ष तथा वैराम नही हो सकते।"

गूमाल जल-धारा को पार करके हम लोग दक्षिण की ओर पर्वत के आचल के सहारे से चल दिये। हम लोग एक दो कोस की यात्रा कर चुके थे कि कुछ मृत्यु के अभिलाषी अफगान पुश्ते पर, जोकि पर्वत के आचल मे था, प्रकट हुए। हम लोग घोडे भगा कर उनकी ओर लपके। उनमे से अधिकाश तो भाग गये किन्तु कुछ लोग पर्वत के नीचे की एक चट्टान पर मूर्खता प्रदर्शित करते हुए युद्ध हेतु ठहर गये। उनमे से एक अफगान एक अकेली चट्टान पर पहुच गया जिसके दूसरी ओर पत्थर की खडी दीवार-सी थी। वहा से उसके भागने के लिये कोई मार्ग भी न था। सुल्तान कुली चूनाक[3] जो पूर्ण रूप से अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए था, घोडा भगाता हुआ उसके पास तक पहुच गया, और उसे बन्दी बना लिया। सुल्तान कुली ने यह पराक्रम मेरी आखो के समक्ष प्रदर्शित किया। इससे उसके प्रति मेरे स्नेह तथा उसकी श्रेणी मे वृद्धि हो गई। एक दूसरी चट्टान पर कूतलूक कदम ने एक अफगान से तलवार चलानी प्रारम्भ कर दी। वे एक दूसरे से बाहुयुद्ध करते हुए १०-१२ गज़ की सीधी ऊचाई से गिर पडे। अन्त मे कूतलूक कदम ने उस अफगान का सिर काट लिया और मेरे पास ले आया। कूपूक वेग का एक अन्य अफगान से बाहुयुद्ध होने लगा और दोनो लुढकते हुए नीचे तक चले आये। उसका सिर भी काट कर मेरे पास लाया गया। बहुत से अफगान जो बन्दी बना लिये गये थे, मुक्त कर दिये गये।

दश्त से दक्षिण की ओर प्रस्थान करके और मेहतर सुलेमान नामक पर्वत के आचल मे होते हुए, तीन रात्रि के पडाव के उपरान्त हम लोग सिन्द तट पर स्थित बीलह नामक छोटे से कस्बे मे जो मुल्तान के अधीनस्थ है पहुचे। गाव वाले नौकाओ पर बैठ कर नदी के उस पार उतर गये किन्तु कुछ लोग पार करने के लिये नदी मे कूद पडे। कुछ लोग बीलह के समक्ष एक टापू मे खडे दिखाई पडे। हमारे अधिकाश आदमी, घोडे तथा अस्त्र शस्त्र सहित जल मे कूद पडे और टापू मे पहुच गये। कुछ लोग नदी मे बह गये। मेरे सेवको में एक कुले अरूक[4] तथा एक मुख्य फर्राश थे। एक जहागीर मीर्ज़ा का सेवक कआईतमास तुर्कमान था। इस टापू में बहुत से कपडे तथा टापू वाले जो असबाब छोड गये थे, वह प्राप्त हुए। गाव के सभी लोग नौकाओ पर नदी के उस पार पहुच गये। नदी के पार पहुच जाने के उपरान्त कुछ लोग

१ ईरानियों का राष्ट्रीय प्रसिद्ध त्यौहार जो उस दिन मनाया जाता है जब सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होता है।
२ मुसलमानों का पवित्र त्यौहार।
३ एक कान वाला।
४ दुबला पतला दास।

लम्बे चौडे पाट के कारण तलवार चलाने का प्रदर्शन करने लगे। हमारा एक आदमी कुले बायजीद बकावल, जो टापू मे पहुच चुका था, अकेला नगे घोडे पर सवार होकर उन लोगो से युद्ध करने के लिये जल मे कूद पडा। टापू के उस ओर नदी का पाट इस ओर की अपेक्षा दुगना अथवा तिगुना था। वह घोडे को तैराता हुआ उन लोगो के पास तक एक बाण के मार की दूरी पर एक छिछले स्थान पर पहुच गया। वहा उसके भार तथा जल मे सन्तुलन रहा होगा। जल उसके घोडे की काठी के लटकते हुए भाग तक रहा होगा। वहा उसने उतनी देर तक प्रतीक्षा की जितनी देर तक दूध उबल जाता है। पीछे से कोई भी उसकी सहायता हेतु न पहुचा। उसे सहायता पहुचने की आशा भी न थी। वह उनकी ओर लपका। उन लोगो ने उस पर कुछ बाण चलाये किन्तु बाणो के कारण वह न रुका। यह देखकर वे भाग खडे हुये। सिन्द सरीखे दरिया को अकेले बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के नगे घोडे पर पार करना जब कि कोई भी उसकी सहायतार्थ न आ रहा हो और शत्रु को भगा देना तथा उसके स्थान को अपने अधिकार मे कर लेना वास्तव मे बडी वीरता का कार्य था। जब उसने शत्रुओ को भगा दिया तो अन्य सैनिक भी वहा पहुच गये और वस्त्र तथा अन्य प्रकार के असबाब वहा से ले आये। कुले बायजीद अपनी उत्तम सेवाओ तथा कई अवसरो पर पौरुष दिखाने के कारण पूर्व से ही मेरे स्नेह तथा कृपा का पात्र था। इसी कारण मैंने उसे बावर्चीगीरी के पद से खासे के भोजन के बकावल के पद पर पहुचा दिया था। उसके इस बार के पराक्रम के कारण मैंने उसके प्रति अत्यधिक कृपा एव दया प्रदर्शित की। वास्तव मे वह इस सम्मान तथा पदोन्नति के योग्य भी था। इसका उल्लेख बाद मे किया जायेगा।

सिन्द[1] नदी के नीचे-नीचे हमने दो पडाव तक और यात्रा की। हमारे आदमियो ने मार्गों पर निरन्तर घोडे दौडा-दौडा कर अपने घोडो को खराब कर डाला। अधिकाश उन्हें मवेशी ही प्राप्त होते थे जिनके लिये घोडो को इतना दौडाना लाभदायक न था। कभी कभी दश्त मे भेडें और कभी एक अथवा दूसरे प्रकार के वस्त्र मिल जाते थे, किन्तु दश्त के समाप्त हो जाने के उपरान्त मवेशियो के अतिरिक्त कुछ न प्राप्त हो सका। सिन्द नदी के तट की यात्रा के समय एक सेवक तक ३००-४०० मवेशी ले आता था, किन्तु प्रत्येक पडाव पर जितने प्राप्त होते थे उनसे अधिक मार्ग मे छोड दिये जाते थे।

पश्चिम दिशा में प्रस्थान

सिन्द नदी के किनारे-किनारे यात्रा करते हुए हम लोगो ने तीन अन्य पडाव किये। जब हम लोग पीर कानू[2] के मजार के सामने पहुचे तो हम सिन्द नदी से पृथक् हो गये। मजार पर पहुच कर हम वहा उतर पडे। हमारी सेना के कुछ आदमियो ने मजार के मुजाविरो को हानि पहुचा दी थी, अत हमने उनके टुकडे-टुकडे करा दिये। यह मजार हिन्दुस्तान मे बडे आदर की दृष्टि से देखा जाता है और मेहतर सुलेमान पर्वत से मिली हुई पहाडियो के आचल मे स्थित है।

पीर कानू से प्रस्थान करके हम लोग (पबत) नामक दर्रे मे उतरे। तदुपरान्त दूकी की एक जल-धारा के किनारे[3] पडाव किया। इस पडाव से प्रस्थान करते समय सीवी के दारोगा[4] फाजिल

१ सिन्ध नदी।
२ रैवर्टी के अनुसार 'पीर कानून'। यह सखी सरवर का मजार था जिसके प्रति हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को ही श्रद्धा है।
३ कन्धार में।
४ हाकिम।

कूकूल्दाश को शाह बेग के २०-३० सेवको सहित बन्दी बना कर प्रस्तुत किया गया। वे हमारे विषय मे पता लगाने के लिये आये थे, किन्तु उस समय हमारे तथा शाह बेग के सम्बन्ध बुरे न थे, अत हमने उन्हें घोडो तथा अस्त्र-शस्त्र सहित जाने की अनुमति दे दी। एक रात के पडाव के उपरान्त हम दूकी के चूतीआली नामक ग्राम मे पहुचे।

यद्यपि हमारे आदमी सिन्द नदी पर पहुचने के पूर्व तथा सिन्द नदी के तट पर धावो के उद्देश्य से निरन्तर घोडे दौडाते रहे थे किन्तु दाने तथा हरी घास की बहुतायत के कारण उन्होंने अपने घोडे न छोडे थे। जब हम नदी छोड कर पीर कानू की ओर रवाना हो गये तो हरा चारा भी उपलब्ध न था। दो तीन मंजिलो के पश्चात् थोडी सी हरी फसल दृष्टिगत हो जाती थी किन्तु घोडो का दाना प्राप्य न था, अत उपर्युक्त मंजिल के उपरान्त घोडे छोडे जाने लगे। चूतीआली के उपरान्त बोझ लादने वाले पशुओं के अभाव के कारण मुझे अपना खरगाह[1] छोडना पडा। उसी पडाव पर एक रात्रि मे इतनी वर्षा हुई कि मेरे खेमे मे घुटने तक जल पहुच गया। मुझे कम्बल के एक ढेर पर बैठे-बैठे समस्त रात्रि बडी कठिनाई से काटनी पडी।

बाकी चगानियानी द्वारा विश्वासघात

कुछ पडावो को पार कर लेने के उपरान्त जहागीर मीर्ज़ा ने मेरे कान मे आकर कहा, "मैं एक बात एकान्त मे कहना चाहता हू।" उसने एकान्त मे निवेदन किया कि, "बाकी चगानियानी ने मुझसे आकर कहा है कि बदशाह को ७-८ व्यक्तियो सहित सिन्द नदी के उस पार चले जाने दो और स्वय बादशाह बन जाओ।" मैंने उससे पूछा कि, "कौन कौन और उससे परामर्श करते हुए सुने गये हैं?" उसने उत्तर दिया कि, "इस समय तो मुझसे बाकी बेग ने कहा है। अन्य लोगो के विषय मे मुझे कोई ज्ञान नही।" मैंने कहा कि, "पता लगाओ कि अन्य कौन लोग इसमे सम्मिलित हैं? सम्भवत सैयिद हुसेन अकबर तथा खुसरो शाह के बेग एव जवान इसमे सम्मिलित हो।" वास्तव मे जहागीर मीर्ज़ा ने इस अवसर पर बडा अच्छा काम किया और एक सगे सम्बन्धी के समान व्यवहार किया। जहागीर मीर्ज़ा का यह कार्य मेरे उस कार्य के समान था जो मैंने काहमर्द मे इसी दुष्ट पिशाच की योजनाओ के सम्बन्ध में किया था।

दूसरे पडाव पर उतरने के उपरान्त मैंने जहागीर मीर्ज़ा को आस-पास के कुछ अफ़ग़ानो पर आक्रमण हेतु भेजा।

प्रत्येक पडाव पर बहुत से घोडो को छोड देना पडता था। यहा तक कि एक दिन ऐसा आ गया कि केवल २००-३०० घोडे रह गये थे। सेना के उत्तम जवान बिना घोडो के हो गये। सैयिद महमूद ऊग्लाकची को भी, जो हमारे घर के उत्तम वीरो म से था, अपना घोडा छोड कर पैदल ही जाना पडा। ग़ज़नी पहुचने तक घोडो की यही दशा रही।

जहागीर मीर्ज़ा ने ३-४ पडाव के उपरान्त कुछ अफ़ग़ानो को लूट लिया और कुछ भेडें ले आया।

आबे इस्तादा

जब कुछ पडाव पार करके हम लोग आबे इस्तादा पर पहुच गये तो एक विचित्र प्रकार का

[1] बडा खेमा।

विस्तृत जल का टुकडा दृष्टिगत हुआ। उसके उस पार की समतल भूमि दिखाई ही न पडती थी। ऐसा ज्ञात होता था कि इसका जल आकाश का चुम्बन कर रहा है। दूर के पर्वत तथा पुश्ते आकाश तथा भूमि के मध्य मे मृग तृष्णा के समान दृष्टिगत होते थे। जो जल यहा एकत्र था वह कत्तावाज मैदान, जुरमुत घाटी तथा ग़ज़नी की जलधारा के करा बाग़ के घास के मैदानो का था जो गरमी में नदियो की बाढ एव वर्षा के कारण एकत्र हो जाता था।

जब हम आबे इस्तादा के पास एक कोस पर पहुच गये तो हमे एक बडी ही विचित्र चीज दृष्टिगत हुई। जल तथा आकाश के मध्य मे लाल सी कोई चीज़ जो पौ फटने के समय दृष्टिगत होती है, प्रकट होती तथा लुप्त हो जाती थी। जब तक हम लोग निकट पहुचे यही दशा रही। तदुपरान्त ज्ञात हुआ कि वे १०,००० अथवा २०,००० की सख्या मे नही अपितु असख्य बाग़लान काज थे। उनके झुड उडते समय जब अपने पख चलाते थे तो कभी लाल पख दृष्टिगत हो जाते थे और कभी नही। वहा केवल यह पक्षी ही अगणित सख्या मे न पाया जाता था, अपितु नाना प्रकार के पक्षी वहा मौजूद थे। नदी तट पर अडो के ढेर लगे थे। दो अफग़ान जो उन्हें एकत्र करने के लिये वहा आये हुए थे, हमे देख कर जल मे कोई आधे कुरोह[1] तक भाग गये। हमारे कुछ आदमी उनका पीछा करके उन्हें पकड लाये। वे लोग जहा तक जल मे प्रविष्ट हुये, गहराई एक समान थी अर्थात् घोडे के पेट तक। सम्भवत जल गहरा न था।

हम लोग उस जल धारा के तट पर जो कत्तावाज मैदान से आबे इस्तादा मे गिरती है, उतर पडे। वह सूखी जलधारा है। इससे पूर्व कई बार हम लोग उस जलधारा की ओर से गुज़र चुके हैं किन्तु हमे कभी भी उसमे जल प्राप्त न हुआ और वह सर्वदा शुष्क ही मिली किन्तु इस बार बहार की वर्षा के कारण उसमे इतना जल था कि हम उसे पार करने का स्थान न मिल सका। जलधारा का पाट तो अधिक न था किन्तु वह गहरी बहुत थी। घोडा तथा ऊटो को उसमे से तैरवाकर पार कराया गया। कुछ सामान रस्सियो की सहायता से उस पार उतारा गया। पार उतर जाने के उपरान्त हम लोग प्राचीन नानी नामक स्थान तथा सरे देह होते हुए ग़ज़नी की ओर चल दिये। ग़ज़नी मे जहागीर मीर्ज़ा ने कुछ दिनो तक हमारा आतिथ्य-सत्कार किया। उसने हमारे भोजन की व्यवस्था की और पेशकश प्रस्तुत की।

काबुल को वापसी

उस वर्ष बहुत सी नदियो म बाढ आ गई थी। देहे याकूब नामक नदी पर भी पार करने का कोई घाट न मिल सका, इस कारण हम लोग सजावन्द दर्रे से होते हुए सीधे कमरी की ओर रवाना हुए। कमरी मे मैंने एक तालाब म एक नौका की व्यवस्था कराई थी। उसे मगवाकर हम लोग कमरी के सामने देहे याकूब नदी द्वारा पहुचे। इसके द्वारा हमारे सब आदमी भी पहुच गये।

हम लोग ज़िलहिज्जा (मई, १५०५ ई०) मे काबुल पहुच गये। कुछ दिन पूर्व सैयिद यूसुफ़ ऊग़लाकची, वायुगोला के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया।

नासिर मीर्ज़ा का दुर्व्यवहार

इस बात का उल्लेख हो चुका है कि नासिर मीर्ज़ा ने करा गुम्बज़ नामक स्थान पर ठहर जाने की अनुमति ले ली थी और यह निवेदन किया था कि वह अपने सहायको एव परिजनो के लिये अपनी विलायत

[1] १ मील।

से कुछ प्रबन्ध करके थोडे दिनो बाद पहुच जायेगा।[1] हमसे पृथक् होकर उसने नूर घाटी के आदमियो के विरुद्ध एक सेना भेजी। उन लोगो ने कुछ विद्रोह प्रदर्शित किया था। इस बात का उल्लेख हो चुका है कि उस घाटी की उसके किले की विचित्र स्थिति तथा धान की खेती के कारण सुगमतापूर्वक यात्रा नही हो सकती। मीर्ज़ा के सेनापति फज़्ली ने ऐसे दुर्गम मार्ग मे अपने आदमियो को रक्षा करने के स्थान पर उन्हें चारा इत्यादि लाने के लिये छिन्न-भिन्न कर दिया। नूर दर्रे के लोगो ने पहुचकर उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया। शेष लोग भी अपने स्थान पर ठहर न सके। नूर दर्रे वालो ने कुछ लोगों की हत्या कर दी और बहुत से आदमियों तथा घोडो को पकड लाये। फज़्ली जैसे व्यक्ति के अधीन किसी सेना को भेजने का जो दुष्परिणाम हो सकता था, वह हुआ। इस घटना के कारण अथवा निराश हो जाने की वजह से मीर्ज़ा हमारे पीछे-पीछे न आया और रुक गया।

इसके अतिरिक्त अयूब का पुत्र यूसुफ, जिसे मैंने अलगार प्रदान कर दिया था, और बहलूल[2] जिसे मैंने अली शग प्रदान कर दिया था, और जिनके समान दुष्ट, धूर्त तथा अभिमानी कोई भी न होगा, अपनी विलायत से कुछ लेकर नासिर मीर्ज़ा के साथ आने वाले थे। क्योंकि नासिर मीर्ज़ा न आया अत यह लोग भी न आये। उस पूरी शीत ऋतु मे वे उसके साथ भोग-विलास तथा मदिरापान का जीवन व्यतीत करते रहे। उन लोगों ने तरकलानी अफगानो पर भी छापे मारे। ग्रीष्म ऋतु आ जाने के कारण मीर्ज़ा ने उन कबीलो, समूहो तथा जत्थों को, जो नीनगनहार तथा लमगानात मे शीत ऋतु व्यतीत कर रहे थे, उनकी धन-सम्पत्ति सहित भेडों के समान बारान नदी तक भगा दिया।

वदख्शा

जब कि नासिर मीर्ज़ा बारान नदी पर शिविर लगाये हुए था तो उसने सुना कि वदख्शी लोग ऊज़बेगो के विरुद्ध सगठित हो गये हैं और उन्होने कुछ ऊज़बेगो की हत्या कर दी है, इसका सविस्तार वर्णन इस प्रकार है –

जब शैबाक खा ने कम्बर-बी को कून्दूज़ प्रदान कर दिया और स्वय ख्वारिज़्म चला गया तो कम्बर-बी ने वदख्शिया को मिलाने के लिये मुहम्मद मरदूमी के महमूद नामक पुत्र को उनके पास भेज दिया किन्तु मुबारक शाह ने जिसके पूर्वज वदख्शा के शाहो के बेग बताये जाते हैं, अपने सिर को उठा कर[3] महमूद तथा कुछ ऊज़बेगो के सिरा को काट डाला। उसने उस किले को, जो कभी शाफतीवार के नाम से प्रसिद्ध था और जिसका नाम उसने किलये ज़फर रखा था, दृढ बना लिया। इसके अतिरिक्त, रुस्ताक मे मुहम्मद कूरची ने जो खुसरो शाह का कूरची था और जो उस समय खमलनगान पर अधिकार जमाये हुए था, शैबाक खा के सद्र[4] तथा कुछ ऊज़बेगों की हत्या कर दी और उस स्थान को दृढ बना लिया। राग के ज़ुबैर ने भी, जिसके पूर्वज भी वदख्शा के बादशाहो के बेग रहे होंगे, राग मे विद्रोह कर दिया। खुसरो शाह के वली के एक सेवक जहागीर तुर्कमान ने कुछ भागे हुए सैनिकों एव कबीले वालो को, जिन्हे वली छोड गया था, एकत्र किया और उन्हें साथ लेकर एक पर्वतीय दृढ स्थान को भाग गया।

१ देखिये पूर्व पृ० ३४।
२ बहलूल बेगचीक।
३ विद्रोह करके।
४ मुसलमानों के धार्मिक मामलों की देख-रेख करने वाला सब से बड़ा अधिकारी।

नासिर मीर्ज़ा इन घटनाओं को सुन कर तथा कुछ अल्पदर्शी मूर्खों के मार्ग भ्रष्ट कर देने के कारण बदख्शा पर अधिकार जमाने का लोभ करने लगा। उसने शिब्रतू तथा आबदरा नामक मार्ग से कूच किया और उन लोगो के कुटुम्ब को, जोकि अमू[1] के उस पार से काबुल मे आये थे, भेडो के समान भगा दिया।

खुसरो शाह

जिस समय खुसरो शाह तथा अहमद कासिम आजर से खुरासान की ओर भागे तो वे बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा तथा जुनून बेग को साथ लेकर सब के सब सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास हेरी चले गये। वे लोग उसके प्राचीन शत्रु थे। सभी ने उसके प्रति बडी धृष्टता का व्यवहार किया था और कोई ऐसा कष्ट न छोडा था, जो उसे न पहुचाया हो किन्तु सभी उसके पास अपनी इस कठिनाई के समय पहुचे और सब मेरे द्वारा गये, कारण कि यदि मैंने खुसरो शाह को उसके साथियों से पृथक् करके विवश न कर दिया होता और जुनून के पुत्र मुकीम से काबुल न ले लिया होता तो यह सम्भव न था कि वे उससे मिल सकते। बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा स्वय अन्य लोगो के हाथो मे कठपुतली के समान था। वह उनके आदेश के विरुद्ध कुछ न कर सकता था। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने सब के प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। उसने किसी के दुर्व्यवहार की कोई चर्चा नही की। अपितु उन लोगो को उपहार प्रदान किये।

वहा पहुँचने के बाद ही खुसरो शाह ने अपने देश को वापस जाने की अनुमति मागी और यह कहा कि, "यदि मैं चला जाऊँगा तो उसको अपने अधिकार मे कर लूगा।" क्योंकि वह बिना किसी सामान व साधन के हेरी पहुँचा था, अत वे लोग उसे आज्ञा देने मे कुछ हिचकिचाहट प्रदर्शित करते थे। वह अत्यधिक आग्रह करने लगा। मुहम्मद बरन्दूक ने उसे उत्तर दिया कि, "जब तुम्हारे पास तीस हज़ार आदमी थे और पूरा देश तुम्हारे अधीन था तब तुमने उन ऊज़बेगो को कौन सी हानि पहुँचा दी जो अब तुम पाच सौ आदमियो को लेकर ऐसी अवस्था मे जब कि ऊज़बेग लोग देश पर अधिकार जमा चुके हैं, पहुँचा दोगे?" उसने उसे सक्षिप्त सा परामर्श भी दिया, किन्तु इसका कोई लाभ न हुआ कारण कि खुसरो शाह की मृत्यु निकट आ चुकी थी। उसके आग्रह के कारण उसे अनुमति दे दी गई। खुसरो शाह अपने तीन सौ अथवा चार सौ सहायको को लेकर सीधा दहाना की सरहद पर बढता चला गया। क्योंकि वहा नासिर मीर्ज़ा अभी-अभी पहुँचा था, अत दोनों की भेंट हुई।

बदख्शी सरदारो ने केवल मीर्ज़ा को आमन्त्रित किया था, उन्होने खुसरो शाह को न बुलवाया था। मीर्ज़ा ने खुसरो शाह को पर्वतीय प्रदेशो[2] की ओर चले जाने के लिये राज़ी करने का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु उसने सब बातो को समझते-बूझते हुए भी जाना स्वीकार न किया। उसका विचार था कि यदि वह मीर्ज़ा के साथ प्रस्थान करेगा तो वह उस देश को अपने अधिकार मे कर लेगा। अन्ततोगत्वा जब खुसरो शाह राज़ी न हुआ तो दोनो ने इशकीमीश मे अपने सैनिको की पक्तिया ठीक की, उन्हें अस्त्र-शस्त्र पहनवाये और एक दूसरे से पृथक् हो गये। नासिर मीर्ज़ा बदख्शा की ओर चल दिया। खुसरो शाह अव्यवस्थित समूह को जिसमे छोटे बडे एक हज़ार व्यक्ति थे, लेकर कून्दूज़ का अवरोध करने के उद्देश्य से ख्वाजा चारताक की ओर वहाँ से १ या २ यीगाच[3] आगे रवाना हुआ।

१ इस प्रकार वे लोग बारान नदी से भगा दिये गये।
२ सम्भवत. हिसार।
३ लगभग ५-१० मील।

खुसरो शाह की मृत्यु

जिस समय शैबाक खा सुल्तान अहमद तम्बल तथा अन्दिजान को विजय करके हिसार की ओर बढा तो हज़रत[1] खुसरो शाह अपने राज्य कुन्दूज़ तथा हिसार को बिना तलवार चलाये छोड कर भाग निकला। इस पर शैबाक खा हिसार पहुँचा। वहाँ शेरीम तथा कुछ अन्य वीर थे। उन्होने हिसार समर्पित न किया, हालाकि उनका सम्मानित बेग राज्य को छोड कर भाग चुका था किन्तु उन्होंने हिसार को दृढ बना लिया। शैबाक खा ने हिसार का अवरोध हमज़ा सुल्तान तथा महदी सुल्तान को सौंप दिया और कुन्दूज़ पहुँचा। उसने कुन्दूज़ अपने अनुज महमूद सुल्तान को दे दिया और स्वय चीन सूफी के विरुद्ध ख्वारिज़म की ओर अविलम्ब रवाना हो गया। जब वह पूर्व की भाति ख्वारिज़म जाते हुए समरकन्द पहुँचा तो उसने कुन्दूज़ मे अपने भाई महमूद सुल्तान की मृत्यु के समाचार सुने। उसने वह स्थान मर्व के कम्बर-बी को दे दिया।

जब खुसरो शाह कुन्दूज़ के विरुद्ध रवाना हुआ था तो वहाँ कम्बर-बी था। उसने तत्काल द्रुतगामी दूत हमज़ा सुल्तान तथा अन्य लोगो को जिन्हें शैबाक खा छोड गया था, बुलाने के लिये भेजा। हमज़ा सुल्तान अमू नदी के तट पर सराय नामक स्थान तक पहुँचा, जहाँ उसने एक सेना अपने पुत्रों तथा अमीरों के अधीन नियुक्त करके खुसरो शाह के विरुद्ध भेजी। वहाँ न तो वह मोटा साधारण व्यक्ति युद्ध कर सका और न भाग सका। हमज़ा सुल्तान के आदमियो ने उसे घोडे से गिरा लिया। उसकी बहिन के पुत्र अहमद कासिम शेरीम तथा अन्य वीरो की हत्या कर दी। वे उसे कुन्दूज़ ले गये और वहाँ उसका सिर काट कर शैबाक खा के पास ख्वारिज़म भेज दिया।

खुसरो शाह के सहायको का काबुल में व्यवहार

जैसा खुसरो शाह ने कहा था वैसा ही उसके सहायको ने किया। उसके कुन्दूज़ की ओर प्रस्थान करते ही उसके प्राचीन सेवकों तथा परिजनों ने मेरे प्रति अपना व्यवहार बदल दिया और उनमे से अधिकाश रवाजये रिवाज की ओर चल दिये। मेरी सेवा मे जितने लोग थे उनमे अधिक सख्या उसके आदमियों की थी। मुगूलों ने बडा ही उत्तम व्यवहार किया और वे मेरा साथ देते रहे। इसके साथ-साथ खुसरो शाह की मृत्यु के समाचार ने उसके सहायको पर वही प्रभाव किया जो अग्नि पर पानी करता है।

[1] यह शब्द व्यंग्य प्रदर्शित करता है।

नासिर मीर्ज़ा इन घटनाओं को सुन कर तथा कुछ अल्पदर्शी मूर्खों के मार्ग भ्रष्ट कर देने के कारण बदख्शा पर अधिकार जमाने का लोभ करने लगा। उसने शिब्रतू तथा आबदरा नामक मार्ग से कूच किया और उन लोगों के कुटुम्ब को, जोकि अमू' दे' उस पार से काबुल मे आये थे, भेडो के समान भगा दिया।

ख़ुसरो शाह

जिस समय ख़ुसरो शाह तथा अहमद कासिम आजर से ख़ुरासान की ओर भागे तो वे बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा तथा ज़ुनून बेग को साथ लेकर सब के सब सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के पास हेरी चले गये। वे लोग उसके प्राचीन शत्रु थे। सभी ने उसके प्रति बडी धृष्टता का व्यवहार किया था और कोई ऐसा कष्ट न छोडा था, जो उसे न पहुचाया हो किन्तु सभी उसके पास अपनी इस कठिनाई के समय पहुचे और सब मेरे द्वारा गये, कारण कि यदि मैंने ख़ुसरो शाह को उसके साथियों से पृथक् करके विवश न कर दिया होता और ज़ुनून के पुत्र मुकीम से काबुल न ले लिया होता तो यह सम्भव न था कि वे उससे मिल सकते। बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा स्वय अन्य लोगो के हाथो मे कठपुतली के समान था। वह उनके आदेश के विरुद्ध कुछ न कर सकता था। सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा ने सब के प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। उसने किसी के दुर्व्यवहार की कोई चर्चा नही की। अपितु उन लोगो को उपहार प्रदान किये।

वहा पहुँचने के बाद ही ख़ुसरो शाह ने अपने देश को वापस जाने की अनुमति मागी और यह कहा कि, "यदि मैं चला जाऊँगा तो उसको अपने अधिकार मे कर लूगा।" क्योंकि वह बिना किसी सामान व साधन के हेरी पहुँचा था, अत वे लोग उसे आज्ञा देने मे कुछ हिचकिचाहट प्रदर्शित करते थे। वह अत्यधिक आग्रह करने लगा। मुहम्मद बरन्दूक ने उसे उत्तर दिया कि, "जब तुम्हारे पास तीस हज़ार आदमी थे और पूरा देश तुम्हारे अधीन था तब तुमने उन ऊज़बेगो को कौन सी हानि पहुँचा दी जो अब तुम पाच सौ आदमियो को लेकर ऐसी अवस्था मे जब कि ऊज़बेग लोग देश पर अधिकार जमा चुके हैं, पहुँचा दोगे?" उसने उसे सक्षिप्त सा परामर्श भी दिया, किन्तु इसका कोई लाभ न हुआ कारण कि ख़ुसरो शाह की मृत्यु निकट आ चुकी थी। उसके आग्रह के कारण उसे अनुमति दे दी गई। ख़ुसरो शाह अपने तीन सौ अथवा चार सौ सहायको को लेकर सीधा दहाना की सरहद पर बढ़ता चला गया। क्योंकि वहा नासिर मीर्ज़ा अभी-अभी पहुँचा था, अत दोनों की भेंट हुई।

बदख्शी सरदारो ने केवल मीर्ज़ा को आमत्रित किया था, उन्होंने ख़ुसरो शाह को न बुलवाया था। मीर्ज़ा ने ख़ुसरो शाह को पर्वतीय प्रदेशो[२] की ओर चले जाने के लिये राज़ी करने का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु उसने सब बातो को समझते बूझते हुए भी जाना स्वीकार न किया। उसका विचार था कि यदि वह मीर्ज़ा के साथ प्रस्थान करेगा तो वह उस देश को अपने अधिकार मे कर लेगा। अन्ततोगत्वा जब ख़ुसरो शाह राज़ी न हुआ तो दोना ने इशकीमीश मे अपने सैनिको की पक्तिया ठीक की, उन्हें अस्त्र-शस्त्र पहनवाये और एक दूसरे से पृथक् हो गये। नासिर मीर्ज़ा बदख्शा की ओर चल दिया। ख़ुसरो शाह अव्यवस्थित समूह को जिसमे छोटे बडे एक हज़ार व्यक्ति थे, लेकर कून्दूज़ का अवरोध करने के उद्देश्य से ख़्वाजा चारताक की ओर वहाँ से १ या २ यीगाच[३] आगे रवाना हुआ।

१ इस प्रकार वे लोग बारान नदी से भगा दिये गये।
२ सम्भवत हिसार।
३ लगभग ५-१० मील।

खुसरो शाह की मृत्यु

जिस समय शैबाक खा सुल्तान अहमद तम्बल तथा अन्दिजान को विजय करके हिसार की ओर बढा तो हज़रत[1] खुसरो शाह अपने राज्य कून्दूज़ तथा हिसार को बिना तलवार चलाये छोड कर भाग निकला। इस पर शैबाक खा हिसार पहुँचा। वहाँ शेरीम तथा कुछ अन्य वीर थे। उन्होंने हिसार समर्पित न किया, हालाकि उनका सम्मानित बेग राज्य को छोड कर भाग चुका था किन्तु उन्होने हिसार को दृढ बना लिया। शैबाक खा ने हिसार का अवरोध हमज़ा सुल्तान तथा महदी सुल्तान को सौंप दिया और कून्दूज़ पहुँचा। उसने कून्दूज़ अपने अनुज महमूद सुल्तान को दे दिया और स्वय चीन सूफी के विरुद्ध ख्वारिज्म की ओर अविलम्ब रवाना हो गया। जब वह पूर्व की भाति ख्वारिज्म जाते हुए समरकन्द पहुँचा तो उसने कून्दूज़ मे अपने भाई महमूद सुल्तान की मृत्यु के समाचार सुने। उसने वह स्थान मर्व के कम्बर-बी को दे दिया।

जब खुसरो शाह कून्दूज़ के विरुद्ध रवाना हुआ था तो वहाँ कम्बर-बी था। उसने तत्काल द्रुतगामी दूत हमज़ा सुल्तान तथा अन्य लोगों को जिन्हें शैबाक खा छोड गया था, बुलाने के लिये भेजा। हमज़ा सुल्तान अमू नदी के तट पर सराय नामक स्थान तक पहुँचा, जहाँ उसने एक सेना अपने पुत्रों तथा अमीरों के अधीन नियुक्त करके खुसरो शाह के विरुद्ध भेजी। वहाँ न तो वह मोटा साधारण व्यक्ति युद्ध कर सका और न भाग सका। हमज़ा सुल्तान के आदमियों ने उसे घोडे से गिरा लिया। उसकी बहिन के पुत्र अहमद कासिम शेरीम तथा अन्य वीरों की हत्या कर दी। वे उसे कून्दूज़ ले गये और वहाँ उसका सिर काट कर शैबाक खा के पास ख्वारिज्म भेज दिया।

खुसरो शाह के सहायको का काबुल में व्यवहार

जैसा खुसरो शाह ने कहा था वैसा ही उसके सहायको ने किया। उसके कून्दूज़ की ओर प्रस्थान करते ही उसके प्राचीन सेवको तथा परिजनो ने मेरे प्रति अपना व्यवहार बदल दिया और उनमे से अधिकाश ख्वाजये रिवाज की ओर चल दिये। मेरी सेवा मे जितने लोग थे उनमे अधिक सख्या उसके आदमियों की थी। मुग़ुलो ने बडा ही उत्तम व्यवहार किया और वे मेरा साथ देते रहे। इसके साथ-साथ खुसरो शाह की मृत्यु के समाचार ने उसके सहायकों पर वही प्रभाव किया जो अग्नि पर पानी करता है।

[1] यह शब्द व्यंग्य प्रदर्शित करता है।

९११ हि०

(४ जून १५०५ ई०—२४ मई १५०६ ई०)

क़ूतलूक़ निगार ख़ानम की मृत्यु

मुहर्रम मास मे मेरी माता (क़ूतलूक़ निगार ख़ानम) को ज्वर हो गया। रक्त निकलवाया गया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। सैयिद तबीब[1] नामक एक ख़ुरासानी तबीब ने ख़ुरासानी प्रथानुसार उन्हें तरबूज़ दिये किन्तु उनकी मृत्यु का समय आ चुका था। शनिवार को छ दिन रुग्ण रहने के उपरान्त उनकी मृत्यु हो गई।

रविवार को मैं तथा कासिम कूकूल्दाश उनकी लाश को पर्वत के आचल मे स्थित नवरोज़ नामक उद्यान मे ले गये। यहाँ ऊलुग़ बेग मीर्ज़ा ने एक भवन का निर्माण कराया था। उसके उत्तराधिकारियों की अनुमति से हमने उन्हें वहा दफ़न कर दिया।

जिस समय हम उनकी मृत्यु सम्बन्धी शोक मना रहे थे, लोगो ने मेरे छोटे दादा अलचा खा तथा मेरी नानी ईसान दौलत बेगम की मृत्यु के समाचार पहुचाये।[2] ख़ानम के चालीसवें[3] के निकट ख़ुरासान से ख़ानो की माता शाह बेगम आई। उसके साथ मेरी ख़ाला मेहर निगार ख़ानम जोकि सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पत्नी रह चुकी थी तथा मुहम्मद हुसेन कूरकान दूग़लात आये। फिर से रोना-पीटना प्रारम्भ हो गया और उनकी मृत्यु का अत्यधिक शोक मनाया गया। शोक सम्बन्धी प्रथाओं के समाप्त हो जाने के उपरान्त गरीबों तथा दरिद्रियों को भोजन कराया गया और कुरान का पाठ किया गया और मरे हुए लोगों की आत्मा की शाति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई तथा हृदय को सम्भाला गया।

कन्धार के विरुद्ध प्रस्थान

जब हम लोग इन कार्यों से मुक्त हो गये तो बाकी चग़ानियानी के आग्रह पर हम कन्धार के लिये सेना तैयार करके सवार हो गये। प्रारम्भ मे मैं कूश नादिर[4] की ओर रवाना हुआ। वहाँ पहुच कर मुझे ज्वर आ गया। यह एक विचित्र प्रकार का रोग था कारण कि मुझे जितनी भी कठिनाई से जगाया जाता मैं पुन सो जाता। ४-५ दिन बाद मैं स्वस्थ हुआ।

१ चिकित्सक।

२ अहमद लगभग १३ मास पूर्व ९०९ हि० (१५०३-४ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हो चुका था।

३ मृत्यु के ४०वें दिन शोक मनाने के लिये लोग एकत्र होते हैं और मरे हुये व्यक्ति की आत्मा की शान्ति के लिये दरिद्रियों को भोजन बाँटा जाता है तथा कुरान शरीफ़ का पाठ किया जाता है।

४ नावर।

एक भूकम्प

उस समय एक इतना बडा भूकम्प[1] आया कि किले तथा बागों की अधिकाश चहारदीवारियाँ गिर पडी। कस्बो तथा ग्रामो मे घर धराशायी हो गये और बहुत से लोग दब कर मर गये। पगमान ग्राम का प्रत्येक घर गिर पडा। ७०-८० सम्मानित घर वाले दीवारो के नीचे दब कर मर गये। पगमान तथा बेगतूत के मध्य मे भूमि का एक टुकडा जोकि पत्थर की मार की दूरी के बराबर चौडा होगा, उखड कर एक बाण के मार की दूरी पर गिर पडा। उस स्थान पर एक झरना उत्पन्न हो गया। इस्तरगाच तथा मैदान के मध्य की भूमि ६ अथवा ८ यीगाच तक इस प्रकार फट गई कि कुछ स्थानों पर तो हाथी के बराबर टीले बन गये और कही-कही वह इतनी ही भीतर धस गई और लोग उसमें समा कर नष्ट हो गये। जब भूकम्प प्रारम्भ हुआ तो पर्वतों की चोटी से धूल उडने लगी थी। नूरुल्लाह तम्बूरची[2] मेरे समक्ष तम्बूरा[3] बजा रहा था, उसके पास दो तम्बूरे थे। भूकम्प के समय दोनों तम्बूरे उसके हाथ में थे। उसका उन दोनों पर कोई अधिकार न रहा और वे एक दूसरे से टकराने लगे। जहागीर मीर्जा एक घर की ऊपरी मंजिल के दालान मे था, जिसे ऊलूग बेग मीर्जा ने तीपा में बनवाया था। जब भूकम्प आया तो वह कूद पडा किन्तु उसे कोई हानि न पहुची। जहागीर मीर्जा के निकटवर्तियो मे से कोई व्यक्ति उसी बालाखाने मे था, बालाखाने की छत उसके ऊपर गिर गई, ईश्वर ने उसे बचा लिया और उसे कोई हानि न हुई। तीपा के अधिकाश घर धराशायी हो गये। प्रथम दिन तैंतीस बार भूकम्प आया और एक मास तक उसके उपरान्त चौबीस घटे मे २-३ बार भूकम्प आ जाया करता था। बेगों तथा सैनिको को आदेश दिया गया कि वे काबुल के किले की बुर्जो तथा दीवारो की टूट-फूट की मरम्मत कर डालें। बीस दिन अथवा एक मास के अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त उन सब को ठीक कर लिया गया।

कलाते गिलजाई के विरुद्ध अभियान

मेरी रुग्णावस्था तथा भूकम्प के कारण कन्धार पर आक्रमण करने की जो योजना हमने बनाई थी, वह स्थगित कर दी गई थी। मैं स्वस्थ हो गया, किले की मरम्मत हो गई अत पुरानी योजना को पुन प्रारम्भ कर दिया गया। शनीज़[4] नामक स्थान के नीचे पडाव करने के उपरान्त हमने यह निर्णय न किया था कि हम कन्धार की ओर जायेंगे अथवा पर्वतो एव मैदानों मे छापे मारेंगे। जहागीर मीर्जा तथा बेग लोग एकत्र हो गये। परामर्श किया गया और यह निश्चय हुआ कि हम लोग कलात की ओर बढें। इस योजना के लिये जहागीर मीर्जा तथा बाकी चगानियानी ने बडा आग्रह किया।

१ "इसी समय रविवार ३ सफ़र ६११ हि० (६ जुलाई १५०५ ई०) को आगरा में बहुत बड़ा भूकम्प आया और पर्वत तक कापने लगे। भव्य तथा दृढ भवन भी गिर पड़े। जीवित लोग कयामत समझने लगे। और मुर्दे हश्र। · · आदि काल से लेकर इस समय तक हिन्दुस्तान में इस प्रकार का भूकम्प कभी नहीं आया था और ऐसे भूकम्प के विषय में किसी को कोई स्मृति नहीं। कहा जाता है कि उसी दिन हिन्दुस्तान के अधिकाश नगरों में भूकम्प आया था।" (निज़ामुद्दीन: 'तबकाते अकबरी' भाग १, पृ० ३२५-२६, रिजवी: 'उत्तर तैमूर कालीन भारत' भाग १, पृ० २२० (अलीगढ़ १९५८ ई०)।

२ तम्बूरा बजाने वाला।

३ एक तार वाला बाजा, जिसमें नीचे की ओर तुम्बी होती है।

४ काबुल गजनी मार्ग पर।

ताज़ी[1] नामक स्थान पर ज्ञात हुआ कि शेरे अली चुहरा, कीचीक बाकी दीवाना तथा अ- लोग भागने की योजना बना रहे हैं। उन्हें बन्दी बना लिया गया। शेरे अली की हत्या करा दी गई कारण कि उसने मेरी सेवा मे रहते हुए तथा मेरी सेवा के बाहर इस प्रदेश तथा उस प्रदेश मे नाना[2] प्रकार के अनुचित व्यवहार तथा विद्रोह प्रदर्शित किये थे। अन्य लोगा के घोडे तथा अस्त्र शस्त्र ले लिये गए और उन्हें जाने की अनुमति दे दी गई।

कलात पहुँच कर हम लोगा ने बिना अस्त्र शस्त्र एव अवरोध के यत्रा के प्रत्येक दिशा से आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। जैसा कि इस इतिहास म उल्लेख हो चुका है कीचीक ख्वाजा ख्वाजा कला का बडा भाई बडा ही साहसी एव वीर था। वह मेरे समक्ष कई बार तलवार चलाने का प्रदर्शन कर चुका था। आज के दिन भी वह कलात के दक्षिणी पश्चिमी बुज की ओर कठिनाई के बावजूद चढता चला गया और ऊपर पहुँचने वाला ही था कि उसकी आख मे एक भाला लगा। विजय के २ ३ दिन उपरान्त इस घाव के कारण उसकी मृत्यु हो गई। इस स्थान पर कीचीक बाकी दीवाना जो शेरे अली चुहरा के साथ भागने की योजना बनाने के कारण बन्दी बना लिया गया था, क़िले की दीवार के नीचे एक पत्थर द्वारा मारा गया और इस प्रकार उसे अपनी दुष्टता का बदला मिल गया। एक दो आदमी और भी मारे गये। मध्याह्नोत्तर की नमाज़ तक इस प्रकार युद्ध होता रहा। जिस प्रकार हमारे आदमी परिश्रम और सघर्ष के कारण थक कर चूर हो गये थे वही दशा किले वाला की भी थी। उन्हाने सधि करके किला समर्पित कर दिया। ज़ुनून अरगून ने मुक़ीम को कलात दे दिया था और इस समय उसमे मुक़ीम के सेवक फ़र्रुख़ अरगून तथा करा बीलूत[3] थे। जब वे अपनी तलवार तथा निपग अपनी गरदना म लटकाये हुए बाहर निकले तो हमने उनके अपराध क्षमा कर दिये। मेरा यह उद्देश्य न था कि उस सम्मानित वश को अधिक कष्ट पहुँचाया जाये कारण कि यदि हम ऐसा करते तो ऐसी अवस्था मे जब कि ऊज़बेग इत्यादि हमको चारा ओर से घेरे हुए थे वे लोग जो इस घटना को सुनते अथवा देखते हमारे विषय मे क्या कहते ?

क्याकि कलात पर जहागीर मीर्ज़ा तथा बाकी चगानियानी के आग्रह पर आक्रमण किया गया था अत उसे मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया गया। वह उसे स्वीकार करने के लिये तैयार न था। बाकी इस विषय मे सन्तोषजनक उत्तर न दे रहा था। इस प्रकार इतने तीव्र आक्रमण तथा सघर्ष के उपरान्त कलात की विजय व्यथ हो गई।

कलात के दक्षिण मे सवासग तथा आलाताग के अफ़गानो पर छपे मारकर हम लोग काबुल वापस चले आये। जिस रात्रि मे हम लोग काबुल मे उतरे मैं किले के भीतर गया। मेरा शिविर तथा अश्वशाला चारबाग मे थे। एक ख़िरिलची चोर उद्यान मे प्रविष्ट होकर मेरे एक घोडे एव उसके साज व सामान एव मेरे खच्चर[4] को ले गया।

१ यह राजनी कलाते गिलज़ाई माग पर है।
२ काबुल तथा हिमालय के उस पार के प्रदेश।
३ करा बीलूत अफ़गान।
४ कुछ लोगों ने इसे 'खजर' पढा है। खच्चर तथा ऊटों का प्रयोग सामान लादने के लिये किया जाता था।

बाकी चगानियानी की मृत्यु

जिस समय से बाकी चगानियानी[1] अमू नदी के तट पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ था, उस समय से कोई भी व्यक्ति उसके मुकाबले मे मेरा विश्वासपात्र न था। यदि मैं कोई बात कहता अथवा कोई कार्य करता तो वह बात तथा कार्य उसी के होते थे। इसके बावजूद उसने मेरी उचित सेवा न की और न मेरे प्रति उचित शिष्टता प्रदर्शित की। इसके विपरीत वह अशिष्ट एव निंद्य कर्म करता रहा। वह कृपण, दुष्ट, अशिष्ट, ईर्ष्यालु एव चिडचिडा था। वह इतना कृपण था कि जब वह अपने परिवार तथा धन-सम्पत्ति सहित तिरमिज़ मे आया था तब उसके पास ३०-४० हजार भेडें थी। भेडो का यह बहुत बडा गल्ला प्रत्येक मज़िल पर हमारे सामने से होकर गुजरता था किन्तु उसमे से उसने हमारे वीरो के अत्यधिक भूखे एव कष्ट मे होने के बावजूद भी कोई भेड किसी को न दी। अन्ततोगत्वा उसने काहमर्द मे पचास भेडें दी।

यद्यपि उसने मुझे पादशाह स्वीकार कर लिया था किन्तु वह अपने द्वार के समक्ष नक्कारा बजवाता था। वह न तो किसी का मित्र था और न किसी का सम्मान करता था। काबुल मे जो कुछ भी कर प्राप्त होता है वह तमगा[2] द्वारा प्राप्त होता है। तमगे की पूरी आय उसके अधिकार मे थी। इसके साथ-साथ उसे काबुल, पजहीर, गदाई हज़ारा तथा कूशलूक के दारोगा का पद तथा द्वार के नियत्रण का अधिकार प्राप्त था। इतनी रियायतो के बावजूद भी वह इनसे सतुष्ट न था और नाना प्रकार की अनुचित योजनायें, जिनका उल्लेख हो चुका है, बनाया करता था। हमने उसकी लेशमात्र भी चिन्ता न की और उनका उससे कोई बदला न लिया। वह सर्वदा जाने की अनुमति मागा करता था और इस सम्बन्ध मे बहुत बुरी तरह आग्रह किया करता था। हम लोग उसके नखरो को बरदाश्त करते और उसे जाने से रोकते थे। १-२ दिन बाद वह पुन आकर अनुमति मागता था और अत्यधिक आग्रह एव नखरे करता था। हम लोगो ने उसके दुर्व्यवहार से परेशान होकर उसे अनुमति दे दी। इस पर लज्जित होकर उसने पुन आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया किन्तु हमने उसकी चिन्ता न की। उसने मेरे पास यह लिखकर भिजवाया कि, "पादशाह ने मुझे वचन दिया है कि जब तक मैं ९ अपराध न कर लूगा मुझे किसी प्रकार का दड न दिया जायेगा।" मैंने उसे उसके ११ अपराधो का स्मरण दिलाते हुए उसका पत्र पशागर के मुल्ला बाबा के हाथ वापस कर दिया। उसने स्वीकार कर लिया और उसे अपने परिवार तथा धन-सम्पत्ति सहित हिन्दुस्तान की ओर जाने की अनुमति दे दी गई। उसके कुछ सेवक उसे खैबर तक पहुचा कर लौट आये। उसने बाकी गागियानी के कारवान के साथ नीलाब पार किया।

दरिया खा का पुत्र यार हुसेन उस समय कचाकोट[3] मे था। उसने मुझसे कोहाट मे एक फरमान प्राप्त कर लिया था जिसके आधार पर उसने कुछ दिलाज़ाक, यूसुफ ज़ाई अफ़ग़ानो एव कुछ जटो[4] तथा गूजरो को नौकर रख लिया था। इन लोगो को लेकर वह मार्ग मे लोगो पर छापे मारा करता तथा हर

१ उसने ९१० हि० में बाबर से खुरासान न जाने तथा काबुल की ओर प्रस्थान करने का आग्रह किया। इसी वर्ष उसने कोहाट की ओर आक्रमण कराया जिसके कारण बाबर को बडे कष्ट भोगने पडे।

२ सीमा शुल्क अथवा चुगी। इसे तमगा इस कारण कहा जाता है कि जिन वस्तुओं पर शुल्क लगाया जाता है उन पर लकडी के ठप्पे से मुहर कर दी जाती है।

३ हसन अब्दाल के समीप।

४ जाटों।

श्रेणी के लोगों से चुगी वसूल किया करता था। बाकी के विषय मे सुनकर उसने मार्ग रोक लिया और उसके समस्त साथियों को बन्दी बना लिया। उसने बाकी की हत्या कर दी और उसकी पत्नी पर अधिकार जमा लिया। हमने बाकी को बिना किसी हानि के जाने की अनुमति दे दी थी किन्तु उसे अपने दुराचार का बदला मिल गया और उसने अपने कुकर्मो का फल भोग लिया।

शेर

"तुझे यदि कोई हानि पहुचाता है तो उसे भाग्य के सिपुर्द कर दे,
कारण कि भाग्य ही तेरे साथ जो बुराई हुई है उसका बदला ले लेगा।"

तुर्कमान हज़ारा पर आक्रमण

उस शीत ऋतु मे हम लोग १-२ बार बर्फ गिरने तक चारबाग मे ही ठहरे रहे। हमारे काबुल पहुचने के उपरान्त तुर्कमान हज़ारा नाना प्रकार की धृष्टता प्रदर्शित कर चुके थे और मार्गों पर डाके मारते रहते थे, अत हमने यह निर्णय किया कि उन्ही पर आक्रमण किया जाय। हम लोग नगर मे बूस्तान सराय मे स्थित ऊलूग बेग मीर्ज़ा के घर मे पहुचे और वहा से शाबान (फरवरी, १५०६ ई०) मे आक्रमण हेतु रवाना हो गये। हमने कुछ हज़ारा लोगों पर जगलीक मे, जो कि दर्रए ख़ुश के मुहाने पर स्थित हैं, आक्रमण किया। कुछ लोग सम्भवत एक गुफा मे दर्रे के मुह पर छिपे हुए थे। शेख़ दरवेश कूकूल्दाश असावधानी मे गुफा के मुह तक बढता चला गया। एक हज़ारा ने उसके सीने पर बाण मारा और वह उसी स्थान पर गिर कर मर गया।

शेख दरवेश मेरे साथ छापा मार युद्ध के समय रह चुका था और कूरबेगी[1] के पद पर नियुक्त था। वह कडी से कडी धनुप खीच सकता था और बडा अच्छा बाण चलाता था।

क्योकि ऐसा प्रतीत होता था कि बहुत से तुर्कमान हज़ारा दर्रए ख़ुश मे शीत ऋतु व्यतीत कर रहे हैं अत हम लोग उनके विरुद्ध बढे।

यह घाटी एक मील लम्बे जलमार्ग से, जोकि दर्रे के मुह की ओर जाती है, बन्द हो गई है। सडक पर्वत को चारो ओर से घेरे हुए है। कही कही नीचाई पर ५०-६० गज लम्बा सीधा ढाल है और उसके ऊपर एक सीधा करारा है, वहा से सवार केवल एक पक्ति मे गुजर सकते हैं। हम जलमार्ग से होते हुए पूरे दिन यात्रा करते रहे। दोनो नमाज़ो के मध्य[2] तक यात्रा करने के बावजूद हमें कोई आदमी न मिला किसी स्थान पर रात्रि व्यतीत करने के उपरान्त हमें हज़ारा लोगो का एक मोटा ऊट मिला। हमने उसकी हत्या कर दी और उसके थोडे से मास का कबाब बनवाया और थोडा सा आफ़ताबे[3] मे पकवाया। हमने कभी इतना स्वादिष्ट ऊट का मास न खाया था। बहुत से लोग यह पहिचान न सकते थे कि यह ऊट का मास है अथवा भेंड का।

दूसरे दिन हम हज़ारा के शीत ऋतु के शिविर की ओर चल दिये। पहले पहर के समय आगे से किसी ने आकर कहा कि सामने से हज़ारा लोगो ने नदी के घाट का शाखाओं द्वारा रोक दिया है और हमारे आदमियो को रोक कर युद्ध कर रहे हैं। उस शीत ऋतु मे गहरी बर्फ जमी थी। सडक के अति-

१ वह अधिकारी जो अस्त्र शस्त्र की देख भाल करता था।
२ लगभग ३ बजे साय।
३ एक प्रकार का लोटा जिसमें दस्ता होता है।

रिक्त किसी अन्य मार्ग से यात्रा करना कठिन था। दलदली चरागाहें, जोकि जलधारा के समीप थी, जम कर बर्फ हो गई थी। बर्फ के कारण जलधारा केवल सडक से पार की जा सकती थी। हजारा लोगो ने बहुत सी शाखाए काट दी थी और उन्हें जलधारा मे डाल दिया था। वे एक दर्रे की तलहटी मे घोडे पर सवार होकर तथा पैदल युद्ध कर रहे थे और प्रत्येक दिशा से बाणो की वर्षा कर रहे थे।

मुहम्मद अली मुबश्शिर बेग, जोकि हमारा बडा ही साहसी वीर था और जिसे हाल ही मे बेग की श्रेणी प्रदान की गई थी और जो इस सम्मान के योग्य भी था, शाखाओ द्वारा रुके हुए मार्ग पर बिना कवच धारण किये हुए बढता चला गया। उसके पेट मे एक बाण लगा और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई। क्योकि हम शीघ्रातिशीघ्र बढते चले गये अत हममे से बहुत से लोग कवच न धारण किये हुए थे। हमारे ऊपर से बाण उड-उडकर जाने लगे। यूसुफे अहमद चिन्ता प्रकट करते हुए प्रत्येक से कहता था कि, "तुम लोग इस प्रकार नगे ही जा रहे हो। हमने दो बाणो को तुम्हारे सिर पर से गुजरते हुए देखा है।" मैंने कहा, "चिन्ता मत करो! ऐसे बहुत से बाण मेरे सिर पर से गुजर चुके हैं।" हमने इतनी ही बात कही थी कि कासिम बेग तथा उसके आदमियो ने हमारे दाहिनी ओर एक घाट का पता लगा लिया और उसे पार किया। हजारा लोग जब उसके आक्रमण का मुकाबिला न कर सके तो भाग खडे हुए। उसने उनका शीघ्रातिशीघ्र पीछा किया और एक के बाद दूसरे को घोडे पर से गिराने लगा।

इस पौरुष के प्रदर्शन के कारण कासिम बेग को बगश प्रदान कर दिया गया। हातिम कूरबेगी ने भी इस अभियान मे कोई बुरा कार्य न किया था अत उसे शेख दरवेश के स्थान पर कूरबेगी नियुक्त कर दिया गया। बाबा कुली के कीपिक[1] ने भी बडी वीरता प्रदर्शित की अत उसे मुहम्मद अली मुबश्शिर का पद प्रदान कर दिया गया।

सुल्तान कुली चूनाक हजारा लोगो के पीछे रवाना हुआ किन्तु बर्फ के कारण यात्रा न की जा सकती थी। मैं भी इन वीरो के साथ गया।

हजारा लोगो के शीत ऋतु के शिविर के समीप हमे बहुत-सी भेडो एव घोडो के गल्ले मिले। मैंने स्वय चार-पाच सौ भेडें तथा २० २५ घोडे एकत्र किये। सुल्तान कुली चूनाक तथा मेरे दो-तीन व्यक्तिगत सेवक मेरे साथ थे। मैं दो बार इस प्रकार के छापे मार चुका हू। यह पहला छापा था। दूसरा छापा खुरासान से आते समय मारा गया जब कि हमने इन्ही तुर्कमान हजारा लोगों पर आक्रमण किया[2]। हमारे छापा मारने वाले बहुत भेडे तथा घोडे लाये। हजारा लोगों की स्त्रिया तथा बालक बर्फ से ढके ढलवा स्थानो पर चले गये थे और वही निवास करने लगे थे। हमने कुछ काहिली प्रदर्शित की और दिन अधिक ढल जाने के कारण हम लोग वापस आ गये और उन्ही के निवास-स्थानो मे उतर पडे। उस शीत ऋतु मे निस्सदेह बहुत गहरी बर्फ पडी थी। मार्ग के उस पार घोडे की कापताल[3] तक बर्फ जमी हुई थी और बर्फ की अधिकता के कारण पहरा देन वाले प्रात काल तक घोडे की जीन पर बैठे रहते थे।

दर्रे के बाहर निकल कर हमने दूसरी रात्रि दर्रे के एक मुह मे हजारा लोगो के शीत ऋतु के निवास स्थानो मे व्यतीत की। वहा से प्रस्थान करके हमने जगलीक मे पडाव किया। जगलीक मे यारक तगाई तथा अन्य लोगो को जो देर मे पहुचे थे यह आदेश दिया गया कि वे उन हजारा लोगो पर

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
२ ९१२ हि० (१५०६-७ ई०)।
३ घोडे की काठी के नीचे का भाग।

जिन्होंने शेख दरवेश की हत्या की थी, आक्रमण करें। वे लोग अपने दुर्भाग्य एव अपनी मौत के कारण गुफा ही मे मालूम होते थे। यारक तगाई तथा उसके साथियो ने गुफा मे धुआ करके ७०-८० लोगो को वन्दी बना लिया जिनमे से अधिकाश की तलवार द्वारा हत्या कर दी गई।

निज्र अऊ के कर की वसूली

हज़ारा के अभियान से लौटते समय हम लोग बारान के नीचे आई तूगदी के समीप निज्र अऊ के कर की वसूली करने के लिये पहुचे। जहागीर मीर्जा गजनी से आकर उस स्थान पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उस समय १३ रमजान (७ फरवरी) को मुझे नितम्ब सम्बन्धी घोर पीडा हुई। ४० दिन तक लोगो को मुझे इधर-उधर करवट लेने मे सहायता करनी पडती थी।

निज्र नदी की (सात) घाटियों मे से पीचकान घाटी मुख्य है और उस घाटी का मुख्य स्थान है। वहा का सरदार हुसेन गैनी एव उसके वडे और छोटे भाई अपनी उद्दडता एव विद्रोही भावनाओं के लिये प्रसिद्ध थे। इस कारण जहागीर मीर्जा के अधीन एक सेना भेजी गई। कासिम वेग को भी उनके साथ भेजा गया। वे सरेतूप तक पहुच गये और आक्रमण करके एक सगुर को अधिकार मे कर लिया और कुछ लोगों को उनके भाग्य तक पहुचा दिया[1]।

नितम्व पीडा के कारण लोगों ने मेरे लिये एक प्रकार की डोली सी वना ली थी जिसमे लादकर वे मुझे वारान नदी के किनारे किनारे तथा बूस्तान सराय नामक कस्बे मे ले गये। वहा मैं कुछ दिनों तक ठहरा रहा। इस रोग के समाप्त होने के पूर्व ही मेरे बायें गाल मे एक फोडा निकल आया। उसकी शल्य-चिकित्सा की गई और मैंने भी मुसहिल[2] लिया। उससे मुक्त होकर मैं चारवाग पहुचा।

जहागीर मीर्ज़ा की दुष्टता

जिस समय जहागीर मीर्ज़ा मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ, अयूब के पुन यूसुफ तथा वहलूल ने, जो उसकी सेवा मे थे, मेरे प्रति षड्यत्र करना प्रारम्भ कर दिया था, अत मीर्जा का व्यवहार उसके पिछले व्यवहार के समान न रह गया था। कुछ दिन उपरान्त वह तीपा के वाहर अस्त्र शस्त्र धारण करके चल दिया और गज़नी की ओर वापिस चला गया। वहा उसने नानी नामक स्थान पर अधिकार जमा लिया और वहा के कुछ लोगो की हत्या कर दी तथा सबको लूट लिया। तदुपरान्त वह अपने उन आदमियो सहित जो उसके साथ थे, हज़ारा लोगों की ओर से होता हुआ बामियान की ओर चल दिया। ईश्वर ही जानता है कि न तो मैंने और न मेरे आश्रिता ने कोई ऐसा कार्य किया था जिससे उसे किसी प्रकार का असतोष अथवा कष्ट होता। बाद मे उसके जाने का जो कुछ कारण मालूम हुआ, वह इस प्रकार है: जब कासिम वेग अन्य लोगों के साथ उस समय जब वह गजनी म आया था उसके स्वागतार्थ पहुचा तो मीर्जा ने एक बाज़ को लवा के पीछे छोडा। जैसे ही बाज़ लवा के निकट पहुच कर उसके ऊपर झपटा, तो लवा भूमि पर गिर पडा। शोर मच गया कि, "पकड लिया, पकड लिया।" कासिम वेग ने कहा कि, "शत्रु को अपने पजे मे पाकर कौन छोडता है ?" इस बात के कारण वडा भ्रम उत्पन्न हो गया। इस भ्रम के कारण वे चल दिये किन्तु उन लोगों ने अन्य २-३ शिकायतों को अपने प्रस्थान का वहाना वना लिया था

१ हत्या करा दी।
२ दस्त लाने वाली औषधि।

ग़ज़नी मे जो कुछ उल्लेख हो चुका है वह करके वे हज़ारा लोगो के बीच से होते हुए मुग़ल कबीलों की ओर चल दिये। इन कबीलो ने उस समय नासिर मीर्ज़ा का साथ छोड दिया था किन्तु ऊज़बेगो के साथ अभी तक नही मिले थे और याई, अस्तर-आब तथा उसके आस पास की ग्रीष्म ऋतु की चरागाहो मे थे।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा द्वारा शैबाक खा के विरुद्ध सहायता मागना

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने शैबाक खा को पराजित करने का सकल्प करके अपने समस्त पुत्रो को बुलवा भेजा। उसने मुझे भी, सैयिद अली ख्वाबबीन[1] के पुत्र सैयिद फज़ल को मेरे पास भेज कर, बुलवाया। बहुत से कारणो मे हमारे लिये खुरासान की ओर प्रस्थान करना ठीक ही था। एक कारण तो यह था कि जब सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा सरीखे प्रतापी बादशाह ने, जोकि तीमूर बेग के स्थान पर सिहासनारूढ था, शैबाक खा के विरुद्ध आक्रमण करना निश्चय कर लिया और बहुत से आदमियो तथा अपने पुत्रो और बेगो को बुलवाया तो ऐसी अवस्था मे यदि कुछ लोग अपने पाव से चल कर गये तो हमें अपने सिर के बल जाना चाहिये था। यदि कुछ लोग हाथ मे डडा लेकर रवाना होते तो हमे पत्थर लेकर जाना चाहिये था। दूसरा कारण यह था कि जहागीर मीर्ज़ा इस सीमा तक पहुच चुका था और इतनी धृष्टता प्रदर्शित कर चुका था कि हमारे लिये अत्यन्त आवश्यक हो गया कि या तो हम उसके असतोष को दूर करें और या उसके आक्रमण को।

चीन सूफी की मृत्यु

इस वर्ष शैबाक खा ने चीन सूफी को १० मास तक घेर कर ख्वारिज्म पर अधिकार जमा लिया। अवरोध के समय भीषण युद्ध हुआ। ख्वारिज्म के वीरो ने पौरुष के अनेक कार्य प्रदर्शित किये। उन्होने कोई कसर उठा न रखी। बार बार उनके बाण इस तेज़ी से चलते थे कि वे ढालो तथा कवच को छेद डालते थे और कभी कभी दो-दो कवच छेद देते थे। दस मास तक बिना किसी स्थान से सहायता की आशा के वे उस अवरोध का मुकाबला करते रहे। तदुपरान्त कुछ वीरो ने साहस छोड दिया और ऊज़बेगो से सन्धि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। वे उसे किले मे ले ही आने वाले थे कि चीन सूफी को इसका पता चल गया और वह उस स्थान पर पहुच गया। जिस समय वह ऊज़बेगो के विरुद्ध अपनी सेना को आगे बढा रहा था उसके एक चुहरा[2] ने पीछे से उसके ऊपर बाण का वार कर दिया। कोई भी युद्ध के लिये शेष न रहा और ऊज़बेगो ने ख्वारिज्म पर अधिकार जमा लिया। ईश्वर चीन सूफी की आत्मा को शांति प्रदान करे जिसने क्षण भर भी अपने सरदार के लिये अपने प्राणो की बलि दान की ओर उपेक्षा न की।

शैबाक खा ने ख्वारिज्म को कूपुक-बी को सौंप दिया और समरकन्द चला गया।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की मृत्यु

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का दफन किया जाना

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा अपनी सेना को शैबाक खा के विरुद्ध बाबा इलाही तक ही ले जा पाया था

१ वह व्यक्ति जो स्वप्न का फल बताता हो।
२ तरुण सेवक।

जिन्होंने शेख दरवेश की हत्या की थी, आक्रमण करें। वे लोग अपने दुर्भाग्य एवं अपनी मौत के कारण गुफा ही में मालूम होते थे। यारक तग़ाई तथा उसके साथियों ने गुफा में धुआ करके ७०-८० लोगों को बन्दी बना लिया जिनमें से अधिकांश की तलवार द्वारा हत्या कर दी गई।

निज्र अऊ के कर की वसूली

हज़ारा के अभियान से लौटते समय हम लोग बारान के नीचे आई तुगदी के समीप निज्र अऊ के कर की वसूली करने के लिये पहुचे। जहागीर मीर्ज़ा गज़नी से आकर उस स्थान पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उस समय १३ रमज़ान (७ फरवरी) को मुझे नितम्ब सम्बन्धी घोर पीडा हुई। ४० दिन तक लोगो को मुझे इधर-उधर करवट लेने मे सहायता करनी पडती थी।

निज्र नदी की (सात) घाटियों मे से पाँचवान घाटी मुख्य है और उस घाटी का मुख्य स्थान है। वहा का सरदार हुसेन गैनी एव उसके बडे और छोटे भाई अपनी उद्दडता एव विद्रोही भावनाओं के लिये प्रसिद्ध थे। इस कारण जहागीर मीर्ज़ा के अधीन एक सेना भेजी गई। कासिम बेग को भी उनके साथ भेजा गया। वे सरेतूप तक पहुच गये और आक्रमण करके एक सगुर को अधिकार मे कर लिया और कुछ लोगो को उनके भाग्य तक पहुचा दिया[1]।

नितम्ब पीडा के कारण लोगों ने मेरे लिये एक प्रकार की डोली सी बना ली थी जिसमे लादकर वे मुझे बारान नदी के किनारे किनारे तथा बूस्तान सराय नामक कस्बे मे ले गये। वहां मैं कुछ दिनो तक ठहरा रहा। इस रोग के समाप्त होने के पूर्व ही मेरे बायें गाल मे एक फोडा निकल आया। उसकी शल्य-चिकित्सा की गई और मैंने भी मुसहिल[2] लिया। उससे मुक्त होकर मैं चारबाग पहुचा।

जहांगीर मीर्ज़ा की दुष्टता

जिस समय जहागीर मीर्ज़ा मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ, अयूब के पुत्र यूसुफ तथा बहलूल ने, जो उसकी सेवा मे थे, मेरे प्रति षड्यन्त्र करना प्रारम्भ कर दिया था, अत मीर्ज़ा का व्यवहार उसके पिछले व्यवहार के समान न रह गया था। कुछ दिन उपरान्त वह तीपा के बाहर अस्त्र-शस्त्र धारण करके चल दिया और गज़नी की ओर वापिस चला गया। वहा उसने नानी नामक स्थान पर अधिकार जमा लिया और वहा के कुछ लोगो की हत्या कर दी तथा सबको लूट लिया। तदुपरान्त वह अपने उन आदमियो सहित जो उसके साथ थे, हज़ारा लोगो की ओर से होता हुआ बामियान की ओर चल दिया। ईश्वर ही जानता है कि न तो मैंने और न मेरे आश्रितो ने कोई ऐसा कार्य किया था जिससे उसे किसी प्रकार का असतोष अथवा कष्ट होता। बाद मे उसके जाने का जो कुछ कारण मालूम हुआ, वह इस प्रकार है: जब कासिम बेग अन्य लोगो के साथ उस समय जब वह गज़नी मे आया था उसके स्वागतार्थ पहुचा तो मीर्ज़ा ने एक बाज को लवा के पीछे छोडा। जैसे ही बाज़ लवा के निकट पहुच कर उसके ऊपर झपटा, तो लवा भूमि पर गिर पडा। शोर मच गया कि, "पकड लिया, पकड लिया।" क़ासिम बेग ने कहा कि "शत्रु को अपने पजे मे पाकर कौन छोडता है?" इस बात के कारण बडा भ्रम उत्पन्न हो गया। इस भ्रम के कारण वे चल दिये किन्तु उन लोगों ने अन्य २-३ शिकायतो को अपने प्रस्थान का बहाना बना लिया था

१ हत्या करा दी।
२ दस्त लाने वाली औषधि।

गज़नी में जो कुछ उल्लेख हो चुका है वह करके वे हज़ारा लोगों के बीच से होते हुए मुग़ल कबीलों की ओर चल दिये। इन कबीलों ने उस समय नासिर मीर्ज़ा का साथ छोड दिया था किन्तु ऊज़बेगा के साथ अभी तक नहीं मिले थे और याई, अस्तर आब तथा उसके आस पास की ग्रीष्म ऋतु की चरागाहों में थे।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा द्वारा शैबाक खा के विरुद्ध सहायता मागना

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने शैबाक खा को पराजित करने का सकल्प करके अपने समस्त पुत्रों का बुलवा भेजा। उसने मुझे भी, सैयिद अली ख्वाबबीन[1] के पुत्र सैयिद फज़ल को मेरे पास भेज कर, बुलवाया। बहुत से कारणों से हमारे लिये खुरासान की ओर प्रस्थान करना ठीक ही था। एक कारण तो यह था कि जब सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा सरीखे प्रतापी बादशाह ने, जोकि तीमूर बेग के स्थान पर सिंहासनारूढ था, शैबाक खा के विरुद्ध आक्रमण करना निश्चय कर लिया और बहुत से आदमियों तथा अपने पुत्रों और बेगों को बुलवाया तो ऐसी अवस्था में यदि कुछ लोग अपने पाव से चल कर गये तो हमें अपने सिर के बल जाना चाहिये था। यदि कुछ लोग हाथ मे डडा लेकर रवाना होते तो हमे पत्थर लेकर जाना चाहिये था। दूसरा कारण यह था कि जहागीर मीर्ज़ा इस सीमा तक पहुच चुका था और इतनी धृष्टता प्रदर्शित कर चुका था कि हमारे लिये अत्यन्त आवश्यक हो गया कि या तो हम उसके असतोष को दूर करें और या उसके आक्रमण को।

चीन सूफी की मृत्यु

इस वर्ष शैबाक खा ने चीन सूफी को १० मास तक घेर कर ख्वारिज़्म पर अधिकार जमा लिया। अवरोध के समय भीषण युद्ध हुआ। ख्वारिज़्म के वीरों ने पौरुष के अनेक कार्य प्रदर्शित किये। उन्होंने कोई कसर उठा न रखी। बार बार उनके बाण इस तेज़ी से चलते थे कि वे ढालों तथा कवच को छेद डालते थे और कभी कभी दो-दो कवच छेद देते थे। दस मास तक बिना किसी स्थान से सहायता की आशा के वे उस अवरोध का मुकाबला करते रहे। तदुपरान्त कुछ वीरों ने साहस छोड दिया और ऊज़बेगों से सन्धि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। वे उसे किले में ले ही आने वाले थे कि चीन सूफी को इसका पता चल गया और वह उस स्थान पर पहुच गया। जिस समय वह ऊज़बेगों के विरुद्ध अपनी सेना को आगे बढा रहा था उसके एक चुहरा[2] ने पीछे से उसके ऊपर बाण का वार कर दिया। कोई भी युद्ध के लिये शेष न रहा और ऊज़बेगों ने ख्वारिज़्म पर अधिकार जमा लिया। ईश्वर चीन सूफी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे जिसने क्षण भर भी अपने सरदार के लिये अपने प्राणों की बलि देने की ओर उपेक्षा न की।

शैबाक खा ने ख्वारिज़्म को कूपुक-बी को सौंप दिया और समरकन्द चला गया।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की मृत्यु

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का दफन किया जाना

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा अपनी सेना को शैबाक खा के विरुद्ध बाबा इलाही तक ही ले जा पाया था

१ वह व्यक्ति जो स्वप्न का फल बताता हो।
२ तरुण सेवक।

कि ज़िलहिज्जा मास मे उसकी मृत्यु हो गई।[1] ....[2]जिस समय सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की मृत्यु हुई तो मीर्ज़ाओं मे केवल बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा तथा मुज़फ्फर हुसेन मीर्ज़ा उपस्थित थे। मुज़फ्फर हुसेन मीर्ज़ा अपने पिता का बडा ही प्रिय पुत्र था। उसका मुख्य बेग मुहम्मद बरन्दूक बरलास था। उसकी माता ख़दीजा बेगम मीर्ज़ा की बडी ही विश्वासपात्र थी। मीर्ज़ा के सब लोग उसके पास एकत्र हो गये। इन कारणों से बदीउज्जमान मीर्ज़ा चिन्तित हो गया था और उसने न आना ही निश्चय किया[3] किन्तु मुज़फ्फर हुसेन मीर्ज़ा तथा मुहम्मद बरन्दूक बेग स्वय सवार होकर पहुचे और उसकी चिन्ता का निराकरण करके उसे ले आये।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा[4] को हेरी पहुचाया गया और वही उसके मदरसे मे शाही सम्मान के साथ दफन कर दिया गया।

उसके उत्तराधिकारी

इस दुर्घटना के अवसर पर ज़ुन्नून बेग भी उपस्थित था। वह, मुहम्मद बरन्दूक बेग तथा मीर्ज़ा के बेग तथा दोनों (छोटे) मीर्ज़ा उपस्थित हुए और उन्होंने यह निश्चय किया कि दोनों मीर्ज़ाओं को हेरी का सुल्तान नियुक्त कर दिया जाय। ज़ुन्नून बेग बदीउज्जमान मीर्ज़ा के फाटक पर अपना अधिकार स्थापित रक्खे और मुहम्मद बरन्दूक बेग मुज़फ्फर हुसेन मीर्ज़ा के फाटक पर। शेख़ अली तगाई प्रथम के लिये हेरी का दारोगा नियुक्त हो और यूसुफ अली द्वितीय के लिये। यह एक बडी विचित्र योजना थी। राज्य मे साझा एक ऐसी समस्या है जिसके विषय मे कभी कुछ नही सुना गया है। इसके विपरीत शेख़ सादी[5] ने 'गुलिस्ता' मे लिखा है—

शेर

"दस दरवेश मिल कर एक कम्बल मे सो रहते हैं,
किन्तु दो बादशाह एक इक्लीम मे स्थान नही पाते।"

१ ११ ज़िलहिज्जा ९११ हि० (५ मई १५०६ ई०)।
२ सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा तथा उसके दरबार के हाल का अनुवाद नहीं किया गया।
३ अपने शिविर के बाबा इलाही तक।
४ की लाश को।
५ शेख़ मसलहुद्दीन सादी शीराज़ी का जन्म ५७१ हि० (११७५ ई०) के करीब हुआ था और दीर्घकाल तक जीवित रह कर वे ६९१ हि० (१२९२ ई०) को मृत्यु को प्राप्त हुये। उनकी रचनाओं में 'गुलिस्ता' को बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त है।

९१२ हि०

(२४ मई १५०६ ई० से १३ मई १५०७ ई०)

बाबर का सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास प्रस्थान

मुहर्रम मास मे गूरबन्द तथा शिब्रतू से होते हुए हम लोग ऊज़बेगो के विरुद्ध रवाना हो गये। क्योंकि जहागीर मीर्ज़ा उस विलायत से असतुष्ट होकर चला गया था अत हम लोगो ने सोचा कि यदि उसने ईमाक[1] को अपनी ओर मिला लिया तो अत्यधिक दुष्टता करेगा। उसकी दुष्टता के विचार से हमने यह निश्चय किया कि सर्वप्रथम हम ईमाक को सगठित कर लें; अत हम लोग शीघ्राति-शीघ्र चल खडे हुए और अपने साथ बहुत सूक्ष्म सामान रक्खा तथा भारी सामान उश्तुर शहर मे वली खाज़िन[2] तथा दौलत कदम करावल[3] को सौप दिया। उस दिन हम लोग जहाक नामक किले पर पहुच गये। वहा से हमने गुम्बज़क कूतल को पार किया और साईगान होते हुए दन्दान शिकन दर्रे में पहुचे और काहमर्द की चरागाह मे उतर पडे। काहमर्द से हमने सैयिद अफज़ल ख्वाबबीन[4] तथा सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई को एक पत्र सहित सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास भेजा और काबुल से रवाना होने का हाल उसे लिख कर प्रेषित किया।[5]

जहागीर मीर्ज़ा मार्ग मे इधर-उधर फिर रहा होगा। जब वह बामियान के समक्ष २०-३० आदमियो सहित पहुचा तो उसने हमारे आदमियो के खेमे डेरे जो सामान भी रह गया था, वह देखा। यह सोच कर कि हम वहा होंगे वह तथा उसके सहायक अपने अपने शिविर को बिना कुछ देखे भाले तथा अपने आदमियो की जो पीछे आ रहे थे, चिन्ता किये बिना चल दिये और वहा से यका ऊलाग की ओर रवाना हो गये।

शैबाक खा

जब शैबाक खा ने बल्ख का, जो उस समय सुल्तान कुले नचाक़ के अधीन था, अवरोध कर लिया तो उसने दो तीन सुल्तानो को तीन चार हज़ार आदमियो सहित बदख्शा पर आक्रमण करने के लिये

१ मुगुल कबीलों।
२ कोषाध्यक्ष।
३ सेना के उस दस्ते का अधिकारी जो आगे जाता तथा शत्रु की सेना के समाचार पहुँचाता है।
४ वह व्यक्ति जो स्वप्न का फल बताता हो।
५ सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की मृत्यु के समाचार बाबर को ९१२ हि० तक न प्राप्त हो सके, यद्यपि उसकी मृत्यु ९११ हि० में हो गई थी।

गया। जब मैं साफ नामक पहाडी के नीचे उतरा तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। खुरासान की चिन्ता के कारण न तो हमने उसकी ओर ध्यान दिया और न ईमाक की ओर अपितु गुरजवान, अलमार, कैसार, चीचीकतू तथा फखरुद्दीन के उलूम से होते हुए वाम घाटी मे जोकि वादगीस के उपान्त मे है, पहुच गये।

ससार वैमनस्यता से परिपूर्ण था। प्रत्येक व्यक्ति विलायतो तथा कबीलो और जत्था से कुछ न कुछ छीन लेता था। हम लोगो ने भी इसी प्रकार तुर्कों तथा उस भाग के कबीलो पर कर लगा कर छीनना झपटना प्रारम्भ कर दिया। २-३ महीने मे हमने लगभग किपकी[1] के तीन सौ तूमान[2] अपने अधिकार मे कर लिये।

खुरासान के मीर्जाओ का सगठन

हमारे वाम घाटी मे पहुचने के कुछ दिन पूर्व खुरासान के कुछ हलके हथियारो युक्त सवारों तथा जुनून वेग के आदमियो ने पन्द देह तथा मरूचाक मे ऊजबेग आक्रमणकारियों को बुरी तरह पराजित कर दिया और बहुत से आदमियों की हत्या कर दी।

बदीउज्जमान मीर्जा तथा मुजफ्फर हुसेन मीर्जा ने मुहम्मद बरन्दूक बरलास, जुनून अरगून तथा उसके पुत्र शाह वेग को साथ लेकर शैवाक खा पर, जो उस समय सुल्तान कुले नचाक[3] को बल्ख म घेरे हुए था, आक्रमण करना निश्चय किया। इस दृष्टि से उन्होने सुल्तान हुसेन मीर्जा के समस्त पुत्रों को बुलवाया और अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु हेरी के बाहर निकले। चेहल दुख्तरान नामक स्थान पर सुल्तान अबुल मुहसिन मुहम्मद, मर्व से उनकी सेवा मे पहुच गया। इब्ने हुसेन मुहम्मद भी तून तथा क़ाईन से उनके पीछे-पीछे पहुचा। कूपुक[4] मुहम्मद मशहद मे था। यद्यपि उन्होने उसे कई बार बुलाया, किन्तु उसने धृष्टता पूर्वक व्यवहार किया और अपशब्द कहे तथा उपस्थित न हुआ। उसमे तथा मुजफ्फर मीर्जा मे ईर्ष्या थी। जब मुजफ्फर मीर्जा सयुक्त बादशाह बना दिया गया तो उसने कहा कि, "मैं उसकी सेवा मे किस प्रकार जाऊ ?" ऐसी कठिनाई के समय भी जब कि उसके समस्त बडे तथा छोटे भाई सगठित होकर शैवाक खा सरीखे शत्रु के विरुद्ध आक्रमण करने के लिये एकत्र हो रहे थे, वह इस नैराश्ययुक्त ईर्ष्या के कारण उपस्थित न हुआ। कूपुक मुहम्मद ने भी शत्रुता को ही अपनी अनुपस्थिति का बहाना बनाया, किन्तु अन्य हर आदमी का यह मत था कि वह अपनी कायरता के कारण नही आया है। एक बात तो यह है कि इस ससार मे मनुष्य की कीर्तियां ही उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके नाम को जीवित रखती है। यदि किसी मे लेश मात्र भी बुद्धि है तो वह मृत्यु के उपरान्त बदनाम होने का प्रयत्न न करेगा। यदि किसी को कोई अभिलाषा है तो वह इस प्रकार कार्य क्यो न करे कि लोग मृत्यु के उपरान्त तक उसकी प्रशसा करें। यदि किसी का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है तो वह इस प्रकार एक दूसरा जीवन प्राप्त कर लेता है।

मीर्जाओ के पास से भी मेरे पास दूत आये। मुहम्मद बरन्दूक बरलास स्वय उनके पीछे पहुचा। जहा तक मेरा सम्बन्ध है मेरे प्रस्थान के लिये कोई वस्तु बाधक न थी। मैंने इसी कारण सौ-दो सौ

१ अर्सकिन के अनुसार अंडाकार आकृति का तांबे का एक सिक्का।
२ तूमान, १०,००० के बराबर होता था।
३ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
४ कीपिक।

भेजा। उस समय मुबारक शाह तथा जुबैर नासिर मीर्जा से मिल गये थे, यद्यपि इन लोगो के बीच मे इससे पूर्व अत्यधिक शत्रुता एव मतभेद था। वे सब लोग किश्म के नीचे तथा किश्म नदी के पूर्व मे शकदान मे पडाव किये हुए थे। रात्रि मे यात्रा करते हुए ऊज़बेगो के एक दस्ते ने सुबह होते होते नदी पार कर ली और मीर्जा के विरुद्ध बढा। मीर्जा एक ऊचे पुश्ते पर चढ गया और वहा उसने नफीर[1] बजा कर अपनी सेना एकत्र की और शत्रुओं का मुकाबला कर के उन्हें पराजित कर दिया। ऊजबेगो के पीछे किश्म नदी थी जिसमे बाढ आ चुकी थी। बहुत से लोग उसमे डूब गये, बहुत बडी सख्या मे लोग बाण तथा तलवार द्वारा मारे गये, अधिक लोग बन्दी बना लिये गये। मुबारक शाह तथा जुबैर मीर्ज़ा नदी की ऊचाई पर तथा किश्म के समीप थे। ऊजबेगो ने जो उन पर आक्रमण करने के लिये अलग से भेजे गये थे उन्हें पुश्ते की ओर भगा दिया। जब मीर्जा को इस विषय मे उस समय सूचना मिली जब कि *उसने अपने आक्रमणकारियो को पराजित कर दिया था तो वह उनके विरुद्ध रवाना हुआ।* कोहिस्तान के बेगो ने भी जो अश्वारोहियों तथा पदातियो सहित नदी के और ऊपर एकत्र थे, उनका साथ दिया। ऊज़बेग लोग आक्रमण का मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए। इस दस्ते के भी बहुत से लोग तलवार, लक्ष्य बाण तथा जल[2] द्वारा मारे गये। कुल एक हज़ार से डेढ हज़ार तक आदमी मरे होंगे, यह नासिर मीर्जा की एक बहुत बडी विजय थी। यह समाचार हमे एक आदमी द्वारा, जब कि हम काहमर्द की जलगाह[3] मे पडाव किये हुए थे, प्राप्त हुए।

बाबर का खुरासान की ओर प्रस्थान

जब हम लोग काहमर्द मे थे तो हमारी सेना गूरी तथा दहाना से अनाज लाई। वहा भी हमे सैयिद अफ़ज़ल तथा सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई के पास से, जिन्हे हमने खुरासान भेजा था, पत्र प्राप्त हुए और उनसे भी यही सूचना मिली कि सुल्तान हुसैन मीर्जा की मृत्यु हो गई है।

इस समाचार के बावजूद हम लोग खुरासान की ओर रवाना हो गये। यद्यपि हमारे इस आचरण के अन्य कारण भी थे किन्तु जिस कारण से हमने निर्णय कर लिया वह तीमूर वश की मर्यादा की रक्षा थी। हम लोग आजर दर्रे से होते हुए तूप तथा मन्दगान की ओर बढे और बल्ख नदी पार कर के साफ नामक पहाडी की ओर पहुँचे। वहा हमें यह समाचार प्राप्त हुए कि ऊज़बेग लोग सान तथा चारयक को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे है। हमने कासिम बेग के अधीन एक सेना उनके विरुद्ध भेजी। वह उन लोगों के पास पहुच गया और उन्हें बुरी तरह पराजित करके बहुत से लोगों के सिर काट कर लौट आया।

हम लोग साफ़ नामक पहाडी की चरागाह मे कुछ दिनों तक ठहरे रहे और जहागीर मीर्ज़ा तथा ईमाक के विषय मे समाचार की प्रतीक्षा करते रहे। ईमाक[4] के लोग पूर्व ही से भेजे जा चुके थे। वह पहाडी जगली भेडों तथा बकरों से भरी हुई थी अत हमने एक बार शिकार भी किया। समस्त ईमाक कुछ ही दिनों मे मेरी सेवा मे उपस्थित हो गये। वे लोग केवल मेरे ही पास आये और जहागीर मीर्ज़ा के पास, यद्यपि उसने उनके पास आदमी भेजे थे, न गये। जहागीर मीर्ज़ा ने एक बार एमादुद्दीन मसऊद को भी उनके पास भेजा था। जहागीर मीर्ज़ा भी इस प्रकार मेरी सेवा मे उपस्थित होने के लिये विवश हो

१ एक प्रकार का बिगुल।
२ डूब कर।
३ घाटी के नीचे का स्थान।
४ मुग़ूल क़बीले।

गया। जब मैं साफ नामक पहाडी के नीचे उतरा तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। खुरासान की चिन्ता के कारण न तो हमने उसकी ओर ध्यान दिया और न ईमाक की ओर अपितु गुरज़वान, अलमार, कैमर, चीचीकतू तथा फखरुद्दीन के ऊलूम से होते हुए बाम घाटी मे जोकि बादगीस के उपान्त मे है, पहुच गये।

ससार वैमनस्यता से परिपूर्ण था। प्रत्येक व्यक्ति विलायतो तथा कबीलो और जत्थो से कुछ न कुछ छीन लेता था। हम लोगो ने भी इसी प्रकार तुर्कों तथा उस भाग के कबीलों पर कर लगा कर छीनना झपटना प्रारम्भ कर दिया। २-३ महीने मे हमने लगभग किपकी[1] के तीन सौ तूमान[2] अपने अधिकार मे कर लिये।

खुरासान के मीर्ज़ाओं का सगठन

हमारे बाम घाटी मे पहुचने के कुछ दिन पूर्व खुरासान के कुछ हलके हथियारो युक्त सवारो तथा जुन्नून बेग के आदमियो ने पन्द देह तथा मरूचाक मे ऊजबेग आक्रमणकारियो को बुरी तरह पराजित कर दिया और बहुत से आदमियो की हत्या कर दी।

बदीउज़्ज़मान मीर्ज़ा तथा मुजफ्फर हुसैन मीर्ज़ा ने मुहम्मद बरन्दूक बरलास, जुन्नून अरगून तथा उसके पुत्र शाह बेग को साथ लेकर शैबाक खा पर, जो उस समय सुल्तान कुले नचाक[3] को बल्ख़ मे घेरे हुए था, आक्रमण करना निश्चय किया। इस दृष्टि से उन्होने सुल्तान हुसेन मीर्जा के समस्त पुत्रो को बुलवाया और अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु हेरी के बाहर निकले। चेहल दुख़्तरान नामक स्थान पर सुल्तान अबुल मुहसिन मुहम्मद, मर्व से उनकी सेवा मे पहुच गया। इब्ने हुसेन मुहम्मद भी तून तथा काईन से उनके पीछे-पीछे पहुचा। कूपुक[4] मुहम्मद मशहद मे था। यद्यपि उन्होने उसे कई बार बुलाया, किन्तु उसने धृष्टता पूर्वक व्यवहार किया और अपशब्द कहे तथा उपस्थित न हुआ। उसमे तथा मुज़फ्फर मीर्ज़ा मे ईर्ष्या थी। जब मुजफ्फर मीर्ज़ा सयुक्त बादशाह बना दिया गया तो उसने कहा कि, "मैं उसकी सेवा मे किस प्रकार जाऊ?" ऐसी कठिनाई के समय भी जब कि उसके समस्त बड़े तथा छोटे भाई सगठित होकर शैबाक खा सरीखे शत्रु के विरुद्ध आक्रमण करने के लिये एकत्र हो रहे थे, वह इस नैराश्ययुक्त ईर्ष्या के कारण उपस्थित न हुआ। कूपुक मुहम्मद ने भी शत्रुता को ही अपनी अनुपस्थिति का बहाना बनाया, किन्तु अन्य हर आदमी का यह मत था कि वह अपनी कायरता के कारण नही आया है। एक बात तो यह है कि इस ससार मे मनुष्य की कीर्तियां ही उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके नाम को जीवित रखती हैं। यदि किसी मे लेश मात्र भी बुद्धि है तो वह मृत्यु के उपरान्त बदनाम होने का प्रयत्न न करेगा। यदि किसी को कोई अभिलाषा है तो वह इस प्रकार कार्य क्यो न करे कि लोग मृत्यु के उपरान्त तक उसकी प्रशसा करें। यदि किसी का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है तो वह इस प्रकार एक दूसरा जीवन प्राप्त कर लेता है।

मीर्ज़ाओ के पास से भी मेरे पास दूत आये। मुहम्मद बरन्दूक बरलास स्वय उनके पीछे पहुचा। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मेरे प्रस्थान के लिये कोई वस्तु बाधक न थी। मैंने इसी कारण सौ-दो सौ

१ अर्सकिन के अनुसार अंडाकार आकृति का तांबे का एक सिक्का।
२ तूमान, १०,००० के बराबर होता था।
३ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
४ कीपिक।

यीगाच[1] की यात्रा की थी। मैं तत्काल मुहम्मद बरन्दूक बेग के साथ मुर्ग़ाब की ओर, जहा मीर्ज़ा लोग पडाव किये हुए थे, रवाना हो गया।

मीर्ज़ाओ से बाबर की भेट

यह भेंट सोमवार ८ जमादि उस्सानी (२६ अक्तूबर १५०६ ई०) को हुई। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा एक मील आगे तक मेरा स्वागत करने के लिये आया। हम लोग एक दूसरे से मिलने के लिये आगे बढे। मैं अपनी ओर उतर पडा और वह अपनी ओर। हम लोग बढे, एक दूसरे से भेंट की और सवार हो गये। शिविर के समीप मुज़फ्फ़र मीर्ज़ा तथा इब्ने हुसेन मीर्ज़ा ने हमसे भेट की। वे अबुल मुहसिन मीर्ज़ा से छोटे थे, अत उन्हें उससे पहिले आगे बढ कर मुझसे भेंट करनी चाहिये थी।[2] उनके द्वारा यह विलम्ब किसी अभिमान के कारण न था अपितु मदिरापान की वजह से थक जाने के कारण। उन्होंने मेरी उपेक्षा हेतु असावधानी न की थी अपितु यह उनकी विलासप्रियता के कारण हुई। मुज़फ्फ़र मीर्ज़ा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हम दोनों बिना घोडे से उतरे हुए एक दूसरे से भेंट करें और इब्ने हुसेन मीर्ज़ा तथा मैंने भी यही किया। हम लोग साथ साथ घोडे पर चल दिये और बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा के फाटक पर एक बहुत बडी भीड के बीच मे उतरे। आदमियो की इतनी अपार भीड एकत्र हो गई थी कि कुछ लोगो के पाव तीन चार कदम तक ज़मीन पर न पहुचते थे और कुछ लोग जो निकल जाने की इच्छा करते थे वे पीछे के मार्ग पर ४-५ कदम पहुच जाते थे।

हम लोग बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा के दीवानखाने मे पहुचे। यह निश्चय हो चुका था कि मैं प्रविष्ट होकर एक बार घुटने के बल झुकू[3] और मीर्ज़ा उठ कर नीचे वाले चबूतरे तक आये और हम लोग एक दूसरे से वही भेट करे। मैं भीतर प्रविष्ट होकर घुटने के बल झुका और सीधा बढता चला गया। मीर्ज़ा ने उठने मे विलम्ब किया और धीरे-धीरे आगे बढा। कासिम बेग मेरा हितैषी था। वह मेरी मर्यादा को अपनी मर्यादा के समान ही रक्षा करता था। उसने मेरी पेटी को पकड कर खींचा। मैं समझ कर और धीरे धीरे चलने लगा। निश्चित स्थान पर हमने भेंट की।

इस शिविर मे चार तूशुक[4] लगाई गई थी। मीर्ज़ाओ के खेमे मे सर्वदा एक ओर दालान-सा बना रहता था और वह इस दालान के करीब बैठता था। वहा उसी समय एक तूशुक बिछाया गया, जिस पर वह तथा मुज़फ्फ़र मीर्ज़ा एक साथ आसीन हुए। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा तथा मैं दूसरे तूशुक पर बैठे जोकि दाइ ओर एक सम्मान के स्थान पर लगाया गया था। दूसरे पर, बदीउज्ज़मान के बाईं ओर, इब्ने हुसेन मीर्ज़ा, कासिम सुल्तान ऊज़बेग, जो स्वर्गीय मीर्ज़ा का जामाता तथा कासिम हुसेन सुल्तान का पिता था, बैठे। मेरे दाईं ओर तथा मेरे तूशुक के नीचे जहागीर मीर्ज़ा तथा अब्दुर्रज़्ज़ाक मीर्ज़ा बैठे। कासिम सुल्तान तथा इब्ने हुसेन मीर्ज़ा के बाईं ओर किन्तु काफी नीचे मुहम्मद बरन्दूक बेग, ज़ुन्नून बेग तथा कासिम बेग बैठे।

यद्यपि यहा इस समय कोई खाने-पीने की गोष्ठी का आयोजन न था किन्तु मदिरा के साथ मास

१ ५००-६०० मील।
२ बाबर ने केवल अवस्था का ध्यान रक्खा है और इस बात का नहीं कि मुज़फ्फ़र मीर्ज़ा संयुक्त बादशाह था।
३ अभिवादन करूँ।
४ मसनद।

लाया गया। सोने चादी की सुराहिया चुन दी गई। हमारे पूर्वज सर्वदा से ही चिन्गीज़ी तूरा[1] का बडा आदर करते थे और उसके विपरीत चाहे गोष्ठी हो और चाहे दरबार, चाहे बैठने का अवसर हो चाहे खडे होने का, कोई कार्य न करते थे। यद्यपि इसके लिये कोई दैवी आदेश नही है जिसका कि अनिवार्य रूप से पालन ही किया जाय किन्तु फिर भी व्यवहार के अच्छे नियमो का चाहे जिसने भी उन्हें बनाया हो पालन करना ही चाहिये। यह उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार कि यदि किसी के पूर्वज ने कोई बुरा कार्य किया है तो उस बुरे कार्य को अच्छे कार्य मे परिवर्तित कर देना चाहिये।

भोजन के उपरान्त मैं मीर्ज़ा के शिविर से चल खडा हुआ और अपने पडाव पर जो लगभग दो मील पर स्थित था, पहुच गया।

बाबर द्वारा उचित सम्मान की मांग

मेरी दूसरी भेंट के समय बदीउज्जमान मीर्ज़ा ने मेरे प्रति जैसा कि पहिले सम्मान प्रदर्शित किया था, उससे कम सम्मान प्रदर्शित किया अत मैंने मुहम्मद बरन्दूक बेग तथा जुन्नून बेग के पास सदेश भेजा कि "यद्यपि मेरी अवस्था कम है[2] किन्तु मेरी श्रेणी की दृष्टि से मेरा अधिक सम्मान वाछनीय है। मैं समरकन्द मे अपने पूर्वजो के सिंहासन के ऊपर दो बार अपनी तलवार के जोर से आरूढ हो चुका हू और मेरे प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन की उपेक्षा अनुचित है कारण कि मैं केवल तीमूर के वश की मर्यादा की रक्षा हेतु ही इतने बडे शत्रु से सघर्ष तथा युद्ध करता रहा हू।" मेरा यह कथन न्याय युक्त होने के कारण उन लोगो ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और जैसे सम्मान की मैंने माग की थी, वह मेरे प्रति प्रदर्शित किया।

बाबर द्वारा मदिरा की उपेक्षा

एक बार जब मैं मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा से भेंट करने गया तो मदिरापान की एक महफिल आयोजित की गई थी। उस समय मैं मदिरापान न करता था। यह महफिल बडे ही सुन्दर ढग से आयोजित की गई थी। ख्वानो[3] मे प्रत्येक प्रकार की गज़क[4] रखी हुई थी। मुर्ग तथा काज़ के कबाब एव हर प्रकार के भोजन लगे हुए थे। बदीउज्जमान मीर्ज़ा की महफिलो की बडी प्रसिद्धि थी और यह सत्य ही था। इसमे किसी प्रकार की कोई अव्यवस्था न थी और बडे शान्तिपूर्वक ढग से यह महफिल आयोजित की गई थी। जितने समय हम मुर्गाब के तट पर ठहरे रहे, दो-तीन बार मैं मीर्ज़ा की महफिलो मे उपस्थित हुआ। जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि मैं मदिरापान नही करता तो वे मुझसे आग्रह न करते थे।

मैं मुज़फ्फर मीर्ज़ा की भी एक मदिरापान की महफिल मे पहुचा। अली जलायर का हुसेन तथा मीर बद्र दोनो वहा उपस्थित थे। वे उनकी सेवा मे थे। जब मीर बद्र पर अधिक मदिरा चढ गई तो वह नृत्य करने लगा और उसने बडा ही सुन्दर नृत्य, जोकि उसका ही आविष्कार था, किया।

१ चिंगीज़ी विधान। इन्हें 'यासये चिंगीज़ी' भी कहते हैं।
२ २४ वर्ष।
३ थालों।
४ मदिरा के साथ खाने की चीज़ें।

योगाच[1] की यात्रा की थी। मैं तत्काल मुहम्मद बरन्दूक बेग के साथ मुर्गाब की ओर, जहा मीर्ज़ा लोग पडाव किये हुए थे, रवाना हो गया।

मीर्ज़ाओ से बाबर की भेंट

यह भेंट सोमवार ८ जमादि उस्सानी (२६ अक्तूबर १५०६ ई०) को हुई। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा एक मील आगे तक मेरा स्वागत करने के लिये आया। हम लोग एक दूसरे से मिलने के लिये आगे बढे। मैं अपनी ओर उतर पडा और वह अपनी ओर। हम लोग बढे, एक दूसरे से भेंट की और सवार हो गये। शिविर के समीप मुज़फ्फर मीर्ज़ा तथा इब्ने हुसेन मीर्ज़ा ने हमसे भेंट की। वे अबुल मुहसिन मीर्ज़ा से छोटे थे, अत उन्हें उससे पहिले आगे बढ कर मुझसे भेंट करनी चाहिये थी।[2] उनके द्वारा यह विलम्ब किसी अभिमान के कारण न था अपितु मदिरापान की वजह से थक जाने के कारण। उन्होने मेरी उपेक्षा हेतु असावधानी न की थी अपितु यह उनकी विलासप्रियता के कारण हुई। मुज़फ्फर मीर्ज़ा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हम दोनों बिना घोडे से उतरे हुए एक दूसरे से भेंट करें और इब्ने हुसेन मीर्ज़ा तथा मैंने भी यही किया। हम लोग साथ साथ घोडे पर चल दिये और बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा के फाटक पर एक बहुत बडी भीड के बीच मे उतरे। आदमियो की इतनी अपार भीड एकत्र हो गई थी कि कुछ लोगों के पाव तीन-चार कदम तक ज़मीन पर न पहुचते थे और कुछ लोग जो निकल जाने की इच्छा करते थे वे पीछे के मार्ग पर ४-५ कदम पहुच जाते थे।

हम लोग बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा के दीवानखाने मे पहुचे। यह निश्चय हो चुका था कि मैं प्रविष्ट होकर एक बार घुटने के बल झुकू[3] और मीर्ज़ा उठ कर नीचे वाले चबूतरे तक आये और हम लोग एक दूसरे से वही भेंट करे। मैं भीतर प्रविष्ट होकर घुटने के बल झुका और सीधा बढता चला गया। मीर्ज़ा ने उठने मे विलम्ब किया और धीरे-धीरे आगे बढा। कासिम बेग मेरा हितैषी था। वह मेरी मर्यादा की अपनी मर्यादा के समान ही रक्षा करता था। उसने मेरी पेटी को पकड कर खीचा। मैं समझ कर और धीरे धीरे चलने लगा। निश्चित स्थान पर हमने भेंट की।

इस शिविर मे चार तूशुक[4] लगाई गई थी। मीर्ज़ाओ के खेमे मे सर्वदा एक ओर दालान-सा बना रहता था और वह इस दालान के करीब बैठता था। वहा उसी समय एक तूशुक बिछाया गया, जिस पर वह तथा मुज़फ्फर मीर्ज़ा एक साथ आसीन हुए। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा तथा मैं दूसरे तूशुक पर बैठे जोकि दाई ओर एक सम्मान के स्थान पर लगाया गया था। दूसरे पर, बदीउज्ज़मान के बाईं ओर, इब्ने हुसेन मीर्ज़ा, कासिम सुल्तान ऊज़बेग, जो स्वर्गीय मीर्ज़ा का जामाता तथा कासिम हुसेन सुल्तान का पिता था, बैठे। मेरे दाईं ओर तथा मेरे तूशुक के नीचे जहागीर मीर्ज़ा तथा अब्दुर्रज़्ज़ाक मीर्ज़ा बैठे। कासिम सुल्तान तथा इब्ने हुसेन मीर्ज़ा के बाईं ओर किन्तु काफी नीचे मुहम्मद बरन्दूक बेग, ज़ुन्नून बेग तथा कासिम बेग बैठे।

यद्यपि यहा इस समय कोई खाने-पीने की गोष्ठी का आयोजन न था किन्तु मदिरा के साथ मास

१ ५००-६०० मील।
२ बाबर ने केवल अवस्था का ध्यान रक्खा है और इस बात का नहीं कि मुज़फ्फर मीर्ज़ा संयुक्त बादशाह था।
३ अभिवादन करूँ।
४ मसनद।

लाया गया। सोने चादी की सुराहिया चुन दी गई। हमारे पूर्वज सर्वदा से ही चिन्गीज़ी तूरा[1] का बड़ा आदर करते थे और उसके विपरीत चाहे गोष्ठी हो और चाहे दरबार, चाहे बैठने का अवसर हो चाहे खड़े होने का, कोई कार्य न करते थे। यद्यपि इसके लिये कोई दैवी आदेश नहीं है जिसका कि अनिवार्य रूप से पालन ही किया जाय किन्तु फिर भी व्यवहार के अच्छे नियमों का चाहे जिसने भी उन्हें बनाया हो, पालन करना ही चाहिये। यह उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार कि यदि किसी के पूर्वज ने कोई बुरा कार्य किया है तो उस बुरे कार्य को अच्छे कार्य में परिवर्तित कर देना चाहिये।

भोजन के उपरान्त मैं मीर्ज़ा के शिविर से चल खड़ा हुआ और अपने पड़ाव पर जो लगभग दो मील पर स्थित था, पहुच गया।

बाबर द्वारा उचित सम्मान की मांग

मेरी दूसरी भेंट के समय बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा ने मेरे प्रति जैसा कि पहिले सम्मान प्रदर्शित किया था, उससे कम सम्मान प्रदर्शित किया अत मैंने मुहम्मद बरन्दूक बेग तथा जुनून बेग के पास सदेश भेजा कि "यद्यपि मेरी अवस्था कम है[2] किन्तु मेरी श्रेणी की दृष्टि से मेरा अधिक सम्मान वाछनीय है। मैं समरकन्द मे अपने पूर्वजों के सिहासन के ऊपर दो बार अपनी तलवार के ज़ोर से आरूढ हो चुका हू और मेरे प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन की उपेक्षा अनुचित है कारण कि मैं केवल तीमूर के वश की मर्यादा की रक्षा हेतु ही इतने बड़े शत्रु से सघर्ष तथा युद्ध करता रहा हू।" मेरा यह कथन न्याय-युक्त होने के कारण उन लोगो ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और जैसे सम्मान की मैंने माग की थी, वह मेरे प्रति प्रदर्शित किया।

बाबर द्वारा मदिरा की उपेक्षा

एक बार जब मैं मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा से भेंट करने गया तो मदिरापान की एक महफिल आयोजित की गई थी। उस समय मैं मदिरापान न करता था। यह महफिल बड़े ही सुन्दर ढग से आयोजित की गई थी। ख्वानों[3] मे प्रत्येक प्रकार की गज़क[4] रखी हुई थी। मुर्ग तथा काज़ के कबाब एव हर प्रकार के भोजन लगे हुए थे। बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा की महफिलों की बड़ी प्रसिद्धि थी और यह सत्य ही था। इसमे किसी प्रकार की कोई अव्यवस्था न थी और बड़े शान्तिपूर्वक ढग से यह महफिल आयोजित की गई थी। जितने समय हम मुर्गाब के तट पर ठहरे रहे, दो-तीन बार मैं मीर्ज़ा की महफिलों मे उपस्थित हुआ। जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि मैं मदिरापान नहीं करता तो वे मुझसे आग्रह न करते थे।

मैं मुज़फ्फर मीर्ज़ा की भी एक मदिरापान की महफिल मे पहुचा। अली जलायर का हुसेन तथा मीर बद्र दोनों वहा उपस्थित थे। वे उनकी सेवा मे थे। जब मीर बद्र पर अधिक मदिरा चढ गई तो वह नृत्य करने लगा और उसने बड़ा ही सुन्दर नृत्य, जोकि उसका ही आविष्कार था, किया।

१ चिंगीज़ी विधान। इन्हें 'यासये चिंगीज़ी' भी कहते हैं।
२ २४ वर्ष।
३ थालों।
४ मदिरा के साथ खाने की चीजें।

यीगाच[1] की यात्रा की थी। मैं तत्काल मुहम्मद बरन्दूक बेग के साथ मुर्गाब की ओर, जहा मीर्ज़ा लोग पडाव किये हुए थे, रवाना हो गया।

मीर्ज़ाओ से बाबर की भेंट

यह भेंट सोमवार ८ जमादि उस्सानी (२६ अक्तूबर १५०६ ई०) को हुई। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा एक मील आगे तक मेरा स्वागत करने के लिये आया। हम लोग एक दूसरे से मिलने के लिये आगे बढे। मैं अपनी ओर उतर पडा और वह अपनी ओर। हम लोग बढे, एक दूसरे से भेंट की और सवार हो गये। शिविर के समीप मुज़फ्फ़र मीर्ज़ा तथा इब्ने हुसेन मीर्ज़ा ने हमसे भेंट की। वे अबुल मुहसिन मीर्ज़ा से छोटे थे, अत उन्हे उससे पहिले आगे बढ कर मुझसे भेंट करनी चाहिये थी।[2] उनके द्वारा यह विलम्ब किसी अभिमान के कारण न था अपितु मदिरापान की वजह से थक जाने के कारण। उन्होने मेरी उपेक्षा हेतु असावधानी न की थी अपितु यह उनकी विलासप्रियता के कारण हुई। मुज़फ्फर मीर्ज़ा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हम दोनो बिना घोडे से उतरे हुए एक दूसरे से भेंट करें और इब्ने हुसेन मीर्ज़ा तथा मैंने भी यही किया। हम लोग साथ साथ घोडे पर चल दिये और बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा के फाटक पर एक बहुत बडी भीड के बीच मे उतरे। आदमियो की इतनी अपार भीड एकत्र हो गई थी कि कुछ लोगो के पाव तीन-चार कदम तक ज़मीन पर न पहुचते थे और कुछ लोग जो निकल जाने की इच्छा करते थे वे पीछे के मार्ग पर ४-५ कदम पहुच जाते थे।

हम लोग बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा के दीवानखाने मे पहुचे। यह निश्चय हो चुका था कि मैं प्रविष्ट होकर एक बार घुटने के बल झुकू[3] और मीर्ज़ा उठ कर नीचे वाले चबूतरे तक आये और हम लोग एक दूसरे से वही भेंट करे। मैं भीतर प्रविष्ट होकर घुटने के बल झुका और सीधा बढता चला गया। मीर्ज़ा ने उठने मे विलम्ब किया और धीरे-धीरे आगे बढा। कासिम बेग मेरा हितैषी था। वह मेरी मर्यादा की अपनी मर्यादा के समान ही रक्षा करता था। उसने मेरी पेटी को पकड कर खीचा। मैं समझ कर और धीरे धीरे चलने लगा। निश्चित स्थान पर हमने भेंट की।

इस शिविर मे चार तूशुक[4] लगाई गई थी। मीर्ज़ाओ के खेमे मे सर्वदा एक ओर दालान-सा बना रहता था और वह इस दालान के करीब बैठता था। वहा उसी समय एक तूशुक बिछाया गया, जिस पर वह तथा मुज़फ्फर मीर्ज़ा एक साथ आसीन हुए। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा तथा मैं दूसरे तूशुक पर बैठे जोकि दाई ओर एक सम्मान के स्थान पर लगाया गया था। दूसरे पर, बदीउज्ज़मान के बाई ओर, इब्ने हुसेन मीर्ज़ा, कासिम सुल्तान उज़बेग, जो स्वर्गीय मीर्ज़ा का जामाता तथा कासिम हुसेन सुल्तान का पिता था, बैठे। मेरे दाई ओर तथा मेरे तूशुक के नीचे जहागीर मीर्ज़ा तथा अब्दुर्रज़्ज़ाक मीर्ज़ा बैठे। कासिम सुल्तान तथा इब्ने हुसेन मीर्ज़ा के बाई ओर किन्तु काफी नीचे मुहम्मद बरन्दूक बेग, ज़ुन्नून बेग तथा कासिम बेग बैठे।

यद्यपि यहा इस समय कोई खाने-पीने की गोष्ठी का आयोजन न था किन्तु मदिरा के साथ मास

१ ५००-६०० मील।
२ बाबर ने केवल अवस्था का ध्यान रक्खा है और इस बात का नहीं कि मुज़फ़्फ़र मीर्ज़ा संयुक्त बादशाह था।
३ अभिवादन करूँ।
४ मसनद।

लाया गया। सोने चांदी की सुराहियां चुन दी गईं। हमारे पूर्वज सर्वदा से ही चिन्गीजी तूरा[1] का बडा आदर करते थे और उसके विपरीत चाहे गोष्ठी हो और चाहे दरबार, चाहे बैठने का अवसर हो चाहे खडे होने का, कोई कार्य न करते थे। यद्यपि इसके लिये कोई दैवी आदेश नही है जिसका कि अनिवार्य रूप से पालन ही किया जाय किन्तु फिर भी व्यवहार के अच्छे नियमो का चाहे जिसने भी उन्हें बनाया हो, पालन करना ही चाहिये। यह उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार कि यदि किसी के पूर्वज ने कोई बुरा कार्य किया है तो उस बुरे कार्य को अच्छे कार्य में परिवर्तित कर देना चाहिये।

भोजन के उपरान्त मैं मीर्जा के शिविर से चल खडा हुआ और अपने पडाव पर जो लगभग दो मील पर स्थित था, पहुच गया।

बाबर द्वारा उचित सम्मान की मांग

मेरी दूसरी भेंट के समय बदीउज्जमान मीर्जा ने मेरे प्रति जैसा कि पहिले सम्मान प्रदर्शित किया था, उससे कम सम्मान प्रदर्शित किया अत मैंने मुहम्मद बरन्दूक बेग तथा जुन्नून बेग के पास सदेश भेजा कि "यद्यपि मेरी अवस्था कम है[2] किन्तु मेरी श्रेणी की दृष्टि से मेरा अधिक सम्मान वाछनीय है। मैं समरकन्द मे अपने पूर्वजो के सिंहासन के ऊपर दो बार अपनी तलवार के ज़ोर से आरूढ हो चुका हू और मेरे प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन की उपेक्षा अनुचित है कारण कि मैं केवल तीमूर के वश की मर्यादा की रक्षा हेतु ही इतने बडे शत्रु से सघर्ष तथा युद्ध करता रहा हू।" मेरा यह कथन न्याय-युक्त होने के कारण उन लोगो ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और जैसे सम्मान की मैंने माग की थी, वह मेरे प्रति प्रदर्शित किया।

बाबर द्वारा मदिरा की उपेक्षा

एक बार जब मैं मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त बदीउज्जमान मीर्जा से भेंट करने गया तो मदिरापान की एक महफिल आयोजित की गई थी। उस समय मैं मदिरापान न करता था। यह महफिल बडे ही सुन्दर ढग से आयोजित की गई थी। ख्वानों[3] मे प्रत्येक प्रकार की गज़क[4] रखी हुई थी। मुर्ग़ तथा काज के कबाब एव हर प्रकार के भोजन लगे हुए थे। बदीउज्जमान मीर्जा की महफिलों की बड़ी प्रसिद्धि थी और यह सत्य ही था। इसमे किसी प्रकार की कोई अव्यवस्था न थी और बडे शान्तिपूर्वक ढग से यह महफिल आयोजित की गई थी। जितने समय हम मुर्गाब के तट पर ठहरे रहे, दो-तीन बार मैं मीर्जा की महफिलो मे उपस्थित हुआ। जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि मैं मदिरापान नही करता तो वे मुझसे आग्रह न करते थे।

मैं मुजफ्फर मीर्जा की भी एक मदिरापान की महफिल मे पहुचा। अली जलायर का हुसेन तथा मीर बद्र दोनो वहा उपस्थित थे। वे उनकी सेवा मे थे। जब मीर बद्र पर अधिक मदिरा चढ गई तो वह नृत्य करने लगा और उसने बड़ा ही सुन्दर नृत्य, जोकि उसका ही आविष्कार था, किया।

१ चिंगीज़ी विधान। इन्हें 'यासये चिंगीज़ी' भी कहते हैं।
२ २४ वर्ष।
३ थालों।
४ मदिरा के साथ खाने की चीज़ें।

मीर्ज़ाओ की आलोचना

मीर्ज़ाओ को हेरी से निकलने तथा सगठित होने एव सेना एकत्र करने और मुर्गाब पहुचने मे तीन मास लग गये। इस बीच मे सुल्तान कुले नचाक[1] की बडी ही दुर्दशा हो गई और उसने ऊज़बेग को बल्ख समर्पित कर दिया था किन्तु ऊजबेग यह सुन कर कि हम लोग उसके विरुद्ध सगठित हो गये है, शीघ्रातिशीघ्र समरकन्द की ओर बढा। मीर्ज़ा लोग बातचीत करने एव पारस्परिक व्यवहार मे बडे ही शिष्ट थे किन्तु उन्हें युद्ध, अभियान, अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था, रणक्षेत्र एव सेना के प्रबन्ध का कोई ज्ञान न था।

शीत ऋतु की योजनायें

जब हम लोग मुर्गाब मे थे तो यह समाचार प्राप्त हुए कि हक नजीर चपा ४००-५०० आदमियो को लेकर चीचीकतू के आसपास के स्थानो का विध्वस कर रहा है। सभी मीर्ज़ा लोग वहा पर उपस्थित थे। उन्होने आपस मे खूब सलाह की किन्तु वे इन आक्रमणकारियो के विरुद्ध कोई हल्के हथियारो से युक्त दस्ता भी न भेज सके। मुर्गाब तथा चीचीकतू के मध्य मे दस यीगाच[2] की दूरी है। मैने उनसे इस कार्य के करने की अनुमति चाही किन्तु उन्होने अपनी मर्यादा की दृष्टि से मुझे आज्ञा न दी।

वर्ष के अन्त पर शैबाक खा भी लौट गया। मीर्ज़ा लोगो ने यह निर्णय किया कि जिस स्थान पर भी सुविधा हो वही पर रुक कर शीत ऋतु व्यतीत की जाय और दूसरे वर्ष ग्रीष्म ऋतु मे एकत्र होकर शत्रु पर आक्रमण किया जाय।

उन लोगो ने मुझसे भी खुरासान मे शीत ऋतु व्यतीत करने के लिये आग्रह किया किन्तु मेरे किसी हितैषी ने भी इसे अच्छा न समझा कारण कि काबुल तथा गज़नी दुष्टो एव विद्रोहियो से परिपूर्ण थे और वहा तुर्क, मुग़ल एव अफगान तथा हज़ारा कबीलो के विभिन्न समूह एकत्र थे। इसके अतिरिक्त खुरासान तथा काबुल के बीच का निकटतम मार्ग जोकि पर्वतीय था, यदि बर्फ एव अन्य रुकावटो के कारण असम्भव न हो गया हो, एक मास दूर था। नीचे के प्रदेशो के मार्ग से ४०-५० दिन की दूरी थी। हमारा राज्य जो नया-नया प्राप्त हुआ था अभी किसी सुव्यवस्थित दशा मे न था अत हमने मीर्ज़ा लोगो से क्षमा मागी किन्तु उन लोगो ने हमारी कोई बात स्वीकार न की और जितना अधिक हम उनसे आग्रह करते, वे उतना ही और ज़ोर देते थे। अन्ततोगत्वा बदीउज़्ज़मान मीर्ज़ा, अबुल मुहसिन मीर्ज़ा तथा मुज़फ्फर मीर्ज़ा स्वय मेरे शिविर मे पहुचे और मुझसे शीत ऋतु वही व्यतीत करने के लिये आग्रह किया। मैं मीर्ज़ा लोगो के समक्ष कुछ न कह सका कारण कि एक तो ऐसे प्रतापी बादशाहो ने स्वय कष्ट करके आकर ठहरने का आग्रह किया था दूसरे हेरी के समान ससार मे अन्य कोई भी नगर न था। सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के आदेशो तथा प्रयत्नो के फलस्वरूप उसका गौरव एव सुन्दरता दस गुनी बीस गुनी बढ गई थी।[3] क्योकि मेरी भी वहा ठहरने की बहुत इच्छा थी अत मैंने उसे स्वीकार कर लिया।

अबुल मुहसिन मीर्ज़ा अपनी विलायत मर्व को चला गया। इब्ने हुसेन मीर्ज़ा तून तथा काईन

१ यह नाम स्पष्ट नहीं।
२ ५०-५५ मील।
३ प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद में "यके व देह बलिक व बिस्त तरक्की कर्दा" है।

को चला गया। बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा तथा मुज़फ़्फ़र मीर्ज़ा हेरी की ओर चल दिये। मैं भी उनके पीछे पीछे चेहल दुख्तरान तथा ताशेरबात के मार्ग से रवाना हो गया।

बेगमो से बाबर की हेरी मे भेंट

सभी बेगमो,[1] मेरी फुफी पायदा सुल्तान बेगम, ख़दीजा बेगम, अपाक बेगम तथा मेरी अन्य फुफी बेगमें, सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्रिया उस समय जबकि मैं उनके दर्शन हेतु गया तो, सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के मदरसे मे उसके मकबरे पर जमा हो गई थी। मैं सर्वप्रथम पायन्दा सुल्तान बेगम के समक्ष घुटनो के बल झुका[2] और उनसे भेंट की। तदुपरान्त मैंने अपाक बेगम से भेंट की किन्तु उनके समक्ष घुटने के बल झुका नही। इसके पश्चात् मैं खदीजा बेगम के समक्ष घुटनो के बल झुका और उनसे भेंट की। वहा थोडी देर बैठ कर हाफिज़ो द्वारा हम कुरान का पाठ सुनते रहे। तदुपरान्त हम मदरसे के दक्षिण की ओर, जहा ख़दीजा बेगम के खेमे लगे थे, पहुचे। वहा हमारे लिये भोजन की व्यवस्था की गई थी। भोजन के उपरान्त हम पायन्दा सुल्तान बेगम के खेमे मे पहुचे और रात्रि वही व्यतीत की।

हमारे शिविर हेतु सर्वप्रथम नवरोज़ नामक बाग प्रदान किया गया था। वहा हमारे खेमे लगवाये गये। यहा हमने बेगमो से भेंट के बाद के दिन की रात्रि व्यतीत की किन्तु मुझे इस स्थान पर सुविधा न होने के कारण अली शेर बेग का महल प्रदान कर दिया गया। जब तक मैं हेरी मे रहा वही ठहरा रहा। एक-दो दिन उपरान्त मैं बागे जहा आरा मे पहुच कर बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा की सेवा मे उपस्थित होता था।

दावतें

कुछ दिन उपरान्त मुज़फ्फर मीर्ज़ा ने मुझे बुलवाया। वह बागे सुफेद में इतमिनान से ठहर चुका था। ख़दीजा बेगम भी वही थी। मेरे साथ जहागीर मीर्ज़ा भी गया। जब हम बेगम के समक्ष भोजन कर चुके तो मुज़फ़्फ़र मीर्ज़ा मुझे तरबख़ाने मे, जहा मदिरापान की महफ़िल आयोजित हुई थी, ले गया। इस भवन का निर्माण बाबर मीर्ज़ा[3] ने करवाया था। यह सुन्दर और छोटा-सा दो मजिला भवन उद्यान के मध्य मे स्थित था। इसकी ऊपरी मजिल के बनवाने मे बडा ही परिश्रम किया गया था। इसके चारो कोनो पर हुजरे[4] थे। दो हुजरो के बीच का स्थान एक शहनशीन[5] के समान था। इन हुजरो तथा शाहनशीनो के बीच मे एक बहुत बडा कमरा था जिसके चारो ओर चित्र बने हुए थे। यद्यपि इस भवन का

[1] यह वाक्य स्पष्ट नहीं है। फुफी बेगमें पायदा सुल्तान, ख़दीजा सुल्तान, अपाक सुल्तान तथा फ़ख़्र जहा बेगमें हो सकती हैं। वे सब की सब अबू सईद की पुत्रियां थीं।

[2] अभिवादन किया।

[3] अबुल कासिम बाबर मीर्ज़ा, मीर्ज़ा बाईसुंगर का पुत्र तथा शाहरुख़ मीर्ज़ा का पौत्र था। मीर्ज़ा ऊलूग़ बेग तथा उसके पुत्र अब्दुल्लतीफ़ की मृत्यु के उपरान्त जनवरी १४५२ ई० में सिंहासनारूढ हुआ। उसने ख़ुरासान को पूर्ण रूप से अपने अधिकार में कर लिया। उसकी मृत्यु २२ मार्च १४५७ ई० को हुई। उसकी मृत्यु के उपरान्त सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने ख़ुरासान पर अधिकार जमा लिया।

[4] कोठरियाँ, कमरे।

[5] दालान के पीछे ऊँचाई पर एक दूसरा दालान।

निर्माण बाबर मीर्ज़ा ने करवाया था किन्तु चित्र अबू सईद मीर्ज़ा ने बनवाये थे और इसमे उनके युद्धो को चित्रित किया गया था।

उत्तरी शाहनशीन म दो तूशुक एक दूसरे के समक्ष उत्तर की ओर बिछे थे। एक तूशुक पर मैं तथा मुजफ्फर हुसेन मीर्ज़ा बैठे तथा दूसरे पर सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा तथा जहागीर मीर्ज़ा बैठे। क्योकि हम लोग मुजफ्फर हुसेन मीर्ज़ा के घर मेहमान थे अत मुजफ्फर हुसेन मीर्ज़ा ने मुझे अपने से ऊपर बैठने के लिये स्थान दिया। मदिरा के प्याले भरे गये। साकियो को प्याले मेहमानो तक पहुचाने का आदेश हुआ। अतिथि लोग उसे आबेहयात[1] समझ कर पीने लगे। जब मदिरा का नशा अधिक चढ गया तो महफिल मे गरमी आ गई। उन्होने मुझे भी मदिरापान कराना चाहा और अपने साथ घसीटना चाहा। यद्यपि मैंने इस समय तक मदिरापान न किया था और उसके आनन्द एव स्वाद को भली भाति न जानता था किन्तु मुझे मदिरापान की इच्छा होने लगी थी और इस घाटी की सैर करने को मेरा दिल चाहने लगा था। मुझे मदिरापान से बाल्यावस्था मे कोई रुचि न थी। मुझे उसके आनन्द तथा नशे का कोई ज्ञान न था। कभी कभी मेरे पिता मुझसे मदिरापान करने के लिये कहते तो मैं कोई न कोई बहाना बना देता और यह पाप न करता। उनकी मृत्यु के उपरान्त ख्वाजा काज़ी के चरणो के आशीर्वाद से मैं पवित्र जीवन व्यतीत करता रहा। मैं उस समय सदिग्ध[2] भोजन का भी प्रयोग न करता था तो मदिरापान का पाप कर ही कैसे सकता था? अन्त म युवावस्था की मस्ती तथा वासना की तृप्ति हेतु म मदिरापान की ओर आकृष्ट हुआ तो उस समय कोई ऐसा न था जोकि मुझे आग्रह कर के पिलाता और न किसी को मेरी रुचि का ज्ञान था। यद्यपि मेरी हार्दिक इच्छा मदिरापान की होती थी किन्तु ऐसे काय को जिसका अभी तक न किया हो एकाएक ही प्रारम्भ कर देना मेरे लिये कठिन था। मैंने इस समय यह सोचा कि अब मीर्ज़ा लोग मुझसे आग्रह कर रहे हैं और हम हेरी सरीखे सुन्दर नगर मे हैं जहा भोग विलास की समस्त सामग्री उपलब्ध है तो यदि हम ऐसे स्थान पर भी मदिरापान न करेंगे तो फिर कब करेंगे? मैंने मदिरापान करने का सकल्प कर लिया किन्तु मैंने यह सोचा कि 'मैंने बदीउज़्ज़मान मीर्ज़ा के घर म उसके हाथ से जो मेरे बडे भाई के समान था मदिरा न पी थी। यदि मैं उसके छोटे भाई के घर म उसके हाथ से मदिरापान करता हूँ तो यह उसे अच्छा न लगेगा। यह सोच कर मैंने अपने असमजस को उनके समक्ष प्रस्तुत कर दिया। उन्होने इस कठिनाई को न्याय सगत समझते हुए उस महफिल मे मुझसे मदिरापान के लिये आग्रह न किया और यह निश्चय हुआ कि जब मैं दोनो मीर्ज़ाओ[3] के साथ हू तो मै उनके आग्रह पर मदिरापान करू।

उस महफिल मे गायको तथा वादको मे हाफिज हाजी तथा जलालुद्दीन बीणा बजाने वाला, गुलाम शादी का अनुज गुलाम बच्चा चग[4]-वादक उपस्थित थे। हाफिज हाजी ने बडा ही सुन्दर सगीत प्रस्तुत किया। हेरी वालो की प्रथानुसार वह धीरे धीरे मन्द स्वर म तथा लय से गाता रहा। जहागीर मीर्ज़ा के साथ एक समरकन्दी सगीतज्ञ मीर जान था जो बडे उच्च स्वर मे कठोर आवाज से बेसुरा अलापता था। जहागीर मीर्ज़ा ने मदिरा के नशे मे उससे गाने के लिये कहा। उसने बडे विचित्र स्वर म बडा ही बुरा गाना गाया। खुरासानी लोग बडे ही शिष्ट है। जो लोग उपस्थित थे उनम से कुछ लोग

१ अमृत।
२ वह भोजन जिसके विषय में सन्देह हो कि वह शरा के आदेशों के अनुकूल न होगा।
३ बदीउज़्ज़मान मीर्ज़ा तथा मुज़फ़्फ़र हुसेन मीर्ज़ा।
४ टेढे आकार का एक बाजा।

यह गाना सुनकर अपने कान पकडते थे और कुछ लोग मुख फेर लेते थे किन्तु मीर्ज़ा के कारण कोई मना नहीं कर सकता था।

शाम की नमाज के उपरान्त हम लोग तरबखाने से मुज़फ्फर मीर्ज़ा के शीत ऋतु के एक नव-निर्मित महल मे पहुचे। वहा यूसुफ अली ने मस्त होकर बडा सुन्दर नृत्य किया। उसे नृत्य के सिद्धान्तो का बडा ही उत्तम ज्ञान था। उसके नृत्य से महफिल मे बडी गरमी आ गई। मुज़फ्फर मीर्ज़ा ने अन्त मे उसे तलवार की पेटी, मेमने की खाल का एक जुब्बा[1] तथा एक सुरमई तीपूचाक घोडा प्रदान किया। जानक ने तुर्की गाना गाया। मीर्ज़ा के दो दासों ने जो बडे चाद तथा छोटे चाद के नाम से प्रसिद्ध थे, मस्त होकर बडे ही अनुचित व्यवहार किये। महफिल रात तक गरम रही। तदुपरान्त उपस्थित जन इधर उधर चले गये। मैं रात्रि मे वही ठहरा रहा।

कासिम बेग ने जब यह सुना कि मुझसे मदिरापान करने का आग्रह किया गया है तो उसने जुनून बेग के पास किसी को भेज कर मीर्ज़ाओ को परामर्श देने का आग्रह किया। उसने मुज़फ्फर मीर्ज़ा से बडे स्पष्ट शब्द कहे। फलत मीर्ज़ा लोगो ने मुझसे मदिरापान का आग्रह न करने के विषय मे सकल्प कर लिया।

बदीउज्जमान मीर्ज़ा ने यह सुनकर कि मुज़फ्फर मीर्ज़ा ने मेरी दावत की है, जहा आरा नामक बाग मे मुकव्वीखाने मे एक दावत का आयोजन किया। वहा उसने मेरे साथ मेरे कुछ वीरो तथा विश्वासपात्रों को भी बुलवाया। मेरे विश्वासपात्र मेरे कारण मदिरापान न कर सकते थे। यदि कभी कभी वे मदिरापान की इच्छा करते तो ३०-४० दिन उपरान्त द्वार बन्द करके मदिरापान करते और सर्वदा बडे भयभीत रहते थे। इस प्रकार के लोग जब आमत्रित किये गये तो उन्होने बडी सावधानी से मदिरापान किया। कभी वे मेरा ध्यान किसी अन्य ओर कर देते और कभी हाथ से छुपा कर बडी सावधानी से पीते, यद्यपि मैंने इस बात की अनुमति दे दी थी कि वे लोग इस महफिल मे प्रचलित प्रथा का पालन करें, कारण कि यह दावत एक ऐसे व्यक्ति द्वारा आयोजित हुई थी जो मेरे पिता तथा बडे भाई के समान था। . [2]

उस दावत मे भुना हुआ काज लाया गया। क्योकि मैं पक्षियो को काटना एव टुकडे-टुकडे करना न जानता था, अत मैंने उसे उसी प्रकार छोड दिया। मीर्ज़ा ने पूछा, "क्या तुम्हें यह पसन्द नही है?" मैंने कहा, 'मैं इसे भली भाति काट नही सकता।" इस पर बदीउज्जमान मीर्ज़ा ने उस काज के, जो मेरे सामने था, टुकडे-टुकडे करके मेरे समक्ष रख दिये। इन बातो मे वह अद्वितीय था। दावत के उपरान्त उसने मुझे एक जडाऊ कमर में बाधने की कटार, एक चार कब[3] तथा एक तीपूचाक प्रदान किया।

बाबर का हेरी की सैर करना

जब तक मैं हेरी मे रहा, रोज़ाना किसी न किसी नये स्थान की सैर को जाया करता था। इन यात्राओ मे यूसुफ अली कूकूल्दाश मेरा मार्गदर्शक हुआ करता था। जहाँ कहीं हम लोग ठहरते वह हमारे लिये भोजन का प्रबन्ध किया करता था। उन चालीस दिनो मे सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा की खानकाह के अतिरिक्त कोई ऐसा स्थान न रह गया होगा जिसकी हमने सैर न कर ली हो।

१ एक प्रकार का चुगा अथवा लम्बा अँगरखा।
२ आगे के कुछ शब्द स्पष्ट नहीं।
३ जरदोज़ी के वस्त्र।

मैंने गाजुरगाह[1], अली शेर के बागीचे, जवारे कागज़, तख्त आस्ताना, पुले गाह, कहदस्तान, बागे नज़रगाह, नेमताबाद, ख्याबाने गुज़रगाह, सुल्तान अहमद मीर्ज़ा का हजीरा[2], तख्ते सफर, तख्ते नवाई, तख्ते बरगीर, तख्ते हाजी बेग, तख्ते बहाउद्दीन उमर, तख्ते शेख जैनुद्दीन, मौलाना अब्दुर्रहमान जामी[3] का मज़ार एव मकबरा[4], नमाज़ गाहे मुख्तार[5], मछलियो के हौज़[6], साके सुलैमान[7], बुलोरी जिसे अबुल वलीद[8] ने ईजाद किया होगा, इमाम फख़्र[9] (का मकबरा), ख्याबान बाग, मीर्ज़ा का मदरसा तथा मकबरा, गुहर शाद बेगम[10] का मदरसा तथा मकबरा, जामा मस्जिद, कौओ का बाग, नव रोज़ बाग, जुबैदा[11] बाग, सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा द्वारा निर्मित आक सरा[12], जो एराक द्वार के बाहर थी, पूरान[13] धनुर्धरो का चबूतरा, चर्ग चरागाह, अमीर वाहिद[14] (का मकबरा), मालान-पुल[15], ख्वाजा ताक, सफेद बाग, तरब खाना, बागे जहाआरा, कूश्क[16], मुकव्वी खाना, सौसन[17] खाना, बारह बुर्ज, जहाआरा के उत्तर का बडा हौज़ और उसके चारो ओर चार भवन, किले के पाच फाटक—मलिक, एराक, फीरोज़ाबाद, खूश तथा कीपचाक फाटक, चार सू, शेखुल इस्लाम का मदरसा, मलिक की जामा मस्जिद, बागे शहर, बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा का मदरसा जो अजील नहर पर था, अली शेर बेग के महल जहाँ हम निवास करते थे और जो उनसीया कहलाते थे, उसका मकबरा तथा मस्जिद जो कुदसिया कहलाती थी, उसका मदरसा तथा खानकाह जिसे लोग खलासिया तथा इख्लासिया कहते थे, उसका हम्माम तथा दारुश्शफा जिसे शफाइया कहते थे, इन सब की अल्प समय मे मैंने सैर की।

मासूमा सुल्तान से बाबर का विवाह

सम्भवत उन्ही परेशानी के दिनो[18] मे हबीबा सुल्तान बेगम जो सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की सब से

१ ख्वाजा अब्दुल्लाह अन्सारी (मृत्यु ६ रबी-उल अव्वल ४८१ हि०, २ जुलाई १०८८ ई०) का मकबरा हेरी के उत्तर में लगभग २ मील पर है।
२ हाता अथवा कोई सुन्दर भव्य भवन।
३ मौलाना नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी फ़ारसी के बड़े प्रसिद्ध कवि तथा सूफ़ी हुये हैं। उनका जन्म १४१४ ई० तथा मृत्यु १४६२ ई० में हुई।
४ जामी का मकबरा हेरी की ईदगाह मे था।
५ सम्भवतः मुसल्ला।
६ हेरी से लगभग ५ कोस पर।
७ हेरी के उत्तर में।
८ मृत्यु २३२ हि० (८४७ ई०)।
६ इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी, मृत्यु ६०६ हि० (१२१० ई०)।
१० गुहर शाद तीमूर के पुत्र शाहरुख की पत्नी थी। उसकी मृत्यु ८६१ हि० (१४५७ ई०) में हुई।
११ सम्भवतः हारूनुर्रशीद की पत्नी की ओर सकेत है।
१२ सफ़ेद भवन।
१३ बहुत से प्रसिद्ध लोगों का निवास स्थान जिनमें मौलाना जलालुद्दीन पूरानी (मृत्यु ८६२ हि०, १४५७-५८ ई०, शेख़ जमालुद्दीन अबू सईद (मृत्यु ६२१ हि०, १५१५ ई०) इत्यादि सम्मिलित हैं।
१४ इनका मकबरा ३५ या ३७ हि० (६५६ ई० या ६५८ ई०) का बताया जाता है।
१५ हेरी की एक नहर।
१६ खूश तथा कीपचाक फाटक के मध्य में।
१७ एक प्रकार का नीले रंग का फूल जिसकी पत्ती ज़बान के समान होती है।
१८ जब समरकन्द तथा अन्दिजान उसके हाथ से निकल चुके थे।

छोटी पुत्री मासूमा सुल्तान बेगम की माता थी, अपनी पुत्री को हेरी लाई होगी। एक दिन जब मैं अपनी आका से भेंट करने गया तो मासूमा सुल्तान बेगम भी अपनी माता के साथ वहीं आई। वह मुझे देखते ही मेरी ओर अत्यधिक आकृष्ट हो गई। दोनों ओर से समाचार वाहक भेजे गये। मेरी आका तथा मेरी यीनका ने यह निश्चय किया कि हबीबा सुल्तान बेगम अपनी पुत्री को मेरे काबुल पहुँचने के उपरान्त लेकर पहुँच जाये। मैं पायन्दा सुल्तान बेगम को आका तथा हबीबा सुल्तान बेगम को यीनका कहा करता था।

बाबर का खुरासान से प्रस्थान

मुहम्मद बरन्दूक बेग तथा जुन्नून अरगून ने मुझसे यहीं शीत ऋतु व्यतीत करने के लिये आग्रह किया था किन्तु मेरे लिये उचित स्थान की व्यवस्था न की थी और न तत्सम्बन्धी अन्य प्रबन्ध कराये थे। शीत ऋतु आ गई। हमारे तथा काबुल के बीच के पर्वतों पर बर्फ गिरने लगी और मैं काबुल के विषय में चिंतित रहने लगा। हमारे लिये न तो शीत ऋतु व्यतीत करने के लिये वहाँ कोई स्थान था और न कोई अन्य प्रबन्ध। आवश्यकतावश हम कुछ कह भी न सकते थे किन्तु विवश होकर हम हेरी से चल दिये।

शीत ऋतु के लिये उचित स्थान की व्यवस्था के बहाने से हम लोग नगर में ७ शाबान (२४ दिसम्बर १५०६ ई०) को रवाना हो गये और बादगीस के समीप पहुँच गये। हम इतने धीरे-धीरे तथा आराम से यात्रा कर रहे थे कि मीर गयास के लंगर से कुछ दूर उपरान्त ही रमजान के चाँद के दर्शन हो गये। हमारे वीरा में से बहुत से लोग, जो विभिन्न कार्यों के लिये गये हुए थे, हमारे पास आ गये। कुछ लोग हमारे काबुल पहुँचने के २० दिन अथवा एक मास बाद पहुँचे। कुछ लोग हेरी में ही रुक गये और मीर्ज़ा की सेवा में प्रविष्ट हो गये। इनमें से एक सैयिदीम अली दरबान था। वह बदीउज्ज़मान का सेवक हो गया। मैंने खुसरो शाह के किसी सेवक के प्रति इतनी कृपा दृष्टि न प्रदर्शित की थी जितनी उसके प्रति। जब जहाँगीर मीर्ज़ा ने गज़नी छोड़ दिया था तो मैंने गज़नी सैयिदीम अली को ही प्रदान कर दिया था। जब उसने सेना सहित प्रस्थान किया तो अपने छोटे भाई दोस्त अंजू शेख को वहाँ छोड़ आया। खुसरो शाह के सेवकों में वास्तव में सैयिदीम अली दरबान तथा मुहिब अली कूरची से बढ़कर कोई अन्य व्यक्ति न था। सैयिदीम अली बड़ा ही चरित्रवान् तथा शिष्ट व्यक्ति था। वह तलवार चलाने में बड़ा ही कुशल तथा प्रत्येक कार्य को बड़े नियमित रूप से करता था। उसका घर कभी भी महफिलों तथा समारोहों से शून्य न रहता था। वह बड़ा ही दानी एवं हास्यप्रिय व्यक्ति था। उसका केवल दोष यही था कि वह व्यभिचारी एवं मुग़लिम[1] था। वह धर्म की ओर भी उपेक्षा किया करता था। उसमें विश्वास-घातिया की भी भावनायें पाई जाती थीं। इसे कुछ लोग उसकी हास्यप्रियता का कारण बताते थे किन्तु इसमें कुछ तथ्य भी था। जब बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा ने शैबाक खाँ को हेरी पर अधिकार जमा लेने दिया और शाह बेग अरगून के पास चला गया तो उसने सैयिदीम अली को इस कारण कि वह मीर्ज़ा से कुछ तथा शाह बेग से कुछ बातें करता था, हरमन्द नदी में डलवा दिया था। मुहिब अली का वर्णन बाद में किया जायेगा।

1 गुदामैथुन, लौंडे बाज़ी।

पर्वतीय यात्रा

मीर गयास के लगर[1] से हम लोग गर्जिस्तान के सीमान्त के ग्रामो से होते हुए चच-चरान पहुँचे। लगर से लेकर गर्जिस्तान तक बर्फ ही बर्फ दिखाई पडती थी। आगे तो वह और भी अधिक थी। चच-चरान के समीप वह घोडे के घुटने तक गहरी थी। चच-चरान जुन्नून अरगून के अधीन था। वहाँ उसका सेवक मीर जान ईरदी हाकिम था। उससे हम लोगों ने जुन्नून बेग की समस्त खाद्य सामग्री को मूल्य दे कर क्रय कर लिया। १-२ पडाव के उपरान्त बर्फ और भी अधिक हो गई थी, और घोडे के रकाब तक पहुँचने लगी थी। बहुत से स्थानो पर तो घोडे के पाँव भूमि न छू पाते थे।

हमने मीर गयास के लगर पर काबुल जाने के मार्ग के विषय मे परामर्श किया था। बहुत से लोग इस बात से सहमत थे कि, "यह शीत ऋतु है, पर्वतीय मार्ग बडा ही कठिन एव खतरनाक है। कन्धार से होकर जो मार्ग जाता है यद्यपि कुछ दूर का है किन्तु सरल एव सुरक्षित है।" कासिम बेग ने कहा कि, "वह मार्ग बडा लम्बा है, इसी मार्ग से यात्रा करनी चाहिये।" उसके अत्यधिक बहस करने पर हम लोग पर्वतीय मार्ग से चल दिये।

पीर सुल्तान नामक एक पशाई हमारा मार्गदर्शक था। इसे उसकी वृद्धावस्था का कारण समझिये अथवा दुस्साहस और या बर्फ की अधिकता कि वह मार्ग भूल गया और हमें मार्ग न दिखा सका। क्योकि हमने यह मार्ग कासिम बेग के आग्रह पर चुना था अत उसने तथा उसके पुत्र ने अपनी मर्यादा की रक्षा हेतु घोडे से उतर कर बर्फ मे मार्ग टटोला और जब मार्ग मिल गया तो उसने पुन हमारा पथप्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया। एक दिन तो बर्फ इतनी अधिक थी और मार्ग इतना अनिश्चित था कि हम लोग आगे न बढ सके। जब कुछ भी सम्भव न हो सका तो हम लोग वापिस लौट गये और एक स्थान पर जहाँ कुछ ईंधन उपलब्ध था, उतर पडे। ६०-७० अच्छे आदमियो को चुनकर हमने अपने मार्ग में स्थित घाटी के नीचे इस आशय से भेजा कि यदि उन्हें कोई हजारा जो घाटी की तलहटी मे शीत ऋतु व्यतीत कर रहा हो, मिल जाय तो उसे ले आये ताकि वह हमें मार्ग दिखा सके। वे लोग ३-४ दिन बाद वापस आये अत हम लोग उस समय तक आगे न बढ सके। वे किसी मार्ग-दर्शक को न ला सके। एक बार पुन हमने सुल्तान पशाई को आगे भेजा और ईश्वर पर भरोसा कर के उसी माग पर चल दिये जहाँ से हम वापस आये थे और जहाँ से हम रास्ता भूल गये थे। इन दिनो बडे ही कष्ट भोगने पडे। ऐसे कष्ट मैंने अपने जीवन मे बहुत कम भोगे थे। इन कष्टो की अवस्था मे मैंने निम्नाकित शेर की रचना की

शेर

"भाग्य का कोई ऐसा कष्ट अथवा हानि नही है जिसे मैंने न भोगा हो,
इस टूटे हुए हृदय ने सभी को सहन किया है। हाय ! कोई ऐसा कष्ट भी है,
जिसे मैंने न भोगा हो।"

हम लोग लगभग एक सप्ताह तक बर्फ पर यात्रा करते तथा बर्फ को रौदते रहे और दो या तीन मील प्रति दिन से अधिक आगे न बढ पाते थे। मैं भी अपने १०-१५ घरेलू सैनिको के साथ बर्फ को रौदता रहता था। कासिम बेग उसका पुत्र तीमरी बीरदी, कम्बर अली तथा उनके २-३ सेवक भी यही कार्य करते थे। ये लोग ७ ८ गज आगे बढ जाते, बर्फ मे मार्ग टटोलते और प्रत्येक कदम पर कमर अथवा सीने

१ लगर : वह स्थान जहाँ से दरिद्रियों को भोजन बाँटा जाता है।

तक वर्फ मे धँस जाते थे। कुछ कदम चल कर जो व्यक्ति आगे होता वह थक कर खडा हो जाता था और दूसरा आगे बढता था। जब १०, १५, २० आदमी वर्फ को अच्छी तरह रौंद लेते थे तब एक घोडे को उस पर यात्रा कराई जा सकती थी। जो घोडा आगे वढता वह रकाव तक धस जाता और १०-१२ कदम से आगे न बढ पाता और उसे रोक दिया जाता और दूसरे घोडे को आगे बढाया जाता था। जब हम १० १५, २० कदम वर्फ अच्छी तरह रौंद लेते थे और घोडा का इस प्रकार आगे बढा लेते थे तो बेग तथा प्रसिद्ध वीर इस मार्ग पर सिर झुका कर आगे बढते थे। इस अवसर पर किसी को न तो आदेश दिया जा सकता था और न किसी से जबरदस्ती की जा सकती थी। लोग स्वेच्छा से तथा स्वय ही इस कठिन कार्य को करते थे। इस प्रकार वर्फ को रौंदते हुए ३-४ दिन मे हम उस कठिन स्थान से खवाले कूती[1] नामक गुफा मे पहुँचे जोकि जरींन दर्रे के नीचे थी।

उस रात्रि मे इतनी अधिक वर्फ गिरी और इतनी तीव्र वायु चली कि प्रत्येक व्यक्ति अपने प्राणा का भय करने लगा। जिस समय हम लोग खवाल पहुँचे तो तूफान ने विकराल रूप धारण कर लिया था। उस भाग के लोग गार को खावाक कहते हैं। हम लोग उसके मुँह पर उतर पडे। वहाँ बडी गहरी वर्फ पडी हुई थी और केवल एक आदमी के चलने का मार्ग वडी कठिनाई से मिल सकता था। वर्फ के रौंदने तथा मार्ग निकालने के कारण घोडों के लिये गड्ढे बन गये थे। दिन बडे छोटे थे। कुछ लाग दिन के प्रकाश ही मे गुफा तक पहुँच गये और अन्य लोग सायकाल की नमाज़ तथा सोने के समय की नमाज़ तक आते रहे। इसके बाद जो पहुँचे उन्हें जहा भी स्थान मिला वे वही उतर पडे। जब पौ फटी तो भी कुछ लोग अपने घोडों की जीनो पर ही थे।

वह गुफा वडी छोटी थी। मैंने एक फडवा लेकर उसके मुख पर एक बैठने की चटाई के बराबर स्थान खोदा। सीने तक खोद लेने के उपरान्त भी भूमि न दिखाई पडी। जब मैं उसके भीतर बैठ गया तब मुझे हवा से कुछ शरण मिल सकी। मैं गुफा मे प्रविष्ट न हुआ यद्यपि लोग मुझसे आग्रह करते रहे। मैंने सोचा कि "जब मेरे कुछ आदमी वर्फ तथा तूफान मे फँसे हुए है ऐसी अवस्था मे यह कैसे हो सकता है कि मैं उस गरम स्थान मे शरण लूँ। मेरा समस्त दल बाहर कष्ट भोग रहा हो और मैं भीतर आराम से सोऊँ? यह सौजन्यता थी मित्रता के अनुकूल नही। जो कुछ भी कष्ट एव कठिनाई हो मैं उसका मुकाबला करूँगा। "फारसी की एक लोकोक्ति है कि, "मित्रों के साथ मरना ईद के समान होता है।[2]" रात्रि की नमाज के समय तक मैं उसी स्थान पर जिसे मैंने खोदकर निकाला था, बर्फ के बीच मे बैठा रहा। बर्फ इतनी तेजी से गिर रही थी कि मेरे सिर, पीठ तथा कानो के चारो ओर चार अगुल बर्फ जम गई। उस रात्रि की ठड का मेरे कानो पर बडा कुप्रभाव हुआ। रात्रि की नमाज के समय कोई गुफा को बडी भाव घानी मे देखकर चिल्लाया कि, "यह बडी ही विस्तृत गुफा है और इसमे प्रत्येक व्यक्ति आ सकता है।" यह सुनकर मैंने अपने ऊपर से बर्फ की छत को हटाया और जो वीर मेरे निकट थे, उन सब को भीतर प्रविष्ट होने के लिये आमन्त्रित किया। वहाँ ५०-६० आदमियों के लिये स्थान था। लोग अपनी खाद्य-सामग्री भी वही ले गये, ठडा मास, भुना हुआ अनाज तथा जो कुछ भी उनके साथ था। उस ठडे तथा परेशानी के स्थान की अपेक्षा यह गरम स्थान बडा ही आनन्ददायक तथा शातिपूर्ण था।

दूसरे दिन वर्फ तथा हवा रुक गई। हम लोग जल्दी ही रवाना हो गये और बर्फ को रौंद कर

१ भाग्यवान गुफा।
२ "मर्ग ब यारान ईद अस्त"।

मार्ग का पता लगाते हुए अग्रसर हुए। मार्ग पर्वत के एक बाजू से घूम कर जरीन दर्रे की ओर जाता था। हमने उस मार्ग से यात्रा न की अपितु सीधे घाटी की तलहटी की ओर रवाना हुए। रात्रि होते-होते हम (बक्काक) दर्रे के उस पार पहुँच गये। हमने घाटी के मुह पर रात्रि व्यतीत की। वह रात्रि भी बडी ही ठडी थी और बडे ही कष्ट से हमने उसे व्यतीत किया। बहुत से आदमियो के हाथ पाँव ठिठुर कर रह गये। उस रात्रि की ठड के कारण कीपा के दोना पाँव, सीऊ दूक तुर्कमान के दोनों हाथ तथा आही के दोनो पाव नष्ट हो गये। दूसरे दिन प्रात काल हम लोग घाटी से रवाना हो गये। ईश्वर पर भरोसा कर के हम लोग सीधे अत्यन्त ढालू मार्ग से जहा अचानक बडे-बडे खड्ड-तथा ढाल मिलते थे, रवाना हो गये यद्यपि हम यह जानते और देखते थे कि यह ठीक माग नही है। सायकाल की नमाज़ के समय हम लोग घाटी के उस पार पहुँच गये। किसी भी वृद्ध से वृद्ध की स्मृति म यह बात न होगी कि इतनी गहरी बर्फ मे किसी ने उस दर्रे को पार किया होगा। श यद ही वर्ष के उस भाग मे किसी ने कभी उस मार्ग पर यात्रा करने के विषय मे सोचा होगा। यद्यपि बर्फ की अधिकता के कारण हमको कुछ दिना तक अत्यधिक कष्ट भोगने पडे किन्तु अन्त मे हम लोग अपने लक्ष्य पर पहुँच गये। यदि ऐसा न होता तो फिर हम कैसे बिना मार्ग के तथा खड्ड एव ढाल से परिपूर्ण स्थान पर यात्रा करते।

शेर

"प्रत्येक अच्छा और बुरा जो सामने आता है,
यदि तुम भली-भाति सहन कर जाओ तो यह प्रभु की असीम अनुकम्पा है।"

यकाऊलाग वालो को हमारे आगमन एव वहाँ पडाव करने के समाचार तुरन्त प्राप्त हा गये। तत्काल हमें गरम मकान, मोटी-मोटी भेडें, घोडो के लिये दाना और चारो ओर आग के लिये ईंधन मिल गया। उस बर्फ तथा ठडक से निकल कर ऐसे गाव मे जहाँ इस प्रकार के गरम मकान तथा जहाँ इतना आराम हो, पहुँचने के आनन्द का अनुमान केवल वही लोग लगा सकते है जाकि हमारी कठिनाइयो एव कष्टा की कल्पना कर सकते हैं। हम एक दिन यकाऊलाग मे निश्चिन्त होकर आराम से ठहरे रहे। दूसरे दिन हमने दो यीगाच[1] की यात्रा कर के पडाव किया। दूसरे दिन रमज़ान के बाद की ईद[2] थी। बामियान स होते हुए शिब्रतू को पार करके हम लोग जगलीक पहुँचने के पूव उतर पडे।

तुर्कमान हज़ारा पर दूसरा आक्रमण

तुर्कमान हज़ारा लोग अपनी स्त्रिया तथा छोटे-छोटे बालका सहित हमारे मार्ग मे शीत ऋतु व्यतीत कर रहे थे और उन्हें हमारी कोई भी सूचना न थी। जब हम लोग उनके मवेशिया के बाडे तथा खेमा के पास पहुँच गये तो हमने इनमे से दो या तीन को लूट लिया। हजारा लोग अपने बालका तथा घर-बार आदि सम्पत्ति को छोडकर भाग गये। आगे से समाचार प्राप्त हुए कि एक ऐसे स्थान पर, जाकि बडा सकरा है, हजारा लोगा का एक दस्ता बाणा की वर्षा कर रहा है और इस प्रकार माग रोक लिया है कि कोई आगे नही बढ सकता। हम लाग शीघ्र उस ओर बढे किन्तु हमें कोई सकरा

१ १०-१२ मील।
२ १४ फ़रवरी १५०७ ई०, बाबर की २४वीं वर्ष गाठ।

मार्ग न मिला। थोड़े से हजारा लोग बड़े ही कुशल सैनिकों के समान एक पहाड़ी पर खड़े हुए बाण चला रहे थे।[1]

मैंने स्वयं हजारा लोगों की कुछ भेड़ें एकत्र कीं और उन्हें यारक तगाई को सौंप दिया और आगे बढ़ गया। पहाड़ियों तथा घाटियों में घोड़ों एवं भेड़ों को अपने सामने भगाते हुए हम लोग तीमूर बेग के लंगर में पहुँचे और वहीं उतर पड़े। हमने १४-१५ हजारा चोरों को बन्दी बना लिया था। मैंने यह संकल्प कर लिया था कि अगले पड़ाव पर पहुँच कर उन्हें अत्यधिक कष्ट एवं वेदना देकर उनकी हत्या करा दूँगा ताकि समस्त डाकुओं और चोरों के लिये वह दंड चेतावनी का कार्य करे किन्तु कासिम बेग को मार्ग में उन पर तरस आ गया और उसने समय के प्रतिकूल कृपा प्रदर्शित करते हुए उन्हें मुक्त करा दिया। दयाभाव के कारण अन्य बन्दियों को भी मुक्त कर दिया गया।

शेर

"दुष्टों के साथ नेकी करना ऐसा है
जैसा नेकों के साथ बुराई करना,
ऊसर में बालछड़ नहीं पैदा होती,
वहाँ सदाचार के बीजों को नष्ट मत करो।"[2]

काबुल में षड्यंत्र

जिस समय हम तुर्कमान हज़ारा लोगों पर आक्रमण कर रहे थे, समाचार प्राप्त हुए कि मुहम्मद हुसैन मीर्ज़ा दूगलात तथा सुल्तान सजर बरलास ने उन मुग़लों को, जो काबुल में रह गये थे, अपनी ओर मिला लिया है और मीर्ज़ा खान[3] को बादशाह बना लिया है। उन्होंने किले को घेर लिया है। और यह समाचार प्रसिद्ध कर दिये कि बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा तथा मुज़फ्फर मीर्ज़ा ने मुझे बन्दी बनाकर इख्तियारुद्दीन के किले में, जिसे आजकल अलाकूरगान कहते हैं, भेज दिया है।

काबुल के किले की देख-रेख के लिये मैं पशागर के मुल्ला बाबा, खलीफा, मुहिब अली कूरची, अहमद यूसुफ तथा अहमद कासिम को नियुक्त कर गया था। उन लोगों ने बड़ी ही उत्तम सेवाएं प्रदर्शित कीं और किले को दृढ़ बनाकर उसकी रक्षा करते रहे।

बाबर का काबुल की ओर अग्रसर होना

तीमूर बेग के लंगर से हमने कासिम बेग के एक सेवक मुहम्मद अन्दिजानी द्वारा काबुल के बेगों के पास अपने आगमन का लिखित वर्णन भेजा तथा निम्नांकित योजना की सूचना कराई

जब हम लोग गूरबन्द के सकरे मार्ग को पार कर लेंगे तो हम उनके ऊपर अचानक टूट पड़ेंगे। हमारे आगमन का चिह्न यह होगा कि हम लोग मीनार नामक पहाड़ी पार करने के बाद आग जला देंगे।

१ यहाँ पर एक तुर्की पद्य है जिसे मुश्किल से ही बाबर की रचना बताया जा सकता है। यह पद्य बाबर के इस वर्णन के प्रसंग में ठीक बैठता भी नहीं। इसका अनुवाद नहीं किया गया।
२ सादी की 'गुलिस्ताँ' से उद्धृत, प्रथम अध्याय चौथी कहानी।
३ मीर्ज़ा खान वैस।

मार्ग का पता लगाते हुए अग्रसर हुए। मार्ग पर्वत के एक बाज़ू से घूम कर ज़र्रीन दर्रे की ओर जाता था। हमने उस मार्ग से यात्रा न की अपितु सीधे घाटी की तलहटी की ओर रवाना हुए। रात्रि होते-होते हम (बक्काक) दर्रे के उस पार पहुँच गये। हमने घाटी के मुह पर रात्रि व्यतीत की। वह रात्रि भी बडी ही ठडी थी और बडे ही कष्ट से हमने उसे व्यतीत किया। बहुत से आदमियो के हाथ पाँव ठिठुर कर रह गये। उस रात्रि की ठड के कारण कीपा के दोना पाँव, सीऊन्दूक तुर्कमान के दोना हाथ तथा आही के दोनो पाव नष्ट हो गये। दूसरे दिन प्रात काल हम लोग घाटी से रवाना हो गये। ईश्वर पर भरोसा कर के हम लोग सीधे अत्यन्त ढालू मार्ग से जहा अचानक बडे-बडे खड्ड-तथा ढाल मिलते थे रवाना हो गये, यद्यपि हम यह जानते और देखते थे कि यह ठीक मार्ग नही है। सायकाल की नमाज़ के समय हम लोग घाटी के उस पार पहुँच गये। किसी भी वृद्ध से वृद्ध की स्मृति मे यह बात न होगी कि इतनी गहरी बर्फ म किसी ने उस दर्रे को पार किया होगा। श यद ही वर्ष के उस भाग म किसी ने कभी उस मार्ग पर यात्रा करने के विषय मे सोचा होगा। यद्यपि बर्फ की अधिकता के कारण हमको कुछ दिनो तक अत्यधिक कष्ट भोगने पडे किन्तु अन्त मे हम लोग अपने लक्ष्य पर पहुँच गये। यदि ऐसा न होता तो फिर हम कैसे बिना मार्ग के तथा खड्ड एव ढाल से परिपूर्ण स्थान पर यात्रा करते।

शेर

"प्रत्येक अच्छा और बुरा जो सामने आता है,
यदि तुम भली भाति सहन कर जाओ तो यह प्रभु की असीम अनुकम्पा है।"

यकाऊलाग वालो को हमारे आगमन एव वहाँ पडाव करने के समाचार तुरन्त प्राप्त हो गये। तत्काल हमें गरम मकान, मोटी-मोटी भेडें, घोडा के लिये दाना और चारो ओर आग के लिये ईंधन मिल गया। उस बर्फ तथा ठडक से निकल कर ऐसे गाव मे जहा इस प्रकार के गरम मकान तथा जहाँ इतना आराम हो, पहुँचने के आनन्द का अनुमान केवल वही लोग लगा सकते है जोकि हमारी कठिनाइयो एव कष्टा की कल्पना कर सकते है। हम एक दिन यकाऊलाग मे निश्चिन्त होकर आराम से ठहरे रहे। दूसरे दिन हमने दो यीगाच[1] की यात्रा कर के पडाव किया। दूसरे दिन रमज़ान के बाद की ईद[2] थी। बामियान से होते हुए शिब्रतू को पार करके हम लोग जगलीक पहुँचने के पूर्व उतर पडे।

तुर्कमान हज़ारा पर दूसरा आक्रमण

तुर्कमान हज़ारा लोग अपनी स्त्रिया तथा छोटे-छोटे बालका सहित हमारे मार्ग मे शीत ऋतु व्यतीत कर रहे थे और उन्हें हमारी कोई भी सूचना न थी। जब हम लोग उनके मवेशिया के बाडे तथा खेमा के पास पहुँच गये तो हमने इनमे से दो या तीन को लूट लिया। हज़ारा लोग अपने बालका तथा घर-बार आदि सम्पत्ति को छोडकर भाग गये। आगे से समाचार प्राप्त हुए कि एक ऐसे स्थान पर, जोकि बडा सकरा है, हज़ारा लोगा का एक दस्ता बाणा की वर्षा कर रहा है और इस प्रकार मार्ग रोक लिया है कि कोई आगे नही बढ सकता। हम लोग शीघ्र उस ओर बढे किन्तु हमें कोई सकरा

१ १०-१२ मील।
२ १४ फरवरी १५०७ ई०, बाबर की २४वीं वर्ष गाठ।

मार्ग न मिला। थोडे से हज़ारा लोग बडे ही कुशल सैनिको के समान एव पहाडी पर खडे हुए बाण चला रहे थे।

मैंने स्वय हज़ारा लोगो की कुछ भेडें एकत्र की और उन्हें यारक तगाई को सौप दिया और आगे बढ गया। पहाडियो तथा घाटियो मे घोडा एव भेडा को अपने सामने भगाते हुए हम लोग तीमूर बेग के लगर म पहुँचे और वही उतर पडे। हमने १४-१५ हजारा चोरो को बन्दी बना लिया था। मैंने यह सकल्प कर लिया था कि अगले पडाव पर पहुँच कर उन्हें अत्यधिक कष्ट एव वेदना देकर उनकी हत्या करा दूंगा ताकि समस्त डाकुओ और चोरा के लिये वह दड चेतावनी का कार्य करे किन्तु कासिम बेग को मार्ग म उन पर तरस आ गया और उसने समय के प्रतिकूल कृपा प्रदर्शित करते हुए उन्हें मुक्त करा दिया। दयाभाव के कारण अन्य बन्दियो को भी मुक्त कर दिया गया।

शेर

"दुष्टा के साथ नेकी करना ऐसा है
जैसा नेका के साथ बुराई करना,
ऊसर मे बालछड नही पैदा होती,
वहाँ सदाचार के बीजो को नष्ट मत करो।"[२]

काबुल में षड्यन्त्र

जिस समय हम तुर्कमान हजारा लोगा पर आक्रमण कर रहे थे, समाचार प्राप्त हुए कि मुहम्मद हुसैन मीर्ज़ा दूगलात तथा सुल्तान सजर बरलास ने उन मुगूला को, जो काबुल मे रह गये थे, अपनी ओर मिला लिया है और मीर्ज़ा खान[३] को बादशाह बना लिया है। उन्होने किले को घेर लिया है। और यह समाचार प्रसिद्ध कर दिये कि बदीउज्ज़मान मीर्ज़ा तथा मुजफ्फर मीर्ज़ा ने मुझे बन्दी बनाकर इख्तियारुद्दीन के किले में, जिसे आजकल अलाकूरगान कहते है, भेज दिया है।

काबुल के किले की देख-रेख के लिये मैं पशागर के मुल्ला बाबा, खलीफा मुहिब अली कूरची, अहमद यूसुफ तथा अहमद कासिम को नियुक्त कर गया था। उन लोगो ने बडी ही उत्तम सेवाए प्रदर्शित की और किले को दृढ बनाकर उसकी रक्षा करते रहे।

बाबर का काबुल की ओर अग्रसर होना

तीमूर बेग के लगर से हमने कासिम बेग के एक सेवक मुहम्मद अन्दिजानी द्वारा काबुल के बेगा के पास अपने आगमन का लिखित वर्णन भेजा तथा निम्नांकित योजना की सूचना कराई

जब हम लोग गूरबन्द के सकरे मार्ग को पार कर लेंगे तो हम उनके ऊपर अचानक टूट पडेंगे। हमारे आगमन का चिह्न यह होगा कि हम लोग मीनार नामक पहाडी पार करने के बाद आग जला देंगे।

१ यहाँ पर एक तुर्की पद्य है जिसे मुश्किल से ही बाबर की रचना बताया जा सकता है। यह पद्य बाबर के इस वर्णन के प्रसंग में ठीक बैठता भी नहीं। इसका अनुवाद नहीं किया गया।
२ सादी की 'गुलिस्तां' से उद्धृत, प्रथम अध्याय चौथी कहानी।
३ मीर्ज़ा खान वैस।

तुम लोग भी उसका उत्तर भीतरी किले के पुराने कश्क[1] के ऊपर जहाँ अब खज़ाना है आग जला कर देना ताकि हमें यह विश्वास हो जाय कि तुम्हें हमारे आगमन की सूचना मिल गई है। हम लोग अपनी ओर से अग्रसर होंगे और तुम लोग अपनी दिशा से। तुम लोग जो कुछ भी कर सको, उसकी ओर से उपेक्षा न करना। यह लिखकर मुहम्मद अन्दिजानी को भेज दिया गया।

दूसरे दिन प्रात काल हम लोग लगर से रवाना होकर उश्तुर शहर के समक्ष उतरे। दूसरे दिन प्रात काल हमने गूरबन्द के दर्रे को पार किया और सरे पुल के सामने उतर पड़े। वहाँ हमने अपने घोडा को जल पिलाया और आराम कराया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त हम लोग वहा से पुन रवाना हो गये। हमारे तूतकावल पहुँचने तक जरा भी बर्फ न थी किन्तु उसके आगे जितना ही हम अग्रसर होते गये बर्फ अधिक मिलती गई। जम्मा यख़शी तथा मीनार के मध्य मे इतनी कडाके की सर्दी थी कि ऐसी सर्दी का अनुभव हमें कभी भी अपने जीवनकाल मे न हुआ था।

हमने अहमद यसावल तथा करा अहमद यूरुनची द्वारा वेगो के पास यह सदेश भेजा कि, "हम लोग निश्चित समय पर पहुँच गये है, तुम लोग तैयार हो जाओ और साहस से काम लो।" मीनार पहाडी को पार करने तथा उसके दामन मे पडाव करने के उपरान्त जाडे से विकल हो कर हमने तापने के लिये आग जलाई। यह आग निश्चित चिह्न की आग न थी। हमने उसे केवल इस कारण जलाया क्योंकि उस कडाके की सरदी से बचने का कोई अन्य उपाय न था। पौ फटते ही हम मीनार पहाडी से चल खड़े हुए। वहाँ से काबुल तक घोडे के घुटने तक बर्फ जमकर सख्त हो गई थी और मार्ग से पृथक् चलना बडा कठिन था। एक पक्ति मे पूरे मार्ग की यात्रा करते हुए हम उचित अवसर पर काबुल पहुँच गये। किसी को कुछ पता न चला। हमारे बीबी माहरूई पहुँचने के पूर्व किले से अग्नि की लपटें यह घोषणा करने लगी कि वेग लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

विद्रोहियो पर आक्रमण

सैयिद कासिम के पुल पर पहुँच कर शेरीम तगाई तथा सेना के दायें भाग के लोगों को मुल्ला बाबा के पुल की ओर भेजा गया। हम लोग तथा बायें एव मध्य भाग की सेना वाले बाबा लूली नामक मार्ग की ओर बढे। जहाँ इस समय खलीफा का उद्यान है वहाँ उस समय एक छोटा सा बाग था, जिसे ऊलूग वेग मीर्जा ने एक लगर के लिये बनवाया था। उसकी कोई झाडी अथवा वृक्ष वर्तमान न रह गया था केवल दीवार ही बची थी। इस बाग मे मीर्ज़ा ख़ान निवास किया करता था। मुहम्मद हुसेन मीर्ज़ा, ऊलूग वेग मीर्ज़ा के बाग़े बहिश्त मे था। मैं मुल्ला बाबा के उद्यान की गली मे कब्रिस्तान तक पहुँचा था कि हमें चार आदमी मिले जोकि मीर्ज़ा ख़ान के स्थान तक बढते चले गये थे और जिन्हें मारकर भगा-दिया गया था। उन चारो मे से एक सैयिद कासिम ईशक आका, दूसरा कम्बर अली वल्द कासिम वेग तीसरा शेर कुली करावल और चौथा सुल्तान अहमद मुग़ल, शेर अली के दस्ते का एक व्यक्ति था। ये चारो वेतहाशा मीर्ज़ा ख़ान की हवेली तक बढते चले गये। शोर सुन कर मीर्ज़ा ख़ान घोडे पर सवार होकर भाग खडा हुआ। अबुल हसन कूरवेगी का छोटा भाई मुहम्मद हुसेन तक भी मीर्ज़ा ख़ान की सेवा मे प्रविष्ट हो गया था। इन चारो लोगो मे से शेर कुली पर उसने आक्रमण किया और उसे गिरा दिया था। वह उसका सिर काटने वाला ही था कि शेर कुली ने अपने आपको मुक्त कर

१ महल।

लिया। यह चारो तलवार तथा बाण का मजा चखने वाले आहत हो कर उपर्युक्त स्थान पर पहुँच गये।

हमारे सवार गली के सकरे होने के कारण उसमें फस गये और आगे अथवा पीछे हट या बढ न सकने के कारण चुपचाप खडे हो गये। जो वीर लोग निकट थे, उनसे मैंने कहा कि, 'बढ कर मार्ग बनाओ।' नासिर का दोस्त, ख्वाजा मुहम्मद अली किताबदार, बाबा शेर जाद एव शाह महमूद तथा अन्य लोगो ने तत्काल आगे बढकर मार्ग को साफ कर लिया। शत्रु भाग खडे हुए।

हम लोग यह प्रतीक्षा करते रहे कि किले से वेग लोग आयेंगे किन्तु वे कार्य के समय न पहुँच सके अपितु जब हमने शत्रु को भगा दिया तो १-१, २-२ करके आते रहे। अहमद यूसुफ चारबाग मे जहाँ मीर्जा खान था, मेरे वहाँ पहुचने के पूर्व उनके पास से चला आया था। वह मेरे साथ भीतर प्रविष्ट हुआ किन्तु जब हम दोनो ने यह देखा कि मीर्जा वहाँ से चला गया है तो हम दोनो वापस आ गये। उद्यान के फाटक म सरे पुल का दोस्त प्रविष्ट हो रहा था। वह एक पदाती था किन्तु मैंने उसकी वीरता के कारण उसे कोतवाल नियुक्त करके काबुल मे छोड दिया था। वह हाथ मे तलवार लिये सीधा मेरे पास उपस्थित हुआ। मैं अपना जिरह बक्तर पहिने हुए था किन्तु गरीवा[1] न बाधे था और न खोद[2] लगाये था। उसने या तो बर्फ एव ठडक के प्रभाव से मुझमे जो परिवर्तन हो गया था मुझे पहिचाना नही और या युद्ध की परेशानी से मेरे "हाय दोस्त", "हाय दोस्त" चिल्लाने एव अहमद यूसुफ के शोर मचाने के बावजूद निस्सकोच मेरे बाजू पर जिस पर कोई रक्षा की सामग्री न थी, प्रहार किया किन्तु यह ईश्वर की महान् कृपा थी कि मुझे बाल बराबर भी कोई हानि न पहुँची। 'यदि समस्त ससार की तलवारें चलें, तो एक नस भी नही काट सकती, यदि ईश्वर की इच्छा न हो।' मैंने यह प्रार्थना पढ रखी थी और इसी का आशीर्वाद था कि ईश्वर ने मुझे उस हानि से बचा लिया।[3]

उस उद्यान से निकलकर हम लोग बागे बहिश्त मे मुहम्मद हुसेन मीर्जा की हवेली की ओर रवाना हुए किन्तु वह छिपने के लिये वहाँ से भाग खडा हुआ था। ७-८ आदमी एक स्थान पर जहाँ उद्यान की दीवार टूटी हुई थी खडे थे। मैं उनकी ओर बढा। वे ठहर न सके और भाग खडे हुए। मैंने उनका पीछा किया और उनमे से एक के ऊपर तलवार का वार किया। वह इस प्रकार लुढक गया कि मैं समझा कि मैंने उसका सिर काट लिया है। मैं उसे छोड कर आगे बढ गया। ऐसा प्रतीत होता है कि वह मीर्जा खान का कूकूल्दाश तूलिक था और मेरी तलवार उसके कधे पर लगी थी। जिस समय मैं मुहम्मद हुसेन मीर्जा की हवेली के द्वार पर पहुँचा तो कोठे के ऊपर से एक मुगुल ने जोकि मेरा सेवक था और जिसे मैं पहिचानता था, मेरे ऊपर इतनी दूर से जितनी दूर एक दरबान द्वार से खडा होता है बाण का वार करने के लिये धनुष खीचा किन्तु लोग चारो ओर से चिल्लाने लगे "हाय हाय! ये पादशाह हैं।" उसने अपना निशाना बदल दिया और तीर चला कर भाग गया। इस समय उसके बाण चलाने से कोई लाभ भी न था। उसका मीर्जा तथा उसके अन्य सरदार या तो भाग गये थे और या बन्दी बना लिये गये थे तो फिर वह क्या बाण चला रहा था?

वहाँ लोग सुल्तान सजर बरलास को लाये। उसकी ग्रीवा मे रस्सी बधी हुई थी। मैंने उसके प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित करते हुए उसे नीनगनहार तूमान प्रदान कर दिया था किन्तु उसने भी इस

१ अर्सकिन के अनुसार जिरह बक्तर के सामने, पीछे तथा दोनों ओर बगल के लोहे के तवे।
२ लोहे की टोपी।
३ प्रार्थना का अनुवाद नहीं किया गया।

विद्रोह मे भाग लिया था। वह व्याकुल हो कर चिल्लाता रहा कि "हाय मेरा क्या अपराध है?" मैंने कहा कि, "तुम इन लोगो के सब से बडे सहायक तथा परामर्शदाताओं मे से थे अत तुमसे बढकर कौन अपराधी हो सकता है?" किन्तु वह मेरे खानदादा की माता शाह बेगम की बहिन का पुत्र था अत मैंने आदेश दिया कि "उसे इतना अपमानित करके मत लाओ, उसे मृत्यु दण्ड न दिया जायेगा।"

उस स्थान से प्रस्थान करके मैंने अहमद कासिम कोहबुर को जोकि किले का एक बेग था, कुछ वीरो सहित मीर्जा खान का पीछा करने के लिये भेजा।

बाबर का कृतघ्न स्त्रियो से व्यवहार

जब मैं बागे बहिश्त से रवाना हुआ तो मैं शाह बेगम तथा (मेहर निगार) खानम से भेट करने गया। वे लोग उद्यान के समीप खेमो मे ठहरी हुई थी। क्योकि शहर के दुष्टो एव गुडो ने विद्रोह कर दिया था और लोगो की धन-सम्पत्ति लूटनी प्रारम्भ कर दी थी अत मैंने कुछ लोगो को इस आशय से नियुक्त किया कि वे उन लोगो को भगा दें और दड देकर ठीक कर दें।

शाह बेगम तथा खानम एक खेमे मे बैठी थी। मैं जितनी दूरी पर घोडे से उतर जाया करता था, उतनी दूरी पर उतर पडा और पूर्व की भाति बडे नम्रतापूर्वक अभिवादन करके उनसे भेंट की। शाह बेगम तथा खानम बहुत परेशान, लज्जित, और शर्मिन्दा थी। वे न तो कोई उचित बहाना कर सकती थी और न स्नेहपूर्वक मेरे कुशल समाचार पूछ सकती थी। मुझे उनसे इतनी कृतघ्नता की आशा न थी। जिस दल ने इतनी दुष्टता प्रदर्शित की थी, उसमें कोई ऐसा न था जो शाह बेगम तथा खानम की बात न सुनता। मीर्ज़ा खान, बेगम का पौत्र था और उसके साथ दिन-रात रहता था। यदि वह उससे सहमत न होती तो उसे रोक सकती थी।

दो बार जब दुर्भाग्य एव काल के कुचक्र के कारण राज्य एव सिंहासन तथा नौकर चाकर से वचित होकर, मैं तथा मेरी माता उनके पास शरण हेतु पहुँचे थे तो उन्होने हमारे प्रति कोई कृपा-दृष्टि प्रदर्शित न की थी। उस समय मेरे छोटे भाई[1] मीर्ज़ा खान तथा उसकी माता सुल्तान निगार खानम के पास बडी आबाद एव समृद्ध विलायत थी किन्तु मुझे तथा मेरी माता को विलायत का तो कोई प्रश्न ही नही कोई ग्राम अथवा थोडा सा खेत तक न प्रदान किया। क्या मेरी माता यूनुस खा की पुत्री न थी? क्या मैं उनका नाती न था?

मैंने अपनी समृद्धि के काल मे अपने सगे सम्बन्धियो को जो चीज उनके अनुकूल थी और चगताई वश वालो को वह श्रेणी जिसके वे पात्र थे, अपने हाथ से प्रदान की। उदाहरणार्थ जब सम्मानित शाह बेगम मेरे पास आई तो मैंने उन्हें काबुल का पमगान नामक सर्वोत्कृष्ट स्थान प्रदान कर दिया और सेवा भाव एव सम्मान प्रदर्शित करने मे कोई कमी न की। जब काशगर का खान, सुल्तान सईद खा पाच छ नगे सहायको सहित पैदल पहुँचा[2] तो मैंने उससे सम्मानित अतिथि के समान व्यवहार किया और उसे लमगान तूमान का मदरावर प्रदान कर दिया। इसके अतिरिक्त जब शाह इस्माईल[3] ने मर्व में शैबाक-खा की हत्या कर दी और मैं कुन्दुज़ पहुँचा[4] तो अन्दिजान निवासियो मे से कुछ ने अपने दारोगाओं को

१ चचा ज़ाद भाई।
२ ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) में।
३ शाह इस्माईल सफ़वी, ईरान का शाह, मृत्यु (१५२४ ई०)।
४ ९१६ हि० (१५१०-११ ई०) में।

निकाल दिया और उन स्थानों को दृढ बना कर मेरी ओर देखने लगे तो मैंने उस अवसर पर अपने प्राचीन खानदानी सेवकों को इसी मुल्तान सईद खा के सिपुर्द कर दिया और उसे खान बना कर वहाँ भेज दिया। *आज तक*[1] *उस वश का जो भी आदमी मेरे पास आता है, मैं उसके साथ वही व्यवहार करता हूँ जो एक* सग-सम्बन्धी के साथ किया जाता है। उदाहरणार्थ इस समय मेरी सेवा मे चीन तीमूर सुल्तान, ईसान तीमूर सुल्तान, तूख्ता बूगा सुल्तान तथा बाबा सुल्तान है। इनमे से प्रत्येक के साथ मैंने अपने सगे सम्बन्धी की अपेक्षा उत्तम व्यवहार किया है।

मैं यह बात शिकायत के रूप मे नही लिख रहा हूँ। मैंने जो सच बात थी वह लिख दी। मेरे इस लिखने का उद्देश्य अपनी प्रशसा नही करना है। इस इतिहास मे मैं इस बात पर दृढ रहा हूँ कि हर बात जो लिखूँ वह सच लिखूँ और जो घटना जिस प्रकार घटी हो उसका ठीक-ठीक उसी प्रकार उल्लेख करूँ। इस कारण यह आवश्यक हो गया कि जो कुछ अच्छा-बुरा ज्ञात हुआ उसे लिख दूँ। अपने पिता, बडे भाई, सम्बन्धियो एव अन्य लोगो के गुणो तथा अवगुणो के विषय मे मैंने बडी सावधानी से लिखा है। पाठक गण मुझे क्षमा करें और कोई आलोचना न करें।

फतहनामा

वहाँ से उठ कर मै चार बाग जहा मीर्जा खान था, पहुचा और विलायतो, कबीलो एव सेवको के पास फतहनामा[2] भिजवाये। तदुपरान्त मैं सवार होकर भीतरी किले मे चला गया।

विद्रोही नेताओ का बन्दी बनाया जाना

मुहम्मद हुसेन मीर्जा भय के कारण भाग कर खानम के तूशुक खाने[3] मे घुस गया और अपने आपको तूशुक मे लपेट लिया। हमने मीरीम दीवान को किले के अन्य बेगो के साथ इस आशय से नियुक्त किया कि वे उन भवनो को अधिकार मे कर लें और उसे बन्दी बना लाये। मीरीम दीवान ने खानम के द्वार पर पहुँच कर कुछ स्पष्ट तथा कठोर शब्द कहे और किसी न किसी प्रकार मीर्जा को पकड कर भीतरी किले म मेरे पास ले आया। मैं तत्काल मीर्जा के स्वागतार्थ बढा और उससे जिस प्रकार आदरपूर्वक पूर्व मे मिलता था, उसी प्रकार मिला। मैंने उसके समक्ष अपने मुख पर भी कठोरता के कोई चिह्न न आने दिये। मुहम्मद हुसेन मीर्जा ने जितनी दुष्टता एव निंद्य कर्म किये थे और जिस प्रकार उसने इस षड्यत्र एव विद्रोह *की अग्नि भडकाई थी, उसे देखते हुए यदि मैं उसके टुकडे टुकडे करवा देता तो यह भी* न्याय-युक्त था। उसे नाना प्रकार की दारुण वेदना दे कर मरवा डालना चाहिये था किन्तु हममे और उसमे एक प्रकार के सम्बन्ध हो गये थे। मेरी माता खूब निगार खानम की बहिन से उसके पुत्र तथा पुत्रियाँ थी। मैंने इस बात को ध्यान मे रखते हुए उसे मुक्त कर दिया और उसे खुरासान जाने की अनुमति दे दी। इस पर भी यह कृतघ्न कायर, जिसको मैंने जीवन दान दिया था, मेरी कृपाओं का पूर्णत भूल गया और शैबाक खा के पास जाकर मेरी निन्दा की। कुछ समय उपरान्त शैबाक खा ने उसकी हत्या करा दी। इस प्रकार उसे अपनी कुकृतियो का बदला मिल गया।

१ लगभग ६३४ हि० (१५२७-२८ ई०)।
२ विजय-पत्र।
३ वह स्थान जहाँ तूशूक (कालीन इत्यादि) रक्खे जाते हैं।

शेर

'तेरे साथ जो बुराई करे तू उसे भाग्य पर छोड़ दे,
कारण कि भाग्य तेरा सेवक बन कर उससे बदला ले लेगा।"

अहमद कासिम तथा अन्य वीरों ने जो मीर्जा खान का पीछा करने के लिये भेजे गये थे, उसे करगा यीलाक की पहाड़ी मे पकड़ लिया। वह भाग न सका और अँगुली तक न हिला सका। उन्होने उसे बन्दी बना लिया और पुराने दरबार के भवन के उत्तरी पूर्वी दालान मे जहाँ मैं बैठा था, लाये। मैंने उससे कहा, "आओ हम एक दूसरे से भेंट करें।" किन्तु वह दो बार ही अपने घुटने के बल झुक सका था कि परेशानी के कारण गिर पड़ा। जब हमने एक दूसरे की ओर देखा तो मैंने उसे प्रोत्साहन देने के लिये अपने पास बैठा लिया और जो शरबत लाया गया था उसे उसके भय के निराकरण हेतु स्वय पहले पिया। जिन सैनिको, साधारण लोगो मुगुलो तथा चगताइयो[1] ने उसका साथ दिया था और जो बडे असमजस म थे, उनके विषय मे मैंने आदेश दिया कि वे कुछ दिन तक मेरी बड़ी बहिन के घर मे रहें। किन्तु कुछ दिन उपरान्त उन्हें खुरासान[2] जाने की अनुमति दे दी गई कारण कि जिन लोगो का उल्लेख हो चुका है वे बडे ही अनिश्चित चरित्र के थे अत उनका काबुल मे ठहरना उचित न था।

कोहदामन की सैर

उन दोनो को जाने की अनुमति देने के उपरान्त हम बारान चाशतूपा तथा गुलबहार के दामन की सैर को गये। ससार के किसी भी भाग की अपेक्षा, यहाँ तक कि काबुल की भी अपेक्षा बहार म बारान तथा चाशतूपा के मैदान एव गुलबहार का दामन अत्यन्त रमणीक हो जाते हैं। नाना प्रकार की किस्मो के कुमुदनी के रग बिरगे फूल यहाँ खिले रहते है। एक बार जब हमने उनकी गणना कराई तो उनम ३४ प्रकार के फूल निकले। उन्ही स्थानो की प्रशसा मे इस शेर की रचना की गई है —

शेर

'हरियाली एव खिले हुए फूलो के कारण बहार मे काबुल स्वर्ग बन जाता है,
इसके बावजूद बारान तथा गुलबहार की बहार अद्वितीय होती है।'

इसी सैर के समय मैंने इस गजल की रचना समाप्त की—

गज़ल

"मेरा हृदय गुलाब की कली के समान, खून के छीटो म रँगा हुआ,
चाहे यहा लाखो बहारें क्यो न आय मेरे हृदय की कली नही खिल सकती।"

१ बाबर ने इस स्थान पर तथा अन्य स्थानों पर भी मुग़ूलों एव चगताइयों को एक दूसरे से पृथक् बताया है। उसके तथा मीर्जा हैदर दोनों के वर्णन से पता चलता है कि वह अपनी माता को आधा चग़ताई तथा आधा मुग़ूल समझता था और यदि वह इस प्रकार के कबीले की शब्दावली को अपने लिये प्रयोग करता तो अपने आपको आधा तीमूरिया तुर्क तथा आधा चगताई बताता। उसने हिन्दुस्तान में जिस *वश को चलाया उसे या तो तुर्क और या तीमूरिया कहता।* वह उसे अपनी नानी के रिश्ते से मुग़ूल अथवा मुगल न कहता। बाबर ने स्वय कई स्थानों पर अपने हिन्दुस्तान के राज्य के विषय में लिखा है कि वह उन स्थानों पर शासन कर रहा है जहाँ तुर्कों का शासन रह चुका है।

२ वे कधार पहुँचे और उन्हे वहाँ अत्यधिक कष्ट भोगने पड़े।

सत्य तो यह है कि वहार की सैर, बाज द्वारा शिकार एव चिडियों के शिकार के लिये इन स्थानों से बढ कर कोई अन्य स्थान नही हैं। इनका सक्षिप्त उल्लेख काबुल तथा गजनी के वर्णन मे किया गया है।

नासिर मीर्जा का वदख्शां से निकाला जाना

इस वर्ष वदख्शा के वेगों मे से मुहम्मद कूरची, मुबारक शाह, जुबेर तथा जहागीर, नासिर मीर्जा तथा उसके आश्रितों के दुर्व्यवहार के कारण विद्रोही हो गये। उन्होंने सगठित होकर सवार तथा पदातियों की एक सेना एकत्र की और कूक्चा नदी के समीप के मैंदान मे पक्तियाँ सुव्यवस्थित करके यफ़तल तथा राग की ओर नीची-नीची पहाडियों से होते हुए खमचान के लिये रवाना हुए। मीर्जा तथा उसके अनुभव शून्य वेग विना सोचे समझे तथा असावधानी की अवस्था मे उन लोगो से उन्हीं छोटी-छोटी पहाडियों मे युद्ध करने के लिये वढे। रणक्षेत्र असमतल था। वदख्शी लोगों मे पदातियों की बहुत वडी सख्या थी जो मीर्जा के सवारों के आक्रमण के समय दृढतापूर्वक जमे रहे और इस प्रकार आक्रमण किया कि सवार ठहर न सके और भाग खडे हुए। मीर्जा को पराजित कर के वदख्शी लोगों ने उसके आश्रितों एव सहायकों को लूट लिया।

पराजित तथा लुटकर वह तथा उसके विश्वासपात्र इशकीमीश एव नारीन के मार्ग से होते हुए कीलागाही की ओर रवाना हुए। वहाँ से वे क्जिीलसू के ऊपर होते हुए आवदरा मार्ग की ओर पहुँचे और सिब्रतू को पार कर के ७०-८० सहायकों सहित, थके मारे तथा नगे वुच्चे काबुल पहुचे।

यह ईश्वर की महान् कृपा थी कि दो-तीन वर्ष पूर्व मीर्जा कावुल से शत्रु के समान कबीलों एव विभिन्न दलों को भेडों के समान भगाता हुआ काबुल से चला गया था और वदख्शा पहुँचकर उसके किले तथा घाटी को दृढ बना लिया था। पता नहीं वे अपने मस्तिष्क मे कौन-सी कल्पना लेकर गये थे। अब तो वह सिर झुकाये हुए अपने पिछले कुकृत्यो पर लज्जित होकर बडी दीन अवस्था मे वापस हुआ था और मुझसे पृथक् होने पर वडा लज्जित था।

मैंने उसके प्रति कोई क्रोध प्रदर्शित न किया। मैंने कृपापूर्वक उसके कुशल-समाचार पूछे और उसे उसकी उस दीन अवस्था से मुक्ति दिला दी।

९१३ हि०

(१३ मई १५०७ ई० से २ मई १५०८ ई०)

गिलजी अफ़ग़ानों पर आक्रमण

हमने काबुल से गिलजी[1] अफगानो पर आक्रमण करने के उद्देश्य से प्रस्थान किया। जब हम सरे देह पर पहुँचे तो समाचार प्राप्त हुए कि मश्त तथा सिह्काना मे हमसे एक यीगाच[2] दूर महमन्द अफगानो का एक समूह पडा हुआ है। हमारे बेगो तथा वीरो ने एक मत होकर कहा कि, "महमन्दो पर आक्रमण करना चाहिये किन्तु मैंने कहा कि, क्या यह उचित होगा कि हम लोग अपने लक्ष्य से हट कर अपनी ही प्रजा पर आक्रमण करे, यह नही हो सकता।"

सरे देह से हमने रात्रि म प्रस्थान किया और अँधेरे मे कट्टूवाज के मैदान को पार किया। रात बडी अधेरी थी। मैदान बिल्कुल सपाट था। न तो कोई पहाडी और न कोई टीला दृष्टिगत होता था, न कोई ज्ञात मार्ग तथा रास्ता था और न कोई आदमी हमारा पथ प्रदर्शन करने वाला था। अन्ततोगत्वा मैंने स्वय पथ-प्रदर्शन प्रारम्भ किया। मैं उस भूभाग से होकर एक-दो बार गुजर चुका हूँ। उस समय के ज्ञान से लाभ उठाते हुए मैने ध्रुव तारे को अपने दाहिने कन्धे की ओर कर के कुछ चिन्ता की मुद्रा मे प्रस्थान करना प्रारम्भ किया। ईश्वर की कृपा से कुशलतापूर्वक यात्रा हो गई। हम लोग सीधे कीअ.कतू तथा ऊलावातू जलधारा की ओर बढते चले गये अर्थात् ख्वाजा इस्माईल सिरीती की ओर जहाँ गिलजी लोग पडाव किये हुए थे। मार्ग जलधारा की ओर से हो कर जाता है। जलधारा के निकट उतर कर हम तथा हमारे घोडे थोडी देर के लिये सो गये और विश्राम करके पौ फटते ही हम लोग तैयार होकर चल दिये। उन पहाडियो तथा घाटियो की तलहटी मे निकल कर मैदान मे जहाँ गिलजी पडाव किये थे पहुँचते-पहुँचते दिन निकल आया। हमारे और उनके मध्य म अच्छे खासे यीगाच की दूरी थी।[3] जैसे ही हम मैदान मे पहुँचे, हमको उनको स्याही जो या तो उनकी थी अथवा उनकी आग के धुयें की थी, दृष्टिगत होने लगी।

पता नही कि अपनी ही इच्छा से अथवा जल्दी के उद्देश्य से पूरी सेना घोडा को सरपट भगाने लगी। मैंने भी उनके साथ घोडे को सरपट भगाया और कभी किसी आदमी पर और कभी किसी घोडे पर बाण चला कर उन्हें एक या दो कुरोह[4] पर रोका। ५-६ हजार सरपट भागते हुए वीरो को, जो घोडो को सरपट भगा रहे थे, रोकना बडा ही कठिन है। ईश्वर की कृपा से कुशल ही रही। वे रुक गये। जब

१ सम्भवत गिलजी अथवा गिलजाई।
२ लगभग ५ मील।
३ सम्भवत ५-६ मील।
४ कोस।

हम लोग एक शरई[1] आगे बढ चुके तो अफगाना की स्याही सर्वदा हमारे सामने थी और आक्रमण की अनुमति दे दी गई। हम बहुत बडी सख्या म भेडें प्राप्त हुईं। इतनी अधिक भेडें इसमे पूव कभी न प्राप्त हुई थी।

जब हम पडाव करके लूट की धन सम्पत्ति एकत्र कर रहे थे तो अफगाना का एक के बाद दूसरा दस्ता मैदान मे आने लगा और हम युद्ध के लिये प्रेरित करने लगा। हमारे कुछ बेग तथा घर के लोग एक दस्ते के विरुद्ध रवाना हुए और उनम से प्रत्येक की हत्या कर दी। नासिर मीर्जा ने इसी प्रकार दूसरे दस्ते की हत्या कर दी। अफगाना के सिरा का एक स्तम्भ बनवा दिया गया। दोस्त कातवाल नामक पदाती के जिसका उल्लख इससे पूर्व हो चुका है, पाव म एक बाण लग गया। जब वह काबुल पहुँच गया ता उसकी मृत्यु हो गई।

ख्वाजा इस्माईल स प्रस्थान करके हम लोगा ने एक बार पुन ऊलाबातू पर पडाव किया। मैंने अपन कुछ बेगा तथा घर के सैनिका को इस आशय से आगे भेजा कि वे लूटमार म प्राप्त धन के खुम्स[2] का विभाजन कर दें। कासिम बेग तथा कुछ अन्य लोगा से, उनके ऊपर विशेष कृपा हान के कारण हमने खुम्स न लिया। जो कुछ प्राप्त हुआ था उसम से १६ हजार खुम्स निकाला अर्थात ८० हजार भेडा का पाचवाँ भाग १६ हजार। इनम यदि जो भेडे खो गइ तथा जिनकी किसी ने इच्छा न की उनको भी सम्मिलित कर लिया जाय तो कुल १ लाख भेडें हागी।

शिकार का घेरा

दूसरे दिन जब हम लोग उस पडाव स रवाना हुए तो कट्टबाज के मैदान म, जहा कियीक[3] तथा जगली गधे बहुत मोटे मोटे तथा बडी सख्या म हाते हैं शिकार का घेरा तैयार किया गया। बहुत से उस घेरे म प्रविष्ट हो गये और बहुत से मार डाल गये। शिकार के समय मैंने एक जगली गधे के पीछे सरपट घाडा दौडाया। उसके समीप पहुच कर मैंने उसके ऊपर एक बाण तथा दूसरा बाण चलाया किन्तु उसे भूमि पर न गिरा सका। वह केवल दो घाव के कारण धीरे धीरे चलने लगा। घाडे का एड लगा कर जगली गधे के बिल्कुल समीप पहुच कर मैंने उसकी गरदन के नीचे काना के पीछे तलवार मारी। उसमे उसका नरखरा कट गया। वह रुक गया और मुड कर मर गया। मेरी तलवार न बडा अच्छा काय किया। वह जगली गधा इतना अधिक मोटा था कि उसे देख कर आश्चय हाना था। उसकी पसलिया एक एक गज लम्बी रही हागी। शरीम तगाई तथा अन्य लोगा ने जिन्होंने मुगूलिस्तान के कियीक देखे थ, आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि मुगूलिस्तान म भी इतन माटे कियीक न हागे। मैंने एक अन्य जगली गधे का शिकार किया। उस शिकार म जितने भी जगली गधे तथा कियीक मारे गये व सब के सब बडे माट ताजे थ किन्तु उनम से एक इतना माटा था जितना कि वह गधा था जिस हमन पहिले मारा था।

इस अभियान से लौट कर हम लाग काबुल पहुच और वहा उतर पडे।

[1] २ मील।

[2] पाँचवाँ भाग जो बादशाहों का हक होता था। शेष चार भाग सैनिकों को बाट देने का इस्लाम के धर्म विधान के अनुसार आदेश है।

[3] एक प्रकार के मृग।

शैबाक ख़ाँ का ख़ुरासान के विरुद्ध प्रस्थान, ख़ुरासान के मीर्ज़ाओं का कुछ निश्चय न करना, ऊज़बेगों द्वारा ज़ुन्नून बेग की हत्या, शैबाक ख़ाँ का हेरी पर अधिकार जमा लेना, अबुल मुहसिन मीर्ज़ा तथा कूपुक मीर्ज़ा की, जो मशहद में असावधानी में पड़े थे, हत्या।[1]

बाबर का कन्धार की ओर प्रस्थान

इन दिनों मे शाह बेग तथा उसके छोटे भाई मुहम्मद मुकीम[2] ने शैबाक ख़ा के भय से मेरे पास निरन्तर प्रार्थना पत्र भेजे जिनमे निष्ठा एव शुभ चिन्ता की चर्चा थी। मुकीम ने अपने एक पत्र मे मुझे स्पष्ट शब्दो मे आमन्त्रित किया। हमे यह देखते हुए अच्छा न लगता था कि ऊजबेग लोग पूरे मुल्क पर छापे मार रहे है। क्योंकि शाह बेग तथा मुकीम ने पत्रो एव दूतो द्वारा मुझे आमन्त्रित किया था अत इसमे अधिक सदेह नही रह गया कि वे मेरी सेवा मे उपस्थित होगे।[3] जब सभी परामर्शदाताओं तथा बेगो से परामर्श कर लिया गया तो यह निश्चय हुआ कि हम लोग सवारो को एकत्र करें और अरगून बेगो के पास पहुच जाय और उनसे मिल कर तथा उनके परामर्श से निर्णय करें कि खुरासान पर आक्रमण किया जाय अथवा जैसा उचित हो, किसी अन्य स्थान पर।

गजनी तथा कलाते गिलजाई में

हबीब सुल्तान बेगम ने, जिसे मैं यीनका[4] कहता था, हमसे गजनी मे भेंट की। वह, जैसा कि निश्चय हो चुका था, अपनी पुत्री मासूमा सुल्तान बेगम को लेकर हेरी मे आई थी। सम्मानित बेगम के साथ खुसरो कूकूल्दाश, सुल्तान कुली चूनाक तथा गदाई बलाल थे जोकि हेरी से भाग कर मेरे पास आ गये थे। सर्व प्रथम वे लोग इब्ने हुसेन मीर्ज़ा के पास तदुपरान्त अबुल मुहसिन मीर्ज़ा के पास पहुचे किन्तु वे उन दोनो मे से किसी के पास भी न रह सके।

कलात मे सेना को हिन्दुस्तानी व्यापारियों की एक बहुत बड़ी सख्या मिली। वे वहा व्यापार हेतु आये थे किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वे वहा से जा न सके थे। उनके विषय मे लोगों का सामान्य मत यह था कि जो लोग ऐसी शत्रुता के समय किसी शत्रु के देश मे प्रविष्ट हो तो उन्हे लूट लेना चाहिये। मैं इसमे सहमत न हुआ। मैंने कहा कि, "व्यापारियो का क्या दोष है? यदि हम ईश्वर की प्रसन्नता के लिये इन साधारण लाभों की उपेक्षा करेंगे तो परमेश्वर हमें अधिक लाभ प्रदान करेगा। लगभग हमको ऐसी ही अवस्था का सामना करना पडा। जब हम लोग गिल्जियो पर आक्रमण करने के लियें गये थे उस समय भी बहुत से लोग इस बात से सहमत थे कि महमन्द अफगानो, उनकी भेडो, धन सम्पत्ति तथा परिवार पर इस कारण आक्रमण करना चाहिये कि वे हमसे पाच मील की दूरी पर थे। उस समय भी तुमसे इस समय की भाति सहमत नहीं हुआ था। दूसरे ही दिन परमेश्वर ने अफगान शत्रुओं की इतनी

१ इस अंश का अनुवाद नहीं किया गया है।
२ ये दोनों जुन्नून बेग के पुत्र थे और अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त कन्धार में जमीनदावर इत्यादि के हाकिम थे।
३ अधीनता स्वीकार कर लेंगे।
४ चाची।

अधिक भेडें तुमको प्रदान कर दी जितनी कि इससे पहिलें कही भी सेना को नही प्राप्त हुई थी।" जब हमने कलात की दूसरी ओर पडाव किया तो उनमे से प्रत्येक व्यापारी से थोडी सी पेशकश[1] प्राप्त की गई।

दक्षिण की ओर प्रस्थान

कलात के आगे दो मीर्जा लोग आकर हमसे मिल गये। यह लोग कन्धार से भाग कर आ रहे थे। इनमे से एक मीर्जा खान वैस था जिसे काबुल मे पराजित हो जाने के उपरान्त खुरासान जाने की अनुमति दे दी गई थी। दूसरा अब्दुर्रज्जाक मीर्जा था जो उस समय जब कि मैं खुरासान से चला था तो वहीं रह गया था। उनके साथ जहागीर मीर्जा के पुत्र पीर मुहम्मद की, जो कि पहार मीर्जा[2] का पौत्र था, माता मेरी सेवा मे आ कर उपस्थित हुई।

अरगून सरदारो का व्यवहार

जब हमने शाह बेग तथा मुकीम के पास आदमी एव पत्र इस सदेश सहित भेजे कि 'हम तुम्हारे वचन पर आ गये हैं, ऊजबेग सरीखे शक्तिशाली शत्रु ने खुरासान पर अधिकार जमा लिया है, आओ, हम लोग मिल-जुलकर निश्चय करें कि सब लोगो का हित किस बात मे है' तो उन लोगों ने एक कठोर तथा अशिष्ट उत्तर भेजा और निष्ठा सम्बन्धी जो पत्र एव निमत्रण भेजे थे, उनकी उपेक्षा की। एक अशिष्टता तो यह थी कि शाह बेग ने जो पत्र मेरे पास भेजा उस पर पलटकर बीच मे मुहर लगाई, जहा बेग लोग बेगो को पत्र लिखते समय लगाते हैं, अपितु जिस प्रकार कोई बडा बेग छोटे को पत्र लिखते समय मुहर लगाता है। यदि वह इस प्रकार धृष्टता एव कठोरता का उत्तर न देता तो उसका मामला इस सीमा तक न पहुचता जैसा कि पहुच गया था कारण कि लोगों ने कहा है कि—

शेर

"झगडे के वचन प्राचीन वश तक को नष्ट कर देते हैं।"

इस उद्दडता एव धृष्टता के कारण उन्होने ३०-४० वर्ष पुराने कबीले एव वश को नष्ट करा दिया।

एक दिन जब कि हम लोग शहरे सफा[3] के समीप थे तो शिविर के बिल्कुल बीच मे एक झूठी चेतावनी की घोषणा की गई। समस्त सेना को अस्त्र शस्त्र धारण कराये गये और वह सवार हो गई। उस समय मैं स्नान कर रहा था। बेग लोग बडे असमजस मे थे। मैं तैयार होते ही सवार हो गया। क्योकि शोर झूठा था अत वह शीघ्र ही बन्द हो गया।

एक पडाव से दूसरा पडाव पार करते हुए हम लोग गुजर की ओर बढे। वहाँ पहुँच कर हमने अरगूनो से पुन वादविवाद करने का प्रयत्न किया किन्तु उन्होंने हमारी ओर कोई ध्यान न दिया। वे उसी प्रकार उद्दडता एव अशिष्टता का व्यवहार करते रहे। हमारे कुछ हितैषियो ने जोकि स्थानीय भूमि तथा नदियो के विषय मे जानकारी रखते थे, हमसे कहा कि "जो जलधारायें कन्धार मे आती हैं उनका स्रोत बाबा हसन अबदाल तथा खलीशक मे है, अत हमें उस ओर इस आशय से प्रस्थान करना

[1] उपहार।
[2] पहाड मीर्जा।
[3] कंधार के पूर्व लगभग ४० मील पर।

चाहिये कि उन जलधाराओ को बिल्कुल काट दिया जाय।" इस बात को इसी स्थान पर छोड कर हमने दूसरे दिन अपने आदमियो को अस्त्र शस्त्र धारण कराये और उन्हें दाहिनी ओर तथा बाईं ओर की पक्तियो मे सुव्यवस्थित करके कन्धार की ओर प्रस्थान कर दिया।

कन्धार का युद्ध

शाह बेग तथा मुकीम एक शामियाने के नीचे, जाकि कन्धार की पहाडी के अन्तरीप के समक्ष लगाया गया था और जहा अब मैंने एक भवन का निर्माण कराया है, बैठे हुए थे। मुकीम के आदमी वृक्षो मे होते हुए बढते चले गये और लगभग हमारे समीप तक पहुँच गये। जब हम शहरे सफा मे थे तो तूफान अरगून हमारे पास भाग कर चला आया था। वह इस समय अकेला अरगून सेना की ओर बढता चला गया, जहाँ इश्कुल्लाह नामक एक व्यक्ति ७-८ आदमियो को लिए शीघ्रातिशीघ्र बढता चला आ रहा था। तूफान अरगून ने अकेले ही उसका मुकाबला किया और उस पर तलवार चलाई तथा उसे घोडे से गिरा दिया और उसका सिर काटकर मेरे पास, जब कि हम लाग सगे लखशक पार कर रहे थे, लाया। हमने इसे एक शुभ शगुन समझ कर स्वीकार किया। झाडियो तथा वृक्षो के समीप, जहा कि हम लोग थे, उस स्थान से युद्ध करना उचित न देख कर हम लाग पहाडी के दामन से हाते हुए बढते चले गये। जिस समय हमने खलीशक के समक्ष कन्धार की ओर जलधारा के किनारे घास के मैदान मे शिविर लगाना निश्चय कर लिया था और उतर रहे थे उसी समय शेर कुली करावल भागता हुआ आया और उसने निवेदन किया कि शत्रु पक्ति सुव्यवस्थित करते हुए हमारी ओर युद्ध के लिए बढते चल आ रहे है।

कलात से प्रस्थान करते समय सेना को भूख तथा प्यास के कारण बडे कष्ट भोगने पडे थे। अधिकाश सैनिक खलीशक के समीप पहुच कर भेडा तथा पशुओ अनाज एव खाद्य सामग्री के लिए इधर उधर छिन्न-भिन्न हो गये थे। उन्हें एकत्र करने का प्रयत्न किये बिना हम शीघ्रातिशीघ्र बढते चले गये। हमारी सेना की सख्या कुल दो हजार रही होगी किन्तु इनमे से एक हजार से अधिक युद्ध के लिए उपस्थित न थे कारण कि बहुत से लोग छिन्न-भिन्न हो गये थे और समय पर युद्ध के लिए उपस्थित न हो सके।

यद्यपि हमारे आदमियो की सख्या कम थी किन्तु मैंने उन्हें सुव्यवस्थित कर लिया और एक बडी ही उत्तम योजना एव नियम के अनुसार तैयार किया। मैंने कभी भी इससे उत्तम पक्ति की सुव्यवस्था न की थी। मैंने विशेष रूप से अपने अधीन ऐसे आदमियो को रखा जाकि वीर तथा पराक्रमी थे। उनको १० तथा ५० की टोलियो म बाँट दिया। प्रत्येक १० तथा ५० एक सरदार के अधीन थे। उन्हें सेना के दायें, बायें तथा मध्य भाग म अपने आदमियो के निश्चित स्थान का पूरा ज्ञान था और वे प्रत्येक के कार्य के विषय म पूर्ण रूप स परिचित थ कि उन्हें युद्ध म क्या करना है और वे उनका पूर्ण रूप से निरीक्षण कर सकते थे। इस व्यवस्था के अनुसार दाये एव बाये दाये एव बायें हाथ वाले दायें एव बायें बाजू दायें बायें बिना तवाची की आवश्यकता के आक्रमण कर सकते थ।

यद्यपि बरानगार (दायाँ बाजू) अऊगकल (दाया हाथ) अऊगयान (दाई ओर) तथा अऊग (दायाँ) सभी के एक अर्थ है किन्तु इनका मैंने विभिन्न अर्थो म प्रयोग किया है और इनका तात्पर्य अलग अलग है। जिस प्रकार अरबी के मैमना तथा मैसरा जो तुर्की के बरानगार (दायाँ बाजू) एव जवानगार (बाया बाजू) है अरबी 'कल्ब' म जिसे तुर्की भाषी गूल कहते है सम्मिलित नही हैं, वही दशा मध्य भाग की है। यदि मध्य भाग की ही व्यवस्था को ले लिया जाय इसके यमीन एव यसार (अरबी के दायें और बाये) का नाम मैंने अऊंग कूल तथा सूल कूल (दायाँ एव बायाँ हाथ) तुर्की मे रक्खा। खास्सा

तावेईन (शाही विशेष सेना जो मध्य में होते हैं, उनके भी यमीन एव यसार (अरबी दायें और बायें) होते हैं, उनका नाम मैंने ऊँग यान तथा सल यान (दायाँ-बायाँ बाजू) रक्खा। खासा तावेईन मे बूई (नीग) तीकोनी (भीतरी घेरा) तथा उसके यमीन और यसार (दायाँ तथा बायाँ) होते है। वे सूग तथा सूल कहलाते है। तुर्की भाषा मे एक अकेली चीज़ को बूई कहते है किन्तु उस बूई से यहाँ कोई मतलब नही यहा भीतरी (याकीन) से तात्पर्य है।

दायें बाजू (बरानगार) मे मीर्ज़ा (वैस) खान, शँरीम तगाई, यारक तगाई एव उनके बडे तथा छोटे भाई, चिलमा मुगल, अय्यब बेग, मुहम्मद बेग, इबराहीम बेग, अली सैयिद मुगूल तथा उसके अधीनस्थ मुगूल सुल्तान कुली चुहरा, खुदा बख़्श, अबुल हसन एव उसके बडे तथा छोटे भाई थे।

बायें बाजू (जवानगार) मे अब्दुर्रज्ज़ाक मीर्ज़ा, कासिम बेग, तीगरी बीरदी, कम्बर अली, अहमद ईलची बूगा, गूरी बरलास, सैयिद हुसेन अकबर तथा मीर शाह कूचीन थे।

अग्र भाग (ईरावल) मे नासिर मीर्ज़ा, सैयिद कासिम ईशक आगा, मुहिब अली कूरची, पापा ऊगूली, अल्लाह वैरान तुर्कमान, शेर कुली मुगूल करावल उसके बडे तथा छोटे भाई तथा मुहम्मद अली थे।

मध्य भाग (गूल) मे मेरे दायें हाथ की ओर कासिम कूकूल्दाश, खुसरो कूकूल्दाश, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, शाह महमूद परवानची, कुले बायजीद बकावल, कमाल शरबतची, थे। मेरे बायें हाथ की ओर ख्वाजा मुहम्मद अली, नासिर का "दोस्त", नासिर का "मीरीम", बाबा शेरज़ाद, खान कुली, वली खाज़िन, कूतलूक कदम "करावल", मकसूद सूची तथा बाबा शेख थे। जो लोग मध्य मे थे वे सब के सब मेरे घर के सैनिक थे। उनमे कोई बडा बेग न था। उनमें से कोई भी बेग की श्रेणी को न प्राप्त कर सका था। बूई (भीतरी घेरे) मे शेर बेग, हातिम कूरची बेगी, कूपुक, कुली बाबा, अबुल हसन कूरची तथा मुगूलो मे, अरुस अली सैयिद, दरवेश अली सैयिद, खूस कोल्दी, चिलमा, दोस्त कोल्दी, चिलमा तागची, दामाची, मिन्दी तथा तुर्कमानो मे मनसूर, रुस्तम अली तथा उसके बडे एव छोटे भाई तथा शाह नाज़िर और सीऊन्दूक थे।

शत्रु की सेना दो दलो मे विभाजित थी। एक दल शाह शुजा अरगून के अधीन था जो शाह बेग कहलाता था और जिसे अब शाह केवल शाह बेग लिखा जायगा, दूसरा दल उसके छोटे भाई मुकीम के अधीन था।

कुछ लोगो का अनुमान था कि अरगूनो की सेना की सख्या ६-७००० रही होगी। इसमे तो कोई सन्देह ही नही है कि शाह बेग के जो अपने आदमी अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए थे, उनकी सख्या ४-५००० रही होगी। उसने हमारी सेना के दायें भाग का तथा मुकीम ने जिसकी सेना अपने भाई की सेना से थोडी सी कम थी हमारी सेना के बायें भाग से मुकाबला किया। मुकीम ने हमारी सेना के बायें भाग अर्थात् कासिम बेग पर बडा तीव्र आक्रमण किया। कासिम बेग के पास से दो-तीन आदमी युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व सहायता की याचना करने आये। हम एक आदमी को भी अलग न कर सकते थे कारण कि हमारे सामने भी शत्रु अधिक शक्ति के साथ जमे थे। हम अविलम्ब बढ गये। शत्रु हमारे अग्र भाग पर अचानक टूट पडे और उसे पीछे हटा कर मध्य भाग की ओर ढकेल दिया। जब हम बाणो की वर्षा करते हुए आगे बढे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वे लोग, जो कुछ समय से बाण चला रहे थे, मुकाबला करेंगे। कोई अपने आदमियो को पुकारता हुआ मेरे पास तक पहुँच गया और मेरे पास घोडे से उतर कर धनुष मे बाण लगाने लगा किन्तु वह कुछ न कर सका कारण कि हम देर किये बिना बढ गये। वह पुन घोडे पर सवार हो कर

वापस चला गया। वह सम्भवत शाह बेग स्वय रहा होगा। युद्ध के समय पीरी बेग तुर्कमान तथा उसके ४-५ भाई शत्रु के पास से भाग कर अपने हाथ मे पगडी लिये हुए[1] हमारे पास चले आये।

> "यह पीरी बेग उन तुर्कमानों मे से था जो उन तुर्कमान बेगो के साथ हेरी मे पहुचा था जो अब्दुल बाकी मीर्जा तथा मुराद बेग के अधीन उस समय[2] आये थे जब कि शाह इस्माईल ने बायन्दार सुल्तानो को पराजित कर के एराक के देशो पर अधिकार जमा लिया था।"[3]

सर्व प्रथम हमारी सेना के दायें भाग ने शत्रु को पराजित कर के भगा दिया। इसका अन्तिम सिरा उन लोगों को भेदता हुआ उस स्थान तक पहुच गया जहा मैंने अब एक उद्यान लगवाया है। हमारी सेना का बाया बाजू हमन अब्दाल के बहुत नीचे तक जो बडी जल धारा एव उसकी नालियो से मिला है, फैला था। मुकीम इस दल का मुकाबला कर रहा था। उसके दल की अपेक्षा हमारे इस दल की सख्या बडी कम थी। ईश्वर की कृपा से सब कुछ ठीक हो गया। तीन चार जल-धारायें, जो कन्धार तथा उसके ग्रामों को जाती हैं, शत्रु तथा मेरे बायें बाजू के मध्य मे थीं। हमारे आदमियों ने घाटों पर अधिकार जमा लिया था और शत्रुओं का मार्ग रोक रक्खा था। कम सख्या मे होने के बावजूद उन्होने वीरतापूर्वक युद्ध किया और प्रत्येक आक्रमण का दृढतापूर्वक मुकाबला करते रहे। अरगूनो की ओर से हलवाची तरखान ने तीगरी बीरदी तथा कम्बर अली से जल-धारा के भीतर युद्ध किया। कम्बर अली आहत हो गया। कासिम बेग के माथे पर एक बाण लगा। गूरी बरलास की भृकुटी पर एक बाण लगा जो उसके गाल के ऊपर से निकल गया।

इसी बीच मे हमने शत्रुओ को भगा दिया और जल-धाराओ को उस ओर से जहा से मुर्गान पर्वत का मोड है पार किया। जब हम लोग पार हो रहे थे तो हमने देखा कि कोई सफेद तीपूचाक घोडे पर सवार पहाडी के आचल मे कभी आगे जाता है और कभी पीछे आता है। वह शाह बेग के समान था। सम्भवत, वही हो।

जैसे ही हमारे आदमियो ने शत्रुओं को पराजित कर दिया, उन्हें उनका पीछा करने एव बन्दी बनाने के लिये भेजा गया। मेरे साथ गिनती के ११ आदमी रह गये होगे जिनमे एक अब्दुल्लाह किताबदार था। मुकीम अब भी अपने स्थान पर डटा हुआ युद्ध कर रहा था। अपने आदमियो की अल्प सख्या पर ध्यान दिये बिना, हमने नक्कारा बजवा दिया और ईश्वर पर भरोसा करके हम मुकीम की ओर बढ गये।

शेर

> "चाहे थोडे हों, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है,
> उसके दरबार मे किसी की कोई शक्ति नही।"

"अधिकाश छोटी सेनाओ ने ईश्वर की कृपा से बडी बडी सेनाओ को पराजित कर दिया है।"

नक्कारे की आवाज सुनकर मुकीम को ज्ञात हो गया कि हम आ रहे हैं। वह अपनी निश्चित योजना भूल कर भाग खडा हुआ। ईश्वर की कृपा से कुशल ही रही।

१ अधीनता प्रदर्शित करने का एक चिह्न।
२ ९०८ हि० (१५०२ ई०)।
३ पीरी बेग के विषय में टिप्पणी।

शनुआ को भगा कर हम कन्धार की ओर रवाना हुए और फर्रुख जाद वेग के चार बाग मे, जिसका अब कोई चिह्न शेप नही रहा उतर पडे।

वावर का कन्धार मे प्रवेश

शाह वेग तथा मुकीम जब भागे तो कन्धार के किले मे प्रविष्ट न हो सके। शाह वेग शाल तथा मस्तुग और मुकीम जमीनदावर की ओर चले गये। उन्होने कोई ऐसा व्यक्ति न छोडा जोकि किले की दृढता-पूर्वक रक्षा कर सकता। अहमद अली तरखान कुली वेग, अरगून के छोटे तथा बडे भाइयो सहित वहा था। कुली वेग अरगून की मेरे प्रति निष्ठा एव श्रद्धा प्रसिद्ध थी। थोडे से वादविवाद के उपरान्त उन्होने अपने बडे तथा छोटे भाई के परिवारो के लिए रक्षा की याचना की। उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और जिन लोगो का उल्लेख हो चुका है, उनके प्रति कृपा की गई। तदुपरान्त उन लोगो ने नगर का माशूर नामक द्वार खोल दिया। उन लोगो का कोई भी नेता न रह गया था। फाटक के ऊपर शेरीम तगाई तथा यारीम वेग नियुक्त कर दिये गये। मैं अपने घर के थोडे से सैनिको सहित भीतर प्रविष्ट हुआ और विना सरदार के आदमियो मे से २-३ आदमियो की अन्य लोगो की शिक्षा हेतु हत्या करा दी।

कन्धार की लूट की धन-सम्पत्ति

मैं सर्व प्रथम मुकीम के खजाने की ओर पहुँचा। वह वाहरी किले मे था। अब्दुर्रज्जाक मीर्ज़ा ने मेरी अपेक्षा अधिक जल्दी कार्य किया कारण कि जब मैं वहाँ पहुँचा तो वह उस समय वहा उतर रहा था। मैंने उसमे से कुछ चीजें उसे भी दे दी। मै दोस्ते नासिर वेग, कुले वायजीद बकावल और बख्शियो मे से तगाई शाह बख्शी को मुकीम के खजाने की देख-रेख सिपुर्द कर के वहा से किले मे पहुँच गया। शाह वेग के खज़ाने का प्रबन्ध मैंने ख्वाजा महमूद अली, शाह महमूद तथा बख्शियो मे से तगाई शाह बख्शी को सौप दिया।

नासिर के मीरीम तथा मकसूद शरबत प्रस्तुत करने वाले को जुन्नून के दीवान मीर जान का घर नासिर मीर्जा के लिए सुरक्षित रखने का आदेश दिया। मीर्जा खान के लिये शेख अबू सईद तरखान का घर तथा अब्दुर्रज्जाक मीर्जा के लिए [1]

इतने चादी के सिक्के उन प्रदेशो मे इससे पूर्व कभी न देखे थे और न किसी के विषय मे सुना गया था कि उसने देखे होंगे। उस रात्रि मे जब कि हम स्वय भीतरी किले मे ठहरे तो शाह वेग का दास सम्भल बन्दी बना कर लाया गया। यद्यपि वह उस समय शाह वेग का विश्वासपात्र ही था किन्तु उसे कोई उच्च श्रेणी न प्राप्त थी। मैंने उसे अपने एक आदमी के सिपुर्द कर दिया किन्तु पहरा ठीक न होने के कारण वह भाग गया। दूसरे दिन मैं अपने शिविर फर्रुख जाद वेग के चार बाग मे चला गया।

मैंने कन्धार को नासिर मीर्जा को प्रदान कर दिया। जब खजाना सुव्यवस्थित हो गया और लदवा कर लाया जाने लगा तो वह ऊँटो की एक कतार[2] पर लदे हुए चादी के तन्को को भीतरी किले के खज़ाने मे ले गया और उन्हें रख लिया। मैंने उन्हें उसमे वापस नही मागा और वे उसी को प्रदान कर दिये।

१ आगे कुछ नहीं लिखा है।
२ एक कतार में ७ पशु होते हैं।

कन्धार से प्रस्थान करके हम लोग कूशखाना की चरागाह मे उतरे। सेना को आगे भेज देने के उपरान्त मैं सैर करने के लिये चला गया था अत शिविर मे देर से लौटा। यह कोई अन्य शिविर था क्योंकि पहिचाना नही जा सकता था। उत्तम तीपूचाक ऊटो और ऊटनियो की कतारें, उत्तम कपडो से लदे हुए खच्चर, मखमल के खेमे, हर प्रकार के शामियाने तथा कारखाने एव गधो पर लदे हुए खज़ाने थे। बडे तथा छोटे अरगून भाइयो की धन-सम्पत्ति पृथक् खजाने मे रखी गई थी। उनमे से बोझ के बोझ तथा गाठें निकाल कर लाई गईं जिनमे पहिनने के वस्त्र तथा चादी के तन्को भरे बोरे थे। ऊताग तथा चादर[1] मे प्रत्येक व्यक्ति के लिये पर्याप्त लूट की धन-सम्पत्ति थी। बहुत सी भेडें भी प्राप्त हुई थीं किन्तु उनकी कोई चिन्ता न करता था।

मैंने कासिम बेग को मुकीम के परिजनो, जो कलात मे कूज अरगून तथा ताजुद्दीन के अधीन थे, को उनकी धन-सम्पत्ति सहित प्रदान कर दिया। कासिम बेग अनुभवी आदमी था। उसने कन्धार मे अधिक समय तक रहना हमारे हित मे उचित न समझा और बात करते करते और परेशान करते करते उसने हमे चलने पर विवश कर दिया। जैसा कि लिखा जा चुका है कि मैंने कन्धार नासिर मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया था, उसे वहाँ जाने की अनुमति दे दी गई। हम लोग काबुल की ओर चल दिये।

जब तक हम कन्धार मे थे उस समय तक लूट की धन-सम्पत्ति के वितरण का कोई अवसर न मिल सका था। यह कार्य कराबाग मे, जहा हम २-३ दिन ठहरे, किया गया। सिक्को को गिनना कठिन था अत वे तराजू मे तौल कर बाँट दिये गये। प्रत्येक श्रेणी के परिजनो, सेवकों तथा घर के सैनिकों ने बोरे पर बोरे चादी के तन्को से लदवा कर गधो पर लदवा लिये और अपनी वृत्ति तथा अपने सैनिकों के वेतन के रूप मे ले गये। हम लोग धन-सम्पत्ति तथा खजाना लेकर बडे सम्मान एव ऐश्वर्य से काबुल पहुँच गये।

मासूमा सुल्तान से बाबर का विवाह

काबुल वापस आकर मैंने सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पुत्री मासूमा सुल्तान बेगम से, जिससे मैंने ख़ुरासान मे विवाह करने की इच्छा की थी और जो वहा से लाई गई थी, विवाह किया।

शैबाक खां का कन्धार पहुँचना

कुछ दिन उपरान्त नासिर मीर्ज़ा का एक सेवक यह समाचार लाया कि शैबाक खा ने कन्धार पहुच कर उसे घेर लिया है। जैसा कि उल्लेख हो चुका है, मुकीम ज़मीनदावर की ओर भाग गया था और वहा से वह शैबाक खा की सेवा मे उपस्थित हुआ। शाह बेग के पास से भी शैबाक खा के पास निरन्तर आदमी पहुँचे। इन दोनो की प्रार्थना पर खान शीघ्रातिशीघ्र इस विचार से कि मैं उसे वहा मिल जाऊंगा, पर्वतीय मार्ग से होता हुआ कन्धार पहुचा। कासिम बेग सरीखे अनुभवी व्यक्ति के मस्तिष्क मे यही बात थी जिसके कारण उसने हमको परेशान कर के कन्धार के समीप से चले जाने पर विवश कर दिया।

शेर

"जो कुछ एक युवक एक दर्पण मे देख सकता है,
उसे एक अनुभवी आदमी पक्की ईंट मे देख सकता है।"

शैबाक खा ने पहुच कर नासिर मीर्ज़ा को कन्धार मे घेर लिया।

१ खेमों की विभिन किस्में।

हिन्दुस्तान तथा बदख्शा की ओर प्रस्थान करने के विषय में वाद विवाद

जब यह समाचार प्राप्त हुये तो बेगो को परामर्श हेतु बुलवाया गया और इन बातो के ऊपर वाद विवाद किया गया। शैबाक खा तथा ऊजबेग सरीखे प्राचीन शत्रु उन समस्त प्रदेशो के ऊपर अधिकार जमाए हुए हैं जोकि कभी तीमूर बेग की सतान के अधीन थे। जो तुर्क तथा चगताई कोनो एव सीमान्त के भूभाग मे पडे हुए हैं, वे स्वेच्छा तथा इच्छा के विरुद्ध उसके सहायक बन गये हैं। केवल मैं ही बच गया हूँ। मैं स्वय काबुल मे हूँ। शत्रु अत्यन्त शक्तिशाली है और मैं बडा ही शक्तिहीन। न तो मेरे पास ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा मैं सन्धि कर लू और न इतनी शक्ति कि उनका विरोध कर सकूँ। ऐसी आवश्यकता एव ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति की उपस्थिति मे हमें किसी न किसी सुरक्षित स्थान की खोज करनी चाहिए जहाँ हम कठिनाई एव परेशानी के समय जाकर शरण ले सकें और शक्तिशाली शत्रु से कुछ दूरी पर रह सकें। अब केवल बदख्शा एव हिन्दुस्तान ही के विषय मे निर्णय करना है कि कौन सा स्थान चुना जाय। कासिम बेग तथा शेरीम तग़ाई बदख्शा के विषय मे सहमत थे। इस कठिनाई के समय जिन लोगो को बदख्शा मे प्रभुत्व प्राप्त था वे थे, बख़्शियो मे मुबारक शाह तथा ज़ुबेर, जहागीर तुर्कमान एव मुहम्मद कूर्ची। उन्होंने नासिर मीर्ज़ा को तो निकाल दिया था किन्तु वे ऊज़बेगो से न मिले थे।

मैंने तथा मेरे बहुत से घर के बेगो ने हिन्दुस्तान को अधिक उचित समझा और लमगान की ओर प्रस्थान करने के विषय मे निर्णय किया।

क़न्धार पर अधिकार जमाने के उपरान्त मैंने कलात एव तूरनूक, अब्दुर्रज्ज़ाक मीर्ज़ा को प्रदान करके उसे कलात मे छोड दिया था किन्तु ऊज़बेगो द्वारा कन्धार के अवरोध के कारण वह कलात मे ठहर न सका और उसे छोडकर काबुल भाग आया। वह उसी समय पहुचा जब कि हम लोग प्रस्थान कर रहे थे अत उसे काबुल की देखरेख के लिए छोड दिया गया।

बेगमो तथा मीर्ज़ाओ का बदख्शा की ओर प्रस्थान

बदख्शा मे न तो कोई बादशाह था और न शाहज़ादा। मीर्ज़ा ख़ान[1] की इच्छा उस ओर जाने की थी। इसका एक तो यह कारण था कि वह शाह बेगम[2] का सम्बन्धी था और दूसरे शाह बेगम इस बात से सहमत थी।[3] उसे जाने की अनुमति दे दी गई और सम्मानित बेगम स्वय उसके साथ चली गई। सम्मानित ख़ाला मिहर निगार ख़ानम[4] भी बदख्शा जाना चाहती थी। यद्यपि उनका मेरे साथ रहना

१ मीर्ज़ा ख़ान सुल्तान महमूद का पुत्र तथा शाह बेगम का पौत्र था। उसे १५०८ ई० में बदख्शां में बादशाह मान लिया गया।

२ शाह बेगम, शाह सुल्तान मुहम्मद बदख्शां के बादशाह की पुत्री और बाबर के नाना यूनुस ख़ा की विधवा थी। वह सुल्तान निगार ख़ानम की माता थी। मीर्ज़ा ख़ान सुल्तान निगार ख़ानम तथा हिसार के सुल्तान महमूद मीर्ज़ा का पुत्र था। शाह बेगम इस प्रकार ख़ान मीर्ज़ा की नानी थी।

३ हैदर मीर्ज़ा ने लिखा है कि शाह बेगम बदख्शा को अपना समझती थी और कहा करती थी कि 'यह राज्य ३००० वर्ष से मीरास में हमारा है, यद्यपि मैं स्त्री होने के कारण राज्य नहीं कर सकती तो क्या मेरा नाती मीर्ज़ा ख़ान इस पर राज्य नहीं कर सकता है'—'तारीख़े रशीदी'।

४ वह बाबर की माता की सबसे बड़ी बहिन थी तथा समरकन्द के सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की विधवा थी।

अधिक उचित था कारण कि वह मेरी सगी सम्बन्धी थी किन्तु जो भी आपत्ति प्रकट की गई उससे व सहमत न हुई और बदख्शा की ओर चल दी।

बाबर का दूसरी बार हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने की योजना बनाकर हम लोग जमादि उल-अव्वल मा (सितम्बर १५०७ ई०) मे छोटे काबुल के मार्ग से सूर्ख रबात तथा कूरूक साई होते हुए यात्रा करने उद्देश्य से काबुल से चल दिये।

काबुल तथा लमगान[1] के बीच के अफगान या तो स्वय डाकू है और या वे डाकुओ की सहायत करते रहते है। वे शान्ति के समय भी यह कार्य नही छोडते। वे ईश्वर से ऐसे अशान्ति के समय क प्रार्थना किया करते है किन्तु उन्हें ऐसा समय बहुत कम मिल पाता है। जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि म काबुल छोडकर हिन्दुस्तान की ओर जा रहा हू तो उनकी पूर्व की धृष्टता दस गुनी बढ गई। उनमे से अच्छे से अच्छा आदमी उद्दडता पर तुला हुआ था और बात यहा तक बढ गई कि जिस दिन प्रात काल हम जगदालीक से रवाना हुये तो जो अफगान जगदालीक तथा लमगान के मध्य मे निवास करते थे उदाहरणार्थ खिज्र खेल, शीमू खेल, खिरिलची, खूगियानी ने दर्रे को रोक देना निश्चय कर लिया और पर्वत के उत्तर की ओर पक्ति सुव्यवस्थित करके खडे हो गये। तम्बूर बजाते तथा तलवार चमकाते हुए वे आगे बढने लगे और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने लगे। हमने सवार होकर अपने आदमियो को आदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति उस स्थान से जहा कि वह उतरा हुआ है, पहाडी की ओर यात्रा करे। वे प्रत्येक पहाडी तथा घाट पर घोडे दौडाने लगे, और विभिन्न घाटियों एव प्रत्येक मार्ग से जो उन्हे मिल सका वे बढने लगे। अफगान लोग कुछ देर तक तो चुपचाप खडे रहे किन्तु वे एक बाण भी न चला सके और भाग खडे हुए। जब मैं उनका पीछा करते हुए पर्वत मे था तो मैंने एक अफगान के जोकि मेरे नीचे की ओर भागा जा रहा था, बाण मारा। वह घायल तथा कुछ अन्य लोग लाये गये। कुछ लोगो को अन्य लोगों की शिक्षा हेतु सूली दे दी गई।

हम लोग नीनगनहार तूमान के अदीनापूर किले के समक्ष उतर पडे।

शीत ऋतु की सामग्री हेतु छापे

उस समय तक हमने यह निश्चय न किया था कि कहा शिविर लगाये जाय, कहा जाया जाय और कहा ठहरा जाय। हम लोग ऊपर नीचे यात्रा कर रहे थे और नये स्थानो के ऊपर शिविर लगाते थे तथा समाचार[2] की प्रतीक्षा कर रहे थे। शरद् काल का अन्त था। मैदान के बहुत से निवासी अपने चावल का भडार ले जा चुके थे। स्थानीय जानकारी रखने वालो ने निवेदन किया कि अलीशग तूमान की नदी के ऊपर 'भील काफिर' लोग बहुत अधिक मात्रा मे चावल पैदा करते हैं, सम्भव है कि हम सेना के लिये खाद्य सामग्री एकत्र कर सकें जोकि शीत ऋतु मे सेना के काम आये। तदनुसार हम लोग नीनगनहार जुल्गा[3] से रवाना हो गये और (बारान नदी) को साईकल नामक स्थान पर पार किया और शीघ्रातिशीघ्र

१ नीनगनहार।
२ शैबाक खा तथा मीर्जा खान के समाचार।
३ घाटी।

प्रअमीन घाटी तक पहुच गये। वहा सैनिको ने अधिक माना मे चावल एकत्र किया। चावल के खेत पर्वत की तलहटी मे थे। लोग भाग गये किन्तु कुछ काफिरो की हत्या कर दी गई। बारान की घाटी की ऊचाई पर उन्होने कुछ आदमियो को एक सरकोब[1] पर नियुक्त कर दिया था। जब काफिर लोग भाग गये, तो यह दल शीघ्रातिशीघ्र पहाडी से उतर पडा और हम पर बाणो की वर्षा करके हमे परेशान करने लगा, वे लोग कासिम बेग के जामाता पूरान के पास तक पहुच गये और उसके ऊपर कुठार से प्रहार किया। उसी समय कुछ वीर लोग वापस लौट गये और उन्होने साहस कर के उन लोगो को भगा दिया तथा पूरान को मुक्ति दिला दी। काफिरो के चावल के खेतो म एक रात्रि ठहर कर हम लोग अत्यधिक खाद्य सामग्री लेकर अपने शिविर को लौट आये।

मुकीम की पुत्री का विवाह

जिन दिनो हम मन्दरावर के समीप थे तो मुकीम की पुत्री माहचूचक का विवाह कासिम कूकूल्दाश से हो गया। इस समय वह शाह हुसेन अरगून की पत्नी है।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण का विचार त्यागना

क्योकि उस समय हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करना उचित न समझा गया अत मैंने पगागर के मुल्ला बाबा को कुछ वीरो सहित काबुल वापस भेज दिया। इसी बीच मे मैंने मन्दरावर से अतर तथा शीवा की ओर प्रस्थान किया और वहा कुछ दिन तक ठहरा रहा। अतर से मैंने कूनार एव नूरगल की यात्रा की। कूनार से मैं एक जाला[2] पर शिविर मे वापस चला गया। मैं जाला पर प्रथम बार बैठा था। वह मुझे बडी अच्छी लगी और तदुपरान्त उसका सामान्य रूप से प्रयोग होने लगा।

शैबाक खा की कन्धार से वापसी

उन्ही दिनो मे फरकत का मुल्ला बाबा नासिर मीर्ज़ा के पास स शैबाक खा के सविस्तार समाचार लेकर आया। शैबाक खा कन्धार के बाहरी किले पर अधिकार जमाने के उपरान्त भीतरी किले को विजय न कर सका था कि वापस चला गया। वह यह समाचार भी लाया कि मीर्ज़ा भी विभिन्न कारणो से कन्धार छोड कर गजनी चला गया।

हमारे प्रस्थान के थोडे ही दिन उपरान्त शैबाक खा के कन्धार पहुच जाने के कारण किले वाले भौंचक्के हो गये और वे बाहरी किले को दृढ न बना सके। उसने भीतरी किले के चारो ओर कई बार सुरगें लगवाईं और आक्रमण किये। वह स्थान हाथ से निकलने वाला ही था। उस चिन्ता की अवस्था म ख्वाजा मुहम्मद अमीन ख्वाजा दोस्त खावन्द, मुहम्मद अली पदाती तथा गामी दीवार से कूदकर भाग गये। जो लोग किले मे थे वे परेशान होकर किला समर्पित करने वाले ही थे कि शैबाक खा ने सन्धि का प्रस्ताव रखकर स्थान छोड दिया। उसके वहा से प्रस्थान करने का यह कारण था ऐसा प्रतीत

१ किले पर आक्रमण करने के लिये एक ऊँचा स्थान इस प्रकार बनाया जाता था कि वह किले की दीवार तक पहुच जाता था और वहा से शत्रुओं पर सुगमतापूर्वक आक्रमण किया जा सकता था।
२ एक प्रकार की बास की नौका।

अधिक उचित था कारण कि वह मेरी सगी सम्बन्धी थी किन्तु जो भी आपत्ति प्रकट की गई उससे वह सहमत न हुई और बदख्शा की ओर चल दी।

बाबर का दूसरी बार हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने की योजना बनाकर हम लोग जमादि-उल-अव्वल मास (सितम्बर १५०७ ई०) म छोटे काबुल के मार्ग से सुर्ख रबात तथा कूरुक साई होते हुए यात्रा करने के उद्देश्य से काबुल से चल दिये।

काबुल तथा लमगान[1] के बीच के अफगान या तो स्वय डाकू हैं और या वे डाकुओ की सहायता करते रहते है। वे शान्ति के समय भी यह कार्य नही छोडते। वे ईश्वर से ऐसे अशान्ति के समय की प्रार्थना किया करते है किन्तु उन्हें ऐसा समय बहुत कम मिल पाता है। जब उन्हे यह ज्ञात हो गया कि मैं काबुल छोडकर हिन्दुस्तान की ओर जा रहा हू तो उनकी पूर्व की धृष्टता दस गुनी बढ गई। उनमे से *अच्छे से अच्छा आदमी उद्दडता पर तुला हुआ था और बात यहा तक बढ गई कि जिस दिन प्रात काल* हम जगदालीक से रवाना हुये तो जो अफगान जगदालीक तथा लमगान के मध्य मे निवास करते थे उदाहरणार्थ खिज्र खेल, शीमू खेल, खिरिलची, खूगियानी न दर्रे को रोक देना निश्चय कर लिया और पर्वत के उत्तर की ओर पक्ति सुव्यवस्थित करके खडे हो गये। तम्बूर बजाते तथा तलवार चमकाते हुए वे आगे बढने लगे और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने लगे। हमने सवार होकर अपने आदमियो को आदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति उस स्थान से जहा कि वह उतरा हुआ है, पहाडी की ओर यात्रा करे। वे प्रत्येक पहाडी तथा घाट पर घोडे दौडाने लगे, और विभिन्न घाटियो एव प्रत्येक मार्ग से जो उन्हे मिल सका वे बढने लगे। अफगान लोग कुछ देर तक तो चुपचाप खडे रहे किन्तु वे एक बाण भी न चला सके और भाग खडे हुए। जब मैं उनका पीछा करते हुए पर्वत मे था तो मैंने एक अफगान के जोकि मेरे नीचे की ओर भागा जा रहा था, बाण मारा। वह घायल तथा कुछ अन्य लोग लाये गये। कुछ लोगो को अन्य लोगो की शिक्षा हेतु सूली दे दी गई।

हम लोग नीनगनहार तूमान के अदीनापूर किले के समक्ष उतर पडे।

शीत ऋतु की सामग्री हेतु छापे

उस समय तक हमने यह निश्चय न किया था कि कहा शिविर लगाये जाय, कहा जाया जाय और कहा ठहरा जाय। हम लोग ऊपर नीचे यात्रा कर रहे थे और नये स्थानो के ऊपर शिविर लगाते थे तथा समाचार[2] की प्रतीक्षा कर रहे थे। शरद् काल का अन्त था। मैदान के बहुत से निवासी अपने चावल का भडार ले जा चुके थे। स्थानीय जानकारी रखने वालो ने निवेदन किया कि अलीशग तूमान की नदी के ऊपर 'भील काफिर' लोग बहुत अधिक मात्रा मे चावल पैदा करते है, सम्भव है कि हम सेना के लिये खाद्य सामग्री एकत्र कर सकें जोकि शीत ऋतु मे सेना के काम आये। तदनुसार हम लोग नीनगनहार जुल्गा[3] मे रवाना हो गये और (बारान नदी) को साईकल नामक स्थान पर पार किया और शीघ्रातिशीघ्र

१ नीनगनहार।
२ शैबाक खां तथा मीर्ज़ा खान के समाचार।
३ घाटी।

पूरअमीन घाटी तक पहुच गये। वहा सैनिकों ने अधिक मात्रा मे चावल एकत्र किया। चावल के खेत पर्वत की तलहटी मे थे। लोग भाग गये किन्तु कुछ काफिरों की हत्या कर दी गई। बारान की घाटी की ऊचाई पर उन्होंने कुछ आदमियो को एक सर्कोब[1] पर नियुक्त कर दिया था। जब काफिर लोग भाग गये, तो यह दल शीघ्रातिशीघ्र पहाडी से उतर पडा और हम पर बाणो की वर्षा करके हमें परेशान करने लगा, वे लोग क़ासिम बेग के जामाता पूरान के पास तक पहुच गये और उसके ऊपर कुठार से प्रहार किया। उसी समय कुछ वीर लोग वापस लौट गये और उन्होंने साहस कर के उन लोगो को भगा दिया तथा पूरान को मुक्ति दिला दी। काफिरो के चावल के खेतो मे एक रात्रि ठहर कर हम लोग अत्यधिक खाद्य सामग्री लेकर अपने शिविर को लौट आये।

मुकीम की पुत्री का विवाह

जिन दिनो हम मन्दरावर के समीप थे तो मुकीम की पुत्री माहचूचक का विवाह क़ासिम कूकूल्दाश से हो गया। इस समय वह शाह हुसेन अरगून की पत्नी है।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण का विचार त्यागना

क्योंकि उस समय हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करना उचित न समझा गया अत मैंने पशागर के मुल्ला बाबा को कुछ वीरो सहित काबुल वापस भेज दिया। इसी बीच मे मैंने मन्दरावर से अतर तथा शीवा की ओर प्रस्थान किया और वहा कुछ दिन तक ठहरा रहा। अतर से मैंने कूनार एव नूरगल की यात्रा की। कूनार से मैं एक जाला[2] पर शिविर मे वापस चला गया। मैं जाला पर प्रथम बार बैठा था। वह मुझे बडी अच्छी लगी और तदुपरान्त उसका सामान्य रूप से प्रयोग होने लगा।

शैबाक खाँ की क़न्धार से वापसी

उन्हीं दिनों में फरकत का मुल्ला बाबा नासिर मीर्ज़ा के पास से शैबाक खा के सविस्तार समाचार लेकर आया। शैबाक खा कन्धार के बाहरी किले पर अधिकार जमाने के उपरान्त भीतरी किले की विजय न कर सका था कि वापस चला गया। वह यह समाचार भी लाया कि मीर्ज़ा भी विभिन्न कारणों से कन्धार छोड कर गजनी चला गया।

हमारे प्रस्थान के थोड़े ही दिन उपरान्त शैबाक खा के कन्धार पहुच जाने के कारण किले वाले भौंचक्के हो गये और वे बाहरी किले को दृढ न बना सके। उसने भीतरी किले के चारा ओर कई बार सुरगें लगवाई और आक्रमण किये। वह स्थान हाथ मे निकलने वाला ही था। उस चिन्ता की अवस्था मे ख्वाजा मुहम्मद अमीन, ख्वाजा दोस्त खावन्द, मुहम्मद अली पदाती तथा शामी दीवार से कूदकर भाग गये। जो लोग किले मे थे वे परेशान होकर किला समर्पित करने वाले ही थे कि शैबाक खा ने सन्धि का प्रस्ताव रखकर स्थान छोड दिया। उसके वहा से प्रस्थान करने का यह कारण था: ऐसा प्रतीत

१ किले पर आक्रमण करने के लिये एक ऊँचा स्थान इस प्रकार बनाया जाता था कि वह किले की दीवार तक पहुँच जाता था और वहा से शत्रुओं पर सुगमतापूर्वक आक्रमण किया जा सकता था।
२ एक प्रकार की बास की नौका।

होता है कि वह वहा पहुचने के पूर्व अपने अन्त पुर को नीरहतू[1] भेज गया था। अब नीरहतू मे किसी व्यक्ति ने विद्रोह करके किले पर अधिकार जमा लिया अत खान एक प्रकार से सन्धि करके कन्धार से वापस चला गया।

बाबर की काबुल को वापसी

यद्यपि यह बीचो-बीच जाडा था, हम लोग बादे पीच के मार्ग से काबुल को वापस हो गये। मैंने आदेश दिया कि उस दर्रे को पार करने की तिथि बादे पीच के ऊपर एक पत्थर पर खोद दी जाय[2]। हाफिज मीराक ने लेख तैयार किया, उस्ताद शाह मुहम्मद ने उसे खोदा, किन्तु जल्दी के कारण खुदाई अच्छी न हो सकी।

मैंने गज़नी नासिर मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया और अब्दुर्रज्ज़ाक मीर्ज़ा को नीनगनहार तूमान, मन्दरावर, नूर घाटी, कूनार तथा नूरगल सहित प्रदान कर दिया।

बाबर का पादशाह की उपाधि धारण करना

उस समय तक तीमूर बेग के उत्तराधिकारियो को चाहे वे राज्य ही क्यो न कर रहे हो, लोग मीर्ज़ा कहते थे किन्तु इस समय मैंने आदेश दिया कि लोग मुझे पादशाह कहा करें।[3]

बाबर के पहले पुत्र का जन्म

इस वर्ष के अन्त मे मगलवार ४ जीकाद को जब कि सूर्य मीन राशि मे था, हुमायू का काबुल के भीतरी किले मे जन्म हुआ। मौलाना मसनदी नामक कवि ने "सुल्तान हुमायू खा' नामक शब्दो के अक्षरो से जन्म तिथि निकाली। काबुल के एक अन्य साधारण कवि ने "शाहे फीरोज़ कद्र" के अक्षरों से जन्म तिथि निकाली। १-२ दिन उपरान्त उसका नाम हुमायू रक्खा गया। जब वह ५-६ दिन का हो गया तो मैं चार बाग पहुचा जहा उसके जन्म का समारोह मनाया गया। सभी बेग लाग छोटे तथा बडे उपहार लाये। चादी के तन्को का इतना बडा ढेर लग गया कि इससे पूर्व ऐसा ढेर न देखा गया। यह बडे ही उत्तम प्रकार का समारोह हुआ।

१ अर्सकिन के अनुसार "कालिऊन' हेरी के पूर्व बादगीस में।

२ अबुल फ़ज़ल के अनुसार यह लेख उसके समय में मौजूद था।

३ उस उपाधि के धारण करने के अनेक अनुमान लगाये गये हैं। वास्तव में तीमूरियों में इस समय वही एक महत्वपूर्ण व्यक्ति जीवित था। उसकी महत्त्वाकाक्षायें इस बात की द्योतक थीं कि वह तीमूर का स्थान ग्रहण करेगा। इस समय मीर्ज़ा खान के विद्रोह को दबा दिया गया था। अरग़ान पराजित हो गये थे। ऊज़बेग लोग काफ़ी दूर पर थे और यह काबुल का स्वामी था।

९१४ हि०

(२ मई १५०८ ई० से २१ अप्रैल १५०९ ई०)

इस वर्ष वहार के मौसम मे महमन्द अफगानो के एक समूह पर मुकुर के समीप छापा मारा गया।

मुगूलो का विद्रोह

उस आक्रमण से हमारी वापसी के कुछ दिन उपरान्त कूजवेग, फकीर अली, करीमदाद तथा बावा चुहरा हमसे पृथक् होने के विपय मे सोच रहे थे कि उनकी योजना का पता चल गया और लोगो को भेजा गया जिन्होंने उन्हें अस्तरगच के समीप पकड लिया। जहाँगीर मीर्ज़ा के जीवन काल मे भी उन्होंने कई वार दुर्व्यवहार किये थे। मैंने आदेश दे दिया था कि बाज़ार के सिरे पर उनकी हत्या कर दी जाय। वे उस स्थान पर ले जाये गये। रस्सियां लगाई गई और उन्हें सूली दी जाने वाली ही थी कि क़ासिम वेग ने खलीफा को मेरे पास भेज कर आग्रह कराया कि मैं उनके अपराधो को क्षमा कर दू। उसे प्रसन्न करने के लिए मैंने उन्हें क्षमा कर दिया किन्तु मैंने आदेश दिया कि उन्हें वन्दी अवस्था मे रखा जाय।

हिसार तथा कुन्दूज़ निवासी एव उच्च श्रेणी के मुगूल जो खुसरो शाह की सेवा मे थे जिनमे चिलमा, अली सैयिद, सकमा, शेर कुली, ईकू सलाम, खुसरो शाह के विश्वासपात्र चगताई सेवक जो सुल्तान अली चुहरा तथा खुदा वख्श के अधीन थे और ३००० उपयोगी तुर्कमान वीर जो सीऊन्दूक तथा शाह नज़र के अधीन थे, मिलकर मेरे विरोधी हो गये। ये लोग ख्वाजा रिवाज के सामने सूग-कूरगान के घास के मैदान से चालाक नामक स्थान तक फैले हुए थे। अब्दुर्रज्ज़ाक ने नीनगनहार से आकर देहे अफग़ान मे स्थान ग्रहण कर लिया।

इससे पूर्व मुहिब अली कूरची, खलीफा तथा मुल्ला बावा को उनकी एक या दो बार की गोष्ठियो की सूचना दे चुका था और दोनो ने मुझे सकेत किया था किन्तु वह बात असम्भव सी प्रतीत होती थी अत मैंने उस ओर कोई ध्यान न दिया। एक रात्रि मे सोने के समय की नमाज़ के वक्त जब मैं चार बाग़ के दरबार कक्ष मे बैठा हुआ था तो मूसा ख्वाजा एक आदमी के साथ दौडता हुआ आया और उसने मेरे कान मे कहा कि "मुगूल लोग वास्तव मे विद्रोह कर रहे हैं। हम निश्चयपूर्वक यह नही कह सकते कि उन्होने अब्दुर्रज्ज़ाक मीर्ज़ा को अपनी ओर मिला लिया है अथवा नही। उन्होंने आज रात्रि मे विद्रोह करना निश्चय नही किया है।" मैंने इस समाचार को इस प्रकार सुना मानो मुझे उसकी कोई चिन्ता नही। मैं थोडी देर उपरान्त अन्त पुर की ओर, जो उस समय यूरूनचका बाग़ तथा बाग़े खिलवत की ओर था, रवाना हुआ किन्तु जब रक्षक तथा यसावल मेरे अन्त पुर के समीप पहुचने पर वापस चले गये तो मैं मुख्य दास के साथ नगर की ओर खाई की तरफ से होता हुआ रवाना हुआ। मैं लोहे के फाटक तक पहुचा था कि ख्वाजा मुहम्मद अली मेरे पास पहुचा। वह बजौर के मार्ग से होता हुआ दूसरी ओर से आ रहा था। वह मेरे साथ हो लिया . . .[1]

[1] समस्त पांडुलिपियों में इसके बाद कुछ नहीं लिखा है।

९२५ हि०

(३ जनवरी से २३ दिसम्बर १५१९ ई०)

बाबर द्वारा बजौर के किले पर अधिकार

(३ जनवरी)—सोमवार १ मुहर्रम को चन्दावल[1] जुलगे के नीचे के भाग मे बडा भयकर भूकम्प आया और एक ज्योतिपीय घटे तक चलता रहा।

(४ जनवरी)—प्रात काल हम लोग बजौर के किले पर आक्रमण करने के उद्देश्य से शिविर से रवाना हुए और उसके समीप उतर पडे। हमने एक विश्वासपात्र को दिलाज़ाक अफगानो के पास उन्हें यह परामर्श देने के लिए भेजा कि वे अधीनता स्वीकार कर ले तथा किला समर्पित कर दें। उस मूर्ख तथा अभागे समूह ने इस परामर्श को स्वीकार न किया और धृष्टता प्रदर्शित करते हुए उत्तर भेजा। सेना को तैयारी का आदेश दे दिया गया और किले पर अधिकार जमाने के लिए सीढियो एव अन्य सामग्री की व्यवस्था करने का हुक्म हुआ।

(५ जनवरी)—इस उद्देश्य से उसी स्थान पर एक दिन पडाव किया गया।

(६ जनवरी)—बृहस्पतिवार ४ मुहर्रम को सेना वालो को आदेश दिया गया कि वे अस्त्र-शस्त्र धारण कर लें और घोडो पर सवार हो जायें। सेना का बाया भाग किले के ऊपरी ओर शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करे और जिस स्थान पर जल प्रविष्ट होता है वहा से जल को पार करके किले की उत्तरी दिशा मे ठहर जायें। सेना का मध्य भाग जल के पार न जाये अपितु किले के उत्तरी-पश्चिमी ऊवड-खाब एव असमतल स्थान पर उतर पडे। दाहिना भाग नीचे के फाटक के पश्चिम की ओर पडाव करे। जब बायें भाग के बेग लोग, जोकि दोस्त बेग के अधीन थे, नदी पार करके पडाव कर रहे थे तो १०० से १५० तक पदाती किले के बाहर निकलकर बाणो की वर्षा करने लगे। बेग लोग भी इस ओर से बाण चलाते हुए अग्रसर हुए, यहा तक कि उन लोगो ने इन आदमियो को किले की दीवार तक ढकेल दिया। स्वास्त का मुल्ला अब्दुल मलूक एक पागल के समान अपने घोडे पर बैठकर उनकी ओर सीधा बढता चला गया। यदि सीढिया तथा कमन्द[2] तैयार होते तथा दिन अधिक चढ न गया होता तो किले पर तत्काल विजय प्राप्त हो जाती। मुल्ला तिरिक अली तथा तीगरी बीरदी के एक सेवक ने शत्रु से तलवार से मुकाबला किया और प्रत्येक अपने अपने शत्रु का सिर काट कर ले आया। प्रत्येक को इनाम का वचन दिया गया था।

१ ९२५ हि० के प्रारम्भ में काबुल से बहुत दूर और खहर किले के पूर्व में उसे विजय करने का प्रयत्न कर रहा था। अफ़गान तथा अन्य स्रोतों के अनुसार सम्भवत यह सब प्रथम चगान सराय, और तदुपरान्त हैदर अली बजौरी के दृढ स्थान जिन्नी पर जो बाबा करा घाटी के सिरे पर था, अधिकार जमा कर चंदावल घाटी में पहुचा होगा।

२ फदा, एक लम्बी रस्सी जिसके एक सिरे पर गोह बँधी रहती थी, इसके द्वारा ऊँची-ऊँची दीवारों पर चढा जा सकता था। गोह जिस स्थान पर चिपक जाती है उसे नहीं छोडती।

क्योकि बजौरी लोगा ने कभी तुफ़ग[1] न देखा था अत सर्वप्रथम उन्होने उसकी कोई चिन्ता न की अपितु जब उन्होंने उसकी आवाज़ सुनी तो उसकी खिल्ली उडाते हुए बडा ही अनुचित व्यवहार किया उस दिन उस्ताद अली कुली ने तुफग द्वारा पाच आदमियो की हत्या कर दी और वली खाज़िन ने दो आदमियो की। अन्य तुफग चलाने वालो ने भी तुफग चलाने मे बडी कुशलता दिखाई और ढाल, ज़िरह बक्तर एव कुसारू की आड मे आदमियो की निरन्तर हत्या की। लगभग ७-८ अथवा १० बजौरी तुफग द्वारा रात तक मार डाले गये। इसके बाद ऐसा हुआ कि तुफग चलने के कारण एक सिर भी दृष्टिगत न होता था। आदेश दिया गया कि अब रात हो गई है, शत्रुओ को चले जाने दो। प्रात काल यदि यत्र तैयार हो जाय तो किले पर धावा बोल दिया जाय।

(७ जनवरी)—शुक्रवार ५ मुहर्रम को पौ फटते ही आदेश दिया गया कि जब युद्ध के नक्क़ारे बज जायें तो सेना अग्रसर हो और प्रत्येक व्यक्ति अपने निश्चित स्थान से ऊपर की ओर आक्रमण कर दे। बायें भाग तथा मध्य भाग वाले कमन्दें लेकर अपने अपने स्थान से पक्ति बना कर अग्रसर हुए और सीढिया लगा कर चढ गये। मध्य भाग के बायें बाज़ू को, जो खलीफा, शाह हसन अरगून तथा यूसुफ अहमद के अधीन था, आदेश हुआ कि वे सेना के बायें भाग की सहायता करें। दोस्त बेग के आदमी किले की उत्तरी पूर्वी बुर्ज के नीचे तक पहुच गये और उसे नष्ट करने की व्यवस्था करने लगे। उस्ताद अली कुली वहा भी था। उसने उस दिन अपनी तुफग बडी कुशलता से चलाई और दो बार फिरगी[2] दाग़ी। वली खाज़िन ने भी अपनी तुफग से एक आदमी को गिरा दिया। मध्य भाग के बायें बाज़ू वाले सैनिको मे से मलिक अली कुतनी सर्वप्रथम सीढी लगाकर चढ गया और कुछ समय तक युद्ध करता रहा। मध्य भाग से मुहम्मद अली जगजग तथा उसका छोटा भाई नौरोज अन्य सीढी से ऊपर चढ गये और भाले तथा तलवार चलाने लगे। बाबा यसावल एक अन्य सीढी से चढा और अपने कुठार से किले की दीवार तोडने लगा। हमारे अधिकाश वीर बढते चले गये और बाणो की घोर वर्षा करते रहे, यहा तक कि उन्होंने शत्रु को सिर न निकालने दिया। अन्य लोग किले को तोडने का जी तोडकर प्रयत्न करने लगे। उन्हें शत्रु के आक्रमण की कोई चिंता न थी और वे उनके बाणो तथा पत्थरो की ओर ध्यान भी न देते थे। नाश्ते के समय तक दोस्त बेग के आदमिया ने उत्तरी-पूर्वी बुर्ज के एक भाग को तोड डाला और उसमे प्रविष्ट होकर शत्रु को भगा दिया। मध्य भाग के आदमी उसी समय सीढी से पहुच गये किन्तु जिनका उल्लेख हो चुका है, वे पहिले से ही वहा थे। ईश्वर की महान् कृपा द्वारा यह दृढ तथा भव्य किला दो तीन ज्योतिषीय घटो मे विजय हो गया। किले को देखते हुए हमारे वीरा ने महान् पौरुष एव सघर्ष प्रदर्शित किया और वीरो सरीखा नाम तथा प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।

क्योंकि बजौर वाले विद्रोही तथा मुसलमानो के शत्रु थे और क्योकि उनमे काफिरो की प्रथाए प्रचलित थी तथा इस्लाम के नाम का भी उस कबीले से समूलोच्छेदन हो गया था अत सामान्य रूप से उनके सहार का आदेश दे दिया गया और उनकी स्त्रिया तथा बच्चे बन्दी बना लिये गये। लगभग तीन हज़ार आदमियों से अधिक मार डाले गये। क्योंकि योद्धा लोग क़िले की पूर्वी दिशा तक न पहुचे थे अत कुछ लोग उस ओर से भाग खडे हुए।

१ बन्दूक।
२ एक प्रकार की तोप। इनका नाम फ़िरंगी इस बात का द्योतक है कि यह योरुप वालों का आविष्कार है। बाबर ने अन्य स्थानों पर भी कई प्रकार की तोपों के प्रसंग में फ़िरंगी का अलग से नाम लिया है।

किले पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त हम लोग उसमे प्रविष्ट हुए तथा किले का निरीक्षण किया। घरो की दीवारो पर तथा गली कूचो मे लाशें पडी हुई थी, किस सख्या मे यह ज्ञात नही। हम अपने निरीक्षण के उपरान्त बजौर के सुल्तान के महल मे बैठे। हमने बजौर प्रदेश ख्वाजा कला[1] को प्रदान कर दिया और वीरो की एक बहुत बडी सख्या उसकी सहायता हेतु नियुक्त कर दी। सायकाल की नमाज के समय हम लोग शिविर को लौट गये।

बाबा करा की ओर प्रस्थान

(८ जनवरी)—६ मुहर्रम की प्रात काल प्रस्थान करके हम लोगो ने बाबा करा के झरने के पास, जोकि बजौर घाटी मे है, पडाव किया। ख्वाजा कला के आग्रह पर शेष बन्दियो के अपराध क्षमा कर दिये गये और उन्हें उनकी पत्निया तथा बालक वापस कर दिये गये और जाने की अनुमति दे दी गई किन्तु बहुत से विद्रोही एव उद्दण्ड सुल्तानो की हत्या करा दी गई। कुछ सुल्तानो तथा अन्य लोगो के सिर काबुल विजय के समाचार के साथ भेज दिये गये। विजय पत्र के साथ कुछ सिर बदख्शा कून्दूज तथा बल्ख भी भेजे गये।

शाह मन्सूर यूसुफ जाई अपने कबीले के पास से दूत बनकर आया था। उसने अपनी आखो से विजय तथा सहार का दृश्य देखा। हमने उसे एक तून[2] प्रदान करके विदा कर दिया और यूसुफ जाई कबीले को चेतावनी युक्त पत्र उसके हाथ भेज दिये।

(११ जनवरी)—*बजौर किले के महत्वपूर्ण कार्यों से निश्चिन्त होकर हम लोग मगलवार ९* मुहर्रम को वहा से रवाना हुए और बजौर घाटी के एक कुरोह[3] तक यात्रा के उपरान्त आदेश दिया कि वहा एक पुश्ते पर आदमियो के सिरो का एक स्तम्भ बनवाया जाय।

(१२ जनवरी)—बुधवार १० मुहर्रम को हम लोग बजौर के किले की सैर करने को गये। ख्वाजा कला के घर मे मदिरापान की एक महफिल हुई[4]। बजौर के समीप के काफिर लोग मदिरा से भरी कई मशकें लाये थे। बजौर मे समस्त मदिरा तथा फल काफिरिस्तान के समीप के भागो से आते हैं।

(१३ जनवरी)—हमने रात्रि वही व्यतीत की और किले की बुर्जों तथा दीवारो का निरीक्षण करके प्रात काल वहा से रवाना हो गये। मैं सवार होकर शिविर की ओर चल दिया।

(१४ जनवरी)—प्रात काल प्रस्थान करके हम लोगों ने ख्वाजा ख़िज्र नामक जलधारा पर पडाव किया।

(१५ जनवरी)—वहा से प्रस्थान करके हम लोगो ने चन्दावल नामक जलधारा पर पडाव किया। यही उन लोगो को जिन्हें बजौर के किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त किया गया था आदेश दिया गया कि वे सब के सब उस स्थान को चले जायें।

(१६ जनवरी)—रविवार १४ मुहर्रम को ख्वाजा कला को एक पताका प्रदान की गई और

१ वह मौलाना मुहम्मद सद्र का, जो उमर शेख़ मीर्ज़ा के दरबार का एक विशेष व्यक्ति था, पुत्र था।
२ एक प्रकार का कोट।
३ २ मील।
४ यह मदिरा-पान का पहला उल्लेख है। इस समय उसकी अवस्था ३७ वर्ष की है। उसका विचार था कि वह ४० वर्ष की अवस्था में मदिरा-पान त्याग देगा।

उसे बजौर जाने की अनुमति दे दी गई। उसे जाने की अनुमति देने के कुछ दिन उपरान्त मैंने एक छोटा सा पद्य बनाया और उसे लिखकर उसके पास भिजवा दिया

पद्य

"मुझ मे तथा मेरे मित्र मे कोई ऐसी प्रतिज्ञा तथा कोई ऐसा वचन न था,
अलग हो जाने के कारण मुझे दारुण पीडा हो रही है और मैं अत्यधिक व्याकुल हू।
भाग्य के अत्याचारो के विरुद्ध किया ही क्या जा सकता है?
अन्ततोगत्वा जबरदस्ती[1] मेरा मित्र मुझसे छिन गया॥"

(१९ जनवरी)—बुधवार १७ मुहर्रम को सवाद का सुल्तान अलाउद्दीन, जो सवाद के सुल्तान वैस[2] का प्रतिस्पर्धी था, मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

(२० जनवरी)—बृहस्पतिवार १८ मुहर्रम को हमने बजौर तथा चन्दावल के मध्य की पहाडी मे शिकार खेला। वहा के बूगू मराल[3] पूर्णत काले होते हैं, केवल दुम दूसरे रग की होती है। वहा से नीचे हिन्दुस्तान मे वे पूर्णत काले होते हैं। आज एक सारीक कूश[4] पकडी गई, वह पूर्ण रूप से काली थी और उसकी आखें भी काली थी। आज एक बूरकूत[5] ने एक कियीक को पकडा। क्याकि सेना मे अनाज की कमी हो गई थी अत हम लोगो ने कहराज घाटी मे पहुच कर कुछ अनाज प्राप्त किया।

(२१ जनवरी)—शुक्रवार (१९ मुहर्रम) के दिन हम सवाद की ओर यूसुफ जाई अफगानो पर आक्रमण करने के उद्देश्य से रवाना हुए और पजकूरा नदी तथा चन्दावल नदी एव बजौर नदी के सगम के मध्य मे उतरे। शाह मन्सूर यूसुफ जाई थोडी सी बडी स्वादिष्ट एव नशे की कमाली लाया था।[6] उसमे से एक को तीन भागो मे विभाजित कर के मैंने एक भाग खाया। गदाई तगाई ने एक भाग तथा अब्दुल्लाह किताबदार[7] ने दूसरा भाग खाया। इससे बडा ही उत्तम प्रकार का नशा हुआ। यहा तक कि जब सायकाल की नमाज के समय बेग लोग परामर्श के लिए एकत्र हुए तो मैं बाहर न निकल सका। यह एक बडी विचित्र बात थी। यदि इन दिनो[8] मे मैं पूरी ही कमाली खा जाऊ तो मुझे सदेह है कि मुझे उसका आधा नशा भी होगा।

कहराज पर कर

(२२ जनवरी)—वहा से प्रस्थान करके हम लोग कहराज के समक्ष, कहराज तथा पेश ग्राम घाटियो के मुह पर उतरे। जब हम वहा थे तो टखना तक बर्फ पडी हुई थी। उस समय बर्फ का गिरना

१ बजौर। इसी प्रकार इस पद्य में कई शब्दों में श्लेष का प्रयोग किया गया है।
२ अर्सकिन के अनुसार उसका राज्य सवाद नदी से बारामूला तक फैला हुआ था। यूसुफ जाई कबीले ने उसे वहाँ से भगा दिया।
३ एक प्रकार का मृग।
४ एक प्रकार का पक्षी।
५ एक प्रकार का गरुड़।
६ कुछ नशीली वस्तुओं का सम्मिश्रण।
७ पुस्तकालयाध्यक्ष।
८ सम्भवत ९३३ हि० (१५२६-२७ ई०)

बडी ही विचित्र बात थी और लोग बडे आश्चर्य मे थे। सवाद के सुल्तान वैस की सहमति से कहराज वालो को सेना के प्रयोग हेतु चार हजार गधो के बोझ के बराबर चावल कर के रूप मे अदा करने का आदेश दिया गया और उसको ही एकत्र करने के लिए भेजा गया। उन धृष्ट पहाडियो ने कभी भी इतना अधिक भार सहन न किया था। वे सब अनाज न दे सके और बडी दीन अवस्था को प्राप्त हो गये।

पंजकूरा पर आक्रमण

(२५ जनवरी)—मगलवार २३ मुहर्रम को हिन्दू बेग के अधीन पजकूरा पर आक्रमण करने के लिए एक सेना भेजी गई। पजकूरा पहाडी के ढाल के मध्य मे स्थित है। उसके गाव मे पहुचने के लिए लोगो को दर्रे से होकर एक कुरोह[1] की यात्रा करनी पडती है। वहा के लोग भाग खडे हुए थे। हमारे आदमी कुछ पशु तथा अत्यधिक अनाज एव घोडे लाये।

(२६ जनवरी)—दूसरे दिन (२४ मुहर्रम) को कूजबेग को सेना के एक दस्ते का सेनापति बना कर आक्रमण करने के लिये भेजा गया।

(२७ जनवरी)—बृहस्पतिवार २५ मुहर्रम को हम लोगो ने मानदीश नामक ग्राम मे पडाव किया। यह कहराज घाटी मे है। हमारा उद्देश्य सेना के लिए अनाज एकत्र करना था।

माहीम द्वारा दिलदार के पुत्र को जिसका जन्म न हुआ था गोद लेना

(२८ जनवरी)—हुमायू की माता के कई बच्चे पैदा हुए और मर गये। हिन्दाल का अभी जन्म न हुआ था। जब हम उस भाग मे थे तो माहीम का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि "चाहे वह पुत्र हो अथवा पुत्री, यह मेरे भाग्य एव अवसर की बात है, मुझे दे दो। मैं उसे अपना बच्चा बना कर रखूगा।" शुक्रवार २६ मुहर्रम को जब कि हम उसी पडाव पर थे, यूसुफ अली रिकावदार को काबुल पत्र देकर भेज दिया गया और हिन्दाल को, जिसका अभी जन्म न हुआ था, उसे प्रदान कर दिया गया।

पत्थर के एक चबूतरे का निर्माण

जिस समय हम लोग मानदीश ही के पडाव पर थे, मैंने आदेश दिया कि घाटी के मध्य मे ऊचाई पर पत्थर का इतना बडा चबूतरा बनाया जाय जिस पर सेना के अग्रभाग के सभी खेमे लग सकें। समस्त घर के सैनिक तथा अन्य सैनिक उसके लिये चीटियो की भाति १-१ कर के पत्थर ले आये।

बाबर का अफगान पत्नी बीबी मुबारका[2] से विवाह

यूसुफ जाई कबीले को सतुष्ट करने के लिए मैंने अपने हितैषी मलिक सुलेमान शाह के पुत्र मलिक शाह मन्सूर की पुत्री से उस समय जब कि वह यूसुफ जाई अफगाना के पास से दूत बनकर आया था, विवाह का प्रस्ताव रखा था।

१ २ मील।

२ अफ़गान इतिहासकारों के अनुसार बाबर ने जिस सरदार की पत्नी से विवाह किया उसका नाम मलिक अहमद था जो मलिक सुलेमान का भतीजा था। मलिक सुलेमान को ऊलुग़ बेग मीर्ज़ा ने विश्वास घात द्वारा एक दावत में मरवा डाला। अफ़गान स्रोतों में इस विवाह का उल्लेख इस प्रकार है : जिस

जब हम लोग इस पडाव पर थे तो समाचार प्राप्त हुए कि उसकी पुत्री यूसुफ जाई कबीले का राज कर ले कर आ रही है। सायकाल की नमाज के समय मदिरापान की एक महफिल आयोजित हुई। इसमे सवाद के सुल्तान अलाउद्दीन को भी आमन्त्रित किया गया था। उसमे उसे बैठने के लिये स्थान तथा विशेष खिलअत प्रदान की गई।

(३० जनवरी)—रविवार २८ मुहर्रम को हमने उस घाट से प्रस्थान किया। शाह मन्सूर का छोटा भाई ताऊस खा अपने भाई की उपर्युक्त पुत्री को हमारे उतरने के उपरान्त उस पडाव पर लाया।

वजौर के किले का पुन आबाद किया जाना

क्योकि बीसूत वाले वजौर वालो से सम्बन्धित हैं, अत मैंने यूसुफ अली बकावल को इस पडाव से इस आशय से भेजा कि वह उन लोगो को ले जा कर वजौर मे बसा दे। काबुल मे भी लिखित आदेश भेजा गया कि जो सेना वहा रह गई है वह भी हमारे पास उपस्थित हो जाय।

(४ फरवरी)—शुक्रवार तीसरी सफर को हम लोग वजौर नदी तथा पजकूरा नदी के सगम पर उतरे।

(६ फरवरी)—रविवार ५ सफर को हम उस पडाव से वजौर पहुचे। वहा ख्वाजा कला के घर मे मदिरापान की एक महफिल आयोजित हुई।

अफगान कबीलो के विरुद्ध आक्रमण

(८ फरवरी)—मगलवार ७ सफर को बेग लोग तथा दिलाजाक अफगानो के सरदार बुलवाये

समय काबुल के बादशाह ऊलूग बेग मीर्जा ने यूसुफ जाइयों को उनके प्राचीन निवास स्थान से निकाल दिया तो उसके बाद उसकी जघा में फोड़ा निकल आया और उसकी मृत्यु हो गई। बाबर ने उसके राज्य पर अधिकार जमा लिया। यूसुफ जाई लोगों ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और मलिक अहमद और कुछ अन्य मलिकों को उपहार सहित बाबर के पास भेजा। बादशाह ने उसका भली भाँति स्वागत किया किन्तु उसके विश्वासपात्र दिलाजाक कबीले ने अहमद की उससे शिकायत कर रक्खी थी और उसके मंत्रियों को घूस दे रक्खी थी। गागियानियों ने जो मलिक अहमद के शत्रु थे किन्तु जिन्होंने अब मलिक अहमद से मेल कर लिया था, उसे बादशाह के कुत्सित विचारों की सूचना दे दी थी। बादशाह ने अन्य मलिकों को विदा कर दिया और मलिक अहमद पर बाण चलाना चाहा। मलिक अहमद ने इस विचार से कि उसका निशाना खाली न जाय, अपना सीना सामने कर दिया। बाबर उससे इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे क्षमा कर दिया।

दूसरे वर्ष बादशाह सवाद की ओर रवाना हो गया। मार्ग में उसने मलिक हैदर अली जेबरी के एक क़िले को घेर लिया। उस पर अधिकार जमा कर वह मक़लोर की ओर चल दिया।

बाबर के गुप्तचर जब महोरेह पर्वत में किसी दर्रे का पता न लगा सके तो बाबर स्वयं क़लन्दर का भेस रख कर वहाँ पहुँचा और वहाँ वालों की एक दावत में सम्मिलित हुआ। मलिक अहमद की पुत्री ने उसे परदेशी समझ कर कुछ भोजन की सामग्री भिजवाई। बाबर उसके रूप रंग एवं व्यवहार को देख कर उस पर आसक्त हो गया। उस स्त्री ने बाबर को अपनी बात चीत से अपने वश में कर लिया और बाबर उसके कबीले के कर को क्षमा करके काबुल वापस चला गया। तदुपरान्त उसने यूसुफ जाई लोगों का सम्मान बहुत बढ़ा दिया और उसके भाई को एक उच्च श्रेणी प्रदान करा दी। उसका भाई जमाल अपनी बहिन तथा बाबर के साथ हिन्दुस्तान तक गया, दोनों की मृत्यु अकबर के समय में हो गई।

गये और उनसे परामर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि "वर्ष समाप्त होने वाला है।[1] मीन राशि मे कुछ ही दिन रह गये हैं। मैंदान वाले सब अनाज उठा ले गये हैं। यदि इस समय हम सवाद जायेंगे तो सेना अनाज के अभाव के कारण नष्ट हो जायेगी। अब इस समय यह करना चाहिये कि अम्बहर तथा पानी-मानी के मार्ग से यात्रा की जाय और हश नगर के ऊपर सवाद नदी पार करके यूसुफ ज़ाई तथा मुहम्मदी अफगानो के पास जोकि माहूरा के यूसुफ ज़ाई सगुर के सामने के मैंदान मे निवास करते थे पहुचा जाय। दूसरे वर्ष शरद् ऋतु के पूर्व आकर इस स्थान के अफगानो के प्रति हम सर्वप्रथम ध्यान दें।" यह बात यहीं तक हुई।

(९ फ़रवरी)—दूसरे दिन बुधवार को हमने घोडे तथा खिलअतें सवाद के सुल्तान वैस तथा सुल्तान अलाउद्दीन को प्रदान की और उन्हें जाने की अनुमति देकर हमने स्वय कूच किया और बजौर के समक्ष पडाव किया।

(१० फरवरी)—दूसरे दिन हमने शाह मन्सूर की पुत्री को बजौर के किले मे उस समय तक के लिए जब तक कि सेना न आये, छोडकर प्रस्थान किया। ख्वाजा खिज्र पार करके हम उतर पडे। उस पडाव से ख्वाजा कला को जाने की अनुमति दे दी गई। भारी सामान, थके हुए घोडे एव सेना की अन्य अनावश्यक वस्तुयें कूनार के मार्ग से लमगान भेज दी गई।

(११ फरवरी)—दूसरे दिन प्रात काल ख्वाजा मीर मीरान को ऊटों के काफिले का सरदार बनाया गया और कूरगातू तथा दरवाजा मार्ग से कराकूपा दर्रे की ओर से भेज दिया गया। छापा मारने के उद्देश्य से बिना अधिक सामान के हम लोगो ने स्वय अम्बहर दर्रे को पार किया और पानी-मानी के समीप मध्याह्लोत्तर की नमाज के उपरान्त पडाव किया। ऊगान बीरदी को कुछ आदमियो सहित वहा के विषय मे पता लगाने के लिये भेज दिया गया।

(१२ फरवरी)—हमारे तथा अफगानो के बीच की दूरी बहुत कम थी। हम शीघ्र रवाना न हुए। ऊगान बीरदी नाश्ते के समय वापस आ गया। उसने एक अफगान वीर का सिर काट लिया था किन्तु उसे मार्ग मे छोड आया था। वह कोई ऐसे निश्चित समाचार न लाया जिससे सतोष होता। मध्याह्न हो गई हम रवाना हुए और सवाद नदी को पार करके मध्याह्लोत्तर की नमाज के समय पडाव किया। सोने के समय की नमाज के वक्त हम पुन सवार हुए और शीघ्रातिशीघ्र रवाना हो गये।

(१३ फरवरी)—रुस्तम तुर्कमान, शत्रु के विषय मे पता लगाने के लिए भेजा गया। जब सूर्य भाले के बराबर ऊचा हो गया तो वह समाचार लाया कि अफगान लोग हमारे विषय मे सुनकर वहा से प्रस्थान कर रहे है और उनमे से एक समूह पर्वतीय मार्ग से यात्रा कर रहा है। इस पर हम वहा से तेज़ी से रवाना हुए और आगे कुछ आक्रमणकारियो को भेजा जिन्होंने कुछ लोगो की हत्या कर दी, उनके सिरो को काट लिया तथा थोडे से बन्दी एव मवेशी पकड लाये। दिलाज़ाक अफगान भी कुछ लोगो के सिर काट कर लाये। हम लोगों ने वापस होकर कातलाग के समीप पडाव किया और वहा से एक मार्गदर्शक को ख्वाजा मीर मीरान के अधीन जो सामान का काफिला गया था, उससे भेंट करने के लिए तथा उसे मकाम[2] मे हमारे पास लाने के लिये भेजा।

१ सम्भवतः शरद्-काल का अन्त।
२ सम्भवतः मरदान।

(१४ फरवरी)—दूसरे दिन प्रस्थान करके हम लोग कातलाग तथा मकाम के मध्य मे उतरे। शाह मन्सूर का एक आदमी आया। खुसरो कूकूल्दाश तथा अहमदी परवानची कुछ अन्य लोगों के साथ सामान के काफिले के पास भेजे गये।

(१५ फरवरी)—बुधवार १४ सफर को सामान का काफिला, जब कि हम मकाम मे पडाव किए हुए थे, पहुच गया।

लगभग ३० अथवा ४० वर्ष हुए होगे कि शहबाज नामक एक काफिर कलन्दर ने यूसुफ जाई तथा दिलाजाक कबीले के कुछ लोगो को मार्ग भ्रष्ट कर दिया था। उसका मकबरा मकाम पर्वत के अन्त पर मैदान के समक्ष जो छोटी सी पहाडी है, उस पर स्थित है। मैंने सोचा कि एक काफिर कलन्दर का मकबरा ऐसे रमणीक स्थान पर क्यो रहे, अत आदेश दिया कि उसे नष्ट करके धराशायी कर दिया जाय। वह स्थान इतना हृदयग्राही तथा रमणीक था कि हमने वहा थोडी देर ठहरकर माजून का सेवन निश्चय किया।

बाबर द्वारा सिंध नदी को प्रथम बार पार करना

हम लोग बजौर से भीरा के उद्देश्य से रवाना हुए थे। जब से मैं काबुल पहुचा तब से मैं निरन्तर हिन्दुस्तान पहुचने के विषय मे सोचा करता था किन्तु अनेक कारणो से यह सब सम्भव न हो सका। ३-४ महीने से हम सेना लिये हुए इधर-उधर फिर रहे थे किन्तु कोई भी महत्वपूर्ण वस्तु हमे प्राप्त न हुई थी। इस समय जब कि भीरा जोकि हिन्दुस्तान के सीमान्त पर स्थित है, इतना निकट था तो मैंने सोचा कि सम्भव है कि हमारे आदमियो को यदि हम उनके ऊपर थोडे से आदमियो को लेकर अचानक टूट पडें तो कुछ न कुछ प्राप्त हो जायेगा। मैं इसी विचार पर दृढ रहा किन्तु मेरे कुछ हितैषियो ने अफगानो पर आक्रमण करने तथा मकाम मे पडाव करने के उपरान्त मेरे समक्ष स्थिति को इस प्रकार प्रस्तुत किया "यदि हम लोगो को हिन्दुस्तान जाना ही है तो किसी निश्चित योजना के अनुसार प्रस्थान करना चाहिये, सेना का एक भाग काबुल मे पडा हुआ है, कुछ योग्य वीरो का एक दल बजौर मे है, सेना का एक अच्छा खासा भाग लमगान चला गया है कारण कि उसके घोडे थक गये थे और जो लोग इस स्थान तक पहुच गये हैं उनके घोडे इतने थक चुके हैं कि वे एक दिन की भी कठिन यात्रा नही कर सकते।" यह बात बडी ठीक थी किन्तु हमने प्रस्थान कर दिया था अत हमने चिन्ता न की और दूसरे दिन सिन्द नदी पार करने के लिए घाट की ओर चल दिये। मीर मुहम्मद नाविक तथा उसके बडे एव छोटे भाई सिन्द नदी के निरीक्षण करने के लिए कुछ वीरो सहित घाट के ऊपर तथा नीचे भेजे गये।

(१६ फरवरी)—शिविर से नदी की ओर प्रस्थान करके मैं सवाती की ओर गैंडो का शिकार करने के लिए रवाना हुआ। इस स्थान को लोग कर्ग-खाना[1] कहते हैं। कुछ गैंडा का पता लगा किन्तु जगल बडा घना था और हम वहा तक न पहुच सकते थे। जब एक गैंडा एक बच्चे के साथ मैदान मे निकला और भागने लगा तो उस पर बहुत से बाण चलाये गये किन्तु वह समीप के जगल मे प्रविष्ट हो गया। जगल मे आग लगा दी गई किन्तु वह गैंडा न मिला। एक अन्य बच्चा मरने के करीब था। वह अग्नि मे जल चुका था और हाफ रहा था। प्रत्येक व्यक्ति ने उसमें से अपना भाग लिया। सवाती से निकलकर हम लोग इधर-उधर काफी फिरते रहे और रात्रि की नमाज के समय शिविर मे पहुचे।

1 गैंडों का घर।

जो लोग घाट का निरीक्षण करने भेजे गये थे वे निरीक्षण करके लौट आये।

(१७ फरवरी)—दूसरे दिन बृहस्पतिवार १६ सफ़र को घोडे तथा बोझ के ऊटो ने घाट[1] से नदी पार की और शिविर के बाज़ार वाले एव पदाती नौकाओ पर बैठाये गये। कुछ नीलाब[2] निवासी मेरी सेवा मे घाट पर उपस्थित हुए और अभिवादन किया। वे सशस्त्र घोडे तथा तीन सौ शाहरुखी[3] उपहार स्वरूप लाये। उसी दिन मध्याह्न उपरान्त की नमाज़ के समय जब कि प्रत्येक व्यक्ति ने नदी पार कर ली थी, हम आगे रवाना हो गये और एक पहर रात्रि[4] व्यतीत होने तक यात्रा करते रहे। तदुपरान्त हमने कचाकोट[5] नदी के ऊपर पडाव किया।

(१८ फरवरी)—दूसरे दिन प्रस्थान करके हमने कचाकोट नदी पार की। दोपहर के समय हमने सग दकी दर्रा पार करके पडाव किया। सैयिद कासिम ईशक आका सेना के पिछले भाग का अधिकारी था। उसने कुछ गूजरो को पराजित कर दिया। वे पीछे से आ गये थे। वह ४५ लोगो का सिर काट कर लाया।

(१९ फरवरी)—वहा से प्रात काल प्रस्थान करके सूहान[6] नदी पार करने के उपरान्त हमने मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय पडाव किया। जो लोग पीछे रह गये थे वे आधी रात तक आते रहे। हमने बडी लम्बी यात्रा की थी। क्योकि बहुत बडी सख्या मे घोडे कमजोर एव बुरी दशा मे थे अत उन्हें मार्ग मे छोड देना पडा।

जूद[7] पर्वत

भीरा के उत्तर मे १४ मील पर पर्वतीय श्रेणिया हैं जिनका नाम जफरनामा[8] तथा अन्य ग्रन्थो मे जूद पर्वत *लिखा है। मुझे इस समय तक यह नाम पडने का कारण ज्ञात न था अब मालूम हो गया है।* वहा दो कबीले रहते हैं जिनके पूर्वज एक ही है—एक जूद कहलाता है और दूसरा जनजूहा। वे दोनो प्राचीनकाल से भीरा तथा नीलाब के मध्य के भाग एव पर्वतीय श्रेणियो के लोगो एव कबीलो के हाकिम तथा *सरदार रहे होगे। उनका शासन मैत्रीपूर्ण तथा भाईचारे पर आधारित था। वे प्रजा से मनमाना कर न* ले सकते थे। जो कुछ प्राचीन प्रथानुसार निश्चित हो चुका है उतना ही वे लेते थे और उससे अधिक नही। उन लोगो मे यह प्रथा है कि वे एक जोड बैल के लिये एक शाहरुखी तथा घराने का सरदार सात शाहरुखी *अदा करता है। उन्हें सेना मे भी सेवा करनी पडती है। जूद तथा जनजूहा दोनो विभिन्न शाखाओ मे* विभाजित है। जूद पहाडी भीरा से १४ मील के भीतर स्थित है और कश्मीर के पर्वतीय प्रदेश से निकलती है जो उसी पर्वत श्रेणी मे है जिसमे हिन्दूकुश है। वहा से वह दक्षिण पश्चिम की ओर होती हुई सिन्द

१ बाबर ने सम्भवत अटक के कुछ ऊपर नदी पार की थी।
२ सिन्ध नदी के ऊपर, अटक से १५ मील नीचे।
३ किंग के अनुसार लगभग १५ पौंड।
४ लगभग ६ बजे रात।
५ हरूं नदी। यह सिन्ध नदी के बायें तट पर अटक के ६ मील नीचे सिन्ध नदी से मिलती है।
६ सिन्ध तथा झेलम के मध्य में सिन्ध की एक सहायक नदी।
७ नमक की पहाड़ियाँ।
८ लेखक—शरफ़ुद्दीन अली यजदी (मृत्यु १४५४ ई०)। 'ज़फ़रनामा' में तीमूर के राज्य काल का पूर्ण इतिहास बड़े विस्तार से लिखा है। *तीमूर के भारतवर्ष के आक्रमण का भी उसने उल्लेख किया है।*

नदी पर स्थित दीनकोट मे समाप्त होती है। उसके एक आधे पर जूद है और दूसरे आधे पर जनजूहा। जूद क़बीले से सम्बन्ध के कारण लोग इसे जूद पहाडी कहते हैं। यहा के सरदार की उपाधि 'राय' होती है। अन्य सरदार, उसके छोटे भाई तथा पुत्र मलिक कहलाते है। जनजूहा का सरदार लगर खा का मामा है। सूहान नदी के समीप के कबीलो तथा निवासिया के हाकिम का नाम मलिक हस्त था। वास्तव मे उसका नाम असद था किन्तु कभी-कभी हिन्दुस्तानी लोग एक स्वर को छोड देते है जैसे खबर को खब्र कहते हैं, उसी प्रकार असद को अस्द कहने लगे जो बाद मे हस्त हो गया।

हमने पडाव करते ही लगर खा को मलिक हस्त के पास भेज दिया। वह घोडा सरपट भगाता हुआ मलिक हस्त के पास पहुचा और हमारी कृपाओ के प्रति आश्वासन दिला कर सोने के समय की नमाज के वक्त उसे लेकर लौट आया। मलिक हस्त एक सशस्त्र घोडा अपने साथ उपहार स्वरूप लाया और मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसकी अवस्था २२-२३ वर्ष की रही होगी।

उस स्थान के निवासियो के मवेशी तथा भेडो के गल्ले हमारे शिविर के समीप ही चारा ओर थे। क्योकि मेरी हार्दिक इच्छा सर्वदा हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाने की रही है और यह विभिन्न प्रदेश भीरा[1], खुशआब,[2] चीनाव[3], तथा चीनी ऊत[4] किसी समय तुर्को के अधीन रह चुके हैं अत मैं उन्हें अपना ही समझता था और उन्हें चाहे शान्तिपूर्वक और चाहे युद्ध कर के जिस प्रकार सम्भव होता अपने अधिकार मे करना निश्चय कर लिया था। इन कारणा से इन पहाडिया के प्रति सद्व्यवहार परमावश्यक था अत यह आदेश दिया गया कि, "इन लोगा के गल्ला तथा मवेशिया को किसी प्रकार की कोई हानि न पहुचाई जाय, यहा तक कि इनके सूत के एक टुकडे तथा टूटी हुई सुई को भी कोई हानि न होने पाये।"

कलदा कहार झील

(२० फरवरी)—वहा से दूसरे दिन प्रस्थान करके मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त हम लोग कलदा कहार[5] मे घने अनाज के खेतो म उतरे।

कलदा कहार भीरा से लगभग २० मील उत्तर की ओर है। यह एक समतल मैदान है जो चारो ओर से जूद पर्वत से घिरा हुआ है। इसके मध्य मे एक झील है जो ६ मील की परिधि मे है। इसमे चारो ओर से वर्षा का जल एकत्र हो जाता है। इस झील के पूर्व मे एक अति उत्तम घास का चौरस मैदान है। उसके पश्चिम म पहाडी के दामन मे एक झरना है जिसका स्रोत उस पहाडी मे है जोकि झील के समक्ष है। उस स्थान के उद्यान हेतु उपयुक्त होने के कारण मैंने वहा एक उद्यान के लगवाने का आदेश दिया और वहा पर बागेसफा नामक उद्यान, जिसका बाद मे उल्लेख होगा,[6] लगवाया। यह बडा ही रमणीक स्थान है और यहा की वायु बडी ही उत्तम है।

१ झेलम नदी पर ३२°२८'–७२°५६', पजाब के शाहपुर जिले की एक तहसील। इस समय वह लाहौर के हाकिम दौलत खा के पुत्र अली खां के अधीन था।
२ खुश आब झेलम नदी के उतार पर ४० मील पर पजाब के शाहपुर जिले की एक तहसील।
३ अर्सकिन के अनुसार चनाव नदी पर फैला हुआ एक जिला।
४ चीनी ऊत पंजाब के झंग जिले की एक तहसील और झंग नगर के उत्तर पूर्व में ५२ मील पर ३१° ४३'–७३°०'।
५ कलदा कहार अथवा काला कहार झेलम जिले में मलोट से ११ मील पर।
६ इसका उल्लेख नहीं किया गया। सम्भवत ९२६ हि० से ९३२ हि० के वर्णन में उसने इसका उल्लेख किया होगा जो अब अप्राप्य है।

(२१ फरवरी)—दूसरे दिन प्रात काल हम कलदा कहार से रवाना हो गये। जब हम हमतातू दर्रे की चोटी पर पहुचे तो कुछ स्थानीय लोग मेरी सेवा मे उपस्थित हुए और साधारण से उपहार लाये। अब्दुर रहीम शगावल[1] को उनके साथ कर दिया गया और भीरा निवासियो को यह सदेश पहुचाने के लिये भेजा गया : "यह प्रदेश तुर्कों के अधीन होने के कारण हमारी सम्पत्ति मे प्राचीन काल से पहुचता है। तुम लोग भय व चिन्ता के कारण कोई ऐसा कार्य न कर बैठना जिससे यहा के निवासियो को हानि हो। हम यहा के लोगो की रक्षा कर रहे हैं और यहा किसी प्रकार की कोई लूट मार न होगी।"

नाश्ते के समय हम एक दर्रे के नीचे उतरे और वहा से ७-८ आदमियो को चीर्क के कुरवन तथा ख्वास्त के अब्दुल मलूक के साथ आगे भेज दिया। जो लोग भेजे गये थे उनमे से महदी ख्वाजा का एक सेवक मुहम्मद एक आदमी को लाया। कुछ अफगान सरदार जो इस बीच मे उपहार लेकर आज्ञाकारिता प्रदर्शित करने आये थे, लगर खा के साथ भीरा निवासियो के प्रोत्साहन हेतु भेज दिये गये।

दर्रे को पार कर के तथा जगल से निकल कर हमने सेना को दायें, बायें तथा केन्द्रीय भागो मे विभाजित कर के सुव्यवस्थित किया और भीरा की ओर बढे। जब हम भीरा के समीप पहुचे तो वहा दौलत खा यूसुफ खेल के पुत्र अली खां के सेवको मे से सीकतू का पुत्र दीवा हिन्दू तथा भीरा के बहुत से प्रमुख लोग आये और उन्होने एक ऊट तथा एक घोडा उपहार स्वरूप प्रस्तुत करके अभिवादन किया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के पश्चात् हम लोग बेहत[2] नदी के तट पर भीरा के पूर्व मे एक बोए हुए खेत मे उतर पडे। यह आदेश दे दिया गया कि भीरा के लोगो को कोई हानि न पहुचाई जाय और उन्हें हाथ न लगाया जाय।

भीरा का इतिहास

तीमूर बेग ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया था। उसके आक्रमण के उपरान्त भीरा, खूशाब, चीनाब तथा चीनीऊत उसी के उत्तराधिकारियों, आश्रितों, सतान एव सहायको के अधीन रहते चले आये थे। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र अली असगर मीर्जा की मृत्यु के उपरान्त, मीर अली बेग के पुत्र उदाहरणार्थ बाबाये काबुली, दरिया खा तथा अपाक खा, जो बाद मे गाजी खा के नाम से प्रसिद्ध हुआ, और जिन्हें सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा ने आश्रय प्रदान किया था, ने अपने प्रभुत्व के कारण काबुल, जाबुल तथा हिन्दुस्तान के उपर्युक्त प्रदेश एव परगने अपने अधिकार मे कर लिये। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा सुयूरगतमीश मीर्ज़ा[3] का पुत्र था जो शाहरुख मीर्ज़ा[4] का पुत्र था। काबुल तथा जाबुल के राज्य का हाकिम होने के कारण वह सुल्तान मसऊद काबुली कहलाता था[5]।

सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के राज्य काल मे काबुल तथा जाबुल उनके हाथ से निकल गये और केवल हिन्दुस्तान रह गया। ९१० हि० (१५०४ ई०) मे जब कि मैं पहिले पहल काबुल पहुचा तो भीरा,

१ मुन्शी।
२ झेलम।
३ उसकी मृत्यु ८३० हि० (१४२६ ई०) में हुई।
४ पुत्र तीमूर मीर्ज़ा।
५ वह ८३४ हि० (१४४० ई०) में राज्य से हटाया गया और १४२६ ई० में सिंहासनारूढ हुआ था।

खूशाब एवं चीनाब प्रदेश गाजी खा के पुत्र तथा मीर अली बेग के पौत्र सैयिद अली खा के अधीन थे। वह बहलोल के पुत्र सिकन्दर[1] के नाम का खुत्वा पढवाता था और उसके अधीन था।

उसी वर्ष[2] हिन्दुस्तान मे प्रवेश करने की इच्छा से मैंने खैबर पार किया तथा परशावर[3] पहुच गया। उस समय बाकी चगानियानी ने बगश के नीचे के भाग अर्थात् कोहाट पर आक्रमण करने का आग्रह किया। अफगाना की बहुत बडी सख्या पर आक्रमण किया गया और उनका सफाया कर दिया गया। बनू के मैदान पर आक्रमण करके उसे लूट लिया गया और दूकी होते हुए हम लोग वापिस हुए।

जब मैं सेना लेकर पहुचा[4] तो सैयिद अली खा भय के कारण भीरा छोड कर भाग गया। बेहत[5] नदी को पार करके भीरा के अधीनस्थ शेरकोट नामक ग्राम मे छिप गया। कुछ वर्ष उपरान्त मेरे कारण अफगान उसके प्रति सदेह करने लगे। उसने अपनी चिन्ताओ तथा भय के कारण इन प्रदेशा को उस समय के लाहौर के हाकिम तातार खा यूसुफ खेल के पुत्र दौलत खा को प्रदान कर दिया। उसने उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र अली खा को दे दिया। वे इस समय अली खा के अधीन थे।

तातार खा, दौलत खा का पिता उन ६ या ७ सरदारा मे था जिन्होने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करके बहलोल को बादशाह बनवाया था। सतलज[6] तथा सरहिन्द के उत्तरी प्रदेश उसके अधीन थे। यहा का राजस्व तीन करोड[7] से अधिक था। तातार खा की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान सिकन्दर लोदी ने तातार खा के पुत्र से इतने बडे राज्य को ले लिया और दौलत खा को केवल लाहौर प्रदान कर दिया। यह घटना मेरे काबुल पहुचने के २-१ वर्ष पूर्व घटी।

बाबर की यात्रा

(२२ फरवरी)—दूसरे दिन प्रात काल कुछ सैनिक दस्ता को इधर उधर स्थाना पर छापा मारने के लिये भेजा गया। उसी दिन मैंने भीरा की सैर की। उसी दिन सगुर खा जनजूहा ने उपस्थित हो कर एक घोडा उपहार स्वरूप प्रस्तुत किया तथा मेरे प्रति अभिवादन किया।

(२३ फरवरी)—बुधवार २२ तारीख को भीरा के प्रतिष्ठित तथा चौधरी लोग बुलवाये गये। चार लाख शाहरुखी[8] माले अमान[9] निश्चित हुआ और मुहसिल[10] लोग नियुक्त कर दिये गये। हमने भी एक नौका मे बैठकर सैर की और वहा माजून का सेवन किया।

(२४ फरवरी)—भीरा तथा खुशाब के मध्य म स्थित चिनोचिया के पास हैदर अलमदार[11] को भेजा गया था। बृहस्पतिवार की प्रात काल उन्होंने बादाम के रग के एक तीपूचाक घोडे को प्रस्तुत

१ सुल्तान सिकन्दर लोदी, देहली का सुल्तान।
२ ९१० हि० (१५०४ ई०)।
३ मूल पोथी में इसी प्रकार है।
४ ९१० हि० (१५०४ ई०) में।
५ झेलम नदी।
६ मूल पोथी म इसी प्रकार है।
७ अर्सकिन के अनुसार ७५०,००० रुपये अथवा ७५,००० पौंड।
८ अर्सकिन के अनुसार लगभग २०,००० पौंड।
९ शान्ति प्रदान करने का कर।
१० कर वसूल करने वाले।
११ झंडे की देख-रेख करने वाला अधिकारी।

करके आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। क्योंकि मुझसे यह निवेदन किया गया कि कुछ सैनिक बिना सोचे समझे व्यवहार कर रहे हैं तथा भीरा निवासियो को लूट रहे है, अत कुछ लोग इस आशय से भेजे गये कि वे उन मूर्खों मे से कुछ लोगो की तो हत्या करा दें और कुछ लोगो के नाक कान काटकर उन्हें शिविर के चारो ओर घुमायें।

(२५ फ़रवरी)—शुक्रवार के दिन खुशआब निवासियों के पास से एक प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ। तद्नुसार शाह शुजा अरगून के पुत्र शाह हसन[1] को खुशआब भेजा गया।

(२६ फरवरी)—शनिवार २५ तारीख को शाह हसन खुशआब की ओर रवाना हो गया।

(२७ फरवरी)—रविवार को इतनी अधिक वर्षा हुई कि जल से पूरा मैदान भर गया। एक छोटी सी खारी जलधारा, जोकि भीरा तथा उन बागों के मध्य मे से जहा सेना का शिविर था बहती है, मध्याह्नोत्तर की नमाज के पूर्व एक बहुत बडी नदी के समान हो गई। भीरा के समीप के घाट पर एक बाण के मार की दूरी से अधिक पैदल यात्रा असम्भव थी और लोगो को तैरना पडता था। मध्याह्नोत्तर मे मैं जल के बहाव का दृश्य देखने के लिये सवार हुआ। वर्षा तथा तूफान ने इतना विकराल रूप धारण कर लिया था कि शिविर मे पहुचने के विषय मे सदेह होने लगा था। मैंने उसी नदी को घोडे पर बैठ कर घोडा तैरा कर पार किया। सेना वाले बडे ही भयभीत हो गये थे। बहुत से लोगो ने अपने शिविर तथा भारी सामान छोड दिये और अस्त्र-शस्त्र एव घोडे का लोहे का साज इत्यादि अपने कधो पर लादकर घोडे की नगी पीठ पर नदी पार कर गये। बहुत सी नदियो द्वारा मैदान मे सैलाब आ गया।

(२८ फरवरी)—दूसरे दिन नदी[2] से नौकाए लाई गईं और सेना के अधिकाश लोग अपने खेमे तथा सामान ले आये। मध्याह्न के समय कूजबेग के आदमी नदी के चढाव के ऊपर दो मील तक गये और वहा एक घाट का पता लगाकर शेष लोगो ने नदी पार की।

(१ मार्च)—भीरा के किले मे जिसे लोग जहानुमा कहते हैं, एक रात्रि व्यतीत कर के मगलवार को प्रात काल हम वर्षा के सैलाब के भय से भीरा के उत्तर मे स्थित टीले की ओर चल दिये।

क्योंकि जिस कर की माग की गई थी तथा जो स्वीकार कर लिया गया था, उसकी प्राप्ति मे कुछ विलम्ब था अत उस प्रदेश को चार भागो मे विभाजित कर दिया गया और बेगों को आदेश दिया गया कि वे इस समस्या का समाधान करें। खलीफा को एक भाग मे, कुजबेग को दूसरे में, नासिर के "दोस्त" को तीसरे मे और सैयिद कासिम तथा मुहिब अली को चौथे में नियुक्त किया गया। इस प्रदेश को, इस कारण कि वह किसी समय तुर्कों के अधीन रह चुका था, अपना ही समझ कर इसमे किसी प्रकार के लूटमार की अनुमति न दी गई।

देहली को दूत भेजा जाना

(३ मार्च)—लोग निरन्तर यह कहते रहते थे कि "जो प्रदेश किसी समय तुर्कों के अधीन रह चुके हैं वहा सन्धि के लिये दूतो के भेजने मे कोई आपत्ति न होगी।" तद्नुसार बृहस्पतिवार १ रबी उल-अव्वल को मुल्ला मुर्शिद को सुल्तान इबराहीम के पास भेजा गया जोकि अपने पिता सुल्तान सिकन्दर

१ शाह हसन ने सिन्ध के इतिहास में महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं।
२ झेलम।

की मृत्यु के उपरान्त ५-६ मास पूर्व हिन्दुस्तान का बादशाह बन गया था।[1] मैंने उसे एक कारचीगा[2] भेजा और उन प्रदेशो की माग की जोकि इससे पूर्व तुर्कों के अधीन रह चुके है। मुल्ला मुर्शिद को पत्र, जो दौलत खा तथा सुल्तान इबराहीम को लिखे गये थे, दिये गये। उसके द्वारा मौखिक सदेश भी प्रेषित किया गया और उसे विदा कर दिया गया। हिन्दुस्तान वाले बुद्धि, विवेक से शून्य तथा निर्णय एव सत्परामर्श स्वीकार करने के अयोग्य ही होंगे और सब से अधिक अफगान कारण कि न तो वे शत्रुओं के समान अग्रसर हो कर मुकाबला कर सकते थे और न मैत्री के नियम ही जानते थे। दौलत खा ने मेरे आदमी को कई दिन तक लाहौर मे रोके रखा, न तो उसने उससे स्वय भेंट की और न उसे उसने सुल्तान इबराहीम के पास जाने दिया। वह बिना कोई उत्तर लाये ही कुछ मास उपरान्त काबुल लौट आया।

हिन्दाल का जन्म

(४ मार्च)—शुक्रवार २ रबी-उल-अव्वल को शैबाक तथा दरवेश अली नामक पदाती, जो अब तुफगची है, काबुल से प्रार्थनापत्र एव हिन्दाल के जन्म के समाचार लाये। क्योंकि यह समाचार हिन्दुस्तान के अभियान के समय प्राप्त हुए थे अत मैंने शकुन की दृष्टि से उसका नाम हिन्दाल रखा। कम्बरबेग द्वारा मुहम्मद जमान मीर्जा के पास से बल्ख से प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए।

(५ मार्च)—दूसरे दिन प्रात काल जब दरबार विसर्जित हुआ तो हम लोग सैर के लिए रवाना हुए और एक नाव मे बैठ गये। वहा हम लोगो ने अरक[3] का सेवन किया। इस गोष्ठी मे ख्वाजा दोस्त खावन्द, खुसरो, मीरीम, मीर्जा कुली, मुहम्मदी, अहमदी, गदाई, नोमान, लगर खा, रौहदम, कासिम अली अफीमची, यूसुफ अली तथा तीगरी कुली थे। नाव के सिरे पर एक चबूतरा[4] था, उसके ऊपर मैं कुछ लोगो के साथ बैठा, कुछ लोग उसके नीचे बैठे। नाव की दूसरी ओर बैठने का एक अन्य स्थान था, वहा मुहम्मदी, गदाई तथा नोमान बैठे। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़[5] तक अरक का सेवन होता रहा किन्तु बाद मे उसके बुरे स्वाद से खिन्न होकर जो लोग नाव के सिरे पर थे उनकी सम्मति से माजून का सेवन हुआ। जो लोग दूसरे सिरे पर थे उन्हें माजून के सेवन का कोई पता न चला और वे अरक ही पीते रहे। सोने के समय की नमाज के वक़्त हम लोग नौका से उतर कर शिविर की ओर चल दिये। अधिक रात्रि व्यतीत हो चुकी थी। मुहम्मदी तथा गदाई ने यह सोचकर कि मै अरक पीता रहा था, आपस मे कहा कि "हमको कोई उचित सेवा करनी चाहिये।" उन्होने अरक का एक घडा उठा लिया और उसे बारी बारी अपने घोडे पर लाद कर बडे आनन्द के साथ परिहास करते हुए आये और मुझसे कहा कि "हम लोग इस अँधेरी रात मे बारी-बारी कर के इस घडे को लाये है।" बाद मे जब उन्हें ज्ञात हुआ कि गोष्ठी दो भागो मे विभाजित हो गई थी और कुछ लोग ऐसे थे जो कि माजून का सेवन कर रहे थे और कुछ लोग अरक पीते रहे तो वे बडे परेशान हुए, कारण कि माजून का सेवन मदिरापान के साथ भली-भाति नहीं निभता। मैंने कहा कि, "गोष्ठी मे विघ्न मत डालो, जो अरक पीना चाहें वे अरक पियें और जो

१ सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु रविवार ७ जीकाद ६२३ हि० (२१ नवम्बर १५१७ ई०) मे हुई। इस प्रकार बाबर ने सुल्तान इबराहीम के राज्य काल के प्रारम्भ होने का समय निश्चित करने में भूल की है।

२ एक प्रकार का छोटे परों वाला बाज।

३ मदिरा, यहाँ सम्भवत: चावल अथवा खजूर की मदिरा।

४ तालार।

५ लगभग ४ बजे सायं।

माजून खाना चाहें वे माजून खायें। कोई एक दूसरे पर छीटे न कसे और न एक दूसरे के विषय मे बात करे।" कुछ लोग अरक पीते रहे और कुछ लोग माजून खाते रहे और गोष्ठी बडी शान्ति से चलती रही। बाबा जान काबूज़[1] बजाने वाला नौका मे हमारे साथ न था। हमने उसे शिविर मे पहुच कर आमन्त्रित किया। उसने अरक पीने के विषय मे निवेदन किया। हमने तरदी मुहम्मद कीवचाक को भी बुलवा लिया और उसे भी मदिरापान की गोष्ठी मे सम्मिलित कर लिया। माजून की गोष्ठी अरक अथवा मदिरापान की गोष्ठी के साथ कभी अच्छी तरह नही निभती। पीने वाले इधर उधर की बकवास करने लगे और माजून एव माजून खाने वालो पर छीटे कसने लगे। बाबा जान ने मदिरा के नशे मे बहुत सी अनुचित बातें कही। मदिरा पीने वालो ने तरदी खान को प्याले पर प्याला देकर शीघ्र बदमस्त कर दिया। यद्यपि हमने शान्ति स्थापित रखने का बडा प्रयत्न किया किन्तु शान्ति स्थापित न रह सकी और अत्यधिक शोर-गुल होने लगा। गोष्ठी को इस प्रकार चलन की अनुमति न दी जा सकती थी अत भग कर दी गई।

(७ मार्च)—सोमवार ५ रबी-उल-अव्वल का भीरा प्रदेश हिन्दूबेग को दे दिया गया।

(८ मार्च)—मगलवार को चीनाब प्रदेश हुसैन ईकरक[2] को प्रदान कर दिया गया और उसे तया चीनाब वालो को प्रस्थान करने की अनुमति दे दी गई। उस समय सैयिद अली खा का पुत्र मनूचहर खा अपने उद्देश्य मे हमें अवगत कराने के उपरान्त हमसे भेंट करने के लिये पहुचा। वह हिन्दुस्तान से ऊपर के मार्ग से रवाना हुआ था और तातार खा कक्कर[3] के हाथ में फस गया। तातार खा ने उसे आगे जाने की अनुमति न दी और उसे रोक लिया। उसने उससे अपनी पुत्री का विवाह कर के उसे अपना जामाता बना लिया और कुछ समय तक उसे रोके रक्खा।

कक्कर

नीलाब तया भीरा के पर्वतो के मध्य मे जो कश्मीर स जुडते हैं जूद तया जनजूहा कबीलो के अतिरिक्त बहुत से जाट, गूजर एव उसी प्रकार के लाग जहा जहा घुसते हैं वहा ग्राम बना कर रहते हैं। कक्कर कबील के सरदार उनके हाकिम हैं। जिस प्रकार जूद तथा जनजूहा कबीला मे सरदार हाते है उसी प्रकार इस कबीले म भी। उस समय[4] इस पर्वत के दामन के लोगा का सरदार तातार कक्कर[5] तथा हाती कक्कर[6] थे। उनके पितामह भाई भाई थे। नदिया के समीप के स्थान तथा खादर उनके दृढ स्थान है। तातार का स्थान जो परहाला कहलाता है बफ की पहाडियो के काफी नीचे है। हाती का प्रदेश पहाडिया से मिला हुआ है। इसके अतिरिक्त उसने बाबू खा को जो कालजर का स्वामी था अपनी ओर मिला लिया। तातार कक्कर दौलत खा[7] से भेंट कर चुका था और अपने आपको कई प्रकार से उसके अधीन समझता था। हाती ने दौलत खा स भेंट न की थी। उसका उसके प्रति व्यवहार बडा ही खराब

१ एक प्रकार का बाजा।
२ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
३ गक्कर।
४ ९२५ हि० (१५१९ हि०)।
५ तातार गक्कर।
६ हाती गक्कर।
७ दौलत खा यूसुफ़ खेल।

तथा विद्रोहात्मक था। हिन्दुस्तान के बेगो के कहने पर तथा उनसे तय करके तातार ने इस प्रकार स्थान ग्रहण कर लिया था कि उसने हाती का मार्ग दूर से रोक दिया था। जब हम लोग भीरा मे थे तो हाती शिकार के बहाने से चल दिया और तातार पर अचानक टूट पडा तथा उसकी हत्या कर दी और उसके प्रदेश एव उसकी स्त्री एव सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया।

बाबर की यात्रा मे मदिरा-पान की गोष्ठिया

मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय हम लोग सैर के लिए निकले और एक नाव मे बैठकर अरक पिया। उस गोष्ठी मे दोस्त बेग, मीर्जा कुली, अहमदी, गदाई, मुहम्मद अली जग जग, असस तथा ऊगान बीरदी, मुगूल थे। गायको मे रौहदम, बाबा जान, कासिम अली, यूसुफ अली, तीगरी कुली, अबुल कासिम तथा रमज़ान लूली थे। हम सोने के समय की नमाज़ तक पीते रहे। तदुपरान्त नौका से उतरकर मदिरा के नशे मे चूर हम लोग घोडो पर सवार हो गये और अपने हाथो मे मशालें लेकर नदी तट से घोडो को सरपट दौडाते हुए नशे मे कभी इस ओर और कभी उस ओर लुढकते शिविर तक पहुचे। मैंने वास्तव मे बहुत अधिक पी ली होगी कारण कि जब लोगो ने मुझे दूसरे दिन बताया कि हम लोग मशालें लिये हुए घोडो को सरपट भगाते हुए अपने शिविर मे पहुचे थे तो मैं इस घटना का स्मरण न कर सका। अपने खेमे मे पहुच कर मैंने अत्यधिक कै की।

(११ मार्च)—शुक्रवार को हम लोग सैर के लिये रवाना हुए और झेलम नदी को नौका द्वारा पार किया। हम लोग फूलो से लदे हुए वृक्षो के बागो मे तथा गन्ने के खेतो के आसपास सैर करते रहे। हमने वहा बाल्टियो सहित रहट देखा और पानी निकलवाया। मैंने पानी निकालने की विधि के विषय मे प्रश्न किये और बार बार पानी निकलवाया। इस सैर के समय माजून का सेवन किया गया। वापस होते समय हम लोग एक नौका पर सवार होने के लिये पहुचे। मनूचहर खा को भी माजून दी गई। उसके प्रभाव से उसकी ऐसी दशा हो गई कि दो आदमी उसके बाजुओ को पकडकर उसे खडा रख सके। कुछ समय तक बीच धारा मे नौका ठहरी रही। तदुपरान्त हम लोग नदी के उतार की ओर बढे। इसके पश्चात् हमने नौका चढाव की ओर खिचवाई और उसमे रात्रि मे सोते रहे तथा शिविर मे प्रात काल के निकट वापस चले गये।

(१२ मार्च)—शनिवार १० रबी-उल-अव्वल को सूर्य मेष राशि मे प्रविष्ट हुआ। हम लोग मध्याह्न-पूर्व नौका मे सवार हुए और वहा अरक का सेवन किया गया। इस गोष्ठी मे ख्वाजा दोस्त खावन्द, दोस्त बेग, मीरीम, मीर्जा कुली, मुहम्मदी, अहमदी, यूनुस अली, मुहम्मद अली जग जग, गदाई तगाई, मीर खुर्द तथा असस थे। गायको मे रौहदम, बाबा जान, कासिम, यूसुफ अली, तीगरी कुली तथा रमज़ान थे। हम लोग एक नदी की शाखा मे प्रविष्ट हुए और कुछ समय तक नदी के बहाव की ओर चलते रहे। भीरा के बहुत नीचे हमने नदी के दूसरी ओर पडाव किया और बहुत देर करके शिविर मे प्रविष्ट हुए।

इसी दिन शाह हसन खुशआब से वापस हुआ। वह वहा इस आशय से दूत बना कर भेजा गया था कि उन प्रदेशो की जोकि तुर्कों के अधीन रह चुके है, माग करे। उसने उन लोगो से शान्तिपूर्वक ढग से हर बात तय कर ली और जो कर लोगो के ऊपर लगाया गया था, उसका कुछ धन लेकर आया।

गर्मी प्रारम्भ होने वाली थी। भीरा मे हिन्दूबेग की सहायतार्थ शाह मुहम्मद मुहर बरदार[1],

१ वह अधिकारी जो शाही मुहर रखता था।

उसके अनुज दोस्त बेग मुहर बरदार तथा कुछ अन्य वीरो को नियुक्त किया गया। प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति के अनुसार एक निश्चित धन उसके लिये वृत्ति के रूप मे प्रदान किया गया। एक पताका सहित लगर खां को, जिसके कारण यह अभियान प्रारम्भ किया गया था, खूशआब प्रदान कर दिया गया। हमने यह भी निश्चय किया कि वह हिन्दूबेग की सहायता करता रहे। हिन्दूबेग की सहायतार्थ हमने तुर्कों तथा भीरा के स्थानीय सैनिको को नियुक्त किया और दोनों ही की वृत्ति एव वेतन मे वृद्धि कर दी गई। उन्ही मे जैसा कि पूर्व उल्लेख हो चुका है, मनूचहर खा था। इसके अतिरिक्त मनूचहर खा का एक सम्बन्धी नजर अली तुर्क तथा सगर खा जनजूहा एव मलिक हस्त जनजूहा थे।

काबुल को वापसी

(१३ मार्च)—उस प्रदेश को पूर्ण रूप से सुव्यवस्थित करके हम लोग रविवार ११ रबी-उल-अव्वल को भीरा से काबुल की ओर रवाना हो गये। हम लोग कलदा कहार मे उतरे। उस दिन भी बडे आश्चर्यजनक रूप से भीषण वर्षा हुई। जिन लोगों के पास बरसाती चुगे थे और जिनके पास न थे सब की एक ही दशा हो गई। शिविर का पिछला भाग सोने की नमाज के समय तक आता रहा।

हाती कक्कर

(१४ मार्च)—जिन लोगों को इस प्रदेश तथा राज्य के ऐश्वर्य एव गौरव का ज्ञान था विशेषकर जनजूहा लोगों ने, जोकि कक्करो के प्राचीन शत्रु थे, निवेदन किया कि "हाती बडा ही दुष्ट है। वह तथा उसके साथी सडको पर लूट-मार किया करते हैं और लोगों को नष्ट-भ्रष्ट करते रहते हैं। या तो उसे इस भू-भाग से निकाल दिया जाय और या उसे कठोर दड दिया जाय।" इस प्रस्ताव से सहमत हो कर हम लोगों ने दूसरे दिन ख्वाजा मीर मीरान तथा नासिर के मीरीम को शिविर मे छोड दिया और बडे नाश्ते[1] के समय उनसे पृथक् होकर हाती कक्कर की ओर रवाना हुए। जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, उसने कुछ दिन पूर्व तातार की हत्या कर दी थी और परहाला पर अधिकार जमा कर इस समय वही था। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज[2] के समय घोडो से उतर कर हमने उन्हें चारा दाना दिया। सोने की नमाज के समय हम लोग पुन सवार हो गए। मलिक हस्त का सरूपा नामक एक गूजर हमारा मार्गदर्शक था। हम रात भर यात्रा करते रहे और प्रात काल घोडो से उतरे। वहा से बेग मुहम्मद मुग़ूल को शिविर की ओर वापस भेज दिया गया और दिन निकलते निकलते हम लोग पुन सवार हो गये। नाश्ते के समय[3] हमने अस्त्र-शस्त्र धारण किये और शीघ्रातिशीघ्र आगे बढने लगे। परहाला की स्याही दो मील की दूरी से दिखाई पडने लगी। घोडो को सरपट भगाने का आदेश दिया गया। सेना का दाया भाग परहाला के पूर्व की ओर रवाना हुआ। कूजबेग भी जोकि दाहिने भाग का सैनिक था इसके सुरक्षित दस्ते के साथ रवाना हुआ। बायें भाग तथा मध्य भाग के लोग सीधे किले की ओर रवाना हुए। दोस्तबेग उनके साथ सुरक्षित दस्ते के अधिकारी के रूप मे रहा।

परहाला कन्दराओं मे स्थित है, यहा जाने के लिये दो सडकें है। एक मार्ग वह है जिससे हम लोग आये थे। यह दक्षिण-पूर्व मे है। यह मार्ग कन्दराओं से मिला हुआ जाता है। इसके दोनो ओर करारे

१ ऊलूग चारत जो ६ बजे प्रातः से लेकर मध्याह्न में १२ बजे तक किया जाता था।
२ लगभग ४ बजे साय।
३ लगभग ६ बजे प्रातः।

तथा कन्दरायें है। परहाला के एक मील पूर्व फाटक पर पहुचने के पहिले ४-५ स्थाना पर यह केवल एक आदमी का मार्ग बन जाता है और उसके दोनो ओर कन्दरायें हैं। एक वाण के मार की दूरी से अधिक मार्ग की यात्रा लोगो को एक ही पक्ति मे सवार होकर करनी पडती है। दूसरा मार्ग उत्तर-पश्चिम से आता है। यह परहाला तक एक सकरी घाटी से पहुचता है। यह भी एक ही आदमी का मार्ग है, किसी भी दिशा मे कोई अन्य मार्ग नही है। यद्यपि परहाला मे न तो कोई रक्षा की दीवार बनी हुई है और न अन्य कोई दीवार, किन्तु कोई ऐसा स्थान नही है जहा से इस पर आक्रमण किया जा सके। इसके चारो ओर ७-८ तथा १० गज तक सीधे सीधे खड्ड हैं।

जब हमारी सेना के बायें बाजू का अग्र भाग सकरे मार्ग को पार करता हुआ फाटक पर पहुँचा तो हाती ने जिसके साथ ३०-४० सशस्त्र आदमी एव घोडे तथा एक बडी सख्या मे पदाती थे, आक्रमणकारियो को पीछे हटाने का प्रयत्न किया। दोस्तबेग ने अपनी सुरक्षित सेना को आगे बढा कर कडा आक्रमण किया। हाती के बहुत से आदमियो को घोडे से गिरा दिया और उन्हें पराजित कर दिया। हाती अपनी वीरता के लिये चारो ओर प्रसिद्ध था। वह अत्यधिक प्रयत्न करने के बावजूद भी कुछ भी न कर सका और भाग खडा हुआ। वह उन सकरे मार्गों मे न ठहर सका। जब वह किलेमे प्रविष्ट हुआ तो उसे दृढ न बना सका। आक्रमणकारी भी उसका पीछा करते हुए रवाना हुए। उन्होने कन्दराओ तथा किले के उत्तरी-पश्चिमी भाग के मार्ग से होते हुए उसका पीछा किया। हाती थोडा सा सामान लेकर भाग खडा हुआ। यहा फिर दोस्तबेग ने अत्यधिक पौरुष प्रदर्शित किया जिसके फलस्वरूप उसकी प्रसिद्धि और बढ गई।

इसी बीच मे मैं किले मे पहुच गया और तातार कक्कर के महल मे उतरा। इस आक्रमण मे बहुत से आदमी जिन्हें मेरे साथ रहने का आदेश दिया गया था अग्र भाग के आक्रमणकारियो के साथ चले गये थे। इनमें अमीन मुहम्मद, तरखान अरगून एव कराचा थे। इस अपराध के कारण उन्हें बिना सरापा[१] प्रदान किये सरूपा नामक गूजर के साथ निर्जन जगलो म होते हुए शिविर मे जाने का आदेश दिया गया।

(१६ मार्च)—दूसरे दिन हम लोग उत्तरी-पश्चिमी कन्दराओ की ओर से रवाना हुए और एक बोये हुए खेत मे उतरे। वली खाज़िन के अधीन कुछ योग्य वीर शिविर मे भेज दिये गये।

(१७ मार्च)—बृहस्पतिवार १५ रबी-उल-अव्वल को उस स्थान से प्रस्थान करके हम लोग सूहान पर अन्दरावा मे उतरे। यहा का किला मलिक हस्त के पूर्वजो के अधीन बहुत समय से चला आ रहा है। हाती कक्कर ने मलिक हस्त के पिता की हत्या कर दी थी और किले को नष्ट कर दिया था। वह अब उसी टूटी हुई अवस्था मे था।

इसी दिन सोने के समय की नमाज के वक्त, जो लोग शिविर के साथ कलदा कहार में छोड दिये गये थे, आकर हमारे साथ मिल गये।

बाबर की अधीनता स्वीकार करना

हाती ने तातार को पराजित कर के अपने एक सम्बन्धी पर्बत को पेशकश एव एक सशस्त्र घोडे सहित भेजा। पर्बत हमारे पास पहुच न सका अपितु जिस शिविर मे हम लोग रवाना हो चुके थे, वहाँ

१ खिलअत। इस शब्द का प्रयोग श्लेष के रूप में किया गया है कारण कि यदि वे आज्ञा का पालन करते तो उन्हें सरोपा प्रदान किया जाता।

पहुच कर अन्य लोगों के साथ उपस्थित हुआ। उसके साथ लगर खा भी किसी कार्य से भीरा से आया। उसके कार्यों की व्यवस्था कर दी गई और उसे तथा बहुत से स्थानीय लोगों को जाने की अनुमति दे दी गई।

(१८ मार्च)—वहा से प्रस्थान कर के तथा सूहान नदी पार करने के उपरान्त हम लोग एक पुश्ते पर उतरे। यहा हाती के सम्बन्धी पर्वत को एक खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया और हाती के लिये प्रोत्साहन युक्त पत्र देकर मुहम्मद अली जगजग के एक सेवक के साथ वापस भेज दिया गया। नीलाब तथा कारलूक हजारा हुमायू को प्रदान कर दिये गये थे। उसके कुछ सेवक बाबा दोस्त तथा हलाहिल के अधीन इस समय उन स्थानो की दारोगगी[1] के लिये उपस्थित हुए।

(१९ मार्च)—दूसरे दिन प्रात काल सवार होकर दो मील की यात्रा के उपरान्त हम लोग उतर पडे। हम लोग ऊचे स्थान से शिविर का निरीक्षण करने पहुचे, और ऊटो की गणना का आदेश दिया। ५७० ऊट निकले।

हम लोगो ने सम्भल[2] के वृक्ष के गुण सुन रखे थे। इस स्थान पर हमने उसे देख लिया। इस पहाड़ी के दामन मे यह वृक्ष कही कही उगता है और आगे हिन्दुस्तान की पहाड़िया के दामन मे यह बहुत बडी सख्या मे होता है और इसका आकार-प्रकार भी बडा होता है। हिन्दुस्तान की वनस्पति एव पशुओ के वर्णन के सम्बन्ध मे इसका उल्लेख किया जायेगा।

(२० मार्च)—उस शिविर से, नक्कारा बजने के समय[3] प्रस्थान करके हम लोग सग दकी दर्रे के नीचे नाश्ते[4] के समय उतरे। मध्याह्न के समय पुन प्रस्थान करके हमने दर्रा पार किया और जल-धारा को पार करके पुश्ते पर उतर पडे।

(२१ मार्च)—आधी रात के समय वहा से प्रस्थान करके हमने भीरा जाते समय जिस घाट से नदी पार की थी, उसकी सैर की। अनाज की एक बहुत बडी नौका उसी घाट के दलदल मे फस गई थी। यद्यपि उसके स्वामियों ने बडा प्रयत्न किया किन्तु वह अपने स्थान से न हिल सकी। अनाज पर अधिकार जमा लिया गया और हम लोगों के साथ जो आदमी थे, उन्हें अनाज बाट दिया गया। वास्तव मे वह अनाज बडे अच्छे समय पर प्राप्त हुआ।

मध्याह्न के समय हम लोग काबुल तथा सिन्ध के सगम से कुछ नीचे तथा प्राचीन नीलाब के ऊपर पहुच गये। हम वहा दो नदियो के बीच मे उतर पडे। नीलाब से ६ नौकाये लाई गई और सेना के दायें, बायें तथा मध्य भाग वालों को बाट दी गई। सेना वाले नदी पार करने का प्रयत्न करने लगे। हम लोग वहा सोमवार को पहुच गये। मगल की रात्रि तक लोग नदी पार करते रहे। कुछ लोगो ने मगल, बुद्ध तथा बृहस्पतिवार तक नदी पार की।

हाती का सम्बन्धी पर्वत जो अन्दराब से मुहम्मद अली जगजग के एक सेवक के साथ वापस भेज दिया गया था, नदी तट पर हाती द्वारा प्रेषित पेशकश एव सशस्त्र घोडा लेकर पहुचा। नीलाब निवासी भी उपस्थित हुए और एक सशस्त्र घोडा लाये तथा अभिवादन किया।

१ दारोगा नियुक्त होने पर अभिवादन करने के लिये।
२ जटामासी।
३ दिन निकलने के लगभग एक घंटा पूर्व।
४ ६ बजे प्रातः।

नियुक्तिया

मुहम्मद अली जगजग ने भीरा मे ठहरने की इच्छा प्रकट की थी किन्तु भीरा हिन्दूबेग को प्रदान कर दिया गया था अत उसे भीरा तथा सिन्द नदी के बीच के प्रदेश उदाहरणार्थ कारलूक हज़ारा, हाती, गयासवाल तथा कीव[1] प्रदान कर दिये गये।

शेर

"जब कोई रैयत के समान अधीनता स्वीकार कर ले तो उससे वैसा ही व्यवहार करो,
जो कोई अधीनता न स्वीकार करे उसे मारो, उसका दमन करो और आज्ञाकारिता
स्वीकार करने पर विवश करो।"

उसे काले मखमल की एक विशेष सरापा[2] प्रदान की गई। एक विशेष कीलमाक कबा तथा एक पताका भी प्रदान की गई। जब हाती के सम्बन्धी को जाने की अनुमति दी गई तो उसके हाथ हाती के लिए एक तलवार एव सिर से पैर तक के शाही वस्त्र तथा प्रोत्साहनयुक्त शाही पत्र भेजे गये।

(२४ मार्च)—बृहस्पतिवार को सूर्योदय के समय हम लोगो ने नदी तट से प्रस्थान किया। माजून का सेवन किया गया और नदी की तरग मे फूलो से लदे हुए आश्चर्यजनक उद्यानो की सैर की गई। कुछ स्थानो पर क्यारियो मे पीले रग के फूल खिले हुए थे, कुछ क्यारियो मे लाल रग के और कुछ क्यारियो मे लाल तथा पीले दोनो ही फूल खिले हुए थे। हमने शिविर के निकट एक पुश्ते पर बैठकर उस दृश्य का आनन्द उठाया। टीले के चारो ओर छ क्यारियो मे फूल खिले थे। कही पीले तथा कही लाल फल लगे हुए थे। दो ओर कुछ कम फूल थे किन्तु जहा तक दृष्टि जाती थी फूल ही फूल खिले हुए दृष्टिगत होते थे। बहार मे परशावर के समीप फूलो के खेत का दृश्य वास्तव मे बडा सुन्दर होता है।

(२५ मार्च)—हम उस स्थान से प्रात काल रवाना हो गये मार्ग मे एक स्थान पर एक चीता आकर दहाडने लगा। चीते की आवाज सुनकर घोडे भय के कारण भडक गये और अपने सवारो को लेकर इधर-उधर भागने एव कन्दराओ तथा गुफाओ मे गिरने लगे। चीता पुन जगल मे प्रविष्ट हो गया। उसे बाहर निकालने के लिये हमने एक भैंसे के लाने का आदेश दिया और उसे जगल के सिरे पर बधवा दिया। चीता पुन दहाडता हुआ आया। प्रत्येक दिशा से उस पर बाणो की वर्षा की गई। मैंने भी अन्य लोगो के साथ बाण चलाये। खल्वी नामक एक पदाती ने उसके ऊपर भाले का वार किया किन्तु चीते ने भाले को चबा लिया और भाले की नोक को तोड डाला। बाण खाकर वह झाडियो मे घुस गया और वहा बैठा रहा। बाबा यसावल नगी तलवार लेकर उसके समीप तक बढता चला गया। चीते ने जस्त लगाई। बाबा ने उसके सिर पर तलवार का वार किया। अली सीस्तानी ने उसके कूल्हे पर प्रहार किया। चीता नदी मे कूद पडा तथा जल मे मार डाला गया। उसे जल के बाहर निकाला गया और उसकी खाल खीच ली गई।

(२६ मार्च)—दूसरे दिन प्रस्थान करके हम लोग बीगराम पहुचे और गूरखत्री के दर्शनार्थ गये। यह एक छोटी सी गुफा है जोकि दरवेशो एव सूफियो की कोठरियो के समान ज्ञात होती है। यह सकरी तथा अधेरी है। द्वार मे प्रविष्ट होकर तथा कुछ कदम आगे चलकर आगे बढने के लिये लेट कर

१ 'किविव' भी कहीं कहीं लिखा गया है।
२ सिर से पाव तक के वस्त्र।

पहुच कर अन्य लोगों के साथ उपस्थित हुआ। उसके साथ लगर खा भी किसी कार्य से भीरा से आया। उसके कार्यों की व्यवस्था कर दी गई और उसे तथा बहुत से स्थानीय लोगों को जाने की अनुमति दे दी गई।

(१८ मार्च)—वहा से प्रस्थान कर के तथा सूहान नदी पार करने के उपरान्त हम लोग एक पुश्ते पर उतरे। यहा हाती के सम्बन्धी पर्वत को एक खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया और हाती के लिये प्रोत्साहन युक्त पत्र देकर मुहम्मद अली जगजग के एक सेवक के साथ वापस भेज दिया गया। नीलाब तथा कारलूक हजारा हुमायू को प्रदान कर दिये गये थे। उसके कुछ सेवक बाबा दोस्त तथा हलाहिल के अधीन इस समय उन स्थानो की दारोगगी[1] के लिये उपस्थित हुए।

(१९ मार्च)—दूसरे दिन प्रात काल सवार होकर दो मील की यात्रा के उपरान्त हम लोग उतर पडे। हम लोग ऊचे स्थान से शिविर का निरीक्षण करने पहुचे, और ऊटों की गणना का आदेश दिया। ५७० ऊट निकले।

हम लोगो ने सम्भल[2] के वृक्ष के गुण सुन रखे थे। इस स्थान पर हमने उसे देख लिया। इस पहाड़ी के दामन मे यह वृक्ष कही कही उगता है और आगे हिन्दुस्तान की पहाडियो के दामन मे यह बहुत बडी सख्या मे होता है और इसका आकार-प्रकार भी बडा होता है। हिन्दुस्तान की वनस्पति एव पशुओ के वर्णन के सम्बन्ध मे इसका उल्लेख किया जायेगा।

(२० मार्च)—उस शिविर से, नक्कारा बजने के समय[3] प्रस्थान करके हम लोग सग दकी दर्रे के नीचे चाश्ते[4] के समय उतरे। मध्याह्न के समय पुन प्रस्थान करके हमने दर्रा पार किया और जल-धारा को पार करके पुश्ते पर उतर पडे।

(२१ मार्च)—आधी रात के समय वहा से प्रस्थान करके हमने भीरा जाते समय जिस घाट से नदी पार की थी, उसकी सैर की। अनाज की एक बहुत बडी नौका उसी घाट के दलदल मे फस गई थी। यद्यपि उसके स्वामियो ने बडा प्रयत्न किया किन्तु वह अपने स्थान से न हिल सकी। अनाज पर अधिकार जमा लिया गया और हम लोगो के साथ जो आदमी थे, उन्हें अनाज बाट दिया गया। वास्तव मे वह अनाज बडे अच्छे समय पर प्राप्त हुआ।

मध्याह्न के समय हम लोग काबुल तथा सिन्ध के सगम से कुछ नीचे तथा प्राचीन नीलाब के ऊपर पहुच गये। हम वहा दो नदियों के बीच में उतर पडे। नीलाब से ६ नौकायें लाई गई और सेना के दायें, बायें तथा मध्य भाग वालो को बाट दी गईं। सेना वाले नदी पार करने का प्रयत्न करने लगे। हम लोग वहा सोमवार को पहुच गये। मगल की रात्रि तक लोग नदी पार करते रहे। कुछ लोगो ने मगल, बुद्ध तथा बृहस्पतिवार तक नदी पार की।

हाती का सम्बन्धी पर्वत जो अन्दराब से मुहम्मद अली जगजग के एक सेवक के साथ वापस भेज दिया गया था, नदी तट पर हाती द्वारा प्रेषित पेशकश एव सशस्त्र घोडा लेकर पहुचा। नीलाब निवासी भी उपस्थित हुए और एक सशस्त्र घोडा लाये तथा अभिवादन किया।

१ दारोग़ा नियुक्त होने पर अभिवादन करने के लिये।
२ जटामासी।
३ दिन निकलने के लगभग एक घंटा पूर्व।
४ ६ बजे प्रातः।

नियुक्तियाँ

मुहम्मद अली जगजग ने भीरा में ठहरने की इच्छा प्रकट की थी किन्तु भीरा हिन्दूबेग को प्रदान कर दिया गया था अतः उसे भीरा तथा सिन्द नदी के बीच के प्रदेश उदाहरणार्थ कारलूक हजारा, हाती, ग्यासवाल तथा कीत्र[1] प्रदान कर दिये गये।

शेर

"जब कोई रैयत के समान अधीनता स्वीकार कर ले तो उससे वैसा ही व्यवहार करो,
जो कोई अधीनता न स्वीकार करे उसे मारो, उसका दमन करो और आज्ञाकारिता
स्वीकार करने पर विवश करो।"

उसे लाल मखमल की एक विशेष सरापा[2] प्रदान की गई। एक विशेष कीस्मास खवा तथा एक पताका भी प्रदान की गई। जब हाती के सम्बन्धी को जाने की अनुमति दी गई तो उसके हाथ हाती के लिए एक तलवार एवं सिर से पैर तक के शाही वस्त्र तथा प्रात्साहनयुक्त शाही पत्र भेजे गये।

(२४ मार्च)—बृहस्पतिवार को सूर्योदय के समय हम लोगों ने नदी तट से प्रस्थान किया। माजून का सेवन किया गया और नदी की तरंग में फूलों से लदे हुए आश्चर्यजनक उद्यानों की सैर की गई। कुछ स्थानों पर क्यारियों में पीले रंग के फूल खिले हुए थे, कुछ क्यारियों में लाल रंग के और कुछ क्यारियों में लाल तथा पीले दोनों ही फूल खिले हुए थे। हमने शिविर के निकट एक पुश्ते पर बैठकर उस दृश्य का आनन्द उठाया। टीले के चारों ओर छः क्यारियों में फूल खिले थे। कहीं पीले तथा कहीं लाल फूल लगे हुए थे। दो ओर कुछ कम फूल थे किन्तु जहाँ तक दृष्टि जाती थी फूल ही फूल खिले हुए दृष्टिगत होते थे। बहार में परशावर के समीप फूलों के खेत का दृश्य वास्तव में बड़ा सुन्दर होता है।

(२५ मार्च)—हम उस स्थान से प्रातःकाल रवाना हो गये मार्ग में एक स्थान पर एक चीता आकर दहाड़ने लगा। चीते की आवाज़ सुनकर घोड़े भय के कारण भड़क गये और अपने सवारों को लेकर इधर-उधर भागने एवं कन्दराओं तथा गुफाओं में गिरने लगे। चीता पुनः जंगल में प्रविष्ट हो गया। उसे बाहर निकालने के लिये हमने एक भैंसे के लाने का आदेश दिया और उसे जंगल के सिरे पर बँधवा दिया। चीता पुनः दहाड़ता हुआ आया। प्रत्येक दिशा से उस पर बाणों की वर्षा की गई। मैंने भी अन्य लोगों के साथ बाण चलाये। खल्बी नामक एक पदाती ने उसके ऊपर भाले का वार किया किन्तु चीते ने भाले को चबा लिया और भाले की नोक को तोड़ डाला। बाण खाकर वह झाड़ियों में घुस गया और वहाँ बैठा रहा। बाबा यसावल नंगी तलवार लेकर उसके समीप तक बढ़ता चला गया। चीते ने जस्त लगाई। बाबा ने उसके सिर पर तलवार का वार किया। अली सीस्तानी ने उसके कूल्हे पर प्रहार किया। चीता नदी में कूद पड़ा तथा जल में मार डाला गया। उसे जल के बाहर निकाला गया और उसकी खाल खींच ली गई।

(२६ मार्च)—दूसरे दिन प्रस्थान करके हम लोग बीगराम पहुँचे और गूरखत्री के दर्शनार्थ गये। यह एक छोटी सी गुफा है जो कि दरवेशों एवं सूफियों की कोठरियों के समान ज्ञात होती है। यह सकरी तथा अँधेरी है। द्वार में प्रविष्ट होकर तथा कुछ कदम आगे चलकर आगे बढ़ने के लिये लेट कर

१ 'किवित्र' भी कहीं कहीं लिखा गया है।
२ सिर से पाँव तक के वस्त्र।

ही बढा जा सकता है। उसमे बिना दीपक के प्रविष्ट होना सम्भव नही। उसके चारो ओर अत्यधिक मात्रा मे सिर तथा दाढी के बाल, जिन्हें लोगो ने उस स्थान पर मुडवाया था, पडे थे। गूरखत्री के समीप और भी बहुत सी गुफायें है जोकि सराय अथवा मदरसे के समान ज्ञात होती है। जिस वर्ष हम लोग काबुल पहुचे[1] थे और कोहाट बनू एव दश्त पर आक्रमण किया था तो हम लोग बीगराम की सैर करने गये थे। हमने उसके बडे वृक्षो को देखा था किन्तु गूरखत्री के न देखने का दु ख था परन्तु वह कोई ऐसा स्थान न निकला जिसके न देखने पर खेद प्रकट किया जाता।

उसी दिन शेखीम के पास से, जाकि बाजो की देखरेख का मुख्य अधिकारी था, मेरा एक अति उत्तम बाज उड गया। वह सारस तथा महावक बडे ही अच्छे ढग से पकडता था। वह इससे पूर्व भी दो-तीन बार उड गया था। वह अपने शिकार पर इस प्रकार झपटता था कि मुझ जैसा कुशल बाज द्वारा शिकार करने वाला चकित रह जाता था।

उस स्थान के ऊपर हमने निम्नाकित ६ लोगो मे से प्रत्येक को १०० मिस्काल चादी, वस्त्र, ३ बेल एव एक भैसा जोकि हिन्दुस्तान की पेशकश द्वारा प्राप्त हुए थे, प्रदान किये।

दिलाजाक अफगानो के सरदारो को, जोकि मलिक बू खा तथा मलिक मूसा के अधीन थे, तथा अन्य लोगो को उनकी श्रेणी के अनुसार धन सम्पत्ति, वस्त्र, बैल एव भैसे प्रदान किये गये।

(२७ मार्च)—जब हम अली मस्जिद पर उतरे तो याकूब खेल का एक दिलाजाक अफगान, जिसका नाम मारूफ था, दस भेडें, दो गधा के बोझ के बराबर चावल तथा ८ बडे पनीर पेशकश के रूप मे लाया।

(२८ मार्च)—अली मस्जिद से प्रस्थान करके हम लोग यदाबीर पर उतरे। यदाबीर से मध्याह्न की नमाज के समय हम लोग जूयेशाही पर पहुचे और वही उतर पडे। इस दिन दोस्तबेग को बडा अधिक ज्वर चढ आया।

(२९ मार्च)—जूयेशाही से प्रात काल प्रस्थान करके हमने मध्याह्न का भोजन बागे वफा मे किया। मध्याह्न की नमाज के समय हम लोग बाग के बाहर निकले और सायकाल की नमाज के समय गन्डमक नामक स्थान पर सियाहआब को पार किया और अपने घोडा का अनाज के हरे भरे एक खेत म चरने के लिये छोड दिया। तत्पश्चात् घडी दो घडी[2] के उपरान्त फिर सवार हो गये। सूर्खाब को पार करके हम लोग कर्क मे उतरे और वहा सो गये।

(३० मार्च)—दिन निकलने के पूर्व हम लाग कर्क से रवाना हुए। मैं ५-६ अन्य लोगो के साथ एक सडक से करातू की ओर वहा के उद्यानो का दृश्य देखने के उद्देश्य से रवाना हुआ। खलीफा तथा शाह हसन बेग एव अन्य लोग अन्य मार्ग से कूरूक साई मे मेरी प्रतीक्षा करने पहुचे।

जब हम करातू पहुचे तो, शाह बेग अरगून का दूत किज़ील यह समाचार लाया कि शाह बेग ने काहान पर आक्रमण कर दिया है और उसे लूट कर वापस हो गया है।

यह आदेश दिया जा चुका था कि कोई भी हमारे समाचार आगे न ले जाय। हम लोग मध्याह्न की नमाज के समय काबुल पहुच गये। हमारे कूतलूक कदम नामक पुल के पहुचने तक किसी को भी हमारे विषय मे कोई सूचना न मिल सकी। क्याकि हुमायू तथा कामरान को हमारे विषय मे इसके बाद ही पता

१ ९१० हि०।
२ २४-४८ मिनट।

चला अत उन्हें घोडो पर सवार करने का अवसर न मिला और उनके चुहरा लोग उन्हें लेकर उपस्थित हुए[1] तथा नगर के द्वार एव भीतरी किले के मध्य मे अभिवादन किया। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय कासिम बेग मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। नगर का क़ाज़ी तथा अन्य सेवक एव उस स्थान के प्रतिष्ठित लोग जो उस समय काबुल मे थे, उसके साथ थे।

(२ अप्रैल)—शुक्रवार की मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय प्रथम रबी उस्सानी को मदिरापान की एक महफिल आयोजित हुई जिसमे शाह हसन को सिर से पाव तक के शाही वस्त्र प्रदान किये गये।

(३ अप्रैल)—शनिवार की प्रात काल हम एक नौका पर बैठकर सैर के लिये गये। नूरबेग ने जिसने उस समय मदिरा न त्यागी थी वीणा बजाई। मध्याह्न की नमाज़ के समय हम लोग नौका से उतर कर उस उद्यान की सैर को गये जो कुलकीना एव शाहे काबुल के मध्य मे है। सायकाल की नमाज के समय हम लोग बाग़े बनफ़शा मे पहुचे। वहा पुन मदिरा पी गई। कुलकीना से मैं क़िले की चहारदीवारी पर होता हुआ भीतरी किले मे प्रविष्ट हुआ।

दोस्तबेग की मृत्यु

(६ अप्रैल)—मगलवार ५ रबी उस्सानी को, दोस्तबेग जिसे मार्ग मे ज्वर चढ आया था, मृत्यु को प्राप्त हो गया। हमे उसकी मृत्यु का बडा दु ख हुआ। उसकी लाश गजनी पहुचाई गई और वहा सुल्तान के बाग के रौज़े मे दफन कर दी गई।

दोस्तबेग बडा ही अच्छा वीर था और वह बेग की श्रेणी मे उन्नति कर रहा था। बेग होने के पूर्व उसने घर के सैनिकों के रूप मे बडी उत्तम सेवायें की थी। एक बार जब वह रबाते ज़ौरक मे था जोकि अन्दिजान से एक यीगाच की दूरी पर है तो सुल्तान अहमद तम्बल ने मेरे ऊपर रात्रि मे आक्रमण कर दिया[2]। मैंने १०-१५ आदमियो सहित उस पर आक्रमण करके उसके सवारो को पीछे हटा दिया, जब हम उसके मध्य भाग मे पहुचे तो वह एक सौ आदमियो सहित वही डटा था। उस समय मेरे साथ तीन आदमी थे और चौथा मैं था। उन तीनो मे एक नासिर का दोस्त[3] और दूसरा मीर्ज़ा कुली कूकूल्दाश और तीसरा करीम दाद तुर्कमान था। मैं केवल जीबा[4] पहिने था। तम्बल तथा एक अन्य व्यक्ति अपनी सेना की पंक्ति के सामने द्वारपाल के समान खडे थे। मैं बिल्कुल तम्बल के सामने पहुच गया और उसके शिरस्त्राण पर एक बाण मारा और दूसरा बाण उस स्थान पर जहा कि उसकी ढाल लगी हुई थी। उन लोगो ने मेरे पाव पर बाण मारा। तम्बल ने मेरे सिर पर प्रहार किया और बडी ज़ोर का वार लगाया। यह बात वास्तव मे बडे आश्चर्य की है कि मैं अपने शिरस्त्राण के नीचे की टोपी पहिने था किन्तु उसका एक तागा भी न कटा और सिर बुरी तरह घायल हो गया। अन्य लोगों ने कोई सहायता न की। मेरे पास कोई भी न रह गया था। विवश होकर मुझे भागना पडा। दोस्तबेग मेरे कुछ पीछे था। तम्बल ने मुझे अकेला छोडकर उस पर प्रहार किया।

१ हुमायूँ की अवस्था १२ वर्ष की थी और कामरान उससे छोटा था।
२ ६०८ हि० में।
३ दोस्तबेग।
४ वह वस्त्र जिसके ऊपर से कवच धारण किया जाता है।

इसके अतिरिक्त जब हम लोग अख्सी के बाहर निकल रहे थे[1] तो दोस्तबेग ने बाकीहीज़ के सिर पर प्रहार किया। लोग यद्यपि उसे हीज़[2] कहते थे किन्तु वह तलवार चलाने मे बडा ही कुशल था। जब हम लोग अख्सी से निकले थे तो दोस्तबेग उन ८ लोगो मे था जोकि हमारे साथ उस समय थे। जिन लोगो को घोडे से गिराया गया उनमे वह तीसरा था।

इसके उपरान्त जब वह बेग हो गया और सीऊनजुक[3] खा ने ऊज़बेग सुल्तानो के साथ ताशकीन्त पहुच कर अहमदे कासिम को घेर लिया तो दोस्तबेग[4] उनके पास से होता हुआ शहर मे प्रविष्ट हो गया। अवरोध के समय उसने अपने प्राणो को खतरे मे डाल दिया किन्तु अहमदे कासिम इस सम्मानित व्यक्ति से एक शब्द कहे बिना नगर के बाहर चला गया। दोस्तबेग ने बडी वीरता स खानो तथा सुल्तानो पर आक्रमण किया और उनकी सेना के बीच से होता हुआ ताशकीन्त पहुच गया।

इसके उपरान्त जब दोरीम तगाई, मज़ीद एव उनके सहायको ने विद्रोह कर दिया तो वह शीघ्रातिशीघ्र २००-३०० आदमियो के साथ गजनी से बाहर निकला और तीन चार सौ वीरो का, जो उन मुग़लो द्वारा भेजे गये थे, मुकाबला किया और उनमे से बहुतो को शेरूखान नामक स्थान पर गिरा दिया। बहुत से लोगो के सिर काट डाले और उन्हें ले आये।

इसके अतिरिक्त बजौर के किले की दीवार पर जो लोग सर्वप्रथम चढे[5] उनमे उसके आदमियो को ही प्राथमिकता प्राप्त थी। परहाला में भी वह ही अग्रसर हुआ और हाती को पराजित करके भगा दिया तथा परहाला को विजय कर लिया।

दोस्तबेग की मृत्यु के उपरान्त मैंने उसकी विलायत को उसके छोटे भाई नासिर के मीरीम को प्रदान कर दिया।

अन्य घटनाए

(९ अप्रैल)—शुक्रवार ८ रबी उस्सानी को नगर की चहारदीवारी छोड कर हम लोग चारबाग की ओर चल दिये।

(१३ अप्रैल)—मगलवार १२ को सम्मानित सुल्तानिम बेगम, जो सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सब से बडी पुत्री एव मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा की माता थी, काबुल पहुची। जिस समय हम लोग मारे मारे फिर रहे थे तो वह ख्वारिज़्म मे निवास करने लगी थी। वहा यीलीपार्स सुल्तान के छोटे भाई ईसान कुली सुल्तान ने उसकी पुत्री से विवाह कर लिया। उसके निवास हेतु बागे खिल्वत प्रदान कर दिया गया था। जब वह वहा निवास करने लगी थी और मैं उस उद्यान मे उससे भेट करने गया तो इस कारण कि वह मेरी बडी बहिन के समान थी, मैंने उसके सम्मान को दृष्टि मे रखते हुए घुटने झुकाये।[6] उसने भी घुटने झुकाये। हम दोनों ने आगे बढकर बीच मार्ग मे एक दूसरे से भेंट की। हम इसके उपरान्त इस प्रथा का सर्वदा पालन करते रहे।

१ ९०८ हि० में।
२ गुदा भोग्य, गाण्ड।
३ सीऊनजुक खा ऊज़बेग।
४ ९१८ हि० मे।
५ ९२५ हि० मे।
६ अभिवादन किया।

(१८ अप्रैल)—रविवार १७ रबी-उस्सानी को बाबा शेरा नमकहराम, जो बहुत समय से बन्दीगृह में था, मुक्त कर दिया गया। उसके अपराध क्षमा कर दिये गये और उसे एक खिलअत प्रदान की गई।

कोह दामन की सैर

(२० अप्रैल)—मगलवार १९ रबी-उस्सानी को हम लोग मध्याह्न के समीप ख्वाजा सेहयारान की ओर रवाना हुए। उस दिन मैं रोजा रखे हुए था। सब को आश्चर्य हुआ। यूनुस अली तथा अन्य लोगो ने कहा, "मगलवार यात्रा तथा रोज। यह सब आश्चर्यजनक बातें है।" बेहजादी मे हम लोग काजी के घर पर उतर पडे। सायकाल जब गोष्ठी आयोजित करने के लिये सूचना कराई गई तो काजी ने मुझसे कहा "मेरे घर मे इस प्रकार की वस्तुए नही होती है, केवल पादशाह के आदेशानुसार यह व्यवस्था की जा रही है।" उसको सतुष्ट करने के लिये यद्यपि मदिरापान की पूरी व्यवस्था हो चुकी थी, मदिरापान न किया गया।

(२१ अप्रैल)—बुधवार को हम लोग ख्वाजा सेहयारान की ओर गये।

(२२ अप्रैल)—बृहस्पतिवार २२ रबी-उस्सानी को जो उद्यान पर्वत के ऊपर बन रहा था उसमे एक बहुत बडा गोल चबूतरा बैठने का स्थान बनवाया।

(२३ अप्रैल)—शुक्रवार को हम लोग पुल से एक नौका पर सवार हुए। हमारे चिडीमारा के घर के समक्ष पहुचने पर लोग एक दग पकडकर लाये। मैंने इससे पूर्व कभी कोई दग न देखा था। यह विचित्र पक्षी होता है। हिन्दुस्तान के पक्षियो के सम्बन्ध मे इसका उल्लेख किया जायेगा।

(२४ अप्रैल)—शनिवार २३ रबी-उस्सानी को चुनार तथा ताल के पौध लगवाये गये। मध्याह्न की नमाज के समय उस स्थान पर मदिरापान की गोष्ठी आयोजित की गई।

(२५ अप्रैल)—प्रात का समय हम लोगो ने उस नये स्थान पर व्यतीत किया। मध्याह्न मे हम सवार होकर काबुल की ओर रवाना हो गये। बडी बदमस्त अवस्था मे ख्वाजा हसन पहुचे और वहा थोडी देर सोये। तदुपरान्त पुन सवार होकर आधी रात के लगभग चारबाग पहुच गये। ख्वाजा हसन के समीप अब्दुल्लाह मदिरा के नशे मे जल मे अपना लम्बा खुला चुगा पहिने कूद पडा। वह ठड के कारण जम गया और जब हम लोग थोडी सी रात्रि व्यतीत होने के उपरान्त चलने के लिये तैयार हुए तो वह हमारे साथ न चल सका। वह उस रात्रि को कूतलूक ख्वाजा के इलाके मे ठहर गया। दूसरे दिन जब उसे पिछली बदमस्ती का स्मरण हुआ तो उसने बडा पश्चात्ताप किया। मैंने कहा "इस प्रकार की तोबा का तुरन्त उत्तर मिले या न मिले किन्तु तुम इस बात की तोबा करो कि अब इस समय से तुम मेरी गोष्ठिया के अतिरिक्त कही भी मदिरापान न करोगे।" उसने यह बात स्वीकार कर ली और कुछ महीने तक इस नियम का पालन करता रहा किन्तु उसके बाद उसे निबाह न सका।

हिन्दूबेग का भीरा से प्रस्थान

(२६ अप्रैल)—सोमवार २५ रबी-उस्सानी को हिन्दूबेग आया। उसे उस प्रदेश मे थोडे से सैनिको सहित सन्धि की आशा मे छोड दिया गया था। हमारे उस स्थान से प्रस्थान करते ही हिन्दुस्तानियो तथा अफगानो का एक बहुत बडा समूह एकत्र हुआ और हमारी उपेक्षा करता हुआ तथा हमारे वादो पर ध्यान न देते हुए हिन्दूबेग के विरुद्ध भीरा की ओर रवाना हुआ। स्थानीय लोग भी अफगानो से मिल गये। हिन्दूबेग भीरा मे न ठहर सका और खुशाब पहुचा। दीनकोट प्रदेश होता हुआ वह नीलाब और वहा से

काबुल आया। सीकतू का पुत्र दीवा हिन्दू तथा एक अन्य हिन्दू भीरा से बन्दी बना कर लाये गये थे। इन सब लोगो ने अत्यधिक धन अपनी मुक्ति के लिये प्रस्तुत किया, अत वे मुक्त कर दिये गये। घोडे तथा सिर से पाव तक के वस्त्र देकर उन्हें जाने की अनुमति दे दी गयी।

(३० अप्रैल)—शुक्रवार २९ रबी-उस्सानी को मेरे बडे ज़ोर का ज्वर चढ आया। मैंने रक्त निकलवाया। इस अवधि मे कभी मुझे दो दिन और कभी तीन दिन तक ज्वर चढता रहता था। जब कभी भी ज्वर चढता तो वह उस समय तक न उतरता जब तक मैं पसीने-पसीने न हो जाता था। १०-१२ दिन की रुग्णावस्था के उपरान्त मुल्ला ख्वाजा ने मदिरा मे मिला कर मुझे नरगिम दी। मैंने उसका एक या दो बार सेवन किया किन्तु उससे भी कोई लाभ न हुआ।

(१५ मई)—रविवार १५ जमादि-उल-अव्वल को ख्वाजा मुहम्मद अली ख्वास्त से आया और एक जीन सहित घोडा उपहार स्वरूप एव न्योछावर हेतु कुछ धन लाया। मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी तथा ख्वास्त के मीर जादा लोग भी उसके साथ आये और मेरी सेवा मे उपस्थित हुए।

(१६ मई)—दूसरे दिन सोमवार को मुल्ला कबीर काशगर से आया। वह काशगर होता हुआ अन्दिजान से काबुल पहुचा था।

(२३ मई)—सोमवार २३ जमादि-उल-अव्वल को मलिक शाह मनसूर यूसुफ ज़ाई ६-७ यूसुफ ज़ाई सरदारो के साथ सवाद से पहुचा और अभिवादन किया।

(३१ मई)—सोमवार १ जमादि-उस्सानी को यूसुफ जाई अफगानो के सरदारो को, जोकि मलिक शाह मनसूर के अधीन आये थे, खिलअतें प्रदान की गई। मलिक शाह मनसूर को एक लम्बा रेशमी चुगा तथा एक जीबा तुकमे सहित प्रदान किया गया। अन्य सरदारो में से एक को एक कबा रेशमी बाहो सहित तथा ६ आदमियो को रेशमी चुगे प्रदान किये गये। सब को जाने की अनुमति दे दी गई। उन लोगो से यह निश्चय हुआ कि वे अबूहा के ऊपर सवाद प्रदेश मे प्रविष्ट न हो और वे वहा के किसानो के कर को अपना न समझें। बजौर एव सवाद के अफगान कृषक ६ हजार गधो के बोझ के बराबर चावल दीवान मे प्रस्तुत किया करें।

(२ जून)—बुधवार ३ जमादि-उस्सानी को मैंने विरेचन लिया।

(५ जून)—शनिवार ६ जमादि-उस्सानी को मैंने दारूये कर[1] का सेवन किया।

(७ जून)—सोमवार ८ जमादि-उस्सानी को कासिम बेग के सब से छोटे पुत्र हमज़ा के विवाह के उपहार आये। उसका विवाह खलीफा की सब से बडी पुत्री से हुआ था। उपहार मे एक जीन सहित घोडा एव एक हजार शाहरुखिया थी।

(८ जून)—मगलवार को शाहबेग के शाह हसन ने मदिरापान की एक गोष्ठी के लिये जाने की अनुमति चाही। वह ख्वाजा मुहम्मद अली तथा हमारे घर के कुछ बेगो को अपने घर ले गया। मेरी सेवा मे यूनुस अली तथा गदाई तगाई रह गये। मैंने उस समय भी मदिरापान बन्द कर रखी थी।[2] मैंने कहा कि "यह कभी नहीं हुआ है कि अन्य लोग मदिरापान करते रहे हो और मैं चुपचाप बैठा रहा हू। और न कभी ऐसा हुआ है कि लोग मदिरा का आनन्द लेते रहे हो और मैं शान्त बैठा रहा हू। तुम लोग आकर मेरे सामने मदिरापान करो। मैं इस बात से आनन्द लूगा कि जब मदिरापान करने वाले तथा न करने

१ एक प्रकार की औषधि।
२ सम्भवतः ज्वर के कारण।

वाले दोनो ही एकत्र होते हैं तो क्या होना है।" वह गोष्ठी एक छोटे से खेमे मे, जिसमे मैं कभी-कभी बैठा करता था, हुई। यह स्थान चुनार के वृक्षो के उद्यान[1] मे चित्रो के कक्ष के दक्षिण-पूर्व मे था। इसके उपरान्त गयास कीदी[2] आ गया। परिहास हेतु उसे कई बार पृथक रहने का आदेश दिया गया था। अन्ततोगत्वा उसने बडा शोर मचाया और अपने परिहास द्वारा प्रविष्ट हो गया। हमने तरदी मुहम्मद कीबचाक तथा मुल्ला किताबदार को भी आमन्त्रित किया। मैंने निम्नांकित रुबाई की तत्काल रचना करके शाह हसन तथा अन्य लोगो को, जो उसके घर मे एकत्र थे, भेज दी—

रुबाई

"मेरे मित्र इस दावत मे उस गुलाब के उद्यान की सुन्दरता का आनन्द उठाते है,
जब कि मैं उनका साथ देने के आनन्द से वचित हू।
किन्तु फिर भी साथ रहने के सब आनन्द उपलब्ध हैं,
मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि उन्हें कोई हानि न पहुचे।"

इसे इबराहीम चुहरा के हाथ भेजा गया। मध्याह्नोत्तर की दोना नमाजो के मध्य मे गोष्ठी बदमस्ती की दशा मे विसर्जित कर दी गई।

जिस समय मैं रुग्ण था ता मैं एक पालकी मे जाया करता था। पिछले बहुत से दिना मे मदिरा मिली हुई औषधि पी गई किन्तु कोई लाभ न हुआ था अत मैंने उसे छोड दिया था, किन्तु अपनी रुग्णावस्था के अन्त मे उसे पुन एक सेब के वृक्ष के नीचे तालार उद्यान के दक्षिण-पश्चिम मे पिया।

(११ जून)—शुक्रवार ११ ता० जमादि-उस्सानी को अहमद बेग तथा सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, जोकि बजौर मे सहायतार्थ छोड दिये गये थे, उपस्थित हुए।

(१६ जून)—बुधवार १७ जमादि-उस्सानी को तीगरी बीरदी तथा अन्य वीरो ने हैदर तकी के उद्यान में मदिरा-पान की एक गोष्ठी आयोजित की। मैंने भी वहाँ उपस्थित होकर मदिरापान किया। मैं वहा से सोने की नमाज के समय उठकर आया और वहा से उठकर एक बडे खेमे मे पहुचा जहा पुन मदिरापान किया गया।

(२३ जून)—बुधवार २५ जमादि उस्सानी को मुल्ला महमूद को आदेश दिया गया कि वह मेरी सेवा मे कुरान के उद्धरणो का पाठ करे।[3]

(२८ जून)—मगलवार अन्तिम जमादि-उस्सानी को अबुल मुस्लिम कूकूल्दाश, शाह शुजा अरगून के पास से दूत बनकर आया और एक तोपूचाक लाया। चुनार के बाग के हौज मे तैरने के विषय में शर्त लगाकर यूसुफ अली रिकाबदार उसके चारो ओर एक सौ बार तैरा और उसे सिर से पाव तक के वस्त्र पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये गये। जीन सहित एक घोडा तथा कुछ धन भी उसे दिया गया।

(६ जुलाई)—बुधवार ८ रजब को मैं शाह हसन के घर पहुचा और वहा मदिरापान किया। घर के बहुत से सैनिक तथा बेग भी वहा उपस्थित थे।

१ कुछ पोथियों के अनुसार 'चार बाग'।
२ विदूषक।
३ सम्भवत: उसके शीघ्र स्वस्थ होने के लिये।

(९ जुलाई)—शनिवार ११ रजब को कबूतरखाने की छत के ऊपर मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ एव सायकाल की नमाज के मध्य मे मदिरापान का आयोजन हुआ। दिन ढलने के समय कुछ सवार देहे अफगान से नगर की ओर जाते हुए दिखाई पडे। पता चला कि दरवेश मुहम्मद सारबान, मीर्ज़ा खान वैस का दूत बनकर मेरी सेवा मे आ रहा है। हमने छत से चिल्लाकर उसे पुकारा, "दूत की प्रथाओ एव नियमितता को छोडकर बिना किसी सकोच के तुरन्त आ जाओ।" वह उपस्थित होकर गोष्ठी मे बैठ गया। उस समय उसने तोबा कर रखी थी और मदिरापान न करता था। सायकाल के अन्त तक मदिरापान होता रहा। दूसरे दिन वह दरबार मे नियमपूर्वक दूतो की प्रथाओ का पालन करते हुये उपस्थित हुआ और मीर्ज़ा खान के उपहार उसने पेश किये।

अन्य घटनाये

पिछले वर्ष सैकडो प्रयत्न, आश्वासन एव धमकी से हमने कबीलो को काबुल की ओर दूसरी ओर से प्रस्थान कराया था। काबुल एक सीमित देश है। यहा तुर्कों तथा मुग़लो के विभिन्न कबीलो के गल्लो एव मवेशियो को सुगमतापूर्वक ग्रीष्म ऋतु एव शीत ऋतु मे नही रखा जा सकता। यदि जगलो के निवासियो को अपनी इच्छा पर छोड दिया जाय तो वे काबुल न आना चाहेंगे। इस समय वे कासिम बेग की सेवा मे उपस्थित हुए और उसे मध्यस्थ बना कर दूसरी ओर जाने की अनुमति चाही। उसने घोर प्रयत्न किया अत अन्त मे उन्हें कून्दूज़ तथा बागलान की ओर जाने की अनुमति दे दी गई।

हाफिज़ नामक समाचार लेखक का बडा भाई समरकन्द से आया हुआ था। इस समय जब मैंने उसे जाने की अनुमति दी तो उसके द्वारा अपना दीवान पूलाद सुल्तान के पास भेज दिया। उसके अन्तिम पृष्ठ पर मैंने निम्नाकित पद्य लिख दिया—

पद्य

"हे मन्द समीर यदि तू उस सरो[1] के कक्ष मे प्रविष्ट हो सके,
तो मेरी याद उसे दिला दे, उसके वियोग मे मेरा हृदय टुकडे-टुकडे,
उसे बाबर की चिन्ता नही, बाबर को इसकी आशा है,
कि एक दिन ईश्वर उसका फौलाद का हृदय पिघला देगा।"

(१५ जुलाई)—शुक्रवार १७ रजब को शेख मज़ीद कूकूल्दाश मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के पास से मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और कर का धर्न एव एक घोडा लाया। आज के दिन शाहबेग के दूत अबुल मुस्लिम कूकूल्दाश को खिलअत प्रदान की गई और उसे जाने की अनुमति दे दी गई। आज के दिन ख्वाजा मुहम्मद अली तथा तीगरी बीरदी को ख्वास्त और अन्दराब की ओर जाने की अनुमति दे दी गई।

(२१ जुलाई)—बृहस्पतिवार २३ रजब को मुहम्मद अली जगजग उपस्थित हुआ। उसे कचाकोट तथा कारलूक के मध्य के प्रदेशो का सरदार नियुक्त कर दिया गया था। उसके साथ हाती के लोग तथा मीर्ज़ाये मलूये कारलूक का पुत्र शाह हसन उपस्थित हुये। आज के दिन मुल्ला अली जान मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह अपनी पत्नी को समरकन्द से लेकर वापस आ रहा था।

१ प्रियतम, माशूक।

अब्दुर्रहमान अफगान लोग तथा रुस्तम मैदान

(२७ जुलाई)—गीरदीज के सीमान्त के अब्दुर्रहमान अफगान लोग न तो सतोषजनक रूप से कर अदा करते थे और न उनका व्यवहार ही सतोषजनक था। आने जाने वाले कारवाना को भी वे हानि पहुचाया करते थे। बुधवार २९ रजब को हम लोग उन लोगो पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुए। हम लोग तगे वगचान के समीप उतर पडे और वहा भोजन किया तथा मध्याह्नोत्तर के भोजन के उपरान्त पुन सवार हुए। रात्रि मे हम मार्ग भूल गये और पातखे आबे शक्ना के दक्षिण-पूर्व की ऊची नीची भूमि पर भटकते रहे। कुछ देर उपरान्त हमे एक मार्ग मिल गया और उसके द्वारा हमने चश्मये तूरा नामक दर्रा पार किया।

(२८ जुलाई)—प्रात काल की नमाज के समय हम घाटी की तलहटी से, जोकि समतल भमि से मिली हुई थी, निकल आये और आक्रमण किया। एक सेना करमाश पर्वत की ओर गीरदीज के दक्षिण-पूर्व मे रवाना हुई। मध्य भाग की सेना का बायाँ बाजू खुसरौ के अधीन था और मीर्जा कुली तथा सैयिद अली पीछे के भाग मे थे। सेना का अधिकाश भाग गीरदीज के पूर्व में घाटी मे घोडा दौडाता हुआ पहुचा। उनकी सेना के पीछे के दल मे सैयिद कासिम ईशक आका, मीर शाह कूचीन, कय्यूम, हिन्दूबग कूतलूक कदम तथा हुसेन थे। जब कि सेना का अधिकाश भाग घाटी के ऊपर पहुच गया तो मैं उनके पीछे पीछे कुछ दूर तक गया। दून वाले काफी ऊपर की ओर थे। जो लोग उनके पीछे गये उन्होंने अपने घोडे थका दिये किन्तु कोई काम की वस्तु उन्हें प्राप्त नही हुई।

कुछ अफगान लोग, लगभग ४० अथवा ५० आदमी मैदान मे प्रकट हुए और पीछे की सुरक्षित सेना उनके पीछे गई। एक आदमी मुझे बुलाने के लिये भेजा गया और मैं तत्काल रवाना हो गया। मेरे उनके पास पहुचने के पूर्व ही हुसेन हसन ने मूर्खता प्रदर्शित करते हुए बिना सोचे-समझे उन अफगानो के विरुद्ध अपना घोडा बढाया। उनसे भिड गया और तलवार चलाने लगा। अफगानों ने उसके घोडे की बाण द्वारा हत्या करके उसे गिरा दिया और उसके ऊपर तलवार का वार किया। जैसे ही वह उठने लगा वैसे ही उन लोगो ने उसे पटक दिया और चारो ओर से उसके ऊपर चाकू से वार करके उसके टुकडे-टुकडे कर डाले। अन्य वीर लोग देखते रहे और चुपचाप खडे रहे। कोई भी उसे सहायता न पहुचा सका। यह समाचार पाकर मैं और भी तीव्र गति से रवाना हुआ और घर के कुछ विशेष सैनिका एव वीरो को घोडे सरपट भगाकर अग्रसर होने का आदेश दिया। वे लोग गदाई त गाई, प्यान्दा मुहम्मद कीपलान, अबुल हसन कूरची तथा मोमिन अत्का के अधीन थे। मोमिन अत्का ही पहिला व्यक्ति था जिसने एक अफगान को घोडे से गिरा दिया। भाला मार कर उसका सिर काट लिया और उसे ले आया। अबुल हसन कूरची यद्यपि कवच न धारण किये हुए था किन्तु बडे ही उत्तम ढग से आगे बढता हुआ चला गया। वह अफगानो के समक्ष ठहर गया और अपने घोडे को उनके ऊपर छोड दिया। एक आदमी पर तलवार का वार करके नीचे गिरा दिया और उसका सिर काटकर ले आया। यद्यपि दोनो इससे पूर्व भी अपने वीरतापूर्ण कार्यों के लिए प्रसिद्ध थे किन्तु इस युद्ध मे वे अपने पौरुष के कारण अधिक प्रसिद्ध हो गये। उन ४०-५० अफगानो मे से प्रत्येक बाण तथा तलवार द्वारा गिरा दिया गया और उनके टुकडे टुकडे कर दिये गये। उन लोगो का सफाया करके हम लोग अनाज के खेत मे उतर पडे और आदेश दिया कि उनके सिरो का एक मीनार तैयार किया जाय। जिस समय हम लोग मार्ग पर जा रहे थे मैने उन बेगों से, जोकि हुसेन के साथ थे, क्रोध एव घृणा प्रदर्शित करते हुए कहा "तुम लोग कैसे आदमी थे जो वहा समतल भूमि पर खडे रहे और देखते रहे कि थोडे से अफगान पदातियो ने ऐसे वीर को उस

प्रकार पराजित कर दिया। तुम्हारा पद तथा तुम्हारी श्रेणी तुमसे ले लेनी चाहिये। तुम्हारे परगने तथा विलायतें छीन लेना चाहिये, तुम्हारी दाढिया मुन्डवाकर तुम्हें कस्बो मे घुमाना चाहिये। इसके अतिरिक्त उन लोगो के लिये कौन सा दड हो सकता है जो ऐसे शत्रु द्वारा ऐसे वीर को समतल भूमि पर पराजित होते हुए देखे और सहायता हेतु न पहुचे!" जो सेना करमाश भेजी गई थी वह भेडें तथा लूट की अन्य सामग्री लाई। उनमे से एक बाबा कश्का मुग़ल था। एक अफ़गान ने उसके ऊपर तलवार का वार किया था। वह चुपचाप खडा रहा और धनुष मे बाण लगा कर उसकी ओर फेंका तथा उसे गिरा दिया।

(२९ जुलाई)—दूसरे दिन प्रात काल हम लोग काबुल के लिये रवाना हुए। मुहम्मद बख्शी, अब्दुल अज़ीज अमीर आख़ूर तथा मीर ख़ुर्द बकावल को चशमातूरा पर ठहरने और वहा के लोगो से तीतर लाने का आदेश दिया गया।

मैंने कभी रुस्तम मैदान के मार्ग की यात्रा न की थी। मैं कुछ लोगो सहित उसकी सैर को गया। रुस्तम मैदान पर्वतीय प्रदेश के मध्य मे एक पर्वत की चोटी पर स्थित है और कोई रमणीक स्थान नही है। घाटी दोनो पर्वत श्रेणियो के बीच मे चौडाई मे फैली हुई है। दक्षिण की ओर पुश्ते के दामन मे एक छोटा सा झरना है। गीरदीज़ जाने के लिये रुस्तम मैदान के बाहर निकल कर बहुत से वृक्ष मिलते हैं किन्तु ये अधिक बडे नही है। यह बडी ही सकरी घाटी है, किन्तु फिर भी उपर्युक्त वृक्षों के नीचे हरा भरा घास का मैदान है और छोटी घाटी मे बडा आकर्षण है। पर्वत श्रेणी की चोटी से दक्षिण की ओर देखने पर करमाश के उस पार हिन्दुस्तान के वर्षा के गहरे गहरे बादल दिखाई पडते है। अन्य दिशाओ मे जहा वर्षा नही होती, एक भी बादल नही दिखाई देता।

मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के समय हम लोग हूनी पहुचे और वहा उतर पडे।

(३० जुलाई)—दूसरे दिन मुहम्मद आगा के ग्राम मे उतर कर हम लोगो ने माजून का सेवन किया। वहा हमने जल मे मछलिया पकडने के लिये कुछ दवा डाली और थोडी सी मछलिया पकड ली गईं।

(३१ जुलाई)—रविवार तीसरी शाबान को हम लोग काबुल पहुच गये।

(२ अगस्त)—मगलवार ५ शाबान को हम काबुल पहुचे। दरवेश मुहम्मद फजली तथा खुसरौ के सेवको को बुलवाया गया और हुसेन की पराजय के समय उन्होंने जो भूल की थी उस विषय मे पूछताछ करके उन्हें उनके पद एव श्रेणी से वचित कर दिया गया। मध्याह्नोपरान्त की प्रथम नमाज़ के समय मदिरापान की गोष्ठी चुनार के एक वृक्ष के नीचे आयोजित की गई और वहा बाबा कश्का मुग़ल को एक खिलअत प्रदान की गई।

(५ अगस्त)—शुक्रवार ८ शाबान को कीपा, मीर्ज़ा खान के पास से लौट आया।

कोहदामन की सैर

(११ अगस्त)—बृहस्पतिवार को मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज़ के समय मैं कोहदामन, बारान तथा ख्वाजा सेहयारान की सैर के लिये रवाना हुआ। सोने की नमाज़ के समय हम लोग मामा खातून पर उतर पडे।

(१२ अगस्त)—दूसरे दिन हम लोगो ने इस्तालीफ मे पडाव किया और उस दिन माजून का सेवन किया।

(१३ अगस्त)—शनिवार को इस्तालीफ मे पडाव हुआ तथा मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित हुई।

(१४ अगस्त)—इस्तालीफ से प्रात काल सवार होकर हमने इस्तालीफ तथा सिंजिद घाटी के मध्य की भूमि पार की। ख्वाजा सेहयारान के समीप एक सर्प मारा गया। वह मनुष्य के बाजू के बराबर मोटा तथा एक कूलाच[1] के बराबर लम्बा था। उसके पेट से एक पतला सा साप निकला। सम्भवत बडा सर्प उसे पूरा निगल गया था और उसका प्रत्येक भाग सम्पूर्ण रूप से वर्तमान था। वह बडे सर्प से कुछ थोडा सा ही छोटा था। इस छोटे सर्प के पेट से एक चूहा निकला। वह भी पूरा ही था और कहीं से टूटा न था।

ख्वाजा सेहयारान पहुचकर मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित की गई। आज के दिन फरमान लिखकर उस ओर[2] के बेगो के पास कीचकीना रात्रि के पहरेदार के हाथ भेजे गये। उन्हें इस बात का आदेश दिया गया कि सेना तैयार हो रही है, सावधान हो जाओ और निश्चित अवधि पर आ जाओ।

(१५ अगस्त)—हम लोग प्रात काल रवाना हो गये और माजून का सेवन किया। सडक जहा परवान नदी से मिलती है वहा स्थानीय नियमानुसार जल म औषधि डाल कर बहुत सी मछलिया पकडी गईं। मीरशाह बेग ने हमारे लिये भोजन तथा जल की व्यवस्था की। तदुपरान्त हम लोग गुलबहार की ओर रवाना हो गये। सायकाल की नमाज़ के उपरान्त मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित हुई। दरवेश मुहम्मद सारबान भी उसम उपस्थित था। यद्यपि वह नवयुवक एव सिपाही था किन्तु उसने मदिरापान करने का पाप न किया था और अभी तक उस पाप से मुक्त था। कूतलूक ख्वाजा कूकूल्दाश बहुत पहिले दरवेश बनने की इच्छा से सिपाही का पेशा छोड चुका था। इसके अतिरिक्त वह बडा वृद्ध हो गया था। उसकी दाढी बडी सुफेद थी। इसके बावजूद उसने इन गोष्ठियों के समय मदिरा का सेवन किया। मैंने दरवेश मुहम्मद से कहा 'कूतलूक ख्वाजा की दाढी तुम्हें लज्जा दिलाती है। वह दरवेश तथा वृद्ध है किन्तु फिर भी सर्वदा मदिरापान करता रहता है। तुम सिपाही तथा युवक, तुम्हारी दाढी अभी काली है किन्तु तुमने कभी मदिरापान न किया, इसका क्या अर्थ है?" मेरी यह प्रथा रही है कि जो मदिरापान न करता था मैं उसे मदिरापान करने पर विवश न करता था। इतनी बात के उपरान्त मज़ाक म सब बात टल गई। उससे मदिरापान करने के लिये आग्रह न किया गया।

(१६ अगस्त)—प्रात काल हमने सुबह की सैर की।

(१७ अगस्त)—गुलबहार से बुधवार को रवाना होकर हम लोग अबून ग्राम मे उतरे और भोजन किया। तदुपरान्त पुन सवार होकर बेगा के एक गरमी के मकान मे पहुच गये और वहा पडाव किया। मध्याह्नोपरान्त की प्रथम नमाज के पश्चात् मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित हुई।

(१८ अगस्त)—दूसरे दिन हम लोग पुन सवार हुए और ख्वाजा खावन्द सईद के मज़ार का तवाफ करके चीनेह करगानेह[3] पर गये और वहा एक नौका पर सवार हुए। जिस स्थान से पजहीर नदी निकलती है वहीं नौका एक पहाडी से टकरा गई और डूबने लगी। रौहदम, तीगरी कुली तथा मीर मुहम्मद नाविक धक्के से नदी मे गिर पडे। रौहदम तथा तीगरी कुली नौका पर पुन सवार कर लिये गये। एक चीनी का प्याला, एक चम्मच तथा एक तम्बूरा जल मे गिर पडा। नीचे की ओर चलकर नौका पुन सगे बरीदा के सामने बीच धारा मे किसी शाखा अथवा डडे से टकराई। शाह बेग का शाह

[1] यदि दोनों हाथ फैलाये जावें तो एक हाथ से दूसरे हाथ की अंगुली तक की दूरी।
[2] बाबर के देश के।
[3] चीनी किला।

हसन अपनी पीठ के बल सीधा लुढका और मीर्ज़ा कुली कूकूल्दाश को भी पकड कर गिरा दिया। दरवेश मुहम्मद सारबान भी जल मे गिर पडा। मीर्जा कुली भी अपने तरीके से नीचे गिर पडा। जिस समय वह गिरा, वह एक खरबूजा जो उसके हाथ मे था, काट रहा था। जैसे ही वह गिरने लगा उसने नौका की चटाई मे अपना चाकू भोक दिया। वह नदी को अपना ढीला चुगा पहिने तैर करके पार कर गया और नौका मे पुन न आया। नौका से निकल कर हम लोग उस रात्रि मे नाविको के मकान मे सो गये। दरवेश मुहम्मद सारबान ने मुझे एक सतरगा वैसा ही प्याला भेंट किया जैसा कि जल मे डूब चुका था।

(१९ अगस्त)—शुक्रवार को हम लोग नदी तट से सवार हुए और कोहबचा के दामन म ईंदीकी के नीचे उतर पडे। वहा हम लोगा ने अपने हाथ से बहुत सी मिस्वाकें एकत्र की। वहा से रवाना होकर ख्वाजा खिज्र के आदमियों के यहा भोजन किया गया। हम लोग पुन सवार हो गये और मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के समय कूतलूक ख्वाजा के एक गाव मे लमगान मे उतरे। उसने भोजन उपस्थित किया और उसे खाकर हम लोग काबुल की ओर रवाना हो गये।

विभिन्न घटनाए

(२२ अगस्त)—शुक्रवार २५ शाबान को एक विशेष खिलअत तथा एक जीन सहित घोडा दरवेश मुहम्मद सारबान को प्रदान किया गया और परिजन का पद प्राप्त करने के कारण वह घुटना के बल झुका।[1]

(२४ अगस्त)—४-५ मास से मैंने अपना सिर न मुडवाया था। बुधवार २७ शाबान को मैंने सिर मुडवाया। आज ही एक मदिरापान की गोष्ठी आयोजित हुई।

(२६ अगस्त)—शुक्रवार २९ शाबान को मीर खुर्द को हिन्दाल का अतालीक बनाया गया और वह भी घुटने के बल झुका। उसने एक हजार शाहरुखिया[2] उपहार-स्वरूप भेंट की।

(३१ अगस्त)—बुधवार ५ रमज़ान को तूलिक कूकूल्दाश के सेवक बरलास जूकी के पास से एक प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ। ऊज़बेग आक्रमणकारी उन भागो[3] मे जा चुके थे। तूलिक ने बाहर निकल कर इनसे युद्ध किया और उन्हें पराजित कर दिया। बरलास जूकी एक ऊज़बेग को जीवित तथा एक का सिर ले आया।

(२ सितम्बर)—शनिवार ८ रमजान की रात्रि मे हमने कासिम बेग के घर मे रोज़ा खोला। उसने मेरे लिये जीन सहित एक घोडा प्रस्तुत किया।

(३ सितम्बर)—रविवार की रात मे खलीफा के घर रोज़ा खोला गया। उसने मुझे जीन सहित एक घोडा भेंट किया।

(४ सितम्बर)—दूसरे दिन ख्वाजा मुहम्मद अली तथा जाननिसार, जो सेना के हित के लिए उनकी विलायतो से बुलाये गये थे, उपस्थित हुए।

(७ सितम्बर)—बुधवार, १२ रमज़ान को कामरान का मामा सुल्तान अली मीर्ज़ा पहुचा। जैसा कि कहा जा चुका है वह उस वर्ष जब कि मैं ख्वास्त से काबुल पहुचा, काशगर चला गया था।

१ अभिवादन किया।
२ लगभग ५० पौंड।
३ बदख्शा।

यूसुफ जाइयो के विरुद्ध अभियान

(८ सितम्बर)—हम लोग बृहस्पतिवार १३ रमजान को यूसुफ जाइयो पर आक्रमण करने तथा उनके उत्पात को समाप्त करने के लिये रवाना हुए और काबुल के देहे याकूब की दिशा मे उतरे। जब हम लोग सवार हो रहे थे तो बाबा जान आखूरबेग एक बडा खराब सा घोडा लाया। मैंने क्रोधित होकर उसके मुह पर एक चाटा मारा। इससे मेरी कलाई अनामिका से नीचे की ओर उतर गई। उस समय तो अधिक पीडा न हुई किन्तु जब हम लोग शिविर म पहुचे तो पीडा बहुत बढ गई। कुछ समय तक मुझे बडा कष्ट रहा और मैं कुछ लिख न सका। अन्त मे वह ठीक हो गई।

इसी पडाव पर मेरी खाला दौलत सुल्तान खानम के पास से काशगर से पत्र एव उपहार जो उसने अपने भाई दौलत मुहम्मद द्वारा भेजे, प्राप्त हुए। उसी दिन बू खान तथा मूसा, जो दिलाजाक कबीले के सरदार थे, राज-कर लाये और अभिवादन किया।

(११ सितम्बर)—रविवार १६ रमजान को कूजबेग उपस्थित हुआ।

(१४ सितम्बर)—बुधवार १९ रमजान को प्रस्थान करके हम लोग बूतखाक नदी पर से गुजरे और प्रथानुसार बूतखाक नदी पर उतर पडे।

क्योकि कूजबेग की विलायतें बामियान, काहमर्द, एव गूरी ऊजबेगो की विलायतो के समीप है अत उसे इस सेना के साथ जाने से क्षमा कर दिया गया और इस पडाव से विदा करके वापिस जाने की अनुमति दे दी गई। मैंने उसे एक पगडी, जिसे मैंने अपने सिर के लिए बनवाया था, प्रदान की और सिर से पाव तक के वस्त्र प्रदान किये।

(१६ सितम्बर)—शुक्रवार २१ रमजान को हम बादाम चश्मे पर उतरे।

(१७ सितम्बर)—दूसरे दिन हम लोग बारीक आब पर उतरे। मैं करातू की सैर करके शिविर मे पहुचा। इस पडाव पर एक वृक्ष से मधु उतारी गई।

(२० सितम्बर)—हम लोग २६ रमजान बुधवार तक निरन्तर यात्रा करते हुए बढते गये और बागे वफा मे उतर पडे।

(२१ सितम्बर)—बृहस्पतिवार को हम लोग बाग मे उतरे।

(२२ सितम्बर)—शुक्रवार को हम लोग पुन रवाना हुए और सुल्तानपुर के आगे उतरे। आज के दिन शाह मीर हुसेन अपनी विलायत से आया। आज दिलाजाक के सरदार, बू खान तथा मूसा के अधीन उपस्थित हुए। मैंने यह योजना बनाई थी कि यूसुफ जाइयो को सवाद मे पराजित किया जाय किन्तु इन सरदारो ने मुझसे निवेदन किया कि हश नगर मे बहुत बडा समूह उपस्थित है और वहा से अत्यधिक अनाज प्राप्त हो सकता है। वे लोग हश नगर की ओर प्रस्थान करने के विषय मे बडा आग्रह कर रहे थे। परामर्श के उपरान्त निश्चय हुआ कि 'क्योकि कहा जाता है कि हश नगर मे बहुत अनाज है अत वहा के अफगान पराजित कर दिये जायेंगे तथा हश नगर एव परशावर के किलो को सुव्यवस्थित कर दिया जायेगा। अनाज के एक भाग को उनमे एकत्र कर दिया जायेगा और वीरो का एक दल शाहमीर हुसेन के अधीन वहा नियुक्त कर दिया जायेगा। शाहमीर हुसेन की सुविधा हेतु उसे १५ दिन का अवकाश दे दिया गया और एक निश्चित स्थान का पता बता कर आदेश दे दिया गया कि वहा वह तैयारी करके अपनी विलायत से पहुच जाये।

(२३ सितम्बर)—दूसरे दिन प्रस्थान करके हम लोग जूयेशाही पहुचे और वहा उतर पडे।

इस पडाव पर तीगरी बीरदी तथा सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई हमारे पास पहुच गये। आज हमजा भी कून्दूज से आया।

(२५ सितम्बर)—रविवार रमजान मास के अन्तिम दिन हम लोग जूयेशाही से रवाना हुए और कीरीक आरीक मे उतरे। मैं अपने कुछ विश्वासपात्रो सहित नौका द्वारा रवाना हुआ। ईद के चन्द्रमा के उसी स्थान पर दर्शन हुए। लोग नूर घाटी से कुछ पशुओं पर मदिरा लदवाकर लाये थे। सायकाल की नमाज के उपरान्त मदिरापान की गोष्ठी आयोजित हुई। मुहिब अली कूरची, ख्वाजा मुहम्मद अली किताबदार, शाहबेग का शाह हसन, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई तथा दरवेश मुहम्मद सारबान, जिसने उस समय मदिरापान से तोबा कर ली थी, उपस्थित थे। मैंने अपनी बाल्यावस्था से यह नियम बना रखा था कि किसी को जबरदस्ती मदिरा न पिलाई जाय। दरवेश मुहम्मद प्रत्येक गोष्ठी मे उपस्थित रहता था और मैं उससे कोई आग्रह न करता था किन्तु ख्वाजा मुहम्मद अली ने जबरदस्ती करके उसे मदिरा पिलाई।

(२६ सितम्बर)—सोमवार को ईद की प्रात काल हम लोग रवाना हो गये और मार्ग मे थकावट मिटाने के लिये माजून का सेवन किया। जिस समय हम उसके नशे मे थे तो हमारे पास एक खुतुल[1] लाया गया। दरवेश मुहम्मद ने इस प्रकार का खुतुल कभी न देखा था। मैंने कहा यह हिन्दुस्तान का तरबूज है। उसे काट कर मैंने उसका एक टुकडा उसे दिया। उसने तत्काल उसमे से थोडा सा अपने मुंह से काटा। इसके प्रभाव से उसके मुंह से रात के पूर्व कडवाहट न गई। गरम चश्मे के ऊपर हम लोग एक टीले पर उतर पडे। यहा जिस समय लगर खा अपने स्थान से लौटकर कुछ समय उपरान्त वापस पहुचा तो ठडा मास हमारे समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा था। वह उपहार-स्वरूप एक घोडा तथा कुछ माजून लाया। वहा से रवाना होकर हम यदाबीर मे उतरे और मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज के समय एक नौका पर सवार हुए और दो मील तक फिर बढते चले गये। तदुपरान्त उससे उतर पडे।

(२७ सितम्बर)—दूसरे दिन प्रात काल वहा से रवाना होकर हम लोग खैबर दर्रे पर उतरे। आज सुल्तान बायजीद हमारे विषय मे सुन कर बारा मार्ग से होता हुआ आया। उसने निवेदन किया कि "अफरीदी अफगान लोग बारा मे अपने असबाब तथा परिवार सहित पडाव किये हुए हैं और उन्होंने बहुत सा अनाज बो रखा है जोकि अभी खडा है।" हमारा उद्देश्य इस नगर के यूसुफजाई अफगानो पर आक्रमण करना था अत हमने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया। मध्याह्नोपरान्त की नमाज के समय ख्वाजा मुहम्मद अली के खेमे मे मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी के समय हमारे इस ओर आने का सविस्तार वर्णन लिखकर तीरह के सुल्तान के हाथ ख्वाजा कला के पास बजौर भेज दिया गया। मैंने फरमान के हाशिये पर यह शेर लिख दिया—

शेर

"हे मन्द समीर उस सुन्दर मृगणी से मधुर वाणी मे कह दे,
तू ने हमारे सिर को पर्वत एव वन मे दे दिया है।"

(२८ सितम्बर)—प्रात काल दर्रे के उस पार से रवाना हो कर हम लोग खैबर के सँकरे मार्ग पर पहुचे और अली मस्जिद पर उतर पडे। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय हम लोग पुन सवार हुए और असबाब को अपने पीछे छोड दिया। आधी रात मे हम काबुल नदी पर पहुचे और वहा थोडी देर के लिये सो गये।

१ एक प्रकार का सेब जो बड़ा कड़वा होता है।

(२९ सितम्बर)—सूर्योदय के समय एक घाट मिल गया और हमने नदी उस घाट से पार की। हमारे करावलों[1] ने यह समाचार पहुँचाये कि अफगान लोग हमारे विषय में सुनकर भाग खडे हुए हैं। अत हम लोग चल खडे हुए और सवाद नदी पार करके अफगाना के अनाज के खेतो मे उतर पडे। जितने अनाज की आशा थी उसमे से आधा, यहा तक कि चौथाई भी न प्राप्त हुआ। हश नगर के अभियान की योजना, जो अनाज के लिये बनाई गई थी, निरर्थक सिद्ध हुई। दिलाज़ाक अफगान लोग, जिन्होंने इसके लिये आग्रह किया था, बडे लज्जित हुए। हम लोग सवाद नदी पुन पार कर के काबुल की दिशा मे उतरे।

(३० सितम्बर)—दूसरे दिन प्रात काल सवाद नदी से प्रस्थान करके हमने काबुल नदी पार की और वही पडाव किया। जो बेग लोग परामर्श गोष्ठी मे प्रस्तुत किये जाते थे, वे बुलाये गये और परामर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि "सुल्तान बायज़ीद ने जिन अफरीदी अफगाना की चर्चा की है उन पर आक्रमण किया जाय। परशावर का किला भी सुव्यवस्थित कर दिया जाय और वहा से असबाब तथा अनाज एकत्र करके किले मे रख कर किला किसी को सौंप दिया जाय।

इस पडाव पर हिन्दूबेग, कूचीन तथा ख्वास्त के मीरज़ादा लोग पहुच गय। आज के दिन माजून का सेवन किया गया। इस गोष्ठी मे दरवेश मुहम्मद सारबान, मुहम्मद कूकूल्दाश, गदाई तगाई तथा असस उपस्थित थे। बाद मे शाह हसन को भी बुलवा लिया गया। भोजन के उपरान्त हम लोग मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय एक जाला पर सवार हो गये। हमने लगर खा नीयाज़ाई को भी बुलवा लिया। सायकाल की नमाज़ के समय हम लोग जाला मे बैठ कर शिविर मे पहुचे।

(१ अक्तूबर)—प्रात काल वहा से रवाना होकर काबुल नदी पर जो व्यवस्था की गई थी उसके अनुसार हमने जाम को पार किया और अली मस्जिद नदी के मुहाने पर पडाव किया।

बदख्शा के समाचार

सुल्तान अली तगाई के सेवक अबुल हाशिम ने हमारी सेवा म उपस्थित होकर निवेदन किया "अरफे[2] की रात मे मैं जूयेशाही मे बदख्शा के एक आदमी के साथ था। उसने मुझे बताया कि सुल्तान सईद खा बदख्शा पर आक्रमण करने के उद्देश्य से आया है। मैं इस कारण जूयेशाही से जामरूद होता हुआ पादशाह को यह समाचार पहुचाने आया हू।" इस बात पर बेग लोगो को बुलवाया गया और परामर्श किया गया। इस समाचार के अनुसार यह उचित ज्ञात न हुआ कि परशावर के किले मे खाद्य सामग्री एकत्र की जाय अत हम लोग बदख्शा जाने के उद्देश्य से पुन रवाना हो गये। लगर खा, मुहम्मद अली जगजग को सहायता देने के लिये नियुक्त हुआ। उसे एक खिलअत देकर जाने की अनुमति दे दी गई।

उस रात्रि मे ख्वाजा मुहम्मद अली के खेमे मे मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित हुई। दूसरे दिन हम लोग पुन रवाना हुए और खैबर को पार करके दर्रे के नीचे उतर पडे।

१ वे लोग जो शत्रुओं का पता लगाने के लिये भेजे जाते थे।
२ ६ ज़िलहिज्जा, किन्तु यह असम्भव है, अत सम्भवत यह ईदुल फ़ित्र होगा।

खिज्र खेल अफगान

(३ अक्तूबर)—खिज्र खेल अफगानो ने बहुत सी अनुचित बातें की थीं। जब सेना इधर उधर प्रस्थान करती थी तो वे जो लोग पडाव किये रहते थे उनके घोडो को प्राप्त करने के लिए बाण चलाया करते थे। उन्हें दण्ड देना उचित एव आवश्यक ज्ञात हुआ। यह योजना बनाकर प्रात काल हम लोग दर्रे के नीचे से रवाना हो गये और अपने मध्याह्न का भोजन देहे गुलामान मे किया। अपने घोडो को भोजन कराने के उपरान्त हम लोग मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के समय फिर रवाना हो गये।

मुहम्मद हुसेन कूरची को शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर यह आदेश देकर दौडाया गया कि जो खिज्र खेल वहा है उन्हें बन्दी अवस्था मे रखा जाय तथा उनकी धन-सम्पत्ति का लेखा प्रस्तुत किया जाय। इसके अतिरिक्त बदख्शा के जो भी समाचार प्राप्त हुए हो, उनका सविस्तार उल्लेख करे और किसी आदमी द्वारा उसे काबुल से मेरे पास तुरन्त भेज दे।

उस रात्रि मे हम वहा से चल खडे हुए और आधी रात तक यात्रा करते रहे। सुल्तानपुर के कुछ आगे उतरे और वहा थोडी देर सोकर हम लोग पुन रवाना हो गये। खिज्र खेल के विषय मे कहा जाता था कि वे बहार तथा मीच ग्राम से करासू पहुच गये हैं।

(४ अक्तूबर)—प्रात काल होने के पूर्व ही पहुच कर आक्रमण किया गया। खिज्र खेल अफगानो का बहुत सा असबाब तथा उनके छोटे छोटे बच्चे सेना वालो को प्राप्त हो गये। कुछ लोग जो पर्वत के समीप थे, वहा भाग गये। उन्हें कोई हानि न पहुचाई गई।

(५ अक्तूबर)—हम लोग कीलागू नामक पड़ाव पर उतरे और वहा तीतर पकडे। आज के दिन पीछे से असबाब प्राप्त हो गया और हमने उसे उतरवाया। इस अभियान के कारण वज़ीरी अफगान लोग, जिन्होंने इससे पूर्व कभी भी राज-कर न अदा किया था, तीन सौ भेडें लाये।

(९ अक्तूबर)—मैंने हाथ उखड जाने के कारण अभी तक कुछ न लिखा था। यहा १४ शव्वाल को मैंने कुछ लिखा।

(१० अक्तूबर)—दूसरे दिन खिरिलची तथा ममू खेल अफगानो के सरदार उपस्थित हुए। दिलाज़ाक अफगानो ने उन्हें क्षमा करने का आग्रह किया। हमने उन्हें क्षमा करके मुक्त कर दिया और ४००० भेडें राज-कर के रूप मे निर्धारित की। उनके सरदारो को चुगे[1] प्रदान किये गये और मुहसिल[2] नियुक्त किये गये।

(१३ अक्तूबर)—जब यह निश्चय हो चुका तो हम लोग बृहस्पतिवार १८ शव्वाल को बहार तथा मीच ग्राम मे उतरे।

(१४ अक्तूबर)—दूसरे दिन मैं बागे वफा मे पहुचा। उस समय उद्यान अपनी रमणीयता की चरम सीमा पर था। उसकी घास मखमल के समान बिछी हुई थी। उसके अनार अत्यन्त सुन्दर एव पीले थे। फल पक कर लाल हो चुके थे। नारगिया बहुत बडी सख्या मे लगी हुई थी किन्तु वे सब की सब हरी थी और जैसी हम चाहते थे वैसी कोई भी पीली न थी। अनार अत्यन्त उत्तम थे किन्तु विलायत[3]

१ तुन।
२ कर वसूल करने वाले।
३ सम्भवत. काबुल तूमान।

के अनारो के समान न थे। बागे वफा से सब से अधिक और उत्तम लाभ जो हम प्राप्त कर सकते थे वह इसी समय था। हम वहा ३-४ दिन रहे। इस बीच मे पूरे शिविर को बहुत बडी सख्या मे अनार प्राप्त हुए।

(१७ अक्तूबर)—हम लोग सोमवार को उद्यान से रवाना हो गये। मैं पहले पहर तक वहा ठहरा रहा और नारगियो का वितरण किया। दो वृक्षा के फल शाह हसन को प्रदान कर दिये। बहुत से बेगो को १-१ वृक्ष के फल प्रदान किये गये। कुछ लोगो मे से दो दो व्यक्तियो के बीच मे १-१ वृक्ष दिया गया। क्याकि हम लोग शीत ऋतु मे लमगान की सैर करना चाहते थे अत मैंने आदेश दिया कि हौज के समीप कम से कम २० वृक्षा को सुरक्षित रखा जाय। उस दिन हम लोग गन्डमक पर ठहरे।

(१८ अक्तूबर)—दूसरे दिन हम जगदालीक मे ठहरे। सायकाल की नमाज़ के समय मदिरापान की एक गोष्ठी आयोजित हुई जिसमे घर के सभी सैनिक उपस्थित थे। थोडी देर उपरान्त कासिम बेग की बहिन का पुत्र गदाई बेहजत बुरी तरह बकने लगा और नशे मे मेरे तकिये के निकट लुढक गया। गदाई तगाई उसे इस गोष्ठी से उठा कर ले गया।

(१९ अक्तूबर)—उस पडाव से दूसरे दिन प्रस्थान कर के मैं बारीक आब की घाटी की तलहटी के ऊपर कूरूकसाई की सैर करने को गया। कुछ वृक्ष पतझड की बडी ही सुन्दर अवस्था मे थे। पडाव करने पर मौसम के फल प्रस्तुत किये गये। मदिरापान हुआ, मार्ग मे एक भेड को लाने का आदेश दिया गया जिसके कबाब तैयार किये गये। बिलूत लकडी जलाकर हम लोगो ने आनन्द मनाया।

मुल्ला अब्दुल मलिक दीवाना ने आग्रह किया कि वह हमारे पहुचने के समाचार काबुल पहुचाना चाहता है अत उसे आगे भेज दिया गया। इस स्थान पर मीर्ज़ा खान के पास से हसन नबीरा उपस्थित हुआ। वह मुझे सूचना देने के उपरान्त आया होगा। सूर्यास्त के समय तक मदिरापान होता रहा तदुपरान्त हम सवार हो गये। जो लोग हमारे साथ थे वे बुरी तरह नशे मे बदमस्त थे। सैयिद कासिम इतना बदमस्त था कि उसके दो सेवक उसे घोडे पर बैठा कर उसके शिविर मे बडी कठिनाई से ले गय। मुहम्मद बाकिर दोस्त ने इतनी मदिरा पी ली थी कि अमीन मुहम्मद तरखान तथा मस्ती चुहरा के आदमी उसे घोडे पर सवार न कर सके। जब उसके ऊपर पानी डाला जाता था तो भी उसके ऊपर कोई प्रभाव न होता था। उसी समय अफगानो का एक समूह उपस्थित हुआ। अमीन मुहम्मद, जिसने स्वय पर्याप्त मदिरा पी रखी थी, ने आग्रह किया कि "उसे इस स्थान पर जहा, वह शत्रुओ द्वारा बन्दी बना लिया जायेगा, छोडने के बजाय यह अच्छा होगा कि उसके सिर को हम लोग काट कर ले जाय।" बडी कठिनाई से उसे सवार कर के लोग लाये। हम लोग आधी रात मे काबुल पहुचे।

काबुल की घटनाए

दूसरे दिन प्रात काल कुली बग मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह सुल्तान सईद खा के पास मेरा दूत बन कर काशगर गया था। उसके साथ साथ बीशका मीर्ज़ा इटारची मेरे पास दूत के रूप म आया। वह उस देश की उत्तम वस्तुए उपहार स्वरूप मेरे पास लाया।

(२५ अक्तूबर)—बुधवार १ ज़ीकाद को मैं अकेला काबिल के मकबरे मे गया और वहा प्रात काल व्यतीत की। मेरे साथी बाद मे १-१, २-२ कर के आते रहे। जब सूर्य बहुत गरम हो गया तो हम लोग बनफ्शे के बाग़ मे पहुचे और वहा हौज़ के किनारे मदिरापान किया। दोपहर हो जाने के कारण हम लोग सो गये। मध्याह्नोपरान्त की प्रथम नमाज़ के समय हम लोगो ने पुन मदिरापान किया। उस

गोष्ठी मे मैंने तीगरी, कुली बेग तथा महदी को, जिन्हें इससे पूर्व मदिरा न दी गई थी, मदिरा पिलाई। सोने की नमाज के समय मैं हमाम[1] मे पहुचा जहा रात्रि मे ठहरा रहा।

(२६ अक्तूबर)—बृहस्पतिवार को हिन्दुस्तानी व्यापारियो को खिलअतें प्रदान की गईं। यह्या नोहानी उनका सरदार था। वे विदा कर दिये गये।

(२८ अक्तूबर)—शनिवार ४ जीकाद को एक खिलअत तथा उपहार बीशका मीर्ज़ा को, जो काशगर से आया था, प्रदान किये गये और उसे बिदा कर दिया गया।

(२९ अक्तूबर)—रविवार को चारबाग के फाटक के समक्ष छोटी चित्रशाला मे मदिरापान की गोष्ठी आयोजित हुई। यद्यपि यह स्थान बडा छोटा है किन्तु यहा १६ व्यक्ति उपस्थित थे।

कोहदामन की सैर

(३० अक्तूबर)—आज हम लोग शरद्-काल का आनन्द उठाने के लिये इस्तालीफ की ओर गये। इसी दिन हमने माजून खाने का पाप किया। अत्यधिक वर्षा हुई। अधिकाश बेग तथा घर वाले मेरे खेमे मे आ गये जोकि बागे कला के बाहर था।

(३१ अक्तूबर)—दूसरे दिन उसी बाग मे मदिरापान की एक गोष्ठी हुई जो रात तक चलती रही।

(१ नवम्बर)—पौ फटने के समय हम लोगों ने प्रात काल का नशा[2] खाया और अधिक नशा हो जाने के कारण सो गये। मध्याह्न की नमाज के समय इस्तालीफ से रवाना हो गये। मार्ग मे माजून का सेवन किया गया। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय हम लोग बेहज़ादी पहुच गये। शरद काल की फसलें बडी सुन्दर थी। जिस समय हम लोग उसका आनन्द उठा रहे थे तो बहुत से लोग, जिन्हें मदिरापान की लत थी, मदिरापान के लिये आग्रह करने लगे। शरद्-काल की फसलो का रग बडा ही रमणीक था। यद्यपि माजून का सेवन हो चुका था, फिर भी वृक्ष के नीचे बैठ कर मदिरा पी गई। सोने की नमाज़ के समय तक गोष्ठी चलती रही। खलीफा का मुल्ला महमूद भी पहुच गया। हमने उसे भी गोष्ठी मे बुलवा लिया। अब्दुल्लाह ने बहुत अधिक मदिरा पी ली थी। खलीफा के विषय मे एक (बुरा) शब्द कहा गया। अब्दुल्लाह मुल्ला महमूद को भूल गया और उसने यह पक्ति पढी

'जिसे भी तुम जाचोगे, उसे इसी घाव से पीडित पाओगे।

मुल्ला महमूद मदिरा पिये हुये न था। उसने अब्दुल्लाह की उस पक्ति के पढने पर निन्दा की। अब्दुल्लाह होश मे आ गया। उसे बडी चिंता हुई और तदुपरान्त वह बडी मीठी मीठी बातें करने लगा। शरद्-काल की सैर समाप्त कर के हम लोग सायकाल की नमाज़ के समय चारबाग मे उतरे।

(१२ नवम्बर)—शुक्रवार १६ को बनफशे के बाग मे अपने कुछ विश्वासपात्रों सहित माजून का सेवन कर के हम लोग एक नौका मे पहुचे। हुमायू तथा कामरान बाद को हमारे पास पहुच गये। हुमायू ने एक बतख पर बडा अच्छा निशाना लगाया।

१ गरम स्नानागार।
२ माजून।

मदिरापान की एक गोष्ठी

(१४ नवम्बर)—शनिवार १८ जीकाद को आधी रात के समय मैं चारबाग से रवाना हुआ। रात के पहरेदार एव साईस को वापस कर दिया। मुल्ला बाबा के पुल को पार करके दीऊरीन के सकरे मार्ग द्वारा कूश नादिर तथा बाजारो मे से होता हुआ, खिर्स खाने के पीछे से सूर्योदय के समय तरदी बेग खाकसार के कारेज मे पहुचा।

तरदी बेग मेरे विषय मे सुनकर शीघ्रातिशीघ्र मेरी सेवा मे उपस्थित होने के लिये लपका। तरदी बेग की दरिद्रता प्रसिद्ध थी। मैं अपने साथ एक सौ शाहरुखिया[1] ले गया था। मैंने उसे शाहरुखिया देकर मदिरा लाने तथा अन्य वस्तुए प्रस्तुत करने के लिये आदेश दिया कारण मैं एकान्त मे बिना किसी रोकटोक के मदिरापान करना चाहता था। वह बेहजादी की ओर मदिरा हेतु चला गया। मैंने अपना घोडा उसके दास के हाथ घाटी की तलहटी मे भेज दिया और एक उतार के ऊपर कारेज के पीछे बैठ गया। प्रथम पहर[2] मे तरदी बेग घडा भर मदिरा लाया। हम लोग बारी बारी मदिरा पीते रहे। उसके उपरान्त मुहम्मद कासिम बरलास तथा शाहज़ादा, जिन्हें उसके मदिरा लाने का ज्ञान हो गया था, उसके पीछे पीछे पहुंचे। उन्हें मेरे विषय में कोई कल्पना न थी। हमने उन्हें भी उस गोष्ठी में बुलवा लिया। तरदी बेग ने कहा "हुल्हुल अनीगा आपने साथ मदिरापान करना चाहती है।" मैंने कहा कि, "मैंने कभी किसी स्त्री का मदिरापान करते हुए नही देखा है, उसे बुलाओ।" हमने शाही नामक एक कलन्दर को भी तथा कारेज़ के एक आदमी को, जो रबाब अच्छा बजा लेता था, बुलवाया। सायकाल की नमाज़ के समय तक कारेज के पीछे एक पुश्ते पर मदिरापान होता रहा। तदुपरान्त हम लोग तरदी बेग के घर पहुँचे और दीपक के प्रकाश मे लगभग खाने की नमाज़ के समय तक मदिरापान करते रहे। यह गोष्ठी बडे स्वतत्र रूप से आयोजित हुई और इसमे कोई भी दिखावा न था। मैं लेट गया। अन्य लोग दूसरे घर मे चले गये और वहा नक्कारा बजने[3] तक मदिरापान करते रहे। हुल्हुल अनीगा आ गई और मुझे बहुत परेशान किया। मैंने अपने आपको इस प्रकार नीचे गिरा दिया मानो मैं अत्यधिक मदिरापान कर गया हूँ और उससे मुक्त हो गया। मेरी यह इच्छा थी कि मैं किसी को पता न चलने दूं और अस्तरगच अकेला चला जाऊ किन्तु यह सम्भव न हो सका कारण कि लोगो को इस बात का पता चल गया। अन्ततोगत्वा मैं नक्कारा बजने पर तरदी बेग तथा शाहजादे को सूचना देकर रवाना हो गया। हम तीनो सवार होकर अस्तरगच की ओर रवाना हुए।

(१५ नवम्बर)—हम लोग प्रात काल की अनिवार्य नमाज के समय इस्तालीफ के नीचे ख्वाजा हसन पहुँच गये और थोडी देर के लिये उतर पडे। माजून का सेवन करके शरद्-काल का आनन्द उठाने चल दिये। जब सूर्य चढ गया तो हम लोग इस्तालीफ के एक बाग मे उतर पडे और वहा अगूरो का सेवन किया। अस्तरगच के अधीनस्थ ख्वाजा शिहाब नामक स्थान पर हम लोग सो गए। आता अमीर आखूर का घर वही कही निकट होगा कारण कि हमारे जागने के पूर्व वह भोजन तथा एक घडा भर मदिरा ले आया था। मदिरा बडी ही उत्तम थी। कुछ प्याले पीकर हम लोग सवार हो गये। हम फिर एक उद्यान मे, जो शरद्-काल के कारण बडा रमणीक हो गया था, उतरे। वहां एक गोष्ठी आयोजित हुई

१ ५ पौंड।
२ ६ बजे प्रात।
३ आधी रात तक।

जहा ख्वाजा मुहम्मद अमीन भी हमारे पास पहुच गया। सोने की नमाज़ के समय तक मदिरापान होता रहा। उस दिन तथा रात्रि मे अब्दुल्लाह, असस, नूर बेग तथा यूसुफ अली सब काबुल से आ गये।

(१६ नवम्बर)—प्रात काल भोजन करके हम लोग फिर सवार हो गये और अस्तरगच के नीचे बागे पादशाही की सैर की। वहा एक छोटे से सेब के वृक्ष ने शरद्-काल का बडा ही उत्तम रग धारण कर लिया था। प्रत्येक शाखा पर ५-६ पत्तिया एक पक्ति मे लगी थीं। वह वृक्ष इतना सुन्दर बन गया था कि यदि कोई चित्रकार उसका चित्र बनाना चाहता तो भी उसे यह सम्भव न था। अस्तरगच से रवाना होकर हमने ख्वाजा हसन मे भोजन किया और सायकाल की नमाज़ के समय बेहज़ादी पहुच गये। वहा हमने ख्वाजा मुहम्मद अमीन के सेवक इमाम मुहम्मद के घर मे मदिरापान किया।

(१७ नवम्बर)—दूसरे दिन मगलवार को हम काबुल के चारबाग मे पहुँचे।

(१८ नवम्बर)—बृहस्पतिवार २३ ज़िलहिज्जा को प्रस्थान करके हम लोग किले मे प्रविष्ट हुए।

(१९ नवम्बर)—शुक्रवार को मुहम्मद अली, जो हैदर रिकाबदार का पुत्र था, एक तूईगून[1], जो उसने पकडा था, उपहार स्वरूप लाया।

(२० नवम्बर)—शनिवार २५ ता० को एक गोष्ठी चुनार के उद्यान मे आयोजित हुई। वहा से मैं सोने के समय की नमाज के वक्त सवार होकर रवाना हुआ। सैयिद कासिम ने पिछले अपराधो के प्रति लज्जा प्रकट की। हम लोग उसके घर उतरे और कुछ प्याले पिये।

(२४ नवम्बर)—बृहस्पतिवार १ ज़िलहिज्जा को ताजुद्दीन महमूद कन्धार से मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

(१२ दिसम्बर)—सोमवार १९ मुहर्रम को मुहम्मद अली जगजग नीलाब से आया।

(१३ दिसम्बर)—मगलवार को मगर खा जनजूहा भीरा से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

(१६ दिसम्बर)—शुक्रवार २३ ज़िलहिज्जा को मैंने अली शेर बेग के चार दीवानो से जिन अशआर[2] का चयन किया था, उनकी नकल समाप्त की।

(२० दिसम्बर)—मगलवार २७ ता० को किले मे एक गोष्ठी आयोजित थी। उसमे यह आदेश हुआ कि यदि कोई नशे मे बदमस्त होकर चला जाय तो उसे पुन गोष्ठी मे प्रविष्ट न होने दिया जाय।

(२३ दिसम्बर)—शुक्रवार ३० ज़िलहिज्जा को हम लोग लमगान की सैर के लिये रवाना हो गये।

१ सफ़ेद बाज़।
२ शेर का बहुवचन।

९२६ हि०

(२३ दिसम्बर १५१९ ई०—१२ दिसम्बर १५२० ई०)

कोहदामन तथा कोहिस्तान की सैर

(२३ दिसम्बर)—शनिवार १ मुहर्रम को हम लोग ख्वाजा सेहयारान नामक स्थान पर पहुच गये। एक जल-धारा के तट पर, उस स्थान पर जहा वह पर्वत से निकलती है, मदिरापान की गोष्ठी हुई।

(२४ दिसम्बर)—दूसरे दिन प्रात काल सवार होकर हम लोगों ने रेगे रवा की सैर की। सैयिद कासिम बुलबुल के मकान मे मदिरापान की गोष्ठी आयोजित हुई।

(२५ दिसम्बर)—वहा से प्रस्थान करके हम लोगों ने माजून का सेवन किया और आगे बढ कर बिलकिर मे पडाव किया।

(२६ दिसम्बर)—प्रात काल हम लोगों ने सुबह के नशे[1] का सेवन किया, यद्यपि रात मे मदिरापान हो चुका था। मध्याह्न की नमाज के समय हम लोग रवाना हो गये और दूरनामा मे पडाव करके मदिरापान की गोष्ठी आयोजित की।

(२७ दिसम्बर)—हम लोगों ने जल्दी सुबह की सैर कर ली।[2] दूरनामा के सरदार हकदाद ने अपना बाग पेशकश के रूप मे प्रस्तुत किया।

(२८ दिसम्बर)—वहा से बृहस्पतिवार को रवाना होकर हम लोग निज्रअऊ मे ताजीकों के ग्राम मे उतरे।

(२९ दिसम्बर)—शुक्रवार को हम लोग चेहलकुलबा तथा बारान नदी के बीच मे शिकार खेलते रहे। बहुत से हिरन मारे गये। जिस समय से मेरे हाथ मे चोट लगी थी, मैंने बाण न चलाया था। इस समय मैंने एक लचीले धनुप से एक मृग के कूल्हे पर बाण मारा। बाण खाल मे आधा घुस गया। शिकार से लौटकर मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय हम लोग निज्रअऊ पहुच गये।

(३० दिसम्बर)—दूसरे दिन निज्रअऊ वालों का राजकर, जो ६० मिस्काल सोना[3] निश्चित हुआ था, प्राप्त हुआ।

(१ जनवरी १५२० ई०)—सोमवार को हम लोग लमगान की सैर के उद्देश्य से रवाना हुए। मुझे आशा थी कि हुमायू हमारे साथ चलेगा किन्तु जब ऐसा ज्ञात हुआ कि वह ठहरना चाहता है तो कूरा दर्रे से उसे वापस जाने की अनुमति दे दी गई। हम लोग बढते चले गये और बद्रअऊ मे पडाव किया।

१ माजून।
२ सम्भवतः माजून का सेवन कर लिया।
३ अर्सकिन के अनुमान के अनुसार ४० पौंड।

लमगान की सैर

हम लोग वहा से सवार होकर ऊलूगनूर पहुचे। वहा मछेरा ने बारान नदी से मछलिया पकडी। मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज के समय हम लोग नौका छोडकर खेमे मे पहुचे तब भी मदिरा पी गई। सायकाल की नमाज के समय हम नौका से वापस आ गये और एक खेमे मे बैठ कर मदिरा पी गई।

हैदर पताका की देख रेख करने वाले का दावर से काफिरा के पास भेजा गया था। बहुत से काफिर सरदार बादेपीच दर्रे के नीचे उपस्थित हुए और कई मशको मे मदिरा लाये तथा अभिवादन किया। उस दर्रे को पार करते समय [1] आश्चर्यजनक सख्या मे देखे गये।

दूसरे दिन एक नौका पर सवार होकर हम लोगा ने माजून का सेवन किया। बूलान के नीचे उतर कर हम लोग शिविर मे पहुँच गये। वहा दो नावे थी।

(५ जनवरी)—शुक्रवार १४ मुहर्रम को प्रस्थान करके हम लोगो ने मन्दरावर के नीचे पहाडी के दामन मे पडाव किया। वहा एक मदिरापान की गोष्ठी आयोजित हुई।

(६ जनवरी)—शनिवार को हम लोग दरुता के सकरे मार्ग से नौका द्वारा रवाना हुए और जहानुमा के कुछ ऊपर उतरे तथा अदीनापूर के समक्ष बागे वफा मे पहुच गए। जब हम नौका से उतर रहे थे तो नीनगनहार का हाकिम कय्याम ऊरदू शाह उपस्थित हुआ और उसने अभिवादन किया। लगर खा नीयाजाई कुछ समय से नीलाब मे था। वह मेरी सेवा मे मार्ग मे उपस्थित हुआ। हम लोग बागे वफा म उतर पडे। वहा की नारगिया बडे सुन्दर पीले रग की हो गई थी। वहा की बहार बडी उन्नति पर तथा बडी आकर्षक थी। हम लोग वहा ५-६ दिन ठहरे रहे।

मेरी यह इच्छा थी कि मैं चालीस वर्ष की अवस्था मे पहुच कर मदिरापान त्याग दू। क्योकि अब केवल एक वर्ष ही रह गया था अत मैं अत्यधिक मदिरापान करने लगा था।

(७ जनवरी)—रविवार १६ मुहर्रम को प्रात काल के नशे के सेवन के बाद मैंने मदिरापान न किया। मुल्ला यारक ने एक नक्श[2] जो मुखम्मस[3] मे तैयार किया था, प्रस्तुत किया। मैं माजून खाता रहा। उसने वडा ही सुन्दर नक्श प्रस्तुत किया। मैंने इन बातो की ओर बहुत समय से ध्यान न दिया था। मैं भी चारगाह बहर[4] मे नक्श की रचना की ओर प्रेरित हो गया। इसका उल्लेख बाद मे किया जायगा।

(१० जनवरी)—बुधवार (१९ मुहर्रम) को जब हम लोग प्रात काल के नशे का सेवन कर रहे थे तो यह बात मज़ाक मे कही गई कि जो कोई ताजीका के समान गाना गा ले वह एक प्याला पिये। इस प्रकार बहुत से लोगा ने पिया। सुन्नत के समय[5] फिर, जब कि हम चुनार के वृक्षा के बीच मे बैठे हुए थे यह कहा गया कि जो कोई तुर्कों के समान गाना गा ले वह एक प्याला पिये। इस प्रकार भी बहुत से लोगो ने पिया। जब सूर्य बहुत चढ गया तो हमने हौज के किनारे नारगी के वृक्षा के नीचे मदिरा पी।

(११ जनवरी)—दूसरे दिन २० मुहर्रम को हम दरुता से एक नौका पर सवार हुए। जूयेशाही के नीचे उतर पडे और अतर की ओर चले गये।

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
२ एक प्रकार का संगीत।
३ वह नज़्म जिसके प्रत्येक बन्द में पाच-पाच मिसरे हों।
४ एक प्रकार का संगीत का वज़न (छन्द)।
५ प्रात काल सूर्योदय के उपरान्त।

वहा से हम नूर घाटी की ओर रवाना हुए और सौसन ग्राम तक पहुचे। वहा से वापस होकर हम लाग अमला मे उतरे।

(१४ जनवरी)—क्योंकि ख्वाजा कला ने बजौर को अच्छी दशा म कर दिया था और इस कारण कि वह मेरा मित्र था, मैंने उसे बुलवाया और बजौर को शाह मीर हुसैन को सौंप दिया। शनिवार २२ मुहर्रम को शाह मीर हुसैन को विदा कर दिया गया। उस दिन अमला मे हमने मदिरापान किया।

(१५ जनवरी)—२३ मुहर्रम को वर्षा होती रही। जब हम लोग कूनार मे स्थित कुला ग्राम मे पहुचे जहा मलिक अली का घर है तो हम वहा उसके मझले पुत्र के घर मे, जोकि एक सन्तरे के बाग के सामने था, उतर पडे। हम वर्षा के कारण बाग मे न गये अपितु जहा थे वहीं मदिरापान करते रहे। वर्षा अधिक हो रही थी। मैंने मुल्ला अली खा को एक तावीज़, जो मैं जानता था, सिखाया। उसने उसे चार कागज़ के टुकडा पर लिखकर चार ओर लटका दिया। उसके ऐसा करने पर वर्षा रुक गई और आसमान साफ होने लगा।

(१६ जनवरी)—प्रात काल २४ मुहर्रम का हम लोग एक नौका पर सवार हुए। दूसरी नौका पर बहुत से अन्य वीर सवार हुए। बजौर, सवाद, कूनार तथा उसके आसपास के लोग एक प्रकार की बीर बूज़ा[1] बनाते है जिसके उबाल को वे लोग 'कीम" कहते है। यह कीम वे लोग जडी-बूटिया तथा बहुत सी साधारण वस्तुआ से, जोकि रोटी के समान होती है और जिन्हें सुखाकर रख लिया जाता है बनाते हैं। कुछ प्रकार की बीर बूज़ा बडी ही तेज़ होती है किन्तु वे कडवी और उनका स्वाद बडा खराब होता है। हमने मदिरा पीना निश्चय किया था किन्तु उसकी कडवाहट को सोचकर माजून के सेवन का ही प्राथमिकता दी। असस, हसन, ईकिरिक तथा मस्ती, जो दूसरी नौका पर थे, को आदेश दिया गया कि वे उसमे से थोडी सी मदिरा पी लें। वे उसे पीकर असावधान हो गये। हसन ईकिरिक ने बडा शोर मचाया। असस अत्यधिक नशे मे ऐसी बुरी बुरी बातें करने लगा जिससे हमे बडा कष्ट हुआ। मैंने यह सोचा कि उन लोगा को नदी के उस पार कर दिया जाय किन्तु कुछ अन्य लोगा ने उनकी सिफारिश की।

मैंने ख्वाजा कला को उस समय बुलवाया था और बजौर को शाह मीर हुसैन को प्रदान कर दिया था। इसका क्या कारण था ? ख्वाजा कला मित्र था, वह बजौर मे बहुत समय तक रह चुका था। इसके अतिरिक्त बजौर का कार्य बडा ही सरल था।

कूनार नदी के घाट पर शाह मीर हुसैन बजौर जाते हुए मुझसे मार्ग मे मिला। मैंने उसे बुलवा कर उससे कुछ कठोर बातें की और उसे विशेष कवच प्रदान करके विदा कर दिया।

नूरगल के समक्ष एक वृद्ध ने, जो लोग नौका पर थे उनसे भिक्षा मागी। सभी ने कुछ न कुछ दिया चुगे, पगडिया, नहाने के वस्त्र इत्यादि। वह बहुत सा सामान ले गया।

बीच धारा मे एक बुरे स्थान के ऊपर नौका टकरा गई और बडे ज़ोर का धक्का लगा। लोग बडी चिन्ता म पड गये। नाव डूबी नहीं किन्तु मीर मुहम्मद नाविक जल मे गिर पडा। हम उस रात्रि म अतर के समीप रहे।

(१७ जनवरी)—मगलवार २५ मुहर्रम को हम लोग मन्दरावर पहुचे। कूतलूक कदम तथा उसके पिता ने किले के भीतर एक गोष्ठी आयोजित की थी। यद्यपि इस स्थान मे कोई आकर्षण न था

१ एक प्रकार की मदिरा।

किन्तु उसे प्रसन्न करने के लिये थोडे से मदिरा के प्याले पिये गये। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय हम लोग शिविर मे पहुच गये।

(१८ जनवरी)—बुधवार २६ मुहर्रम को हम लोग किन्दकिर झरने की सैर को गये। किन्द-किर मन्दरावर तूमान के अधीनस्थ एक गाव है। लमगानात मे यही एक ऐसा गाव है जहा खजूरें होती है। यह पहाड के आचल मे ऊचाई पर स्थित है। खजूर के उद्यान पूर्व की ओर हैं। खजूरो के उद्यान के एक ओर कुछ दूरी पर एक झरना है। झरने के उद्गम स्थान के ६ या ७ गज नीचे लोगो ने स्नान हेतु आड करने के लिये इस प्रकार पत्थर ढेर कर दिये हैं कि हौज का जल इतना ऊँचा उठ गया है कि वह नहाने वालो के सिर पर गिरता है। वह जल बडा ही हलका है। शीत ऋतु मे उससे बडा जाडा लगता है किन्तु यदि कोई उसमे ठहरा रहे तो बडा अच्छा लगने लगता है।

(१९ जनवरी)—वृहस्पतिवार २७ मुहर्रम को शेर खा तरकलानी ने हमे अपने घर उतरवाया और हमारी दावत की। मध्याह्नोपरान्त की नमाज के समय हम लोग सवार होकर रवाना हुए। मछली के तालावो से जैसा कि उल्लेख इससे पूर्व हो चुका है उस प्रकार मछलिया पकडी गईं।

(२० जनवरी)—शुक्रवार २८ मुहर्रम को हम लोग ख्वाजा मीर मीरान के ग्राम के समीप उतर पडे। सायकाल की नमाज के समय वहा एक गोष्ठी आयोजित हुई।

(२१ जनवरी)—शनिवार २९ मुहर्रम को हम अली शग तथा अलगार के मध्य मे पहाडिया मे शिकार खेलते रहे। अली शग के एक ओर एक शिकार का घेरा वनाया गया था दूसरा अलगार की ओर। हिरन पहाडी के उतार की ओर हँकाये गये और वहुत से मार डाले गये। शिकार से लौट कर हम लोग अलगार के मलिकों से सम्बन्धित एक उद्यान मे उतर पडे और वहा एक गोष्ठी[1] आयोजित की।

मेरा सामने का एक दात आधा टूट गया था, आधा बच रहा था। आज जब कि मैं भोजन कर रहा था तो वह भी आधा टूट गया।

(२२ जनवरी)—१ सफर को प्रात काल हम लोग सवार होकर रवाना हो गये और मछली पकडने के लिये एक जाल डलवाया। मध्याह्न के समय हम लोग अली शग पहुचे और एक उद्यान मे मदिरापान किया।

(२३ जनवरी)—दूसरी सफर को अली शग के मलिक हमज़ा खा को किसास[2] के लिये सौंपा गया। उसने एक निरपराधी की हत्या कराने का अपराध किया था अत इस कारण उसे दड दिया गया।

(२४ जनवरी)—मगलवार को कुरान के एक अध्याय का पाठ करके हम लोग यान बूलाग मार्ग से काबुल की ओर रवाना हो गये। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय ऊलागनूर से हमने बारान नदी पार की और सायकाल की नमाज के समय करातू पहुच गये। वहा हमने अपने घोडा को दाना खिलाया और शीघ्रातिशीघ्र भोजन करके जैसे ही घोडे जौ खा चुके, रवाना हो गये।[3]

१ सम्भवत मदिरा-पान की।
२ खून के बदले में खून।
३ यहाँ से आगे किसी भी हस्तलिखित पोथी मे कोई वर्णन नहीं। सम्भवत यह वर्णन नष्ट हो गया कारण कि इसके बाद तथा ९३६ हि॰ के प्रारम्भ के बीच के दिनों का हाल न मिलने का कोई कारण ज्ञात नहीं होता।

९३२ हि०

(१८ अक्तूबर १५२५ ई०—७ अक्तूबर १५२६ ई०)

हिन्दुस्तान पर पाचवाँ आक्रमण

(१७ नवम्बर)—शुक्रवार १ सफर ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को जब सूर्य धनुराशि मे था तो हमने हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया। यक-लगा[1] को पार कर के दहे याकूब की नदी के पश्चिमी चौरस घास के मैदान म हमने पडाव किया। इस पडाव पर अब्दुल मलूक[2] कूरची उपस्थित हुआ। वह ७ ८ मास पूर्व सुल्तान सईद[3] खा के पास[4] भेजा गया था। वह अपने साथ यगी बेग[5] कूकूल्दाश[6] नामक खान का एक आदमी भी लाया। उसने खानमा[7] तथा खान की ओर से पत्र, साधारण प्रकार के उपहार तथा शुभकामनायें पहुँचाईं।

(१८ नवम्बर से २१ नवम्बर)—हम लोग दो दिन तक इस पडाव पर सेना की सुविधा हेतु ठहरे रहे।[8] यहाँ से प्रस्थान कर के, एक रात्रि ठहर कर[9] हमने पुन बादाम चश्मे पर पडाव किया। वहाँ हम लोगो ने माजून का सेवन किया।

(२२ नवम्बर)—बुधवार (६ सफर) को जब हम लोग बारीक आब पर पडाव किये हुए थे तो नूरबेग का अनुज सोने की अशर्फियाँ तथा तन्के जिनका मूल्य २०,००० शाहरुखी[10] था, और जिन्हें

१ जलालाबाद के मार्ग पर बूतखाक स थोड़ी दूर एक दर्रा। इसकी शिखा पर किला गुर्जा नामक स्थित है। यहा मार्ग, जूये ख्वाजा नामक नहर से कटता है जो लोगर नदी से निकलती है, सम्भवत देह याकूब की यही नदी है।

२ फ़ारसी अनुवाद में 'अब्दुल मलिक'।

३ काशगर का सुल्तान।

४ काशगर म।

५ नया बेग अथवा अमीर।

६ फ़ारसी अनुवाद म 'कूकुल्ताश'।

७ उस समय सईद के साथ दो खानम थीं 'सुल्तान निगार' तथा 'दौलत सुल्तान'। ये बाबर की माता की बहिनें थीं।

८ सम्भवत हुमायूँ के न पहुचने के कारण प्रतीक्षा की गई। उस काबुल की सेना के कूच करने के पूर्व ही प्रस्थान कर देना चाहिये था। फ़ारसी अनुवाद के अनुसार सेना एकत्र करने के उद्देश्य स पड़ाव किया गया।

९ सम्भवत बूतखाक पर पडाव किया गया होगा।

१० अर्सकिन ने अपने इतिहास मे लिखा है कि बाबर ने इस धन का मूल्याकन बहुत कम किया है। २०,००० शाहरुखियों का मूल्य उसने १००० पौंड बताया है, (History of India 1854, Volume I, Appendix E)।

लाहौर की मालगुजारी से ख्वाजा हुसेन ने भेजा था, लाया। नूर बेग स्वयं हिन्दुस्तान ही मे रह गया था। इस धन का अधिकाश भाग मुल्ला अहमद के हाथ, जो बल्ख का एक सम्मानित व्यक्ति था, बल्ख वालो के लाभार्थ भेज दिया।[1]

(२४ नवम्बर)—शुक्रवार ८ (सफर) को गडमक मे पडाव करने के उपरान्त मुझे बडे जोर का नज़ला हो गया किन्तु ईश्वर को धन्य है कि उसका सुगमतापूर्वक अन्त हो गया।

(२५ नवम्बर)—शनिवार को हमने बागे वफा मे पडाव किया। कुछ दिन तक हुमायूँ[2] तथा उस ओर[3] की सेना की प्रतीक्षा मे हम लोग बागे वफा मे ठहरे रहे। इस इतिहास मे विभिन्न स्थानो पर बागे वफा के सौन्दर्य तथा आकर्षण का उल्लेख हो चुका है। यह बडा ही सुन्दर उद्यान है। जो कोई ख़रीदने वाले की दृष्टि से इसे देखेगा उसे पता चल जायेगा कि यह कैसा स्थान है।[4] जितने भी दिन हम लोग वहा रहे तो जो दिन मदिरापान हेतु निश्चित थे उन दिनो अधिकाश मदिरापान होता और मदिरापान करते करते सुबह कर दी जाती। जिन दिवसो को मदिरापान निषिद्ध था, उन दिनो मे माजून का सेवन किया जाता था।

हुमायूँ के निश्चित अवधि से अधिक ठहर जाने के कारण मैंने उसे कठोर भाषा मे पत्र लिखे और उनमे क्रोध प्रदर्शित करते हुए उन्हे उसके पास प्रेषित कराया।[7]

(३ दिसम्बर)—रविवार १७ सफर को प्रात काल के उपरान्त हुमायूँ उपस्थित हुआ। उसके विलम्ब कर देने के कारण मैंने उसे बहुत डाटा-फटकारा। ख्वाजा कला भी उसी दिन गजनी से आ कर उपस्थित हुआ। हम लोगो ने उसी रविवार को सायकाल प्रस्थान कर दिया और सुलतानपूर तथा ख्वाजा रुस्तम[8] के मध्य मे एक नवनिर्मित उद्यान मे पडाव किया।

१ मसन ने अपने ग्रंथ के तीसरे भाग पृ० १७६ म बाबर के एक पड़ाव का बडा रोचक वर्णन दिया है जो सम्भवत इसी पडाव से सम्बन्धित है। यह इस प्रकार है कि बूतख़ाक स सड़क बाबर पादशाह के पत्थर के ढेर की ओर जाती है। सम्भवत यह ढेर बाबर के आदेशानुसार तैयार किया गया होगा कारण कि बाबर ने इस महत्वपूर्ण एवं अभियान के समय सेना वालों को एक एक पत्थर उस स्थान पर फेंकने का आदेश दिया होगा।

२ हुमायूँ इस समय अपने १८वे वर्ष मे था।

३ काबुल के ओर की।

४ साधारण दृष्टि से नहीं अपितु रुचि लेकर।

५ शेख़ जैन के अनुसार शनिवार, रविवार, मगलवार तथा बुधवार मदिरा पान हेतु निश्चित थे।

६ बाबर ने एक बार ४० वर्ष की अवस्था को प्राप्त हो जाने के उपरान्त मदिरा पान त्याग देने की प्रतिज्ञा की थी।

७ बाबर को बागे वफ़ा से प्रस्थान करने मे एक मास विलम्ब करना पड़ा। हुमायूँ ने बदख़्शा से देर म प्रस्थान किया। उसकी सेना को काबुल म तैयारी म कुछ समय लगा होगा। कुछ हस्तलिखित पोथियों में हुमायूँ की एक टिप्पणी मिलती है: "हमारा प्रस्थान आशूरा (१० मुहर्रम) के उपरान्त निश्चय हुआ था। चूँकि हम लोग १० सफ़र के बाद पहुँचे अत विलम्ब करना आवश्यक हो गया। बाबर ने सूचना प्राप्त करने के लिये पत्र लिखे थे। उत्तर में निवेदन किया गया कि बदख़्शा की सेना की तैयारी म देर हो गई। यदि यह दास अपने पिता की कृपा पर भरोसा करते हुये और अधिक विलम्ब करता तो दास का पिता और भी दुखी होता।"

८ 'ख्वाजा रुस्तम' का मकबरा जलालाबाद के लगभग ३ मील पश्चिम मे स्थित है। इसके दक्षिण

(६ दिसम्बर)—बुधवार २० सफर को हमने वहाँ से प्रस्थान किया और जाला[1] पर सवार होकर हम लोग कूश गुम्बज पहुँचे। वहा नौका से उतर कर हम लोग शिविर मे पहुँचे।

(७ दिसम्बर)—प्रात काल शिविर से निकल कर हम लोग नौका पर सवार हुए और वही माजून का सेवन किया। हमारे पडाव सर्वदा कीरीक आरीक मे रहे किन्तु जब हम लोग कीरीक आरीक के सामने पहुँचे तो यद्यपि हमने बहुत देखा किन्तु हमें न तो शिविर का कोई चिह्न दृष्टिगत हुआ और न घाडे ही दिखाई पडे। मैने सोचा "गरम चश्मा समीप ही है और वहाँ छाया भी है, सम्भवत सेना वाले वही उतर पडे हो।" यह सोच कर हम लोग कीरीक आरीक से चल खडे हुए। गरम चश्मा पहुँचते पहुँचते दिन ढल गया। हम लोग वहा न रुके किन्तु रात्रि मे थोडी सी यात्रा करके एक स्थान पर नौका को बाध दिया और कुछ देर के लिये सो गये।

(८ दिसम्बर)—प्रात काल हम लोग यदा वीर नामक स्थान पर नौका से उतरे। दिन निकल आने के कारण सेना वाले आने लगे। शिविर भी कीरीक आरीक ही मे रहा होगा किन्तु वह हमे दृष्टिगत न हुआ।

नौका पर बहुत से लोग ऐसे थे जो कविता कर सकते थे, उदाहरणार्थ शेख अबुल वज्द[2], शेख जैन, मुल्ला अली जान, तरदी बेग खाकसार इत्यादि। इस गोष्ठी मे मुहम्मद सालेह[3] की इस कविता की चर्चा हुई

शेर

'हे प्रियतम! तेरे सरीखे हाव भाव वाले के होते हुए किसी अन्य प्रियतम को कोई क्या करे?
जिस स्थान पर तू हो, वहाँ किसी अन्य को कोई क्या करे।"

मैंने कहा इसी प्रकार के पद्यो की रचना की जाय। इस पर जो लोग पद्यो की रचना कर सकते थे वे लोग रचना करने लगे। क्योंकि मुल्ला अली जान से सर्वदा परिहास किया जाता था अत मैंने तत्काल इस व्यग्यपूर्ण छन्द की रचना की

शेर

"तुझ सरीखे बद मस्त करने वाले को कोई क्या करे?
कोई बैल वाला किसी गधी को क्या करे?"

मुबीन

इससे पूर्व अच्छा-बुरा, गम्भीर-परिहास जो कुछ मेरी समझ मे आता, दिल बहलाने के लिये पद्य के रूप मे लिख डालता था। जिन दिनों मैं मुबीन[4] की कविता के रूप मे रचना कर रहा था मेरी मन्द

पश्चिम में १½ मील पर 'बागे सफ़ा' स्थित है। यह 'बागे सफ़ा' उस 'बागे सफ़ा' से भिन्न है जिसे बाबर ने भीरा के समीप साल्टरेंज में लगवाया था।

1 जाला:—बांस की नौका अथवा लकड़ी के गट्ठे।

2 शेख जैन का मामा

3 शेख जैन के अनुसार "मुहम्मद सालेह शरफ़"।

4 लगभग २००० शेरों की तुर्की भाषा में एक कविता जिसमें इस्लाम के विभिन्न धार्मिक सिद्धान्तों एवं एबादत के नियमों का उल्लेख है।

बुद्धि को यह अनुभव हुआ तथा मेरे दुखी हृदय मे यह आया कि 'खेद है कि जिस वाणी से इतने उत्कृष्ट विचारो की रचना की जाती है उसका इन नीच शब्दो के लिए प्रयोग किया जाय। खेद है कि जिस हृदय मे इतने उत्कृष्ट विचार आते हो उसमे इतने नीच विचार आयें।" उस समय से मैंने परिहास एव व्यग्य मय काव्य की रचना समाप्त कर दी और इस बात से तोवा[1] कर ली किन्तु जिस समय मैंने (मुल्ला अली जान के सम्बन्ध मे) उस पद्य की रचना की थी तो यह विचार मेरे हृदय मे न थे।

बीगराम[2] पहुचने के एक दो दिन उपरान्त जब मुझे ज्वर तथा नजला हो गया और खासी के साथ जब मैं रक्त थूकने लगा तो मुझे अनुभव हुआ कि यह चेतावनी मुझे कहाँ से प्राप्त हुई है और मेरा यह कष्ट मेरे किन कुकर्मों का परिणाम है।

"जो कोई अपनी शपथ तोडेगा वह अपने हृदय तथा आत्मा के विरुद्ध कार्य करेगा। जो कोई अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार, जो उसने ईश्वर से की है, आचरण करेगा तो उसे वह नि सन्देह अत्यधिक पुरस्कृत करेगा।'[3]

तुर्की पद्य

"हे वाणी! मैं तेरे साथ किस प्रकार व्यवहार करू
क्योंकि तेरे कारण मेरे हृदय से रक्त प्रवाहित है
वह वाणी उत्कृष्ट थी जिससे ऐसे पद्य निकले,[4]
व्यग्य, क्षुद्र तथा अश्लील असत्य तुझसे निकले।[5]
यदि तू कहे, इस प्रतिज्ञा के कारण मैं न जलूगा,
तो तू अपनी लगाम को इस कलह के मैदान से मोड।"[6]

"हे ईश्वर हमने अपनी आत्मा के प्रति अत्याचार किया है। यदि तू हमें क्षमा न करेगा और हमारे प्रति दया न करेगा तो हम नि सन्देह उन लोगो मे होंगे जोकि नष्ट होने वाले हैं।"[7]

मैंने नये सिरे से पश्चाताप प्रकट करते हुए तोबा की और इन अश्लील तथा नीच विचारो एव बातो को त्याग कर अपने हृदय को सात्वना दी। मैंने अपनी लेखनी तोड डाली। ईश्वर की ओर से पापी मनुष्य के लिये इस प्रकार की चेतावनी महान् सौभाग्य है। जो कोई भी इन चेतावनियो से सन्मार्ग पर आ जाय तो यह उसका बहुत बडा सौभाग्य है।

(८ दिसम्बर)—सायकाल वहाँ से प्रस्थान करके हमने अली मस्जिद मे पडाव किया। इस पडाव पर भूमि के सकरे होने के कारण मैं सर्वदा एक पुश्ते पर पडाव किया करता था। सेना वालो ने घाटी की तलहटी म पडाव किया। यह पुश्ता, जिस पर मैं पडाव किया करता था, समस्त पुश्तो से श्रेष्ठ था। शिविर वालो द्वारा आग जलाने के कारण रात्रि मे एक विचित्र दीपावली दृष्टिगत होती थी।

१ घृणित अथवा निद्य कर्म पुन न करने का पश्चाताप अथवा शपथ पूर्वक की गयी दृढ प्रतिज्ञा।
२ पेशावर।
३ यह वाक्य कुरान से उद्धृत है।
४ मुबीन के पद्य।
५ मुबीन के पद्यों तथा मुल्ला अली जान के सम्बन्ध के व्यग्य की तुलना।
६ यह पद्य बाबर के दीवान की रामपुर पांडुलिपि में नहीं है।
७ यह वाक्य कुरान से उद्धृत है।

इस (रमणीयता) के कारण जब हम यहाँ पडाव करते थे तो मदिरापान किया जाता था। इस बार भी मदिरापान हुआ।

(९–१० दिसम्बर)—प्रात काल के पूर्व माजून का सेवन करके हमने प्रस्थान किया। उस दिन मैंने रोज़ा भी रखा। हमने बीगराम[1] के समीप पडाव किया। दूसरे दिन शिविर को उसी पडाव पर छोड कर हम लोग कर्ग अवी[2] की ओर रवाना हुए। हमने सियाह आब का बीगराम के समक्ष पार किया। नदी के बहाव की ओर हमने शिकार के घेरे की व्यवस्था कराई।

जब हम लोग कुछ दूर आगे निकल गये तो पीछे से किसी ने आकर सूचना दी कि बीगराम के समीप जगल के एक टुकडे मे एक गैंडा मिल गया है, लोग जगल को घेरे हुए खडे है। हम लोग घोडा को भगाते हुए वहाँ पहुचे और जगल के चारा ओर घेरा डाल दिया। शोर गुल करने पर गैंडा मैदान मे निकल कर भागा। हुमायूँ तथा अन्य लोगो को, जो उस दिशा[3] से आये थे और जिन्होंने इससे पूर्व गैंडा न देखा था, उसे देख कर बडा आनन्द प्राप्त हुआ। लगभग एक कोस तक उसका पीछा किया गया और उस पर बहुत से बाण चलाये गये और उसे गिरा दिया गया। वह किसी व्यक्ति अथवा घोडे पर आक्रमण न कर सका। दो अन्य गैंडा की भी हत्या की गई।[4]

मैं सोचा करता था कि यदि हाथी की किसी गैंडे से मुठभेड करा दी जाय तो क्या हो। इस बार महावत लोग हाथी ला रहे थे कि एक गैंडा सामने से निकल पडा। महावता के आगे बढने पर गैंडे ने उनका सामना न किया और दूसरी ओर भाग गया।

सिन्ध नदी पार करने की तैयारी और सेना की गणना का आदेश

उस दिन हम बीगराम मे रहे। कुछ अमीरा, सम्बन्धिया तथा बख्शिया एव दीवान[5] के अधिकारिया को बुलवा कर ६ ७ को सरदार बना कर नीलाब के घाट पर नौकाआ के प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया

१ पेशावर।

२ सम्भवत 'कर्ग खाना' अथवा गैंडों का स्थान।

३ 'नमुतना'।

४ इब्न बत्तूता ने भी गैंडों के शिकार का बड़ा रोचक वर्णन दिया है —जब हम सिन्धु नदी (नहर), जो पजाब के नाम से प्रसिद्ध है, पार कर चुके तो हम बांसों के एक कानन के मध्य में प्रविष्ट हुये। हमारा मार्ग उसी कानन के मध्य में था। अचानक एक गैंडा हमारी ओर झपटा। यह जानवर काले रंग का होता है और इसका डील डौल बड़ा होता है। इसके शरीर को देखते हुये इसका सिर बहुत ही बड़ा होता है। इसी कारण यह बात प्रसिद्ध हो गई है कि गैंडे के केवल सिर ही सिर होता है और शरीर नहीं होता। यह हाथी से छोटा होता है किन्तु इसका सिर हाथी के सिर से कई गुना बडा होता है। आँखों के मध्य में इसके एक सींग होता है जो ३ जरा (हाथ) लम्बा और एक बालिश्त चौड़ा होता है। जब वह हमारे निकट पहुँचा तो एक सवार उसके सामने आ गया। गैंडे ने घोड़े के सींग मारा और सवार की रान चीर कर उसको भूमि पर गिरा देने के उपरान्त जंगल में भाग गया और फिर उसका पता कहीं न लगा। [रिजवी 'तुगलुक कालीन भारत', भाग १ (अलीगढ १९५६ ई०) पृ० १५६]

५ बख्शी का कर्त्तव्य देहली के सुल्तानों के आरिजे ममालिक के समान सेना की भरती करना, निरीक्षण एवं सेना के वेतन के भुगतान का प्रबंध करना होता था।

६ राज्य के विभाग, विशेष रूप से वित्त विभाग।

गया और उन्हें यह भी आदेश दिया गया कि सेना मे जितने लोग उपस्थित हो उनके नाम लिख कर उनकी सूची तैयार की जाये और उनकी गणना की जाये।

उस रात्रि मे मुझे नजला तथा ज्वर हो गया और खासी आने लगी। खासी के समय थूक के साथ रक्त भी गिरने लगा। इससे बडी अधिक चिन्ता हो गई। ईश्वर को धन्य है कि दो-तीन दिन उपरान्त इसका अन्त हो गया।

(११ दिसम्बर)—हमारे बीगराम से प्रस्थान के समय वर्षा होने लगी। हम लोग काबुल नदी पर उतर पडे।

लाहौर से समाचार

हमे समाचार प्राप्त हुए कि दौलत खा तथा (अपाक) गाजी खा ने २०-३०,००० की सख्या मे सेना एकत्र करके कलानूर पर अधिकार जमा लिया है और लाहौर की ओर प्रस्थान करने वाले है। मोमिने अली तवाची[1] को मैंने तत्काल यह सदेश पहुँचाने के लिए भेज दिया कि "हम लोग बढते हुये चले आ रहे हैं। जब तक हम न पहुँच जायें युद्ध मत करना।"

(१४ दिसम्बर)—मार्ग मे दो रात के पडाव के उपरान्त हम लोग सिन्द नदी पर पहुँच गये और वहा बृहस्पतिवार २८ (सफर) को उतर पडे।

सिन्ध पार करना तथा सेना की गणना

(१६ दिसम्बर)—रविवार प्रथम रबी-उल-अव्वल को सिन्द नदी तथा कचा कोट[2] नदी को पार करके हम लोगो ने पडाव किया। अमीरो, बख्शियो तथा दीवान वालो ने, जो नौकाओ की देख रेख हेतु नियुक्त हुए थे, सेना की गणना करके निवेदन किया कि छोटे-बडे, अच्छे बुरे, नौकर तथा अन्य लोग जो सेना के साथ हैं सब की सख्या १२,००० लिखी गई है।

पूर्व की ओर यात्रा

इस वर्ष मैदानो मे वर्षा कम हुई थी किन्तु पहाडियो के आचल मे कृषि-योग्य भूमि मे अच्छी वर्षा हुई थी। इस कारण हम लोग पहाडियो के आचल से होते हुए सियालकोट[3] चल खडे हुए। हाती ककर[4] की विलायत[5] के समक्ष हमे एक जलधारा मिली जिसका जल तालाबो मे एकत्र था। उन सब मे बरफ जमी थी। बरफ की तह अधिक मोटी न थी और हाथ भर मोटी रही होगी। हिन्दुस्तान मे साधारण रूप से इतनी बरफ नही मिलती। जितने वर्ष हम इस देश मे रहे हमें इसके चिह्न दृष्टिगत न हुये।[6]

१ सेना को रसद एवं खाद्य सामग्री इत्यादि पहुँचाने वालों का अधिकारी।
२ हारू नदी।
३ चनाब नदी के पूर्व पर्वतों के नीचे।
४ गक्खर।
५ राज्य, प्रदेश। सम्भवत: बाबर का तात्पर्य परहाला से है, (रावलपिंडी गजेटियर पृ० ११)।
६ एल्फिन्स्टन की पोथी में हुमायूँ के हाथ की निम्नांकित टिप्पणी बताई जाती है: मेरे सम्मानित पिता ने लिखा है कि हिन्दुस्तान की विजय के पूर्व हमें यह बात ज्ञात न थी किन्तु बाद में हमें ज्ञात हो गया। यदि किसी वर्ष अधिक जाड़ा पड़ जाय तो कहीं कहीं बरफ़ गिरती है। जिस वर्ष मैंने गुजरात

सिन्द से ५ पडाव पार करके हमने छठा पडाव (२२ दिसम्बर, ७ रबी-उल-अव्वल को) बुगियाल[1] के मैदान म एक जल धारा पर किया। यह बालनाथ जोगी[2] की पहाडिया के नीचे है और जूद[3] पर्वत को मिलाता है।

(२३ दिसम्बर)—दूसरे दिन हम इस आशय से उस पडाव पर ठहर गये कि लोग खाद्य सामग्री एकत्र कर लें। उस दिन अरक[4] पिया गया। मुल्ला मुहम्मद परघरी ने बहुत सी कहानियाँ सुनाईं इसके पूर्व उसने इतनी बातें कभी न की थी। मुल्ला शम्स भी बडा बातूनी था। एक बात जब वह छेड देता तो सायकाल से प्रात काल तक समाप्त न करता।

दास तथा सेवक, अच्छे तथा बुरे जो खाद्य सामग्री हेतु गये थे इससे भी आगे बढ गये[5] और बडी असावधानी की दशा मे जगल, मैदान, पर्वत तथा ऊबड-खाबड स्थान मे पहुँच गये। कुछ लोग पकड गये। कोचकीना तुर्कितार की वहीं मृत्यु हो गई।

(२४ दिसम्बर)—वहाँ से प्रस्थान करके हमने बिहत नदी, झेलम[6] के एक घाट से पार की और वहीं पडाव कर दिया। वली किज़ील वहाँ मुझसे भेंट करने आया। वह सियालकोट[7] की सुरक्षित सेना से सम्बन्धित था और बीमरूकी तथा अकरीयादा नामक परगने उसके अधीन थे। सियालकोट के विषय में सोच कर मैंने उसे डाटा फटकारा। उसने यह निवेदन किया कि, "मैं खुसरो कूकूल्दाश के सियालकोट से प्रस्थान करने के पूर्व अपने परगने मे पहुँच चुका था। उसने मुझे कोई सूचना नही कराई।' मैंने उसका बहाना सुन कर कहा, "जब तुमने सियालकोट की आर कोई ध्यान नही दिया तो तुम बेग लोगों[8] के पास लाहौर क्या नही चले गये?" क्याकि शीघ्र ही कार्य करना था अत मैंने उसके अपराध की ओर कोई ध्यान नही दिया।

लाहौर में समाचार का भेजा जाना

(२५ दिसम्बर)—सैयिद तूफान तथा सैयिद लाचीन का दा-दो घाड देकर लाहौर म यह सूचना कराने के लिये दौडाया गया कि 'वे लोग युद्ध न करें। हमसे सियालकोट अथवा पर्सरूर[9] मे भेंट करें।"

विजय किया (९४२ हि०, १५३५ ई०) तो भूलपुर एव ग्वालियर के मध्य में इतना अधिक जाडा पडा कि हाथ हाथ भर जल जम गया।

१ गक्खरों का एक कबीला है जो 'बरगोवह' भी कहलाता है।

२ बालानाथ योगी अथवा टीला गोकरण नाथ योगियों का एक मठ है जो तिलडॅगा की चोटी पर ३,२०० फ़ीट की ऊचाई पर झेलम जिले की झेलम तहसील में झेलम से २० मील पश्चिम मे स्थित है, (झेलम जिले का गजेटियर)।

३ सम्भवत तिलडॅगा पहाडी।

४ मद्यसार।

५ अनाज के खेतों के आगे निकल गये।

६ झेलम, पंजाब का एक जिला। यह झेलम नदी के दायें तट पर स्थित है।

७ पंजाब का एक जिला जो चनाब पर लाहौर के ७२ मील उत्तर और झेलम के लगभग ५० मील उत्तर पूर्व में स्थित है। यह बडा ही प्राचीन नगर है।

८ अमीर लोगों।

९ सियालकोट जिले की एक तहसील। यह सियालकोट कस्बे से दक्षिण में १८ मील पर स्थित है। सियालकोट एव कलानूर के मार्ग में यह स्थान किसी समय बडा प्रसिद्ध था।

सब लोग यही कहते थे कि "गाज़ी खाँ ने ३०-४०,००० सैनिक एकत्र कर लिये हैं। दौलत खा ने वृद्धावस्था के बावजूद अपनी कमर मे दो तलवारें बाध रक्खी हैं¹ और उन लोगो ने युद्ध करने का सकल्प कर लिया है।" मैंने सोचा कि "यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि, १० मित्र ९ से अच्छे होते हैं, कोई भूल न करनी चाहिये। जब लाहौर के बेग मिल जाय तो तत्काल युद्ध करना चाहिए।"

(२६-२७ दिसम्बर)—बेगो के पास दो आदमियो को भेज कर हम लोग चल खडे हुए। एक रात्रि ठहर कर दूसरे दिन हमने चनाब के तट पर पडाव किया।

बहलोलपुर² के खालसा³ मे होने के कारण हम मार्ग को छोड कर उसकी सैर के लिए रवाना हुए।⁴ उसका किला चनाब नदी के तट पर एक ऊचाई पर स्थित है। मैं उसे देख कर बडा प्रसन्न हुआ। हमने सोचा कि सियालकोट वालो को हम यहाँ ले आयें। यदि ईश्वर ने चाहा तो समय मिलने पर उन्हें ले आया जायगा। बहलोलपुर से हम लोग नौका द्वारा शिविर मे पहुँचे। गोष्ठी आयोजित हुई। कुछ लोगो ने अरक का, कुछ ने बूजा का और कुछ ने माजून का सेवन किया। नौका से सोने के समय की नमाज के उपरान्त हम लोग शिविर मे पहुँचे। वहा भी कुछ मदिरापान हुआ। नदी के किनारे एक दिन घोडा को आराम दिया गया।

जाट तथा गूजर

(२९ दिसम्बर)—शुक्रवार १४ रबी-उल-अव्वल को हम लोगो ने सियालकोट मे पडाव किया। यदि कोई हिन्दुस्तान जाय तो जाट⁵ तथा गूजर पहाडियो एव मैदानो से बहुत बडी सख्या मे बैलो तथा भैंसो की लूट मार हेतु टूट पडते है। वे अभागे बडे ही मूर्ख और निष्ठुर होते हैं। इससे पूर्व उनके व्यवहार से हमारा कोई सम्बन्ध न था कारण कि देश शत्रुओ के अधीन था। इस बार जब कि यह राज्य हमारे अधिकार मे आ चुका था तो भी उन लोगो ने उसी प्रकार व्यवहार प्रारम्भ कर दिया। सियालकोट से भूखे नगे, भिखारी तथा दरिद्र हमारे शिविर मे आ रहे थे। अचानक शोर गुल हुआ और वे लूट लिये गये। जिन मूर्खों ने उद्दडता प्रदर्शित की थी उनकी मैंने खोज कराई। दो-तीन व्यक्तियो के विषय मे मैंने आदेश दिया कि उन्हें टुकडे-टुकडे कर दिया जाये।

सियालकोट से नूर बेग के भाई शाहम को आदेश दिया गया कि वह शीघ्रातिशीघ्र लाहौर मे बेगो⁶ के पास पहुँच कर उन्हें यह सूचना दे कि, "शत्रु के विषय मे विश्वस्त ज्ञान प्राप्त कर लिया जाये।

१ घोर युद्ध करने तथा प्राणों की बलि देने को तैयार है।
२ पजाब के गुजरात जिले के उत्तरी पूर्वी कोने पर, चनाब नदी के दायें तट पर, सियालकोट से १५ मील तथा गुजरात से २२ मील पर।
३ जिसकी आय केन्द्रीय सरकार मे जाती हो।
४ शेख़ जैन के अनुसार बाबर ने इसे इसी वर्ष खालसे में सम्मिलित किया किन्तु इससे यह बात स्पष्ट नही होती कि बाबर ने इसके खालसा होने के कारण सैर की। बाबर ने ६३० हि० (१५२३-२४ ई०) म इस पर अधिकार जमाया होगा। इसी वर्ष उसने सियालकोट विजय किया।
५ 'बाबर नामा' में इसे 'जाट' तथा जट' दोनों प्रकार से लिखा गया है। ये लोग पजाब, सिन्ध नदी के तट एव सिविस्तान इत्यादि के मुसलमान किसान होते थे। यमुना के पश्चिम एवं आगरा तथा आस पास के जाटों से इनका कोई सम्बन्ध नहीं।
६ अमीर।

कुछ ऐसे लोगों द्वारा जो उनके विषय मे अच्छी जानकारी रखते हो, पता लगा कर हमें सूचना दी जाये कि शत्रुओं से कहाँ मुकाबला हो सकता है।"

इस पडाव पर एक व्यापारी ने उपस्थित होकर यह समाचार पहुचाये कि आलम खाँ[1] सुल्तान इब्राहीम द्वारा पराजित हो गया है।

आलम खा की पराजय

इस घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है।[2] आलम खा मुझसे बिदा हो कर[3] दो-दो पडाव एक साथ पार करता हुआ वायु के अत्यधिक उष्ण होने के बावजूद अपने साथियो के विषय मे कोई चिन्ता किये हुये बिना रवाना हो गया। जिस समय मैंने आलम खा को विदा किया था उस समय समस्त ऊज़बेग खानों तथा सुल्तानो ने बल्ख को घेर लिया था। मैं उसको विदा करने के पश्चात् तुरन्त बल्ख की ओर चल खड़ा हुआ।

लाहौर पहुच कर उसने जो बेग[4] हिन्दुस्तान मे थे उनसे आग्रह किया कि, तुम लोग मेरी सहायता करो। पादशाह ने यही आदेश दिया है। हमारे साथ चलो। गाज़ी खाँ को भी साथ लेकर हम देहली तथा आगरा पर आक्रमण करेंगे।" उन लोगो ने उत्तर दिया, "गाज़ी खाँ के साथ हम लोग किस भरोसे पर चलें? शाही आदेश इस प्रकार है कि यदि गाज़ी खाँ अपने छोटे भाई हाजी खाँ तथा अपने पुत्र को दरबार मे भेज दे अथवा शरीर-रक्षक के रूप मे लाहौर भेज दे तो तुम लोग उसकी सहायतार्थ चले जाओ। यदि वह दोनो कार्यों मे से कोई कार्य न करे तो फिर उसका साथ मत दो। आप स्वय कल ही उस से युद्ध कर चुके हैं तथा पराजित हो चुके हैं। अब आप किस भरोसे पर उससे सहायता की आशा कर रहे हैं? इसके अतिरिक्त यह आप के हित मे नही है कि आप उससे मिलें।" उन लोगो ने इस प्रकार की बातें कह कर आलम खाँ को रोका किन्तु उसने उन लोगो की बात स्वीकार न की। उसने अपने पुत्र शेर खाँ को दौलत खाँ तथा गाज़ी खा से बात करने भेजा। तदुपरान्त सब लोगो ने एक दूसरे से भेंट की।

दिलावर खाँ[5] कुछ समय तक बन्दी-गृह मे रह चुका था। दो-तीन मास पूर्व वह बन्दीगृह से भाग कर लाहौर आया था। आलम खा ने उसे भी अपने साथ ले लिया। वह महमूद खाँ[6] खाने जहा को भी

१ अलाउद्दीन खाँ।

२ उपर्युक्त वर्णन से कुछ योरोपियन विद्वानों के इस मत का खंडन होता है कि बाबर ने आलम खाँ से काम लेकर उसे छोड़ दिया। बाबर के इस वर्णन एवं बाद के वर्णन से पता चलता है कि हिन्दुस्तान में आलम खाँ के समर्थकों की संख्या अधिक न थी और बाबर की विजय में उनका कोई हाथ नहीं था। इससे यह भी पता चलता है कि आलम खाँ के देहली पर अधिकार जमाने की कोई सम्भावना न थी। यदि आलम खाँ में देहली विजय करने एवं उसे अपने अधिकार में रखने की शक्ति होती तो सम्भवतः बाबर अपने राज्य को पंजाब तक ही सीमित रखता। बाबर देहली की ओर उसी समय बढ़ा जब कि उसने देख लिया कि न तो आलम खाँ देहली ही विजय कर सकता है और न अपने समर्थक ही बना सकता है।

३ यह काबुल में ९१३ हि० १५०७-८ ई० में बाबर से विदा हुआ था।

४ अमीर।

५ यह दौलत खाँ का पुत्र था।

६ महमूद को सम्भवतः अपने पिता की खाने जहाँ की उपाधि प्राप्त हुई होगी किन्तु इसे उस खाने जहाँ का पुत्र ही लिखा गया है। इसका कारण सम्भवतः यह होगा कि उसका पिता अधिक प्रसिद्ध था।

सब लोग यही कहते थे कि "गाजी खाँ ने ३०-४०,००० सैनिक एकत्र कर लिये हैं। दौलत खा ने वृद्धावस्था के बावजूद अपनी कमर मे दो तलवारें बाध रक्खी हैं[1] और उन लोगा ने युद्ध करने का सकल्प कर लिया है।" मैंने सोचा कि "यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि, १० मित्र ९ से अच्छे होते है कोई भूल न करनी चाहिये। जब लाहौर के बेग मिल जाय तो तत्काल युद्ध करना चाहिए।"

(२६-२७ दिसम्बर)—बेगों के पास दो आदमियो को भेज कर हम लोग चल खडे हुए। एक रात्रि ठहर कर दूसरे दिन हमने चनाब के तट पर पडाव किया।

बहलोलपुर[2] के खालसा[3] मे होने के कारण हम मार्ग को छोड कर उसकी सैर के लिए रवाना हुए।[4] उसका किला चनाब नदी के तट पर एक ऊचाई पर स्थित है। मैं उसे देख कर बडा प्रसन्न हुआ। हमने सोचा कि सियालकोट वालो को हम यहाँ ले आयें। यदि ईश्वर ने चाहा तो समय मिलने पर उन्हें ले आया जायगा। बहलोलपुर से हम लोग नौका द्वारा शिविर मे पहुँचे। गोष्ठी आयोजित हुई। कुछ लोगो ने अरक का, कुछ ने बूजा का और कुछ ने माजून का सेवन किया। नौका से सोने के समय की नमाज के उपरान्त हम लोग शिविर मे पहुँचे। वहा भी कुछ मदिरापान हुआ। नदी के किनारे एक दिन घाडो को आराम दिया गया।

जाट तथा गूजर

(२९ दिसम्बर)—शुक्रवार १४ रबी उल-अव्वल को हम लोगो ने सियालकोट मे पडाव किया। यदि कोई हिन्दुस्तान जाय तो जाट[5] तथा गूजर पहाडिया एव मैदानो से बहुत बडी सख्या मे बैलो तथा भैंसो की लूट मार हेतु टूट पडते है। वे अभागे बडे ही मूर्ख और निष्ठुर होते हैं। इससे पूर्व उनके व्यवहार से हमारा कोई सम्बन्ध न था कारण कि देश शत्रुओं के अधीन था। इस बार जब कि यह राज्य हमारे अधिकार मे आ चुका था तो भी उन लोगो ने उसी प्रकार व्यवहार प्रारम्भ कर दिया। *सियालकोट से भूखे नगे, भिखारी तथा दरिद्र हमारे शिविर मे आ रहे थे।* अचानक शोर गुल हुआ और वे लूट लिये गये। जिन मूर्खों ने उद्दडता प्रदर्शित की थी उनकी मैंने खोज कराई। दो-तीन व्यक्तियों के विषय मे मैंने आदेश दिया कि उन्हें टुकडे-टुकडे कर दिया जाये।

सियालकोट से नूर बेग के भाई शाहम को आदेश दिया गया कि वह शीघ्रातिशीघ्र लाहौर मे बेगों[6] के पास पहुँच कर उन्हें यह सूचना दे कि, "शत्रु के विषय मे विश्वस्त ज्ञान प्राप्त कर लिया जाये।

१ घोर युद्ध करने तथा प्राणों की बलि देने को तैयार है।
२ पजाब के गुजरात ज़िले के उत्तरी पूर्वी कोने पर, चनाब नदी के दायें तट पर, सियालकोट से १५ मील तथा गुजरात से २२ मील पर।
३ जिसकी आय केन्द्रीय सरकार मे जाती हो।
४ शेख ज़ैन के अनुसार बाबर ने इसे इसी वर्ष खालसे म सम्मिलित किया किन्तु इससे यह बात स्पष्ट नहीं होती कि बाबर ने इसके खालसा होने के कारण सैर की। बाबर ने ९३० हि० (१५२३-२४ ई०) में इस पर अधिकार जमाया होगा। इसी वर्ष उसने सियालकोट विजय किया।
५ 'बाबर नामा' में इसे 'जाट' तथा 'जट' दोनों प्रकार से लिखा गया है। ये लोग पंजाब, सिन्ध नदी के तट एव सिविस्तान इत्यादि के मुसलमान किसान होते थे। यमुना के पश्चिम एवं आगरा तथा आस पास के जाटों से इनका कोई सम्बन्ध नहीं।
६ अमीर।

कुछ ऐसे लोगो द्वारा जो उनके विषय मे अच्छी जानकारी रखते हो, पता लगा कर हमें सूचना दी जाये कि शत्रुओ से कहाँ मुकाबला हो सकता है।"

इस पडाव पर एक व्यापारी ने उपस्थित होकर यह समाचार पहुचाये कि आलम खा[1] सुल्तान इब्राहीम द्वारा पराजित हो गया है।

आलम खा की पराजय

इस घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है।[2] आलम खा मुझसे विदा हो कर[3] दो-दो पडाव एक साथ पार करता हुआ वायु के अत्यधिक उष्ण होने के बावजूद अपने साथियो के विषय मे कोई चिन्ता किये हुये बिना रवाना हो गया। जिस समय मैंने आलम खा को विदा किया था उस समय समस्त ऊज़बेग खानों तथा सुल्तानो ने बल्ख को घेर लिया था। मैं उसको विदा करने के पश्चात् तुरन्त बल्ख की ओर चल खडा हुआ।

लाहौर पहुच कर उसने जो बेग[4] हिन्दुस्तान मे थे उनसे आग्रह किया कि, तुम लोग मेरी सहायता करो। पादशाह ने यही आदेश दिया है। हमारे साथ चलो। गाज़ी खाँ को भी साथ लेकर हम देहली तथा आगरा पर आक्रमण करेंगे।" उन लोगों ने उत्तर दिया, 'गाज़ी खाँ के साथ हम लोग किस भरोसे पर चलें? शाही आदेश इस प्रकार है कि यदि गाज़ी खाँ अपने छोटे भाई हाजी खाँ तथा अपने पुत्र को दरबार मे भेज दे अथवा शरीर-बधक' के रूप मे लाहौर भेज दे तो तुम लोग उसकी सहायतार्थ चले जाओ। यदि वह दोना कार्यों मे से कोई कार्य न करे तो फिर उसका साथ मत दो। आप स्वय कल ही उस से 'युद्ध' कर चुके हैं तथा पराजित हो चुके हैं। अब आप किस भरोसे पर उससे सहायता की आशा कर रहे हैं? इसके अतिरिक्त यह आप के हित मे नही है कि आप उससे मिलें।" उन लोगो ने इस प्रकार की बातें कह कर आलम खाँ को रोका किन्तु उसने उन लोगों की बात स्वीकार न की। उसने अपने पुत्र शेर खाँ को दौलत खाँ तथा गाज़ी खा से बात करने भेजा। तदुपरान्त सब लोगों ने एक दूसरे से भेंट की।

दिलावर खा[5] कुछ समय तक बन्दी-गृह मे रह चुका था। दो-तीन मास पूर्व वह बन्दीगृह से भाग कर लाहौर आया था। आलम खा ने उसे भी अपने साथ ले लिया। वह महमूद खा[6] खिन खाने जहा को भी,

१ अलाउद्दीन खाँ।

२ उपर्युक्त वर्णन से कुछ योरोपियन विद्वानों के इस मत का खडन होता है कि बाबर ने आलम खाँ से काम लेकर उसे छोड दिया। बाबर के इस वर्णन एव बाद के वर्णन से पता चलता है कि हिन्दुस्तान में आलम खा के समर्थकों की संख्या अधिक न थी और बाबर की विजय में उनका कोई हाथ नहीं था। इससे यह भी पता चलता है कि आलम खाँ के देहली पर अधिकार जमाने की कोई सम्भावना न थी। यदि आलम खाँ में देहली विजय करने एवं उसे अपने अधिकार में रखने की शक्ति होती तो सम्भवत बाबर अपने राज्य को पंजाब तक ही सीमित रखता। बाबर देहली की ओर उसी समय बढ़ा जब कि उसने देख लिया कि न तो आलम खाँ देहली ही विजय कर सकता है और न अपने समर्थक ही बना सकता है।

३ यह काबुल में ९१३ हि० १५०७-८ ई० में बाबर से विदा हुआ था।

४ अमीर।

५ यह दौलत खाँ का पुत्र था।

६ महमूद को सम्भवत अपने पिता की खाने जहाँ की उपाधि प्राप्त हुई होगी किन्तु बाद में उसे खाने जहाँ का पुत्र ही लिखा गया है। इसका कारण सम्भवत यह होगा कि उसका पिता अधिक प्रसिद्ध था।

जिसे लाहौर मे एक परगना दे दिया गया था, अपने साथ ले गया। सम्भवत उन लोगो ने यह निश्चय किया था कि दौलत खा, गाजी खा सहित उन समस्त बेगों[1] को, जो हिन्दुस्तान मे नियुक्त थे, अपने अधीन रखने अपितु इस ओर[2] जो कुछ भी हो उसे वे अपने अधिकार मे कर लें। आलम खा, दिलावर खा तथा हाजी खा और उनकी सेना लेकर देहली एव आगरा पर अधिकार जमा ले। इस्माईल जिलवानी तथा कुछ अन्य अमीरो ने उपस्थित होकर आलम खा से भेंट की। वे अविलम्ब शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए देहली पर चढ़ाई करने के लिए चल खडे हुये। जब वे इन्द्री[3] पहुचे तो सुलेमान शेखजादा[4] भी उनसे मिल गया। उनकी सख्या ३०-४०,००० हो गई।

उन लोगो ने देहली को घेर लिया। वे न तो आक्रमण कर सके और न किले वालो को कोई हानि ही पहुचा सके।[5] जब सुल्तान इबराहीम को यह हाल ज्ञात हुआ तो उसने सेना सहित उन पर चढाई कर दी। जब उन्हें उसके निकट पहुचने की सूचना मिली तो वे किले का अवरोध छोड कर उससे युद्ध हेतु रवाना हुये। उन लोगो ने सोचा कि, "यदि हम दिन मे आक्रमण करेंगे तो (सुल्तान इबराहीम की ओर के) अफ़ग़ान उसका साथ छोड कर हमसे न मिल सकेंगे किन्तु यदि हम रात्रि मे छापा मारें तो कोई भी एक दूसरे को न देख सकेगा और प्रत्येक अपनी इच्छानुसार कार्य करेगा।" यह निश्चय करके उन्होने रात्रि मे आक्रमण करने की योजना बनाई। दो बार रात्रि मे आक्रमण के उद्देश्य से सायकाल सवार होकर वे ६ कोस तक बढते चले गये किन्तु दो-तीन पहर रात्रि तक वे घोडे पर बैठे रहे, न आगे बढ सके और न पीछे हट सके और न सब लोग मिल कर कोई बात निश्चय ही कर सके। तीसरी बार जब एक पहर रात्रि रह गई थी तो उन लोगो ने आक्रमण किया। उनका उद्देश्य सम्भवत खेमा तथा झोपडो को जलाना था। उन्होंने बढकर प्रत्येक दिशा से आग लगा दी और शोर गुल करने लगे। जलाल खा जिगहट ने अन्य अमीरो सहित उपस्थित होकर आलम खा से भेंट की।

सुल्तान इबराहीम अपने कुछ खासा खेलो[6] के साथ अपने सराचे[7] मे था। वह प्रात काल तक वही रहा। जो लोग आलम खा के साथ थे, वे लूट मार मे व्यस्त हो गये। जब सुल्तान इबराहीम की सेना ने देखा कि उन लोगो की सख्या कम ही रह गई है तो उन लोगो ने थोडी-सी सेना एव एक हाथी को लेकर उन पर आक्रमण कर दिया। आलम खा के सहायक हाथी का मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए। आलम खा भाग कर दोआब के मध्य से होता हुआ पानीपत के समीप पहुचा। इन्द्री पहुच कर उसने किसी बहाने से मिया सुलेमान[8] से ४ लाख[9] प्राप्त किये। इस्माईल जिलवानी,

उसके कबीले को हैदराबाद के तुर्की 'बाबर नामा' में प्रत्येक स्थान पर 'नोहानी' लिखा गया है। योरोपियन लेखक इस शब्द को 'लोहानी' लिखते हैं।

१ अमीरों।

२ देहली के पश्चिम अथवा पंजाब।

३ पंजाब के करनाल जिले का एक गाव, करनाल कस्बे से १५ मील उत्तर म ।

४ वह फ़र्मुल कबीले का था जिसे देहली राज्य में बड़ा सम्मान प्राप्त था।

५ सम्भवत किले वालों को खाद्य सामग्री भी प्राप्त होती रही।

६ सम्बन्धियों एव विश्वासपात्रों का दस्ता।

७ शिविर, खेमों इत्यादि का घेरा।

८ अर्सकिन का मत है कि यह आदमी कोई बड़ा भारी महाजन था किन्तु सम्भवत वह शेखजादा सुलेमान फ़र्मुली, जिसका इससे पूर्व उल्लेख किया गया था।

९ सम्भवत ३०,००० से ४०,००० पौंड तक, यदि ये रुपये हों, किंग, पृ० १६७)।

बिबन[1] तथा आलम खा के ज्येष्ठ पुत्र ने उसका साथ छोड दिया और वे दोआब के मध्य मे चले गये। आलम खा ने जो सेना एकत्र की थी, उसमे से कुछ लोग उदाहरणार्थ दरिया खा[2] का पुत्र सैफ खा खाने जहा[3] का पुत्र महमूद खा तथा शेख जमाल फर्मुली इत्यादि युद्ध के पूर्व ही इबराहीम के पास से भाग गये थे। जब आलम खा, दिलावर खा तथा हाजी खा के साथ सरहिन्द पार कर रहा था तो उसे हमारे प्रस्थान करने एव मिलवट[4] पर अधिकार जमा लेने के समाचार प्राप्त हुये। यह समाचार पाकर दिलावर खा, जो सदा से ही मेरा हितैषी था और मेरे कारण ३-४ मास तक बन्दी-गृह मे रह चुका था, आलम खा तथा अन्य लोगो का साथ छोड कर अपने परिवार वालो के पास सुल्तानपुर[5] पहुच गया। हमारे मिलवट पर अधिकार प्राप्त कर लेने के ३ ४ दिन उपरान्त वह हमारी सेवा म उपस्थित हुआ। आलम खा तथा हाजी खा शतलुत[6] नदी पार करके गिगूता[7] म, जो घाटी तथा मैदान के मध्य मे एक दृढ स्थान है चले गये।[8] वहा हमारे अफगान तथा हज़ारा[9] सवारो ने उसे घेर लिया। उन्होंने उस दृढ किले को लगभग अपने अधिकार मे कर लिया था कि रात्रि हो गई। जो लोग किले के भीतर थे वे किले से भाग जाने के विषय मे सोचने लगे किन्तु फाटक पर घोडो की भीड के कारण वे न निकल सके। उनके साथ हाथी भी थे। जब हाथी आगे बढाये गये तो उन्होने बहुत से घोडा की पाव के नीचे रौद कर हत्या कर डाली। आलम खा घोडे पर सवार होकर भागने मे अपने आपको असमर्थ पाकर अँधेरे मे पैदल भाग खडा हुआ। अत्यधिक कठिनाइयों के बाद वह गाजी खा के पास पहुचा। गाजी खा मिलवट न पहुचा था अपितु पहाडियो मे भाग गया था। गाज़ी खा ने उसके प्रति कोई भी मित्रता न प्रदर्शित की और आलम खा विवश होकर पेहलूर के समीप घाटी की तलहटी[10] मे मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

यात्रा का वर्णन

लाहौर के बेगो (अमीरो) के पास से सियालकोट म एक आदमी ने आकर यह सूचना पहुचाई कि वे लोग कल प्रात काल मेरी सेवा म उपस्थित होगे।

१ मलिक बिबन जिलवानी। यह शेख बायजीद फ़र्मुली अथवा मियाँ बायजीद फ़र्मुली का सहायक था।
२ दरिया खा नोहानी।
३ खाने जहाँ नोहानी।
४ 'मिलवट' का उल्लेख पजाब के आस पास के वर्णन में बहुत मिलता है। सम्भवत इसका अर्थ किला हो। जिस मिलवट का इस स्थान पर उल्लेख है उसे सिवालिक में तातार खा यूसुफ़ खल ने बहलोल लोदी के समय में तैयार कराया था।
५ कपूरथला का एक कस्बा जो कपूरथला कस्बे से १६ मील दक्षिण की ओर स्थित है। मध्य काल में लाहौर तथा देहली के मध्य के मार्ग में यह स्थान बड़ा प्रसिद्ध था।
६ यह स्थान स्पष्ट नहीं।
७ सम्भवत गगोट, होशियारपुर की सरहद पर बहरवैन के समीप।
८ सिवालिक में जो 'कवार धार' के नाम से प्रसिद्ध है, से सम्भवत तात्पर्य है।
९ सम्भवत वे लोग सिंध नदी के पूर्व के हज़ारा के इलाके से सम्बन्धित होंगे। 'तबक़ाते अकबरी' के अनुसार यह दस्ता खलीफ़ा के अधीन बाबर से पृथक् अग्रसर हो रहा था।
१० दून।

(३० दिसम्बर)—दूसरे दिन (१५ रबी-उल-अव्वल) को प्रात काल हम लोगो ने पर्सरूर[1] मे पडाव किया। वहा मुहम्मद अली जगजग, ख्वाजा हुसेन तथा कुछ अन्य वीर मेरी सेवा मे उपस्थित हुये। क्योकि शत्रुओ का शिविर रावी नदी पर लाहौर की दिशा मे था अत हमने बूजका के अधीन कुछ लोगो को समाचार लाने के लिये भेजा। रात्रि के तीसरे पहर वे समाचार लाये कि शत्रु हमारे विषय मे सूचना पाकर भाग खडे हुए और किसी ने दूसरे की ओर मुड कर देखा तक नही।

(३१ दिसम्बर)—दूसरे दिन प्रात काल हमने प्रस्थान कर दिया और भारी सामान तथा अन्य असबाब शाह मीर हुसेन एव जान बेग की देख रेख मे छोड दिया। हम लोग मध्याह्न मे कलानूर[2] पहुच कर वही उतर पडे। मुहम्मद सुल्तान मीर्जा तथा आदिल सुल्तान[3] कुछ बेगो (अमीरो) सहित मेरी सेवा मे उपस्थित हुये।

(१ जनवरी, १५२६ ई०)—हम लोग प्रात काल कलानूर से चल दिये। मार्ग मे लोगो ने गाज़ी खा तथा अन्य लोगो के विषय मे, जो भाग गये थे, निश्चित समाचार पहुचाये। तदनुसार भागने वालो का पीछा करने के लिये मुहम्मदी, अहमदी, कूतलूक कदम, कोषाध्यक्ष वली तथा अन्य बेगो को जिन्होने हाल ही मे काबुल मे यह पद प्राप्त किया था, शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करने का आदेश दिया गया। यह निश्चय हुआ कि यदि वे लोग भागने वालो को पकड सकें तो बडा ही अच्छा है किन्तु यदि वे उन्हें न पकड सकें तो वे मिलवट के किले के चारो ओर के स्थानो की सावधानी से रक्षा करते रहें ताकि किले वाले भाग कर न जा सकें। इस सावधानी का कारण गाज़ी खा था।

मिलवट पर अधिकार

(२ व ३ जनवरी)—इन बेगो (अमीरो) को आगे भेज कर हमने बियाह[4] नदी कनवाहीन[5] के समक्ष पार की और वही उतर पडे। वहा से दो मज़िल यात्रा करके मिलवट[6] के किले की घाटी के अचल मे पडाव किया। जो बेग (अमीर) लोग हमारे पूर्व वहा पहुच चुके थे तथा हिन्दुस्तान के बेगो (अमीरो) को आदेश दिया गया कि वे इस प्रकार पडाव करें कि किले का पूर्ण रूप से अवरोध हो जाये।

इस्माईल खा नामक दौलत खा का एक पौत्र, जो उसके ज्येष्ठ पुत्र अली खा का पुत्र था, मिलवट से मुझसे भेंट करने पहुचा। उसे आश्वासन तथा वचन के साथ-साथ धमकी एव चेतावनी देकर लौटा दिया गया।

(५ जनवरी)—शुक्रवार (२१ रबी-उल-अव्वल) को मैंने शिविर को आगे बढाया और किले

१ 'पर्सरूर' अकबर के लाहौर प्रात में था।

२ कलानूर पंजाब के गुरदासपुर ज़िले में है और गुरदासपुर कस्बे के १५ मील पश्चिम में स्थित है। अकबर को यहीं अपने पिता की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुये थे, और वह कस्बे के बाहर एक टीले पर सिंहासनारूढ हुआ था।

३ ये दोनों हेरात में शरण हेतु आये थे।

४ व्यास।

५ अकबर के समय की बटाला सरकार, बारी दोआब में। बटाला, गुरदासपुर ज़िले (पंजाब) की एक तहसील है और अमृतसर के उत्तर-पूर्व में २४ मील पर स्थित है।

६ होशियारपुर तहसील, ज़िला होशियारपुर (पंजाब) का एक किला जो सुल्तान बहलोल लोदी (१४५१-८९ ई०) के राज्यकाल में बना था।

निकट आधे कोस पर पहुच गया। मैं स्वय उस स्थान के निरीक्षण हेतु गया। दायें वायें तथा मध्य भाग के लिये सेनायें नियुक्त करके मैं शिविर मे वापस पहुच गया।

दौलत खा ने यह सूचना भेजी कि गाज़ी खा पहाडिया मे भाग गया है और यदि उसके अपराध क्षमा कर दिए जायें तो वह मेरी सेवा म उपस्थित हो जायेगा और मिल्वट का समर्पित कर देगा। ख्वाजा मीरान को मैंने इस आशय से भेजा कि वह उसके हृदय से शकायें निकाल कर उसे अपने साथ ले आये। वह तथा उसके साथ उसका पुत्र अली खा उपस्थित हुये। मैंने आदेश दे दिया था कि 'उन्ही दाना तलवारो को, जिन्हें उसने मुझसे युद्ध करने के लिये अपनी कमर म बाधा था उसकी ग्रीवा में लटका दिया जाय। कहीं कोई ऐसा भी दुष्ट गवार होगा ? इस दशा को प्राप्त हो जाने पर भी वह डींगें मारता था।" जब उसे मेरे कुछ समीप लाया गया तो मैंने आदेश दिया कि, 'तलवारें इसकी गर्दन मे पृथक् कर दी जायें।" मेरे समक्ष उपस्थित होकर उसने घुटने टेकने[1] मे सकोच किया। मैंने अपने आदमियो को आदेश दिया कि वे उसके पाव खींच कर उसे घुटने के बल झुका दें। मैंने उसे अपने सामन बैठा कर एक व्यक्ति को जिसे हिन्दुस्तानी (भाषा) का भली भाति ज्ञान था, अपनी एक एक बात को उसे समझाने का आदेश दिया। मैंने कहा कि इससे कहो कि, 'मैंने तुझे अपना पिता कहा। मैंने तेरी अभिलाषा से कहीं अधिक तेरे प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित किया। तुझे एव तेरे पुत्रो को बिलोचियो के दर दर की ठोकर खाने से बचाया। तेरे परिवार तथा अन्त पुर को इब्राहीम के बन्दी-गृह से मुक्त कराया।[2] तातार खा[3] की विलायत[4] मे से ३ करोड[5] तुझे प्रदान किया। मैंने तेरे साथ कौन सी बुराई की थी कि तूने इस प्रकार अपने दोनो

१ मुगलों के अभिवादन का नियम। बाबर ने स्वय अभिवादन हेतु घुटने टेकने का कई स्थानों पर बड़ा रोचक वर्णन दिया है।

२ सम्भवत बाबर ६३० हि० (१५२३-२४ ई०) की घटना की ओर सकेत कर रहा है जिसका सक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है —इस समय लाहौर दौलत खा के अधीन था। वह लाहौर छोड़कर बिलोचियों के पास सम्भवत मुल्तान की ओर सहायता मागने चला गया था कारण कि उसके विरुद्ध इब्राहीम लोदी ने बिहार खा लोदी के अधीन एक सेना भेजी थी। बाबर तथा बिहार खा में युद्ध हुआ। बिहार खा बुरी तरह पराजित हुआ। बाबर के आदमियों ने भागने वालों का लाहौर तक पीछा किया और नगर को अत्यधिक हानि पहुँचाई। वहाँ चार दिन ठहर कर वे दीबालपुर की ओर रवाना हुये। यह घटना रबी उल अव्वल ६३० हि० (लगभग २२ जनवरी १५२४ ई०) को घटी। दीबालपुर स वे सरहिन्द की ओर रवाना हुये किन्तु वहाँ पहुँचने के पूर्व लाहौर की ओर वापस हो जाना पड़ा। वापसी का कारण दौलत खा ही रहा होगा। दौलत खा एव उसके पुत्र बाबर के सहायक बन गये थे और जब तक बाबर दीबालपुर म रहा वे उसके साथ रहे। बाबर ने उन्ह लाहौर प्रदान न किया अपितु जालधर एव सुल्तानपुर प्रदान कर दिये। दौलत खा बाबर के प्रति केवल दिखाने के लिये निष्ठा प्रदर्शित करता रहा किन्तु दिलावर खा ने अपने पिता दौलत खा की धूर्तता से बाबर को परिचित करा दिया। बाबर ने दौलत खा एवं अपाक को षड्यन्त्र के अपराध में बन्दी बना लिया। किन्तु उन्ह शीघ्र मुक्त करके सुल्तानपुर प्रदान कर दिया गया परन्तु वे पजाब पर आक्रमण करने की प्रतीक्षा में पंजाब की ओर भाग गय। दौलत खां की शत्रुता के कारण बाबर को वापस होना पड़ा और पंजाब को अपने आदमियों द्वारा दृढ़ बना कर वह काबुल की ओर लौट गया।

३ तातार खा दौलत खा का पिता था।

४ राज्य अथवा प्रात।

५ अर्सकिन के अनुसार लगभग ७५,००० पौंड।

ओर तलवारें लटका कर[1] मेरे राज्य[2] पर आक्रमण कर दिया और वहा उपद्रव मचा कर शान्ति भग कर दी ?" वह दुष्ट वृद्ध अवाक् हो गया। उसने केवल दो एक शब्द अपने मुह से निकाले किन्तु वह कोई उत्तर न दे सका और मौन कर देने वाले इन शब्दों का कोई उत्तर हो भी न सकता था। उसे आदेश दिया गया कि वह ख्वाजा मीरे मीरान के साथ रहे।

(६ जनवरी)—शनिवार (२२ रबी-उल-अव्वल) को मै स्वय इस आशय से पहुचा कि किले से परिवार तथा अन्त पुर की स्त्रिया कुशलतापूर्वक बाहर निकल सकें। मैं फाटक के समक्ष एक ऊचे स्थान पर उतर पड़ा। वहा मेरी सेवा मे अली खा उपस्थित हुआ और उसने कुछ अशर्फिया भेंट की। लोग अपने परिवार को दूसरी नमाज[3] के पूर्व ही लाने लगे। यद्यपि गाजी खा के विषय मे यह कहा जाता था कि वह भाग गया है किन्तु कुछ लोगो ने बताया कि उन्होंने उसे किले मे देखा है। इस कारण से घर के बहुत से सेवको तथा वीरो को इस आशय मे फाटक पर नियुक्त कर दिया गया कि वे उसे भागने न दें। किसी न किसी युक्ति से भाग जाना उसने पूर्ण रूप से निश्चय कर लिया था। इसके अतिरिक्त यह भी उद्देश्य था कि यदि कोई चुरा कर जवाहरात एव अन्य बहुमूल्य वस्तुयें ले जाने लगे तो वे उससे छीन ली जायें। मैंने वह रात्रि एक खेमे मे, जो फाटक के समक्ष टीले पर लगा दिया गया था, व्यतीत की।

(७ जनवरी)—दूसरे दिन प्रात काल मुहम्मदी, अहमदी, सुल्तान जुनैद, अब्दुल अज़ीज, मुहम्मद अली जगजग तथा कूतलूक कदम को आदेश दिया गया कि वे किले मे प्रविष्ट होकर उसमे जो असबाब हो उस पर अधिकार जमा ले। क्योकि फाटक पर लोग अत्यधिक कोलाहल मचा रहे थे अत उन्हें आतकित करने के लिये मैंने कुछ बाण चलाय। हुमायू के किस्सा ख्वान[4] के दुर्भाग्य का बाण लग गया[5] और उसने तत्काल प्राण त्याग दिये।

(७ व ८ जनवरी)—उस टीले पर दो रातें व्यतीत करने के उपरान्त मैंने किले का निरीक्षण किया। मैं गाज़ी खा के पुस्तकालय मे पहुचा। वहा बहुत से उत्तम बहुमूल्य ग्रन्थ मिले। उनमे से कुछ मैंने हुमायू को दे दिये और कुछ कामरान को भेज दिये।[6] उनमे बहुत से ग्रन्थ पाडित्यपूर्ण विषयो पर थे किन्तु उनकी सख्या इतनी अधिक न थी जितनी कि सर्वप्रथम दृष्टिगत हुई थी। मैंने वह रात्रि किले मे व्यतीत की। दूसरे दिन प्रात काल मैं अपने शिविर मे चला गया।

(९ जनवरी)—हमारा विचार था कि गाजी खा किले मे है। वह निर्लज्ज नामर्द अपने पिता, माता तथा भाइयो एव बहिनों को मिलवट[7] मे छोड कर पहाडियो मे भाग गया था

पद्य

उस निर्लज्ज को देखो जोकि कदापि
सौभाग्य का मुख न देखेगा।

१ यह व्यंग्य पूर्ण वाक्य है। जिस प्रकार गधे के दोनों ओर बोझ लटकाया जाता है उसी उदाहरण को ध्यान में रखते हुये बाबर ने दौलत खा की तलवारों पर व्यग्य किया है।
२ तैमूर का वशज होने के कारण बाबर हिन्दुस्तान को अपने अधीन समझता था।
३ मध्याह्नोत्तर की नमाज़।
४ वह व्यक्ति जो कहानियाँ सुनाने का पेशा करता था।
५ दुर्भाग्य से बाण लगा।
६ कामरान उस समय कधार में था।
७ यह मिलवट झेलम जिले में पिंदादन खा के उत्तर पश्चिम में १६ मील पर है।

वह अपने शरीर का आराम ढूंढता है,
पत्नी तथा सन्तान को कठिनाई मे छोड देता है।"[1]

(१० जनवरी)—बुधवार को उस शिविर से प्रस्थान करके हम लोग उन पहाडियो की ओर रवाना हुये जहा गाजी खा भाग गया था। जब हम लोग शिविर से १ कोस पर मिलवट के दर्रे के दहाने पर पहुचे तो दिलावर खा मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। दौलत खा, अली खा, इस्माईल खा तथा कुछ अन्य सरदारो को कित्ता बेग को इस आशय से सौप दिया गया कि वह उन्हें मिलवट के अधीनस्थ भीरा के किले मे ले जाकर उनकी वहा रक्षा करे। दिलावर खा के परामर्श से जिस व्यक्ति ने जिसे बन्दी बनाया था उसे उसको इस बात की अनुमति दे दी गई कि वह उससे निश्चित धन वसूल कर ले। कुछ लोगो ने जमानत दे दी और कुछ लोग बन्दी रक्खे गये। जब कित्ता बेग बन्दियो सहित सुल्तानपुर पहुचा तो दौलत खा की मृत्यु हो गई।

मिलवट मुहम्मद अली जगजग को सौप दिया गया। उसने अपनी ओर से अपने बडे भाई अरगून तथा वीरो का एक दल वहा नियुक्त कर दिया। हजारा तथा अफगानो मे से भी २००-२५० आदमी किले की कुमक हेतु नियुक्त कर दिये गये।

ख्वाजा कला कई ऊटो पर गजनी की मदिरा लदवा कर लाया था। उसकी मंजिल किले के समक्ष थी। वहा मदिरा-पान की गोष्ठी आयोजित हुई। समस्त शिविर वालो मे से कुछ ने मदिरा-पान किया और कुछ ने अरक पिया।

जसवान घाटी

वहा से प्रस्थान करके हमने मिलवट के चरागाहो की एक नीची पहाडी पार की और दून मे प्रविष्ट हो गये। हिन्दुस्तानी भाषा मे जलका को दून[2] कहते है।[3] इस दून मे हिन्दुस्तान की एक जलधारा बहती है, जिसके दोनो ओर बहुत से ग्राम है। इसे जसवाल अर्थात् दिलावर खा के मामा का परगना कहा जाता है। दून ऐसा जल्का है जिसके चारो ओर घास के चौरस मैदान हैं। इसकी जल धाराओ के दोनो ओर जहा-तहा चावल की कृषि होती है। इसके मध्य मे ३-४ पनचक्किया है जिनमे से होकर जलधारा प्रवाहित रहती है। जलका की चौडाई एक-दो कोस होगी। किन्ही-किन्ही स्थानो की चौडाई ३ कोस होगी। वहा की पहाडिया छोटी-छोटी, पुश्तो के समान है। वहा के ग्राम इन्ही पहाडियो के आचल मे है। जहा ग्राम नहीं है वहा मोर तथा बन्दर बहुत बडी सख्या मे पाये जाते हैं। घरेलू पक्षियो के समान यहा पक्षी भी बहुत पाये जाते हैं किन्तु वे अधिकाश एक रग के होते हैं।

क्योंकि गाजी खा के विषय मे विश्वस्त रूप से कुछ न पता चल सका था कि वह कहा है अत हमने तरदीका को आदेश दिया कि वह वीरीम देव मलिनहास के साथ चला जाये और जहां कही भी वह (गाजी खा) मिले उसे बन्दी बना कर ले आये।

इन पहाडियो पर दून के चारो ओर बडे विचित्र प्रकार के दृढ किले बने हुए है। उत्तर पूर्व मे

१ शेख सादी की 'गुलिस्ता' से उद्धृत।
२ खेमा।
३ घाटी।
४ यह जसवान अथवा उना दून है। यह होशियारपुर जिले की एक उपजाऊ घाटी है जो ४ से ८ मील तक चौडी है।

जो किला है उसका नाम कोटिला[1] है। उसकी दीवारें ७०-८० गज लम्बी हैं और पर्वत के करारों का ढाल जिस पर यह स्थित है, समकोण-युत है। जिस ओर बड़ा फाटक है वहा की दीवार ७-८ गज समकोण-युत होगी। जिस स्थान पर उठने वाला पुल है, उसकी चौड़ाई १०-१२ गज होगी। दो लम्बे-लम्बे लट्ठो से एक पुल बना लिया गया है जिस पर से वे लोग घोडे तथा मवेशियो के गल्ले ले जाते है। इस पर्वतीय प्रदेश मे जिन किलो को गाज़ी खा ने दृढ बनाया था, उनमे से एक यह था। उसके आदमी इस किले मे रहे होंगे। हमारे आक्रमणकारियो ने उस पर आक्रमण करके लगभग अधिकार जमा ही लिया था कि रात हो गई। किले वाले ऐसा दुर्गम स्थान छोड कर भाग खडे हुये।

इस दून के उपान्त मे एक अन्य दृढ किला है जो गिगूता के नाम से प्रसिद्ध है। उसके चारो ओर भी कोटिला के समान पर्वत के करारे है किन्तु यह इतना दृढ नही है। जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, आलम खा इसी मे प्रविष्ट हो गया था।

बाबर का इबराहीम की ओर अग्रसर होना

गाज़ी खा के विरुद्ध थोडी सी सेना भेज देने के उपरान्त मैंने अपने पाव सकल्प की रकाब मे रक्खे और अपने हाथ मे ईश्वर के भरोसे की लगाम ली और मुल्तान इबराहीम बिन (पुत्र) सुल्तान सिकन्दर बिन (पुत्र) बहलोल लोदी अफगान के विरुद्ध प्रस्थान किया। उस समय देहली का राजसिंहासन तथा हिन्दुस्तान का राज्य उसके अधीन था। उसकी स्थायी सेना की सख्या एक लाख बताई जाती थी। उसके तथा उसके वजीरो एव अमीरो के हाथियो की सख्या लगभग १००० थी।

एक मजिल पार करने के उपरान्त, मैंने बाकी नामक शगावल[2] को दीबालपुर[3] प्रदान किया और उसे बल्ख की कुमक हेतु भेज दिया। बल्ख के कार्यों की सफलता के उद्देश्य से मैंने अत्यधिक धन अपने सम्बन्धियों, अज़ीज़ो, पुत्रो तथा छोटो को, जो काबुल मे थे, भेजा। जो धन-सम्पत्ति मिलवट की विजय द्वारा प्राप्त हुई थी, उसमे से भी उपहार भेजे गये।

जब हम (जसवान) दून के नीचे एक या दो मजिल की यात्रा कर चुके तो शाह एमाद शीराज़ी, आराइश खा तथा मुल्ला मुहम्मद मजहब[4] के पास से पत्र लेकर आया जिसमे उन लोगो की हमारे अभियान की सफलता के प्रति शुभाकाक्षायें लिखी थी और वे लोग इस सम्बन्ध मे जो प्रयत्न अथवा चेष्टा कर रहे थे, उसका उल्लेख था। इसके उत्तर मे हमने एक पदाती द्वारा अपनी कृपाओ के आश्वासन से सम्बन्धित एक फरमान भेजा। तदुपरान्त हम लोग रवाना हो गये।

आलम खा का बाबर के पास शरण लेना

जो थोडी सी सेना हमने मिलवट से भेजी थी, उसने हुरूर, कहलूर[5] तथा आसपास के अन्य

१ सम्भवत कागडा जिले के दक्षिणीय-पश्चिमी कोने पर कोटलेट, जो होशियारपुर की सरहद पर है।
२ मुख्य कातिब (लिपिक)।
३ पंजाब के माटगोमरी जिले में, लाहौर के दक्षिण पश्चिम में ४० मील पर यह ब्यास नदी के प्राचीन तट पर स्थित है और नदी के हट जाने से कस्बा नष्ट हो गया है। १४वीं, १५वीं शताब्दी ईसवी में देहली सल्तनत की रक्षा हेतु सबसे दृढ किला यहीं बना था। बाबर ने १५२४ ई० में इस पर आक्रमण किया था।
४ सुल्तान इब्राहीम लोदी के अमीर।
५ कहलूर बिलासपुर को कहते हैं जो शिमला के पर्वतीय प्रांत की राजधानी था और सतलज के बायें तट पर स्थित था। हुरूर भी सम्भवतः आस पास में था।

पर्वतीय किले का विजय कर लिया। ये ऐसे स्थान थे, जिनकी दृढता के कारण सम्भवत वहा बहुत समय से कोई न पहुचा था। वे लोग थोडी बहुत लूट-मार करके लौट आये। आलम खा भी नष्ट होकर पैदल तथा नगा बुच्चा पहुचा। मैंने अपने कुछ अमीरो एव सम्बन्धियो को उसके स्वागतार्थ भाग्य दे कर भेजा। वह उसी स्थान के आसपास मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और अधीनता प्रदर्शित की।

हमारे आक्रमणकारी आसपास की पहाडिया तथा घाटियो मे भी पहुचे किन्तु कई रात अनुपस्थित रहने के उपरान्त बिना कोई महत्वपूर्ण कार्य किये हुये लौट आये। शाह मीर हुसैन, जान बेग तथा कुछ अन्य वीर छापा मारने के उद्देश्य से आज्ञा लेकर रवाना हो गये।

पानीपत के मार्ग की घटनाए

जब हम लोग (जसवान) दून मे थे तो कई बार[2] इस्माईल जल्वानी तथा बिबन के अधीनता प्रदर्शित करते हुये प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये। हमने इस स्थान से उन्हें सतुष्ट करने के लिये फरमान भेज दिये। जब हम लोग दून से निकल कर रूपर[3] की ओर रवाना हुये तो बडे जोर की वर्षा होने लगी और ठडक इतनी अधिक हो गई कि बहुत से भूखे तथा नगे हिन्दुस्तानी मर गये।

जब हम रूपर से प्रस्थान करके सेहरिन्द[4] के समक्ष करनल[5] मे पडाव किये हुये थे तो एक हिन्दुस्तानी ने उपस्थित हो कर कहा, 'मैं सुल्तान इब्राहीम का दूत हूँ।' यद्यपि उसके पास कोई पत्र इत्यादि न था किन्तु उसने हमसे अपने दूत भेजने के सम्बन्ध मे निवेदन किया। हमने तुरन्त एक या दो सवादी पहरेदार उसके साथ कर दिये। इब्राहीम ने इन दरिद्रियो को बन्दी बना दिया। जिस दिन हमने इब्राहीम को पराजित किया वे उसी दिन भाग कर हमारे पास चले आये।

मार्ग मे एक रात पडाव करके हम लोग बनूर[6] तथा सनूर[7] की जल धारा के तट पर उतरे। हिन्दुस्तान की अन्य बडी नदियो के अतिरिक्त एक जल धारा यह है। वे इसे कक्कर[8] (घग्गर) की जल

१ इस समय से आलम खा अथवा अलाउद्दीन द्वारा देहली का बादशाह बनने का स्वप्न समाप्त हो गया। सुल्तान इब्राहीम लोदी से युद्ध के दिन वह एक साधारण से दस्ते का सरदार था। वह राणा सागा के विरुद्ध भी (१५२७ ई०) बाबर के एक छोटे से दल का सरदार था। बाबर उससे सतुष्ट न था अत उसने उस बदख्शा के किले जफर नामक दुर्ग में कैद करा दिया था। वहाँ से भागकर वह सिन्ध होता हुआ गुजरात के बादशाह बहादुर शाह के पास पहुचा। वहाँ उसका पुत्र तातार खा भी उससे मिल गया।

२ फ़ारसी अनुवाद के अनुसार 'दो तीन बार'।

३ अम्बाला जिले में, सतलज के दहाने पर।

४ सरहिन्द अक्षाश ३०°२६, देशान्तर ७६ ३१। मध्य युग में इस कस्बे को बड़ा महत्व प्राप्त था।

५ एल्फिन्स्टन की पोथी के अनुसार 'करनाल'। यह पाडुलिपि नक्ल करने वाले की भूल है।

६ पटियाला स्टेट (पजाब) की एक तहसील का सदर मुकाम राजपुरा के उत्तर पूर्व म १० मील पर। इसे प्राचीन काल म पुष्पावती कहते थे।

७ पटियाला कस्बे के दक्षिण पूर्व म ४ मील पर। बाबर के राज्यकाल में मलिक बहाउद्दीन खुक्खर सनूर का हाकिम नियुक्त हो गया था। उसे ८४ आसपास के ग्राम प्राप्त थे अत यह ज़िला चौरासी कहलाता था।

८ घग्गर नदी सिरमूर से निकलकर अम्बाला के पास से बहती हुई पटियाला एव हिसार की ओर जाती है और भटनेर के पास बीकानेर के रेगिस्तान में समाप्त हो जाती है।

जो किला है उसका नाम कोटिला[1] है। उसकी दीवारें ७०-८० गज लम्बी हैं और पर्वत के करारो का ढाल जिस पर यह स्थित है, समकोण-युत है। जिस ओर बडा फाटक है वहा की दीवार ७-८ गज समकोण-युत होगी। जिस स्थान पर उठने वाला पुल है, उसकी चौडाई १०-१२ गज होगी। दो लम्बे-लम्बे लट्ठो से एक पुल बना लिया गया है जिस पर से वे लोग घोडे तथा मवेशियो के गल्ले ले जाते है। इस पर्वतीय प्रदेश मे जिन किलो को गाजी खा ने दृढ बनाया था, उनमे से एक यह था। उसके आदमी इस किले मे रहे होगे। हमारे आक्रमणकारियो ने उस पर आक्रमण करके लगभग अधिकार जमा ही लिया था कि रात हो गई। किले वाले ऐसा दुर्गम स्थान छोड कर भाग खडे हुये।

इस दून के उपरान्त मे एक अन्य दृढ किला है जो गिगूता के नाम से प्रसिद्ध है। उसके चारो ओर भी कोटिला के समान पर्वत के करारे है किन्तु यह इतना दृढ नही है। जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, आलम खा इसी मे प्रविष्ट हो गया था।

बाबर का इबराहीम की ओर अग्रसर होना

गाज़ी खा के विरुद्ध थोडी सी सेना भेज देने के उपरान्त मैंने अपने पाव सकल्प की रकाब मे रखे और अपने हाथ मे ईश्वर के भरोसे की लगाम ली और सुल्तान इबराहीम बिन (पुत्र) सुल्तान सिकन्दर बिन (पुत्र) बहलोल लोदी अफगान के विरुद्ध प्रस्थान किया। उस समय देहली का राजसिंहासन तथा हिन्दुस्तान का राज्य उसके अधीन था। उसकी स्थायी सेना की सख्या एक लाख बताई जाती थी। उसके तथा उसके वजीरो एव अमीरो के हाथियो की सख्या लगभग १००० थी।

एक मंज़िल पार करने के उपरान्त, मैंने बाकी नामक शगावल[2] को दीबालपुर[3] प्रदान किया और उसे बल्ख की कुमक हेतु भेज दिया। बल्ख के कार्यों की सफलता के उद्देश्य से मैंने अत्यधिक धन अपने सम्बन्धियो, अजीज़ो, पुत्रों तथा छोटो को, जो काबुल मे थे, भेजा। जो धन-सम्पत्ति मिलवट की विजय द्वारा प्राप्त हुई थी, उसमे से भी उपहार भेजे गये।

जब हम (जसवान) दून के नीचे एक या दो मंज़िल की यात्रा कर चुके तो शाह एमाद शीराज़ी, आराइश खा तथा मुल्ला मुहम्मद मजहब[4] के पास से पत्र लेकर आया जिसमे उन लोगो की हमारे अभियान की सफलता के प्रति शुभाकाक्षाये लिखी थी और वे लोग इस सम्बन्ध मे जो प्रयत्न अथवा चेष्टा कर रहे थे, उसका उल्लेख था। इसके उत्तर मे हमने एक पदाती द्वारा अपनी कृपाओ के आश्वासन से सम्बन्धि एक फरमान भेजा। तदुपरान्त हम लोग रवाना हो गये।

आलम खा का बाबर के पास शरण लेना

जो थोडी सी सेना हमने मिलवट से भेजी थी, उसने हुरूर, कहलूर[5] तथा आसपास के अ

१ सम्भवतः कागडा जिले के दक्षिणीय-पश्चिमी कोने पर कोटलेट, जो होशियारपुर की सरहद पर है

२ मुख्य कातिब (लिपिक)।

३ पंजाब के माटगोमरी ज़िले में, लाहौर के दक्षिण पश्चिम में ४० मील पर यह ब्यास नदी के प्राची तट पर स्थित है और नदी के हट जाने से कस्बा नष्ट हो गया है। १४वीं, १५वी शताब्दी ईस में देहली सल्तनत की रक्षा हेतु सबसे दृढ किला यही बना था। बाबर ने १५२४ ई० में इस प आक्रमण किया था।

४ सुल्तान इबराहीम लोदी के अमीर।

५ कहलूर बिलासपुर को कहते हैं जो शिमला के पर्वतीय प्रांत की राजधानी था और सतलज के बा तट पर स्थित था। हुरूर भी सम्भवतः आस पास में था।

पर्वतीय किलो को विजय कर लिया। ये ऐसे स्थान थे, जिनकी दृढता के कारण सम्भवत वहा बहुत समय से कोई न पहुचा था। वे लोग थोडी बहुत लूट-मार करके लौट आये। आलम खा भी नष्ट होकर पैदल तथा नगा कुच्छा पहुचा। मैंने अपने कुछ अमीरो एव सम्बन्धियो को उसके स्वागतार्थ घोडा दे कर भेजा। वह उसी स्थान के आसपास मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और अधीनता प्रदर्शित की।'

हमारे आक्रमणकारी आसपास की पहाडियो तथा घाटियों मे भी पहुचे किन्तु कई रात अनुपस्थित रहने के उपरान्त बिना कोई महत्वपूर्ण कार्य किये हुये लौट आये। शाह मीर हुसेन, जान बेग तथा कुछ अन्य वीर छापा मारने के उद्देश्य से आज्ञा लेकर रवाना हो गये।

पानीपत के मार्ग की घटनाए

जब हम लोग (जसवान) दून मे थे तो कई बार[2] इस्माईल जल्वानी तथा बिबन के अधीनता प्रदर्शित करते हुये प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये। हमने इस स्थान से उन्हें सतुष्ट करने के लिये फरमान भेज दिये। जब हम लोग दून से निकल कर रूपर[3] की ओर रवाना हुये तो बडे जोर की वर्षा होने लगी और ठडक इतनी अधिक हो गई कि बहुत से भूखे तथा नगे हिन्दुस्तानी मर गये।

जब हम रूपर से प्रस्थान करके सेहरिन्द[4] के समक्ष करल[5] मे पडाव किये हुये थे तो एक हिन्दुस्तानी ने उपस्थित हो कर कहा, "मैं सुल्तान इबराहीम का दूत हूँ।' यद्यपि उसके पास कोई पत्र इत्यादि न था किन्तु उसने हमसे अपने दूत भेजने के सम्बन्ध म निवेदन किया। हमने तुरन्त एक या दो सवादी पहरेदार उसके साथ कर दिये। इबराहीम ने इन दरिद्रियो को बन्दी बना दिया। जिस दिन हमने इबराहीम को पराजित किया वे उसी दिन भाग कर हमारे पास चले आये।

मार्ग मे एक रात पडाव करके हम लोग बनूर[6] तथा सनूर[7] की जल धारा के तट पर उतरे। हिन्दुस्तान की अन्य बडी नदियो के अतिरिक्त एक जल धारा यह है। वे इसे ककर[8] (घग्गर) की जल

१ इस समय से आलम खा अथवा अलाउद्दीन द्वारा देहली का बादशाह बनने का स्वप्न समाप्त हो गया। सुल्तान इबराहीम लोदी से युद्ध के दिन वह एक साधारण से दस्ते का सरदार था। वह राणा सागा के विरुद्ध भी १५२७ ई०) बाबर के एक छोटे से दल का सरदार था। बाबर उससे सतुष्ट न था अत उसने उस बदख्शा के किलये जफर नामक दुर्ग में कैद करा दिया था। वहाँ से भागकर वह सिन्ध होता हुआ गुजरात के बादशाह बहादुर शाह के पास पहुँचा। वहाँ उसका पुत्र तातार खा भी उससे मिल गया।

२ फ़ारसी अनुवाद के अनुसार 'दो तीन बार'।

३ अम्बाला जिले में, सतलज के दहाने पर।

४ सरहिन्द अक्षाश ३०°२६', देशान्तर ७६ ३१'। मध्य युग में इस कस्बे को बड़ा महत्व प्राप्त था।

५ एल्फिन्स्टन की पोथी के अनुसार 'करनाल'। यह पाण्डुलिपि नकल करने वाले की भूल है।

६ पटियाला स्टेट (पजाब) की एक तहसील का सदर मुकाम, राजपुरा के उत्तर पूर्व में १० मील पर। इसे प्राचीन काल म पुण्यावती कहते थे।

७ पटियाला कस्बे के दक्षिण पूव में ४ मील पर। बाबर के राज्यकाल म मलिक बहाउद्दीन खुक्खर सनूर का हाकिम नियुक्त हो गया था। उसे ८४ आसपास के ग्राम प्राप्त थे अत यह जिला चौरासी कहलाता था।

८ घग्गर नदी सिरमूर से निकलकर अम्बाला के पास से बहती हुई पटियाला एव हिसार की ओर जाती है और भटनेर के पास बीकानेर के रेगिस्तान में समाप्त हो जाती है।

धारा कहते हैं। चित्र भी इसी जल धारा के तट पर स्थित है। हम इसकी सैर को गये। यह जल धारा चित्र के ऊपर तीन चार कोस पर स्थित एक स्थान से निकलती है। कक्कर (घग्गर) धारा के ऊपर चार-पाच पनचक्कियो मे होती हुई जल धारा एक चौडी घाटी मे पहुचती है। इसके ऊपर बडे रमणीक, स्वास्थ्यप्रद तथा सुन्दर स्थान है। मैंने उस चौडी घाटी के दहाने पर जहा वह जल धारा है जो समतल मैदान मे एक-दो कोस बहती हुई कक्कर (घग्गर) धारा मे गिरती है, एक चार बाग के निर्माण का आदेश दिया। जहा वह धारा गिरती है वहा से कक्कर (घग्गर) के झरनो की दूरी ३-४ कोस होगी। जब वर्षा ऋतु मे इस जल धारा मे बाढ आ जाती है और कक्कर (घग्गर) से मिल जाती है तो वे दोनो बहती हुई सामाना[1] तथा सुनाम[2] तक चली जाती है।

इस पडाव पर हमने सुना कि "सुल्तान इबराहीम देहली के उस ओर है जिस ओर हम जा रहे है। वह आगे प्रस्थान कर चुका है।[3] उसके अतिरिक्त हिसार फीरोजा[4] का शिकदार हमीद खा खासा खेल[5] हिसार फीरोजा तथा उस ओर की सेनाओ को लेकर वहा से १०-१५ कोस इस ओर निकल आया है।" कित्ता बेग को इबराहीम के शिविर के विषय मे, मोमिन अतका को हिसार फीरोजा (की सेना) के शिविर के विषय मे पता लगाने के लिये भेजा गया।

हुमायूं का हमीद खा के विरुद्ध प्रस्थान

(२५ फरवरी)—रविवार (१३ जमादि-उल-अव्वल) को अम्बाला[6] से प्रस्थान करके हम लोग एक झील पर पडाव किये हुये थे कि मोमिन अतका तथा कित्ता बेग उसी दिन वहा पहुचे।

हमने हुमायू को हमीद खा के विरुद्ध नियुक्त किया और दायें भाग की पूरी सेना तथा ख्वाजा कला, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, कोषाध्यक्ष वली तथा कुछ बेगो (अमीरो) को जो हिन्दुस्तान मे नियुक्त थे, उदाहरणार्थ खुसरो, हिन्दू बेग, अब्दुल अजीज़ एव मुहम्मद अली जगजग, तथा घर वालो एव सेना के मध्य भाग के वीरो मे से शाह मनसूर बरलास, कित्ता बेग और मुहिब अली को उसके साथ कर दिया।

बिबन भी इसी पडाव पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। ये अफगान बडे गवार तथा मूर्ख थे। यद्यपि दिलावर खा के सहायको की सख्या भी अधिक थी और वह उससे प्रतिष्ठित भी था तथा आलम खा[7] के पुत्र जो उसके बादशाह की सतान से सम्बन्धित थे खडे रहते थे किन्तु इसने बैठने का आग्रह किया। उसकी मूर्खता की ओर कोई ध्यान नही दिया गया।

(२६ फरवरी)—सोमवार १४ (जमादि-उल-अव्वल) को प्रातःकाल हुमायू हमीद खा के विरुद्ध रवाना हो गया। उसने शीघ्रातिशीघ्र *कुछ आगे बढ कर १००-१५० वीरो को करावली[8] के* लिये पृथक् कर दिया। वे लोग शत्रु तक बढते चले गये और उनसे तत्काल भिड गये, किन्तु दोनो ओर की

१ पटियाला की भवानीगढ तहसील मे, पटियाला कस्बे के दक्षिण पश्चिम मे १७ मील पर।
२ पटियाला की एक तहसील, पटियाला कस्बे के दक्षिण-पश्चिम मे ४३ मील पर।
३ फ़ारसी अनुवाद के अनुसार 'एक कोस आगे रवाना हो चुका है'।
४ इसे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुगलुक़ ने १३५० ई० में बसाया था।
५ सम्भवतः वह सुल्तान इबराहीम के वश का अर्थात् साहू खेल था।
६ पजाब का एक जिला।
७ आलम खा अथवा अलाउद्दीन सुल्तान इबराहीम, देहली के सुल्तान, का भाई था।
८ शत्रु के विषय में पता लगाने।

सेनाओ मे दो चार ही हाथ तलवार के चले होंगे कि पीछे से हुमायू की सेना के बादल दृष्टिगत हो गये। उसके पहुचते ही शत्रु भाग खडे हुए। हुमायू के आदमियो ने १००-२०० अश्वारोहियों को घोडों से गिरा दिया और लगभग इसके आधे लोगो की हत्या कर दी तथा आधे लोगों को बन्दी बना कर ७-८ हाथियो सहित उपस्थित हुये।

(२ मार्च)—शुक्रवार १८ (जमादि-उल-अव्वल) को बेग मीरक मुगुल ने हुमायू की विजय के समाचार शिविर मे पहुचाये। उसे तत्काल एक विशेष खिलअत तथा शाही अश्वशाला का एक घोडा प्रदान किया गया और उसे अन्य पुरस्कारों का आश्वासन दिलाया गया।

(५ मार्च)—सोमवार २१ (जमादि-उल-अव्वल) को हुमायू मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और अपने साथ लगभग १०० बन्दी तथा ७-८ हाथी लाया। उस्ताद अली कुली तथा बदूक चलाने वालो को आदेश दिया गया कि अन्य लोगों की चेतावनी हेतु सभी को बन्दूक का निशाना बना दिया जाय। यह हुमायू का प्रथम युद्ध तथा प्रथम अनुभव था और एक बडा ही उत्कृष्ट शकुन भी।

शत्रु की भागी हुई सेना का पीछा करने के लिये जो लोग भेजे गये थे उन्होंने हिसार फीरोज़ा पहुच कर उसे तुरन्त अपने अधिकार मे कर लिया। वे उसे लूट कर हमारे पास लौट आये। हिसार फीरोज़ा को उसके अधीनस्थ एव उससे सम्बन्धित स्थानों तथा १ करोड नक्द धन सहित हुमायू को पुरस्कार स्वरूप प्रदान कर दिया गया।

हम उस मजिल मे प्रस्थान करके शाहाबाद[1] पहुचे। वहा से एक आदमी को सुल्तान इबराहीम के शिविर के विषय मे पता लगाने के लिये भेज कर हम कुछ दिनों के लिये वहा ठहर गये। रहमत पदाती को उसी पडाव से विजय-पत्र देकर काबुल भेज दिया गया।

> इसी पडाव पर इसी दिन हुमायू ने अपने चेहरे पर अस्तुरा अथवा कैंची लगवाई। क्योंकि स्वर्गीय (बाबर) ने अपने मुख पर अस्तुरा लगने का उल्लेख किया है अत उनका अनुकरण करते हुए मैं इसकी चर्चा करता हू। उस समय मेरी अवस्था १८ वर्ष की थी। अब मेरी अवस्था ४८ वर्ष की है। मुहम्मद हुमायू।
>
> (आहज़रत के खते मुबारक की नक्ल)[2]

इबराहीम के समाचार

(१३ मार्च)—सोमवार २८ (जमादि-उल-अव्वल) को हम उसी पडाव पर ठहरे रहे। सूर्य

१ जिला करनाल (पजाब) की थानेश्वर तहसील का एक कस्बा, अम्बाला के दक्षिण मे १३ मील पर।

२ मूल तुर्की में उपर्युक्त वाक्य नहीं हैं किन्तु फ़ारसी अनुवाद में यह वाक्य हैं। एल्फ़िंस्टन की पोथी में भी ये वाक्य मूल ग्रन्थ के साथ नक़ल कर दिये गये हैं। इसे हुमायूँ ने अपनी अवस्था के ४८वें वर्ष में लिखा था। हुमायूँ की ४८वीं वर्षगाठ उसके काबुल से हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान के एक मास पूर्व नवम्बर १५५४ ई० (ज़िलहिज्जा ९६१ हि०) में पड़ी थी। वह १ रमज़ान ९६२ हि० (२३ जुलाई १५५५ ई०) को देहली में प्रविष्ट हुआ। उस समय भी वह अपनी आयु के ४८वें वर्ष में था। सम्भवत. उपर्युक्त वाक्य इसी बीच में लिखे गये।

पहुचने की दूरी तक इतना स्थान छोड दिया गया था कि सौ-सौ, दो-दो सौ अश्वारोही वहा से छापा मार सकें।

बाबर की सेना वालो की चिन्ता

सेना वालो मे से कुछ लोग बडे भयभीत तथा चिंतित थे। भय तथा चिन्ता का कोई कारण न था। ईश्वर ने जो कुछ भाग्य मे आदि काल से लिख दिया है उसम कोई परिवर्तन नही हो सकता। यद्यपि ठीक बात तो यही है किन्तु भय एव चिन्ता के कारण किसी की आलोचना भी नही की जा सकती। *कारण कि जो लोग भयभीत एव चिन्तित थे वे अपने घरो से २-३ मास की यात्रा की दूरी पर पडे हुए थे।* हमारा मुकाबला एक अपरिचित कौम एव लोगा से था। न तो हम उनकी भाषा समझते थे और न वे हमारी।

शेर

"मारा मारा फिरने वाला समूह, अस्थिर मस्तिष्क के साथ,
एक कबीले के वश में, एव अपरिचित कबीले के।"

शत्रु की जो सेना हमसे युद्ध करने के लिये उपस्थित थी, उसके विषय मे अनुमान लगाया जाता था कि उसमें १००,००० आदमी हागे। इब्राहीम तथा उसके अमीरा के हाथियों की सख्या लगभग १००० बताई जाती थी। दो पीढियो[1] का खजाना उसके अधिकार मे था। हिन्दुस्तान मे यह प्रथा है कि ऐसे महान् सकटो के अवसर पर धन देकर, इच्छानुसार सेना भरती कर ली जाती है। ये 'बेह हिन्दी'[2] कहलाते हैं। यदि इब्राहीम इस विषय मे सोच लेता तो वह लाख-दो लाख सेना और भरती कर लेता। *ईश्वर ने अच्छा ही किया। न तो वह अपने वीरो को सतुष्ट कर सका और न अपने खजाने का वितरण कर सका।* वह अपने जवाना को किस प्रकार सतुष्ट रख सकता था कारण कि वह बडा ही कृपण था और उसे धन एकत्र करने से बडी रुचि थी। वह बडा अनुभव शून्य जवान था। उसने सेना को किसी प्रकार का अनुभव न कराया था—न बढने का, न खडे रहने का और न युद्ध करने का।

इब्राहीम की ऊजबेगो से तुलना

जिस समय पानीपत मे सेना गाडियाँ, खाई तथा शाखाओ द्वारा अपनी प्रतिरक्षा का प्रबन्ध कर रही थी, दरवेश मुहम्मद सारबान ने एक बार मुझसे निवेदन किया कि, 'इतनी सावधानी के बाद, वह किस प्रकार यहा आ सकेगा?" मैंने कहा, "क्या तुम उसे ऊजबेग खान और सुल्तान समझते हो? उसने कौन सा ऐसा अनुशासन युक्त युद्ध किया है कि उसकी तुलना उन लोगा से को जाये?" ईश्वर की कृपा से यह बात सत्य ही निकली। मैंने जो कुछ कहा था, वही हुआ।

'जिस[3] वर्ष मैं समरकन्द से निकल कर हिसार पहुचा[4]
और समस्त ऊजबेग खान एव सुल्तान मिलकर

१ उसके पिता सुल्तान सिकन्दर एवं दादा सुल्तान बहलोल।
२ यह शब्द स्पष्ट नही और विभिन्न हस्तलिखित पोथियों में विभिन्न रूप से लिखा है। प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद में यह शब्द 'सिह बन्दी' है।
३ ऊजबेगों के विषय मे यह टिप्पणी बाबर ने ही लिखी है।
४ ९१८ हि० (१५१२) ई०) में।

हमसे युद्ध करने आये तो हम सुल्तानों तथा सैनिकों
के परिवार को लेकर हिसार के उद्यान में पहुंच गये
और उस स्थान की गलियों को बन्द करके मोर्चाबन्दी कर ली।
क्योंकि वे खान तथा सुल्तान युद्ध-विद्या में निपुण थे और
सुव्यवस्थित रूप से आक्रमण करने और दृढ़तापूर्वक
प्रतिरक्षा के विषय में ज्ञान रखते थे अतः वे मोर्चाबन्दी
देख कर समझ गये कि हम जीवन-मरण पर उतारू हैं अतः उन्होंने समझ लिया
कि वे उसे आक्रमण द्वारा विजय नहीं कर सकते। यह देख कर वे कबादियान
के नूरदान से लौट गये।"

प्रारम्भिक संघर्ष

७-८ दिन तक जब तक हम लोग पानीपत में रहे, हमारे आदमी थोड़ी-थोड़ी संख्या में इब्राहीम के शिविर के समीप तक पहुंच जाते थे और उसकी अपार सेना के दलों पर बाणों की वर्षा करके लोगों के सिर काट लाते थे। इस पर भी वह न तो आगे बढ़ा और न उसके सैनिकों ने आक्रमण किया। अन्ततोगत्वा हमने बहुत से हिन्दुस्तानी हितैषियों के परामर्श से ४-५ हजार आदमी उसके शिविर पर रात्रि में छापा मारने के लिये भेजे। महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, आदिल सुल्तान, खुसरो, शाह मीर हुसेन, सुल्तान जुनैद बरलास, अब्दुल अज़ीज़ मीर आखूर[1], मुहम्मद अली जंगजंग, कुतलुक कदम, वली खाज़िन[2], मुहिब अली खलीफ़ा, मुहम्मद बख्शी, जान बेग तथा करा कूज़ी उस सेना के सरदार नियुक्त किये गये। अंधेरा होने के कारण, वे भली भांति संगठित न रह सके और इधर-उधर हो जाने के कारण वहां पहुंच कर कुछ न कर सके। वे प्रातःकाल तक इब्राहीम के शिविर के समीप ठहरे रहे। प्रातःकाल (शत्रु की सेना) में नक्कारे बजने लगे और वे सेना की पंक्तियां ठीक करके युद्ध हेतु निकल आये। यद्यपि हमारे आदमी कोई सफलता न प्राप्त कर सके किन्तु वे सही सलामत लौट आये। यद्यपि उनकी मुठभेड़ शत्रु की इतनी बड़ी सेना से हो गई थी किन्तु कोई भी मनुष्य मारा न गया। मुहम्मद अली जंगजंग के पांव में एक बाण लग गया। यद्यपि घाव घातक न था किंतु युद्ध के दिन वह किसी कार्य योग्य न रहा।

यह समाचार पाकर मैंने हुमायूं को उसकी सेना सहित एक या डेढ़ कोस अग्रसर हो कर उनके[3] पास पहुंच जाने का आदेश दिया। उसके पीछे-पीछे मैं स्वयं शेष सेना लेकर युद्ध हेतु पंक्तियां ठीक किये हुए अग्रसर हुआ। जो सेना रात्रि में छापा मारने गई थी, वह हुमायूं से मिल गई, और वे वापस लौट आये। शत्रु के आगे न बढ़ने के कारण हम शिविर में पहुंच कर घोड़ों से उतर पड़े। उस रात्रि में एक झूठा शोर होने लगा और लगभग एक घड़ी[4] तक शोर होता रहा। जिन लोगों ने इस प्रकार का शोर न देखा था, उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। कुछ समय उपरान्त शोर शान्त हो गया।

१ शाही घोड़ों की देख भाल करने वाला अधिकारी।
२ कोषाध्यक्ष।
३ जो लोग रात्रि में छापा मारने भेजे गये थे।
४ २० मिनट।

पानीपत[1] का युद्ध

(२० अप्रैल)—शुक्रवार ८ रजब को प्रात काल जब पर्याप्त उजाला हो गया तो समाचार प्राप्त हुये कि शत्रु युद्ध हेतु पंक्तिया सुव्यवस्थित किये अग्रसर हो रहा है। हम लोगों ने तुरन्त कवच धारण कर लिये और सशस्त्र होकर घोडो पर सवार हो गये। हमारी सेना के दायें भाग मे हुमायू, ख्वाजा कला, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, हिन्दू बेग, वली खाजिन तथा पीर कुली सीस्तानी थे। हमारी सेना के बायें भाग मे मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, महदी ख्वाजा, आदिल सुल्तान, शाह मीर हुसेन, सुल्तान जुनैद बरलास, कूतलूक कदम, जान बेग, मुहम्मद बख्शी, तथा यार्गी मुग़ूल गाची का (सेवक) शाह हुसेन थे। सेना के मध्य भाग के दायें बाज़ू मे चीन तीमूर सुल्तान, सुलेमान मीर्ज़ा, मुहम्मद कूकूल्दाश, शाह मनसूर बरलास, यूनुस अली, दरवेश मुहम्मद सारबान तथा अब्दुल्लाह किताबदार[2] थे। मध्य भाग के बायें बाज़ू मे खलीफा, ख्वाजा मीर मीरान, अहमदी परवानची[3], कूज बेग का भाई तरदी बेग, खलीफा का मुहिब अली तथा मीर्ज़ा बेग तरखान थे। सेना के अग्र भाग मे खुसरौ कूकूल्दाश तथा मुहम्मद अली जगजग थे। अब्दुल अज़ीज़ मीर आख़ूर को सुरक्षित सेना सौंपी गई।

तूलगमा

तूलगमा[4] हेतु दायें भाग की सेना के सिरे पर वली क़िज़ील तथा मलिक कासिम बाबा कश्का का भाई एव उसके सहायक मुग़ूल और तूलगमा हेतु बायें भाग की सेना के सिरे पर करा कूज़ी, अबुल मुहम्मद नेज़ा बाज़[5], शेख जमाल बारीन का शेख अली, महदी[6], तोग़री बीरदी बशाग़ी[7] मुग़ूल को रक्खा गया। इन दो दलो के लिये आदेश था कि शत्रु के समीप पहुचते ही चक्कर लगा कर उसके पीछे की ओर पहुच जायें, एक दायी ओर से तथा दूसरा बाई ओर से।

इबराहीम की सेना का अग्रसर होना

जब शत्रु की सेना के दल-बादल सर्व प्रथम दृष्टिगत हुये तो ऐसा आभास हुआ कि वे हमारे दायें भाग पर आक्रमण करेंगे। अब्दुल अज़ीज़ को जो दायें भाग के सुरक्षित दल मे था, दायें भाग की सेना की कुमक हेतु भेजा गया। जिस समय से सुल्तान इबराहीम की सेना के दल-बादल सर्वप्रथम दृष्टिगत हुये वह

१ इस रणक्षेत्र से सम्बन्धित कुछ अन्य रोचक घटनायें भी प्रसिद्ध है : (१) बाबर की विजय का स्थान बहुत समय तक प्रेत ग्रस्त समझा जाता रहा। ६२ वर्ष उपरान्त एक दिन प्रात काल उस ओर से गुज़रते हुये बदायूनी ने स्वय योद्धाओं के मार काट की आवाज़ें सुनीं, (२) सम्भवत कस्बे के उत्तर-पूर्व में एक मील पर बाबर ने विजय की स्मृति मे एक मस्जिद का निर्माण कराया, (३) कहा जाता है कि शेरशाह पानीपत में दो य दगारों का निर्माण कराना चाहता था एक सुल्तान इबराहीम की, दूसरी उन चग़ताई अमीरो की जिन्हें उसने स्वय नष्ट किया, (४) ब्रिटिश सरकार ने १९१० ई० में अहमद शाह अब्दाली की १७६१ ई० की विजय का स्मारक बनवाया।

२ पुस्तकालयाध्यक्ष।

३ परवाने (शाही आदेश) लिखने वाला।

४ चक्कर लगाकर धावा करने वाला दस्ता।

५ भाला चलाने वाले।

६ यह नाम स्पष्ट नही।

७ यह शब्द भी स्पष्ट नही।

शीघ्रातिशीघ्र सीधे हमारी ओर बिना रुके बढता आ रहा था, यहा तक कि उसे हमारी सेना की गहरी सियाही दिखाई पड़ी। वह ठिठक गया और हमारी सेना की पंक्तियों की सुव्यवस्था[1] देख कर मानो वह सोचने लगा हो कि ठहरे अथवा न ठहरे, अग्रसर हो अथवा न हो। वे ठहर भी न सके और न पूर्व की भांति तेज़ी से अग्रसर हो सके।

युद्ध

हमने तुलगमा वालो को आदेश दे रक्खा था कि वे दायें तथा बायें भाग की ओर से चक्कर काट कर शत्रु के पीछे पहुच जायें और बाणो की वर्षा करके युद्ध प्रारम्भ कर दें। इसी प्रकार दायें तथा बायें बाजू की सेना के लिये आदेश दिया गया था कि वे युद्ध छेड दें। तुलगमा वालों ने चक्कर काट कर बाणो की वर्षा प्रारम्भ कर दी। बायें भाग की सेना मे से सर्व प्रथम महदी ख्वाजा ने युद्ध प्रारम्भ किया। उसका मुकाबला एक ऐसे दल से हुआ जिसके साथ एक हाथी था। उसके आदमियो के बाणो की वर्षा के कारण वह दल विवश होकर वापस हो गया। बायें बाजू की सेना की कुमक के लिये मैंने अहमदी परवानची, कूज बेग के (भाई) तरदी बेग तथा खलीफा के मुहिब अली[2] को भेजा। दायी ओर भी थोडा सा घोर युद्ध हुआ। मुहम्मदी कूकूल्दाश, शाह मनसूर बरलास, यूनुस अली एव अब्दुल्लाह को आदेश हुआ कि वे उन लोगो से जो मध्य भाग पर आक्रमण कर रहे थे, युद्ध करें। मध्य भाग ही से उस्ताद अली कुली ने फिरगी गोलों की खूब वर्षा की। मुस्तफा तोपची[3] ने मध्य भाग के बायी ओर से जर्ब ज़न[4] के गोलो की खूब वर्षा की। हमारी सेना के दायें, बायें, एव मध्य भाग तथा तुलगमा के दल वालो ने शत्रुओं को घेर कर बाणों की वर्षा करते हुए घोर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। शत्रुओं ने हमारे दायें एव बायें भाग पर एक दो साधारण आक्रमण किये किन्तु हमारे सैनिको के बाणों की वर्षा के कारण उन्हें अपने मध्य भाग की ओर वापस होना पडा। उनकी सेना के दायें, बायें एव मध्य भाग वाले इस प्रकार गडमड हो गये कि न तो वे आगे ही बढ सकते थे और न निकल कर भाग ही सकते थे।

सुल्तान इब्राहीम की पराजय

जब युद्ध प्रारम्भ हुआ था तो सूर्य एक नेज़ा बलन्द हो चुका था।[5] मध्याह्न तक घोर युद्ध होता रहा। मध्याह्न समाप्त होने पर शत्रु बुरी तरह पराजित हो गया। हमारे मित्र बडे प्रसन्न थे। ईश्वर ने अपनी कृपा से यह कठिन कार्य हमारे लिये सरल कर दिया। आधे दिन मे इतनी बडी सेना मिट्टी म मिल गई। इब्राहीम के समीप एक ही स्थान पर ५-६ हज़ार आदमी मारे गये। अन्य स्थानों पर जो लाश पड़ी थी, उनकी सख्या अनुमानत १५-१६ हज़ार होगी किन्तु आगरा पहुंचने पर हिन्दुस्तानियो की बातो से पता चला कि इस युद्ध मे ४०-५० हज़ार आदमी मारे गये होंगे।

[1] तरतीब व यसाल : सम्भवत. गाड़ियों इत्यादि की व्यवस्था की ओर संकेत है जिनका सुल्तान इब्राहीम को ज्ञान न था।
[2] ये लोग मध्य भाग के बाईं ओर की सेना में नियुक्त थे।
[3] तोप चलाने वाला।
[4] एक प्रकार की तोप।
[5] लगभग ६-१० बजे।

इबराहीम की सेना का पीछा

जब शत्रुओं की पराजय हो गयी तो उनका पीछा करना एव उन्हें घोडो से गिराना प्रारम्भ किया गया। हमारे आदमी प्रत्येक श्रेणी के अमीर तथा सरदार बन्दी बना कर लाये। महावतो ने हाथियो के झुड के झुड प्रस्तुत किये।

सुल्तान इबराहीम की खोज

इबराहीम के विषय मे लोगो का विचार था कि वह भाग गया अत शत्रुओ का पीछा करने वालो में से हमने किस्मताई मीर्जा, बाबा चुहरा तथा खासा ताबेईन के बूजका को आदेश दिया कि वे शीघ्रातिशीघ्र आगरा तक उसका पीछा करें और उसको पकड लाने का प्रयत्न करें। हम इबराहीम के शिविर से होते हुए गये और उसके सराचा[1] एव खेमों का निरीक्षण किया और एक ठहरे हुए जल के तट पर उतर पडे।

सुल्तान इबराहीम के सिर का लाया जाना

मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के समय खलीफा का छोटा साला ताहिर तीबरी, इबराहीम का सिर लाया। उसे उसका शरीर लाशो के एक ढेर मे मिल गया था।

हुमायूँ का आगरा से भेजा जाना

उसी दिन हमने हुमायू मीर्ज़ा को आदेश दिया कि वह ख्वाजा कला, मुहम्मदी, शाह मनसूर बरलास, यूनुस अली, अब्दुल्लाह तथा वली खाज़िन को लेकर आगरा की ओर शीघ्रातिशीघ्र जरीदा[2] जाये और उस स्थान को अपने अधिकार मे करके खजाने की रक्षा हेतु आदमी नियुक्त कर दे।

महदी ख्वाजा का देहली भेजा जाना

हमने महदी ख्वाजा को आदेश दिया कि वह अपने साथ मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, आदिल सुल्तान, सुल्तान जुनैद बरलास एव कूतलूक कदम को अपने साथ लेकर तुरन्त देहली पहुच जाये और वहा के खजाने की रक्षा प्रारम्भ कर दे। वे अपने असबाब वही छोड जाये।

बाबर का देहली की ओर प्रस्थान

(२१ अप्रैल)—हमने दूसरे दिन प्रस्थान कर दिया और एक कोस यात्रा करके हम लाग घोडो के कारण यमुना तट पर उतर पडे।

(२४ अप्रैल)—मगलवार (१२ रजब) को हम दो रात के पडाव के उपरान्त और शेख निजामुद्दीन औलिया[3] के मजार का तवाफ करके देहली के समक्ष यमुना नदी पर उतर पडे। उसी बुधवार की रात्रि मे हमने देहली के किले की सैर की और रात्रि वही व्यतीत की।

१ सराचा—खेमों तथा शामियानों का घेरा।

२ थोडी सी सेना लेकर।

३ सुल्तानुल मशायख शेख निज़ामुद्दीन औलिया, शेख फ़रीदुद्दीन गजशकर के प्रसिद्ध चेले एव देहली के विख्यात सूफ़ी सन्त थे। इनका जन्म बदायूँ में अक्तूबर १२३६ ई० में हुआ और मृत्यु देहली में

(२५ अप्रैल)—दूसरे दिन (१३ रजब) को मैंने ख्वाजा कुतुबुद्दीन[1] के मजार का तवाफ[2] किया और सुल्तान गयासुद्दीन बलबन तथा सुल्तान अलाउद्दीन खलजी के मकबरों एवं महलों, उसके मीनार[3], हौजे शम्सी[4], हौजे खास[5] और सुल्तान बहलोल एवं सुल्तान सिकन्दर लोदी के मकबरों एवं उद्यानों की सैर की। तदुपरान्त हम शिविर में उतर पड़े और नौका में बैठ कर अरक का पान किया।

३ अप्रैल १३२५ ई० में हुई। इनका मजार गयासपुर में है और हिन्दुस्तान के सुन्नी मुसलमानों की इनके प्रति बड़ी श्रद्धा है। प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर खुसरो भी इनके शिष्य थे। इनकी दरगाह देहली के दक्षिण पश्चिम में ३ मील पर स्थित है।

१ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ऊशी भी देहली के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी संत हुये हैं। इनकी मृत्यु २७ नवम्बर १२३५ ई० में हुई। शेख फ़रीदुद्दीन गंजशकर इनके शिष्य थे। इनका मजार महरौली के पास देहली से ११ मील और कुतुब मीनार के दक्षिण-पश्चिम में एक मील पर स्थित है।

२ परिक्रमा, चारों ओर श्रद्धापूर्वक घूमना।

३ आश्चर्य है कि बाबर ने कुतुब मीनार का उल्लेख नहीं किया। सम्भवतः उसने दोनों मीनारों का वर्णन एक ही में मिला दिया।

४ सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (१२१०-३६ ई०) का बनवाया हुआ हौज़। सुल्तान फ़ीरोज शाह तुग़लुक (१३५१-८८ ई०) ने इसकी मरम्मत कराई थी। एसामी : 'फ़ुतूहुस्सलातीन' मद्रास यूनिवर्सिटी १९४८ ई० पृ० ११४, ११५ रिज़वी : 'आदि तुर्क कालीन भारत' अलीगढ़ १९५६, पृ० ३०१। यह महरौली के पश्चिम में है।

५ सुल्तान अलाउद्दीन का बनवाया हुआ हौज़। 'यह फ़ीरोजशाह के मकबरे के पास देहली गुरगांव मार्ग के दाईं ओर स्थित है। यह देहली के दक्षिण में ६ मील पर और कुतुब मीनार के उत्तर पश्चिम में दो मील पर है। सुल्तान अलाउद्दीन ने १२९३ ई० में इसका निर्माण कराया था। दोनों हौजों का वर्णन इब्ने बतूता ने इस प्रकार किया है :—

देहली के बाहर के दो बड़े सरोवर :—देहली के बाहर एक बड़ा सरोवर है जिसका नाम सुल्तान शम्सुद्दीन लालमिश (इल्तुतमिश) के नाम पर है। देहली नगर के निवासी अपने पीने का जल यहीं से प्राप्त करते है। यह देहली के मुसल्ले (ईदगाह) के निकट है। इसमें वर्षा का जल एकत्र होता रहता है। यह दो मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। इसके पश्चिम में ईदगाह के समान पत्थर के घाट बने हुये हैं और जीने के समान पत्थर का एक चबूतरा दूसरे चबूतरे के ऊपर बना हुआ है। इन जीनों द्वारा जल तक पहुँचने में सुगमता होती है। प्रत्येक चबूतरे के कोने पर पत्थर के गुम्बद बने हुये हैं, जिनमें दर्शक बैठ कर सैर तथा मनोरंजन करते हैं। हौज़ के मध्य में एक बहुत बड़ा गुम्बद है, जो दो मंज़िला है और तराशे हुये पत्थर का बना है। जब सरोवर में जल अधिक हो जाता है तब गुम्बदों तक नौका में बैठकर ही जा सकते हैं। जब जल कम हो जाता है तो प्रायः लोग वैसे ही चले जाते हैं। गुम्बद के भीतर एक मस्जिद है जहाँ धार्मिक (फ़क़ीर) लोग तथा संसार को त्याग देने वाले साधु संत रहते हैं। वे लोग केवल ईश्वर का ही भरोसा करते हैं। जब सरोवर के किनारे सूख जाते हैं तो उनमें गन्ना, ककड़ी, तरबूज़ तथा खरबूजे बो दिये जाते हैं। खरबूजा उसमें छोटा किन्तु बड़ा मीठा होता है।

देहली तथा दारुल खिलाफ़ा के मध्य में हौज़े खास स्थित है। यह हौज़ सुल्तान शम्सुद्दीन के हौज़ से भी बड़ा है। इसके किनारे पर लगभग ४० गुम्बद हैं। इसके चारों ओर अहिले तरब (गायक) रहते हैं, इन्हीं के कारण यह स्थान तरबाबाद (संगीत नगर) कहलाता है। यहां इन लोगों का एक बाज़ार है जो संसार का एक बहुत बड़ा बाज़ार कहा जा सकता है। यहाँ एक जामा मस्जिद तथा अन्य मस्जिदें हैं। मुझे बताया गया कि गाने बजाने वाली स्त्रियां जो इस मुहल्ले में रहती हैं, रमजान के महीने में तरावीह की नमाज जमाअत से पढ़ती हैं। इन्हें इमाम नमाज़ पढ़ाते हैं। स्त्रियों

इबराहीम की सेना का पीछा

जब शत्रुओं की पराजय हो गयी तो उनका पीछा करना एवं उन्हें घोड़ों से गिराना प्रारम्भ किया गया। हमारे आदमी प्रत्येक श्रेणी के अमीर तथा सरदार बन्दी बना कर लाये। महावतों ने हाथियों के झुंड के झुंड प्रस्तुत किये।

सुल्तान इबराहीम की खोज

इबराहीम के विषय में लोगों का विचार था कि वह भाग गया अतः शत्रुओं का पीछा करने वालों में से हमने किस्मताई मीर्ज़ा, बाबा चुहरा तथा खासा ताबीईन के बूजकों को आदेश दिया कि वे शीघ्रातिशीघ्र आगरा तक उसका पीछा करें और उसको पकड़ लाने का प्रयत्न करें। हम इबराहीम के शिविर से होते हुए गये और उसके सराचा[1] एवं खेमों का निरीक्षण किया और एक ठहरे हुए जल के तट पर उतर पड़े।

सुल्तान इबराहीम के सिर का लाया जाना

मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय खलीफा का छोटा साला ताहिर तीबरी, इबराहीम का सिर लाया। उसे उसका शरीर लाशों के एक ढेर में मिल गया था।

हुमायूँ का आगरा से भेजा जाना

उसी दिन हमने हुमायूं मीर्ज़ा को आदेश दिया कि वह ख्वाजा कला, मुहम्मदी, शाह मनसूर बरलास, यूनुस अली, अब्दुल्लाह तथा वली खाज़िन को लेकर आगरा की ओर शीघ्रातिशीघ्र जरीदा[2] जाये और उस स्थान को अपने अधिकार में करके खज़ाने की रक्षा हेतु आदमी नियुक्त कर दे।

महदी ख्वाजा का देहली भेजा जाना

हमने महदी ख्वाजा को आदेश दिया कि वह अपने साथ मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, आदिल सुल्तान सुल्तान जुनैद बरलास एवं कुतलूक कदम को अपने साथ लेकर तुरन्त देहली पहुंच जाये और वहां के खज़ाने की रक्षा प्रारम्भ कर दे। वे अपने असबाब वहीं छोड़ जायें।

बाबर का देहली की ओर प्रस्थान

(२१ अप्रैल)—हमने दूसरे दिन प्रस्थान कर दिया और एक कोस यात्रा करके हम लोग घोड़ों के कारण यमुना तट पर उतर पड़े।

(२४ अप्रैल)—मंगलवार (१२ रजब) को हम दो रात के पड़ाव के उपरान्त और शैख निजामुद्दीन औलिया[3] के मज़ार का तवाफ करके देहली के समक्ष यमुना नदी पर उतर पड़े। उसी बुधवार की रात्रि में हमने देहली के किले की सैर की और रात्रि वहीं व्यतीत की।

१ सराचा —खेमों तथा शामियानों का घेरा।
२ थोड़ी सी सेना लेकर।
३ सुल्तानुल मशायख़ शैख़ निजामुद्दीन औलिया, शैख़ फ़रीदुद्दीन गंजशकर के प्रसिद्ध चेले एवं देहली के विख्यात सूफ़ी संत थे। इनका जन्म बदायूँ में अक्तूबर १२३६ ई० में हुआ और मृत्यु देहली में

(२५ अप्रैल)—दूसरे दिन (१३ रजब) को मैंने ख्वाजा कुतुबुद्दीन[1] के मज़ार का तवाफ़[2] किया और सुल्तान गयासुद्दीन बलबन तथा सुल्तान अलाउद्दीन ख़िल्जी के मकबरा एवं महल तथा मीनार[3] हौज़ शम्सी[4] हौज़े ख़ास[5] और सुल्तान बहलोल एवं सुल्तान सिकन्दर लोदी के मकबरा एवं उद्यान की सैर की। तदुपरान्त हम शिविर में उतर पड़े और नौका में बैठ कर अरक का पान किया।

३ अप्रैल १३२५ ई० में हुई। इनका मज़ार गयासपुर में है और हिन्दुस्तान के सुन्नी मुसलमानों की इनके प्रति बड़ी श्रद्धा है। प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर ख़ुसरो भी इनके शिष्य थे। इनकी दरगाह [illegible] दक्षिण पश्चिम में ३ मील पर स्थित है।

१ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ऊशी भी देहली के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी संत हुये हैं। इनकी मृत्यु [illegible] नवम्बर १२३५ ई० में हुई। शेख़ फ़रीदुद्दीन गंजशकर इनके शिष्य थे। इनका मज़ार [illegible] पास देहली से ११ मील और कुतुब मीनार के दक्षिण पश्चिम में एक मील पर स्थित है।

२ परिक्रमा, चारों ओर श्रद्धापूर्वक घूमना।

३ आश्चर्य है कि बाबर ने कुतुब मीनार का उल्लेख नहीं किया। सम्भवतः उसने दोनों मीनारों का [illegible] एक ही में मिला दिया।

४ सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (१२११–३६ ई०) का बनवाया हुआ हौज़। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़ (१३५१–८८ ई०) ने इसकी मरम्मत कराई थी। एसामी फ़ुतूहुस्सलातीन मद्रास [illegible] पृ० ११४ ११५ रिज़वी आदि तुर्क कालीन भारत अलीगढ़ १९५६ पृ० २०१। [illegible] पश्चिम में है।

५ सुल्तान अलाउद्दीन का बनवाया हुआ हौज़। यह फ़ीरोज़शाह के मकबरे के पास [illegible] भाग के दाईं ओर स्थित है। यह देहली के दक्षिण में ६ मील पर और कुतुब मीनार के [illegible] में दो मील पर है। सुल्तान अलाउद्दीन ने १२९३ ई० में इसका निर्माण कराया था। [illegible] वर्णन इब्न बत्तूता ने इस प्रकार किया है —

देहली के बाहर के दो बड़े सरोवर —देहली के बाहर एक बड़ा सरोवर है जिसका नाम सुल्तान शम्सुद्दीन लालमिश (इल्तुतमिश) के नाम पर है। देहली नगर के निवासी अपना [illegible] यहां से प्राप्त करते हैं। यह देहली के मुसल्ले (ईदगाह) के निकट है। इसमें वर्षा का [illegible] रहता है। यह दो मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। इसके पश्चिम में ईदगाह के [illegible] के घाट बने हुये हैं और ज़ीनों के समान पत्थर का एक चबूतरा दूसरे चबूतरे के [illegible] बना हुआ है। इन ज़ीनों द्वारा जल तक पहुंचने में सुगमता होती है। प्रत्येक चबूतरे [illegible] बने हुये हैं, जिनमें दर्शक बैठ कर सैर तथा मनोरंजन करते हैं। हौज़ के मध्य में एक बहुत बड़ा गुम्बद है जो दो मंज़िला है और तराशे हुये पत्थर का बना है। जब सरोवर में [illegible] तब गुम्बदों तक नौका में बैठकर ही जा सकते हैं। जब जल कम हो जाता है [illegible] हो चले जाते हैं। गुम्बद के भीतर एक मस्जिद है जहां धार्मिक (फ़क़ीर) [illegible] देने वाले साधु संत रहते हैं। ये लोग केवल ईश्वर का ही भरोसा करते हैं। [illegible] जाते हैं तो उनमें गन्ना, ककड़ी, तरबूज़ तथा ख़रबूज़ बो दिये जाते हैं। [illegible] किन्तु बड़ा मीठा होता है।

देहली तथा दारुल ख़िलाफ़ा के मध्य में हौज़े ख़ास स्थित है। यह [illegible] हौज़ से भी बड़ा है। इसके किनारे पर लगभग ४० गुम्बद हैं। इनके [illegible] (गायक) रहते हैं। इन्हीं के कारण यह स्थान तरबाबाद (संगीत नगर) [illegible] का एक बाज़ार है जो संसार का एक बहुत बड़ा बाज़ार कहा जा सकता है। [illegible] तथा अन्य मस्जिदें हैं। मुझे बताया गया कि [illegible] रमज़ान के महीने में गायक [illegible] नमाज़ [illegible] है। [illegible]

कुछ नियुक्तिया

हमने वली किजील को देहली का शिकदार एव दोस्त (बेग) को दीवान नियुक्त किया। खज़ाना पर मुहर लगा कर उन्हें सौंप दिया।

(२६ अप्रैल)—बृहस्पतिवार को हमने यमुना नदी पर तुग़लुकाबाद[1] के सामने पडाव किया।

देहली में बाबर के नाम का ख़ुत्बा

(२७ अप्रैल)—शुक्रवार (१५ रजब) को हम लोग उसी पडाव पर ठहरे रहे। मौलाना महमूद, शेख ज़ैन एव कुछ अन्य लोगो ने देहली जाकर जुमे की सामूहिक नमाज पढी और मेरे नाम का खुत्बा[2] पढवाया और फकीरो तथा दरिद्रियो को कुछ धन बाट कर शिविर मे लौट आये।

बाबर का आगरा की ओर प्रस्थान

(२८ अप्रैल)—शनिवार (१६ रजब) को उस शिविर से प्रस्थान करके हम निरन्तर पडाव पार करते हुये आगरा की ओर रवाना हुये। मैं तुगलुकाबाद की सैर करके शिविर मे लौट आया।

(४ मई)—शुक्रवार (२२ रजब) को हम लोगो ने आगरा के उपान्त मे सुलेमान फर्मुली की मज़िल मे पडाव किया किन्तु उस स्थान के किले से दूर होने के कारण हम लोग दूसरे दिन जलाल खा जिगहट के घर मे चले गये।

हुमायूँ द्वारा बाबर की प्रतीक्षा

हुमायू पूर्व ही पहुच चुका था। किले के भीतर वाले बहाना बना कर टालमटोल कर रहे थे। ये लोग वहा वालो की उद्दडता देख कर इस आशय से कि कही वे खज़ाना न लूट लें, आगरा के बाहर जाने के मार्गों की रक्षा करते हुए हमारी प्रतीक्षा करने लगे।

प्रसिद्ध हीरा

सुल्तान इबराहीम की पराजय मे ग्वालियर का राजा बिकर्माजीत[3] नरकगामी हो गया था।[4]

की बहुत बड़ी सख्या नमाज़ पढती है। यह हाल पुरुष गायकों का भी है। मैंने अमीर सैफुद्दीन गद्दा इब्ने मुहन्ना के विवाह में देखा कि प्रत्येक गायक अज़ान होते ही मुसल्ला बिछाकर वज़ू करके नमाज़ के लिये खड़ा हो गया। [रिजवी 'तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १' (अलीगढ १९५६ ई०) पृ० १७६-१७७]

१ तुग़लुक़ाबाद का किला कुतुब मीनार के पूर्व में लगभग ५ मील पर स्थित है। इस नगर एव किले का निर्माण सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लुक़ ने (१३२१-२३ ई०) में कराया था किन्तु जल के दूषित होने के कारण यह शीघ्र नष्ट हो गया। तुग़लुक़ शाह (मृत्यु १३२५ ई०) का मकबरा किले में है।

२ ख़ुत्बा वह प्रवचन जो शुक्रवार की ज़ुहर की (मध्याह्नोत्तर की प्रथम) सामूहिक नमाज़ के समय एव ईदुज्जुहा तथा ईदुल फ़ित्र के अवसर पर पढा जाता है। इसमे ईश्वर की वंदना, मुहम्मद साहब एवं उनके परिवार इत्यादि के प्रति शुभ कामनाओं के साथ साथ समकालीन बादशाह का भी उल्लेख होता है।

३ विक्रमादित्य। वह तूनुर राजपूत था।

४ मार डाला गया था। बाबर ने भी प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। इससे किसी प्रकार की धर्मांधता का प्रमाण नहीं मिलता।

> बिकर्माजीत के पूर्वज ग्वालियर मे १०० वर्ष पूर्व से राज्य करते चले आ रहे थे।[1] सिकन्दर लोदी किले पर अधिकार जमाने के लिये आगरा मे कई वर्ष ठहरा रहा। तदुपरान्त इबराहीम के राज्यकाल मे आजम हुमायू सरवानी ने कुछ वर्ष के पूर्ण अवरोध के उपरान्त उसे सन्धि द्वारा प्राप्त कर लिया[2] और उसे शम्साबाद[3] उसके बदले मे दे दिया।

बिक्रमाजीत की सतान एव परिवार वाले इबराहीम की पराजय के समय आगरा मे थे। जब हुमायू आगरा पहुचा तो वे भागने का प्रयत्न करने लगे होंगे किन्तु हुमायू के मार्गों की रक्षा हेतु आदमी नियुक्त कर देने के कारण उनका भागना सम्भव न हो सका। हुमायू ने स्वय उन्हे भागने न दिया। उन लोगो ने हुमायू को अपनी इच्छा से अत्यधिक जवाहरात एव बहुमूल्य वस्तुए दी जिनमे वह प्रसिद्ध हीरा भी था जिसे अलाउद्दीन[4] लाया होगा।[5] प्रसिद्ध है कि उसका मूल्य समस्त ससार के ढाई दिन के भोजन के व्यय के बराबर आका जाता था। यह लगभग ८ मिस्काल[6] के बराबर था। जब मै आगरा पहुचा तो हुमायू ने उसे मुझको भेट किया। मैंने उसे उसी को प्रदान कर दिया।

मलिक दाद को क्षमा किया जाना

किले के प्रभावशाली व्यक्तियो मे मलिक दाद करारानी, मिल्ली सूरदुक तथा फीरोज़ खा मेवाती थे। उन्होंने अत्यधिक धृष्टता प्रदर्शित की थी अत उन्हें मृत्युदड का आदेश दे दिया गया। बहुत से लोगो ने मलिक दाद करारानी की सिफारिश की। इसी बातचीत मे ४-५ दिन व्यतीत हो गये। उनके विषय मे जो प्रार्थनायें की गई थी, उनके अनुसार हमने उनके[7] प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उनकी धन सम्पत्ति उन्हें वापस कर दी।

इबराहीम की माता के प्रति व्यवहार

इबराहीम की माता को ७ लाख[8] के मूल्य का एक परगना प्रदान किया गया। उसके इन[9] अमीरो को भी परगने प्रदान कर दिये गये। इबराहीम की माता को उसके प्राचीन सेवको सहित आगरा से एक कोस पर नदी के उतार की ओर निवास स्थान प्रदान किया गया।

१ लगभग १२० वर्ष।
२ १५१८ ई० में विक्रमादित्य से क़िला प्राप्त किया गया।
३ उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद जिले में, फ़र्रुखाबाद क़स्बे के उत्तर-पश्चिम में १८ मील पर।
४ सुल्तान अलाउद्दीन खलजी (१२९६–१३१६ ई०)।
५ उसे दक्षिण की विजय में प्राप्त हुआ होगा।
६ लगभग ३२० रत्ती।
७ सम्भवतः तीनों को क्षमा कर दिया गया।
८ अर्सकिन के अनुसार १७५० पौंड; सम्भवतः ७ लाख दाम से तात्पर्य है।
९ सम्भवत. उपर्युक्त तीनों अफ़ग़ान अमीर।

बाबर का सुल्तान इबराहीम के महल में उतरना

(१० मई)—बृहस्पतिवार (२८ रजब) को मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के उपरान्त मैं आगरा में प्रविष्ट हुआ और सुल्तान इबराहीम के महल में उतरा।

हिन्दुस्तान पर पाँच आक्रमण

९१० हि० (१५०४-५ ई०) में जब से मैंने काबुल विजय किया आज तक[1] मुझे हिन्दुस्तान विजय करने की निरन्तर आकांक्षा रही। किन्तु कभी तो बेगों[2] के परामर्श की शिथिलता और कभी बड़े एवं छोटे भाइयों[3] के साथ न देने के कारण हिन्दुस्तान पर आक्रमण सम्भव न हो सका, और यह देश विजय न हो सका। अन्ततोगत्वा इस प्रकार की कोई रुकावट न रह गई। कोई बड़ा अथवा छोटा या साधारण श्रेणी का अमीर इसके विरोध में कोई शब्द कहने वाला न रहा।

९२५ हि० (१५१९ ई०) में हमने सेना सहित प्रस्थान किया और बजौर पर धावा करके उसे दो-तीन घड़ी[4] में विजय कर लिया। वहा के लोगों का संहार करके हम भीरा पहुच गये। भीरा को नष्ट-भ्रष्ट न कराया गया। भीरा वालों पर माले अमान[5] लगा दिया गया और उनसे ४ लाख शाह-रुखी नक़द एवं सम्पत्ति के रूप में वसूल की गई। इस धन को सेना एवं अन्य सहायक दलों को बाट कर हम काबुल लौट आये।

उस समय से लेकर आज तक हम हिन्दुस्तान विजय करने का घोर प्रयत्न करते रहे और पाच[6] बार आक्रमण किया। पाचवी बार अल्लाह ताला ने अपनी दया एवं कृपा से सुल्तान इबराहीम सरीखे शत्रु को पराजित कर दिया और हिन्दुस्तान सरीखा देश विजय हो गया तथा हमारे अधिकार में आ गया।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने वाले तीन अन्य व्यक्ति

मुहम्मद साहब[7] के समय से लेकर आज तक उस ओर[8] के बादशाहों में कुल तीन व्यक्ति हिन्दुस्तान पर अधिकार जमा सके तथा राज्य कर सके हैं —

१ ९३२ हि० (१५२५-२६ ई०)
२ अमीरों।
३ इसमें चचाज़ाद भाई इत्यादि सभी सम्मिलित हैं।
४ ४४ से ६६ मिनट।
५ वह धन जो किसी को शान्ति देने के लिये प्राप्त किया जाये।
६ एक आक्रमण जैसा कि ऊपर उल्लेख हुआ ९२५ हि० में, दूसरा आक्रमण ९२६ हि० (१५१९-२० ई०), तीसरा आक्रमण ९३० हि० (१५२३-२४ ई०) में, चौथा आक्रमण जो क्रमानुसार पांचवां आक्रमण था ९३२ हि० (१५२५-२६ ई०) में। सम्भवतः एक आक्रमण में बाबर स्वयं न गया था और यह कदाचित् ९३१ हि० (१५२४ २५ ई०) का वह आक्रमण है जिसमें उसकी सेना आलम खां के साथ आक्रमण करने गई थी। सम्भवतः इस क्रम में बाबर का ९१० हि० (१५०४ ५ ई०) का भी आक्रमण सम्मिलित हो जिसमें वह स्वयं सिंध पार करना चाहता हो।
७ मुहम्मद साहब का जन्म मक्का में २० अप्रैल ५७१ ई० के लगभग हुआ। वे अपनी अवस्था के चालीसवें वर्ष (चन्द्रमा पर आधारित कलंडर के अनुसार) में पैग़म्बर हुये। ६२२ ई० में शत्रुओं के अत्यधिक परेशान करने के कारण वे मक्का छोड़ कर मदीना चले गये। इस वर्ष से मुसलमानों का हिजरी साल प्रारम्भ होता है। उनकी मृत्यु मदीना में ८ जून ६३२ ई० को हुई।
८ हिन्दूकुश के उस पार से।

(१) सुल्तान महमूद गाजी[1] प्रथम बादशाह था जिसने तथा जिसकी सतान ने हिन्दुस्तान पर बहुत समय तक राज्य किया।

(२) सुल्तान शिहाबुद्दीन गोरी[2] दूसरा बादशाह था जिसके दास एव अधीनस्थ लोग बहुत वर्षों तक इस देश मे राज्य करते रहे।

(३) तीसरा मैं हू किन्तु मेरा कार्य उन बादशाहो के कार्य के समान नही है कारण कि सुल्तान महमूद ने जब हिन्दुस्तान विजय किया तो खुरासान का राजसिहासन उसके अधीन था। ख्वारिज्म तथा दारुल मर्ज के सुल्तान उसके अधीन थे। समरकन्द का बादशाह उसके मातहत था। उसकी सेना की सख्या यदि २ लाख न रही हो तो एक लाख होने मे तो कोई सन्देह ही नही है। उसके शत्रु राजा लोग थे। समस्त हिन्दुस्तान एक बादशाह के अधीन न था। प्रत्येक राजा अपने राज्य म स्वतत्र रूप से राज्य करता था।

अब सुल्तान शिहाबुद्दीन को लीजिये। यद्यपि वह खुरासान के राज्य का स्वामी न था किन्तु उसका बडा भाई सुल्तान गयासुद्दीन खुरासान का बादशाह था। 'तबकाते नासिरी'[3] मे लिखा है कि एक बार उसने १,२०,००० सशस्त्र अश्वारोहियो की सेना लेकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया था। उसके शत्रु भी वही राय तथा राजा थे। समस्त हिन्दुस्तान मे एक व्यक्ति का राज्य न था।

जिस बार हम लोग भीरा पहुचे तो हमारे साथ अधिक से अधिक १५०० से २००० तक आदमी रहे होगे। पाचवी बार जब हमने हिन्दुस्तान पहुच कर सुल्तान इबराहीम को पराजित किया और हिन्दुस्तान को विजय किया तो कभी भी इससे पूर्व हिन्दुस्तान मे इतनी कम सेना न आई थी। नौकर-चाकर व्यापारी तथा समस्त लोग जो सेना के साथ थे, उनकी सख्या १२००० लिखी गई थी। जो देश मेरे अधीन थे, वे थे बदख्शा, कून्दूज, काबुल तथा कन्धार। किन्तु इन राज्यो से कोई विशेष लाभ न होता था अपितु इनमे मे बहुत से शत्रुओ के निकटतम थे अत उन्हें अत्यधिक सहायता पहुचानी आवश्यक रहती थी। इसके अतिरिक्त समस्त मावरा उन्नहर ऊज़बेग खाना तथा सुल्ताना के अधीन था। उनकी सेना की सख्या लगभग १००,००० थी और वे मेरे प्राचीन शत्रु थे। इसके अतिरिक्त समस्त हिन्दुस्तान भीरा से लेकर विहार तक अफगानो के अधिकार मे था[4] और उनका बादशाह सुल्तान इबराहीम था। उसके

१ गजनी का प्रसिद्ध सुल्तान तथा सुल्तान नासिरुद्दीन सुबुक्तिगीन का ज्येष्ठ पुत्र। वह ६९७ ई० में अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी बना। महमूद ने अपने दीर्घकालीन राज्य मे हिन्दुस्तान पर अनेक आक्रमण किये और लाहौर देहली कनौज तथा हिन्दुस्तान के अनेक भाग अपने अधिकार में कर लिये। उसका जन्म १५ दिसम्बर ९६७ ई० को और मृत्यु ३० अप्रैल १०३० ई० में हुई।

२ मुइज्जुद्दीन मुहम्मद बिन साम (शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी) अपने बडे भाई गयासुद्दीन मुहम्मद, गोर तथा गजनी के सुल्तान द्वारा ११७४ ई० में गजनी का हाकिम नियुक्त किया गया। उसने ११८६ ई० में गजनवियों के वंश के अंतिम शाहजादे खुसरो मलिक को बन्दी बना लिया और खुरासान तथा उत्तरी हिन्दुस्तान के बहुत बड़े भाग को विजय किया। उसने ११९२ ई० मे देहली को विजय किया। १२०३ ई० में उसके भाई गयासुद्दीन की मृत्यु हो गई और उसने अपने भाई के उत्तराधिकारी के रूप में गोर, गज़नी तथा हिन्दुस्तान पर तीन वर्ष राज्य किया। १४ मार्च १२०६ ई० में घक्करों ने उसकी हत्या कर दी। हिन्दुस्तान में सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया।

३ 'तबकाते नासिरी', लेखक अबू उमर मिनहाजुद्दीन उस्मान बिन सिराजुद्दीन जूज़जानी [देखिये रिज़वी 'आदि तुर्क कालीन भारत' (अलीगढ़ १९५६ ई०) पृ० १—६६।]

४ १५२६ ई० मे अफगानों के राज्य में पंजाब, देहली, जौनपुर, बुन्देलखंड तथा बिहार सम्मिलित थे

राज्य के विस्तार को देखते हुए उसकी सेना की सख्या ५ लाख होनी चाहिये थी किन्तु उस समय पूर्व के अमीर उसका विरोध कर रहे थे। अनुमानत उसकी सेना की सख्या १००,००० थी। लोगो का विचार था कि उसके तथा उसके अमीरो के हाथियो की सख्या १००० थी।

इस स्थिति मे तथा इतनी सेना के साथ ईश्वर पर भरोसा करके ऊजबेग सरीखे १००,००० प्राचीन शत्रुओ को पीछे छोड कर सुल्तान इबराहीम जैसे बादशाह का, जिसके राज्य के विस्तार की न तो कोई सीमा थी और न जिसकी सेना की कोई गणना की जा सकती थी, हमने मुकाबला किया। क्योकि हम लोगो को परमेश्वर पर पूरा भरोसा था, अत उसने हमारे परिश्रम तथा कष्ट को व्यर्थ नष्ट न होने दिया और उस शक्तिशाली शत्रु को पराजित कर दिया और हिन्दुस्तान सरीखे इतने बडे राज्य पर हमे विजय प्रदान कर दी। इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एव बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं अपितु इसे ईश्वर की महान् दया तथा कृपा एव देन समझते है।

हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान बडा लम्बा चौडा देश है। यह मनुष्यो तथा उपज से परिपूर्ण है। इसके पूर्वी, दक्षिणी तथा पश्चिमी भागो का अन्त समुद्र पर होता है। इसके उत्तर मे पर्वत हैं जो हिन्दूकुश, काफिरिस्तान तथा कश्मीर के पर्वतो से मिले हैं। इसके उत्तर-पश्चिम मे काबुल, गजनी तथा कन्धार स्थित है। देहली समस्त हिन्दुस्तान की राजधानी है। शिहाबुद्दीन गोरी की मृत्यु से लेकर सुल्तान फीरोज़ शाह[1] के राज्यकाल के अन्त तक[2] हिन्दुस्तान का अधिकाश भाग देहली के सुल्तानो के अधीन रहा।

बाबर के समकालीन हिन्दुस्तान के शासक

जब मैंने हिन्दुस्तान विजय किया तो यहा पाच मुसलमान तथा दो काफिर बादशाह राज्य करते थे। इन लोगो को बडा सम्मान प्राप्त था और ये स्वतन्त्र रूप से शासन करते थे। इनके अतिरिक्त पहाडियो तथा जगलो मे भी छोटे-छोटे राय एव राजा थे किन्तु उनको अधिक आदर सम्मान प्राप्त था।

अफ़गान सुल्तान

सर्व प्रथम अफगान थे जिनकी राजधानी देहली थी। भीरा से बिहार तक के स्थान उनके अधिकार मे थे। अफगानो के पूर्व जौनपुर सुल्तान हुसेन शर्की[3] के अधीन था। इन लोगो के वश को

किन्तु अधिकाश अफ़ग़ान, अमीरों के विद्रोही हो गये थे और सुल्तान का अधिकार केवल नाम मात्र को रह गया था।

१ सुल्तान फ़ीरोज शाह तुग़लुक ने १३५१ ई० से १३८८ ई० तक राज्य किया। उसके राज्य काल से सम्बन्धित आधार भूत सामग्री के लिये 'तुग़लुक कालीन भारत', भाग २ (अलीगढ १९५७ ई०) का अवलोकन करें।

२ १२०६ ई० से १३८८ ई० तक।

३ जौनपुर के शर्की सुल्तानों के इतिहास से सम्बन्धित, आधार भूत सामग्री के लिये 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २ (अलीगढ १९५९ ई०) पृ० १२-२४ देखिये। सुल्तान हुसेन, बहलोल लोदी द्वारा पराजित हुआ किन्तु वह किसी न किसी प्रकार सुल्तान सिकन्दर लोदी के राज्य काल तक अपने राज्य के लिये प्रयत्न करता रहा। १४७६-७७ ई० में जौनपुर के शर्की सुल्तानों के राज्य का अन्त हो गया। सुल्तान हुसेन की मृत्यु १५०० ई० में हुई।

हिन्दुस्तानी पूर्वी कहते हैं। इनके पूर्वज सुल्तान फीरोज शाह के सक़्क़ा[1] रहे होगे। फीरोज़ शाह की मृत्यु[2] के उपरान्त उन्होंने जौनपुर पर अधिकार जमा लिया। देहली सुल्तान अलाउद्दीन के अधिकार मे थी। वे लोग सैयिद[3] थे। तीमूर बेग देहली विजय करने के उपरान्त उसका राज्य इनके पूर्वजों को देकर चला गया था। सुल्तान बहलोल लोदी[4] तथा उसके पुत्र सुल्तान सिकन्दर लोदी[5] ने जौनपुर की राजधानी को विजय करके देहली की राजधानी से मिला दिया और दोनो एक ही बादशाह के अधीन हो गये।

दूसरे गुजरात मे सुल्तान मुज़फ्फर[6] था। इबराहीम की पराजय के कुछ दिन पूर्व उसकी मृत्यु हो गई थी। वह बादशाह शरा का अत्यधिक पालन करता था। उसे विद्याध्ययन से भी बडी रुचि थी। वह हदीस का अध्ययन करता था और सर्वदा कुरान की नकल किया करता था। उसका वश टाक[7] कहलाता था। उसके भी पूर्वज सुल्तान फीरोज़ शाह तथा उन सुल्तानो के शराबदार रहे होगे। फीरोज़ शाह की मृत्यु के उपरान्त उन्होने गुजरात पर अधिकार जमा लिया।

तीसरे दकिन (दक्षिण) मे बहमनी थे किन्तु आजकल दक्निन के सुल्तानों की शक्ति एव अधिकार छिन्न-भिन हो गया है। उनके समस्त राज्य पर उनके बडे-बडे अमीरो ने अधिकार जमा लिया है। उन्हें जिस चीज़ की आवश्यकता होती है उसे वे अपने अमीरों से मागते है।

चौथे मालवा[8] मे जिसे मन्दू भी कहते हैं सुल्तान महमूद भी था। वे ख़लजी सुल्तान कहलाते है किन्तु राणा सागा ने उसे पराजित करके उसके राज्य के अधिकाश भाग पर अधिकार जमा लिया था। यह वश भी शक्तिहीन हो गया था। इनके पूर्वज भी सुल्तान फीरोज शाह के आश्रित थे। तदुपरान्त उन्होने मालवा पर अधिकार जमा लिया था।

पाचवें बगाले[9] के राज्य मे नुसरत शाह था। उसका पिता बगाले मे बादशाह रह चुका था। वह सैयिद था। उसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन थी। नुसरत शाह को राज्य अपने पिता से मीरास मे प्राप्त हुआ था। बगाले की यह बडी विचित्र प्रथा है कि राज्य मीरास मे बहुत कम प्राप्त होता है। बादशाह

१ जल पिलाने वाला अथवा मदिरा पिलाने वाला।

२ १३८८ ई०।

३ सैयिद सुल्तानों के इतिहास से सम्बन्धित 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग १ (अलीगढ १९५९ ई०) पृ० १४-८७ देखिये।

४ सुल्तान बहलोल लोदी ने १४५१ से १४८९ ई० तक राज्य किया।

५ सुल्तान सिकन्दर लोदी ने १४८९ ई० से १५१७ ई० तक राज्य किया। लोदी सुल्तानों के विषय में आधार भूत सामग्री के अध्ययन के लिये 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २, पृ० ९१-३८९ देखिये।

६ सुल्तान मुज़फ्फ़र के इतिहास के लिये देखिये 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २ (अलीगढ १९५९ ई०)।

७ गुजरात के सुल्तानों की वशावली के लिये 'मिरआते सिकन्दरी' लेखक सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ़ मझू इब्ने अकबर देखिये (बम्बई १८९०-९१ ई०) पृ० ५। इसका हिन्दी अनुवाद 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २ मे पृ० २५० पर देखिये।

८ मालवा के इतिहास के लिये 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २, पृ० ५१-१६१ देखिये। इस खड में 'तबकाते अकबरी' (पृ० ५१—१३१) 'वाक़िआते मुश्ताक़ी' (पृ० १३२-१४८) तथा 'ज़फ़रुल वालेह बे मुज़फ्फ़र व आलेह' (पृ० १४९-१७२) के आवश्यक उद्धरणों का अनुवाद किया गया है।

९ बगाल के इतिहास के लिये 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २, पृ० ५३३-५६२ देखिये। इस भाग में 'तबकाते अकबरी (पृ० ५३३-५३९), 'गुलशने इबराहीमी' अथवा 'तारीख़े फ़िरिश्ता' (पृ० ५४०-५५०) तथा 'रियाज़ुस्सलातीन' (पृ० ५५१-५६२) तक के आवश्यक उद्धरणों का अनुवाद किया गया है।

का अर्थ उसके राजसिंहासन से समझा जाता है। अमीरो, वज़ीरो तथा अधिकारियो मे से प्रत्येक के लिये स्थायी रूप से एक स्थान निश्चित रहता है। बगाल वाले केवल सिंहासन तथा पद का सम्मान करते हैं। प्रत्येक पद के अधीन नौकर चाकर तथा आज्ञाकारी सेवक निश्चित रहते हैं। बादशाह यदि किसी को पदच्युत अथवा किसी अन्य को नियुक्त करना चाहता है और किसी को किसी के स्थान पर बैठा देता है तो सभी नौकर चाकर एव सेवक उसी के आज्ञाकारी हो जाते हैं। बादशाह के सिंहासन की भी यही विशेषता है। जो कोई बादशाह की हत्या करके राजसिंहासन पर आरूढ हो जाता है वही बादशाह हो जाता है। बगाले वालो का कथन है कि हम राजसिंहासन के भक्त हैं। जो कोई राजसिंहासन पर आरूढ होता है हम उसके आज्ञाकारी बन जाते है। उदाहरणार्थ नुसरत शाह के पिता अलाउद्दीन के पूर्व एक हब्शी[1] अपने पिछले बादशाह[2] की हत्या करके राज सिंहासन पर आरूढ हो गया और कुछ समय तक राज्य करता रहा। सुल्तान अलाउद्दीन ने हब्शी की हत्या करके राजसिंहासन पर अधिकार जमा लिया और स्वय बादशाह हो गया। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र[3] अपने पिता के मीरास के अधिकार मे बादशाह हुआ।

बगाल म एक यह भी प्रथा है कि जो कोई भी बादशाह होता है उसे नया खज़ाना एकत्र करना पडता है। वहा वाले खज़ाना एकत्र करना बडे गर्व की बात तथा दूसरे के खज़ाने को व्यय करना बडे अपमान की बात समझते हैं।

बगाल मे यह भी प्रथा है कि प्राचीन काल से खज़ान अश्वशाला तथा शाही व्यय हेतु परगने निश्चित हैं। इनके व्यय हेतु किसी अन्य स्थान से कुछ भी नही वसूल किया जा सकता।

उपर्युक्त पाच मुसलमान राज्य हिन्दुस्तान मे बडे सम्मानित समझे जाते है। वे बडे ही विस्तृत एव शक्तिशाली हैं।

काफिरो मे राज्य के विस्तार एव सेना की अधिकता की दृष्टि से सब से बडा बीजा नगर[4] का राजा है।

दूसरा राणा सागा[5] है जो हाल ही मे अपनी वीरता एव तलवार की शक्ति के कारण इतना बडा हो गया है। वास्तव म उसका राज्य चित्तौड[6] मे था। मन्दू के सुल्तानो के राज्य के पतन के कारण

१ मुज़फ्फ़र शाह।
२ महमूद शाह इलयास।
३ नुसरत शाह।
४ दक्षिण में विजयानगर का राज्य।
५ मेवाड का राणा जो सिसोदिया राजपूत था। राणा हमीर सिंह जिसने १३१६ इ० मे अलाउद्दीन खलजी से चित्तौड छीन लिया था ने मेवाड़ में अपनी सत्ता पुन स्थापित कर ली। मालवा के देहली राज्य से पृथक हो जाने के उपरान्त मालवा के सुल्तानों एव मेवाड के राणाओं में बराबर युद्ध होता रहा। बाबर के आक्रमण के पूर्व मालवा के महमूद द्वितीय को राणा सागा ने १५१६ इ० में पराजित करके बन्दी बना लिया था।
६ चित्तौड का प्रसिद्ध किला एव मेवाड की प्राचीन राजधानी, उदयपुर स ७० मील उत्तर पूर्व मे स्थित है। तीन बार इस किले पर बडे भीषण आक्रमण हुये हैं
अ १३०३ ई० मे अलाउद्दीन खलजी द्वारा।
ब १५३४ ई० में बहादुर शाह गुजराती द्वारा।
स १५६७-६८ ई० में अकबर द्वारा।

उसने बहुत से स्थानो पर, जो मन्दू के सुल्तान के अधीन थे, अपना अधिकार जमा लिया। उदाहरणार्थ रणथम्बोर[1], सारगपुर[2], भिलसा[3] तथा चन्देरी[4]। मैंने ९३४ हि० (१५२८ ई०) मे चन्देरी पर आक्रमण करके ईश्वर की कृपा से उसे दो-चार घडी मे विजय कर लिया। वहा राणा सागा का बहुत बडा विश्वासपात्र मेदनी राय[5] राज्य करता था। हमने वहा के काफिरो का सहार करा दिया और जो स्थान वर्षो से दारुल हर्ब[6] बना हुआ था, उसे दारुल इस्लाम[7] बना दिया। इसका उल्लेख बाद मे किया जायगा।

उनके अतिरिक्त हिन्दुस्तान म चारो ओर राय एव राजा बहुत बडी सख्या म फैले हुए हैं। बहुत से मुसलमानो के आज्ञाकारी है और कुछ दूर होने तथा इस कारण कि उनके स्थान बडे दृढ है मुसलमान बादशाहो के अधीन नही है।

हिन्दुस्तान का भूगोल

हिन्दुस्तान के भाग प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय[8] इकलीमो मे स्थित है। यहा का कोई भाग चौथी इक्लीम मे नही है। यह बडा ही आश्चर्यजनक देश है और यदि हम अपने देशो से इसकी तुलना करें तो

१ जयपुर के दक्षिणीय पूर्वी कोने पर यह प्रसिद्ध किला १५७८ फ़ीट ऊँची पहाडी पर स्थित है। इल्तुतमिश ने १२२६ ई० में इसे विजय किया और १३०१ ई० मे अलाउद्दीन ने भी इस पर अधिकार जमा लिया। तैमूर के १३६८ ई० के आक्रमण के उपरान्त यह देहली सल्तनत से स्वतन्त्र हो गया किन्तु १५१६ ई० में यह मालवा के सुल्तानों के अधिकार मे हो गया था। राणा सागा ने इस पर भी अधिकार जमा लिया था। बाबर ने १५२८ ई० में इसे अपने अधिकार म कर लिया।

२ सारंगपुर, देवास में, काली सिध के पूर्वी तट पर स्थित है। इस नगर को मालवा के सुल्तानों के समय से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। १५२६ ई० में राणा सागा ने मालवा के महमूद द्वितीय से इसे छीन लिया था।

३ बेतवा के दायें तट पर, सेंट्रल रेलवे पर भूपाल के निकट एक स्टेशन। सुल्तान इल्तुतमिश ने १२३५ ई० मे इस पर आक्रमण किया और १२९० ई० मे सुल्तान अलाउद्दीन ने इस पर अधिकार जमा लिया। सांची के स्तूप भिलसा के समीप हैं।

४ सेंट्रल रेलवे पर एक स्टेशन। यह ग्वालियर राज्य मे सम्मिलित था। सुल्तान ग़यासुद्दीन बलबन ने १२५१ ई० मे इस पर अधिकार जमा लिया था। १४३८ ई० में मालवा के महमूद प्रथम ने इस पर अधिकार जमा लिया। १५२० ई० में राणा सागा ने इसे विजय करके मेदनी राय को प्रदान कर दिया था। बाबर ने १५२८ ई० में इसे विजय किया।

५ मेदनी राय कुछ समय तक मालवा के सुल्तान महमूद द्वितीय का शक्तिशाली वज़ीर रहा। उसके प्रभाव से भयभीत होकर महमूद गुजरात भाग गया और मुज़फ्फ़र शाह द्वितीय स सहायता मागी। मुज़फ्फ़र शाह ने मांडू पर आक्रमण करके घोर युद्ध के उपरान्त उसे विजय कर लिया और महमूद को पुन सिंहासनारूढ कर दिया। इसके उपरान्त मेदनी राय चंदेरी चला गया जिसे राणा सागा ने उसे प्रदान कर दिया था। महमूद ने मेदनी राय तथा राणा सागा पर चढाई की किन्तु वह पराजित हुआ और १५१९ ई० में राणा द्वारा बन्दी बना लिया गया।

६ वह स्थान जहाँ का राज्य मुसलमानों का शत्रु हो और जहाँ से मुसलमानों का युद्ध चल रहा हो।

७ शान्ति का घर, वह स्थान जो मुसलमानों के अधीन हो गये हों, और काफ़िरों से युद्ध समाप्त हो गया हो।

८ इक़लीम : जलवायु के प्रदेश। मध्यकालीन भूगोल वेत्ताओं के अनुसार संसार सात इक़लीमों म विभाजित था।

यह एक अन्य ही ससार ज्ञात होगा। यहा के पर्वत, नदिया, जगल, व्यावान, नगर, खेत, पशु, वनस्पति, मनुष्य, भाषायें, वर्षा तथा वायु सभी विभिन्न हैं। काबुल के अधीनस्थ स्थानो मे गरम सीर[1] ही कुछ बाता मे हिन्दुस्तान से मिलता जुलता है और कुछ बाता मे नही। सिन्ध नदी पार करते ही सभी बातें हिन्दुस्तानी-सी प्रतीत होने लगती है भूमि, जल वृक्ष चट्टान, आदमी, समूह, आचार विचार एव प्रथायें।

उत्तरी पर्वत

सिन्द नदी पार[2] कर लेने के उपरान्त उत्तरी पर्वतो से जिनका उल्लेख हो चुका है मिले हुए ऐसे प्रदेश है जो कश्मीर से सम्बन्धित है और कभी उसमे सम्मिलित थे यद्यपि उनमे से बहुत से उदाहरणार्थ पकली[3] तथा शाह मेग[4] अब कश्मीर के अधीन नही है। कश्मीर को पार कर लेने के उपरान्त इस पर्वत म असख्य जन समूह, जत्थे, परगने तथा कृषि योग्य भूमि मिलती है। यहा से वगाल तक अपितु समुद्र-तट तक मनुष्या का ताता वधा हुआ है। यहा[5] के निवासियो के विषय म हमने वहुत कुछ पूछ-ताछ कराई किन्तु हमे काई भी सतोषजनक उत्तर न प्राप्त हो सका। लागा ने इतना ही बताया कि इन पर्वत के निवासियों को 'कस' कहा जाता है। मेरा विचार है कि क्योकि हिन्दुस्तान वाले शीन[6] का उच्चारण सीन[7] के समान करते है और क्योकि इन पर्वतो मे कश्मीर वडा ही महत्वपूर्ण स्थान है और इतने अधिक मम्मानित स्थान के विषय मे किसी को कोई सूचना नही अत हिन्दुस्तानी इसे कस्मीर कहने लगे होगे।[8] यहा के निवासी कस्तूरी बहरी कूता[9], केसर, सीसे तथा तावे का व्यापार करते हैं।

हिन्द वाले इस पहाड का सवालक पर्वत कहते है। हिन्द की भाषा मे 'सवालक' का अर्थ १,२५,००० है और पर्वत पहाड को कहते हैं। इसका तात्पर्य १,२५,००० पर्वत हुआ। इन पर्वता पर सर्वदा वरफ जमी रहती है। हिन्दुस्तान की कुछ विलायता उदाहरणार्थ लाहौर, सेहरिन्द[10] तथा सम्वल[11] से ये पर्वत बरफ के कारण सफेद दृष्टिगत होते है। पर्वत की वह श्रेणी जो कावुल मे हिन्दूकुश के नाम से प्रसिद्ध

१ गरम भूभाग।
२ पूर्व की ओर जाने के लिये।
३ 'पकली' अथवा पखली' पंजाब का एक प्राचीन नगर था और उत्तरी पश्चिमी सीमात प्रान्त के बन जाने के उपरान्त हजारा जिले में सम्मिलित हो गया था। बाबर के समय म यह भूभाग खाखा तथा भम्भा कबीलों के अधीन था। इनके सरदार सिध नदी के पूर्व में राज्य करते थे किन्तु बजौर एव सवाद के सुल्तान ने इन्हे निकाल दिया था।
४ सम्भवत दम तौर' (हजारा जिले में) पखली के दक्षिण में दूर नदी के किनारे एक सकरी घाटी में। दूर नदी तुरबेला नामक स्थान पर सिध नदी में गिरती है।
५ कश्मीर।
६ श ش।
७ स س।
८ प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद म यह वाक्य इस प्रकार है —मेरे हृदय में आया कि क्योंकि हिन्दुस्तानी 'शीन' का उच्चारण 'सीन' करते हैं और क्योंकि इस पर्वत में समीर नामक प्रसिद्ध नगर है अत कश्मीर 'कस्यामीर' पर्वत हुआ। इस पवत के निवासियों को 'कसया' कहते हैं।
९ सम्भवत चामर अथवा सुरा गाय।
१० सरहिन्द।
११ सम्भल।

है काबुल से होती हुई हिन्दुस्तान के पूर्व की ओर कुछ-कुछ दक्षिण की तरफ झुक्ती हुई जाती है। इसके दक्षिण मे हिन्दुस्तानात[1] हैं। उत्तर मे तिब्बत तथा वह अज्ञात समूह पाया जाता है जो 'कस' कहलाता है।[2]

नदियाँ

इन पर्वता से अनेको नदिया निकल कर हिन्दुस्तान मे बहती हैं। सेहरिन्द के उत्तर से छ नदिया निकलती हैं—सिन्द, बिहत[3], चनाब, रावी ब्याह[4] तथा सतलज। ये सब मुल्तान के समीप एक दूसरे से मिल कर सिन्द नाम धारण करके पश्चिम की ओर बहती है और टट्टा[5] प्रदेश से होती हुई समुद्र मे गिरती हैं।

इन छ नदिया के अतिरिक्त अन्य नदिया भी हैं—जून[6], गग[7], रहप[8], गोमती, गगर[9], सरयू, गडक इत्यादि। ये सब नदिया गग नदी मे मिलती हैं और गग नाम धारण कर के पूर्व की ओर होती हुई बगाले मे पहुचती है और वहा से होती हुई समुद्र मे गिरती है। ये सब नदिया सवालक पर्वत से निकलती है।

बहुत सी नदिया हिन्दुस्तान की पहाडियो से भी निकलती हैं उदाहरणार्थ चम्बल, बानास, बेतवा, सीन इत्यादि। इन पहाडियो पर लेश मात्र को भी बरफ नही गिरती। ये नदिया भी गग मे गिरती हैं।

अरावली

हिन्दुस्तान की एक अन्य पर्वत श्रेणी उत्तर से दक्षिण मे फैली है। यह देहली से एक छोटी पहाडी से प्रारम्भ होती है। इस पहाडी पर फीरोज शाह ने जहां नुमा[10] नामक महल का निर्माण कराया था। यह पर्वत श्रेणी देहली के समीप इधर-उधर छिटकी हुई छोटी छोटी पहाडी चट्टाना के समान है। मेवात[11]

१ हिन्दुस्तान के प्रदेश।
२ इस स्थान पर बाबर को कुछ भ्रम हो गया है। सिवालिक नामक पहाडियाँ हिमालय के समानान्तर *हरिद्वार से होशियारपुर (पजाब) तक २०० मील की दूरी म फैली हैं।*
३ झेलम।
४ ब्यास।
५ इसे 'थट्टा' भी लिखा जाता है।
६ यमुना।
७ गगा।
८ सम्भवत रासो।
९ सम्भवत घाघरा।
१० 'कूश्के शिकार' से तात्पर्य है जिसे सुल्तान फ़ीरोज शाह तुगलुक ने १३७४ ई० म बनवाया था और यह देहली की पहाडी (रिज) पर स्थित है।
११ मेवात किसी एक जिले का नाम नहीं अपितु इसमें जो स्थान सम्मिलित समझे जाते हैं, वे घटते बढ़ते रहे हैं। यह वह भूभाग है जो देहली के दक्षिण में स्थित है और मथुरा (उत्तर प्रदेश) गुड़गाव (पंजाब), अलवर का बहुत बड़ा भाग तथा भरतपुर का थोड़ा सा भाग इसमें सम्मिलित है।

मे पहुचकर यह पर्वत श्रेणी काफी बडा रूप धारण कर लेती है।[1] मेवात को पार करके यह ब्याना[2] मे प्रविष्ट होती है। सीकरी[3], बारी[4] तथा धोलपुर[5] की पहाडिया भी इसी का एक भाग हैं। ग्वालियर, जिसे गालियूर भी लिखते है, की पहाडिया यद्यपि इस पर्वत श्रेणी से मिली हुई नही है किन्तु वे इसी का भाग हैं। इसी प्रकार रणथम्बोर, चित्तौड, चन्देरी तथा माडू[6] की पहाडिया हैं। ये किन्ही किन्ही स्थानो पर एक दूसरे से सात-सात, आठ-आठ कोस तक पृथक् हैं। ये पहाडिया बडी ही नीची, भद्दी तथा चट्टानो की हैं और जगलो से भरी हैं। इन पर किसी प्रकार की बरफ नही गिरती। हिन्दुस्तान की बहुत सी नदिया इस पर्वत श्रेणी से निकलती हैं।

सिंचाई

हिन्दुस्तान का अधिकाश भाग समतल भूमि पर स्थित है। यद्यपि हिन्दुस्तान म इतने अधिक नगर तथा इतनी विलायतें[7] हैं किन्तु किसी स्थान पर भी जल धारायें नही है। नदियाँ तथा कही-कही पर स्थित जलाशय यहा की जल धारायें हैं। कुछ नगरो म जहा नहर खोद कर जल लाना सम्भव है वहा भी नही लाया जाता। इसके अनेक कारण हैं। उनम से एक कारण यह है कि यहा की कृषि तथा यहा के उद्यानो को जल की आवश्यकता नही होती। खरीफ की फसल वर्षा के जल से ही हो जाती है। यह बडी ही विचित्र बात है कि रबी की फसल भी जल के बिना हो जाती है। पौधो को एक दो वर्ष तक डोल अथवा रहँट से सीच दिया जाता है। तत्पश्चात् उन्हें सीचने की कोई आवश्यकता नही होती। कुछ तरकारियो को निरन्तर सिंचाई की आवश्यकता होती है।

रहँट

लाहौर, दीबालपुर सेहरिन्द[8] तथा उस क्षेत्र के स्थानो म रहट से सिंचाई होती है। दो रस्सिया को जो गोलाई मे कुएं तक पहुच जायें ले लिया जाता है। दोनो रस्सियो के बीच-बीच मे लकडिया बाध दी जाती है। लकडियो मे घडे बाध दिये जाते है। जिन दोनो रस्सियो म लकडिया तथा घडे बधे रहते हैं उन्हें उस चर्खी पर रख देते हैं जो कुयें पर रहती है। इस चर्खी के धुरे से एक दूसरी चर्खी जुडी रहती है

१ हैदराबाद की तुर्की पोथी में यह वाक्य नही है।
२ ब्याना राजपूतों का बड़ा प्रसिद्ध दृढ स्थान रह चुका है। अब यह भरतपुर में गम्भीर नदी पर एक छोटा सा क़स्बा है और आगरा एव रणथम्बोर के मध्य में स्थित है।
३ आगरा (उत्तर प्रदेश) जिले में करौली तहसील में आगरा के पश्चिम में लगभग २३ मील पर। अकबर लगभग १५ वर्ष तक यहा नाना प्रकार के भवनों का निर्माण कराता रहा किन्तु १५८५ ई० मे जब वे तैयार हो गये तो अकबर ने वहा निवास करना बन्द कर दिया।
४ धौलपुर में धौलपुर स्टेशन से १६ मील पश्चिम में।
५ धौलपुर, आगरा के दक्षिण में लगभग ३४ मील पर। सिकन्दर लोदी ने १५०१ ई० तथा बाबर ने १५२६ ई० में उस पर अधिकार जमा लिया था।
६ मालवा की प्राचीन राजधानी जो अब लगभग नष्ट हो गई है। होशग शाह (१४०५-३४ ई०) ने इसे अपनी राजधानी बनाया और मालवा के सुल्तान के राज्य-काल में यहाँ निरन्तर आक्रमण होते रहे। १५३५ ई० में गुजरात के बहादुर शाह ने इस पर अधिकार जमा लिया।
७ प्रदेश।
८ सरहिन्द, हैदराबाद की तुर्की पोथी में 'सरहिन्द' नहीं है।

उसके निकट ही खडे धुरे पर एक अन्य चर्खी होती है। इस चर्खी को बैल घुमाता है। इसके दात दूसरी चर्खी के दात से जुडे रहते हैं। इस प्रकार वह चर्खी जिस पर घडे होते है घूमती है। जहा जल गिरता है वहा एक कठौता होता है और जल नालियो से होता हुआ प्रत्येक स्थान पर पहुँच जाता है।

चरसा

आगरा, चन्दवार[1], ब्याना तथा उस क्षेत्र मे डोल से सिंचाई होती है। इसमे बडा परिश्रम करना पडता है और यह बडी ही भद्दी विधि है। कुयें के किनारे दो शाखाओ वाली एक लकडी लगा दी जाती है। इन दोनो के मध्य मे एक गडारी लगा देते हैं। एक बहुत बडे डोल मे एक रस्सी बाध दी जाती है। रस्सी गडारी पर रख दी जाती है और उसका एक छोर बैल से बाध दिया जाता है। एक आदमी को बैल को हाकना पडता है तथा दूसरे को डोल को खाली करना पडता है। जब बैल डोल खीच कर वापस होता है तो रस्सी बैल के मार्ग पर जिस पर मूत्र तथा गोबर पडा रहता है लथेडती जाती है और फिर वही रस्सी कुयें मे पहुचती है।

डोल

कुछ खेतो को जिन्हें सिंचाई की आवश्यकता होती है स्त्री तथा पुरुष डोल भर-भर कर सीचते है।

हिन्दुस्तान की आकर्षण-शून्यता

हिन्दुस्तान की विलायतो[2] तथा नगरो मे कोई आकर्षण नही है। इसके समस्त नगर एव समस्त भूमि एक ही प्रकार की है। यहा के उद्यानो मे चहारदीवारी नही होती। इसके अधिकाश स्थानो पर समतल मैदान स्थित है। वर्षा के समय कुछ नदियो तथा नालो मे इतनी बाढ आ जाती है कि उनका पार करना बडा कठिन हो जाता है।

मैदान के बहुत से भागो मे बडे-बडे काटेदार जगल है। परगनो के निवासी उनमे शरण ले लेते हैं और विद्रोह कर देते तथा कर नही अदा करते।

केवल किन्ही किन्ही स्थानो पर नदिया तथा जलाशय हैं। उनके अतिरिक्त यहा जलधारायें नहीं है, यहा तक कि नगरो तथा विलायतो के निवासी या तो कुओ के जल से जीवन निर्वाह करते हैं, या तालावों से, जहा वर्षा ऋतु मे जल एकत्र हो जाता है।

पुरवो, ग्रामो तथा नगरो का उजडना और बसना

हिन्दुस्तान मे पुरवे, गाव तथा नगर क्षण भर मे बस भी जाते है और उसी प्रकार नष्ट भी हो जाते हैं। इस प्रकार बडे बडे नगरों के निवासी जो वर्षों से वहा बसे होते हैं, यदि वहा से भागना चाहते हैं तो वे एक या डेढ़ दिन मे वहा से इस प्रकार भाग जाते हैं कि लेश मात्र भी उनका वहाँ कोई चिह्न नही रह जाता। यदि उन्हें किसी स्थान को आबाद करना होता है तो उन्हें न तो नहर खोदने की आवश्यकता पडती है और न बन्द बधवाने की, कारण कि यहा वर्षा के सहारे पर ही कृषि होती है और जनसख्या की

१ आगरा के दक्षिण पूर्व में, यमुना के दायें तट पर।
२ प्रदेशों, प्रान्तों।

तो कोई सीमा ही नही। लोग एकत्र हो ही जाते हैं। कुआ अथवा तालाब खोद लेते हैं। घरो तथा दीवारो के बनाने की कोई आवश्यकता नही पडती। घास बहुत होती ही है, वृक्षो की तो कोई सख्या ही नही बताई जा सकती। झोपडिया बना ली जाती है और तत्काल ग्राम अथवा नगर बस जाता है।

हिन्दुस्तान के पशु

हाथी

हिन्दुस्तान के वन-पशुओ मे हाथी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसे हिन्दुस्तानी लोग हाती[1] कहते हैं। यह कालपी[2] की विलायत[3] की सीमा पर पाया जाता है। कालपी के पूर्व मे जितना ही बढते चले जायें भारी भरकम तथा जगली हाथी अधिक सख्या मे मिलते जायेंगे। वहा से हाथी पकड-पकड कर लाये जाते हैं। कडा[4] मानिकपुर मे ३०-४० ग्रामों मे हाथी पकडने का काम होता है। (वहा के) लोगो को दीवान मे इस कार्य हेतु उत्तर देना पडता है।[5]

हाथी बहुत बडे डील डौल का जानवर होता है। वह बडा समझदार होता है। उससे यदि कुछ कहा जाय तो वह समझ लेता है और यदि उसे कोई आदेश दिया जाय तो वह उसका पालन करता है। उसका मूल्य उसके डील-डौल के अनुसार लगाया जाता है। हाथी जितना ही बडा होता है उसका मूल्य उतना ही अधिक होता है। कहा जाता है कि कुछ द्वीपो मे १० कारी[6] के हाथी होते है किन्तु इस ओर चार-पाच कारी से बडे हाथी नही होते। हाथी केवल अपनी सूड से खाता पीता है। यदि उसकी सूड कट जाय तो फिर वह जीवित नही रह सकता। उसके ऊपर के जबडो मे दो बडे बडे दात होते है। सूड के दोनो ओर एक एक दात होता है। दीवारें तथा वृक्ष वह इन्ही दांतो से जोर लगा कर गिरा देता है। वह इन्ही दातो से युद्ध तथा ऐसे कार्य करता है जिनके लिये बल की आवश्यकता होती है। गजदत यही दात कहलाते है। हिन्दुस्तान वाले गजदत को बडा बहुमूल्य समझते हैं। अन्य पशुओं के समान हाथी के बाल नही होते। हिन्दुस्तान वाले हाथी पर बडा भरोसा करते हैं। प्रत्येक सेनानायक अपने साथ कुछ न कुछ हाथी ले जाता है।

हाथी मे कुछ बडे ही उत्तम गुण पाये जाते हैं। वह बडी-बडी नदियो को सुगमतापूर्वक पार कर जाता है, भारी-भारी बोझ उठा ले जाता है। जो गाडिया ४००-५०० मनुष्य मिल कर बडी कठिनाई से खीच सकते हैं उन्हें ३-४ हाथी सुगमतापूर्वक खीच ले जाते हैं। उसका पेट बहुत बडा होता है। दो किलार[7] ऊटो का भोजन एक हाथी अकेला ही खा डालता है।

गैंडा

एक वन-पशु गैंडा भी होता है। वह भी बहुत बडा पशु होता है और लगभग तीन भैंसो के

१ हाथी।
२ उत्तर प्रदेश के जालौन ज़िले में, यमुना के दायें तट पर एक प्राचीन कस्बा।
३ प्रदेश, राज्य।
४ उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद ज़िले में, यमुना के बायें तट पर।
५ राजस्व विभाग को हिसाब देना पड़ता है।
६ इसका फ़ारसी में अनुवाद 'गज़' किया जाता है। यह गज़ २४ इंच का होता है किन्तु क़ारी की लम्बाई निश्चित नहीं। ३६ इंच का गज़ भी कारी ही कहा जा सकता है।
७ एक क़ितार में ५ से ७ तक ऊँट होते हैं।

नील गाओ कहते हैं। उसके दो छोटे-छोटे सीग होते है। उसके गले पर लगभग ९ इच लम्बा बालो का गुच्छा होता है। इस बात मे वह सुरा गाय से मिलता-जुलता है। उसके खुर अन्य पशुओ के खुरो के समान फटे होते है। मादा बूग़ू मराल[1] के समान होती है। उसके सीग नही होते और नर की अपेक्षा वह मोटी होती है।

कोतह पाईचा

कोतह पाईचा[2] एक अन्य पशु होता है। यह आक कियीक[3] के बराबर होता है। इसके पाव छोटे छोटे होते हैं अत इसे छोटे पाव वाला[4] कहते हैं। इसके सीग बूग़ू के सीग के समान होते है किन्तु वे उससे छोटे होते हैं। बूग़ू[5] के समान हर वर्ष इसके नये सीग निकलते है। यह तेज नही दौड सकता, इस कारण जगल से नही निकलता।

कियीक (कलहरा)

एक अन्य पशु कियीक[6] होता है जो जीरान नामक नर मृग के समान होता है। इसकी पीठ काली तथा पेट सफेद होता है। इसके सीग हूना[7] के सीग की अपेक्षा लम्बे किन्तु अधिक मुडे हुये होते हैं। हिन्दुस्तानी लोग इसे कलहरा कहते हैं। यह शब्द काला हिरन रहा होगा और उच्चारण से कलहरा हो गया। मृगणी का रग हलका होता है। कलहरा द्वारा हिरनो का शिकार किया जाता है। कलहरा के सीगो पर जाल कस कर बाध दिया जाता है और उसके एक पाव मे गोले[8] से कुछ बडा पत्थर बाध देते हैं। इस प्रकार वह अधिक दूर तक नही जा सकता। जगली कलहरा को देख कर इसे छोड दिया जाता है। इस हिरन को युद्ध से अत्यधिक रुचि होती है अत यह तत्काल युद्ध प्रारम्भ कर देता है। दोनो हिरन एक दूसरे को सीगों से टक्कर मारने तथा आगे-पीछे ढकेलने लगते हैं। इस युद्ध मे जगली हिरन के सीगो मे वह जाल फस जाता है जो पालतू हिरन के सीगा मे बधा रहता है। यदि जगली हिरन भागने का प्रयत्न करता है तो पालतू हिरन नही भाग पाता। सम्भवत इसका कारण वह पत्थर भी होता है जो पालतू हिरन के पाव मे बधा रहता है। इस प्रकार बहुत से हिरन पकड लिये जाते हैं और उन्हें पालतू बना लिया जाता है। उनका भी अन्य हिरनों को पकडने के लिये प्रयोग होने लगता है। ये हिरन खूब लडते हैं।

एक अन्य मृग

हिन्दुस्तान की पहाडियो के आचल मे एक छोटा मृग भी होता है जो साल भर के अकार-गलचा के मृग के बराबर होता है।

१ एक प्रकार का बारह सिंगा।
२ एक छोटा भारतीय हिरन।
३ सफ़ेद हिरन।
४ कोतह पाईचा।
५ बारह सिंगा।
६ साधारण हिरन।
७ एक प्रकार का तुर्की मृग।
८ तोप का गोला।

गीनी गाय

गीनी गाय एक अन्य प्रकार का पशु है। वह बडी ही छोटी होती है। वह लगभग उन देशों[1] के कूचकार[2] के बराबर होती है।[3] उसका मास बडा नरम तथा स्वादिष्ट होता है।

बन्दर

यहा मैमून[4] भी पाये जाते है। हिन्दुस्तानी लोग इसे बन्दर कहते हैं। ये भी विभिन्न प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के बन्दर को लोग उन देशों[5] मे ले जाते है। मदारी लोग उन्हें करतब सिखा लेते है। इस प्रकार के बन्दर नूर दरा के पर्वतो, सँवर के समीप के सफेद कोह की पहाडियो तथा उनसे नीचे पूरे हिन्दुस्तान मे होते हैं। ये इससे अधिक ऊचाई पर नही पाये जाते। एक प्रकार के बन्दर जो बजौर, सवाद तथा उन भागो मे नही पाये जाते, उन बन्दरो से अधिक बडे होते है, जो उन देशों[5] मे ले जाये जाते हैं। इनकी दुम बडी लम्बी होती है। इनके बाल सफेदी लिये हुये होते है। इनका मुख बडा काला होता है। ये लगूर कहलाते हैं।[6] ये हिन्दुस्तान के पर्वतो तथा जगलो मे पाये जाते हैं। एक अन्य प्रकार के बन्दर पूर्णत काले होते है। उनके बाल, मुख तथा शरीर के अग सभी काले होते है। इस[7] प्रकार के बन्दरो को कुछ द्वीपो से लाया जाता है। वह पीलापन लिये हुये भूरे रग का होता है। यह रग पोस्तीन के समान होता है। उसका सिर चौडा तथा उसका शरीर अन्य बन्दरो की अपेक्षा बहुत बडा होता है। उसकी मैथुन शक्ति बडी प्रबल होती है। यह एक बडी विचित्र बात है कि उसका शिश्न सर्वदा खडा रहता है।

नवल

इनके अतिरिक्त नवल[8] पाये जाते हैं। ये कीश[9] से कुछ छोटे होते हैं और वृक्षो पर चढ जाते हैं। कुछ लोग इन्हें मूशे खुर्मा[10] कहते हैं। इनका दर्शन बडा उत्तम शकुन समझा जाता है।

गिलहरी

एक अन्य प्रकार का चूहा होता है जिसे लोग गिलहरी कहते है। यह अधिकाश वृक्षो पर रहती है और ऊपर नीचे आश्चर्यजनक तीव्र गति तथा फुरती से आती जाती रहती है।

१ हिन्दूकुश के उस पार।
२ मेंढा।
३ यह लगभग ३ फ़ीट ऊँचा होता है।
४ बन्दर।
५ हिन्दूकुश के उस पार।
६ यह वाक्य फ़ारसी अनुवाद म है, मूल तुर्की पोथी में नहीं।
७ यह वाक्य भी मूल तुर्की पोथी में नहीं है।
८ सम्भवत नेवला।
९ एक प्रकार का नेवला।
१० खजूर का चूहा।

पक्षी

मोर

हिन्दुस्तान के पक्षियो मे एक पक्षी मोर होता है। यह बडा ही रग बिरगा तथा सुन्दर पक्षी होता है। इसका शरीर इसके रग तथा इसकी सुन्दरता के अनुकूल नही होता। इसका शरीर लगभग सारस के बराबर होता है किन्तु वह इतना लम्बा नही होता। मोर तथा मोरनी दोनो के सिर पर २०-३० पख दो-तीन इच ऊचे उठे होते हैं। मोरनी का न तो रग ही अच्छा होता है और न यह उतनी सुन्दर ही होती है। मोर के सिर पर एक प्रकार का रग बदलने वाला कण्ठा होता है। इसकी गर्दन बडे सुन्दर नीले रग की होती है। गर्दन के नीचे इसकी पीठ मे पीले, तोते के रग के समान हरे, नीले तथा बैंगनी रग होते हैं। इसकी पीठ पर छोटे छोटे फूल होते हैं। पीठ के नीचे से लेकर दुम की नोक तक बडे बडे रग बिरगे फूल होते है। किन्ही-किन्ही मोरो की दुमें मनुष्य के फैले हुये दोनो हाथो के बराबर होती है। इसके फूलदार पखो के नीचे एक छोटी सी दुम होती है जो अन्य पक्षियो की दुमो के समान होती है और इसका तथा इसकी जड का रग लाल होता है।

यह पक्षी बजौर तथा सवाद एव उनसे नीचे के स्थानो पर पाया जाता है। यह कूनूर, लमगानात अथवा इनसे ऊचे किसी स्थान पर नहीं मिलता। उडने मे यह कीरगावल[1] से भी कमजोर होता है। यह एक दो छोटी-छोटी उडानो से अधिक नही उड सकता। अधिक न उड सकने के कारण यह पहाडियो तथा जगलो मे रहता है। यह बडी विचित्र बात है कारण कि गीदड जगलो मे बहुत बडी सख्या मे रहते है। गीदड ऐसे पक्षियों को जो एक जगल से दूसरे जगल तक मनुष्य के दोनो खुले हुए हाथो के बराबर दुम लेकर उडते हैं, कितनी हानि पहुँचाते होगे। हिन्दुस्तानी इस पक्षी को 'मोर" कहते हैं। इसका मास इमाम अबू हनीफा[2] की धर्म व्याख्या के अनुसार हलाल[3] होता है। इसका मास चकोर के मास के समान होता है और वे मजा नही होता किन्तु ऊट के मास के समान इसका मास रुचि से नही खाया जाता।

तोता

यहा एक अन्य पक्षी तोता होता है। यह भी बजौर तथा उससे नीचे के भूभाग मे पाया जाता है। यह नीनगनहार तथा लमगानात मे शहतूत के पकने के समय पहुच जाता है। अन्य समय मे यह वहा नही मिलता। ये विभिन प्रकार के होते हैं। एक किस्म ऐसे तोता की होती है जिन्हें लोग उन देशों[4] मे ले जाते हैं और उससे बात कराते हैं। एक अन्य प्रकार के तोते छोटे होते हैं। इससे भी लोग बात कराते है। ये जगली तोते कहलाते है। बजौर, सवाद तथा उसके आसपास ये बहुत बडी सख्या में पाये जाते है, यहा पाच-पाच-छ-छ हजार के झुड एक साथ उडते हैं। इन तोता तथा उन तोतो के जिनका ऊपर उल्लेख हुआ शरीर की मुटाई मे अन्तर होता है। रग तो सब का एक ही तरह का होता है।

१ एक प्रकार का तीतर।
२ इमाम अबू हनीफ़ा, जो 'इमामे आज़म' के नाम से प्रसिद्ध हैं, मक्का के चार महान् सुन्नी शरीअत की व्याख्या करने वालों में से थे अर्थात् इमाम हनीफ़ा, इमाम हम्बल, इमाम शाफ़ई एवं इमाम मालिक। मुसलमानों के इनकी फ़िर्के के सिद्धान्तों की व्याख्या सर्व प्रथम इन्हीं ने कराई।
३ धर्मानुसार स्वीकृत।
४ हिन्दूकुश के उस पार।

एक अन्य प्रकार के तोते, जगली तोतो से भी छोटे होते है। इनका सिर लाल होता है। इनके पखो की नोक भी लाल होती है। इनके दुम की नोक दो अगुल तक बडी चमकदार होती है। इस प्रकार के कुछ तोतो का सिर अपने रग बदलता रहता है। यह बातचीत नही कर पाता। लोग इसे कश्मीरी तोता कहते है।

एक अन्य प्रकार के तोते जगली तोता से भी छोटे होते है। इनकी चाच काली होती है। इसकी गर्दन के चारो ओर एक चौडी काली हुसली रहती है। इसके पख की जड लाल होती है। यह बात करना भली भाति सीख लेता है।

हमारा विचार था कि तोते अथवा मैना उतनी ही बातें कर सकते है जितनी उन्हें सिखा दी जायें। वे स्वय सोच कर कुछ बात नही कर सकते। इस समय मेरे एक निकटतम सेवक अबुल कासिम जलायर ने मुझे एक बडी ही विचित्र बात बताई। एक ऐसे ही तोते का पिंजडा सम्भवत ढक दिया गया था। वह कहने लगा, "मेरे मुह को खोलो। मेरा दम घुटता है।" एक अन्य बार जब कहार लोग, जो पालकी ले जा रहे थे, दम लेने के लिये ठहर गये, इस तोते ने सम्भवत लोगो के जाने की आवाज़ सुन कर कहा, "लोग जा रहे हैं। तुम लोग क्यो नही चलते ?" इसका उत्तरदायित्व बताने वाले पर है। जब तक कोई स्वय अपने कानो से न सुन ले वह विश्वास नही कर सकता।

एक अन्य प्रकार का तोता बडे सुन्दर प्रकार के लाल रग का होता है। उस प्रकार के तोते अन्य रगो के भी होते है किन्तु इनके विषय मे मुझे ठीक से कुछ स्मरण नही। अत इनके बारे में अधिक नही लिख सकता। यह पक्षी रग तथा रूप दोनो ही की दृष्टि से बडा सुन्दर होता है। लोग इसे बातें करना भी सिखाते है। इसमे सब से बडा दोष यह है कि इसकी आवाज बडी ही तेज होती है और कानो को बुरी लगती है। इसकी आवाज ऐसी होती है कि मानो किसी ताबे की थाली पर कोई टूटा हुआ चीनी का बरतन खीचा जा रहा हो।

शारक

शारक[1] भी हिन्दुस्तान मे पाये जाते हैं। ये लमगानात तथा उससे नीचे समस्त हिन्दुस्तान मे बहुत बडी सख्या मे होते है। तोते के समान ये भी विभिन्न प्रकार के होते है। जो किस्म लमगानात मे बडी अधिक सख्या मे पाई जाती है, उसका सिर काला होता है। इसके पख पर चित्तिया पडी रहती हैं। इसका शरीर चूगूरचूक[2] की अपेक्षा अधिक बडा तथा मोटा होता है। लोग इसे बात करना सिखा लेते हैं। एक अन्य प्रकार का शारक पडावली कहलाता है और बगाल से लाया जाता है। यह पूर्णत काला होता है और घरेलू मैना की अपेक्षा इसका रग गहरा काला होता है। इसकी चाच तथा टागें पीली होती हैं। इसके प्रत्येक कान से पीले रग की खाल लटकती रहती है और देखने मे बडी बुरी लगती है। यह भली भाति साफ-साफ बातें करना सीख लेता है। एक अन्य प्रकार का शारक उस शारक से, जिसका इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, दुबला होता है। उसकी आखें लाल होती हैं। वह बात नही कर पाता। उसे लोग काठ का शारक कहते हैं।

उन दिनो मे[3] जब कि मैंने गगा नदी पर पुल बधवा कर अपने शत्रुओं को भगा दिया था तो

१ मैना।
२ एक प्रकार की पहाडी मैना।
३ ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०)।

लखनऊ एव अवध तथा उसके आस पास मुझे एक ऐसे प्रकार का शारक दृष्टिगत हुआ जिसका सीना सफेद, सिर चितकबरा तथा पीठ काली थी। मैंने इस प्रकार का शारक कभी न देखा था। इस प्रकार के शारक सम्भवत बात करना नही सीख पाते।

लूजा

एक अन्य प्रकार का पक्षी लूजा[1] होता है। इस पक्षी को बूकलमून[2] भी कहते है कारण कि सिर से लेकर दुम तक इसके ५-६ परिवर्तनशील रग होते है जो कबूतर की गर्दन के समान चमकीले होते है। यह उतना ही बडा होता है जितना कि कब्के दरी[3]। यह हिन्दुस्तान का कब्के दरी प्रतीत होता है। जिस प्रकार कब्के दरी पर्वत की चोटियो पर चक्कर लगाया करता है उसी प्रकार यह भी। यह काबुल के निज्र अऊ नामक पर्वतीय प्रदेश तथा नीचे के पर्वतो मे मिलता है किन्तु इससे ऊपर नही पाया जाता। इसके विषय मे यह विचित्र बात बताई जाती है कि शीत ऋतु के प्रारम्भ मे पर्वतो के आचल मे य उतर पडते है। यदि वहा से हका कर अगूर के उद्यान पर पहुचा दिये जाते है तो य वहा से जरा भी नही उड पाते और पकड लिये जाते है। इस पक्षी का मास खाया जाता है और बडा स्वादिष्ट होता है।

दुर्राज

इसके अतिरिक्त यहा दुर्राज[4] नामक पक्षी भी पाया जाता है। यह केवल हिन्दुस्तान म ही नही पाया जाता अपितु गरम सीर[5] देशो मे भी मिलता है। जो विशेष प्रकार के दुर्राज केवल हिन्दुस्तान ही मे मिलते है उनका वर्णन दिया जाता है। दुर्राज लगभग कीकलीक[6] के बराबर होता है। नर की पीठ का रग जगली मादा तीतर के समान होता है। इसका गला तथा सीना काला होता है और उस पर सफेद सफेद बिन्दु होते हैं। इसकी दोनो आखो के दोनो ओर लाल रग की धारी होती है। इसका नाम इसकी *आवाज के अनुसार पड गया जो लगभग इस प्रकार की होती है शिर दारम शकरक*[7] *शिर का उच्चारण* कुछ अस्पष्ट तथा 'दारम शकरक' पूर्णत स्पष्ट होता है। अस्तराबाद के दुर्राजो के विषय मे कहा जाता है कि वे यह ध्वनि निकालते है—'बात मीनी तूतीलार'[8]। अरब तथा उस भूभाग के दुर्राजो के विषय मे कहा जाता है कि वे यह ध्वनि निकालते है — 'बिल शकर तदउम अल नियम'[9]। मादा दुर्राज का रग जवान तीतर के समान होता है। ये निज्र अऊ के नीचे पाये जाते हैं।

कजाल

दुर्राज की एक अन्य किस्म कजाल कहलाती है। इसका शरीर भी उन्ही दुर्राजो के बराबर होता

१ सम्भवत चकोर के समान कोई पक्षी।
२ चकोर।
३ चकोर।
४ तीतर।
५ सम्भवत दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान।
६ एक प्रकार का चकोर।
७ 'मेरे पास दूध तथा शकर है'।
८ जल्दी, मैं पकड़ गया'।
६ 'शकर से प्रसनता बढ जाती है'।

है जिनका उल्लेख किया गया। इसकी ध्वनि भी बहुत कुछ कीकलीक से मिलती जुलती है किन्तु अधिक कर्कश होती है। नर तथा मादा मे बडा कम अन्तर होता है। यह परशावर[1], हशनगर[2] तथा उनसे नीचे के प्रदेशा मे मिलता है किन्तु इससे ऊपर के देशो मे नही मिलता।

फूल पैंकार

यहा के पक्षियो मे फूल पैंकार भी एक पक्षी होता है। यह कब्के दरी के बराबर होता है। इसका शरीर पालतू मुर्ग के बराबर तथा रग मुर्गी के समान होता है। माथे से लेकर गले तक यह बडे सुन्दर लाल रग का होता है। यह हिन्दुस्तान के पर्वता में पाया जाता है।

जगली मुर्ग

जगली मुर्ग भी यहा पाया जाता है। जगली मुर्ग तथा पालतू मुर्ग म यह अन्तर होता है कि जगली मुर्ग तीतर के समान उडता है। इसके अतिरिक्त जगली मुर्ग विभिन्न रगा के नही होते। यह वजौर के पर्वता तथा उनसे नीचे पाया जाता है उनमे ऊपर नही मिलता।

चीलसी

चीलसी[3] भी एक पक्षी होता है। इसका शरीर फूल पैंकार के बराबर होता है किन्तु फूल पैंकार के रग अधिक सुन्दर होते हैं। यह वजौर के पर्वता मे पाया जाता है।

शाम

यहा का एक अन्य पक्षी शाम होता है। इसका शरीर पालतू मुर्ग के बराबर होता है। इसके रग बडे सुन्दर होते हैं। यह भी बजौर के पर्वता मे पाया जाता है।

बूदना

यहा जो पक्षी पाये जाते है उनमे बूदना भी होता है। हिन्दुस्तान मे चार पाच प्रकार के बूदना विशेष रूप से होते हैं। एक वह है जो हमारे देश को जाता है। वह उस बूदना से (जो हिन्दुस्तान मे पाया जाता है) अधिक बडा तथा मोटा होता है। एक अन्य प्रकार का बूदना भी होता है जो उस बूदना से जिसका ऊपर उल्लेख किया गया छोटा होता है[5]। इसके पख तथा दुम लाली लिये रहती है। यह चीर[6] के समान झुड मे उडता है। एक अन्य प्रकार का बूदना उस बूदना से छोटा होता है जो हमारे देश मे जाता है। उसका गला तथा सीना अधिक काला होता है। एक अन्य प्रकार का बूदना काबुल बहुत

१ पेशावर।
२ काबुल का अन्तिम भाग।
३ तीतर के समान एक पक्षी।
४ लाल जंगली मुर्ग के समान एक पक्षी।
५ सम्भवत लवा।
६ सम्भवत झाडियो म रहने वाला लवा।
७ सम्भवत लवा अथवा बटेर की कोई किस्म।

बन जाता है। यह बड़ा ही छोटा होता है। सम्भवत यह कार्चा[1] से कुछ ही बड़ा होता है। काबुल मे उसे लोग कूरातू कहते हैं।

खर्चल

एक अन्य पक्षी खर्चल[2] होता है। यह उतना ही बड़ा होता है जितना कि तूगदाक[3] और हिन्दुस्तानी तूगदाक प्रतीत होता है। इसका मास बड़ा स्वादिष्ट होता है। किसी पक्षी की टागें अच्छी होती हैं तो किसी के पख। किसी खर्चल का समस्त मास बड़ा स्वादिष्ट होता है।

चर्ज

चर्ज[4] भी एक पक्षी होता है। यह तूगदीरी से छोटा होता है। नर की पीठ तूगदीरी की पीठ के समान होती है और सीना काला होता है। इसकी मादा एक ही रग की होती है।

बागरी करा

बागरी करा[5] भी एक पक्षी है। यह उन देशो[6] के बागरी करा की अपेक्षा छोटा तथा दुबला होता है। इसकी आवाज़ कर्कश होती है।

डीग

जो पक्षी जल के पास तथा नदी के किनारे रहते हैं उनमे से एक डीग[7] होता है। इसका शरीर बहुत बड़ा होता है। इसके पख लगभग मनुष्य के शरीर के बराबर होते है। इसके सिर अथवा गर्दन पर बाल नही होते। इसकी गर्दन के नीचे थैली के समान कोई चीज़ लटकती रहती है। इसकी पीठ काली तथा सीना सफेद होता है। यह कभी-कभी काबुल पहुच जाता है। एक वर्ष लोग एक डीग पकड कर ले आये। वह अत्यधिक पालतू हो गया। यदि उसके सामने मास उछाल दिया जाता था तो वह उसे गिरने न देता था अपितु अपनी चाच मे ले लेता था। एक बार वह एक जूता जिसमे छ नालें थी खा गया। एक अन्य बार वह पूरा जगली मुर्ग पख सहित निगल गया।

सारस

एक अन्य पक्षी सारस होता है। हिन्दुस्तान मे तुर्क लोग इसे तीवा तूरना कहते है। यह डीग से कुछ छोटा होता है किन्तु इसकी गर्दन डीग की गर्दन से अधिक लम्बी होती है। इसका सिर खूब लाल होता है। लोग इस पक्षी को अपने घर पाल लेते हैं अ जाता है

१ wag tail
२ सारस जैसी पक्षियों की एक जाति।
३ एक बड़े प्रकार का खर्चल।
४ florican.
५ एक प्रकार का मुर्ग।
६ हिन्दूकुश के पश्चिम के।
७ एक प्रकार का बहुत बड़ा सारस।

मानेक

मानेक भी एक पक्षी होता है। इसका शरीर सारस के समान होता है किन्तु यह कम मोटा होता है। यह लग-लग[१] के समान होता है किन्तु इसका डील-डौल उससे अधिक बडा होता है। इसकी चोच अधिक लम्बी तथा काली होती है। इसके सिर का रग बदलता रहता है। इसकी गर्दन सफेद, पख कुछ-कुछ रगीन तथा परो की नोक एव किनारे तथा डैने के भीतरी भाग सफेद और मध्य का भाग काला होता है।

लग-लग

एक अन्य पक्षी लग-लग होता है। इसकी गर्दन सफेद तथा शरीर का शेष भाग काला होता है। यह उन देशो[२] मे भी जाता है। यहा का लग-लग वहा के लग-लग से छोटा होता है। हिन्दुस्तानी इसे यक-रग कहते हैं।

एक प्रकार का लग-लग उसी प्रकार के लग-लग के समान होता है जो उन देशो मे जाता है। इसकी चोच अधिक काली तथा शरीर अधिक भारी होता है।

एक अन्य पक्षी अऊकार[३] तथा लग-लग के समान होता है किन्तु इसकी चोच अऊकार की चोच से लम्बी और इसका शरीर लग-लग के शरीर से छोटा होता है।

बुजक

एक अन्य पक्षी बडा बुजक[४] होता है। इसका शरीर लगभग सार[५] के बराबर होता है। इसके डैने का पिछला भाग सफेद होता है। यह बडे जोर से चिल्लाता है।

सफेद बुजक भी एक पक्षी होता है। इसका सिर तथा चाच काली होती है। यह उन बुजको से जो उन देशो मे जाता है बडा होता है किन्तु हिन्दुस्तानी बुजका से छोटा होता है।

गर्म पाई

गर्म पाई[६] एक अन्य प्रकार का पक्षी होता है। यह सूना बूर चीन[७] से बडी होती है। नर-हम तथा बत्तख एक ही रग की होती है। ये हशनगर मे हर मौसम मे पायी जाती हैं। कभी कभी ये लमगानात मे भी चली जाती है। इनका मास बडा स्वादिष्ट होता है।

१ एक प्रकार का सफ़ेद क्रौंच।
२ हिन्दूकुश के पश्चिमीय देश।
३ एक प्रकार का सारस।
४ सारस की जाति का एक पक्षी।
५ सम्भवत. सारस की जाति का एक पक्षी।
६ चित्ती वाली चोंचदार बत्तख।
७ एक प्रकार की जगली बत्तख।

शाह मुर्ग

शाह मुर्ग[1] एक अन्य प्रकार का पक्षी पाया जाता है। यह हम से कुछ छोटा होता है। इसकी चोंच पर कुछ सूजन रहती है। इसकी पीठ काली होती है और इसका मांस खाने में बड़ा उत्तम होता है।

जुम्माज

जुम्माज भी एक पक्षी होता है। यह बूरगूत के बराबर बड़ा होता है।

आला कार्गा

आला कार्गा भी हिन्दुस्तान का एक पक्षी होता है। यह उन देशों[2] के आला कार्गा की अपेक्षा दुबला तथा छोटा होता है। इसकी गर्दन कुछ कुछ सफेद होती है।

जंगली पक्षी

एक हिन्दुस्तानी पक्षी कौए तथा नीलकंठ से मिलता जुलता है। लमगानात में लोग इसे जंगली पक्षी कहते हैं। इसका सिर तथा सीना काला होता है। इसके डैने तथा दुम लाली लिये हुये तथा आंख पूर्णत लाल होती है। इसकी उड़ान बड़ी साधारण होती है अत यह जंगल में से नहीं निकलता। इसी कारण इसे जंगली पक्षी कहते हैं।

चमगादड़

शपरा भी एक पक्षी होता है। लोग इसे चमगादड़ कहते है। यह उल्लू के बराबर होता है। इसका सिर कुत्ते के पिल्ले के सिर के बराबर होता है। जब यह रात्रि में किसी वृक्ष पर बसेरा लेना निश्चय कर लेता है तो यह (पंजा से) कोई डाली पकड़ लेता है। अपना सिर नीचे लटका लेता है और इसी प्रकार (उल्टा) लटका रहता है। इसमें बड़ी विचित्र बातें पाई जाती है।

नीलकंठ

नीलकंठ भी एक पक्षी यहां होता है। लोग इसे मता[3] कहते है। यह अक्का से कुछ बड़ा होता है। अक्का चितकबरा-काला और सफेद होता है किन्तु मता चितकबरा भूरा तथा काला होता है।

एक अन्य छोटा सा पक्षी होता है जो लगभग मादूलाच[4] के बराबर होता है। यह बड़े सुंदर लाल रंग का होता है। इसके डैनों पर कुछ कालापन होता है।

कोयल

यहां एक पक्षी कोयल भी पाया जाता है। यह लगभग कौए के बराबर होती होगी किन्तु कौए की

१ सम्भवत नक्टा।
२ हिन्दूकुश के पश्चिम के।
३ सम्भवत किसी हिन्दी शब्द का विकृत रूप।
४ एक प्रकार का wag tail। सम्भवत लाल।

अपेक्षा बडी दुबली होती है। यह एक प्रकार का गाना गाती है और हिन्दुस्तान की बुल्बुल समझी जाती है। हिन्दुस्तान वाले इसका बुलबुल के समान ही आदर करते हैं। यह घने जगलो मे रहती है।

एक अन्य पक्षी शिकार्राक[1] के समान पाया जाता है। यह वृक्षो में लटका रहता है और लगभग हरे नीलकठ के बराबर होता है। यह तोते के रग के समान हरा होता है।

जल-जन्तु

शेर आबी

जल जतुओ मे एक शेर आबी[2] होता है। यह ठहरे हुये जल मे रहता है। यह गीलास[3] के समान होता है। लोगो का कथन है कि यह मनुष्यो, यहा तक कि भैसा तक को उठा ले जाता है।

सियाह सर

सियाह सर[4] भी एक जलजतु है। यह भी गीलास के समान होता है। यह हिन्दुस्तान की समस्त नदियो म पाया जाता है। एक सियाह सर जो मेरे पास पकड कर लाया गया ४-५ कारी[5] लम्बा तथा लगभग एक भेड के बराबर मोटा था। कहा जाता है कि यह इससे भी अधिक बढ जाता है। इसकी थूथनी आधे गज से भी अधिक लम्बी होती है। इसके ऊपर तथा नीचे के जबडो म छोटे छोटे दातो की पक्तिया होती है। यह जल से निकल कर कीचड मे प्रविष्ट हो जाता है।

घडियाल

घडियाल[6] भी एक जल-जतु होता है। कहा जाता है कि य बहुत बडे बडे होते हैं। सेना के बहुत म लोगो ने उसे सरयू नदी मे देखा था। कहा जाता है कि वह आदमियो को उठा ले जाता है। जब हम लोग उस नदी के तट पर थे[7] तो वह एक दो दासियो को उठा ले गया। गाजीपुर[8] तथा बनारस के मध्य म वह ३-४ शिविर वालो को उठा ले गया। उसी क्षेत्र मे मैने दूर से घडियाल देखा था किन्तु उसे भली भाति साफ-साफ नही देख सका।

खूके आबी

खूके आबी[9] भी एक जल-जतु होता है। यह भी हिन्दुस्तान की समस्त नदियो मे पाया जाता है।

१ एक प्रकार का हरा नीलकंठ।
२ एक प्रकार का घडियाल।
३ मगरमच्छ।
४ एक प्रकार का घडियाल।
५ लगभग १२ फ़ीट।
६ बाबर ने घडियाल की तीन किस्मे बता कर उन तीनों म जो अन्तर है उनका ऊपर उल्लेख किया है।
७ ९३४-३५ हि०।
८ उत्तर प्रदेश का एक जिला। यह गगा के तट पर वाराणसी से लगभग ४२ मील उत्तर पूर्व में स्थित है।
९ जल का सुअर, सम्भवत सूँस।

केला

एक अन्य फल केला होता है। अरब वाले इसे मौज कहते है। इसका वृक्ष बहुत लम्बा नही होता। इसके वृक्ष को वृक्ष कहा भी नही जा सकता। कारण कि यह घास तथा वृक्ष के बीच की चीज होता है। इसके पत्ते अमान करा[1] के पत्तो से मिलते जुलते हैं। इनकी लम्बाई लगभग २ गज तथा चौडाई एक गज होती है। इसके मध्य से हृदय के समान एक डाली निकलती है जिसमें एक कली निकलती है। यह बडी कली भेड के हृदय के समान होती है। इस कली की पखडिया जब फैल जाती हैं तो इन पखडियो की जड से ६-७ फूलो की पक्तिया निकलती हैं। वही फूल केला बन जाते है। वही डाली जो हृदय के समान होती है फैल जाती है और उस बडी कली की पखडिया प्रकट हो जाती हैं तथा केले के फूल की पक्तिया जाहिर हो जाती हैं। कहा जाता है कि इस वृक्ष मे केवल एक बार फूल लगते है।[2] इसमे दो उत्तम गुण होते है। एक यह कि इसके छिलके सुगमतापूर्वक पृथक् हो जाते है और दूसरे यह कि इसमे गुठली तथा रेशे नही होते। यह बादजान[3] की अपेक्षा लम्बा तथा उससे पतला होता है। यह अधिक मीठा नही होता। बगाली केलो के विषय मे कहा जाता है कि वे बडे मीठे होते हैं। केले का वृक्ष देखने म सुन्दर लगता है। इसकी चौडी-चौडी, सुन्दर हरे रग की पत्तिया अत्यधिक मनोहर प्रतीत होती हैं।

इमली

अम्ली[4] भी एक फलदार वृक्ष होता है।[5] इसे खुर्माये हिन्दी[5] भी कहते हैं। इसकी पत्तिया बडी छोटी छोटी तथा कटाओदार होती हैं, जो बूईआ[6] की पत्तियो के समान होती है। अन्तर केवल इतना होता है कि बूईआ की पत्तियो मे इतना सुन्दर कटाओ नही होता। इसका वृक्ष देखने मे बडा सुन्दर होता है और इसकी छाया बडी घनी होती है। यह बिना लगाये भी बहुत बडी सख्या मे उगता है।

महुवा

महुवा भी एक फलदार वृक्ष होता है। लोग इसे गुलचिकन[7] भी कहते हैं। यह भी बहुत बडा वृक्ष होता है। हिन्दुस्तानियो के घरो के निर्माण मे अधिकाश इसी की लकडी का प्रयोग होता है। इसके फूलो से मदिरा बनाई जाती है। केवल यही नही अपितु इन्हें मुनक्के के समान सुखा कर भी खाया जाता है। सूखे महुवे से भी मदिरा बनाई जाती है। सूखे फूलो का स्वाद किशमिश की भाति होता है किन्तु खाने मे रस नही मिलता। ताजे फूल बुरे नही होते। वे खाने योग्य होते है। यह बिना लगाये भी उगता

१ सम्भवतः मक्का।
२ अबुल फ़ज़ल ने लिखा है कि जब तक केले के वृक्ष को तने से न काट दिया जाये तब तक उसमे फल नहीं लगते।
३ बैंगन।
४ इमली।
५ हिन्दुस्तानी खजूर।
६ सम्भवतः इमली के समान पत्तियाँ।
७ अबुल फ़ज़ल के अनुसार 'फल गुलौंदा' कहलाता है।

है। इसके फल मे कोई स्वाद नही होता। इसकी गुठली बडी तथा ऊपर का छिलका पतला होता है। गुठली से तेल भी निकाला जाता है।[1]

खिरनी

खिरनी भी फलदार वृक्ष होता है। इसका वृक्ष यदि बहुत बडा नही होता तो छोटा भी नही होता। इसके फल का रग पीला होता है किंतु चीकदा[2] से यह छोटा होता है। इसका स्वाद अगूर के समान होता है। किन्तु इसे खाने के बाद कुछ तबियत बिगड सी जाती है। यह बुरा भी नही होता और खाया जा सकता है। इसकी गुठली का छिलका पतला होता है।

जामुन

एक फल जामुन नामक भी होता है। इसकी पत्तिया बेंत की पत्तियो के समान होती है किन्तु बेंत की पत्तियो की अपेक्षा ये अधिक मोटी तथा हरी होती है। वृक्ष मे सुन्दरता की कमी नही होती। इसका फल काले अगूर के समान होता है किन्तु वह खट्टा होता है और उसका स्वाद अधिक अच्छा नही होता।

कमरख

एक फल कमरख[3] भी होता है। यह पचपहला होता है और लगभग ऐंनं आलू के बराबर हाता है। यह कोई ३ इच लम्बा होता है। पकने पर यह पीला पड जाता है। यदि इसे कच्चा तोड लिया जाये तो बडा कडवा होता है। पक जाने पर यह खट्टा-खट्टा लगता है। इसकी खटास बुरी नही लगती और यह स्वाद से शून्य नही होता।

कटहल

कटहल भी यहा पाया जाता है। इसके फल की आकृति तथा स्वाद बडा विचित्र होता है। यह भेड के जैसे पेट के समान ज्ञात होता है जिसे गीपा[4] बना दिया गया हो। इसकी मिठास से घृणा होने

१ महुवे का वर्णन इब्ने बत्तूता ने इस प्रकार किया है:—

महुवा—इसका वृक्ष बड़ा होता है। पत्ते अखरोट के पत्तों के समान होते हैं किन्तु इसके पत्तों में कुछ लाली तथा पीलापन मिला होता है। इसका फल भी छोटे आलू बुखारे के समान होता है। यह बड़ा मीठा होता है। प्रत्येक फल के मुँह पर एक छोटा दाना होता है जो अंगूर के समान होता है। यह बीच में से खाली होता है। इसका स्वाद अंगूर के समान होता है किन्तु अधिक खा लेने से सिर में पीड़ा होने लगती है। सूखा महुवा स्वाद में अन्जीर के समान होता है। मैं अन्जीर के स्थान पर उसे खाया करता था। अन्जीर इस देश में नहीं होता। महुवे के मुँह पर जो दूसरा दाना होता है वह भी अंगूर कहलाता है। अंगूर हिन्दुस्तान में बहुत कम होता है केवल देहली के कुछ भागों तथा कुछ अन्य प्रदेशों में पाया जाता है। महुवे में साल में दो बार फल लगते हैं। इसकी गुठली का तेल निकाला जाता है जो दीपकों में जलाया जाता है। [रिजवी: 'तुगलुक कालीन भारत' भाग १ (अलीगढ १९५६ ई०), पृ० १६८]

२ बेर

३ कमरख

४ भेड़ के पेट में चावल, क़ीमा तथा मसाला भर कर पका हुआ भोजन 'गीपा' कहलाता है।

लगती है। इसके भीतर खुर्मे के समान गुठलिया होती है किन्तु इसकी गुठलिया गोल होती है, लम्बी नही। वे नरम होती हैं और खाई जाती है। इसे खाते समय मुह अत्यधिक चिपकने लगता है। इसी कारण कहा जाता है कि इसे खाने के पूर्व लोग हाथ और मुह मे तेल लगा लेते है। कहा जाता है कि यह केवल डालिया मे ही नही लगता अपितु तने तथा जडा मे भी लगता है।[1] ऐसा ज्ञात होता है कि मानो पूरे वृक्ष मे कटहल ही कटहल लगे हा।[2]

बडहल

बडहल भी एक फल होता है। यह लगभग सेब के बराबर होता है। इसकी गन्ध बुरी नही होती। कच्चा बडहल बडा ही बदमजा होना है और बिल्कुल खाली सा लगता है। जब यह पक जाता है तो बुरा नहीं होता। पक जाने पर यह बडा नरम हो जाता है। इसे टुकडे टुकडे करके जहा से इच्छा हो वहा से खाया जा सकता है। इसका स्वाद सडे हुए श्रीफल के समान होता है किन्तु बडा ही उत्तम और कुछ कुछ कर्कश होता है।

वेर

वेर भी एक फल होता है। फारसी मे इसे कनार कहते हैं। इसकी बहुत सी किस्में होती हैं। एक प्रकार का वेर आलूचे से बडा होता है। एक दूसरे प्रकार का वेर हुसेनी अगूर के समान होता है। वेर अधिकाश अधिक उत्तम नही होते। हमने एक प्रकार का वेर वान्दीर[3] म देखा था। वह वास्तव मे बडा अच्छा था। बेर की पत्तिया वृष तथा मिथुन राशि मे गिर जाती हैं। कर्क तथा सिंह राशि मे जब कि वास्तव मे वर्षा ऋतु होती है पत्तिया निकलने लगती हैं। कुम्भ तथा मीन राशि म इसकी पत्तिया हरी हरी तथा ताजी हो जाती है और फल पकने लगते हैं।

१ इब्ने बत्तूता ने अपने यात्रा के वर्णन मे जामुन की चर्चा इस प्रकार की है —
जमुन (जामुन)—इसका वृक्ष बडा होता है। इसका फल जैतून के फल के बराबर होता है किन्तु यह कुछ कुछ काला होता है। जैतून के समान इसके भीतर एक गुठली होती है। [रिजवी 'तुग़लुक़ कालीन भारत' भाग १, पृ० १६८]

२ इब्ने बत्तूता ने अपनी यात्रा के वर्णन मे कटहल की इस प्रकार चर्चा की है—
यहाँ शकी व बरकी कटहल का वृक्ष भी होता है जो बहुत बड़ा होता है और बहुत समय तक वर्तमान रहता है। इसके पत्ते अखरोट के पत्तों के समान होते हैं। इसका फल वृक्ष की जड़ में लगता है। जो फल भूमि स मिला होता है वह बरकी कहलाता है, यह अधिक मीठा और स्वादिष्ट होता है। जो फल ऊपर लगता है वह शकी कहलाता है। इसका फल बड़े कद्दू के समान होता है और छिलका गाय की खाल की तरह होता है। जब खरीफ़ में यह बहुत पीला हो जाता है तो तोड़ लिया जाता है। जब यह चीरा जाता है तो प्रत्येक कटहल में से १०० या २०० बीज खीरों के समान निकलते हैं। बीजों के बीच म पीले रंग की एक झिल्ली होती है। प्रत्येक बीज में बड़ी सेम (फूल) के बराबर गुठली होती है जब इन गुठलियों को भूनकर या पकाकर खाते हैं तो उसका स्वाद फूल (बड़ी सेम) के समान होता है। फूल (बड़ी सेम) इस देश में नहीं होती। इन गुठलियों को लाल मिट्टी से दबा देते हैं और ये दूसरे वर्ष तक रह जाती हैं। यह हिन्दुस्तान का सबसे अच्छा फल समझा जाता है। [रिजवी 'तुग़लुक़ कालीन भारत' भाग १, पृ० १६८]

३ ग्वालियर।

करौंदा

करौंदा भी एक फल होता है। हमारे देश[1] के चीका के समान यह झाडियो मे उगता है किन्तु चीका पर्वतो मे और करौंदा मैदानो मे उगता है। इसका स्वाद श्वेत चीनी के समान होता है किन्तु यह उसकी अपेक्षा कम मीठा होता है और इसमे रस भी कम होता है।

पानीयाला

पानीयाला भी एक फल होता है। यह आलूचे से बडा होता है और कच्चे लाल सेब के समान होता है। यह कुछ कुछ कर्कश और अच्छा होता है। इसका वृक्ष अनार के वृक्ष से अधिक लम्बा होता है। इसकी पत्तिया बादाम के वृक्ष की पत्तिया के समान किन्तु उससे छोटी होती हैं।

गूलर

गूलर भी एक फल होता है। यह वृक्ष के तने मे लगता है और अजीर से मिलता जुलता है। इसमे कोई भी स्वाद नही होता।

आमला

आमला[2] भी एक फल होता है जो पचपहला होता है। यह बिना खिले हुए कपास के बीज कोप के समान होता है। यह बडा ही कर्कश तथा बे मजा होता है। इसका मुरब्बा बुरा नही होता। यह बडा लाभदायक फल होता है। इसका वृक्ष देखने मे बडा अच्छा लगता है और इसकी पत्तिया बडी छोटी छोटी होती हैं।

चिरौंजी

चिरौंजी भी यहा होती है। इसके वृक्ष के सम्बन्ध मे प्रसिद्ध है कि वह पहाडियो मे होता है किन्तु मुझे इसके विषय मे बाद मे ज्ञात हुआ कारण कि हमारे उद्यान मे भी इसके तीन-चार वृक्ष थे। यह महुवे के समान होता है। इसकी गिरी बुरी नही होती। यह अखरोट तथा बादाम के मध्य की वस्तु है। यह पिस्ते से छोटी तथा गोल होती है। लोग इसे पालूदे[3] तथा मिठाई में मिलाते हैं।

खुर्मा

खुर्मा भी यहा होता है किन्तु यह विशेष रूप से हिन्दुस्तान ही मे नही होता। इसका वर्णन यहा इस कारण दिया जाता है कि यह उन देशों[4] मे नही होता। यह लमगानात मे भी होता है। इसकी शाखायें वृक्ष की नोक पर एक ही स्थान से निकलती हैं। इसकी पत्तिया शाखाओं के दोनो ओर प्रारम्भ मे

१ काबुल।
२ आवला।
३ फालूदा।
४ काबुल इत्यादि।

अन्त तक निकलती हैं। इसका तना भद्दा होता है और इसका रग बडा खराब होता है। इसके फल अगूर के गुच्छो के समान निकलते है किन्तु अगूर से बडे होते हैं। लोगो का कथन है कि खुर्मा ऐसी वनस्पति है जो पशुओं से दो प्रकार से मिलता है। एक इस प्रकार कि जिस तरह यदि किसी पशु का सिर काट दिया जाये तो उसकी मृत्यु हो जाती है उसी प्रकार यदि खुर्मे के वृक्ष का सिर काट दिया जाये तो वह सूख जाता है। दूसरे इस प्रकार कि जिस तरह नर के बिना किसी पशु के कोई सतान नही हो सकती उसी प्रकार जब तक मादा वृक्ष के समीप किसी नर-वृक्ष की टहनी न लाई जाये उस समय तक उसमें अच्छे फल नही लगते। इस अन्तिम बात की सत्यता के विषय मे मुझे कोई ज्ञान नही। खुर्मे के वृक्ष का उपर्युक्त सिर उसका पनीर कहलाता है। वृक्ष के बढने पर जिस स्थान से पत्तिया निकल निकल कर बढ़ा करती है वह पनीर के समान सफेद होता है। यह सफेद भाग जिसे पनीर कहा जाता है खाने मे बुरा नही होता और अखरोट के समान होता है। लोग पनीर को थोडा सा काट देते हैं और उस कटे हुए भाग मे इस प्रकार एक पत्ता लगा देते हैं कि कटे हुए स्थान से जितना द्रव पदार्थ होता है वह निकल कर पत्ते मे वह आता है। वृक्ष मे कोई घडा लटका दिया जाता है। पत्ते की नोक घडे के मुह पर लगा दी जाती है। कटे हुए भाग से जितना द्रव पदार्थ निकलता है वह पत्ते से होता हुआ घडे मे एकत्र हो जाता है। यदि उसे तत्काल पी लिया जाये तो वह बडा स्वादिष्ट होता है। यदि उसे दो तीन दिन बाद पिया जाये तो लोग बताते हैं कि उसमे अत्यधिक नशा होता है।

एक बार मैं जब कि बारी[1] गया हुआ था और चम्बल नदी के तट के एक गाव मे भ्रमण हेतु पहुचा तो मैंने देखा कि लोग घाटी की तलहटी मे खुर्मे से द्रव पदार्थ एकत्र कर रहे हैं। हम लोग पर्याप्त द्रव पदार्थ पी गये किन्तु हमें कोई नशा न हुआ। सम्भवत बहुत अधिक पीने पर थोडा सा नशा होता है।

नारियल

यहा नारियल[2] भी होता है। अरब लोग इस शब्द का अरबी रूप नारजील बताते हैं। हिन्दुस्तानी लोग इसे नालीर कहते है। सम्भवत अशुद्ध बोलते बोलते नारजील का ही रूप नारील हो गया। यह हिन्दी गिरी है। इससे काले चम्मच बनाये जाते हैं। बडे बडे नारियलो से गिटार के पेंदे बनाये जाते है। इसका वृक्ष खुर्मे के वृक्ष के समान होता है किन्तु इसमे पत्ते अधिक होते है और वे चमकीले भी बहुत होते है। अखरोट के समान नारियल पर भी हरा हरा छिलका होता है किन्तु इसके छिलके पर बहुत अधिक जटायें होती हैं। जहाजो तथा नौकाओं की रस्सिया इसी नारियल के छिलके की जटाओ से बनाई जाती हैं। जब नारियल के छिलके को साफ किया जाता है तो उसके एक ओर एक त्रिकोण मिलता है जिसके तीन स्थानो पर छेद होता है। इनमे से दो बहुत ठोस होते हे और एक मे सुगमता-पूर्वक कोई (नोकदार) चीज़ चुभोई जा सकती है। गिरी बनने के पूर्व भीतर जल ही जल रहता है। लोग नरम छेद मे कोई (नोकदार) चीज चुभो कर जल पी जाते हैं। यह खुर्मे की पनीर के जल के समान होता है और बुरा नही होता।

१ यह ब्याना तथा धौलपुर के मध्य म आगरा से दक्षिण पश्चिम म ४५ मील पर स्थित है और अपने शिकार के लिये बड़ा प्रसिद्ध था।

२ नारजील।

ताड

ताड भी यहा होता है। इसकी शाखायें भी वृक्ष की नोक पर निकलती हैं। जिस प्रकार खुर्मे (खजूर) मे लोग घडा लटका कर उसका रस निकालते और पीते है उसी प्रकार ताड का भी रस निकाल कर पिया जाता है। इसके रस को लोग ताडी कहते हैं। खुर्मे (खजूर) के रस से इसमे अधिक नशा बताया जाता है। ताड की डालियो मे लगभग एक गज तक कोई पत्ता नही होता। इसके उपरान्त शाख की नाक पर ३०-४० पत्ते एक ही स्थान से खुली हुई हथेली के समान निकलते हैं। इन पत्तो की चौडाई लगभग एक गज होती है। लोग अधिकाश हिन्दी लिपि मे इस पर उसी प्रकार लिखते है जिस प्रकार अन्य कागजो पर।

नारगी

नारगी[1] तथा नारगी के समान फल भी हिन्दुस्तान मे होते हैं। लमगानात, बजौर तथा सवाद मे नारगिया अधिक मात्रा मे उगती हैं। लमगानात की नारगी छोटी होती है और उसके एक नाभि होती है। वे बडी स्वादिष्ट, कोमल तथा रस से परिपूर्ण होती हैं। वे खुरासान तथा उस ओर की नारगिया से बिल्कुल नही मिलती जुलती। वे इतनी कोमल होती हैं कि लमगानात से काबुल पहुचते पहुचते बहुत सी नष्ट हो जाती है। लमगानात से काबुल की दूरी १३-१४ यीगाच[2] है। इसके विपरीत अस्तराबाद की नारगिया अपने मोटे छिल्के तथा कम रस के कारण वहा से समरकन्द तक पहुच जाती हैं और उन्हें अधिक हानि नही पहुचती। अस्तराबाद से समरकन्द की दूरी लगभग २७०-२८० यीगाच[3] है। बजौर की नारगिया लगभग बिही के बराबर होती हैं। इनमे बडा अधिक रस होता है और अन्य नारगियों के रस की अपेक्षा इनका रस अधिक खट्टा होता है। ख्वाजा कला ने एक बार मुझे बताया कि, "हमने बजौर की इस प्रकार की नारगिया के एक वृक्ष की समस्त नारगिया तुडवा कर गिनवाईं। वे लगभग ७००० निकली।" मैं हमेशा से समझता था कि नारग अरबी शब्द है। यह बात ठीक निकली कारण कि बजौर तथा सवाद मे प्रत्येक व्यक्ति नारज को नारग कहता है।

लीमूं

लीमू भी यहा होता है। यह बडी अधिक सख्या मे होता है और इसका आकार प्रकार तथा रूप मुर्गी के अडे के बराबर होता है। यदि किसी ने विष खा लिया हो तो उसे लीमू के रेशे उबाल कर यदि इसका काढा पिला दिया जाये तो विष के प्रभाव का अन्त हो जाता है।

१ नारंगी का वर्णन इब्ने बत्तूता ने इस प्रकार किया है :—
इस देश में मीठी नारंगी बहुत बड़ी सख्या में होती है किन्तु खट्टी नारंगी बहुत कम होती है। यहा एक तीसरे प्रकार की भी नारंगी होती है जो खट्टी मिट्ठी होती है। मुझे यह बड़ी स्वादिष्ट ज्ञात होती थी और मैं उसे बड़ी रुचि से खाता था। (रिजवी : 'तुग़लुक़ कालीन भारत' भाग १, पृ० १६८)

२ ६५,७० मील।

३ १३५०—१४०० मील।

तुरज

तुरज[1] भी नारगी से मिलता जुलता फल है। बजौर तथा सवाद निवासी इसे बालग कहते है। इसी कारण वे इसके मुरब्बे को बालग का मुरब्बा कहते है। हिन्दुस्तानी लोग इसे तुरज बजौरी[2] कहते है। तुरज दो प्रकार के होते हैं। एक मीठा तथा बे मज़ा होता है और उसके खाने से जी मचलाने लगता है। मीठा तुरज खाने के काम मे नही आता किन्तु उसका छिलका मुरब्बे के काम आता है। लमगानात के तुरज खाने से भी इसी प्रकार जी मचलाने लगता है। हिन्दुस्तान के तुरज खट्टे होते हैं। इनका शर त बडा स्वादिष्ट होता है और उसे पीने मे बडा आनद आता है। यह छोटे खरबूज़े के बराबर होता है। इसका छिलका मोटा, झुर्रीदार तथा असमतल होता है। इसका एक सिरा पतला तथा नोकदार होता है। नारगी की अपेक्षा इसका रग अधिक पीला होता है। इसके वृक्ष मे तना नही होता और वह छोटा होता है। वह झाडियो मे उगता है और नारगी की पत्तियो से उसकी पत्तिया बडी होती है।

सगतरा

सगतरा[3] नारगी से मिलता जुलता एक अन्य फल होता है। रग तथा आकार-प्रकार मे यह तुरज के समान होता है। इसका छिलका बडा चिकना होता है और उसमें कोई खुरदुरापन नही होता। यह तुरज की अपेक्षा कुछ छोटा होता है। इसका वृक्ष बडा होता है और ज़र्द आलू के बराबर होता है। उसकी पत्तिया नारगी की पत्तियो के समान होती हैं। इसका खट्टापन बडा मज़ेदार होता है। इसका शरबत अत्यत स्वादिष्ट होता है और पीने मे बडा मज़ेदार होता है। लीम[4] के समान यह मेदे को शक्ति पहुचाता है और नारगी के समान मेदे को कमजोर नही करता।

गल गल

नारगी से मिलते जुलते फलो मे एक फल बडा लीमू होता है। हिन्दुस्तान मे इसे गल-गल कहते है यह हस के अडे के समान होता है किन्तु हस के अडो के विपरीत इसके दोनो सिरे बारीक नही होते। सगतरे के छिलको के समान इसका छिलका भी चिकना होता है। इसमे अत्यधिक रस होता है।

जानबीरी

जानबीरी[5] नीबू भी नारगी के समान एक फल होता है। यह पीला होता है किन्तु नारगी के समान पीला नही। इसकी सुगधि तुरज के समान होती है। इसकी खटास भी बडी स्वादिष्ट होती है।

सदा फल

सदा फल भी नारगी के समान ही एक फल होता है। यह नासपाती के समान होता है। इसका

१ चकोतरा।
२ बिजौरा, अधिक बीज वाला।
३ संतरा।
४ नीबू।
५ जंबीर।

रग श्रीफल के समान होता है। पक कर यह मीठा हो जाता है किन्तु नारगी के समान इसकी मिठास से जी नही मचलाता।

अमृत फल

अमृर्द[1] फल भी नारगी के समान एक फल होता है।

करना

करना नारगी के समान ही एक फल होता है। यह लगभग गल-गल के बराबर होता है। इसमे भी खटास होती है।

अमल बेद

अमल बेद भी नारगी से मिलता जुलता फल होता है। तीन वर्ष उपरान्त मैंने पहले पहल उसे आज देखा है।[2] कहा जाता है कि यदि इसमे कोई सूई रख दी जाये तो वह पिघल जायेगी, चाहे यह अत्यधिक खट्टे होने के कारण हो और चाहे किसी अन्य विशेषता के कारण। तुरज तथा लीमू के समान यह भी खट्टा होता है।

वनस्पति : फूल

जासून

हिन्दुस्तान मे विभिन्न प्रकार के फूल होते है। उनमे एक जासून है। इसे कुछ हिन्दुस्तानी गजहल[3] कहते है। यह घास नही होता। इसका तना लाल गुलाब की झाडी के समान होना है किन्तु इसका वृक्ष लाल गुलाब से अधिक लम्बा होता है। जासून के फूल का रग अनार के फूल के रग से अधिक गहरा होता है और यह लगभग लाल गुलाब के बराबर होता है किन्तु जब लाल गुलाब की कली बढ जाती है तो वह खिल जाती है किन्तु जासून की कली से सर्व प्रथम हृदय के समान एक वस्तु निकलती है। तदुपरान्त फूल की पखडिया पैदा होती हैं। ये दोनो यद्यपि एक ही फूल का भाग होती हैं किन्तु इन दोनो के मध्य मे हृदय के समान एक वस्तु इन्ही पत्तियो से निकलती है। यह विशेषता सभी फूलो मे नही पाई जाती। सुन्दर रगीन फूल वृक्ष पर बडे अच्छे लगते है किन्तु वे अधिक दिनो तक नही ठहरते। वे एक ही दिन में मुर्झा जाते हैं। जासून वर्षा ऋतु के चार महीनो मे खूब फूलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लगभग पूरे साल भर फूलता रहता है। यद्यपि यह अत्यधिक फूलता है किन्तु इसमे कोई सुगन्धि नही होती।

कनेर

कनीर[4] भी एक फूल होता है। यह लाल तथा सफेद दोनो रगो का होता है। सताू के फूलो

१ अमृत फल।
२ इससे पता चलता है कि बाबर ने यह वर्णन ६३५ हि० (१५२८-२६ ई०) में लिखा था।
३ गुड्हल।
४ करबीर, कनेर।

की भाति इसमे पाच पखडिया होती हैं। यह सतालू के फल के समान ही होता है किन्तु १४ १५ फूल एक स्थान से खिलते हैं। यदि इन्हें दूर से देखा जाये तो ये एक बडे फूल के समान ज्ञात होते हैं। कनीर की झाडी गुलाब की झाडी की अपेक्षा लम्बी होती है। लाल कनीर मे एक प्रकार की बडी भीनी भीनी सुगन्धि होती है। जामून की भाति यह भी वर्षा ऋतु मे खूब अधिक फूलती है और साल के अधिकाश भाग मे मिलती भी है।

केवडा

केवडे का भी एक फूल होता है। इसकी सुगन्धि भी बडी आनन्ददायक होती है। कस्तूरी का सब से बडा दोष यह है कि वह खुश्क होती है। इसे तर मुश्क कहा जा सकता है जिसकी सुगन्धि बडी आनन्ददायक होती है। इसका वृक्ष बडा सुन्दर होता है। इसके फूल १½ से २ कारीश[1] तक लम्बे होते है। इसकी पत्तिया लम्बी लम्बी होती है। इसके फूल मे काटे भी होते है। जब पत्तिया कली के रूप मे एकत्र रहती है तो बाहरी पत्तिया हरी तथा काटेदार होती है और भीतरी पत्तिया नरम तथा सफेद हाती हैं। इन्ही बीच की पत्तियो म से कोई ऐसी वस्तु उत्पन्न हाती है जिसमे से बडी ही उत्तम सुगन्धि निकलती है। जब इसका वृक्ष प्रारम्भ मे निकलता है और उसमे कोई तना नहीं पैदा होता तो यह नर नरकट की झाडी के समान होता है किन्तु इसकी पत्तिया अधिक चौडी तथा काँटेदार हाती हैं। जा वस्तु इसके तने का काम देती है वह बडी ही कुरूप होती है। केवल इसकी जडें ही दिखाई पडती है।

यासमन

यासमन[2] भी एक फूल होता है। सफेद यासमन का चम्पा कहते है। यह हमारे यासमन फूल से बडा होता है और इसकी सुगन्धि तेज़ होती है।

चम्पा[3] का वृक्ष बडा घना तथा देखने म बडा सुन्दर हाता है। इसके फूल की सुगन्धि बडी ही उत्तम होती है मानो बनफ्शा महक रहा हो।

नरगिस

नरगिस[4] पीले रग का होता है। यह देखने मे सोसन[5] के समान किन्तु उमस छोटा होता है।

ऋतुये

उन देशो[6] मे चार ऋतुयें होती है किन्तु हिन्दुस्तान म तीन ही ऋतुयें होती है। ४ मास गरमी ४ मास बरसात तथा चार मास जाडे के होते है। यहा के महीने चन्द्रोदय के हिसाब से प्रारम्भ होते हैं।

१ १३½ से १८ इंच।
२ चमेली के प्रकार का एक फूल।
३ यह भाग तुर्की मूल पोथी मे नहीं है, केवल अनुवाद म ही है।
४ प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार के सफ़ेद रंग के फूल लगते है। फ़ारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं।
५ सौसन। एक नीला फूल जिसकी पखड़ी जिह्वा के समान होती है।
६ हिन्दूकुश के पश्चिम के।

हर तीन वर्ष के उपरान्त ये साल मे एक मास जोड देते हैं। यदि एक मास वर्षा ऋतु मे जोडा जाता है तो दूसरा महीना तीन वर्ष उपरान्त शीत ऋतु मे जोडा जाता है और इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु मे। ये लोग इसी हिसाब से महीनो की गणना करते हैं।

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ तथा आषाढ गरमियो के महीने है। इनसे सम्बन्धित राशि मीन, मेष, वृष तथा मिथुन हैं। श्रावण, भाद्र, कुआर तथा कार्तिक वर्षा ऋतु के महीने हैं। इनसे सम्बन्धित राशिया कर्क, सिंह, कन्या तथा तुला है। अग्रहायण, पौष, माघ तथा फाल्गुन शीत ऋतु के महीने हैं। इनसे सम्बन्धित राशिया वृश्चिक, धन, मकर तथा कुभ है।

हिन्दुस्तान वाले वर्ष को चार-चार मास की तीन ऋतुओ मे विभाजित करने के उपरान्त प्रत्येक ऋतु के ज़ोर के दो दो महीने पृथक् कर देते हैं। इस प्रकार ग्रीष्म ऋतु के जोर के दो महीने ज्येष्ठ तथा आषाढ है, जो इस ऋतु के अन्तिम मास होते हैं। वर्षा ऋतु के प्रथम दो मास श्रावण तथा भाद्र अधिक वर्षा के मास होते है। शीत ऋतु के मध्य के दो मास पौष तथा माघ अधिक जाडे के महीने होते हैं। इस विभाजन से हिन्दुस्तान मे छ ऋतुयें हो जाती हैं।

सप्ताह के दिन

इन लोगो ने दिनो के भी नाम रख लिये हैं शनिवार, रविवार, सोमवार, मगलवार, बुधवार, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार।

समय का विभाजन

हमारे देशो मे दिन और रात को २४ भागो मे विभाजित किया जाता है। प्रत्येक भाग को एक साअत कहते हैं। हर साअत को ६० भागो मे विभाजित करते हैं। प्रत्येक भाग को एक दक़ीका कहते है। इस प्रकार पूरे दिन तथा रात मे १४४० दकीके होते है। एक दकीके मे बिस्मिल्लाह[1] सहित छ बार फातेहा[2] पढा जा सकता है। इस प्रकार दिन तथा रात मे बिस्मिल्लाह सहित ८६४० बार फातेहा पढा जा सकता है।

हिन्दुस्तान वाले रात और दिन को ६० भागों मे विभाजित करते हैं। प्रत्येक भाग घडी कहलाता है। ये दिन तथा रात को चार-चार भागो मे विभाजित करते है और प्रत्येक भाग पहर कहलाता है जिसे फारसी मे पास कहते हैं। उन देशों[3] मे पास तथा पासबान के विषय मे सुना जाता था किन्तु इनके विषय में विस्तार से किसी को कोई ज्ञान न था। इसी उद्देश्य से हिन्दुस्तान के सभी बडे-बडे नगरो मे कुछ ऐसे लोग नियुक्त किये जाते है जो घडियाली कहलाते हैं। दो अगुल मोटा, थाली के बराबर एक पीतल का टुकडा काट लिया जाता है, जो घडियाल कहलाता है। इसे किसी ऊचे स्थान पर लटका दिया जाता है।[4]

१ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम (अल्लाह के नाम से जो रहमान तथा रहीम है)। मुसलमान लोग प्रत्येक कार्य के करने के पूर्व साधारणतः उपर्युक्त वाक्य का उच्चारण करते हैं किन्तु कुरान का कोई अध्याय प्रारम्भ करने के पूर्व इस वाक्य का उच्चारण परमावश्यक है।

२ फ़ातेहा :—कुरान का प्रथम सूरा (अध्याय)। इस सूरे के पाठ का बड़ा पुण्य बताया गया है।

३ हिन्दूकुश के उस पार के।

४ फ़ीरोज तुग़लुक के तास घड़ियाले के विषय में देखिये शम्स सिराज अफ़ीफ़ की 'तारीख़े फ़ीरोज शाही' पृ० ३५५-३६० तथा 'तुग़लुक कालीन भारत' भाग २ (अलीगढ १९५७), पृ० १०८-१०९।

इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान वाले घडी के प्याले के समान एक बरतन रखते है। उसके पेंदे मे छेद होता है। हर घडी पर वह भर जाता है। घडियाली इस बरतन मे जल भर कर प्रतीक्षा किया करते हैं। जब एक बरतन भर जाता है तो वे मुगरी से घडियाल पर एक चोट मार देते हैं। जब वह बरतन पुन भर जाता है तो वे दो बार मुगरी को घडियाल पर मार देते हैं। इसी प्रकार पहर के अन्त तक वे एक एक बढा कर मुगरी मारते जाते हैं। पहर समाप्त हो जाने के उपरान्त ये जल्दी जल्दी कई बार घडियाल बजाते है और यदि एक पहर समाप्त हो जाता है तो जल्दी जल्दी बजाने के उपरान्त क्षण भर ठहर कर एक बजा देते हैं। यदि दूसरा पहर समाप्त होता है तो जल्दी जल्दी बजाने के उपरान्त दो बजाते हैं, इसी प्रकार तीन और चार। जब दिन के चार पहर समाप्त हो जाते है तो रात के चार पहरा मे भी इसी नियम से घड़ियाल बजाये जाते हैं।

इससे पूर्व घडियाली लोग[1] रात एव दिन मे पहर समाप्त हो जाने के उपरान्त ही पहर का चिह्न बजाया करते थे। रात्रि मे जब लोग जागते थे तो तीसरी घडी अथवा चौथी घडी के बजने के समय उन्हे इस बात का पता न लग पाता था कि यह दूसरा पहर है अथवा तीसरा। मैने आदेश दे दिया कि रात्रि तथा बदली मे घडी के उपरान्त पहर का भी चिह्न बजाया जाये। उदाहरणार्थ रात्रि के प्रथम पहर की तीसरी घडी को बजाने के उपरान्त घडियाली लोग ज़रा सा ठहर कर पहर का चिह्न बजा दें जिससे यह पता चल जाये कि यह तीसरी घडी पहले पहर की है, इसी प्रकार रात्रि के तीसरे पहर की चार घडी बजा कर घडियाली ठहर जायें और तीसरे पहर का चिह्न बजायें, जिससे यह पता चल जाये कि यह चौथी घडी रात के तीसरे पहर की है। इस व्यवस्था से बडा लाभ हुआ। जो कोई रात मे जाग जाता था और घटा सुनता था तो उसे पता चल जाता था कि यह रात के किस पहर की कौन सी घडी है।

इसी प्रकार घडी को भी हिन्दुस्तानी ६० भागो मे विभाजित करते है। प्रत्येक भाग एक पल कहलाता है। इस प्रकार प्रत्येक रात्रि तथा दिन मे ३५०० पल होते हैं।[2]

कहा जाता है कि एक पल मे ६० बार आख खोली तथा बन्द की जा सकती है। रात दिन मे इस हिसाब से २१६,००० बार आंख खोली तथा बन्द की जा सकती है। अनुभव से पता चलता है कि एक पल मे ८ बार बिस्मिल्लाह सहित कुल हुवल्लाह[3] पढा जा सकता है। इस प्रकार पूरी रात तथा पूरे दिन मे २८,००० बार बिस्मिल्लाह सहित कुल हुवल्लाह पढा जा सकता है।

तोल

हिन्दुस्तान वालो ने तोलो की व्यवस्था भी बडी अच्छी की है —

८ रत्ती = १ माशा

१ घडियाल बजाने वाले।

२ यह हिसाब इस प्रकार है :—

६० बिपल = १ पल

६० पल = १ घड़ी (२४ मिनट)

६० घड़ी अथवा ८ पहर = १ दिन-रात

३ कुरान का एक बड़ा संक्षिप्त सूरा (अध्याय) जिसमें ईश्वर के एक्य का वर्णन है।

४ माशा = १ टाक = ३२ रत्ती
५ माशा = १ मिस्काल = ४० रत्ती
१२ माशा = १ तोला = ९६ रत्ती
१४ तोला = १ सेर

हर स्थान पर यह निश्चित है कि—

४० सेर = १ मनवान[1]
१२ मनवान = १ मनी
१०० मनी = १ मिनासा

मोती तथा जवाहिरात टाक के हिसाब से तोले जाते है।

संख्या

हिन्द वालो को संख्या का भी बडा ही उत्तम ज्ञान है —

१०० हज़ार को वे लाख कहते हैं।
१०० लाख को वे एक करोर[2] कहते हैं।
१०० करोर को वे एक अरब कहते हैं।
१०० अरब को वे एक करब[3] कहते हैं।
१०० करब को वे एक नील कहते हैं।
१०० नील को वे एक पदम[4] कहते है।
१०० पदम को वे एक सग कहते है।

इन संख्याओ का निश्चित होना इस बात का प्रमाण है कि हिन्दुस्तान बडा धनी देश है।

हिन्दुस्तान के हिन्दू निवासी

हिन्दुस्तान के अधिकाश निवासी काफिर है। हिन्द वाले काफिर को हिन्दू कहते है। अधिकाश हिन्दू पुनर्जन्म मे विश्वास रखते हैं। हिन्दुस्तान के समस्त आमिल, कारीगर तथा श्रमिक हिन्दू हैं। हमारे देश मे विभिन्न जगली कबीला के लोगो का नाम कबीले के नाम पर होता है। यहा जो लोग बस्तियो एव ग्रामो मे रहते हैं उनके भी नाम कबीलो[5] के नाम पर होते हैं। यहा जितने भी शिल्पकार हैं उनके पिता तथा पितामह भी पीढियो से वही कार्य करते चले आ रहे हैं।

हिन्दुस्तान के दोष

हिन्दुस्तान मे बहुत कम आकर्षण है। यहा के निवासी न तो रूपवान् होते है और न सामाजिक व्यवहार मे कुशल होते हैं। ये न तो किसी से मिलने जाते है और न कोई इनसे मिलने आता है। न इनम

१ मन।
२ करोड़।
३ खरब।
४ पद्म।
५ सम्भवत जाति के नाम।

प्रतिभा होती है और न कार्य क्षमता। न इनमे शिष्टाचार होता है और न उदारता। कला कौशल मे न तो ये किसी अनुपात पर ध्यान देते है और न नियम और गुण पर। न तो यहा अच्छे घोडे होते है और न अच्छे कुत्ते, न अंगूर होता है, न खरबूजा, और न उत्तम मेवे। यहा न तो बरफ मिलती है और न ठडा जल। यहा के बाजारा मे न तो अच्छी रोटी ही मिलती है और न अच्छा भोजन ही प्राप्त होता है। यहा न हम्माम[1] हैं न मदरसे[2], न शमा, न मशाल और न शमा दान।

शमा तथा मशाल के स्थान पर यहा बहुत से मैले कुचैले लोगा का एक समूह होता है जो डीवटी कहलाते हैं। वे अपने बायें हाथ मे एक छोटी सी तीन पाव की लकडी लिये रहते हैं। उसके एक किनारे

१ गरम स्नानागार।

२ बाबर का यह वर्णन बड़ा ही पूर्णार्थक है। फ़ीरोज शाह के मदरसों के विषय में मुतहर ने सविस्तार उल्लेख किया है। वह लिखता है —'ससार के बादशाह के मदरसे म एक नया प्रज्वलित नगर) दृष्टिगत होता था। उस प्रकार का स्थान न किसी की आँखों ने देखा न किसी के कानों ने उसके विषय म सुना था। हमने सर्व प्रथम हौज़े खास के चारों ओर चक्कर लगाये। जब हम हौज़ के बन्द की ओर पहुँचे और ऊँचाई की ओर बढे तो हमें स्वर्ग के समान एक सुसज्जित नगर दृष्टिगत हुआ।

हौज की लीला देखने के उपरान्त जब हम उस शुभ भवन (मदरसे) म प्रविष्ट हुये तो हमें एक खुला हुआ विस्तृत समतल स्थान मिला। उसका प्रागण हृदयग्राही था और उसका विस्तार जीवन प्रदान करता था। उसकी धूल से कस्तूरी की वर्षा होती थी और उसकी सुगन्धि अम्बर से परिपूर्ण थी। हरियाली सुम्बुल, (एक सुगधित घास जो फ़ारसी उर्दू कविता में सुन्दर सुन्दर घुघराले केश का उपमान मानी गयी है), रैहान (एक सुगन्धित घास) गुलाब तथा लाला (एक प्रसिद्ध फूल) खिले हुये थे और जहाँ तक दृष्टि जाती थी बडे सुव्यवस्थित ढग से लगे हुये थे। अनार, नारंगी, नीबू सेब तथा अंगूर इस प्रकार लगे हुये थे कि मानो आगे आने वाले वर्ष के फल इसी वर्ष लग गये हों। प्रत्येक दिशा में बुलबुल गा रही थी। ऐसा ज्ञात होता था कि उनके पर्नों म चग (डफ़ की शक्ल का एक बाजा, तथा चोंच में बाँसुरी है। इस उद्यान म एक चबूतरा था जिसकी लम्बाई चौड़ाई ४० हाथ थी। उसके ऊपर एक बहुत ही ऊँचा गुम्बद था। भवन के कोठे तथा बुर्ज दुलहिन के मुख के समान सोने से सजे थे। द्वार तथा दीवार दर्पण के समान थे। उसकी दीवार का चूना तथा पत्थर कलई तथा संगमरमर के थे। उसके तख्ते तथा द्वार की लकड़ी चन्दन की थी। शीराज यमन तथा दमिश्क के कालीन से उसका बाहरी तथा भीतरी भाग सुसज्जित था।

जब हम उसमें प्रविष्ट हुये तो हमें उसके भीतर एक स्वर्ग मिला। विद्वान् लोग प्रत्येक दिशा में फ़रिश्तों के समान उपस्थित थे। उनमें अरबी के विद्वान् तथा एराकी ज्ञान विज्ञान के जानकार लोग थे, सभी शाम को लबादे तथा मिस्र की पगड़ियाँ पहने थे। प्रत्येक अद्वितीय था और हर प्रकार की कला को जानता था। प्रत्येक अपनी बुद्धि के कारण प्रसिद्ध था। वे फ़साहत (सुन्दर तथा सुबोध भाषा) में बुखारा तथा समरकन्द में और बलागत (अलकार से परिपूर्ण भाषा) में हिजाज, यमन तथा नज्द म प्रसिद्ध थे। उन लोगों के प्रधान, जो सिर से पाव तक बुद्धि एवं सम्मान थे, जलालुद्दीन रूमी थे। वे कुरान को सात विभिन्न नियमों से पढ सकते थे, और १४ विज्ञान जानते थे। मुहम्मद साहब की हदीसों के पाँचों प्रसिद्ध संग्रह का उन्हे ज्ञान था। और वे चारों मज़हबों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रखते थे। हमने उनका जादू रूपी व्याख्यान सुना और उनके व्याख्यान द्वारा तफ़सीर (कुरान की टीका) तथा हदीस (मुहम्मद साहब की वाणी का संग्रह) के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। मदरसे में प्रत्येक दिशा में विद्यार्थी वाद विवाद कर रहे थे। वाद विवाद का शोर समाप्त हो जाने के उपरान्त ख्वान सालार (भोजन का प्रबन्धक) भोजन लाया। भोजन में तीतर, कबूतर के बच्चे, चकोर बुलग मछली, मुर्ग तथा मोटे ताज़े बकरी के बच्चे, बादाम मिला

र मोम बत्ती की नोक के समान एक वस्तु लगी रहती है। इसमे अगूठे के बराबर एक मोटी सी बत्ती लगी रहती है। वे अपने दाये हाथ मे एक तुम्बी सी लिये रहते है। उसमे एक बारीक छेद होता है जिससे जब बत्ती को तेल की आवश्यकता होती है तो उस पर बडी पतली धार से तेल टपकाया जाता है।

बड़े बडे लोग सौ-सौ, दो दो सौ इस प्रकार के डीवटी रखते है। हिन्दुस्तान वाले उनका प्रयोग शमा तथा मशाल के स्थान पर करते है। यदि यहा के बादशाहो तथा बेगो (अमीरो) को रात्रि मे शमा की आवश्यकता होती है तो वही मैले कुचैले डीवटी इन दीपको को लेकर निकट खडे हो जाते है।

बडी बडी नदियो तथा तालाबो, जो कन्दराओ तथा गड्ढो मे बहते रहते है के अतिरिक्त (यहा जल-धारायें नही मिलती)। इनके उद्यानो तथा भवनो मे जल धारायें नही होती। इनके घरो मे कोई आकर्षण नही होता। न उनमे हवा जाती है, न उनमे कोई सुडौलपन होता है और न अनुपात।

कृषक तथा निम्न वर्ग के लोग अधिकाश नगे ही रहते हैं। वे लोग एक लत्ते का टुकडा बाधते है जो लगोटा कहलाता है। नाभि के नीचे एक लत्ते के टुकडे को दोनो जाघो के बीच से लेते हुये पीछे ले जा कर बाध देते है। स्त्रिया भी लुङ्गी बाधती है। इसका आधा भाग कमर के नीचे होता है और दूसरा सिर पर डाल लिया जाता है।[1]

हिन्दुस्तान की विशेषतायें

हिन्दुस्तान की सब से बडी विशेषता यह है कि यह बहुत बडा देश है। यहा अत्यधिक सोना-चादी है। वर्षा ऋतु मे यहा की हवा बडी ही उत्तम होती है। कभी कभी दिन भर मे १०-१५-२० बार वर्षा हो जाती है। यहा की वर्षा से एकबारगी सैलाब आ जाता है और जिस स्थान पर लेश मात्र का भी जल नही होता वहा नदिया बहने लगती है। पानी बरसने के समय तथा वर्षा ऋतु मे बडी ही उत्तम हवा चलती है। स्वास्थवर्धक तथा आकर्षक होने के कारण इसकी तुलना असम्भव है। इसका दोष यह है कि हवा बडी ही तर तथा नम होती है। उन देशो[2] के धनुष हिन्दुस्तान की वर्षा के उपरान्त खीचे भी नही जा सकते, वे नष्ट हो जाते है। केवल धनुष ही नही अपितु हर वस्तु प्रभावित होती है, अस्त्र शस्त्र, पुस्तकें, वस्तु तथा बरतन, सभी। घर भी बहुत दिनो तक नही चलते।

केवल वर्षा ऋतु मे ही नही अपितु शीत काल तथा ग्रीष्म ऋतु मे भी हवा बडी ही उत्तम रहती है। इन दिनो मे उत्तरी पश्चिमी हवा के लगातार चलने के कारण मिट्टी धूल बहुत बढ जाती है। ग्रीष्म

हुआ तथा सुगन्धित अनारदाना जिस पर केसर, चन्दन तथा कस्तूरी छिड़की हुई थी, भुनी हुई टिक्यिा, जलेबी, तथा गीली और सूखी बादाम की टिकिया प्रत्येक दिशा में ढेर थी। सचमुच स्वर्ग की बहार सजी हुई थी। थाल पत्ते के समान तथा प्याले नरगिस (एक प्रसिद्ध फूल) के समान थे। थाल के सामने खट्टे फल तथा अचार भी थे। आबदार (जल का प्रबन्ध करने वाले) प्यालों मे नारगी मिला हुआ अनार का शरबत तैयार किये हुये थे। मिश्री तथा गुलाब मिला हुआ शरबत और कस्तूरी मिला हुआ शहद उपस्थित था। बगदार (पान का प्रबन्ध करने वाले) सोने तथा चादी के बगदानों (पान रखने के बरतन) मे पान देने में व्यस्त थे। गुलाब के पत्तों के समान पानों के बीडे काटे से छेद कर तैयार किये गये थे। भोजन के उपरान्त लोगों ने बादशाह तथा शाहजादों की समृद्धि हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।'

१ साड़ी।

२ बाबर के वतन के।

जहा तक हिन्दुस्तान की भूमि तथा निवासियो के विषय मे प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो सका उसका उल्लेख कर दिया गया। लिखने के योग्य जो कुछ बाद मे ज्ञात होगी उनको मैं बाद मे लिखूगा।

आगरा के खजाने का वितरण

(१२ मई)—शनिवार २९ रजब को खज़ाने का निरीक्षण तथा वितरण प्रारम्भ हुआ। हुमायू को खज़ाने से ७० लाख प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त एक खज़ाना इस बात का पता लगाये बिना कि इसमे क्या है तथा लिखे बिना उसी तरह उसे दे दिया गया। कुछ बेगो[1] को १० लाख और कुछ को ८, ७ तथा ६ लाख प्रदान किये गये[2]। जितने लोग सेना मे थे,—अफ़गान, हज़ारा, अरब, बिलोच इत्यादि—उन्हें उनकी श्रेणी के अनुसार खज़ाने से नक्द इनाम दिये गये। प्रत्येक व्यापारी, विद्यार्थी अपितु प्रत्येक व्यक्ति को जो इस सेना के साथ आया था इनाम तथा दान द्वारा पूर्ण रूप से लाभ पहुचाया गया और प्रसन्न कर दिया गया। जो लोग इस सेना मे न थे, उन्हें भी इस खज़ाने से अत्यधिक इनाम तथा दान भेजा गया उदाहरणार्थ कामरान को १७ लाख, मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को १५ लाख, तथा अस्करी, एव हिंदाल अपितु समस्त सम्बन्धियो, निकटवर्तियों एव छोटे बच्चो को अत्यधिक लाल व सफेद वस्त्र जवाहिरात तथा दास भेजे गये। उस देश[4] के बेगो (अमीरो) तथा सैनिको को भी बहुत कुछ उपहार भेजे गये। समरकन्द, खुरासान काशगर तथा एराक मे जो बहुत से सम्बन्धी थे उन्हें भी बहुमूल्य उपहार भेजे गये। खुरासान तथा समरकन्द के मशायख को भी नज़रें[5] भेजी गई और इसी प्रकार मक्का और मदीना को। काबुल तथा वरसक[6] की घाटी की ओर के प्रत्येक नर-नारी, दास, स्वतत्र तथा बालिग एव नाबालिग को एक-एक शाहरुखी इनाम मे दी गई।[7]

१ अमीरों।
२ अर्सकिन के अनुसार, लगभग ५६,७०० पौंड हुमायूँ को तथा ८१००, ६४८०, ५६७० तथा ४८६० पौंड अन्य अमीरों को दिये गये। उस युग को देखते हुये यह धन बहुत अधिक था।
३ गुलबदन बेगम ने दानों का वर्णन अधिक विस्तार मे दिया है।
४ काबुल इत्यादि।
५ चढ़ावा।
६ बदख्शा में।
७ फ़िरिश्ता ने बाबर के दान का हाल इस प्रकार लिखा है — २६ रजब को बाबर हिन्दुस्तान के बाद शाहों के खज़ीने एवं दफ़ीने के निरीक्षण हेतु पहुँचा, ३००,००० रुपये नकद और एक बन्द खज़ाना हुमायूँ मीर्ज़ा को प्रदान किया। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा को चहार क़बा, पेटी जड़ाऊ तथा २ लाख रुपये प्रदान किये। उपस्थित एव अनुपस्थित मीर्ज़ाओं, अमीरों तथा सैनिकों अपितु व्यापारियों एव समस्त आदमियों को जो उस अभियान में साथ थे उन्ह उनकी श्रेणी के अनुसार खज़ाने से लाभान्वित कराया। समरकन्द, ख़ुरासान, काशगर तथा एराक म अपने मित्रों एव सम्बन्धियों को उपहार प्रेषित किये। मक्का, मदीना, करबलाये मुअल्ला, नजफ़े अशरफ़, मशहदे मुक़द्दस, एव ख़ुरासान तथा समरकन्द के अधिकाश मज़ारों को अत्यधिक धन भेजा और उस क्षेत्र क सहायता के पात्रों को प्रसन्न कर दिया। काबुल क प्रत्येक निवासी, स्त्री तथा पुरुष, दास एव स्वतन्त्र, छोटे बड़े, धनी निर्धन को एक एक शाहरुखी जोकि एक मिस्काल चादी के बराबर होती है, जन गणना करवा कर भेजी। सबको प्रसन्न कर दिया। जो कुछ बहुत से बादशाहों ने वर्षों में एकत्र किया था, वह सब उसने एक दरबार में दान कर दिया। बादशाह के कलन्दर के नाम से ससार में प्रसिद्ध होने का यही कारण है।

ऐतिहासिक वर्णन

बाबर का विरोध

जब हम पहले पहल आगरा पहुचे तो यहा के लोगो एव हमारे आदमियो के मध्य मे परस्पर अत्यधिक विरोध एव घृणा की भावनायें थी। सैनिक तथा प्रजाजन हमारे आदमियो के भय से भाग भाग जाते थे।

देहली तथा आगरा के अतिरिक्त सभी स्थानों के किलो के स्वामियो ने अपने अपने किले दृढ कर लिये थे और किसी ने भी अधीनता स्वीकार न की थी। सबल[1] मे कासिम सम्बली था, ब्याना मे निजाम खा तथा मेवात मे हसन खा मेवाती। समस्त अशान्ति एव विद्रोह का नेता वही दुष्ट मुलहिद[2] था। दोलपुर[3] मे मुहम्मद ज़ैतून था, ग्वालियर मे तातार खा सारग खानी था, रापरी[4] मे हुसेन खा नोहानी था, इटावा मे कुतुब खा था, और कालपी मे आलम खा। कन्नौज तथा गगा के उस पार[5] के स्थान अफगानो के अधिकार मे थे जो खुल्लमखुल्ला विरोध कर रहे थे। उनमे नसीर खा नोहानी, मारुफ फर्मुली तथा बहुत से अन्य अमीर थे। इबराहीम की मृत्यु के ३-४ वर्ष पूर्व से इन लोगो ने विद्रोह कर रखा था और जब मैंने इबराहीम को पराजित किया तो वे कन्नौज तथा कन्नौज के आगे (पूर्व) के समस्त प्रदेश अपने अधिकार मे किये हुये थे। इस समय कन्नौज से दो तीन पडाव इस ओर[6] आकर वे लोग ठहरे हुये थे और दरया खा नोहानी के पुत्र बिहार खा को अपना बादशाह बना कर उसे सुल्तान मुहम्मद की उपाधि दे रक्खी थी। मरगूब नामक दास महावन[7] मे था। वह वही, कुछ समय तक हमारे इतने समीप रहा किन्तु वह और अधिक निकट न आया।

बाबर की सेना में असतोप

जब हम आगरा पहुचे तो ग्रीष्म ऋतु थी। वहा के समस्त निवासी भय के कारण भाग खडे हुये थे। न तो हमारे लिये और न हमारे घोडों के लिये चारा उपलब्ध था। गाव वालों ने हमसे शत्रुता एव घृणा के कारण चोरी तथा डकैती प्रारम्भ कर दी थी। मार्गों पर यात्रा न होती थी। खजाने के वितरण के उपरान्त हमे अभी इतना अवकाश न मिला था कि प्रत्येक परगने तथा स्थान मे शक्तिशाली आदमी भेज सकते। इसके अतिरिक्त उस वर्ष अत्यधिक गरमी पड रही थी। विषैली हवा ने लोगों को गिरा कर ढेर कर दिया[8] और बहुत बडी सख्या मे वे मरने लगे।

१ सम्भल।
२ अधर्मी; इस शब्द से हसन खाँ के धार्मिक विचारों के विषय में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता अपितु जिस प्रकार हिन्दू शत्रुओं के लिये 'दुष्ट काफ़िर' इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ उसी प्रकार मुसलमान घोर शत्रु के लिये 'मुलहिद' का। बदायूनी ने बाबर के शब्दों को और भी बढा कर लिखा है।
३ धौलपुर।
४ मैनपुरी ज़िले (उत्तर प्रदेश) मे, मैनपुरी के दक्षिण-पश्चिम मे ४४ मील पर।
५ पूर्व की ओर।
६ पश्चिम की ओर।
७ मथुरा ज़िले (उत्तर प्रदेश) में यमुना के बायें तट के समीप।
८ बीमार डाल दिया।

विभिन्न स्थानो को आदमियो का भेजा जाना

इस अवसर पर मुल्ला अपाक को इस आशय से कोल भेजा गया कि वह उस क्षेत्र के तरकश बन्दा[1] एव सैनिको के पास प्रोत्साहन-युक्त फरमान ले जाये।

(इससे पूर्व मुल्ला अपाक की दशा बडी ही शोचनीय थी। उसने दो तीन वर्ष पूर्व अपने बडे तथा छोटे भाइयो को सगठित कर लिया था और वह उन लोगो तथा अऊम्कजाई एव अन्य अफगानो सहित सिन्द नदी के तट पर उपस्थित हुआ था।)

शेख गूरन[2] ने मेरी सेवा मे उपस्थित होकर आज्ञाकारिता एव निष्ठा प्रदर्शित की। वह अपने साथ दोआब के मध्य के २-३ हज़ार सैनिक एव तरकशबन्द लाया जिन्हें उसने मेरी सेवा मे उपस्थित किया।

यूनुस अली देहली से आगरा की यात्रा मे मार्ग भूल गया था और हुमायू से पृथक् हो गया था। *उसकी अली खा फर्मुली के पुत्रो एव सहायको से मुठभेड हो गई और एक साधारण से युद्ध के उपरान्त उसने* उन्हें बन्दी बना लिया और यहा ले आया। इससे लाभ उठाकर अली खा के जो पुत्र बन्दी बनाये गये थे उनमे से एक को उसके पिता के पास दौलत कदम तुर्क के पुत्र मीर्ज़ा मुगूल के साथ इस आशय से भेजा गया कि वे अली खा को प्रोत्साहन का फरमान पहुचायें। अली खा इस अशान्ति के समय मेवात चला जा चुका था। वह मीर्ज़ा मुगूल की वापसी पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसे आश्रय प्रदान किया गया और इस स्थान के परगनो मे से उसे २५ लाख के परगने प्रदान किये गये।

पूर्व के विद्रोहियो का दमन

सुल्तान इबराहीम ने मुस्तफा फर्मुली तथा फीरोज खा सारग खानी तथा कुछ अन्य अमीरा का पूर्व के विद्रोहियो के दमन हेतु नियुक्त किया था। मुस्तफा ने उन लोगों से पूर्ण रूप से युद्ध कर के कई बार उन्हें बुरी तरह पराजित किया था। इबराहीम की पराजय के पूर्व उसकी मृत्यु हो गई थी। जिस समय इबराहीम का मुझसे युद्ध हो रहा था तो शेख बायज़ीद अपने बडे भाई के आदमियो का नेतृत्व करता रहा। वह इस समय, फीरोज खा, महमूद खा नोहानी तथा काज़ी जिया सहित मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। मैंने उनके प्रति उनकी प्रार्थना से अधिक कृपा एव दया प्रदर्शित की। फीरोज खा को जूनपुर (जौनपुर) से १ करोड, ४६ लाख तथा ५००० तन्के, शेख बायज़ीद को १ करोड, ४८ लाख तथा ५०,००० तन्के अवध से, महमूद खा को ९० लाख तथा ३५,००० तन्के गाजीपुर से और काज़ी जिया को २० लाख (तन्के) प्रदान किये।

अन्य अधिकारियो को इनाम

शव्वाल की ईद[3] के कुछ दिन उपरान्त सुल्तान इबराहीम के अन्त पुर के मध्य के गुम्बददार

१ निषंग बाधने वाले सैनिकों।
२ गूरान। *बदायूनी के अनुसार संगीत म कोई उसका मुकाबला न कर सकता था।*
३ वह ईद जो रमज़ान मास के पूरे महीने के रोज़े के बाद मनाई जाती है। ९३२ हि० (१५२५-२६ ई०) मे यह ईद ११ जुलाई १५२६ ई० को पड़ी थी।

भवन[1] के ऐवान[2] मे, जिसके स्तम्भ पत्थर के थे, एक बहुत बडी सभा हुई। इस सभा मे हुमायू को एक चार कब[3], एक तलवार की पेटी और एक तीपूचाक घोडा सुनहरी ज़ीन सहित, चीन तीमूर सुल्तान, महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा को चार कब एव तलवार तथा कटार की पेटिया प्रदान की गईं। बेगो (अमीरो) तथा वीरो को उनकी श्रेणी के अनुसार तल्वार तथा कटार की पेटिया और खिलअतें निम्नाकित तालिका के अनुसार प्रदान की गईं

२ तीपूचाक घोडे ज़ीनो सहित,
१६ रतन-जटित कटार
८ ऊपरी वस्त्र
२ जडाऊ तलवारा की पेटिया
जडाऊ जम्धर
२५ रतन-जटित खजर
सुनहरी मूठ के हिन्दुस्तानी चाकू

इस सभा के दिन बडे आश्चर्यजनक रूप से वर्षा हुई। १३ बार पानी बरसा। बहुत से लोगो को बाहर स्थान दे दिये गये थे। उनके स्थान डूब गये।

सम्भल पर अधिकार

मुहम्मदी कूकूल्दाश[4] को सामाना[5] प्रदान कर दिया गया था और उसे यह आदेश दिया गया था कि वह सम्बल[6] पर आक्रमण करे किन्तु हुमायू को हिसार फीरोज़ा के अतिरिक्त, जो उसे पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया गया था, अब सम्बल भी प्रदान कर दिया गया। हिन्दू बेग उसकी अधीनता मे रहा। इस प्रबन्ध के कारण हिन्दू बेग को मुहम्मदी बेग के स्थान पर दोआब के मध्य के स्थानो पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया। कित्ता बेग, बाबा कश्का का भाई मलिक कासिम, उसके बडे तथा छोटे भाई मुल्ला अपाक तथा शेख गूरन[7] तथा तर्कश-बन्दों[8] को उसके साथ किया गया।

कासिम सम्बली के पास से लोग यह सदेश लेकर तीन चार बार से आ रहे थे कि, "बिबन हरामखोर[9] ने सम्बल को घेर लिया है, और हमें विवश कर दिया है। यदि आप शीघ्रातिशीघ्र पहुच जायें तो अच्छा है।" बिबन ने (जो हमारे साथ था) पर्याप्त सेना तथा तैयारी कर ली थी किन्तु वह अब

१ सिकन्दर लोदी तथा इबराहीम लोदी आगरा में निवास करते थे। सिकन्दर लोदी ने सिकन्दरा के समीप बारादरी महल का निर्माण कराया था। लोदी टीले पर कहा जाता है कि बादलगढ का निर्माण कराया गया था।
२ ऐवान —दालान।
३ एक प्रकार की खिलअत।
४ फ़ारसी में कुकुल्ताश।
५ पटियाला में।
६ सम्भल उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में, मुरादाबाद नगर के दक्षिण पश्चिम में २२ मील पर।
७ इसे 'गूरान' भी लिखा गया है।
८ निषग बाधने वाले।
९ पिशाच, दुष्ट।

हमारा साथ छोड कर पहाडियो के आचल मे भाग गया था और जो अफगान तथा हिन्दुस्तानी हमारा साथ छोड कर भाग गये थे, उन्हें अपनी ओर मिला लिया था। उसने सम्बल के किले में सेना की सख्या कम पाकर उसका अवरोध प्रारम्भ कर दिया। हिन्दू वेग, किता वेग तथा अन्य लोग जो आक्रमण हेतु भेजे गये थे अहार[1] के घाट पर पहुचे और नदी पार करने की तैयारिया करने लगे। उन्होने बाबा कश्का के मलिक कासिम, उसके बडे तथा छोटे भाई को आगे भेज दिया। मलिक कासिम नदी पार करके अपने तथा अपने भाइयों के १००-१५० आदमियों सहित मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय सम्बल पहुच गया। बिबन भी सेना तैयार करके अपने शिविर से निकला। मलिक कासिम तथा उसके सैनिक शीघ्रातिशीघ्र अग्रसर हुए और उन्होने किले को अपने पीछे करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। बिबन मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। मलिक कासिम ने उसकी सेना के बहुत से लोगो के सिर काट डाले और उसके कुछ हाथी तथा अत्यधिक घोडे अपने अधिकार मे कर लिये। लूट द्वारा उन्हें अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई।

दूसरे दिन अन्य वेग[2] लोग भी पहुच गये। कासिम सम्बली ने उन लोगो से भेंट की। वह इन लोगो को किला समर्पित न करना चाहता था अत बहाने बनाने लगा। एक दिन शेख गूरन[3] तथा हिन्दू वेग परामर्श करके कासिम सम्बली को किले के बाहर बेगो के पास ले गये और हमारे आदमियो को सम्बल के किले के भीतर पहुचा दिया। उन लोगों ने कासिम सम्बली की पत्नी तथा सम्बन्धियो को कुशलतापूर्वक किले के बाहर करके कासिम को (दरबार) मे भेज दिया।

ब्याना

कलन्दर नामक प्यादे को निज़ाम खा के पास प्रोत्साहन तथा धमकी के शाही फरमान सहित ब्याना[4] भेजा गया। फरमान के साथ यह पद्य भी, जिसकी मैंने तत्काल रचना की थी, भेजा ——

पद्य

"तुर्क से मत युद्ध कर, हे ब्याना के मीर,
तुर्क की योग्यता एव वीरता सभी पर स्पष्ट है।
यदि तू शीघ्र न आयेगा और परामर्श पर ध्यान न देगा,
तो जो बात स्पष्ट है, उसके उल्लेख की क्या आवश्यकता ?"[5]

ब्याना का किला हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध किलो मे समझा जाता था। उस असावधान ने अपने किले की दृढता के भरोसे पर ऐसी बातो की प्रार्थना की थी जिनके वह योग्य न था। जो आदमी उसके पास से आया था, उसे उचित उत्तर न दिये गये और किला विजय करने की सामग्रिया की व्यवस्था प्रारम्भ कर दी गई।

१ उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले में स्थित अनूपशहर कस्बे के ऊपर।
२ अमीर।
३ गूरान।
४ आगरा के दक्षिण पश्चिम में।
५ यह पद्य फ़ारसी में है और रामपुर के बाबर के दीवान में मौजूद है।

धौलपुर

बाबा कुली बेग को दोलपुर[1] मे मुहम्मद जैतून के पास प्रोत्साहन तथा धमकी के फरमान सहित भेजा गया। उसने भी झूठे बहाने बनाये।

राणा सागा

जब हम लोग काबुल मे ही थे, तो राणा सागा के दूत ने उपस्थित होकर उसकी ओर से निष्ठा प्रदर्शित की थी, और यह निश्चय किया था कि, "सम्मानित पादशाह उस ओर से[2] देहली के समीप पहुँच जाये तो मैं[3] इस ओर से आगरा पर आक्रमण कर दूगा।" मैंने इबराहीम को पराजित भी कर दिया, देहली तथा आगरा पर अधिकार भी जमा लिया किन्तु इस काफिर के किसी ओर हिलने के चिह्न दृष्टिगत न हुये। कुछ समय उपरान्त उसने कन्दार[4] नामक किले को जो मकन के पुत्र हसन के अधीन था घेर लिया। इस मकन के पुत्र हसन के पास से कई बार आदमी आये थे किन्तु वह अभी तक मेरी सेवा मे उपस्थित न हुआ था। हम उसकी सहायतार्थ सेना भी न भेज सके थे कारण कि उसके चारो ओर के किले—इटावा[5], दोलपुर[6], तथा ब्याना—अभी तक मेरे अधीन न हुये थे। पूर्व की ओर के अफगान विद्रोही बन हुए थे। कन्नौज से दो तीन कोस आगे—आगरा की ओर—पहुंच कर उन्होंने अपने अपने डेरे डाल रक्खे थे। इस कारण मैं निश्चिन्त न हो सका था। दो तीन मास उपरान्त मकन के पुत्र हसन ने विवश होकर सन्धि कर ली और किला (राणा) को समर्पित कर दिया।

रापरी

हुसेन खां नोहानी, जो रापरी[7] मे था, भयभीत होकर उसे छोड कर चला आया। रापरी मुहम्मद अली जगजग को प्रदान कर दी गई।

इटावा तथा कन्नौज

कुतुब खा के पास, जो इटावा मे था, कई बार प्रोत्साहन तथा धमकियो के शाही फरमान भेजे जा चुके थे किन्तु न तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और न वह इटावा को छोड कर निकला ही। अत इटावा महदी ख्वाजा को प्रदान कर दिया गया और उसे उसके विरुद्ध भेजा गया। उसकी सहायतार्थ बेगो[8] तथा घर के सैनिको के दस्ता की सेना मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, मुहम्मद अली जगजग तथा अब्दुल अजीज मीर आखूर[9] की अधीनता मे भेजी गई।

१ धौलपुर।
२ काबुल की ओर से।
३ राणा सागा।
४ राजपूताना में, रणथम्भोर के पूर्व म कुछ मील पर।
५ उत्तर प्रदेश का एक जिला, जो यमुना तट पर आगरा तथा कालपी के मध्य में स्थित है।
६ धौलपुर।
७ यमुना तट पर चंदवार के नीचे।
८ अमीरों।
९ शाही घोड़ों की देखरेख करने वाला अधिकारी। उसे 'आखूर बक' भी कहते थे।

कन्नौज सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई को प्रदान कर दिया गया। उसे (जैसा कि उल्लेख हो चुका है) इटावा के विरुद्ध नियुक्त किया गया था। इसी प्रकार फीरोज़ खा, महमूद खा, शेख बायज़ीद तथा काज़ी जिया को, जिन्हें अत्यधिक प्रोत्साहन देकर पूर्व की ओर परगने प्रदान किये गये थे, इटावा के विरुद्ध नियुक्त किया गया।

धौलपुर

मुहम्मद ज़ैतून ने जो दोलपुर[1] मे था, हमसे विश्वासघात किया और हमारे पास न आया। हमने दोलपुर को सुल्तान जुनैद बरलास को प्रदान कर दिया और आदिल सुल्तान, मुहम्मदी कूकूल्दाश[2], शाह मनसूर बरलास, कूतलूक कदम, खाज़िन[3] वली जानी बेग, अब्दुल्लाह, पीर कुली तथा शाह हसन यारगी[4] को उसकी सहायतार्थ इस आशय से नियुक्त किया कि दोलपुर पर आक्रमण कर के उसे सुल्तान जुनैद बरलास को सौंप दें और ब्याना के विरुद्ध प्रस्थान करें।

परामर्श गोष्ठी

इन सेनाओ को नियुक्त करने के उपरान्त तुर्क अमीरों तथा हिन्दुस्तान के अमीरो को बुलवा कर उनसे परामर्श किया गया और यह बात कही गई 'पूर्व के विद्रोही अमीरो उदाहरणार्थ नसीर खा नोहानी तथा मारूफ फर्मुली एव उनके सहायक अमीरा ने ४० ५० हजार सैनिका सहित गगा पार कर ली है और कन्नौज पर अधिकार जमा लिया है। अब वे दो-तीन मजिल इस ओर निकल कर पडाव किये हुये है। राणा सागा काफिर ने कन्दार पर अधिकार जमा लिया है और शत्रुता तथा विद्रोह कर रहा है। वर्षा भी लगभग समाप्त होने वाली है। अब यह आवश्यक है कि या तो हम विद्रोहियो पर और या काफिर पर आक्रमण करें। आस-पास के क़िलो का कार्य सरल है। जब बडे बडे शत्रुओ का अन्त हो जायेगा तो वे कहा जा सकते है। राणा सागा उन विद्रोहियो की अपेक्षा अधिक हानि नही पहुचा सकता।'

हुमायूं की पूर्व की ओर नियुक्ति

सभी लोगो ने सर्वसम्मति से निवेदन किया, 'राणा सागा बडी दूर है। यह ज्ञात नही कि वह निकट आयेगा भी या नही। जो शत्रु अत्यधिक निकट पहुच चुके हैं उनसे निपट लेना परमावश्यक है। हम लोग विद्रोहियो पर आक्रमण करने के पक्ष मे हैं।" हुमायू ने इस पर निवेदन किया, 'पादशाह को इनके विरुद्ध प्रस्थान करने की क्या आवश्यकता है ? यह कार्य मैं कर लूगा।' हर एक इससे बडा प्रसन्न हुआ। तुर्क तथा हिन्द के अमीरा ने उसकी इस बात को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। उसे पूर्व की ओर नियुक्त किया गया। काबुली अहमद कासिम को आदेश दिया गया कि वह शीघ्रातिशीघ्र जाकर उस सेना से जो

१ धौलपुर।
२ फ़ारसी में 'कूकुल्ताश'।
३ कोषाध्यक्ष।
४ इसे 'बारगी' भी पढा जा सकता है।
५ इस स्थान पर 'बेग' नहीं लिखा गया है।

दोलपुर[1] की ओर नियुक्त की गई है यह कह दे कि वह हुमायू से चन्दवार[2] में मिल जाये। जो लोग महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा की अधीनता मे इटावा के विरुद्ध भेजे गये थे, उन्हें भी आदेश प्रेषित किया गया कि वे हुमायू से मिल जायें।

हुमायूँ का पूर्व की ओर प्रस्थान

(२१ अगस्त)—हुमायू बृहस्पतिवार १३ ज़ीकाद का रवाना हुआ और आगरा से लगभग ३ कोस पर जलेसर[3] नामक एक छोटे से ग्राम मे पडाव किया। एक रात्रि वहा ठहर कर वह वहा से निरतर यात्रा करता हुआ रवाना हुआ।

ख्वाजा कला का प्रस्थान

(२८ अगस्त)—इस मास[4] की २० तारीख बृहस्पतिवार को ख्वाजा कला काबुल के लिये रवाना हुआ।

उद्यानो का निर्माण

हिन्दुस्तान का सबसे बडा दोष यह है कि यहा जलधारायें नही है अत मैंने यह निश्चय किया कि जहा कही मैं ठहरू वहा रहँट द्वारा बहते हुए जल की व्यवस्था कराऊ ताकि वहा सुडौल उद्यानो की व्यवस्था की जा सके। इस उद्देश्य से आगरा मे प्रविष्ट होने के कुछ दिन उपरान्त हमने जून[5] नदी पार करके उद्यान के लिये उपयुक्त स्थान ढूढना प्रारम्भ कर दिया। वह स्थान इतने खराब तथा अनाकर्षक थे कि वहा की यात्रा से हमे अत्यन्त घृणा तथा अप्रसन्नता हुई और मैंने वहा चारबाग[6] के निर्माण का विचार त्याग दिया किन्तु आगरा के निकट इस भूमि के अतिरिक्त कोई अन्य उचित भूमि थी ही नही, अत कुछ दिन उपरान्त उसी भूमि को चुन लेना पडा।

सर्वप्रथम बडा कुआ जिससे हम्माम[7] के लिये जल आता है बनवाया गया तथा भूमि का वह टुकडा, जहा अब इमली का वृक्ष तथा अष्ट-भुजावार हौज हैं, तैयार कराया गया। तदुपरान्त बडा हौज तथा उसकी चहारदीवारी तैयार की गई। तत्पश्चात् वह हौज तथा तालार[8] जो पत्थर के भवन के सामने है बनवाये गये। इसके बाद खिलवत खाने[9], उसके उद्यान तथा अन्य भवनो का निर्माण कराया गया। तदुपरान्त हम्माम तैयार कराया गया। इस प्रकार हिन्द मे, जो आकर्षण तथा समिति से शून्य है, इस प्रकार

१ धौलपुर।
२ आगरा तथा इटावा के मध्य मे यमुना नदी पर।
३ यमुना तट पर आगरा के नीचे एटा जिले (उत्तर प्रदेश मे)।
४ ज़ीकाद।
५ यमुना।
६ शाही बाग।
७ स्नान करने का स्थान विशेष रूप से वह स्थान जहा गरम जल से स्नान का प्रबध हो।
८ एक प्रकार के दालान जो खम्भों पर बनाये जाते हैं और सामने से खुले होते हैं।
९ स्त्रियों के घर अथवा एकातवास के लिये घर।

के सुव्यवस्थित एव सुडौल उद्याना का निर्माण कराया गया जिनके प्रत्येक काने मे उचित चमन[1] और हर चमन मे गुलाब तथा नस्तरन बडे आकर्षक ढग से लग गय।[2]

हम्माम का निर्माण

मुझे हिन्दुस्तान की तीन बाता से बडी घृणा थी—गरमी, आधी तथा धूल। इन तीना से हम्माम द्वारा ही रक्षा हो सकती है। यहा धूल तथा आधी का कहा प्रवेश। गरमी मे यह इतना अधिक ठडा हा जाता है कि लोग ठडक के कारण कापने लगते है। वह कमरा जिसमे गरम जल का हौज़ है पूरा पत्थर का बना हुआ है। ईज़ारे[3] के अतिरिक्त पूरा सगेमरमर का बना हुआ है। फर्श तथा छत व्याना के लाल पत्थर की बनी है।

अमीरो द्वारा उद्यानो का निर्माण

ख़लीफा, शेख़ जैन, यूसुफ अली तथा जिस किसी को भी नदी के उस पार भूमि मिली, उसने हौज़ सहित बडे सुडौल तथा उत्तम उद्याना का निर्माण करा लिया। जिस प्रकार लाहौर तथा दीबालपुर मे रहँट होते हैं वैसे ही यहा भी लगवा लिये। हिन्द वाले, जिन्हाने ऐसे सुडौल स्थान तथा उत्तम उद्यान न देखे थे जून[4] के उस ओर के स्थान को, जहा हमारे भवन थे, काबुल कहने लगे।

वाईं

किले के भीतर, इबराहीम के महल तथा किले की चहारदीवारी के मध्य मे एक स्थान खाली था। मैंने वहा १० × १०[5] की एक वाईं के निर्माण का आदेश दिया। यह एक बहुत बडा कुआ होता है जहा नीचे तक सीढिया होती है। इसे हिन्दुस्तान मे वाइं[6] कहते हैं। इस कुयें का निर्माण चारबाग के पूर्व प्रारम्भ

१ क्यारिया।
२ सम्भवत यह उस उद्यान एव महल का उल्लेख है जिसका निर्माण बाबर ने यमुना के उत्तरी तट पर लगभग ताज महल के सामने कराया था। इसी के समीप हुमायू ने १५३० इ० में एक मस्जिद का निर्माण कराया। आगरा के समीप तीन अन्य उद्यान भी बाबर के लगाये बताये जाते हैं —
 (अ) अचानक बाग़ नगर के दक्षिण में एक मील पर।
 (ब) ज़हीरे बाग़, रामबाग तथा चीनी के रौज़े के मध्य मे।
 (स) ज़हीरे बाग़ जो सम्भवत मुख्य नगर के समीप यमुना के पास है।
३ पैंदा नीचे का फ़र्श।
४ यमुना।
५ सम्भवत गज़ जो ३६ इच से कुछ छोटा होता था।
६ वाईं के वर्णन इब्ने बत्तूता ने कई स्थानों पर किये हैं। कोल (अलीगढ़) की एक वाईं की चर्चा इस प्रकार की गई है :—
 पहाड़ी से उतर कर मैदान मे आया जिसमें कपास तथा रेंड के वृक्ष थे। वहा एक वाईं भी थी जिसका अर्थ उनकी भाषा म चौड़ा कूप होता है। वह पत्थर की बनी होती है और उसम जल तक उतरने के लिये सीढ़िया होती हैं। कुछ में पत्थर के गुम्बद, मेहराब तथा बैठने के स्थान बने होते हैं। मलिक तथा अमीर ऐसे मार्गों म, जहा जल का अभाव होता है, इस प्रकार की बाईं बनवाने म अपना बहुत बड़ा सम्मान समझते हैं। आगे के पृष्ठों में कुछ अन्य वाइयों का जो हमने मार्ग में देखीं .

हुआ था। लोग बीच बरसात में इसे खोदने मे व्यस्त रहे। कई बार गिर जाने के कारण मजदूर दब गये। राणा सागा से जिहाद के उपरान्त इसका निर्माण समाप्त हुआ। इसका उल्लेख उस तारीख में है जो इसके निर्माण के विवरण के पत्थर मे खुदी है। यह पूरी बाई है जिसके भीतर एक तीन मंजिला मकान है।[1] सबसे नीचे की मंजिल मे तीन कमरे हैं। इनमें से प्रत्येक के द्वार उन जीनों की ओर है जिनसे बाई मे उतरा जाता है। प्रत्येक कमरा तीन-तीन जीने के अन्तर से बना है। जब जल का स्रोत बहुत नीचे होता है तो वह सब से नीचे वाले कमरे से एक जीना नीचे पहुंच जाता है। जब वर्षा ऋतु मे जल अधिक हो जाता है तो वह सब से ऊंची वाली मंजिल पर पहुंच जाता है। बीच की मंजिल मे एक भीतरी कमरा खोद कर बनाया गया है। यह उस गुम्बददार भवन से मिला है जिस मे बैल कुयें का रहंट चलाते है। सबसे ऊपर की मंजिल म एक ही कमरा है। इसमे दो दिशाओ से ५-६ जीनो द्वारा नीचे पहुंच सकते हैं। ये जीने कुयें के मुह के सामने के भवन से नीचे जाते हैं। नीचे जाने वाले मार्ग की दाईं ओर वह पत्थर है जिसमे इसके निर्माण के पूरा होने की तिथि खुदी है।

इस कुयें के बराबर एक अन्य कुआ है। इस कुयें का धरातल पहले कुयें के जल-धरातल से आधा है। उस गुम्बद वाले भवन से जिसका उल्लेख किया जा चुका है बैल रहंट चला कर पहले कुयें से इस कुयें मे जल पहुंचाते हैं। इस कुयें मे भी एक रहंट लगा हुआ है। इसके द्वारा जल किले की चहारदीवारी से होता हुआ ऊपर के उद्यान मे जाता है। कुयें के मुह के ऊपर एक पत्थर का भवन बना हुआ है। जिस हाते म कुआं है उसके बाहर एक पत्थर की मस्जिद बनी हुई है। मस्जिद अच्छी नही बनाई जा सकी, इसका निर्माण हिन्दुस्तान की मस्जिदो के नमूने पर हुआ है।

उल्लेख किया जायेगा। बाई पर पहुंच कर मैंने उसमें से कुछ जल पिया। वहां सरसों के कुछ पत्ते तथा शाखाये पड़ी थीं जिन्हें कोई धोते समय उस स्थान पर छोड़ गया था। मैंने सरसों की कुछ डालियां खा लीं और शेष अपने पास रख लीं। तत्पश्चात् मैं एक रेंड के वृक्ष के नीचे सो गया। (रिज़वी : 'तुगलुक कालीन भारत' भाग १, पृ० २६१)

जुर फ़त्तन की बाई का वर्णन उसने इस प्रकार किया है :—

इस नगर मे एक बहुत बड़ी बाई है। वह ५०० पग लम्बी तथा ३०० पग चौड़ी है। यह लाल कटे हुये पत्थर की बनी है। इसके चारों ओर २८ बड़े-बड़े गुम्बद हैं। प्रत्येक में चार बड़े बड़े पत्थर के बैठने के स्थान हैं। उनकी छत तक पहुंचने के लिये पत्थर की सीढ़िया बनी हुई है। जलाशय के मध्य में तीन मंजिलों का एक बहुत बड़ा गुम्बद है। प्रत्येक मंजिल में चार बैठने के स्थान हैं। मुझे बताया गया है कि यह बाई वर्तमान राना कुएल के पिता ने बनवाई थी। (रिज़वी 'तुगलुक कालीन भारत' भाग १, पृ० १८४)

शिहाबुद्दीन अल उमरी की मसालिकुल अबसार फ़ी ममालिकुल अमसार मे बाई का वर्णन इस प्रकार है :

उसने बताया, बाई एक बहुत विस्तृत हौज होता है जिसमें उतरने के लिये चारों ओर सीढ़िया होती हैं। सुल्तान उसकी बात सुनकर आश्चर्य चकित हो गया और उसने (उनको सुरक्षित रखने के लिये) बाईयों पर अपने नाम की मुहर लगा देने का आदेश दे दिया। अतः वे सुल्तान के नाम से मुहर बन्द कर दी गईं। (रिज़वी 'तुगलुक कालीन भारत' भाग १, पृ० ३३४)

१ इस विवरण का अनुवाद बड़ा कठिन है और 'बाबर नामा' के अनुवादकों में इस विषय में बड़ा मतभेद है।

हुमायूं का अभियान

हुमायू के प्रस्थान के समय नसीर खा नोहानी, मारूफ फर्मुली तथा अन्य अमीर जाजमऊ[1] मे एकत्र हो गये थे। हुमायू ने उनके पास पहुच कर लगभग १५ कोस से मोमिन अत्का को समाचार लाने के लिये भेजा। मोमिन भली भाति उनके समाचार ला भी न पाया था कि विद्रोही लोग उसके विषय मे समाचार पाकर ठहर न सके और भाग खडे हुये। मोमिन अत्का के उपरान्त कुस्मनाई[2] को बाबा चुहरा[2] तथा बूजका के साथ समाचार लाने के लिये भेजा गया। वे विद्रोहियों के छिन्न-भिन्न हो जाने तथा पलायन के समाचार लाये। हुमायू ने जाजमऊ पहुच कर उसे अपने अधिकार मे कर लिया। तत्पश्चात् उसने वहा से प्रस्थान किया। दलमऊ[4] के निकट फतह खा सरवानी ने उससे भेंट की। उसे महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा के साथ मेरे पास भेज दिया गया।

ऊजबेगो के समाचार

इस वर्ष उबैदुल्लाह खा (ऊज़बेग) ने बुखारा से सेना लेकर मर्व पर चढाई की। मर्व के किले मे सम्भवत १०-१५ प्रजाजन थे। उसने उन्हें पराजित करके उनकी हत्या कर दी। मर्व की मालगुज़ारी ४०-५० दिन मे वसूल करके वह सरख्स की ओर चल दिया। सरख्स मे ३० अथवा ४० किज़ीलबाश[5] थे। उन लोगों ने अधीनता स्वीकार न की, और किले का फाटक बन्द कर लिया किन्तु वहा की प्रजा ने उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया और ऊज़बेगो के लिये फाटक खोल दिये। उन्होंने वहा प्रविष्ट होकर किज़ील बाशों की हत्या कर दी। सरख्स को विजय करके वह तूस तथा मशहद के विरुद्ध रवाना हुआ। मशहद वालो ने विवश होकर उन्हें (अपने नगर मे) प्रविष्ट हो जाने दिया। वह तूस को ८ मास तक घेरे रहा किन्तु सन्धि द्वारा उस पर अधिकार जमा लिया। उसने सन्धि की शर्तों का पालन न किया और पुरुषो की हत्या करा डाली तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया।

गुजरात

इस वर्ष सुल्तान मुज़फ्फर गुजराती का पुत्र बहादुर खा, जो अब अपने पिता के स्थान पर गुजरात का बादशाह हो गया है, अपने पिता से रुष्ट होकर सुल्तान इबराहीम के पास चला आया था। सुल्तान इबराहीम ने उसका आदर-सम्मान न किया। जिन दिनो मैं पानीपत मे था तो उसके प्रार्थनापत्र मुझे प्राप्त हुये। मैंने उसके पास कृपा प्रदर्शित करते हुये फरमान भेजे और उसे अपने पास बुलवाया। वह आने के विषय मे सोच रहा था किन्तु बाद मे उसने अपने विचार बदल दिये। वह इबराहीम की सेना से पृथक् होकर गुजरात की ओर चल दिया। इसी बीच मे उसके पिता सुल्तान मुज़फ्फर की मृत्यु हो गई[6]। उसका

१ कानपुर जिले (उत्तर प्रदेश) में।
२ सम्भवतः बंशी बजाने वाला।
३ वीरों के दल का।
४ गंगा के बायें तट पर, रायबरेली के दक्षिण-पूर्व में।
५ ईरानी।
६ शुक्रवार २ जमादि उस्सानी ९३२ हि० (१६ मार्च १५२६ ई०) देखिये रिज़वी: 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २, (अलीगढ १९५९ ई०), पृ० २३३-२४६, ३४४-३६४, ४३३-४६१)

बडा भाई सिकन्दर शाह जो सुल्तान मुज़फ्फ़र का ज्येष्ठ पुत्र था अपने पिता के स्थान पर बादशाह हो गया था। उसकी दुष्टता के कारण एमादुलमुल्क नामक उसके दास ने कुछ लोगो से मिलकर उसकी हत्या कर दी[1]। बहादुर खां को जो अभी मार्ग ही मे था आमन्त्रित किया गया और उसे उसके पिता के सिंहासन पर आरूढ़ कर दिया गया।[2] उसकी उपाधि बहादुर शाह रक्खी गई। उसने यह बडा अच्छा किया कि एमादुलमुल्क को जिसने इस प्रकार की नमकहरामी की थी हत्या करा दी। उसने अपने पिता के अधिकाश अमीरो की, जो रह गये थे, हत्या करा दी। लोग कहते हैं कि वह बडा ही अत्याचारी एव निष्ठुर युवक है।

१ १४ शाबान ९३२ हि० (२६ मई १५२६ ई०), देखिये रिज़वी: 'उत्तर तैमूर कालीन भारत', भाग २, पृ० २४५-२४७, ३८६।

२ २६ रमज़ान ९३२ हि० (६ जुलाई १५२६ ई०)।

९३३ हि०

(८ अक्तूबर १५२६ ई०–२७ सितम्बर १५२७ ई०)

पुत्र का जन्म

मुहर्रम में बेग, वैस फारुक के जन्म के समाचार लाया। यद्यपि एक प्यादा यह समाचार इससे पूर्व ला चुका था किन्तु वह इस मास मे इस सुखद समाचार के दूत के रूप मे उपस्थित हुआ। उसका जन्म *शुक्रवार २३ शव्वाल (९३२ हि० २ अगस्त १५२६ ई०) की रात्रि मे हुआ होगा।*[1] *उसका नाम फारुक* रक्खा गया।

तोप ढलवाना

(२२ अक्तूबर)—उस्ताद अली कुली को ब्याना तथा अन्य किला, जिन्होने अभी तक अधीनता स्वीकार न की थी, के विरुद्ध प्रयोग हेतु एक बडी तोप के ढालने का आदेश दिया गया था। जब समस्त भट्टिया एव सामग्री तैयार हो गई तो उसने एक आदमी मेरे पास भेजा। सोमवार १५ मुहर्रम (२२ अक्तूबर) को हम लोग तोप के ढालने का दृश्य देखने पहुचे। तोप के साचे के चारो ओर उसने ८ भट्टिया तैयार कराई थी। इनमे पिघला हुआ पदार्थ था। प्रत्येक भट्टी से एक नाली सीधी साचे मे जाती थी। जब हमारे पहुचने पर उसने भट्टी के छेद खोले तो पिघली हुई धातु, इन नालिया से जल के समान बह बह कर साचे में पहुचने लगी। कुछ देर उपरान्त, साचे के भरने के पूर्व, एक-एक करके भट्टियो से पिघली हुई धातु बहनी बन्द हो गई। उस्ताद अली कुली ने या तो भट्टियो और या अन्य सामग्री का हिसाब लगाने मे कोई भूल कर दी होगी। वह इतना अधिक व्याकुल हुआ कि वह पिघली हुई धातु मे कूद पडना चाहता था किन्तु हमने प्रोत्साहन देते हुये उसे खिलअत पहनाई और इस प्रकार उसे लज्जा से मुक्ति दिलाई। साचे का एक दो दिन तक ठडा होने के लिये छोड दिया गया। जब उसे खोला गया तो उस्ताद अली कुली ने प्रसन्नता पूर्वक सूचना कराई कि तोप की प्रस्तर कोष्टिका[2] मे कोई दोष नही। बारूद की काष्टिका[3] का बनाना सरल है। उसने प्रस्तर कोष्टिका को निकलवा कर कुछ लोगा से उसे ठीक करने के लिये कहा और वह स्वय बारूद कोष्टिका ढालने लगा।

फतह खा सरवानी को आश्रय

महदी ख्वाजा फतह खा सरवानी को लेकर हुमायू के पास से आया। वे उससे दलमऊ मे बिदा हुये थे। मैंने फतह खा के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उसे उसके पिता आज़महुमायू के परगने तथा

१ उसकी मृत्यु ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०) में हो गई और उसका पिता उसे न देख सका।
२ 'ताश अवी', फ़ारसी अनुवाद में 'ख़ानये सग'।
३ बारूद ख़ाना।

अन्य स्थान भी प्रदान कर दिये। उसे १ करोड तथा ६० लाख[1] के मूल्य का एक परगना भी प्रदान किया गया।

हिन्दुस्तान मे जिन अमीरो को अत्यधिक सम्मानित किया जाता है उन्हें निश्चित उपाधिया[2] प्रदान की जाती हैं, उदाहरणार्थ आज़म हुमायू[3], खाने जहा[4], खाने खाना[5]। फतह खा के पिता की उपाधि आज़म हुमायू थी किन्तु हुमायू की उपस्थिति मे इस उपाधि को किसी अन्य को प्रदान करना उचित न था अत मैंने फतह खा सरवानी को आज़म हुमायू की उपाधि न प्रदान की अपितु खाने जहा की उपाधि प्रदान कर दी।

(१४ नवम्बर)—बुधवार ८ सफर[6] को हौज़ के किनारे[7] ऊपर की ओर इमली के वृक्ष के आगे शामियाने लगवा कर सभा का आयोजन कराया गया। फतह खा सरवानी को मदिरा की सभा म बुलवा कर मदिरा प्रदान की गई। उसे मैंने पगडी तथा सिर से पाव तक के वस्त्र[8] जिनका मैं स्वय प्रयोग करता था प्रदान किये। इन कृपाओ तथा प्रोत्साहन द्वारा सम्मानित करके उसे उसकी विलायत[9] में जाने की अनुमति दे दी। उसके पुत्र महमूद[10] के लिये यह निश्चय हुआ कि वह सर्वदा मेरी सेवा मे रहे।

हुमायूँ को बुलाने के लिये दूत भेजना

(३० नवम्बर)—बुधवार २४ मुहर्रम[11] को (मेहतर) हैदर के पुत्र मुहम्मद अली को जो रिकाबदार[12] था, हुमायू के पास यह आदेश पहुचाने के लिये भेजा गया कि, 'ईश्वर को धन्य है, विद्रोही छिन्न भिन्न हो चुके हैं। तुम इस दूत के पहुचते ही कुछ उचित बेगो (अमीरो) को जूनपुर मे नियुक्त कर दो और स्वय सेना सहित शीघ्रातिशीघ्र मेरे पास पहुच जाओ कारण कि राणा सागा काफिर अत्यधिक निकट पहुच चुका है। हमे सर्व प्रथम उसका उपाय करना चाहिये।'

ब्याना पर आक्रमण

पूर्व की ओर सेना[13] भेज देने के उपरान्त हमने ब्याना तथा उसके आस पास के स्थानो पर आक्रमण करने के लिये सेना नियुक्त की। कूज बेग के भाई तरदी बेग, उसका बडा भाई शेर अफगन, मुहम्मद

१ अरस्किन के अनुसार ४०,००० पौंड।
२ मुकर्ररी ख़िताबलार, फ़ारसी अनुवाद में मुक़र्ररी ख़िताब।
३ पवित्र महान् (व्यक्ति)।
४ संसार का ख़ान।
५ ख़ानों का ख़ान।
६ इसे मुहर्रम होना चाहिये कारण कि घटना के क्रम में मुहर्रम ही ठीक बैठता है, सफ़र नहीं।
७ चारबाग़।
८ खिलअत।
९ अधीन राज्य।
१० प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद में महमूद ख़ाँ'।
११ इस क्रम में यहां सफ़र नहीं।
१२ बादशाहों एव बड़े बड़े अमीरों की रिकाब पकड़ कर सवार कराने वाला। वह यात्रा में बादशाह के साथ जाता था।
१३ इसका सेनापति हुमायूँ था।

खलील असता बेगी[1], उसके भाई, अखता चीलार[2], रुस्तम तुर्कमान, उसके भाइयो तथा हिन्दुस्तानी लोग, दाऊद सरवानी इत्यादि इस सेना मे नियुक्त हुये। उन्हें आदेश दिया गया कि यदि प्रोत्साहन अथवा धमकी से वे ब्याना के किले वालो से अधीनता स्वीकार करा लें तो वे ऐसा ही करें अन्यथा वे इधर उधर छापे मार कर शत्रु को कमजोर कर दें।

आलम खां

ब्याना के निजाम खा का बडा भाई आलम खा तहनगर[3] के किले मे था। उसके आदमी निरन्तर मेरे पास पहुच कर उसकी अधीनता एव निष्ठा के विषय मे निवेदन करते रहते थे। इस आलम खा ने स्वयं यह प्रस्ताव रक्खा कि, "यदि बादशाह की ओर से कोई सेना नियु त हो जाये तो मैं इस बात का आश्वासन दिलाता हू कि मैं ब्याना के समस्त तर्कशबन्दो[4] को प्रोत्साहन देकर बाहर निकाल लाऊगा और किला आपके अधिकार मे करा दूगा।" तदनुसार तरदी बेग के अभियान के वीरो को यह आदेश भेजा गया कि, "क्योकि आलम खा स्थानीय आदमी[5] है और उसने इस प्रकार अधीनता एव निष्ठा प्रदर्शित की है अत ब्याना के कार्यों को सम्पन्न करने के लिये उसके परामर्शानुसार आचरण करो।"

सेना के सचालन में हिन्दुस्तानियो की अयोग्यता

यद्यपि हिन्दुस्तान के कुछ आदमी तलवार चलाने मे दक्ष हैं किन्तु अधिकाश लोग सेना के सचालन एव आक्रमण की विधि से अनभिज्ञ हैं। उन्हें सेना के विषय मे परामर्श देने का और उससे सम्बन्धित कोई ज्ञान नही।

आलम खा की अयोग्यता

जब हमारी ओर के वे लोग जो इस अभियान हेतु नियुक्त हुये थे आलम खा के पास पहुचे तो उसने किसी बात की ओर ध्यान न दिया और इस बात पर दृष्टि न डाली कि जो कुछ वह कर रहा है वह ठीक भी है अथवा नहीं अपितु मेरे आदमियो को अपने साथ लेकर बढता चला गया। हमारी सेना मे २५०-३०० तुर्क तथा लगभग २००० मे अधिक हिन्दुस्तानी एव स्थानीय लोग थे।

हमारी सेना की पराजय

इसके विपरीत ब्याना के निजाम खा के अफगानो एव सैनिको मे ४००० अश्वारोही थे। पदातियों की सख्या लगभग १०,००० से अधिक होगी। निजाम खा ने अपने शत्रुओं को देख कर अपने अश्वारोहियो को सगठित किया और हमारे सैनिको पर एकबारगी टूट पडा और उन्हें भगा दिया।

१ मुख्य बधिया करने वाला। इसका अनुवाद घोड़ों की देख रेख करने वाला अधिकारी भी किया गया है।
२ बधिया करने वाले।
३ तहनगढ, करौली (राजपूताना) में।
४ निषंग बांधने वालों, सैनिकों।
५ फ़ारसी अनुवाद में 'मर्दे ज़मींदार', तुर्की के अनुसार स्थानीय आदमी।

निज़ाम खा के आदमियो ने उसके बडे भाई आलम को घोडे से गिरा दिया, तथा ५-६ अन्य व्यक्तियो को बन्दी बना लिया और थोडे से असबाब पर भी अधिकार कर लिया।

निज़ाम खा को ब्याना

क्योकि हम इससे पूर्व निज़ाम खा को आश्रय प्रदान करने का आश्वासन दिला चुके थे, हमने उसकी इस धृष्टता एव पिछले अपराधो को क्षमा करके फरमान भेजे। उसे यह पता लग चुका था कि राणा सागा शीघ्रातिशीघ्र बढता चला आ रहा है अत उसने विवश होकर सैयिद रफी[1] को बुलवाया और उसे मध्यस्थ बना कर हमारे आदमियो को किला समर्पित कर दिया तथा सैयिद रफी के साथ पहुचकर हमारी सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। मैंने उसे दोआब मे बीस लाख[2] का एक परगना प्रदान कर दिया।

महदी ख्वाजा की ब्याना में नियुक्ति

दास्त ईशक आका[3] को कुछ समय के लिये ब्याना प्रदान किया गया किन्तु कुछ दिन उपरान्त उसे महदी ख्वाजा को प्रदान कर दिया गया। उसकी वजह[4] ७० लाख[5] निश्चित हुई और उसे ब्याना जाने की अनुमति दे दी गई।

ग्वालियर पर अधिकार

तातार खा सारग खानी जो ग्वालियर मे था बराबर अपनी अधीनता एव निष्ठा का आश्वासन दिलाने के लिये आदमी भेजा करता था। काफिर[6] के कन्दार को अपने अधिकार मे कर लेने तथा ब्याना के समीप पहुच जाने के उपरान्त, ग्वालियर के राजाओ मे से धर्मानकत तथा एक अन्य काफिर ने जो खाने जहा कहलाता था, ग्वालियर के पडोस मे पहुच कर, किले पर अधिकार जमाने के लोभ मे उपद्रव मचाना एव विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया। तातार खा कठिनाई मे पड गया और किले को (हमे) समर्पित करने की इच्छा करने लगा। हमारे अधिकाश बेग[7] घर के सैनिक तथा चुने हुये वीर या तो (हुमायू) की सेना के साथ और या अन्य अभियानो पर गये हुये थे। हमने रहीम दाद के साथ भीरा के आदमियो तथा लाहौरियो का एक समूह एव हस्तचीं[8] तून्कितार और उसके भाइयों को किया। हमने उपर्युक्त लोगा को ग्वालियर मे परगने प्रदान किये। मुल्ला अपाक तथा शेख गुरन[9] भी उनके साथ गये। उन्हें आदेश

१ रफ़ी-उद्दीन सफ़वी इज निवासी (इज फ़ारस की खाड़ी के पास है)। वह अबुल फ़ज़ल के पिता शेख मुबारक का गुरु था और आगरा के समीप दफ़न है। उसके समकालीन बादशाह एवं अमीर उससे बड़े प्रभावित थे।
२ २० लाख की मालगुज़ारी का। अर्सकिन के अनुसार ५००० पौंड।
३ द्वारों की रक्षा करने वालों का अधिकारी।
४ व्यय हेतु धन, वेतन।
५ अर्सकिन के अनुसार १७ ५०० पौंड।
६ राणा सागा।
७ अमीर।
८ यह शब्द विभिन्न हस्तलिखित पोथियों में भिन्न-भिन्न रूप से लिखा है।
९ गुरान।

दिया गया कि वे रहीम दाद को ग्वालियर मे आरूढ करके लौट आयें। उनके ग्वालियर के समीप पहुचने तक तातार खा के विचारो मे परिवर्तन हो गया और उसने उन्हें किले मे न आने दिया। इसी बीच मे शेख मुहम्मद ग़ौस[1] ने, जोकि एक दरवेश हैं और जो केवल विद्वान् ही नही हैं अपितु जिनके मुरीदो एव अनुयायियो की सख्या भी बडी अधिक है, किले के भीतर से रहीम दाद के पास यह सदेश भेजा कि, 'जिस प्रकार हो सके किले मे पहुच जाओ। उसके विचार बदल गये हैं और उनमे खोट पैदा हो गया है।" रहीम दाद का जब इस बात का पता चला तो उसने तातार खा के पास यह संदेश भेजा कि, "काफिरो के कारण बाहर खतरा है। मुझे कुछ आदमियो सहित किले मे प्रविष्ट हो जाने दो। अन्य लोग किले के बाहर ही रहेंगे।" उसके आग्रह पर तातार खा ने यह बात स्वीकार कर ली और रहीम दाद थोडे से आदमिया सहित किले म प्रविष्ट हो गया। उसने (तातार खा) से कहलाया कि, 'हमारे आदमियो का इस फाटक के निकट ठहरने दो।" उसने अपने आदमी हाथी पुल के समीप नियुक्त कर दिये और उसी फाटक से उसने उसी रात्रि मे अपनी समस्त सेना का किले मे प्रविष्ट करा लिया। दूसरे दिन तातार खा ने विवश हाकर किला समर्पित कर दिया और आगरा पहुच कर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसके व्यय हेतु २० लाख[2] का बियावा[3] परगना प्रदान कर दिया गया।

धौलपुर पर अधिकार

मुहम्मद जैतून के पास भी कोई अन्य उपाय न रह गया और वह दोल्पुर[4] को समर्पित करके मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। कई लाख का एक परगना उसे प्रदान कर दिया गया। दोल्पुर का खालसे[5] मे सम्मिलित कर लिया गया और अबुल फतह तुर्कमान को उसका शिकदार नियुक्त कर दिया गया।

हिसार फीरोज़ा में अफ़गानो का दमन

हिसार फीरोज़ा के आस पास हमीद खा सारग खानी अपने सहायक अफ़ग़ाना के एक समूह तथा पनी अफगाना सहित ३-४ हज़ार की सख्या मे अशान्ति एव उपद्रव मचा रहा था। बुधवार १५ सफर (२१ नवम्बर) को हमने चीन तीमूर सुल्तान (चगताई), अहमदी परवानची[6], अबुल फतह तुर्कमान, मलिक दाद करार नी तथा मुल्तान के मुजाहिद खा को उनके विरुद्ध नियुक्त किया। ये लाग वहा पहुच कर उन पर दूर से अचानक टूट पडे और उसके सहायक अफ़ग़ाना को बुरी तरह पराजित कर दिया। उन्होने बहुत से अफग़ाना की हत्या कर दी और बहुत से सिरो को (हमारे पास) भेज दिया।

१ शेख मुहम्मद गौस हाजी हमीदुद्दीन ग़ौसे हिन्दुस्तान के आलम बडे प्रसिद्ध सूफी हुये हैं उन्होंने लगभग १२ वर्ष तक मिर्जापुर ज़िले में स्थित चुनार की पहाड़ियों में वनस्पति एव फल खाकर घोर तपस्या की। तत्पश्चात् वे ग्वालियर म निवास करने लगे। उनकी मृत्यु १५६२ ई० में हुई।
२ अर्सकिन के अनुसार ५००० पौंड।
३ 'आईने अकबरी' के अनुसार आगरा सूबे में।
४ धौलपुर।
५ वह भूमि जिसका प्रबध केन्द्रीय शासन की ओर से होता है और उसकी मालगुजारी भी केन्द्रीय खजाने में जाती है।
६ परवाने (शाही आदेश) लिखने वाला।

ईरान के राजदूत का आगमन

सफ़र मास के अन्त[1] में ख्वाजगी असद, जो शाहज़ादा तहमास्प[2] मफ़वी के पास राजदूत बना कर एराक भेजा गया था, सुलेमान नामक एक तुर्कमान के साथ वापस आया। वह अन्य उपहारों के साथ दो चीज़लार[3] लाया।

बाबर को विष देने का प्रयत्न

(२१ दिसम्बर)—शुक्रवार १६ रबी-उल-अव्वल को एक विचित्र घटना घटी। इसका सविस्तार विवरण मैंने काबुल एक पत्र में लिख कर भेजा। वह पत्र मूल रूप से बिना कुछ घटाये बढ़ाये इस स्थान पर नकल किया जाता है।[4]

शुक्रवार १६ रबी-उल-अव्वल ९३३ हि० (२१ दिसम्बर १५२६ ई०) की महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख इस प्रकार है—

उस अभागिनी बुवा इबराहीम की माता ने सुन लिया कि मैं हिन्दुस्तानियों के हाथ की चीजें खाता हूं। इसका किस्सा इस प्रकार है कि क्योंकि मैंने हिन्दुस्तानी भोजन न खाया था अत इस तिथि से ३-४ मास पूर्व मैंने इबराहीम के बावरचियों को लाने का आदेश दिया था। ५०-६० बावरची लाये गये। मैंने उनमें से चार व्यक्ति रख लिये। उस अभागिन ने यह कह कर अहमद चाश्नी गीर[5] को इटावा से बुलवाया। हिन्दुस्तान में बकावल को चाश्नी गीर कहते हैं। उसे बुलवा कर उसने एक दाई द्वारा उसके पास एक कागज की पुड़िया में लपेट कर एक तोला विष भिजवा दिया। जैसा कि उल्लेख हो चुका है एक तोला दो मिस्काल से कुछ अधिक होता है। अहमद ने वह विष हमारी रसोई के हिन्दुस्तानी बावरचियों को दे दिया और उन्हें इस बात का आश्वासन दिलाया कि यदि वे किसी न किसी प्रकार उसे हमारे भोजन में मिला देंगे तो उन्हें चार परगने प्रदान किये जायेंगे। पहली दाई के पीछे पीछे उस अभागिन वृद्धा ने दूसरी दाई का यह देखने के लिये भेजा कि पहली दाई ने अहमद को विष दिया अथवा नहीं।

यह बड़ा अच्छा हुआ कि विष देग में न डाला गया अपितु रकाबी पर रखा गया। देग में विष न डालने का कारण यह था कि मैंने बकावलों को चेतावनी दे दी थी कि जब भोजन देग में पक रहा हो तो जो हिन्दुस्तानी वहां उपस्थित हो उससे भोजन चखाया जाये। जिस समय भोजन रकाबियों में लगाया जाने लगा तो हमारे अभागे बकावल असावधान हो गये। एक चीनी की पलेट पर पतली पतली चपातियां

१ दिसम्बर मास के प्रथम सप्ताह।

२ शाह इस्माईल सफ़वी की मृत्यु ९३० हि० (१५२४ ई०) में हुई और उसके स्थान पर शाह तहमास्प सफ़वी बादशाह हुआ अत उसे इस स्थान पर शाहज़ादा लिखना उचित न था। सम्भवत शाह तहमास्प की आयु कम होने के कारण उसे शाहज़ादा लिखा गया है।

३ फ़ारसी अनुवाद में 'दुख्तरे चेरक्स' (चेरक्स लड़कियां), चेरक्स पश्चिमी काकेशस।

४ सम्भवत यह पत्र माहीम को लिखा गया होगा और वह इसे ९३५ हि० (१५२८-२९ ई०) में अपने साथ लाई होगी।

५ वह व्यक्ति जो शाही भोजन का प्रबंध करता था और बादशाह के समक्ष भोजन प्रस्तुत करने के पूर्व उसे चख कर संतुष्ट हो जाता था कि इसमें विष इत्यादि नहीं मिला है और भोजन बादशाह के खाने योग्य है। इस प्रकार से सन्तुष्ट हो जाने के उपरान्त वह भोजन पर अपनी मुहर लगा देता था। देखिये 'आईने अकबरी'।

लगाई गईं और उन पर काग़ज़ की पुडिया मे से आधे से कम विष छिडक दिया गया। उस पर से रोग़न दार कलिया[1] रख दिया गया। यदि विष कलिये के ऊपर छिडक दिया जाता अथवा देग मे डाल दिया जाता तो बडा बुरा होता। घबराहट मे बावरची ने आधे से अधिक विष आग मे डाल दिया।

शुक्रवार के दिन, मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के कुछ देर बाद पकरा हुआ मास लगाया गया। मैंने बहुत सा खरगोश का मास बडे शौक से खाया और तली हुई गाजरें भी अधिक सख्या मे खाईं। मैंने कुछ ग्रास विष मिले हुये हिन्दुस्तानी भोजन के खाये। मुझे उसके स्वाद मे कोई खराबी न ज्ञात हुई। मैंने दो-एक ग्रास सूखे मास के खाये। फिर मेरा जी मचलाने लगा। इससे पूर्व एक दिन सूखा मास खाने पर मुझे उसका स्वाद अच्छा न लगा था अत मैंने सोचा कि मेरा जी सूखा मास खाने के कारण मचला रहा होगा। बार बार मरा जी बुरा होने लगा। दो-तीन बार के अधिक जी मचलाने के उपरान्त यह दशा हो गई कि मैं दस्तर ख्वान[2] पर कै कर देता। अन्त मे मैंने देखा कि मैं सहन नही कर सकता। मैं आबखान[3] तक ओकते हुये पहुचा और वहा पहुच कर बडे जोर से कै की। मैंने भोजन के उपरान्त कभी वमन न किया था, यहा तक कि मदिरापान के समय भी मैंने कभी वमन न किया था। मुझे सन्देह हो गया। मैंने बावरचियो की निगरानी का आदेश दे दिया और आदेश दिया कि थोडा सा वमन एक कुत्ते को खिलाया जाये और उसकी दशा का निरीक्षण किया जाये। दूसरे दिन एक पहर उपरान्त उसकी दशा बिगड गई। उसका पेट फूल गया। उसे लोग कितना ही पत्थर मारते और हिलाते डुलाते किन्तु वह न उठता। मध्याह्न तक वह उसी दशा मे पडा रहा। तदुपरान्त वह उठ खडा हुआ किन्तु मरा नही। दो एक वीरो को, जिन्होंने उस रकाबी का भोजन खाया था दूसरे दिन बडी कै हुई। एक की दशा तो बडी ही खराब हो गई।

मिसरा[4]

आफत आई थी किन्तु कुशलतापूर्वक गुजर गई।

ईश्वर ने मुझे नया जीवन प्रदान किया। मैं उस लोक से आ रहा हू। मेरा आज माता के गर्भ से पुन जन्म हुआ। मैं रुग्ण रहा। मैं ईश्वर की कृपा से जी रहा हू। मैंने आज जीवन का मूल्य समझा।"

मैंने सुल्तान मुहम्मद बख्शी को आदेश दिया कि वह बावरची पर निगरानी रक्खे। उसे दारुण पीडा पहुचाने के लिये लाग ले गये। उसने एक एक करके पूरी घटना का उल्लेख कर दिया।

सोमवार के दिन दरबार होता था। मैंने आदेश दिया कि समस्त प्रतिष्ठित एव सम्मानित लोग अमीर तथा वज़ीर उपस्थित हो। उन दोनो पुरुषो तथा स्त्रियो को बुलवा कर उनसे प्रश्न किये जाय। उन लोगो ने वहा सब हाल बताया। चकावल के मैंने टुकडे टुकडे करा दिये। बावरची की खाल जीवित अवस्था मे खिचवाई गई। उनमे से एक स्त्री को मैंने हाथी के पाव के नीचे डलवा दिया। दूसरी स्त्री को तोप के मुह पर रख कर उडवा दिया गया। अभागिनी बुवा अर्थात् इबराहीम की माता पर निगरानी रखने का मैंने आदेश दे दिया। वह अपने कुकर्म का फल भोग रही है और उसे इसका परिणाम मिल जायेगा।

१ एक प्रकार का पक्का हुआ मास।
२ वह कपड़ा जिस पर खाना खाने के समय भोजन रक्खा जाता है।
३ वह स्थान जहाँ जल रक्खा जाता था।
४ शेर की एक पंक्ति।

शनिवार को मैंने एक प्याला दूध पिया। रविवार को मैंने अरक पिया जिसमें गिले मख्तूम[1] घुली हुई थी। सोमवार को मैंने दूध पिया जिसमें गिले मख्तूम तथा उत्तम प्रकार का निर्याक[2] मिला हुआ था। इससे पेट साफ हो गया। प्रथम दिन की भांति शनिवार को भी पित्त से जली हुई कोई काली सी वस्तु निकली।

ईश्वर को धन्य है कि मुझे कोई हानि नहीं हुई। मुझे आज तक यह पता न था कि प्राण कितने अधिक प्रिय हो सकते हैं। यह कहा गया है कि "जो कोई मृत्यु के निकट पहुंच जाता है उसे जीवन का मूल्य ज्ञात हो जाता है।" जैसे ही इस भयंकर दुर्घटना का स्मरण हो जाता है तो मेरी दशा खराब हो जाती है। यह ईश्वर की महान् कृपा है कि उसने मुझे पुन जीवन प्रदान किया। मैं उसके प्रति किन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट कर सकता हूं।

यद्यपि यह दुर्घटना इतनी अधिक भयंकर है कि इसका उल्लेख शब्दों में नहीं किया जा सकता फिर भी मैंने पूरी घटना का सविस्तार उल्लेख इस आशय से कर दिया कि, "उन लोगों[3] के हृदय में किसी प्रकार की चिन्ता न रहे। ईश्वर को धन्य है कि मुझे अभी और दिन देखने हैं। सब कुछ कुशलता पूर्वक व्यतीत हो गया और किसी प्रकार का भय एवं चिन्ता मत करो।"

यह पत्र मंगलवार २० रबी-उल-अव्वल (२५ दिसम्बर १५२६ ई०) को चारबाग़ से लिखा गया।

जब हमें इस दुर्घटना की चिन्ता से मुक्ति प्राप्त हो गई तो उपर्युक्त पत्र लिख कर काबुल भिजवा दिया गया।

इबराहीम के परिवार के प्रति व्यवहार

क्योंकि इस अभागिनी बुवा ने इतना बड़ा अपराध किया था अत वह यूनुस अली तथा ख्वाजगी असद को सौंप दी गई। उन लोगों ने उसकी नक्द तथा अन्य सम्पत्ति एवं दास तथा दासियों पर अधिकार जमा कर अब्दुर्रहीम शगावल[4] को इस आशय से सौंप दिया कि वह उसके ऊपर कड़ी निगरानी रखे। उसके पौत्र, इबराहीम के पुत्र के प्रति अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित किया जाता था किन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि इस परिवार ने मेरे प्राण लेने का प्रयत्न किया है तो उसे आगरा में रखना उचित न था। उसे मुल्ला सरसान के साथ, जो कामरान के पास से एक महत्वपूर्ण कार्य हेतु आया था, बृहस्पतिवार २९ रबी-उल-अव्वल (३ जनवरी १५२७ ई०) को कामरान के पास भेज दिया गया।[5]

हुमायूं द्वारा जौनपुर तथा गाजीपुर पर आक्रमण

हुमायूं जो पूर्व के विद्रोहियों के विरुद्ध गया था जूनपुर[6] को विजय करके शीघ्रातिशीघ्र नसीर[7]

१ वह मिट्टी जो मुहर लगाने के काम में आती है।
२ औषधि जिसके सेवन से कहा जाता है कि विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।
३ बाबर के परिवार वाले जो काबुल में थे।
४ शगावल: जो राजदूतों इत्यादि को दरबार में प्रस्तुत करता हो।
५ कामरान उस समय कंधार में था। बाबर ने इबराहीम के पुत्र का नाम नहीं लिखा है। सम्भवत उसकी अवस्था उस समय बहुत कम रही हो और उसके नाम को कोई प्रसिद्धि न प्राप्त हुई हो।
६ जौनपुर।
७ नसीर खां नोहानी।

खा के विरुद्ध गाज़ीपुर पहुचा। उस जब उसके आक्रमण की सूचना मिली तो वह गगा नदी पार करके भाग गया। गाज़ीपुर से हुमायू खरीद[1] पहुचा किन्तु उस स्थान के अफगान उसके आक्रमण की सूचना पा कर सरयू नदी पार कर के पलायन कर गये। खरीद मे सेना वाले लूट मार करके वापस लौट आये।

हुमायूं की वापसी

जिस प्रकार मैंने निश्चय किया था, हुमायू ने शाह मीर हुसेन तथा सुल्तान जुनैद को वीरा के एक समूह सहित जूनपुर मे नियुक्त कर दिया और काजी जिया को उनके साथ कर दिया। शेख बायजीद[2] को अवध म नियुक्त कर दिया। जब ये महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो चुके तो उसने गगा नदी कडा मानिकपुर के पास पार की और काल्पी की ओर रवाना हुआ।

आलम खा (काल्पी) का अधीनता स्वीकार करना

काल्पी मे उस समय जलाल खा जिगहट का पुत्र आलम खा राज्य कर रहा था। उसने मेरे पास निष्ठापूर्ण पत्र भेजे थे किन्तु वह स्वय मेरी सेवा मे उपस्थित न हुआ था। हुमायूं ने काल्पी के समीप पहुच कर कुछ आदमिया को आलम खा के पास इस आशय से भेजा कि वे उसके हृदय से भय का अन्त करा दें। तदुपरान्त वह उसे (आगरा) लाया।

हुमायूं का आगरा पहुचना

रविवार ३ रबी-उस्सानी (६ जनवरी १५२७ ई०) को हुमायू हश्त बहिश्त नामक उद्यान[3] मे मेरी सेवा म उपस्थित हुआ। उसी दिन ख्वाजा दोस्त खावन्द भी काबुल से आ पहुचा।

राणा सागा के विरुद्ध ब्याना को सहायता

इसी बीच मे महदी ख्वाजा के आदमी लगातार पहुचने लगे और उन्होंने यह समाचार पहुचाय कि 'इसमे कोई सन्देह नही कि राणा बढता चला आ रहा है[4]। हसन खा मेवाती के विषय मे भी सुना जाता है कि सम्भवत वह भी राणा का ही साथ देगा। उनका उपाय सर्वोपरि समझना चाहिये। राज्य के हित मे यह बडा अच्छा होगा कि शाही सेना के पहुचने के पूर्व सैनिका का एक दस्ता सहायतार्थ ब्याना पहुच जाये।"

हमने राणा पर आक्रमण करने का सकल्प करके, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, यूनुस अली, शाह मनसूर बरलास, किता बेग, किस्मती तथा बूजका के अधीन एक सेना करके आदेश दिया कि वे शीघ्राति-शीघ्र ब्याना पहुच जायें।

हसन खा मेवाती का विरोध

इबराहीम के युद्ध मे हसन खा मेवाती का पुत्र नाहर खा बन्दी बना लिया गया था। हमने उसे

१ 'आईने अकबरी' में इसे जौनपुर सरकार में दिखाया गया है।
२ शेख बायजीद फ़र्मूली।
३ सम्भवत चार बाग जिसे बाद में आराम बाग अथवा राम बाग कहा जाने लगा।
४ वह मारवाड़ की ओर से आ रहा होगा।

बन्धक के रूप मे रख लिया था। उसके कारण उसका पिता दिखावट मे हमारे पास आया जाया करता था और उसकी माग किया करता था। कुछ लोगो ने यह सोचा कि यदि हसन खा को मिलाने के लिये उसके पुत्र को उसके पास भेज दिया जाये तो सम्भवत वह इससे प्रभावित होकर हमसे मिल जायेगा और हमारी सेवा मे उपस्थित हो जायेगा। तदनुसार नाहर खा को खिलअत प्रदान किया गया और उसके पिता को उसके द्वारा आश्वासन देकर विदा कर दिया गया।

यह दुष्ट धूर्त अपने पुत्र की मुक्ति की प्रतीक्षा मे चुपचाप बैठा था। जब उसे अपने पुत्र के मुक्त होने के विषय मे पता चल गया तो वह उसके पहुचने के पूर्व ही उसके अलवर पार कर लेने के उपरान्त राणा सागा से टोडा[1] मे मिल गया। उसके पुत्र को इस अवसर पर मुक्त करना उचित न था।

समारोह

इसी बीच मे बडी अधिक वर्षा होने लगी थी। सभायें हुआ करती थी। हुमायू भी उनम उपस्थित रहता था। यद्यपि वह इससे घृणा करता था किन्तु फिर भी वह कभी कभी पाप करता था।[2]

मावराउन्नहर के समाचार

इस बीच मे जो विचित्र घटनायें घटी उनमे एक यह थी—

जब हुमायू किलये ज़फर से हिन्दुस्तान की सेना मे सम्मिलित होने के लिये आ रहा था[3] तो पशागर का मुल्ला बाबा तथा उसका छोटा भाई बाबा शेख मार्ग मे उससे पृथक् होकर कौतीन करा सुल्तान[4] के पास, जिसने बल्ख के किले वालो की शक्तिहीनता के कारण उस पर अधिकार जमा लिया था,[5] चले गये थे। इस दुष्ट अभागे ने अपने भाई सहित उस ओर के कार्यों को अपनी ग्रीवा पर ले लिया और वे अईबक, खुर्रम तथा सार बाग[6] के समीप पहुचे।

शाह सिकन्दर के बल्ख को समर्पित कर देने के उपरान्त गूरी से पाव उखड गये। वह ऊज़बेग का किला समर्पित कर देने वाला ही था कि मुल्ला बाबा तथा बाबा शेख ने कुछ ऊज़बेगा सहित वहा पहुच कर उसे अपने अधिकार मे कर लिया। मीर हमह का किला निकट ही था अत उसके पास इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया कि वह किला ऊज़बेगो को सौप दे किन्तु कुछ दिन उपरान्त मुल्ला बाबा तथा बाबा शेख कुछ ऊज़बेगो सहित मीर हमह के किले मे पहुचे और मीर तथा उसके सैनिको के समक्ष यह प्रस्ताव रक्खा कि मीर तथा उसके सैनिक किला छोड दें और वे उन्हें बल्ख पहुचा देंगे। मीर हमह ने बाबा शेख को किले मे उतरवाया और शेष लोगो को ठहरने के लिये इधर उधर अऊताक[7] प्रदान कर दिये। मीर हमह ने बाबा शेख को तलवार द्वारा आहत किया और उसे तथा कुछ अन्य लोगो को बन्दी बना दिया।

१ टोडा भीम, अगरा जिले में।
२ मदिरापान किया करता था।
३ मुहर्रम ९३२ हि० (अक्तूबर १५२५ ई०)।
४ कौतीन करा सुल्तान ऊज़बेग।
५ सम्भवत बाबर के ९३१ हि० (१५२४-२५ ई०) के युद्ध के उपरान्त ऊज़बेगों ने पुन युद्ध प्रारम्भ कर दिया था।
६ ये स्थान खुरन नदी पर खुल्म तथा काहमर्द के मध्य में स्थित हैं।
७ नमदे की झोपड़ियाँ, खेमे।

उसने एक आदमी को शीघ्रातिशीघ्र तीगरी बीरदी[1] की ओर दौडाया। तीगरी बीरदी ने यार अली तथा अब्दुल लतीफ को कुछ वीरो सहित भेजा किन्तु उनके मीर हमह के किले मे पहुचने के पूर्व, मुल्ला बाबा वहा ऊजबेगो सहित पहुच चुका था। उसने युद्ध करना निश्चय कर लिया था किन्तु वह कुछ न कर सका। मीर हमह तथा उसके आदमी तीगरी बीरदी के आदमियो से मिल गये और कुन्दूज पहुचे। बाबा शेख के घाव गहरे रहे होगे। उन्होने उसका सिर काट डाला और मीर हमह उन्ही दिनो मे उसका सिर लाया।[2] मैंने मीर हमह को कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और उसे उसके साथियो एव बराबर वालो की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की। जब बाकी मगावकी[3] जाने लगा था तो मैंने उसे यह वचन दिया था कि यदि वह उन दोनो दुष्टो का सिर काट लायेगा तो उसे प्रत्येक के लिये एक एक सेर सोना प्रदान किया जायेगा। मीर हमह को अन्य पुरस्कारो एव कृपाओ के अतिरिक्त एक सेर सोना बाबा शेख के सिर के लिये प्रदान किया।[4]

बाबर के अग्र दल द्वारा ब्याना के आस पास छापा

किस्मती, जो थोडी सी सेना लेकर ब्याना गया था, कुछ लोगो के सिर काट लाया। जब वह तथा बूजका कुछ वीरो सहित शत्रुओ के विषय मे समाचार लाने गये, तो उन्होने काफिरो की सेना के दो दलो को, जो समाचार लाने के लिये नियुक्त थे, पराजित कर दिया और लगभग ७०-८० आदमियो को बन्दी बना लिया। किस्मती समाचार लाया कि हसन खा मेवाती वास्तव मे राणा सागा से मिल गया है।

बडी तोप की परीक्षा

(१० फरवरी)—रविवार ८ जमादि-उल-अव्वल को मैं उस्ताद अली कुली की बनाई हुई बडी तोप से पत्थर चलाने का दृश्य देखने गया। यह वही बडी तोप है जिसकी पाषाण को[5] ष्टिका मे कोई दोष न था और जिसका बारूद कोष्ट[6] तैयार करके उस्ताद अली कुली ने उसे पूरा कर लिया था। यह मध्याह्नोत्तर की नमाज के बाद चलाई गई और इसने १६०० कदम तक पत्थर फेंके। उस्ताद को एक तलवार की पेटी, खिलअत तथा तीपूचाक घोडा इनाम मे प्रदान किया गया।

बाबर का राणा सागा के विरुद्ध आगरा से प्रस्थान

(११ फरवरी)—सोमवार ९ जमादि-उल-अव्वल को हमने जिहाद हेतु आगरा के उपान्त मे प्रस्थान किया और खुले मैदान मे उतर पडे। ३-४ दिन तक हम लोग वहा सेना एकत्र करने एव उसे सुव्यवस्थित करने मे व्यस्त रहे। क्योकि हिन्दुस्तान वालो पर अधिक विश्वास न था अत हिन्दुस्तानी अमीरो को इधर उधर अभियानो पर शीघ्रातिशीघ्र जाने का आदेश दिया गया। आलम खा[7] को

१ तीगरी बीरदी कूचीन जो कुन्दूज मे था।
२ आगरा में।
३ बल्ख को।
४ अर्सकिन का विचार है कि यदि बाबर ने जिस सेर का उल्लेख किया है वह १४ तोले का हो तो उसका मूल्य २७ पौंड और यदि २४ तोले का हो तो ४५ पौंड होगा।
५ फ़ारसी अनुवाद में 'खानये सग'।
६ फ़ारसी अनुवाद में 'दारू खाना'।
७ आलम खाँ तहानगरी।

शीघ्रातिशीघ्र रहीम दाद की सहायतार्थ ग्वालियर पहुचने का तथा मकन, कासिम बेग सम्बली[1], हमीद तथा उसके बडे और छोटे भाइयो एव मुहम्मद जैतून को शीघ्रातिशीघ्र सम्बल[2] पहुचने का आदेश हुआ।

बाबर के अग्र दल की पराजय

इसी पडाव पर यह समाचार प्राप्त हुये कि राणा सागा के अपनी समस्त सेना सहित ब्याना की ओर पहुच जाने के कारण हमारी सेना का अग्र दल न तो स्वय ब्याना के किले मे प्रविष्ट हो सका और न किले वालो को कोई समाचार भेज सका। ब्याना के किले वाले किले से दूर निकल गये और उन्होने बडी असावधानी से आक्रमण किया। शत्रुओ ने उन पर बडा तीव्र आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर दिया। सगुर खा जनजूहा वहा शहीद हो गया। युद्ध के समय किता बेग ने हडबडी मे आक्रमण किया और एक काफिर को घोडे से गिरा दिया। किता बेग जिस समय उसे बन्दी बनाने लगा उसने किता बेग के सेवक से तलवार छीन कर बेग[3] के कधा पर तलवार का एक वार किया। किता बेग को उसके कारण बडा कष्ट उठाना पडा। वह उस जिहाद मे जो राणा के विरुद्ध हुआ भाग न ले सका। उसे स्वस्थ होने मे बडी देर लगी और सर्वदा के लिये उसके अग भग हो गये।

पता नही किस्मती, शाह मनसूर बरलास तथा जितने लोग ब्याना से आते थे, वे स्वय भयभीत थे, अथवा अन्य लोगो को भयभीत करने के लिये, काफिर[4] की सेना की वीरता एव प्रचडता की अत्यधिक प्रशसा एव तारीफ करते थे।

कासिम मीर आखुर[5] को उसी पडाव से बेलदारो सहित इस आशय से आगे भेजा गया कि मधाकूर[6] नामक परगने म जहा सेना का दूसरा पडाव होगा बहुत से कुयें खुदवा दे।

(१६ फरवरी)—शनिवार १४ जमादि-उल अव्वल को हमने आगरा के समीप से प्रस्थान किया और जिस पडाव पर कुयें खुदवाये गये थे वहा उतरे।

वहा से दूसरे दिन हम चल खडे हुये। मैंने सोचा कि यहा सीकरी[7] ही एक ऐसा स्थान है जहा इतना अधिक जल हो जो सेना के लिये पर्याप्त हो सकेगा। सम्भव है कि काफिर[8] वही पडाव डाले हो और जल पर अधिकार जमा लिया हो। हमने सेना की दाईं बाईं और मध्य की पक्तिया सुव्यवस्थित कर के प्रस्थान किया। क्योकि किस्मती एव दरवेश मुहम्मद सारबान ने उस क्षेत्र मे आने जाने के कारण ब्याना के सभी ओर के स्थानो का ज्ञान प्राप्त कर लिया था, अत उन्हें इस आशय से आगे भेजा गया कि वे सीकरी की झील के तट पर सेना के शिविर के लिये स्थान की खोज कर ले। (मधाकूर) नामक पडाव पर पहुच कर कुछ लोगो को आदेश दिया गया कि वे शीघ्रातिशीघ्र महदी ख्वाजा तथा उन लोगो को जो ब्याना के किले मे है यह समाचार पहुचायें कि वे मेरे पास शीघ्रातिशीघ्र उपस्थित हो। हुमायू के सेवक बेग

१ सम्भली।
२ सम्भल।
३ किता बेग।
४ राणा सागा।
५ मीर आखुर अथवा अमीर आखुर, शाही घोडों की देख रेख करता था।
६ फ़ारसी अनुवाद के अनुसार 'मधापुर'।
७ शेख जैन ख्वाफ़ी के अनुसार बाबर ने सीकरी के नुक्तों मे परिवर्तन करके 'शुक्री' नाम रख लिया।
८ राणा सांगा।

मीरक मुग़ल को कुछ वीरो सहित काफिर के विषय मे समाचार लाने के लिये भेजा गया। वे उसी रात मे चल खडे हुये और प्रात काल यह समाचार लाये कि शत्रु बसावर[1] से एक कोस आगे बढ कर पडाव किये हैं। उसी दिन महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उस सेना सहित जो ब्याना पर आक्रमण करने के लिये भेजी गई थी, पहुच गये।

बाबर की सेना के एक अग्र दल की पराजय

बेग (अमीर) बारी-बारी से शत्रु की सेना के विषय मे सूचना लाने के लिये नियुक्त किये गये। जिस दिन अब्दुल अज़ीज़ की बारी थी तो वह आगे पीछे, कुछ देखे बिना, सीधा कनवा की ओर, जो ५ कुरोह[2] की दूरी पर था, बढता चला गया। राणा आगे बढ रहा होगा। उसने यह सुन कर कि हमारे आदमी बेतहाशा बढते ही चले आ रहे हैं अपने ४-५ हज़ार सैनिको द्वारा उन पर अचानक आक्रमण करा दिया। अब्दुल अज़ीज़ तथा मुल्ला अपाक के साथ १०००-१५०० आदमी रहे होंगे। उन्होने अपने शत्रुओ की संख्या की ओर कोई ध्यान न दिया और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। वे तत्काल भगा दिये गये और उनमे से बहुत से लोग बन्दी बना दिये गये।

यह समाचार पाकर हमने खलीफा के मुहिब अली को खलीफा के सेवको सहित (उस ओर) भेजा। मुल्ला हसन तथा कुछ अन्य ऊत्रूक सूबरक[3] उनकी सहायतार्थ भेजे गये। तदुपरान्त मुहम्मद अली जगजग को भी भेजा गया। जो लोग मुहिब अली की सेना के पहुचने के पूर्व भेजे गये थे अर्थात् अब्दुल अज़ीज़ एव उसके सहायक, उन्हें काफिर ने भगा दिया था। उसकी पताका पर अधिकार जमा लिया था और मुल्ला नमत, मुल्ला दाऊद, मुल्ला अपाक के छोटे भाई तथा अन्य बहुत से लोगो की हत्या कर दी गई थी। खलीफा के मुहिब अली के अधीन जो सेना भेजी गई थी उसके ताहिर तीबरी पर काफिर[4] ने उसके अन्य सहायको के पहुचने के पूर्व ही विजय प्राप्त कर ली। इसी बीच मे मुहिब अली भी युद्ध मे गिरने वाला ही था किन्तु बाल्तू ने पीछे से पहुच कर उसे वहा से निकाल लिया। शत्रु ने उनका एक कुरोह[5] तक पीछा किया किन्तु मुहम्मद अली जगजग को अधिक सेना सहित देख कर वे रुक गये।

निरन्तर यह समाचार प्राप्त होने लगे कि शत्रु बराबर निकट आता जा रहा है। हमने अस्त्र शस्त्र धारण कर लिये तथा घोडो को कवच पहना दिये। हमने आदेश दिये कि गाडियो को खीच कर पीछे पीछे लाया जाये और हम शीघ्रातिशीघ्र बढते चले गये। हम लोग एक कुरोह तक बढ गये। शत्रु एक ओर हो गये होगे।

बाबर द्वारा अपने शिविर का दुर्गीकरण

हमारे एक ओर बडी झील थी। जल के कारण हम लोग वही उतर पडे। हमने अपने सामने का

१ ब्याना के उत्तर पश्चिम में १० १२ मील पर।
२ १० मील।
३ प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद में भी इन्हीं शब्दों का प्रयोग हुआ है। किन्तु 'बाबर नामा' की मूल तुर्की पोथी में इससे पूर्व इस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। अर्सकिन के अनुसार इसका अर्थ "प्रत्येक अपने घोडे की रफ़्तार के अनुसार" है।
४ राणा सांगा।
५ दो मील।

भाग गाडियो द्वारा दृढ बना लिया। गाडियों को हमने जंजीरो[1] से जकड दिया। दो गाडियो के बीच मे, जो जजीरो से जकडी थी, ७-८ गज की दूरी होगी। मुस्तफा रूमी ने रूमी ढग से गाडिया तैयार कराई थी। वे अत्योत्तम बडी मजबूत एव उपयोगी थी। क्योकि उस्ताद अली कुली को मुस्तफा से ईर्ष्या थी, अत मुस्तफा को दायें ओर की सेना मे हुमायू के सामने नियुक्त किया गया। जिन स्थानो पर गाडिया न पहुच पाई थी वहा खुरासानी एव हिन्दुस्तानी बेलदारो द्वारा खाई खुदवा दी गई।

बाबर की सेना का हतोत्साहित होना

काफिर[2] के बडी तीव्र गति से अग्रसर होने, ब्याना मे (कुशलतापूर्वक) युद्ध करने और शाह मनसूर, किस्मती एव ब्याना के शेष लोगों द्वारा काफिर की अत्यधिक प्रशसा के कारण, सेना वाले हतोत्साहित होने लगे। सब से बढ कर, अब्दुल अजीज की पराजय हो गई। हमने अपने आदमियो का उत्साह बढाने एव सेना की जाहिरी दृढता के लिये जिन स्थानो पर गाडिया न पहुची थी ७-७ और ८-८ गज की दूरी पर लकडी की तिपाइया रखवा दी और उन्हें कच्चे चमडे की रस्सियो द्वारा खिचवा कर बधवा दिया। इन सामानो एव यत्रो की तैयारी के पूर्ण होने मे २०-२५ दिन लग गये।

काबुल से एक सैनिक दल का सहायतार्थ पहुचना

इसी बीच मे कासिम हुसेन सुल्तान[3] जो सुल्तान हुसेन मुहम्मद[4] की एक पुत्री का पुत्र है अहमद यूसुफ[5] कवाम ऊर्द् शाह तथा मेरे बहुत से मित्र लगभग ५०० की सख्या मे काबुल से आ गये। अभागे मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी तथा बाबा दोस्त सूची[6], जो काबुल से मदिरा लाने गया था, ऊटो की तीन कितार[7] लेकर काबुल से पहुच गये। ऊटो पर गजनी की बडी ही उत्तम प्रकार की मदिरा थी।

मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी की भविष्य-वाणी

ऐसे अवसर पर, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, जब कि सेना हतोत्साहित और पिछली बातो के कारण भयभीत थी, अभागा मुहम्मद शरीफ, यद्यपि उसे मुझसे कुछ कहने का साहस न होता था, जिन लोगों से मिलता अत्यधिक अतिशयोक्ति से यही कहता कि, "इन दिनो मगल ग्रह पश्चिम दिशा मे है। जो कोई इस ओर[8] से युद्ध करने जायेगा वह पराजित होगा।" जो कायर इस अभागे ज्योतिषी से प्रश्न करता वह और भी हतोत्साहित हो जाता। हमने उसकी इस बे सिर पाव की बातो की ओर कोई ध्यान न दिया और जिस प्रकार निश्चय किया था, युद्ध हेतु तैयार हो गये।[9]

---

१ पानीपत मे चमडे की रस्सियों का प्रयोग हुआ था।
२ राणा सागा।
३ कासिम हुसेन सुल्तान (ऊजबेग शैबान)।
४ सुल्तान हुसेन मुहम्मद बाईकरा।
५ अहमद यूसुफ ऊगलाकची।
६ सक्का, पानी पिलाने वाला।
७ एक कितार मे लगभग १० ऊंट होते थे।
८ पूर्व।
९ ९०६ हि० (१५००-१५०१ ई०) में ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास के कारण सरे-पुल के युद्ध में बाबर बुरी तरह धोखा खा चुका था।

बाबर द्वारा मेवात मे लूट मार का आदेश

(२४ फ़रवरी)—रविवार २२ जमादि-उल-अव्वल को शेख जमाल को आदेश दिया गया कि वह दोआब के मध्य तथा देहली से जितने भी तरकशबन्द[1] एकत्र कर सके एकत्र कर के मेवात के ग्रामो मे लूट मार प्रारम्भ कर दे और उससे इस सम्बन्ध मे जो कुछ हो सके उसमे कमी न करे ताकि शत्रु को उस ओर की चिन्ता हो जाये। मुल्ला तर्क अली को, जो काबुल से आ रहा था, आदेश दिया गया कि वह शेख जमाल की सहायतार्थ पहुच जाये और मेवात को नष्ट भ्रष्ट करने मे कोई कसर न उठा रक्खे। मगफूर दीवान को भी इसी विषय मे आदेश दिये गये। उन लोगो ने उस क्षेत्र के किनारे के कुछ ग्रामो पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया और कुछ लोगों को बन्दी भी बना लिया किन्तु इस कारण शत्रुओं की चिन्ता मे कोई वृद्धि न हुई।

बाबर का मदिरा-पान त्यागना

(२५ फ़रवरी)—सोमवार २३ जमादि-उल-अव्वल को मैं सैर के लिये सवार हुआ था। सैर के समय मेरे हृदय मे आया कि मैं पाप से तौबा करने[2] के विषय मे सोचा करता था और जो कार्य मैं शरा के विरुद्ध किया करता था, उन्होने मेरे हृदय पर अमिट छाप लगा दी थी। मैंने अपनी आत्मा मे कहा —

शेर

"कब तक तू पाप से स्वाद लेती रहेगी,
तौबा स्वाद से शून्य नही है, इसे चख।"[3]

पद्य[4]

"वर्षों तक कितने पापो ने तुझे अपवित्र किया,
कितनी शान्ति तुझे पापो ने दी।
कितना तू अपनी वासनाओं का दास रहा,
कितना तेरा जीवन व्यर्थ गया।"

× × ×

"अब तू गाज़ियो के समान सकल्प करके अग्रसर हुआ है,
तू ने अपने मुख मे अपनी मृत्यु देख ली है।
जो कोई मृत्यु को दृढतापूर्वक पकडने का सकल्प कर लेता है,
तू जानता है कि उसमे क्या परिवर्तन हो जाता है?"

× × ×

१ सैनिक।
२ मदिरापान त्यागने।
३ यह शेर फ़ारसी का है।
४ यह पद्य तुर्की का है।

"वह अपने आपको निषिद्ध वस्तुओ से बडी दूर ले जाता है,
वह अपने समस्त पापो मे अपने आपको साफ कर लेता है।
अपने ही भले को सामने रखते हुये, मैंने शपथ की कि त्यागूगा
मैं अपने पापो मे से, मदिरापान।'[1]

× × ×

"चादी सोने की सुराहिया तथा प्याले और दावत के बरतन
मैंने सब के सब मगवाये।
मैंने तत्काल उन्हें वहीं तोडवा दिया,
इस प्रकार मदिरापान त्याग कर मेरे हृदय को शान्ति प्राप्त हो गई।'

मैंने सोने चादी के बरतनो को तोडवा कर सहायता के पात्रों एव दरवेशो को बाट दिया। सर्व प्रथम मदिरापान त्यागने मे मेरा साथ जिसने दिया वह असस[2] था। वह दाढी न मुडवाने मे भी मेरा साथ दे चुका था। उस रात्रि मे तथा दूसरे दिन तक बेगो[3], घर के सैनिको, अन्य सैनिको तथा असैनिको म स लगभग ३०० व्यक्तियो ने तोबा कर ली। जो मदिरा हमारे साथ थी, वह भूमि पर फेंक दी गई। जो मदिरा बाबा दोस्त लाया था, उसके विषय मे आदेश हुआ कि उसमे नमक मिला कर सिर्का बना दिया जाये। जिस स्थान पर मदिरा फेंकी गई थी वहा एक कुआ खुदवाने तथा उसके बराबर एक खैरातखाना बनवाने का आदेश दे दिया गया। मुहर्रम ९३५ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १५२८ ई०) म जब मैं ग्वालियर की सैर के उपरान्त लौटते समय दोलपुर[4] से सीकरी पहुचा तो यह पूरा हो चुका था।

मुसलमानो के लिये तमगा का क्षमा होना

इससे पूर्व मैंने सकल्प किया था कि यदि मुझे सागा काफिर पर विजय प्राप्त हो जायेगी तो मै मुसलमानो को तमगा[5] अदा करने से मुक्त कर दूगा।[6] जिस समय मैंने मदिरापान से तोबा की तो दरवेश मुहम्मद सारबान तथा शेख जैन[7] ने मुझे इस बात का स्मरण कराया। मैंने कहा, "तुम लोगो ने बडी अच्छी बात याद दिलाई।"

मैंने अपने अधीनस्थ राज्य के समस्त मुसलमानो को तमगा से मुक्त कर दिया। मैंने मुशियो को आदेश दिया कि वे अपनी इन दो महत्वपूर्ण बातों की, जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है, सूचना हेतु फरमान

१ इससे पता चलता है कि उसने केवल मदिरा त्यागी थी, माजून नहीं।
२ सम्भवत हाजी मुहम्मद असस (रात्रि का पहरेदार)।
३ अमीरों।
४ धौलपुर।
५ जहांगीर ने भी तमगा के माफ़ करने का उल्लेख 'तुज़ुक' में किया है।
६ फ़रमान से पता चलता है कि बाबर ने राणा सागा से युद्ध के पूर्व ही तमगा के माफ़ किये जाने का आदेश दे दिया था। कारण कि यह २४ जमादि उल अव्वल, २६ फ़रवरी १५२७ ई०, को निकाल दिया गया था। और बाबर को विजय १६ मार्च को प्राप्त हुई।
७ शेख जैनुद्दीन वफ़ाई ख्वाफ़ी बाबर का बड़ा प्रिय मुसाहिब और अपने युग का बहुत बडा विद्वान् था। उसकी मृत्यु ९४० हि० (१५३३ ३४ ई०) में हुई और वह आगरा में दफ़न हुआ। उसने 'तुज़ुक बाबरी' के हिन्दुस्तान से सम्बधित भाग का बड़ा जटिल फ़ारसी में अनुवाद किया है। इस अनुवाद की एक प्रतिलिपि ब्रिटिश म्युजियम लन्दन में है। भारतवर्ष में रज़ा लाइब्रेरी रामपुर में भी इसकी एक हस्त-लिखित पोथी है।

लिखें। शेख़ ज़ैन ने अपनी उत्कृष्ट रचना शक्ति का प्रयोग इन फरमानों में किया और उसके लिखे हुए फरमान मैंने अपने अधीनस्थ समस्त राज्य में भेजे।

मदिरापान त्यागने के सम्बन्ध में फरमान

'उस ईश्वर की स्तुति करनी चाहिये जो अनुतापी से
प्रेम करता है और उन लोगों से प्रेम करता है जो
आत्म-शुद्धि करते हैं। हमें उस महान् दयालु
के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिये जो अपने
ऋणियों को मुक्त करता है और उन लोगों को
क्षमा करता है जो क्षमा-याचना करते है।
मुहम्मद पर जो समस्त प्राणियों में उत्कृष्ट हैं तथा उनकी
पवित्र संतान एवं उत्कृष्ट मित्रों पर प्रभु की अनुकम्पा हो।'

उस विख्यात जन समूह के दर्पण अर्थात् उन महान् बुद्धि वालों पर जो कि पवित्रता के मोतियों का खज़ाना हैं और जो इन चमकते हुये रत्नों की छाप के मूर्तिमान हैं—कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से पाप करता है, और पापों की लिप्सा का परित्याग केवल दैवी सहायता के कारण सम्भव है और यह सहायता केवल उस महान् (ईश्वर) की ओर से आती है—ईश्वर की अनुकम्पा हो।

'प्रत्येक व्यक्ति पापों की ओर प्रवृत्त होता है और यह
केवल ईश्वर की ही महान् अनुकम्पा पर निर्भर है
और वही जिस किसी को उसकी इच्छा होगी उसे
पापों से मुक्त करेगा और ईश्वर अत्यधिक दयालु है।'

उपर्युक्त विवरण का उद्देश्य यह है कि मनुष्य अपनी स्वाभाविक कमजोरियों, बादशाहों तथा बादशाही की प्रथाओं, अन्य बड़े लोगों की आदतों के अनुसार बादशाह से सिपाही तक—अपनी युवावस्था में कुछ न कुछ पाप एवं अनुचित कार्य करता रहता है। कुछ दिनों के उपरान्त हम भी खेद एवं पश्चाताप प्रकट करते हुये एक-एक करके उन पापों का परित्याग करते रहे और तोबा द्वारा उन पापों के द्वारों को बन्द करते रहे *किन्तु मदिरापान से तोबा, जो कि समस्त तोबाओं से आवश्यक तथा अनिवार्य थी, उन कार्यों* के कक्ष में, जिनका उचित अवसर पर प्रकट होना निश्चित होता है, आवरण में रही। इसने अपना मुख उस समय तक न दिखाया जब तक हमने जिहाद करने वालों के वस्त्र धारण न कर लिये और इस्लाम की सेना सहित काफिरों के संहार हेतु रणक्षेत्र में पहुँच कर पड़ाव न डाल दिये। इस अवसर पर मुझे एक गुप्त दैवी प्रेरणा मिली और मैंने एक अभ्रान्त आवाज़ सुनी जिसका तात्पर्य यह था, 'क्या उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं समय नहीं आया है कि वे अपने हृदय को ईश्वर की चेतावनी को तथा उस सत्य को जिसे अलौकिक शक्ति ने बताया है समर्पित कर दें?'[२]

१ यह भाग अरबी में है और कुरान शरीफ़ से उद्धृत है।
२ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।

इस पर हम पाप के साधनो का अन्त करने का घोर प्रयत्न करने लगे और हमने बडे प्रयत्न से तोबा के द्वार खटखटाये। सहायता के मार्गदर्शक ने इस लोकोक्ति के अनुसार कि, "जो कोई खटखटायेगा और पुन खटखटायेगा, उसके लिये वह खुल जायेगा" हमारा साथ दिया। यह आदेश निकाला गया कि जिहाद के साथ साथ उससे भी बडा एक महान् सघर्ष[२] प्रारम्भ हो जो वासनाओ के विरुद्ध होता है। सक्षेप म हमने बडी पवित्र भावनाओ से यह घोषणा की कि, "हम अपनी वासनाओ को अपने वश म करेंगे", और मैंने अपने हृदय पट पर यह अकित कर लिया 'मैं तेरी ओर तोबा के साथ मुख करता हू और मैं मोमिनो[३] मे अव्वल हू।'[४] मैंने अपने इस सकल्प को जो मेरे सीने के खजाने मे छिपा था, घोषणा करा दी कि हम मदिरापान न करेंगे। विजयी सेवको ने सम्मानित शाही आदेशानुसार सुराही, खुल्लम खुल्ला प्याले तथा सोने चादी के अन्य बरतन जो अपनी सख्या की अधिकता एव देदीप्यमानता के कारण आकाश के तारामडल के समान थे, घृणा एव विनाश की भूमि पर फिकवा दिये। उन बरतनो को उसी प्रकार टुकडे टुकडे कर दिया गया जैसा कि यदि ईश्वर ने चाहा तो मूर्तिपूजको की मूर्तियो को टुकडे टुकडे कर दिया जायेगा। इन टुकडो को दरिद्रियो एव सहायता के पात्रो मे बाट दिया गया। इस तोबा के आशीर्वाद से जो शीघ्र ही स्वीकार कर ली जायेगी, हमारे बहुत से विश्वासपात्र, इस कथनानुसार कि "सर्व साधारण लोग अपने बादशाह के धर्म का पालन करते है", उसी सभा मे तोबा के सम्मान द्वारा सम्मानित हो गये और उन लोगो ने मदिरापान पूर्णत त्याग दिया। इस समय तक बहुत बडी सख्या मे हमारी प्रजा हर घटे यह शुभ आशीर्वाद प्राप्त करती जा रही है। मुझे आशा है कि इस कथन के अनुसार कि, जो कोई लोगो को पवित्र आचरण की ओर प्रेरित करता है उसे वही लाभ होता है जो उस कार्य के आचरण करने वाले को', इस कार्य का लाभ शाही प्रताप को प्राप्त होगा और वह उत्तरोत्तर विजयो द्वारा उन्नति करता जायेगा।

इस सकल्प के उपरान्त मैंने अपने अधीनस्थ राज्य के सभी भागो मे—ईश्वर उन्हें सभी खतरो तथा आफतो से सुरक्षित रक्खे—यह आदेश निकलवा दिया कि न तो कोई मदिरापान करेगा और न मदिरा बनायेगा, न इसका क्रय विक्रय करेगा और न इसे अपने पास रक्खेगा और न कहीं लाये-ले जायेगा। इसे कभी मत छूना—सम्भव है कि इससे कभी तुम्हारा भला हो जाये।'[५]

मैं इन महान् विजयो[६] के प्रति ईश्वर का कृतज्ञ हू। ईश्वर द्वारा अपनी तोबा एव खेद के स्वीकार हो जाने के कारण उसके प्रति आभार प्रदर्शन करने के लिये मेरी शाही कृपाओ का समुद्र उमड पडा। और दया भाव की वह लहरें जो ससार की समृद्धि एव मानव के आदर-सम्मान का साधन हैं, प्रकट हो गई और मैंने अपने अधीनस्थ समस्त राज्य से मुसलमानो के लिये तमगा कर—यद्यपि इसकी आय मलूक्य

१ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
२ जिहादे अकबर। साधारण प्रयोग में जिहाद का अर्थ संघर्ष अथवा घोर प्रयत्न है किन्तु इस्लाम के हित के लिये ग़ैर मुस्लिमों से युद्ध को भी जिहाद कहा जाता है। सूफी संतों के अनुसार जिहाद दो प्रकार के होते है —जिहादे अकबर अथवा महान जिहाद जो मनुष्य अपनी वासनाओं के विरुद्ध करता हैं। और जिहादे असग़र अथवा छोटा साधारण जिहाद काफ़िरों के विरुद्ध युद्ध को कहते हैं।
३ धर्मनिष्ठ मुसलमान।
४ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
५ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
६ वासना पर विजय तथा अन्य सासारिक विजय।

की कल्पना से कहीं अधिक थी और यह भूत काल के बादशाहों के समय से प्रचलित था और इसकी वसूली मुहम्मद साहब की शरीअत के नियमों के बाहर थी—अन्त करा दिया। यह आदेश दिया गया कि किसी भी नगर, कस्बे, मार्ग, घाट, दर्रे अथवा बन्दरगाह पर तमगा न वसूल किया जाये। इस आदेश मे किसी प्रकार के परिवर्तन की अनुमति नही। "जो कोई यह सुन लेने के उपरान्त इसमे किसी प्रकार का परिवर्तन करेगा तो इसका पाप उस पर होगा।"[1]

जो कोई शाही कृपा की छाया मे निवास करते हैं, अर्थात् तुर्क, ताजीक, अरब, हिन्दी, ईरानी, कृषक, सैनिक एव समस्त कौम और कबीले वाले तथा आदम की सतान धर्म के नियमो द्वारा अपने आपको दृढ बना लें और इस वश के प्रति जो कि अनन्त तक स्थापित रहेगा ईश्वर से शुभकामनायें करते रहें। वे इन आदेशो का दृढतापूर्वक पालन करें और इनका किसी प्रकार उल्लघन न करें। सब के लिये यह आवश्यक है कि वे इस फरमान के अनुसार आचरण करें और जब यह शाही तौकी[2] द्वारा प्रमाणित होकर[3] उन्हें प्राप्त हो तो वे इसे प्रामाणिक समझें।

सम्मानित शाही आदेशानुसार—ईश्वर उसकी उत्कृष्टता को स्थायी रक्खे—२४ जमादि-उल-अव्वल ९३३ हि० (२६ फरवरी १५२७ ई०) को लिखा गया।

बाबर के शिविर में चिन्ता

पिछली घटनाओं के कारण, उन दिनो, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, छोटे बडे, बडी चिन्ता एव असमजस मे थे। कोई वीरता की बात एव साहसपूर्ण राय न देता था। वज़ीरो द्वारा, जिन्हे बात करनी चाहिये, कोई पौरुष की बात न होती थी और न अमीर जो प्रदेशो को हडप कर जाते हैं कोई बात करते थे। न तो कोई साहसपूर्ण परामर्श देता था और न कोई किसी आक्रमण के विषय मे कोई योजना बनाता था। खलीफा ने इस युद्ध के समय बडा अच्छा काम किया। उसने सुव्यवस्था एव देख भाल से सम्बन्धित किसी बात की उपेक्षा न की। उसने बडे परिश्रम एव सावधानी से कार्य किया।

बाबर की एक आश्चर्यजनक योजना

अन्त मे लोगो के हतोत्साहित होने के विषय मे सूचना पाकर तथा लोगो की शिथिलता देख कर मुझे एक उपाय सूझा। मैंने अपने समस्त बेगों[4] एव वीरो को बुलवा कर उनसे कहा

"बेगो तथा वीरो!"

शेर[5]

'जो कोई भी पैदा हुआ है वह मृत्यु को प्राप्त होगा,
जो स्थायी तथा बाकी रहेगा, वह ईश्वर है।"

१ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
२ तौक़ी :—शाही आदर्श वाक्य।
३ शाही मुहर, जिस पर बादशाह का नाम तथा उपाधि लिखी होती है, लग कर।
४ अमीर।
५ यह शेर फ़ारसी में है।

पद्य

'जो कोई भी जीवन की सभा में प्रविष्ट हुआ है,
अन्त में वह मृत्यु का प्याला पियेगा।
जो जीवन की सराय में आया है,
अन्त में भूमि के दुख भरे घर से चला जायेगा।'

"कुख्यात होकर जीवित रहने से यश पाकर मृत्यु को प्राप्त होना अच्छा है।

शेर

'यदि मैं यश पा कर मरूँ तो यह उचित है,
मुझे यश अवश्य चाहिये कारण कि शरीर नश्वर है।"

"महान् ईश्वर ने हमें इतना बड़ा सौभाग्य प्रदान किया है और इतने बड़े यश को हमारे निकट कर दिया है कि हम लोग या तो शहीद होंगे और या गाज़ी, अतः सब को कुरान शरीफ की शपथ लेनी चाहिये कि कोई भी इस शत्रु के सामने से मुंह मोड़ने के विषय में न सोचेगा और जब तक शरीर में प्राण है उस समय तक इस रण-क्षेत्र एवं युद्ध से पृथक् न होगा।" समस्त उपस्थित जनों, बेगों, सेवकों तथा छोटे बड़े लोगों ने प्रसन्नता पूर्वक अपने अपने हाथ में कुरान शरीफ लेकर इस विषय में शपथ ली एवं प्रतिज्ञा की। यह बड़ी ही उत्तम योजना सिद्ध हुई। इसका निकट तथा दूर के लोगों, मित्रों एवं शत्रुओं पर बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ।

राज्य में विद्रोह

उन्हीं दिनों में प्रत्येक दिशा में विद्रोह एवं अशान्ति फैल गई। हुसेन खां नोहानी ने रापरी पहुँच कर उसे अपने अधिकार में कर लिया। कुतुब खां के आदमियों ने चन्दवार[2] पर कब्ज़ा कर लिया। रुस्तम खां नामक एक दुष्ट ने दोआब के मध्य के तरकशबन्दों[3] को एकत्र कर के कोल पर अधिकार जमा लिया और कीचीक अली को बन्दी बना लिया। ख्वाजा ज़ाहिद सम्भल[4] को छोड़ कर चल दिया। सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई कन्नौज से मेरे पास उपस्थित हुआ। ग्वालियर के काफ़िरों ने वहां पहुँच कर उसे घेर लिया। आलम खां को जब ग्वालियर की सहायतार्थ भेजा गया तो वह वहां न गया अपितु अपनी विलायत से चला गया। रोज़ाना प्रत्येक दिशा से बुरे समाचार आने लगे। सेना से कुछ हिन्दुस्तानियों ने भागना प्रारम्भ कर दिया। हैबत खां कर्ग अन्दाज़[5] भाग कर सम्भल चला गया। यारी का हसन खां भाग कर काफ़िरों से मिल गया। हमने इनमें से किसी बात की कोई चिन्ता न की अपितु अपने कार्य में व्यस्त रहे।

बाबर का युद्ध हेतु अग्रसर होना

जब समस्त सामग्री तथा यन्त्र, गाड़ियां एवं पहियेदार तिपाइयां तैयार हो गईं तो हमने अपनी

१ फ़िरदौसी के 'शाहनामा' से उद्धृत।
२ इसे चंदवाल भी कहते हैं। यह यमुना नदी पर आगरा से २५ मील पूर्व स्थित है।
३ सैनिकों।
४ सम्भल।
५ गैंडे को मारने वाला। यदि इसे 'गुर्ग अन्दाज़' पढ़ा जाय तो इसका अर्थ भेड़िये को मारने वाला' होगा।

सेना की दायें, बायें एवं मध्य-भाग की पक्तियों को ठीक किया और मगलवार ९ जमादि-उल-अव्वल (१३ मार्च १५२७ ई०) को नौरोज के दिन[1] प्रस्थान किया। हमने गाडियों तथा पहियेदार तिपाइयों को अपने आगे-आगे रवाना किया। इनके पीछे-पीछे उस्ताद अली कुली तथा समस्त तोप चलाने वालों को नियुक्त किया गया ताकि वे पैदल रवाना हों और गाडियों से पृथक् न होने पायें और अपनी पक्ति ठीक रखते हुये प्रस्थान करें।

जब सेना के विभिन्न भाग—दाया, बाया एव मध्य, अपने अपने स्थान को पहुच गये तो मैंने घोडे पर सवार होकर एक भाग से दूसरे भाग मे चक्कर लगाया और बेगो[2], वीरो तथा सैनिको को प्रोत्साहन प्रदान किया। हर समूह को यह बता कर कि उसे कहा खडा होना है और प्रत्येक व्यक्ति को यह आदेश दे कर कि उसे किस प्रकार युद्ध करना है, हम निश्चित योजना के अनुसार सुव्यवस्थित दशा मे लगभग १ कुरोह[3] तक रवाना हुये और फिर उतर पडे।

काफिर के आदमी भी सावधान थे। वे अपनी सेना के दल सुव्यवस्थित करके अपनी दिशा मे आने लगे।

शिविर लगाया गया और उसे खाइयो एव गाडियो द्वारा दृढतापूर्वक सुरक्षित कर लिया गया। क्योकि हमारा उस दिन युद्ध करने का विचार न था अत हमने कुछ वीरो को यह आदेश दे कर आगे भेजा कि वे शत्रुओ से युद्ध करें और इस प्रकार इससे शकुन प्राप्त किया जाये। उन्होने कुछ काफिरो को बन्दी बना लिया और कुछ लोगो के सिर काट कर ले आये। मलिक कासिम भी कुछ सिरो को काट कर लाया। उसने बडा ही उत्तम कार्य किया। इन सफलताओ के कारण हमारे आदमियो का उत्साह बढ गया।

जब हम लोगो ने दूसरे दिन प्रस्थान किया तो मेरा विचार था कि हम युद्ध करें किन्तु खलीफा तथा अन्य हितैषियो ने निवेदन किया कि "जो पडाव पूर्व से निश्चित हो चुका है, वह निकट है अत हमारे लिये यही उचित होगा कि हम खाइयों तथा प्रतिरक्षा का वहीं प्रबन्ध करायें और सीधे उधर ही प्रस्थान करें।" खाइयों की व्यवस्था हेतु खलीफा सवार हो कर उस स्थान पर पहुचा और बेलदारो को जिन जिन स्थानो पर खाइया खोदी जानी थी नियुक्त कर दिया और कार्य की देखरेख हेतु मुहसिलों[4] को नियुक्त करके लौट आया।

कनवा[5] का रण-क्षेत्र

शनिवार १३ जमादि-उस्सानी (१७ मार्च १५२७ ई०) को हमने गाडियो को खिचवा कर अपने सामने कराया और एक कुरोह[6] यात्रा कर के सेना के दायें, बायें तथा मध्य भाग की पक्तियां सुव्यवस्थित की और जो रण भूमि इस कार्य हेतु चुनी गई थी वहा उतर पडे।

कुछ खेमे लग चुके थे और कुछ लगाये जा रहे थे कि शत्रुओ के दृष्टिगत होने के समाचार प्राप्त

१ इस दिन ईरानियों के अनुसार सूर्य मेष राशि में होता है।
२ अमीरों।
३ २ मील।
४ निरीक्षकों।
५ कनवा अथवा कनुवा बयाना कस्बे से तीन मंजिल दूर बयाना कस्बे मे है। राणा सांगा ने इसे अपने राज्य के उत्तरी भाग का सीमांत निश्चित किया था और वहाँ एक छोटे से महल का निर्माण कराया था।
६ दो मील।

हुये। मैं तत्काल सवार हो गया ताकि सेना की प्रत्येक पक्ति का हर आदमी अपने अपने स्थान पर सावधान हो जाये और सेना की पक्तियो को गाडिया द्वारा सुदृढ कर दिया जाये।

क्योंकि इस फतहनामे से जो शेख जैन की रचना है इस्लामी सेना का हाल, काफिरो की अत्यधिक सेना, दोनो ओर की पक्तिया एव व्यवस्था और मुसलमानो तथा काफिरो के युद्ध का सविस्तार भली भाति ज्ञान हो जाता है अत इसे बिना कुछ घटाये बढाये मूल रूप से उद्धृत किया जाता है।[1]

शेख जैन द्वारा रचित फतहनामा

प्रस्तावना

उस ईश्वर की स्तुति की जाती है जो अपने वचन का सच्चा, अपने दासो का सहायक, अपनी सेनाओं का मददगार, शत्रुओ का विनाशक ऐसी एक सत्ता है जिसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

हे इस्लाम के आधार को उन्नति देने वाले, अपने निष्ठावान् भक्तो के सहायक, मूर्तियो की नीवें का खडन करने वाले, विद्रोही शत्रुओ पर विजय प्रदान करने वाले, अधकार के अनुयायियो का समूलोच्छेदन करने वाले (मैं तेरी स्तुति करता हू)।

वह ईश्वर पूजनीय है जो दोनो लोको का स्वामी है और उसका आशीर्वाद प्राणियो में सर्वोत्कृष्ट मुहम्मद पर हो जो गाजियो, तथा ईमान के योद्धाओं के स्वामी हैं। उसका आशीर्वाद मुहम्मद साहब की सतान एव मित्रो पर हो जो कयामत तक पथ प्रदर्शन करते रहेंगे।[2]

परमेश्वर की निरन्तर देना के कारण बारम्बार उसकी स्तुति एव उसके प्रति आभार प्रदर्शित किया जाता है और इस स्तुति एव आभार प्रदर्शन के कारण निरन्तर ईश्वर की कृपा प्राप्त होती रहती है। प्रत्येक दैवी कृपा हेतु आभार प्रदर्शित करना चाहिये और प्रत्येक कृतज्ञता के उपरान्त दया प्राप्त होती है। पूर्ण रूप से कृतज्ञता प्रदर्शित करना मनुष्य से सम्भव नही। बडे बडे महान् व्यक्ति भी आभार-प्रदर्शन मे असमर्थ रहते हैं, विशेष रूप से इतनी बडी देन के लिये जिससे बढ कर न तो इस लोक मे कोई सौभाग्य है और न परलोक मे। इसके प्रति कृतज्ञता प्रकट ही नही की जा सकती। यह देन शक्तिशाली काफिर की पराजय तथा अत्यधिक धनी काफिर के राज्य पर विजय है। बुद्धिमानो की दृष्टि मे इस देन से बडी कोई देन हो ही नही सकती। ईश्वर को धन्य है कि यह महान् देन तथा आशीर्वाद, जो इस शुभचिन्तक को झूले[3] से लेकर इस समय तक महत्वाकाक्षा थी, मसारो के बादशाह की महान् कृपा के कारण इस समय प्रकट हुआ है। उस खोलने वाले ने जो खजाना को मागने की प्रतीक्षा के बिना ही लुटाता है, हमारे विजयी नवाब (बाबर) के लिये खोल दिया है और हमारी सेना के विजयी वीरो के नाम विख्यात गाजियो की सूची मे सुशोभित हो गये हैं। हमारे विजयी सैनिको के कारण इस्लाम की पताकायें सर्वोच्च शिखर तक पहुच गई हैं। इस शुभ सौभाग्य का विवरण इस प्रकार है—

१ बाबर ने इस फ़रमान को एक महत्वपूर्ण युद्ध के सविस्तार वर्णन का साधन बनाया है। बाबर की सीधी सादी एवं रोचक शैली की तुलना में शेख़ जैन ख्वाफ़ी की शैली बड़ी ही जटिल एवं बोझल है।

२ उपर्युक्त वाक्य अरबी में है।

३ बाल्यावस्था।

राणा सांगा तथा उसकी सेनायें

जब हमारे सैनिकों की, जिनकी रक्षा इस्लाम द्वारा हो रही है, चमकती हुई तलवारों ने हिन्दुस्तान के भूभाग को विजय एवं जीत के प्रकाश से देदीप्यमान किया, जैसा कि पिछले फतह नामा[1] में उल्लेख हो चुका है, तो दैवी कृपा ने हमारी पताकाओं को देहली, आगरा, जूनपुर[2], खरीद, बिहार के भूभाग में बलन्द किया और बहुत से काफिर तथा मुसलमान सरदारों ने भाग्यशाली नवाब[3] की अधीनता स्वीकार कर ली, किन्तु राणा सांगा काफिर जो इससे पूर्व इस नवाब[3] की अधीनता स्वीकार कर चुका था अब अभिमान के कारण फूट गया और अवज्ञाकारियों के समूह में सम्मिलित हो गया।[4] शैतान के समान उसने अपना सिर उठाया और विशाल काफिरों की एक सेना एकत्र की। उनमें कोई अपनी ग्रीवा में धिक्कार का तौक यज्ञोपवीत के रूप में डाले हुए थे और कुछ लोग अपने दामन में कुफ्र के आपद्ग्रस्त काटे रखते थे। बादशाह के प्रताप के सूर्योदय एवं शहंशाह की खिलाफत की उषा के पूर्व इस अभिशापी काफिर की—कयामत में उसका कोई सहायक न हो—स्थिति ऐसी थी कि इस विस्तृत देश के प्रतापी बादशाह, उदाहरणार्थ देहली, गुजरात तथा माडू के सुल्तानों में से कोई इस दुष्ट का बिना अन्य काफिरों की सहायता के मुकाबला न कर सकता था। एक एक कर के सभी उसकी चाटुकारी करके समय के अनुकूल व्यवहार करने लगे थे। उसे यद्यपि यह सम्मान प्राप्त था किन्तु बड़े बड़े राजाओं तथा रायों ने जो इस युद्ध में उसके अधीन थे, और हाकिमों तथा पेशवाओं ने जो इस लड़ाई में उसके सहायक थे, किसी पिछले युद्ध में उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार न की थी और न उन्होंने अपनी मर्यादा की दृष्टि से उससे मित्रता का व्यवहार किया था। इस्लाम के राज्य के लगभग २०० नगरों में काफिरों की पताकाओं को प्रभुत्व प्राप्त था। उनमें मस्जिदें एवं एबादत गाहें दुर्दशा को प्राप्त हो गई थीं। वहां के मुसलमानों की पत्नियां एवं बालक बन्दी बना लिये गये थे। उसकी सेना की संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि इसका हिसाब इस प्रकार लग सकता है हिन्दुस्तान के प्रचलित नियम के आधार पर १ लाख की विलायत[5] वाले १०० अश्वारोही और करोड़ की विलायत वाले १०,००० अश्वारोही रखते थे। काफिरों के इस नेता ने जो स्थान विजय कर लिये थे वे १० करोड़ के थे अतः उसके पास १००,००० अश्वारोही होने चाहिये। बहुत से काफिर जिन्होंने किसी भी युद्ध में उसका साथ न दिया था, मुसलमानों की शत्रुता के कारण उसकी सेना में सम्मिलित हो गये थे। दस शक्तिशाली सरदार, जिनमें से प्रत्येक दुष्ट काफिरों के दलों का नेता था, विद्रोह हेतु धुयें के समान उठ खड़े हुये और जंजीर की कड़ियों के समान उस दुष्ट से जुड़ गये। यह इन दस काफिरों ने पवित्र दस[6] की तुलना में उनके कार्यों के विपरीत अत्याचार की पताका बलन्द की। ये लोग वे हैं जो संताप के गर्त में अपमानित रहेंगे। इनके अधीन बहुत बड़ी सेना, सहायक एवं विस्तृत राज्य थे।

१ विजय पत्र। 'बाबर नामा' में इस विजय पत्र के अतिरिक्त किसी अन्य पत्र को उद्धृत नहीं किया गया है।
२ जौनपुर।
३ नवाब शब्द का प्रयोग बाबर ने अपने लिये किया है।
४ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
५ राज्य।
६ अशरये मुबश्शेर। मुहम्मद साहब के १० भक्त जिन्हें ईश्वर की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होते रहते हैं।

(१) सलाहुद्दीन[1] के पास ३०,००० अश्वारोहियों की विलायत थी।
(२) वागर के रावल उदय सिंह के पास १२,००० अश्वारोहियों की।
(३) मेदिनी राय के पास १२,००० अश्वारोहियों की।
(४) हसन खा मेवाती के पास १२,००० अश्वारोहियों की।
(५) ईदर के बारमल के पास ४,००० अश्वारोहियों की।
(६) नरपत हारा[2] के पास ७,००० अश्वारोहियों की।
(७) कच्छ के सत्रवी के पास ६,००० अश्वारोहियों की।
(८) धर्मदेव के पास ४,००० अश्वारोहियों की।
(९) बीर सिंह देव के पास ४ ००० अश्वारोहियों की।
(१०) सुल्तान सिकन्दर के पुत्र महमूद खा के पास जिसके अधीन न तो कोई विलायत थी और न परगने १०,००० अश्वारोही इस आशय से एकत्र हो गये थे कि सम्भव है कि उसे प्रभुत्व प्राप्त हो जाये।

हिन्दुस्तानियों की गणना के नियमानुसार जो लोग अपनी मुक्ति से हाथ धो कर एकत्र हुए थे, उनकी सख्या २०१,००० थी। सक्षेप मे वह अभिमानी काफिर, जोकि दिल का अधा एव पाषाण हृदय वाला अभागे एव विनाश को प्राप्त होने वाले काफिरो की सेना लेकर इस्लाम के अनुयायियो से युद्ध करने और मानव के सरदार[3] की, जिन पर ईश्वर का आशीर्वाद हो, शरीअत के विनाश हेतु अग्रसर हुआ। बादशाही सेना के मुजाहिद दैवी आदेश के समान काने दज्जाल[4] पर टूट पडे। उस दज्जाल ने बुद्धिमानो पर यह बात स्पष्ट कर दी कि जब दुर्भाग्य प्रारम्भ हो जाता है तो आखें अधी हो जाती है और उनके सम्मुख यह आयत रख दी —"जो कोई सच्चे धर्म को उन्नति देने की चेष्टा करता है वह अपनी आत्मा के भले के लिये ही प्रयत्न शील होता है।'[5] उन्होंने इस कथनानुसार, जिसका पालन करना चाहिये, आचरण किया काफिरों एव मुनाफिको से युद्ध करो।[6]

(१७ मार्च १५२७ ई०)—१३ जमादि-उस्सानी ९३३ हि० शनिवार के दिन—जिसके विषय मे ईश्वर ने कहा है —ईश्वर ने तुम्हारे शनिवार को आशीर्वाद प्रदान किया है—इस्लामी सेना कनवा ग्राम के क्षेत्र मे जो बयाना के अधीनस्थ है, एक पहाडी के समीप जो इस्लाम के शत्रुओ से दो कुराह[7] पर थी पडाव किये हुये थी। जब मुहम्मद साहब के धर्म के शत्रु दुष्ट काफिरो ने इस्लामी सेना की गूज सुनी तो उन्होने अपनी अभागी सेना की पक्तियाँ सुव्यवस्थित कर ली और वे सगठित एव एक

१ वह सम्भवत राजपूत था और मुसलमान हो गया था और सिलहादी अथवा सिलाहदी के स्थान पर सलाहुद्दीन नाम रख लिया था। उसके पुत्र ने राणा सागा की पुत्री से विवाह किया था। रायसेन एवं सारगपुर उसके अधिकार में थे। वह बाद मे बाबर से मिल गया था।
२ इसे 'हाडा' भी लिखा गया है।
३ मुहम्मद साहब।
४ झूठा। हदीस के अनुसार कुछ लोग जो झूठे धर्म का दावा करेंगे। मुसलमानों के विश्वासानुसार कयामत के पूर्व मसीहुद्दज्जाल प्रकट होगा जिसे केवल दज्जाल भी कहते हैं। कहा जाता है कि वह काना होगा।
५ कुरान शरीफ से उद्धृत।
६ अरबी वाक्य।
७ चार मील।

दिल हाथी पर पर्वत रूपी एव देव सरीसे हाथियो पर भरोसा कर के उसी प्रकार अग्रसर हुये जिस प्रकार हाथियो का स्वामी[1] अपने हाथियो के भरोसे पर मुसलमानों के काबा को नष्ट करने के लिए अग्रसर हुआ था

पद्य

उन हाथियो को ले कर अपमानित हिन्दू,
अभिमानी हो गये, हाथियो के स्वामियो के समान।
थे वे घृणित एव दुष्ट मृत्यु की सायकाल के समान
रात्रि से भी अधिक[2] काले, सितारो से भी सख्या म अधिक।
सभी थे अग्नि के समान[3], किन्तु धुय के समान
ईर्ष्या से सिर उठाये हुये नीले आकाश की ओर।
चींटी के समान आय थे दायें और बायें से,
अश्वारोही एव पदाती हजारो, हजारो की सख्या मे।

वे इस्लामी शिविर की ओर युद्ध के उद्देश्य से अग्रसर हुये। इस्लामी सेना के योद्धा जो वीरता के उद्यान के वृक्ष हैं, सनोबर के समान अपनी सेना की पक्तियां सुव्यवस्थित करके और सनोबर ही की तरह अपनी कलगी को ऊचा किये हुये, तथा अपने खोद की कल्गी को, जो उन लोगो के हृदय के समान चमक रही थी जो ईश्वर के मार्ग मे जिहाद करते हैं, ऊपर उठाये हुये अग्रसर हुये। उनकी सेना सिकन्दर की लोहे की दीवार[4] के समान दृढ थी। वे मुहम्मद साहब की शरीअत के समान दृढ, सीधे एव मजबूत थे "मानो वे एक ठोस भवन के समान हो'।[5] वे इस वचनानुसार भाग्यशाली एव सफल रहे—"उनका पथ प्रदर्शक उनका परमेश्वर है और उन्हे उन्नति प्राप्त होगी।'[6]

१ इस वाक्य में यमन के शाहजादे अबरहा की पराजय की ओर संकेत किया गया है। अबरहा उस वर्ष में जिसमें मुहम्मद साहब का जन्म हुआ अपनी सेना तथा कुछ हाथियों को लेकर काबा को जो मक्का म स्थित है नष्ट करने के लिय रवाना हुआ। जब अबरहा मक्का के समीप पहुँचा और उसमें प्रविष्ट होने वाला ही था, तो वह हाथी जिस पर वह सवार था वहीं ठहर गया। जब उसको मक्का की ओर बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता तो वह घुटने टेक देता था किन्तु यदि उसे किसी अन्य दिशा म चलाया जाता तो वह बड़ी तीव्र गति से चलता। इसी बीच में समुद्र तट की ओर से पक्षियों का एक बहुत बड़ा झुण्ड दृष्टिगत हुआ। उनमें से प्रत्येक अपने पजों में एक एक तथा चोंच में एक अर्थात् तीन पत्थर लिये था। इन पत्थरों को उन्होंने अबरहा के आदमियों पर गिरा दिया। जिस व्यक्ति पर पत्थर गिरा उसकी मृत्यु हो गई। जो बच गये वे एक सैलाब अथवा ताऊन द्वारा नष्ट हो गये। केवल अबरहा सिना पहुच सका। वहाँ उसकी भी मृत्यु हो गई। कुरान शरीफ़ में भी इस कहानी की ओर सकेत किया गया है।

२ सम्भवत सख्या की अधिकता के कारण काले।

३ सम्भवत अग्नि के समान नष्ट करने वाले।

४ यह ५० मील लम्बी बताई जाती है और कैस्पियन के लोहे के फाटकों का रोक थी। यह दरबन्द नामक रूसी नगर के दक्षिण तक चली जाती है। यह नगर कैस्पियन के पश्चिमी तट पर है। कहा जाता है कि यह याजूज माजूज के आक्रमण को रोकने के लिये बनाई गई थी। प्रत्येक दृढ रोक एव आड़ को 'सिकन्दर की दीवार' कहा जाता है।

५ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।

६ क़ुरान शरीफ़ से उद्धृत।

पद्य

'उस सैनिक व्यवस्था मे कायर आत्माओ द्वारा कोई विघ्न न था,
वह दृढ थी शहशाह के सकल्प के समान और मजबूत दीन[1] की तरह।
उनकी पताकायें आकाश को छूती थीं,
नि सन्देह हमने तुझे प्रदान की है निश्चित रूप से विजय।"[2]

सावधानी की दृष्टि से हमने रूम के गाजियो का अनुसरण करते हुये तुफगचियों[3] तथा राद अन्दाजो की[4], जो सेना के आगे थे, रक्षा हेतु, गाडियों की पक्तियों को जो एक दूसर से जजीर से जकडी हुई थी आगे रखा। सक्षेप मे इस्लामी सेना इस प्रकार सुव्यवस्थित एव सुदृढ थी कि वृद्ध बुद्धि एव आकाश मडल उसकी प्रशसा करने लगे। इस सुव्यवस्था एव प्रबन्ध हेतु मुकर्रिबुल-हज़रतुम् सुल्तानी, एत्मादुद्दौलतुल खाक़ानी[5] निजामुद्दीन अली खलीफा ने अत्यधिक परिश्रम एव प्रयत्न किया। उसके प्रयत्न, भाग्य के अनुकूल और उसके बादशाह के प्रकाशयुक्त निर्णय के द्वारा स्वीकृत थे।

सेना के मध्य भाग की व्यवस्था

बादशाह ने केन्द्र मे स्थान ग्रहण किया। केन्द्र के दायें हाथ की ओर[6] [7]चीन तीमूर सुल्तान, [8]सुलेमान शाह, [9]ख्वाजा दोस्त खावन्द, [10]कमालुद्दीन यूनुस अली, [11]जलालुद्दीन शाह

१ धर्म (इस्लाम)।
२ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
३ बदूक चलाने वालों।
४ तोप चलाने वालों।
५ 'बादशाह के विश्वास पात्र एव राज्य के सौभाग्य के स्तम्भ'।
६ बाबर ने समस्त नाम बड़े साधारण रूप से लिखे हैं किन्तु जैन ख्वाफ़ी ने 'फ़तह नामा' मे प्रत्येक नाम के साथ किसी न किसी विशेषण का प्रयोग किया है। पाठकों की सुविधा के उद्देश्य से नामों के साथ विशेषणों का अनुवाद नहीं किया गया है।
७ 'बिरादरे अरशदे अर्जुमन्द सआदत यार अल मुखतस व अवातेफुल मलेकुल मुस्तआन चीन तीमूर सुल्तान' अर्थात् गौरव युक्त एव अत्यधिक निष्ठावान् भाई, सौभाग्य का प्रिय मित्र, ईश्वर द्वारा सम्मानित जिसको (ईश्वर) सहायता प्रदान करता है—चीन तीमूर सुल्तान। माता की ओर से बाबर एवं चीन तीमूर सुल्तान का वश यूनुस खा द्वारा मिलता था।
८ 'फ़रजन्दे अइज्ज अरशद मज़ूरे अनआरे हजरते इलाह सुलेमान शाह' अर्थात् गौरव युक्त पुत्र, पूज्य ईश्वर की दृष्टि में सम्मानित सुलेमान शाह।
९ जनाब हिदायत मआब विलायत इन्तेसाब ख़्वाजा कमालुद्दीन दोस्त खावन्द' अर्थात् शिक्षा दीक्षा प्राप्त राज्य के स्वामी ख्वाजा कमालुद्दीन दोस्त खावन्द।
१० 'मोतमेदुस्सल्तनतुल उलया मोतमेनुल अतबुस्सुनिया मुकर्रिबे खास व जुब्दये असहाबे इख्लेसास यूनुस अली' अर्थात् सल्तनत के विश्वासपात्र, सम्मानित चौखट के आश्रित, विशेष निकटवर्ती, सम्मानित सहायकों में चुने हुये यूनुस अली।
११ 'उमदतुल खवास कामिलुल इख्लास शाह मनसूर बरलास' अर्थात् शाही सेवकों का स्तम्भ, अत्यधिक निष्ठावान् शाह मनसूर बरलास।

कुमरी कूकूल्दाश, [1]कवाम बेग ऊर्दू शाह, [2]वली करा कूज़ी खाज़िन, [3]पीर कुली सीस्तानी, [4]ख्वाजा कमालुद्दीन पहलवान बदख्शानी [5]अब्दुश् शकूर, [6]सुलेमान आका एराक का राजदूत [7]हुसेन आका सीस्तान के राजदूत', थे।

विजय मुकुट से सुशोभित, भाग्यशाली पुत्र के, जिसका उल्लेख पूर्व में हो चुका है, बाईं ओर, [8]मीर हामा, [9]मुहम्मदी कूकूल्दाश तथा निज़ामुद्दीन ख्वाजगी असद जानदार[10] थे।

दायें बाजू में हिन्दुस्तान के अमीरों में, [11]खाने खाना दिलावर खां [12]मलिक दाद कररानी, [13]शेख गूरन अपने अपने निश्चित स्थान पर खड़े थे।

बायें बाजू की व्यवस्था

इस्लामी सेना के बायें बाजू में [14]सैयिद महदी ख्वाजा [15]मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा [16]आदिल सुल्तान बिन महदी सुल्तान, [17]अब्दुल अज़ीज़ मीर आखूर, [18]मुहम्मद अली जंग

१ 'मोतमेदुल मुल्क किवाम बेग ऊर्दू शाह' अर्थात् राज्य का विश्वासपात्र किवाम बेग उर्दू शाह।

२ 'उमदतुल खवास कामिलुल अक़ीदा वल् इख्लास वली खाज़िन' अर्थात् शाही सेवकों का स्तम्भ पूर्ण रूप से निष्ठावान् वली कोषाध्यक्ष।

३ 'उमदतुल खवास निज़ामुद्दीन पीर कुली सीस्तानी', राज्य के सेवकों का स्तम्भ, धर्म की सुव्यवस्था करने वाला पीर कुली सीस्तानी।

४ 'उमदतुल वुज़रा, अमीनुल उमम ख्वाजा पहलवान बदख्शानी' अर्थात् वज़ीरों का स्तम्भ विश्वासपात्र ख्वाजा पहलवान बदख्शानी।

५ 'मोतमेदुल खवास अब्दुश्शकूर' अर्थात् विशेष व्यक्तियों में सर्वोत्कृष्ट।

६ 'उमदतुल ऐयान सुलेमान आका' अर्थात् सौजन्य का स्तम्भ सुलेमान आका।

७ 'उमदतुल ऐयान हुसेन आका' अर्थात् सौजन्य का स्तम्भ हुसेन आका।

८ 'आली जनाब, सआदत मआब मुरतज़वी इन्तेसाब' अर्थात् आली जनाब, उच्च वंश वाला सैयिद (हज़रत अली) मुरतज़ा का वंशज मीर हामा।

९ 'उमदतुल खवास, कामिले इख्लासे शम्सुद्दीन मुहम्मदी कूकूल्दाश' अर्थात् शाही सेवकों का स्तम्भ, पूर्ण रूप से निष्ठावान, शम्सुद्दीन मुहम्मदी कूकूल्दाश अर्थात् कूकुल्दाश।

१० 'बादशाह का अंग रक्षक। 'अकबरनामा' में उसे जामादार और तारीखे फ़िरिश्ता' में सर जामादार है।

११ 'उमदतुल मुल्क खाने खाना दिलावर खां' अर्थात् राज्य का स्तम्भ, खानों का खान दिलावर खां।

१२ 'उमदतुल ऐयान मलिक दाद कररानी', अर्थात् राज्य के अमीरों का स्तम्भ मलिक दाद कररानी।

१३ 'शेखुल मशायख़' अर्थात् शेख (संतों) के शेख (संत) शेख गूरन।

१४ 'आली जाह, नक़ाबत पनाह, रफ़अत दस्तगाह, इफ्तेखारे आल ताहा व यासीन सैयिद महदी ख्वाजा' अर्थात्, उच्च वंश का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति, अधिकार सम्पन्न लोगों के शरण लेने का स्थान एवं ताहा तथा यासीन (मुहम्मद साहब के वंश) का आभूषण सैयिद महदी ख्वाजा।

१५ 'बिरादरे अइज़्ज़े अरशद कामगार मज़रे नज़रे अनज़ारे इनायते हज़रत आफ़रीदगार मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा', गौरव-युक्त एवं प्रख्यात भाई, ईश्वर के निकट अत्यधिक प्रिय मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा।

१६ 'सल्तनत मआब, ज़िलाफ़त इन्तेसाब आदिल सुल्तान बिन महदी सुल्तान' अर्थात् सल्तनत का विश्वास पात्र, ख़िलाफ़त का निकटवर्ती आदिल सुल्तान पुत्र महदी सुल्तान।

१७ 'मोतमेदुल मुल्क कामिलुल इख्लास अब्दुल अज़ीज़ मीर आखूर' अर्थात् राज्य का विश्वासपात्र, निष्ठा से परिपूर्ण अब्दुल अज़ीज़, शाही घोड़ों की देख रेख करने वालों का अधिकारी।

१८ मोतमेदुल मुल्क सादिकुल इख्लास शम्सुद्दीन मुहम्मद अली जंग जंग' अर्थात् राज्य का विश्वासपात्र, निष्ठा में सच्चा, धर्म का सूर्य मुहम्मद अली जंग जंग।

जग, [1] कूतलूक कदम करावल, [2] शाह हुसैन यारगी मुग़ल गाची तथा [3] जान मुहम्मद बेग अत्का थे।

हिन्दुस्तान के अमीरों में इस भाग मे [4] कमाल खा तथा जमाल खा बिन सुल्तान अलाउद्दीन जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, अली खा शेखजादा फर्मुली, [5] तथा ब्याना का निज़ाम खा, थे।

तूलगमा

सेना के दायें बाजू के तूलगमा[6] के लिये [7] तरदी तथा मलिक कासिम, बाबा कश्का के भाई की कुछ मुग़लों सहित नियुक्ति हुई। बायें बाजू के तूलगमा के लिये दो विश्वस्त सरदारों मोमिन अत्का तथा रुस्तम तुर्कमान की कुछ विशेष दस्ते दे कर नियुक्ति की गई।

आदेशों का पहुंचाया जाना

[8] 'निज़ामुद्दीन सुल्तान मुहम्मद बख्शी, इस्लाम के गाज़ियों[9] को नियुक्त करने के उपरान्त शाही आदेश प्राप्त करके पहुचा। उसने तवाचियों[10] तथा यसावलों[11] को विभिन्न दिशाओ में इस आशय से भेजा कि वे प्रतिष्ठित सुल्तानों, सम्मानित अमीरों तथा इस्लाम के समस्त योद्धाओं के पास सैनिकों एव सेना (के दस्तों) को सुव्यवस्थित रखने के विषय में शाही आदेश पहुचायें। जब सेना के उच्च अधिकारियों ने अपना अपना स्थान ग्रहण कर लिया तो उनके पास इस आशय का अनुल्लंघनीय आदेश प्रेषित किया गया कि कोई भी अपने स्थान से न तो बिना आदेश के हिले और न बिना आज्ञा के युद्ध प्रारम्भ करे।

युद्ध का प्रारम्भ

उपर्युक्त दिन के लगभग एक पहर तथा दो घडी व्यतीत हो जाने के उपरान्त[12] दोनों ओर की

१ 'उमदतुल खवास कामिलुल इख्लास जलालुद्दीन कूतलूक कदम करावल' अर्थात् शाही सेवकों का स्तम्भ, निष्ठा से परिपूर्ण, धर्म का ऐश्वर्य कूतलूक़ कदम करावल अथवा शत्रु की सेना के विषय में समाचार लाने वाला।

२ 'जलालुद्दीन शाह हुसैन यारगी मुग़ल गाची' अर्थात् धर्म का ऐश्वर्य शाह हुसेन यारगी मुग़ल गाची।

३ 'निज़ामुद्दीन जान मुहम्मद बेग अत्का' अर्थात् धर्म के सुव्यवस्थापक जान मुहम्मद बेग अत्का।

४ 'नतीजतुस्सलातीन कमाल खां तथा जलाल खा बिन सुल्तान अलाउद्दीन' अर्थात् सुल्तानों में चुने हुये कमाल खां तथा जलाल खां पुत्र सुल्तान अलाउद्दीन।

५ 'उमदतुल ऐयान निज़ाम खा ब्याना', राज्य के अमीरों का स्तम्भ ब्याना का निज़ाम खा।

६ Flank Movement, सेना के बाज़ुओं के वे दस्ते जो झपट कर शत्रु के पीछे अथवा अन्य दिशा में जहा से सफलता की अधिक आशा होती थी, पहुच कर आक्रमण करते थे।

७ 'मोतमेदुल ख़वास', अर्थात् विशेष व्यक्तियों का विश्वास पात्र।

८ 'उमदतुल ख़वास कामिलुल इख्लास, जुब्दये असहाबे इस्तेसास, सुल्तान मुहम्मद बख्शी' अर्थात् शाही सेवकों का स्तम्भ, निष्ठा से परिपूर्ण, परामर्शदाताओं में चुना हुआ, सुल्तान मुहम्मद बख्शी।

९ विजयी योद्धाओं।

१० सेना के मध्य श्रेणी के अधिकारी को 'तवाची' कहते थे।

११ समाचार वाहकों।

१२ सम्भवत प्रात काल ९-१० बजे के बीच।

गाजियो पर टूट-टूट पडते थे किन्तु हर बार पीछे ढकेल दिये जाते थे अथवा विजय की तलवार द्वारा नरक मे, 'जहा वे जलने के लिये फेंक दिये जायेंगे और जहा वे कष्ट में जीवन व्यतीत किया करेंगे'[१], भेज दिये जाते थे।[२] मोमिन अत्का तथा रुस्तम तुर्कमान दुष्ट काफिरो की अधवार ग्रस्त सेना के पीछे की ओर बढे।[३]ख्वाजा महमूद तथा अली अत्का और [४]निजामुद्दीन अली खलीफा के सेवकों को उनकी सहायतार्थ भेजा गया।

[५]मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, [६]आदिल सुल्तान [७]अब्दुल अज़ीज अमीर आखूर, [८]कूतलूक कदम करावल, [९]मुहम्मद अली जगजग तथा [१०]शाह हुसेन यारगी मुगूल गाँची ने कदम जमा कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। उनकी सहायतार्थ हमने [११]ख्वाजा कमालुद्दीन हुसेन तथा कुछ दीवान[१२] के अधिकारियो को भेजा। प्रत्येक जिहाद करने वाला अपना उत्साह प्रदर्शित करने के लिये उद्यत था और अत्यधिक प्रसन्नता प्रदर्शित करते हुये इस आयत के अनुसार अग्रसर होता था "अत क्या तुम चाहते हो कि इन दो उत्कृष्ट वस्तुओ —विजय अथवा शहीद होने के अतिरिक्त—तुम्हें कोई अन्य वस्तु मिले ?"[१३] उन लोगो ने अत्यधिक परिश्रम करके जीवन के परित्याग की पताका बलन्द की।

घोर युद्ध

जब युद्ध कुछ देर तक होता रहा तो यह अनुपेक्षीय आदेश दिया गया कि शाही सेना के विशेष दस्ते जिनमे बडे बडे योद्धा तथा निष्ठा के जगल के सिंह थे, और जो गाडियो के पीछे जज़ीर मे बधे हुये सिंहो की भाति खडे थे, केन्द्र की दाईं एव बाईं ओर से निकल कर तुफगचियों[१४] को बीच में छोड कर दोनों ओर से युद्ध प्रारम्भ कर दें। जिस प्रकार उषा, क्षीतिज की दरार से निकलती है उसी प्रकार वे लोग गाडियो के पीछे से निकले। उन लोगो ने उन अभागे काफिरो के रक्त को रण क्षेत्र मे, जो आकाश के समान था, बहा दिया और विद्रोहियो के सिर को सितारो के अस्तित्व के समान मिटा दिया।[१५] अली कुली ने जो अपने अधीनस्थ सैनिको सहित केन्द्र मे था, अत्यधिक पौरुष का प्रदर्शन किया। उसने लोहे के वस्त्र वाले काफिरो के किलो[१६] पर इतने बडे बडे पत्थर फेंके जो उस तराजू पर रखने योग्य है जिन पर लोगो के कर्म

१ क़ुरान शरीफ़ से उद्धृत।
२ 'मोतमेदुल ख़वास मोमिन अत्का'।
३ 'मोतमेदुल ख़वास ख्वाजा महमूद'।
४ *'मुक़र्रिबे हज़रतस्सुल्तानी, एतमादुद्दौला अल ख़ाक़ानी निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा'।*
५ 'बिरादरे अइज़्ज़े अरशद मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा'।
६ 'सल्तनत मआब आदिल सुल्तान'।
७ 'मोतमेदुल मुल्क अब्दुल अज़ीज मीर आख़ूर'।
८ 'जलालुद्दीन कतलूक कदम करावल'।
९ 'निज़ामुद्दीन मुहम्मद अली जंग जग'।
१० 'जलालुद्दीन शाह हुसेन यारगी मुग़ल गाची'।
११ 'दस्तूरुल आज़मुल वुज़रा वैनुल उमम ख्वाजा कमालुद्दीन हुसेन।
१२ वित्त विभाग।
१३ क़ुरान शरीफ़ से उद्धृत।
१४ बन्दूक चलाने वालों, matchlockmen।
१५ 'नादिरुल अस्र'।
१६ अर्थात् शरीरों पर।

तोले जायँगे[1]। "वह तराजू सदाचरण के कारण भारी रहेगी और वह सुखमय जीवन व्यतीत करेगा"[2] और जो यदि एक ऊचे पर्वत पर फेंके जायें तो वह धुने हुये ऊन के समान हो जायें।[3] उस्ताद अली कुली ने उसी प्रकार के पत्थर काफिरो की पक्तियो के लोहे का वस्त्र पहने हुए किलो पर फेंके जिससे कि वे नष्ट हो गये। शाही सेना के केन्द्र के जर्बजन एव तुफग चलाने वालो ने शाही आदेशानुसार गाडियो के पीछे से निकल कर बहुत से काफिरो को मृत्यु का विष चखा दिया। पदातियों ने एक बडे ही खतरनाक स्थान मे प्रविष्ट होकर अपने नाम को वीरता के जगल के सिंहो एव पौरुष के रण क्षेत्र के वीरो मे प्रकट कर दिया। इसी बीच मे हज़रते खाकान[4] का फरमान प्राप्त हुआ कि केन्द्र की गाडियो को आगे बढाया जाये और सम्मानित बादशाह स्वय काफिरो की सेना की ओर अग्रसर हुये। विजय तथा सौभाग्य उनकी दाईं ओर तथा इक्बाल एव (दैवी) सहायता उनकी बाईं ओर थी।

विजयी सेनायें यह देख कर प्रत्येक दिशा मे उनके पीछे पीछे बढी। शाही सेना का अगाध समुद्र, लहरें मारने लगा। उस समुद्र के अजगरो की वीरता का प्रदर्शन उनके कार्यों की दृढता द्वारा प्रकट हो गया। आकाश पर धूल के बादल छा गये। रण क्षेत्र मे जो धूल जमा थी उसको तलवार की चकाचौध करने वाली विद्युत काटती जाती थी। सूर्य के मुख से प्रकाश का उसी प्रकार अन्त हो गया था जिस प्रकार दर्पण का उलटा भाग। मारने तथा मरने वाले, विजयी एव पराजित इस प्रकार गड्बड हो गये थे कि इनमे किसी प्रकार का कोई अन्तर न हो सकता था। काल के जादूगर ने ऐसी रात्रि उत्पन्न कर दी थी कि वाण तो नक्षत्र थे और दृढ सवारो के दस्ते अपने स्थान पर स्थिर तारो के समूह के समान थे।

पद्य

'युद्ध के उस दिन डूबा एव निकला,
मीन[5] तक रक्त, चन्द्रमा तक धूल के बादल।
घोडे के खुरो से उस विस्तृत मैदान मे,
एक भूमि ऊपर उड गई एक अन्य आकाश बनाने को।'[6]

जिस समय गाज़ी लोग सिर कटाने एव प्राणो की बलि दे रहे थे, उन्हे एक दैवी आवाज़ सुनाई दी जो कह रही थी, "न तो व्याकुल हो और न दुखी, कारण कि यदि तुम विश्वास रखते हो तो तुम्हे अविश्वासियो पर विजय होगी।"[7] और उन लोगो ने अभ्रान्त सूचना देने वाले से ये सुखद शब्द सुने, "ईश्वर की ओर से सहायता एव तत्काल विजय है, और तुम यह सुखद समाचार मोमिनो के पास ले जाओ।"[8] वे इतना जी लगा कर युद्ध कर रहे थे कि फिरिश्ते उन लोगो को शाबाशी देने लगे और ईश्वर के विश्वस्त

१ मुसलमानों के विश्वासानुसार क़यामत में सभी के कर्म तोले जायँगे।
२ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
३ अर्थात् शत्रुओं पर भारी भारी पत्थर फेंके।
४ बादशाह सलामत।
५ वह मछली जिसके विषय में कहा जाता है कि पृथ्वी उस पर टिकी हुई है।
६ कहा जाता है कि आकाश सात हैं। घोर युद्ध के कारण भूमि की धूल उठकर आकाश तक पहुंच गई थी और एक आठवा आकाश बन गया था।
७ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
८ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।

फिरिश्ते पतिगों के समान उनके सिर के चारो ओर चक्कर काटने लगे। पहली[1] तथा दूसरी नमाज़[2] मध्य मे हत्याकाड की अग्नि इतनी अधिक भडक गई थी कि उसकी लपट आकाश तक पहुचने लगी इस्लामी सेना के दायें एव बायें बाजू ने अभागे काफिरो के बाये एव दायें बाजू को लपेट कर उनके केन्द्र ढेर कर दिया।

जब विख्यात मुजाहिदो की विजय और इस्लामी पताका के बलन्द होने के चिह्न दृष्टिगत होने ल तो एक घटे तक पिशाच काफिर एव दुष्ट अधर्मी आश्चर्यचकित रहे। अन्त मे अपने प्राणों की आशा त्याग कर वे हमारे केन्द्र के दाये एव बायें बाजू पर टूट पडे। बायें बाजू पर वे बहुत बडी सख्या मे बडी तीव्र गति से आक्रमण करते हुये बढते चले गये किन्तु वीर गाजियो ने पुण्य को दृष्टि मे रखते हुये उनमे से प्रत्येक सीने मे बाणो के वृक्ष उगा दिये और सभी को उनके अन्धकारमय दुर्भाग्य के समान भगा दिया। इस दशा मे विजय तथा सौभाग्य का शीतल पवन हमारे भाग्यशाली नवाब[3] के उद्यान मे बहने लगा और यह सुखद समाचार प्राप्त हुये कि "नि सन्देह हमने तुझे स्पष्ट रूप से विजय प्रदान की।"[4] विजय की प्रियतमा के केश जो ससार का शृगार है, इस वाक्य से सुशोभित हुये, 'ईश्वर तुम्हें बहुत बडी सहायता द्वारा मदद देगा।'[5] और यह सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। जो विजय आवरण मे थी, वह प्रकट हो गई। झूठे हिन्दू अपनी स्थिति को खतरनाक देख कर "धुने हुये ऊन के समान हवा मे छिन्न भिन्न हो गये और पतिगों के समान बिखर गये।"[6] बहुत से रण-क्षेत्र मे मारे गये और अन्य युद्ध त्याग कर निर्वासन के मरुस्थल मे भाग गये और चील कौवो का भोजन बन गये। लाशो के टीले और सिरो के मीनार बनाये गये।

सरदार जिनकी हत्या हुई

हसन खा मेवाती तुफग द्वारा मरने वालो की सूची मे प्रविष्ट हुआ। इसी प्रकार बहुत से मार्ग भ्रष्ट विद्रोही, जो अपनी अपनी कौम के नेता थे, मारे गये और बाण तथा तुफग द्वारा उन्होंने अपने जीवन का अन्त कर दिया। इन्ही मे डुगरपुर के बागर का रावल उदय सिंह था जिसके अधीन १२००० अश्वारोही थे। राय चन्द्रभान चौहान जिसके अधीन ४००० घोडे थे, सलाहुद्दीन, जिसका उल्लेख हो चुका है, का पुत्र भूपत राव, चन्देरी का राजा जिसके साथ ६००० अश्वारोही थे, मानिक चन्द चौहान तथा दल्पत राव जिनके पास ४-४ हज़ार अश्वारोही थे, ककू[7] तथा कर्म सिंह और दनकूसी जिनमे से प्रत्येक के पास ३००० अश्वारोही थे और बहुत से अन्य जिनमे से प्रत्येक बडी बडी सेना का सेनापति था और बडा ही प्रतापी एव महान् सरदार था, इस युद्ध मे मारे गये। वे सब नरक के पथिक बने और इस लोक से सत्यानाश के गर्त मे पहुच गये। दारुल हर्ब[8] उसी प्रकार भरा था जिस प्रकार नरक उन घायलो से, जो

१ जुहर की नमाज़, मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़।
२ अस्र की नमाज़, मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़।
३ बाबर।
४ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
५ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
६ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
७ गगू।
८ युद्ध का स्थान। कुरान शरीफ़ के अनुसार वह स्थान जहाँ मुसलमानों एवं ग़ैर मुस्लिमो में संधि न हुई हो।

मार्ग मे मृत्यु को प्राप्त हुये, भरा था। नरक का सब से तुच्छ गर्त इन दुष्टो से जिन्होने अपने प्राण नरक के सर्वोच्च अधिकारी को समर्पित कर दिये थे, भर गया था। इस्लामी सेना से जो व्यक्ति जिस ओर भी जाता वहा कोई न कोई स्वेच्छाचारी मरा हुआ मिलता। प्रतापी शिविर[1] ने जिस ओर भी पलायन करने वालों के पीछे प्रस्थान किया, उसे कोई भी स्थान शत्रु से, जो नष्ट हो चुके थे, रिक्त न मिला।

पद्य

"समस्त हिन्दू मारे गये और वे अपमानित एव तिरस्कृत हुये,
तुफग तथा पत्थर से, हाथी के प्रभु[2] के समान।
उनकी लाशो से पहाडिया वन गई,
और प्रत्येक पहाडी से प्रवाहित रक्त की एक नदी।
हमारी सेना की शानदार पक्तियो के बाणो से भय करते हुए,
भागते फिरे वे प्रत्येक जगल एव पर्वत मे।"

"वे पीठ दिखा गये। ईश्वर का आदेश तो पूरा ही होना है। ईश्वर, जो सब कुछ सुनता एव बहुत बडा बुद्धिमान् है, प्रशसनीय है कारण कि विजय केवल ईश्वर द्वारा जो सर्व शक्तिमान एव बुद्धिमान् है, प्राप्त होती है।"

२५ जमादि-उस्सानी ९३३ हि० (२९ मार्च १५२७ ई०) को लिखा गया।[3]

विजय पश्चात् की घटनायें

बाबर का गाजी की उपाधि धारण करना

इस विजय के उपरान्त शाही तुगरा[4] मे गाजी लिखा जाने लगा। फतहनामा[5] के तुगरा के नीचे मैंने निम्नाकित रुबाई[6] लिखी —

रुबाई

"इस्लाम के लिये मैं वनो मे चक्कर लगाता रहा,
काफिरो तथा हिन्दुओ से युद्ध की तैयारी करता रहा।
मैंने शहीदो के समान मरना निश्चय किया,
ईश्वर को धन्य है, मैं गाजी हो गया।"

१ शाही सेना।
२ अबरहा की ओर संकेत किया गया हे जिसने हाथी लेकर मक्का पर चढाई की थी। देखिये पूर्व पृ० २४०।
३ यह युद्ध १३ जमादि उस्सानी (१६ मार्च) को हुआ और फतह नामा युद्ध के १२ दिन उपरान्त २५ जमादि-उस्सानी ९३३ हि० को तैयार हुआ। यह ९ रजब (११ अप्रैल) को काबुल प्रेषित किया गया।
४ शाही आदर्श वाक्य।
५ विजय पत्र।
६ रुबाई में चार समवृत्त चरण होते हैं। रुबाई के लिये विशेष छंदों का विधान है

३२

विजय की तारीख

शेख जैन ने 'फतह पादशाहे इस्लाम'[1] से इस विजय की तारीख निकाली। मीर गसू नामक एक व्यक्ति ने जो काबुल से आया था, इन्ही शब्दो द्वारा तारीख निकाली थी और इनका प्रयोग करते हुए एक रुबाई की रचना करके उसे मेरे पास भेजा। शेख जैन तथा मीर गसू की तारीखें एक ही निकली और दोनो ने अपनी अपनी रुबाइयो मे इनका प्रयोग किया। यह एक बडी विचित्र बात है। एक बार जब दीबालपुर की विजय की तारीख शेख जैन ने 'वस्त[2] शहर रबी-उल-अव्वल'[3] निकाली तो मीर गेसू ने भी इन्ही शब्दो मे तारीख निकाली।

शत्रु का पीछा करना

शत्रुओ को पराजित करके हमने उन्हे एक एक करके घोडो से गिराते हुये उनका पीछा किया। काफिरो का दायरा[4] हमारे शिविर से दो कोस पर रहा होगा। हमने उसके शिविर मे पहुँच कर मुहम्मदी अब्दुल अजीज, अली खा तथा कुछ अन्य लोगो को उसका पीछा करने के लिये भेजा। इसमे मैंने थोडी सी शिथिलता कर दी।[5] मुझे स्वय जाना चाहिये था और जिस कार्य की मुझे इच्छा थी उसे अन्य लोगो पर न छोडना चाहिये था। काफिर के शिविर से लगभग १ कोस आगे निकल जाने के उपरान्त मैं दिन का अन्त हो जाने के कारण लौट आया। मैं अपने शिविर मे सोने के समय की नमाज के वक्त पहुचा।

मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी

मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी ने यद्यपि अपने अत्यधिक अशकुन-सम्बन्धी शब्दो से चिन्ता मे डाल दिया था, फिर भी वह तत्काल मुझे बधाई देने पहुचा। मैंने उसे अत्यधिक गाली देकर अपने हृदय का बोझ हल्का कर लिया किन्तु उसके काफिरो के समान होने, अशकुन-सम्बन्धी बातें करने एव अभिमानी तथा उद्दड होने पर भी मैंने उसे उसकी पिछली सेवाओ के कारण एक लाख प्रदान किया और उसे यह आदेश दे कर कि वह मेरे राज्य मे न ठहरे, चले जाने का आदेश दे दिया।

एक विद्रोह का दमन

(१७ मार्च)—दूसरे दिन (१४ जमादि-उस्सानी) को हमने उसी स्थान पर पडाव किया। मुहम्मद अली जगजग, शेख गूरन तथा अब्दुल मलिक कूर्ची[6] को अत्यधिक सेना दे कर इलयास खा[7]

१ अबजद के हिसाब से 'फ़तेहे पादशाहे इस्लाम' से ६३३ की संख्या निकलती है।
२ रबी-उल अव्वल मास का मध्य।
३ अबजद के हिसाब से ६३० हि० (१५२३-२४ ई०)।
'बाबर नामा' की वर्तमान प्रतियों में इस वर्ष का कोई वर्णन नहीं मिलता।
४ शिविर।
५ बाबर राणा सांगा के भाग जाने पर पश्चाताप प्रकट कर रहा है।
६ शस्त्रों की देख रेख करने वाला अधिकारी।
७ इससे पूर्व बाबर लिख चुका है कि रुस्तम खाँ नमकहराम ने दोआब के मध्य के तर्कशबन्दों को बन्दी बना कर कोल पर अधिकार जमा लिया और कीचीक अली को बन्दी बना लिया।

के विरुद्ध, जिसने दोआब मे विद्रोह कर के कोल को अपने अधिकार मे कर लिया था और कीचीक अली को बन्दी बना लिया था, भेजा। इन लोगो के पहुचने पर वह युद्ध न कर सका और उसकी सेना विभिन्न दिशाओं मे छिन्न-भिन्न हो गई। मेरे आगरा पहुच जाने के कुछ दिन उपरान्त उसे बन्दी बना कर लाया गया। मैंने आदेश दिया कि उसकी खाल जब वह जीवित ही हो तो खीच ली जाये।

विजय-स्तम्भ

मैंने आदेश दिया कि काफिरो के सिरो का एक स्तम्भ उस छोटी पहाड़ी पर बनवाया जाये जिसके तथा हमारे शिविर के मध्य में युद्ध हुआ था।

ब्याना का निरीक्षण

(२० मार्च)—उस स्थान से प्रस्थान करके और दो रात पडाव करके हम ब्याना पहुचे।[1] काफिर तथा मुर्तद[2] भागते समय मृत्यु को प्राप्त हुये। उनके शरीर ब्याना के पूरे मार्ग में अलवर[3] तथा मेवात तक पड़े थे।

राणा के राज्य पर आक्रमण के विचार त्यागना

ब्याना की सैर के उपरान्त हम ने अपने शिविर मे लौट कर तुर्क अमीरो तथा हिन्द के अमीरो को बुलवा कर उनसे इस काफिर[4] के राज्य पर आक्रमण करने के विषय मे परामर्श किया किन्तु यह अभियान मार्ग मे जल की कमी तथा गरमी के कारण त्याग दिया गया।

मेवात

देहली के निकट मेवात स्थित है। उसकी मालगुजारी ३-४ करोड होगी। हसन खा मेवाती[5] तथा उसके पूर्वज १००-२०० वर्ष से वहा निरन्तर स्वतंत्र रूप से राज्य करते आये है। वे देहली के सुल्तानो के नाम-मात्र को ही अधीन रहते थे। हिन्दुस्तान के सुल्तानों[6] ने पता नही इस कारण कि उनका राज्य बडा विस्तृत था अथवा इस कारण कि उन्हे उचित अवसर प्राप्त न था और या इस लिये कि मेवात पर्वतीय प्रदेश है, मेवात की विलायत पर न तो आक्रमण किया और न वहा के राज्य को सुव्यवस्थित करने का प्रयत्न किया। अपितु नाममात्र की अधीनता से ही सतुष्ट होते रहे। हम भी हिन्द की विजय के उपरान्त पिछले सुल्तानो की भाति हसन खा को प्रोत्साहन प्रदान करते रहे। इस कृतघ्न काफिर और मुलहिद[7] ने हमारी कृपाओ तथा दया की ओर कोई ध्यान न दिया। हमने उसके प्रति जो प्रोत्साहन

१ रविवार १६ जमादि-उस्सानी।
२ वे लोग जो एक बार इस्लाम स्वीकार करके उसे त्याग दे अथवा वे मुसलमान जो इस्लाम छोड़ दें।
३ अलवर मथुरा के पश्चिम में है। देहली तथा आगरा से इसकी दूरी बराबर बराबर है।
४ राणा सांगा।
५ मेवाती शब्द का वहाँ के शासकों के लिये, जो खानजादा कहलाते थे, प्रयोग हुआ है न कि साधारण प्रजा के लिये जो मेयो कहलाते थे।
६ इस स्थान पर बाबर ने अपनी तुलना देहली के सुल्तानों से की है।
७ अधर्मी से तात्पर्य है।

प्रदर्शित किया था अथवा जो उन्नति उसे प्रदान की थी उनके प्रति उसने आभार न प्रदर्शित किया अपितु वह समस्त उपद्रवो का जन्मदाता एव समस्त दोषो का कारण वन गया।

जैसा कि उल्लेख हो चुका है जब हमने उस[1] अभियान को त्यागा तो हम मेवात की विजय हेतु रवाना हुये। मार्ग मे चार रात पडाव करके हम लोगो ने अलवर से ६ कुरोह[2] पर स्थित मानस-नी[3] के तट पर पडाव किया। अलवर के किले मे इस समय मेवात के शासक निवास करते थे। हसन खा तथा उसके पूर्वजो की राजधानी तिजारा मे रही होगी किन्तु जब मैंने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया और पहाड[4] खा को पराजित करके लाहौर तथा दीबालपुर पर विजय प्राप्त की[5] तो उसने दूरदर्शिता के कारण अलवर के किले मे अपने लिये महल का निर्माण प्रारम्भ करा दिया।

हसन खा का एक विश्वासपात्र कर्मचन्द, जो मेरे पास उस समय आगरा आया था जब उसका[6] पुत्र[7] मेरे पास वहा था, अब उस पुत्र की ओर से मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और क्षमा-याचना की। अब्दुर्रहीम शगावल उसके साथ शाही प्रोत्साहन के पत्र सहित अलवर भेजा गया और वह नाहर खा को लेकर वापस आया। उसके[8] प्रति पुन कृपा दृष्टि प्रदर्शित की गई और कई लाख के परगने उसे वजह[9] मे प्रदान किये गये।

मेवात का प्रवन्ध

यह सोचकर कि "खुसरो ने इस युद्ध मे कितना अच्छा काम किया था, मैंने उसे अल्वर प्रदान किया और उसके व्यय हेतु ५० लाख प्रदान किये किन्तु दुर्भाग्यवश उसने अभिमान के कारण इसे स्वीकार न किया। बाद मे यह पता चला कि चीन तीमूर ने यह कार्य किया होगा।[10] अत उसे इसके लिये इनाम दिया गया। उसे मेवात की राजधानी तिजारा[11] तथा ५० लाख उसके खर्च को दिये गये।

अलवर तथा १५ लाख[12] तरदीका को प्रदान किये गये। उसने दायें बाजू के तूलगमे वालो के साथ अन्य लोगों की अपेक्षा प्रशसनीय कार्य किया था। अल्वर के खजाने मे जो कुछ था, उसे मैंने हुमायूं को प्रदान कर दिया।

१ राणा सांगा के विरुद्ध।
२ १२ मील।
३ उस ओर की एक नदी। अन्य नदिया 'बारह' तथा 'रूपारेल' हैं।
४ कुछ स्थानों पर 'बिहार खा' भी लिखा है।
५ ९३० हि० (१५२४ ई०)।
६ हसन खां का।
७ नाहर।
८ नाहर।
९ जीवन निर्वाह हेतु।
१० खुसरो को उसे स्वीकार न करने के लिये कह दिया हो।
११ अलवर नगर के उत्तर-पूर्व में ३० मील पर। यह बहुत समय तक मेवात के खानजादों की राजधानी रहा। हसन खा मेवाती की क़ब्र यहीं बताई जाती है।
१२ १५ लाख वेतन।

अलवर की सैर

(३ अप्रैल)—१ रजब बुधवार को हम उस पडाव से प्रस्थान करके अलवर के पास २ कुरोह[1] पर पहुच गये। मैं किले का निरीक्षण करने गया और वहा रात्रि व्यतीत की और दूसरे दिन अपने शिविर मे वापस आ गया।

हुमायूं को काबुल जाने की अनुमति

जब वह शपथ, जिसका उल्लेख हो चुका है सभी बड छोटे को राणा सागा के विरुद्ध जिहाद के पूर्व दिलाई गई थी तो यह भी कहा गया था कि इस विजय के उपरान्त किसी को रोका न जायगा और जिस किसी को भी (हिन्दुस्तान से) जाने की इच्छा होगी उसे अनुमति दे दी जायेगी।[2] हुमायू के अधिकाश आदमी या तो बदख्शा के थे और या उस ओर[3] के थे। वे इससे पूर्व कभी भी एक अथवा दो मास तक के अभियान पर न गये थे। युद्ध के पूर्व भी वे बडे व्याकुल थे। इन कारणो से और इस कारण से भी कि काबुल सैनिको से रिक्त था, हुमायू को काबुल जाने की अनुमति दे दी गई।

अलवर से वापसी

(११ अप्रैल)—इतने प्रबन्ध के उपरान्त बृहस्पतिवार ९ रजब को हमने अल्वर से प्रस्थान किया और ४ ५ कुरोह[4] की यात्रा के उपरान्त मानस नदी के तट पर पडाव किया।

मह्दी ख्वाजा को काबुल जाने की अनुमति

मह्दी ख्वाजा को भी बडी परेशानी थी। उसे भी काबुल जाने की अनुमति दे दी गई।

ब्याना तथा इटावा की नियुक्तियाँ

ब्याना की शिकदारी ईशक आका[5] को प्रदान कर दी गई। इससे पूर्व मह्दी ख्वाजा को इटावा मे नियुक्त किया गया था। कुतुब खा के इटावा छोड कर चले जाने पर मह्दी ख्वाजा के पुत्र जाफर ख्वाजा को इटावा भेजा गया।

विजय-पत्र का काबुल प्रेषित किया जाना

हुमायू को जाने की अनुमति दे देने के कारण २-३ दिन तक इस स्थान पर पडाव करना पडा। यहा से मोमिन अली तवार्ची[6] को फतह्नामा[7] सहित काबुल भेजा गया।

१ ४ मील।
२ इससे पूर्व इसका उल्लेख नही किया गया है।
३ हिन्दूकुश के।
४ ८-१० मील।
५ द्वारपालों का अधिकारी।
६ राजदूत, समाचार वाहक।
७ विजय पत्र।

फीरोजपुर तथा कोटला की झीलों की सैर

फीरोजपुर[1] के झरने तथा कोटला[2] की बड़ी झील की बड़ी प्रशसा सुनी जाती थी। शिविर को उसी स्थान पर छोड कर मैं रविवार[3] को इन दोनों स्थानों की सैर एव हुमायू को पहुचाने के लिये रवाना हुआ। फीरोजपुर तथा उसकी झील की उसी दिन सैर करने के उपरान्त *माजून का सेवन किया गया।* जिस घाटी से झरना निकलता है, कनीर[4] के फूल खूब खिले हुये थे। यह स्थान आकर्षण से शून्य नहीं है किन्तु जितनी प्रशसा इस स्थान की की जाती है, उस योग्य यह नहीं है। उसी घाटी मे जहा से जल का विस्तार अधिक हो जाता है, मैंने पत्थर को तराश कर एक १० × १० के हौज[5] के निर्माण का आदेश दिया। मैंने उसी घाटी मे रात्रि व्यतीत की। मैंने दूसरे दिन वहा से प्रस्थान किया और कोटला झील की सैर की। यह पर्वत के आचल से घिरी हुई है। कहा जाता है कि मानस-नी इसी मे गिरती है।[6] यह एक बहुत बड़ी झील है। इसकी एक ओर से दूसरी ओर (की कोई वस्तु) नही दिखाई पडती। इसके मध्य में एक टीला है। इसके चारो ओर बहुत सी छोटी-छोटी नौकायें थी। झील के समीप के ग्रामो के निवासी हलचल तथा अशान्ति के समय नौकाओ पर बैठ कर उसी टीले पर चले जाते है। हमारे आगमन पर भी नौकाओ मे बैठ कर कुछ लोग झील के मध्य मे चले गये।

हुमायूं को बिदा करना

झील से वापस होने हुये हम हुमायू के शिविर मे उतरे। वहा हमने विश्राम तथा भोजन किया। उसे तथा उसके बेगो[7] को खिलअतें पहना कर हम सोने के समय की नमाज के उपरान्त हुमायू को बिदा करके सवार हुये।

आगरा की ओर वापसी, नाहर खा का पलायन

हम मार्ग मे एक स्थान पर थोडी देर सोकर दिन निकलते ही कुहरी[8] नामक परगने को पार कर के कुछ देर पुन विश्राम करके अपने शिविर मे, जो टोडा[9] मे था, पहुच गये। टोडा से प्रस्थान करके

१ फ़ीरोज़पुर अथवा फ़ीरोज़पुर झिर्का (गुड़गाव में)। यह देहली से दक्षिण में ७४ मील पर है। कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़ ने मेवातियों को अपने वश में रखने के लिये इसे बसाया था। अबुल फ़ज़्ल के समय में झरने के समीप एक महादेव जी का मदिर था।
२ अलवर के दक्षिण में लगभग ३० मील पर। कोटला झील फ़ीरोज़पुर की पहाड़ी के नीचे स्थित है। यह ३ मील × २½ मील है किन्तु विभिन्न मौसमों में जल घटता बढता रहता है। अबुल फ़ज़्ल के समय इसकी परिधि ४ कोस अथवा ८ मील थी। इसका कुछ भाग नूह ज़िले में और कुछ गुड़गांव में है।
३ १२ रजब (१४ अप्रैल)।
४ करवीर।
५ बाबर ने इस तरह के हौज़ों का आकार इतना ही लिखा है।
६ बाबर को विश्वस्त रूप से इस विषय में जानकारी नहीं हो सकी किन्तु पहले यह नदी इसी झील में गिरती थी, अब इसका मार्ग बदल गया है।
७ अमीरों।
८ अकबर की रणथम्भौर सरकार मे, अलवर नगर के दक्षिण-पूर्व में १५ मील पर।
९ टोडा भीम, अकबर की रणथम्भोर सरकार में, जयपुर नगर के पूर्व में ६२ मील पर।

हमने सूनकार मे पडाव किया। उस स्थान पर हसन खा मेवाती का पुत्र, नाहर खा, अब्दुर्रहीम की निगरानी से भाग गया।

एक रमणीक झरना

इस स्थान से प्रस्थान करके, एक रात के पडाव के उपरान्त हमने एक झरने पर, जो बसावर[1] तथा चौसा[2] के मध्य मे एक पहाडी की शिखा पर स्थित है, पडाव किया। वहा शामियाने लगाये गये और हमने माजून के सेवन का पाप किया।

शिविर के उस झरने से गुज़र जाने के उपरान्त तरदी बेग खाकसार ने उसकी बडी प्रशसा की। वह उस झरने के पास पहुच कर घोडे की पीठ पर से उसे देख कर चल दिया था। यह एक पूर्ण झरना है। हिन्दुस्तान मे जहा जल-धारायें नही हैं, वहा लोग झरने की खोज मे रहते हैं। यदि सयोग से कही कोई झरना मिल जाता है तो वह बूद-बूद करके भूमि से फूटता है और उन स्थानो के झरनों[3] के समान भूमि मे जल उबलता हुआ नही निकलता। इस झरने से लगभग आधी पनचक्की के प्रयोग के लिये जल निकलता है। यह पर्वत के आचल म फूटता है और इसके चारो ओर घास के मैदान हैं। यह बडा ही सुन्दर है। मैंने आदेश दिया कि इस पर तराशे हुये पत्थरो का एक अष्टाकार हौज़ बना दिया जाये।[4] जब हम लोग झरने के किनारे थे तो माजून की तरग मे तरदी बेग ने झरने की अत्यधिक रमणीयता पर वाद-विवाद करते हुए बार बार कहा, "क्योंकि हम इस स्थान पर आनद मगल मना रहे हैं अत इसके लिये एक नाम रख लिया जाये।" अब्दुल्लाह ने कहा कि, "इसका नाम 'चश्मये बादशाही' होना चाहिये।" तरदी बेग इससे बडा प्रसन्न हुआ। इस बातचीत के कारण अत्यधिक हसी मजाक रहा।

ब्याना तथा सीकरी होते हुए आगरा पहुचना

इस झरने पर दोस्त ईशक आका[5] ब्याना से आकर हमारी सेवा मे उपस्थित हुआ। इस स्थान से प्रस्थान करके हमने पुन ब्याना पहुच कर वहा की सैर की। वहा से हम सीकरी पहुचे और वहा एक उद्यान के किनारे जिसके निर्माण का पूर्व ही से आदेश हो चुका था, पडाव किया। दो दिन तक हम उद्यान की देख भाल करते रहे और बृहस्पतिवार २३ रजब (२५ अप्रैल) को आगरा पहुच गये।

चदवार एव रापरी पर अधिकार

चदवार[6] तथा रापरी[7] पर, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, विद्रोहियो ने इस अशान्ति के समय अधिकार जमा लिया था। मुहम्मद अली जगजग, कूज बेग के भाई तरदी बेग, अब्दुल मलिक कूरची[8],

१ भुसावर, भरतपुर में।
२ सम्भवत 'आईने अकबरी' का चौसा।
३ बाबर के देश के झरनों के समान।
४ सम्भवत जल को नष्ट होने से बचाने के लिये हौज़ बनाया गया होगा।
५ देखिये पूर्व पृ० २५३, नोट नं० ५।
६ 'चंदवार' अथवा 'जनवार' आगरा के २५ मील पर मथुरा-इटावा की सड़क पर।
७ देखिये पूर्व पृ० २०३।
८ अस्त्र शस्त्र की देख रेख करने वालों का अधिकारी।

हुसन खा तथा उसके दरयाखानियो को चदवार तथा रापरी पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया। जैसे ही वे लोग चदवार के निकट पहुचे, कुतुब खा के जो आदमी वहा थे, वे समाचार पाकर भाग खड़े हुये। हमारे आदमी उस पर अधिकार जमा कर रापरी की ओर चल खड़े हुये। यहा हुसेन खा नोहानी के आदमियो ने कूचा बन्दी[1] करके कुछ युद्ध करने का विचार किया, किन्तु वे हमारे आदमियो का मुकाबला न कर सके और भाग खड़े हुये।

इटावा मे कुतुब खा का पलायन

कुतुब खा यह समाचार पाकर कुछ लोगो के साथ इटावा से भाग खड़ा हुआ। इटावा मे महदी ख्वाजा की नियुक्ति निश्चित हो चुकी थी अत उसके पुत्र जाफर ख्वाजा को उसके स्थान पर भेजा गया।

परगनो इत्यादि का प्रबन्ध

जब राणा सागा ने हमारे ऊपर आक्रमण किया तो बहुत से हिन्दुस्तानियो तथा अफगानो ने जैसा कि उल्लेख हो चुका है, विद्रोह कर दिया और अपने परगनो तथा विलायतो[2] पर अधिकार जमा लिया।

कन्नौज

सुल्तान मुहम्मद दूलदाई जो कन्नौज छोड कर मेरे पास भाग आया था, भय अथवा अपनी मर्यादा के कारण वहा न जाना चाहता था। उसने कन्नौज के ३० लाख के स्थान पर सहरिन्द[3] के १५ लाख ले लिये और कन्नौज मुहम्मद सुल्तान मीर्जा को प्रदान कर दिया गया और उसकी वजह[4] ३० लाख कर दी गई।

बदायूं

बदायू कासिम हुसेन सुल्तान को प्रदान किया गया और उसे बिबन के विरुद्ध, जिसने राणा सागा के विद्रोह के समय लकनूर[5] को घेर रक्खा था, भेजा गया। उसके साथ मुहम्मद सुल्तान मीर्जा तथा तुर्क अमीरो मे बाबा कश्का के मलिक कासिम, उसके बडे और छोटे भाइयो और उसके मुग़लो, अबुल मुहम्मद नेजा बाज़, मुईद तथा उसके पिता के दरयाखानियो, हुसेन खा के दरयाखानियो, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई के सेवको तथा हिन्दुस्तान के अमीरो मे से, अली खा फर्मुली, मलिक दाद करारानी, शेख भिखारी[6] के शेख मुहम्मद तथा तातार खा खाने जहा को उसके साथ किया गया।

बिबन का पलायन

जब यह सेना गगा नदी पार कर रही थी तो बिबन इसके विषय मे सुनकर अपने माल-असबाब

१ गली को रोक कर।
२ राज्यों।
३ सरहिन्द।
४ खर्च, वेतन।
५ रामपुर (उत्तर प्रदेश) में शाहाबाद।
६ यह शब्द स्पष्ट नहीं।

को छोड कर भाग खडा हुआ। हमारी सेना ने खैराबाद[1] तक उसका पीछा किया और वहा कुछ दिन ठहर कर वापस चली आई।

नियुक्तियो का वर्षा के कारण स्थगित होना

खजाने के वितरण के उपरान्त राणा सागा के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ हो गया और परगना तथा विलायतो के बाटने का अवकाश न मिल सका था। काफिर[2] के विरुद्ध जिहाद से निश्चिन्त होकर अब वितरण प्रारम्भ हुआ। वर्षा ऋतु के निकट आ जाने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह निश्चय हुआ कि वह अपने अपने परगने को चला जाये और अपना सामान तैयार करके, वर्षा उपरान्त उपस्थित हो।

हुमायूं द्वारा आज्ञा विना खजाने पर अधिकार

इसी बीच मे यह समाचार प्राप्त हुये कि हुमायू ने देहली पहुच कर वहा के बहुत से खजाना को खुलवाया और आज्ञा बिना उनम से कुछ पर अधिकार जमा लिया। मुझ उससे एसी किसी बात की कोई आशा न थी। मुझ इससे बडा दुख हुआ। मैंने उसे परामर्श देते हुए कठोर पत्र लिख कर भेजे।

एराक को राजदूत भेजना

ख्वाजगी असद, जो एराक राजदूत बना कर भेजा गया था, सुलेमान तुर्कमान के साथ वापस आया। वह उसके साथ पुन १५ शाबान (१७ मई) को उचित उपहार सहित शाहजादा तहमास्प[3] के पास भेजा गया।

तरदी बेग खाकसार का पुन दरवेश बनना

मैंने तरदी बेग को दरवेशो के जीवन से निकाल कर सैनिक बना दिया था। उसने कई वर्षों तक मेरी सेवा की। अब उसमे दरवेश बनने की इच्छा पुन प्रबल होने लगी और उसने अवकाश चाहा। उसे अवकाश प्रदान कर दिया गया और वह कामरान के पास[4] राजदूत बना कर भेज दिया गया। उसके साथ ३ लाख[5] का खजाना भी कामरान के लिये भेजा गया।

काबुल चले जाने वाला के विषय में पद्य

जो लोग पिछले वर्ष चले गये थे उनके विषय मे मैंने एक कते[6] की रचना कर ली थी। मैंने मुल्ला अली खा को सम्बोधित करते हुए उसे तरदी बेग के हाथ उसके पास भिजवा दिया। वह इस प्रकार है

१ सीतापुर (उत्तर प्रदेश) जिले में।
२ राणा सांगा।
३ इस स्थान पर भी बाबर ने तहमास्प के लिये शाहजादा शब्द का प्रयोग किया है।
४ कामरान कधार में रहा होगा।
५ अर्सकिन के अनुसार ७५० पौंड किन्तु यदि इस धन से तात्पर्य रुपया है तो यह ३०,००० पौंड होगा।
६ ऐसे शेर जो एक ही विषय से सम्बन्धित हों। साधारणत उनके पहले शेर के दोनों मिसरों में 'काफिया' तथा 'रदीफ' नहीं होता। कता के शेरों की संख्या निश्चित नहीं।

क़ता

"हे तुम लोग जो इस देश हिन्दुस्तान से चले गये,
यहा के कष्टो एव दुखों से अवगत होकर।
काबुल तथा उसकी उत्तम हवा की इच्छा करके,
तुम लोग हिन्दुस्तान से शीघ्रातिशीघ्र चल दिये।
तुमको जिस आनन्द की इच्छा थी, वह तुम्हे वहा मिल गया होगा,
सुगमतापूर्वक, हसी खुशी से एव सानन्द।
जहा तक हमारा प्रश्न है ईश्वर को धन्य है कि हम जीवित है
अत्यधिक कष्टो एव असीम तकलीफो के बावजूद।
आत्मा की प्रसन्नता एव शारीरिक कष्ट,
तुमने भी बिता दिये और हमने भी भोग लिये।'

रमज़ान के रोज़े

इस वर्ष हमने रमज़ान हश्त बहिश्त उद्यान मे ग़ुस्ल के साथ तरावीह[1] पढ कर व्यतीत किया। मैंने अपनी ११ वर्ष की अवस्था से लेकर इस समय तक कभी भी दो वर्षों तक एक ही स्थान पर ईद[2] न मनाई थी। पिछले वर्ष मैंने आगरा मे ईद मनाई थी। इस वर्ष इस उद्देश्य से कि इस नियम म विघ्न न पड जाये मैं मास के अन्त मे सीकरी ईद मनाने के लिये पहुच गया। बागे फ़तह[3] के उत्तर-पूर्व म एक पत्थर का चबूतरा बनवाया गया। उस पर खेमे लगवाये गये और वहा ईद मनाई गई। यह बाग फ़तह अब सीकरी मे लगाया जा रहा है।

शाह हुसेन को गजीफे का उपहार

जिस रात्रि मे हम आगरा से सवार हो रहे थे, मीर अली कूरची को शाह हसन[4] के पास ठट्टा भेजा गया। उसे गजीफे से, जिसे उसने मगवाया था, बडी रुचि थी। मैंने उसके पास गजीफा भिजवा दिया।

बाबर का रुग्ण होना

(३ अगस्त)—रविवार ५ ज़ीकाद को मैं रुग्ण हो गया और १७ दिन तक रुग्ण रहा।

धौलपुर की ओर प्रस्थान

(२२ अगस्त)—शुक्रवार २४ ज़ीकाद को हमने दोलपुर[5] की सैर हेतु प्रस्थान किया। उस

१ रमज़ान मास की २० रकात सामूहिक नमाज़ें जो रमज़ान मे रात्रि के समय पढ़ी जाती हैं। इसे तरावीह इस कारण कहते हैं कि नमाज़ पढने वाले प्रत्येक चार रकात और दूसरे सलाम के बाद थोड़ी देर तक बैठ कर विश्राम करते हैं। ग़ुसुल अथवा स्नान के उपरान्त नमाज़ पढने में अधिक पुण्य बताया गया है।
२ रमज़ान के पूरे मास के बाद की ईद।
३ विजय उद्यान।
४ शाह हसन अरग़ून।
५ धौलपुर।

रात्रि मे यात्रा का आधा भाग पूरा करके एक स्थान पर हम लोग सो गये। दूसरे दिन प्रात काल हम सिकन्दर के बाध पर पहुचे और वहा पडाव किया।

पहाडी के अन्त पर बाध के नीचे ऐसे पत्थर की चट्टान है जो भवन के लिये उपयुक्त हैं। मैंने उस्ताद शाह मुहम्मद सगतराश को बुलवाया और उसे आदेश दिया कि यदि इस चट्टान मे पूरा एक घर एक टुकडे ही मे काटा जा सके तो बडा उत्तम है किन्तु यदि चट्टान घर के लिये नीची हो तो उसे समतल करके एक ही टुकडे मे से एक हौज़ काटा जाये।

बारी की सैर

दोलपुर[1] से हमने बारी[2] की सैर के लिये प्रस्थान किया। दूसरे दिन[3] प्रात काल मैंने बारी से प्रस्थान किया और बारी तथा चम्बल के मध्य की पहाडी पार करके हमने चम्बल नदी की सैर हेतु प्रस्थान किया। सैर के उपरान्त मैं बारी लौट आया। इन्ही पहाडियो मे हमने आबनूस का वृक्ष देखा। इसके फल को लोग तेंदू कहते हैं। कहा जाता है कि आबनूस के वृक्ष सफेद भी होते हैं। इस पहाडी मे अधिकाश आबनूस सफेद रग के थे। बारी से प्रस्थान करके हम सीकरी पहुचे। वहा की सैर करके बुधवार २९ ज़ीकाद (२७ अगस्त) को हम आगरा पहुचे।

शेख बायजीद फर्मुली के विषय मे सन्देह

उन्ही दिनो शेख बायज़ीद[4] के विषय मे परेशानी पैदा करने वाले समाचार प्राप्त हो रहे थे। सुल्तान कुली तुर्क को उसके पास, २० दिन की मीआद[5] देने के लिये भेजा गया।

(३० अगस्त)—शुक्रवार २ जिलहिज्जा को मैंने उसका[6] पाठ प्रारम्भ किया जिसे ४१ बार पढा जाता है।

इन्ही दिनो मे मैंने निम्नाकित शेर की ५०४ वज़ा[7] मे तक़ती[8] की और इसके सम्बन्ध मे एक पुस्तक की रचना की।

छन्द

'मैं उसके नयन के, उसके कटाक्ष के, अग्नि के अथवा वार्ता के विषय मे कहू,
मैं उसके कद के विषय मे, उसके कपोल के विषय मे, उसके केश के विषय मे
अथवा उसकी कटि के विषय मे कहू।"

१ धौलपुर।
२ धौलपुर के पश्चिम में १६ मील पर।
३ २६ अगस्त।
४ मुस्तफा फ़र्मुली का छोटा भाई।
५ *वह अवधि जिसमें शेख बायज़ीद फ़र्मुली को बाबर की सेवा म उपस्थित होना था।*
६ फ़ारसी अनुवाद में 'विर्द'। कुरान शरीफ़ के किसी अंश का बार बार पढ़ना।
७ छन्द में वर्ण, मात्रा का घटना बढ़ना।
८ तक़ती—काव्य पद के अक्षरों को गणों की मात्राओं से मिलाकर बराबर करना।

पुनः रुग्ण होना

इस दिन[1] मैं पुन. रुग्ण हो गया और ९ दिन तक रुग्ण रहा।

सम्भल को प्रस्थान

(२५ सितम्बर)—बृहस्पतिवार २९ जिलहिज्जा को हम कोल तथा सम्बल[2] की सैर के लिये रवाना हुये।

१ दो जिलहिज्जा (३० अगस्त)।
२ सम्भल।

९३४ हि०

(२७ सितम्बर १५२७ से १४ सितम्बर १५२८ ई०)

कोल तथा सम्भल की सैर

(२७ सितम्बर)—शनिवार १ मुहर्रम को हमने कोल मे पडाव किया। दरवश (अली) तथा यूसुफ अली को हुमायू सम्बल मे छोड गया था। उन लोगो ने एक नदी[1] पार करके, कुतुब सरवानी तथा राजाओ के एक समूह से युद्ध किया और उन्हे बुरी तरह पराजित करके बहुत से आदमियो की हत्या कर दी। जब हम लोग कोल मे थे तो उन्होने कुछ सिर तथा एक हाथी भेजा। कोल पहुचने के दो दिन उपरान्त हम शेख गूरन के घर उसके निमत्रण पर पहुचे। उसने हम लोगो की दावत करके हमे उपहार भेट किये।

(३० सितम्बर : ४ मुहर्रम)—वहा से प्रस्थान करके हम लोगों ने अतरौली[2] में पडाव किया।

(१ अक्तूबर : ५ मुहर्रम)—बुधवार को गगा नदी पार करके हमने सम्बल के ग्रामो मे पडाव किया।

(२ अक्तूबर : ६ मुहर्रम)—बृहस्पतिवार को हमने सम्बल मे पडाव किया। वहा दो दिन सैर करके हमने शनिवार को वहा से प्रस्थान किया।

(५ अक्तूबर : ९ मुहर्रम)—रविवार को हम सिकन्दरा[3] पहुचे और राव सरवानी के घर मे उतरे। उसने हमारे भोजन का प्रबन्ध किया और बडी सेवायें की। वहा से हम लोगो ने सूर्योदय के पूर्व प्रस्थान किया। मार्ग मे एक बहाना करके मैं अन्य लोगों से पृथक् हो गया और घोडा भगाता हुआ आगरा से पूर्व एक कोस पर अकेला पहुच गया। अन्य लोग वहा पहुच कर मेरे साथ हो गये। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय हमने आगरा मे पडाव किया।

बाबर का रुग्ण होना

(१२ अक्तूबर)—रविवार १६ मुहर्रम को मुझे कम्प ज्वर हो गया। यह बारी देकर २५-२६ दिन तक आता रहा। मैंने कुछ उत्तम औषधियो का सेवन किया। अन्त मे स्वस्थ हो गया। मुझे तृष्णा एव निद्रा की कमी के कारण बडा कष्ट हुआ।

मैंने रुग्णावस्था मे एक-दो रुबाइयो की रचना की। एक रुबाई इस प्रकार है

रुबाई

"दिन के समय मेरे शरीर मे ज्वर उग्र रूप धारण कर लेता है,
रात्रि के आगमन पर निद्रा मेरे नेत्रो को छोडकर चली जाती है।

१ सम्भवत सम्भल के निकट की कोई नदी।
२ अलीगढ ज़िले में अलीगढ के उत्तर पश्चिम में, काली नदी तथा गंगा नदी के मध्य में।
३ अलीगढ ज़िले में अलीगढ नगर से २१ मील दक्षिण पूर्व में; यह सिकन्दरा राव के नाम से प्रसिद्ध है।

मेरे दुःख एवं मेरे संतोष के समान ये दोनों,
जब एक बढता है तो दूसरी कम हो जाती है।"

बेगमों का आगमन

(२३ नवम्बर)—रविवार २८ सफर को दो "दादी बेगमें"—फख्रे जहा बेगम तथा खदीजा सुल्तान बेगम[1] पधारी। मैं सिकन्दराबाद[2] में उनके स्वागतार्थ उपस्थित हुआ।

एक तोप द्वारा पत्थर फेंका जाना

(२४ नवम्बर : २९ सफर)—रविवार को उस्ताद अली कुली ने एक बहुत बडी तोप से पत्थर चलाया। यद्यपि पत्थर बडी दूर निकल गया किन्तु तोप टुकडे-टुकडे हो गई। उसके एक टुकडे से बहुत से आदमी गिर पडे और ८ आदमियों की मृत्यु हो गई।

सीकरी की सैर

(१ दिसम्बर)—सोमवार ७ रबी-उल-अव्वल को मैं सीकरी की सैर करने गया। झील के मध्य में जिस अष्टाकार चबूतरे के निर्माण का मैंने आदेश दिया था, वह तैयार हो चुका था। हम वहा नौका पर पहुचे और उस पर एक शामियाना लगवाया और वहा माजून का सेवन किया गया।

चन्देरी के विरुद्ध जिहाद

(९ दिसम्बर)—सीकरी की सैर से लौट कर सोमवार १४ रबी-उल-अव्वल की रात्रि में हम लोग चन्देरी के विरुद्ध जिहाद के उद्देश्य से रवाना हुये। तीन कुरोह[3] यात्रा करके हम जलेसर में उतरे। दो दिन तक लोग अपने सामान एकत्र करने एवं तैयारी के लिये ठहरे रहे। तदुपरान्त हम लोग बृहस्पतिवार[4] को रवाना होकर अनवार[5] में ठहरे। अनवार में नौका द्वारा प्रस्थान करके हमने चदवार में पडाव किया।

(२३ दिसम्बर)—वहा से हम एक पडाव से दूसरे पडाव को पार करते हुये सोमवार २८ (सफर) को कनार[6] नामक घाट पर उतरे।

(२६ दिसम्बर)—बृहस्पतिवार २ रबी उल-आखिर को मैंने नदी पार की। किसी न किसी तट पर सेना के पार करने में ४-५ दिन का विलम्ब हुआ। इन दिनों हमने कई बार नौका में बैठ कर माजून का सेवन किया। चम्बल नदी का संगम कनार घाट के ऊपर की ओर एक दो कुरोह[7] पर स्थित

१ वे बाबर की चाचियां तथा सुल्तान अबू सईद मीरान शाही की पुत्रियाँ थीं।
२ बुलन्दशहर जिले में, बुलन्दशहर देहली की पक्की सड़क पर, बुलन्दशहर नगर से दस मील उत्तर पश्चिम में।
३ छः मील।
४ १२ दिसम्बर (१७ रबी-उल अव्वल)।
५ 'अनवार' अथवा 'उनवारा' यमुना नदी के बायें तट पर आगरा के दूसरी ओर आगरा से १२ मील पर।
६ 'आईने अकबरी' के अनुसार कालपी का महाल, आगरा के दक्षिण में।
७ २-४ मील।

है। शुक्रवार को मैं एक नौका मे बैठ कर चम्बल मे सैर करते हुये सगम तथा शिविर की ओर मे गुजरा।

शेख बायजीद फर्मुली के विरुद्ध सेना का भेजा जाना

यद्यपि शेख बायजीद के विद्रोह का कोई स्पष्ट प्रमाण न मिल सका था किन्तु उसके आचरण तथा व्यवहार से यह विश्वास हो गया था कि वह विद्रोह करना चाहता है। इस कारण मुहम्मद अली जगजग को सेना से पृथक् करके भेजा गया और यह आदेश दिया गया कि कन्नौज से मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उस क्षेत्र के अमीरो एव सुल्तानो को उदाहरणार्थ कासिम हुसैन सुल्तान, बीखूब[1] सुल्तान, मलिक कासिम, कूकी, अबुल मुहम्मद नेजा बाज[2], मनूचहर खा तथा उसके बडे और छोटे भाई एव दरयाखानियो को अपने साथ लेकर विद्रोही अफ़गानो के विरुद्ध प्रस्थान करे। वे सर्व प्रथम शेख बायजीद को आमन्त्रित करें। यदि वह निष्ठापूर्वक आकर उनके साथ हो जाये तो वे उसे साथ लेकर रवाना हो, अन्यथा वे सर्वप्रथम उसे भगा दें।

मुहम्मद अली ने कुछ हाथी मागे। उसे दस हाथी दे दिये गये। जब उसे प्रस्थान करने की अनुमति दे दी गई तो बाबा चुहरा[3] को भी उसके साथ जाने का आदेश दिया गया।

चन्देरी की ओर प्रस्थान

कनार से एक कुरोह[4] तक नौका द्वारा यात्रा की गई।

(१ जनवरी १५२८ ई०)—बुधवार ८ रबी-उस्सानी को हम लोग कालपी के पास एक कोस पर उतरे। बाबा सुल्तान इस पडाव पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह खलील सुल्तान का, जो सुल्तान सईद खा का सगा छोटा भाई है, पुत्र है। पिछले वर्ष वह अपने बडे भाई के पास से भाग गया था किन्तु बाद मे पछता कर, काशगर के समीप पहुचने के उपरान्त वह अन्दराब की सरहद से भाग गया। खान सईद ने हैदर मीर्ज़ा को उससे भेंट करने एव उसे वापस लाने के लिये भेजा।

(२ जनवरी : ९ रबी-उस्सानी)—दूसरे दिन हम लोग कालपी मे आलम खा के घर मे ठहरे। वहा उसने हमे हिन्दुस्तानी भोजन कराया और उपहार भेंट किये।

(६ जनवरी)—सोमवार १३ (रबी-उस्सानी) को हम कालपी से रवाना हो गये।

(१० जनवरी : १७ रबी-उस्सानी)—शुक्रवार के दिन हम ईरिज[5] मे उतरे।

(११ जनवरी)—शनिवार को हमने बान्दीर[6] मे पडाव किया।

१ अथवा नीख़ूब।
२ बर्छा चलाने में दक्ष।
३ वीर।
४ दो मील।
५ कालपी से बाबर दक्षिण पश्चिम के मार्ग की ओर रवाना हुआ होगा और ईरिज (एरिज) अथवा ईरिच पहुँचने के लिये बेतवा नदी पार की होगी। एरिज उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में बेतवा के दायें तट पर, ग्वालियर के ६५ मील, दक्षिण-पूर्व में।
६ ईरिज से प्रस्थान करके बाबर ने बेतवा पुनः पार की होगी और वहां से निकल कर बान्दीर अथवा भान्देर पहुँचने के लिये पश्चिम दिशा म यात्रा की होगी। भान्देर अथवा बान्दीर, झांसी के उत्तर-पूर्व और दतिया से २० मील पूर्व की ओर।

(२८ जनवरी)—मंगलवार ६ जमादि-उल-अव्वल को प्रात काल हमने बहजत खा के तालाब से चन्देरी पर आक्रमण करने के उद्देश्य से प्रस्थान किया और होज़े मियानी[1] के समीप, जो क़िले के निकट है, पड़ाव किया।

लखनऊ में मुग़लो की सेना की पराजय

इसी दिन प्रात काल, उस स्थान पर पहुचने के उपरान्त ख़लीफ़ा एक-दो पत्र लाया जिनमें यह लिखा था कि जो सेना पूर्व (के प्रदेशो) पर आक्रमण हेतु नियुक्त हुई थी उसने अधाधुध युद्ध किया और पराजित होकर लखनऊ छोड कर कन्नौज चली गई। यह देख कर कि ख़लीफ़ा इन समाचारो के कारण बडा चिंतित तथा व्याकुल है, मैंने उससे कहा कि, "चिन्ता एव व्याकुलता व्यर्थ है। जो कुछ भाग्य मे लिखा है, वह अवश्य होगा। जब तक हमारे सामने यह कार्य है[2] हमें जो कुछ ज्ञात हुआ है उसके विषय मे सास न लेनी चाहिये। कल हम लोग किले पर आक्रमण करेंगे। इसके बाद जो कुछ होगा देखा जायेगा।'[3]

चन्देरी का अवरोध

शत्रुओ ने अरक[4] को दृढ बना लिया होगा। बाहरी क़िले मे दूरदर्शिता के कारण उन लोगो ने एक-एक, दो-दो आदमी नियुक्त कर दिये थे। इस रात्रि मे हमारे आदमी प्रत्येक दिशा से बाहरी क़िले मे प्रविष्ट हो गये। उसमें बहुत थोडे से आदमी थे। वे लोग युद्ध किये बिना अरक के भीतर भाग गये।

(२९ जनवरी)—बुधवार ७ जमादि-उल-अव्वल को हमने अपनी सेना वालो को आदेश दिया कि वे अस्त्र-शस्त्र धारण करके अपने-अपने निश्चित स्थानो को चले जायें और (शत्रुओं) को युद्ध हेतु उकसायें। मैं पताका एव नक्कारा सहित सवार हुआ और प्रत्येक व्यक्ति ने अपने-अपने स्थान से युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

मैंने उस समय तक के लिये जब तक युद्ध अच्छी तरह गरम न हो जाय नक्कारा तथा पताका वापस भेज दी और स्वय उस्ताद अली कुली द्वारा पत्थर दागने का दृश्य देखने चला गया। उन पत्थरों का कोई प्रभाव न हुआ कारण कि भूमि मे कोई झुकाव न था और क़िले की दीवारें पूर्णत पत्थर की होने के कारण अत्यन्त दृढ़ थी।

यह लिखा जा चुका है कि चन्देरी का अरक पहाडी पर स्थित है। इस पहाडी की एक ओर जल तक दोहरी दीवारो का मार्ग बना है। यही एक ऐसा स्थान था जहा से उस पर आक्रमण किया जा सकता था। यह स्थान दायें एव बायें बाजू के सैनिको एव मध्य भाग के विशेष सैनिकों के लिये निश्चित था। यद्यपि प्रत्येक दिशा से भीषण आक्रमण किया गया किन्तु इस दिशा में बडी तीव्र गति से आक्रमण हुआ। हमारे वीरो पर काफ़िरो ने ऊपर से पत्थर तथा जलती हुई अग्नि बरसाई किन्तु वे पीछे न हटे। अन्त मे

१ मध्य के तालाब।
२ चन्देरी की विजय।
३ बाबर ने ख़लीफ़ा को फ़ारसी में उत्तर दिया। सम्भवत इसका उद्देश्य यह हो कि इसे अधिक लोग न समझ सकें।
४ भीतरी क़िले।

शाहीम[1] यूज़ बेगी[2] उस स्थान पर पहुच गया जहा दोहरी दीवार का मार्ग किले की दीवारो से मिलता है। वीर लोग अन्य स्थानो से टूट पडे और दोहरी दीवार के मार्ग पर अधिकार जमा लिया।

अरक[3] मे काफिरो ने इतना भी युद्ध न किया। जब हमारे बहुत से आदमी किले पर चढ़ गये तो वे शीघ्रातिशीघ्र भाग खडे हुये।[4] थोडी देर बाद काफिर लोग नगे होकर निकल पडे और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। उन लोगो ने हमारे बहुत से आदमियो को भगा दिया। वे चहारदीवारी की ओर भागने पर विवश हो गये। (हमारे) कुछ आदमियो की उन्होंने हत्या कर दी। दीवारो से उनके तुरन्त चले जाने का कारण यह था कि उन्होंने यह समझ लिया था कि उनकी पराजय निश्चित ही है अत वे अपनी स्त्रिया एव रूपवतियो की हत्या कर के[5] और प्राण त्याग देने के उद्देश्य से युद्ध हेतु नगे निकल पडे। हमारे आदमियो ने अपने-अपने स्थान से भीषण आक्रमण करके उन्हे दीवारो के पास से भगा दिया। तदुपरान्त दो-तीन सौ आदमी मेदिनी राय के घर मे प्रविष्ट हो गये। वहा शत्रुओ ने एक दूसरे की इस प्रकार हत्या कर दी —एक आदमी तलवार ले कर खडा हो जाता था। अन्य लोग प्रसन्नता पूर्वक अपनी ग्रीवा उसकी तलवार के नीचे रख देते थे। इस प्रकार वे बहुत बडी सख्या मे नरक मे पहुच गये।[6]

ईश्वर की कृपा से यह प्रसिद्ध किला २-३ घडी मे बिना नक्कारे तथा पताका के और बिना अधिक युद्ध किये हुये विजय हो गया।[7] चन्देरी के उत्तर-पश्चिम मे काफिरो के सिरो के एक स्तम्भ के निर्माण का आदेश हुआ। इस विजय की तारीख 'फतहे दारुल हर्ब'[8] निकली। मैंने इसकी रचना इस प्रकार की

पद्य

'कुछ समय तक हम चन्देरी मे ठहरे,
काफिरो से वह स्थान परिपूर्ण था, और हमने युद्ध किया।
युद्ध द्वारा हमने वह किला विजय कर लिया
उसके विजय की तारीख 'दारुल हर्ब' हुई।"

१ शाह मुहम्मद यूज़बाशी।
२ १०० सवारों का अधिकारी।
३ भीतरी किले।
४ सम्भवत किले की चहारदीवारी से किले के अन्य भागों में भाग खड़े हुये और किले की चहारदीवारी पर युद्ध न हुआ।
५ जौहर के उपरान्त।
६ बाबर ने चंदेरी के आक्रमण का बड़ा संक्षिप्त वर्णन दिया है और काफ़िरों के संहार के हाल का जिसके विषय में इसके पूर्व वह लिख चुका है यहाँ कोई उल्लेख नहीं किया। फ़िरिश्ता के अनुसार ५-६ हज़ार राजपूत क़त्ल कर डाले गये। कुछ प्रतिष्ठित काफ़िरों का समूह अपने परिवार एव क़ौम वालों सहित मेदनी राय के घर में जो क़िले के भीतर था प्रविष्ट हो गया और द्वार बन्द करके युद्ध किया। जब वे निराश हो गये तो अपनी प्रथानुसार नङ्गी तलवार एक के हाथ में दे देते थे और एक-एक करके प्रसन्नता पूर्वक उसके पास जाकर उसकी तलवार के नीचे गर्दन रख कर मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे। मेदिनी राय भी इसी प्रकार नरक पहुँच गया। (तारीख़े फ़िरिश्ता'—नवल किशोर प्रेस, पृ० २०९-२१०)।
७ अर्थात् बिना बाबर के स्वय युद्ध में भाग लिये हुये समाप्त हो गया।
८ दारुल हर्ब की विजय। वह स्थान जो मुसलमानों के अधीन न हो।

चन्देरी

चन्देरी बडी विचित्र विलायत[1] है। इसके चारो ओर अत्यधिक जलधारायें पाई जाती है। इसका अरक[2] एक पहाडी पर स्थित है। इसके भीतर एक चट्टान को काट कर हौज़ बनाया गया है। एक बडा हौज़ दोहरी दीवार के मार्ग, जिस पर आक्रमण कर के अरक पर अधिकार जमाया गया था, के अन्त पर है। चन्देरी में सभी घर, चाहे वे बडे लोगो के हो अथवा छोटे लोगो के, पत्थर के बने हुये हैं। बडे लोगों के घरो मे पत्थरो मे अत्यधिक काम किया गया है किन्तु छोटे लोगो के घरो मे पत्थरो पर इतना अधिक काम नहीं है। उनके घरो की छतें खपरैल से नहीं छाई हैं अपितु पत्थर के टुकडो की बनी हैं। किले के समक्ष तीन बडे-बडे तालाब हैं। पिछले हाकिमो ने इनके चारो ओर बाध बधवा कर उन्हें बनवाया है। वे ऊंचाई पर स्थित है।

चन्देरी से लगभग ३ कुरोह[3] दूर बेतवा नामक एक छोटी सी नदी है। इसका जल हिन्दुस्तान मे बडा उत्तम माना जाता है और पीने मे बडा स्वादिष्ट होता है। यह एक पूर्ण छोटी सी नदी है। इस नदी के मध्य मे ढालू चट्टानें पाई जाती हैं जो भवन-निर्माण के लिये बडी उत्तम होती हैं। चन्देरी आगरा के दक्षिण मे ९० कुरोह[4] की दूरी पर स्थित है। चन्देरी मे ध्रुवतारे[5] की ऊंचाई २५ अश पर है।

पूर्व पर आक्रमण हेतु वापसी

(३० जनवरी : ८ जमादि-उल-अव्वल)—बृहस्पतिवार को प्रात काल हम लोग किले से प्रस्थान करके मल्लू खा[6] के तालाब पर उतरे।

हम लोग चन्देरी इस उद्देश्य से आये थे कि इस पर विजय प्राप्त कर के हम रायसिंग[7], भीलसान[8], तथा सारगपुर[9] पर, जो काफिरो के राज्य मे हैं और सलाहुद्दीन काफिर के अधीन हैं, आक्रमण करेंगे। इन पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त हम राणा सागा के विरुद्ध चित्तौड पर चढाई करेंगे किन्तु उस चिन्ता-जनक समाचार[10] के प्राप्त होने के कारण मैंने बेगो[11] को बुलवा कर उनसे परामर्श किया। यह निश्चय हुआ कि यह उचित होगा कि सर्व प्रथम उन विद्रोहियो[12] पर आक्रमण किया जाये। चन्देरी को अहमद शाह को जो सुल्तान नासिरुद्दीन का, जिसका उल्लेख हो चुका है, पौत्र था प्रदान कर दिया गया।

१ प्रदेश।
२ भीतरी किला।
३ छः मील।
४ १८० मील।
५ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
६ मल्लू खाँ १५३२ या १५३३ ई० में मालवा का बादशाह हुआ। उसकी उपाधि कादिर शाह थी।
७ राय सेन भूपाल के समीप पूर्व में। अब यह साधारण सा ग्राम रह गया है।
८ भिल्सा, भूपाल के उत्तर पूर्व में।
९ सारगपुर भिल्सा के पश्चिम एवं उज्जैन के उत्तर-पूर्व में है।
१० पूर्व की पराजय।
११ अमीरों।
१२ पूर्व के विद्रोहियों।

चन्देरी मे से ५० लाख खालसा[1] मे सम्मिलित कर लिये गये और उसकी शिकदारी मुल्ला अपाक को प्रदान कर दी गई। उसे वहा २-३ हजार तुर्कों एव हिन्दुस्तानियो सहित अहमद शाह की कुमक हेतु नियुक्त कर दिया गया।

(२ फरवरी)—इन कार्यों की व्यवस्था करके रविवार ११ जमादि-उल-अव्वल को वापसी के उद्देश्य से मरलू खा के तालाब से प्रस्थान करके हमने बुरहानपुर नदी के तट पर पडाव किया।

(९ फरवरी)—रविवार को यक्का ख्वाजा तथा जाफर ख्वाजा को बान्दीर से इस आशय से भेजा गया कि वे काल्पी से नौकायें लेकर कनार नामक घाट पर पहुच जायें।

(२२ फरवरी[2])—शनिवार २४ (जमादि-उल-अव्वल) को हमने कनार घाट पर पडाव किया और आदेश दिया कि सेना पार करना प्रारम्भ करे।

विद्रोहियो के समाचार

उन दिनो यह समाचार प्राप्त हो रहे थे कि जो सेना पूर्व की ओर भेजी गई थी कन्नौज छोड कर रापरी पहुच गयी है। अबुल मुहम्मद नेजा बाज[3] ने यद्यपि शम्साबाद के किले को दृढ बना लिया था किन्तु (शत्रुओ की) बहुत बडी सख्या ने किले पर बलपूर्वक अधिकार जमा लिया।

बाबर की सेना का कन्नौज की ओर प्रस्थान

शाही सेना के नदी को इस ओर से उस ओर पार करने मे ३-४ दिन की देर हो गई। नदी पार करके हम निरन्तर यात्रा करते हुये कन्नौज की ओर रवाना हुये। कुछ वीरो को शत्रुओ के समाचार लाने के लिये आगे भेज दिया गया। जब कन्नौज पहुचने मे दो-तीन पडाव रह गये तो समाचार प्राप्त हुये कि समाचार लाने वालो की सख्या की अधिकता को देख कर मारूफ का पुत्र भाग खडा हुआ। बिबन, बायजीद तथा मारूफ हमारे पहुचने के समाचार पाकर गगा नदी पार करके, गगा के पूर्वी घाट पर कन्नौज के सामने हमारा मार्ग रोकने के लिये डटे हुये थे।

गगा नदी पर पुल

(२७ फरवरी)—बृहस्पतिवार ६ जमादि-उस्सानी को कन्नौज पार करके हमने गगा[4] के पश्चिमी तट पर पडाव किया। हमारे कुछ वीर नदी के चढाव तथा उतार पर जाकर ३०-४० बडी और छोटी नौकाओ को छीन लाये।[5] मीर मुहम्मद को पुल बनाने के लिये उचित स्थान की खोज करने एव आवश्यक सामग्री एकत्र करने के लिये भेजा गया। जिस स्थान पर शिविर था वहा से नदी के उतार की ओर एक कुरोह[6] पर उसने एक स्थान चुना। योग्य मुहसिला को कार्य की व्यवस्था हेतु नियुक्त किया गया। जिस स्थान पर पुल का निर्माण होने वाला था, वहा उस्ताद अली कुली ने पत्थर दागने के लिय

१ जिसकी आय केन्द्र को जाती थी।
२ यह १५ फ़रवरी होना चाहिये।
३ बरछा चलाने वाला।
४ गगा नदी।
५ सम्भवत पुल बनाने के लिये।
६ दो मील।

अपनी तोप लगा दी और पत्थर दागने प्रारम्भ कर दिये। मुस्तफा रूमी ने जर्बज़न[1] की गाडियां उस स्थान से नीचे की ओर जहा पुल तैयार हो रहा था एक टापू मे उतरवा ली और उस टापू से जर्बज़न दागना प्रारम्भ कर दिया। पुल के पास एक स्थान से जहा थोडी सी आड थी, बडे उत्तम ढग से बदूकें चलाई गईं। मलिक कासिम मुग़ुल तथा कुछ थोडे से आदमी एक-दो बार नदी के उस पार गये और उन्होंने बडे उत्तम ढग से युद्ध किया। बाबा सुल्तान तथा दरवेश सुल्तान ने भी बडी वीरता से नदी पार की किन्तु उनके साथ १०-१५ आदमी ही रहे होंगे। वे सायकाल की नमाज के उपरान्त रवाना हुये और युद्ध किये बिना ही लौट आये। इस प्रकार नदी पार करने के कारण उनकी बडी निन्दा की गई। अन्त में मलिक कासिम ने वीरता प्रदर्शित करते हुये शत्रुओं के शिविर पर छापा मारा और बाणो की वर्षा करके उन्हे शिविर से निकाला। शत्रुओं ने एक बहुत बडी सख्या तथा एक हाथी सहित मलिक कासिम पर आक्रमण करके उसे भगा दिया। मलिक कासिम एक नौका पर सवार हुआ किन्तु उसके रवाना होने के पूर्व हाथी ने पहुच कर उसे टकरा दिया। मलिक कासिम इस झडप मे मारा गया।

पुल के समाप्त होने के पूर्व उन दिनो उस्ताद अली कुली ने पत्थर दागने मे बडी कुशलता का प्रदर्शन किया। पहले दिन उसने ८ और दूसरे दिन १६ पत्थर दागे। इसी प्रकार वह तीन-चार दिन तक भली भाति पत्थर दागता रहा। यह पत्थर उसने गाजी नामक तोप से दागे। इस तोप का प्रयोग राणा सागा काफिर से युद्ध मे हुआ था, अत इसका नाम गाजी रख दिया गया था। इसके अतिरिक्त एक अन्य इससे भी बडी तोप थी किन्तु वह एक ही पत्थर दागने के बाद फट गई।[2] बदूक चलाने वालो ने खूब बन्दूक चलाई और बहुत से आदमियो तथा घोडो को गिरा दिया। उन लोगो ने बहुत से मजदूरो तथा अन्य आदमियो एव घोडो को भी, जो भय के कारण भागे जा रहे थे, बन्दूक का निशाना बना दिया।

(११ मार्च)—बुधवार १९ जमादि उस्सानी को जब पुल लगभग तैयार हो गया तो हम वहा पहुचे। अफगान लोग पुल बनाने की खिल्ली उडा रहे होंगे क्योकि इसके पूरे होने मे देर हो रही थी।

(१२ मार्च)—जब बृहस्पतिवार को पुल तैयार हो गया तो कुछ पदातियो एव लाहौरिया ने उसे पार किया और थोडा बहुत युद्ध भी हुआ।

अफगानो से युद्ध

(१३ मार्च)—शुक्रवार के दिन ख़ासे[3] की सेना, तथा सेना के मध्य भाग के दायें एव बायें बाजू ने नदी को पैदल पार किया। अफगानो की पूरी सेना ने सशस्त्र होकर हाथियो सहित हम पर आक्रमण किया। एक बार तो उन लोगो ने हमारे बायें बाजू को पीछे हटा दिया किन्तु हमारा दाया बाजू एव मध्य भाग अपने स्थान पर दृढ रहा और उसने युद्ध करके शत्रुओं को भगा दिया। इस सेना के दो आदमी अन्य लोगो के आगे बढते चले गये। एक आदमी को घोडे से गिरा कर बन्दी बना लिया गया। दूसरे आदमी के घोडे पर बार बार आक्रमण किया गया। वह किसी न किसी प्रकार गिरता पडता हमारे आदमियो के पास पहुच गया। उस दिन ७-८ सिर लाये गये। शत्रुओं मे से बहुत से लोग बाण अथवा बदूक द्वारा आहत हो गये।

१ एक प्रकार की तोप।
२ इससे पता चलता है कि इस अभियान में तोपों की सख्या अधिक न थी।
३ वह दल जो बादशाह के अधीन था।

उस रात्रि मे जो लोग नदी के पार गये थे, उन्हे वापस बुला लिया गया। यदि उसी शनिवार को सायकाल कुछ और लोग भेज दिये जाते तो अधिकाश शत्रु सम्भवत बन्दी बना लिये जाते किन्तु मैंने यह सोचा कि पिछले वर्ष हमने राणा सागा से युद्ध करने के लिये सीकरी से मगलवार नव रोज को प्रस्थान किया और विद्रोहियो को शनिवार को पराजित किया, इस वर्ष हमने इन विद्रोहियो के विनाश हेतु नव रोज बुधवार को प्रस्थान किया और यदि हम रविवार को विजय प्राप्त करे तो यह बडी विचित्र बात होगी। यह सोच कर हमने शेष सेना को पार न कराया। शत्रुओ ने शनिवार को युद्ध हेतु न प्रस्थान किया अपितु वे दूर पक्तिया जमाये खडे रहे।

(रविवार १५ मार्च: २३ जमादि-उस्सानी)—इस दिन गाडिया पार कराई गई और प्रात काल सेना को पार करने का आदेश दिया गया। नक्कारा बजने के समय[1] जो लोग समाचार लाने के लिये भेजे गये थे, वे समाचार लाये कि शत्रु भाग खडे हुये। चीन तीमूर सुल्तान को आदेश दिया गया कि वह अपनी सेना सहित उनका पीछा करे। निम्नाकित सरदारो को भी उनके साथ कर दिया गया और उन्हे यह आदेश दिया गया कि वे चीन तीमूर सुल्तान की आज्ञा बिना कोई कार्य न कर —मुहम्मद अली जगजग, हुसामुद्दीन अली बिन[2] खलीफा, मुहिब अली बिन खलीफा, कूकी बिन बाबा कश्का, दोस्त मुहम्मद बिन बाबा कश्का, बाकी ताशकीन्ती तथा वली किज़िलबाश।

मैंने सुन्नत की नमाज के उपरान्त नदी पार की। ऊटो के विषय मे आदेश दिया गया कि नदी के उतार की ओर जो घाट देखा गया था उससे उन्ह पार कराया जाये। उस रविवार को हमने एक बधे जल के तट पर बागरमऊ[3] के एक कोस के भीतर पडाव किया। जो लोग अफगानो का पीछा करने के लिये नियुक्त हुये थे, वे भली भाति कार्य न कर रहे थे। वे बागरमऊ मे पडाव किये हुये थे और उसी रविवार की मध्याह्न की नमाज[4] के उपरान्त रवाना हुये थे।

(१६ मार्च: २४ जमादि-उस्सानी)—प्रात काल हमने बागरमऊ की एक झील के किनारे पडाव किया।

तूख्ता बूगा सुल्तान का आगमन

इसी दिन (१६ मार्च) तूख्ता बूगा सुल्तान, मेरी माता के भाई छोटे खान[5] का पुत्र मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

लखनऊ पहुचना

(२१ मार्च)—शनिवार २९ जमादि-उस्सानी को मैंने लखनऊ की सैर की और गूई[6] पार करके वहा पडाव किया। मैंने उस दिन गोमती के जल मे स्नान किया। पता नही कि मेरे कान मे जल

१ कूच के समय।
२ पुत्र।
३ उन्नाव (उत्तर प्रदेश) जिले में, क़न्नौज के दक्षिण-पूर्व में।
४ प्रात काल की अनिवार्य नमाज़ के बाद की नमाज़।
५ अहमद चग़ताई।
६ गोमती, इसे 'गोदी' भी कहते थे। गोदी का फ़ारसी लिपि में 'गूई' बन जाना कठिन नहीं।

चला गया था अथवा जल-वायु का प्रभाव था, जो कुछ भी हो मेरा दाया कान बन्द सा हो गया और कुछ दिन तक उसमे बडी पीडा रही।

अवध पहुचना

अवध से दो एक पडाव पूर्व चीन तीमूर सुल्तान के पास से आकर किसी ने सूचना दी कि, 'शत्रु सरदा[1] के उस पार डटा हुआ है अत कुमक भेजी जाये।" १००० वीरो को पृथक् करके कराचा के अधीन हमने कुमक हेतु भेजा।

(२८ मार्च)—शनिवार ७ रजब को हमने अवध से २-३ कुरोह[2] पर गगर[3] एव सरदा के सगम के ऊपर पडाव किया। उस दिन तक शेख बायजीद सरदा के उस पार अवध के सामने रहा होगा। वह सुल्तान के पास पत्र भेजता एव (सधि के विषय मे) वार्ता करता रहा किन्तु सुल्तान ने उसकी धूर्तता से अवगत होने के कारण कराचा को मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय सूचना भिजवाई और नदी पार करने की व्यवस्था करने लगा। जब कराचा सुल्तान के पास पहुच गया तो उन्होने तत्काल नदी पार की। वहा लगभग ५० अश्वारोही तथा ३ या ४ हाथी थे। वे युद्ध न कर सके और भाग खडे हुये। कुछ लोगो को घोडे से गिरा कर उनके सिर काट डाले गये और उन्हे (मेरे पास) भेज दिया गया।

सुल्तान के पीछे-पीछे बीखूब[4] सुल्तान, कूज बेग के (भाई) तरदी बेग, बाबा चुहरा[5] तथा बाकी शगावल ने भी नदी पार की। जिन लोगो ने इनके पूर्व नदी पार की थी, उन लोगा ने शेख बायजीद का सायकाल की नमाज तक पीछा किया किन्तु वह जगल मे घुस कर भाग गया। चीन तीमूर रात्रि मे बचे हुये जल के तट[6] पर ठहरा और आधी रात मे विद्रोहियो के पीछे रवाना हुआ। वह ४० कुरोह[7] की यात्रा करके उस स्थान पर, जहा शेख बायजीद के परिवार वाले एव सम्बन्धी ठहरे थे, पहुच गया। वे भी भाग गये होगे। उसने उस स्थान से द्रुतगामी अश्वारोहियो को प्रत्येक दिशा मे उनका पीछा करने के लिये भेजा। बाकी शगावल ने कुछ वीरो सहित शत्रुओ को भेड के समान भगा दिया और उनके परिवारो के पास पहुच कर कुछ अफगानो को बन्दी बना लिया। हम कुछ दिन तक अवध तथा उस क्षेत्र के शासन प्रबन्ध को सुव्यवस्थित करने के लिये उस पडाव पर ठहरे रहे। अवध से ७ ८ कोस दूर सरदा नदी के तट पर एक स्थान था जिसके विषय मे कहा जाता था कि वह बडी अच्छी शिकार-गाह है। मीर मुहम्मद जालावान[8] को इस आशय से भेजा गया कि वह गगर[9] नदी तथा सरदा नदी के घाट का निरीक्षण कर के लौट आये।[10]

(२ अप्रैल)—वृहस्पतिवार १२ रजब को हमने शिकार के उद्देश्य से प्रस्थान किया।

१ सम्भवत काली सरदा चौका, घाघरा की शाखा।
२ ४-६ मील।
३ घाघरा।
४ इसे 'नीदूब' भी लिखा गया है।
५ वीर।
६ सम्भवत किसी तालाब के तट पर ठहरा।
७ ८० मील।
८ नौकाओं का प्रबध करने वाला।
९ घाघरा।
१० खेद है कि किसी भी ज्ञात प्रतिलिपि में शिकार का वर्णन नहीं मिलता।

९३५ हि०

(१५ सितम्बर १५२८—४ सितम्बर १५२९ ई०)

अस्करी का आगमन

(१८ सितम्बर)—शुक्रवार ३ मुहर्रम को अस्करी[1], जिसे हमने चन्देरी के आक्रमण के पूर्व मुल्तान के हित को दृष्टि मे रखते हुये बुलवाया था, खिलवत खाने मे उपस्थित हुआ।

इतिहासकार ख्वन्द मीर का आगमन

(१९ सितम्बर)—दूसरे दिन इतिहासकार ख्वन्द मीर[2], मौलाना शिहाब मुअम्माई, मीर इबराहीम कानूनी[3], यूनुस अली का सम्बन्धी, जो बहुत दिन पूर्व मेरी सेवा मे उपस्थित होने के उद्देश्य से हिरात से रवाना हुये थे, मेरी सेवा मे उपस्थित हुये।

ग्वालियर की ओर प्रस्थान

(२० सितम्बर)—रविवार ५ मुहर्रम को सायकाल की नमाज के पूर्व की अनिवार्य नमाज के समय मैं ग्वालियर की, जिसे पुस्तको मे गालीयूर लिखा जाता है, सैर के लिये यमुना नदी पार कर के आगरा के किले में प्रविष्ट हुआ। वहा फख्र जहा बेगम तथा खदीजा बेगम को, जो कुछ ही दिनो मे काबुल जाने वाली थीं, विदा किया और घोड़े पर सवार हुआ। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा आज्ञा ले कर आगरा मे ही ठहर गया। उस रात्रि मे हमने ३-४ कुरोह[4] यात्रा की और एक बडी झील के निकट ठहर कर वहीं सो गये।

(२१ सितम्बर)—६ मुहर्रम को हमने प्रात काल की नमाज समय के कुछ पूर्व पढ कर प्रस्थान किया और मध्याह्न गम्भीर[5] नदी के तट पर व्यतीत किया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त हम लोग वहा से रवाना हो गये। मार्ग मे हमने भुने हुये अनाज के आटे मे मिली हुई बुकनी खाई।[6] मुल्ला रफी

१ अस्करी की अवस्था इस समय लगभग १२ वर्ष की थी। वह अपने बड़े भाई कामरान के स्थान पर मुल्तान में नियुक्त हुआ था। यह नियुक्ति बाबर ने काबुल पर दृढतापूर्वक अपना अधिकार स्थापित रखने के लिये की होगी। बाबर के इस सकल्प का पता उसके उन पत्रों से भी चलता है जो उसने हुमायूँ, कामरान ख्वाजा कला को लिखे।

२ गयासुद्दीन बिन हुमामुद्दीन मुहम्मद 'ख्वन्द मीर' इतिहास 'हबीबुस्सियर फ़ी अख्बार अफ़रादुल बशर' का लेखक।

३ मीर इबराहीम कानून बजाने वाला, क़ानून सितार के समान तारों का एक बाजा होता है।

४ ६–८ मील।

५ गम्भीर नदी जयपुर से बहती हुई, धौलपुर की उत्तरी सीमा के किनारे किनारे होती हुई, आगरा के नीचे यमुना के दायें तट से मिलती है।

६ सम्भवत सत्तू के साथ मिला कर कोई अन्य पिसी हुई चीज खाई होगी।

ने इसे उत्तेजना उत्पन्न करने के लिये तैयार कराया था। इसका स्वाद बडा खराब निकला। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय हम दोलपुर[1] से एक कुरोह पश्चिम मे, जहा एक उद्यान तथा भवन के निर्माण का आदेश दिया गया था,[2] ठहरे।

धौलपुर में निर्माण-कार्य

दोलपुर एक चोचदार पहाडी के अन्त पर है। इसकी चोच ठोस लाल पत्थर की है जो भवन-निर्माण योग्य है। मैंने आदेश दिया था कि पहाडी की चोच भूमि के बराबर तक काट डाली जाये और यदि उसकी ऊचाई पर्याप्त हो तो उसमे से काट कर एक भवन का निर्माण किया जाये। यदि वह अधिक ऊची न हो तो उसमे छतदार एक अष्टाकार हौज़ का निर्माण किया जाये। क्योकि वह इतनी ऊची न थी कि उस मे भवन खोदा जा सकता अत उस्ताद शाह मुहम्मद सगतराश को आदेश दिया गया कि वह उसे समतल करके उसमे से एक छतदार अष्टाकार हौज़ को खोदे। इस हौज़ के उत्तर मे आम, जामुन तथा अन्य प्रकार के वृक्ष बहुत बडी सख्या मे है। इन वृक्षो के मध्य में मैंने १० × १० के एक कुयें के निर्माण का आदेश दिया था। कुआ लगभग पूरा हो चुका था। इसका जल उस हौज़ मे पहुचता था। इस हौज़ के उत्तर मे एक बाध था जिसे सुल्तान सिकन्दर[3] शाह ने निर्माण कराया था। बाध के ऊपर भवनो का निर्माण कर दिया गया है। बाध से ऊचाई पर वर्षा का जल एकत्र होता है जिससे एक बहुत बडी झील बन जाती है। इस झील के पूर्व मे एक उद्यान है। मैंने आदेश दिया कि इसी दिशा मे ठोस चट्टान मे तराश कर चार स्तम्भो का एक चबूतरा बनाया जाये और इसके पश्चिम में एक मस्जिद का निर्माण कराया जाये।

(२२, २३ सितम्बर . ७, ८ मुहर्रम)—इन कार्यों के लिये हम मगलवार तथा बुधवार को दोलपुर मे ठहरे रहे।

ग्वालियर की ओर प्रस्थान

(२४ सितम्बर)—बृहस्पतिवार को हमने प्रस्थान किया। चम्बल नदी पार करके हमने मध्याह्नोत्तर की नमाज नदी तट पर पढी। मध्याह्नोत्तर एव सायकाल के पूर्व की दिन की नमाज़ के बीच के समय मे हम लोगो ने वहा से प्रस्थान किया और कवारी नदी पार करके सायकाल तथा सोने के समय की नमाज़ के मध्य मे पडाव किया। वर्षा के कारण कवारी मे बडा अधिक जल आ गया था। अत घोडो को तैरवा कर हमने नदी नौका द्वारा पार की।

(२५ सितम्बर)—दूसरे दिन शुक्रवार आशूरे[4] के दिन हम लोग प्रात काल रवाना हुये। मार्ग मे एक ग्राम मे मध्याह्न व्यतीत की। सोने के समय की नमाज़ के वक्त हम लोग ग्वालियर के उत्तर मे एक कोस पर एक चारबाग मे, जिसके निर्माण का हमने पिछले वर्ष आदेश दिया था,[5] उतरे।

(२६ सितम्बर)—दूसरे दिन मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त हमने प्रस्थान किया और

१ धौलपुर।
२ ९३३ हि० में।
३ सुल्तान सिकन्दर लोदी।
४ दसवीं मुहर्रम।
५ ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०) की घटनाओं में इस चार बाग के निर्माण का कोई इतिहास नहीं मिलता। सम्भवतः बाबर ने अफ़गानों से युद्ध के उपरान्त लौट कर इसके निर्माण का आदेश दिया होगा।

ग्वालियर के उत्तर की ओर की नीची पहाडियो एव नमाज़ गाह की सैर की। वहा से लौट कर हम हाती पुल[1] नामक फाटक से किले मे प्रविष्ट हुये। इस द्वार से मिले हुये राजा मान सिह के महल हैं। हम लोगो ने मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय राजा विक्रमाजीत (विक्रमादित्य) के भवनो के समीप, जिनमे रहीम दाद[2] ठहरा हुआ था, पडाव किया।

इस रात मे कान की पीडा के कारण एव चन्द्रमा के प्रकाश से प्रेरित होकर हमने अफीम का सेवन किया।

राजाओ के महलो की सैर

(२७ सितम्बर)—दूसरे दिन अफीम के ख़ुमार के कारण मुझ बडा कष्ट रहा। मैंने अत्यधिक वमन किया। ख़ुमार के बावजूद मैंने मान सिह[3] तथा विक्रमाजीत (विक्रमादित्य)[4] के महलो का भली भाति निरीक्षण किया। ये भवन बडे ही विचित्र है। ये भवन अनुपात से शून्य भारी-भारी तराशे हुये पत्थरो के बने है।

मान सिह के भवन

समस्त राजाओ के भवनो की अपेक्षा मान सिह के भवन बड ही उत्तम एव भव्य हैं। मान सिह के महल की उत्तरी दिशा के भाग मे अन्य दिशाओ के भागो की अपेक्षा बडा अधिक काम बना हुआ है। यह लगभग ४०-५० कारी[5] ऊचा होगा और पूरे का पूरा तराशे हुये पत्थर का बना है। उसके ऊपर सफेद पलस्तर है। कही-कही पर इसमे चार-चार मजिल हैं। नीचे की दो मजिलो मे बडा अधेरा रहता है। हम उनमे मोम बत्तिया की सहायता से प्रविष्ट हुये। इस भवन के प्रत्येक[6] कोण मे ५ गुम्बद हैं। इन गुम्बदा के मध्य मे हिन्दुस्तान की प्रथानुसार चौकोर छोटे छाटे गुम्बद है। बडे गुम्बदो पर मुलम्मा किया हुआ तावा चढा है। दीवार के बाहरी भाग पर रगीन टाइल का काम है। हरी टाइलो से चारो ओर केले के वृक्ष दिखाये गये हैं। पूर्वी कोण के बुर्ज की ओर हाती पुल[7] है। पील को यहा हाथी कहा जाता है और द्वार को पुल। इसके फाटक पर एक हाथी की दो महावतो सहित मूर्ति रक्खी हुई है। हाथी की मूर्ति हाथी के समान ही दृष्टिगत होती है। *इसके कारण इस द्वार को हाती पुल कहा जाता है। इस चौमजिले भवन की सब से नीचे की मजिल मे एक खिडकी है जो इस हाथी की ओर है और वहा से इसका निकटतम दृश्य मिलता है। जिन गुम्बदो का उल्लेख किया जा चुका है वे भवन के उच्चतम भाग मे हैं। बैठने के कमरे दूसरी मजिल में एक प्रकार से धसे हुये हैं। यद्यपि इसमे हिन्दुस्तानी आडम्बर का प्रदर्शन किया गया है किन्तु इस स्थान पर वायु नही पहुचती।

१ हाथी पुल।
२ जलाल हिसारी की 'तारीखे ग्वालियार' के अनुसार ख़्वाजा रहीम दाद, मह्दी ख़्वाजा का भतीजा था। बाबर ने उसका परिचय नही दिया है। उसने ९३५ हि० (१५२९ ई०) में विद्रोह कर दिया था।
३ मान सिह ने १४८६ ई० से १५१६ ई० तक राज्य किया।
४ राजा विक्रमादित्य ने १५१६ ई० से १५२६ ई० तक राज्य किया।
५ गज़।
६ 'हर' के स्थान पर 'चीर' भी पढ़ा जा सकता है जिसका अर्थ होगा एक कोने पर।
७ हाथी पुल।

विक्रमादित्य के भवन

मान सिंह के पुत्र विक्रमाजीत के भवन किले के उत्तर मे केन्द्रीय स्थान पर स्थित है। पुत्र के भवन पिता के भवन का मुकाबला नही कर सकते। उसने एक बहुत बडी हवेली का निर्माण कराया है जो कि बडी अधेरी है किन्तु यदि उसमे कोई थोडी देर तक ठहरे तो इसमे कुछ-कुछ प्रकाश आने लगता है। इसके नीचे एक छोटा भवन है जिसमे किसी भी दिशा से प्रकाश नही आता। जब रहीम दाद विक्रमाजीत के भवनों मे निवास करने लगा तो उसने इस हवेली के ऊपर एक छोटे से हाल का निर्माण कराया। विक्रमाजीत के भवनो से उसके पिता के भवनो तक एक मार्ग का निर्माण किया गया है। बाहर से इस मार्ग का कोई पता नही चलता और न भीतर से ही कही इसके विषय मे कुछ ज्ञात होता है। यह एक प्रकार की सुरग है।

रहीम दाद का मदरसा

इन भवनो की सैर के उपरान्त हम लोग रहीम दाद द्वारा तैयार कराये गये मदरसे में पहुचे। उसे उसने एक बडे हौज़ के किनारे बनवाया था। वही उसने एक बाग भी लगवाया था। हम उस बाग की सैर के उपरान्त चारबाग में जहा शिविर था, अत्यधिक रात्रि व्यतीत हो जाने पर पहुचे।

रहीम दाद का बागीचा

रहीम दाद ने अपने बागीचे मे अत्यधिक सख्या मे फूल लगवाय थे। इनमे से बहुत से बड सुन्दर लाल रग के कनेर के फूल थे। यहा कनेर सत्तालू के फूलों के समान होता है। ग्वालियर के कनेर बडे सुन्दर तथा गहरे लाल रग के होते हैं। मैंने ग्वालियर के कुछ सुन्दर कनेर, ले जा कर आगरा के बागो में लगवाये।

बागीचे के दक्षिण में एक बहुत बडी झील है। इसमे वर्षा का जल एकत्र हो जाता है। इसके पश्चिम मे एक बहुत बडा मन्दिर[1] है। सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश[2] ने इस मन्दिर की बगल मे एक जामा मस्जिद का निर्माण कराया था। यह मन्दिर बडा ही भव्य है और किले में इससे बडा कोई अन्य भवन नही है। दोलपुर[3] की पहाडियों से यह मन्दिर तथा किला दिखाई पडते हैं।[4] लोगो का कथन है कि इस मन्दिर के लिये उस बडी झील मे से जिसका उल्लेख हो चुका है पत्थर काट कर निकाले गये थे।

रहीम दाद ने इस बागीचे में एक लकडी का तालार[5] बनवाया था। इसके द्वारों के सामने उसने हिन्दुस्तानी नमूने के कुछ नीचे एव भद्दे एवान (दालान) बनवाये थे।

उरवा घाटी

(२८ सितम्बर)—दूसरे दिन (१३ मुहर्रम को) हम लोग मध्याह्न की नमाज़ के समय

१ तेली मंदिर' अथवा 'तिलगाना मदिर'।
२ सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ने १२१० ई० से १२३६ ई० तक राज्य किया।
३ धौलपुर।
४ लगभग ३० मील दूर से।
५ भवन अथवा कमरा।

ग्वालियर के उन स्थानों के निरीक्षण हेतु रवाना हुये जिनकी सैर हमने अभी तक न की थी। हमने बादल गढ़[1] नामक भवनों का निरीक्षण किया। ये भवन मान सिंह के किले का एक भाग हैं। वहां से हम हाती पुल नामक द्वार से किले को पार करके उरवा नामक स्थान पर पहुचे। यह किले की पश्चिमी दिशा मे घाटी की तलहटी है। यद्यपि उरवा, किले की दीवार के, जो पहाडी की चोटी के साथ-साथ बनी है, बाहर है किन्तु इसके दहाने पर दो खडो[2] की ऊची-ऊची दीवारे है। इनमे से सब से ऊची दीवार ३०-३० कारी[3] ऊची होगी। यह सब से अधिक लम्बी है। इसके प्रत्येक सिरे किले की दीवार से मिलते है। दूसरी दीवार कुछ घूम कर पहली के मध्य भाग से मिल जाती है। यह दोनों की अपेक्षा नीची तथा छोटी है। दीवार का मोड आब दुज्द[4] के लिये बनवाया गया होगा। इसमें एक वाईं है जिसमे जल तक पहुचने के लिये १० अथवा १५ जीने बने हैं। उस फाटक पर जहा से होकर घाटी से वाईं मे प्रविष्ट होते है, सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का नाम तथा ६३० हि० (१२३३ ई०) तारीख खुदी है।

इस बाहरी दीवार के नीचे तथा किले के बाहर एक बहुत बडी झील है। यह (कभी-कभी) इतनी सूख जाती है कि झील नही रह पाती। इसमे से आब दुज्द मे जल जाता है। उरवा के भीतर दो अन्य झीलें हैं। किले के निवासी इनके जल को सब से अधिक उत्तम समझते है।

उरवा के तीन ओर ठोस चट्टानें हैं। इनका रग ब्याना की चट्टानो के समान लाल नही है अपितु फीका फीका है। इन दिशाओं मे लोगों ने पत्थर की मूर्तिया कटवा रक्खी हैं। वे छोटी बडी सभी प्रकार की है। एक बहुत बडी मूर्ति, जोकि दक्षिण की ओर है, सम्भवत २० कारी[5] ऊची होगी। यह मूर्तिया पूर्णत नग्न है और गुप्त अग भी ढके हुये नही है। उरवा की इन दोनों बडी झीलो के चारो ओर २०-३० कुए खुदे है। इनके जल से काम की तरकारिया, फूल तथा वृक्ष लगाये जाते हैं।

उरवा बुरा स्थान नही है। यह बन्द स्थान है। मूर्तिया ही इस स्थान का सब से बडा दोष है। मैंने उनके नष्ट करने का आदेश दे दिया।[6]

उरवा से निकल कर हम पुन किले मे प्रविष्ट हुये। हमने सुल्तानी पुल की खिडकी से सैर की। यह काफिरो के समय से अब तक बन्द रही होगी। हम लोग सायकाल की नमाज के समय रहीम दाद के बागीचे मे पहुचे। वही ठहर कर हम सो गये।

राणा सांगा के एक पुत्र की बाबर से सन्धि की वार्ता

(२९ सितम्बर)—मगलवार १४ मुहर्रम को राणा सांगा के दूसरे पुत्र बिक्रमाजीत के पास से, जो अपनी माता पद्मावती के साथ रणथम्बोर के किले मे था, कुछ लोग आये।[7] हमारे ग्वालियर की ओर

१ 'बादल गढ' अथवा 'बादल घर' जहा बादल द्वार से होकर प्रवेश किया जाता है। यहा का गूजरी मंदिर बड़ा प्रसिद्ध है जिसके विषय में कहा जाता है कि इसे मान सिंह की गूजर पत्नी मृग-नयनी ने बनवाया था।

२ सुत्तवा।

३ गज।

४ सम्भवत: वह स्थान जहा जल एकत्र किया जा सके और चुप चाप प्राप्त किया जा सके।

५ गज।

६ मूर्तियां नष्ट नहीं की जा सकीं अपितु उनके अंग भंग कर दिये गये।

७ यह घटना ६३४ हि० के अन्तिम महीनों में घटी होगी।

प्रस्थान करने के पूर्व बिक्रमाजीत के एक विश्वासपात्र अशोक[1] नामक एक हिन्दू ने कुछ लोगो को हमारी सेवा मे भेजा था, जिन्होंने बिक्रमाजीत की अधीनता एव दासता स्वीकार करने से सम्बन्धित सदेश प्रस्तुत करके उसकी ओर से ७० लाख की जीविकावृत्ति की प्रार्थना की। उनसे यह निश्चय हुआ था कि यदि बिक्रमाजीत रणथम्बोर के किले को समर्पित कर देगा तो उसकी इच्छानुसार परगने प्रदान कर दिये जायेंगे। यह निश्चय करके उसके आदमियो को बिदा कर दिया गया था। क्योंकि हम लोग ग्वालियर की सैर के लिये जाने वाले थे अत उनसे ग्वालियर मे मिलने के लिय दिन निश्चित कर दिया गया था। वे लोग निश्चित दिन के कुछ बाद पहुचे। अशोक नामक हिन्दू को विक्रमाजीत की माता पद्मावती का कोई निकटतम सम्बन्धी बताया जाता है। उसने इस विषय मे माता एव पुत्र से, पुत्र एव पिता[2] के समान व्यवहार किया। उन लोगो[3] ने भी अशोक से सहमत होकर अधीनता एव निष्ठा प्रदर्शित करना स्वीकार कर लिया।

जिस समय राणा सागा ने सुल्तान महमूद[4] को पराजित कर दिया और सुल्तान काफिर द्वारा बन्दी बना लिया गया[5] तो उसके पास एक प्रसिद्ध मुकुट एव सोने की पेटी थी। राणा सागा ने उन दोनों वस्तुओं को लेकर उसे मुक्त कर दिया। वह मुकुट तथा सोने की पेटी विक्रमाजीत के अधिकार मे आ गई होगी।[6] उसके बड भाई रतन-सी ने जो इस समय अपने पिता के स्थान पर चित्तौड का राणा हो गया था इन वस्तुओ को बिक्रमाजीत से मागा किन्तु उसने उन्ह न दिया। उसने इन वस्तुओं को मेरे पास प्रपित कर देने का सदेश भेज कर रणथम्बोर के स्थान पर ब्याना प्रदान किये जाने की प्रार्थना की। हमने उन्हे ब्याना के प्रश्न से हटा कर रणथम्बोर के स्थान पर शम्साबाद प्रदान करने का आश्वासन दिलाया। उन्हे आज (१४ मुहर्रम) को ९ दिन उपरान्त ब्याना म आकर भेंट करने का आदेश देकर बिदा कर दिया गया। बिदा करते समय खिलअत भी प्रदान की गई।

हिन्दुओं के मन्दिरो की सैर

हम लोगो ने इस बागीचे से प्रस्थान करके ग्वालियर के मन्दिरा की सैर की। कुछ मन्दिरा म दो-दो और कुछ मे तीन-तीन मजिलें थी। प्रत्येक मज़िल प्राचीन प्रथानुसार नीची-नीची थी। उनके पत्थर के स्तम्भ के नीचे की चौकी पर पत्थर की मूर्तिया रक्खी थी। कुछ मन्दिर मदरसो के समान थे। उनमे दालान तथा ऊचे गुम्बद एव मदरसा के कमरो के समान कमरे थे। प्रत्येक कमरे के ऊपर पत्थर के तराशे हुय सकरे गुम्बद थे। नीचे की कोठरियो मे चट्टान मे तराशी हुई मूर्तिया थी।

१ 'मिरआते सिकन्दरी' के अनुसार अशोक मल राजपूत, राणा सागा का सेवक। ('मिरआते सिकन्दरी' बम्बई १३०८ हि०। १८९० ९१ ई०, पृ० २६०, रिजवी 'उत्तर तैमूर कालीन भारत, भाग २', अलीगढ १९५९ ई०) पृ० ३६३)।

२ पद्मावती से पुत्र के समान एव विक्रमादित्य से पिता के समान व्यवहार किया।

३ पद्मावती एवं विक्रमादित्य।

४ सुल्तान महमूद खलजी।

५ यह घटना ९२५ हि० (१५१९ ई०) में घटी।

६ मिरआते सिकन्दरी के लेखक ने भी बाबर के कथन का समर्थन किया है। ('मिरआते सिकन्दरी पृ० २३४)। सम्भवत ये वस्तुयें पद्मावती के पास उसके पति के जीवन काल म रही होंगी।

रहीम दाद के चारबाग मे दावत

इन भवनो की सैर के उपरान्त हम लोग दक्षिणी द्वार से किले के बाहर निकले और दक्षिण की ओर के स्थानो की सैर करके उस चारबाग मे पहुचे जिसका निर्माण रहीम दाद ने हाती पुल के सामने कराया था। उसने वहा हमारी दावत का प्रबन्ध किया था और बडा ही उत्तम भोजन कराने के उपरान्त उसने ४ लाख के मूल्य के अत्यधिक सामान तथा नक्द धन भेट किये। इस चारबाग से प्रस्थान करके मैं अपने चारबाग मे चला गया।

एक झरने की सैर

(३० सितम्बर)—बुधवार १५ मुहर्रम को मै ग्वालियर से दक्षिण-पूर्व की ओर ६ कुरोह[1] पर स्थित एक झरने का निरीक्षण करने गया। ६ कुरोह से कम की यात्रा पर[2] मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय हम एक झरने पर पहुचे जहा एक पनचक्की के योग्य जल एक ढाल से, एक अरगमची[3] की ऊचाई मे आ रहा था। झरने के नीचे एक बहुत बडी झील थी। इसके ऊपर से जल ठोस चट्टान की ओर से बहता हुआ आता है। झरने के नीचे भी एक ठोस चट्टान है। जहा कही जल गिरता है वहा एक झील बन जाती है। जल के तट पर चट्टानो के बहुत बडे बडे टुकडे है, मानो वे बैठने के लिये बने हो किन्तु कहा जाता है कि जल सर्वदा वहा तक नही रहता।

हम झरने के ऊपर बैठ गये और माजून का सेवन किया। हम जलधारा के ऊपर उसके उद्गम स्थान का निरीक्षण करने गये। वहा से लौटकर हम एक ऊचे स्थान पर पहुचे और वहा कुछ समय तक बैठे रहे। वादको ने बाजे बजाये और गायको ने कुछ गाया। आबनूस का वृक्ष, जिसे हिन्दुस्तान वाले तेंदू कहते है, उन लोगो को, जिन्होने इससे पूर्व इसे न देखा था, दिखाया गया। वहा से हम पहाडी के नीचे उतर आये। सायकाल तथा सोने के समय की नमाज के मध्य मे हमने प्रस्थान किया। आधी रात के समय एक स्थान पर पहुच कर हम लोग सो गये। एक पहर, दिन चढ जाने के उपरान्त हम चारबाग पहुच कर वहा ठहर गये।

सलाहुद्दीन का जन्म स्थान

(२ अक्तूबर)—शुक्रवार १७ मुहर्रम को मैंने नीबू तथा सदाफल के बागो की सैर की। ये बाग एक घाटी की तलहटी मे पहाडियो के मध्य मे सूखजाना[4] नामक ग्राम के ऊपर स्थित है। यह स्थान सलाहुद्दीन[5] का जन्म-स्थान है। एक पहर दिन उपरान्त चारबाग पहुच कर हम वहा ठहर गये।[6]

ग्वालियर से प्रस्थान

(४ अक्तूबर)—रविवार १९ मुहर्रम को सूर्योदय के पूर्व हमने चारबाग से प्रस्थान किया और

१ १२ मील।
२ अर्थात् दूरी जैसा कि बाबर ने अनुमान किया था, उससे कम निकली।
३ लगभग २० हाथ।
४ सम्भवत ग्वालियर के समीप का 'सलवई' अथवा 'सुखलहारी' नामक ग्राम।
५ सिलाहदी, सिलहदी अथवा सलहदी, राय सेन का राजा, राणा सागा का जामाता।
६ सम्भवत रात के एक पहर, ६ बजे के लगभग।

क्वारी[1] नदी पार करके एक स्थान पर मध्याह्न व्यतीत की। मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त हम लोग वहा से रवाना हुये और सूर्यास्त के समीप हम लोगो ने चम्बल नदी पार की और सायकाल एव सोने के समय की नमाज के बीच मे हम दोलपुर[2] के किले मे प्रविष्ट हुये। दीपक के प्रकाश की सहायता से हमने एक हम्माम[3] का, जिसका निर्माण अबुल फतह ने कराया था, निरीक्षण किया। वहा से प्रस्थान करके हम बाध के ऊपर, जहा नये चारबाग का निर्माण हो रहा था, पहुचे।

छतदार हौज को ठीक कराना

(५ अक्तूबर)—वहा रात्रि मे ठहर कर, प्रात काल (सोमवार, २० मुहर्रम) को हमने उन स्थानो का, जिनके निर्माण का आदेश दिया जा चुका था, निरीक्षण किया। जिस छत दार हौज को हमने ठोस चट्टान से काटने का आदेश दिया था उसका मुख[4] भली भाति सीधा नही हो रहा था। मैंने कुछ अन्य पत्थर काटने वालो को बुला कर आदेश दिया कि वे हौज की नीचे की सतह चिकनी करके उसमे जल भर दे और जल की सहायता से दीवारो को एकसाँ कर दे। सायकाल की नमाज के पूर्व उन्होंने मुख को सीधा कर दिया। तदुपरान्त उन्हे आदेश दिया गया कि वे हौज मे जल भर दे। जल की सहायता से दीवारें एकसाँ कर दी गई। तत्पश्चात् उन्होने दीवारो को चिकना करना प्रारम्भ किया।

आव खाने का निर्माण

मैंने आदेश दिया कि एक आव खाना[5] एक स्थान पर ठोस चट्टान को काट कर बनवाया जाये। उसके भीतर भी एक छोटा सा हौज तैयार किया जाये और उसे भी ठोस चट्टान मे से काटा जाये।

× × × × × ×[6]

(१२ अक्तूबर)—सोमवार २७ मुहर्रम को कुछ लोगो के साथ माजून का सेवन किया गया।

(१३ अक्तूबर)—मगलवार को भी मैं उसी स्थान पर रहा।

१ कुहारी नदी, चम्बल नदी की एक शाखा है।

२ धौलपुर।

३ वह स्थान जहा स्नान का, विशेष रूप से गरम जल से स्नान का प्रबंध हो।

४ प्रवेश द्वार।

५ वह स्थान जहा जल एकत्र किया जाता है।

६ इस स्थान पर छः दिन का कोई वर्णन नहीं। धौलपुर के निर्माण कार्य एव सोमवार की माजून की दावत के बीच की घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। बाबर ने विक्रमादित्य के दूतों से ग्वालियर में यह निश्चय किया था कि वे १४ मुहर्रम के ६ दिन उपरान्त अथवा २३ मुहर्रम (८ अक्तूबर) को ब्याना मे उपस्थित हों। बाबर सम्भवतः अपने निश्चित कार्य क्रमानुसार ब्याना पहुंचा होगा और वहीं विक्रमादित्य के राजदूतों से भेंट की होगी कारण कि जब बाबर के आगरा पहुँच जाने के उपरान्त विक्रमादित्य से सधि की वार्ता प्रारम्भ हुई तो वहाँ पहले एव बाद के दो प्रकार के राजदूत उपस्थित थे। पहले के राजदूत वे रहे होंगे जो ग्वालियर एवं ब्याना में आये होंगे और दूसरे नये राजदूत रहे होंगे। इस प्रकार धौलपुर की पूरी सैर, ब्याना के किले के निरीक्षण तथा सीकरी पहुचने तक का वर्णन नहीं मिलता।

सीकरी की ओर प्रस्थान

(१४ अक्तूबर)—बुधवार की रात्रि मे रोज़ा खोल कर मैंने कुछ खाया और सीकरी के लिये प्रस्थान कर दिया। आधी रात के समीप हम लोग किसी स्थान पर पहुच कर ठहर कर सो गये। मैं कान की पीडा के कारण न सो सका। यह पीडा सम्भवत ठड के कारण हुई होगी किन्तु मुझे इसका कारण ज्ञात नही।

सीकरी पहुंचना

प्रात काल हम लोग उस स्थान से रवाना हो गये और पहले पहर हम उस बाग मे, जिसका सीकरी मे निर्माण हो रहा है, पहुचे। बाग की दीवारो तथा कुयें क निर्माण-कार्य से मैं सतुष्ट न हुआ। जिन लोगो के सिपुर्द यह कार्य किया गया था उन्हे मैंने धमकी एव ताडना दी।

मध्याह्नोत्तर की दूसरी एव सायकाल की नमाज़ के मध्य में हमने वहा से प्रस्थान किया और मरहाकूर से निकल कर किसी स्थान पर ठहरे और वही सो गये।

आगरा पहुचना

(१५ अक्तूबर)—वहा से प्रस्थान करके हम (बृहस्पतिवार ३० मुहर्रम) को एक पहर दिन[1] के समय आगरा पहुच गये। किले मे मैंने खदीजा सुल्तान बेगम से भेंट की। फख्रे जहा बेगम के काबुल प्रस्थान करने के समय वे किन्ही कारणो से रुक गई थी। यमुना नदी पार करके मैं हश्त बहिश्त नामक बाग मे ठहरा।[2]

बेगमो से भेंट

(१७ अक्तूबर)—शनिवार ३ सफर को मध्याह्नोत्तर की दूसरी तथा सायकाल की नमाज़ के मध्य मे मैं अपनी तीन दादी बेगमो[3]—गौहर शाद बेगम, बदी-उल-जमाल बेगम तथा आक बेगम, एव अन्य छोटी बेगमो[4]—सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा की पुत्री खानज़ादा बेगम, सुल्तान बख्त बेगम की पुत्री और मेरी यीनका[5] की पुत्री, ज़ैनब सुल्तान बेगम से भेंट करने गया। वे तूला से होकर एक छोटे से जलाशय के निकट ठहरी हुई थी। मैं नौका द्वारा वापस आ गया।

विक्रमादित्य के पास दूत

(१९ अक्तूबर)—सोमवार ५ सफर को (विक्रमाजीत) के पहले एव बाद के दूतो के साथ, देवा के पुत्र हमूसी को, जो भीरा का एक प्राचीन हिन्दू सेवक था, इस आशय से भेजा गया कि वे रणथम्बोर के

१ ६ तथा ६ बजे के बीच में।
२ बाबर आगरा १ सफ़र को पहुंचा और दूसरी सफ़र को विश्राम किया होगा।
३ वे सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्रियां थीं।
४ जो बाबर से अवस्था में छोटी अथवा उतनी बड़ी श्रेणी की न थीं।
५ चाचा अथवा बड़े भाई की पत्नी। गुलबदन बेगम ने भी इस नाम की एक बेगम के हिन्दुस्तान में आगमन का उल्लेख किया है।

समर्पण एव विक्रमाजीत की अधीनता स्वीकार करने की शर्तों का अपनी[1] प्रथानुसार निर्णय करें। हमने जिस आदमी को भेजा उसे आदेश दे दिया कि वह सभी बातो को देख भाल कर तथा सोच समझ कर वापस आये। यदि विक्रमादित्य अपने वचन पर दृढ रहे तो मेरी ओर से उसे आश्वासन दिया दिया जाये कि मैं उसे उसके पिता चित्तौड के राणा के स्थान पर आरूढ कर दूगा।

× × × × × ×[2]

वजहदारो से धन की माग

(२२ अक्तूबर)—इस बीच मे सिकन्दर[3] तथा इब्राहीम[4] के देहली एव आगरा के खज़ाना का अन्त हो गया। अत बृहस्पतिवार ८ सफर को यह शाही आदेश हुआ कि प्रत्येक वजहदार[5] युद्ध की सामग्री अस्त्र शस्त्र एव बन्दूक तथा तोप चलाने वालो के वेतन हेतु अपनी वजह मे से १०० में से ३० दीवान मे दाखिल कर दे।[6]

खुरासान को पत्र

(२४ अक्तूबर)—शनिवार १० सफर को सुल्तान मुहम्मद बख़्शी का एक पदाती शाह कासिम,[7] जिसे मैंने इससे पूर्व एक बार अपने खुरासान के सम्बन्धियों के पास प्रोत्साहन-युक्त फरमान देकर भेजा था, इस बार हेरी इस आशय के पत्रो के साथ भेजा गया कि ईश्वर की कृपा से हमारा हृदय हिन्दुस्तान के पूर्व एव पश्चिम के विद्रोहियो एव काफिरो की ओर से सतुष्ट हो गया है। यदि ईश्वर की कृपा से सब ठीक रहा तो हम पूर्ण रूप से प्रयत्न करेंगे और नि सन्देह आगामी बहार म अपने लक्ष्य को पा लेंगे।[8] अहमद अफशार को भी फरमान भेजा गया। इस फरमान के हाशिये पर मैंने अपने हाथ से लिख कर फरीदू काबूज़ी[9] को बुलवाया।

× × × × × [10]

आज मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के पूर्व से मैंने पारा खाना प्रारम्भ किया।[11]

१ हिन्दुओं की।
२ यहा भी तीन दिन की घटनाओं का उल्लेख नहीं।
३ सिकन्दर लोदी।
४ इब्राहीम लोदी।
५ वे अमीर जिन्हे विभिन्न स्थान सेना रखने एव अन्य प्रबध तथा उनके व्यय हेतु प्राप्त थे।
६ इसे इस प्रकार समझना चाहिये कि प्राचीन करों म ३० प्रतिशत वृद्धि कर दी गई।
७ शाह कासिम के इससे पूर्व दूत बना कर भेजे जाने का कोइ उल्लेख नहीं हुआ है। सम्भवत उसे ९३४ हि० में भेजा गया होगा। इस वर्ष का हाल अब कहीं प्राप्त नहीं। सम्भवत बाबर को ख्वन्द मीर द्वारा उस अशाति का पता चला होगा जो कि उबैदुल्लाह ऊजबेग के सहायकों के कारण हेरी (हिरात) में फैली थी।
८ सम्भवत काबुल पहुँचने एव ऊजबेगों से युद्ध की महत्वाकांक्षा पूरी होने की ओर सकेत है।
९ काबूज़ बनाने वाले, काबूज़ गिटार के समान एक प्रकार का बाजा होता है।
१० इसके बाद ११ दिन का कोई हाल नहीं लिखा है।
११ सम्भवत किसी रोग के कारण, जिसका उल्लेख नहीं, पारे का सेवन प्रारम्भ किया गया होगा।

काबुल तथा खुरासान के समाचार[1]

(४ नवम्बर)—बुधवार २१ सफ़र को एक हिन्दुस्तानी प्यादा, कामरान तथा ख़्वाजा दोस्त ख़ावन्द के पास से प्रार्थना-पत्र लाया। ख़्वाजा १० ज़िलहिज्जा[2] को काबुल पहुच गया था। वह हुमायूँ की सेवा मे पहुँचने के लिये उत्सुक था किन्तु इसी बीच मे कामरान के आदमी ख़्वाजा के पास पहुचे और उससे कहा कि "कामरान ने कहलाया है कि ख़्वाजा मेरे पास आकर जो कोई फ़रमान लाया है उसे पहुचाये। मुझसे बात कर लेने के उपरान्त वह हुमायू के पास जाये।" कामरान १७ ज़िलहिज्जा (२ सितम्बर) को काबुल पहुच गया होगा और ख़्वाजा से वार्त्ता करके उसे २८ ज़िलहिज्जा (१३ सितम्बर) को क़िलये ज़फ़र को जाने की अनुमति दी होगी।

जो प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये उनमे यह सुखद समाचार थे—

शाहज़ादा तहमास्प ने ऊज़बेग[3] के विनाश का सकल्प करके दामग़ान मे रीनीश ऊज़बेग को पराजित कर दिया और उसकी हत्या करके उसके आदमियो का कत्ले आम करा दिया। उबैद ख़ा क़िज़ीलबाशो[4] के विषय मे समाचार पाकर हेरी छोड कर मर्व पहुच गया। उसने वहा समरकन्द तथा उस क्षेत्र के समस्त सुल्तानो को बुलवाया और मावराउन् नहर के समस्त सुल्तान उसकी सहायतार्थ पहुच गये।

वही पदाती यह भी समाचार लाया कि हुमायू के यादगार तग़ाई की पुत्री से एक पुत्र का जन्म हुआ है और कामरान के विषय मे कहा जाता है कि उसने काबुल मे अपनी माता के भाई सुल्तान अली मीर्ज़ा की पुत्री से विवाह कर लिया है।[5]

सैयिद रुकनी को इनाम

उसी दिन सैयिद रुकनी[6] शीराज़ी जियागर[7] को एक ख़िलअत पहनाई गई। उसे इनाम देकर आदेश दिया गया कि वह मेहराबदार कुयें[8] को, जिसके निर्माण के विषय मे वह जितना जानता हो उसके अनुसार, पूरा करे।

१ सम्भवत ९३४ हि० की घटनाओं के अन्य वर्णन के प्रसग में काबुल एवं ख़ुरासान की चर्चा की गई होगी। इसमें सम्भवत बाबर के ख़्वाजा दोस्त ख़ावन्द के नाम आदेश एव काबुल की अशान्ति का उल्लेख होगा।

२ १० ज़िलहिज्जा ९३४ हि० (२६ अगस्त १५२८ ई०)।

३ उबैदुल्लाह ख़ां।

४ लाल सिर अथवा मुकुट वाले, ईरानी शीआ।

५ हुमायूँ की पत्नी का नाम बेगा बेगम था जिसकी उपाधि बाद में हाजी बेगम रख दी गई। कामरान की पत्नी सम्भवत: उसके चाचा की पुत्री माह अफ़रोज़ थी। क्योंकि पदाती राजदूत न था अत: उसने जो समाचार प्रस्तुत किये वे जनश्रुति के रूप में थे।

६ इसके नाम के विषय में विभिन्न पांडुलिपियों में विभिन्न रूप से लिखा है 'रुक्नी', 'दकनी' तथा 'अकनी'।

७ यह शब्द भी स्पष्ट नहीं। इसे विभिन्न पांडुलिपियों में तथा विभिन्न अनुवादकों द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार से पढ़ा गया है : 'ग़ैबागर' अर्थात् भविष्यवाणी करने वाला, 'जीबागर' अर्थात् ज़िरह बख़्तर बनाने वाला अथवा 'नियागर' अर्थात् हौज़ बनाने वाला। 'नियागर' ही अधिक उचित ज्ञात होता है।

८ 'ख़्वारलीक़ चाह'। यह शब्द भी स्पष्ट नहीं।

वालिदिया रिसाला

(६ नवम्बर)—इस मास की २३ तारीख को शुक्रवार को मुझे इतना अधिक ज्वर हो गया कि मै शुक्रवार की सामूहिक नमाज बडी कठिनाई से मस्जिद मे पढ सका। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय मैं पुस्तकालय मे पहुच गया और कुछ समय तक बडे कष्ट मे रहा। इसके उपरान्त रविवार (२५ सफ़र) (८ नवम्बर) को ज्वर के कारण मुझे कम कपकपी रही।

मगलवार २७ सफ़र (१० नवम्बर) की रात्रि मे मैंने सोचा कि मैं ख्वाजा उबैदुल्लाह[1] की वालिदिया[2] नामक पुस्तक को कविता के रूप मे लिख डालू। मैंने हज़रत ख्वाजा की आत्मा से प्रार्थना कर के हृदय से कामना की कि यदि यह कविता हजरत ख्वाजा द्वारा स्वीकार हो जायेगी तो मैं भी इस रोग से उसी प्रकार मुक्त हो जाऊगा जिस प्रकार कसीदये बुरदा[3] का रचयिता उस कसीदे की रचना के उपरान्त फालिज के रोग से मुक्त हो गया था। यह निश्चय करके मैंने इस कविता की रचना उसी वज़न[4] मे प्रारम्भ की जिसमे मौलाना अब्दुर्रहमान[5] जामी की सुबहतुल अबरार[6] है। मैंने उसी रात्रि मे १३ अशआर की रचना कर डाली। मैंने यह निश्चय किया कि प्रति दिन दस शेर से कम की रचना न हो। *सम्भवत एक दिन कुछ न लिखा जा सका। पिछले वर्ष जब कभी मुझे यह रोग होता तो वह* एक मास अथवा ४० दिन तक चलता रहता था। इस वर्ष ईश्वर की कृपा एव हज़रत ख्वाजा की आत्मा के आशीर्वाद से इस मास की बृहस्पतिवार २० (१२ नवम्बर १५२८ ई०) को ही मैं इस रोग से मुक्त हो गया। केवल थोडा सा अवसाद रह गया। शनिवार ८ रबी उल अव्वल (२९ नवम्बर १५२८ ई०) को मैंने इस कविता की रचना समाप्त की। एक दिन मैंने ५९ अशआर की रचना की।

सैनिको को तैयार रहने का आदेश

(११ नवम्बर)—बुधवार २८ सफ़र को चारो ओर की सेनाओ को शाही आदेश भेजा गया कि

१ ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार नक्शबन्दी खुरासान के बडे ही विद्वान् सूफ़ी हुये हैं। उनके चेलों में प्रसिद्ध कवि एव सूफ़ी मौलाना *अब्दुर्रहमान जामी भी थे। निधन फ़रवरी १४८९ ई० में हुआ।*

२ 'रशहात ऐनुल हयात' में ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार एव उनके वालिदिया रिसाले का बड़ा ही रोचक समकालीन वर्णन है। देखिये 'जर्नल रायल एशियाटिक सुसाइटी' जनवरी १९१६, हेनरी बीवरेज का इस विषय से सम्बन्धित लेख।

३ बुसीरी का प्रसिद्ध अरबी क़सीदा जो मुहम्मद साहब की प्रशंसा में है।

४ छन्द, लय।

५ मौलाना नूरुद्दीन अब्दुरहमान जामी फ़ारसी के बडे प्रसिद्ध कवि हुये हैं। उनके पिता का नाम मौलाना मुहम्मद अथवा अहमद इस्फ़हानी था। जामी का जन्म ७ नवम्बर १४१४ ई० में हिरात के जाम नामक ग्राम में हुआ। वह हिरात के सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के बहुत बड़े विश्वासपात्र थे। उन्होंने अनेक मसनवियों की रचना की। उन्होंने 'नफ़हातुल उंस' नामक सूफ़ियोंकी जीवनी का भी सकलन किया। उनकी मृत्यु ६ नवम्बर १४९२ ई० को हुई।

६ जामी की सात प्रसिद्ध मसनवियों हफ़्त औरंग' की एक मसनवी।

यदि ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही हमारी सेना सवार हो जायेगी अत सब लोग सेवा हेतु तैयार होकर आ जायें।

× × × × × ×[1]

हुमायूं के पास से दूत

(२१ नवम्बर)—रविवार ९ रबी-उल-अव्वल को बेग मुहम्मद तअल्लुकची लौट आया। वह पिछले वर्ष[2] मुहर्रम के अन्त मे हुमायू के पास एक खिलअत एव एक घोडा पहुचाने के लिये भेजा गया था।[3]

(२२ नवम्बर)—सोमवार १० रबी-उल-अव्वल को हुमायू के पास से वैस लागरी का (पुत्र) बेग गीना तथा बीआन शेख नामक हुमायू का एक सेवक आये। बीआन शेख हुमायू के पुत्र के जन्म का सुखद सदेश लाया था। उस पुत्र का नाम हुमायू ने अल-अमान रक्खा था। शेख अबुल वज्द ने "शाहे सआदतमन्द" के अक्षरो से उसके जन्म की तिथि निकाली।

द्रुतगामी दूत

बीआन शेख, बेग गीना के बहुत बाद रवाना हुआ था। वह हुमायू से शुक्रवार ९ सफर (२३ अक्तूबर) को किश्म के नीचे दोशम्बा नामक स्थान से विदा हुआ था और सोमवार १० रबी-उल-अव्वल (२३ नवम्बर) को आगरा पहुच गया। उसने अत्यन्त शीघ्र यात्रा की।[4] एक बार वह किलये जफर से कन्धार १० दिन मे पहुच गया था।[5]

१ यहाँ ६ दिन का हाल नहीं लिखा गया। सम्भवत इसका कारण यह होगा कि बीच के पृष्ठ नष्ट हो गये। इस बीच की घटनाओं का बाद में संकेत मिलता है जिससे पता चलता है कि इनका हाल अवश्य लिखा गया होगा उदाहरणार्थ
(अ) तीन वस्तुओं का नुसरत शाह के पास भेजा जाना
(ब) दावत का उद्देश्य
(स) राजदूतों का अचानक आगमन।

२ ९३४ हि०।

३ बाबर ने इस दूत के अधिक समय तक रोक लिये जाने के विषय में हुमायूं के नाम जो पत्र लिखा था, उसमें लिखा है।

४ ए० ई० हिक्स, सैक्रेट्री रायल जाग्रफीकल सुसाइटी, के अनुसार इस यात्रा का अनुमान इस प्रकार लगाया जा सकता है :—
किश्म से काबुल · २४० मील
काबुल से पेशावर : १७५ मील
पेशावर से आगरा · ७५९ मील।
कुल : ११७४ मील, ३८ मील प्रति दिन के हिसाब से।

५ किलये ज़फ़र से काबुल : २६४ मील
काबुल से कधार : ३१६ मील
कुल : ५८० मील ५३ मील प्रति दिन के हिसाब से। यह दूसरी यात्रा सम्भवत ९१३ हि० में की गई होगी।

तू कहता है कि तूने उसका नाम अल अमान रक्खा है। ईश्वर उसे सौभाग्यशाली बनाये। तू इसे स्वय लिखता है (अल-अमान) किन्तु तूने इस बात पर ध्यान नही दिया कि साधारण लोग अधिकाश अल आमा अथवा अल-आमान बोलते हैं।[1] इसके अतिरिक्त नामो मे अल का विरले ही प्रयोग होता है।[2] ईश्वर उसके नाम एव व्यक्तित्व को सौभाग्यशाली बनाये। हे ईश्वर! तू हमे वर्षों एव करनों[3] तक शान्ति[4] प्रदान कर। हे ईश्वर! तू हमारे कार्यों को अपनी अनुकम्पा से सुव्यवस्थित कर। इस प्रकार का सौभाग्य करनो मे नही प्राप्त होता।[5]

मगलवार ११ (२३ नवम्बर) को यह झूठी अफवाह सुनी गई कि बल्ख वाले आमन्त्रित हुये थे और कुरबान[6] को बल्ख ले जा रहे थे।

कामरान तथा काबुल के बेगों[7] को आदेश दे दिया गया है कि वे तुझसे मिलें। उनके पहुच जाने के उपरान्त हिसार, समरकन्द, हेरी अथवा जिस दिशा मे भाग्य तेरा साथ दे तू आक्रमण कर। सम्भव है कि ईश्वर की अनुकम्पा द्वारा तू शत्रुओ को पराजित कर सके और विभिन स्थानो पर अधिकार प्राप्त कर ले जिसके फलस्वरूप मित्रो को प्रसनता एव शत्रुओ को दुख का अवसर प्राप्त हो। ईश्वर को धन्य है कि अब तुम लोगों[8] के लिये प्राण को खतरे मे डालने तथा तलवार चलाने का अवसर आ गया है।[9] जिस कार्य का अवसर मिल जाये उसकी उपेक्षा मत कर। बादशाह के लिये एकान्तवास का आलसी जीवन उचित नही।

पद्य

वह ससार को विजय करता है जो शीघ्र बढता है
राज्य देर करने से साथ नही देता।
विवाह के लिये समस्त कार्य रुक जाते है
केवल बादशाही के कार्य नही।[10]

यदि ईश्वर की कृपा से बल्ख तथा हिसार के राज्य विजय हो जायें तो तू अपने आदमियो को

१ बाबर के इस वाक्य का निश्चित रूप से अनुवाद कठिन है। फ़ारसी अनुवाद भी इस विषय में स्पष्ट नहीं। ये सभी शब्द परानयोपरान्त क्षमा याचना के द्योतक अत अशुभ हैं।
२ तीमूरी वश के नामों में 'अल' शब्द का प्रयोग नहीं होता।
३ १०-२० अथवा ३० और कुछ लोगों के अनुसार १२० वर्ष तक की अवधि। तुर्क ३१ वर्ष की अवधि को करन मानते हैं।
४ अल-अमान।
५ सम्भवत तहमास्प द्वारा ऊज़बेगों की जाम की पराजय की ओर सकेत है।
६ वह बाबर का सहायक था।
७ अमीरों।
८ हुमायूँ एवं कामरान।
९ हुमायूँ तथा कामरान में से किसी ने इस समय तक बाबर के समान किसी पौरुष के कार्य का प्रदर्शन नहीं किया था।
१० ये शेर थोड़े से अन्तर के साथ शेख निजामी गजवी (मृत्यु १२०६ ई०) की 'खुसरो व शीरीं' नामक मसनवी में भी हैं। ये शेर उस समय से सम्बन्धित हैं, जब खुसरो ने शीरीं से विवाह का प्रस्ताव रक्खा किन्तु उस समय खुसरो के युद्ध में व्यस्त होने के कारण शीरीं ने यह प्रस्ताव रद्द कर दिया था।

हिसार मे नियुक्त कर दे और कामरान के आदमी बल्ख मे। यदि समरकन्द पर भी विजय प्राप्त हो जाय तो उसे तू अपनी राजधानी बना ले। यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं हिसार को खालसे मे सम्मिलित कर लूगा। यदि कामरान का विचार हो कि बल्ख उसके लिये कम है तो इसकी सूचना मुझे कर दे। यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं अन्य राज्यो से उसकी कमी की पूर्ति कर दूगा।

जैसा कि तुझे ज्ञात है, सर्वदा यही नियम रहा है कि यदि तेरे अधीन छ भाग रहते हैं तो कामरान के अधीन ५। यह नियम स्थायी रूप से चल रहा है तू इसमे परिवर्तन मत कर।

अपने छोटे भाई के साथ उत्तम व्यवहार कर। बडो को सहनशील होना चाहिये। मुझे आशा है कि जहा तक तेरा सम्बन्ध है तू उसके साथ सद्व्यवहार बनाये रक्खेगा। जो[1] तेज तथा चतुर युवक हो चुका है वह तेरे प्रति उचित निष्ठा एव सम्मान प्रदर्शित करने मे कमी न करेगा।

तेरी ओर से बहुत कम बातें आती हैं। पिछले दो-तीन वर्षों से तेरे पास से कोई व्यक्ति नही आया है। जिस आदमी[2] को मैंने तेरे पास भेजा वह तेरे पास से एक वर्ष से अधिक समय के बाद आया। क्या यह बात ठीक नही ?

तू अपने पत्रो मे "एकान्तवास", "एकान्तवास' की चर्चा करता रहता है। एकान्तवास बादशाही का बहुत बडा दोष है। हज़रत सादी[3] ने कहा है

शेर

"यदि तेरे पाव मे जजीर पडी हो तो तू एकान्त-वास ग्रहण कर,
यदि तू अकेला यात्रा कर रहा हो तो जिस प्रकार तेरी इच्छा हो, तू कर।
बादशाही के बधन से बडा कोई बन्धन नही। एकान्तवास राज्य के लिये उचित नही।"

तूने मेरे आदेशानुसार मुझे एक पत्र लिखा है किन्तु तूने उसे दुहराया क्यो नही ? यदि तू उसे पुन पढ लेने के विषय मे सोच लेता तो फिर तू उसमे ऐसी भूलें न करता। पढ लेने के उपरान्त तू उसमे सुधार कर लेता। यद्यपि तेरा पत्र कठिनाई के उपरान्त पढ लिया जाता है किन्तु यह बडा भ्रमात्मक है। गद्य मे पहेलियो का प्रयोग किसने देखा है ? तेरा अक्षर-विन्यास यद्यपि बुरा नही है किन्तु अधिक शुद्ध भी नही है। तूने इल्तेफात[4] को 'तो' से और 'कूलिज'[5] को 'या' के साथ लिखा है। यदि हर प्रकार से परिश्रम किया जाये तो तेरा पत्र पढा जा सकता है। किन्तु तेरे अस्पष्ट शब्दो के प्रयोग के कारण इसका अर्थ नही समझा जा सकता। इस कारण कि तेरे पत्र अस्पष्ट होते है तू पत्र लिखने मे शिथिलता प्रदर्शित करता है। तेरे पत्रो के अस्पष्ट होने का कारण यह है कि वे जटिल होते हैं। भविष्य मे तू उन्हे जटिल बनाये बिना लिख और सरल एव स्पष्ट शब्दो का प्रयोग कर। इस प्रकार तेरे तथा तेरे पत्र पढने वालो के कष्ट मे कमी हो जायेगी।

१ तेरा भाई जो ....।
२ बेग मुहम्मद तअल्लुकची।
३ शेख़ मसलहुद्दीन सादी शीराज़ी फ़ारसी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'गुलिस्ता' एवं 'बोस्तां' के रचियता। यह शेर बोस्तां से उद्धृत है। शेख़ सादी की मृत्यु १२९२ ई० में हुई।
४ التفات के स्थान पर التفاط।
५ 'कूलिज' को 'कौलिज'।

तू अब एक महान्[1] कार्य हेतु प्रस्थान करने वाला है। योग्य तथा अनुभवी बेगो[2] से परामर्श और तदनुसार कार्य किया कर। यदि तू मुझे प्रसन्न करना चाहता है तो अकेले रहना एव लोगो से मेल जोल का परित्याग छोड दे। अपने छोटे भाई तथा बेगो को दिन मे दो बार अपनी सेवा मे बुलवाया कर। उनका आगमन उनकी इच्छा पर मत छोड। चाहे जो भी कार्य हो उसे परामर्श ले कर अपने हितैषियो की सहमति से सम्पन्न कर।

ख्वाजा कला से मुझ से दीर्घकाल से घर के मित्रा के समान घनिष्ठता रह चुकी है। तू उससे उतनी ही अथवा उससे अधिक घनिष्ठता रख। यदि ईश्वर ने चाहा तो उस क्षेत्र का कार्य हलका हो जायेगा और तुझे कामरान की आवश्यकता न रहेगी। उसे अनुशासित आदमियो के साथ बल्ख मे छोड कर मेरी सेवा मे चले आना।

जब से काबुल पर अधिकार प्राप्त हुआ है उसी समय से महान् विजयो के प्राप्त होने के कारण मैंने उसे शुभ समझ कर खालसे मे सम्मिलित कर लिया है। तुम लोगो मे से किसी को भी इसका लोभ न करना चाहिये।

यह तूने बडा अच्छा किया कि सुल्तान वैस के हृदय को अपनी मुट्ठी मे ले लिया। उसे अपने पास बुला ले और उसके परामर्शानुसार कार्य कर कारण कि वह व्यवहारकुशल है।

जब तक सेना भली भाति भरती न हो जाये उस समय तक कही मत जा।

बीआन शेख को मौखिक बातें भली भाति बता दी गई हैं। वह तुझे उन बातो को बता देगा।

इन बातो के उपरान्त मैं तुझे सलाम करता हू और तेरे दर्शन का अभिलाषी हू।

उपर्युक्त (पत्र) बृहस्पतिवार १३ रबी-उल-अव्वल (२६ नवम्बर) को लिखा गया। इमी उद्देश्य से और अपने हाथ से मैंने कामरान तथा ख्वाजा कला को पत्र लिख कर बीआन के हाथ भेजे।

× × × × × ×[3]

अभियानो की योजना

(२ दिसम्बर)—बुधवार १९ रबी-उल-अव्वल को मीर्जाओ, सुल्तानो एव तुर्क तथा हिन्दुस्तान के अमीरो को परामर्श हेतु बुलाया गया और उनसे यह निश्चय हुआ कि इस वर्ष सेना किसी न किसी दिशा मे अवश्य प्रस्थान करे। हम लोगो के प्रस्थान करने से पहले अस्करी[4] पूर्व की ओर रवाना हो। गगा के उस पार के अमीर तथा सुल्तान अपनी सेनाओ सहित उसके साथ हो जायें और जिस ओर प्रस्थान करना राज्य के लिये उचित हो उस ओर प्रस्थान कर। यह लिख कर शनिवार २२ रबी-उल-अव्वल को गयासुद्दीन कूरची[5] को सुल्तान जुनैद बरलास तथा पूर्व के अमीरो के पास शीघ्रातिशीघ्र पहुच जाने का आदेश दिया। इस कार्य हेतु उसे १६ दिन का[6] समय दिया गया। उसके द्वारा यह मौखिक सदेश भेजा गया कि अस्करी

१ ऊजबेकों को बल्ख एवं हिसार से निकालने का कार्य।
२ अमीरों।
३ यहाँ १५ से १६ रबी उल अव्वल तक का कोई हाल नहीं दिया गया है।
४ इस समय अस्करी की अवस्था १२ वर्ष की थी।
५ अस्त्र शस्त्र की देख रेख करने वाला।
६ किन्हीं किन्हीं पोथियों में २३ दिन।

को युद्ध के अस्त्र-शस्त्र—ज़र्बज़न, तोप, गाडी एव अन्य यत्रो के तैयार होने के पूर्व भेजा जा रहा है। गगा के उस ओर के समस्त अमीरो एव सुल्तानों को आदेश दिया जाता है कि वे अस्करी के पास एकत्र हो जायें और उस ओर के हितैषियों से परामर्श के उपरान्त, जिस दिशा मे भी ईश्वर की कृपा से राज्य का हित हो उस दिशा मे प्रस्थान करें। यदि कार्य ऐसा हो जिसके लिये मेरी आवश्यकता हो तो मैं इस व्यक्ति के, जिसे (१६ दिन की) अवधि दी गई है, वापस आने पर तुरत, यदि ईश्वर की इच्छा हुई, घोडे पर सवार हो जाऊगा।

यह स्पष्ट रूप से लिखा जाये कि बगाली[1] निष्ठावान् एव साथ देने के लिये तैयार हैं अथवा नही। यदि उस ओर इतना कार्य न हो कि मेरी आवश्यकता हो तो यह बात भी स्पष्ट रूप से लिख दी जाये ताकि मैं प्रतीक्षा न करू और अन्य दिशा मे प्रस्थान करू।[2] तुम सब हितैषी लोग परामर्श के उपरान्त अस्करी को अपने साथ ले लो और ईश्वर की कृपा से उस ओर के कार्यों को सम्पन्न कर डालो।

× × × × × ×[3]

अस्करी को इनाम

(१२ दिसम्बर)—शनिवार २९ रबी-उल-अव्वल को अस्करी को एक जडाऊ कटार पेटी सहित एव खिलअत पहनाई गई। उसे अलम[4], तोग़[5], नक्कारा[6], ६ से ८ तक तीपूचाक घोडे, १० हाथी, ऊटो तथा खच्चरो की एक एक कितार[7], शाही असबाब एव यत्र प्रदान किये गये और आदेश दिया गया कि वह दीवान के मुख्य अधिकारी का स्थान ग्रहण करे। उसके मुल्ला[8] तथा दो अत्काओं[9] को बग्नदार जैकेट तथा उसके अन्य सेवको को ९ जामो[10] के ३ जोडे प्रदान किये जायें।

बाबर का सुल्तान मुहम्मद बख्शी के घर जाना

(१३ दिसम्बर)—रविवार, रबी-उल-अव्वल के अन्तिम दिन मैं सुल्तान मुहम्मद बख्शी के घर पहुचा। एक कालीन बिछा कर वह उपहार लाया। उसने जो कुछ नकद तथा सामान भेंट किया, उसका मूल्य दो लाख[11] से अधिक था। जब भोजन तथा उपहार प्रस्तुत हो चुके तो मैं दूसरे कमरे मे पहुचा जहा बैठ कर हमने माजून का सेवन किया। वहा से तीन पहर[12] व्यतीत हो जाने के उपरान्त मैंने निकल कर नदी पार की और अपने खिलवतखाने[13] मे पहुच गया।

१ नुसरत शाह।
२ सम्भवत राजपूतों के विरुद्ध।
३ यहाँ ५ दिन की घटनाओं का उल्लेख नहीं है।
४ पताका।
५ एक प्रकार की पताका जिस पर मोरछल लगा होता था।
६ नगाडा।
७ एक क़ितार में ७ से १० तक पशु होते थे।
८ शिक्षक, गुरु।
९ अत्का : देख रेख करने वालों।
१० एक प्रकार के कोट।
११ अर्सकिन के अनुसार ५०० पौंड किन्तु अपने इतिहास के प्रथम भाग में उसने इस संख्या के प्रति संदेह प्रकट किया है।
१२ आधी रात के उपरान्त।
१३ वह कमरा अथवा घर जहाँ किसी अन्य व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति न होती थी।

आगरा-काबुल के मार्ग की नाप

(१७ दिसम्बर)—बृहस्पतिवार ४ रबी-उस्सानी को यह निश्चय हुआ कि चीकमाक बेग शाही तमग़ाची[1] के नवीसिन्दे[2] के साथ आगरा से काबुल के मार्ग की दूरी की नाप करे। यह आदेश दिया गया कि ९-९ कुरोह[3] पर १२ क़ारी[4] ऊचा मीनार तैयार किया जाये। उन पर एक चार दरे[5] का निर्माण किया जाये। १८-१८ कुरोह[6] पर छ घोडे डाक चौकी के लिये बाधे जायें।[7] डाक के प्रबन्धको तथा साईसो एव घोडों के दाने के व्यय का प्रबन्ध इस प्रकार किया जाये कि यदि वह स्थान जहा घोडे बाधे जायें ख़ालसे के परगने के समीप हो तो इन वस्तुओं की वहा से व्यवस्था की जाये अन्यथा जिस बेग[9] के परगने मे वह स्थान हो, वह उसकी व्यवस्था करे। चीकमाक बेग, शाही के साथ उसी दिन आगरा से चल खडा हुआ।

कुरोह, मील के हिसाब से जिस प्रकार 'मुबीन' मे वर्णित है, निश्चित किये गये
४००० कदम एक मील के बराबर होते हैं,
ज्ञात होना चाहिये कि हिन्द वाले इसे कुरोह[10] कहते हैं।
कदम के विषय मे उन लोगों का मत है कि वह १½ क़ारी[11] होता है
ज्ञात होना चाहिये कि प्रत्येक क़ारी[12] ६ तूताम के बराबर होता है।
प्रत्येक तूताम[13] चार अगुल[14] के बराबर होता है[15],
प्रत्येक अईलीक छ जौ के बराबर होता है। इस बात को जान लो। तनाब[16] को ४० क़ारी के बराबर रक्खा गया। प्रत्येक क़ारी उपर्युक्त १½ क़ारी अथवा ९ हाथ की चौडाई के बराबर था।

१ तमग़ा, मुहर का प्रबंध करने वाला, जो मुहर लगा कर चुगी एव अन्य करों की अदायगी का प्रमाण प्रस्तुत करता था।
२ मुन्शी, क्लर्क।
३ १८ १८ मील पर।
४ २४ अथवा ३६ फ़ीट।
५ चार मेहराब अथवा द्वार का दालान।
६ ३६-३६ मील।
७ डाक के प्रबध के लिये देखिये इब्ने बत्तूता की यात्रा का वर्णन।
८ डाक चौकी।
९ अमीर।
१० कोस।
११ ३६ इंच।
१२ २४ इच।
१३ मुट्ठी।
१४ अईलीक।
१५ यह पद्याश 'मुबीन' नामक ग्रंथ के तयम्मुम से सम्बधित भाग से उद्धृत है। जिस स्थान पर जल उपलब्ध न हो वहा नमाज़ इत्यादि के लिये वज़ू के स्थान पर मिट्टी अथवा बालू आदि वस्तुओं को हाथ से क्रमानुसार छूकर काम चला लिया जाता है। यह पद्याश उस स्थान से सम्बधित है जहाँ यह दिखाया गया है कि यदि जल एक मील की दूरी पर है तो तयम्मुम किया जा सकता है। इस प्रसग में मील की उपर्युक्त व्याख्या की गई है।
१६ नापने वाली रस्सी

राजदूतो की दावत

(१८ दिसम्बर)—शनिवार ६ रबी-उस्सानी को एक दावत का आयोजन हुआ।[1] इसमे किज़ीलबाशा, ऊज़बेगो तथा हिन्दुओ[2] के राजदूत उपस्थित थे। किज़ीलबाश दूत मेरी दाईं ओर ७०-८० कारी[3] की दूरी पर लगे हुये एक शामियाने मे बैठे। बेगो[4] मे से यूनुस अली को उनके साथ बैठने का आदेश हुआ। मेरी बाईं ओर इसी प्रकार ऊज़बेग दूत बैठे। बेगो मे से अब्दुल्लाह को उनके साथ बैठने का आदेश हुआ। मैं एक नव निर्मित अष्टाकार तालार[5] के, जो खस[6] से छाया हुआ था, उत्तर मे बैठा। मेरी दाईं ओर ५-६ कारी की दूरी पर, तूख़्ता बूगा सुल्तान, अस्करी और उसके साथ हज़रत ख्वाजा[7] के वशज ख्वाजा अब्दुश् शहीद तथा ख़्वाजा कला,[8] ख़्वाजा चिश्ती तथा खलीफा उन हाफिज़ो[9] एव मुल्लाओ[10] के साथ, जो उस पर आश्रित थे और समरकन्द मे आये थे, बैठे। मेरी बाईं ओर ५-६ कारी पर मुहम्मद जमान मीर्ज़ा, तागआतमीश सुल्तान, सैयिद रफी सैयिद रूमी, शेख अबुल फतह, शेख जमाली, शेख शिहाबुद्दीन अरब तथा सैयिद रुकनी[11] बैठे।

उपहार

भोजन के पूर्व समस्त सुल्तान, खान, उच्च पदाधिकारी एव अमीर लोगो ने लाल[12], सफेद[13] तथा काले[14] (सिक्के) एव वस्त्र तथा अन्य वस्तुए उपहार स्वरूप भेट की। उन्होने लाल तथा सफेद (सिक्के) एक कालीन पर जिसे मैंने बिछवा दिया था, डाल दिये। सोने-चादी के ढेर के बराबर, सफेद वस्त्रो के टुकडे एव धन की थैलिया ढेर कर दी गईं।

१ ऊज़बेग, ईरानी एव समरकन्द के राजदूत राणा सागा पर विजय प्राप्त होने के उपरान्त जो फ़तहनामा भेजा गया था, उसके पहुचने के बाद आये होंगे।
२ राजपूतों।
३ १४० १५० फ़ीट की दूरी पर, ३६ इच की कारी के हिसाब से।
४ अमीरों।
५ एक प्रकार का दालान, कमरा।
६ एक प्रकार की सुगंधित घास की जड़ जिसकी गरमियों में टट्टियां बनाई जाती हैं।
७ ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (मृत्यु फ़रवरी १४९१ ई०)।
८ ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार के दूसरे पुत्र एहया के भतीजे एवं पौत्र। यह बाबर का बड़ा ही दृढ समर्थक रहा और ९०६ हि० (१५०२ ई०) में मारा गया। सम्भवत ख़्वाजा अब्दुल शहीद एवं ख़्वाजा कला को भी बाबर ने पत्र सहित मुबीन नामक काव्य की प्रतिलिपिया भेजी थीं। बाबर की 'वालिदिया' नामक पुस्तक (लेखक ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार) के पद्य रूपांतर के ३ सप्ताह उपरान्त वे आगरा पहुँच गये थे।
९ हाफ़िज़ जिसे कुरान शरीफ़ कण्ठस्थ हो।
१० शिक्षक, अध्यापक।
११ इसे 'जकनी' एवं 'रुकनी' भी लिखा गया है।
१२ सोने के सिक्के।
१३ चांदी के सिक्के।
१४ तांबे के सिक्के।

हाथी एव ऊट की लडाई

जब उपहार लाये जा रहे थे और भोजन प्रारम्भ न हुआ था, भयकर ऊट तथा हाथी सामने के टापू मे युद्ध करने के लिये छोड दिये गये। इसी प्रकार मेढे, तदुपरान्त पहलवान लडाये गये।

इनाम

भोजन के उपरान्त ख्वाजा अब्दुश् शहीद तथा ख्वाजा कला को बारीक मलमल की जिसमे सोने के तारो का काम था उत्तम खिलअतें पहनाई गईं। मुल्ला फर्रुख, हाफिजो एव उनके सहायको को क़बायें प्रदान की गईं। कूचुम खा के दूतो[1] तथा हसन चलबी के छोटे भाई को रेशमी बाशलीक़ तथा बारीक मलमल की जिस पर सोने के तारो का काम था, उत्तम खिलअतें पहनाई गईं। अबू सईद सुल्तान (ऊज-बेग), मिहरबान खानम[2], उसके पुत्र पोलाद सुल्तान एव शाह हसन अरगून के दूतो को सोने के तारो के काम की कबायें एव रेशमी लबादे प्रदान किये गये। दोनो ख्वाजाओ एव दोनो मुख्य राजदूतो अर्थात् कूचुम खा के सेवको एव हसन चलबी[3] के छोटे भाई को क्रमश चादी के बाट के बराबर सोना और सोने के बाट के बराबर चादी प्रदान की गई।

सोने का बाट ५०० मिस्काल अर्थात् काबुल के एक सेर के बराबर होता है। चादी का बाट २५० मिस्काल अर्थात् काबुल के आधे सेर के बराबर होता है।

ख्वाजा मीर सुल्तान तथा उसके पुत्रो, ताशकन्द[4] के हाफिज, ख्वाजा के सेवको के सरदार मुल्ला फर्रुख तथा राजदूतो को चादी, सोना निषग सहित प्रदान किया गया।[5] यादगार नासिर[6] को कटार तथा पेटी प्रदान की गई। मीर मुहम्मद जाला बान[7] को गगा नदी पर उत्तम पुल तैयार करने के कारण[8] एक कटार इनाम मे प्रदान की गई। बदूक चलाने वाले पहलवान हाजी मुहम्मद, पहलवान बहलूल तथा वली चीते के रक्षक एव उस्ताद अली के पुत्र को कटारें प्रदान की गईं। सैयिद दाऊद गरम सीरी को सोना और चादी भेंट किया गया। मैंने अपनी पुत्री मासूमा[9] तथा अपने पुत्र हिन्दाल के सेवको को तुकमे[10] दार कबायें तथा रेशमी खिल्अतें प्रदान की। अन्दिजान, सूख तथा होशियार के लोगो को कबाये, रेशमी खिलअतें, सोना, चादी एव अन्य बहुत सी सामग्री भेंट की गईं। ये वे स्थान हैं जहा हम जिस समय पहुचे थे

१ कूचूम ऊजबेगो का खाक़ान था। उसकी राजधानी समरकन्द थी। उसके एक पुत्र अबू सईद ने अपने राजदूत भेजे थे।
२ मेहरबान, कूचुम की पत्नियों म सम्मिलित थी। वह बाबर की सौतेली बहिन तथा उमर शेख़ की पुत्री थी।
३ शाह तहमास्प का राजदूत।
४ तुर्की में 'ताशकीन्त'।
५ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि निषंग में चादी एव सोना भर कर प्रदान किया गया।
६ बाबर का सौतेला भतीजा।
७ नाविक, वह अधिकारी जो नौकाओं, पुल इत्यादि तथा नदी पार करने का प्रबन्ध करता है।
८ ९३४ हि० (१५२८ ई०) में।
९ मुहम्मद जमान मीर्ज़ा की पत्नी।
१० घुडी तुकमा (तुकमा वह फदा जिसमें घुडी फसाते हैं)।

तो हमारे घर बार कुछ न था।'[1] इसी प्रकार के उपहार कुरबान, शेखी[2] तथा काहमर्द की प्रजा[3] को प्रदान किये गये।

बाज़ीगर

भोजन के लग जाने के उपरान्त हिन्दुस्तानी बाज़ीगरो को आदेश हुआ कि वे अपने अपने करतब दिखायें। लूली[4] उपस्थित हुये। हिन्दुस्तानी बाज़ीगरो ने बहुत से ऐसे करतब दिखाये जो उस ओर[5] के बाज़ीगर नही दिखा पाते। उनमे से एक यह है। उन्होंने सात छल्ले लिये। उनमे से एक छल्ला उन्होने मत्थे पर, दो घुटनो पर, दो हाथ की अगुलियो मे और दो पाव के अगूठो मे पहन कर एक साथ तेज़ी से घुमाना प्रारम्भ कर दिया। एक अन्य करतब यह है। मोर के चाल की नकल करते हुये वे अपना एक हाथ भूमि पर रख कर, दूसरा हाथ एव दोनो टागे ऊपर उठा कर तीनो को एक साथ तेजी से घुमाने लगे। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य करतब इस प्रकार है। उन देशो[6] मे दो आदमी एक दूसरे को पकड कर दो कलाबाज़ी खा जाते हैं किन्तु हिन्दुस्तानी लूली एक दूसरे से चिपटे हुये तीन चार कलाबाज़िया खाते चले जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक लूली अपनी कमर पर १२-१४ फीट का एक बास सीधा रख कर पकड़ रहता है। दूसरा लूली उस पर चढ जाता है और अपने करतब दिखाता रहता है। इसके अलावा एक छोटा लूली बडे लूली के सिर पर चढ जाता है और उसके सिर पर सीधा खडा रहता है। बडा लूली तेजी से इधर उधर घूमता रहता है और अपने करतब दिखाता रहता है। छोटा लूली, बडे लूली के सिर पर सीधा खडा रहता है और स्वय भी करतब दिखाता रहता है किन्तु गिरता नही।

बहुत सी 'पातुरो'[7] ने उपस्थित होकर नृत्य किया।

सायकाल की नमाज के समीप अत्यधिक लाल, सफद एव काले (सिक्के) लुटाये गये। बडी भीड एव कोलाहल हुआ। सायकाल एव सोने की नमाज के समय के मध्य मे, मैंने ५-६ विशेष आदमियो को एक पहर से अधिक अपने पास बैठाये रक्खा।

दिन के दूसरे पहर[8] एक नौका मे बैठ कर मैं हश्त बहिश्त को चला गया।

अस्करी का पूर्व की ओर प्रस्थान

(२० दिसम्बर)—सोमवार को अस्करी, जो अभियान हेतु निकल चुका था हम्माम[9] म उपस्थित हो कर मुझसे विदा हुआ, और पूर्व की ओर चल दिया।

१ सम्भवतः इन पहाड़ियों को पानीपत की विजय के उपरान्त निमत्रण भेजा गया होगा। बाबर ने उनका जिस प्रकार स्वागत किया उससे उसके चरित्र की महानता का पता चलता है। सम्भवत दिल्ली के ग्रामीण भी जिन्होंने अपनी पहाड़ियों पर बादशाह को नंगे पांव भागते देखा था आये होंगे।
२ कुरबान तथा शेखी सम्भवत अजर के किले में थे।
३ बाबर एवं उसके सहायकों के परिवार वालों को काबुल जाते समय सहायता प्राप्त हुई थी।
४ एक प्रकार के बाज़ीगर, सम्भवत कंजर।
५ बाबर की मातृ भूमि की ओर के।
६ बाबर की मातृ भूमि की ओर के।
७ वेश्या, रंडी।
८ रविवार ७ रबी उस्सानी को प्रात ६ बजे।
९ नहाने का कमरा, विशेष रूप से जहां गरम जल से स्नान का प्रबन्ध हो।

धौलपुर की सैर

(२१ दिसम्बर)—मगलवार (९ रबी-उस्सानी) को मैं दोलपुर[1] के हौज़ एव कुयें को देखने के लिये, जिसके निर्माण का मैंने आदेश दिया था, रवाना हुआ। मैंने (आगरा) के उद्यान से एक पहर एव एक घडी[2] व्यतीत हो जाने पर प्रस्थान किया और रात के प्रथम पहर की ५वी घडी के उपरान्त[3] दोलपुर के उद्यान मे प्रविष्ट हुआ।

(२३ दिसम्बर)—बृहस्पतिवार ११ तारीख[4] को पत्थर का कुआ, २६ पत्थर के फ़वारे तथा स्तम्भ, एव नालियां[5] जो ढलवा चट्टान से निकाली गई थी तैयार हो गईं। उसी दिन तीसरे पहर मे कुयें से जल निकालने का प्रवन्ध किया गया। जल मे कुछ दुर्गन्ध होने के कारण सावधानी की दृष्टि से आदेश दिया गया कि १५ दिन तक २४ घटे निरन्तर रहँट चला कर जल निकाल दिया जाये। पत्थर काटने वालो, मजदूरो तथा समस्त कारीगरो को आगरा के उस्तादकारो एव मजदूरो की प्रथानुसार इनाम दिया गया।

(२४ दिसम्बर)—शुक्रवार के दिन प्रथम पहर मे एक घडी शेष रह गई थी[6] कि हमने दोलपुर से प्रस्थान किया और सूर्यास्त के पूर्व (यमुना) नदी पार कर ली।

× × × × × ×[7]

जाम के युद्ध का वर्णन

(२८ दिसम्बर)—मगलवार १६ (रबी-उस्सानी) को देव[8] सुल्तान के एक सेवक ने जो किज़ीलबाशो तथा ऊज़बेगो के युद्ध के समय उपस्थित था, इस युद्ध का इस प्रकार उल्लेख किया —

ऊज़बेगो एव तुर्कमानो के मध्य मे आशूरे[9] के दिन जाम-खिरगिर्द के समीप युद्ध हुआ। वे लोग प्रात काल से मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के समय तक युद्ध करते रहे। ऊज़बेगो की सख्या ३००,००० तथा तुर्कमानो की सख्या ४०-५० हज़ार रही होगी। उसका व्यक्तिगत विचार यह था कि उनकी सख्या १००,००० रही होगी। ऊज़बेगो का कथन है कि स्वय उनकी (ऊज़बेगो की) सख्या १००,००० रही होगी। किज़ीलबाश सरदारो ने रूमी प्रथानुसार अरावा, ज़र्बज़न तथा तोप द्वारा अपने आपको दृढ बना कर युद्ध किया। शाहज़ादा तथा जूहा सुल्तान[10] २०,००० उत्कृष्ट वीरो सहित अरावो के पीछे खडे हुये। शेष अमीर लोग अरावो से दूर दाईं एव बाईं ओर नियुक्त हुये। इन लोगो को ऊज़बेगो ने पहुचते ही पराजित

१ धौलपुर।
२ लगभग प्रात ८-२२ पर।
३ रात्रि के ७-४० पर।
४ रबी उस्सानी।
५ कुआ एक हौज को भरने के लिये बनाया गया था। २६ फ़वारे एव रोक के स्तम्भ जल को नालियों में पहुँचाने के लिये बनाये गये थे।
६ लगभग ८-४० प्रात।
७ यहा तीन दिन के युद्ध का हाल नहीं लिखा है।
८ रूमेलिया (रूमलू) का सुल्तान देव जो शाह तहमास्प का अतालीक रह चुका था।
९ दसवीं मुहर्रम।
१० इस्फ़हान का हाकिम।

करके घोड़ो से गिरा दिया। बहुत से लोगों को उन्होंने बन्दी बना लिया और बहुत से भाग गये। तदुपरान्त वे लोग (क़िज़िलबाशों की) सेना की पिछली पंक्ति मे चक्कर काट कर पहुचे और ऊटो तथा असबाब को लूटना प्रारम्भ कर दिया। अन्त मे जो लोग अराबो के पीछे थे, वे अराबा की जजीरें खोल कर बाहर निकल पड़े। यहा भी घोर युद्ध हुआ। उन लोगों ने ऊज़बेगो को तीन बार पीछे हटा दिया और ईश्वर की कृपा से उन्हे पराजित कर दिया। कूचूम खा, उबैद खा तथा अबू सईद सुल्तान एव उनके अधीन ९ सुल्तान बन्दी बना लिये गये। अबू सईद सुल्तान के विषय मे कहा जाता है कि वह अभी तक जीवित है। शेष की हत्या कर दी गई है।[1] उबैद खा के शरीर का पता चल सका किन्तु सिर का नही। ५०,००० ऊज़बेग तथा २०,००० तुर्कमान इस युद्ध मे मारे गये।[2]

× × × ⁄ × ×[3]

(३० दिसम्बर)—इसी दिन (बृहस्पतिवार, १८ रबी-उस्सानी) को गयासुद्दीन क़ूरची[4] जो १६ दिन की अवधि पर जूनपुर[5] गया था, वापस आया। क्योंकि सुल्तान जुनैद तथा अन्य लोग सेना सहित खरीद[6] पर चढाई करने गये थे अत वह उन लोगो के खरीद चले जाने के कारण निश्चित अवधि[7] मे वापस न हो सका। सुल्तान जुनैद ने मौखिक सन्देश भेजा था कि, "ईश्वर की दया से इस ओर बादशाह के ध्यान देने योग्य कोई कार्य दृष्टिगत नही होता। मीर्जा[8] चले आयें और इस ओर के सुल्तानो, खानो एव अमीरों को आदेश दे दिया जाये कि वे उनके चरणों के अधीन प्रस्थान करें। आशा है कि समस्त कार्य सुगमता पूर्वक सम्पन्न हो जायेंगे।" यद्यपि सुल्तान जुनैद ने यह उत्तर भेजा था किन्तु लोगों का मत

१ आश्चर्य है कि इस घटना के वर्णन करने वालों का ज्ञान बड़ा ही असंतोषजनक था। जिन तीन सुल्तानों की हत्या के विषय में वह लिखता है उनमें से कूचूम की ९३७ हि० (१५३० ई०), अबू सईद की ९४० हि० (१५३३ ई०) और उबैद की ९४६ हि० (१५३९ ई०) में मृत्यु हुई। यह युद्ध २६ सितम्बर को हुआ था और उसके समाचार आगरा में २३ नवम्बर को पहुँच गये थे। दोनों ओर के राजदूत बाबर की दावत में १६ दिसम्बर को उपस्थित थे। यह सम्भव नहीं कि बाबर इस घटना पर किसी प्रकार की कोई आलोचना न करता। सम्भवत उसने जो कुछ लिखा वह नष्ट हो गया।

२ शाह तहमास्प ने इस युद्ध का वर्णन इस प्रकार किया है: 'मैं ऊज़बेगों के विरुद्ध रवाना हुआ। युद्ध जाम के बाहर हुआ। प्रथम आक्रमण में ऊज़बेग लोग क़िज़िल बाशों पर विजयी रहे। याक़ूब सुल्तान भाग खड़ा हुआ और सुल्तान बालामा तक्लू तथा दायें भाग के अन्य अधिकारी पराजित हुये और भाग खड़े हुये। मैं ईश्वर पर भरोसा करके आगे बढ़ा। मेरे एक अंग रक्षक की उबैद से मुठभेड़ हो गई। उसने उबैद पर तलवार का वार किया और आगे बढ कर दूसरे से लड़ने लगा। कुलीज बहादुर तथा अन्य ऊज़बेग लोग घायल उबैद को उठा ले गये। कूच्कूनजी (कूचूम) खाँ तथा जानी खाँ बेग को जब इस बात का पता लगा तो वे सब भाग गये। जो आदमी हमारी सेना से भाग गये थे, वे हमारे पास पहुँच गये। उस रात्रि में मैं निर्जन जगल मे पड़ा रहा। मुझे उबैद के विषय में कुछ ज्ञात न था। मेरा विचार था कि उन लोगों ने मेरे विरुद्ध कोई न कोई अन्य जाल बिछाया है।

३ इस स्थान से उपर्युक्त घटना की आलोचना एवं कुछ अन्य घटनाओं का वर्णन सम्भवत नष्ट हो गया है।

४ अस्त्र शस्त्र की देख रेख करने वाला अधिकारी।

५ जौनपुर।

६ उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले में घाघरा के दायें तट पर।

७ १६ दिन। वह २४ २५ दिन तक बाहर रहा।

८ मीर्ज़ा अस्करी।

था कि मुल्ला मुहम्मद मज़हब जो सागा काफ़िर[1] से जिहाद के उपरान्त बगाल राजदूत बना कर भेजा गया था, आजकल मे आने वाला है अत वह जो समाचार लाये उसकी भी प्रतीक्षा की जाये।[2]

(३१ दिसम्बर)—शुक्रवार १९ (रबी-उस्सानी) को मैं माजून खा कर अपने कुछ विश्वास पात्रो के साथ खिलवत खाने[3] मे बैठा था कि मुल्ला मज़हब जो शनिवार की रात्रि[4] मे अधिक मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उस ओर की एक एक बात के विषय मे प्रश्न करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि बगाली[5] आज्ञाकारिता एव निष्ठा के पथ पर है।

(२ जनवरी)—रविवार (२१ रबी-उस्सानी) को मैंने तुर्क एव हिन्दुस्तानी अमीरो को बुलवा कर उनसे खिल्वत खाने मे परामर्श किया। यह बात पेश की गई कि बगाली[6] ने राजदूत[7] भेजा है और आज्ञाकारिता एव निष्ठा प्रदर्शित कर रहा है अत बगाल की ओर प्रस्थान करना अनुचित होगा। यदि बगाल की ओर प्रस्थान न किया जाये तो उस क्षेत्र मे कोई ऐसा स्थान नही है जहा इतना खज़ाना हो जिससे सेना वालो को सहायता मिल सके। पश्चिम म बहुत से एसे स्थान हैं जो निकट भी है और जहा खज़ाना भी है।

शेर

अत्यधिक धन-सम्पत्ति वाले, काफिर तथा निकट
यद्यपि पूर्व दूर है किन्तु ये निकट है।'

अन्त मे यह निश्चय हुआ क्योकि हमारा पश्चिम दिशा का मार्ग निकट है अत कुछ दिन ठहर कर पूर्व की ओर से निश्चित होकर प्रस्थान करना चाहिये। गयासुद्दीन कूरची को पुन २० दिन की मीआद देकर पूर्व के अमीरो के पास यह फरमान देकर दौडाया गया कि समस्त सुल्तान खान तथा अमीर जो गगा के उस पार है अस्करी की सेवा मे एकत्र होकर इन[8] शत्रुओ पर आक्रमण करे। इन फरमानो को पहुचा कर वहा के जो कुछ समाचार हो उन्हे लेकर वह[9] अवधि के भीतर शीघ्रातिशीघ्र वापस चला आये।

बिलोचियो का विद्रोह

इन्ही दिनो मे मुहम्मदी कूकूल्दाश[10] के पास से यह प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि बिलोचो ने पुन पहुच कर कुछ स्थानो पर आक्रमण कर दिया है। चीन तीमूर सुल्तान को इस कार्य हेतु नियुक्त किया

१ राणा सागा।
२ कनवाह का युद्ध मार्च १५२७ ई० में हुआ था किन्तु इस समय दिसम्बर के अन्त मे भी दूत की प्रतीक्षा हो रही थी।
३ वह कमरा अथवा घर जहाँ लोग एकात में बैठते हैं और केवल बहुत थोड़े लोग वहाँ जा पाते हैं।
४ शुक्रवार के दिन के बाद की रात।
५ नुसरत शाह।
६ नुसरत शाह।
७ इस्माईल मीता।
८ लोदी अफ़ग़ान तथा उनके मित्र, बिबन, बायजीद इत्यादि।
९ गयासुद्दीन कूरची।
१० फ़ारसी में कूकुल्ताश।

गया। उसे यह आदेश दिया गया कि वह मेहरिन्द[1] एव सामाना के उस पार के अमीरो को एकत्र करके और छ मास की सामग्री की व्यवस्था करके विलोचियों पर आक्रमण करे। (उस ओर के) अमीरो मे से आदिल सुल्तान, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, खुसरो कूकूल्दाश, मुहम्मद अली जगजग, अब्दुल अज़ीज़ मीर आख़ूर[2], सैयिद अली, वली क़िज़ील, क़राचा, हलाहिल, आशिक़ बकावल[3], शेख अली, कित्ता (बेग कोहबुर), गुजूर खा तथा हसन अली सौवादी के विषय मे आदेश दिया गया कि वे सुल्तान के बुलाने पर सेना सहित उसके पास उपस्थित हो जायें और उसके आदेशों का यात्रा एव ठहरने किसी भी विषय मे उल्लघन न करे।[4] अब्दुल गफ्फ़ार तवाची को यह फ़रमान ले जाने के लिये नियुक्त किया गया। उसे आदेश दिया गया कि वह सर्वप्रथम चीन तीमूर सुल्तान के पास यह फ़रमान ले जाये। तदुपरान्त वह उपर्युक्त बेगों[5] को फ़रमान ले जा कर दिखाये। चीन तीमूर सुल्तान जो स्थान निश्चित करे, वहा बेग लोग अपनी अपनी सेना लेकर एकत्र हो जायें। अब्दुल गफ्फ़ार स्वय इस सेना के साथ रहे। जिस किसी के द्वारा शिथिलता एव असावधानी प्रदर्शित हो तो वह इस विषय मे प्रार्थना-पत्र भेज दे। हम उस अपराधी को पदच्युत करके उसे उसकी विलायत[7] अथवा परगने से पृथक् कर देंगे। अब्दुल गफ्फ़ार को ये फ़रमान सौंप कर एव मौखिक बातें बता कर विदा कर दिया गया।

× × × × × ×[8]

धौलपुर मे बाबर को बिहार की पराजय के समाचार प्राप्त होना

(९ जनवरी)—रविवार २८ (रबी उस्सानी) की रात्रि मे हमने तीसरे पहर की छठी घडी के उपरान्त[9] जून[10] नदी पार की और दोलपुर[11] के नील कमल के उद्यान की ओर प्रस्थान किया। रविवार को तीसरे पहर[12] के समीप हम लोग वहा पहुच गये। बाग के चारो ओर बेगों एव निकटवर्तियो को इस आशय से भूमि प्रदान की गई कि वे अपने ठहरने के लिये खेमे इत्यादि लगा लें।

(१३ जनवरी)—बृहस्पतिवार ३ जमादि-उल-अव्वल को उद्यान के दक्षिण-पश्चिम मे हम्माम[13] के लिये स्थान निश्चित करके मैंने आदेश दिया कि वह स्थान ठीक किया जाये। स्थान ठीक हो जाने के उपरान्त वहा एक चबूतरा तैयार किया जाये और उस पर एक हम्माम की व्यवस्था की जाये। हम्माम के एक कमरे मे १० × १० का एक हौज तैयार किया जाये।

१ सरहिन्द।
२ शाही घोड़ों की देख रेख करने वाला अधिकारी।
३ शाही भोजन का प्रबध करने वाला।
४ पूर्ण रूप से आज्ञाकारी रहें।
५ वह अधिकारी जो विशेष समाचार ले जाने के लिये नियुक्त थे।
६ अमीरों।
७ प्रान्त।
८ यहाँ से लगभग ७ दिन का इतिहास नहीं।
९ लगभग रात के सवा दो बजे।
१० यमुना।
११ धौलपुर।
१२ दिन के तीसरे पहर।
१३ वह स्थान जहाँ स्नान, विशेष रूप से गरम जल से स्नान, का प्रबध हो।

मैंने आदेश दिया कि पताका, नक्कारा, अश्वशाला तथा समस्त सैनिक नदी के उस ओर, उद्यान के सामने रहें। जो लोग अभिवादन करने आये वे नौका द्वारा नदी पार कर के आयें।

नुसरत शाह के दूत एव कुछ अन्य लोगो का आगमन

(२२ जनवरी)—शनिवार (१२ जमादि-उल-अव्वल) को बगाल का राजदूत इस्माईल मीता, बगाली[1] के उपहार लेकर आया और मेरी सेवा मे हिन्दुस्तान की प्रथानुसार उपस्थित हुआ। उसने एक बाण के मार की दूरी के भीतर पहुच कर अभिवादन किया और वापस चला गया। उसे प्रथानुसार खिलअत जिसे सिर मुईनेह[2] कहते है पहनाई गई। उसे मेरी सेवा मे उपस्थित किया गया। वह हमारी प्रथानुसार ३ बार घुटने के बल झुका और बढ कर नुसरत शाह का पत्र प्रस्तुत किया तथा जो उपहार लाया था, उन्हे हमारे समक्ष रख कर वापस चला गया।

(२४ जनवरी)—सोमवार (१४ जमादि-उल-अव्वल) को ख्वाजा अब्दुल हक़[3] पधारे। मैंने नौका द्वारा नदी पार की और उनके खेमे मे पहुच कर उनकी सेवा मे उपस्थित हुआ।

(२५ जनवरी)—मगलवार (१५ जमादि-उल-अव्वल) को हसन चल्बी आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

सेना के सम्बन्ध मे हमारे जो उद्देश्य[4] थे उनके लिये चारबाग मे कुछ दिन ठहरना पडा।

(२७ जनवरी)—बृहस्पतिवार १७ (जमादि-उल-अव्वल) को ३ घडी[5] दिन चढे उस पडाव से प्रस्थान किया गया। मैं नौका द्वारा रवाना हुआ। हमने अनवार[6] नामक ग्राम मे जो आगरा से ७ कुरोह[7] पर है पडाव किया।

दूतो को विदा करना

(३० जनवरी)—रविवार (२० जमादि-उल-अव्वल) को ऊजबेग राजदूतो को बिदा किया गया। कूचूम खा के राजदूत अमीन मीर्ज़ा को पेटी सहित कटार, सोने (के काम) का कपडा[8] तथा ७०,००० तन्के प्रदान किये गये। अबू सईद के सेवक मुल्ला तगाई तथा मिहरबान खानम एव उसके पुत्र पोलाद सुल्तान के सेवको को सोने के तार के काम की कबाओ के साथ खिलअतें पहनाई गईं और उनकी श्रेणी के अनुसार नकद इनाम दिया गया।

१ नुसरत शाह।
२ यह वाक्य स्पष्ट नहीं और कुछ छूट गया मालूम देता है। सिर मुईनेह का अर्थ 'मुलायम समूर' भी हो सकता है।
३ उनके भाई हज़रत मख्दूमी नूरा की हैदर मीर्ज़ा ने 'तारीखे रशीदी' में भूरि-भूरि प्रशसा की है और बाबर के शब्दों से भी पता चलता है कि वे बड़े ही पूज्य व्यक्ति थे।
४ सम्भवत सामान इत्यादि की तैयारी।
५ प्रात ७ १० बजे पर।
६ सम्भवत 'उनवारा'।
७ १४ मील।
८ ज़र बफ्त।

(३ फरवरी)—बृहस्पतिवार (२४ जमादि-उल्-अव्वल) की रात्रि मे अब्दुल मलूक कूरची को हसन चलबी के साथ शाह[1] के पास और चापूक को ऊजबेग राजदूतो के साथ ऊजबेग खानो एव सुल्तानो के पास भेजा गया।

चार घडी[2] रात शेष थी कि हमने आवापुर से प्रस्थान किया। प्रात काल चदवार से आगे बढ कर मैं नौका पर सवार हुआ। सोने की नमाज के समय मैं रापरी[3] के सामने उतरा और शिविर मे, जो फतहपुर[4] मे था, पहुच गया।

(४, ५ फरवरी)—फतहपुर मे एक दिन[5] तक ठहर कर हम लोग शनिवार (२६ जमादि उल्-अव्वल) को प्रात काल वज़ू[6] करने के बाद सवार हुये और रापरी के समीप प्रात काल की सामूहिक नमाज पढी। मौलाना मुहम्मद फाराबी इमाम[7] थे। सूर्योदय के उपरान्त मैं रापरी के मोड के नीचे एक नौका पर सवार हुआ।

आज मैंने ११ सतरो वाले मिस्तर[8] अनुवाद[9] को तरकीबे खती[10] मे लिखने के लिये तैयार किया। आज मेरे हृदय को ईश्वर के भक्तो की वाणी[11] ने चेतावनी दी।

(६ फरवरी)—रापरी के जाकीन[12] नामक एक परगने के समक्ष हमने नौकायें नदी तट पर लगवाई और रात्रि उनमे व्यतीत की। प्रात काल की नमाज पढ कर हमने नौकाये नदी तट से आगे बढवा दी।

मैं नौका मे ही था कि सुल्तान मुहम्मद बख्शी उपस्थित हुआ। वह अपने साथ शम्सुद्दीन मुहम्मद नामक, ख्वाजा कला का एक सेवक लाया। उसके पत्रो तथा सेवक की बातो से काबुल के ठीक-ठीक समाचार ज्ञात हुये। जब मैं नौका मे था तो महदी ख्वाजा[13] भी आया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय मैं इटावा के सामने एक उद्यान मे उतरा और यमुना नदी मे स्नान करके नमाज पढी। नमाज के उपरान्त इटावा की ओर पहुच कर हम नदी के सामने एक टीले पर उसी उद्यान के वृक्षो की

१ सम्भवत पुस्तक नकल करने वाले ने भूल की है। बाबर ने आगे भी तहमास्प को शाहज़ादा ही लिखा है।
२ प्रात काल ४-३०।
३ रापरी फ़ीरोज़ाबाद से बटेश्वर घाट के मार्ग पर है।
४ रापरी के उत्तर पूर्व में दो फ़तहपुर हैं।
५ शुक्रवार को।
६ नमाज़ के पूर्व क्रमश हाथ मुह धोना।
७ वह व्यक्ति जो सामूहिक (जमाअत की) नमाज़ पढाता है।
८ एक दफ्ती के दोनों ओर लाइनें खींच कर पूरी दफ्ती की जितनी लाइनों का मिस्तर तैयार करना होता है उतने भागों में बाटकर छेद कर लिये जाते हैं और एक लम्बा डोरा दोनों ओर के छेदों में से पिरो लिया जाता है। लिखने के पूर्व दफ्ती को कागज़ के नीचे रख कर कागज़ को दबा दिया जाता है। इस विधि से कागज पर लाइनें बन जाती हैं और लिखने में सुगमता होती है। डोरे वाली दफ्ती मिस्तर कहलाती है।
९ वालिदिया रिसाला।
१० कविता पतले अक्षरों और शीर्षक मोटे अक्षरों में।
११ सम्भवत उबैदुल्लाह अहरार की ओर सकेत है।
१२ जाखन - इटावा के उत्तर पश्चिम में १८ मील पर यमुना के खादर में स्थित।
१३ महदी ख्वाजा इटावा का हाकिम था। उसका विवाह बाबर की बहिन खानज़ादा बेगम से हुआ था।

छाया मे बैठ गये। वहा कुछ वीर आनद मगल मनाने बैठ गये।[1] महदी ख्वाजा द्वारा भोजन की व्यवस्था की गई थी। हम लोगों के समक्ष भोजन लगवाया गया। सायकाल की नमाज के समय हमने नदी पार की और सोने के समय हम शिविर मे पहुच गये।

सेना के सग्रह तथा शम्सुद्दीन मुहम्मद द्वारा लाये हुये पत्रो का उत्तर लिखने के कारण इस पडाव पर दो-तीन दिन ठहरना पडा।

(९ फरवरी)—बुधवार जमादि-उल अव्वल के अन्तिम दिन हमने इटावा से प्रस्थान किया और ८ कुरोह[2] यात्रा करके हम लोगों ने मूरी तथा अदूसा[3] मे पडाव किया।

पत्र लिखना

बहुत से पत्र जो काबुल भेजे जाने थे और अभी तक न लिखे गये थे उन्हे हमने इस पडाव पर लिखा। हुमायू को इस आशय का पत्र लिखा गया

यदि अभी तक सतोषजनक रूप से कार्य नही हुआ है तो तू स्वय डाकुओ एव आक्रमण-कारियो को रोक दे और सन्धि की बात, जो प्रारम्भ हो गई है, बिगडने न दे।[4] इसके अतिरिक्त यह भी लिखा गया कि मैंने काबुल को खालसा बना दिया है। कोई भी पुत्र उसका लोभ न करे। उसे यह भी लिखा गया कि मैंने हिन्दाल को बुलवा लिया है।

कामरान को लिखा गया कि वह शाहज़ादे[5] के प्रति व्यवहार मे अत्यधिक सावधानी प्रदर्शित किया करे और यह कि काबुल को खालसा बना दिया गया है और उसे मुल्तान प्रदान कर दिया गया है। उसे मैंने अपने परिवार वालो तथा अन्य लोगों के बुलाये जाने के विषय मे भी लिखा।

जो पत्र मैंने ख्वाजा कला को लिखा था उससे बहुत सी बातो का पता चलता है अत उसे बिना किसी परिवर्तन के इस स्थान पर नक्ल किया जाता है।

ख्वाजा कला के नाम पत्र की प्रतिलिपि

ख्वाजा कला को सलाम के उपरान्त पहली बात यह (लिखी जाती) है कि शम्सुद्दीन मुहम्मद इटावा पहुच गया है और काबुल के विषय मे जानकारी हो गई है।

मेरी उत्कट एव बहुत बडी अभिलाषा यह है कि मैं उस क्षेत्र[6] मे पहुच जाऊ। हिन्दुस्तान के मामले थोडे बहुत सुलझते जा रहे है। परमेश्वर से आशा है कि यहा के कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जायेंगे। ईश्वर ने चाहा तो इन कार्यों के सुव्यवस्थित होते ही मैं उस ओर तुरन्त प्रस्थान कर दूगा।

उन देशो की रमणीक वस्तुओं को कोई, जब कि उसने पाप न करने[7] की शपथ ले ली है, किस प्रकार भूल सकता है? कोई खरबूज़े एव अगूरो के स्वाद को जिनका सेवन हलाल है किस प्रकार भूल

१ प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद मे लिखा है कि "मज़ाक के लिये मैंने जवानों को जल में फेंक दिया"।
२ १६ मील।
३ सम्भवत इटावा ज़िले का सराय बाबर पुर। इसका यह नाम बाबर के ठहरने के कारण पड़ा होगा।
४ यहा उस सधि के विषय म पुष्टि हो जाती है जिसकी बात पूर्व म चल रही थी।
५ शाह तहमास्प। सम्भवत बाबर को भय था कि कहीं कामरान शीओं के प्रति अपनी घृणा के कारण यह बात बिगाड न दे।
६ काबुल की ओर।
७ मदिरापान न करने।

सकता है ? इस अवसर पर मेरी सेवा मे एक खरबूजा लाया गया। उसे काट कर खाने के पश्चात् मैं बडा प्रभावित हुआ और मेरी आखो मे आसू डबडबा आये।

मुझे काबुल की अव्यवस्थित दशा के विषय में लिख कर भेजा जा चुका है। इस विषय पर सोच विचार करके मैंने यह निश्चय किया —

कोई राज्य जिसमे ७-८ हाकिम हो किस प्रकार सुव्यवस्थित एव सुदृढ रह सकता है ? इस अव्यवस्थित दशा के कारण मैंने अपनी बडी बहिन[1] एव पत्नियो को हिन्दुस्तान बुलवा लिया है। काबुल तथा आस पास के प्रदेश को खालसे मे सम्मिलित कर लिया है और इस विषय में हुमायू तथा कामरान दोनो को लिख दिया है। कोई योग्य व्यक्ति उन पत्रो को मीर्जाओं को पहुचा दे। सम्भवत तुम्हें ज्ञात होगा कि मैंने इस विषय मे उन्हें इससे पूर्व लिख दिया है। उस देश की रक्षा एव समृद्धि के विषय मे अब कोई कठिनाई न होनी चाहिये और न इस विषय में एक शब्द मुह से निकाला जाये। इसके उपरान्त यदि नगर की दीवारें दृढ न रहेंगी अथवा प्रजा समृद्ध न रहेगी या खाद्य सामग्री का भडार परिपूर्ण न रहेगा और खज़ाना भरा न रहेगा तो इसे राज्य के स्तम्भों[2] की अयोग्यता समझा जायेगा।

जो कार्य करने आवश्यक है उनका उल्लेख नीचे किया जाता है। इनमे से कुछ के विषय मे आदेश दिया जा चुका है। और उनमे से एक इस प्रकार है "खज़ाना एकत्र करो।" जो बातें करनी आवश्यक है, वे इस प्रकार है —

(१) किले की मरम्मत।

(२) खाद्य सामग्री का एकत्र करना।

(३) आने जाने वाले दूतो के रहने सहने एव दैनिक[3] व्यय की व्यवस्था।

(४) खराज से वैधानिक रूप से जो धन प्राप्त हो उसे जामा मस्जिद के निर्माण पर व्यय करना।

(५) कारवा सरायो एव हम्मामो की मरम्मत।

(६) पक्की ईंट के उस भवन का जिसे उस्ताद हसन अली किले मे बना रहा था, पूरा कराना। उस्ताद सुल्तान मुहम्मद से परामर्श के उपरान्त यह कार्य प्रारम्भ कर दिया जाये। यदि उस्ताद हसन अली द्वारा तैयार किया हुआ इसका नक्शा मौजूद हो तो उस्ताद सुल्तान मुहम्मद भवन को बिल्कुल उसी के अनुसार पूरा कराये। यदि नक्शा न हो तो एक उत्तम एव उचित नक्शा इस प्रकार तैयार किया जाये कि इसका फरश एव दरबार-कक्ष एक ही सतह मे हो।

(७) खुर्द काबुल बाध का निर्माण, जो बूतखाक के जल को खुर्द काबुल के सकरे मार्ग से निकास के समय रोके।

(८) गज़नी बाध की मरम्मत[4]।

(९) मार्ग के उद्यान की देखभाल जिसमे जल की कमी है और जिसके लिये एक पनचक्की की जल धारा मोडी जाये।

(१०) मैं तूतूम दरा से दक्षिण-पश्चिम के ख्वाजा बस्ता नामक पुश्ते की ओर जल लाया

१ खानज़ादा बेगम।
२ इस स्थान पर ख्वाजा कला को चेतावनी दी गई है।
३ अलूफ़ा व कूनाल।
४ ख्वाजा कला स्वय इसकी मरम्मत के लिये हिन्दुस्तान से धन ले गया था।

था और वहा हौज़ का निर्माण करके पौधे लगवा दिये थे। वह स्थान नजरगाह के नाम से प्रसिद्ध हो गया कारण कि वह नदी के घाट के समीप है और बडा ही उत्तम दृश्य प्रस्तुत करता है। वहा बडे ही उत्तम पौधे लगाये जायें। लान तैयार कराये जायें और उत्तम झाडियो के, जिनमे सुन्दर रग एव सुगन्धित फूल लगते हो, हाशिये तैयार कराये जायें।

(११) सैयिद कासिम को आदेश दे दिया गया है कि वह तुझे कुमक पहुचाये।

(१२) तोपचियो एव उस्ताद मुहम्मद अमीन जीवाची[1] की ओर उपेक्षा मत प्रदर्शित करो।

(१३) इस पत्र के प्राप्त होते ही मेरी बडी बहिन[2] एव पत्नियो को काबुल से नीलाब पहुचा जाओ। वे इसके चाहे जितना भी विरुद्ध हो किन्तु इस पत्र की प्राप्ति के एक सप्ताह के भीतर वे प्रस्थान कर दें। यह दो कारणो से आवश्यक है —

जो सेनायें हिन्दुस्तान से उन्हें लाने भेजी गई है, वे एक सकरे स्थान पर कठिनाई झेल रही है और इसके अतिरिक्त वे उस प्रदेश को नष्ट कर रही हैं।[3]

मैंने अब्दुल्लाह को एक पत्र लिख कर यह स्पष्ट कर दिया कि मेरे मस्तिष्क मे बडी घबराहट थी जिसे सतुलित रखना पश्चाताप के शाद्वल मे सम्भव है। जिस रुबाई की मैंने रचना की वह प्रोत्साहन-युक्त न थी।

रुबाई

"मदिरा से तोबा करके मैं बडे असमजस मे हू
कैसे कार्य करना चाहिये, मुझे ज्ञात नही इतना व्याकुल मैं हू।
जब कि अन्य लोग तोबा करते हैं और त्याग की शपथ लेते हैं,
मैंने त्याग के विषय मे शपथ ली है, और मैं तोबा करता हू।"

बिनाई[4] का एक चुटकुला मुझे याद आ गया। एक दिन वह अली शेर बेग के साथ, जो बटनदार कबा पहने होगा, व्यग्य कर रहा था। अली शेर बेग ने कहा, "तू बडा उत्तम व्यग्य करता है। यदि बटन न होते तो मैं तुझे यह कबा दे देता। बटन ही इसमे रुकावट डालते है।" बिनाई ने कहा, "बटन कोई रोक नही है। बटन के छेद रुकावट डालते है।" इसका उत्तरदायित्व उस व्यक्ति पर है जिसने इस चुटकुले का उल्लेख किया। मुझे इसके लिये क्षमा किया जाये। ईश्वर के लिये इससे रुष्ट मत होना।

उपर्युक्त रुबाई की रचना पिछले वर्ष के पूर्व की गई। वास्तव मे मदिरा की गोष्ठी की पिछले दो वर्षों तक मुझे अपार एव असीम अभिलाषा रही, यहा तक कि मदिरा की इच्छा के कारण मेरे नेत्रो मे आसू आ जाते थे। ईश्वर को धन्य है कि इस वर्ष मुझे इस कष्ट से मुक्ति प्राप्त हो गई। सम्भवत यह उस अनुवाद का आशीर्वाद है जिसकी मैंने पद्य मे रचना की थी। तू भी मदिरा-पान त्याग दे। मदिरा पान एव आनन्द मगल[5] की गोष्ठिया यदि मित्रो एव साथियो के साथ हो तो फिर इनका क्या कहना

१ अस्त्र शस्त्र इत्यादि बनाने वाला।
२ खानज़ादा बेगम।
३ यहां यह बात स्पष्ट नहीं कि बेगमें नष्ट कर रही हैं या सेना।
४ बिनाई हिरात का एक प्रसिद्ध कवि जिसकी १५१२ ई० में मृत्यु हुई।
५ 'वालिदिया रिसाला'।

किन्तु अब तू किसके साथ आनन्द मना सकता है, यदि तू शेर अहमद तथा हैदर कुली के साथ इन गोष्ठियो का आनन्द लेता हो तो फिर तेरे लिये मदिरापान का त्याग कठिन न होना चाहिये।

इतना कहने के उपरान्त मैं तुझे सलाम करता हू और तुझसे भेंट करने का अभिलाषी हू।

यह पत्र वृहस्पतिवार १ जमादि उस्सानी (१० फरवरी) को लिखा गया।[1] उपर्युक्त विषयो एव परामर्श देने का मेरे ऊपर बडा प्रभाव हुआ। शुक्रवार की रात्रि मे पत्र शम्सुद्दीन मुहम्मद को सौप दिये गये। उसे मौखिक बातें समझाकर बिदा कर दिया गया।

बल्ख से शिकायत

(११ फरवरी)—शुक्रवार (२ जमादि-उस्सानी) को हम लोगो ने ८ कुरोह यात्रा करके जुमन्दना[2] मे पडाव किया। आज कीतीन करा सुल्तान का एक सेवक आया। उसे सुल्तान ने अपने एक सेवक कमालुद्दीन कीआक[3] के पास जो दूत बनकर आया था, भेजा था। उसने कीआक को बल्ख की सीमा के बेगों[4] के व्यवहार, उनसे अपनी भेंट, एव उनकी लूट-मार तथा छापे मारने की शिकायत लिखी थी। कीआक को जाने की अनुमति दे दी गई और सीमा के बेगो को आदेश भेजे गये कि वे डाके एव छापा मारने का अन्त करा दें, भली भाति व्यवहार करें और बल्ख के साथ सम्पर्क स्थापित रक्खें। कीतीन करा सुल्तान के सेवक द्वारा यह आदेश भेज कर उसे इस पडाव से विदा कर दिया गया।

ईरान के शाह को पत्र

शाह कुली मेरे पास हसन चलबी के पास से आया था और (जाम के) युद्ध का मुझसे उल्लेख किया था। उसके द्वारा शाह को एक पत्र हसन चलबी[5] के देर मे पहुचने की क्षमा-याचना को स्वीकार करते हुए लिखा गया। और शाह कुली को आज ही के दिन दूसरी को विदा कर दिया गया।

(१२ फरवरी)—शनिवार (३ जमादि-उस्सानी) को हमने ८ कुरोह[6] यात्रा करके कालपी के क्कूरा एव चचावली[7] नामक परगनो म पडाव किया।

(१३ फरवरी)—रविवार (४ जमादि-उस्सानी) को हमन ९ कुरोह[8] यात्रा करके कालपी के दीरापुर[9] नामक परगने मे पडाव किया। यहा मैंने अपना सिर मुडवाया।[10] मैंने पिछले दो महीनो से सिर न मुडवाया था। तदुपरान्त मैंने सीगर नदी मे स्नान किया।

१ कुछ फ़ारसी अनुवादों में यह पत्र उद्धृत नहीं है।
२ सम्भवत 'जुमोहीन' जहां सराय बाबरपुर अतमू फफूद मार्ग, फफूद के दक्षिण पूर्व म घूमता है।
३ इसे विभिन्न रूप से लिखा गया है, कबाक, कताक, क़नाक़। बाबर ने हुमायू को भी सीमात में शाति स्थापित करने के विषय म लिख दिया था।
४ अमीरों।
५ वह दावत के समय आगरा न पहुच सका था।
६ १६ मील।
७ जुमोहीन के दक्षिण की ओर के मार्ग पर।
८ १८ मील।
९ कालपी का पुराना परगना। अब यह कानपुर परगने में सम्मिलित है।
१० यहा केवल साधारण रूप से बाल कटवाने का उल्लेख नहीं है अपितु सिर के समस्त बाल मुंडवाने की चर्चा है।

(१४ फरवरी)—सोमवार (५ जमादि-उस्-सानी) को हमने १४ कुरोह[1] यात्रा की और कालपी के चपरकटा[2] नामक परगने में पड़ाव किया।

(१५ फरवरी)—मंगलवार (६ जमादि-उस्सानी) को प्रातःकाल कराचा का एक हिन्दुस्तानी सेवक उपस्थित हुआ। वह माहीम का एक आदेश कराचा के पास लाया था। इस आदेश से यह ज्ञात हुआ कि वह मार्ग में है। उसने लाहौर तथा भीरा एवं उस क्षेत्र के लोगों से मार्ग रक्षकों को भेजने का आदेश दिया था और उसने उसी प्रकार अपने हाथ से परवाने लिखे थे, जिस प्रकार मैं लिखा करता था। उसने ७ जमादि-उल-अव्वल (१७ जनवरी) को काबुल में आदेश लिखे थे।[3]

(१६ फरवरी)—बुधवार (७ जमादि-उस्सानी) को हमने ७ कुरोह[4] यात्रा की और आदमपुर[5] परगने में पड़ाव किया। इसी दिन मैं प्रातःकाल के पूर्व अकेला सवार हुआ और यमुना नदी के तट पर पहुँच कर यात्रा करता रहा। जब मैं आदमपुर के सामने पहुँचा तो मैंने शिविर के समीप एक टापू[6] पर एक शामियाना लगवाया। वहाँ बैठकर मैंने माजून का सेवन किया।

इसी दिन मैंने सादिक का कलाल से मल्लयुद्ध कराया। कलाल ने आगरा में चुनौती दी थी। आगरा में उसने यात्रा की थकावट का बहाना करके २० दिन का अवकाश मांगा था। इस अवधि के उपरान्त इस समय तक ४०-५० दिन अधिक व्यतीत हो चुके थे अतः उसे आज मल्ल-युद्ध करने का आदेश दिया गया। सादिक ने भलीभाँति मल्ल-युद्ध किया और उसे सुगमतापूर्वक पटक दिया। सादिक को १०,००० तन्के, जीन सहित घोड़ा, सरोपा[7], एवं बटन दार कबा प्रदान किये गये। यद्यपि कलाल हार गया था किन्तु उसे नैराश्य से मुक्त करने के लिये ३००० तन्के प्रदान किये गये।

गाड़ियों को उतरवाने का आदेश दिया गया। हम लोग ३-४ दिन तक इसी पड़ाव पर ठहरे रहे। मार्ग तैयार किया जाता रहा और भूमि समतल की जाती रही तथा गाड़ियों को उतरवाया गया।

(२१ फरवरी)—सोमवार १२ (जमादि उस्सानी) को हमने १२ कुरोह[8] यात्रा की और कूररह[9] में पड़ाव किया। आज मैंने तख्ते रवाँ[10] पर यात्रा की।

(२२–२५ फरवरी)—कूररह से १२ कुरोह[11] यात्रा करके हमने कड़ा के एक परगने

१ २८ मील।

२ चपरघट्टा, दीरापुर भोगनीपुर चपरघट्टा तथा मूसा नगर मार्ग पर।

३ माहीम एवं उसकी पुत्री गुल बदन स्त्रियों के मुख्य दल के पूर्व ही आ गई थी।

४ १४ मील।

५ सम्भवतः आरामपुर, सम्भवतः अकबरपुर के समीप, किन्तु नदी के आस पास के ग्रामों के कभी कभी बहा ले जाने के कारण इस स्थान के विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

६ आराल। कुछ फ़ारसी अनुवादों के अनुसार 'टीला'।

७ सिर से पाँव तक के वस्त्र, पूरा ख़िलअत।

८ २४ मील।

९ सम्भवतः 'कुर्रा खेड़ा' अथवा 'कोड़ा'। इस नाम के दो स्थान फ़तहपुर ज़िले में हैं। कोड़ा यमुना के बायें तट पर फ़तहपुर क़स्बे के दक्षिण पश्चिम में १६ मील पर। दूसरा कोड़ा ख़ास है। सम्भवतः बाबर का तात्पर्य 'कोड़ा ख़ास' से है। यह खजुआ तहसील में है।

१० एक प्रकार की पालकी।

११ २४ मील।

कूरीया[1] मे पडाव किया। कूरीया से ८ कुरोह[2] की यात्रा करके हमने फतहपुर असवा[3] मे पडाव किया। फतहपुर मे ८ कुरोह[4] यात्रा करके हमने सराय मुंडा[5] मे पडाव किया। इसी दिन सोने की नमाज के समय सुल्तान जलालुद्दीन[6] (शर्की) अपने दो छोटे पुत्रो सहित मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

(२६ फरवरी)—दूसरे दिन शनिवार १७ जमादि-उस्सानी को हमने ८ कुरोह[7] यात्रा करके कडा के दुगदुगी नामक एक परगने मे गगा तट पर पडाव किया।

(२७ फरवरी)—रविवार (१८ जमादि-उस्सानी) को मुहम्मद सुल्तान मुहम्मद, नीखूब[8] सुल्तान, तथा तरदीका[9] इस पडाव पर उपस्थित हुये।

(२८ फरवरी)—सोमवार (१९ जमादि-उस्सानी) को अस्करी भी मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वे सब गगा के उस पार से आये। अस्करी एव उसकी अधीनस्थ सेनाओ को आदेश दिया गया कि वे नदी के दूसरे तट से उसकी सेना के सामने यात्रा करें। जिस स्थान पर हमारे शिविर लगे, उसी के सामने (दूसरे तट पर) वे अपने शिविर लगा दे।

अफगानो के समाचार

हम लोग जब इस क्षेत्र मे थे तो निरन्तर ये समाचार प्राप्त होने लगे कि सुल्तान महमूद[10] ने १०,००० अफगान एकत्र कर लिये हैं। उसने शेख बायजीद एव बिबन को एक बहुत बडी सेना सहित सरवार[11] की ओर भेज दिया है। वह स्वय फतह खा सरवानी के साथ गगा के किनारे किनारे चुनार[12] की ओर बढ रहा है। शेर खा सूर[13] जिसे मैने पिछले वर्ष आश्रय प्रदान करके तथा बहुत से परगने देकर इस

१ सम्भवत 'कुन्दा कनक' जो 'कोड़िया', 'कूड़िया', 'कुर्रा' 'कुनारा कनक' के नाम से प्रसिद्ध है। यह फ़तहपुर जिले की गाजीपुर तहसील में, फ़तहपुर के दक्षिण-पश्चिम में लगभग १८ मील पर है।
२ १६ मील।
३ फ़तहपुर हसवा, फ़तहपुर क़स्बे के दक्षिण पूर्व में ७ मील पर।
४ १६ मील।
५ फ़तहपुर के दक्षिण-पूर्व में लगभग २० मील पर।
६ उसके पूर्वज जौनपुर में १३६४ ई० से १४७६ ई० तक राज्य कर चुके थे। उसके पिता हुसैन शाह शर्की को सुल्तान सिकन्दर लोदी ने १४७६ ई० में बुरी तरह पराजित कर दिया था। पूर्व में वह भी पूर्ण अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था। उसके अतिरिक्त जलालुद्दीन नोहानी तथा महमूद लोदी भी इस ओर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे।
७ १६ मील।
८ बीखूब।
९ तरदी यक्का (पहलवान)।
१० सुल्तान महमूद लोदी।
११ गोरखपुर।
१२ चुनार गगा तट पर एक दृढ पहाड़ी किला है। यह वाराणसी के पश्चिम मे लगभग १९ मील पर स्थित है। यह मिर्जापुर जिले की एक तहसील है। यह किला १५वीं-१६वीं शताब्दी ईसवी में बिहार तथा बङ्गाल की कुञ्जी समझा जाता था।
१३ शेर खाँ दूदू बीबी के पुत्र के कार्यों की देख रेख कर रहा था। बाबर ने उसे ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०) के पूर्वी प्रदेश के अभियान में आश्रय प्रदान किया होगा। इन घटनाओं का हाल 'बाबर नामा' से नष्ट हो चुका है।

क्षेत्र मे नियुक्त कर दिया था, इन अफगानो से मिल गया है। उन लोगो ने शेर खा तथा कुछ अन्य अमीरा को नदी पार करा दी है। सुल्तान जलालुद्दीन के आदमी बनारस की रक्षा न कर सके और भाग खडे हुये। कहा जाता है कि उसने यह प्रसिद्ध कर दिया कि उसने बनारस के किले मे सैनिको को नियुक्त कर दिया है और स्वय नदी के किनारे किनारे सुल्तान महमूद[1] से युद्ध करने जा रहा है।

पूर्व की यात्रा की घटनाये

(१ मार्च)—दुगदुगी से (मगलवार २० जमादि-उस्सानी) को सेना ने प्रस्थान करके ६ कुरोह[2] यात्रा की और कडा से ३-४ कोस पर कुमार मे पडाव किया। मैंने नौका द्वारा यात्रा की। हम लोग सुल्तान जलालुद्दीन के आतिथ्य सत्कार के कारण यहा तीन चार दिन तक ठहरे रहे।

(४ मार्च)—शुक्रवार (२३ जमादि-उस्सानी) को मैं कडा के किले के भीतर सुल्तान जलालुद्दीन के महल मे उतरा। उसने अतिथि सेवक के रूप मे पक्के हुये मास तथा अन्य वस्तुएँ खिलाईं। भोजन परचात् उसे तथा उसके पुत्र को यकताई[3] जामा तथा नीमचा[4] प्रदान किये गये। उसकी प्रार्थना पर उसके ज्येष्ठ पुत्र को सुल्तान महमूद[5] की उपाधि प्रदान की गई। कडा से निकल कर मैंने लगभग एक कुरोह[6] की यात्रा की और गगा तट पर उतरा।

शहरक बेग को जो माहीम के पास से हमारे गगा के प्रथम पडाव[7] पर पहुचा था, पत्र देकर विदा किया गया। ख्वाजा यहया का पौत्र ख्वाजा कला[8] मुझसे उन वकाये[9] की, जिनकी मैं रचना करता रहता था, प्रार्थना किया करता था, अत मैने एक प्रतिलिपि जो तैयार कराई थी शहरक के हाथ भेज दी।

(५ मार्च)—शनिवार (२४ जमादि उस्सानी) को हमने प्रात काल प्रस्थान कर दिया। मैंने नौका द्वारा यात्रा की और ४ कुरोह[10] की यात्रा के उपरान्त कोह[11] मे पडाव किया गया। पडाव के इतने निकट होने के कारण हम शीघ्र ही पहुच गये। कुछ क्षण उपरान्त हमने एक नौका मे बैठकर माजून का सेवन किया। हमने ख्वाजा अब्दुश शहीद[12] को, जो ख्वाजा नूर बेग के घर मे था, तथा मुल्ला महमूद[13] को जो मुल्ला अली खा के घर मे था, बुलवाया। वहा कुछ देर ठहर कर हमने नदी पार की और दूसरे

१ बाबर ने उसे अधिकाश 'महमूद' खाँ लिखा है।
२ १२ मील।
३ एकहरी कबा।
४ एक प्रकार का छोटा कोट।
५ यह उपाधि अन्य अफ़ग़ान सरदारों के मुकाबले में प्रदान की गई थी।
६ दो मील।
७ दुगदुगी।
८ ख्वाजा कला ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार के दूसरे पुत्र यहया का पौत्र था।
९ इस शब्द के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि उसकी स्वरचित जीवनी का नाम 'वकाये' था किन्तु इस शब्द का प्रयोग किसी विशेष नाम के सम्बन्ध में नहीं हुआ है अपितु इसका तात्पर्य बाबर के जीवन की उन घटनाओं के संकलन से है जिनकी रचना बाबर किया करता था।
१० आठ मील।
११ कोह खराज, इलाहाबाद जिले में।
१२ ख्वाजा अब्दुश्शहीद, ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार के पाचवें पुत्र का पुत्र था।
१३ मुल्ला महमूद फ़ाराबी।

किनारे पर पहलवानो का मल्ल-युद्ध कराया। मैंने दोस्त यासीन को आदेश दिया कि वह पहलवान सादिक से नही अपितु अन्य लोगो से मल्ल-युद्ध करे। यह आदेश मैंने नियम के विरुद्ध दिया कारण कि सर्व प्रथम सबसे अधिक बली से मल्ल युद्ध कराना चाहिये था। उसने ८ व्यक्तियो से भलीभाति मल्ल-युद्ध किया।

अफगान शत्रुओ के समाचार

मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय सुल्तान मुहम्मद बख्शी, नदी के उस पार से नौका द्वारा आया और यह समाचार लाया कि सुल्तान सिकन्दर के पुत्र महमूद खा[1] की, जिसे विद्रोही सुल्तान महमूद कहते थे, सेना छिन्न भिन्न हो गई है। यही समाचार एक गुप्तचर भी जो इस स्थान से मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय गया था, लाया। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज तथा सायकाल की नमाज के मध्य मे ताज खा सारगखानी का एक प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ जिससे गुप्तचर के समाचार की पुष्टि होती थी। सुल्तान मुहम्मद ने घटना का इस प्रकार उल्लेख किया

विद्रोहियो ने चुनार पहुच कर सम्भवत उसे घेर लिया और थोडा बहुत युद्ध किया किन्तु हमारे निकट पहुच जाने के समाचार पाकर छिन्न-भिन्न हो गये। जिन अफगानो ने बनारस के लिये नदी पार की थी, वे बडी अव्यवस्थित दशा मे वापस हुये। उनकी दो नौकायें नदी पार करते समय डूब गईं और उनके बहुत से आदमी भी डूब गये।

पूर्व की यात्रा की घटनायें

(६ मार्च)—रविवार (२५ जमादि-उस्सानी) को प्रातःकाल हमने प्रस्थान करके छ कुरोह[2] यात्रा की और प्याग[3] के सीर-औलिया नामक परगने मे पहुच गये। मैंने नौका द्वारा यात्रा की।

ईसान तीमूर सुल्तान तथा तूख्ता बूगा सुल्तान[4] आधे मार्ग पर उतर कर मुझसे भेंट करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने उन्हे नौका मे बुलवा लिया। तूख्ता बूगा सुल्तान ने कोई जादू कर दिया होगा कारण कि बडी तीव्र वायु चलने लगी और वर्षा होने लगी। विचित्र प्रकार की वायु के कारण मैंने माजून का सेवन किया, यद्यपि मैं पिछले दिन माजून खा चुका था। मैं पडाव पर पहुचा।[5]

(७ मार्च)—दूसरे दिन (सोमवार २६ जमादि-उस्सानी) को हम उसी पडाव पर ठहरे रहे।

(८ मार्च)—मगलवार (२७ जमादि-उस्सानी) को हमने प्रस्थान कर दिया।

१ महमूद लोदी, सुल्तान सिकन्दर लोदी का लघु-पुत्र था। पश्चिम-दिशा के अफगानों ने सुल्तान इबराहीम लोदी की पराजय के उपरान्त उसे अपना बादशाह स्वीकार कर लिया था। राणा सांगा भी उसका समर्थक था और उसने १५२७ ई० में राणा सांगा के विरुद्ध बाबर का जो युद्ध हुआ, उसमें राणा का साथ दिया। लोदी सरदारों ने उसे १५२८ ई० में बिहार तथा जौनपुर का बादशाह घोषित कर दिया था।

२ १२ मील।

३ प्रयाग।

४ चगताई सुल्तान अस्करी के साथ गंगा के पूर्व म रहे होंगे।

५ यहां के आगे का कुछ हाल नष्ट हो गया है।

शिविर के सामने एक बहुत बड़ा हरा भरा टापू[1] जैसा था। मैं नौका से उतर कर उसकी सैर करने गया और पहले पहर[2] में नौका पर वापस पहुंच गया।

जब मैं नदी के खादर के किनारे-किनारे घोड़े पर यात्रा कर रहा था तो मेरा घोड़ा एक स्थान पर पहुंच गया जहां दराड़ा था और टूटने लगा था। मैं तत्काल कूद कर नदी-तट पर पहुंच गया। घोड़ा भी बच गया। यदि मैं घोड़े की पीठ पर बैठा रहता तो सम्भवतः मैं तथा वह दोनों ही नीचे चले जाते।

इसी दिन मैंने गंगा नदी तैर कर पार की। मैंने जितने हाथ मारे उन्हें गिनता गया। मैंने ३३ हाथ मार कर नदी पार कर ली और फिर बिना विश्राम किये तैर कर वापस चला आया। मैं अन्य नदियां तैर कर पार कर चुका था। केवल गंगा नदी ही पार नहीं की थी।[3]

सायंकाल की नमाज़ के समय हम गंगा-यमुना के संगम पर पहुंचे और नौकायें प्याग की ओर लगवा दीं। एक पहर तथा ४ घड़ी[4] उपरान्त (रात्रि में) शिविर में पहुंच गये।

(९ मार्च)—बुधवार (२८ जमादि उस्सानी) को प्रथम पहर से सेना ने यमुना नदी पार करनी प्रारम्भ कर दी। उस समय ४२० नौकायें थीं।

(११ मार्च)—शुक्रवार १ रजब को मैंने नदी पार की।

(१४ मार्च)—सोमवार ४ (रजब) को यमुना के किनारे किनारे बिहार की ओर यात्रा प्रारम्भ की गई। ५ कुरोह[5] की यात्रा के उपरान्त लवाएन में पड़ाव हुआ। मैंने नौका द्वारा यात्रा की। सेना वाले आज के दिन तक यमुना नदी पार करते रहे। उन्हें आदेश दिया गया कि ज़र्बज़न[6] की गाड़ियां को जो आदमपुर में नौका से उतारी गई थीं, पुनः नौका में लाद दें और प्याग से उन्हें नदी द्वारा ले जायं।

इस पड़ाव पर हमने पहलवानों में मल्ल-युद्ध कराया। दोस्त यासीन खैर का मैंने लाहौर के मल्लाह पहलवान से मल्ल-युद्ध कराया। बड़ा सख्त मुकाबला हुआ। दोस्त[7] उसे बड़ी कठिनाई से पटक सका। दोनों को सरोपा[8] प्रदान की गई।

(१५-१६ मार्च)—लोगों ने हमें बताया कि हमारे आगे दलदल तथा कीचड़ से भरी हुई तूस[9] नामक एक बड़ी खराब नदी है। घाट के निरीक्षण एवं मार्ग की मरम्मत हेतु हम दो

१ 'आराल'। यहां इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है।
२ ६-६ बजे प्रातः।
३ बाबर के नदी को तैर कर पार करने का उपर्युक्त वर्णन जो २७ जमादि उस्सानी (८ मार्च १५२६ ई०) के प्रसंग में दिया गया है, अपने स्थान पर नहीं है कारण कि उसने २५ रजब ६३५ हि० (४ अप्रैल १५२६ ई०) की घटनाओं के सम्बन्ध में लिखा है कि उसने एक वर्ष पूर्व बक्सर में गंगा नदी तैर कर पार की थी। उसे कन्नौज में भी २७ फ़रवरी के लगभग तैर कर गंगा नदी पार करने का अवसर मिला था किन्तु इस विषय पर उस वर्ष की घटनाओं में कोई उल्लेख नहीं। इस प्रकार सम्भवतः तैर कर नदी पार करने का यह वर्णन ६३४ हि० की उन घटनाओं से ही सम्बन्धित है जो नष्ट हो गई।
४ लगभग १०-३० बजे रात्रि में।
५ दस मील।
६ एक प्रकार की तोप।
७ दोस्त यासीन खैर।
८ सिर से पांव तक के वस्त्र, खिलअत।
९ टोंस। बाबर के टोंस एवं कर्मनासा के वर्णन से पता चलता है कि उसने इन नदियों को पिछले वर्ष पार नहीं किया था। उस वर्ष वह ग्वालियर से कनार घाट पर पहुँचा और वहां यमुना पार करके सीधा

दिन[1] तक उस पडाव पर ठहरे रहे। घोडो एव ऊँटो के लिए पडाव की ओर एक घाट मिल गया किन्तु लोगो ने बताया कि घाट के असमतल एव पथरीला होने के कारण भरी हुई गाडिया उसे नही पार कर सकती किन्तु उनके विषय मे आदेश हुआ कि उन्हें वही से पार कराया जाये।

(१७ मार्च)—बृहस्पतिवार (७ रजब) को हमने प्रस्थान कर दिया। मैं स्वय तूस[2] तथा गगा के सगम तक नौका द्वारा पहुचा। वहा मैं नौका से उतर पडा और फिर वहा से तूस के पडाव की ओर घोडे पर सवार होकर गया। मध्याह्नोतर की दूसरी नमाज के समय घाट को पार करके जहाँ सेना पडाव किये हुए थी पहुच गया।

आज छ कुरोह[3] की यात्रा की गई।

(१८ मार्च)—दूसरे दिन (शुक्रवार ८ रजब) को हम उस पडाव पर ठहरे रहे।

(१९ मार्च)—शनिवार (९ रजब) को हमने १२ कुरोह[4] यात्रा की और नुलीबा[5] नामक स्थान पर पुन गगा तट पर पहुच गये।

(२० मार्च)—रविवार (१० रजब) को हमने छ कुरोह[6] की यात्रा की और किन्तित नामक स्थान पर पडाव किया।

(२१ मार्च)—सोमवार (११ रजब) को प्रस्थान करके हमने नानापुर[7] मे पडाव किया। ताज खा सारगखानी इस पडाव पर अपने दो छोटे पुत्रो सहित आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

उन्ही दिनो सुल्तान मुहम्मद बख्शी के पास से एक प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ जिससे प्रामाणिक रूप से ज्ञात हुआ कि मेरे परिवार वाले एव उनका काफला[8] काबुल से प्रस्थान कर चुका है और मार्ग मे है।

(२३ मार्च)—बुधवार (१३ रजब) को हमने उस पडाव से प्रस्थान किया। मैंने चुनार के किले की सैर की और वहा से एक कुरोह[9] आगे बढ कर पडाव किया।

जिन दिनो हम प्याग से आगे यात्रा कर रहे थे मेरे शरीर पर बडे कष्टदायक फोडे निकल आये। जब हम इस पडाव पर थे, तो एक रूमी[10] ने इसका वह उपचार किया जिसका हाल ही मे रूम म पता

कन्नौज की ओर चल दिया। कन्नौज के ऊपर उसने गगा नदी पर पुल बधवाया और बागरमऊ की ओर चल दिया। गोमती पार करके घाघरा एवं सारदा के सगम के समीप पहुंचा। टोंस नाम की दो नदिया हैं—(१) दक्षिणी, (२) पूर्वी। दक्षिणी जिसका ऊपर उल्लेख हुआ है कैमूर पर्वत से निकल कर रीवा तथा इलाहाबाद जिले से होती हुई, गगा यमुना के संगम के नीचे १८ मील पर गगा म पनासा नामक स्थान पर गिरती है। दूसरी फ़ैजाबाद के पश्चिम से निकलती है और घाघरा के समानान्तर बहती हुई, बलिया के दक्षिण म दो मील पर गंगा में गिरती है।

१ मगलवार एव बुधवार, ५ ६ रजब।
२ टोंस।
३ १२ मील।
४ २४ मील।
५ सम्भवत 'नुलीबई' स्टेशन।
६ १२ मील।
७ सम्भवत 'नन्कुन पुर', पुहारी रेलवे स्टेशन के पूर्व में।
८ स्त्रियों का काफ़िला।
९ २ मील।
१० आटोमन टर्क।

लगाया गया था। उसने एक हडिया मे मिर्च उबाली। मै घाव को उसकी भाप के सामने रक्खे रहा। जब भाप बन्द हो गयी तो मैंने उसी गरम जल से घाव धोये। यह उपचार दो घंटे तक चलता रहा।

जब हम लोग इस पडाव पर थे तो किसी ने बताया कि उसने एक आराल[1] मे जो शिविर के समीप है, सिंह तथा गैंडे देखे है।

(२४ मार्च)—प्रात काल (१४ रजब) को हमने उस आराल मे शिकार का घेरा[2] तैयार कराया। हाथी भी लाये गये। न तो सिंह और न गैंडा दृष्टिगत हुआ। एक जगली भैंसा पक्ति के अन्तिम सिरे पर प्रकट हुआ।

उस समय बडी खराब आधी चल रही थी और धूल के चक्रवात बडा कष्ट दे रहे थे। मैं नौका मे लौट गया और वहा से शिविर मे, जो बनारस से दो कुरोह[3] ऊपर था, चला गया।

अफगानो के समाचार

(२५ मार्च तथा २६ मार्च)—वहा पहुच कर ज्ञात हुआ कि चुनार के समीप के एक जगल मे बहुत बडी सख्या मे हाथी पाये जाते है। मैं इस पडाव से प्रस्थान करके हाथियों का शिकार करने के विषय मे सोच रहा था कि ताज खा समाचार लाया कि महमूद खा[4] सोन नदी के समीप है। मैंने बेगों[5] को बुलवा कर उनसे उसपर तत्काल आक्रमण कर देने के विषय में परामर्श किया। अन्त मे यह निश्चय हुआ कि निरन्तर तेजी से यात्रा करते रहना चाहिये।

(२७ मार्च)—वहा से (रविवार १७ रजब को) प्रस्थान करके हमने ९ कुरोह[6] यात्रा की और बिलवा[7] घाट पर पडाव किया।

(२८ मार्च)—सोमवार १८ (रजब) की रात्रि मे इस पडाव से ताहिर को आगरा की ओर जो लोग काबुल से आ रहे थे उनके व्यय हेतु बरात[8] देकर भेजा गया।

दूसरे दिन (सोमवार) को प्रात काल मैंने नौका द्वारा यात्रा प्रारम्भ की। जब हम गोई[9] नदी, जो जूनपुर (जौनपुर) की नदी है, और गगा नदी के सगम पर पहुचे तो मैं कुछ आगे बढ गया और फिर पीछे लौट आया। यद्यपि यह नदी बडी सकरी है किन्तु इसमे कोई घाट नही है। पिछले वर्ष सेना वालो ने इसे नौका द्वारा तथा घोडो को तैरा कर पार किया था।

मैं जूनपुर नदी के एक कुरोह[10] नीचे अपने उस पडाव को देखने गया जहा से एक वर्ष पूर्व हमने जूनपुर[11] की ओर प्रस्थान किया था। बडी उत्तम वायु चलने लगी थी। हमारी बडी नौका छोटी

१ सम्भवत नदी की मोड के जंगल।
२ जींगा।
३ ४ मील।
४ महमूद खा लोदी।
५ अमीरों।
६ १८ मील।
७ सम्भवत बलुआ।
८ वह पत्र जिसके द्वारा किसी अन्य स्थान की मालगुज़ारी से धन वसूल किया जा सके।
९ गोमती।
१० दो मील।
११ सम्भवत सैयिदपुर से।

बगाली नौका के साथ जोड दी गई। जब उसके पाल खोल दिये गये तो वह तेजी से चलने लगी। जब हम पडाव[1] पर पहुँचे तो दो घडी[2] दिन शेष था। हम बिना ठहरे वहा से चल दिये और सोने के समय की नमाज़ तक शिविर मे जो मदन बनारस[3] से एक कोस ऊपर था, उन नौकाओ से बहुत पहले, जो पीछे आ रही थी, पहुच गये।

मुगूल बेग को आदेश दिया गया था कि वह चुनार से प्रत्येक पडाव के मार्ग की नाप करता जाये। लुत्फी बेग को आदेश हुआ था कि जब कभी मैं नौका से यात्रा करू तो वह नदी तट की नाप करे। आज का सीधा मार्ग ११ कुरोह[4] तथा नदी के किनारे का मार्ग १८ कुरोह[5] निकला।

(२९ मार्च)—दूसरे दिन (मगलवार १९ रजब) को हम उस पडाव पर ठहर गये।

(३० मार्च)—बुधवार (२० रजब) को हम लोग गाजीपुर के एक कुरोह[6] नीचे उतरे। मैंने नौका द्वारा यात्रा की।

(३१ मार्च)—बृहस्पतिवार (२१ रजब) को महमूद खा नोहानी उस पडाव पर मेरी सेवा म उपस्थित हुआ।

आज बिहार खा बिहारी के पुत्र जलाल खा (नोहानी), नसीर खा (नोहानी) के पुत्र फरीद खा, शेर खा सूर, अलाउल खा सूर तथा कुछ अन्य अफगान अमीरो के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये। आज अब्दुल अजीज अमीर आखूर का प्रार्थना पत्र, जो उसने लाहौर से २० जमादि-उस्सानी (२९ फरवरी) को लिखा था, प्राप्त हुआ। जिस दिन यह पत्र लिखा गया था, कराचा का हिन्दुस्तानी सेवक, जिसे हमने कालपी[7] के समीप से भेजा था, लाहौर पहुच गया था। अब्दुल अजीज ने लिखा था कि वह अन्य लोगो के साथ जिन्हें यह कार्य सौंपा गया था, मेरे परिवार वालो से नीलाब पर भेंट करने गया था। उसने उनसे ९ जमादि-उस्सानी (१८ फरवरी) को भेंट की और उनके साथ साथ चनाब तक आया। उन्हें वह वहा छोडकर लाहौर, जहा से वह पत्र लिख रहा था, पहुच गया।

(१ अप्रैल)—हमने वहा से प्रस्थान किया। मैं नौका द्वारा शुक्रवार (२२ रजब) को रवाना हुआ। मैं चौसा[8] के समीप एक वर्ष पूर्व के पडाव को देखने के लिये जहा सूर्य-ग्रहण[9] हुआ था और मैंने रोजा[10] रखा था गया। मैं नौका मे वापिस चला गया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा भी पीछे पीछे नौका द्वारा मेरे पास पहुच गया और उसके आग्रह पर माजून का सेवन किया गया।

सेना कर्मनासा नदी के तट पर पडाव किये हुए थी। हिन्दू लोग इस नदी के जल के विषय

१ सैयिदपुर।
२ सायकाल ५-१५।
३ जमानिया यह नाम अकबर के समय में अली कुली खाने जमान के नाम पर जमानिया पड़ा। यह गाजीपुर मे है।
४ २२ मील।
५ ३६ मील।
६ २ मील।
७ वह चार घट्टा से रवाना हुआ था।
८ चौसा, शाहाबाद के बक्सर सब डिवीजन म। यह कर्मनासा तथा गगा के सगम पर, बक्सर कस्बे के ४ मील दक्षिण में स्थित है।
९ यह १० मई १५२८ ई० का सूर्य ग्रहण था।
१० सूर्य ग्रहण के दिन रोजा रखना उचित बताया गया है।

मे बडी विचित्र बाते करते हैं। वे इसे पार नही करते। वे इसके दहाने के आगे नौका द्वारा गगा पार करते है। उनका दृढ विश्वास है कि यदि किसी से इस नदी का जल छू जाये तो उसका कर्म नष्ट हो जाता है। इसी विश्वास के कारण इस नदी का यह नाम पड गया।

मैं नौका पर बैठकर इस नदी के कुछ ऊपर तक गया। तदुपरान्त वापस होकर गगा के उत्तरी तट पर पहुचा और नदी तट पर नौकायें बधवा दी। वीरो ने कुछ आनन्द मगल मनाया। कुछ लोगो ने मल्ल-युद्ध किया। मुहसिन साकी[1] ने यह चुनौती दी कि, "मैं चार या पाच आदमियो से मल्ल युद्ध करूगा।" सर्व प्रथम जिससे उसने मल्ल-युद्ध किया उसे उसने पटक दिया। दूसरा शादमान था। उसने उसे (मुहसिन को) पटक दिया। मुहसिन इससे बडा लज्जित हुआ। जिन लोगो का व्यवसाय मल्ल-युद्ध था उन्होने भी उपस्थित होकर मल्ल-युद्ध किया।

(२ अप्रैल)—दूसरे दिन प्रात काल शनिवार (२३ रजब) को पहली घडी[2] के लगभग हमने कर्मनासा नदी के किसी छिछले स्थान की खोज करने के लिये आदमियो को भेजने के लिये प्रस्थान किया। मैं नदी के ऊपर एक कुरोह[3] के लगभग गया किन्तु छिछले स्थान के दूर होने के कारण नौका पर बैठ कर चौसा के नीचे शिविर मे वापस चला गया।

आज मैंने मिर्च के उपचार का पुन प्रयोग किया। इस बार पहले की अपेक्षा जल कुछ अधिक गरम था। मेरे शरीर मे इससे छाले पड गये और मुझे बडा कष्ट हुआ।

(३ अप्रैल)—आगे एक छोटी सी दलदली नदी[4] बताई जाती थी अत मार्ग की व्यवस्था हेतु हमने वहा पडाव किया।

(४ अप्रैल)—सोमवार (२५ रजब) की रात्रि मे अब्दुल अज़ीज़ के पत्र का, जिसे उसका हिन्दुस्तानी प्यादा लाया था, उत्तर लिख कर भेजा गया।

सोमवार को प्रात काल मैं जिस नौका पर सवार हुआ उसे वायु के कारण खीचा जाना था। हम बक्सर[5] के सामने के पडाव पर पहुचे। वहा पिछले वर्ष जिस स्थान पर सेना कई दिन तक ठहरी रही थी, उसे देखने गये। उस समय सेना के उतरने के लिए ४० और ५० के बीच मे जीने तैयार किये गये थे। उनमे से ऊपर के दो तो बच गये थे, शेष ज़ीने नदी ने नष्ट कर दिये थे। नौका मे वापिस होकर हमने माजून का सेवन किया। शिविर के ऊपर एक आराल[6] मे हमने नौकायें किनारे से लगवा दी और पहलवानो द्वारा मल्ल-युद्ध कराया। सोने की नमाज़ के समय मैं शिविर मे पहुचा।

पिछले वर्ष इसी पडाव पर जहा आज शिविर लगा हुआ है मैंने गगा नदी तैर कर पार की थी। कुछ लोगों ने घोडो पर सवार होकर और कुछ ने ऊट पर सवार होकर वहा सैर की। उस दिन मैंने अफीम का सेवन किया था।

१ मदिरा पिलाने वाले ने।
२ ६ बजे प्रातः।
३ दो मील।
४ सम्भवतः थोरा नदी।
५ बगाल के शाहाबाद जिले में एक कस्बा। यह गगा के दायें तट पर वाराणसी के उत्तर-पूर्व में ६२ मील पर स्थित है।
६ सम्भवतः गगा तथा थोरा नदी के मध्य का दोआब।

युद्ध की घटनायें

(५ अप्रैल)—मगलवार (२६ रजब) को प्रात काल हमने करीम बरदी, हैदर अली रिकाबदार[1] के पुत्र मुहम्मद अली तथा बाबा शेख के अधीन लगभग २०० व्यक्ति (शत्रुओं के) समाचार लाने के लिये भेजे।

इसी पडाव पर बगाले के दूत को आदेश हुआ कि वह इन तीन बातो की सूचना कराये[2] —

(६ अप्रैल)—बुधवार (२७ रजब) को यूनुस अली, जिसे मुहम्मद ज़मान मीर्जा के पास बिहार जाने के विरुद्ध कारणो का पता लगाने के लिये भेजा गया था,[3] बडा साधारण सा उत्तर लाया।

बिहार के शेखजादो के पत्रो द्वारा ज्ञात हुआ कि शत्रु वह स्थान छोड कर जा चुके हैं।

(७ अप्रैल)—बृहस्पतिवार (२८ रजब) को मुहम्मद अली जगजग के पुत्र तरदी मुहम्मद के अधीन लगभग २००० तुर्क एव हिन्दुस्तानी अमीरो के आदमी एव तर्कशबन्द[4] इस आशय से भेजे गये कि वे बिहार वालो के पास शाही प्रोत्साहन के पत्र ले जायें। ख्वाजा मुर्शिद एराकी को भी, जिसे बिहार का दीवान नियुक्त कर दिया गया था, उसके साथ कर दिया गया।

(८ अप्रैल)—मुहम्मद ज़मान मीर्जा, जिसने बिहार जाना स्वीकार कर लिया था, ने कुछ बातें शेख जैन तथा यूनुस अली द्वारा कहलवाईं। उसने कुमक की प्रार्थना की थी। तदनुसार बहुत से जवानो को उसकी कुमक के लिये आदेश दिया गया और बहुत से उसके सेवक बना दिये गये।

(९ अप्रैल)—शनिवार प्रथम शाबान को हमने उस पडाव से जहा हम तीन-चार दिन से ठहरे थे प्रस्थान कर दिया। मैं भोजपुर[5] तथा बिहिया[6] की सैर करने गया और वहा से अपने शिविर मे वापस चला आया।

मुहम्मद अली तथा अन्य लोग जो समाचार लाने के लिये भेजे गये थे, काफिरो के एक दल को मार्ग मे पराजित करके उस स्थान पर जहा सुल्तान महमूद[7] सम्भवत २००० आदमियो सहित डटा हुआ था, पहुच गये। वह हमारी सेना के अग्र भाग की सूचना पाकर अपने दो हाथियो की हत्या करके भाग खडा हुआ। वह कुछ जवानो एव एक हाथी को करावल[8] के रूप मे छोड गया। हमारे आदमियो ने

१ वह अधिकारी जो बादशाहों अथवा अमीरों के घोड़ों के साथ साथ रहता था, बादशाह अथवा अमीर को घोड़े पर बैठते समय सहायता करता था और घोड़ों की देख रेख भी करता था। शाही भोजन का प्रबन्ध करने वाले भी रिकाबदार कहलाते थे।

२ इन बातों का कोई उल्लेख नहीं। सम्भवत इस स्थान से बाबर की स्वरचित जीवनी का एक पृष्ठ नष्ट हो गया है।

३ मुहम्मद जमान मीर्जा, ख़ुरासान के बादशाह बदी उज़-ज़मान मीर्जा का पुत्र था। बाबर उसे इस समय बिहार का हाकिम बनाना चाहता था। किन्तु वह सम्भवत उसे न चाहता था। वह बाबर का जामाता था और उसका विवाह बाबर की पुत्री मासूमा बेगम से हुआ था।

४ सैनिक।

५ भोजपुर बगाल के शाहाबाद जिले में गगा के दायें तट पर स्थित है। यह बिहिया के २५ मील पश्चिम में और बक्सर के ५ मील पूर्व में है।

६ बिहिया, बगाल के शाहाबाद जिले की शाहाबाद तहसील का एक ग्राम।

७ सुल्तान महमूद लोदी।

८ सेना का वह अग्र भाग जो शत्रुओं का पता लगाने एव रसद का प्रबन्ध करने के लिये नियुक्त किया जाता है।

मे बडी विचित्र बाते करते हैं। वे इसे पार नही करते। वे इसके दहाने के आगे नौका द्वारा गगा पार करते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि यदि किसी से इस नदी का जल छू जाये तो उसका कर्म नष्ट हो जाता है। इसी विश्वास के कारण इस नदी का यह नाम पड गया।

मैं नौका पर बैठकर इस नदी के कुछ ऊपर तक गया। तदुपरान्त वापस होकर गगा के उत्तरी तट पर पहुचा और नदी तट पर नौकायें बधवा दी। वीरो ने कुछ आनन्द मगल मनाया। कुछ लोगो ने मल्ल-युद्ध किया। मुहसिन साकी[1] ने यह चुनौती दी कि, "मैं चार या पाच आदमियो से मल्ल युद्ध करूगा।" सर्व प्रथम जिससे उसने मल्ल-युद्ध किया उसे उसने पटक दिया। दूसरा शादमान था। उसने उसे (मुहसिन को) पटक दिया। मुहसिन इससे बडा लज्जित हुआ। जिन लोगो का व्यवसाय मल्ल-युद्ध था उन्होने भी उपस्थित होकर मल्ल-युद्ध किया।

(२ अप्रैल)—दूसरे दिन प्रात काल शनिवार (२३ रजब) को पहली घडी[2] के लगभग हमने कर्मनासा नदी के किसी छिछले स्थान की खोज करने के लिये आदमियो को भेजने के लिये प्रस्थान किया। मैं नदी के ऊपर एक कुरोह[3] के लगभग गया किन्तु छिछले स्थान के दूर होने के कारण नौका पर बैठ कर चौसा के नीचे शिविर मे वापस चला गया।

आज मैंने मिर्च के उपचार का पुन प्रयोग किया। इस बार पहले की अपेक्षा जल कुछ अधिक गरम था। मेरे शरीर मे इससे छाले पड गये और मुझे बडा कष्ट हुआ।

(३ अप्रैल)—आगे एक छोटी सी दलदली नदी[4] बताई जाती थी अत मार्ग की व्यवस्था हेतु हमने वहा पडाव किया।

(४ अप्रैल)—सोमवार (२५ रजब) की रात्रि मे अब्दुल अज़ीज़ के पत्र का, जिसे उसका हिन्दुस्तानी प्यादा लाया था, उत्तर लिख कर भेजा गया।

सोमवार को प्रात काल मैं जिस नौका पर सवार हुआ उसे वायु के कारण खीचा जाना था। हम बक्सर[5] के सामने के पडाव पर पहुचे। वहा पिछले वर्ष जिस स्थान पर सेना कई दिन तक ठहरी रही थी, उसे देखने गये। उस समय सेना के उतरने के लिए ४० और ५० के बीच मे जीने तैयार किये गये थे। उनमे से ऊपर के दो तो बच गये थे, शेष जीने नदी ने नष्ट कर दिये थे। नौका मे वापिस होकर हमने माजून का सेवन किया। शिविर के ऊपर एक आराल[6] मे हमने नौकायें किनारे से लगवा दी और पहलवानो द्वारा मल्ल-युद्ध कराया। सोने की नमाज के समय मैं शिविर मे पहुचा।

पिछले वर्ष इसी पडाव पर जहा आज शिविर लगा हुआ है मैंने गगा नदी तैर कर पार की थी। कुछ लोगो ने घोडो पर सवार होकर और कुछ ने ऊट पर सवार होकर वहा सैर की। उस दिन मैंने अफ़ीम का सेवन किया था।

१ मदिरा पिलाने वाले ने।
२ ६ बजे प्रात ।
३ दो मील।
४ सम्भवत थोरा नदी।
५ बगाल के शाहाबाद जिले में एक कस्बा। यह गगा के दायें तट पर वाराणसी के उत्तर पूर्व में ६२ मील पर स्थित है।
६ सम्भवत गगा तथा थोरा नदी के मध्य का दोआब।

युद्ध की घटनायें

(५ अप्रैल)—मगलवार (२६ रजब) को प्रातःकाल हमने करीम बरदी, हैदर अली रिकाबदार[1] के पुत्र मुहम्मद अली तथा बाबा शेख के अधीन लगभग २०० व्यक्ति (शत्रुओं के) समाचार लाने के लिये भेजे।

इसी पडाव पर बगाले के दूत को आदेश हुआ कि वह इन तीन बातो की सूचना कराये[2] —

(६ अप्रैल)—बुधवार (२७ रजब) को यूनुस अली, जिसे मुहम्मद जमान मीर्जा के पास बिहार जाने के विरुद्ध कारणों का पता लगाने के लिये भेजा गया था,[3] बडा साधारण सा उत्तर लाया।

बिहार के शेखजादो के पत्रों द्वारा ज्ञात हुआ कि शत्रु वह स्थान छोड कर जा चुके है।

(७ अप्रैल)—बृहस्पतिवार (२८ रजब) को मुहम्मद अली जगजग के पुत्र तरदी मुहम्मद के अधीन लगभग २००० तुर्क एव हिन्दुस्तानी अमीरो के आदमी एव तकदबन्द[4] इस आशय से भेजे गये कि वे बिहार वालो के पास शाही प्रोत्साहन के पत्र ले जायें। ख्वाजा मुर्शिद एराकी को भी, जिसे बिहार का दीवान नियुक्त कर दिया गया था, उसके साथ कर दिया गया।

(८ अप्रैल)—मुहम्मद जमान मीर्जा, जिसने बिहार जाना स्वीकार कर लिया था, ने कुछ बातें शेख जैन तथा यूनुस अली द्वारा कहलवाईं। उसने कुमक की प्रार्थना की थी। तदनुसार बहुत से जवानो को उसकी कुमक के लिये आदेश दिया गया और बहुत से उसके सेवक बना दिये गये।

(९ अप्रैल)—शनिवार प्रथम शाबान को हमने उस पडाव से जहा हम तीन चार दिन से ठहरे थे प्रस्थान कर दिया। मैं भोजपुर[5] तथा बिहिया[6] की सैर करने गया और वहा से अपने शिविर मे वापस चला आया।

मुहम्मद अली तथा अन्य लोग जो समाचार लाने के लिये भेजे गये थे, काफिरो के एक दल को मार्ग मे पराजित करके उस स्थान पर जहा सुल्तान महमूद[7] सम्भवत २००० आदमियो सहित डटा हुआ था, पहुच गये। वह हमारी सेना के अग्र भाग की सूचना पाकर अपने दो हाथियो की हत्या करके भाग खडा हुआ। वह कुछ जवानो एव एक हाथी को करावल[8] के रूप मे छोड गया। हमारे आदमियो ने

१ वह अधिकारी जो बादशाहों अथवा अमीरों के घोड़ों के साथ साथ रहता था, बादशाह अथवा अमीर को घोड़े पर बैठते समय सहायता करता था और घोड़ों की देख रेख भी करता था। शाही भोजन का प्रबन्ध करने वाले भी रिकाबदार कहलाते थे।

२ इन बातों का कोई उल्लेख नहीं। सम्भवत इस स्थान से बाबर की स्वरचित जीवनी का एक पृष्ठ नष्ट हो गया है।

३ मुहम्मद जमान मीर्जा, ख़ुरासान के बादशाह बदी उज़-ज़मान मीर्ज़ा का पुत्र था। बाबर उसे इस समय बिहार का हाकिम बनाना चाहता था। किन्तु वह सम्भवत उसे न चाहता था। वह बाबर का जामाता था और उसका विवाह बाबर की पुत्री मासूमा बेगम से हुआ था।

४ सैनिक।

५ भोजपुर बगाल के शाहाबाद जिले में गगा के दायें तट पर स्थित है। यह *बिहिया के २५ मील* पश्चिम मे और बक्सर के ५ मील पूर्व में है।

६ बिहिया, बगाल के शाहाबाद जिले की शाहाबाद तहसील का एक ग्राम।

७ सुल्तान महमूद लोदी।

८ सेना का वह अग्र भाग जो शत्रुओं का पता लगाने एवं रसद का प्रबन्ध करने के लिये नियुक्त किया जाता है।

उसके कुछ आदमियों को घोड़े से गिरा दिया और एक आदमी का सिर काट डाला। वे थोड़े से उपयोगी आदमियों को जीवित बन्दी बना लाये।

पूर्व की ओर की यात्रा की घटनायें

(१० अप्रैल)—दूसरे दिन (रविवार २ शाबान) को हमने प्रस्थान कर दिया। मैंने नौका द्वारा यात्रा की। हमारे आज के पड़ाव से मुहम्मद जमान मीर्ज़ा (अपनी सेना) को नदी[1] पार करा ले गया और किसी को भी पीछे न छोड़ा। हम इस पड़ाव पर उसके कार्यों की व्यवस्था कराने एवं उसे विदा करने के लिये ठहरे रहे।

(१३ अप्रैल)—(बुधवार ४ शाबान को) मुहम्मद जमान मीर्ज़ा को एक शाही सरोपा[2] एवं तलवार तथा पेटी, एक तीपूचाक घोड़ा तथा चत्र[3] प्रदान किया गया। *बिहार की विलायत के प्रति कृतज्ञता हेतु वह घुटनों के बल झुका।* बिहार से एक करोड़ २५ लाख को खाल्सा कर दिया गया[4] और मुर्शिद एराकी को उसकी दीवानी दे दी गई।

(१४ अप्रैल)—मैंने बृहस्पतिवार (६ शाबान) को उस पड़ाव से प्रस्थान किया और नौका में पहुंचा। मैंने पहले से आदेश दे दिया था कि नौकायें प्रतीक्षा करें। उनमें पहुंच कर मैंने आदेश दिया कि नौकाओं को एक पंक्ति में कर के बांध दिया जाये। यद्यपि सभी नौकायें नहीं एकत्र हुई थीं किन्तु जितनी भी नौकायें एकत्र हो सकी थीं वे नदी की चौड़ाई की अपेक्षा बढ़ गईं। इस प्रकार बांधने से वे चल न सकती थीं कारण कि नदी का जल कहीं छिछला तो कहीं गहरा, कहीं तेज तो कहीं मन्द था। एक घड़ियाल दिखाई पड़ा। एक भयभीत मछली इतना ऊंचा कूद गई कि वह नौका में गिर पड़ी। उसे पकड़ कर मेरे पास लाया गया।

जब हम लोग अपने पड़ाव के निकट पहुंचने लगे तो हमने नौकाओं के नाम रक्खे। एक बहुत बड़ी *नौका का, जो सांगा[5] से जिहाद के पूर्व आगरा में बनवाई गई थी और बाबरी कहलाती थी, नाम आसाइश[6]* रक्खा गया। एक नौका, जिसे आराइश खां ने बनवाया था, और मुझे इस वर्ष सेना के प्रस्थान के पूर्व भेंट किया था और जिस पर इस पड़ाव की ओर आते हुए मार्ग में हमने एक चबूतरा बनवाया था, का नाम आराइश[7] रक्खा गया। एक नौका का, जिसका आकार प्रकार बड़ा अच्छा था और जिसे जलालुद्दीन शर्की ने मुझे भेंट किया था, नाम गुजाइश[8] रक्खा गया। इसमें जो एक चबूतरा था, उसके ऊपर मैंने दूसरा चबूतरा बनवाया। एक छोटी सी नौका का, जिसमें एक चौकन्दी[9] थी और जो प्रत्येक कार्य हेतु प्रयोग में आती थी, नाम फरमाइश[10] रक्खा गया।

१ सोन नदी।
२ खिलअत।
३ मीर्ज़ा के उच्च वंश एवं बाबर के जामाता होने के कारण उसे शाही चिह्न प्रदान किये गये। बाबर पूर्व से जाने के पहले उसे उच्च अधिकार देकर जाना चाहता था।
४ बिहार की मालगुज़ारी में से १ करोड़ २५ लाख शाही खज़ाने के लिये सुरक्षित कर दिया गया।
५ राणा सांगा।
६ विश्राम सम्बधी।
७ सजावट।
८ जिसमें पर्याप्त स्थान हो।
९ एक प्रकार की कोठरी।
१० याचिका।

(१५ अप्रैल)—दूसरे दिन बुधवार (७ शावान) को हमने वही प्रस्थान न किया। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा, जिसने बिहार के लिये पूर्ण तैयारी कर ली थी और जो शिविर के एक दो कुरोह[1] आगे पड़ाव किये हुये था, आज मुझसे बिदा होने आया।

बंगाल की सेना के समाचार

बंगाल की सेना में से दो गुप्तचरों ने उपस्थित होकर बताया कि, "मख्दूमये आलम[2] के अधीन बंगाली[3], गंडक नदी के २४ स्थानों पर नियुक्त कर दिये गये हैं और वे अपनी प्रतिरक्षा का प्रबन्ध कर रहे हैं। उन लोगों ने अफ़ग़ानों[4] को, जो अपने परिवार (गंगा ?) नदी से पार कराना चाहते थे, रोक दिया है और वे अब उन लोगों के पास पहुंच गये हैं।"[5] इस समाचार से युद्ध छिड़ जाने की शंका हो गई। हमने मुहम्मद जमान मीर्ज़ा को रोक लिया और शाह सिकन्दर को ३००-४०० आदमियों सहित बिहार की ओर भेज दिया।

पूर्व की ओर की यात्रा की घटनायें

(१६ अप्रैल)—शनिवार (८ शावान) को दूदू तथा उसके पुत्र जलाल खां बिन (पुत्र) बिहार[6] खां के पास से एक आदमी आया। उसे[7] बंगाली ईर्ष्या की दृष्टि से देख रहे थे।[8] यह सूचना देकर कि वे लोग आ रहे हैं, उसने बताया कि बंगालियों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये उन्होंने थोड़ा बहुत युद्ध किया और नदी पार करके बिहार[9] पहुंच गये। अब बताया जाता है कि वे मेरी ओर अधीनता स्वीकार करने हेतु अग्रसर हो रहे है।

आज बंगाल के दूत इस्माईल मीता को, उन तीन बातों के विषय में जिनके बारे में पत्र लिख कर भेजे जा चुके थे, यह आदेश दिया गया कि वह (नुसरत शाह) को लिखे कि उत्तर आने में बड़ा विलम्ब हो रहा है। यदि (नुसरत शाह) हमारे प्रति निष्ठावान् एवं आज्ञाकारी है तो उत्तर शीघ्र आना चाहिये।

(१७ अप्रैल)—रविवार (९ शावान) की रात्रि में एक आदमी तरदी मुहम्मद जगजग के

१ २ ४ मील।
२ नुसरत शाह के अधीन हाजीपुर का हाकिम।
३ बंगाल राज्य की प्रजा। इनमें बिहारी एवं पूर्बिये भी रहे होंगे।
४ सुल्तान महमूद के अधीनस्थ अफ़ग़ानों को।
५ अफ़ग़ान और बंगाली मिल गये हैं।
६ सुल्तान मुहम्मद शाह नोहानी अफ़ग़ान, बिहार का हाकिम जिसकी मृत्यु १५२८ ई० में हुई। उसने फ़रीद ख़ाँ सूर (शेर शाह) को शासन प्रबन्ध को सीखने का अवसर दिया था। उसने उसे अपने पुत्र का, जो बाल्यावस्था में था, नायब नियुक्त कर दिया था। वह सुल्तान मुहम्मद शाह नोहानी के बाद भी इस पद का कार्य भार ग्रहण किये रहा। दूदू, जलाल ख़ाँ की माता, भी फ़रीद की सहायता करती थी।
७ नुसरत शाह को।
८ इस वाक्य का अर्थ अधिक स्पष्ट नहीं। किन्तु इसका तात्पर्य यह है कि नुसरत शाह उन लोगों को रोके हुये था।
९ बिहार बिहार कस्बा पटना (बिहार) नगर से ३७ मील पर स्थित है। अब यह उजड़ गया है।

पास से यह समाचार लाया कि जब बुधवार ५ शाबान को उसके करावल[1] इस ओर से बिहार पहुचे तो उस स्थान का शिकदार दूसरी ओर के एक फाटक से भाग गया।

रविवार को प्रात काल हमने प्रस्थान कर दिया और आरी[2] नामक परगने मे पडाव किया।

सधि की वार्ता

इस पडाव पर यह समाचार प्राप्त हुये कि खरीद[3] की सेना १००-१५० नौकाओ सहित सरयू एव गगा के सगम के निकट सरयू नदी के उस पार ठहरी हुई है। क्योकि हममे तथा बगाली[4] म एक प्रकार की सन्धि थी, अत इस प्रकार के कार्यों मे हम कल्याण की दृष्टि से शाति के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। यद्यपि उसने इस समय धृष्टता प्रदर्शित की और मार्ग मे आकर बैठ रहा[5] किन्तु हमने अपने प्राचीन नियम के कारण मुल्ला मजहब को बगाले के दूत इस्माईल मीता के साथ इस आशय से भेजा कि वे एक बार फिर उन तीनो बातो के उत्तर के लिये आग्रह करें।

(१८ अप्रैल)—सोमवार (*१० शाबान*) *को जब बगाल का दूत मरी सेवा मे उपस्थित हुआ* तो उसे विदा कर दिया गया और उसे बता दिया गया कि हम शत्रुओ को नष्ट करने के लिये इधर उधर जाते रहगे किन्तु तुम्हारे राज्य के किसी भाग को कोई हानि न पहुचेगी। उन तीन बातो मे से एक बात यह थी कि जब तुम लोग खरीद की सेना को वह मार्ग छोड कर जिस पर हम यात्रा कर रहे हैं हट जाने का आदेश दे दोगे तो हम कुछ तुर्कों को इस आशय से उस सेना के साथ कर देंगे कि वे खरीद की सेना वालो को तसल्ली देकर उन्हे उनके स्थान पर पहुचा दें। यदि वे घाट न छोडेंगे और अपनी अनुचित बातो को न त्यागेंगे तो फिर उन्हे यह समझ लेना चाहिये कि यदि इसके कारण उन्हे कोई हानि होगी अथवा कोई कष्ट होगा तो इसका उत्तरदायित्व उनकी बातो एव आचरण पर होगा।

(२० अप्रैल)—बुधवार (१२ शाबान) को प्रथानुसार बगाल के दूत को खिलअत पहना कर तथा इनाम देकर विदा कर दिया गया।

(२१ अप्रैल)—बृहस्पतिवार (१३ शाबान) को शेख जमाली को दूदू एव उसके पुत्र जलाल खा के पास प्रोत्साहन-युक्त फरमान देकर भेजा गया।

आज माहीम का एक सेवक उपस्थित हुआ। वह वाली[6] से बागे सफा के उस ओर विदा हुआ होगा।

(२३ अप्रैल)—शनिवार (१५ शाबान) को एराक के राजदूत, मुराद काजार से भट की गई।

(२४ अप्रैल)—रविवार (१६ शाबान) को मुल्ला मजहब को प्रथानुसार स्मरणार्थक चिह्न[7] दे कर बिदा कर दिया गया।

१ सेना के अग्र भाग वाले जो शत्रुओं का पता लगाने के लिये आगे आगे जाते हैं।
२ आरा बिहार प्रान्त का जिला।
३ बलिया जिले का एक परगना।
४ नुसरत शाह।
५ नुसरत शाह की शत्रता का स्पष्ट वर्णन।
६ यह शब्द स्पष्ट नहीं। कुछ अनुवादकों ने इसे दीपाली पढा है किन्तु हुई की पाडुलिपि में स्पष्ट रूप से 'वाली' लिखा है।
७ यादगारलार (तुर्की) यादगारीहाये।

(२५ अप्रैल)—सोमवार (१७ शाबान) को खलीफा को अन्य बेगों[1] के साथ यह पता लगाने के लिये भेजा गया कि नदी[2] कहा पार की जा सकती है।

(२७ अप्रैल)—बुधवार (१९ शाबान) को खलीफा को पुन दो नदियों[3] के मध्य म पडाव देखने के लिये भेजा गया।

इसी दिन मैं दक्षिण की ओर आरी[4] परगने में, आरी के समीप नील कमल देखने गया। सैर के समय शेख गूरन मेरी सेवा मे कमल के ताजे बीज लाया। वे बडे ही उत्तम छोटे छोटे और पिस्ते के समान थे। इसके फूल को हिन्दुस्तानी लोग कवल किकरी तथा बीज को दूदा कहते हैं।

लोगो ने बताया कि सोन (नदी) वहा से निकट ही है। हम लोग वहा जी बहलाने के लिये पहुचे। सोन नदी के उतार की ओर वृक्षो का जगल खडा था। लोगो ने बताया कि, "वही मुनेर है जहा शेख शरफुद्दीन मुनेरी के पिता शेख यहया की कब्र है।[5]" क्योकि वह (स्थान) अत्यधिक निकट था अत मैं सोन नदी पार करके उसके उतार की ओर दो-तीन कुरोह[6] तक गया। मैंने मुनेर के बागो की सैर की और मजार का तवाफ[7] करके सोन नदी के तट पर वापस आ गया। वहा स्नान करके मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज समय के कुछ पूर्व पढ ली और शिविर की ओर चल दिया। हमारे कुछ घोड मोटे हो जाने के कारण पीछे ही रह गये थे। कुछ थक चुके थे। हमने कुछ लोगो को वहा इस आशय से नियुक्त कर दिया कि वे उन्ह एकत्र करके आराम दे कर जल्दी किये बिना ले आयें। यदि यह उपाय न किया गया होता तो बहुत से घोडे नष्ट हो जाते।

जब हम मुनेर से वापस होने लगे तो मैंने आदेश दिया कि कोई यह नापे कि सोन-तट से शिविर तक कितने घोडे के कदम होते हैं। २३,१०० कदम निकले जो मनुष्य के ४६,२०० कदम तथा ११½ कुरोह[8] के बराबर होते हैं। मुनेर से सोन की दूरी आधा कुरोह[9] है। मुनेर से शिविर तक की वापसी की यात्रा मे १२ कुरोह[10] हुये। इसके अतिरिक्त इधर उधर सैर करने मे हमने १५-१६ कुरोह[11] यात्रा की। इस प्रकार लगभग ३० कुरोह[12] की यात्रा की गई। जब हम शिविर मे पहुचे तो रात्रि के पहले पहर की छ घडिया[13] समाप्त हो चुकी थी।

१ अमीरों।
२ गगा नदी।
३ गगा तथा घाघरा।
४ आरा।
५ शेख शरफुद्दीन यहया मुनेरी बिहार के बड़े प्रसिद्ध सत थे। वे तथा उनके बड़े भाई शेख जलालुद्दीन शेख नज्मुद्दीन फ़िरदौसी के शिष्य थे। शरफ़ुद्दीन शेख निज़ामुद्दीन औलिया के समकालीन थे। उनके पत्रों का संग्रह सूफ़ियों के सिद्धान्त के ज्ञान का बड़ा उत्तम साधन है। उनकी मृत्यु ७८१ हि० (१३७९ ई०) में हुई और उनका मजार सोन तथा गंगा के संगम पर स्थित है। उनके पिता शेख यहया का मज़ार मुनेर कस्बे में है।
६ ४-६ मील।
७ एक प्रकार की परिक्रमा।
८ २३ मील।
९ १ मील।
१० २४ मील।
११ ३०-३२ मील।
१२ ६० मील।
१३ लगभग सवा आठ बजे रात।

प्रस्थान किया और एक कुरोह[1] यात्रा करके नदी के संगम के निकट रणक्षेत्र में उतर पड़े[2]। मैं स्वयं उस्ताद अली कुली द्वारा फिरंगी एवं ज़र्बज़न चलाने का तमाशा देखने चला गया। उसने आज दो नौकाओं को फिरंगी के पत्थरों के निशाने से तोड़ कर डुबा दिया। मुस्तफ़ा ने भी अपनी ओर से यही किया। मैंने बड़ी तोप को रण-क्षेत्र मे पहुचवाया और मुल्ला गुलाम को आदेश दिया कि वह उसके लगाने के लिये उचित स्थान की व्यवस्था कराये। कुछ यसावलों[3] एवं जवानों को उसकी सहायतार्थ नियुक्त किया। वहा से वापस होकर मैं शिविर के सामने एक टापू मे पहुचा और माजून का सेवन किया।

माजून की तरंग मे मैंने नौका को शिविरो के निकट ले जाने का आदेश दिया और वहीं सो गया। रात्रि मे एक विचित्र घटना घटी। रात्रि के तीसरे पहर के करीब नौका वालो ने शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया। सेवक तथा अन्य लोग नौका से लकड़ियो के टुकड़े निकाल-निकाल कर, "मारो-मारो" चिल्लाने लगे। शोर का कारण यह था कि एक पहरेदार की, जो 'आसाइश' के समीप (जिसमे मैं सो रहा था) 'फरमाइश' मे था, ऊंघ जाने के उपरान्त आंख खुल गई। उसने देखा कि कोई व्यक्ति 'आसाइश' की ओर हाथ बढ़ा कर चढ़ रहा है। लोग उस पर टूट पड़े। उसने डुबकी लगाई और बाहर निकल कर एक पहरेदार को घायल करके नदी के उस पार भाग गया।

इससे पूर्व एक रात्रि मे जब हम लोग मुनेर से लौट कर आये थे, तो एक-दो पहरेदारो ने नौकाओ के समीप से कई हिन्दुस्तानियों का पीछा किया था और उनकी दो तलवारें तथा एक कटार ले आये थे। परमेश्वर मुझे अपनी रक्षा मे रक्खे हुये था।

छन्द

"यदि संसार भर की तलवारें अपने स्थान से चलें,
तो जब तक ईश्वर की इच्छा न होगी, वे एक नस को भी न काट सकेंगी।

(४ मई)—बुधवार (२५ शाबान) को प्रात काल मैं 'गुंजाइश' नामक नौका मे बैठ कर उस स्थान पर पहुचा जहा से पत्थर दागे जा रहे थे और प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी कार्य हेतु नियुक्त किया।

युद्ध

ऊगान बीरदी मुग़ल के अधीन लगभग १००० आदमी देकर उसे इस आशय से भेजा गया कि एक-दो-तीन कुरोह[4] चढ़ाव की ओर जिस प्रकार सम्भव हो (सरयू) नदी पार कर ले। अस्करी के शिविर के सामने से बहुत बड़ी संख्या मे (बंगाली) पदाती[5] २०-३० नौकाओं द्वारा नदी के पार (ऊगान बीरदी) के मार्ग मे सम्भवत अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिये उतर पड़े[6] किन्तु ऊगान बीरदी तथा उसके

१ दो मील।
२ जिस स्थान पर अली कुली था।
३ जो बादशाहों के आदेश पहुँचाता एवं उनका पालन कराता है। इस स्थान पर बेलदारों एवं कहारों के अधीक्षक से तात्पर्य है।
४ २-४-६ मील।
५ नुसरत शाह की सेना के पदाती।
६ इससे पता चलता है कि अस्करी हल्दी घाट पर संगम के उस स्थान से जहा अली कुली अपना मोर्चा लगाये था दूर न था। यह स्थान मुख्य बंगाली सेना के ऊपर था।

आदमियों ने उन पर आक्रमण करके उन्हे भगा दिया। कुछ लोगों को बन्दी बना कर उनकी हत्या करा दी। कुछ लोगों को उन्होंने बाणों का लक्ष्य बना दिया और ७-८ नौकाओ पर अधिकार जमा लिया।

आज बगालियों ने कुछ नौकाओं मे बैठ कर मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की ओर नदी पार की और नौकाओं से उतर कर युद्ध किया। जब उन पर आक्रमण किया गया तो वे भाग गये। आदमियों से भरी हुई तीन नौकायें डूब गईं। एक नौका को पकड कर मेरे पास लाया गया। इस झडप में बाबा चुहरा ने अग्रसर होकर कुशलतापूर्वक युद्ध किया।

यह आदेश दिया गया कि रात के अधेरे मे उन नौकाओ को जिन्हे ऊगान बीरदी ने पकडा है, खिचवा कर नदी के चढाव की ओर ले जाया जाये और मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, यक्का ख्वाजा, यूनुस अली, ऊगान बीरदी तथा अन्य लोग जिन्हे इनके साथ जाने का इससे पूर्व आदेश हुआ है, नदी पार करें।

आज अस्करी के पास से एक आदमी ने आकर सूचना दी कि उसने नदी पार कर ली है और कोई भी पीछे नही छूटा है और वह कल अर्थात् बृहस्पतिवार को शत्रुओ पर प्रात काल आक्रमण करेगा। इस पर जिन लोगो को नदी पार करने का आदेश हुआ था, उन्हे हुक्म दिया गया कि वे अस्करी के पास पहुच जायें और उसके साथ मिल कर शत्रु पर आक्रमण करें।

मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय ऊस्ता के पास से एक आदमी ने आकर सूचना दी कि, 'पत्थर तैयार हो गया है। क्या आदेश होता है ?" मैंने आदेश दिया कि इस पत्थर को चला दिया जाये और मेरे पहुचने तक दूसरा तैयार कर लिया जाये। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय मैं एक छोटी सी बगाली नौका पर बैठ कर उस स्थान पर पहुचा जहा मुलजार[1] की व्यवस्था की गई थी। ऊस्ता द्वारा एक बहुत बडा पत्थर दागा गया और छोटे-छोटे पत्थर 'फिरगी' द्वारा दागे गये। बगाली लोग अपनी आतशबाज़ी[2] के लिये बडे प्रसिद्ध हैं। हमने उसका निरीक्षण किया। वे किसी स्थान को लक्ष्य बना कर अग्नि नही फेंकते अपितु बिना कुछ देखे भाले अधाधुध अग्नि फेंकते रहते हैं।

इसी मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय आदेश हुआ कि शत्रु के मोर्चे के सामने नदी के चढाव की ओर कुछ नौकायें खीच लाई जायें। कुछ नौकायें बिना कोई भय अथवा शरण की चिन्ता किये हुए खींच लाई गईं। ईसान तीमूर सुल्तान तथा तुख्ता बूगा सुल्तान को आदेश दिया गया कि वे लोग उस स्थान पर जहा नौकायें पहुच गई हैं, ठहरे रहें और नौकाओ की रक्षा करते रहे। बृहस्पतिवार की रात्रि में पहले पहर मैं शिविर मे वापस चला आया।

आधी रात के लगभग (ऊगान बीरदी की) नौकाओं से, जो चढाव की ओर ले जाई जा रही थी, समाचार प्राप्त हुये कि, "जो सेना युद्ध हेतु नियुक्त हुई थी, वह कुछ आगे बढ गई थी। हम लोग नौकाओ को खिचवाते हुये उनके पीछे-पीछे जा रहे थे। बगालियों को यह पता चल गया कि हम उन्हे किस स्थान पर खिचवा रहे है। उन्होंने हम पर आक्रमण कर दिया। एक मल्लाह के एक पत्थर लगा और उसका पाव टूट गया। हम लोग नदी न पार कर सके।"

(५ मई)—बृहस्पतिवार (२६ शाबान) को प्रात काल उन लोगो के पास से जो मुलजार मे थे, समाचार प्राप्त हुये कि, "चढाव के ओर की समस्त नौकायें आ गई हैं।[3] शत्रु घोडों पर सवार हो कर

१ रक्षा के लिये रोक।
२ सम्भवत अग्नि बाण इत्यादि।
३ सम्भवत यह नौकायें जो अँधेरे में न पार कर सकी थीं।

पिता मारूफ[1] से दो बार युद्ध करके उसे पराजित कर दिया था। जिस समय सुल्तान महमूद लोदी ने विश्वासघात द्वारा विहार पर अधिकार जमा लिया और शेख बायज़ीद एवं बिबन ने उसका विरोध किया, तो शाह मुहम्मद के लिये उनका साथ देने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया किन्तु उस समय भी जब लोग उसके विषय में नाना प्रकार की बातें कहा करते थे, उसने मुझे निष्ठा प्रदर्शित करते हुये पत्र लिखे। जब अस्करी ने हल्दी नामक घाट पार कर लिया तो शाह मुहम्मद तत्काल एक सेना सहित उसकी सेवा में उपस्थित हुआ और उसके साथ बंगालियों से युद्ध करने गया। अब वह इस पड़ाव पर मेरी सेवा में उपस्थित हुआ।

इन दिनों में निरन्तर यह समाचार प्राप्त होते रहे कि बिबन तथा शेख बायज़ीद सरयू नदी पार करने के विषय में सोच रहे है।

इसी बीच में सम्बल[2] से एक आश्चर्यजनक समाचार प्राप्त हुआ। अली यूसुफ उस स्थान को सुव्यवस्थित करने के लिये नियुक्त किया गया था। उसके विषय में ज्ञात हुआ कि उसकी तथा एक हकीम की, जो उसका मित्र था, एक ही दिन मृत्यु हो गई। अब्दुल्लाह (किताबदार)[3] को सम्बल जाकर, उसे सुव्यवस्थित करने का आदेश हुआ।

(१३ मई)—शुक्रवार ५ रमज़ान को अब्दुल्लाह को सम्बल के लिये विदा किया गया।[4]

पश्चिम दिशा के समाचार

उन्ही दिनो चीन तीमूर सुल्तान का एक प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि मेरे परिवार की काबुल से यात्रा के कारण बहुत से बेग[5], जो उसकी सहायतार्थ नियुक्त हुये थे, उसके पास न पहुंच सके। उसने मुहम्मदी एवं अन्य बेगों तथा वीरों को साथ लेकर लगभग १०० कुरोह[6] की यात्रा कर के बिलोचियों पर आक्रमण किया और उन्हें बुरी तरह पराजित कर दिया। अब्दुल्लाह किताबदार द्वारा सुल्तान को आदेश भेजे गये कि वह, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, मुहम्मदी तथा उस देश के कुछ बेग लोग एवं वीर आगरा में एकत्र हों और वहां जिस दिशा में भी कोई शत्रु प्रकट हो उस दिशा में आक्रमण हेतु तैयार रहें।

बिहार तथा जौनपुर की व्यवस्था

(१६ मई)—सोमवार (८ रमज़ान) को दरिया खां का पौत्र जलाल खां जिसे बुलाने के लिये शेख जमाली गया हुआ था, अपने विश्वस्त अमीरों के साथ मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। यहया नोहानी

१ बायज़ीद तथा मारूफ़ फ़र्मुली भाई-भाई थे। बायज़ीद ९३२ हि० (१५२६ ई०) में बाबर की सेवा में प्रविष्ट हो गया था। ९३४ हि० (१५२७ ई०) में उसने बाबर का विरोध प्रारम्भ कर दिया और कन्नौज के समीप उससे युद्ध करने के लिये डट गया। मारूफ़ जो सुल्तान इब्राहीम लोदी का दीर्घ-काल से विरोध कर रहा था, बाबर से न मिला था। उसके दो पुत्र मुहम्मद एवं मूसा, बाबर से मिल गये थे।
२ सम्भल।
३ पुस्तकालयाध्यक्ष।
४ वह 'तीर मुहानी' नामक स्थान से विदा हुआ था।
५ अमीर।
६ २०० मील।

भी उपस्थित हुआ। वह इससे पूर्व अपने छोटे भाई को भेज कर आज्ञाकारिता प्रदर्शित कर चुका था और उसके प्रोत्साहन हेतु उसकी सेवायें स्वीकार करते हुए एक फरमान भेजा जा चुका था। क्योकि ७-८ हजार नोहानी अफगान आशा ले कर आये थे अत उन्हे निराश न करने की दृष्टि से बिहार मे से एक करोड को खालसा बना कर मैंने ५० लाख महमूद खा नोहानी को प्रदान कर दिया। बिहार की शेष मालगुजारी उपर्युक्त जलाल खा को प्रदान कर दी गई। उसने एक करोड राज-कर के रूप मे अदा करना स्वीकार किया। मुल्ला गुलाम यसावल को इस राज-कर के वसूल करने के लिये भेजा गया। मुहम्मद जमान मीर्जा ने जूनपुर (जौनपुर) की विलायत प्राप्त की।[1]

नुसरत शाह से सन्धि

(१९ मई)—बृहस्पतिवार (११ रमजान) की रात्रि मे गुलाम अली नामक खलीफा का एक सेवक जो मुगेर[2] के शाहजादा अबुल फतह[3] के एक सेवक के साथ, इस्माईल मीता के पूर्व तीन शर्तो को पहुचाने के लिये गया था, अबुल फतह के साथ, शाहजादा एव हुसेन खा लसकर[4] वजीर द्वारा लिखे हुये खलीफा के नाम पत्र लाया। उन पत्रो मे उन तीनो शर्तों को स्वीकार करते हुए नुसरत शाह की ओर से पूर्ण रूप से आश्वासन दिलाते हुये सन्धि की प्रार्थना की गई थी। क्योकि इस अभियान का उद्देश्य विद्रोही अफगानो का दमन था, जिनमे से कुछ तो नष्ट हो गये थे, कुछ ने अधीनता स्वीकार कर ली थी और शेष थोडे से बगाली[5] पर अवलम्बित हो चुके थे, जिनका उत्तरदायित्व उसने ले लिया था, और वर्षा भी निकट आ चुकी थी अत हमने उपर्युक्त शर्तों पर सन्धि करना स्वीकार करके उसे लिख कर भिजवा दिया।

अन्य अमीरो का अधीनता स्वीकार करना

(२१ मई)—शनिवार (१३ रमजान) को इस्माईल जलवानी, अलाउल खा नोहानी, औलिया खा इशराकी तथा ५-६ अमीर आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुये।

मुगुल अमीरो को इनाम

आज ईसान तीमूर सुल्तान तथा तूख्ता बूगा सुल्तान को पेटी सहित तलवार तथा कटार, कवच, खिलअत तथा तीपूचाक घोडे प्रदान किये गये। ईसान तीमूर सुल्तान को नारनोल[6] परगने से ३६ लाख तथा तूख्ता बूगा सुल्तान को शम्साबाद से ३० लाख प्रदान किये गये जिसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये वे घुटनो के बल झुके।

बायजीद तथा बिबन का पीछा

(२३ मई)—सोमवार १५ (रमजान) को हमने कूदवह के पडाव से, जो सरयू नदी तट पर था,

१ जुनैद बरलास इससे पूर्व जौनपुर का हाकिम था।
२ मुगेर : गगा के दक्षिणी तट पर स्थित बिहार का एक जिला।
३ नुसरत शाह का एक पुत्र।
४ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
५ नुसरत शाह।
६ पटियाला में, चोलक नदी के तट पर रिवाड़ी से २७ मील पर स्थित है।

प्रस्थान किया। हम बिहार तथा बंगाल की ओर से सन्तुष्ट हो गये थे और विश्वासघाती बिबन तथा शेख बायज़ीद को कुचलने का संकल्प कर लिया था।

(२५ मई)—बुधवार (१७ रमज़ान) को मार्ग में दो रात्रि पड़ाव कर के हम लोग सिकन्दरपुर में चौपारा[1]-चतुरमूक[2] नामक सरयू के घाट पर उतरे। आज से लोगों ने नदी पार करनी प्रारम्भ कर दी।

क्योंकि यह समाचार निरन्तर प्राप्त होने लगे कि विश्वासघाती सरयू तथा गोगर[3] को पार कर के लखनऊ की ओर जा रहे हैं अतः निम्नांकित अमीरों को उनका घाट रोकने के लिये नियुक्त किया गया—जलालुद्दीन शर्की के अधीन तुर्क तथा हिन्द (के) अमीर, अली खां फर्मुली, तरदीका[4], ब्याना का निज़ाम खां, तूलमीश ऊज़बेग, चीर्न का कुर्बान, (भीरा के) दरिया खां का पुत्र हसन खां। उन लोगों को बृहस्पतिवार की रात्रि में जाने की अनुमति दे दी गई।

बाबर नामा की पाडुलिपि को हानि

उसी रात्रि में एक पहर तथा ५ घड़ी[5] उपरान्त, जब तरावीह[6] समाप्त हो चुकी थी क्षणभर उपरान्त एक बहुत बड़ा तूफान आ गया। वर्षा ऋतु के गहरे काले बादल आकाश पर छा गये और इतनी जोर की हवा चली कि केवल थोड़े से ही खेमे खड़े रह सके। मैं खरगाह[7] में कुछ लिखने जा रहा था। मुझे कागज़ तथा लिखे हुये खंड[8] को एकत्र करने का भी अवसर न मिल सका और खरगाह पेशखाना[9] सहित मेरे सिर पर गिर पड़ा। तूगलूक[10] टुकड़े टुकड़े हो गया। ईश्वर की कृपा से मैं बच गया और मुझे कोई हानि न पहुंची। पुस्तक के खंड जल में बुरी तरह भीग गये और बड़ी कठिनाई से एकत्र किये जा सके। हमने उन्हें सिंहासन के ऊनी कालीन की तहों के बीच में करके सिंहासन पर रख दिया और ऊपर से बहुत से कम्बल लाद दिये। तूफान लगभग दो घड़ी[11] में शान्त हो गया। सोने वाला खेमा लगा दिया गया। एक दीपक जला दिया गया और बड़ी कठिनाई से आग जलाई जा सकी। हम लोग प्रातःकाल तक न सोये, और वरकों तथा खंडों को सुखाते रहे।

बिबन एवं बायज़ीद का पीछा

(२६ मई)—मैंने बृहस्पतिवार (१८ रमज़ान) को प्रातःकाल नदी पार की।

१ आधुनिक छपरा, घाघरा के बायें तट पर।
२ सिकन्दरपुर की ओर चतुरमुक है।
३ घाघरा।
४ तरदी यक्का।
५ लगभग रात्रि के १०-५५ पर।
६ तरावीह—रमज़ान मास की वह नमाज़ जो रात्रि में पढ़ी जाती है और जिसमें क़ुरान शरीफ़ सुनाया जाता है।
७ वह बड़ा ख़ेमा जिसमें दरबार इत्यादि भी हो सके।
८ सम्भवतः लिखने के काग़ज़ एवं 'बाबर नामा' की पाडुलिपि के खंड। 'बाबर नामा' में ६३४ हि० तथा ६३५ हि० एवं इनके पूर्व की घटनाओं का जो हाल नहीं मिलता, वे सम्भवतः इसी तूफ़ान में नष्ट हो गये होंगे।
९ आगे का कक्ष।
१० ख़ेमे की छत का वह भाग जहां से हवा एवं रोशनी आती है अथवा धुँवां निकल सकता है।
११ ४५ मिनट।

(२७ मई)—शुक्रवार (१९ रमजान) को मैं सिकन्दरपुर तथा खरीद[1] की सैर करने गया। आज अब्दुल्लाह् (किताबदार)[2] एव बाकी के पत्रो से लकनूर[3] की विजय के बारे मे ज्ञात हुआ।

(२८ मई)—शनिवार (२० रमजान) को कूकी को एक सेना सहित बाकी के पास पहुच जाने के लिये आगे भेज दिया गया।

(२९ मई)—रविवार (२१ रमजान) को सुल्तान जुनैद बरलास, खलीफा के पुत्र हसन, मुल्ला अपाक के सेवको एव मोमिन अत्का के बडे और छोटे भाई को इस आशय से विदा किया गया कि वे बाकी के पास पहुच कर मेरे पहुचने तक जो कुछ वे कर सकें उसमे कमी न करें।

आज मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के उपरान्त एक खिलअत एव एक तीपूचाक घोडा मारुफ फर्मुली के पुत्र शाह मुहम्मद को प्रदान किया गया और उसे विदा कर दिया गया। पिछले[4] वर्ष की भाति सारन तथा कूदला[5] को तर्कशबन्दो की व्यवस्था हेतु उसे प्रदान किया गया। इस्माईल जलवानी को भी सरवार मे से ७२ लाख[6] वजह के रूप मे तथा एक तीपूचाक घोडा प्रदान किया गया और उसे विदा कर दिया गया।

'गुजाइश' एव 'आराइश' नामक नौकाओ के विषय मे बगालियो से यह निश्चय हुआ कि वे लोग उन्हें तीर मुहानी के मार्ग से गाजीपुर ले जायें। 'आसाइश' तथा 'फरमाइश' नामक नौकाओं के विषय मे आदेश हुआ कि शिविर के साथ साथ उन्हें सरयू के चढाव पर ले जाया जाये।

(३० मई)—सोमवार (२२ रमजान) को हमने चौपारा-चतुरमूक घाट से सरयू के किनारे-किनारे प्रस्थान किया। हम लोग बिहार तथा सरवार की ओर से निश्चिन्त हो गये थे।[7] लगभग १० कुरोह यात्रा करके हम लोग सरयू पर स्थित किलीरह्[8] नामक ग्राम मे, जो फतहपुर[9] के अधीन है उतरे।

९३४ हि० के वर्णन का एक अंश[10]

उस स्थान पर कुछ दिन आनन्द-मगल मनाते हुए व्यतीत करके मैंने गाजीपुर की ओर प्रस्थान

१ सिकन्दरपुर के दक्षिण पूर्व में लगभग ४ मील पर।
२ पुस्तकालयाध्यक्ष।
३ सम्भवत लखनौर।
४ ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०)।
५ सम्भवत कंदला' अथवा 'सारन खास'।
६ अर्सकिन के अनुसार १८,००० पौंड।
७ इससे पूर्व बाबर लिख चुका है कि वह बिहार तथा बगाल की ओर से निश्चिंत हो चुका है। उसे यह सफलता महमूद लोदी एवं नुसरत शाह की विजय के कारण प्राप्त हुई थी। बिहार में भी उसे नोहानियों को हटाने एव अन्य अफ़गानों, जलवानियों तथा फ़र्मुलियों को बसाने मे सफलता प्राप्त हो गई थी। फ़र्मुली शेखज़ादे बाबर के काबुल के फ़र्मूल नामक स्थान के मूल निवासी थे।
८ यह नाम स्पष्ट नहीं।
९ बाबर के इस मार्ग में फ़तहपुर नामक कोई स्थान नहीं मिलता। सम्भवत यह 'नथ पुर' अथवा 'नाथ पुर' हो जो आज़मगढ जिले में है।
१० यह भाग ९३४ हि० (१५२८-२९ ई०) की उन घटनाओं से सम्बन्धित है जिनका वर्णन अब कहीं नहीं मिलता और सम्भवत नष्ट हो चुका है। यह वर्णन सम्भवत अवध का ही है।

करने का आदेश दिया। उस स्थान पर उद्यान, बहता हुआ जल, भली भांति निर्मित भवन, वृक्ष विशेष रूप से आम के वृक्ष एवं रंग बिरंगे पक्षी पाये जाते थे।

इस्माईल खां जलवानी तथा अलाउल खां नोहानी ने मुझसे निवेदन किया कि वे अपने वतन से होकर आगरा पहुंच जायेंगे। इसपर उन्हें आदेश दिया गया कि इस विषय मे एक मास उपरान्त हुक्म दिया जायेगा।

सैनिकों का मार्ग भूल जाना

(३१ मई)—जो लोग इससे पूर्व (मंगलवार २३ रमज़ान) को प्रस्थान कर चुके थे, वे मार्ग भूल गये और फतहपुर[1] की बड़ी झील पर पहुंच गये। कुछ लोगो को इस आशय से दौड़ाया गया कि वे उन लोगों को जो निकट हो, वापस लौटा लायें। कीचीक ख्वाजा को आदेश दिया गया कि वह झील के तट पर रात्रि व्यतीत करे और शेष लोगो को दूसरे दिन प्रातःकाल शिविर मे ले आये। हमने प्रातःकाल प्रस्थान किया। मैं आधी दूर तक 'आसाइश' मे गया और फिर अपने शिविर के पास नदी के चढ़ाव पर उसे खिंचवा कर पहुंचवा दिया।

बिबन तथा बायज़ीद द्वारा एक किले पर अधिकार

मार्ग मे खलीफा, शाह मुहम्मद दीवान के पुत्र को, जो बार्का के पास से आया था लाया। उसके द्वारा लकनूर[2] के विश्वस्त समाचार ज्ञात हुये। उन लोगो (बिबन एवं बायज़ीद) ने शनिवार १३ रमज़ान (२१ मई) को युद्ध किया किन्तु वे युद्ध मे सफलता न प्राप्त कर सके। जिस समय युद्ध हो रहा था, तो किले के लकड़ी के टुकड़ो, सूखी घास तथा काटो के एक बहुत बड़े ढेर मे आग लग गई। किले के भीतर का भाग तन्दूर के समान तपने लगा। किले वाले, किले की दीवार पर खड़े भी न हो सकते थे अतः शत्रुओ ने किले पर विजय प्राप्त कर ली। जब उन्हें दो-तीन दिन उपरान्त हमारी वापसी के समाचार ज्ञात हुये तो वे दलमऊ की ओर भाग गये।

आज हम लोग लगभग १० कुरोह[3] यात्रा करके सरयू तट पर स्थित जलेसर[4] नामक एक ग्राम मे, जो सगरी परगने मे है, उतरे।

(१ जून)—हम लोग अपने पशुओ को आराम देने के लिये बुधवार (२४ रमज़ान) को उसी पड़ाव पर ठहरे रहे।

बिबन तथा बायज़ीद

कुछ लोगो ने बिबन तथा बायज़ीद के विषय मे बताया कि उन लोगो ने गंगा नदी पार कर ली है और वे अब चुनार[5] के क्षेत्र के मार्ग से अपनी बस्तियो मे जाने के विषय मे सोच रहे हैं। इस पर मैंने

१ सम्भवतः 'नथपुर' अथवा 'नाथपुर'।
२ लखनऊ।
३ २० मील।
४ सम्भवतः 'चस्सर' जो 'आईने अकबरी' के अनुसार जौनपुर सरकार एवं आजकल आज़मगढ़ ज़िले में है।
५ ये शब्द पांडुलिपियों में स्पष्ट नहीं हैं। बहुत सी पांडुलिपियों में 'चुनार एवं जौनपुर' है। सम्भवतः

बेगो को बुलाकर उनसे परामर्श किया। यह निश्चय हुआ कि मुहम्मद जमान मीर्ज़ा तथा सुल्तान जुनैद बरलास, जिसे जूनपुर के स्थान पर चुनार एव कुछ अन्य परगने दे दिये गये थे, महमद खा नोहानी काज़ी जिया तथा ताज खा सारगखानी, शत्रु का मार्ग चुनार पर रोक दें।

(२ जून)—बृहस्पतिवार (२५ रमजान) को प्रात काल हमने सरयू नदी से प्रस्थान किया और ११ कुरोह यात्रा करके परसरू पार किया और उसके तट पर पडाव किया।

यहा मैंने बेगो को बुला कर विचार विमर्श किया और निम्नाकित अमीरो को बिबन तथा बायज़ीद का पीछा करने के लिये सेना से पृथक् करके शीघ्रातिशीघ्र दलमूद (डलमऊ) की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया गया —

ईसान तीमूर सुल्तान, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, तूख्ता बूगा सुल्तान, कासिम हुसेन सुल्तान, बी खूब[1] सुल्तान, मुज़फ्फर हुसेन सुल्तान, कासिम ख्वाजा, जाफर ख्वाजा, जाहिद ख्वाजा, जानी बेग, अस्करी का सेवक कीचीक ख्वाजा तथा हिन्दुस्तान के अमीरो मे कालपी का आलम खा मलिक दाद करारानी तथा राव सरवानी।

वापसी की यात्रा

जब मैं रात्रि मे परसरू मे वज़ू इत्यादि करने पहुचा, तो देखा कि लोग बहुत बडी सख्या मे मछलिया, जो एक दीपक के सामने जल पर एकत्र हो गई थी, पकड रहे हैं। मैंने भी अन्य लोगो की भाति मछली को हाथ मे लिया।

(३ जून)—शुक्रवार (२६ रमज़ान) को हम लोग परसरू नदी की एक छोटी सी शाखा पर उतरे। सेना वालो के आने जाने के कारण उत्पन्न अशान्ति से बचने के लिये मैंने १०×१० का एक स्थान वज़ू इत्यादि के लिये बनवाया। २७ (रमज़ान) की रात्रि हम लोगो ने उसी पडाव पर व्यतीत की।

(४ जून)—उसी दिन (शनिवार २७ रमज़ान) को प्रात काल हम लोगो ने उस नदी के पास से प्रस्थान किया और तूस[2] को पार करके उसके तट पर पडाव किया।

(५ जून)—रविवार (२८ रमज़ान) को हमने उसी नदी के तट पर पडाव किया।

(६ जून)—सोमवार (२९ रमजान) को हमने उसी तूस नदी पर पडाव किया। यद्यपि आज रात्रि मे आकाश बिल्कुल साफ न था किन्तु कुछ लोगो ने चन्द्रमा देख लिया। जब काज़ी को प्रमाण मिल गया तो उसने (रमज़ान) मास की समाप्ति की घोषणा कर दी।

(७ जून)—मगलवार (१ शव्वाल) को हम लोगो ने ईद की नमाज पढ कर प्रस्थान किया और १० कुरोह[3] यात्रा करके गूई[4] नदी के तट पर माईंग से १ कुरोह[5] दूर पडाव किया। मध्याह्नोत्तर की पहली

इसके लिखने का यह कारण होगा कि चुनार की ओर एक सेना भेजी गई थी, किन्तु सेना डलमऊ की ओर भी भेजी गई थी। इसे चुनार तथा जौंद भी पढ़ा जा सकता है। दोनों ही मिर्ज़ापुर जिले में हैं।

१ कुछ पाडुलिपियों के अनुसार 'नीखूब'।

२ टांस।

३ २० मील।

४ गोमती।

५ दो मील।

नमाज के समय माजून के सेवन का पाप किया गया। मैंने शेख जैन, मुल्ला शिहाब, तथा ख्वान्द मीर को आमन्त्रित करते हुए यह शेर लिख कर भेजा

शेर

'शेख, मुल्ला शिहाब तथा ख्वान्द मीर
आओ तीनो अथवा दोनों, अथवा एक।"

दरवेश मुहम्मद (सारबान), यूनुस अली तथा अब्दुल्लाह (असस)[1] भी वही थे। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय मल्ल-युद्ध कराया गया।

(८ जून)—बुधवार (२ शव्वाल) को हम लोग उसी पडाव पर ठहरे रहे। नाश्ते के समय माजून का सेवन किया गया। मलिक शर्क, जो ताज खा से चुनार खाली कराने गया था आज आया।[2] आज जब मल्ल-युद्ध प्रारम्भ हुआ तो अवध के पहलवान ने जो इससे पूर्व आया था, एक हिन्दुस्तानी पहलवान से जो इन्ही दिनो आया था, मल्ल-युद्ध किया और उसे पटक दिया। आज यहया नोहानी को १५ लाख[3] वजह[4] के रूप मे परसरूर[5] से प्रदान किये गये और खिलअत प्रदान करके उसे विदा कर दिया गया।

(९ जून)—दूसरे दिन (वृहस्पतिवार ३ शव्वाल) को हमने ११ कुरोह[6] यात्रा की और गूई[7] नदी पार करके उसके तट पर पडाव किया।

बिबन एव वायजीद का पीछा

उन सुल्तानो तथा बेगो[8] के विषय म, जिन्हें शीघ्रातिशीघ्र अग्रसर होन के आदेश दिये गय थे ज्ञात हुआ कि वे दलमूद[9] पहुच गये हैं किन्तु अभी गगा नही पार की है। इस विलम्ब के कारण मैंने उनके प्रति क्रोध प्रदर्शित करते हुये आदेश भेजा कि, 'वे लोग तुरन्त (गगा) नदी पार करें और शत्रुओं का पीछा करते हुये यमुना नदी के भी पार जायें। आलम खा को अपने साथ लेकर प्रयत्न करें और शत्रुओं से भिड जायें।"

वापसी की यात्रा

(१० जून)—इस नदी[10] से प्रस्थान करके दो पडाव पार करन के उपरान्त हम दलमूद पहुँच गये। यहा सेना के अधिकाश लोगो ने उसी दिन (गगा) नदी पार की। जिस समय शिविर

१ रात्रि में पहरा देने वालों का अधिकारी।
२ उसने ताज खा को चुनार के किले को जुनैद बरलास को प्रदान किये जाने की सूचना दी होगी।
३ अरसकिन के अनुसार ३७५० पौंड।
४ उसके व्यय हेतु।
५ अक्बर के लाहौर सूबे में।
६ २२ मील।
७ गोमती।
८ अमीरों।
९ डलमऊ।
१० गोमती।

पार कराया जा रहा था, घाट से उतार की ओर एक टापू[1] मे माजून का सेवन किया गया।

(१३ जून)—नदी पार करने के उपरान्त हम लोग एक दिन (सोमवार ७ शव्वाल) को समस्त सेना के नदी पार करने की प्रतीक्षा करते रहे। आज बाकी ताशकन्दी अवध की सेना सहित मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

(१४ जून)—गगा नदी से प्रस्थान करके,[2] हमने एक पडाव के उपरान्त (१५ जून)—९ शव्वाल को अरिन्द नदी[3] पर कूरारह[4] नामक स्थान पर पडाव किया। दलमूद[5] से कूरारह २२ कुरोह[6] दूर है।

(१६ जून)—मगलवार (१० शव्वाल) को हमने प्रात काल उस पडाव से प्रस्थान किया और आदमपुर[7] परगने के समक्ष पडाव किया।

शत्रुओ का पीछा करते हुये शीघ्रातिशीघ्र यमुना नदी पार करने के लिये हमने कुछ जालाबानो को[8] कालपी इस आशय से भेज दिया कि उन्हें जितनी भी नौकायें मिल जायें एकत्र कर लें। कुछ नौकाये उस रात्रि मे जब हमने वहा पडाव किया, आ गई। इसके अतिरिक्त यमुना नदी पार करने का घाट मिल गया।

क्योकि उस पडाव पर बडी धूल थी अत हम लोग एक टापू[9] पर ठहर गये। जब तक इस टापू पर रहे वही ठहरे रहे।

बिबन तथा बायज़ीद

शत्रुओ के विषय मे विश्वस्त समाचार न पाकर, हमने बाकी शगावल को कुछ भीतरी[10] वीरो सहित उनका पता लगाने के लिये भेजा।

(१७ जून)—दूसरे दिन (बुधवार ११ शव्वाल) को मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय बाकी बेग का एक सेवक उपस्थित हुआ। बाकी ने बिबन तथा बायजीद की सेना के अग्रदल को पराजित कर दिया था और उनके एक बडे उपयोगी आदमी मुबारक खा जलवानी तथा कुछ अन्य लोगो की हत्या कर दी और बहुत से सिर तथा एक आदमी को बन्दी बना कर मेरी सेवा मे भेज दिया।

(१८ जून)—प्रात काल (शनिवार १२ शव्वाल) को शाह हुसेन बख्शी ने उपस्थित होकर (शत्रुओ के) अग्रदल की पराजय के तथा अन्य समाचार पहुचाये।

१ आराल।
२ मगलवार ८ शव्वाल को।
३ यह नदी मैनपुरी जिले (उत्तर प्रदेश) से निकल कर, मैनपुरी, इटावा, और कानपुर से होती हुई कोड़ा जाती है और हमीरपुर के नीचे गगा से मिलती है।
४ कोड़ा खास, फ़तहपुर (उत्तर प्रदेश) जिले में।
५ डलमऊ।
६ ४४ मील।
७ सम्भवतः यमुना के दायें तट पर।
८ नाविकों।
९ आराल।
१० सम्भवतः घर के अथवा विशेष दल के।

इसी रात्रि मे अर्थात् रविवार १३ (शव्वाल) की रात्रि मे यमुना नदी में बाढ आ गई और प्रात काल तक वह पूरा टापू जहा हमारा पडाव था, जलमग्न हो गया। मैं नदी के उतार की ओर एक बाण के मार की दूरी पर चला गया और वहा खेमा लगवा कर ठहर गया।

(२० जून)—सोमवार (१४ शव्वाल) को जलाल ताशकन्दी अग्रभाग के बेगो[1] तथा सुल्तानो के पास से आया। शेख बायजीद तथा बिबन, उन लोगो के अभियान की सूचना पाकर महोबा[2] के परगने को भाग गये थे।

क्योकि वर्षा ऋतु आ चुकी थी और ५-६ मास के अभियान की दौड धूप के कारण सेना थक गई थी अत उन सुल्तानो एव बेगो को जो अभियान पर गये थे आदेश हुआ कि वे जहा हो उस समय तक वही ठहरे रहें जब तक आगरा तथा उन भागो से कुमक न पहुच जाये। दूसरे दिन मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय बाकी तथा अवध की सेना को विदा कर दिया गया। अमरोहा[3] से मारूफ फर्मुली के पुत्र मूसा को ३० लाख[4] वजह के रूप मे प्रदान किये गये। वह उस समय जब कि सेना वापस होते हुये सरयू नदी[5] पार कर रही थी, मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ था। उसे एक विशेष सरोपा[6] और जीन सहित घोडा प्रदान किया गया। उसे विदा कर दिया गया।

बाबर की आगरा को वापसी

(२१ जून)—इस ओर से निश्चिन्त होकर मगलवार की रात्रि मे तीन पहर तथा एक घडी उपरान्त हम लोग आगरा की ओर बडी तेजी[7] से रवाना हुये। प्रात काल (मगलवार १५ शव्वाल) को हम लोगो ने मध्याह्न के करीब १६ कुरोह[8] यात्रा करके कालपी के अधीनस्थ बलादर नामक परगने मे पडाव किया। वहा हमने अपने घोडो को जौ खिलाया। सायकाल की नमाज के समय हमने प्रस्थान किया और रात्रि मे १३ कुरोह[9] यात्रा की। रात्रि के तीसरे पहर हम कालपी के अधीनस्थ सुगन्दपुर नामक परगने मे बहादुर खा सरवानी के मकबरे मे ठहरे। वहा थोडी देर सोकर हमने प्रात काल की नमाज पढी और शीघ्रातिशीघ्र रवाना हो गये। १६ कुरोह[10] यात्रा करके हम सूर्यास्त के समय इटावा पहुच गये। वहा महदी ख्वाजा[11] हमसे भेंट करने आया। रात्रि के पहले पहर[12] मे प्रस्थान करके हम मार्ग

१ अमीरों।
२ हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) जिले में।
३ मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) जिले में।
४ अर्सकिन के अनुसार ७५०० पौंड।
५ चौपारा चतुरमुक घाट पर।
६ खिलअत।
७ जरीदा। आदमपुर एव आगरा के मध्य की दूरी १५७ मील थी। यह यात्रा उसने मगलवार को १२ बजे दिन से बृहस्पतिवार की ६ बजे रात्रि तक पूरी कर ली। इससे पता चलता है कि निरन्तर मलेरिया में ग्रस्त रहने के बावजूद भी बाबर के हौसले एव तेजी में कोई कमी न हुई थी।
८ ३२ मील।
९ २६ मील।
१० ३२ मील।
११ इटावा का हाकिम।
१२ ६ बजे रात्रि।

थोडा सा सोये। १६ कुरोह[1] यात्रा करके हमने रापरी के फतहपुर मे मध्याह्न के समय का विश्राम या। मध्याह्नोत्तर की पहली नमाज (वृहस्पतिवार १७ शव्वाल) के उपरान्त हमने १७ कुरोह[2] त्रा की और रात्रि के दूसरे पहर आगरा के हश्त बहिश्त नामक उद्यान मे पडाव किया।

(२४ जून)—शुक्रवार (१८ शव्वाल) को प्रात काल सुल्तान मुहम्मद बख्शी कुछ अन्य लोगो के थ मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। मध्याह्नोत्तर की पहली नमाज के समय मैं जून[3] नदी पार करके ख्वाजा ब्दुल हक की सेवा मे उपस्थित हुआ। तदुपरान्त किले मे जाकर बेगमो (अपनी चाचियो) से भेंट की।

हिन्दुस्तान में उगाये हुए फल

मैंने बल्ख के एक खरबूजे बोने वाले को खरबूजे बोने के लिये नियुक्त किया था। वह कुछ छोटे खरबूजे लाया जो बडे ही उत्तम थे। मैंने हश्त बहिश्त नामक उद्यान मे उत्तम अगूर की बेलो के लगाने का आदेश दिया था। शेख गूरन ने मुझे टोकरी भर कर अगूर भेजे जो बुरे न थे। हिन्दुस्तान म इस प्रकार के खरबूजे तथा अगूर उगा कर मुझे बडी प्रसन्नता हुई।

माहीम बेगम का आगमन

(२६ जून)—रविवार (२० शव्वाल) की रात्रि समाप्त होने मे दो घडी शेष थी कि माहीम आ गई। यह भी एक बडी विचित्र घटना है कि १० जमादि-उल-अव्वल (२१ जनवरी १५२९ ई०) को ही, जिस दिन मैंने सेना लेकर प्रस्थान किया था, वह भी काबुल से रवाना हुई थी।[4]

× × × × ×[5]

(७ जुलाई)—बृहस्पतिवार (१ जीकाद) को बडे दीवान खाने[6] मे, हुमायू तथा माहीम के उपहार प्रस्तुत किये गये।

आज १५० कहारो को मजदूरी देकर फगफूर दीवान नामक एक सेवक के अधीन, काबुल से खरबूजे, अगूर एव अन्य फल लाने के लिये भेजा गया।

सम्भल की व्यवस्था

(९ जुलाई)—शनिवार ३ जीकाद को हिन्दू बेग, जो काबुल से (स्त्रियों के काफले के साथ) आया था और अली यूसुफ की मृत्यु के कारण सम्बल[7] भेज दिया गया था, मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ[8]। खलीफा का पुत्र हुसामुद्दीन भी आज अलवर से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

१ ३२ मील।
२ ३४ मील।
३ यमुना।
४ माहीम को काबुल से आगरा पहुँचने में ५ मास से अधिक लगे।
५ यहाँ पर ११ दिन की घटनाओं का हाल नहीं मिलता।
६ दरबार कक्ष।
७ सम्भल।
८ हिन्दू बेग कूचीन को ९३२ हि० (१५२५-२६ ई०) में हुमायूँ की अधीनता में दे दिया गया था। उसने हुमायूँ की ओर से सम्भल पर अधिकार जमाया था। इस कारण बेगमों के साथ काबुल से आते समय उसे सम्भल जाने का आदेश दे दिया गया होगा। वह सम्भवत बाबर की सेवा में उपस्थित होने के पूर्व वहाँ चला गया था और इस समय तक आगरा नहीं आया था।

(१० जुलाई)—रविवार (४ ज़ीक़ाद) को प्रात काल अब्दुल्लाह् किताबदार[1] उपस्थित हुआ। वह तीर मुहानी से, अली यूसुफ की मृत्यु के कारण सम्बल भेज दिया गया था।

× × × × ×[2]

लाहौर में षड्यन्त्र

काबुल वालो ने बताया कि करावाग के शेख शरफ ने, या तो अब्दुल अज़ीज़ के बहकाने से अथवा उससे स्नेह के कारण एक महज़र[3] तैयार किया जिसमे उन ज़्यादतियों का वर्णन किया जो मैंने न की थी और उन अत्याचारो का उल्लेख किया जो न हुये थे। उसने इस पत्र पर लाहौर के इमामों[4] के हस्ताक्षर करा लिये थे और उसकी प्रतिलिपिया बहुत से नगरो मे भेज दी थी। इसके अतिरिक्त स्वय अब्दुल अज़ीज़ ने बहुत से शाही आदेशो पर ध्यान न दिया था। उसने अनुचित बातें कही और ऐसे कार्य किये जो न करने चाहिये थे। इन कारणो से कम्बर अली अरगून को रविवार ११ ज़ीक़ाद को शेख शरफ, लाहौर के इमामो एव उनके सहायको तथा अब्दुल अज़ीज़ को बन्दी बनाकर लाने के लिये भेजा गया।

सादिक पहलवान का मल्ल-युद्ध

(२२ जुलाई)—बृहस्पतिवार १५ ज़ीक़ाद को चीन तीमूर सुल्तान तिजारा से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। आज सादिक पहलवान, तथा अवध के प्रसिद्ध पहलवान का मल्ल-युद्ध हुआ। सादिक ने उसे आधा पटक दिया। इससे उसे बडा दु ख हुआ।

ईरान के दूत का विदा किया जाना

(२८ जुलाई)—सोमवार १९ ज़ीक़ाद को किज़ील बाश के राजदूत मुराद को पेटी सहित जडाऊ कटार एव उचित खिलअत पहनाई गई। और २ लाख तन्के देकर बिदा कर दिया गया।

× × × × ×[5]

ग्वालियर का षड्यन्त्र

(११ अगस्त)—सैयिद मशहदी ने, जो इन दिना ग्वालियर से आया था, निवेदन किया कि रहीम दाद[6] षड्यन्त्र रच रहा है। ख़लीफ़ा के सेवक शाह मुहम्मद मुहर दार[7] को रहीम दाद के पास शिक्षा-

१ पुस्तकालयाध्यक्ष।
२ यहाँ से ७ दिन की घटनाओं का हाल नष्ट हो गया है।
३ महज़र- वह पत्र जो साक्षियों द्वारा प्रमाणित हो।
४ जो मुसलमानों को नमाज़ पढ़ाते हैं।
५ यहा से १५ दिन का हाल नहीं मिलता।
६ 'तारीख़े ग्वालियारी' के अनुसार ख़्वाजा एवं उसके चाचा महदी ख़्वाजा ने बाबर को असंतुष्ट कर दिया था और रहीम दाद मालवा के सुल्तान मुहम्मद ख़लजी के पास भाग जाना चाहता था, और ग्वालियर एक राजदूत को समर्पित कर देना चाहता था। शेख़ मुहम्मद ग़ौस आगरा पहुँच कर रहीम दाद की ओर से मध्यस्थ बना और उसे क्षमा करा दिया। ग्वालियर रहीम दाद को प्रदान कर दिया गया किन्तु कुछ समय उपरान्त अबुल फ़तह (शेख़ गूरान) को उसके स्थान पर नियुक्त कर दिया गया।
७ जिसके पास शाही मुहर रहती थी।

मुक्त बातें लिख कर भेजा गया। वह जा कर कुछ दिन उपरान्त रहीम दाद के पुत्र को लाया। रहीम दाद की स्वयं आने की कोई इच्छा न थी। बुधवार ५ जिलहिज्जा को नूर बेग को रहीम दाद की शंकाओं का समाधान कराने के लिये ग्वालियर भेजा गया। कुछ दिन उपरान्त नूर बेग ने वापस आकर रहीम दाद की प्रार्थना मेरी सेवा मे प्रस्तुत की। उसकी प्रार्थनानुसार फरमान तैयार करा दिये गये। जब फरमान भेजा जाने वाला था तो उसके एक सेवक ने आकर निवेदन किया कि उसने मुझे अपने पुत्र को भगा लाने के लिये भेजा है और उपस्थित होने की उसकी कोई इच्छा नही। यह समाचार पाते ही मैं ग्वालियर की ओर तत्काल प्रस्थान करने वाला ही था कि खलीफा ने निवेदन किया कि, 'मैं एक बार उसे और परामर्श करते हुए पत्र लिख कर भेजता हू। सम्भवत वह अब भी ठीक हो जाये।' इस उद्देश्य मे खुसरो के (पुत्र?) शिहाबुद्दीन को भेजा गया।

(१२ अगस्त)—मगलवार ६ जिलहिज्जा को महदी ख्वाजा इटावा[1] से उपस्थित हुआ।

(१६ अगस्त)—बकरईद[2] (सोमवार १० जिलहिज्जा) को हिन्दू बेग को एक विशेष सरोपा जड़ाऊ कटार पेटी सहित प्रदान की गई। उसी दिन हसन अली को, जो तुर्कमानो मे चगताई[3] के नाम से प्रसिद्ध था सरोपा, जड़ाऊ कटार पेटी सहित तथा ७ लाख[4] का एक परगना प्रदान किया गया।[5]

१ सम्भवत वह अपने भतीजे के षड्यंत्र की सफ़ाई के लिये आया होगा।

२ १० जिलहिज्जा।

३ सम्भवत वह ईरान के उस भाग से सम्बन्धित था जो चगताई पर्वत कहलाते हैं। हसन अली चगताई मुराद नामक तुर्कमान राजदूत के साथ एराक से आया होगा।

४ अर्सकिन के अनुसार लगभग १७५० पौंड।

५ गुलबदन ने माहीम के आगरा पहुंच जाने के उपरान्त अनेक ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है जो ९३५ हि० (१५२८-२९ ई०) से सम्बन्धित हैं।

९३६ हि०

(५ सितम्बर १५२९ से २५ अगस्त १५३० ई०)

रहीम दाद

(७ सितम्बर)—बुधवार ३ मुहर्रम को शेख मुहम्मद गौस ग्वालियर से खुसरौ (के पुत्र ?) शिहाबुद्दीन के साथ रहीम दाद की सिफारिश करने आया। शेख मुहम्मद गौस के दरवेश एवं पूज्य व्यक्ति होने के कारण रहीम दाद के अपराध क्षमा कर दिये गये। शेख गूरन तथा नूर बेग को ग्वालियर इस आशय से भेजा गया कि वह स्थान उनके सिपुर्द कर देने के बाद ।[1]

१ इसके बाद से किसी भी हस्तलिखित ग्रन्थ में कुछ नहीं मिलता। सम्भवतः बाबर ने जो कुछ लिखा वह नष्ट हो गया। गुलबदन बेगम के अनुसार माहीम बेगम के काबुल से आ जाने के उपरान्त बाबर सीकरी में एकांत में एक चौकदी में बैठ कर अपने ग्रंथ की रचना किया करता था।

भाग ब

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकार

अलाउद्दौला बिन यहया क़ज़वीनी

(क) नफायसुल मआसिर

गुल बदन बेगम

(ख) हुमायूं नामा

शेख अबुल फ़ज़ल

(ग) अकबर नामा (भाग १)

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

(घ) तबकाते अकबरी

९३६ हि०

(५ सितम्बर १५२९ से २५ अगस्त १५३० ई०)

रहीम दाद

(७ सितम्बर)—बुधवार ३ मुहर्रम को शेख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियर से ख़ुसरो (के पुत्र ?) शिहाबुद्दीन के साथ रहीम दाद की सिफ़ारिश करने आया। शेख़ मुहम्मद ग़ौस के दरवेश एवं पूज्य व्यक्ति होने के कारण रहीम दाद के अपराध क्षमा कर दिये गये। शेख़ गूरन तथा नूर बेग को ग्वालियर *इस आशय से भेजा गया कि वह स्थान उनके सिपुर्द कर देने के बाद* ।[1]

[1] इसके बाद से किसी भी हस्तलिखित ग्रन्थ में कुछ नहीं मिलता। सम्भवतः बाबर ने जो कुछ लिखा वह नष्ट हो गया। गुलबदन बेगम के अनुसार माहीम बेगम के काबुल से आ जाने के उपरान्त बाबर सीकरी में एकांत में एक चौखंडी में बैठ कर अपने ग्रंथ की रचना किया करता था।

भाग व

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकार

अलाउद्दौला बिन यहया क़ज़वीनी

(क) नफ़ायसुल मआसिर

गुल बदन बेगम

(ख) हुमायूं नामा

शेख अबुल फ़ज़ल

(ग) अकबर नामा (भाग १)

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

(घ) तबक़ाते अकबरी

नफ़ायसुल मआसिर

लेखक—अलाउद्दौला बिन यह्या कज़वीनी

(अलीगढ़ विश्व-विद्यालय सुभानुल्लाह मैनुस्क्रप्ट)

फ़िरदौस मकानी

उनके वश के विषय मे समस्त विश्वस्त सूत्रों से इस प्रकार ज्ञात हुआ है—ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह बिन (पुत्र) मीर्ज़ा उमर शेख बिन सुल्तान अबू सईद गूरगान बिन सुल्तान मुहम्मद बिन मीर्ज़ा मीरान शाह बिन अमीर तीमूर साहब किरान एक ऐसे पादशाह थे जो श्रेष्ठता एव निपुणता के गुणो से सुशोभित, एव दान, वीरता पौरुष तथा उदारता के गुणो से अलकृत थे। उनकी राय प्रकाशमान सूर्य के समान चमकदार तथा उनके अन्तःकरण का प्रकाश चमकते हुए चन्द्रमा के समान देदीप्यमान रहता था। किस ज़बान से इस जमशेद सरीखे पादशाह का गुणगान एव उसकी प्रशसा हो सकती है और किस प्रकार उस फ़िरिश्तो सरीखे गुण रखने वाले के गुणो की जिसका उल्लेख मनुष्य की शक्ति के बाहर है, व्याख्या की जा सकती है। सूर्य को न तो किसी सजावट की और चन्द्रमा को न तो किसी प्रशसा की आवश्यकता होती है।

जन्म

मुहर्रम ८८८ हि० (फ़रवरी १४८३ ई०) मे उनके जन्म के सूर्य का उदय हुआ और उस प्रकाश से ससार देदीप्यमान हुआ। मौलाना हुसामी ने उनके जन्म की तिथि इस प्रकार लिखी है

मुहर्रम[1] को उस सम्मानित शाह का जन्म हुआ,
उसके जन्म की तिथि भी निकली ६ मुहर्रम।

ईश्वर ने उस शिशु मे सौभाग्य के साधन शुभतम घडी मे निश्चित किये।

सिंहासनारोहण

सबसे बडी विचित्र एव आश्चर्यजनक घटना यह है कि वे अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त १२ वर्ष की अवस्था मे सिंहासनारूढ हुये। रमज़ान ८९९ हि० (जून १४९४ ई०) मे वे फ़रग़ाना की विलायत मे पादशाह हुये।

समरक़न्द पर प्रथम बार अधिकार

इसके उपरान्त बाईसुंगर मीर्ज़ा एव सुल्तान अली मीर्ज़ा मे, जो सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के पुत्र थ, विरोध हो गया। शव्वाल ९०१ हि० (जून-जुलाई १४९६ ई०) मे उन्होंने समरक़न्द की ओर

1 १४ फ़रवरी १४८३ ई०।

पादशाह ने खान मीर्ज़ा से स्नेह-पूर्वक आलिंगन किया और नाना प्रकार से उसके विषय मे पूछ ताछ करके उसे ठहरने अथवा चले जाने का अधिकार दे दिया। खान मीर्ज़ा अत्यधिक लज्जित होने के कारण ठहर न सका और कधार चला गया। यह घटना ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) मे घटी।

मीर्ज़ा जहागीर की मृत्यु

हज़रत पादशाह राजधानी काबुल म उदारता एव मुरव्वत की गद्दी पर आरूढ हुए। उन्ही दिनो मीर्ज़ा जहागीर जो हज़रत पादशाह के लिये बहुत बडा ढारस थे, इस नश्वर लोक से विदा होकर स्थायी लोक को चले गये।

कधार पर आक्रमण

इस घटना के उपरान्त वे चाहते थे कि जिस प्रकार सभव हो किसी शक्ति का सहारा लेकर काबुल मे स्थायी रूप से ठहर सकें। शाह बेग जुन्नून अरगून का पुत्र था, (जुनुन बेग)[1] सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के प्रतिष्ठित अमीरो मे से था। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के समय से ३० वर्ष पूर्व से वह स्थायी रूप से कधार एव ज़मीनदावर मे राज्य करता रहा था। यद्यपि वह बुद्धि एव वीरता से शून्य न था, किन्तु खज़ाना के एकत्र करने मे वह अत्यधिक प्रयत्न किया करता था। जिस समय शाही बेग खा ने खुरासान पर आक्रमण किया तो उसने[1] उससे युद्ध किया और मारा गया। शाह बग खा पिता के स्थान पर कधार मे हाकिम हुआ। हज़रत पादशाह ने शाह बेग के पास सदेश भेजे कि क्योकि सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सतान का विनाश हो चुका है अत यह उचित होगा कि वह आज्ञाकारिता एव परिचर्या के द्वार खोल दे और अमीरो की श्रेणी मे आ जाये। यद्यपि उन्होने इस विषय मे बहुत कुछ कहा और लिखा किन्तु उस पर कोई प्रभाव न हुआ।

शाह बेग से युद्ध, हज़रत फिरदौस मकानी की विजय एव कधार का अधिकार मे आना

हज़रत पादशाह कधार पहुचे और कधार के समीप युद्ध किया तथा घोर युद्ध हुआ। अन्त मे हज़रत पादशाह की पताकाओ को विजय एव शाह बेग की सेना को पराजय हुई। इतनी अधिक लूट की धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई कि सेना मे प्रत्येक को एक एक शाहरुखी बाटी गई। मीर्ज़ा खान जो कधार मे था, पुन हज़रत पादशाह की सेवा मे पहुचा। हज़रत पादशाह ने लूट की अत्यधिक धन सम्पत्ति लेकर काबुल मे पडाव किया और कधार सुल्तान नासिर मीर्ज़ा को, जो जहागीर मीर्ज़ा का अनुज था, प्रदान कर दिया।

शाह बेगम का बदख्शा की ओर प्रस्थान

जब वे काबुल पहुँचे तो बदख्शाँ से समाचार प्राप्त हुए कि क्योकि खुसरो शाह का राज्य ऊज़बेको को प्राप्त हो गया अत कुछ बदख्शा वालों ने ऊज़बेको के समक्ष सिर नही झुकाया और कई बार ऊज़बेको की सेना को पराजित कर दिया। प्रत्येक मीर हज़ारी किसी न किसी स्थान पर सरदार हो गया। शाह बेगम ने बदख्शा का दावा किया कि 'यह ३,००० वर्ष से मेरे पूर्वजो का राज्य है। लोग मेरा तथा मेरे पुत्र का विरोध न करेंगे।' पादशाह ने अनुमति दे दी। शाह बेगम तथा खान मीर्ज़ा बदख्शा

१ जनून बेग।

पहुचे। जब वे बदख्शा के समीप पहुचे तो खान मीर्ज़ा को जुबैर राई के पास इस आशय से भेजा कि वह बेगम के समाचार पहुचाये और जो उसके विचार हो उनका पता लगाये। जब खान मीर्ज़ा पृथक् हो गया तो मीर्ज़ा अबा बक्र की सेना काशगर से पहुच गई और समस्त लोगो एव बेगम खानम को, जो साथ थी, ले गये। खान मीर्ज़ा, जुबैर के पास पहुचा। जुबैर ने प्रारम्भ मे तो आदर-पूर्वक व्यवहार किया किन्तु अन्त मे इस प्रकार निगरानी करने लगा कि दो-तीन सेवको के अतिरिक्त किसी को उसके पास न छोडा। जब कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया तो यूसुफ अली कूकूल्ताश दीवाना ने जो खान मीर्ज़ा का प्राचीन सेवक था, १८ आदमियो सहित एक रात्रि मे जुबैर पर आक्रमण करके उसकी हत्या कर दी और खान मीर्ज़ा को पादशाह बना दिया।

काबुल में विद्रोह

उस तिथि अर्थात् ९१३ हि० (१५०७-८ ई०) से अन्त तक बदख्शा, खान मीर्ज़ा के अधिकार मे रहा किन्तु पादशाह कधार विजयोपरान्त काबुल मे रहे। खुसरो शाह के सहायको के एक दल ने जिसकी सख्या लगभग ३,००० थी, अब्दुर्रज्ज़ाक मीर्ज़ा इब्ने (पुत्र) उलूग बेग काबुली को पादशाह बना कर विद्रोह कर दिया। पादशाह के साथ ५०० आदमी से अधिक न थे। पादशाह ने निकलकर इस समूह से युद्ध किया। पादशाह के युद्धो मे एक युद्ध जो उन्होने तलवार से किया यह था जिसने कहानियो के रुस्तम की कहानिया भुला दी, और उन्होंने अपने घोर युद्ध मे अत्यधिक विरोधियो को पराजित कर दिया।

हज़रत फिरदौस मकानी का ५ आदमियो से अकेले युद्ध करना और विजय प्राप्त करना

पादशाह ने जिनके तलवार की विद्युत, देशो को विजय करने वाली तलवार की विद्युत को काटने वाली थी, उस युद्ध मे शत्रुओ की सेना के वीरो मे से ५ व्यक्तियो, अली सैयिद गोर, अली सीना एव तीन अन्य व्यक्तियो से युद्ध किया और अपनी वीरता एव तलवार के ज़ोर से उन्हे भगा दिया। अब्दुर्रज्जाक मीर्ज़ा उस युद्ध मे पादशाह द्वारा बन्दी बना लिया गया। पादशाह ने उसके प्रति भी उदारता प्रदर्शित करके उसे मुक्त कर दिया। तत्पश्चात् पादशाह के कार्यों की काबुल मे उन्नति हो गई और वे वही रहे।

मीर्ज़ा खान के द्वारा निमन्त्रण

९१६ हि० (१५१०-११ ई०) मे जब शाही बेग खा की हत्या हो गई तो मीर्ज़ा खान ने द्रुतगामी दूत भेज कर सूचना कराई कि "कहा जाता है कि शाही बेग खा की हत्या हो गई है अत यह उचित होगा कि आप इस ओर प्रस्थान करें, सम्भवत बाप-दादा के राज्य पर अधिकार प्राप्त हो जाये।" हज़रत पादशाह रवाना हो गये।

हज़रत पादशाह का हिसार की ओर प्रस्थान

शव्वाल ९१६ हि० (जनवरी १५११ ई०) मे वे कुन्दुज़ पहुँचे। खान मीर्ज़ा ने मुग़लों के दल सहित, जो ऊज़बेको की ओर से आये थे, स्वागत किया और यह निश्चय हुआ कि हिसार के विरुद्ध, जहा हमज़ा सुल्तान एव महदी सुल्तान जो ऊज़बेक सुल्तानो मे बडे प्रतिष्ठित थे, और हिसार की पादशाही जिनके अधीन थी, रवाना हो। शीत ऋतु के अन्त मे उन्होंने आमू नदी पार की। जब हमज़ा सुल्तान ने यह समाचार सुने तो वह भी हिसार से रवाना हुआ और वख्श पहुचा। उस ओर से पादशाह कोल्क

पहुचे जो खुतलान के प्रसिद्ध स्थानो मे से है। वहा उन्हें समाचार प्राप्त हुए कि हमजा सुल्तान वख्श मे है। उसी रात्रि मे ऊपर के मार्ग से उन्होने हमजा सुल्तान पर धावा मारा। सूर्योदय के समय उसके स्थान पर पहुच गये। वहा कोई भी न था। खोज लगाने पर हमजा सुल्तान के समाचार इस प्रकार ज्ञात हुये कि पिछले दिन (मध्याह्नोत्तर की) दूसरी नमाज के समय यह समाचार पाकर कि हज़रत पादशाह कोलक के जगलों मे पडाव किये हुये है उसने कोलक की ओर नीचे के मार्ग से शीघ्रातिशीघ्र बढकर धावा किया। हजरत पादशाह ने भी उसी मार्ग से हमजा सुल्तान के पीछे प्रस्थान किया। जब वे पिछली रात्रि की मजिल पर पहुचे तो हमजा सुल्तान के कोई चिह्न भी न मिले। प्रातःकाल उस मज़िल से पडाव करके वे अपनी मजिल पर पहुचे। पादशाह एव उनके उच्च पदाधिकारियों का विश्वास यह था कि हमजा सुल्तान मे युद्ध करने की शक्ति नही और हमजा सुल्तान का विचार था कि हज़रत पादशाह के आदमी युद्ध करना नही चाहते। सक्षेप मे प्रत्येक सुरक्षित अपने स्थान पर लौट गया।

शाह इस्माईल का खानजादा बेगम को बाबर के पास भेजना

जब हजरत पादशाह कुन्दुज पहुचे तो शाह इस्माईल का राजदूत आया हुआ था। इसी बीच मे हज़रत पादशाह की बहिन खानजादा बेगम खुरासान से आईं। समरकन्द के अवरोध के समय उनका विवाह शाही बेग खा से कर दिया गया था। शाही बेग खा ने इस विचार से कि वे उसकी (हजरत पादशाह से शत्रुता के कारण) विष खा लेंगी तिलाक देकर सैयिद हादी से जो एक प्रतिष्ठित सैयिद था, विवाह कर दिया था। जब उपर्युक्त सैयिद की मर्व के युद्ध मे हत्या हो गई तो किज़ीलबाश तुर्कमानो ने शाह इस्माईल के आदेशानुसार उनको अत्यधिक सम्मान के साथ हज़रत पादशाह की सेवा मे भेज दिया।

बाबर का हिसार की ओर प्रस्थान

उस समय हज़रत पादशाह ने खान मीर्ज़ा को दूत बनाकर शाह इस्माईल के पास भेजा। शाह इस्माईल ने खान मीर्ज़ा का बडा आदर सम्मान किया और शीघ्रातिशीघ्र विदा कर दिया तथा उसकी प्रार्थना स्वीकार करके उसके साथ कुमक भेजी। मीर्ज़ा के पहुच जाने से उनकी शक्ति बहुत बढ गई। हज़रत पादशाह तत्काल हिसार की ओर चल खडे हुये। जब यह समाचार ऊज़बेको को प्राप्त हुए तो वे भी अधिक सख्या मे सेना एकत्र करके, हमजा सुल्तान, महदी सुल्तान एव कुछ अन्य सुल्तानो सहित हज़रत पादशाह के मुकाबले को पहुचे। कोजम (?) जो शाही बेग के स्थान पर सिंहासनारूढ हुआ था और सोज सुल्तान एव जानी बेग सुल्तान तथा अब्दुल्लाह सुल्तान समस्त ऊज़बेको के साथ कारशी मे जिसका वास्तविक नाम नखशब है, सेना एकत्र करके डट गये। हज़रत पादशाह पुले सगीन पर पहुचे। वहा पर जब ऊजबेको की सेना की सख्या का पता चला तो वे दरा नदी की ओर रवाना हुये और एक दृढ स्थान पर ठहर गये। जब ऊज़बेकों के पीछे से पहुचने के समाचार प्राप्त हुये तो पुश्ते पर पहुच कर युद्ध के लिये तैयार हो गये।

ऊज़बेको से युद्ध एव विजय

लगभग १०,००० ऊज़बेक पृथक होकर इस पुश्ते पर पहुचे और दिन के अन्त तक युद्ध करते रहे। जब ऊज़बेको ने नदी पर पहुचना चाहा जो विजयी सेना का एक दल घोडे से उतर पडा और उनका पीछा किया। ऊज़बेको की सेना पराजित हो गई। हमजा सुल्तान, महदी सुल्तान एव ममाक को बन्दी

बनाकर हज़रत पादशाह् को विजयी रिकाब के पास लाया गया। लोहे के द्वार[1] तक ऊज़बेको का पीछा किया गया और हिसार म विजयी सेना की सख्या अधिक बढ गई। शाह इस्माईल की ओर से पुन कुमक पहुच गई और सेना की सख्या ६०,००० को पहुच गई। इतनी बडी सेना एव प्रभुत्व के साथ ऊजबेको का पीछा करके समरकन्द मे भगा दिया गया।

समरकन्द पर तीसरी बार अधिकार

रजब ९१७ हि० (अक्तूबर १५११ ई०) के मध्य मे (हज़रत पादशाह) समरकन्द के सुरक्षित नगर मे पहुचे और ८ मास तक समरकन्द मे राज्य करते रहे। जब उस शीत ऋतु का अन्त हो गया और निरन्तर वर्षा के कारण भूमि तथा काल ने हरे वस्त्र धारण कर लिये तो ऊजबेक लोग तुर्किस्तान से रवाना हुये और ताशकन्द पहुचे। उबैदुल्लाह् खा बुखारा पहुचा। क्योकि ताशकन्द के किले को अमीर अहमद कासिम कोहबर दृढ बनाये था, अत एक अन्य सेना उदाहरणार्थ अमीर दोस्त नासिर सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई को कुमक हेतु ताशकन्द भेजा गया और वे स्वय बुखारा की ओर रवाना हुये। जब वे बुखारा के समीप पहुचे तो उबैदुल्लाह् खा पादशाह के प्रस्थान के समाचार पाकर जिस मार्ग मे आया था, उसी मार्ग से लौट गया। पादशाह् पीछा करते हुये पीछ से कोल मलिक पहुचे। उसे पीछ हटने पर विवश होना पडा। ऊज़बेको की सख्या ३,००० थी और हजरत पादशाह् की सेना म ४०,००० सशस्त्र सैनिक थे किन्तु दुर्भाग्य से ऊज़बेको को इसी सेना पर जिससे वे ८ मास पूर्व भग्न चुके थे, विजय प्राप्त हो गई। यह घटना सफर ९१८ हि० (अप्रैल-मई १५१२ ई०) म घटी। जब पादशाह समरकन्द पहुचे तो समरकन्द के राजसिंहासन को त्याग कर हिसार चल दिये तथा शाह् इस्माईल के पास दूत भेजे। शाह् इस्माईल ने मीर नज्म इस्फहानी को जो उसका वकील था ६०,००० आदमियो सहित कुमक हेतु भेजा। वे मिलकर ऊज़बेको के विरुद्ध रवाना हुये। जब वे करशी पहुचे तो अल्प समय मे किले पर विजय प्राप्त कर ली और कत्ले आम कर दिया। ऊज़बेक सुल्तान प्रत्येक किले पर अधिकार जमाये हुए उसे दृढ बनाये थे। किज़ीलबाशो की सेना गजदवान की ओर रवाना हुई कारण कि वे उनकी विजय सुगम समझते थे। जब ऊज़बेको को यह समाचार प्राप्त हुये तो वे उसी रात्रि मे बहुत बडी सख्या मे गजदवान के किले मे प्रविष्ट हो गये और प्रात काल युद्ध के लिये तैयार हो गये। क्योकि ऊज़बेक लोग किले के भीतर मुहल्लो मे स्थान ग्रहण किये थे और किज़ीलबाश उन पर धावा तथा आक्रमण न कर सकते थे अत ऊज़बेक प्यादो ने प्रत्येक कोने से बाणो की वर्षा करके किज़ीलबाशो को परेशान कर दिया। इस घटना का सक्षिप्त उल्लेख कर दिया गया।

बाबर का हिसार से कुन्दुज की ओर प्रस्थान

हज़रत पादशाह हिसार की ओर रवाना हुये। उस स्थान पर मुग़ूलो के समूह, जो प्रत्येक स्थान पर एकत्र हो कर सेवा मे सम्मिलित हो गये थे, विरोध करने लगे। एक रात्रि मे उन्होंने पादशाह पर आक्रमण किया। हज़रत पादशाह नगे किले मे कूद पडे। उन लोगो को बाहर जो कुछ मिला उठा ले गये और झाडू दे गये और कायज मर्कान के पर्वतो मे पहुचे। हज़रत पादशाह उनको पराजित करने मे असमर्थ होने के कारण किले को अपने विश्वास-पात्र अमीरो को सौंप कर कुन्दुज चले गये। दुष्ट मुग़ूलो का समूह वहा अत्याचार एव उत्पात करता रहा। उनके दुराचार के कारण अकाल पड गया।

1 'दर बन्दे आहिनी'।

इस दुर्घटना के समाचार उबैदुल्लाह खा को प्राप्त हुये। उसने इस समूह को पराजित करके हिसार पर भी अधिकार जमा लिया।

बाबर का काबुल पहुचना

तदुपरान्त न्यायकारी हज़रत पादशाह काबुल की ओर रवाना हुये। मावरा उन्नहर की ओर प्रस्थान के समय वे काबुल अपने अनुज सुल्तान नासिर मीर्ज़ा को दे गये थे। मीर्ज़ा को जब हज़रत पादशाह की सवारी के (आगमन के) समाचार प्राप्त हुए तो उसने स्वागत करके निवेदन किया कि, "दास हर प्रकार से दासता एव निष्ठा के जूते आज्ञाकारिता एव दासता के नेत्रो पर रखता है। काबुल, जो नित्य-प्रति उन्नत राज्य की राजधानी है, दास को प्रदान कर दी गई थी। अब क्योकि आप यहा पधार चुके है अत आदेश हो तो दास अपने असली स्थान गज़नी को चला जाये।" हजरत पादशाह ने उसके इस सौजन्य को बडा पसन्द किया और उसे गज़नी प्रदान कर दिया।

नासिर मीर्जा की मृत्यु

उन्ही दिनो अर्थात् ९२१ हि० (१५१५-१६ ई०) मे सुल्तान नासिर मीर्जा की मृत्यु हो गई। इस कारण गजनी के लिए हजरत पादशाह के अमीरो मे झगडा होने लगा और उन्होंने बडी धृष्टतायें की।

कधार विजय

हजरत पादशाह काबुल मे रहने लगे। इसी बीच मे कधार विजय की पताका बलन्द की और उस स्थान पर पहुँच गये। इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है कि जुनून अरगून का पुत्र शाह बेग उस राज्य पर अधिकार जमाये था। हजरत पादशाह तीन वर्ष तक कधार के किले का अवरोध किये रहे यहा तक कि वह विजय हो गया।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण

तदुपरान्त वे हिन्दुस्तान की विजय हेतु रवाना हुये और कई बार हिन्द पहुच कर आक्रमण किया और वापस हो गये।

सुल्तान इबराहीम अफगान से युद्ध और विजय

९३२ हि० (१५२६ ई०) मे सुल्तान सिकन्दर अफगान के पुत्र सुल्तान इबराहीम स, जो हिन्दुस्तान का पादशाह था, पानीपत मे उनका युद्ध हुआ। यद्यपि सुल्तान इबराहीम के पास दो लाख आदमी थे, हजरत पादशाह ने १० हजार वीरो से उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया और हिन्दुस्तान विजय कर लिया। उन्हें इतना अधिक खज़ाना एव गडी हुई धन राशि प्राप्त हुई कि बुद्धि उसका अनुमान लगाने मे असमर्थ हो गई। उन्होंने अपनी समस्त धन-सम्पत्ति अपने परिचित लोगो में बाट दी और विभिन्न देशो को भेज दी। उनका यश कयामत तक ससार मे बाकी रहेगा।

मिसरा

'नेक नाम ससार मे न्याय द्वारा चलता रहता है।'

हिन्दुस्तान की विजय की तारीख के सम्बन्ध मे यह रचना की गई है —

शेर

"जहीरुद्दीन मुहम्मद शाह बाबर,
सिकन्दर सरीखे प्रताप वाला एव बहराम सरीखे ऐश्वर्य वाला।
उन्होंने विजय किये हिन्दुस्तान के प्रदेश
उसकी तारीख हुई "फतह बदौलत"।[1]

राणा सागा की पराजय

उन्होने सुल्तान सिकन्दर के समस्त राज्य पर अधिकार जमा लिया तथा राणा सागा हिन्दू से सीकरी के उपान्त मे युद्ध किया। उसने कई लाख हिन्दुओं सहित आक्रमण किया था किन्तु (हजरत पादशाह) विजयी हुये। तदुपरान्त वे आज्ञा-पत्रो मे अपने आपको गाज़ी लिखवाने लगे।

अन्य विजयें

वहा से वे चित्तौड की ओर रवाना हुये और वहा काफिरो से बहुत से युद्ध किये तथा विजयें प्राप्त की। उनके न्याय एवं दान-पुण्य की प्रसिद्धि दूर-दूर तक को गई और छोटे बडे के कानो तक पहुच गई। सर्वसाधारण एव विशेष व्यक्ति ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार तक पहुचे और अपार इनाम द्वारा लाभान्वित हुये। इनमे से अधिकाश धन-धान्य सम्पन्न एव निश्चिन्त होकर अपने अपने वतन को चले गये।

शेर

"वह बादशाह जिसने हातिम के प्याले मे भी मिट्टी डाली,
जिसके दान-पुण्य ने शोक की धूल को समाप्त कर दिया।
उसकी हथेली के बादल से दान-पुण्य की बूदें बरसीं,
ससार के पृष्ठ मे आवश्यकता के अक्षर धो डाले।"

बाबर के गुण

वह ऐसा शहशाह था जो युद्ध के लिये जब कटि-बद्ध होता तो आकाश के दुर्ग को विजय कर लेता और जब कभी सभा मे दान के हाथ खोलता तो आवश्यकताग्रस्त लोगो के द्वार बन्द कर देता। वे हजरत ख्वाजगान[2] के सिलसिले के मुरीद थे और इस सम्मानित समूह वालो के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने मे कोई कसर न उठा रखते थे। उन्होने इस रुबाई की रचना करके इसे हजरत इरशाद पनाह मुल्ला ख्वाजगी काशानी के पास शाहाना उपहार सहित मावराउन्नहर भेजा था —

रुबाई

"वासनाओं के लोभ मे हमने अपनी अवस्था नष्ट की है,
ईश्वर वालो के समक्ष हम अपने आचरण के प्रति लज्जित है।

१ प्रताप से विजय।
२ ख्वाजा एहरार।

हमारी ओर एक दृष्टि डालिये कि निष्ठा के कारण,
ख्वाजगी ही तक हम हैं और ख्वाजगी के ही दास हैं।"

उनके गुण, पराक्रम, वीरता एवं विजय असीम एवं असंख्य है। उन्होंने जितने पौरुष का प्रदर्शन किया उसका समझना बुद्धि के लिये सम्भव नहीं। मौलाना शिहाबुद्दीन मुअम्माई ने मुअम्मा[1] के विषय में एक बड़ी गूढ़ पुस्तक, कविता में रचना करके, उनकी सेवा में भेजी। उसके बदले में उन्होंने इस रुबाई की रचना करके पादशाहाना उपहार सहित उत्तर मौलाना के पास भेजा —

रुबाई

तेरा यश अजम[1] से निकल कर अरब तक पहुंच गया
तेरे लेख से मेरा दुखी हृदय प्रसन्न है।
जो कोई (तेरे) मुअम्मे से कोई नाम निकालता है
तो तेरा नाम निकल आता है, यह बड़ा विचित्र मुअम्मा है।

उन्होंने फ़िक़्ह के विषय पर 'मुबीन' नामक पुस्तक की रचना की। इसमें हज़रत इमामे आज़म[1] के सिद्धान्तों की पद्य में रचना की। उन्होंने अपने विषय में तुर्की में एक इतिहास की रचना की और उसमें सच-सच बात लिखने में कोई कसर न उठा रक्खी। उन्होंने साधारण लेखकों के समान जो हर समय किसी न किसी बात को ध्यान में रख कर रचना करते हैं और सत्य को त्याग देते हैं इस इतिहास की रचना नहीं की। उन्होंने तुर्की तथा फ़ारसी में विद्वत्तापूर्ण गद्य लिखे। उस प्रतापी बादशाह के कुछ शेर इस प्रकार हैं —

शेर

'चन्द्र-मुखी लोगों की हमें सर्वदा चिन्ता रहती है,
मैं उस परी रूपी का दास हूँ जो आसक्तों को आश्रय प्रदान करता है।

शेर

'मैं आत्म हत्या कर लेता यदि तेरा वियोग समझता
अन्यथा इस [illegible] से चला जाना मेरे लिये सम्भव था।'

तेरे दाग का [illegible] मेरे हृदय को प्राप्त हुआ,
[illegible] हृदय का [illegible] [illegible]ाले के समान था।

शेर

हम खराबात[1], मस्त एव मादक हैं,
ससार मे जो कुछ कहो, वह है।
जब उसके काले केशो मे अपना हृदय फसाया,
ससार की परेशानियो से हम मुक्त हो गये।'

शेर

यद्यपि मैं दरवेशो से सम्बन्धित नही हू,
तथापि दिल और जान से उनका भक्त हू।
मत कहो यह कि शाह दरवेश से दूर है,
मैं बादशाह हू, फिर भी दरवेशो का दास हू।'

इस कारण कि ससार की समस्त वस्तुयें नश्वर हैं उनका भी देहावसान ९३७ हि० (१५३० ई०) म हो गया। उनकी मृत्यु की तारीख इस प्रकार है

वह पादशाह जिसके बादशाह लोग
थे दास, सेवक एव आज्ञाकारी।
जब उसने ससार मे निष्ठा का अभाव देखा,
इस नश्वर ससार से चला गया।
बुद्धि ने उसकी मृत्यु की तिथि पूछी,
मैंने कहा उसे स्वर्ग प्राप्त हो।"[2]

एक अन्य कवि ने यह रचना की —

बादशाहो का बादशाह बाबर, जिसके पास थ
२०० दास जमशेद एव कै[3] के समान।
मुहम्मद हुमायू उसके स्थान पर बैठा,
जब उसकी अवस्था के लेखे को मृत्यु ने समाप्त किया।
जब पूछे उसकी तारीख तो हे दिल कह,
हुमायू हुआ उसके राज्य का उत्तराधिकारी।"[4]

मौलाना उम्मेदी ने यह रचना की —

'जब नश्वर ससार से समकालीन बादशाह विदा हुआ,
सैनिको एव परिजनो ने काले वस्त्र धारण किये।

१ मधुशाला।
२ 'गुफ्तम ऊरा बहिश्त रोजीबाद'।
३ कैकाऊस ईरान का पौराणिक बादशाह।
४ 'हुमायूँ बुवद वारिसे मुल्के वै'।

किसी ने देखा उसे स्वप्न मे,
सरो के समान डील डौल और चन्द्रमा के समान मुख के साथ।
उससे उस सम्मानित बादशाह ने कहा,
सम्मान एव ऐश्वर्य वाले शहशाह से कहो।
मैं चला गया वर्ष एव तिथि रह गई।
धर्म के रक्षक हुमायू दीर्घायु हो।"[1]

उनका पवित्र रौजा काबुल की कदमगाह मे है। उनके चार पुत्र जीवित रहे। पहले हज़रत जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायू पादशाह गाजी, जिनका थोडा सा हाल लिखा जाता है। दूसरे हज़रत मीर्ज़ा कामरान, तीसरे हज़रत मीर्ज़ा अस्करी, चौथे हजरत मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा। इनमे से प्रत्येक का सक्षिप्त हाल लिखा जायेगा।

१ 'हयाते हुमायूँ शहे दीन पनाह'।

हुमायूं नामा

लेखिका—गुलवदन बेगम

(प्रकाशन--लन्दन १९०२ ई०)

प्रस्तावना

(३) बादशाह सलामत का आदेश[1] हुआ था कि फिरदौस मकानी[2] तथा हज़रत जन्नत आशियानी[3] के विषय मे जो कुछ जानती हो वह लिखो।

जिस समय हज़रत फिरदौस मकानी इस नश्वर ससार से सर्वदा स्थायी रहने वाले घर को सिधारे तो इस तुच्छ की अवस्था आठ वर्ष की थी और जो घटनाएँ घट चुकी थी उनमे से बहुत थोडी सी याद रह गई है। शाही आदेश के पालन मे जो कुछ सुना एव याद था उसे लिखा जाता है।

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड मे मैंने अपने बाबा हज़रत बादशाह का हाल लिखा है। यद्यपि ये बाते मेरे बाबा हज़रत बादशाह के वाकेआ नामे मे लिखी हुई हैं किन्तु आशीर्वाद के लिये इन्हे लिखा जाता है।

हज़रत साहब किरान[4] के समय से हज़रत फिरदौस मकानी के समय तक भूतकाल के सुल्तानो म से किसी ने भी उनके बराबर परिश्रम नही किया। वे बारह वर्ष की अवस्था मे बादशाह हुए और ५ रमज़ान ९०९ हि० (१० जून १४९४ ई०) को फरगाना की विलायत की राजधानी अन्दिजान मे खुत्वा पढवाया।[5]

बाबर के राज्यकाल के प्रारम्भिक वर्ष

पूरे ११ वर्ष तक मावराउन्नहर मे चगताई एव तीमूरी तथा ऊज़बेगी सुल्तानो से ऐसा युद्ध एव सघर्ष करते रहे कि उसका उल्लेख सम्भव नही है। जिन कठिनाइयो एव खतरो का हमारे हज़रत[6] ने सामना किया उनका कभी किसी ने क्या सामना किया होगा ? जितनी वीरता, पौरुष एव सहनशीलता (४) का प्रदर्शन उन्होने युद्धो तथा रणक्षेत्र मे किया उतना किसी अन्य बादशाह के विषय मे कम बताया जाता है।

उन्होंने दो बार अपनी तलवार के जोर से समरकन्द विजय किया। प्रथम बार हज़रत बादशाह

१ सम्भवत अबुल फज़ल के 'अकबर नामा' के लिये सामग्री हेतु।
२ बाबर की उपाधि।
३ हुमायू की उपाधि।
४ तीमूर (१३३६-१४०५ ई०)।
५ देखिये बाबर नामा।
६ बाबर।

मेरे बाबा १२ वर्ष के थे, दूसरी बार १९ वर्ष के और तीसरी बार २२ वर्ष के थे।[1] छ मास तक वह घिरे रहे।[2] सुल्तान हुसेन मीर्जा बाईकरा सरीखे उनके चाचा खुरासान मे थे, किन्तु उन्होंने कोई कुमक न भेजी। उनके तगाई[3] सुल्तान महमूद खा काशगर मे थे किन्तु उन्होंने भी कोई सहायता न भेजी। किसी स्थान से सहायता एव मदद न पहुचने के कारण वे निराश हो गये।[4]

इसी प्रकार एक बार शाही बेग खा[5] ने कहला भेजा कि, "यदि अपनी बहिन खानजादा[6] बगम का विवाह मुझसे करा दो तो हमारे और तुम्हारे बीच मे सन्धि हो जायेगी और इस प्रकार हमारा और तुम्हारा मेल बना रहेगा।" अन्त मे वे आवश्यकतावश खानजादा का विवाह खान से करके स्वय चल खडे हुए।[7] उनके साथ केवल दो सौ प्यादे थे जो अपने कन्धों के ऊपर लम्बे लम्बे चुगे तथा पाव मे किसानो के जूते पहिने हुए थे और अपने हाथा मे डडे लिये थे। इस दुर्दशा मे बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के केवल पवित्र (५) ईश्वर पर आश्रित हो कर वे बदख्शानात एव काबुल की ओर रवाना हुए।[8]

कून्दूज एव बदख्शानात मे खुसरो शाह[9] के आदमी एव सैनिक थे। वे मेरे बाबा बादशाह की सेवा मे उपस्थित हो गये। यद्यपि उन्होंने घोर पाप किये थे उदाहरणार्थ बाईसुगर मीर्जा को शहीद कर दिया था और सुल्तान मसऊद मीर्जा को अन्धा बना दिया था और ये दोनो मीर्जा भी मेरे बाबा बादशाह के चाचा के पुत्र थे। इसके अतिरिक्त छापामार युद्ध के दिनो मे जब बादशाह सलामत आवश्यकतावश उसकी विलायत मे पहुचे थे तो उसने बडी कठोरता से उन्हें अपनी विलायत से निर्वासित करा दिया। हज़रत बादशाह उदारता एव पौरुष की साक्षात मूर्ति थे अत उन्होने इस ओर उपेक्षा करते हुए किसी प्रकार का बदला न लिया और आदेश दिया कि, "जो कुछ जवाहिरात एव सोने का असबाब ले जाना चाहो, ले जाओ।" वह ऊटो तथा खच्चरों की ५ ५, ६ ६ किनारों[10] पर असबाब लदवा कर कुशलतापूर्वक विदा होकर खुरासान चला गया और बादशाह सलामत काबुल की ओर चल दिये।

१ बाबर ने समरकन्द पर तीन बार अधिकार जमाया। दो बार उसने विजय किया और तीसरी बार वहा के निवासियों ने उसे बुलवा लिया और उसे कोई युद्ध न करना पड़ा। यह घटनायें १४९७ ई०, १५०० ई० तथा १५११ ई० में जब उसकी अवस्था क्रमश १५,१७ तथा २९ वर्ष की थी, घटीं।

२ १५०० ई० में समरकन्द पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त।

३ मामा।

४ इस समय बाबर की अवस्था १८ वर्ष की थी।

५ अबुल फ़तह मुहम्मद शाह बख्त खा ऊजबेग (शाही बेग खा, शैबानी अथवा शैबाक)।

६ उमर शेख मीर्जा मीरान शाही तथा कूतलूक निगार खानम की पुत्री, बाबर की सगी बहिन और उससे ५ वर्ष बड़ी। उसका विवाह सम्भवत तीन बार हुआ, सर्व प्रथम शैबानी खां से (९०७ हि०। १५०१ ई०) दूसरी बार सैयिद हदा नामक किसी साधारण व्यक्ति से और तीसरी बार महदी मुहम्मद ख़्वाजा से जो मूसा ख़्वाजा का पुत्र था। *उसका जन्म लगभग १४७८ ई० में हुआ होगा। शैबानी से विवाह के* उपरान्त, १५११ ई० म जब वह ३३ वर्ष की थी तो शाह इस्माईल सफ़वी ने उसे बाबर के पास वापस भेज दिया। गुलबदन बेगम उसे आका जानम कहती थी। उसकी मृत्यु ९५२ हि० (१५४५ ई०) में कबल चक म हुई।

७ समरकन्द से ९०७ हि० (जुलाई १५०१ ई०) मे।

८ मुहर्रम ९१० हि० (जून १५०४ ई०)।

९ एक कोपचाक तुर्क, बाईसुग़र तथा मसऊद के पिता सुल्तान महमूद मीर्ज़ा का मुख्य बेग। शैबानी के ऊजबेगों ने ९१० हि० (१५०५ ई०) में उसकी हत्या कर दी।

१० एक क़ितार में ७ से १० तक पशु होते हैं।

काबुल पर अधिकार

उस समय काबुल मुहम्मद मुकीम के अधिकार मे था। मुहम्मद मुकीम जुन्नून अरगून का पुत्र तथा नाहीद बेगम[1] का दादा था। उसने ऊलुग बेग मीर्जा[2] की मृत्यु के उपरान्त काबुल अब्दुर्रज्जाक मीर्जा से छीन लिया था। मीर्जा अब्दुर्रज्जाक बादशाह के चाचा (ऊलुग बेग) का पुत्र था।

बादशाह सलामत काबुल सुरक्षित पहुचे। २-३ दिन तक किले की रक्षा होती रही। कुछ दिन उपरान्त उसने वचनबद्ध होकर तथा आश्वासन प्राप्त करके काबुल को हज़रत बादशाह के सेवको को सौप दिया और अपनी धन-सम्पत्ति सहित अपने पिता के पास कन्धार चला गया।

काबुल रबी-उस्सानी ९१० हि० (अक्तूबर १५०४ ई०) के अन्तिम दस दिनो मे प्राप्त हुआ। बादशाह सलामत काबुल पर अधिकार जमाकर बगश की ओर रवाना हुए और उसे एक आक्रमण मे विजय करके काबुल लौट आये।

हज़रत बादशाह की माता हज़रत खानम[3] छ दिन के ज्वर के उपरान्त इस नश्वर ससार से (६) स्थायी ससार को प्रस्थान कर गई। बागे नव रोज़ मे बादशाह सलामत ने हज़रत खानम को दफन किया। उद्यान के स्वामियो को, जो बादशाह सलामत के सम्बन्धी थे एक हज़ार मिस्काली तन्के देकर ले लिया।

खुरासान की ओर प्रस्थान

इसी बीच मे सुल्तान हुसेन मीर्जा के फरमान इस आग्रह सहित आने लगे कि 'हम लोग ऊज़बको से युद्ध करना चाहते है, यदि तुम भी आ जाओ तो बडा अच्छा हो।" हज़रत (बादशाह) तो ईश्वर से इस बात की इच्छा कर ही रहे थे। अन्ततोगत्वा वे उन लोगो की ओर रवाना हो गये। मार्ग मे उन्हे समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान हुसेन मीर्जा की मृत्यु हो गई। हज़रत बादशाह के अमीरो ने निवेदन किया कि "क्योकि सुल्तान हुसेन मीर्जा की मृत्यु हो चुकी है अत यह उचित होगा कि काबुल लौट जाना चाहिये।" हज़रत (बादशाह) ने कहा कि, 'अब हम इतनी यात्रा कर चुके हैं, मीर्जा की मृत्यु से सम्बन्धित सवेदना ही प्रकट करते चले'।" अन्त मे वे खुरासान की ओर रवाना हो गये।[4]

जब मीर्जा लोगो[5] ने बादशाह सलामत के आगमन के समाचार सुने तो सभी स्वागतार्थ रवाना हुए, केवल बदी उज्ज़मान मीर्जा नही आया कारण कि बरन्दूक बेग एव जुन्नून बेग ने जोकि सुल्तान हुसेन मीर्जा के अमीर थे, निवेदन किया कि, "हज़रत बादशाह, बदी उज्ज़मान मीर्जा से १५ वर्ष छोटे है अत यह उचित होगा कि हज़रत बादशाह घुटने के बल झुककर भेट करें।' इसी बीच मे कासिम बेग ने कहा कि, "यद्यपि वे अवस्था मे छोटे है किन्तु तोरे[6] के अनुसार बडे है कारण कि वे कई बार तलवार के

१ माह चोचक तथा बाबर के अत्का कासिम की पुत्री एव मुहिब अली बरलास की पत्नी।
२ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का पुत्र जो काबुली कहलाता था। उसकी मृत्यु १५०२ ई० में हुई।
३ कुतलूक निगार जिनकी मृत्यु जून १५०५ ई० में हुई।
४ बाबर मुहर्रम ६१२ हि० (जून १५०६ ई०) में रवाना हुआ था। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की मृत्यु ज़िल-हिज्जा ६११ हि० (मई १५०६ ई०) में हुई।
५ बदी उज़्ज़मान तथा मुहम्मद मुज़फ्फर हुसेन, सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पुत्र।
६ चिंगीज़ खा का विधान।

जोर से समरकन्द विजय कर चुके हैं। अन्त म यह निश्चय हुआ कि बादशाह पहुचकर एक बार झुक तदुपरान्त वदी उज्जमान मीर्ज़ा आगे बढ कर उनके प्रति अभिवादन करे और एक दूसरे से आलिंगन (७) हो। इसी बीच म बादशाह सलामत द्वार से प्रविष्ट हुए मीर्ज़ा ध्यान नहीं दे रहा था। कासिम बेग ने हज़रत बादशाह की पेटी को पकडकर खींचा और वरन्दूक बेग तथा जुनून बेग से कहा कि यह निश्चय हुआ था कि मीर्ज़ा आगे बढकर भेंट करेगे। इसी बीच म मीर्ज़ा ने बडी हडबडाहट म आगे बढ कर बादशाह से भेंट की।

जितने दिन हज़रत (बादशाह) खुरासान म रहे मीर्ज़ा लोगो म से प्रत्येक व्यक्ति आतिथ्य-सत्कार करता रहा। महफिल आयोजित होती रही तथा समस्त बागो एव महलो की सैर कराई गई। मीर्ज़ा लोगो ने बादशाह सलामत से आग्रह किया कि वे शीत ऋतु म वहीं ठहर जायें और शीत ऋतु के उपरान्त उजबेगो से युद्ध किया जायेगा किन्तु वे लोग युद्ध के विषय म कोई बात अन्तिम रूप से निश्चय न कर सके।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा खुरासान को ८० वर्ष[1] तक आबाद एव सुरक्षित रखे रहा किन्तु मीर्ज़ा लोग छ मास तक भी अपने पिता के स्थानो की रक्षा न कर सके।

हज़रत बादशाह ने जब यह देखा कि वे उनके व्यय की चिन्ता नहीं कर रहे है तो बादशाह उन स्थानो को देखने के बहाने से जो उनके लिये निश्चित किये गये थे काबुल की ओर चल खडे हुए।[2]

बाबर की काबुल को वापसी

उस वर्ष अत्यधिक बरफ पडी थी। वे मार्ग भूल गये। हज़रत (बादशाह) तथा कासिम बेग ने उस मार्ग के निकट होने के कारण उसे चुना था अन्यथा अन्य अमीरो ने इसके विरुद्ध परामर्श दिया था। क्योंकि बादशाह ने उनकी बात न मानी थी अत वे लोग उनकी चिन्ता किये बिना इधर उधर चले गये। हज़रत (बादशाह) तथा कासिम बेग अपने पुत्रो सहित तीन चार दिन तक बरफ हटा हटा कर मार्ग निकालते थे और सेना वाले उनके पीछे-पीछे यात्रा करते थे। इस प्रकार यात्रा करते हुए वे गरबन्द तक पहुचे। उस स्थान पर विद्रोही हज़ारा लोगो से (हज़रत) बादशाह का युद्ध हुआ। हज़ारा लोगो के अत्यधिक मवेशी भेड एव धन सम्पत्ति शाही आदमियो को प्राप्त हुई और लूट की अपार धनसम्पत्ति ले कर वे काबुल की ओर चल खडे हुए।

बाबर का काबुल पर पहुचना

जब वे मीनार पर्वत के समीप पहुचे तो उन्हे ज्ञात हुआ कि मीर्ज़ा खान तथा मीर्ज़ा मुहम्मद हुसेन गुरगान ने विद्रोह कर दिया है और काबुल को अधिकार म कर लिया है। हज़रत (बादशाह) ने काबुल वालो के पास प्रोत्साहनयुक्त फरमान लिख कर भेजे कि धैर्य धारण करो हम पहुच गये है। हम लोग

१ सुल्तान हुसेन का जन्म ८४२ हि० (१४३८ ई०) मे तथा मृत्यु ९११ हि० (१५०६ ई०) म हुई अत ८० वर्ष की संख्या किसी निश्चित अवधि को नहीं जाहिर करती अपितु दीर्घ काल के लिये इसका प्रयोग हुआ है।
२ देखिये पूर्व पृ० ८३ ६८।
३ सुल्तान वैस बाबर के चाचा महमूद तथा उसकी सौतली खाला सुल्तान निगार खानम का पुत्र।
४ मीर्ज़ा हैदर दूगलात तारीख़ रशीदी के लेखक का पुत्र। वह बाबर की माता की सगी बहिन खूब निगार का पुत्र था।

(८) बीबी माहरूई नामक पर्वत के ऊपर अग्नि जलायेंगे तुम लोग भी खजाने वाली के ऊपर आग जला देना ताकि पता चल जाये कि तुम्हें हमारे आगमन की सूचना मिल गई है। प्रातःकाल उस ओर से तुम लोग और इस ओर से हम लोग शत्रु से युद्ध करेंगे।" किन्तु किले के आदमियों के आने के समय तक हजरत (बादशाह) ने युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली।

बाबर का काबुल पर अधिकार

मीर्ज़ा खान अपनी माता के, जोकि बादशाह सलामत की खाला थी, घर में छिप गया। अन्त में खानम अपने पुत्र को लेकर पहुंची और उसके अपराध की क्षमा मांगी। मीर्ज़ा मुहम्मद हुसैन अपनी पत्नी के घर में था। उसकी पत्नी बादशाह सलामत की छोटी खाला थी। वह प्राण के भय से एक फर्श के नीचे घुस गया और अपने सेवकों से कहा कि, "मुझे इसमें बांध दो।" अन्ततोगत्वा बादशाह के आदमी इस बात से अवगत होकर मीर्ज़ा मुहम्मद हुसैन को फर्श के नीचे से निकाल लाये और बादशाह सलामत की सेवा में उपस्थित किया। अन्त में बादशाह सलामत ने अपनी खालाओं की खातिर मीर्ज़ा मुहम्मद हुसैन को क्षमा कर दिया। वे अपनी खालाओं के घर प्रथानुसार आया जाया करते थे और नित्यप्रति उनकी अधिक से अधिक आवभगत करते थे ताकि उनके हृदय में किसी प्रकार का मैल न आने पाये। उन्होंने उन लोगों को मैदानों में स्थान एवं जागीरें प्रदान कर दीं।

काबुल को मीर्ज़ा खान के अवरोध से मुक्ति प्राप्त हो गई और परमेश्वर ने उसे हजरत बादशाह को प्रदान कर दिया। उस समय उनकी अवस्था २३ वर्ष की थी[1] और उनके कोई संतान न थी और उन्हें संतान की बड़ी अभिलाषा थी। १७ वर्ष की अवस्था में सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पुत्री आयेशा सुल्तान बेगम[2] द्वारा एक पुत्री[3] का जन्म हुआ था जोकि तीन मास में मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। ईश्वर ने काबुल की विजय उनके लिये शुभ बनाई और उनके अट्ठारह पुत्र एवं पुत्रियां हुईं।

बाबर की संतान

सर्वप्रथम मेरी आका[4] से जिनका नाम माहम बेगम[5] था, हजरत हुमायूं बादशाह, बारबूल मीर्ज़ा, मिहर जहां बेगम[6], ईशान दौलत बेगम तथा फारूक मीर्ज़ा[7] का जन्म हुआ।

१ बाबर ने जब मुहम्मद मुकीम से काबुल जीता तो उसकी अवस्था २३ वर्ष की थी। मीर्ज़ा खान का विद्रोह दो वर्ष बाद हुआ।
२ सुल्तान अहमद मीर्ज़ा तथा कुतुक बेगम की पुत्री। वह बाबर की चचा जाद बहिन तथा पहली पत्नी थी। बाबर तथा आयेशा सुल्तान बेगम की मंगनी समरकन्द में, जब कि बाबर की अवस्था ५ वर्ष की थी, (१४८८-८९ ई० में) हुई। शाबान ६०५ हि० (मार्च १५०० ई०) में खुजन्द में उनका विवाह हुआ।
३ फ़खरुन्निसा बेगम (जन्म ६०७ हि०। १५०१ ई०)।
४ सम्मानित स्त्री।
५ यद्यपि वह बाबर की सबसे अधिक प्रिय पत्नी थी किन्तु उसके पूर्वजों के विषय में कोई निश्चित ज्ञान नहीं है। बाबर ने माहम से हिरात में, जब वह वहां सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त ६१२ हि० (१५०६ ई०) में गया था, विवाह किया था।
६ मिहर जान बेगम भी लिखा गया है। उसका जन्म खुस्त में हुआ था।
७ जन्म १५२५ ई०, मृत्यु १५२७ ई०।

मासूमा सुल्तान बेगम[1] से, जो अहमद मीर्ज़ा की पुत्री थी, एक पुत्री का जन्म हुआ किन्तु पुत्री के जन्म के समय ही माता की मृत्यु हो गई। जो नाम माता का था वही नाम पुत्री का रख दिया गया।

गुलरुख बेगम[2] से कामरान मीर्ज़ा, अस्करी मीर्ज़ा, शाहरुख मीर्ज़ा, सुल्तान अहमद मीर्ज़ा तथा गुल अज़ार[3] बेगम का जन्म हुआ।

(९) दिलदार बेगम[4] से गुलरंग बेगम[5], गुलचेहरा[6] बेगम हिन्दाल मीर्ज़ा, गुलबदन बेगम[7] एवं अल्वर मीर्ज़ा[8] का जन्म हुआ[9]।

संक्षेप में काबुल की विजय एक शुभ मुहूर्त में हुई जिसके कारण सभी पुत्रों एवं पुत्रियों का जन्म काबुल में हुआ। केवल दो पुत्रियों का जन्म खूस्त में हुआ—मिहर जहाँ बेगम जो माहम बेगम की पुत्री थी और दूसरी गुलरंग बेगम जो दिल्दार बेगम की पुत्री थी।

हज़रत हुमायूं बादशाह फ़िरदौस मकानी के ज्येष्ठ पुत्र का जन्म

उनका शुभ जन्म मंगलवार ४ ज़ीक़ाद ९१३ हि० (६ मार्च १५०८ ई०) की रात्रि में काबुल के भीतरी किले में उस समय हुआ जब कि सूर्य मीन राशि में था।

उसी वर्ष हज़रत फ़िरदौस मकानी ने अपने अमीरों तथा सब लोगों को आदेश दिया कि उन्हें बाबर बादशाह कहा जाया करे अन्यथा हुमायूं बादशाह के जन्म के पूर्व उन्हें मीर्ज़ा बाबर के नाम से पुकारा जाता था, अपितु सभी बादशाह के पुत्रों को मीर्ज़ा कहा जाता था। हुमायूं बादशाह के जन्म के वर्ष में उन्होंने अपने आपको बादशाह कहलाया।

हज़रत जन्नत आशियानी[10] के जन्म की तिथि सुल्तान "हुमायूं खां" के अक्षरों से निकलती है। इसके अतिरिक्त "शाह फ़ीरोज़ कद्र" से भी तिथि निकलती है।

पुत्र के जन्म के उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि शाह इस्माईल ने शाही बेग खां की हत्या कर दी।[11]

१ सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पाँचवी एवं सबसे छोटी पुत्री। उसकी माता हबीब सुल्तान बेगम अरग़ून थी। बाबर का उससे ९१३ हि० (१५०७ ई०) में विवाह हुआ।
२ सम्भवतः वह बेगचीक थी।
३ सम्भवतः उसका विवाह यादगार नासिर से हुआ था।
४ उसके पूर्वजों का भी कोई वर्णन कहीं नहीं मिलता। सम्भवतः बाबर ने उससे १५०६–१५१६ ई० के मध्य में विवाह किया होगा।
५ उसका जन्म सम्भवतः खूस्त में १५११ ई० से १५१५ ई० के मध्य में हुआ था। उसका विवाह ईसान तीमूर चग़ताई मुग़ल से हुआ था जो बाबर का चचा ज़ाद भाई था।
६ उसका जन्म १५१५ तथा १५१६ ई० के मध्य में हुआ था। उसका विवाह बाबर की माता के भाई अहमद के एक पुत्र सुल्तान तूख्ता बूग़ा से ९३७ हि० (१५३० ई०) में हुआ। ९४० हि० (१५३३ ई०) में वह विधवा हो गई। वह गुलबदन तथा हमीदा बानू बेगम के साथ ९६४ हि० (१५५७ ई०) में आई।
७ देखिये अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा।
८ जन्म १५२५ ई०, मृत्यु १५२७ ई०।
९ केवल १६ ही पुत्रों तथा पुत्रियों का उल्लेख हुआ है।
१० हुमायूँ।
११ मर्व में २ दिसम्बर १५१० ई० को।

समरकन्द की विजय

बादशाह सलामत काबुल नासिर मीर्ज़ा[1] को सौप कर अपने परिवार एव पुत्रो, हुमायू बादशाह, मिहर जहा बेगम, बारबूल मीर्ज़ा, मासूमा सुल्तान बेगम तथा मीर्ज़ा कामरान को लेकर समरकन्द की ओर रवाना हुए।[2]

शाह इस्माईल की सहायता से उन्होने समरकन्द विजय किया[3]। आठ मास तक पूरा मावराउन्नहर उनके अधीन रहा। भाइयो के साथ न देने एव मुगलो के विरोध के कारण कूल मलिक मे[4] उन्हे उबैदुल्लाह खा[5] ने पराजित कर दिया और वे उस विलायत मे न ठहर सकने के कारण बदख्शा तथा काबुल की ओर चल दिये। मावराउन्नहर को पुन विजय करने का विचार अपने मस्तिष्क से निकाल दिया।

९१० हि० (१५०४ ई०) मे उन्हे काबुल प्राप्त हुआ था।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण

(१०) उन्हे सर्वदा इस बात की अभिलाषा रहती थी कि वे हिन्दुस्तान को विजय करें किन्तु अमीरो के दुस्साहस एव भाइयो के विरोध के कारण हिन्दुस्तान पर विजय न प्राप्त हो सकी। अन्त मे जब कि भाई लोग न रहे[6] और अमीरो मे से कोई ऐसा न रह गया जो कि उनके उद्देश्य के विरोध मे कोई बात कह सकता तो ९२५ हि० (१५१९ ई०) मे बजौर को २-३ घडी मे युद्ध द्वारा विजय कर लिया। बजौर वालो का कत्ले आम करा दिया।[7]

उसी दिन अफगानी आगाचा[8] का पिता मलिक मनसूर यूसुफ ज़ाई बादशाह सलामत की सेवा म उपस्थित हुआ। बादशाह सलामत ने उसकी पुत्री अफगानी आगाचा से विवाह कर लिया और मलिक मनसूर को बिदा कर दिया। उसे घोडे एव शाही सरोपा[9] प्रदान किये और आदेश दिया कि वह अपने देश मे आदमियो एव रियाया को ले जाकर उसे आबाद करे।

कासिम बेग ने, जोकि काबुल मे था, प्रार्थनापत्र भेजा कि "नये शाहज़ादे का जन्म हुआ है। मैं इसे हिन्दुस्तान की विजय एव वहा के सिंहासन पर अधिकार जमाने का शकुन समझने का साहस करता हू। वैसे बादशाह स्वामी हैं, वे जो भी समझें, वह उचित है।" बादशाह सलामत ने तत्काल उसका नाम मीर्ज़ा हिन्दाल रखा।

बजौर की विजय के उपरान्त वे भीरा की ओर रवाना हुए। भीरा पहुचकर उन्होंने लूट मार न

१ बाबर का सौतेला भाई, उमीद का पुत्र जो अन्दिजानी था।
२ शव्वाल ९१६ हि० (जनवरी १५११ ई०)।
३ अक्तूबर १५११ ई०।
४ बुखारा में।
५ यह शैबानी का भतीजा था।
६ जहागीर की मृत्यु १५०७ ई० में तथा नासिर की १५१५ ई० में हुई।
७ देखिये पृ० ६० ६७। गुलबदन का वर्णन बड़ा ही मार्मिक एवं संक्षिप्त है।
८ बीबी मुबारिका अफ़ग़ान महिला।
९ सिर से पाँव तक के शाही वस्त्र (ख़िलअत)।

कराई और सन्धि कर ली। चार लाख शाहरुखी[1] लेकर सेना वालो मे प्रत्येक को उसके सैनिको की सख्या के अनुसार बाट दी और काबुल की ओर रवाना हो गये।[2]

इसी बीच मे बदख्शा वालो के पास से प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए कि, "मीर्ज़ा खान की मृत्यु हो गई है।[3] मीर्ज़ा सुलेमान की अवस्था बहुत थोडी है और ऊजबेग लोग निकट है अत उस विलायत की चिंता करनी चाहिये कि कही ऐसा न हो कि बदख्शा हाथ से निकल जाये।" बदख्शा के विषय मे विचार किया ही जा रहा था कि मीर्ज़ा सुलेमान की माता[4] मीर्ज़ा को ले कर पहुच गई। बादशाह ने उनकी इच्छानुसार मीर्ज़ा (११) सुलेमान को भूमि एव उसके पिता की जागीर प्रदान कर दी। बदख्शा को हुमायू बादशाह को दे दिया और हुमायू बादशाह उस ओर चल दिये।

हज़रत बादशाह एव मेरी आका[5] भी पीछे पीछे बदख्शा पहुची और कुछ दिन तक सब साथ रहते रहे। हुमायू बादशाह वही ठहर गये और मेरे बाबा बादशाह एव मेरी आका काबुल आ गये।[6]

कुछ समय उपरान्त वे कलात एव कन्धार[7] की ओर रवाना हुए। कलात पहुचते ही उसे तत्काल विजय करके कन्धार की ओर रवाना हुए। कन्धार वाले डेढ वर्ष तक किले की रक्षा करते रहे। डेढ वर्ष के घोर युद्ध के उपरान्त ईश्वर की कृपा से उन्होने कन्धार विजय कर लिया। अत्यधिक धन सम्पत्ति उन्हे प्राप्त हो गई। सैनिको एव लश्कर वालो को धन सम्पत्ति एव ऊट बाटे गये। हज़रत बादशाह ने मीर्ज़ा कामरान को कन्धार प्रदान कर दिया और हज़रत बादशाह स्वय काबुल लौट गये।

शुक्रवार के दिन १ सफर ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को, जब कि सूर्य धनु राशि म था, अपने आगे चलने वाले खेमे को रवाना कर दिया तथा यकलगा[8] नामक पहाडी से होते हुए देहे याकूब की घाटी मे पडाव किया। वहा ठहर कर वे दूसरे दिन निरतर यात्रा करते हुए हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए।

९२५ हि०[9] (१५१९ ई०) से ७-८ वर्ष के बीच मे उन्होने कई बार हिन्दुस्तान की ओर चढाई की और हर बार कोई न कोई विलायत एव परगना विजय किया उदाहरणार्थ भीरा, बजौर, सियालकोट, दीवालपुर, लाहौर इत्यादि, यहा तक कि पाचवी बार वे शुक्रवार के दिन पहली सफर ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को देहे-याकूब से निकल कर निरन्तर यात्रा करते हुए हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए। लाहौर, सरहिन्द एव जो विलायतें भी उनके मार्ग मे थी उन्हे विजय कर लिया।

१ अर्सकिन के अनुसार २०,००० पौंड।
२ फ़रवरी १५१६ ई० के अन्त में।
३ ९२६ हि० (१५२० ई०) के करीब।
४ सुल्तान निगार खानम।
५ माहम बेगम।
६ ९२६ हि० (१५२० ई०)। इस समय हुमायूँ की अवस्था १३ वर्ष की थी और सम्भवत इसी कारण माता पिता उसके साथ गये।
७ कन्धार, शाह बेग अरगून के अधीन था जो शाह हुसेन का पिता था, सर्व प्रथम उसने १५०५ ई० में कन्धार विजय करने का प्रयत्न किया। इस बार यह युद्ध सम्भवत ९२८ हि० (१५२२ ई०) को समाप्त हुआ।
८ काबुल तथा बुतखाक के मध्य में जलालाबाद के माग पर एक पहाड़ी।
९ मूल पुस्तक में ९३५ हि०, किन्तु यह पुस्तक नकल करने वाले की भूल है।

सुल्तान इबराहीम से युद्ध

८ रजब ९३२ हि० (२० अप्रैल १५२६ ई०) को शुक्रवार के दिन पानीपत मे सुल्तान इबराहीम बिन सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल लोदी से युद्ध हुआ। ईश्वर की कृपा से उन्हे विजय प्राप्त हुई और सुल्तान इबराहीम उस युद्ध मे मारा गया।

(१२) यह विजय केवल ईश्वर की कृपा से प्राप्त हुई कारण कि सुल्तान इबराहीम के पास एक लाख अस्सी हजार अश्वारोही तथा डेढ हज़ार मस्त हाथी थे। हज़रत बादशाह के लश्कर मे व्यापारियो एव छोटे बडे सब को मिलाकर १२ हजार थे। जो सिपाही किसी कार्य योग्य थे उनकी अधिकतम सख्या ६-७ हज़ार रही होगी।

हजरत बादशाह को पाच बादशाहो का खज़ाना प्राप्त हुआ और उन्होंने सब खज़ाना बाट दिया।[1] इसी बीच मे हिन्दुस्तान के अमीरो ने निवेदन किया कि "हिन्दुस्तान मे भूतकाल के बादशाहो का खज़ाना व्यय करना बडा बुरा समझा जाता है अपितु खजाने को धीरे धीरे बढा कर जमा किया जाता है। हज़रत (बादशाह) ने इसके विरुद्ध कार्य किया है और समस्त खज़ाने को बाट दिया है।"

ख्वाजा कला बेग की काबुल को वापसी

ख्वाजा कला बेग ने कई बार काबुल वापस जाने की अनुमति मागी और कहा कि, मेरा स्वास्थ्य हिन्दुस्तान की जलवायु के अनुकूल नही है, यदि आज्ञा हो जाये तो मैं कुछ समय के लिये काबुल चला जाऊ।" (हजरत बादशाह) ख्वाजा से कदापि पृथक् होना न चाहते थे किन्तु उन्होने जब देखा कि ख्वाजा अत्यधिक आग्रह कर रहा है तो बिदा कर दिया और कहा, "क्योंकि तुम जा रहे हो अत सुल्तान इबराहीम की विजय द्वारा जो हिन्दुस्तान की उत्तम वस्तुयें प्राप्त हुई है उन्हे मेरे वली नेमतो[2], बहिनो एव अत पुर की स्त्रियो को पहुचा दो और अपने साथ लेते जाओ। मैं उनकी सविस्तार सूची दे दूगा, तुम उसी के अनुसार वितरण कर देना और कह देना कि बाग तथा दीवानखाने[3] मे सभी बेगमे सरापरदे[4] एव चादरें[5] अलग अलग लगवायें और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें कि उसने इतनी महान् विजय प्रदान की।"

काबुल वालो को इनाम

प्रत्येक बेगम को इस प्रकार उपहार दिये जायें —सुल्तान इबराहीम की 'पातुरा'[6] मे से एक विशेष पातुर तथा एक सोने की रकाबी, जवाहिरात, लाल, मोती, याकूत[7], हीरे जमर्रुद[8], फीरोज़े[9]

१ बाबर ने ११ अथवा १२ मई १५२६ ई० को खज़ाने का वितरण किया और अपने लिये इतना रक्खा कि उसे कलन्दर की उपाधि दी जाने लगी।
२ बुज़ुर्गों, आश्रय दाताओं।
३ दरबार कक्ष।
४ परदे सजावट हेतु।
५ खेमे।
६ मूल पुस्तक में प्रयुक्त।
७ एक प्रसिद्ध रत्न, पुलक।
८ एक प्रकार का मणि।
९ हरित मणि।

जबरजद[1] तथा ऐनुलहर[2] से भरी हुई सीपी के एक छोटे ख्वान[3] मे अशर्फिया, दो दूसरे ख्वानो में शाहरुखी, नाना प्रकार के कपडो के ९-९ जोडे चार ख्वानो तथा एक रकाबी मे।

एक पातुर, एक जवाहिरात की रकाबी और ख्वानो पर अशर्फियाँ एव शाहरुखिया मेरे आदेशानुसार मेरे वली नेमता के पास ले जाओ। उन्हें उसो प्रकार की जवाहिरात की रकाबियाँ (१३) तथा पातुरें प्रदान की गईं। जवाहिरात अशर्फिया, शाहरुखिया तथा वस्त्र मेरी बहिनों बच्चो, अन्त-पुर की स्त्रियों सम्बन्धियो, बेगमो, आगाओं[4], अनगाओ, कोकाओ[5], आगाचाओ एव समस्त शुभचिन्तको के लिये जवाहिरात एव अशर्फिया अलग-अलग दी गई। तीन दिन तक बाग एव दीवानखाने मे खुशी एव समारोह रहा। सभी लोगों ने सम्मानित होकर हजरत बादशाह के लिये शुभकामनायें की तथा फातेहा[6] पढा और खुशिया मना कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे किये।

ख्वाजा कला बेग के हाथ असस[7] को एक बडी अशर्फी, जिसका वजन तीन सेर बादशाही और हिन्दुस्तान के पन्द्रह सेर के बराबर था, भेजी और ख्वाजा से कह दिया कि, "यदि वह तुमसे पूछे कि हजरत बादशाह ने मेरे लिये क्या भेजा है तो कह देना कि एक अशर्फी", कारण कि वास्तव मे एक ही अशर्फी भेजी गई थी। वह आश्चर्य करता रहा और तीन दिन तक कुढता रहा। बादशाह ने आदेश दिया था कि अशर्फी मे छेद कर दिया जाये और असस की आख बन्द करके अशर्फी उसकी गरदन मे लटका दी जाये और फिर वह अन्त पुर के भीतर भेज दिया जाये। जैसे ही अशर्फी छेद करके उसकी गरदन मे डाली गई तो उसके बोझ से उसने बडे विचित्र प्रकार से कौतूहल एव प्रसन्नता प्रकट की ओर अपने दोनो हाथ स अशर्फी को पकडकर कहता रहा कि "कोई मेरी अशर्फी न ले।" बेगमो ने भी उसे १०-१०, १२-१२ अशर्फिया दी, यहा तक कि उसके पास ७०-८० अशर्फिया हो गईं।

ख्वाजा कला बेग के काबुल रवाना हो जाने के उपरान्त हजरत बादशाह ने आगरा मे हुमायू बादशाह, समस्त मीर्जाओं, सुल्ताना एव अमीरो को खज़ाना बाटा और आसपास तथा विभिन्न विलायतो मे यह चेतावनी देते हुए फरमान भेजे कि, "जो कोई भी हमारी सेवा मे उपस्थित हो जायेगा उसे पूर्ण रूप से आश्रय प्रदान किया जायेगा। विशेष रूप से वे लोग जिन्होंने हमारे पिता एव पितामह एव पूर्वजों की सेवा की है आ जायें तो उन्हें पर्याप्त रूप से इनाम प्रदान किये जायेंगे। साहब किरान[8] एव चिंगीज़ खा की सन्तान से जो कोई भी हो, वह हमारे दरबार की ओर रवाना हो जाये। पवित्र ईश्वर ने हमे हिन्दुस्तान का राज्य प्रदान किया है, आ जाओ और हम सब लोग मिलकर इस समृद्धि से लाभ (१४) उठावें।

१ पीत मणि, पुखराज।
२ एक प्रकार का मणि।
३ थाल।
४ वह स्त्रिया जो अन्त पुर की देख भाल करती थीं।
५ दाइयाँ।
६ कुरान शरीफ़ का प्रथम अध्याय जो आशीर्वाद एव शुभकामनाओं तथा प्रतिज्ञा हेतु पढा जाता है।
७ मूल पुस्तक में 'अम्मू असस लिखा है किन्तु असस बाबर का चाचा न था। यह शब्द किसी अन्य शब्द के स्थान पर भूल से लिख दिया गया है। सम्भवत वह माहम बेगम का भाई था जो काबुल का हाकिम नियुक्त हुआ था।
८ तीमूर।

काबुल से बेगमो का आगमन

सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्रिया मे से सात[1] बेगमे आई हुई थी, गौहरशाद बेगम[2], फख्र जहां[3] बेगम, खदीजा सुल्तान[4] बेगम, बदीउलजमाल बेगम[5], आक बेगम[6] सुल्तान बख्त[7] बेगम, इनके अतिरिक्त जैनब सुल्तान खानम, बादशाह सलामत के मामा सुल्तान महमूद खा की पुत्री और मुहिब सुल्तान खानम बादशाह के छोटे मामा इलाचा खान[8] की पुत्री।

सक्षेप मे समस्त बेगमे एव खानमे, जिनकी सख्या ९६ थी, पहुची और सब को उनकी इच्छानुसार जागीरें और इनाम प्रदान किये गये।

हज़रत बादशाह चार वर्ष तक आगरा मे रहे। इस अवधि मे प्रत्येक शुक्रवार को वे अपनी चाचिया के दर्शन हेतु जाया करते थे। एक दिन अत्यधिक गरमी पड रही थी। मेरी आका[9] ने कहा कि, "बडी गरमी है, यदि एक शुक्रवार को आप न जायेंगे तो क्या हो जायेगा? बेगम लोग इस बात से रुष्ट न होंगी।" बादशाह ने मेरी आका से कहा, "माहम! बडे आश्चर्य की बात है कि तू यह कह रही है! अबू सईद सुलतान मीर्ज़ा की पुत्रिया अपने पिता एव भाइयो से पृथक् हो चुकी है। यदि मैं उनको प्रोत्साहन न दूगा तो क्या होगा!"

बादशाह सलामत ने ख्वाजा कासिम मेमार[10] को आदेश दिया कि, "हम तुझे एक बडी अच्छी सेवा का आदेश दे रहे हैं। वह इस प्रकार है कि हमारी चाचियाँ जिस कार्य के लिये, चाहे वह बडे ही स्तर पर क्यों न हो, आदेश दें, उनके महलो मे करादो और उस कार्य को प्रायमिकता प्रदान करो तथा दिल व जान से उसे पूरा करो।"

आगरा में भवन निर्माण

आगरा मे नदी के उस पार बादशाह ने भवनो का निर्माण कराया। अन्त पुर तथा उद्यान के बीच मे अपने लिये एक पत्थर के महल का निर्माण करवाया। एक महल का निर्माण उन्होने दीवान

१ केवल ६ बेगमों के नाम लिखे हैं।
२ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री एव बाबर की चाची।
३ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री, मीर अलाउल मुल्क तिरमिज़ी की पत्नी तथा शाह बेगम एवं कीचीक बेगम की माता। वह १५२७ ई० में अपनी बहिन खदीजा के साथ हिन्दुस्तान पहुँची और वहा लगभग २ वर्ष रही। वह २० सितम्बर १५२८ ई० को काबुल जाने के उद्देश्य से बाबर से बिदा हुई किन्तु बाद में फिर वापस आ गई।
४ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। उसके पति के नाम का पता नहीं चल सका।
५ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। १५३१ ई० की दावत मे वह हिन्दुस्तान में मौजूद थी।
६ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। वह १५३० ई० में गुलरग एव गुल चेहरा के विवाह तथा १५३१ ई० की दावत में हिन्दुस्तान में मौजूद थी।
७ सुल्तान बख्त बेगम, सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। वह भी १५३१ ई० की दावत मे मौजूद थी।
८ इलाचा खान अहमद।
९ माहम बेगम।
१० एमारत बनाने वाला, अभियंता।

खाने मे करवाया। इसके बीच मे उन्होने एक हौज़ बनवाया और चार बुर्जखानो पर चार कोठिया तैयार करवाई। नदी तट पर एक चौक्न्दी[1] का निर्माण कराया।

(१५) इन्होने धौलपुर मे एक बडी चट्टान से १० × १०[2] का एक हौज़ तैयार करवाया। वे कहा करते थे कि "जब यह हौज़ तैयार हो जायेगा तो मैं इसे मदिरा से भरवाऊगा।" क्योकि बादशाह ने राणा सागा के युद्ध के पूर्व मदिरापान से तोबा करली थी, अत उसे नीबू के शरबत से भरवाया।

राणा सागा से युद्ध

सुल्तान इब्राहीम पर विजय प्राप्त करने के एक वर्ष उपरान्त मान्डू[3] की ओर से राणा ने एक अपार सेना लेकर चढाई करदी।

अमीरो, राजाओ एव राणाओ मे से जो जो लोग हज़रत बादशाह की सेवा मे सम्मिलित हो गये थे वे सब के सब विद्रोही बन गये और राणा से मिल गये। कोल, जलाली, सम्बल, रापरी तथा सभी परगनो के राय, राजा एव अफगान विद्रोही बन गये। लगभग दो लाख अश्वारोही एकत्र हो गये।

इसी बीच मे मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी ने सेना वालो से कहा कि, "राज्य के हित मे यह उचित होगा कि हज़रत बादशाह युद्ध न करें। सितारये सक्किज़ यिल्दुज़[4] सामने है।"

(१६) बादशाह की सेना मे एक विचित्र प्रकार की चिन्ता उत्पन्न हो गई और सभी लोग परेशान एव दुखी हो गये तथा कायरता प्रदर्शित करने लगे। जब बादशाह सलामत ने सेना की यह दशा देखी तो इस विषय मे पूर्ण रूप से सोच विचार किया। जब शत्रु निकट पहुच गया तो जो उपाय बादशाह ने सोचा वह इस प्रकार था—उन्होंने समस्त अमीरो, खानो, सुल्तानो, सर्वसाधारण एव सम्मानित व्यक्तियो और छोटे बडे को, जोकि भागने तथा विद्रोह करने से बच गये थे, एकत्र होने का आदेश दिया। सभी लोग एकत्र हुए। बादशाह ने कहा कि, "तुम्हें पता भी है कि हमारी जन्म भूमि एव नगर के मध्य मे कितने मास की दूरी है? ईश्वर हमे उस दिन से बचाये और पराजय का मुह न दिखाये। ईश्वर न करे कि ऐसा हो, हम कहा, हमारी जन्म भूमि कहा और शहर कहा। इस समय हमारा पाला अजनबी एव अपरिचित लोगो से पडा है अत यही उचित होगा कि हम इन दो बातो का सकल्प कर लें कि यदि हम शत्रु की हत्या कर देंगे तो गाजी हो जायेंगे और यदि मारे जायेंगे तो शहीद होंगे। दोनो प्रकार से हमारा ही उपकार होगा और हम सम्मानित लोगो मे एव उत्कृष्ट श्रेणी को प्राप्त होंगे।" सभी लोगो ने एक दिल होकर इसे स्वीकार किया और अपनी पत्नियो के तिलाक देने की एव कुरान शरीफ की शपथ ली और फातेहा पढकर कहा कि, हे "बादशाह! यदि ईश्वर ने चाहा तो हम अपनी अन्तिम सास तक प्राण न्योछावर करने एव आत्म बलिदान करने मे कोई कसर न उठा रखगे।"

मदिरापान का त्याग

राणा सागा से युद्ध के दो दिन पूर्व बादशाह ने मदिरापान से अपितु शरा के विरुद्ध समस्त बातो

१ छत पर एक एमारत जिसके चारों ओर द्वार होते है।
२ २० फ़ीट × २० फ़ीट।
३ यह शब्द स्पष्ट नही।
४ ऐसे नक्षत्रों का समूह जो अपने स्थान पर स्थिर हो।

से तोबा कर ली। बादशाह का साथ देते हुए एवं अनुकरण करते हुए ४०० प्रसिद्ध जवानों ने, जिन्हें पौरुष एवं बादशाह के प्रति निष्ठा का दावा था, उसी सभा में हजरत बादशाह के कारण तोबा कर ली। शरा के विरुद्ध जितने भी यन्त्र थे तथा सोने चादी के बरतन, प्याले, सुराही इत्यादि तोडकर फकीरों एवं दरिद्रियों को बाट दिये गये।

चारो ओर इस चेतावनी सहित फरमान भेजे गये कि सब लोगों को बाज, तमगा, गल्ले की जकात, एवं शरा के विरुद्ध करो से मुक्त किया जाता है। कोई भी व्यक्ति व्यापारियों के आने जाने पर कोई रोक टोक न लगाये और उन्हें निश्चिन्त होकर आने जाने दिया जाये।

कासिम हुसैन का आगमन

(१७) जिस दिन राणा सागा से युद्ध होने वाला था उस दिन के पूर्व रात्रि मे कासिम हुसैन सुल्तान के विषय मे समाचार प्राप्त हुए कि वह खुरासान से चलकर दस कोस की दूरी पर पहुच गया है। वह सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा का उसकी एक पुत्री आयेशा सुल्तान बेगम द्वारा नाती होता था। हजरत (बादशाह) यह समाचार पाकर बडे प्रसन्न हुए और उन्होंने पूछा कि, "उसके साथ कितने आदमी होगे? जब यह पता चल गया कि उसके साथ ३०-४० अश्वारोही होगे तो तुरन्त एक हजार पूर्ण रूप से सशस्त्र अश्वारोही आधी रात्रि मे भेज दिये गये कि वे उन्हें अपने साथ उसी रात्रि मे ले आयें ताकि शत्रुओं एवं अनभिज्ञ लोगों को पता चल जाये कि समय पर कुमक पहुच गई है। जिस किसी ने भी इस उपाय एवं योजना को सुना, बडा पसन्द किया।

राणा सागा की पराजय

जमादि उल-अव्वल ९३३ हि०[1] को प्रात काल सीकरी पर्वत के दामन मे राणा सागा से युद्ध हुआ और बादशाह सलामत विजय प्राप्त करके गाजी हुए। उसी सीकरी पर्वत पर आजकल फतहपुर बसाया गया है।

माहम बेगम तथा गुलबदन बेगम का हिन्दुस्तान पहुँचना

राणा सागा की विजय के एक वर्ष उपरान्त मेरी आका माहम बेगम काबुल से हिन्दुस्तान पहुची और यह तुच्छ भी उनके साथ सभी बहिनों के पूर्व पहुचकर अपने बाबा हजरत बादशाह की सेवा मे उपस्थित हुई। जिस समय मेरी आका कोल पहुच गईं, हजरत बादशाह ने तीन अश्वारोहियों के साथ दो पालकिया भेजी। वे कोल से आगरा की ओर बडी तीव्र गति से रवाना हुई। हजरत बादशाह का विचार था कि कोल जलाली तक स्वागतार्थ जायें। सायकाल की नमाज़ के समय एक व्यक्ति ने आकर कहा कि "मैं हजरत[2] को दो कोस पर छोडकर आया हू।" मेरे बाबा हजरत बादशाह ने घोडो के आने की भी प्रतीक्षा न की और पैदल रवाना हो गये। उन्होंने माहम की ननचा के खेमे के समक्ष उनसे भेंट की[3]। मेरी आका पैदल हो जाना चाहती थी किन्तु बादशाह सलामत ने प्रतीक्षा न की और जो लोग उनके साथ

१ इसे १२ जमादि उस्सानी ९३३ हि० (१६ मार्च १५२७ ई०) होना चाहिये।
२ हजरत बेगम (माहम)।
३ जो खेमे आगे की मंज़िल पर लगे थे।

थे उन्हे लेकर मेरी आका के पीछे पीछे घर तक पैदल आये। जिस समय मेरी आका ने बादशाह सलामत (१८) से भेट की तो मुझे आदेश हुआ कि मैं दिन निकलने पर बादशाह सलामत की सेवा मे उपस्थित हू।

९ अश्वारोही, तथा २ तूकूज़[1] घोडे एव २ पालकिया बादशाह सलामत ने भेजी थी तथा एक पालकी काबुल से आई थी। मेरी आका की लगभग सौ मुग़ुलानी सेविकायें तोपूचाक घोडो पर बडी शान से सवार थी।

मेरे बाबा का खलीफा[2] अपनी पत्नी सुल्तानम के साथ नऊ ग्राम[3] तक हमारे स्वागतार्थ आया। मैं पालकी मे थी। मेरी मामाओं[4] ने मुझे एक छोटे से बाग मे उतरवाया था। उन्होने एक जुलचा[5] बिछा दिया था और मुझे जुलचे पर बैठा दिया था। उन्होने मुझे सिखा दिया था कि जिस समय मेरे बाबा का खलीफा आये मैं खडी होकर भेट करू। जब मेरे बाबा का खलीफा आया तब मैंने खडे होकर भेंट की। तदुपरान्त उसकी पत्नी सुल्तानम भी आ गई। मैं अज्ञानवश खडी होना चाहती थी कि मेरे बाबा के खलीफा ने आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया कि, "यह आपकी पुरानी सेविका है, इसके लिये खडे होने की आवश्यकता नही है। आपके पिता ने इस अपने वृद्ध दास को इस प्रकार सम्मानित किया है कि उसके विषय मे ऐसा आदेश दे रखा है। यह ठीक है, किन्तु दासो को यह साहस किस प्रकार हो सकता है?"

मैने अपने बाबा के खलीफा से पाच हज़ार शाहरुखिया तथा पाच घोडे एव उसकी पत्नी सुल्तानम से तीन हज़ार शाहरुखी तथा तीन घोडे पेशकश के रूप मे प्राप्त किये। उसने[6] कहा कि "जो कुछ भोजन तैयार हो सका, वह उपस्थित है, यदि आप उसे खालें तो यह दासी के लिये बडे सम्मान का विषय होगा।" मैंने स्वीकार कर लिया। एक रमणीक स्थान पर एक चबूतरा बना हुआ था। वहा लाल कपडे के एक खमे की जिसमे गुजराती ज़रबफ़्त का अस्तर था और ६ कपडे एव ज़रबफ़्त के शामियानो की, जो नाना प्रकार के रग के थे, एक चौकोर घरे की जोकि कपडे से घिरा था और जिसमे रगीन खम्बे थे, व्यवस्था की गई थी।

मैं अपने बाबा के खलीफा के खेमे मे बैठी। भोजन उपस्थित किया गया। उसमे ५० भुनी हुई भेडें, रोटी, शरबत एव अत्यधिक मेवे थे। अन्ततोगत्वा भोजन करके पालकी मे बैठकर मैं अपने बाबा बादशाह की सेवा मे उपस्थित हुई और उनके चरणो में गिर पडी। हज़रत (बादशाह) मेरे विषय मे (१९) बडी देर तक पूछते रहे। थोडी देर तक अपने पास बैठाया। इस तुच्छ को उस समय इतनी अधिक प्रसन्नता हुई कि उससे अधिक कल्पना नही हो सकती।

धौलपुर की सैर

हम लोगों के आगरा पहुचने के तीन मास उपरान्त हज़रत बादशाह धौलपुर की ओर रवाना हुए। माहम बेगम तथा यह तुच्छ भी धौलपुर की सैर के लिये रवाना हुई। धौलपुर मे १० × १० की

१ ६ की सख्या मे, इस प्रकार १८।
२ ख्वाजा निज़ामुद्दीन अली बरलास।
३ यमुना के पूर्व आगरा से लगभग ४ मील पर।
४ मामा का अर्थ माता, मुख्य दाई, वृद्धा है। एक स्थान पर गुलबदन बेगम ने फ़ख़्रुन्निसा बेगम को, जो नदीम ख्वाजा कोका की माता थी, मामा लिखा है।
५ कालीन अथवा फ़र्श।
६ खलीफ़ा की पत्नी।

एक बहुत बडी चट्टान को खोदकर हौज़ बनवाया गया था। वहा से वे सीकरी पहुचे। झील के मध्य मे उन्होंने एक बहुत बडे चबूतरे के निर्माण का आदेश दिया। जब वह तैयार हो गया तो वे नौका मे बैठकर वहा जाते तथा सैर करते और उस चबूतरे पर बैठते थे। वह चबूतरा अभी तक मौजूद है।

सीकरी में भवन निर्माण कार्य

उन्होने सीकरी के बाग़ मे एक चौकन्दी का भी निर्माण करवाया। मेरे बाबा हज़रत बादशाह ने उस चौकन्दी मे एक तोरखाना[1] बनवाया जहा बैठकर वे पुस्तक लिखा करते थे।

गुलबदन बेगम का हाथ उखडना

मैं तथा अफ़गानी आगाचा नीचे की मजिल के समक्ष बैठे हुए थे कि मेरी आका नमाज़ पढ़ने चली गईं। मैंने अफ़गानी आगाचा से कहा कि, 'मेरा हाथ खीचो।" अफ़गानी आग़ाचा ने मेरा हाथ खीचा। मेरा हाथ उखड गया और मैं पीडा के कारण रोने लगी। अन्ततोगत्वा कमान गर[2] ने आकर मेरे हाथ को बाधा और बादशाह सलामत आगरा की ओर चल दिये।

काबुल से बेगमो का आगमन

बादशाह के आगरा पहुच जाने के उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि काबुल से बेगमें आ रही हैं। मेरे बाबा हज़रत बादशाह आका जानम[3] के, जोकि मेरी बडी फुफी एव हज़रत बादशाह की बडी बहिन थी, स्वागतार्थ नऊ ग्राम तक पहुँचे। सभी बेगमो ने आका जानम के साथ उनके भवन मे बादशाह से भेंट की एव प्रसन्नता प्रकट करते हुए ईश्वर के प्रति आभार प्रदर्शन करने के लिये सिज्दे किये। (हज़रत बादशाह) आगरा की ओर चल दिये। समस्त बेगमो को हवेलिया प्रदान की गईं।

बाबर की सल्तनत त्यागने की इच्छा

(२०) कुछ दिन उपरान्त वे ज़र अफ़शा बाग की सैर को गये। उस बाग मे एक वज़खाना[4] था। उसे देखकर बादशाह सलामत ने कहा, "मेरा हृदय सल्तनत एव बादशाही से भर गया है। मैं ज़रअफ़शा बाग मे एकान्तवास ग्रहण करना चाहता हू। मेरी सेवा के लिये ताहिर आफ्ताबची बहुत है। मैं हुमायू को बादशाही प्रदान करता हू।" इसी बीच मे मेरी आका तथा सभी पुत्रो एव पुत्रियो ने रोना तथा विलाप करना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि, "ईश्वर आपको वर्षों तक बादशाही की मसनद पर आरुढ और अगणित क़रनो[5] तक अपनी रक्षा मे रखे और सभी पुत्र आपके चरणो मे वृद्धावस्था को प्राप्त हों।"

१ सम्भवत एक स्थान जिसके चारों ओर नीचा कटहरा लगा हो।
२ हड्डी बैठाने तथा जोड़ने वाला।
३ प्रिय महिला, ख़ानज़ादा बेगम।
४ वह स्थान जहाँ वज़ू किया जाता था। नमाज़ के पूर्व क्रमानुसार हाथ मुँह और पाँव धोना।
५ १०-२० अथवा ३० वर्ष की अवधि।

अलवर मीर्ज़ा की मृत्यु

कुछ दिन उपरान्त अलवर मीर्ज़ा रुग्ण हो गया। उसके पेट मे अत्यधिक पीडा होती थी। यद्यपि हकीमो एव चिकित्सकों ने अत्यधिक उपचार किया किन्तु उसका रोग उत्तरोतर बढता ही गया और अन्त मे उसी रोग से वह इस नश्वर ससार से स्थायी ससार को प्रस्थान कर गया। हज़रत बादशाह को बडा दु ख हुआ। मीर्ज़ा अलवर की माता दिलदार बेगम[1] उस पुत्र के दु ख एव शोक के कारण जो कि अपने युग का अद्वितीय व्यक्ति था, पागल हो गई। जब शोक सीमा से अधिक हो गया तो हज़रत बादशाह ने मेरी आका तथा बेगमो से कहा कि, "आओ, धौल्पुर की सैर को चलें।" उन्होने स्वय नौका मे बैठकर प्रताप एव सलामती के साथ नदी पार की और धौल्पुर की ओर रवाना हुए।

हुमायू का रुग्ण होना

बगमे भी नौका मे बैठकर नदी पार करना चाहती थी कि इसी बीच मे मौलाना फरगरली का देहली से प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि, "हुमायू मीर्ज़ा रुग्ण है और उनकी बडी विचित्र दशा हो गई है। इस समाचार को सुनते ही हज़रत बेगम शीघ्रातिशीघ्र देहली की ओर रवाना हो जायें कारण कि मीर्ज़ा बडे ही कमजोर हो गये हैं।" यह समाचार सुनते ही मेरी आका ने अत्यधिक चिन्ता प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया, वे उस प्यासे के समान हो गईं जो जल से वचित हो गया हो, और इस अवस्था मे वे देहली की ओर रवाना हुईं और मथुरा पहुच गईं। जैसा उन्होने सुना था उससे दस गुना (२१) ससार का दर्शन करने वाली अपनी आखो से हुमायू मीर्ज़ा को कमज़ोर एव शक्तिहीन पाया। वहा से दोनो पुत्र और माता ईसा एव मरियम के समान आगरा की ओर रवाना हुए।

जिस समय वे आगरा पहुचे तो यह तुच्छ अपनी बहिनों के साथ उस फ़िरिश्ता सरीखे शाहज़ादे की सेवा मे उपस्थित हुई। यद्यपि उनकी कमज़ोरी बहुत अधिक बढ गई थी किन्तु उस समय भी जब कभी उन्हें चेत होता तो अपनी मोती बरसाने वाली जिह्वा से हम पूछते थे और कहते थे कि "बहिनों खुशआम देद, आओ हम लोग भेंट करें कारण कि तुमसे भेंट नही की है।" तीन बार अपनी मोती बरसाने वाली जिह्वा से यह वाक्य कहकर हमें सम्मानित किया।

जब हज़रत (बादशाह) ने पहुचकर उन्हें देखा तो देखते ही प्रकाशमय मुख पर कष्ट एव दुःख के चिह्न पैदा हो गये और वे उत्तरोतर खेद प्रकट करने लगे। इसी बीच मे मेरी आका ने कहा कि, 'आप मेरे पुत्र की चिन्ता नही कर रहे हैं। आप बादशाह है। आपको क्या चिन्ता हो सकती है? आपके अन्य पुत्र भी हैं। मुझे दु ख है कि मेरे यही एक अकेला पुत्र है।" बादशाह ने उत्तर दिया कि, "माहम! यद्यपि मेरे अन्य पुत्र भी हैं किन्तु मैं तेरे हुमायू के बराबर किसी पुत्र को भी प्रिय नही समझता कारण कि मैं सल्तनत एव बादशाही तथा समृद्ध ससार, दुनिया के अद्वितीय, अपने काल के विचित्र व्यक्ति प्रतापी, सफल एव प्रिय पुत्र हुमायू के लिए चाहता हू न कि अन्य लोगो के लिये।"

हुमायू की रुग्णावस्था के समय बादशाह सलामत उनके चारो ओर चक्कर लगाते थे और हज़

१ उसके तथा बाबर के विवाह के विषय में न तो 'बाबर नामा' में कोई उल्लेख है और न गुलबदन ने कुछ लिखा है। सम्भवत उसका विवाह १५०६ से १५१६ ई० के बीच में हुआ हो कारण कि इन वर्षों का इतिहास 'बाबर नामा' में नहीं मिलता।

रत मुरतज़ा अली[1] करमल्लाहो वजहू की ओर आशा की दृष्टि डालते थे। बुधवार से उन्होंने इस प्रकार चक्कर लगाना प्रारम्भ किया और हज़रत मुरतज़ा अली की ओर आशा लगानी मगल से। उस समय अत्यधिक गरमी पड रही थी, और उनका[2] दिल और जिगर तप रहा था। उपर्युक्त चक्कर के समय बादशाह सलामत ने ईश्वर से प्रार्थना की कि, "हे ईश्वर! यदि जान का बदला जान हो सकता हो तो मैं बाबर अपनी अवस्था और प्राण हुमायू को प्रदान करता हू।" उसी दिन से हज़रत फिरदौस मकानी रुग्ण होने लगे और हुमायू बादशाह स्नान करके[3] बाहर निकले और दरबार किया। मेरे बाबा हज़रत (२२) बादशाह रुग्णावस्था के कारण भीतर चले गये। वे २–३ मास तक रुग्ण रहे।

बाबर का रुग्ण होना

मीर्ज़ा हुमायू कालिंजर की ओर गये हुए थे। जब हज़रत बादशाह अत्यधिक रुग्ण हो गये तो हज़रत हुमायू को बुलवाने के लिये आदमी भेजे गये। वे शीघ्रातिशीघ्र पहुचे। जब वे बादशाह सलामत की सेवा मे उपस्थित हुए तो उन्हें अत्यधिक कमज़ोर पाया। हज़रत हुमायू बादशाह ने अत्यधिक विलाप करना एव चिन्ता प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया। वे सेवको से पूछते थे कि, "हज़रत बादशाह कैसे इतने कमज़ोर हो गये?" चिकित्सको एव हकीमो को बुलवाकर पूछा कि, "मैं उन्हे स्वस्थ छोडकर गया था, अचानक यह क्या होगया?' उन लोगो ने इधर उधर की बातें उत्तर मे कह दी।

मेरे बाबा हज़रत बादशाह हर बार एव हर घडी यही पूछते थे कि "हिन्दाल कहा है और क्या कर रहा है?" इसी बीच मे एक आदमी ने आकर कहा कि, "मीर खुर्द बेग[4] का पुत्र मीर बीरदी बेग अभिवादन पहुचा रहा है?" मेरे बाबा हज़रत बादशाह ने तत्काल बडी बेचैनी की अवस्था मे उसे बुलाकर पूछा कि, "हिन्दाल कहा है? कब आयेगा? प्रतीक्षा मे कितना कष्ट हो रहा है।" मीर बीरदी बेग ने कहा कि "प्रतापी शाहज़ादा देहली पहुच गया है, आज-कल मे सेवा मे आ जायेगा।" इसी बीच मे मेरे बाबा हज़रत बादशाह ने मीर बीरदी बेग से कहा कि, "हे दुष्ट अभागे! मैंने सुना है कि तेरी बहिन का काबुल मे और तेरा लाहौर मे विवाह हो रहा था, इन विवाहो के कारण तू मेरे पुत्र को शीघ्र नही लाया और प्रतीक्षा सीमा से अधिक बढ गई।" वे पूछते थे कि "हिन्दाल मीर्ज़ा कितने बडे हो गये है और किसके समान है?" क्योकि मीर बीरदी बेग मीर्ज़ा के वस्त्र पहिने हुए था अत उसने उस वस्त्र को दिखाकर कहा कि, "यह शाहज़ादे का वस्त्र है जोकि उसने मुझे प्रदान किया है।" हज़रत बादशाह ने उसे यह देखने के लिये आगे बुलवाया कि हिन्दाल का डीलडौल कितना है। हर घडी और हर समय वह यही कहते थे कि, "अत्यधिक खेद है कि हिन्दाल को न देखा।" जो कोई भी आता था उससे वे यही पूछते थे कि "हिन्दाल कब आयेगा?"

(२३) अपनी रुग्णावस्था के समय उन्होने मेरी आका को आदेश दिया कि "गुलरग बेगम[5]

१ हज़रत अली इब्ने अली तालिब चौथे ख़लीफ़ा और शीओं के पहले इमाम।
२ बाबर का।
३ स्वस्थ होने के बाद का स्नान।
४ हिन्दाल का अतालीक। वह इससे पूर्व बाबर का बकावल था।
५ बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री एव उसकी अपनी माता की प्रथम सतान। सम्भवत उसका जन्म १५११ ई० तथा १५१५ ई० के मध्य में हुआ होगा।

तथा गुलचेहरा[1] बेगम का विवाह कर दिया जाये। जब हज़रत अम्माजियों[2] मेरी बडी बहिन मुझसे भेंट करने को आयें तो उनसे कह दो कि "बादशाह के हृदय मे यह बात है कि वे गुलरग का विवाह ईसान तीमूर सुल्तान एव गुलचेहरा का विवाह तूख्ता बूगा[3] से करदें।"

आका जानम[4] मुस्कराती हुई आईं। उनसे कहा कि, "हज़रत बादशाह यह बात कह रहे हैं कि मेरे हृदय मे यह आया है, शेष जो कुछ उनकी इच्छा हो, वही करें।" उन्होंने भी कहा कि, "ईश्वर शुभ एव सफल बनाये। बादशाह ने बडी अच्छी बात सोची है।"

स्वय मेरी चीचा[5], बदीउलजमाल बेगम[6] तथा आक बेगम[7] जो दोनो हज़रत बादशाह की चाचिया थी दालान मे पहुचाई गईं। मच तैयार करके कालीन बिछवाये गए और मुहूर्त देखकर माहम की ननचा ने दोनो सुल्तानों को घुटने के बल झुकवाया[8] और उन्होंने जामाता बनने का सम्मान प्राप्त किया।

इसी बीच मे हज़रत बादशाह के पेट का रोग बढ गया। हुमायू बादशाह ने जब अपने पिता की दशा शोचनीय देखी तो पुन वे अत्यधिक चिन्तित हो गये। चिकित्सकों तथा हकीमों को बुलवाकर कहा कि, "अच्छी तरह देखकर हज़रत बादशाह के रोग का उपचार करो।" चिकित्सको तथा हकीमो ने एकत्र होकर कहा कि, "यह हमारा दुर्भाग्य है कि किसी औषधि से कोई लाभ नही होता। ईश्वर से आशा है कि वह परीक्षा के खज़ाने से शीघ्र इन्हें स्वस्थ करे।"

इब्राहीम लोदी की माता द्वारा दिये गये विष का प्रभाव

इसी बीच मे जब हकीमो ने हज़रत बादशाह की नाडी देखी तो निवेदन किया कि, "उसी विष का प्रभाव ज्ञात होता है जोकि सुल्तान इब्राहीम की माता ने दिया था।" इसका उल्लेख इस प्रकार से है —दुर्भागिनी डाइन ने स्वय अपने हाथ से एक तोला विष दिया था कि ले जाकर अहमद चाशनी (२४)गीर को दे दो और उससे कह दो कि जिस प्रकार सम्भव हो हज़रत बादशाह के विशेष भोजन मे इसे डालदे। उसने उससे बडे वादे भी किये। यद्यपि हज़रत बादशाह उस अभागिनी डाइन को माता कहते थे और उन्होंने उसे स्थान एव जागीर प्रदान करके पूर्ण रूप से प्रोत्साहित किया था और आदेश दिया था, कि "मुझे सुल्तान इब्राहीम के स्थान पर समझो," किन्तु इस कारण कि उस कौम[9] मे अज्ञानता अधिक पाई जाती है उसने उनकी कृपाओ की ओर कोई ध्यान न दिया।

यह प्रसिद्ध है कि प्रत्येक वस्तु अपने मौलिक रूप की ओर जाती है।

१ बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री एवं अपनी माता की दूसरी सतान। वह गुलरग, हिन्दाल तथा गुलबदन की सगी बहिन थी।
२ गुलबदन बेगम की फुफी, खानजादा बेगम, आका जानम।
३ ईसान, अहमद खां का ६वाँ तथा तूख्ता बूगा १०वाँ पुत्र था। अहमद खा बाबर का मामा था। वह गुलबदन बेगम के पति खिज्र ख्वाजा का चाचा था।
४ खानजादा बेगम।
५ इस शब्द का तात्पर्य निश्चित रूप से बताना सम्भव नहीं। इसका अर्थ चाची, खाला अथवा फुफी हो सकता है।
६ बदी उल जमाल बेगम सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री।
७ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा तथा ख़दीजा की पुत्री।
८ अभिवादन कराया।
९ अफ़ग़ानों।

संक्षेप मे विप ले जाकर बावरची को दे दिया गया। बावरची को ईश्वर ने अधा, बहरा बना दिया और उसने विप को रोटी पर छिडक दिया जिसे हजरत बादशाह ने बहुत कम खाया, किन्तु वास्तविक रोग उसी विप का प्रभाव था और वे नित्यप्रति कमजोर होते चले गये और हर रोज उनके रोग में वृद्धि होती गई।

बाबर की वसीयत

दूसरे दिन हज़रत बादशाह ने समस्त अमीरो को बुलवाकर कहा कि, वर्षों से मेरे हृदय म यह इच्छा थी कि मैं अपनी बादशाही हुमायू मीर्जा को दे दू और स्वय जर अफशा बाग मे एकान्तवास ग्रहण कर लू। ईश्वर की कृपा से मुझे सभी बातें प्राप्त हो गईं, केवल इस कार्य को जब तक मैं स्वस्थ रहा न कर सका। इस समय इस रोग ने मेरी बुरी दशा कर दी है। मैं इस बात की वसीयत करता हू कि तुम सब लोग हुमायू को मेरे स्थान पर समझो और उसके प्रति निष्ठावान् होने मे कमी मत करो। उसके साथ दिल व जान से मेल रखो। मुझे ईश्वर से आशा है कि हुमायू भी अपने आदमियों के साथ भली-भाति व्यवहार करेगा।" इसके बाद हुमायू से कहा कि, 'तुझे तेरे भाइयो एव अपने सभी सम्बन्धियो तथा आदमियो को ईश्वर को सौंपता हू और इन लोगो को तेरे सिपुर्द करता हू।" इन बातो से उपस्थित गण विलाप करने लगे और स्वय हज़रत बादशाह की पवित्र आखो मे आसू आ गये।

बाबर की मृत्यु

इस घटना को अन्त पुर वालियो एव महल के भीतर वालियो ने सुना। उन्होंने अत्यधिक परेशानी, चिन्ता एव विलाप प्रारम्भ कर दिया। तीन दिन बाद हज़रत बादशाह इस नश्वर ससार से स्थायी ससार को चल दिये। उनका निधन ५ जमादि-उल-अव्वल ९३७ हि० (२६ दिसम्बर १५३० ई०) को सोमवार के दिन हुआ।

मेरी फूफियों तथा मेरी माताओं को इस बहाने से हटा दिया कि चिकित्सक तथा हकीम लोग (२५) हज़रत बादशाह को देखने आ रहे है। सब उठ खडे हुए। समस्त बेगमो एव मेरी माताओ को खानये कला[1] मे पहुचाया गया।

पुत्रो तथा सम्बन्धियों एव अन्य मनुष्यो के लिय अन्धकार छा गया। सबने अत्यधिक विलाप एव रोना चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। सभी ने इस अन्धकारमय दिन को किसी न किसी कोने म व्यतीत किया।

मृत्यु के समाचार को छिपाने के विरुद्ध चेतावनी

हज़रत बादशाह के निधन की दुर्घटना को छिपाया गया। अन्ततोगत्वा हिन्दुस्तान के एक अमीर आराइश खा नामक ने निवेदन किया कि, "इस घटना को छिपाना अच्छा नही है कारण कि हिन्दुस्तान मे यह प्रथा है कि यदि बादशाहो के साथ ऐसी दुर्घटना हो जाती है तो बाजारी लोग लूट-मार प्रारम्भ कर देते हैं। कही ऐसा न हो कि मुगलो को कोई पता न हो और घर और हवेलिया लुटने लगें। यह उचित होगा कि किसी आदमी को लाल वस्त्र पहिनाकर हाथी पर सवार किया जाये और हाथी के ऊपर

१ सम्भवत शाही महल में।

से ढिंढोरा पीटा जाये कि हज़रत बाबर पादशाह दरवेश हो गये और उन्होंने अपनी पादशाही हुमायू पादशाह को दे दी।"

हज़रत हुमायू बादशाह ने आदेश दिया कि, "ऐसा ही किया जाये।" ढिंढोरा पिटते ही लोगो को तसल्ली हो गई और सभी लोग हज़रत हुमायू बादशाह के लिये शुभकामनाए करने लगे।

हुमायू का सिंहासनारूढ होना

उसी मास की ९ तारीख़[1] को शुक्रवार के दिन हज़रत हुमायू बादशाह सिंहासनारूढ हुए और उनको बादशाही की समस्त ससार ने बधाई दी।

तदुपरान्त वे अपनी माता, बहिनो तथा आदमियो से भेंट करने पहुचे और उनके विषय मे पूछताछ करके उन्हें प्रोत्साहित किया और उनका दु ख बटाया और आदेश दिया कि, "जिसको जो कोई भी मसज, सेवा, जागीर तथा स्थान प्राप्त है, वह उसे अपने अधिकार मे रक्खे और पूर्व की भाति सेवा करता रहे।"

१ ९ जमादि-उल अव्वल ९३७ हि० (२९ दिसम्बर १५३० ई०)।

अकबर नामा भाग १

लेखक—शेख अबुल फजल

(कलकत्ता १८७७ ई०)

हजरत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह गाजी[1]

बाबर का जन्म

(८६) बादशाह का पवित्र जन्म ६ मुहर्रम ८८८ हि० (१४ फरवरी १४८३ ई०) को सम्मानित कुतलुक निगार खानम के पुनीत गर्भ से हुआ। वे यूनुस खा की दूसरी पुत्री तथा सुल्तान महमूद खा की बडी बहिन थीं। उनकी वशावली इस प्रकार है। कुतलुक निगार खानम पुत्री यूनुस खा, बिन वैस खा, बिन शेर अली ऊगलान, बिन मुहम्मद खा, बिन खिज्र ख्वाजा खा, बिन तुगलुक तीमूर खा, बिन ईसान बूगा खा, बिन दवा खा, बिन बराक खा बिन ईसून[2] तावा, बिन मुताकन, बिन चगताई खा, बिन चिंगीज खा।

मौलाना हुसामी कराकूली[3] ने सम्मानित जन्म तिथि के शेर की रचना इस प्रकार की है —

शेर

क्योंकि ६ मुहर्रम को उस सम्मानित बादशाह का जन्म हुआ,
अत उनके जन्म की तिथि भी हुई, शश[4] मुहर्रम।"

(८७) यद्यपि यह तिथि एक विचित्र सयोग है और बुद्धि इसमे कुछ भी नही कह सकती किन्तु सबसे विचित्र बात तो यह है कि यह तिथि ६ अक्षर से निकली जिसे गणित के विद्वान् बडा ही शुभ मानते हैं। "शश हरफ[4]" शब्द तथा "अददे खैर[5]" से भी बादशाह के पवित्र जन्म की तिथि परोक्ष से प्राप्त होती है। एक अन्य विचित्र बात यह है कि इन अको की इकाई, दहाई तथा सैकडे मे एक ही अक[6] है जिससे उनके व्यवहार के सतुलन का पता चलता है। उनका बडा ही विचित्र व्यक्तित्व था

१ संसार को विजय करने वाला, स्वर्ग में निवास करने वाला, धर्म का रक्षक, मुहम्मद बाबर गाजी।

२ मूल ग्रन्थ में बीसून।

३ 'तारीखे रशीदी' के अनुसार मुनीर मर्गीनानी। मिर्जा हैदर ने उसे उलुग बेग का एक आलिम बताया है। नवल किशोर के सस्करण में उसका नाम जामी कराकूली है। कराकूल, बुखारा से २८ मील दक्षिण-पश्चिम में एक झील है।

४ شش حرف

५ عدد خیر

६ ८८८।

जिसमे परोक्ष की ओर से अनेक रहस्य निहित थे और इसी प्रकार विचित्र गुणों का उनके द्वारा प्रदर्शन हुआ। सम्मानित एव अद्वितीय सूफी हजरत नासिरुद्दीन ख्वाजा एहरार ने अपनी उदार वाणी से जहीरुद्दीन मुहम्मद रक्खा। क्योकि यह सम्मानित उपाधि शब्द एव अर्थ के अनुसार इतनी सारगर्भित तथा बोझल थी कि तुर्क लोग उसका सुगमतापूर्वक उच्चारण न कर पाते थे अत उनका नाम बाबर भी रख दिया गया। वे उमर शेख मीर्ज़ा के ज्येष्ठ एव योग्य पुत्र थे।

सिंहासनारोहण

वे १२ वर्ष की अवस्था मे मगलवार ५ रमजान ८९९ हि० (९ जून १४९४ ई०) को अन्दिजान के रमणीक भूभाग मे सिंहासनारूढ हुये। राज्यो को विजय करने मे जितनी कठिनाई एव परिश्रम का सामना हज़रत (बादशाह) को करना पडा उतना कम बादशाहो को करना पडा होगा। जितनी वीरता, पौरुष, सहनशीलता एव ईश्वर पर आश्रय हज़रत (बादशाह) ने रणक्षेत्रों एव युद्धो मे प्रदर्शित किया और जितने युद्धो तथा खतरो का उन्होने सामना किया, वह मनुष्य के लिये सम्भव नही।[1]

अन्दिजान से नमाज़गाह की ओर प्रस्थान

जिस समय उमर शेख मीर्ज़ा की अखसी मे मृत्यु हुई, तो गेती सितानी फिरदौस मकानी अन्दिजान के चारबाग[2] मे निश्चिन्त रूप से जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस दुर्घटना के दूसरे दिन मगलवार ५ रमजान को यह घातक समाचार अन्दिजान पहुचे। वे तत्काल घोडे पर सवार होकर अन्दिजान के किले की ओर रवाना हुये। जिस समय वे द्वार पर पहुचे तो शेरीम तगाई उनके घोडे की लगाम पकड कर नमाजगाह की ओर चल दिया ताकि उन्हें ऊजगीन्द[3] एव उस पर्वत के आचल की ओर ले जायें। इसका कारण यह था कि सुल्तान अहमद मीर्ज़ा बडे वैभव एव ऐश्वर्य से चला आ रहा था। उसे भय था कि कही अमीर लोग विश्वासघात करके राज्य उसे न दे दें। इस प्रकार उस विलायत के लोग नमक हरामी कर भी देते तो हज़रत (बादशाह) का पवित्र व्यक्तित्व इस भयकर स्थिति से सुरक्षित रहता। उसका प्रस्ताव था कि वे अपने तगाइयों[4] अलजा खा[5] अथवा सुल्तान महमूद खा के पास चले जायें।

अमीरो को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने ख्वाजा मुहम्मद दरज़ी को, जो उमर शेख मीर्ज़ा के प्राचीन निष्ठावानो मे से था, हज़रत (बादशाह) की सेवा मे इस आशय से भेजा कि वह उनकी शकाओं का समाधान करके उन्हे ले आये। सम्मानित सवारी नमाजगाह[6] तक पहुँच चुकी थी कि ख्वाजा मुहम्मद शाही रिकाब के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुआ और न्याय-सगत बातें करके बादशाह को सतुष्ट कर दिया और लौटा लाया।

१ अबुल फ़ज़्ल ने यह वाक्य केवल बड़ा साधारण सा परिवर्तन करके गुलबदन बेगम के 'हुमायूँ नामा' से लिया है।
२ उद्यान।
३ ऊज़कीन्द।
४ माता के भाई—मामा।
५ अन्य स्थानों पर अलजा खाँ।
६ ईदगाह।

सुल्तान अहमद द्वारा आक्रमण

(८८) जब वे अन्दिजान के भीतरी किले मे उतरे तो समस्त अमीर एव राज्य के उच्च पदाधिकारी उनकी सम्मानित सेवा मे उपस्थित हुये और उन्हें नाना प्रकार के प्रश्रय द्वारा सम्मानित किया गया। इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है कि सुल्तान अहमद मीर्जा एव सुल्तान महमूद खा ने मिलकर उमर शेख के विरुद्ध चढाई कर दी थी। इस समय जब दुर्भाग्यवश यह दुर्घटना घट गई तो राज्य के समस्त पदाधिकारी, छोटे और बडे सगठित होकर एक दिल से किले की रक्षा का घोर प्रयत्न करने लगे। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा ऊरातीबा[1], खुजन्द, तथा मर्गीनान को, जो फरगाना की विलायत के अधीन हैं, अपने अधिकार मे करके अन्दिजान से ४ कुरोह्[2] पर उतर पडा। यद्यपि राजदूत भेज कर सधि का अत्यधिक प्रयत्न किया गया, परन्तु उसने स्वीकार न किया और बढता चला गया, किन्तु इस कारण कि इन भाग्यशाली चिरजीवी वश को दैवी सहायता प्राप्त है अत अल्प समय मे किले की दृढता, प्रभावशाली अमीरो के सगठन एव शिविर मे महामारी के कोप तथा घोडो के नष्ट होने के कारण परेशान होकर वे अपने उद्देश्य की सफलता की ओर से निराश होकर एक प्रकार की सन्धि करके असफल होकर किसी न किसी तरह लौट गये।

अखसी का अवरोध

खुजन्द नदी के उत्तर की ओर से आकर सुल्तान महमूद खा ने अखसी को घेर लिया। बादशाह का भाई जहागीर मीर्जा एव निष्ठावान् अमीरो का एक बहुत बडा समूह वहा था। खान ने कई आक्रमण किये। किन्तु अखसी के अमीरो के उचित प्रयास से खान भी कोई सफलता न प्राप्त कर सका और उस रोग के कारण जिसमे वह ग्रस्त था, इस मिथ्या-पूर्ण विचार को त्याग कर अपने राज्य को चला गया। बादशाह को अपने उच्च साहस एव प्रताप के कारण विजय तथा सफलता प्राप्त हो गई।

समरकन्द की विजय

उस ससार को विजय करने वाले को ११ वर्ष[3] तक मावराउन्-नहर मे चग़ताई एव ऊज़बेक सुल्तानो से घोर युद्ध करना पडा। उन्होंने अपनी विद्युत रूपी तलवार की चमक एव ससार को देदीप्यमान करने वाली बुद्धि के प्रकाश से तीन बार समरकन्द पर विजय प्राप्त की —

(१) ९०३ हि०[4] मे अन्दिजान से आते हुए[5] बाईसुगर मीर्जा पुत्र सुल्तान महमूद मीर्जा पर अपने सौभाग्य एव तलवार की चमक से विजय प्राप्त की।

(२) शैबाक़ खा पर ९०६ हि० (१५०० ई०) मे विजय।

(३) शैबाक खा की हत्या के उपरान्त ९१७ हि०[6] मे विजय।[7]

१ ऊरातीपा।
२ ८ मील।
३ १८ वर्ष होना चाहिये, ८९९ हि० से ९१७ ई० तक। यह पुस्तक नक़ल करने वालों की भूल है।
४ नवम्बर १४९७ ई० के अन्त में।
५ मूल पुस्तक के वाक्यों के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि बाईसुगर अन्दिजान से आया।
६ अक्तूबर १५११ ई० में।
७ इसका वर्णन 'बाबर नामा' में नहीं है।

क्योंकि ईश्वर की इच्छा शहशाह[1] के व्यक्तित्व के अद्वितीय मोती को प्रकट करने की थी और वह चाहता था हिन्दुस्तान की इक्लीम को उन्नति प्राप्त हो और (बाबर) बादशाह को विदेश में सफलता मिले अत उसने उनके राज्य एव स्वदेश मे जहा निष्ठावान् सेवक एकत्र थे, हज़रत (बादशाह) पर कष्ट के द्वार खोल दिये और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि उन्होंने अपनी मर्यादा की रक्षा हेतु, वहा किसी प्रकार रहना उचित न समझा। विवश होकर वे थोड़े से लोगो के साथ बदख्शा एव काबुल की ओर रवाना हुये।

बाबर बदख्शा मे

जब वे बदख्शा पहुचे तो खुसरो शाह के, जो उस स्थान का हाकिम था, सभी आदमी उनकी सेवा मे शीघ्रातिशीघ्र उपस्थित हो गये। वह भी विवश होकर उनकी सेवा मे पहुचा। यह अभागा असयमी लोगो का सरदार था और बाईसुग़र मीर्ज़ा की हत्या करा चुका था और सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा की आखों मे सलाई फिरवा चुका था। ये दोनो मीर्ज़ा बादशाह के चाचा के पुत्र थे। एक बार जब वे राज्य से वचित (८९)होकर बदख्शा पहुचे थे तो उसने बडी निष्ठुरता एव कायरता प्रदर्शित की थी। इन सब बातो के होते हुये भी जब उसने (खुसरो शाह ने) अपने कुकर्मों का फल भोग लिया और उस अभागे का राज्य समाप्त हो गया तो हज़रत (बादशाह) ने अत्यधिक पौरुष एव उदारता प्रदर्शित करते हुए उससे बदला न लिया और आदेश दिया कि वह अपनी धन-सम्पत्ति मे से जितना चाहे ले ले और खुरासान चला जाये। वह ऊटो तथा खच्चरों की ५-६ क़तार[2] पर बहुमूल्य सामान, सोने की वस्तुयें एव अन्य उत्तम माल असबाव लदवा कर खुरासान चला गया।

बाबर द्वारा काबुल पर अधिकार

गेती सितानी फिरदौस मकानी ने बदख्शा के राज्य को सुव्यवस्थित करके काबुल की ओर प्रस्थान किया। उस समय जुन्नून अरग़ून के पुत्र मुहम्मद मुकीम ने काबुल को अब्दुर्रज्ज़ाक मीर्ज़ा बिन ऊलूग बेग मीर्ज़ा बिन सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा से (जो गेती सितानी फिरदौस मकानी[3] के चाचा का पुत्र था) छीन लिया था। भाग्यशाली पताकाओं के पहुचने के समाचार पाकर वह किले मे बन्द हो गया। कुछ दिन उपरान्त क्षमा-याचना करके अपनी धन-सम्पत्ति सहित अपने भाई शाह बेग के पास कधार चला गया।

काबुल पर अधिकार

रबी-उल-अव्वल ९१० हि० (अगस्त १५०४ ई०) के अन्त मे काबुल चिरजीवी राज्य के सहायको के अधिकार मे आ गया।

कन्धार की ओर प्रस्थान

बादशाह ने ९११ हि० (१५०५-६ ई०) मे कन्धार की विजय हेतु प्रस्थान किया और कलात

१ अक्बर।
२ एक क़ितार म ७ से १० तक पशु होते थे।
३ बाबर।

को, जो कंधार के अधीन है, विजय कर लिया। वहा से राज्य के हित की दृष्टि से उन्होने कन्धार पर आक्रमण करने का विचार त्याग कर उसके दक्षिण की ओर प्रस्थान किया और सवासग तथा उल्तातग के कबीला पर आक्रमण करके काबुल लौट आये।

काबुल का भूकम्प

इस वर्ष[1] के प्रारम्भ मे काबुल के क्षेत्र मे एक बडे जोर का भूकम्प आया और किले की चहार दीवारियाँ तथा किले एव नगर के अधिकाश भवन गिर पडे। बीमग़ान[2] नामक स्थान के समस्त भवन गिर पडे। एक दिन मे ३३ बार भूमि हिली और एक मास तक दिन रात मे एक-एक दो-दो बार भूमि हिलती रही। बहुत से लोगो के जीवन की नीव गिर पडी। बीमगान एव बेकतूत[3] के मध्य की भूमि का एक टुकडा जिसकी चौडाई, एक पत्थर के मार की दूरी के बराबर थी कट कर लगभग एक बाण के मार की दूरी तक धस गया। फटे हुये स्थान से झरने फूट पडे। इस्तरगज से मैदान तक जिसकी दूरी छ फरसग[4] रही होगी, भूमि इस प्रकार फट गई कि उसके किन्ही सिरो पर हाथी के बराबर ऊचे-ऊचे टीले बन गये। भूकम्प के पूर्व पर्वतो से आधियाँ चलने लगी थी। इसी वर्ष हिन्दुस्तान मे भी बहुत बडा भूकम्प आया।

बाबर का खुरासान की ओर प्रस्थान

इन दिनो की घटनाओ का उल्लेख इस प्रकार है कि शैबा खा[5] ने सेना एकत्र करके खुरासान पर आक्रमण करने की योजना बनाई। सुल्तान हुसेन मीर्जा अपने समस्त पुत्रों को एकत्र करके उसे हटाने के लिये तैयार हुआ और सैयिद अफजल पुत्र मीर सुल्तान अली ख्वाब बीन[6] को हजरत फिरदौस मकानी को (९०) बुलवाने के लिये भेजा। वे मुहर्रम ९१२ हि० (मई-जून १५०६ ई०) मे उसकी सहायतार्थ खुरासान की ओर रवाना हुये। मार्ग मे काहमर्द के क्षेत्र मे उन्हें सुल्तान हुसेन मीर्जा की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुये। फिरदौस मकानी ने अपने परामर्श-दाताओ के परामर्श के विरुद्ध जाना पहले से अधिक आवश्यक समझ कर खुरासान की ओर प्रस्थान किया। खुरासान पहुचने के पूर्व ही अल्पदर्शी तथा अनुभवशून्य लोगो ने मीर्जा बदी-उज्-ज़मान तथा मुज़फ्फर हुसेन मीर्जा को जो मीर्जा के पुत्र थे सिंहासनारूढ कर दिया था। सोमवार ८ जमादि-उल्-आखिर (९१२ हि०, २६ अक्तूबर १५०६ ई०) को बादशाह ने मुर्ग़ाब मे मीर्जाओ से भेंट की और उनकी प्रार्थना पर हिरात मे पडाव किया। वे मीर्जा के पुत्रो मे श्रेष्ठता एव सौभाग्य के चिह्न न देखकर, वहा से लौट जाना ही उचित समझ कर ८ शाबान ९१२ हि० (२५ दिसम्बर १५०६ ई०) को काबुल की ओर रवाना हो गये।

काबुल में विद्रोह

हज़ारा की पहाडियो मे समाचार प्राप्त हुये कि मुहम्मद हुसेन मीर्जा दूगलात तथा सुल्तान

१ ९११ हि० (१५०५-६ ई०)।
२ पमग़ान, देखिये बाबर नामा, ९११ हि० का इतिहास।
३ बेगतूत।
४ ९ से ८ यीगाच (३६-४८ मील)।
५ शैबाक खाँ अथवा शैबानी खाँ।
६ सम्भवत स्वप्न का अर्थ बताने वाला

सजर बरलास ने बहुत से मुग़लो को जो काबुल मे रह गये थे अपनी ओर मिला लिया और खान मीर्ज़ा[1] को अपना सरदार बनाकर काबुल को घेर लिया है और सर्व साधारण मे यह प्रसिद्ध कर दिया है कि सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के पुत्र फ़िरदौस मकानी से विश्वासघात करने वाले हैं। मुल्ला बाबाई पशागरी, अमीर मुहिब अली ख़लीफ़ा, अमीर मुहम्मद कासिम कोहबर, अहमद यूसुफ, तथा अहमद कासिम जिनके सिपुर्द काबुल के किले की रक्षा थी, किले की प्रतिरक्षा का घोर प्रयत्न कर रहे हैं। इस घटना की सूचना पाते ही शिविर एव अन्य भारी असबाब जहागीर मीर्ज़ा को, जो कुछ रुग्ण था, सौंप कर थोडे से लोगों के साथ हिन्दूकोह के दर्रों से, जो बरफ से ढका था, होते हुए बडी कठिनाई उठाते प्रात काल काबुल पहुच गये। प्रत्येक विरोधी सम्मानित सवारी के आगमन के समाचार पाकर इधर-उधर कोनो मे छिप गया।

बाबर का काबुल पहुँचना

गेती सितानी फ़िरदौस मकानी सर्व प्रथम शाह बेगम की सेवा मे जो उनकी सौतेली नानी थी[2] और जो खान मीर्ज़ा के विद्रोह का कारण थी पहुचे और शिष्टाचार प्रदर्शित करने के लिये घुटने के बल झुक कर भेंट की और बडे सम्मान एव गौरव से उचित शब्दो मे निवेदन किया कि, "यदि एक माता अपने एक पुत्र पर विशेष कृपा प्रदर्शित करती है तो इसमे दूसरे पुत्र के रुष्ट होने का क्या स्थान है और वह *उसकी आज्ञाओ के उल्लघन का किस प्रकार साहस कर सकता है?"* तदुपरान्त यह कह कर कि, "मैं जागता रहा हू और बडी लम्बी-चौडी यात्रा करके आया हू" वह बेगम की गोद मे सिर रख कर सो गये। बेगम की तसल्ली के लिये, जो बडी ही चिन्तित एव व्याकुल थी नाना प्रकार की कृपायें प्रदर्शित की। वे अभी भलीभाति सोये भी न थे कि मिहर निगार खानम जो उनकी खाला थी, आ गईं।[3] उन्होने शीघ्रातिशीघ्र उठकर उनके प्रति अभिवादन किया।

मुहम्मद हुसैन मीर्ज़ा को बन्दी बना कर लाया गया। बादशाह ने इस कारण कि वे उदारता की खान थे, उसे क्षमा कर दिया और खुरासान जाने की अनुमति दे दी। तदुपरान्त खानम[4] खान मीर्ज़ा को बादशाह के सामने अपने साथ लाईं और कहा, 'हे जाने मादर'[5] तेरे पापी भाई को लाई हू। क्या आदेश होता है?" बादशाह ने खान मीर्ज़ा से स्नेहपूर्वक आलिंगन किया और नाना प्रकार से कृपा-(९१) दृष्टि एव आश्रय प्रदर्शित करते हुये उसे ठहरने अथवा चले जाने का पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिया। खान मीर्ज़ा अत्यधिक लज्जावश वहा ठहर न सका और उसने कन्धार जाने की अनुमति ले ली।[6] यह घटना भी इसी वर्ष (९१२ हि० /१५०६-७ ई०) मे घटी।

१ मीर्ज़ा ख़ान वैस। ख़ुसरो शाह ने उसके छोटे भाई बाइसुग़र की हत्या करा दी थी और उसके भाई मसऊद को अन्धा बना दिया था। वह बाद में बदख़्शां का बादशाह हो गया।
२ बाबर की माता की सौतेली माता वह बदख़्शां के बादशाह की पुत्री तथा यूनुस की, जो बाबर का नाना था, विधवा थी। बाबर की दादी का नाम ईसान दौलत बेगम था।
३ यूनुस ख़ा की सबसे बड़ी पुत्री। उसका विवाह सर्वप्रथम बाबर के चाचा सुल्तान अहमद मीर्ज़ा से और उसकी मृत्यु के उपरान्त शैबानी से हुआ था।
४ मिहर निगार।
५ माता के प्रिय पुत्र।
६ *अबुल फ़ज़्ल ने यह घटना 'तारीख़े रशीदी' पर आधारित की है। बाबर नामा के अनुसार उसे ख़ुरासान* जाने की अनुमति दे दी गई। तारीख़े रशीदी से पता चलता है कि मीर्ज़ा ख़ान तथा महमूद हुसैन दोनों

कन्धार पर आक्रमण

दूसरे वर्ष[1] उन्होंने कन्धार पर आक्रमण किया। वहा के हाकिम शाह बग वल्द जुन्नून अरगून तथा उसके छोटे भाई मुहम्मद मुकीम से भीषण युद्ध हुआ। खान मीर्जा ने बादशाह की सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत (बादशाह) कन्धार नासिर मीर्जा को, जो जहागीर मीर्जा का छोटा भाई था, प्रदान करके काबुल लौट आये।

खान मीर्जा का बदख्शा पर अधिकार

उन्होने शाह बेगम तथा खान मीर्जा को बदख्शा चले जाने की अनुमति दे दी। खान मीजा ने बडी कठिनाई से जुबेर रागी[2] की हत्या कर दी और बदख्शा का राज्य स्वतत्र रूप से अपने अधिकार मे कर लिया, और सर्वदा सौभाग्य का मस्तक आज्ञाकारिता की भूमि पर रगडता रहा।

ऊज़बेको से युद्ध

उसने ९१६ हि० (१५१०-११ ई०) मे एक द्रुतगामी दूत भेज कर हज़रत (बादशाह) को सूचना दी कि "शाही बेग[3] खा की हत्या हो चुकी है। अत यह उचित होगा कि आप इस ओर पहुच जायें।' इस कारण शव्वाल (९१६ हि०। जनवरी १५११ ई०) मे ईश्वर पर आश्रित होकर हज़रत (बादशाह) ने उस ओर प्रस्थान किया, और ऊज़बेको से घोर युद्ध हुआ। क्योंकि सर्वदा विजय तथा सफलता शाही सवारी के साथ साथ रहती थी, अत तीसरी बार रजब ९१७ हि० (अक्तूबर १५११ ई०) के मध्य मे बादशाह ने समरकन्द विजय कर लिया, और ८ मास तक वहा राज्य करते रहे।

सफर ९१८ हि० (अप्रैल मई १५१३ ई०) मे कोल मलिक मे उबैदुल्लाह खा से घोर युद्ध हुआ। यद्यपि वहा विजय प्राप्त हो चुकी थी, किन्तु दुर्भाग्यवश एक बडी ही दुर्घटना घटी और हज़रत (बाद शाह) को हिसार की ओर चले जाना पडा।

एक अन्य बार नज्म बेग तथा बादशाह ने मिलकर गजदवान[4] के किले के नीचे ऊज़बेकों से घोर युद्ध किया। नज्म बेग मारा गया और हजरत (बादशाह) काबुल लौट गये[5]।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण

तदुपरान्त बादशाह ने दैवी प्रेरणा से मावराउन्नहर की ओर प्रस्थान करने के विचार त्याग

को ही क़ंधार जाने की अनुमति मिली किन्तु महमूद हुसेन तो चला गया परन्तु मीर्जा खान रुक गया। हैदर के अनुसार उसके पिता के जाने का कारण यह था कि वह हज के लिये मक्का जाना चाहता था किन्तु बाद में वह शैबानी ख़ाँ के निमंत्रण पर उसके पास पहुँचा और उसने उसकी हत्या करा दी।

१ ९१३ हि० (१५०७-८ ई०)।

२ किन्हीं किन्हीं स्थानों पर 'ज़ुबेर राई।

३ शैबानी खा।

४ बदख्शा के उत्तर में।

५ यह युद्ध सम्भवत ३ रमज़ान ९१८ हि० (१२ नवम्बर १५१२ ई०) को हुआ। नज्म का नाम यार मुहम्मद था।

दिये और हिन्दुस्तान की विजय का सकल्प कर लिया और चार बार हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान किया किन्तु किसी न किसी कारण लौट आना पडा।

प्रथम आक्रमण

प्रथम बार शाबान ९१० हि० (जनवरी-फरवरी १५०५ ई०) मे बादाम चश्मे[1] एव जगदालीक के मार्ग से खैबर को पार करके जाम मे पडाव किया। 'वाकेआते बाबरी' मे, जिसकी बादशाह की सत्य को लिखने वाली लेखनी ने तुर्की मे रचना की है, लिखा है कि जब "हम लोग काबुल से ६ पडाव पार कर के अदीनापुर[2] पहुचे तो गरम सीर[3] प्रदेश एव हिन्दुस्तान के उपान्त जिन्हें हमने कभी न देखा था, दृष्टिगत हुये। वहा पहुचते ही एक अन्य ससार दिखाई पडा। घास तथा वृक्ष और प्रकार के तथा वन-पशु एव पक्षी अन्य प्रकार के, लोगो के आचार-व्यवहार, रग-ढग अन्य प्रकार के। बडा आश्चर्य हुआ और वास्तव मे आश्चर्य का स्थान ही था।"

नासिर मीर्जा ने गज़नी से इस पडाव पर उपस्थित होकर फर्श चूमने का सम्मान प्राप्त किया। जाम[4] नामक पडाव पर एक परामर्श गोष्ठी इस आशय से आयोजित की गई कि शाही सवारी सिन्ध नदी को जो नीलाब के नाम से प्रसिद्ध है किस घाट से पार करे। बाकी चगानियानी[5] की दुष्टता के कारण (९२)सिन्ध का पार करना स्थगित कर दिया गया और कोहाट की ओर प्रस्थान किया गया। कोहाट पर आक्रमण करने के पश्चात् बगश एव नगज़[6] पर आक्रमण किया गया। वहा से ईसा खेल की ओर प्रस्थान करके कुछ पडाव पार करने के उपरान्त तरबेला मे, जो मुल्तान के अधीनस्थ सिन्ध नदी के तट पर एक स्थान है, भाग्यशाली पताकाओं ने पडाव किया और नदी के किनारे किनारे होते हुये कुछ मञ्जिल उपरान्त पडाव किया गया। वहा से दूकी के क्षेत्र मे पडाव किया गया। कुछ दिन उपरान्त गज़नी म भाग्यशाली सवारी का पडाव हुआ। जिलहिज्जा (मई-जून १५०५ ई०) मास मे काबुल के क्षेत्र को सम्मानित चरणों के पहुच जाने के कारण शोभा प्राप्त हुई।

दूसरा आक्रमण

दूसरी बार सम्मानित सेना जमादि-उल-अव्वल ९१३ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १५०७ ई०) म खुर्द काबुल[7] के मार्ग से हिन्दुस्तान की विजय हेतु रवाना हुई। मन्दर[8] के उपान्त से उन्होने सर्व प्रथम गर[9] एव शीवा की ओर प्रस्थान किया किन्तु साथियो के मतभेद के कारण लौटना पडा और गर नगर[10]

१ काबुल नदी के दक्षिण में एक दर्रा और छोटे काबुल तथा बारीक आब के मध्य में।
२ आधुनिक जलालाबाद के दक्षिण में लगभग १ मील पर।
३ गरम जलवायु के प्रदेश।
४ जामरूद।
५ कलकत्ते के सस्करण में 'कुछ चगताइयों' किन्तु नवल किशोर संस्करण में 'बाकी चगानियानी' और यही ठीक है। बाकी खुसरो शाह का छोटा भाई था।
६ मूल पुस्तक में न्योर।
७ छोटा काबुल।
८ मन्दरावर (बाबर नामा)।
९ अहर (बाबर नामा)।
१० 'कूनार' होना चाहिये।

तथा नूरगल को भी पार किया गया। बज्र[1] से जाला मे जहा विजयी शिविर था, पहुच कर बादीख[2] के मार्ग से दया की छाया काबुल पर डाली गई। बादीख मे एक पत्थर पर इसे पार करने की तिथि शाही आदेशानुसार खुदवा दी गई। अभी तक वह परोक्ष का अभिलेख वर्तमान है[3]।

पादशाह की उपाधि

इस समय तक साहब किरान की सम्मानित सतान को मीर्जा कहा जाता था। इस तिथि[4] को आदेश हुआ कि उन्हें पादशाह कहा जाये।

हुमायू का जन्म

मगलवार ४ ज़ीकाद ९१३ हि० (६ मार्च १५०६ ई०) को हज़रत जहाबानी जन्नत आशियानी का जन्म हुआ। इसका सविस्तार उल्लेख फिर किया जायेगा।

तीसरी बार प्रस्थान

तीसरी बार शनिवार[5] १ मुहर्रम ९२५ हि० (३ जनवरी १५१९ ई०) को बजौर की ओर प्रस्थान करते समय मार्ग मे बहुत बडा भूकम्प आया। यह ज्योतिष की आधी घडी तक चलता रहा। सुल्तान वैस सवादी की ओर से सुल्तान अलाउद्दीन सवादी ने सेवा म उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। और अल्प समय मे बजौर के क़िले पर अधिकार जमा लिया गया और उसे ख्वाजा कला बेग वल्द मौलाना मुहम्मद सद्र को, जो मीर्जा उमर शेख का एक बहुत बडा पदाधिकारी था, प्रदान कर दिया गया। ख्वाजा का बादशाह (बाबर) से बडा विचित्र सम्बन्ध था। उसके ६ भाइयो ने बादशाह की उत्तम सेवाय करते हुए एव उनकी प्रसन्नता के लिये प्राण त्याग दिये हैं। ख्वाजा स्वय अपनी कुशाग्र बुद्धि एव सूझ बूझ के कारण गेती सितानी फिरदौस मकानी का बहुत बडा विश्वासपात्र था। क्योकि हज़रत (बादशाह) सवाद पर आक्रमण एव यूसुफ़ ज़ाई कबीले को विजय करना चाहते थे अत शाह मनसूर के छोटे भाई ताऊस खा ने शाह मनसूर की पुत्री[6] को लाकर विनय एव नम्रता की जिह्वा खोली। शाह मनसूर यूसुफ़ खेल का नेता था। उस उजाड क्षेत्र मे अनाज का अभाव भी मिला। वास्तव मे हज़रत बादशाह सलामत ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का सकल्प कर लिया था अत वे सवाद से वापस हो गये।

क्योकि हिन्दुस्तान के आक्रमण की तैयारी एव सामान न था और अमीर लोग भी इस अभियान के पक्ष मे न थे अत बादशाह ने अपने साहस की मशाल जला कर हिन्दुस्तान के अधकारमय स्थानो की ओर प्रस्थान किया। उन्हाने वृहस्पतिवार १६ मुहर्रम (१८ जनवरी १५१९ ई०) को प्रात काल घोडो, ऊँटों एव भारी असबाब सहित नदी[7] पार की और बाजारी शिविर को जाला से पार करवा कर कचा कोट के समीप पडाव किया।

१ कूनार (बाबर नामा)।
२ बादपीच (बाबर नामा)।
३ बाबर के अनुसार खुदाई अच्छी न हुइ थी।
४ सम्भवत इस पत्थर पर जो तिथि खुदवाई गइ।
५ बाबर नामा के अनुसार सोमवार।
६ बीबी मुबारिका। बाबर ने उससे विवाह कर लिया।
७ सिन्ध नदी।

(९३) भीरा से उत्तर की ओर ७ कोस पर एक पर्वत जिसे जफर नामा[1] इत्यादि मे जूद पर्वत[2] लिखा गया है, शाही शिविर का स्थान बना। हजरत (बादशाह) ने अपने "वाकेआत" के ग्रन्थ[3] मे लिखा है कि इस तिथि तक इस पर्वत के नाम का कारण ज्ञात न था। अन्त मे ज्ञात हुआ कि इस पर्वत मे एक पिता की सतान से दो कबीले हो गये है। एक जूद कहलाता है, और दूसरा जनजूहा। अब्दुर्रहीम सकावल[4] को भीरा वालों को तसल्ली देने के लिये भेजा गया और यह आदेश दिया गया कि वहा कोई लूट मार न करने पाये। दिन के अन्त मे बादशाह ने स्वय भीरा के पूर्व मे बिहत[5] नदी के तट पर पडाव किया। भीरा की माल[6] ४००,००० शाहरुखिया[7] निश्चित करके हिन्दू बेग को प्रदान कर दी। इस विलायत का शासन प्रबन्ध उसकी सुनहरी राय के सिपुर्द कर दिया[8]। खुशाब को शाह हसन[9] को सौंप कर हिन्दू बेग की सहायतार्थ नियुक्त कर दिया।

मुल्ला मुर्शिद को सुल्तान इब्राहीम इब्न सुल्तान सिकन्दर लोदी के पास, जो ५-६ मास पूर्व अपने पिता के स्थान पर हिन्दुस्तान मे अपने पिता का उत्तराधिकारी बना था, दूत बनाकर इस आशय से भेजा कि वह उसे उत्तम परामर्श दे। लाहौर के हाकिम दौलत खा ने उपर्युक्त राजदूत को अत्यधिक मूर्खता प्रदर्शित करते हुए रोक लिया और उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति न करने दी तथा लौटा दिया।

शुक्रवार २ रबी-उल-अव्वल (४ मार्च १५१९ ई०) को भाग्यशाली पुत्र के जन्म के समाचार प्राप्त हुये। क्योंकि बादशाह हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान कर रहे थ, अत इसे शुभ शकुन समझ कर दैवी प्रेरणा से उसका नाम हिन्दाल रक्खा।

रविवार ११ रबी-उल-अव्वल (१३ मार्च १५१९ ई०) को[10] हजरत (बादशाह) हिन्दू बेग को राज्य के हित की दृष्टि से भीरा के शासन प्रबन्ध हेतु विदा करके काबुल की ओर लौट गये और बृहस्पतिवार अन्तिम रबी-उल-अव्वल (१ अप्रैल १५१९ ई०) को काबुल पहुच गये। सोमवार २५ रबी उल-आखिर (२६ अप्रैल १५०९ ई०) को हिन्दू बेग असावधानी के कारण भीरा छोडकर काबुल चला आया।

चौथी बार प्रस्थान

चौथी बार के आक्रमण का इतिहास कही नही देखा गया। सम्भवत उसी आक्रमण मे वे लाहौर

१ 'ज़फ़र नामा' लेखक शरफ़ुद्दीन अली यजदी (मृत्यु १४५४ ई०)। 'ज़फ़र नामा' में तीमूर के राज्यकाल *का पूर्ण इतिहास बड़े विस्तार से दिया गया है।*
२ साल्ट रेंज।
३ 'वाकेआते बाबरी' अथवा 'बाबर नामा'।
४ शग़ावल : मुख्य मुन्शी।
५ झेलम।
६ माल का अर्थ साधारणत राजस्व अथवा मालगुजारी होता है किन्तु अन्य हस्तलिखित पोथियों में माले अमानी है जिसका अर्थ रक्षा का मूल्य है और यही ठीक है। अबुल फ़ज़ल ने इस स्थान पर बाबर के अभिप्राय को व्यक्त करने में भूल की है। देखिये बाबर नामा पृ० १०१।
७ बेवरिज के अनुसार २०,००० पौंड।
८ हिन्दू बेग को वहाँ का हाकिम नियुक्त कर दिया।
९ बाबर नामा के अनुसार लगर खाँ।
१० बाबर नामा में सोमवार ५ रबी-उल अव्वल है, बाबर नामा पृ० १०४।

विजय करके लौट आये। दीवालपुर की विजय की तिथि से, जो एक प्रसग मे लिखी गई है, पता चलता है कि यह विजय ९३० हि० (१५२३-२४ ई०) मे प्राप्त हुई[1]।

पाचवी वार प्रस्थान

क्योंकि प्रत्येक कार्य अपने समय पर सम्पन्न होता है अत इस उद्देश्य का सौन्दर्य भी प्रतीक्षा के आवरण मे छिपा हुआ था और अमीरो के अनुचित परामर्श एव भाइयो का विरोध इसके वाह्य कारण थे, यहा तक कि पाचवी वार दैवी पथ प्रदर्शन एव आदि काल के सौभाग्य के सिपह सालार की सहायता से शुक्रवार १ सफर ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को जब कि सूर्य धनु राशि मे अपने प्रकाश की पताका बलन्द किये हुये था तो ऐसी मुहूर्त मे जोकि ससार के अन्धकार को नष्ट कर देती है, सकल्प का पाव ईश्वर के आश्रय की रिकाव मे जमा कर वे हिन्दुस्तान की विजय हेतु रवाना हुये। मीर्जा कामरान को कन्धार मे नियुक्त करके काबुल की रक्षा भी उसी को सौप दी। क्योंकि यह विजय का अभियान था अत एक विजय के उपरान्त दूसरी विजय तथा एक सफलता के उपरान्त दूसरी सफलता प्राप्त होने लगी। लाहौर तथा हिन्दुस्तान के कुछ वडे वडे कस्बे विजयी वश के सहायको के अधीन थे।

हुमायू का पहुचना

१७ सफर (३ दिसम्बर १५२५ ई०) को जब बागे वफा[2] मे भाग्यशाली शिविर लगे थे तो हज़रत जहावानी जनत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू बदख्शा से अपनी सेना सहित उपस्थित हुए (९४) और फर्श चूमने के सम्मान प्राप्त किया। ख्वाजा कला बेग ने भी इसी दिन गजनी से उपस्थित होकर चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया।

वावर की सेना की सख्या

१ रबी-उल-अव्वल (१६ दिसम्बर १५२५ ई०) को सिन्ध नदी पार करके कचा कोट के निकट सेना की गणना की गई। १२,००० तुर्क व ताजीक अश्वारोही, व्यापारी इत्यादि गणना के समय निकले।

सियालकोट की ओर प्रस्थान

जीलम के ऊपर से विहत[3] नदी पार की गई। शाही सेना ने चनाव नदी वहलोलपुर से पार की। शुक्रवार १४ रबी-उल-अव्वल (२९ दिसम्बर १५२५ ई०) को सियालकोट मे विजयी पताकायें चमकी। बादशाह ने यह निश्चय किया कि सियालकोट को वीरान करके वहलोलपुर को आबाद किया जाये। उन दिनो शत्रुओ के एकत्र होने के समाचार प्राप्त होते रहते थे। जब बादशाह ने कलानूर मे पडाव किया तो मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, आदिल सुल्तान एव दरबार के समस्त सेवक जो लाहौर की रक्षा हेतु नियुक्त थे, धरती-चुम्बन करके सम्मानित हुये।

१ बाबर ने 'बाबर नामा' में दीबालपुर विजय की तिथि मध्य रबी-उल अव्वल दी है।
२ यह बाग बाबर ने ९१४ हि० (१५०८ ई०) में लगवाया था। देखिए 'बाबर नामा'।
३ झेलम नदी।

मिलवट की विजय

सोमवार २४ रबी-उल-अव्वल[1] (८ जनवरी १५२६ ई०) को मिलवट का किला विजयी वश के सहायकों द्वारा विजय हो गया और धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया गया। गाजी खा की जो पुस्तकें इस किले मे थीं, लाई गईं। बादशाह ने कुछ (पुस्तकें) हुमायू को प्रदान कर दी और कुछ कामरान मीर्जा के पास उपहार स्वरूप कन्धार भेज दी।

हुमायूं का हमीद खा पर आक्रमण

जब बादशाह ने यह सुना कि हिसार फीरोजा का हाकिम हमीद खा वहा से वीरता से साहस के पाव बढाता हुआ दो-तीन मजिल आगे आ गया है तो रविवार १३ जमादि-उल-अव्वल (२५ फरवरी १५२६ ई०) को शाही सेना ने अम्बाला से प्रस्थान करके एक झील पर पडाव किया। हजरत बादशाह ने नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू को उस पर आक्रमण करने के लिये भेजा। अमीर ख्वाजा कला बेग, अमीर मुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, अमीर वली खाजिन, अमीर अब्दुल अज़ीज़, अमीर मुहिब्र अली, ख्वाजा खलीफा तथा अमीरो मे से, जो हिन्दुस्तान मे नियुक्त थे, कुछ उदाहरणार्थ हिन्दू बेग, अब्दुल अजीज़, मुहम्मद अली जगजग एव कुछ अन्य दरबार के विश्वास-पात्रो को उसकी विजय सम्बन्धी रिकाब के अधीन भेजा गया।

बिबन जो हिन्दुस्तान के उत्कृष्ट अमीरा मे बडा प्रतिष्ठित समझा जाता था, उस दिन चौखट चूम कर सम्मानित हुआ। हज़रत जहाबानी ने अपने सौभाग्य एव प्रताप से साधारण प्रयत्न से विजय की पताका बलन्द कर दी और उसी मास की सोमवार २१ (५ मार्च १५२६ ई०) को वे शाही सेना के पडाव पर पहुच गये। बादशाह ने इस विजय के पुरस्कार मे जोकि अन्य असीमित विजयो की भूमिका थी, हिसार फीरोजा एव उससे सम्बन्धित स्थान, जिनकी आय एक करोड थी, तथा एक करोड नक्द हुमायू को प्रदान कर दिये और शुभ मुहूर्त मे एक पडाव से दूसरा पडाव पार करते हुये बढते चले गये।

इबराहीम लोदी की सेना के अग्र भाग से युद्ध

यह समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहते थे कि सुल्तान इबराहीम एक लाख अश्वारोही एव एक हजार हाथी लिये हुये बढता चला आ रहा है, और सिरसावा के समीप भाग्यशाली शिविर लगे हुये थे कि ख्वाजा कला बेग के सेवक हैदर अली[2] ने जो जासूसी के लिये गया हुआ था आकर निवेदन किया कि दाऊद खा, तथा हातिम खा ५-६ हजार अश्वारोहियो सहित सुल्तान इबराहीम के लश्कर से पृथक होकर आगे (९५) बढते आ रहे हैं। इस कारण रविवार १८ जमादि उल-आख़िर (१ अप्रैल १५२६ ई०) को चीन तीमूर सुल्तान, मुहम्मद सुल्तान मीर्जा महदी ख्वाजा, आदिल सुल्तान, को बायें भाग की सेना के सभी लोगो सहित जिनके सरदार सुल्तान जुनैद, शाह मीर हुसेन तथा कूतलूक कदम थे, एव मध्य भाग से यूनुस अली, अब्दुल्लाह, अहमदी, किता बेग एव अन्य सैनिको को इस आशय से नियुक्त किया गया कि वे वीरता प्रदर्शित करते हुए उस समूह से जो आत्म-हत्या पर उद्यत था, युद्ध करें। इन योद्धाओ ने शीघ्रातिशीघ्र पहुच कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया और विजय प्राप्त कर ली और बहुत से लोगो को बन्दी बना लिया।

१ बाबर नामा में २२ रबी-उल अव्वल (पृ० १४४-४५)।
२ हैदर कुली (बाबर नामा पृ० १५२)।

एक बहुत बडे समूह को तलवार की विद्युत एव बाण की वर्षा द्वारा नष्ट कर दिया। हातिम खा को ७० व्यक्तियो सहित बन्दी बना कर सम्मानित शिविर मे भेज दिया। वहा उनकी हत्या करा दी गई।

इबराहीम पर आक्रमण की तैयारी

दिग्विजय करने वाला आदेश गाडियां[1] के तैयार करने के सम्बन्ध मे दिया गया। उस्ताद अली कुली को इस बात के लिये आदेश दिया गया कि वह रूम[2] की प्रथानुसार गाडियों को जजीर, चमडे की रस्सी, द्वारा एक दूसरे से जुडवा दे। दो गाडियों के बीच मे ६-७ तोरे[3] लगा दिये जायें ताकि बन्दूक चलाने वाले (उनके पीछे) सुगमतापूर्वक बन्दूक चला सके। ५ ६ दिन मे यह व्यवस्था पूरी की गई यहा तक कि वृहस्पतिवार अन्तिम जमादि उल-आखिर (१२ अप्रैल १५२६ ई०) को पानीपत नगर मे सौभाग्य की हुमा[4] ने अपने प्रताप के पखो की छाया डाली और सेना की पक्तिया नियमानुसार सुव्यवस्थित हो गई।

बाबर की सेना की व्यवस्था

विजयी सेना का दाया भाग नगर एव उसके आसपास के स्थानो की ओर रक्खा गया। गाडिया तथा तोरे जो तैयार हुये थे मध्य भाग के सामने रक्खे गये। बाये भाग को खाई एव वृक्षो से दृढ बनाया गया।

सुल्तान इबराहीम की सेना

सुल्तान इबराहीम एक भारी सेना लिये हुये नगर से छ कुरोह[5] पर युद्ध के लिये तैयार था। एक सप्ताह तक जब तक पानीपत मे पडाव रहा, नित्य प्रति शाही सेना के वीर शत्रु के शिविर पर छापा मार कर उनकी अत्यधिक सेना से युद्ध करके विजय प्राप्त कर लेते थे यहा तक कि सुल्तान इबराहीम शुक्रवार ८ रजब (२० अप्रैल १५२६ ई०) को एक भारी सेना एव भयकर हाथियों को लेकर सम्मानित शिविर की ओर अग्रसर हुआ। गेती सितानी ने भी विजयी सेनाओ को सुव्यवस्थित किया और रण क्षेत्र को सैनिको की पक्तियों द्वारा सुसज्जित किया।

गेती सितानी फिरदौस मकानी का सुल्तान इबराहीम से युद्ध एवं सेना की पंक्तियां सुव्यवस्थित करना

जब विधाता पिछली असफलताओं की हानि की पूर्ति और उसका समाधान सफलता द्वारा करना चाहता है तो वह उसकी उसी प्रकार व्यवस्था करा देता है। इन्ही समस्याओ मे सुल्तान इबराहीम का युद्ध हेतु आगमन तथा गेती सितानी का सेना सुव्यवस्थित करना है। कारण कि उन्होने शत्रुओं की सेना की अधिकता एव सहायको की कमी के बावजूद दैवी सहायता एव नित्य प्रति बढने वाले प्रताप के कारण

१ गरदून।
२ आटोमन सुल्तान।
३ देखिये बाबर नामा पृ० १५३।
४ एक काल्पनिक पक्षी जो सौभाग्य का चिह्न माना जाता है।
५ कोस।

निश्चिन्त होकर एव तसल्ली के साथ ईश्वर से लौ लगा कर सेना की पक्तियो को सुव्यवस्थित करना प्रारम्भ कर दिया।

मध्य भाग को अपने शुभ व्यक्तित्व द्वारा शोभा प्रदान की। मध्य भाग के दायें हाथ पर जिसे तुर्क लोग "ऊन गूल"[1] कहते हैं, चीन तीमूर सुल्तान, सुलेमान मीर्जा, अमीर मुहम्मदी कूकुल्ताश, अमीर (९६) शाह मनसूर बरलास, अमीर यूनस अली, अमीर दरवेश मुहम्मद सारबान तथा अमीर अब्दुल्लाह क्ताबदार को नियुक्त किया। मध्य भाग के बायें हाथ की ओर, जिसे तुर्क लोग "सूल गूल" कहते हैं, अमीर खलीफा, ख्वाजा मीर मीरान सद्र, अमीर अहमदी परवानची, कूच बेग के भाई अमीर तरदी बेग, मुहिब अली खलीफा तथा मीर्जा बेग तरखान को नियुक्त किया। दायें बाजू को हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी[2] के प्रताप द्वारा शोभा प्राप्त हुई। अमीर ख्वाजा कला बेग, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, अमीर हिन्दू बेग, वली खाज़िन तथा पीर कुली सीस्तानी को उनके प्रताप की रिकाब के अधीन कर के उनकी राय तथा तलवार को शोभा प्रदान करने के लिये नियुक्त किया गया। बायें बाजू मे मुहम्मद सुल्तान मीर्जा सैयिद महदी ख्वाजा, आदिल सुल्तान, सुल्तान जुनैद बरलास, ख्वाजा शाह मीर हुसेन, अमीर कुतलूक कदम, अमीर जान[3] बेग, अमीर मुहम्मद बख्शी तथा अन्य प्रतिष्ठित वीरो को नियुक्त किया गया। अग्र भाग मे खुसरो कूकूलताश तथा मुहम्मद अली जगजग थे। अमीर अब्दुल अजीज को सुरक्षित सेना का सरदार नियुक्त किया गया। दायें बाजू के अन्तिम सिरे[4] मे वली क़रमुल[5], मलिक कासिम, तथा बाबा कश्का को, उसके मुग़लो को तूलगमा के रूप मे नियुक्त किया गया। बाये बाजू के अन्तिम सिरे पर कराकूज़ी, अबुल मुहम्मद नेजाबाज, शेख अली, शेख जमाल तथा तीगरी कुली मुग़ल को तूलगमा[6] के रूप मे नियुक्त किया गया। तलवार चलाने वाले वीर रण-क्षेत्र मे पाव जमा कर दृढतापूर्वक डट गये और प्राण लेने वाले बाणो तथा रक्त पीने वाली तलवारो सहित वीरता एव साहस का प्रदर्शन करने लगे।

शेर

"वीर लोग डट गये पाव को दृढ करके
डट जाना उनसे सीखा वृक्षो ने।"

घोर आक्रमणो एव कठोर मार काट के उपरान्त दैवी सहायता शाही सेना के मध्य भाग एव बाहुओ को प्राप्त हुई और दैवी आशीर्वाद महान् विजय का कारण बन गई। शत्रु पराजित हो गये। चिरजीवी वश के सहायकों की बहुत बडी जीत हुई। सुल्तान इबराहीम अज्ञात रूप से एक कोने मे मारा गया। अफगानो की बहुत बडी सख्या शाही प्रताप के आतक की तलवार का भोजन बन गई। सुल्तान इबराहीम की लाश के समीप एक कोने मे ५-६ हज़ार लोग मरे पडे थे। सूर्य एक नेज़ा चढ चुका था[7] कि प्रभुत्व की पताकाओ की चमक युद्ध की अग्नि भडकाने लगी और युद्ध एव सहार प्रारम्भ हो गया। मध्याह्न

१ मूल ग्रन्थ मे 'ऊन गूल'।
२ हुमायूँ।
३ मूल पुस्तक में 'खान'।
४ Flank.
५ किज़ील।
६ देखिए बाबर नामा पृ० १५३,१५७।
७ एक भाले भर ऊपर हो गया था अर्थात् प्रात काल ६ बजे के करीब।

मे विजय का शीतल पवन प्रवाहित होने लगा। इस विजय का सविस्तार उल्लेख, जोकि शाही प्रभुत्व की बहुत बडी सुख्याति है, किसी प्रकार सम्भव नही। वाक्-पटु बुद्धिमान् इसका उल्लेख किस प्रकार कर सकता है कारण कि यह कल्पना के क्षेत्र से भी बाहर है।

भूतकाल के विजेता

जिस समय सुल्तान महमूद गजनवी हिन्दुस्तान आया था तो खुरासान उसके अधिकार मे था। समरकन्द, दारुलमर्ज[1] एव ख्वारिज्म के बादशाह उसके अधीन थे। उसके सैनिको की सख्या एक लाख से अधिक थी और हिन्दुस्तान मे कोई एक प्रभुत्वशाली सम्राट् न था। राय एव राजा लोग इधर उधर (९७) राज्य कर रहे थे और सगठित न थे। सुल्तान शिहाबुद्दीन गोरी १,२०,००० सशस्त्र अश्वारोहियो सहित हिन्दुस्तान की विजय हेतु आया था। उस समय भी इस पूरे देश मे किसी एक प्रभुत्वशाली सम्राट् का राज्य न था। यद्यपि खुरासान उसके भाई सुल्तान गयासुद्दीन के अधीन था किन्तु वह उसके प्रभाव के बाहर न था। साहब किरान[2] ने हिन्दुस्तान की विजय के समय सामाना[3] के क्षेत्र मे सेना की गणना का आदेश दिया था। मौलाना शरफुद्दीन अली यज़्दी[4] का कथन है कि उनकी सेना की पक्ति[5] ६ फरसख तक फैली थी। अनुभवी सैनिकों का अनुमान है कि प्रत्येक फरसख मे १२,००० अश्वारोही आ जाते हैं। अत सेवको के सेवको के अतिरिक्त ७२,००० अश्वारोही रहे होगे। जहा सेवको के सेवक २०० कोस तक खडे थे, उनके शत्रु मल्लू खा के पास २०००[6] अश्वारोही तथा १२० हाथी थे। इस पर भी साहब किरान के विजयी शिविर मे बहुत बडी सख्या मे लोग भयभीत थे। उन्होंने जब अपनी सेना वालो के भय को देखा और कुछ साहसहीन अल्पदर्शी लोगो से अनुचित शब्द सुने तो शाही साहस की शक्ति मे लोगो के सतोष के लिये सावधानी को दृष्टि मे रखते हुये आदेश दिया कि वृक्षो की डालियो से सेना की रक्षा हेतु एक प्रकार की चहारदीवारी बना दी जाये। उसके सामने खाई खोद दी गई। उसके पीछे बहुत बडी सख्या मे एक दूसरे के सामने गाय एव भैसें रखवाई। उनकी गरदनें गाय की खाल की रस्सी से बधवा दी गई थी। लोहे की कीलें बहुत बडी सख्या मे तैयार कराई गईं और आदेश दिया गया कि प्यादे चलते समय उन्हे अपने पास रख लें और आक्रमण एव हाथियो के आगमन के समय मार्ग मे डाल दें।

हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी (जो हिन्दुस्तान के चौथे आक्रमणकारी है) के साथ इस महान् विजय मे जो ईश्वर की बहुत बडी देन है सैनिको इत्यादि की सख्या १२,००० से अधिक न थी। सब से विचित्र बात तो यह है कि वे बदख्शा, कन्धार तथा काबुल पर राज्य करते थे जहा से पर्याप्त आय, जो सेना के व्यय हेतु काफी हो सके, न होती थी अपितु कुछ सीमान्तो पर शत्रुओ के दमन एव शासन सम्बन्धी अन्य कार्यों मे आय से अधिक व्यय होता था। उनका मुकाबला सुल्तान इबराहीम से था, जिसके अधीन लगभग एक लाख अश्वारोही तथा एक हज़ार युद्ध के हाथी थे। भीरा से बिहार तक का राज्य और हिन्दुस्तान के चुने हुये स्थानो की हुकूमत उसके अधीन थी जहा न तो उसका कोई विरोधी और न

१ ईरानी काकेशस का, कैस्पियन सागर से मिला हुआ, भूभाग।
२ तीमूर।
३ थानेश्वर के पश्चिम मे।
४ ज़फ़र नामा भाग २, पृ० ८३।
५ तूले यमाल।
६ १०,००० होना चाहिये।

निश्चिन्त होकर एव तसल्ली के साथ ईश्वर मे लौ लगा कर सेना की पक्तियो को सुव्यवस्थित करना प्रारम्भ कर दिया।

मध्य भाग को अपने शुभ व्यक्तित्व द्वारा शोभा प्रदान की। मध्य भाग के दायें हाथ पर जिसे तुर्क लोग "ऊन गूल"[1] कहते हैं, चीन तीमूर सुल्तान, सुलेमान मीर्ज़ा, अमीर मुहम्मदी कूकूल्ताश, अमीर (९६) शाह मनसूर बरलास, अमीर यूनस अली, अमीर दरवेश मुहम्मद सारबान तथा अमीर अब्दुल्लाह कितावदार को नियुक्त किया। मध्य भाग के बायें हाथ की ओर, जिसे तुर्क लोग "सूल गूल" कहते हैं, अमीर खलीफ़ा, ख्वाजा मीर मीरान सद्र, अमीर अहमदी परवानची, कूच बेग के भाई अमीर तरदी बेग, मुहिब अली खलीफ़ा तथा मीर्ज़ा बेग तरखान को नियुक्त किया। दायें बाजू को हज़रत जहाँदारी जहान आराियानी[2] के प्रताप द्वारा शोभा प्राप्त हुई। अमीर ख्वाजा कला बेग, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, अमीर हिन्दू बेग, वली खाज़िन तथा पीर कुली सीस्तानी को उनके प्रताप की रिकाब के अधीन करके उनकी राय तथा तलवार को शोभा प्रदान करने के लिये नियुक्त किया गया। बायें बाजू मे मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, सैयिद महदी ख्वाजा, आदिल सुल्तान, सुल्तान जुनैद बरलास, ख्वाजा शाह मीर हुसैन, अमीर कुतलुग कदम, अमीर जान[3] बेग, अमीर मुहम्मद बख्शी तथा अन्य प्रतिष्ठित वीरों को नियुक्त किया गया। अग्र भाग मे खुसरो कूकूल्ताश तथा मुहम्मद अली जगजग थे। अमीर अब्दुल अज़ीज़ को सुरक्षित सेना का सरदार नियुक्त किया गया। दायें बाजू के अन्तिम सिरे[4] मे वली क़रावुल[5], मलिक क़ासिम, तथा बाबा कश्का को, उनके मुग़लों को तूलगमा के रूप मे नियुक्त किया गया। बायें बाजू के अन्तिम सिरे पर करा कूज़ी, अबुल मुहम्मद नेज़ाबाज़, शेख अली, शेख जमाल तथा तीगरी कुली मुग़ल को तूलगमा[6] के रूप मे नियुक्त किया गया। तलवार चलाने वाले वीर रण-क्षेत्र मे पाव जमा कर दृढ़तापूर्वक डट गये और प्राण लेने वाले बाणों तथा रक्त पीने वाली तलवारों सहित वीरता एव साहस का प्रदर्शन करने लगे।

शेर

"वीर लोग डट गये पाव को दृढ करके,
डट जाना उनसे सीखा वृक्षो ने।"

घोर आक्रमणों एव कठोर मार काट के उपरान्त दैवी सहायता शाही सेना के मध्य भाग एव बाहुओं को प्राप्त हुई और दैवी आशीर्वाद महान् विजय का कारण बन गई। शत्रु पराजित हो गये। चिरजीवी वश के सहायकों की बहुत बड़ी जीत हुई। सुल्तान इब्राहीम अज्ञात रूप से एक कोने मे मारा गया। अफ़गानों की बहुत बड़ी सख्या शाही प्रताप के आतक की तलवार का भोजन बन गई। सुल्तान इब्राहीम की लाश के समीप एक कोने मे ५-६ हज़ार लोग मरे पड़े थे। सूर्य एक नेज़ा चढ चुका था[7] कि प्रभुत्व की पताकाओं की चमक युद्ध की अग्नि भड़काने लगी और युद्ध एव सहार प्रारम्भ हो गया। मध्याह्न

१ मूल ग्रन्थ में 'ऊन गूल'।
२ हुमायूँ।
३ मूल पुस्तक में 'ख़ान'।
४ Flank.
५ किज़ील।
६ देखिए बाबर नामा पृ० १५६,१५७।
७ एक भाले भर ऊपर हो गया था अर्थात् प्रात काल ९ बजे के करीब।

मे विजय का शीतल पवन प्रवाहित होने लगा। इस विजय का सविस्तार उल्लेख, जोकि शाही प्रभुत्व की बहुत बडी सुख्याति है, किसी प्रकार सम्भव नही। वाक्-पटु बुद्धिमान् इसका उल्लेख किस प्रकार कर सकता है कारण कि यह कल्पना के क्षेत्र से भी बाहर है।

भूतकाल के विजेता

जिस समय सुल्तान महमूद गजनवी हिन्दुस्तान आया था तो खुरासान उसके अधिकार मे था। समरकन्द, दारुलमर्ज[1] एव ख्वारिज्म के बादशाह उसके अधीन थे। उसके सैनिको की सख्या एक लाख से अधिक थी और हिन्दुस्तान मे कोई एक प्रभुत्वशाली सम्राट् न था। राय एव राजा लोग इधर उधर (९७) राज्य कर रहे थे और सगठित न थे। सुल्तान शिहाबुद्दीन गोरी १,२०,००० सशस्त्र अश्वारोहियो सहित हिन्दुस्तान की विजय हेतु आया था। उस समय भी इस पूरे देश म किसी एक प्रभुत्वशाली सम्राट् का राज्य न था। यद्यपि खुरासान उसके भाई सुल्तान गयासुद्दीन के अधीन था किन्तु वह उसके प्रभाव के बाहर न था। साहब किरान[2] ने हिन्दुस्तान की विजय के समय सामाना[3] के क्षेत्र मे सेना की गणना का आदेश दिया था। मौलाना शरफुद्दीन अली यजदी[4] का कथन है कि उनकी सेना की पक्ति[5] ६ फरसख तक फैली थी। अनुभवी सैनिको का अनुमान है कि प्रत्येक फरसख मे १२,००० अश्वारोही आ जाते है। अत सेवको के सेवको के अतिरिक्त ७२,००० अश्वारोही रहे होगे। जहा सेवको के सेवक २०० कोस तक खडे थे, उनके शत्रु मल्लू खा के पास २०००[6] अश्वारोही तथा १२० हाथी थे। इस पर भी साहब किरान के विजयी शिविर मे बहुत बडी सख्या मे लोग भयभीत थे। उन्होने जब अपनी सेना वालो के भय को देखा और कुछ साहसहीन अल्पदर्शी लोगो से अनुचित शब्द सुन तो शाही साहस की शक्ति मे लोगो के सतोष के लिये सावधानी को दृष्टि मे रखते हुये आदेश दिया कि वृक्षो की डालियो से सेना की रक्षा हेतु एक प्रकार की चहारदीवारी बना दी जाये। उसके सामने खाई खोद दी गई। उसके पीछे बहुत बडी सख्या मे एक दूसरे के सामने गाय एव भैंसें रखवाई। उनकी गरदनें गाय की खाल की रस्सी से बधवा दी गई थी। लोहे की कीलें बहुत बडी सख्या मे तैयार कराई गई और आदेश दिया गया कि प्यादे चलते समय उन्हे अपने पास रख लें और आक्रमण एव हाथियो के आगमन के समय मार्ग मे डाल दें।

हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी (जो हिन्दुस्तान के चौथे आक्रमणकारी हैं) के साथ इस महान् विजय मे जो ईश्वर की बहुत बडी देन है सैनिको इत्यादि की सख्या १२ ००० से अधिक न थी। सब से विचित्र बात तो यह है कि वे बदख्शा, कन्धार तथा काबुल पर राज्य करते थे जहा से पर्याप्त आय, जो सेना के व्यय हेतु काफी हो सके, न होती थी अपितु कुछ सीमान्तो पर शत्रुओ के दमन एव शासन सम्बन्धी अन्य कार्यों मे आय से अधिक व्यय होता था। उनका मुकाबला सुल्तान इब्राहीम से था, जिसके अधीन लगभग एक लाख अश्वारोही तथा एक हजार युद्ध के हाथी थे। भीरा से बिहार तक का राज्य और हिन्दुस्तान के चुने हुये स्थानो की हुकमत उसके अधीन थी जहा न तो उसका कोई विरोधी और न

१ ईरानी काकेशस का, कैस्पियन सागर से मिला हुआ, भूभाग।
२ तीमूर।
३ थानेश्वर के पश्चिम में।
४ ज़फ़र नामा भाग २, पृ० ८३।
५ तुले यमाल।
६ १०,००० होना चाहिये।

प्रतिस्पर्धी था। बादशाह पर विजय प्राप्त कर लेना केवल दैवी सहायता के कारण ही सम्भव हो सका। अपार योग्यता एव बुद्धि के स्वामी इस महान् कीर्ति की प्रशसा करने मे असमर्थ हैं। नि सन्देह वह शुभ व्यक्तित्व धन्य है जो हजरत शहशाह[1] के तेज को अपने मे लिये हुये है।

(९८) अन्ततोगत्वा हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने विजय की ज्योति के उदय के उपरान्त मस्तक को शुक्र का सिज्दा करने के लिये भूमि पर रख कर ससार वालो को पुरस्कृत करने की आम घोषणा की और विजयी वश के सहायकों को राज्य की विभिन्न दिशाओ मे उचित रूप से रवाना किया। ससार को विजय करने वाले जिन सुल्तानो ने अपने उच्च साहस से हिन्दुस्तान विजय किया है उन सबके कार्यों से बढ कर हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी की सेहरिन्द की विजय है जो हजरत शहशाह के शुभ व्यक्तित्व के आशीर्वाद से प्राप्त हुई[2]। इसका सविस्तार उल्लेख बाद मे किया जायेगा कि किस प्रकार उन्होने केवल ३ हजार आदमियों की सहायता से सिकन्दर सूर सरीखे (बादशाह) से जिसके अधीन ८०,००० से अधिक आदमी थे, हिन्दुस्तान को मुक्त करा लिया। इससे भी अधिक आश्चर्य जनक कारनामा हजरत जिल्ल-ल्लाही[3] का है कि दैवी सहायता से हिन्दुस्तान को थोडे से लोगों को साथ लेकर इतने विद्रोही सरदारों की अधीनता से इस प्रकार निकाल लिया कि युग की जिह्वा उसका उल्लेख करने मे मूक है। इनका सक्षिप्त उल्लेख अपने स्थान पर किया जायेगा।

शेर

यदि भाग्य मुझे आगा दिलाये,
आकाश अवकाश दिलाये और समय सहायता करे,
सच्चे लोगों की गोष्ठी के प्रकाश से
मैं किस्सो पर किस्से तैयार कर लूगा।
अमर लोगों की तख्ती पर
भविष्य हेतु मैं चित्र बनाऊगा।"

हुमायूँ का आगरा भेजा जाना

विजय के दिन ही जहाबानी जन्नत आशियानी, अमीर ख्वाजा कला बेग, अमीर मुहम्मद कूकूल्ताश अमीर यूनुस अली, अमीर शाह मनसूर बरलास, अमीर अब्दुल्लाह किताबदार, तथा अमीर वली खाजिन को आदेश हुआ कि वे शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान इबराहीम की राजधानी आगरा की ओर प्रस्थान करें और खजाने की रक्षा करें तथा नगर वालो को जो दैवी धरोहर है, न्याय की ज्योति के प्रज्वलित होने के समाचार पहुच जाये और उन्हे सतोष प्राप्त हो जाये।

देहली के खजानो की रक्षा

सैयिद महदी ख्वाजा मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, आदिल सुल्तान, अमीर जुनैद बरलास तथा अमीर

१ शहशाह अकबर के तेज।
२ २२ जून १५५५ ई०।
३ अकबर।

कुतलूक कदम को इस आशय से देहली भेजा गया कि वहा के खजाना एव गडी हुई धन-सम्पत्ति की रक्षा करे और वहा की प्रजा एव निवासियो को पादशाही कृपा की सूचना देकर प्रोत्साहित करें।

देहली की ओर बाबर का प्रस्थान

बादशाह ने उसी दिन फतहनामे[1] लिख कर भाग्यशाली दूतो के हाथ काबुल, बदख्शा एव कन्धार भेजे और स्वय बुधवार १२ रजब (२५ अप्रैल १५२६ ई०) को देहली मे पडाव किया।

बाबर का आगरा पहुचना

शुक्रवार २१ रजब (४ मई १५२६ ई०) को आगरा की राजधानी मे अपने प्रताप के छत्र द्वारा वहा के अधकार को दूर किया और उस वातावरण को रौनक प्रदान की। हिन्दुस्तान के सभी छोटे बड लोगो को बादशाह की दया एव कृपा द्वारा सम्मान प्राप्त हुआ। बादशाह ने सुल्तान इबराहीम की माता, सतान एव सहायको के प्रति विशेष कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते हुये उनका खासे[2] का खजाना उन्हे प्रदान कर (९९) दिया। बादशाह ने अपनी कृपा द्वारा उसकी माता को ७ लाख तन्के के सयूरगाल और भी प्रदान कर दिये। इसी प्रकार उसके सम्बन्धियो को सम्मान, वजीफो तथा अदरारो[3] द्वारा प्रसन्न किया। जो ससार छिन्न भिन्न हो चुका था उसे पुन सुव्यवस्थित किया और उचित प्रकार से सुख-शाति प्रदान की।

हुमायू को हीरा वापस

हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी ने, जो पूर्व ही से आगरा की राजधानी मे विराजमान थे, एक हीरा जो ८ मिस्काल[4] के बराबर था और जौहरियो के अनुसार जिसका मूल्य समस्त ससार के आधे दैनिक व्यय के बराबर था उपहार स्वरूप भट किया। कहा जाता है कि यह हीरा सुल्तान अलाउद्दीन के खजाने मे था और ग्वालियर के राजा विक्रमादित्य की सतान द्वारा उसे प्राप्त हुआ था। गेती सितानी ने उनकी (हुमायू की) प्रसन्नता के लिये उसे स्वीकार कर लिया और उसे पुन उनको लौटा दिया।

शनिवार २९ रजब (११ मई १५२६ ई०) से अनेक सुल्तानो के एकत्र किये हुये खजाना एव गडी हुई धन-सम्पत्ति का निरीक्षण एव दान प्रारम्भ हुआ। ७० लाख सिकन्दरी तन्के हजरत जहाबानी को प्रदान हुये। इसके अतिरिक्त खजाने का एक घर भी यह पता लगाये बिना कि उसमे क्या है उसे प्रदान कर दिया गया। अमीरो को उनकी श्रेणी एव पदानुसार १० लाख से ५ लाख तन्के तक नकद प्रदान किये गये। समस्त वीरो एव सेवको को उनकी श्रेणी से अधिक इनाम देकर सम्मानित किया गया। सभी भाग्यशाली व्यक्ति—छोटे बडे—पुरस्कृत किये गये। शाही शिविर से लेकर बाजारी शिविर तक के लोगो का कोई भी व्यक्ति पर्याप्त इनाम से वचित न रहा। सफलता के उद्यान के पौधो[5] के लिये, जो बदख्शा, काबुल तथा कन्धार मे थे, नकद धन तथा अन्य वस्तुयें, पृथक् कर ली गई। कामरान मीर्जा को १७ लाख तन्के, मुहम्मद जमान मीर्जा को १५ लाख तन्के, इसी प्रकार अस्करी मीर्जा, हिन्दाल मीर्जा एव अन्त पुर की पवित्र

१ विजय पत्र।
२ वह खजाना जो उनके व्यय हेतु पृथक् था।
३ विद्वानो तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता, वृत्ति।
४ ३२० रत्ती।
५ कामरान इत्यादि।

एव सम्मानित महिलाओ और उन सब अमीरो तथा सेवको के लिये जो उस समय शाही सेवा मे उपस्थित न थे, उनकी श्रेणी के अनुसार उत्तम जवाहिरात, अप्राप्य वस्त्र, सोने तथा चांदी के सिक्के निश्चित किये गये। शाही वश से सम्बन्धित सभी लोगो एव पादशाही कृपा की प्रतीक्षा करने वालो को जो समरकन्द, खुरासान, काशगर तथा एराक मे थे, उचित उपहार प्रेषित किये गये। खुरासान, समरकन्द एव अन्य क्षेत्रो के पवित्र रौजो तथा मजारो के लिये चढावे एव उपहार भेजे गये। यह भी आदेश हुआ कि काबुल, सददरह, वरसक,[1] खूस्त तथा बदख्शा के सभी नर-नारियो, एव बालको तथा प्रौढो के लिये एक-एक शाहरुखी भेजी जाये। इस प्रकार सभी विशेष तथा साधारण व्यक्ति बादशाह के परोपकार द्वारा लाभान्वित हुये।

शेर

"जवाहिरात बरसाने वाले हाथो की वर्षा से
ससार मे नये सिरे से खुशी फूट पडी।
सुखद है वह उपहार जो दूर से आये,
कारण कि चन्द्रमा आकाश से नूर (प्रकाश) की वर्षा करता है।"

हिन्दुस्तान वालो का विरोध

(१००) यह निश्चय है कि ससार को शोभा प्रदान करने वाला विधाता जब यह चाहता है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति के, जिसे उसने उन्नति प्रदान की है, उत्तम गुण प्रकट करे तो वह बडे विचित्र प्रकार की समस्याये उपस्थित कर देता है ताकि ऐसी अवस्था मे जब कि मानव की परीक्षा हो रही हो उसके आचार व्यवहार से उसकी दृढता एव दूरदर्शिता सब लोगो के हृदय पर पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये। इसी प्रकार की घटनाओ मे से यह विचित्र घटना है कि इतनी महान् विजय एव इतने दान-पुण्य के बावजूद इनका दूसरी नस्ल का होना हिन्दुस्तान वालो के मेल जोल न करने का कारण बन गया और सिपाही एव प्रजाजन इनसे मेल जोल पैदा करने से घृणा करने लगे। यद्यपि देहली तथा आगरा उनके अधिकार मे आ गये थे किन्तु चारो दिशा मे शत्रु ही शत्रु थे और आसपास के अधिकाश किले विद्रोहियो ने अपने अधिकार मे कर लिये थे। सम्भल का किला, कासिम सम्भली के अधीन था। बयाना के किले मे निज़ाम खा विरोध का शख फूक रहा था। मेवात[2] को हसन खा मेवाती ने दृढ बना कर विरोध की पताका बलन्द कर रक्खी थी। धौलपुर को मुहम्मद जैतून दृढ बना कर विरोध का दावा कर रहा था। ग्वालियर के किले को तातार खा सारग खानी अधिकार मे किये हुये था। रापरी को हुसेन खा लोहानी[3], इटावा को कुतुब खा तथा कालपी को आलम खा अपने अधिकार मे किये थे। महावन को जो आगरा के समीप है सुल्तान इबराहीम का मरगूब नामक दास अपने अधिकार मे किये हुये था। कन्नौज तथा गगा नदी के उस ओर के प्रदेश अफगानो के हाथ मे थे। नसीर खा लोहानी तथा मारूफ फर्मुली, जो सुल्तान इबराहीम से भी विरोध एव झगडा किया करते थे, उनके सरदार थे। सुल्तान इबराहीम की मृत्यु के उपरान्त उन्होने अन्य प्रदेश भी अपने अधिकार मे कर लिये थे और एक दो मजिल आगे बढ आये थे तथा दरिया खा के पुत्र बिहार खा को बादशाह बना दिया था और उसकी उपाधि सुल्तान मुहम्मद निश्चित कर दी थी।

१ ये नाम स्पष्ट नहीं।
२ देहली के दक्षिण में।
३ बाबर नामा में अधिकांश 'नोहानी'।

आगरा में कठिनाइयाँ और हिन्दुस्तान से वापस जाने का आग्रह

जिस वर्ष आगरा मे भाग्यशाली शिविर ने स्थान ग्रहण किया तो गरमी एव लू की अधिकता के कारण शाही शिविर के बहुत से लोगो का साहस छूट गया। बहुत से लोग मूर्खतापूर्ण शकाओ के कारण भाग खडे हुये। विरोधियो के प्रकट हो जाने, वायु की अनुकूलता के अभाव, मार्गो के बन्द हो जाने तथा व्यापारियो के देर मे पहुचने के कारण खाद्य-सामग्री का अभाव हो गया। लोग व्याकुल हो उठे। अधिकाश अमीरो ने हिन्दुस्तान से काबुल तथा उस क्षेत्र को चला जाना निश्चय कर लिया। बहुत से चुने हुये वीर इस देश को बिना आज्ञा छोड कर चल दिये। यद्यपि अधिकाश प्राचीन अमीर एव अनुभवी वीर सिपाही बादशाह के सामने एव पीठ पीछे अशिष्ट वाक्य कहते और खुले शब्दो एव सकेत द्वारा ऐसी बातें प्रकट करते जो बादशाह के पवित्र हृदय को पसन्द न थी, फिर भी हजरत गेती सितानी दूरदर्शिता एव सहनशीलता मे अद्वितीय होने के कारण उपेक्षा करते हुये शासन प्रबन्ध मे व्यस्त रहते थे। यहा तक कि बादशाह के कुछ विश्वासपात्र एव आश्रित जिनसे अन्य लोग आशायें रखते थे, अनुचित कार्य करने लगे विशेष रूप से अहमदी परवानची एव वली खाज़िन। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि ख्वाजा कला बेग का, जो समस्त युद्धो एव अभियानो मे विशेष रूप से हिन्दुस्तान के आक्रमण मे वीरता एव उच्च साहस से (१०१) परिपूर्ण बातें किया करता था, मत पलट गया और वह अन्य प्रकार से व्यवहार करने लगा। वह सब से अधिक खुल्लमखुल्ला तथा सकेत द्वारा इस राज्य को त्याग देने के विषय मे अत्यधिक आग्रह करने लगा।

बाबर का अमीरो को समझाना

अन्ततोगत्वा बादशाह ने राज्य के उच्च पदाधिकारियों एव स्तम्भो को बुलवा कर नाना प्रकार के परामर्श, जोकि सौभाग्य के फरमान का शीर्षक हो सकते थे दिये और उनके भय का जिनके कारण इतनी अनुचित बातें हो रही थी अनावरण किया। उन्होने अपनी जिह्वा से ज़ोर देते हुये कहा कि, "इतना बडा राज्य जो इतने अधिक परिश्रम एव प्रयत्न से हमने प्राप्त किया है उसे साधारण से कष्ट एव कठिनाई के कारण हाथ से निकल जाने देना न तो ससार को विजय करने वालो और न राज्य के सम्बन्ध मे सावधानी रखने वालों की प्रथा है। प्रसन्नता एव दुख, समृद्धि एव दरिद्रता साथ ही साथ रहती हैं। इन सब परिश्रमो एव कष्टो को सफलतापूर्वक झेल लेने के उपरान्त विश्वास है कि सुगमतापूर्वक आराम प्राप्त हो जायेगा। हमे चाहिये कि ईश्वर के आश्रय की दृढ रस्सी पकड कर इस प्रकार के कष्टदायक एव चिन्ताजनक शब्द न कहें। जो कोई विलायत[1] को जाना चाहता है और अपनी अयोग्यता के अवगुण को प्रकट करना चाहता है तो इसमे कोई आपत्ति नही, वह चला जाये। हमने अपने उच्च साहस पर भरोसा कर के, जिसे दैवी सहायता प्राप्त है, हिन्दुस्तान मे रहने का दृढ सकल्प कर लिया है।" अन्त मे राज्य के स्तम्भो ने सोच विचार के उपरान्त यह स्वीकार कर लिया कि "सत्य तो वही है जो बादशाह सलामत कहते है। बादशाह की बात, बातो मे बादशाह होती है।"[2] उन्होने दिल व जान से आदेश एव फरमान की भूमि पर स्वीकृति का शीर्ष रख कर ठहरना निश्चय कर लिया। ख्वाजा कला को, जो अन्य लोगो से अधिक विलायत जाने का आग्रह

१ काबुल की ओर।
२ 'सुखुने पादशाह, पादशाहे सुखुनानस्त'।

एवं सम्मानित महिलाओं और उन सब अमीरों तथा सेवकों के लिये जो उस समय शाही सेवा में उपस्थित न थे, उनकी श्रेणी के अनुसार उत्तम जवाहिरात, अप्राप्य वस्त्र, सोने तथा चाँदी के सिक्के निश्चित किये गये। शाही वंश से सम्बन्धित सभी लोगों एवं पादशाही कृपा की प्रतीक्षा करने वालों को जो समरकन्द, खुरासान, काशगर तथा एराक़ में थे, उचित उपहार प्रेषित किये गये। खुरासान, समरकन्द एवं अन्य क्षेत्रों के पवित्र रौज़ों तथा मज़ारों के लिये चढ़ावे एवं उपहार भेजे गये। यह भी आदेश हुआ कि काबुल, सददरह, वरमक,[1] खूस्त तथा बदख्शा के सभी नर-नारियों, एवं बालकों तथा प्रौढ़ों के लिये एक-एक शाहरुखी भेजी जाये। इस प्रकार सभी विशेष तथा साधारण व्यक्ति बादशाह के परोपकार द्वारा लाभान्वित हुये।

शेर

"जवाहिरात बरसाने वाले हाथों की वर्षा से
संसार में नये सिरे से खुशी फूट पड़ी।
सुखद है वह उपहार जो दूर से आये,
कारण कि चन्द्रमा आकाश से नूर (प्रकाश) की वर्षा करता है।'

हिन्दुस्तान वालों का विरोध

(१००) यह निश्चय है कि संसार को शोभा प्रदान करने वाला विधाता जब यह चाहता है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति के, जिसे उसने उन्नति प्रदान की है, उत्तम गुण प्रकट करे तो वह बड़े विचित्र प्रकार की समस्यायें उपस्थित कर देता है ताकि ऐसी अवस्था में जब कि मानव की परीक्षा हो रही हो उसके आचार व्यवहार से उसकी दृढ़ता एवं दूरदर्शिता सब लोगों के हृदय पर पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये। इसी प्रकार की घटनाओं में से यह विचित्र घटना है कि इतनी महान् विजय एवं इतने दान-पुण्य के बावजूद इनका दूसरी नस्ल का होना हिन्दुस्तान वालों के मेल जोल न करने का कारण बन गया और सिपाही एवं प्रजाजन इनसे मेल जोल पैदा करने से घृणा करने लगे। यद्यपि देहली तथा आगरा उनके अधिकार में आ गये थे किन्तु चारों दिशा में शत्रु ही शत्रु थे और आसपास के अधिकांश किले विद्रोहियों ने अपने अधिकार में कर लिये थे। सम्भल का किला, कासिम सम्भली के अधीन था। बयाना के किले में निज़ाम खां विरोध का शंख फूंक रहा था। मेवात[2] को हसन खां मेवाती ने दृढ़ बना कर विरोध की पताका बलन्द कर रखी थी। धौलपुर को मुहम्मद जैतून दृढ़ बना कर विरोध का दावा कर रहा था। ग्वालियर के किले को तातार खां सारंग खानी अधिकार में किये हुये था। रापरी को हुसेन खां लोहानी[3], इटावा को कुतुब खां तथा कालपी को आलम खां अपने अधिकार में किये थे। महावन को जो आगरा के समीप है सुल्तान इबराहीम का मरगूब नामक दास अपने अधिकार में किये हुये था। कन्नौज तथा गंगा नदी के उस ओर के प्रदेश अफ़गानों के हाथ में थे। नसीर खां लोहानी तथा मारूफ फर्मुली, जो सुल्तान इबराहीम से भी विरोध एवं झगड़ा किया करते थे, उनके सरदार थे। सुल्तान इबराहीम की मृत्यु के उपरान्त उन्होंने अन्य प्रदेश भी अपने अधिकार में कर लिये थे और एक दो मंजिल आगे बढ़ आये थे तथा दरिया खां के पुत्र बिहार खां को बादशाह बना दिया था और उसकी उपाधि सुल्तान मुहम्मद निश्चित कर दी थी।

१ ये नाम स्पष्ट नहीं।
२ देहली के दक्षिण में।
३ बाबर नामा में अधिकांश 'नोहानी'।

आगरा में कठिनाइयाँ और हिन्दुस्तान से वापस जाने का आग्रह

जिस वर्ष आगरा मे भाग्यशाली शिविर ने स्थान ग्रहण किया तो गरमी एव लू की अधिकता के कारण शाही शिविर के बहुत से लोगो का साहस छूट गया। बहुत से लोग मूर्खतापूर्ण शकाओं के कारण भाग खडे हुये। विरोधियों के प्रकट हो जाने, वायु की अनुकूलता के अभाव, मार्गों के बन्द हो जाने तथा व्यापारियों के देर मे पहुचने के कारण खाद्य-सामग्री का अभाव हो गया। लोग व्याकुल हो उठे। अधिकाश अमीरो ने हिन्दुस्तान से काबुल तथा उस क्षेत्र को चला जाना निश्चय कर लिया। बहुत से चुने हुये वीर इस देश को बिना आज्ञा छोड कर चल दिये। यद्यपि अधिकाश प्राचीन अमीर एव अनुभवी वीर सिपाही बादशाह के सामने एव पीठ पीछे अशिष्ट वाक्य कहते और खुले शब्दो एव सकेत द्वारा ऐसी बातें प्रकट करते जो बादशाह के पवित्र हृदय को पसन्द न थी, फिर भी हजरत गेती सितानी दूरदर्शिता एव सहनशीलता मे अद्वितीय होने के कारण उपेक्षा करते हुये शासन प्रबन्ध मे व्यस्त रहते थे। यहा तक कि बादशाह के कुछ विश्वासपात्र एव आश्रित जिनसे अन्य लोग आशाये रखते थे, अनुचित कार्य करने लगे विशेष रूप से अहमदी परवानची एव वली खाजिन। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि ख्वाजा कला बेग का, जो समस्त युद्धो एव अभियानो मे विशेष रूप से हिन्दुस्तान के आक्रमण मे वीरता एव उच्च साहस से (१०१) परिपूर्ण कार्य किया करता था, मत पलट गया और वह अन्य प्रकार से व्यवहार करने लगा। वह सब से अधिक खुल्लमखुल्ला तथा सकेत द्वारा इस राज्य को त्याग देने के विषय मे अत्यधिक आग्रह करने लगा।

बाबर का अमीरो को समझाना

अन्ततोगत्वा बादशाह ने राज्य के उच्च पदाधिकारियों एव स्तम्भो को बुलवा कर नाना प्रकार के परामर्श, जोकि सौभाग्य के फरमान का शीर्षक हो सकते थे दिये और उनके भय का जिसके कारण इतनी अनुचित बातें हो रही थी अनावरण किया। उन्होने अपनी जिह्वा से जोर देते हुये कहा कि, "इतना बडा राज्य जो इतने अधिक परिश्रम एव प्रयत्न से हमने प्राप्त किया है उसे साधारण से कष्ट एव कठिनाई के कारण हाथ से निकल जाने देना न तो ससार को विजय करने वालो और न राज्य के सम्बन्ध मे सावधानी रखने वालो की प्रथा है। प्रसन्नता एव दुख, समृद्धि एव दरिद्रता साथ ही साथ रहती हैं। इन सब परिश्रमो एव कष्टो को सफलतापूर्वक झेल लेने के उपरान्त विश्वास है कि सुगमतापूर्वक आराम प्राप्त हो जायेगा। हम चाहिये कि ईश्वर के आश्रय की दृढ रस्सी पकड कर इस प्रकार के कष्टदायक एव चिन्ताजनक शब्द न कहें। जो कोई विलायत[1] को जाना चाहता है और अपनी अयोग्यता के अवगुण को प्रकट करना चाहता है तो इसमे कोई आपत्ति नही, वह चला जाये। हमने अपने उच्च साहस पर भरोसा कर के, जिसे दैवी सहायता प्राप्त है, हिन्दुस्तान मे रहने का दृढ सकल्प कर लिया है।" अन्त मे राज्य के स्तम्भो ने सोच विचार के उपरान्त यह स्वीकार कर लिया कि "सत्य तो वही है जो बादशाह सलामत कहते है। बादशाह की बात, बातो मे बादशाह होती है।"[2] उन्होने दिल व जान से आदेश एव फरमान की भूमि पर स्वीकृति का शीर्ष रख कर ठहरना निश्चय कर लिया। ख्वाजा कला को, जो अन्य लोगो से अधिक विलायत जाने का आग्रह

१ काबुल की ओर।
२ 'सुखुने पादशाह, पादशाहे सुखुनानस्त'।

एव सम्मानित महिलाओ और उन सब अमीरो तथा सेवको के लिये जो उस समय शाही सेवा मे उपस्थित न थे, उनकी श्रेणी के अनुसार उत्तम जवाहिरात, अप्राप्य वस्त्र, सोने तथा चादी के सिक्के निश्चित किये गये। शाही वश से सम्बन्धित सभी लोगो एव पादशाही कृपा की प्रतीक्षा करने वालो को जो समरकन्द खुरासान, काशगर तथा एराक मे थे, उचित उपहार प्रेषित किये गये। खुरासान, समरकन्द एव अन्य क्षेत्रों के पवित्र रौजो तथा मजारो के लिये चढावे एव उपहार भेजे गये। यह भी आदेश हुआ कि काबुल, सददरह, वरसक,[1] खूस्त तथा वदख्शा के सभी नर-नारियो, एव बालको तथा प्रौढो के लिये एक-एक शाहरुखी भेजी जाये। इस प्रकार सभी विशेष तथा साधारण व्यक्ति बादशाह के परोपकार द्वारा लाभान्वित हुये।

शेर

"जवाहिरात बरसाने वाले हाथो की वर्षा से
ससार मे नये सिरे से खुशी फूट पडी।
सुखद है वह उपहार जो दूर से आये,
कारण कि चन्द्रमा आकाश से नूर (प्रकाश) की वर्षा करता है।"

हिन्दुस्तान वालो का विरोध

(१००) यह निश्चय है कि ससार को शोभा प्रदान करने वाला विधाता जब यह चाहता है कि यह किसी ऐसे व्यक्ति के, जिसे उसने उन्नति प्रदान की है, उत्तम गुण प्रकट करे तो वह बडे विचित्र प्रकार की समस्यायें उपस्थित कर देता है ताकि ऐसी अवस्था म जब कि मानव की परीक्षा हो रही हो उसके आचार व्यवहार से उसकी दृढता एव दूरदर्शिता सब लोगो के हृदय पर पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये। इसी प्रकार की घटनाओ मे से यह विचित्र घटना है कि इतनी महान् विजय एव इतने दान-पुण्य के बावजूद इनका दूसरी नस्ल का होना हिन्दुस्तान वालो के मेल जोल न करने का कारण बन गया और सिपाही एव प्रजाजन इनसे मेल जोल पैदा करने से घृणा करने लगे। यद्यपि देहली तथा आगरा उनके अधिकार मे आ गये थे किन्तु चारो दिशा मे शत्रु ही शत्रु थे और आसपास के अधिकाश किले विद्रोहियो ने अपने अधिकार मे कर लिये थे। सम्भल का किला, कासिम सम्भली के अधीन था। बयाना के किले मे निजाम खा विरोध का शख फूक रहा था। मेवात[2] को हसन खा मेवाती ने दृढ बना कर विरोध की पताका बलन्द कर रखी थी। धौलपुर को मुहम्मद जैतून दृढ बना कर विरोध का दावा कर रहा था। ग्वालियर के किले को तातार खा सारग खानी अधिकार मे किये हुये था। रापरी को हुसेन खा लोहानी[3], इटावा को कुतुब खा तथा कालपी को आलम खा अपने अधिकार मे किये थे। महावन को जो आगरा के समीप है सुल्तान इबराहीम का मरगूब नामक दास अपने अधिकार मे किये हुये था। कन्नौज तथा गगा नदी के उस ओर के प्रदेश अफगानो के हाथ मे थे। नसीर खा लोहानी तथा मारूफ फर्मुली, जो सुल्तान इबराहीम से भी विरोध एव झगडा किया करते थे, उनके सरदार थे। सुल्तान इबराहीम की मृत्यु के उपरान्त उन्होने अन्य प्रदेश भी अपने अधिकार मे कर लिये थे और एक दो मजिल आगे बढ आये थे तथा दरिया खा के पुत्र बिहार खा को बादशाह बना दिया था और उसकी उपाधि सुल्तान मुहम्मद निश्चित कर दी थी।

१ ये नाम स्पष्ट नहीं।
२ देहली के दक्षिण में।
३ बाबर नामा में अधिकांश 'नोहानी'।

आगरा में कठिनाइयाँ और हिन्दुस्तान से वापस जाने का आग्रह

जिस वर्ष आगरा मे भाग्यशाली शिविर ने स्थान ग्रहण किया तो गरमी एव लू की अधिकता के कारण शाही शिविर के बहुत से लोगो का साहस छूट गया। बहुत से लोग मूर्खतापूर्ण शकाओ के कारण भाग खडे हुये। विरोधियो के प्रकट हो जाने, वायु की अनुकूलता के अभाव, मार्गो के बन्द हो जाने तथा व्यापारियो के देर मे पहुचने के कारण खाद्य-सामग्री का अभाव हो गया। लोग व्याकुल हो उठे। अधिकाश अमीरो ने हिन्दुस्तान से काबुल तथा उस क्षेत्र को चला जाना निश्चय कर लिया। बहुत से चुने हुये वीर इस देश को बिना आज्ञा छोड कर चल दिये। यद्यपि अधिकाश प्राचीन अमीर एव अनुभवी वीर सिपाही बादशाह के सामने एव पीठ पीछे अशिष्ट वाक्य कहते और खुले शब्दो एव सकेत द्वारा ऐसी बातें प्रकट करते जो बादशाह के पवित्र हृदय को पसन्द न थी, फिर भी हजरत गेती सितानी दूरदर्शिता एव सहनशीलता मे अद्वितीय होने के कारण उपेक्षा करते हुये शासन प्रबन्ध मे व्यस्त रहते थे। यहा तक कि बादशाह के कुछ विश्वासपात्र एव आश्रित जिनसे अन्य लोग आशायें रखते थे, अनुचित कार्य करने लगे विशेष रूप से अहमदी परवानची एव वली खाजिन। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि ख्वाजा कला बेग का जो समस्त युद्धो एव अभियानो मे विशेष रूप से हिन्दुस्तान के आक्रमण मे वीरता एव उच्च साहस से (१०१) परिपूर्ण बातें किया करता था, मत पलट गया और वह अन्य प्रकार से व्यवहार करने लगा। वह सब से अधिक खुल्लमखुल्ला तथा सकेत द्वारा इस राज्य को त्याग देने के विषय मे अत्यधिक आग्रह करने लगा।

बाबर का अमीरो को समझाना

अन्ततोगत्वा बादशाह ने राज्य के उच्च पदाधिकारियों एव स्तम्भो को बुलवा कर नाना प्रकार के परामर्श, जोकि सौभाग्य के फरमान का शीर्षक हो सकते थे दिये और उनके भय का जिनके कारण इतनी अनुचित बाते हो रही थी अनावरण किया। उन्होने अपनी जिह्वा से जोर देते हुये कहा कि, "इतना बडा राज्य जो इतने अधिक परिश्रम एव प्रयत्न से हमने प्राप्त किया है उसे साधारण से कष्ट एव कठिनाई के कारण हाथ से निकल जाने देना न तो ससार को विजय करने वालों और न राज्य के सम्बन्ध मे सावधानी रखने वालो की प्रथा है। प्रसन्नता एव दुख, समृद्धि एव दरिद्रता साथ ही साथ रहती हैं। इन सब परिश्रमो एव कष्टों को सफलतापूर्वक झेल लेने के उपरान्त विश्वास है कि सुगमतापूर्वक आराम प्राप्त हो जायेगा। हमे चाहिये कि ईश्वर के आश्रय की दृढ रस्सी पकड कर इस प्रकार के कष्टदायक एव चिन्ताजनक शब्द न कहें। जो कोई विलायत[1] को जाना चाहता है और अपनी अयोग्यता के अवगुण को प्रकट करना चाहता है तो इसमे कोई आपत्ति नही, वह चला जाये। हमने अपने उच्च साहस पर भरोसा कर के, जिसे दैवी सहायता प्राप्त है, हिन्दुस्तान मे रहने का दृढ सकल्प कर लिया है।" अन्त मे राज्य के स्तम्भो ने सोच विचार के उपरान्त यह स्वीकार कर लिया कि "सत्य तो वही है जो बादशाह सलामत कहते है। बादशाह की बात, बातो मे बादशाह होती है।"[2] उन्होने दिल व जान से आदेश एव फरमान की भूमि पर स्वीकृति का शीर्ष रख कर ठहरना निश्चय कर लिया। ख्वाजा कला को, जो अन्य लोगों से अधिक विलायत जाने का आग्रह

१ काबुल की ओर।
२ 'सुख़ने पादशाह, पादशाहे सुख़ुनानस्त'।

कर रहा था, विलायत जाने की अनुमति दे दी गई। उपहार एव तुहफे जो भाग्यशाली शाहज़ादों एव दरबार के अन्य विश्वासपात्रों के लिये पृथक् किये गये थे, उसके हाथ भेज दिये गये। गज़नी, गीरदीज़[1], तथा सुल्तान मसऊदी का हज़ारचा उसे जागीर मे प्रदान कर दिये गये। हिन्दुस्तान मे भी कुहराम परगना उसे प्रदान कर दिया गया। मीर मीरान को भी काबुल की ओर बिदा कर दिया गया। बृहस्पतिवार २० ज़िलहिज्जा (२८ अगस्त १५२६ ई०) को ख्वाजा को आज्ञा दे दी गई कि वह जाकर वहीं रहे।

हिन्दुस्तान के अमीरो का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

प्रामाणिक ग्रन्थो मे यह बात स्पष्ट है कि जो कोई उत्तम विचारो वाला भाग्यशाली बुद्धिमानो से परामर्श से कार्य करता है तो वह नि सन्देह उच्च श्रेणी को प्राप्त हो जाता है और सफल होता है। हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी का इतिहास इस तथ्य का दर्पण है कि सैनिको के इतने असमजस की अवस्था मे भी अपने राज्यो को विजय करने वाले साहस और ईश्वर की कृपा पर आश्रित हो कर आगरा नगर को जो हिन्दुस्तान की विलायत का केन्द्र है अपनी राजधानी बनाया। अपने उपाय एव वीरता की शक्ति, एव न्याय और परिश्रम से इस विलायत[2] का प्रबन्ध कर लिया। इस प्रकार शनै शनै हिन्दुस्तान के बहुत से अमीरो एव इस राज्य के सरदारो ने उपस्थित होकर सेवा का सम्मान प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया। उन्ही मे से शेख घूरन[3] ने सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया और वह ३००० प्रसिद्ध व्यक्तियों को सम्मानित (१०२) चौखट पर लाने का साधन बना। प्रत्येक ने अपनी श्रेणी से अधिक प्रोत्साहन प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त फीरोज खा, शेख बायज़ीद, महमूद खा लोहानी[4] तथा काज़ी जिया ने, जो प्रतिष्ठित सरदारो मे थे, सेवा का सम्मान प्राप्त किया और अपने उद्देश्य की पूर्ति की। फीरोज खा को जौनपुर से एक करोड तन्के से कुछ अधिक की जागीर प्रदान की गई। शेख बायज़ीद को अवध की विलायत से एक करोड महमूद खा को गाज़ीपुर से ९० लाख और काज़ी जिया को जौनपुर मे २० लाख की तनख्वाह दी गई। अल्प समय मे सुख शान्ति एव भोग विलास के साधन एकत्र हो गये।

हुमायूँ को सम्भल प्रदान होना

शव्वाल की ईद के कुछ दिन उपरान्त राजधानी आगरा मे सुल्तान इबराहीम के महलो मे एक बहुत बडे जश्न का आयोजन हुआ और लोगो को प्रसन्न करने के लिये अत्यधिक इनाम बाटे गये। सम्बल की विलायत को जहाबानी के मवाजिब[5] मे रक्खा गया और उसके अतिरिक्त हिसार फीरोज़ा की सरकार, जो इससे पूर्व उनकी वीरता के कारण प्रदान हुई थी, उन्ही के पास रहने दी गई। अमीर हिन्दू बेग को उनका वकील बना कर उस क्षेत्र मे नियुक्त किया गया।

सम्भल मे बिबन की पराजय

क्योंकि बिबन ने सम्बल के किले को घेर लिया था अत उपर्युक्त अमीर, कित्ता बेग, मलिक

१ फ़ारसी उच्चारण गरदेज़।
२ राज्य।
३ बदायूनी के अनुसार सगीत मे वह अद्वितीय था।
४ इसे 'नोहानी' तथा 'लोहानी' दोनों लिखा गया है।
५ वृत्ति।

कासिम, बाबा कश्का तथा उसके भाइयो, मुल्ला अपाक, शेख धूरन तथा अन्य सैनिकों को दोआब मे शीघ्रातिशीघ्र पहुचने का आदेश दिया गया। जो दल विजयी सेना के आगे आगे जा रहा था, उससे बिबन का युद्ध हुआ और वह पराजित हो गया। क्योंकि वह नमकहराम अभागा, सेवा मे उपस्थित होने का सौभाग्य पाकर, दुष्टता के कारण पीठ दिखा चुका था, अत उसने फिर कभी सौभाग्य का मुह न देखा।

गेती सितानी द्वारा परामर्श तथा हजरत जहांबानी का पूर्व की ओर के अभियान का स्वयं उत्तरदायित्व लेना

जब हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने आगरा की राजधानी मे सफलतापूर्वक अपन विश्व विजय करने वाले हृदय को विजयी देशो के शासन प्रबन्ध से निश्चिन्त कर लिया और वर्षा ऋतु, जो हिन्दुस्तान की बहार एव तरावट तथा ताजगी का समय है, मित्रो के साथ सुख शान्ति से उद्यानो एव उपवनो मे व्यतीत हो गई और विश्व विजय करने वाला द्वारा अपनी शोभा दिखाने एव अभियानो का समय आ गया तो उन्होंने अनुभवी बुद्धिमानो तथा शूर वीरो से जो उनकी सेवा मे उपस्थित थे, परामर्श किया कि पूर्व दिशा मे लोहानियो[1] के विनाश हेतु जो ५०,००० अश्वारोहियो सहित कुत्सित विचारो से कन्नौज के आगे बढ आये थे आक्रमण किया जाये अथवा पश्चिम मे राणा सागा एव उसके नष्ट भ्रष्ट करने के लिये प्रस्थान किया जाये कारण कि वह बडा शक्तिशाली हो गया था और खन्दार[2] के किले को अपने अधिकार मे कर के अभिमान की नोकदार टोपी टेढी कर के पहनने लगा था और उपद्रव एव अशान्ति फैलाने का विचार रखता था। बडे बडे अमीरो एव उच्च पदाधिकारियो के परामर्श से यह निश्चय हुआ कि राणा सागा, जो सर्वदा काबुल प्रार्थना-पत्र भेजा करता था और आज्ञाकारिता की डीग को अपनी (१०३) दस्तावेज बना कर निष्ठा का दावा किया करता था, के कुछ समय से प्रार्थनापत्र नही आये है। खन्दार के किले को हसन वल्द मकन से, जो अभी तक फर्श चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित न हुआ था, छीन लेने के कारण उसका राज्य का अशुभचिन्तक होना नहीं प्रमाणित होता अत अभी आक्रमण न करना चाहिय और अनुभवी लोगो को भेज कर उसके विषय मे पहले पता लगा लेना चाहिये। जब तक उसके विषय मे कोई प्रामाणिक ज्ञान न प्राप्त हो जाये लोहानियो का विनाश सर्वोपरि समझ कर पूर्व की ओर प्रस्थान किया जाये। बादशाह ने यह मत व्यक्त किया कि "मैं स्वय इस महत्वपूर्ण अभियान हेतु प्रस्थान करना चाहता हू।" इसी बीच मे हजरते जहाबानी ने, जिनके सौभाग्य का पौधा महत्वाकाक्षा के उपवन मे उन्नति कर रहा था, निवेदन किया कि "यह सेवा यदि मुझे प्रदान हो जाये तो आशा है कि बादशाह के नित्य प्रति उन्नतिशील प्रताप की सहायता से यह अभियान उनकी पवित्र इच्छानुसार सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जायेगा।" बादशाह को यह प्रार्थना बडी पसन्द आई और उन्होने प्रसन्नतापूर्वक इसे स्वीकार कर लिया। तदनुसार जहाबानी उचित रूप से सेवा हेतु कटिबद्ध हुए। पृथ्वी को आज्ञाकारी बनाने वालो ने आदेश दिया कि "आदिल सुल्तान, मुहम्मद कूकूल्ताश, अमीर शाह मनसूर बरलास, अमीर कूतलूक कदम, अमीर अब्दुल्लाह, अमीर वली, अमीर जान बेग, पीर कुली तथा अमीर शाह हुसेन को हजरत जहाबानी की विजयी रिकाब के अधीन नियुक्त किया जाता है।" इन लोगो को धौलपुर एव उस क्षेत्र

१ नोहानियों।
२ गन्दार रणथम्बोर के पूर्व में कुछ मील पर एक दृढ किला।

की विजय हेतु नियुक्त किया गया था और यह आदेश दिया गया था कि उस विलायत को मुहम्मद जैतून से लेकर सुल्तान जुनैद बरलास को सौंप कर वे लोग ब्याना चले जायें। काबुली अहमद कासिम को यह अनुपेक्षीय आदेश दिया गया कि वह अमीरों को चदवार कस्बे मे शाहज़ादे के शिविर मे पहुचा दे। इटावा के जागीरदार सैयिद महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, मुहम्मद अली जगजग तथा अब्दुल अज़ी मीर आख़ूर एव उस समस्त सेना को, जो कुतुब खा अफगान के, जिसने इटावा के क्षेत्र मे विरोध की पताका बलन्द कर रक्खी थी, दमन हेतु नियुक्त थी, शाहज़ादे की सेवा मे नियुक्त किया गया।

बृहस्पतिवार १३ ज़ीकाद (२१ अगस्त १५२६ ई०) को एक शुभ नक्षत्र म (शाहज़ादे) ने राजधानी आगरा से निकल कर नगर से ३ कुरोह[1] पर पडाव किया और फिर वहाँ से निरन्तर कूच करते हुये रवाना हुये। नसीर खा, जो जाजमऊ मे एक सेना एकत्र करके पडाव किये हुये था, विजयी पताकाओं के १५ कुरोह पर पहुच जाने के उपरान्त भाग खडा हुआ और गगा नदी पार करके खरीद[2] की विलायत मे प्रविष्ट हो गया। सम्मानित सेना भी खरीद की ओर अग्रसर हुई और उस प्रदेश को भी कृपा एव आतक से अपने अधिकार मे करके जौनपुर की ओर रवाना हुई। जौनपुर एव उस क्षेत्र को अपने न्याय द्वारा सुखी एव समृद्ध किया। और राज्य को विजय करने एव उसका शासन प्रबन्ध करने का प्रयत्न अपनी कुशाग्र बुद्धि के प्रकाश एव जवान भाग्य की शक्ति से करने लगे।

फतह खा सरवानी का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

लौटते समय दल्मऊ के निकट फतह खा सरवानी, जो हिन्दुस्तान के सम्मानित अमीरो मे था और जिसके पिता को सुल्तान इबराहीम ने आज़म हुमायू की उपाधि प्रदान की थी, हज़रत जहाबानी की सेवा मे उपस्थित हुआ। (शाहज़ादे ने) उसे सैयिद महदी ख्वाजा एव मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा के (१०४) साथ (बाबर के) दरबार मे भेज दिया। उसे शाही कृपा से ख़िलअत द्वारा सम्मानित किया गया और उसके पिता के मवाजिब[3] उसे प्रदान कर दिये गये। एक करोड ६ लाख तन्के उससे अधिक तनख्वाह मे दिये गये। यद्यपि मूर्खता के कारण उसकी अभिलाषा यह थी कि उसे उसके पिता की उपाधि प्रदान की जाये किन्तु उसे खाने जहा की उपाधि द्वारा सम्मानित करके उसकी जागीर मे भेज दिया गया। उसके पुत्र महमूद खा को स्थायी रूप से शाही सेवा का सम्मान प्राप्त हुआ।

बाबर के एक पुत्र का जन्म

हज़रत गेती सितानी आगरा की राजधानी मे बाह्य एव आतरिक दोनो रूप से सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करते रहे यहा तक कि मुहर्रम ९३३ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १५२६ ई०) मे काबुल से यह सुखद समाचार प्राप्त हुये कि माहम बेगम के, जो हज़रत जहाबानी की माता है, पुनीत गर्भ से एक सम्मानित पुत्र का जन्म हुआ है। गेती सितानी ने उसका नाम मुहम्मद फारूक रक्खा। उसका जन्म २३ शव्वाल ९३२ हि० (२ अगस्त १५२६ ई०) को हुआ किन्तु बादशाही कृपादृष्टि के दर्शन किये बिना ही वह ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०) मे इस ससार से बिदा हो गया।

१ कोस।
२ उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले में।
३ वृत्ति, भत्ता।

इस शुभ वर्ष (९३३ हि०) की कुछ घटनायें एवं राणा सांगा के विद्रोह के समाचार तथा हजरत जहांवानी गेती सितानी का पहुंचना

बुधवार २४ सफर[1] को हजरत जहांबानी को आदेश भेजा गया कि जौनपुर को कुछ अमीरों को सौंप कर वे स्वयं शीघ्रातिशीघ्र शाही दरबार मे पहुचने का सौभाग्य प्राप्त करें कारण कि राणा सांगा ने हिन्दू तथा मुसलमानो की एक भारी सेना लेकर धृष्टता के पाव बाहर निकाले हैं। इस सेवा हेतु[2] मुहम्मद अली बरद मेहतर हैदर रिकाबदार को नियुक्त किया गया।

ब्याना, ग्वालियर तथा धौलपुर पर अधिकार

इसी वर्ष ब्याना के हाकिम निजाम खां ने सौभाग्य के स्रोत अमीर रफी उद्दीन सफवी[3] द्वारा उपस्थित होकर धरती-चुम्बन किया और ब्याना का किला विजयी वंश के सहायकों को सौंप दिया।

तातार खां ने भी ग्वालियर को भेंट करके चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया।

मुहम्मद जैतून भी धौलपुर को ऐश्वर्य की चौखट के सेवकों को सौंपकर सेवा मे उपस्थित हुआ। प्रत्येक अपनी निष्ठा एवं स्वामी भक्ति के अनुसार बादशाही कृपा का पात्र बना और कष्टों एवं दुर्घटनाओं से मुक्त हो गया।

बाबर को विष देने का प्रयत्न

१६ रबी-उल-अव्वल (२१ दिसम्बर १५२६ ई०) को सुल्तान इबराहीम की माता ने बावरचियों से मिलकर (बादशाह के प्राण लेने की) धृष्टता की किन्तु सब कुशल रहा। षड्यन्त्रकारियों को उनके षड्यन्त्र के कारण दंड दिया गया।[4]

हुमायू की वापसी

जब हजरत जहांबानी को कृपा-युक्त फरमान प्राप्त हुआ तो वे शाह मीर हुसेन एवं अमीर सुल्तान जुनैद बरलास को जौनपुर के शासन प्रबन्ध हेतु तथा काजी जिया को, जिसे गेती सितानी द्वारा आश्रय प्राप्त हुआ था, इन दोनों अमीरों की सहायतार्थ नियुक्त करके शाही सिंहासन के चुम्बन हेतु रवाना हुए। शेख बायजीद को अवध में नियुक्त किया गया। और इस कारण कि कालपी आलम खां के अधीन था और उसको आज्ञाकारी बनाना, चाहे युद्ध से हो और चाहे सधि से, राज्य के लिये परमावश्यक था अतः विजयी सेना को कालपी की ओर रवाना किया गया। आशा एवं भय की बातें प्रस्तुत करके उन्होंने उसे दासों की माला से गूंध दिया और विजयी रिकाब की अधीनता में स्वयं शाही दरबार मे (१०५) उपस्थित किया। उन्होंने शुभ मुहूर्त में रविवार ३ रबी उस्सानी (६ जनवरी १५२७ ई०) को राजधानी आगरा के चहार बाग[5] में, जो हश्त बहिश्त के नाम से प्रसिद्ध था और जिसका

१ २४ मुहर्रम (३० नवम्बर १५२६ ई०) अधिक उचित है।
२ बुलाने के लिये।
३ वह ईज (फ़ारस की खाड़ी के समीप) का निवासी था और अबुल फ़ज़ल का पिता व गुरु था।
४ बाबर ने इस घटना का सविस्तार उल्लेख किया है।
५ आजकल राम बाग कहलाता है। अबुल फ़ज़ल का जन्म यहीं हुआ था।

निर्माण बादशाह ही ने कराया था, गेती सितानी की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया।

उसी दिन ख्वाजा दोस्त खावन्द काबुल से उपस्थित हुआ और उसे कृपाओं द्वारा सम्मानित किया गया। इन्हीं दिनों में महदी ख्वाजा के पास से, जो ब्याना में था, निरन्तर प्रार्थना-पत्र प्राप्त होते रहते थे और राणा सांगा के विद्रोह एवं युद्ध के लिये धृष्टता के पग बढ़ाने के समाचार प्राप्त हुआ करते थे।

राणा सांगा का गेती सितानी फिरदौस मकानी से युद्ध एवं विजय की पताका का बलन्द होना

जो भाग्यशाली (जिसके शीष पर संसार को शोभा प्रदान करने वाले ईश्वर ने वास्तविक राज्य का मुकुट रक्खा है) उत्कृष्ट बुद्धि को सम्मानित करके बादशाहों के बादशाह[1] की आज्ञाओं के पालन का प्रयत्न करता है तो निःसन्देह वह उसकी अभिलाषा का धन उसकी गोद में रख देता है और उसके कार्यों को संसार वालों की स्वाभाविक अल्पदृष्टिता से श्रेष्ठ करके लोक तथा परलोक में उसे सफल बना देता है। इस महत्वपूर्ण समस्या का उदाहरण गेती सितानी फिरदौस मकानी का इतिहास है कि जैसे जैसे उनका राज्य बढ़ता गया उनकी बुद्धि कुशाग्र होती गई। यद्यपि मन्त्री के अत्यधिक साधन एकत्र हो गये किन्तु होशियारी का प्रकाश बढ़ता ही गया। वे सर्वदा परमेश्वर से लौ लगा कर न्याय एवं दान मुल्कगीरी तथा मुल्कदारी के कार्यों में बाल बराबर भी वृद्धि के मार्ग पर अग्रसर होने की ओर उपेक्षा न करते थे। इस समय जब कि राणा सांगा के सिर में सेना की संख्या पर अभिमान के कारण घमंड का पागलपन चक्कर काटने लगा और उसने बदमस्ती प्रारम्भ करते हुए संयम के क्षेत्र के बाहर पांव निकाले और वह धृष्टता एवं उद्दंडता के पांव से अग्रसर हुआ तो हज़रत (बादशाह) भी ईश्वर की विशेष कृपा के किले में बैठकर उस अपार भीड़ की चिन्ता किये बिना जो उसके साथ थी उस अभागे को नष्ट करने के लिये अग्रसर हुए।

सोमवार ९ जमादि-उल-अव्वल (११ फरवरी १५२७ ई०) को उन्होंने इस विद्रोह के दमन हेतु राजधानी आगरा से प्रस्थान किया और नगर के उपान्त में सम्मानित शिविर लगवाये। यह समाचार निरन्तर प्राप्त होने लगे कि उस अभागे ने एक भारी सेना सहित ब्याना के आस पास के स्थानों पर आक्रमण कर दिया है और जो सेना ब्याना के किले से उसका मुकाबला करने पहुंची, वह युद्ध की शक्ति न देख कर लौट गई। *सनकुर[2] खान जनजूहा मारा गया और अमीर किता बेग आहत हुआ।* हज़रत (बादशाह) ने इस पड़ाव पर चार दिन प्रतीक्षा करके पांचवें दिन प्रस्थान किया, और मधापुर[3] के मैदान में जो आगरा एवं सीकरी के मध्य में है पड़ाव किया। उस समय उनके हृदय में आया कि यहां निकट में कोई इतनी बड़ी झील जो भाग्यशाली सेना के लिये पर्याप्त हो सके सीकरी कस्बे के अतिरिक्त नहीं है (इस विजय के उपरान्त गेती सितानी ने इस विजय के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये सीकरी का नाम

१ ईश्वर।
२ सनगुर खां।
३ सम्भवतः मदावर।

शुकरी रख दिया और आज कल शहशाह के नित्य-प्रति उन्नतिशील सौभाग्य से यह स्थान फतहपुर के नाम से, कारण कि यह दिलों को विजय प्रदान करता है, प्रसिद्ध है) अत कहीं ऐसा न हो कि विद्रोही (१०६) सेना शीघ्रातिशीघ्र पहुचकर उस झील पर अधिकार जमा ले। इस बुद्धिमत्तापूर्ण विचार से वे दूसरे दिन बडे ऐश्वर्य से फतहपुर की ओर रवाना हुये। अमीर दरवेश मुहम्मद सारबान को दौलतखाने[1] के लिए स्थान निश्चित करने के निमित्त आग भेज दिया गया। उपर्युक्त अमीर ने फतहपुर झील के जोकि बहुत बडा तालाब है और समुद्र के समान है, समीप उचित स्थान निश्चित किया। उस मैदान मे विजयी शिविर लग गये। वहा से महदी ख्वाजा एव उन समस्त अमीरो को जो ब्याना मे थे बुलाने के लिये आदमी भेजे गये। बादशाह ने जहाबानी के सेवक बेग मीरक[2] एव अपने कुछ विशेष सेवको को शत्रुओ के विषय मे पता लगाने के लिये भेजा। प्रात काल जो लोग भेजे गये थे, उन्होने लौटकर निवेदन किया कि शत्रुओ की सेना बसावर से एक कुरोह[3] आगे पडाव किये हुये हैं और हमारे तथा उनके मध्य मे १८ कुरोह की दूरी होगी। उसी दिन महदी ख्वाजा[4], मुहम्मद सुल्तान मीर्जा[5] एव समस्त अमीरो ने, जो ब्याना म थे, उपस्थित होकर चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया।

राणा सागा का कनवाह के समीप पहुँचना

इन्ही दिनो मे करावलो[6] मे झडपे हुआ करती थी और अनुभवी वीर युद्ध की कुशलता का प्रदर्शन करके बादशाह की प्रशसा के पात्र होते रहते थे, यहा तक कि शनिवार १३ जमादि उल-आखिर (१७ मार्च १५२७ ई०) को ब्याना सरकार के खनवाह[7] नामक स्थान पर जो एक पर्वत के उपान्त मे है राणा सागा एक बडी भारी सेना लेकर पहुच गया (पर्वत शाही शिविर से दो कुरोह पर था)।

बादशाह ने अपने "वाकेआत" मे लिखा है—' हिन्दुस्तान के नियमानुसार १ लाख की विलायत[8] को १०० अश्वारोहियो और एक करोड की विलायत को १०,००० अश्वारोहियों के योग्य समझा जाता है।" राणा सागा की विलायत १० करोड तक थी जहा एक लाख अश्वारोहियो को रक्खा जा सकता था। बहुत से प्रतिष्ठित सरदार, जिनमे से किसी ने किसी भी युद्ध मे उसकी सहायता न की थी, और न कभ। उसकी अधीनता स्वीकार की थी, उसके आज्ञाकारी बनकर उसकी सेना के साथ हो गये थे। इस प्रकार राय सेन एव सारगपुर इत्यादि के हाकिम सलहदी[9] के पास ३०,००० अश्वारोहियो की विलायत थी। रावल उदय सिंह बागरी[10] के पास १२००० अश्वारोही, मेवातके हाकिम हसन खा मेवाती के पास

१ शाही शिविर।
२ सम्भवत मुकीम बेग हरवी, तबकाते अकबरी के लेखक निज़ामुद्दीन अहमद का पिता।
३ कोस।
४ बाबर का बहनोई।
५ हिरात के सुल्तान हुसैन का पौत्र जिसे बाबर ने कन्नौज का हाकिम बना दिया था। देखिये तुज़के बाबरी।
६ दोनों ओर की सेना के वे दल जो शत्रुओं के विषय में पता लगाने तथा अन्य प्रबंध हेतु जाते थे।
७ आगरा के पश्चिम में ३७ मील पर भरतपुर में।
८ अर्थात् जिस प्रदेश का राजस्व एक लाख हो वहा १०० घोडे (अश्वारोही) रक्खे जा सकते हैं।
९ सलाहुद्दीन।
१० बाबर नामा के अनुसार बागरी, बेवरिज के 'अकबर नामा" के अनुवाद में नागौर।

१२,००० अश्वारोही, ईदर के बिहारी मल[1] के पास ४००० अश्वारोही, नरपत हाड़ा[2] के पास ७००० अश्वारोही, खच[3] के सतारवी के पास ६,००० अश्वारोही, जरहल के हाकिम तथा मीरथा के हाकिम[4] परमदेव[5] के पास ४००० अश्वारोही, नरसिंह देव चौहान के पास ४००० अश्वारोही, महमूद खा वल्द सुल्तान सिकन्दर के पास यद्यपि विलायत न थी किन्तु अपने पूर्वजो के राज्य को अपने अधिकार मे करने की आशा मे उसने अपने साथ १०,००० अश्वारोही कर लिये थे। इस प्रकार शत्रुओ की पूरी सेना की सख्या लगभग दो लाख एव हजार अश्वारोहियो तक पहुच गई थी।

बाबर की सेना की व्यवस्था

जब शत्रुओ के पहुचने के समाचार सम्मानित कानो तक पहुचे तो उन्होने विजयी सेनाओ को सुव्यवस्थित करना प्रारम्भ कर दिया। पादशाह की खास सवारी मध्य भाग मे थी। उनके दायें (१०७) हाथ की ओर चीन तीमूर सुल्तान, मीर्जा सुलेमान, ख्वाजा दोस्त खावन्द, यूनुस अली, शाह मनसूर बरलास, दरवेश मुहम्मद सारबान, अब्दुल्लाह किताबदार, दोस्त ईशक आका एव अन्य बडे बडे अमीर नियुक्त किये गये। बायें हाथ की ओर अलाउद्दीन बिन सुल्तान बहलोल लोदी, शेख जैन ख्वाफी, अमीर मुहिब अली वल्द निजामुद्दीन अली खलीफा, कूच बेग का भाई तरदी बेग, शेर अफगन वल्द कूच बेग, आराइश खा, ख्वाजा हुसेन एव राज्य के अन्य सेवक तथा उच्च पदाधिकारी थे। दाये बाजू को जहाबानी द्वारा शोभा प्राप्त हुई। जहाबानी के दायी ओर कासिम हुसेन सुल्तान, अहमद यूसुफ ऊगलाकची, हिन्दू बेग कूचीन, खुसरो कूकूल्ताश, किवाम बेग, उर्दू शाह, वली खाजिन, कराकूजी, पीर कुली सीस्तानी, ख्वाजा पहलवान बदख्शी, अब्दुस् शकूर एव अन्य वीरो को नियुक्त किया गया। जहाबानी के बाई ओर मीर हमा, *मुहम्मदी कूकूल्ताश तथा ख्वाजगी असद जामदार नियुक्त हुये।*

दायें बाजू म हिन्दुस्तान के अमीरो मे से खाने खाना, दिलावर खा, मलिक दाद करारानी तथा शेख घूरन सेवा हेतु नियुक्त हुये। आशिष प्राप्त बायें बाजू से सैयिद महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, आदिल सुल्तान बिन महदी सुल्तान, अब्दुल अजीज मीर आखूर, मुहम्मद अली जगजग, कूतलूक कदम करावल, शाह हुसेन बारबेगी, जान बेग अत्का तथा हिन्दुस्तानी अमीरो मे जलाल खा एव कमाल खा पुत्र सुल्तान अलाउद्दीन, अली खा, शेखजादा फर्मूली, निजाम खा ब्याना का, एव अन्य गाजी तथा शूरवीर निष्ठा हेतु कटिबद्ध थे। तूलगमा के लिये तरदी यक्का, बाबा कश्का का भाई मलिक कासिम, तथा मुगूलो का एक बहुत बडा समूह दायी ओर नियुक्त हुआ। मोमिन अत्का, रुस्तम तुर्कमान तथा हजरत (बादशाह) के विश्वासपात्रो का एक समूह दायी ओर नियुक्त हुआ।

रूम[6] के योद्धाओ के नियमानुसार सावधानी हेतु तुफगचियो एव राद अन्दाजो की रक्षा हेतु (जो भाग्यशाली सेना के आगे थे) गाडियो की एक पक्ति को सुव्यवस्थित करके जजीरो से जोड दिया गया। इस पक्ति की सुव्यवस्था हेतु निजामुद्दीन अली खलीफा को नियुक्त किया गया। सुल्तान मुह-

१ बार मल (बाबर नामा)।
२ नरपत हाड़ा (बाबर नामा)।
३ कछ (बाबर नामा)।
४ 'बाबर नामा' में 'जरहल' एवं मेरठ का उल्लेख नहीं।
५ 'बाबर नामा' का 'धर्म देव'।
६ आटोमन।

म्मद बख्शी विजयी सेना को निश्चित स्थानो पर नियुक्त करके बादशाही आदेश, जो दैवी प्रेरणा से सम्बद्ध है, प्राप्त करने के लिये बादशाह की पवित्र सेवा मे खडा था और तवाचियो एव यसावलो[1] को इधर उधर भेजा करता था, और सेना की सुव्यवस्था हेतु शाही आदेश पहुचाया करता था।

युद्ध का वर्णन

जब सेना के उच्च अधिकारी उचित रूप से नियुक्त हो गये तो प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने स्थान (१०८) पर पहुच गया। शाही आदेश हुआ कि कोई भी शाही आज्ञा बिना अपने स्थान से न हिले और बिना हुक्म के युद्ध के लिये पाव आगे न बढाये। एक घडी दिन चढे युद्ध की अग्नि भडक उठी।

शेर

"सेनायें दोनों ओर से बढी,
रात-दिन आपस मे मिल गये।
प्रत्येक दिशा से युद्ध-नाद लगने लगे
घृणा के दो समुद्रो के मुह से फेन निकलने लगे।
हवा के समान घोडों के खुरो की फौलादी नालो ने,
वीरों के रक्त से भूमि को लाल कर दिया
ससार पर अधिकार जमाने वाला अपने विशेष घोडे पर,
अपने चकोर के समान चक्कर लगाने वाले घोडे पर
चक्कर लगा रहा था।"

सेना के दायें तथा बायें बाजुओ मे इतना घोर रक्तपात हुआ कि भूमि काप उठी और ससार वाले चौक उठे। शत्रु की सेना के बायें बाजू ने बढ कर बादशाह की सेना के दाये बाजू की ओर खुसरो कूकूलताश, मलिक कासिम तथा बाबा कश्का पर आक्रमण किया। चीन तीमूर शाही आदेशानुसार उनकी कुमक पर पहुचा और उसने बडी वीरता से युद्ध करके शत्रुओं को हरा कर उनके मध्य भाग के पीछे तक ढकेल दिया। इस पराक्रम हेतु उसे उचित रूप से पुरस्कृत किया गया। मुस्तफा रूमी हज़रत जहाबानी की सेना के मध्य भाग से गाडियों को आगे लाया और तोप एव जर्बजन द्वारा शत्रुओ की सेना को इस प्रकार हटा दिया जिस प्रकार दर्पण से मुर्चा निकल जाता है। उसने शत्रुओं की बहुत बडी सख्या के अस्तित्व को विनाश की मिट्टी म मिलाकर नष्ट भ्रष्ट कर दिया। क्योंकि शत्रुओ की सेना के दल निरन्तर पहुचते जाते थे अत गेती सितानी भी बराबर चुने हुये लोग विजयी सेना की सहायता हेतु भेजते रहते थे।

एक बार कासिम हुसेन सुल्तान, अहमद यूसुफ तथा क्विाम बेग को आदेश हुआ, एक बार हिन्दू बेग कूचीन को नियुक्त किया गया, एक बार मुहम्मदी कूकूलताश तथा ख्वाजगी असद को आदेश हुआ। तदुपरान्त यूनुस अली, शाह मनसूर बरलास, अब्दुल्लाह किताबदार, उनके उपरान्त दोस्त ईशक आका तथा मुहम्मद खलील आख्ता बेगी को सहायतार्थ नियुक्त किया गया। शत्रुओं की सेना के दायें बाजू ने विजयी सेना के बायें बाजू पर निरन्तर आक्रमण किये। हर बार निष्ठावान् गाजी कुछ को विनाश

१ समाचार पहुंचाने वाला एवं सेवक।

के बाणो की वर्षा से भूमि पर गिरा देते थे और कुछ को कटार तथा तलवार की विद्युत द्वारा धूल मे मिला देते थे। मोमिन अत्का तथा रुस्तम तुर्कमान शाही आदेशानुसार अधकार के नियमा का पालन करने वाली सेना के पीछे पहुच गये। मुल्ला महमूद तथा अली अत्का बाशलीक, ख्वाजा खलीफा के सेवक उनकी कुमक को पहुच गये। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, आदिल सुल्तान, अब्दुल अजीज मीर आख़ूर, कूत लूक कदम करावल, मुहम्मद अली जग-जग, शाह हुसेन बारबेगी मुगूल गानजी ने दृढतापूर्वक युद्ध किया। ख्वाजा हुसेन दीवान वालों के समूह के साथ उनकी सहायता हेतु पहुचा। विजयी सेना के समस्त वीरो ने जो आत्म बलिदान हेतु कटिबद्ध थे अपनी सफलता की पताका को शत्रु से प्रतिकार हेतु बलन्द किया और (१०९) विरोधियो की आशा के स्रोत को असफलता की मिट्टी मे पाट दिया।

शेर

'भाला चलाने वालों की गिरहो मे गिरहें[1] मिल गईं
दृढ शूर-वीरो की पीठ से पीठ मिल गई,
हर दिशा से चट्टानो को वेध डालने वाले भालो ने
काटों से रक्षा के मार्ग बन्द कर दिये।
तलवारो की चमक ने
लोगो की आखों का प्रकाश छीन लिया।
भूमि की मिट्टी ने चन्द्रमा को टोपी पहना दी,
और गले की सास रोक दी।"

राणा सांगा की पराजय

जब शत्रु की सेना के अत्यधिक होने के कारण युद्ध मे अधिक समय लग गया तो हज़रत बादशाह ने अपने विशेष सेवको को, जो गाड़िया के पीछे ज़जीर मे बधे हुये सिंहो के समान थे, आदेश दिया कि दायें, बायें मध्य भाग के दायें एव बायें ओर से बाहर निकल कर, तुफ़गचियो के लिये स्थान छोड कर, दोनो ओर से युद्ध प्रारम्भ कर दें। शाही आदेशानुसार वीर योद्धा उन सिंहों की भाति जो अपनी ज़जीर तोड कर निकले हो स्वतन्त्र होकर वीरता एव पौरुष का प्रदर्शन करने लगे। तलवारों के चलाने की "चकाचक" एव बाणो के चलाने की "शपाशाप"[2] आकाश तक पहुचने लगी। अपने युग का अद्वितीय अली कुली अपने सहायकों सहित मध्य भाग के आगे खडा था और पत्थर ज़र्बज़न एव तुफ़ग चलाने मे अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रहा था। इसी बीच मे शाही आदेश हुआ कि मध्य भाग की गाड़ियों को आगे बढाया जाये। हज़रत (बादशाह) ने स्वय उचित सकल्प एव उच्च साहस से शत्रु की सेना की ओर प्रस्थान किया। शाही सेना इधर उधर मे यह देख कर समुद्र की लहरो की भाति बढ गई और भाग्यशाली वीरो ने एक साथ शत्रुओं की सेना की पक्तियों पर आक्रमण कर दिया। दिन के अन्तिम पहर मे युद्ध की अग्नि इस प्रकार भडकी कि विजयी सेना के दायें एव बायें बाजू ने अभागी सेना के बायें एव दायें बाजू को ढकेल कर शत्रुओ के अधकारमय मध्य भाग पर पहुच कर सब को एक स्थान पर मिला दिया। शत्रुओ ने वीरता की चोट के आतक से अपने प्राणो मे हाथ धोकर एव जीवन से निराश

१ वे एक दूसरे से गुथ गये।
२ मूल में प्रयुक्त।

होकर हज़रत (बादशाह) की सेना के दायें एव बायें बाजू पर आक्रमण कर दिया और अपने आप को अत्यधिक निकट पहुचा दिया। उत्कृष्ट सम्मान वाले योद्धा अपने उच्च साहस से दृढ होकर घोर युद्ध करने लगे और दैवी सहायता से शत्रुओ का ठहरना सम्भव न हो सका। यहा तक कि वे अभागे तथा फूटी तकदीर वाले, दृढता की लगाम को उपाय के हाथो से छोड कर भाग खडे हुये और पौरुष की परीक्षा के इस युद्ध से अपने आधे प्राण सुरक्षित ले जाने को बहुत बडी बात समझने लगे। विजय एव सफलता का शीतल पवन भाग्यशाली पताकाओ पर चलने लगा और जीत एव सहायता की कलिया सतोष एव (११०) प्रयत्न की शाखाओ से खिलने लगी। शत्रुओ की सेना की बहुत बडी सख्या रक्त पीने वाली तलवार एव बाज के समान उडने वाले बाणो का भोजन बन गई। कुछ आत्म हत्या करने वालो ने जो हत्या से बच गये थे, अपने साहस के मुख पर दुर्भाग्य की धूल मल कर अपने अस्तित्व के खर-पतवार को पराजय की झाडू द्वारा रण-क्षेत्र मे साफ करा दिया और व्याकुल होकर बालू के कण के समान छिन्न भिन्न हो गये। हसन खा मेवाती तुफग द्वारा विनाश की धूल मे मिल गया। रावल उदय सिंह, मानिक चन्द्र चौहान राय चन्द्रभान दलपत राय, गगू, कर्म सिंह दूगर सी, तथा शत्रुओ के बहुत बडे से बडे सरदार विनाश के मार्ग की धूल बन गये। कई हज़ार घायल भाग्यशाली सेना के घोडो द्वारा रौद डाले गये। मुहम्मदी कूकूल्ताश, अब्दुल अज़ीज़ मीर आखूर, अली खा तथा कुछ अन्य लोगो को राणा सागा का पीछा करने के लिये नियुक्त किया गया।

शत्रुओ का पीछा न करना

गेती सितानी फिरदौस मकानी ने सफलता प्राप्त करके इस महान् विजय एव उत्कृष्ट देन के लिये ईश्वर के प्रति, जिसने बाह्य एव आतरिक सफलता एव असफलता भाग्य मे लिख दी है, कृतज्ञता प्रकट करके स्वय रण-क्षेत्र से एक कुरोह तक शत्रुओं का पीछा किया यहा तक कि रात हो गई। शत्रुओ के लिये वह बडे दुर्भाग्य का दिन था, और मित्रो के लिये वह बडी प्रसन्नता की रात्रि थी। शत्रुओ की ओर से निश्चिन्त होकर विजय का डका बजाते हुये वे लौट आय। रात्रि की कुछ घडी व्यतीत हो जाने के उपरान्त वे शिविर मे पहुच गये।

राणा सागा का बच कर पलायन

क्योकि ईश्वर ने भाग्य मे यह न लिखा था कि वह अभागा बन्दी बनाया जाये अत उन लोगो द्वारा, जो भागने वालो का पीछा करने के लिये नियुक्त हुये थे, उचित प्रयत्न न हो सका। हज़रत (बादशाह) कहा करते थे कि "वह बड़ा नाज़ुक समय था। किसी अन्य पर कार्य न छोडना चाहिये था, अपितु मुझे स्वय जाना चाहिये था।"

विजय की तारीख

शेख ज़ैन सद्र ने जो बहुत बडा विद्वान् था इस घटना की तिथि "फतहे बादशाहे इस्लाम"[१] के शब्दो से निकाली। मीर गेसू ने भी काबुल से यह तिथि लिख कर भेजी थी। हज़रत बादशाह 'वाकेआत' मे लिखते है कि पिछली विजयो मे भी इसी प्रकार की एक ही तारीख

१ इस्लाम के बादशाह की विजय।

दीवालपुर की विजय के समय हुई थी और 'वस्ते शहरे रबी-उल-अव्वल'[1] दो व्यक्तियों ने तारीख निकाली थी।

बोल पर आक्रमण

जब विश्व-विजय करने वाले साहस को इतनी महान् विजय प्राप्त हो गई तो सागा का पीछा करना एव उसके राज्य की ओर प्रस्थान करना स्थगित करके उन्होंने मेवात विजय करने का सकल्प किया। मुहम्मद अली जगजग, शेख घूरन तथा अब्दुल मुलूक कूरची को एक बहुत बडी सेना सहित (१११) इलयास खा पर, जिसने दोआब मे विद्रोह करके कोल नामक कस्बे को अपने अधिकार मे कर लिया था और वहा के हाकिम कचक अली को बन्दी बना लिया था, आक्रमण करने के लिये भेजा। जब विजयी सेना निकट पहुची तो वह युद्ध की शक्ति न देखकर भाग खडा हुआ। जब उत्कृष्ट सेना राजधानी आगरा पहुची, तो उस विद्रोही को बन्दी बना कर सम्मानित दरबार मे उपस्थित किया गया। उसकी हत्या करा दी गई।

मेवात पर आक्रमण

क्योकि हज़रत (बादशाह) ने मेवात की विजय का सकल्प कर लिया था अत उन्होंने उस ओर प्रस्थान किया। उन्होंने बुधवार ६ रजब (८ अप्रैल १५२७ ई०) को अलवर के उपान्त मे, जो मेवात के हाकिम की राजधानी थी, पडाव किया। अलवर के खज़ानो को जहाबानी को इनाम मे प्रदान कर दिया गया। जब यह राज्य भी शाही राज्य मे सम्मिलित हो गया तो बादशाह ने पूर्व की ओर के राज्यो को अधिकार मे करने के लिये राजधानी की ओर प्रस्थान किया।

हज़रत जहांबानी को काबुल एवं बदख़्शां जाने की अनुमति और हज़रत गेती सितानी की संसार का भ्रमण करने वाली सवारी का राजधानी की ओर प्रस्थान

क्योकि काबुल एव बदख्शा के प्रदेशो का सुप्रबन्ध तथा दृढ रखना उत्कृष्ट सल्तनत के लिये आवश्यक था और ९१७ हि० (१५११-१२ ई०) से जब से कि खान मीर्ज़ा मृत्यु को प्राप्त हुआ गेती सितानी ने बदख्शा को जहाबानी को प्रदान कर दिया था अत [2] नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू को इस वर्ष की ९ रजब (११ अप्रैल १५२७ ई०) को शुभ मुहूर्त मे अलवर से ३ कुरोह से उन प्रदेशों की ओर भेज दिया गया।

बिबन के विरुद्ध सेनाओ का भेजा जाना

उसी समय बादशाह ने बिबन अफगान के विनाश हेतु, जिसने राणा के विद्रोह के समय लखनऊ का अवरोध करके उसे अपने अधिकार मे कर लिया था, कासिम हुसेन सुल्तान, मलिक कासिम बाबा

१ रबी उल अव्वल मास का मध्य अथवा ६३० हि०।
२ हुमायूं के सम्मान हेतु कुछ शब्दों का उल्लेख।

कच्चा, अबुल मुहम्मद नेजा बाज, तथा हुसेन खा और हिन्दुस्तान के अमीरो मे से अली खा फर्मुली, मलिक दाद करारानी, तातार खा और खाने जहा, को मुहम्मद सुल्तान मीर्जा के साथ करके भेजा। वह शाही सेनाओं के पहुचने के समाचार पाते ही अपनी धन-सम्पत्ति छोड कर अपने प्राण लेकर भाग गया।

कोल तथा सम्भल की सैर

हजरत (बादशाह) ने इस वर्ष के अन्त मे फतहपुर एव बारी की सैर करके अपने चरणो के प्रकाश से राजधानी आगरा को आकाश तुल्य बना दिया[१]। ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०) मे वे कोल की सैर के लिये प्रस्थान करके, वहा से सम्बल को शिकार हेतु रवाना हुये और उस रमणीक पर्वतीय प्रदेश की सैर करके राजधानी वापस आ गये।

२८ सफर (२३ नवम्बर १५२७ ई०) फख्र जहा बेगम तथा खदीजा सुल्तान बगम काबुल से तशरीफ लाई और बादशाह ने नौका पर सवार होकर उनका स्वागत किया और उनके प्रति नाना प्रकार की कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की।

चन्देरी की विजय

क्योंकि यह समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहते थे कि चन्देरी का हाकिम मेदनी राय सेना एकत्र कर रहा है और राणा भी युद्ध की तैयारी एव अपने विनाश की सामग्री एकत्र करने मे सलग्न है, अत एक शुभ मुहूर्त मे वे चन्देरी की ओर रवाना हुये। ६-७ हजार प्राणो की बलि देने वाले वीर योद्धा चीन तीमूर सुल्तान के साथ काल्पी के क्षेत्र से चन्देरी पर आक्रमण हेतु भेजे गये। बुधवार ७ जमादि-उल-अव्वल (२९ जनवरी १५२८ ई०) को प्रात काल एक महान् विजय प्राप्त हो गई। ईश्वर की कृपा से "फतहे दारुल हर्ब[२]" इस घटना की तारीख निकली। इस विजय के उपरान्त चन्देरी सुल्तान नासिरुद्दीन के पौत्र अहमद शाह को प्रदान कर दी गई। तदुपरान्त हजरत (बादशाह) वहा से रविवार ११ जमादि-उल-अव्वल (२ फरवरी १५२८ ई०) को लौट गये।

राणा का स्वप्न से भयभीत होकर भागना

कुछ विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि शाही पताकाओं के चन्देरी की ओर प्रस्थान करने के पूर्व राणा[३] युद्ध हेतु अग्रसर हो रहा था। जब वह एरिज[४] पहुचा तो गेती सितानी फिरदौस मकानी के आफाक नामक दास ने उसे दृढ बना लिया। उस अभागे ने पहुच कर उसका अवरोध कर लिया। एक रात्रि मे उसके एक बुजुर्ग ने बडे भयकर रूप मे स्वप्न मे प्रकट होकर उसे बहुत फटकारा। वह उस भय एव चिन्ता के कारण जाग उठा और उसका शरीर कापने लगा और उसे ज्वर चढ आया। वह उसी दशा मे लौट गया। मार्ग मे मृत्यु रूपी सेना ने उस पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया।

बाबर का पूर्व की ओर प्रस्थान

विजयी सेना बुरहानपुर नदी को पार कर रही थी कि शाही बाना तक यह समाचार पहुचे कि

१ आगरा पहुच गये।
२ शत्रु के प्रदेश का युद्ध।
३ राणा सागा।
४ ग्वालियर में।

दीवालपुर की विजय के समय हुई थी और "वस्ते शहरे रबी-उल-अव्वल"[1] दो व्यक्तियों ने तारीख निकाली थी।

कोल पर आक्रमण

जब विश्व-विजय करने वाले साहस को इतनी महान् विजय प्राप्त हो गई तो सांगा का पीछा करना एव उसके राज्य की ओर प्रस्थान करना स्थगित करके उन्होने मेवात विजय करने का सकल्प किया। मुहम्मद अली जगजग, शेख घूरन तथा अब्दुल मुलूक कूरची को एक बहुत बडी सेना सहित (१११) इलयास खा पर, जिसने दोआब मे विद्रोह करके कोल नामक कस्बे को अपने अधिकार मे कर लिया था और वहा के हाकिम कचक अली को बन्दी बना लिया था, आक्रमण करने के लिये भेजा। जब विजयी सेना निकट पहुची तो वह युद्ध की शक्ति न देखकर भाग खडा हुआ। जब उत्कृष्ट सेना राजधानी आगरा पहुंची, तो उस विद्रोही को बन्दी बना कर सम्मानित दरबार मे उपस्थित किया गया। उसकी हत्या करा दी गई।

मेवात पर आक्रमण

क्योकि हजरत (बादशाह) ने मेवात की विजय का सकल्प कर लिया था अत उन्होने उस ओर प्रस्थान किया। उन्होने बुधवार ६ रजब (८ अप्रैल १५२७ ई०) को अलवर के उपान्त मे, जो मेवात के हाकिम की राजधानी थी, पडाव किया। अलवर के खजानो को जहाबानी को इनाम मे प्रदान कर दिया गया। जब यह राज्य भी शाही राज्य मे सम्मिलित हो गया तो बादशाह ने पूर्व की ओर के राज्यो को अधिकार मे करने के लिये राजधानी की ओर प्रस्थान किया।

हज़रत जहांबानी को काबुल एवं बदख्शां जाने की अनुमति और हज़रत गेती सितानी की संसार का भ्रमण करने वाली सवारी का राजधानी की ओर प्रस्थान

क्योंकि काबुल एव बदख्शा के प्रदेशो का सुप्रबन्ध तथा दृढ रखना उत्कृष्ट सल्तनत के लिये आवश्यक था और ९१७ हि० (१५११-१२ ई०) से जब से कि खान मीर्जा मृत्यु को प्राप्त हुआ गेती सितानी ने बदख्शा को जहाबानी को प्रदान कर दिया था अत [2] नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू को इस वर्ष की ९ रजब (११ अप्रैल १५२७ ई०) को शुभ मुहूर्त मे अलवर से ३ कुरोह से उन प्रदेशों की ओर भेज दिया गया।

बिबन के विरुद्ध सेनाओ का भेजा जाना

उसी समय बादशाह ने बिबन अफगान के विनाश हेतु, जिसने राणा के विद्रोह के समय लखनऊ का अवरोध करके उसे अपने अधिकार मे कर लिया था, कासिम हुसेन सुल्तान, मलिक कासिम बाबा

१ रबी उल-अव्वल मास का मध्य अथवा ९३० हि०।
२ हुमायूं के सम्मान हेतु कुछ शब्दों का उल्लेख।

कश्का, अबुल मुहम्मद नेजा बाज, तथा हुसैन खा और हिन्दुस्तान के अमीरों म से अली खा फर्मुली मलिक दाद करारानी, तातार खा और खाने जहा, को मुहम्मद सुल्तान मीर्जा के साथ करके भेजा। वह शाही सेनाओं के पहुचने के समाचार पाते ही अपनी धन-सम्पत्ति छोड कर अपने प्राण लेकर भाग गया।

कोल तथा सम्भल की सैर

हज़रत (बादशाह्) ने इस वर्ष के अन्त मे फतहपुर एव बारी की सैर करके अपने चरणो के प्रकाश से राजधानी आगरा को आकाश तुल्य बना दिया[1]। ९३४ हि० (१५२७-२८ ई०) मे वे कोल की सैर के लिये प्रस्थान करके, वहा से सम्बल को शिकार हेतु रवाना हुये और उस रमणीक पर्वतीय प्रदेश की सैर करके राजधानी वापस आ गये।

२८ सफर (२३ नवम्बर १५२७ ई०) फख्र जहा बेगम तथा खदीजा सुल्तान बेगम काबुल मे तशरीफ लाईं और बादशाह ने नौका पर सवार होकर उनका स्वागत किया और उनके प्रति नाना प्रकार की कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की।

चन्देरी की विजय

क्योंकि यह समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहते थे कि चन्देरी का हाकिम मेदनी राय सेना एकत्र कर रहा है और राणा भी युद्ध की तैयारी एव अपने विनाश की सामग्री एकत्र करने मे सलग्न है, अत एक शुभ मुहूर्त मे वे चन्देरी की ओर रवाना हुये। ६ ७ हज़ार प्राणों की बलि देने वाले वीर योद्धा चीन तीमूर सुल्तान के साथ काल्पी के क्षेत्र से चन्देरी पर आक्रमण हेतु भेजे गये। बुधवार ७ जमादि-उल-अव्वल (२९ जनवरी १५२८ ई०) को प्रात काल एक महान् विजय प्राप्त हो गई। ईश्वर की कृपा से 'फतहे दारुल हर्ब[2]' इस घटना की तारीख निकली। इस विजय के उपरान्त चन्देरी सुल्तान नासिरुद्दीन के पौत्र अहमद शाह को प्रदान कर दी गई। तदुपरान्त हज़रत (बादशाह) वहा से रविवार ११ जमादि-उल-अव्वल (२ फरवरी १५२८ ई०) को लौट गये।

राणा का स्वप्न से भयभीत होकर भागना

कुछ विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि शाही पताकाओं के चन्देरी की ओर प्रस्थान करने के पूर्व राणा[3] युद्ध हेतु अग्रसर हो रहा था। जब वह एरिज[4] पहुचा तो गेती सितानी फिरदौस मकानी के आफाक नामक दास ने उसे दृढ बना लिया। उस अभागे ने पहुच कर उसका अवरोध कर लिया। एक रात्रि मे उसके एक बुजुर्ग ने बडे भयकर रूप मे स्वप्न मे प्रकट होकर उसे बहुत फटकारा। वह उस भय एव चिन्ता के कारण जाग उठा और उसका शरीर कापने लगा और उसे ज्वर चढ आया। वह उसी दशा म लौट गया। मार्ग मे मृत्यु रूपी सेना ने उस पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया।

बाबर का पूर्व की ओर प्रस्थान

विजयी सेना बुरहानपुर नदी को पार कर रही थी कि शाही थाना तक यह समाचार पहुचे कि

१ आगरा पहुच गये।
२ शत्रु के प्रदेश का युद्ध।
३ राणा सागा।
४ ग्वालियर में।

मारूफ, बिबन एव बायज़ीद ने सगठित होकर अपनी शक्ति बढा ली है, और शाही सेवक कन्नौज छोड़-कर रापरी पहुच चुके है। उन्होने[1] शम्साबाद के किले को अबुल मुहम्मद नेजादार से जबरदस्ती छीन लिया है। इस कारण उन्होंने सकल्प की लगाम उस ओर मोडी और कुछ अनुभवी वीरो को पहले से भेज दिया। जवा गीरी[2] सैनिको को देखते ही, मारुफ का पुत्र घबडा कर कन्नौज से भाग खडा हुआ। बिबन, बायजीद एव मारूफ शाही सवारी के प्रस्थान के समाचार पाकर गगा पार करके कन्नौज के सामने गगा नदी के पूर्व मे घाट रोकने के लिये ठहर गये। सम्मानित पताकायें निरन्तर प्रस्थान करती हुई वहा पहुच गईं।

अस्करी का काबुल से आगमन

शुक्रवार ३ मुहर्रम ९३५ हि० (१८ सितम्बर १५२८ ई०) को मीर्ज़ा अस्करी ने, जिसे मुल्तान के कार्यों के लिये चन्देरी के अभियान के पूर्व काबुल से बुलवाया गया था, सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया।

ग्वालियर की सैर तथा वहाँ से वापसी

शुक्रवार आशूरे[3] के दिन (२५ सितम्बर १५२८ ई०) ग्वालियर मे सम्मानित शाही शिविर लगे। प्रात काल बादशाह ने राजा बिक्रमाजीत[4] एव मान सिंह के भवनो के दर्शन किये। तदुपरान्त वे राजधानी की ओर लौट गये। बृहस्पतिवार २५ मुहर्रम को राजधानी शुभ चरणो के पहुच जाने के कारण सम्मानित हुई।

हुमायू के पुत्र का जन्म

सोमवार १० रबी-उल-अव्वल (२२ नवम्बर १५२८ ई०) को जहाबानी के दूत बदख्शा से आये और सुखद समाचारो से परिपूर्ण प्रार्थनापत्र लाये। उनमे लिखा था कि यादगार तगाई की पवित्र पुत्री द्वारा हज़रत जहाबानी के घर मे एक पुत्र का जन्म हुआ है और उसका नाम उन्होंने "अल अमान[5]" रक्खा है। क्योकि सर्व साधारण को इस शब्द द्वारा अनुचित वाक्य का भ्रम हो जाता है अत वह उन्हे अच्छा न लगा। इस कारण कि यह नाम बादशाह की पवित्र इच्छा के विरुद्ध रक्खा गया था अत उन्हे यह पसन्द न आया। क्योकि पिता की इच्छाओं का पालन करना और ऐसे पिता तथा बादशाह की इच्छा का पालन बाह्य एव आतरिक सौभाग्य, एव असतुष्ट होना बाह्य एव आतरिक बुराइयो का कारण है अत राज्य के उस नये फल का इस लोक से प्रस्थान कर जाना, ससार को समझने वाले इसी खिन्नता का कारण समझें तो कोई आश्चर्य न होगा।

मीर्ज़ा अस्करी का पूर्व की ओर भेजा जाना

जब उत्कृष्ट पताकायें राजधानी मे पहुच गईं तो सम्मानित मुल्तानो एव हिन्दुस्तानी तथा तुर्क

१ शत्रुओं ने।
२ वे सैनिक जो सेना के आगे आगे शत्रुओं के विषय में पता लगाने जाते हैं।
३ १० मुहर्रम।
४ विक्रमादित्य।
५ शान्ति अथवा रक्षा।

अमीरो को एकत्र करके एक भव्य जश्न का आयोजन किया गया और पूर्व के देश एव वहा के विद्रोह की अग्नि को शान्त करने के विषय मे परामर्श किया गया। अत्यधिक विचार विनिमय के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि शाही पताकाओ के प्रस्थान के पूर्व मीर्ज़ा अस्करी एक भारी सेना लेकर पूर्व का ओर प्रस्थान करें। गगा नदी के उस पार के अमीर अपनी सेनाओ सहित इस सेवा के विषय मे घोर प्रयत्न करें।

बाबर का पूर्व की ओर प्रस्थान करने का निश्चय

इस निर्णयानुसार सोमवार ७ रबी-उल-आखिर (२० नवम्बर १५२८ ई०) को मीर्ज़ा अस्करी ने आज्ञा लेकर प्रस्थान किया। हजरत (बादशाह) स्वय सैर व शिकार करते हुए धौलपुर की ओर रवाना हुये। जमादि उल-अव्वल (१३ जनवरी १५२९ ई०) को समाचार प्राप्त हुये कि सिकन्दर के पुत्र महमूद[1] ने बिहार को अपने अधिकार मे करके विद्रोह कर दिया है। शिकार से वापस होकर उन्होने आगरा मे पड़ाव किया और यह निश्चय हुआ कि वे स्वय पूर्व की ओर के प्रदेशों के अभियान हेतु प्रस्थान करेंगे।

बदख्शा के समाचार

इसी बीच मे बदख्शा से दूत ने आकर यह समाचार पहुचाये कि जहाबानी उस ओर की सेना को एकत्र करके और सुल्तान वैस को अपने साथ लेकर ४० ५० हज़ार आदमियो सहित समरकन्द पर आक्रमण करने का विचार कर रहे हैं और सन्धि का प्रस्ताव भी बीच मे है। तत्काल उन्हें यह आदेश भेजा गया कि यदि बात सधि की सीमा से आगे न बढ़ गयी हो तो हिन्दुस्तान की पूर्ण विजय तक एक प्रकार की सधि[2] कर ली जाये। फरमान मे हिंदाल मीर्जा को बुलवाने और काबुल को खालसा बनाने का भी उल्लेख था और लिखा था कि, "पवित्र एव महान् ईश्वर की कृपा से हिन्दुस्तान के कार्यो को, जो पूरे होने वाले ही हैं, पूर्णरूप से सम्पन्न करके यहा निष्ठावान् एव हितैषी अधिकारियों को नियुक्त करके पैतृक राज्य की ओर रवाना हो जाऊगा। उस क्षेत्र के समस्त दासो को चाहिये कि वे उस अभियान की उचित रूप से तैयारी करके शाही सवारी की प्रतीक्षा करते रहें।"

बाबर का पूर्व की ओर प्रस्थान

बृहस्पतिवार १७ जमादि-उल-अव्वल (२७ जनवरी १५२९ ई०) को हजरत (बादशाह) (११४) स्वय यमुना नदी पार करके पूर्व की ओर रवाना हुये। उस दिन बगाले के हाकिम नुसरत शाह[3] के दूतों ने उचित उपहार प्रस्तुत करके (उसकी ओर से) दासता प्रदर्शित की। सोमवार १९ जमादि-उल-आखिर (२८ फरवरी १५२९ ई०) को गगा तट पर मीर्ज़ा अस्करी ने सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। आदेश हुआ कि मीर्ज़ा अपनी सेना सहित नदी के उस पार पड़ाव की ओर प्रस्थान करें।

१ सुल्तान इब्राहीम लोदी का भाई।
२ कुछ दिनों के लिये टालने को।
३ सुल्तान अलाउद्दीन हुसन शाह। वह नसीब शाह भी कहलाता था। उसने लगभग १५१८ से १५३२ ई० तक राज्य किया।

मारूफ, बिबन एव बायज़ीद ने सगठित होकर अपनी शक्ति बढा ली है, और शाही सेवक कन्नौज छोड़-कर रापरी पहुच चुके है। उन्होंने[1] शम्साबाद के किले को अबुल मुहम्मद नेज़ादार से जबरदस्ती छीन लिया है। इस कारण उन्होने सकल्प की लगाम उस ओर मोडी और कुछ अनुभवी वीरों को पहले से भेज दिया। जवा गीरी[2] सैनिको को देखते ही, मारुफ का पुत्र घबडा कर कन्नौज से भाग खडा हुआ। बिबन, बायज़ीद एव मारूफ शाही सवारी के प्रस्थान के समाचार पाकर गगा पार करके कन्नौज के सामने गंगा नदी के पूर्व मे घाट रोकने के लिये ठहर गये। सम्मानित पताकायें निरन्तर प्रस्थान करती हुई वहा पहुच गईं।

अस्करी का काबुल से आगमन

शुक्रवार ३ मुहर्रम ९३५ हि० (१८ सितम्बर १५२८ ई०) को मीर्जा अस्करी ने, जिसे मुल्तान के कार्यों के लिये चन्देरी के अभियान के पूर्व काबुल से बुलवाया गया था, सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया।

ग्वालियर की सैर तथा वहाँ से वापसी

शुक्रवार आशूरे[3] के दिन (२५ सितम्बर १५२८ ई०) ग्वालियर मे सम्मानित शाही शिविर लगे। प्रात काल बादशाह ने राजा बिक्रमाजीत[4] एव मान सिंह के भवनों के दर्शन किये। तदुपरान्त वे राजधानी की ओर लौट गये। बृहस्पतिवार २५ मुहर्रम को राजधानी शुभ चरणो के पहुच जाने के कारण सम्मानित हुई।

हुमायू के पुत्र का जन्म

सोमवार १० रबी-उल-अव्वल (२२ नवम्बर १५२८ ई०) को जहाबानी के दूत बदख्शा से आये और सुखद समाचारों से परिपूर्ण प्रार्थनापत्र लाये। उनमे लिखा था कि यादगार तगाई की पवित्र पुत्री द्वारा हज़रत जहाबानी के घर मे एक पुत्र का जन्म हुआ है और उसका नाम उन्होंने "अल अमान"[5] रक्खा है। क्योंकि सर्व साधारण को इस शब्द द्वारा अनुचित वाक्य का भ्रम हो जाता है अत वह उन्हे अच्छा न लगा। इस कारण कि यह नाम बादशाह की पवित्र इच्छा के विरुद्ध रक्खा गया था अत उन्हें यह पसन्द न आया। क्योकि पिता की इच्छाओं का पालन करना और ऐसे पिता तथा बादशाह की इच्छा का पालन बाह्य एव आतरिक सौभाग्य, एव असतुष्ट होना बाह्य एव आतरिक बुराइयों का कारण है अत राज्य के उस नये फल का इस लोक से प्रस्थान कर जाना, ससार को समझने वाले इसी खिन्नता का कारण समझें तो कोई आश्चर्य न होगा।

मीर्ज़ा अस्करी का पूर्व की ओर भेजा जाना

जब उत्कृष्ट पताकायें राजधानी मे पहुच गईं तो सम्मानित सुल्तानों एव हिन्दुस्तानी तथा तुर्क

१ शत्रुओं ने।
२ वे सैनिक जो सेना के आगे आगे शत्रुओं के विषय में पता लगाने जाते हैं।
३ १० मुहर्रम।
४ विक्रमादित्य।
५ शान्ति अथवा रक्षा।

अमीरो को एकत्र करके एक भव्य जश्न का आयोजन किया गया और पूर्व के देशों एवं वहा के विद्रोह की अग्नि को शान्त करने के विषय मे परामर्श किया गया। अत्यधिक विचार विनिमय के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि शाही पताकाओ के प्रस्थान के पूर्व मीर्जा अस्करी एक भारी सेना लेकर पूर्व को ओर प्रस्थान करें। गगा नदी के उस पार के अमीर अपनी सेनाओ सहित इस सेवा के विषय मे घोर प्रयत्न करें।

बाबर का पूर्व की ओर प्रस्थान करने का निश्चय

इस निर्णयानुसार सोमवार ७ रबी उल-आखिर (२० नवम्बर १५२८ ई०) को मीर्जा अस्करी ने आज्ञा लेकर प्रस्थान किया। हजरत (बादशाह) स्वय सैर व शिकार करते हुए धौलपुर की ओर रवाना हुये। जमादि उल-अव्वल (१३ जनवरी १५२९ ई०) को समाचार प्राप्त हुये कि सिकन्दर के पुत्र महमूद[1] ने बिहार को अपने अधिकार मे करके विद्रोह कर दिया है। शिकार से वापस होकर उन्होंने आगरा मे पडाव किया और यह निश्चय हुआ कि वे स्वय पूर्व की ओर के प्रदेशों के अभियान हेतु प्रस्थान करेंगे।

बदख्शा के समाचार

इसी बीच मे बदख्शा से दूता ने आकर यह समाचार पहुचाये कि जहाबानी उस ओर की सेना का एकत्र करके और सुल्तान वैस को अपने साथ लेकर ४०-५० हज़ार आदमियों सहित समरकन्द पर आक्रमण करने का विचार कर रहे है और सन्धि का प्रस्ताव भी बीच मे है। तत्काल उन्हें यह आदेश भेजा गया कि यदि बात सधि की सीमा से आगे न बढ गयी हो तो हिन्दुस्तान की पूर्ण विजय तक एक प्रकार की सधि[2] कर ली जाये। फरमान मे हिन्दाल मीर्जा को बुलवाने और काबुल को खालसा बनाने का भी उल्लेख था और लिखा था कि 'पवित्र एव महान् ईश्वर की कृपा से हिन्दुस्तान के कार्यों को, जो पूरे होने वाले ही हैं, पूर्णरूप से सम्पन्न करके यहा निष्ठावान् एव हितैषी अधिकारियों को नियुक्त करके पैतृक राज्य की ओर रवाना हो जाऊगा। उस क्षेत्र के समस्त दासो को चाहिये कि वे उस अभियान की उचित रूप से तैयारी करके शाही सवारी की प्रतीक्षा करते रहें।"

बाबर का पूर्व की ओर प्रस्थान

बृहस्पतिवार १७ जमादि उल-अव्वल (२७ जनवरी १५२९ ई०) को हजरत (बादशाह) (११४) स्वय यमुना नदी पार करके पूर्व की ओर रवाना हुये। उस दिन बगाले के हाकिम नुसरत शाह[3] के दूता ने उचित उपहार प्रस्तुत करके (उसकी ओर से) दासता प्रदर्शित की। सोमवार १९ जमादि उल-आखिर (२८ फरवरी १५२९ ई०) को गगा तट पर मीर्जा अस्करी ने सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। आदेश हुआ कि मीर्जा अपनी सेना सहित नदी के उस पार पडाव की ओर प्रस्थान करें।

१ सुल्तान इब्राहीम लोदी का भाई।
२ कुछ दिनों के लिये टालने को।
३ सुल्तान अलाउद्दीन हुसैन शाह। वह नसीब शाह भी कहलाता था। उसने लगभग १५१८ से १५३० ई० तक राज्य किया।

ड़ा[1] के समीप सुल्तान सिकन्दर के पुत्र महमूद खा के नष्ट-भ्रष्ट होने के समाचार प्राप्त हुये। हज़रत (बादशाह) ने गाजीपुर की सीमा तक पहुच कर भोजपुर एव बिया[2] में पडाव किया। उस स्थान पर बिहार की विलायत मीर्जा मुहम्मद जमान को प्रदान की गई।

सरवार की ओर प्रस्थान

हज़रत (बादशाह) ने सोमवार[3] ५ रमजान (१३ मई १५२९ ई०) को बगाल एव बिहार से निश्चिन्त होकर बिबन एव बायजीद के विद्रोह को शान्त करने के लिये सरवार[4] की ओर प्रस्थान किया। शत्रुओं ने बहुत बडी सेना सहित युद्ध किया किन्तु वे पराजित हो गये। हज़रत (बादशाह) ने खरीद एव सिकन्दरपुर का भ्रमण करके और उस ओर से निश्चिन्त होकर शीघ्रातिशीघ्र राजधानी आगरा की ओर प्रस्थान किया। अल्प समय में सौभाग्य की वह राजधानी शाही चरणो के प्रकाश से शोभायमान हो गई।

हुमायूं का हिन्दुस्तान में आगमन

जहाबानी जन्नत आशियानी एक वर्ष तक बदख्शा में प्रसन्नतापूर्वक निवास करते रहे। अचानक गेती सितानी की सम्मानित गोष्ठी के शौक मे, जो बाह्य एव आतरिक कमालों का एक ससार थी, धैर्य तथा सतोष को त्याग कर बदख्शा मीर्जा सुल्तान वैस मीर्जा सुलैमान के सुपुर्द करके सौभाग्य के उस किबला एव अभिलाषाओं के उस काबा की ओर रवाना हुये। एक दिन मे वे काबुल पहुच गये। मीर्जा कामरान कन्धार से काबुल आये हुये थे। ईदगाह में उनकी भेट की प्रसन्नता का सौभाग्य प्राप्त किया। (कामरान ने) हैरान होकर उनके आगमन का कारण पूछा। उत्तर मिला कि "(बादशाह के) भेट की इच्छा मुझे यहा से खींचे लिये जा रही है।" उन्होने मीर्जा हिन्दाल को आदेश दिया कि वे काबुल व बदख्शा की रक्षा हेतु प्रस्थान करें। और वे स्वय यहा से शीघ्र आगरा पहुच गये।

हुमायूं का आगरा पहुँचना

सबसे अधिक विचित्र बात तो यह है कि गेती सितानी उनकी माता के साथ सिंहासन पर बैठे हुये उनके विषय मे वार्तालाप कर रहे थे[5] कि अचानक चमकता हुआ सितारा बदख्शा के आकाश से उदय हुआ और उसने दिलो को बागबाग एव नत्रो को चमक प्रदान की। यह निश्चय है कि बादशाहों के लिये प्रत्येक दिन ईद होती है किन्तु उस दिन हज़रत जहाबानी के हर्षवर्धक चरणो के पहुचने के (११५) कारण एक नई ईद की व्यवस्था हो गई।

हुमायूं के पहुचने पर बाबर की प्रसन्नता

मीर्जा हैदर ने 'तारीखे रशीदी' मे लिखा है कि ९३५ हि० (१५२८-२९ ई०) मे जहाबानी, गेती

१ कड़ा इलाहाबाद से ४२ मील, उत्तर पश्चिम में है।
२ शाहाबाद में।
३ 'बाबर नामा' के अनुसार शुक्रवार।
४ 'बाबर नामा' के अनुसार सरयू।
५ हुमायूं की माता लगभग २ मास पूर्व आ चुकी थीं (देखिये बाबर नामा)

सितानी के कहने पर हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुये और फख अली को बदख्शा मे नियुक्त कर दिया।

उन्ही दिनो राज्य के नेत्रो की ठडक, मीर्जा अनवर[1] मृत्यु को प्राप्त हो गये थ। बादशाह सलामत को इस दुर्घटना का बडा शोक था। जहाबानी के शुभ चरणो मे उन्हे सान्त्वना हुई। हजरत जहाबानी कुछ समय तक हजरत (बादशाह) की सेवा मे लोक तथा परलोक के लाभ प्राप्त करते रहे। बादशाह उनसे मुसाहिबो के समान व्यवहार करते थे। और सर्वदा यह कहा करते थे कि हुमायू बडा ही अद्वितीय मुसाहिब है। वास्तव मे उनका शुभ व्यक्तित्व इनसाने कामिल[2] कहा जा सकता है।

मीर्जा सुलेमान का बदख्शा भेजा जाना

जब वे बदख्शा से हिन्दुस्तान की ओर चले आये तो सुल्तान सईद खा,[3] जो काशगर का खान था और गैर्नी सितानी का सम्बन्धी तथा उनकी सेवा मे उपस्थित होकर प्रोत्साहन प्राप्त कर चुका था, सुल्तान वैस के दूतो एव बदख्शा के अमीरो के बहकाने पर कुत्सित विचार से रशीद खा[4] को यारकन्द मे छोड कर बदख्शा के विरुद्ध रवाना हुआ। उसके बदख्शा पहुचने के पूर्व मीर्जा हिन्दाल ने बदख्शा पहुचकर किलये जफर[5] को अपने भोग विलास का केन्द्र बना लिया था।[6] सईद खा तीन मास तक किले को घेरे रहा। तत्पश्चात् असफल हो कर काशगर लौट गया। हिन्दुस्तान मे गैर्नी सितानी को यह ज्ञात हुआ कि काशगर वालो ने बदख्शा पर अधिकार जमा लिया है। हजरत (बादशाह) ने बदख्शा के प्रबन्ध हेतु ख्वाजा खलीफा को जाने का आदेश दिया। ख्वाजा ने अज्ञानतावश जाने मे विलम्ब किया। बादशाह ने जहाबानी से, जो अपने उन्नतिशील सौभाग्य के साथ उनकी सेवा मे उपस्थित थे, कहा कि, ' तुम अपने जाने के विषय म क्या कहते हो ?" उन्होने निवेदन किया कि, "आपकी सेवा से वचित रहने का कष्ट भोग चुका हू और यह सकल्प किया है कि पुन अपनी इच्छा से वही न जाउगा किन्तु शाही आदेश के उल्लघन का किसे साहस हो सकता है ?" इस कारण बादशाह सलामत ने मीर्जा सुलेमान को बदख्शा जाने का आदेश दिया और सुल्तान सईद को लिखा कि, "इतनी कृपाओ के बावजूद इस प्रकार के कार्य से आश्चर्य होता है। अब मैने मीर्जा हिन्दाल को बुलवा लिया है और मीर्जा सुलेमान को भेज रहा हू। यदि मेरी कृपाओ पर दृष्टि रखते हुये मीर्जा सुलेमान को, जिसे पुत्र समान होने का सौभाग्य प्राप्त है, बदख्शा सौंप दोगे तो उचित होगा। अन्यथा हम अपने उत्तरदायित्व से मुक्त होकर मीरास को उसके वारिस को सौंप दगे। इसके अतिरिक्त तुम जानो।"[7]

१ मूल पोथी में 'अनवर'। देखिये गुलबदन बेगम का हुमायू नामा।
२ मानव में सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति।
३ सुल्तान अहमद का पुत्र तथा बाबर की माता का भाई। बाबर ने उसे काबुल में अत्यधिक आश्रय प्रदान किया था और फ़रग़ाना का हाकिम बना दिया था। इस आक्रमण का सविस्तार उल्लेख 'तारीख़े रशीदी' में दिया हुआ है। यह आक्रमण ९३६ ई० के प्रारम्भ (लगभग ५ सितम्बर १५२९ ई०) में हुआ।
४ रशीद ख़ा उसका पुत्र था।
५ बदख्शा की प्राचीन राजधानी।
६ किला ज़फ़र पर अधिकार जमा लिया था।
७ 'तारीख़े रशीदी' में यह वाक्य अधिक स्पष्ट है। इसका तात्पर्य यह है कि, "यदि सुल्तान सईद न मानेगा तो वह (बाबर) अपने अधिकारों को सुलेमान को सौंप देगा और अपहरण करने का प्रयत्न करने वालों से समझ लेगा।"

हिन्दाल का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

(११६) मीर्ज़ा सुलेमान के काबुल पहुचने के पूर्व जैसा कि उल्लेख हो चुका है बदख्शा अशुभ-चिन्तकों के उपद्रव से मुक्त हो चुका था और सुख शान्ति का स्थान बन गया था। जब मीर्ज़ा सुलेमान बदख्शा पहुचा तो हिन्दाल मीर्ज़ा सम्मानित आदेशानुसार बदख्शा को मीर्ज़ा सुलेमान को सौप कर स्वय हिन्दुस्तान की ओर रवाना हो गये।

हुमायू का सम्भल मे रुग्ण होना

बादशाह सलामत ने जहाबानी को कुछ समय उपरान्त सम्बल जो उनकी जागीर मे था जाने की अनुमति दी। वे छ मास तक सम्बल मे सुख शान्ति से समय व्यतीत करते रहे यहा तक कि उनको ज्वर आने लगा और शनै शनै रोग बढता गया। गेती सितानी फिरदौस मकानी ने इस हृदय विदारक *समाचार से व्याकुल होकर प्रेमवश उन्हें देहली लाने का आदेश दिया और वहा से नौका द्वारा आगरा* पहुँचाने का, ताकि बादशाह के सामने कुशल चिकित्सको द्वारा उनका उपचार हो सके और राजधानी मे जो बुद्धिमान् चिकित्सकों का एक बहुत बडा समूह उपस्थित है, वह सोच विचार कर उपचार कर सके। अल्प समय मे वे नदी के मार्ग से उपस्थित हो गये। यद्यपि हर प्रकार से उपचार किया गया और उचित उपाय किये गये किन्तु वे स्वस्थ न हो सके।

बाबर का आत्म-बलिदान

जब रोग जड पकड गया तो एक दिन (बादशाह) यमुना नदी के उस पार बैठे हुये समकालीन बुद्धिमानों के साथ उपचार के विषय मे सोच विचार कर रहे थे। मीर अबुल बका ने जो अपने युग का बहुत बडा प्रतिभाशाली व्यक्ति था निवेदन किया कि भूतकाल के बुद्धिमानों का कथन है कि ऐसे अवसरों पर जब कि जाहरी चिकित्सक लोग उपचार मे असमर्थ हो जाये तो सर्वोत्कृष्ट वस्तु को न्योछावर करके ईश्वर के दरबार से स्वस्थ होने की प्रार्थना करनी चाहिए। गेती सितानी ने कहा "हुमायू के निकट सर्वोत्कृष्ट वस्तु मैं हू और मेरे लिये हुमायू से बढकर एव श्रेष्ठ कोई अन्य नही है। मैं अपने आप-को उसपर से न्योछावर करता हू। ईश्वर इसे स्वीकार करे।" ख्वाजा खलीफा एव अन्य विश्वासपात्रो ने निवेदन किया कि "वे ईश्वर की कृपा से शीघ्रातिशीघ्र स्वस्थ हो जायेंगे और बादशाह की छत्र-छाया मे अपनी स्वाभाविक आयु को प्राप्त होंगे। आप यह बात क्यों कहते है। भूतकाल के बुजुर्गों का उद्देश्य यह था कि सासारिक धन से सम्बन्धित सबसे अधिक मूल्यवान् वस्तु न्योछावर की जाये अत वह बहु-मूल्य हीरा जो कि दैवी कृपा से इबराहीम के युद्ध मे प्राप्त हुआ है और जिसे बादशाह ने हुमायू को प्रदान कर दिया है न्योछावर कर दिया जाये।" बादशाह ने कहा कि 'सासारिक धन का क्या मूल्य है और वह हुमायू का बदला किस प्रकार पूरा कर सकता है? मैं अपने आपको उसके ऊपर से न्योछावर करता हू (११७) कारण कि यह उसके लिये घोर सकट का समय है। अब मुझमें इतनी शक्ति नही कि उसके कष्ट को देख सकू। मैं उसके दुःख को नही देख सकता।" उसी समय प्रार्थना-कक्ष मे एकान्त मे पहुचकर विशेष प्रार्थना की, जो यह पवित्र समूह[1] करता है, और तीन बार जहाबानी जन्नत आशियानी के चारो

१ ईश्वर के भक्त अथवा बादशाह।

और चक्कर लगाये। क्योकि उनकी प्रार्थना स्वीकार हो चुकी थी अत वे अपनी तबीयत भारी पाने लगे और कहा, "उठा लिया, उठा लिया।"[1] तत्काल बादशाह को विचित्र प्रकार का ज्वर आने लगा। और जहाबानी के शरीर का रोग कम होने लगा। अल्प समय मे वे स्वस्थ हो गये और गेती सितानी फिरदौस मकानी नित्य प्रति रुग्ण होने गये। यहा तक कि उनका रोग बहुत बढ गया और मृत्यु के चिह्न दृष्टिगत होने लगे। उन्होंने जागते हुए हृदय और तथ्य को अंगीकार करने वाले अत करण से राज्य के उच्च पदाधिकारियों एव स्तम्भों को बुलवाया और हुमायू की उनसे बैअत[2] कराई तथा अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। (हुमायू) को सिहासनारूढ करके वे स्वय राजसिंहासन के नीचे बीमारी के बिछौने पर लेट गये।

बाबर की वसीअतें

ख्वाजा खलीफा, कम्बर अली बेग, तरदी बेग, हिन्दू बेग तथा बहुत बडी सख्या म लोग बादशाह सलामत की सेवा मे उपस्थित थे। उन्होंने (हुमायू) को उच्च परामर्श एव शिक्षाये जिससे उन्हे सर्वदा लाभ प्राप्त होता रहेगा प्रदान की और सर्वदा न्याय एव दान, इसाफ तथा परोपकार, ईश्वर की इच्छा पूरी करने का प्रयत्न एव प्रजा की रियायत, प्राणियो की रक्षा, अपराधियो के अपराध को क्षमा करने, पापियो के पापों को माफ करने, अनुभवी लोगों के प्रोत्साहन तथा विद्रोहियों एव अत्याचारियों का दमन करने के विषय मे परामर्श दिये। अपनी पवित्र जिह्वा से कहा कि "मेरी शिक्षा का साराश यह है कि अपने भाइयों की हत्या का चाहे वे इसके जितना भी पात्र क्यो न हो, विचार न करना।" वास्तव मे जहाबानी जनत आशियानी को बादशाह सलामत की शिक्षा का इतना ध्यान था कि उन्होंने अपने भाइयों द्वारा इतने कष्ट उठाय किन्तु फिर भी कभी प्रतिकार का प्रयत्न न किया। यह बात उनके इतिहास से प्रकट हो जायेगी।

मीर खलीफा का षड्यन्त्र

जब हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी अत्यधिक रुग्ण हो गये तो मीर खलीफा मनुष्य के मानवी स्वभाव[3] के कारण जहाबानी से शकित होने की वजह से अल्पदर्शी बनकर महदी ख्वाजा को सिंहासनारुढ करना चाहता था और ख्वाजा भी मूर्खता, बदमस्ती एव अज्ञानता के कारण मिथ्यापूर्ण विचारो को अपने मस्तिष्क मे स्थान देकर नित्य प्रति दरबार मे उपस्थित होकर भीड-भाड एकत्र किया करता था। अन्ततोगत्वा दूरदर्शी सत्यवादियो द्वारा मीर खलीफा सन्मार्ग पर आ गया और उसने यह विचार त्याग दिये और ख्वाजा को मना कर दिया कि वह दरबार मे उपस्थित न हो और यह घोषणा करा दी कि कोई भी उसके घर न जाये। ईश्वर की कृपा से काम ठीक हो गया और सत्य अपने केन्द्र पर पहुच गया।

बादशाह की मृत्यु

(११८) ६ जमादि उल्-अव्वल ९३७ हि० (२६ दिसम्बर १५३० ई०) को चारबाग म, जिसे

१ 'बरदाश्तेम, बरदाश्तेम"।
२ अधीनता की शपथ।
३ आल्मे बशरियत अर्थात् अल्प दर्शिता।

२ गुलचेहरा बेगम,

३ गुलबदन बेगम।

ये तीनों एक ही माता से थी।

फिरदौस मकानी के सबसे बडे विश्वासपात्र एव उनसे निकटतम सम्बन्ध रखने वाले मीर अबुल बका थे जिन्हें ज्ञान एव दर्शन मे बडी उच्च श्रेणी प्राप्त थी।

(२) शेख जैन सद्र, शेख जैनुद्दीन ख्वाफी का पौत्र। उन्होने दो सूत्रो से प्रचलित ज्ञानों-विज्ञानो का अध्ययन किया था और उनकी चेतना मे बडी तेजी थी। गद्य एव पद्य मे उन्हें बडी कुशलता प्राप्त थी। वे सर्वदा बादशाह सलामत की सगति मे रहा करते थे। हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी के राज्यकाल मे भी उन्हें अमीरी प्राप्त थी।

(३) शेख अबुल वज्द फारिगी, शेख जैन के चाचा बडे ही वाक्पटु थे और कविता भी करते थे।

(४) सुल्तान मुहम्मद कोसा, उत्तम चेतना वाले एव कविता को परखने वाले थे। मीर अली शेर के मुसाहिबों मे से थे और उन्हे बडा सम्मान प्राप्त था।

(५) मौलाना शिहाब मुअम्माई, जिनका तखल्लुस 'हकीरी' था। उन्हें ज्ञान-विज्ञान, विद्वत्ता एव कविता मे अत्यधिक परिचय था।

(६) मौलाना यूसुफी तबीब। उन्हें खुरासान से बुलवाया गया था। वे अपने सर्वोत्कृष्ट गुणो तथा अपने हाथ के आशीर्वाद[1] के लिए बडे प्रसिद्ध थे।

(७) सुर्ख विदाई, प्राचीन कवि एव स्वतन्त्र व्यक्ति थे। फारसी एव तुर्की मे कविता करते थे।

(८) मुल्ला बकाई जिन्हे कविता का बडा अच्छा अनुभव था। मखज़न[2] की जमीन[3] मे बादशाह सलामत के नाम पर मसनवी की रचना की।

(९) ख्वाजा निजामुद्दीन अली खलीफा, बडे प्राचीन सेवक, विश्वासपात्र, बुद्धिमान् एव सूझ मे बादशाह सलामत की दृष्टि मे बडी उच्च श्रेणी को प्राप्त थे। योग्यता एव निपुणता मे अद्वितीय थे, विशेष रूप से तिब[4] का अच्छा ज्ञान था।

(१०) मीर दरवेश मुहम्मद सारबान जो नासिरुद्दीन ख्वाजा अहरार के मुरीद एव विश्वास पात्र थे। वाक्पटुता मे उन्हे बडी उच्च श्रेणी प्राप्त थी। बादशाह के पवित्र दरबार मे उन्हे बडा विश्वास प्राप्त था।

(११) ख्वन्दमीर इतिहासकार। वे बडे विद्वान् एव वाक्पटु थे। उनकी रचनायें बडी प्रसिद्ध है उदाहरणार्थ 'तारीखे हबीबुस्सियर', 'खुलासतुल अख्बार', 'दस्तूरुल वुजरा' इत्यादि।

(१२) ख्वाजा कला बेग। वे बहुत बडे अमीर एव बादशाह के सहचर थे। उनके नियमो मे सतुलन था और उनमे उचित गुण पाये जाते थे। उनका भाई कीचक ख्वाजा मुहरदार बहुत बडा विश्वासपात्र एव सहचर था।

१ शल्य-चिकित्सा।
२ 'मख़ज़नुल असरार'।
३ शेर का वज़न।
४ चिकित्सा।

(१३) सुल्तान मुहम्मद दून्दाई, बहुत बडे बुजुर्ग थे और उनमें बडे उत्तम गुण पाये जाते थे।

क्योंकि इस इतिहास का उद्देश्य शहंशाह के पूर्वजो का उल्लेख है अत अन्य लोगो के इतिहास मे उपेक्षा करते हुये हज़रते जहाबानी जन्नत आशियानी का इतिहास लिखा जाता है और इन बुजुर्गों का उल्लेख करने के उपरान्त मैं लोक तथा परलोक के सम्मानित व्यक्ति एव बाह्य तथा वास्तविक बादशाह का वर्णन लिखने की तैयारी करता हू।

तबक़ाते अकबरी भाग २

(लेखक-ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद)

(प्रकाशन कलकत्ता)

हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी ज़हीरुद्दीन बाबर बादशाह गाज़ी का प्रस्थान

(१) बाबर बिन उमर शेख बिन सुल्तान अबू सईद बिन मीर्ज़ा सुल्तान मुहम्मद बिन मीर्ज़ा मीरान शाह बिन अमीर तीमूर गूरगान। ईश्वर उनकी क़ब्रों को पवित्र बनाये तथा उन्हे स्वर्ग मे स्थान दे।

क्योंकि इस इतिहास मे विशेष रूप से हिन्दुस्तान का हाल लिखा गया है अत जो घटनायें उनके साथ मावराउन्नहर, खुरासान एव अन्य स्थानो पर घटी उनका वर्णन 'अकबर नामा' नामक इतिहास मे जिसकी रचना प्रतिभाशाली एव ईश्वर के रहस्यों से परिचित तथा हज़रत खाक़ानी[1] के विश्वास-पात्र अल्लामी शेख अबुल फ़ज़्ल ने की है, 'वाक़ेआते बाबरी' एव अन्य इतिहासो मे किया जाये। क्योंकि इस वश म हज़रत बाबर फिरदौस मकानी के नाम से प्रसिद्ध हैं अत इस इतिहास मे उनके लिय इसी नाम का प्रयोग किया गया है।

जब दौलत खा, गाज़ी खा तथा सुल्तान इब्राहीम के अन्य बडे-बडे अमीरो ने सगठित हो कर हज़रत फिरदौस मकानी की सेवा मे हिन्दुस्तान पधारने के विषय मे प्रार्थना-पत्र लिखे और आलम खा लोदी के हाथ भेजे तो फिरदौस मकानी ने प्रतिष्ठित अमीरो के एक समूह को आलम खा के साथ इस आशय से नियुक्त किया कि वे हिन्दुस्तान की सीमा के आगे प्रस्थान करें और जो कुछ उचित समझें वह करें। वे लोग शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुए और उन्होने सियालकोट तथा लाहौर एव उस क्षेत्र के आसपास के स्थानो को विजय करके जो वास्तविक बात थी, उसके विषय मे सूचना दी। फिरदौस मकानी ने ईश्वर की कृपा एव दैवी प्रेरणा से काबुल के दारुल अमान[2] से प्रस्थान किया और प्रथम दिन करियए याकूब[3] के समीप विजयी शिविर लगवाये। कुछ दिन तक वे थोडी-थोडी यात्रा करते रहे और प्रत्येक पडाव पर एक एक, दो-दो दिन (२) ठहरते हुये मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा की प्रतीक्षा करते रहे। मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा बदख्शा तथा उस क्षेत्र की सेना को लाने के लिये काबुल मे ठहर गये थे। यहा तक कि भाग्यशाली शाहज़ादा सुसज्जित सेना लेकर सेवा मे पहुच गया। सयोग से उसी दिन ख्वाजा कला बेग ने, जोकि बादशाह के राज्य का बडा प्रतिष्ठित अधिकारी था, गजनी से आकर चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। जब बादशाह को प्रतीक्षा करने की आवश्यकता न रही तो उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करना प्रारम्भ कर दिया और सिध

१ अकबर।
२ शान्ति का घर।
३ देहे याक़ूब, याक़ूब ग्राम।

नदी के तट पर, जो नीलाब नदी के नाम से प्रसिद्ध है, विजयी पताकाए बलन्द कर दी। इस पडाव पर बादशाह ने आदेश दिया कि सम्मानित बख्शी लोग सेना की गणना करके अश्वारोहियो एव पदातियो के विषय मे निवेदन करें। सैनिको, व्यापारियो, प्रतिष्ठित तथा साधारण लोगो, दरबार एव महफिल वालो और युद्ध करने वालो, सभी को मिला कर १० हजार अश्वारोही निकले।

शेर

'सिह को सेना की आवश्यकता नहीं होती, विशेष रूप से जब
जब उसे मृग के शिकार की इच्छा होती है।
सूर्य बिना सेना तथा अश्वारोहियो के ससार विजय कर लेता है
जब वह पूर्व से अपनी पताका बलन्द करता है।"

इसी बीच मे हिन्दुस्तान के अमीरो द्वारा समाचार प्राप्त हुए कि "अभागे दौलत खा एव अत्याचारी गाज़ी खा अधीनता और आज्ञाकारिता के मार्ग से बाहर निकल कर प्रतिज्ञा एव वचन के विरुद्ध कार्य करने लगे हैं। उन्होंने लगभग ३० हजार वीर-अफगानो तथा पहाडियो को एकत्र कर लिया है और कलानूर कस्बे पर अधिकार जमा लिया है। ये लाहौर के अमीरो से युद्ध हेतु प्रस्थान करने वाले हैं।" जब बादशाह को यह समाचार प्राप्त हुये तो उन्होने मोमिन अली तवाची[1] को एक परमावश्यक आदेश भेजा कि वह उपर्युक्त अमीरो को विजयी पताकाओ के प्रस्थान के समाचार पहुचा दे। जब तक विजयी बादशाह न पहुच जायें उस समय तक अमीर लोग किले के बाहर न निकलें और युद्ध न करें। उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र विजयी सेना को नीलाब नदी पार कराई और कजाकोट के समीप पहुच गये। भाग्यशाली नौकाओं ने (३) शीघ्रातिशीघ्र कजाकोट की नदी पार कर ली। समय को दृष्टि मे रखते हुए यह निश्चय हुआ कि वे पर्वत के आचल के मार्ग से, जोकि सियालकोट की सीमा से मिला हुआ है, प्रस्थान करे। जब सम्मानित शिविर खक्करों के ग्राम के समीप लगे तो वे उस पडाव से शीघ्रातिशीघ्र बढते चले गये और जगल तथा पर्वत की यात्रा करते हुये निरन्तर पाच पड़ाव पार करके विजयी पताकाओ ने जूद पर्वत के क्षेत्र मे बालानाथ नामक स्थान पर छाया डाली। दूसरे दिन कूच की पताकायें उस स्थान पर बलन्द की गईं और बिहत[2] नदी पार की गई।

उस पडाव पर यह निवेदन किया गया कि "अमीर खुसरो कूकूल्ताश, जो सियालकोट के किले की रक्षा कर रहा था, वचन की उपेक्षा करने वाले गाज़ी खा के पहुचने पर किले को रिक्त कर के भाग गया और अमीर वली क़िज़ील के साथ, जो उसे कुमक पहुचाने के लिये नियुक्त हुआ था, राजसिहासन की छाया मे उपस्थित हुआ है।" उन्हे इस अपराध के कारण शाही क्रोध का पात्र बनना पडा। बाद मे बादशाह को स्वाभाविक कृपा ने उनके अपराधों की पजिका पर क्षमा की लेखनी चला दी।[3] इस समय जानकार समाचार-वाहकों ने यह समाचार पहुचाये कि अभागे ग़ाज़ी खा तथा दौलत खा शहशाह के सौभाग्य के नक्षत्र के उदय होने के समाचार पाकर अपनी सेना के बल पर युद्ध करने के लिये तैयार हो गये हैं और ४० हजार अश्वारोहियो सहित युद्ध हेतु उद्यत है। प्रतिष्ठित अमीरों को फरमान भेजा गया कि जब तक

१ यह नाम कई प्रकार से लिखा है। मोमिन अली तवाची, मोमिन अली तवाजी तथा मोमिन अली कूरची।
२ झेलम।
३ क्षमा कर दिया।

विजयी पताकायें न पहुंच जायें वे प्रतीक्षा करते रहें और युद्ध न करें। विजयी शिविर चनाव नदी के तट पर लगाये गये।

तदुपरान्त ९३२ हि० (१५२५ ई०) में बहलोलपुर नामक कस्बा बादशाही राज्यों की माला में सम्मिलित हो गया। क्योंकि वह कस्बा चनाव नदी पर एक ऊंचे स्थान पर स्थित था, अतः अटल शाही आदेश हुआ कि उस स्थान पर एक बहुत बड़े किले का निर्माण कराया जाये जिससे लोग सियालकोट नगर को भूल जायें। कारण कि ऐसी नदी के होते हुये वहां लोग झीलों से जल पीते थे अतः उन लोगों को यहां लाकर बसा दिया जाये।

वे २-३ दिन तक उस पड़ाव पर भोग विलास में समय व्यतीत करते रहे। तदुपरान्त उन्होंने सियालकोट के समीप पड़ाव किया। इस पड़ाव से द्रुतगामी गुप्तचरों को अमीरों को यह आदेश पहुंचाने के (४) लिये नियुक्त किया गया कि वे शत्रुओं के विषय में विस्तार से सूचना तैयार कराते और राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत करते रहें।

उसी समय एक व्यापारी ने न्याय के सिंहासन के पाव चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और आलम खां के विषय में निवेदन किया कि उसने सुल्तान इबराहीम से युद्ध किया। इसके कारण दोनों पक्षों को पराजय हुई। यह घटना इस प्रकार है कि जब आलम खां लोदी अमीरों के साथ शाही सेवा से पृथक् हो कर हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ तो शीघ्रातिशीघ्र लाहौर पहुंच गया। वहां उसने कुछ दिन आराम किया। उसने अफगानों से अफवाहें सुन कर बादशाही अमीरों से, जोकि उसकी सहायतार्थ नियुक्त हुए थे, आग्रह किया कि, 'क्योंकि ईश्वर की छाया' ने तुम्हें मेरी सहायता हेतु नियुक्त किया है और मुझे सिकन्दर तथा इबराहीम के राज्यों को विजय करने का आदेश दिया है और गाजी खां ने मुझसे सन्धि का प्रस्ताव रख दिया है अतः यह उचित होगा कि तुम लोग भी मेरा साथ दो और हम लोग मिल कर देहली और आगरा की ओर प्रस्थान करें।" बुद्धिमान् अमीरों ने, जो उस समूह की धूर्तता से अवगत थे, इस प्रस्ताव को स्वीकार न किया और उत्तर दिया कि, 'गाजी खां अत्यधिक धूर्त है। उसके कर्म एवं वचन पर विश्वास न करना चाहिये। उसके द्वारा साधारण सी चाटुकारी एवं नरमी प्रकट हो जाने के कारण उससे जाकर मिल जाना बुद्धिमत्ता के नियम के विरुद्ध है। यदि वह अपने भाई हाजी खां को शाही दरबार में भेज दे अथवा लाहौर में बादशाह के हितैषियों के पास शरीरबंधक के रूप में रख दे तो उसके प्रस्ताव के अनुसार कार्य किया जा सकता है।" मूर्ख आलम खां ने कहा कि, 'तुम्हारे हजरत आला ने तुम्हें मेरी आज्ञाकारिता का आदेश दिया है न कि मुझे तुम्हारी।" यद्यपि उसने बड़ा आग्रह किया किन्तु अमीरों ने *यह बात स्वीकार न की।*

उस समय गाजी खां के पुत्र शेर खां ने आलम खां की सेवा में उपस्थित हो कर अपने पिता की मित्रता को दृढ़ बनाया। दिलावर खां, जोकि दीर्घकाल से हजरते आला के प्रति निष्ठा के कारण गाजी खां (५) के बन्दीगृह में था भाग कर लाहौर पहुंचा और महमूद खां वल्द खाने जहां को, जोकि (बाबर) के[1] प्रति निष्ठावान् था, अपनी ओर मिला लिया। वह शाही सेना से पृथक् होकर गाजी खां से मिल गया।[2] सब लोग मिलकर देहली की ओर रवाना हुए। उन्होंने कुछ अन्य अमीरों उदाहरणार्थ इस्माईल खां जलवानी इत्यादि को, जो सुल्तान इबराहीम की ओर से निराश होकर देहली के समीप थे अपनी ओर

१ बाबर।
२ यह विवरण स्पष्ट नहीं।

मिला लिया और सुल्तान इबराहीम से युद्ध करने के विचार से आक्रमण की पताका बलन्द की। जब वे इन्द्री[1] कस्बे मे पहुचे तो उस कस्बे का हाकिम सुलेमान शेखजादा भी इन लोगो से मिल गया और इस सेना की सख्या ४० हजार पहुच गई। सभी लोगो ने सगठित होकर देहली का अवरोध कर लिया। सुल्तान इबराहीम इस घबडा देने वाले समाचार को सुन कर उन लोगों से युद्ध करने के लिये निकला। आलम खा तथा उन लोगो ने जब उसके आने के समाचार सुने तो वे युद्ध करने के लिये देहली से आगे बढे। उन लोगो ने मिलकर यह निश्चय किया कि "क्योकि अफगानो की कौमों को एक दूसरे की मर्यादा की बडी चिन्ता होती है और वे युद्ध के समय अपने स्वामी के पास से भागना और शत्रु से मिल जाना बहुत बडा पाप समझते हैं अत यह स्पष्ट है कि यदि युद्ध दिन के समय होगा तो इन लोगों की स्वामी-भक्ति के कारण हमे सफलता प्राप्त न होगी और उन लोगों मे से कोई भी अपने अपमान की दृष्टि से हमारी ओर न आयेगा। अत यह उचित होगा कि सूर्यास्त के उपरान्त हम रात्रि मे सुल्तान इबराहीम की सेना पर छापा मारें। जो लोग हृदय से हमारे सहायक है उन्हें अपनी ओर मिला कर शत्रुओं पर आक्रमण करें।"

सक्षेप मे, जिस स्थान पर सुल्तान इबराहीम अपने शिविर लगवाये हुए था वह वहा से छ कुरोह[2] की दूरी पर था। वे लोग वहा से रात्रि मे छापा मारने का सकल्प करके सवार हुए। रात्रि के अन्तिम पहर मे उनका यह सकल्प कार्य रूप मे परिणित हुआ। उन लोगो ने सुल्तान इबराहीम की समस्त सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। जलाल खा तथा कुछ अन्य अमीर, जिन्होंने आलम खा का साथ देने का वचन दे रक्खा था और समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, उससे मिल गये। सुल्तान इबराहीम अपने कुछ विश्वासपात्रों (६) सहित अपने शिविर मे स्थान ग्रहण किये रहा। प्रात काल तक न उसने युद्ध किया और न वहा से पलायन। क्योंकि आलम खा के सहायक अपनी विजय एव शत्रु की पराजय पर विश्वास करके लूटमार के लोभ मे छिन्न भिन्न हो गये थे और प्रात काल के उपरान्त आलम खा के साथ कुछ लोगों के अतिरिक्त अधिक लोग न रह गये थे अत सुल्तान इबराहीम शत्रु की सख्या को दृष्टि मे रखते हुए उस सेना सहित जो उसके साथ थी, एक हाथी को सामने करके आलम खा पर टूट पडा और पहले ही आक्रमण मे उसे भगा दिया। जो लोग जिस स्थान पर लूट मार मे व्यस्त थे, वे वहा से भाग खडे हुए और उसके साथी अमीर इधर-उधर छिन्न-भिन्न हो गये। आलम खा दोआब होता हुआ लाहौर की ओर रवाना हुआ।

जब वह सरहिन्द पहुचा तो उसे बादशाह की विजयी पताकाओं के सियालकोट के क्षेत्र मे पहुचने के एव मिलवट के किले की विजय के समाचार प्राप्त हुए। एक पराजय के उपरान्त उन मूर्खों को दूसरी पराजय हुई और प्रत्येक इधर उधर अपने अपने स्थान को भागने लगा। दिलावर खा, जो कि सर्वदा से बादशाह के प्रति निष्ठावान् था और आलम खा का साथ उसने शत्रुओं के अधिक प्रभुत्व प्राप्त कर लेने के कारण दिया था और यह उसकी एक इजतेहादी[3] भूल थी, अब शाही पताकाओ के पहुचने पर प्रसन्नता प्रकट करता हुआ शहशाह की चौखट के चुम्बन हेतु रवाना हुआ और कुछ लोगो के साथ शीघ्रातिशीघ्र पहुचकर इस सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ। उसने शत्रुओ का साथ देने के विषय मे जो कारण बताये उसे बादशाह ने स्वीकार कर लिया और उसके प्रति कृपा एव दया प्रदर्शित की।

आलम खा ने हाजी खा के साथ किनकूता नामक किले मे, जोकि एक पर्वत की चोटी के ऊपर अत्यधिक दृढ किला है और मिलवट के अधीन है, शरण ली। सयोग से निजामुद्दीन अली खलीफा, जो

१ लाहौर से देहली के मार्ग में।
२ कोस।
३ किसी निर्णय पर पहुँचने म जो भूल हो जाती है उसे इजतेहादी भूल कहते हैं।

कि इस राज्य का वकील[1] था, अपने साथ थोडे से व्यक्तियों को लेकर जिनमे हज़ारा तथा अफगान थे, शाही शिविर से पृथक् होकर पर्वत के आचल की सैर कर रहा था।[2] जब वे उस किले के समीप पहुचे तो उन्होने अपने उच्च साहस के कारण बडे परिश्रम से युद्ध प्रारम्भ कर दिया और जो लोग उस पर्वत मे शरण लिये हुए थे, उन्हे परेशान कर दिया। किले पर विजय प्राप्त होने ही वाली थी किन्तु इस कारण कि (७) युद्ध दिन के अन्त मे प्रारम्भ हुआ था रात्रि का आवरण घिरे हुये लोगो के बीच मे आ गया और उन्ह अपने उद्देश्य मे सफलता न प्राप्त हो सकी। आलम खा युद्ध को त्याग कर अपने बचे-खुचे साथियो को लेकर बडी कठिनाई से किले के बाहर निकल भागा और गिरता-पडता जगलो मे भटकने लगा। दूसरे दिन उसके पास ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार मे, जहा दु ख के जगलो मे भटकने वालो एव अपराध के वन मे मारे मारे फिरने वालो के लिये सहायता एव क्षमा प्राप्त होती है, निष्ठा प्रदर्शित करने के अतिरिक्त कोई उपाय न रहा। उसने विवश होकर बादशाह की स्वाभाविक दया पर विश्वास करके अपने मुख को उसकी चौखट की धूल पर रख दिया। फिरदौस मकानी ने उसे सम्मानित करते हुए प्रथानुसार खिलअत प्रदान की और अपनी चमत्कार प्रदर्शित करने वाली जिह्वा से उसकी कोई आलो चना न की।

उसी समय जो दूत अमीरो को बुलाने के लिये लाहौर फरमान ले गये थे, उन्होने उनके शाही पडाव के समीप पहुचने के समाचार पहुचाये। दूसरे दिन विजयी पताकाओ ने परसरूर कस्बे की ओर प्रस्थान किया। समस्त निष्ठावानों मे से मीर मुहम्मद अली जगजग, ख्वाजा हुसेन तथा मुशर्रफ दीवान[3] ने वीरों के एक समूह के साथ बादशाह की रिकाब के चुम्बन के सौभाग्य मे अन्य लोगो की अपेक्षा प्राथमिकता प्राप्त की। बादशाह के आदेशानुसार कुछ वीर गाज़ी खा के विषय मे, जोकि रावी नदी के तट पर लाहौर की ओर स्थान ग्रहण किये हुए था, पता लगाने के लिये भेजे गये। वे लोग वहा जाकर तीसरे दिन लौट आये और यह समाचार लाये कि शत्रु बादशाही सेना के पहुचने के समाचार पाकर शीघ्रातिशीघ्र पलायन कर गये है।

शेर

'कण के लिये यह असम्भव है कि वह सूर्य से युद्ध करे,
और न गौरय्या बाज़ से किसी प्रकार पजा लडा सकती है।"

वे इतने समय तक इस कारण ठहरे रहे कि उन्हे हज़रत जहाबानी के आगमन के समाचार पर विश्वास न (८) था। इस समाचार को पाकर बादशाह ने शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया और उस अभागे समूह का पीछा करने के उद्देश्य से कलानूर में पडाव किया। इस पडाव पर सम्मानित सुल्तानो मे से मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव आदिल सुल्तान ने लाहौर के समस्त अमीरो सहित उपस्थित होकर अपनी निष्ठा का मुख सम्मानित दरबार के समक्ष रख कर पेशकश प्रस्तुत की और अपनी श्रेणी के अनुसार शाही कृपा प्राप्त करने के सम्मान द्वारा सम्मानित हुए। दूसरे दिन बादशाह ने कलानूर से प्रस्थान किया और यह अटल फरमान जारी किया गया कि अमीर मुहम्मदी कूकूलताश, अमीर अहमदी परवानची, अमीर कूतलूक कदम, अमीर वली खाज़िन तथा अन्य अमीर एक बडी सेना लेकर भागने वालो का पीछा करें और मिलवट

१ प्रधान मत्री।
२ 'बाबर नामा' में निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा का नाम नहीं दिया गया है।
३ दीवान के मुशरिफ़।

के किले की चारो ओर से इस प्रकार रक्षा करें कि कोई भी किले के बाहर न जा सके और वहा का खजाना तथा गडी हुई धन-सम्पत्ति नष्ट न हो सके। इस सावधानी का वास्तविक उद्देश्य यह था कि गाजी खा को वन्दी बना लिया जाये।

दूसरे दिन बादशाह ने मिलवट के किले के समीप पडाव किया। बडे बडे अमीरो को यह आदेश दिया कि किले का अवरोध करके शत्रुओ को परेशान कर दे। दूसरे दिन इस्माईल खा वन्द अली खा जो दौलत खा का पुत्र था, बाहर आया और यह समाचार पहुचाये कि गाजी खा किले मे नही है। उसने जो कुछ बताया उससे पता चला कि दौलत खा, अली खा तथा समस्त विद्रोही किले मे हैं। हजरते आला ने उसे वचन, प्रोत्साहन एव धमकी दे कर पुन किले मे वापस भेज दिया और अपने उच्च साहस को किले की विजय की ओर लगाया। मोरचे अधिक निकट पहुचा दिये गये। विजयी सेनाओ की शक्ति के कारण वे लोग कोई भी योजना सफल न बना सके और उनके पाव उखड गये। दौलत खा ने दीनता प्रदर्शित करते हुए क्षमा याचना की। बादशाह ने उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करते हुए उसके अपराधो को क्षमा कर दिया। बादशाह के आदेशानुसार उसकी ग्रीवा मे दो तलवारें लटकाई गईं और वह इस अवस्था मे दरबारे आम मे लाया गया। जब वह निकट पहुचा तो बादशाह ने आदेश दिया कि तलवारें उसकी गरदन से निकाल (९) दी जायें ताकि वह प्रथानुसार अभिवादन कर सके। हजरते आला ने उसके प्रति पूर्ण कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते हुए उसे अपने समीप स्थान दिया और उसके अपराधों के ऊपर क्षमा की लेखनी चला दी।[1]

शेर

"कृपा तो यह कि पापी का उपकार किया जाय,
अन्यथा उदार लोग मित्रो के प्रति कृपा के अतिरिक्त कुछ और नहीं प्रदर्शित करते।"

उन्होने आदेश दिया कि "दौलत खा, उसके परिवार वालो तथा सहायकों को क्षमा प्रदान की जाती है और उसकी धन सम्पत्ति की सूची तैयार कर के विजयी शिविर के सैनिको को बाट दी जाये।" ख्वाजा मीर मीरान सद्र को उसके परिवार की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया। जब वह किला फिरदौस मकानी के राज्य के हितैषियो के अधीन हो गया तो अली खा ने उनकी सेवा मे उपस्थित होकर कुछ अशर्फिया पेशकश के रूप मे भेंट की और दिन के अन्त मे अपने परिवार तथा अन्त पुर की स्त्रियो को एकत्र करके अपने साथियो सहित किले के बाहर निकला। यसावल[2] दूर से लोगो को हटा रहे थे। वे इन सब लोगो को ख्वाजा मीर मीरान के घर ले गये और उसे सौंप दिया।

दूसरे दिन हजरते आला ने किले की व्यवस्था कराई। अमीर सुल्तान जुनैद बरलास, अमीर मुहम्मदी कूकूल्ताश, अमीर अहमद परवानची, अमीर अब्दुल अजीज, अमीर मुहम्मद अली जगजग, अमीर कूतलूक कदम तथा कुछ अन्य अमीरो को किले की धन-सम्पत्ति की देख रेख के लिये नियुक्त कर दिया।

जब यह ज्ञात हुआ कि गाजी खा मिलवट के किले मे नही है तो शाही पताकाओं ने गाजी खा की खोज मे प्रस्थान किया। दौलत खा, अली खा, इस्माईल खा तथा वचन को तोडने वाले उस समूह के अन्य लोगो को बन्दी बना कर आदेश दिया कि मिलवट तथा भीरा के किलो मे जो कि उस क्षेत्र मे बड ही दृढ

१ क्षमा कर दिया।
२ सेवक।

समझे जाते थे, बन्दी रखें। मार्ग मे दौलत खा की मृत्यु हो गई। तदुपरान्त फिरदौस मकानी ने गाज़ी खा की खोज एव उसे बन्दी बनाने तथा उसे दड देने के लिये प्रस्थान किया और ऊबड खाबड मार्ग को पार करते हुए दून[1] के आचल मे, जोकि एक बहुत बडी पहाडी और सिवालिक के अधीन है, पडाव किया। (१०) तरदी बेग को कुछ लोगो के साथ इस आशय से नियुक्त किया कि वह उस पर्वत तथा जगल मे अत्यधिक खोज करके उस मार्ग भ्रष्ट को बन्दी बनाये। क्योकि वह अभागा प्राण के भय से जगल, ब्याबान मे होता हुआ कही दूर भाग गया था, अत बन्दी न बनाया जा सका।

दून से एक दो पडाव आगे बढ जाने के उपरान्त शाह एमादुद्दीन शीराज़ी ने विजयी राजसिंहासन के पायो के समीप पहुचकर दुरमुश खा तथा मौलाना मुहम्मद मजहब के, जोकि सुल्तान इबराहीम की सेना के अमीरो एव विद्वानो मे सम्मिलित थे, प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किये। उन लोगो ने शहशाह के प्रति अपनी निष्ठा का आश्वासन दिलाते हुए उस ओर पधारने का निवेदन किया था। फिरदौस मकानी ने एमादुद्दीन के एक दूत को कृपायुक्त फरमान दे कर उनकी ओर बिदा कर दिया। इस पडाव से उन्होने बन्दा के फकीरो, दरवेशों, *तथा विद्यार्थियो को नकद धन एव अन्य सामग्री अमीर बाकी शगावल द्वारा, जो कि* दीबालपुर के राज्य के लिये नियुक्त था, भेजी और काबुल मे भी अपने पुत्रो, सहायको एव अन्य लोगो को जो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, धन-सम्पत्ति, कपडे एव उपहार भेजे। उस पडाव से भी विजयी सेना का वह भाग, जो समाचार लाने तथा खाद्य सामग्री इत्यादि का प्रबध करने जाता है पर्वतो मे प्रविष्ट होकर बहुत से स्थानो को विजय करके अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति विजयी शिविर मे लाया।

वहा से दो मंज़िल के उपरान्त सरहिन्द के समीप विजयी शिविर का पडाव हुआ। सरहिन्द से दो मंज़िल के उपरान्त विजयी सेनाए कस्बे मे पहुची और घग्घर नदी के तट पर पडाव किया। जब उस स्थान से प्रस्थान करके विजयी पताकाओ ने सामाना एव सुनाम मे पडाव किया तो गुप्तचरो ने निवेदन किया कि "सुल्तान इबराहीम सम्मानित पताकाओं के पहुचने के समाचार सुन कर देहली के समीप से, जहा वह आलम खा की पराजय के उपरान्त स्थान ग्रहण किये हुए था, प्रस्थान करके आगे बढ आया है।" बादशाह (११) ने आदेश दिया कि अमीर किता बेग सुल्तान इबराहीम के शिविर की ओर जाकर उस लश्कर के विषय मे यथा-सम्भव जानकारी प्राप्त करके शीघ्रातिशीघ्र लौट आये। इसी प्रकार मोमिन अली अत्का को सुल्तान इबराहीम के खासा खेल हमीद खा की सेना के विषय मे, जो हिसार फीरोज़ा से सेना एकत्र किये आ रहा था, पता लगाने के लिये भेजा गया। अम्बाला नामक कस्बे मे दोनो दूतो ने लौट कर मार्ग तथा शत्रुओं एव उनके अग्रसर होने के विषय मे निवेदन किया। इसी मंज़िल पर बिबन अफगान, को जो कि विद्रोह के उपरान्त आज्ञाकारी बन चुका था, क्षमा प्रदान की गई और उसे कालीन चूमने का सम्मान प्रदान किया गया।

हुमायूं का हमीद खा के विरुद्ध भेजा जाना

जब शहशाह की विश्व-विजय करने वाली राय को यह ज्ञात हो गया कि हमीद खा हिसार फीरोज़ा से २-३ मंज़िल आगे बढ कर आ चुका है तो उन्होने आदेश दिया कि "शाहज़ादा मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा उससे युद्ध करने के लिये प्रस्थान करे।" अमीर ख्वाजा कला बेग, अमीर सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई[2],

१ घाटी।
२ मूल पुस्तक मे दूल्दी ।

अमीर अब्दुल अज़ीज़, अमीर मुहम्मद अली जगजग, अमीर शाह मनसूर बरलास, अमीर मुहिब अली वल्द मीर खलीफा और अन्य वीरों तथा अनुभवी लोगों को शाहज़ादे की सम्मानित रिकाब के साथ कर दिया। शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए जब वे शत्रुओं की सेना के समीप पहुँचे तो २०० चुने हुए अश्वारोही सेना के अग्र भाग में नियुक्त करके शत्रुओं के विषय में पता लगाने के लिये भेजे गये। सर्वप्रथम शाहज़ादे की सेना के अग्रभाग का, जोकि शत्रुओं की सेना के समीप पहुँच गया था शत्रुओं की सेना के अग्र भाग से मुकाबला हुआ। दोनों ओर से मार-काट होने लगी, यहा तक कि शाहज़ादे की सेना पहुँच गई और शत्रुओं की सेना भी आ गई। युद्ध की अग्नि भड़क उठी। दोनों सेनाएँ आपस में भिड़ गईं। विजय तथा सफलता की आँधी विजयी सेना के पास से उठ कर विरोधियों के मध्य में प्रविष्ट हो गई और अफ़गान लोग पराजित हो गये। लगभग २०० दुष्ट बन्दी बना लिये गये। अन्य लोगों की हत्या कर दी गई।

शेर

'यद्यपि शत्रु की सेना शक्तिशाली रही होगी
बादशाह की पताका का शीतल पवन उन्हें आँधी की भाँति उड़ा ले गया।'

(१२) मीरक मुग़ल ने, उस पड़ाव पर जहाँ से कि विजयी शाहज़ादा विदा हुआ था फ़तहनामा[1] एवं आठ अनगर रूमी हाथी तथा अफ़गानों की सेना के बन्दी एवं उनके सिरों को लेकर बादशाह के चरणों का चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। शाही आदेशानुसार बन्दियों को इस आशय से उस्ताद अली कुली के सिपुर्द कर दिया गया कि वह उन्हें तोप तथा बन्दूक का निशाना बना दे। हिसार फ़ीरोज़ा की सरकार एवं आसपास के स्थान, जिनकी जमा[2] एक करोड़ थी, तथा एक करोड़ नक़द सम्मानित शाहज़ादे को उसकी वीरता के पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया[3] गया।

दाऊद खाँ तथा अन्य अफ़गान अमीरों के विरुद्ध सेना का भेजा जाना

तदुपरान्त विजयी सेना ने शाहबाद से दो मंज़िल पार करके यमुना तट पर पड़ाव किया। यह समाचार निरन्तर प्राप्त होने लगे कि सुल्तान इबराहीम एक बहुत बड़ी सेना लेकर युद्ध करने के लिये आ रहा है। शाही सेना इस स्थान से दो अन्य मंज़िलें पार कर चुकी थी कि ख्वाजा कलाँ बेग का एक सेवक हैदर कुली, जो शत्रुओं के विषय में पता लगाने के लिये भेजा गया था, लौट आया और उसने निवेदन किया कि दाऊद खाँ तथा सुल्तान इबराहीम के कुछ अमीर ५-६ हज़ार अश्वारोहियों सहित यमुना नदी पार कर के सुल्तान इबराहीम के शिविर से ३-४ कोस की दूरी पर पड़ाव किये हुए हैं। उस सेना के विनाश हेतु सैयिद महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा आदिल सुल्तान, सुल्तान जुनैद बरलास शाह मीर हुसैन, अमीर कूतलूक़ कदम, अमीर यूनुस अली, अमीर अब्दुल्लाह किताबदार अमीर महम्मद परवानची तथा अमीर कित्ता बेग नियुक्त किये गये।

ये वीर यमुना नदी पार करके अचानक शत्रु की सेना पर टूट पड़े। वे[4] लोग युद्ध के लिये अग्रसर

१ विजय पत्र।
२ राजस्व।
३ फ़िरिश्ता के अनुसार इस कारण कि यह हुमायूँ का प्रथम युद्ध था उसे हिसार फ़ीरोज़ा तथा जालंधर की अक्ता प्रदान कर दी गई।
४ शत्रु।

हुए और उन्होंने यथा-सम्भव वीरता तथा पौरुष प्रदर्शित करने में कमी न की किन्तु क्षण भर में बादशाह की सेना के वीरों ने उनको भगा दिया और बहुत से लोगों की हत्या कर दी।

शेर

'जब भाग्य बादशाह का साथ देता है और समृद्धि पथ प्रदर्शन करती है,
तो उसकी सेना की युद्ध के दिन विजय एवं सफलता उसकी सेवक बन जाती है।"

कुछ लोगों को उन्होंने बन्दी बना लिया और भागते हुए शत्रुओं का पीछा किया। जो लोग बच (१३) गये वे अत्यधिक कठिनाई के बाद अपने प्राण सुरक्षित लेकर सुल्तान इब्राहीम के शिविर में पहुँच सके। उसके शिविर में हाहाकार मच गया। शत्रुओं के कुछ सरदार बहुत से बन्दियों सहित एवं दस हाथी राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किये गये। शाही आतंक एवं दंड के प्रदर्शन हेतु उन लोगों की हत्या का आदेश दे दिया गया।

बाबर द्वारा युद्ध की तैयारी

जब इस पड़ाव से कूच किया गया तो अनुपेक्षीय शाही आदेशानुसार, सेना के दायें, बायें तथा मध्य भाग को सुव्यवस्थित कर बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ईश्वर की छाया[1] की उचित राय का आदेश हुआ कि समस्त सेना प्रयत्न कर के गाड़ियों की व्यवस्था करे। इस प्रकार ८०० गाड़ियाँ एक दिन में तैयार हो गई। उस्ताद अली कुली को आदेश दिया गया कि रूम के तोपखानों की प्रथानुसार गाड़ियों को जंजीर एवं गाय की खाल की रस्सी से बाँध दे। दो-दो गाड़ियों के मध्य में ६ ७ तोबड़े[2] रखवा दिये गये ताकि युद्ध के दिन बन्दूक चलाने वाले अराबों एवं तोबड़ों के पीछे से निश्चिन्त हो कर बन्दूक चला सकें। एक मंजिल पर ५-६ दिन तक इन सामानों की तैयारी एवं प्राप्ति के लिये ठहरना पड़ा।

पानीपत में पड़ाव

तदुपरान्त समस्त निष्ठावानों ने अपनी कमी के बावजूद शत्रुओं की अपार सेना को देखते हुये इस आयत[3] के अनुसार कि, "ईश्वर की कृपा से कम संख्या वालों को अधिक संख्या वालों पर विजय हो जाती है,' यह निश्चय किया कि पानीपत के नगर को सेना के पीछे करके पड़ाव किया जाये। सेना के सामने गाड़ियों की पंक्तियों को रख कर उनके पीछे शरण ली जाये। अश्वारोही तथा पदाती गाड़ियों के पीछे बाड़ों तथा बन्दूकों से युद्ध करें। अन्य अश्वारोही दोनों बाजुओं के सिरों से निकल कर युद्ध करें। यदि शत्रु की ओर से अधिक शक्ति का प्रदर्शन हो तो वे पुनः गाड़ियों के पीछे लौट आयें।

बृहस्पतिवार अन्तिम जमादि-उल-आख़िर (१२ अप्रैल १५२६ ई०) को पानीपत नगर से ६ कोस पर शत्रु की सेना ने पड़ाव किया। सुल्तान इब्राहीम की सेना में एक लाख सवार तथा एक हज़ार हाथी थे। बाबर की सेना में १५,००० अश्वारोहियों तथा पदातियों का अनुमान लगाया गया। जब

१ बाबर।
२ सम्भवतः मिट्टी के भरे बोरे। बदायूनी की मुन्तख़बातुत्तवारीख़ में यही है। बाबर नामा तथा अकबर नामा में तोरह है।
३ क़ुरान शरीफ़ के वाक्य।

(१४) पानीपत मे पड़ाव हुआ तो थोड़े थोड़े सिपाही शत्रु के विरुद्ध प्रस्थान कर के उनकी अत्यधिक सेना से युद्ध करते थे और विजय प्राप्त करते थे।

शेर

"जिस बादशाह की सहायता ईश्वर की कृपा करती है,
यदि समस्त संसार भी दुष्ट शत्रुओ से भर जाये तो क्या भय है,
ईश्वर की सहायता का जौशन[1] उसके वक्ष पर होता है
उसके सिर पर होता है, ईश्वर की कृपा का शिरस्त्राण।'

समय समय पर शाही सेना वाले शत्रुओ के सिरों को घोड़ों की जीन म लटका कर विजयी शिविर म लाते थे। यद्यपि शाही सेना ने उन पर कई बार छापे मारे किन्तु उन लोगो पर कुछ भी प्रभाव न हुआ और उन लोगो ने कोई ऐसी बात न की जिससे पता चलता कि वे आगे बढना अथवा पीछे हटना चाहते हैं।

अन्त मे कुछ "हिन्दी"[2] अमीरो ने जोकि बादशाह के प्रति निष्ठावान् हो चुके थे इस असमजस को दूर करने के लिये रात्रि मे छापा मारना उचित समझा। बादशाह ने इस बात को पसन्द कर लिया। शाही आदेशानुसार महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुलैमान मीर्जा, आदिल सुल्तान, खुसरो बेग कूकूल्ताश शाह अमीर हुसेन, अमीर सुल्तान जुनैद बरलास, अमीर मुहिब्ब अली खलीफा, अमीर वली खाजिन, अमीर मुहम्मद बख्शी, जान बेग, सुल्तान इबराहीम के शिविर की ओर रवाना हुये। सयोग से वे सुबह होते होते शत्रुओ के शिविर मे पहुचे और लश्कर के भीतर प्रविष्ट हो कर वीरता प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ लोगो ने शत्रु के शिविर के समीप अत्यधिक प्रयत्न किया और उन लोगो मे से बहुत बडी (१५) सख्या को नष्ट कर दिया। बादशाह के किसी भी हितैषी को कोई हानि न हुई किन्तु शत्रु भी छिन्न भिन्न न हुये और अपने स्थान पर दृढ रहे।

सक्षेप मे शुक्रवार ८ रजब ९३२ हि० (२० अप्रैल १५२६ ई०) को मौत सुल्तान इबराहीम के गरेबान म हाथ डाल कर उसे बादशाही सेना के सामने लाई।[3] बादशाही सेना सीसे की दीवार के समान, लोहे के वस्त्र धारण करके तथा विजय के आभूषण से अपने आप को सजा कर वीरता के रण-क्षेत्र मे डट गई और विजयी पताकाये फहरा दी। बादशाह ने स्वय सेना के मध्य भाग म उसी प्रकार स्थान ग्रहण किया जिस प्रकार शरीर मे आत्मा रहती है। अग्र भाग, दाया बाजू तथा बाया बाजू उचित रूप से युद्ध के लिये उद्यत हो गये। जब दोनो ओर की सेनाओ ने एक दूसरे के निकट पहुच कर, एक दूसरे को शत्रुता की दृष्टि से देखा तो मृत्यु रूपी अटल फरमान जारी किया गया कि बाईं ओर से अमीर कराकूज़ी, अमीर शेख अली, अमीर अली, अबू मुहम्मद नेज़ाबाज़ तथा शेख जमाल और दाईं ओर से वली किज़ील, बाबा कश्का तथा समस्त मुग़ल समूह दो भागो मे विभाजित हो कर शत्रु की सेना के पीछे पहुच कर शत्रु से युद्ध करे। सामने दायें एव बाये बाज़ू के समस्त सरदार और फौजे खासा[4] से, अमीर मुहम्मदी कूकूल्ताश, अमीर यूनुस अली, अमीर शाह मनसूर बरलास, अमीर अहमदी परवानची तथा अब्दुल्लाह किताबदार

१ कवच।
२ हिन्दुस्तानी।
३ इस वाक्य का अधिकाश अफ़ग़ान इतिहासकारों ने भी प्रयोग किया है।
४ विशेष शाही सेना।

युद्ध हेतु अग्रसर हों। जब शत्रुओं की सेना दायें बाजू की ओर तीव्र आक्रमण करने लगी तो अमीर अब्दुल अज़ीज़ को, जो सुरक्षित सेना में था, आदेश हुआ कि वह कुमक के लिये पहुच जाये। जब युद्ध के जगल के उन सिंहों को युद्ध की अनुमति प्राप्त हो गई तो उन्होने द्रुतगामी घोडो को आगे बढाया और आगे, पीछे, दाये और बायें इस प्रकार बाणों की वर्षा की कि शत्रुओं के पर निकल आये और पक्षियों के समान उनकी आत्मा के पक्षी परलोक मे उडने ही वाले थे किन्तु दोधारी तलवार की कैंची से वे पर कटते जाते थे और उनके पक्षी होने का सन्देह समाप्त होता जाता था। विद्रोहियों के सिर भारी गदाओं द्वारा नरम होते (१६) जाते थे और शत्रुओं की पक्तियों में मौत का बाजार गरम था।

शेर

"रण क्षेत्र के जगल मे रक्त की नदिया इस प्रकार बह रही थी
कि सैलाब के समान वे वीरों को बहाये लिये जा रही थी।
जो शीतल पवन उस स्थान से प्रात काल आया,
ले गया वह हृदय के रक्त की गध मस्तिष्क तक।'

अन्ततोगत्वा ईश्वर की कृपा से अभागे दुष्ट शत्रु पराजित हो गये। अधिकाश मार डाले गये और थोडे से जो अधमरे तथा आहत हो गये थे निर्जन जगलों म मुक्ति की आशा मे भाग खडे हुये और चील, कौओं का भोजन बन गये। सुल्तान इब्राहीम की एक उजाड स्थान पर बिना पहिचाने हुये उसके निकटवर्तियों के एक समूह के साथ हत्या कर दी गई। अन्त मे उसे पहिचान कर उसका सिर सुल्तानों को शरण प्रदान करने वाले दरबार मे लाया गया। लगभग ५-६ हज़ार सैनिक सुल्तान इब्राहीम के निकट एक स्थान पर कत्ल कर दिये गये। पूरे युद्ध मे कई हज़ार आदमियों ने मौत का शर्बत चख लिया।

बादशाह ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता एव उसकी स्तुति की पताका बलन्द की। पहिले दिन ही कस्बा एव विलायतों म विजय-पत्र भेज कर देहली की ओर प्रस्थान किया गया। वह अद्वितीय नगर शहशाह के प्रकाश द्वारा प्रज्वलित हो उठा। शुक्रवार के दिन मिम्बरों[1] पर एव जामा मस्जिद म बादशाह के शुभ नाम का ख़ुत्बा पढा गया।

हुमायूँ को आगरा भेजना

बादशाह ने अटल आदेश दिया कि शाहज़ादा हुमायू मीर्ज़ा, अमीर ख़्वाजय कला, अमीर मुहम्मदी कूकूल्ताश, अमीर यूनुस अली, अमीर शाह मनसूर बरलास तथा अन्य बहुत से लोग शीघ्रातिशीघ्र आगरा की ओर प्रस्थान करके उस किले को अधिकार मे कर लें और उस (स्थान) के ख़ज़ाने को सर्व साधारण (१७) एव विशेष व्यक्तियों के अपहरण से सुरक्षित रक्खें। उनके पीछे-पीछे बादशाह ने भी आगरा की ओर प्रस्थान किया और उस नगर मे पडाव किया।

बाबर का आगरा पहुँच कर दान पुण्य

प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार हवेली प्रदान की और दान-पुण्य प्रारम्भ करके ७० लाख

१ मस्जिद का मच।

शाहज़ादा मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा को प्रदान किये। अमीरो मे से प्रत्येक को १० लाख, ८ लाख तथा ५ लाख उनकी श्रेणी के अनुसार प्रदान किया।

शेर

"जो कोई रण-क्षेत्र मे अपने प्राणो की बलि देता है,
उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करने के लिये उदारतापूर्वक धन-सम्पत्ति न्योछावर कर।
यदि वीर हृदय के भी आदमी हों,
तो वे भी युद्ध न करेंगे यदि उनका ध्यान न रक्खा जाये।"

समस्त वीरों एव सेवकों को नक़द धन एव अन्य सम्पत्ति बाटी गई। सेना के समस्त प्रतिष्ठित लोगो, मैथिदो, शेखो,[1] विद्यार्थियो, परिजनो, व्यापारियो, बाज़ार वालो, सर्व साधारण एव सम्मानित लोगो मे से प्रत्येक को पर्याप्त धन-सम्पत्ति प्रदान की गई। अन्त पुर की स्त्रियो के लिये उत्तम जवाहिरात, अप्राप्य वस्त्र, सोने चादी (के सिक्के) एव उपहार निश्चित किये गये। दरबार के समस्त गायकों, एव शहशाह की दया की प्रतीक्षा करने वालो को समरक़न्द, ख़ुरासान, एराक तथा काशगर इनाम भेजे गये। मक्का, मदीना तथा पवित्र मज़ारो को चढावे प्रेषित किये गये। काबुल, ख़ूस्त तथा बदख़्शा के निवासियो मे से इस कारण कि वहा के लोग पवित्र जीवन व्यतीत करने मे बडे प्रसिद्ध हैं, प्रत्येक निवासी को चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री एक-एक शाहरुख़ी इनाम मे भेजी गई। उस धन के पहुचाने एव वितरण के लिये ईमानदार लोग नियुक्त किये गये। बादशाह के दरबार से जितने लोग सम्बन्धित थे, चाहे वे उपस्थित हों अथवा अनुपस्थित, कोई भी ऐसा व्यक्ति न रह गया था जिसे हिन्दुस्तान की लूट की धन-सम्पत्ति से लाभ प्राप्त न हुआ हो।

हिन्दुस्तानवालों का विरोध

(१८) क्योंकि बादशाह को समस्त मानव के कल्याण की अत्यधिक इच्छा थी, अत उन्होने चारो ओर प्रोत्साहनयुक्त फरमान भेजे किन्तु हिन्दुस्तान के अभागे लोग मेल जोल के अभाव के कारण इतना भयभीत थे एव इतनी घृणा करने लगे थे कि उन लोगो ने लेशमात्र को भी उनकी आज्ञाकारिता स्वीकार न की और जगलो एव पहाडो में भाग गये तथा दुर्भाग्य के पथ-गामी बन गये। किले वालो ने अपने किलो के द्वार बन्द कर लिये और किलो की रक्षा की व्यवस्था करने लगे। देहली तथा आगरा के किलो के अतिरिक्त, जो बादशाह के शुभ चरणों के आशीर्वाद से विजय हो चुके थे, शेष सभी किले विरोध पर दृढ थे। सम्भल का किला, कासिम सम्भली के अधीन था। ब्याना के किले मे निज़ाम ख़ा था। अलवर का किला, हसन ख़ा मेवाती ने मेवात की विलायत से दृढ बना रक्खा था। ग्वालियर के किले को तातार ख़ा सारगख़ानी ने दृढ बना रक्खा था। रापरी की हुसेन ख़ा लोहानी, इटावा की कुतुब ख़ा तथा काल्पी की आलम ख़ा रक्षा कर रहे थे। कन्नौज का क़स्बा तथा गगा नदी के उस पार के सभी स्थान विद्रोही अफ़ग़ानो के अधिकार मे थे। वे लोग सुल्तान इबराहीम के राज्यकाल मे भी आज्ञाकारी न थे। शाही सौभाग्य के सूर्य के उदय होने तथा अफ़ग़ानी पताकाओ के पतन के उपरान्त उन्होंने अन्य बहुत सी विलायतों[2] पर भी

१ सूफ़ियों, सन्तों।
२ प्रदेशों।

अधिकार जमा लिया। उन्होंने बिहार खां के पुत्र को बादशाह बना कर उसकी उपाधि सुल्तान मुहम्मद रख दी। नसीर खां लोहानी, मारूफ फर्मुली तथा बहुत से अन्य प्रतिष्ठित अफ़गानों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली, और कुत्सित योजनायें बनाने लगे। आज्ञाकारिता का अभाव इतना बढ़ गया था कि महावन नामक कस्बे को, जो आगरा से २० कुरोह[1] पर है, सुल्तान इबराहीम के मरगूब नामक एक दास ने दृढ़ बना लिया था और आज्ञाकारिता स्वीकार न करता था।

अमीरों का विद्रोहियों के विरुद्ध नियुक्त होना

संयोग से उस वर्ष हिन्दुस्तान में इतनी अधिक गरमी पड़ी कि इस देश के निवासियों में से भी बहुत से लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये। इस कारण बादशाह ने विजयी सेना को आगरा में कुछ समय आराम दिया (१९) और शाहंशाही छत्र छाया में उनको आश्रय प्रदान किया। जब वायु की गरमी में कुछ कमी हुई और आंधी के तेज झोकों का स्थान वर्षा ऋतु के शीतल पवन ने ले लिया और इस हृदय-ग्राही पवन के चलने का भी आधा काल समाप्त हो गया तो प्रतिष्ठित अमीर प्रदेशों एवं किलों की विजय हेतु राज्य की विभिन्न दिशाओं में भेजे गये। उनके साधारण से प्रयत्न से उद्देश्य की पूर्ति के द्वार खुल गये। दैवी कृपा की पताकायें बादशाह के उच्च पदाधिकारियों के सिर पर इस प्रकार बलन्द हुईं कि सभी भागे हुये जो दूर-दूर पड़े थे एवं वे लोग जो निराश हो चुके थे, उनके द्वारा बादशाह की कृपा की छत्र-छाया में वापस आ गये। फीरोज खां, सारंग खां, मुस्तफा फर्मुली का भाई शेख बायजीद, शेख हबीब एवं अन्य अफ़गान अमीरों ने बादशाह की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। उन्हें उचित वृत्ति एवं जागीर प्रदान करके सम्मानित किया गया। शेख घूरन[2], दोआब के मध्य के समस्त तर्कशबन्दों[3] सहित निष्ठापूर्वक सम्मानित दरबार में उपस्थित हुआ और उसकी निष्ठा के कारण उसे प्रतिष्ठित अमीरों में सम्मिलित कर लिया गया।

परगनों एवं सरकारों का वितरण

जब पवित्र हृदय अपार खज़ाने के वितरण से निश्चिन्त हो गया तो सम्मानित ध्यान आबाद परगना एवं सरकारों के वितरण की ओर आकृष्ट हुआ। उन्होंने राज्य के समस्त भागों में से प्रत्येक, किसी न किसी प्रतिष्ठित सुल्तान तथा भाग्यशाली अमीर को प्रदान कर दिया। सम्बल की विलायत शाहजादा मुहम्मद हुमायूं मीर्ज़ा की वृत्ति में निश्चित की गई। इसी बीच में कासिम सम्बली के प्रार्थना पत्र सर्वसाधारण को शरण प्रदान करने वाले दरबार में प्राप्त हुये कि "बिबन हराम ख्वार शाही शिविर से भाग कर उस क्षेत्र में पहुंच गया है और उसने सेना एकत्र करके सम्बल के किले का अवरोध कर लिया है।" शाही आदेश हुआ कि, "अमीर किता बेग, बाबा कश्का मुग़ल का भाई मुल्ला कासिम एवं उसके अन्य भाई, मौलाना आफाक, शेख घूरन तथा दोआब के मध्य के तर्कशबंद तथा अमीर हिन्दू बेग शीघ्रातिशीघ्र उन पर आक्रमण करें।"

सम्बल को अधिकार में करना

(२०) अमीर लोग शाही आदेशानुसार गंगा नदी पार करने में व्यस्त हो गये। मलिक कासिम

[1] कोस।
[2] कहीं कहीं 'खूरन' भी लिखा गया है।
[3] धनुर्धारियों।

अपने भाइयों एव शेष विजयी सेना को लेकर बढता चला गया और लगभग १५० आदमियों सहित मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के समय सम्बल पहुच गया। विद्रन भी एक बहुत बडी भीड लेकर युद्ध हेतु अग्रसर हुआ। मलिक कासिम ने अविलम्ब तथा प्रतीक्षा किये बिना युद्ध प्रारम्भ कर दिया। पलक झपकाते ही उसने शत्रु को भगा दिया और विजय प्राप्त कर ली। घोर रक्तपात हुआ। उनके कई हाथी, घोडे एव धन-सम्पत्ति, अधिकार में कर लिये गये।

दूसरे दिन प्रात काल जब शेष अमीर लोग सम्भल पहुचे तो कासिम सम्बली अवरोध से मुक्ति प्राप्त करके अमीरो की गोष्ठी मे पहुचा और कृतज्ञता एव अधीनता का कालीन बिछाया किन्तु किले का समर्पण वह आज कल पर टालता रहा और रोज़ाना एक नया बहाना बनाता रहता था। अमीरों ने एक युक्ति से कार्य लिया। एक दिन कासिम को शेख पूरन, (अमीरो) की गोष्ठी मे लाया। विजयी सैनिक उसे सूचना दिये बिना किले मे प्रविष्ट हो गये और उन्होंने कासिम तथा उसके सम्बन्धियो को शाही राजसिंहा सन की सेवा मे भेज दिया।

निजाम खा की शर्तें

उन्ही दिनों मे एक सेना ब्याना की विजय हेतु नियुक्त हुई। वहा निज़ाम खा हाकिम था। उसने शाही आदेश के पालन करने के लिये ऐसी शर्तें प्रस्तुत की जिनका स्वीकार करना उसकी दशा एव स्थिति को देखते हुए असम्भव था।

हुमायू का पूर्व की ओर प्रस्थान

इसी बीच मे राणा सागा, जो हिन्दुस्तान के बहुत बडे राजाओ म से था, अपने स्थान से आक्रमण हेतु अग्रसर हुआ। उसने कन्दार[1] के किले को जो हसन वल्द मकन के अधीन था, घेर लिया और उपद्रव एव विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। अल्प समय मे हसन वल्द मकन ने उससे वचन ले कर कन्दार का किला उसे दे दिया। उस समय शाही आदेश हुआ कि अमीर सुल्तान जुनैद बरलास, आदिल सुल्तान, अमीर मुहम्मदी कूकूल्ताश, एव अमीर शाह मनसूर बरलास प्रतिष्ठित सुल्तानो तथा मलिको सहित जाकर धौलपुर के किले को मुहम्मद जैतून से ले ले और अमीर सुल्तान जुनैद बरलास को सौप कर ब्याना के किले (२१) के अधिकारी निज़ाम खा पर चढाई कर दें और उस किले की विजय एव निज़ाम खा के विनाश का यथा सम्भव प्रयत्न करे।

शक्तिशाली सेनाओ को नियुक्त करने के उपरान्त बहुत से अनुभवी अमीरो को आदेश हुआ कि वे राजसिंहासन के समक्ष उपस्थित हो। इन लोगों को एकत्र करके बादशाह ने एक परामर्श गोष्ठी का आयोजन किया और कहा, "लोहानी विद्रोहियो ने जिनमे लगभग ५०,००० अश्वारोही हैं, कन्नौज से आगे बढ कर विद्रोह कर दिया है। राणा सागा कन्दार के किले पर अधिकार जमा कर दूसरी ओर मे विद्रोह एव शत्रुता पर तुला हुआ है। वर्षा जिसके कारण कूच नही किया जा रहा था, अब कम हो रही है अत दोनो दिशाओ मे से किसी न किसी ओर प्रस्थान करना परमावश्यक है। क्योंकि राणा सागा की शक्ति का पता था और उसके विद्रोह के विषय में जो कुछ ज्ञात हुआ उसका अन्त में पता चला, और वह दूर जान पडता था अत परामर्श-दाताओं ने निवेदन किया कि, "राणा सागा इस

१ 'बाबर नामा' एवं 'अकबर नामा' में कधार।

विलायत से दूर है और उसका निकट पहुच जाना बडा कठिन है अत सर्व प्रथम लोहानियो को नष्ट करना, जो बड़े निकट आ गये हैं, अत्यधिक आवश्यक एव उचित ज्ञात होता है।" बादशाह ने अमीरो के परामर्श को पसन्द किया और यह निश्चय हुआ कि बादशाह स्वय पूर्व दिशा के विद्रोहियों के दमन हेतु प्रस्थान करें। इस अवसर पर मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा ने निवेदन किया कि, "यदि हज़रत बादशाह उचित समझें तो यह सेवा दास को सौप दें। आशा है कि शाही प्रताप से यह कार्य उचित रूप से सम्पन्न हो जायेगा।" बादशाह को यह बात बडी पसन्द आई और यह निश्चय हुआ कि जो अमीर धौलपुर की विजय हेतु नियुक्त हुये हैं, वे भाग्यशाली शाहज़ादे के अधीन पूर्व की ओर प्रस्थान करें। सैयिद मह्दी, ख्वाजा मुहम्मद तथा मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा उस सेना के साथ जो इटावा की विजय हेतु नियुक्त हुई है, शाहज़ादे की अधीनता मे प्रस्थान करें। शाहज़ादे ने इन अमीरो को आगरा के अधीनस्थ जलेसर नामक स्थान पर एकत्र किया (२२) और उपर्युक्त सुल्तानो के उस स्थान पर जमा हो जाने के लिये कुछ दिन तक पडाव किया। तदुपरान्त उसने पूर्व की ओर प्रस्थान किया और उस पूरी विलायत एव कस्बों को विजय कर के जौनपुर मे पडाव किया।

ब्याना के किले पर अधिकार

इसी बीच मे राणा सागा अपनी शक्ति बढा कर हसन खा मेवाती तथा उस प्रदेश के अन्य दुष्टों के बहकाने पर बादशाही राज्य की ओर अग्रसर हुआ। ब्याना के हाकिम निज़ाम खा ने उसकी दुष्टता से अवगत होकर बादशाह के दरबार मे प्रार्थना-पत्र भेजे। क्योकि निज़ाम खा मुसलमान था और यह ज्ञात था कि वह राणा सागा का विरोधी है, अत मीर सैयिद रफी उद्दीन मुहद्दिस[1] सफवी, जो अपने युग के आलिमो के नेता थे, शाही दासो की ब्याना का किला समर्पित करवा कर, उसे बादशाह के चरणों का चुम्बन कराने के लिये शाही दरबार मे लाये और उसकी सिफ़ारिश की। बादशाह ने उसके प्रति अत्यधिक कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की।

ग्वालियर की विजय

उसी समय तातार खा सारगखानी ने, जो ग्वालियर के किले का अधिकारी था, जब यह देखा कि राणा सागा कन्दार के किले पर अधिकार जमा कर ब्याना के समीप पहुच गया है और ग्वालियर के बहुत से रायो, राजाओ, तथा ज़मीदारो एव कुछ मुसलमानों ने मिल कर ग्वालियर की विजय का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया है तो वह उन लोगो के उपद्रव से परेशान हो कर ग्वालियर को समर्पित करने पर राज़ी हो गया और उसने (इस विषय) में सूचना करने के लिये बादशाह के दरबार मे राजदूत भेजे। बादशाह ने ख्वाजा रहीम दाद को खुरासानियो तथा हिन्दुस्तानियो के एक समूह का सेनापति बना कर ग्वालियर की ओर नियुक्त किया। शेख गूरन किनार को पिछली सेवाओं के कारण उन्नति देकर उनके साथ ग्वालियर का हाकिम नियुक्त कर के भेजा। मौलाना आफ़ाक तथा शेख धूरन को भी उनकी सहायतार्थ नियुक्त किया। जब यह सेना ग्वालियर पहुची तो तातार खा की राय बदल गई। उसने अधीनता स्वीकार न करना निश्चय कर लिया। इसी बीच मे शेख मुहम्मद गौस ने जिनके विषय मे इस ग्रन्थ मे अलग से लिखा जायेगा, निष्ठा प्रदर्शित करते हुए विजयी सेनाओ को सूचना दी कि, "राज्य के लिये यह उचित होगा कि किसी न किसी

१ हदीस वेत्ता।

युक्ति से सेना के कुछ लोग किले मे प्रविष्ट हो जायें और अपने उद्देश्य की पूर्ति कर ले।" क्योंकि शेख दावते इस्में आज़म इलाही[1] के ज्ञान मे निपुण थे अत उन्होंने किले की विजय हेतु अल्लाह के नामों मे से किसी (२३) नाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। विश्वास है कि उनकी प्रार्थना का बाण स्वीकृति के लक्ष्य पर लगा। सक्षेप मे, चाहे बुद्धि के उपाय से कहा जाये और चाहे बादशाह के नित्य प्रति उन्नतिशील सौभाग्य का आशीर्वाद समझा जाये और चाहे उस पवित्र दरवेश की प्रार्थना का प्रभाव बताया जाये, इन अमीरो ने तातार खा के पास यह सदेश भेजा कि "प्रतिष्ठित सेनाओ के इस ओर आने का उद्देश्य काफिरो के विद्रोह को शान्त करना है, न कि इस किले की विजय करना अत शत्रुओं द्वारा रात्रि मे छापे के भय के कारण यह समझ मे आता है कि कुछ लोग थोडी भी सख्या मे किले मे प्रविष्ट हो जायें और शेष सेना कोट के निकट शरण लिये रहे और जब अवसर आये तो सभी मिल कर बाहर निकल पडें और सगठित होकर विद्रोह की अग्नि को शान्त कर दें।" तातार खा ने बडे आग्रह के उपरान्त यह बात स्वीकार कर ली। उसने ख्वाजा रहीम दाद को कुछ लोगों सहित किले मे प्रविष्ट होने की अनुमति दे दी। ख्वाजा रहीम दाद ने प्रविष्ट हो कर कुछ लोगों को किले के द्वार के समीप इस आशय से छोड दिया कि रात्रि मे अवसर पाकर वे द्वार खोल दें ताकि बाहर वाले भी निश्चिन्त हो कर भीतर प्रविष्ट हो जायें। उन लोगो ने रात्रि मे द्वार खोल कर सेना को प्रविष्ट करा लिया। तातार खा किला समर्पित करने पर विवश हो गया और उसे किला ख्वाजा रहीम दाद को समर्पित करना पडा तथा उसने नित्य-प्रति उन्नतिशील शाही प्रताप के दृढ किले मे शरण ली।

धौलपुर पर अधिकार

मुहम्मद जैतून ने भी विवश होकर धौलपुर का किला समर्पित कर दिया और शाही चौखट के चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया।

शेर

'पृथ्वी ससार पर राज्य करने वाले के सौभाग्य के एश्वर्य से,
स्वर्ग के मैदान तथा जन्नत के उद्यान के समान हो गई।
प्रत्येक दिशा से उसके पास विजय के सुखद समाचार पहुचे,
सभी स्थानों पर हृदय ने शान्ति की आवाज़ सुनी।'

हुमायूं का बुलवाया जाना

अततोगत्वा जब राणा सागा ब्याना के क्षेत्र मे पहुच गया तो वह बादशाह द्वारा विजय किये हुये प्रदेशो पर अधिकार जमाने लगा। उसके प्रभुत्व, आक्रमण-शक्ति एव सेना की सख्या मे नित्य प्रति वृद्धि होने लगी। बादशाह सलामत थोडी सी सेना के साथ आगरा की राजधानी मे थे। शेष विजयी सेना विभिन्न दिशाओ मे नियुक्त की जा चुकी थी, अत शाहज़ादा मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा को बुलवाने के लिए एक (२४) अनुपेक्षीय आदेश पूर्व की विलायत की ओर इस आशय से भेजा गया कि वह राजधानी जौनपुर को कुछ अमीरो एव सरदारो को सौंप कर स्वय शीघ्रातिशीघ्र लौट आये। जिस समय भाग्यशाली शाहज़ादा

१ ईश्वर के उत्कृष्ट नामों में से एक नाम जिसका ज्ञान केवल ईश्वर के बहुत बडे बडे भक्तों को ही होता है। इस ज्ञान वालों के लिये बडे बडे कार्य कर डालना साधारण सी बात होती है।

पूर्व की ओर के विद्रोहियो पर विजय पाकर जौनपुर पर अधिकार जमा चुका था, उसे यह आदेश प्राप्त हुआ और स्थिति का पूर्ण ज्ञान हो गया।

हुमायू का गाज़ीपुर की ओर प्रस्थान

इसी समय नसीर खा के विषय मे ज्ञात हुआ कि उसका विचार गगा पार करके गाज़ीपुर से भाग जाने का है। शाहज़ादे ने उस ओर प्रस्थान करके नसीर खा का गाज़ीपुर से पलायन का मार्ग रोक दिया। उसे कठोर दड देकर (शाहज़ादे ने) खैराबाद एव बिहार को नष्ट भ्रष्ट करके भाग्यशाली पताकायें जौनपुर की ओर रवाना की।

कालपी के आलम खाँ का हुमायू के प्रयत्न द्वारा अधीनता स्वीकार करना

शाही आदेशानुसार उसने[1] ख्वाजा अमीर शाह हसन तथा अमीर सुल्तान जुनैद बरलास को जौनपुर का राज्य सौप कर बादशाही दरबार की ओर प्रस्थान किया। भाग्यशाली शाहज़ादे ने कालपी के हाकिम आलम खा को, जो अफ़गाना म सर्वश्रेष्ठ था समय की दृष्टि से रोक-थाम, चाहे युद्ध द्वारा सम्भव हो और चाहे सन्धि द्वारा आवश्यक समझ कर विजयी सेनाओ को कालपी की ओर रवाना किया। आलम खा ने शाही सेना के आतक के कारण आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और शाहज़ादा उसे अपने साथ शाही सेवा मे लाया। बादशाह ने उसे शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया।

ख्वाजा दोस्त खावन्द का काबुल से आगमन

उसी दिन सम्मानित ख्वाजा दोस्त खावन्द भी काबुल स शाही सेवा म पहुचा।

तोपख़ाने की तैयारी

क्याकि राणा सागा पर विजय प्राप्त करने के लिय पूरी तैयारी आवश्यक थी अत शाही आदेश हुआ कि तोपखाने की उचित व्यवस्था की जाये और उसका निरीक्षण कराया जाये। उस्ताद अली कुली ने उस सेवा को इस प्रकार सम्पन्न किया कि वह अत्यधिक कृपा का पात्र बना।

राणा साँगा की सेना के समाचार

दूसरे दिन राणा सागा से जिहाद के उद्देश्य से सम्मानित शिविर आगरा कस्बे के उपान्त म लगाय गय। इस पडाव पर काफिरो की सेना की विजय के समाचार निरन्तर प्राप्त होने लगे और यह ज्ञात हुआ कि वह दुष्ट काफिर चीटियो तथा टिड्डियो की सेना से भी बडी सेना लेकर ब्याना के समीप पहुच गया है। (२५) इस पडाव पर सेना एकत्र करने के लिये पडाव किया गया और सजावलो[2] को मुजाहिदो[3] को इकट्ठा करने के लिये नियुक्त किया गया।

१ हुमायूँ ने।
२ दूतों।
३ इस्लाम के लिय युद्ध करने वालों।

सीकरी में बाबर का पडाव

तदुपरान्त कूच का नक्कारा बज गया और थोडी सी यात्रा के उपरान्त मधाकर कस्बे मे पडाव किया गया। दूसरे दिन अनुभवी अमीरो के परामर्श से सीकरी की झील, जो अब फतहपुर के नाम से प्रसिद्ध है, के समीप पडाव किया गया। करावलो[1] को नियुक्त किया गया। यह समाचार एक बार प्राप्त हुये कि शत्रुओं ने बसावर नामक कस्बे को पार कर लिया है। इसी प्रकार शत्रुओं के एक पडाव के उपरान्त दूसरा पडाव पार करने के समाचार निश्चयपूर्वक प्राप्त होने लगे, यहा तक कि उन लोगो ने विजयी सेना से युद्ध करने के लिये दो तीन कुरोह पर पडाव कर दिया।

राणा साँगा से युद्ध करने के विषय में परामर्श

फिरदौस मकानी ने सम्मानित अमीरो, समस्त विश्वासपात्रो, अपितु अधिकाश सर्वसाधारण को भी बुलवा कर परामर्श गोष्ठी आयोजित की। अधिकाश लोगो ने यह मत व्यक्त किया कि बादशाह सलामत कुछ किलो को दृढ बना कर स्वय अधिकाश सेना सहित पजाब की ओर चले जायें और प्रतीक्षा करें कि परोक्ष से क्या होता है। विश्व विजय करने वाले बादशाह ने प्रत्येक व्यक्ति की बात सुनने के पश्चात अत्यधिक सोच विचार करके कहा कि, "ससार के विभिन्न दिशाओं के मुसलमान बादशाह क्या कहेगे। और क्या कह कर मेरा स्मरण करेंगे? ससार वालो की कटु आलोचनाओ एव उनके द्वारा कलकित होने पर न भी दृष्टि डाली जाये तो कल कयामत मे ईश्वर के समक्ष मैं क्या उत्तर दूगा? मैंने इतना बडा राज्य एव मुसलमान बादशाह से छीन लिया और अत्यधिक लोगो की जो हमारे धर्म के अनुयायी थे, हत्या कर दी और स्वय बादशाह बन बैठा तो क्या आज ऐसे काफिर से जिहाद किये बिना और ऐसी दशा मे जब कि लेशमात्र को भी कोई शरई बहाना नही है, भाग खडा हू और इस बात की चिन्ता न करू कि काफिरो के हाथो यहा वालो की क्या दुर्दशा होगी? इस समय हृदय से शहीद हो जाने के लिये तैयार हो जाना चाहिये" और उन्होने जिहाद का नारा लगाया।

शेर

(२६)

"प्राण शरीर से अवश्य ही निकलेंगे,
यही उचित है कि वे इज्जत से निकलें।
ससार का अन्तिम लक्ष्य यही है,
कि यश के साथ नाम रहे और बस।"

इन मार्मिक शब्दो के प्रभाव से प्रत्येक के हृदय मे अग्नि भडक उठी। सभी लोगों ने कहा कि, "जो कुछ हमने सुना वह हमे स्वीकार है। हमारे प्राण आप पर न्योछावर हैं, जो कुछ आप आदेश देंगे, हम उसका पालन करने को तैयार हैं।" अततोगत्वा सब लोगों को सगठित रखने के लिये कुरान शरीफ लाया गया। सब लोग कुरान की शपथ लेकर ईश्वर की कृपा पर आश्रित हो गये। सेना के मध्य भाग, दायें एव बायें भाग तथा बाजुओं को सुव्यवस्थित किया गया और सब लोग फातेहा[2] पढ कर युद्ध हेतु अग्रसर

[1] समाचार लाने वाला सैनिक दल।
[2] कुरान का प्रथम सूरा (अध्याय) जो ईश्वर से सहायता एवं शुभकामना के उद्देश्य से पढा जाता है।

हुये। पौरुष के मैदान के सिंहों एव वीरता के युद्ध के वीरो ने इतने हर्ष एव उल्लास से युद्ध किया कि माना वह रण-क्षेत्र न हो अपितु जश्न की सभा। विशेष रूप से शाहज़ादा मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा ने अत्यधिक वीरता का प्रदर्शन किया और कई बार काफिरों की सेना मे प्रविष्ट हो कर बडा घोर प्रयत्न किया। ईश्वर ने इस्लाम के बादशाह को विजय प्रदान की और काफिरो को पराजित एव अपमानित किया। यह विश्वास किया जाता है कि परोक्ष की सेनाओं ने इस्लामी सेना की सहायता की।

हसन खाँ मेवाती की हत्या

इस युद्ध मे हसन खा मेवाती ने मुर्तिदो[1] के समान व्यवहार करते हुए उस हरबी[2] काफिर का साथ दिया। यद्यपि उसके साथ उसकी विशेष सना ३०,००० की सख्या मे थी, किन्तु उसके एक ऐसा बाण लगा कि वह अपनी सेना को वही छोड कर भाग गया।

देश में शान्ति स्थापित रखने का प्रयत्न

इस विजय के उपरान्त जो बादशाह को परोक्ष से प्राप्त हुई थी, उन्हाने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए राज्य के चारों ओर विजयपत्र भेजे। हिन्दुस्तान की विजय की ओर से वे पूर्णत निश्चिन्त हो गये। नित्य प्रति शासन व्यवस्था को ठीक करके विद्रोहियो एव विरोधियो से उसे मुक्त कर दिया।

बाबर की मृत्यु

(२७) ९३७ हि० (१५३० ई०) म बादशाह रुग्ण हो गये और ५ जमादि-उल-अव्वल ९३७ हि० (२५ दिसम्बर १५३० ई०) को उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने ३८ वर्ष तक राज्य किया। इसमे से ५ वर्ष हिन्दुस्तान मे राज्य किया। वे १२ वर्ष की अवस्था मे बादशाह हुए और ५० वर्ष की अवस्था मे मृत्यु को प्राप्त हुये।

शेर

"आकाश के पास अत्याचार के अतिरिक्त कोई अन्य गुण नही
उसका कार्य यही है कि वह हर क्षण किसी हृदय का खून करे।
वह उस समय तक लाले के फूल को सम्मान का मुकुट नही देता,
जब तक कि वह किसी ताज वाले बादशाह को पद-दलित नही कर देता।
यह हृदय ग्राही राज प्रासाद इतना ठडा लगता है
फिर जब कोई अपने लिये स्थान गरम कर लेता है,
तो कहता है कि उठ जा।
आकाश के पास अत्याचार के अतिरिक्त कोई
अन्य व्यवसाय नही
निष्ठा उस कृतघ्न के स्वभाव मे नही।

१ जो इस्लाम स्वीकार करने के उपरान्त काफ़िर हो जाये।
२ वह काफ़िर जिससे मुसलमानों का युद्ध हो रहा हो।

बाबर की विशेषतायें

इस बादशाह की विशेषताओं में सब से विचित्र विशेषता यह है कि दो पायताबा मोजों[1] से किले के कंगूरों पर कूदते हुये दौड़ते चले जाते थे। कभी-कभी दो आदमियों को बग़ल में लेकर वे एक कंगूरे से दूसरे कंगूरे पर फाँद जाते थे। उन्होंने एक लिपि का आविष्कार किया था जिसे बाबरी लिपि कहते थे। उस लिपि में कुरान शरीफ लिख कर उन्होंने मक्का भेजा था। वे फारसी तथा तुर्की भाषा में बड़ी उत्तम कविता करते थे। वे आलिमों एवं विद्वानों को अत्यधिक आश्रय प्रदान करते थे। उन्होंने कलाम[2] तथा हनफी[3] फिक़ह के ऊपर तुर्की भाषा में एक पुस्तक की पद्य में रचना की थी जिसका नाम 'मुबीन' है। अरूज से सम्बन्धित उनकी रचनायें बड़ी प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने 'वकाये'[4] की रचना तुर्की भाषा में की जो बड़ी ही उत्तम रचना है।

निजामुद्दीन अली खलीफा का षड्यन्त्र

(२८) जब फिरदौस मकानी बाबर बादशाह की आगरा में मृत्यु हो गई तो उन दिनों इस इतिहास के संकलनकर्ता का पिता मुहम्मद मुक़ीम हरवी उनके सेवकों में सम्मिलित था और दीवाने बयूतात[5] की सेवा हेतु नियुक्त था। क्योंकि अमीर निजामुद्दीन अली खलीफा, जिस पर शासन प्रबन्ध के कार्य अवलम्बित थे, भाग्यशाली शाहजादे मुहम्मद हुमायूं मीर्जा से किन्हीं कारणों से जो संसार में घटते रहते हैं, भयभीत था अतः वह उनके बादशाह होने के पक्ष में न था। जब वह ज्येष्ठ पुत्र के पक्ष में न था तो छोटे पुत्रों के पक्ष में कैसे हो सकता था। क्योंकि बाबर का जामाता महदी ख्वाजा, दानी एवं उदार व्यक्ति था और अमीर खलीफा की उससे बड़ी घनिष्ठता थी, अतः अमीर खलीफा ने उसे बादशाह बनवाना निश्चय किया। लोगों में यह बात प्रसिद्ध हो गई। वे महदी ख्वाजा के अभिवादन हेतु जाने लगे। वह भी इस बात को समझ कर लोगों से बादशाहों के समान व्यवहार करने लगा।

संयोग से मीर खलीफा, महदी ख्वाजा से भेंट करने पहुंचा। वह एक बड़े खेमे[6] में था। मीर खलीफा, संकलनकर्ता के पिता मुहम्मद मुक़ीम एवं महदी ख्वाजा के अतिरिक्त उस खेमे में कोई न था। मीर खलीफा थोड़ी देर ही बैठा था कि हज़रत फिरदौस मकानी ने उसे बुलवा लिया। जब मीर खलीफा, महदी ख्वाजा के खेमे से बाहर जाने लगा तो महदी ख्वाजा खेमे के द्वार तक उसके साथ-साथ उसे पहुंचाने गया और द्वार के मध्य में खड़ा हो गया। संकलनकर्ता का पिता उसके सम्मान के कारण उसके पीछे खड़ा रहा। महदी ख्वाजा के विषय में कहा जाता था कि उसमें थोड़ा बहुत पागलपन पाया जाता था। वह संकलनकर्ता के पिता की उपस्थिति को भूल कर मीर खलीफा की विदा के उपरान्त दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहने लगा,

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं। सम्भवतः मोज़ा अथवा जूता पहिने-पहिने।
२ इस्लाम का वह दर्शन जिसका आधार धर्म है।
३ अबू हनीफा के विचारों पर आधारित फ़िक़ह। हिन्दुस्तान के अधिकांश सुन्नी मुसलमान उन्हीं के अनुयायी हैं।
४ इसके उपरान्त हुमायूँ के राज्यकाल का इतिहास प्रारम्भ होता है और निज़ामुद्दीन अली खलीफ़ा के षड्यंत्र का इसी प्रसंग में उल्लेख किया गया है।
५ दीवाने बयूतात।
६ खरगाह।

"ईश्वर ने चाहा तो सर्व प्रथम मैं तेरी खाल खिचवाऊंगा।" यह कहने के उपरान्त उसकी दृष्टि सरलनवर्ता के पिता के ऊपर गई। उसने उसके कान पकड कर कहा, कि, "हे ताजीक !"

मिसरा[1]

"लाल जिह्वा हरे सिर को नष्ट कर देती है।"[2]

(२९) मेरा पिता विदा हो कर बाहर आया और शीघ्रातिशीघ्र मीर खलीफा के पास पहुच कर कहा कि, "आप मुहम्मद हुमायू मीर्जा सरीखे व्यक्ति एव उनके योग्य भाइयो के होते हुये नमकहलाली को त्याग कर यह चाहते थे कि यह राज्य अन्य वश मे चला जाये। इसका परिणाम इसके अतिरिक्त कोई अन्य नही।" यह कह कर उसने महदी ख्वाजा की बात कही। मीर खलीफा ने तत्काल किसी को मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा को शीघ्रातिशीघ्र बुलाने के लिये भेजा। यसावलो[3] को भेज कर उसने महदी ख्वाजा को सूचना भिजवाई कि, "बादशाह का आदेश है कि 'तुम अपने घर चले जाओ'।" उस समय महदी ख्वाजा दस्तर-ख्वान पर भोजन लगवा चुका था। यसावलो ने निरन्तर पहुच कर उसे ज़बरदस्ती उसके घर भेज दिया।

तदुपरान्त मीर खलीफा ने आदेश दिया कि, 'ढिंढोरा पिटवा दिया जाये कि कोई भी महदी ख्वाजा के घर न जाये और उसके प्रति अभिवादन न करे और वह भी दरबार मे उपस्थित न हो।"

१ शेर की एक पंक्ति।
२ इसका अर्थ यह है कि बकवास से मनुष्य नष्ट हो जाता है। सम्भवतः उसने इस प्रकार मीर मुकीम को चेतावनी दी हो कि वह इस बात को गुप्त रक्खे।
३ सेवक, समाचारवाहक।

भाग स

अफ़ग़ान सुल्तानों के इतिहास

शेख रिज़्क़ुल्लाह मुश्ताक़ी

(क) वाकेआते मुश्ताकी

अब्दुल्लाह

(ख) तारीख दाऊदी

अहमद यादगार

(ग) तारीखे शाही

वाकेआते मुश्ताक़ी

लेखक—शेख़ रिज़कुल्लाह मुश्ताकी

(ब्रिटिश म्यूज़ियम मैनुस्क्रिप्ट रियु भाग २, ८०२ ब)

बाबर

(८४) बाबर के आक्रमण का हाल इस प्रकार है। दौलत खा सुल्तान इबराहीम के अत्याचार के कारण स्वर्गीय बाबर बादशाह के पास न्याय हेतु पहुचा। उसे इस देश के राज्य का हाल ज्ञात हो गया और वह इस ओर आक्रमण का सकल्प करके रवाना हो गया। सुल्तान इबराहीम ने पानीपत के क्षेत्र म युद्ध किया किन्तु मारा गया। उसकी अधिकाश सेना मारी गई, और अन्य लोग भाग खड हुए।

कुछ दिन उपरान्त बादशाह आगरा पहुचा। उस विलायत[1] के लोग तथा उस प्रदेश के प्रतिष्ठित व्यक्ति जोकि सुल्तान इबराहीम के पास से भाग चुके थे और उससे दुखी थे उन सब ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उन लोगो की संख्या नित्यप्रति बढने लगी और वे आज्ञाकारी होने लगे। सुल्तान इबराहीम की सम्पत्ति तथा खज़ाना आदि आगरा म था। किले के भीतर वालो ने भी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और किला उन्ह प्रदान कर दिया।

इस कार्य से निश्चिन्त होकर हुमायू बादशाह को, जिसे मीर्ज़ा हुमायू कहा जाता था बाबर ने एक बहुत बडी सेना देकर पूर्व की ओर भेजा। शेख़ बायज़ीद फर्मुली को, जिसने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली थी, हुमायू के साथ कर दिया। वह जाजमऊ तक पहुच गया। वहा अफगान अमीर थे। वे भाग खडे हुए और गगा नदी पार करके चले गये। मीर्ज़ा ने किले मे पहुच कर नदी तट पर पडाव किया। शेख़ बायज़ीद को अफगानो का पीछा करने के लिये नियुक्त किया। शेख़ बायज़ीद जिसके पास ६० सवार थे उस ओर रवाना हुआ। प्रथम दिन उसने २२ कोस की यात्रा की। इसी प्रकार वह निरन्तर यात्रा करता हुआ चला गया। अफगान लोग मानिकपुर कस्बे मे थे कि उन्ह ज्ञात हुआ कि शेख़ बायज़ीद गुमती[2] नामक नदी के एक स्थान पर पहुच गया है और अमुक स्थान पर उतरा हुआ है। उन लोगो ने एक आदमी को पता लगाने के लिये भेजा। थोडी रात्रि व्यतीत हो चुकी थी कि वह शेख़ बायज़ीद के शिविर के समीप पहुच गया। मीर्ज़ा अली नामक शेख़ बायज़ीद का एक सेवक था। उसे बिसहो को लाने के लिये निहान्दपुर (८५) नामक स्थान से भेजा गया था। बिसहो को भोजपुर पहुचा कर इस ओर रवाना हुआ। रात्रि के उपरान्त शेख़ बायज़ीद के पास पहुच गया। इन लोगो का समाचार ले जाने वाला वहा पहुचा ही था कि उसी समय मीर्ज़ा आली पहुच गया। प्रत्यक यही कहता था कि मीर्ज़ा भी आ गया है। समाचार ले जाने वाले ने यह समाचार पहुचाये कि शेख़ बायज़ीद का शिविर अमुक स्थान पर है किन्तु मीर्ज़ा भी मेरे समक्ष

१ राज्य।
२ गोमती।

पहुच गया है। वे लोग मीर्ज़ा का नाम सुन कर न ठहर सके, समझे कि मीर्ज़ा हुमायूं आ गया, भाग खडे हुए। कुछ दिन उपरान्त जौनपुर पहुचे। २-३ दिन जौनपुर मे ठहरे थे कि मीर्ज़ा के भेजे हुए चार अमीर जौनपुर पहुच गये। शेख बायज़ीद उनके स्वागतार्थ पहुचा। ज़ुहर[1] के समय वे लोग पहुच गये। उसने जौनपुर उनको सौंप दिया। उतर पडे। सायकाल की नमाज के समय हुमायू भी पहुँच गया। वे अमीर आगे रवाना हो गये। प्रात काल मीर्ज़ा भी रवाना हो गया। वह गाज़ीपुर पहुचा था कि उसे नसीर खा नोहानी के समाचार ज्ञात हुए कि वह गाज़ीपुर मे है। गगा नदी के इस पार का भाग शेख बायज़ीद के अधिकार मे था। हुमायू स्वय शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करता हुआ दलमऊ से खरीद तक एक रात्रि पडाव करके पहुच गया और कत्ले आम कर दिया। वह २-३ दिन तक वहा रहा, तदुपरान्त वहा से लौट गया। शेख बायज़ीद को उस स्थान पर छोड गया।

सुल्तान तथा शाह हुसेन जौनपुर म थे। शेख बायज़ीद अवध के भूभाग के लिये पहुचा। मीर्ज़ा बादशाह के पास आगरा पहुच गया। शेख बायज़ीद वही रहने लगा।

इस स्थान पर हसन खा मेवाती ने सुल्तान सिकन्दर के पुत्र सुल्तान महमूद को बादशाह बना दिया। उसने चित्तौड के राणा तथा सलाहदी एव बहुत से अफ़गानो को एकत्र करके बादशाह से विद्रोह कर दिया। सीकरी के मैदान मे युद्ध हुआ। मार्गों पर लोगो का चलना बन्द हो गया। किसी स्थान मे अनाज न आता था, लूट का अनाज भी समाप्त हो गया। अनाज के विषय मे बडी परेशानी हुई।

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि कोल के भूभाग के किले मे रुस्तम खा तुर्कमान के पौत्र ने अधिकार जमा लिया है और उपद्रव मचा रखा है। बादशाह ने शेख खोरन को उसके विरुद्ध नियुक्त किया और मीर बाकी को उसकी सहायतार्थ भेजा। वहा बहुत बडी विजय हुई। जो कुछ उपस्थित था, वह ले लिया गया और बादशाह की सेवा मे भेज दिया गया। दो लाख मन अनाज, दो हज़ार मन तेल, और कई हज़ार बकरे एव अन्य सामग्री शेख खोरन ने शिविर मे भेजी और स्वय बादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ। शेख खोरन को अबुल फतेह की उपाधि प्रदान की गई।

क्योंकि खाद्य सामग्री न रही थी और लोग परेशान हो गये थे अत एक दिन परामर्श किया गया (८६) कि क्या किया जाय। मीर खलीफा ने कहा कि, "हे बादशाह! हमने इस मुल्क को विजय कर लिया, खज़ाना प्राप्त किया देश को नष्ट भ्रष्ट किया। अब यह उचित होगा कि इस स्थान के किलों को दृढ बनाय और स्वय लाहौर मे निवास करें। अब हमारे करने के लिये यहा कोई कार्य नही रह गया है। इस बार हमने बहुत कुछ कर लिया है, पुन लाहौर पहुच कर जो कुछ करना हो वह बाद मे करें।" बादशाह ने हुमायू की ओर देखा। उसने कहा कि, 'बादशाह अपने स्थान पर रहे। प्रात काल हमको युद्ध का आदेश हो, देखते हैं क्या होता है, यदि विजय हो जाये तो हम सब का उद्देश्य यही है अन्यथा ईश्वर हमारे सिर पर बादशाह को सुरक्षित रखे।" बादशाह ने कहा, "इस समय तक मैं ५० युद्ध कर चुका हू किन्तु सभी युद्ध मुसलमानों से हुए हैं, अब काफिरो से युद्ध हो रहा है। मैं अब कहा वापस जाऊ? यदि मैं विजय प्राप्त करता हू तो गाज़ी कहलाऊगा अन्यथा शहीद हो जाऊगा। मैं रण क्षत्र से कदापि पीठ नही फेर सकता।" शुभकामनाओ के उद्देश्य से फातेहा पढ कर सभी उठ खडे हुए। दूसरे दिन प्रात काल बादशाह कुरान शरीफ हाथ मे लेकर आया और कुरान खोल कर अपने हाथ मे रखा तथा शपथ ली कि, "यदि मैं इस काफिर से युद्ध के दिन मुह फेरू तो इस कुरान शरीफ से मुह फेरूगा।' समस्त अमीरो, सुल्तानो एव खानो

१ मध्याह्नोपरान्त की पहली नमाज़।

ने कुरान शरीफ पर हाथ रखा, और युद्ध करना निश्चय किया। वे सब युद्ध के लिये सवार हो गये। ईश्वर ने इस्लाम के बादशाह को विजय प्रदान की और काफिर लोग भाग खडे हुए।

पूर्व की विलायत मे बायजीद ने भी आज्ञाकारिता त्याग दी। अफगानो को मिलाकर उसने सुल्तान महमूद को वहा बुलवा लिया था और बहुत बडा विद्रोह उठ खडा हुआ था। उसने बादशाह की सेना से युद्ध किया। बादशाह मेदनी राव के विरुद्ध चन्देरी पर आक्रमण करने गया था। उसने मेदनी राव को पराजित करके बन्दी बना लिया और मुसलमान कर लिया तथा तलवार का भोजन बना दिया। वह दुष्ट मूर्तिद था। उसने किसी समय का प्रयोग न किया। वह कहा करता था कि "इसको काफिर पूजा करते है। हमे इसका प्रयोग न करना चाहिये।"

बाबर का हाल इतिहासो मे लिखा हुआ है। हम केवल इतना ही सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान के लोगो मे शेख खोरन उसका बहुत बडा अमीर था। बादशाह ने उसे अत्यधिक सम्मानित किया था और उसने निष्ठा पूर्वक महान् कार्य सम्पन्न किये थे। सर्वप्रथम उसने जो कार्य किया था उसका ऊपर उल्लेख हो चुका है कि उसने कोल को विजय किया और विद्रोहियो को बन्दी बना कर राजसिंहासन के समक्ष लाया। ग्वालियर के किले पर भी आक्रमण कर के उसे विजय किया। सम्भल के (८७) भूभाग के दो किले उसने खाली कराये। विलायत के अफगानो तथा प्रतिष्ठित लोगो मे जो कोई भी आता था वह मध्यस्थ बन कर बादशाह से उनकी भेट कराता था और उनके कार्य को सुव्यवस्थित कराता था। वह अपने दान-पुण्य के लिये बडा प्रसिद्ध था। उसकी रसोई मे नाना प्रकार के उत्तम भोजन बना करते थे। वह सब को भोजन कराया करता था। उसने अपने पुत्र के विवाह के समय अतिथियों को ७० हजार तन्के का भोजन कराया। बिदा के दिन १५० घोडे, ४ हाथी, २० गधो के बोझ के बराबर वस्त्र इत्यादि प्रदान किये और कई लाख तन्के नकद दिये।

वह सगीत मे बडा कुशल था और उसे गाना बडा पसन्द था। एक समय वह बादशाह के साथ जौनपुर मे था कि उसे ज्वर आने लगा। उसने बीस फाके किये। उसका एक आदमी बदिगी शेख अदहन के पास गया हुआ था। शेख (अदहन) ने शेख खोरन के समाचार पूँछे। उसने कहा कि, "उसी हाल मे है।" शेख अदहन ने पूछा कि, "कितने दिन हो गये?" उसने उत्तर दिया कि, "बीस दिन हो गये।" शेख ने पूछा कि, "गाना सुनते है अथवा नही?" उसने उत्तर दिया कि, "इस बीच मे नही सुना है।" शेख ने कहा, "बुरा किया कि उसे गाना सुनने से मना कर दिया। उसकी बीमारी यही है। जाओ, अच्छे गाने वालो को एकत्र करके सगीत की गोष्ठी आयोजित कराओ।" उस व्यक्ति ने पहुच कर शेख खोरन से यह बात कही। उसने तत्काल गायको को बुलवाया और गाना सुना। गाने के प्रभाव से वह रोने लगा। जब उसे चेत हुआ तो वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया और उसके ऊपर ज्वर का कोई प्रभाव न रहा। तत्काल उसने भोजन मगवाया और भोजन किया और उठ कर स्वय गाना गाया। वह बडा ही अच्छा गाना गाता था।

एक दिन उसने बहार के जश्न की गोष्ठी आयोजित की। उसमे उसने बडा ही अधिक टीम टाम किया। सूफी लोग भी उपस्थित थे। उत्कृष्ट गायक तथा वादक भी उपस्थित थे। अत्यधिक प्रयत्न करने एव गाने बजाने पर भी कोई भी न रोता था। यद्यपि वह बडा ही सुन्दर स्थान था और सूफी लोग उपस्थित थे किन्तु गाने का कोई प्रभाव न होता था। सभी गायक उसके दान-पुण्य के इच्छुक थे किन्तु वे सब प्रयत्न करते-करते थक गये। उसी समय शेख खोरन उठ खडा हुआ और गोष्ठी मे बैठ कर उसने गजल गायी। जैसे ही उसने गाना प्रारम्भ किया लोगो ने रोना शुरू कर दिया और वे इतना रोये कि

उसका उल्लेख सम्भव नही। वह स्वय ऐसे अवसरों पर बहुत रोता था। किसी सूफी को भी इस प्रकार रोते चिल्लाते हुये नहीं सुना गया है।

यद्यपि उस बादशाह के राज्य काल मे बहुत से योग्य अफ़गान एव हिन्दुस्तानी थे किन्तु इन तीन व्यक्तियों से अधिक कोई भी परोपकारी, एव दानी न था। एक शेख खोरन, दूसरा मिया राव सरवानी, तीसरे मुहम्मद खा जयरा। ये तीना लोग उन दिनो मे अपने परिचित एव अपरिचित लोगों का उपकार (८८) करते थे। उनमे से मैंने एक के चरित्र का वर्णन किया।

तारीखे दाऊदी

लेखक—अब्दुल्लाह

(प्रकाशन अलीगढ १९५४ ई०)

सुल्तान इबराहीम लोदी

आज़म हुमायू की हत्या

(९८) जिस समय आज़म हुमायू ग्वालियर का घेरा डाले हुए था और यह किला आज या कल मे विजय होने वाला था कि सुल्तान इबराहीम ने ऐसी परिस्थिति मे आज़म हुमायू को समस्त सेना सहित वापस बुलवा लिया। समस्त सेना ने आज़म हुमायू की सेवा मे उपस्थित हो कर निवेदन किया कि, "बुलाने का यह कौन सा समय था ? यह निश्चय है कि वह आपको बन्दी बनाने तथा आपकी हत्या कराने के लिये बुला रहा है। आजकल आपकी सेवा मे ५०,००० अश्वारोही है। आपके लिये खुत्वा तथा सिक्का उचित है।" और इस विषय मे उन लोगो ने आलिमो की सम्मतिया प्रस्तुत कर के अपने कथन की पुष्टि की। समस्त सेना सुल्तान इबराहीम के पास उसके जाने का पूर्णत विरोध कर रही थी। आज़म हुमायू ने कहा, "मुझसे यह नही होता कि सुल्तान इबराहीम की तीन पीढियो का नमक खा कर, जब कि मुझ यह भी ज्ञात नही कि मुझे जीवित रहना है अथवा नही, अपने आप को हरामखोर कहलवाऊ।"

वह ग्वालियर का घेरा छोड कर आगरा की ओर चल दिया और अधिकाश लोगो को वह लौटा देना चाहता था किन्तु कोई भी उसका साथ न छोडता था। जब वह चम्बल नदी के तट पर पहुचा और नौका पर सवार हुआ तो कुछ उत्कृष्ट लोगो ने एकत्र होकर कहा, "आगरा जाना किसी प्रकार उचित नहीं।" आज़म हुमायू ने किसी को भी नदी न पार करने दी और सभी को लौटा दिया। तदुपरान्त उसने नौका चलवा दी। जब वह आगरा पहुचा तो सुल्तान इबराहीम के आदेशानुसार एक बडा ही निकृष्ट याबू आज़म हुमायू के समक्ष लाया गया और कहा गया कि, "आपके लिये इस पर सवार होने का आदेश हुआ है।" आज़म हुमायू शीघ्र घोडे से उतर कर याबू पर सवार हो गया। उन थोडे से आदमियो ने, जो उसके साथ रह गये थे, उससे कहा कि, "अब भी कुछ नही बिगडा है। हमारे पास अपने विश्वास के लोग हैं। आपको वे कुशलतापूर्वक यहा से निकाल ले जायेंगे।" आज़म हुमायू ने कहा, "हे मित्रो, मेरी चिन्ता मत करो। हमने सुल्तान इबराहीम के पिता एव दादा के लिये प्राणो की बलि दी है। जितना हम जीवित रह लिये, इससे अधिक जीवित न रहेगे। अब तक हम उसी की सेवा मे प्राण लगाये रहे। हमने कभी कोई निकृष्ट कार्य नहीं किया। अब हम चाहे जीवित रहे और चाहे मृत्यु को प्राप्त हो जायें। मेरे लिये यह बडे सम्मान की बात है कि इस विषय मे उसे ईश्वर को उत्तर देना होगा।" यह कह कर उन थोडे से (९९) साथियो को भी जो उसके साथ रह गये थे, उसने बिदा कर दिया और आगरा मे प्रविष्ट हो गया। जैसे ही वह आगरा मे प्रविष्ट हुआ, सुल्तान इबराहीम ने उस सरीखे निष्ठावान् तथा उत्कृष्ट अमीर को बिना किसी अपराध के बन्दीगृह मे डलवा दिया और कई मन की जजीर उसके पाव मे डलवा दी। जिस

दिन आजम हुमायू को वन्दीगृह मे भिजवाया गया उसने सुल्तान इबराहीम के पास यही कहलवाया कि, "जो कुछ तेरी इच्छा होगी वह तू करेगा। मेरी यही प्रार्थना है कि वजू के जल तथा इस्तिन्जे[1] के ढेले भिजवाने का आदेश दे दे। (इसके अतिरिक्त) मेरा पुत्र इस्लाम खा वडा ही उद्दड है। उसका शीघ्र उपाय कर ताकि उसके पास लोग एकत्र न हो जायें।"

आजम हुमायू बहुत समय तक वन्दीगृह मे रहा। इस बीच मे उसने कभी भी सुल्तान इबराहीम के विरुद्ध शिकायत का कोई शब्द न कहा। उस ईश्वर का भय न करने वाले अन्यायी ने इस प्रकार के हितैषी खानो की विना किसी अपराध के वन्दीगृह मे हत्या करा दी और अपने राज्य की दीवार को अपने हाथ से गिरवा दिया। सुल्तान सिकन्दर के वडे वडे अमीरो की एक बहुत वडी सख्या को निरपराध मरवा डाला। सीमान्तो की प्रत्येक दिशा के अमीर अपनी अपनी रक्षा करने लगे।

अमीरो का विद्रोह

दरिया खा लोहानी के पुत्र ने, जिसका नाम पहाड खा था, सुल्तान इबराहीम के विरुद्ध विद्रोह करके लगभग एक लाख अश्वारोही एकत्र कर लिये और बिहार से बगाले तक की विलायत अपने अधिकार मे कर ली और अपनी उपाधि सुल्तान मुहम्मद रख कर अपने नाम का सिक्का चलवा दिया। दौलत खा वल्द तातार खा, जो सुल्तान सिकन्दर के सेवको मे से था और पजाव के राज्य का अधिकारी था, लाहौर से बुलवाया गया[2] किन्तु दौलत खा सुल्तान इबराहीम के भय तथा दुर्व्यवहार के कारण जाने मे विलम्ब करने लगा। उसने अपने पुत्र दिलावर खा लोदी को सुल्तान की सेवा मे भेज दिया। जब यह दिलावर खा सुल्तान इबराहीम की सेवा मे पहुचा तो उसने इसे देखते ही कहा कि, "यदि तेरा पिता शीघ्रातिशीघ्र न पहुच जायेगा तो अन्य अमीरो के समान उसे कठोर दड दिया जायेगा।" दिलावर खा ने वास्तविक बात अपने पिता को लिख कर भेज दी। दौलत खा ने अपने पुत्र को पत्र लिखा कि, "जब तक मिया भूवा आने के लिये परामर्श न देगा और मेरा आना उचित न समझेगा तथा मुझे न लिखेगा उस समय तक मैं कदापि न आऊगा। तू चिन्ता मत कर।"

(१००) दिलावर खा सुल्तान इबराहीम के क्रोध के समाचार पा कर वडा भयभीत हुआ और उसे सुल्तान के क्रोध तथा मृत्यु-दड से मुक्ति न दिखाई दी। वह भाग कर अपने पिता के पास भी न पहुचा और अन्य मार्ग से बाबर बादशाह की सेवा मे काबुल पहुच गया। वह बहुत समय तक वहा रहा। उसने अफगान अमीरो के विरोध तथा उनकी सुल्तान इबराहीम के प्रति घृणा का हाल विस्तार से बाबर बादशाह को बताया।

इसी बीच मे सुल्तान इबराहीम ने मिया भूवा को वन्दी-गृह मे विना किसी अपराध के हत्या करा दी। बाबर बादशाह यह समाचार पा कर इबराहीम के दुर्भाग्य को समझ गया कारण कि बुद्धिमान् हितैषियो का विनाश किसी भी राज्यकाल मे किसी के लिये शुभ नही हुआ है।

दिलावर खाँ लोदी का बाबर को बुलाना

दौलत खा लोदी ने बाबर बादशाह को हिन्दुस्तान मे लाने का विचार किया। बाबर बादशाह ईश्वर की सहायता से हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के उद्देश्य से रवाना हुआ। मार्ग मे दौलत खा की

१ मूत्र के उपरान्त ढेले का प्रयोग।
२ सुल्तान इबराहीम द्वारा।

मृत्यु हो गई। बिहार की ओर सुल्तान मुहम्मद की भी, जो अपने आपको बादशाह कहलाता था, मृत्यु हो गई। इसी बीच में सिकन्दर के कुछ अमीरो ने शाहज़ादा आलम खा बिन सुल्तान बहलोल को जो कि गुजरात के सुल्तान मुज़फ्फर के पास गया हुआ था, बुलवाकर उसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन करदी और सुल्तान इबराहीम के मुकाबले मे खडा कर दिया। क्योकि वे सुल्तान इबराहीम का मुकाबला न कर सकते थे अत इन समस्त अमीरो ने ज़हीरुद्दीन बाबर बादशाह को मावराउन्नहर तथा काबुल से बुलवाया।

सुल्तान इबराहीम के अफगान विरोधी

यद्यपि हिन्दुस्तान की विजय की सामग्री एव साधन पूर्णत समाप्त हो चुके थे फिर भी बाबर बादशाह केवल ईश्वर पर आश्रित होकर उसकी सहायता के भरोसे से हिन्दुस्तान पहुचा और वहा से सुल्तान इबराहीम से युद्ध करने के लिये बढा। अभी सुल्तान इबराहीम देहली के निकट पहुचा भी न था कि सुल्तान इबराहीम के बडे-बडे अमीरो के एक समूह ने उससे निराश होकर हिन्दुस्तान पर बाबर के आक्रमण के समाचार सुनने के बावजूद लगभग चालीस हज़ार अश्वारोहियो को एकत्र करके सुल्तान के पहुचने के पूर्व देहली का अवरोध कर लिया। विद्रोह के नेता पाच व्यक्ति थे —आलम खा, दिलावर खा, महमूद खा, खाने जहा, इस्माईल खा जल्वानी। सभी सगठित एव एक दिल होकर सुल्तान के विरोध हेतु निकले।

सुल्तान इबराहीम की सेना पर रात्रि में छापा मारने का निश्चय

(१०१) सुल्तान इबराहीम यह कष्टदायक समाचार सुनकर इस विद्रोह को महत्वपूर्ण समझते हुए विद्रोहियो के विरुद्ध रवाना हुआ। आलम खा ने अपने समस्त साथियो से परामर्श किया। समस्त अफगानों ने यह निश्चय किया कि "सुल्तान इबराहीम की सेना पहुच गई है। अफगानों को अपनी मर्यादा का बडा ध्यान रहता है, वे युद्ध मे अपने आश्रयदाता का विरोध करके शत्रुओ से मिलना बहुत बुरा समझते है अत सुल्तान इबराहीम से दिन मे युद्ध होगा तो हमें विश्वास है कि एक दूसरे की लज्जावश हमारी ओर कोई भी न आयेगा। यह उचित होगा कि रात्रि म छापे की प्रथानुसार सुल्तान इबराहीम की सेना पर छापा मारा जाये और युद्ध प्रारम्भ किया जाये।" छ दल सुल्तान इबराहीम की सेना पर रात्रि मे छापा मारने के उद्देश्य से सवार हुए और रात्रि के अन्तिम पहर म सुल्तान की सेना मे पहुच कर छापा मारा। *जलाल खा तथा कुछ अन्य अमीर जो कि समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, सुल्तान इबराहीम से* विद्रोह करके विद्रोहियो से मिल गये। सुल्तान इबराहीम अपनी सेना के छिन्न भिन्न होने के समाचार सुनकर अपने कुछ विश्वासपात्रो सहित अपने खेमे मे बैठा रहा। सूर्योदय होने तक उसने युद्ध न प्रारम्भ किया और न वहा से पलायन किया। जब विरोधियो की सेना लूटमार तथा धन एकत्र करने के लोभ म छिन्न भिन्न हो गई तो सूर्योदय के उपरान्त सुल्तान इबराहीम की दृष्टि शत्रु के मध्य भाग पर पडी। उसने देखा कि आलम खा कुछ लोगो सहित खडा है। सुल्तान इबराहीम ने स्वय आलम खा पर छापा मारा। आलम खा भाग खडा हुआ। प्रत्येक व्यक्ति जो जिस स्थान पर लूटमार मे व्यस्त था, वहा से भाग खडा हुआ। विद्रोही अमीर, जो एक दूसरे से मिले हुए थे, सब के सब भाग खडे हुए। आलम खा दोआब के मध्य में पहुचा और वहा से बाबर बादशाह की तरफ चल दिया। क्योकि नमकहरामी कोई अच्छा कार्य नही और किसी सेवक के लिये वह शुभ नही होती अत चालीस हज़ार सगठित अफगान अश्वारोही कुछ न कर सके और छिन्न भिन्न हो गये।

ज्योतिषियों से सुल्तान इबराहीम का परामर्श

बाबर बादशाह सुल्तान इबराहीम के कार्यों के अस्त-व्यस्त हो जाने के विषय मे सूचना पाकर (१०२) देहली की ओर रवाना हुआ। सुल्तान इबराहीम भी देहली से कूच करके सरहिन्द की ओर बढा। इसी बीच मे सुल्तान इबराहीम ने बढ-बढ कर बातें करने वाले जो ज्योतिषी उपस्थित थे, उनसे कहा कि, "हमारी जन्मकुडली और भाग्यचक्र देखकर बताओ, किसकी विजय होगी।" इस कला के अद्वितीय विद्वानो ने नक्षत्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके निवेदन किया कि, "नक्षत्रों द्वारा तो ऐसा ज्ञात होता है कि हमारे समस्त हाथी एव घोडे मुग़ल सेना मे प्रविष्ट हो जायेंगे।" सुल्तान इबराहीम ने उपस्थितगणों से कहा, "तो इसका यह निष्कर्ष है कि हम मुग़लों पर विजय प्राप्त करेंगे।" ज्योतिषियो ने कहा कि "ऐसा ही होगा।" कुछ समझदार ज्योतिषी उस रणक्षेत्र से भाग कर अपने घरो को चल दिये। जो लोग सुल्तान इबराहीम की बात पर उसका साथ देने के लिये डटे रहे, वे बन्दी बना लिये गये अ वा मार डाले गये। सुल्तान इबराहीम के समस्त हाथी एव घोडे मुग़ल सेना मे पहुच गये।

हमीद खाँ की पराजय

बहुत से अफग़ान सोनपत के पडाव से भागकर बाबर के समक्ष पहुचे। हमीद खा, सुल्तान इबराहीम का खासाखल, हिसार फीरोज़ा से एक बहुत बडी सेना लिये सुल्तान की ओर से आ रहा था। उसका हुमायूं बादशाह से हिसार फीरोजा के मध्य मे युद्ध हुआ। हमीद खा पराजित हो गया और वह सेना भी छिन्न भिन्न हो गई।

बाबर का पानीपत पहुचना

सुल्तान इबराहीम ने दाऊद खा को ५-६ हज़ार अश्वारोहियो सहित हिरावल के रूप मे भेजा। उस ओर से बाबर बादशाह सेना को तैयार करके बृहस्पतिवार, अन्तिम जमादि-उल-अव्वल को पानीपत मे सुल्तान इबराहीम की सेना से छ कोस पर पहुच गया। बाबर बादशाह की सेना मे १५ हज़ार अश्वारोही तथा पदाति एव कुछ हाथी थे। सुल्तान इबराहीम की सेना मे एक लाख अश्वारोही तथा १ हजार हाथी थे। लगभग एक मास तक सुल्तान इबराहीम तथा बाबर बादशाह मे झडप होती रही।

सुल्तान इबराहीम से बाबर का युद्ध

(१०३) शुक्रवार ८ रजब, ९३२ हि० (को मौत सुल्तान) इबराहीम का गरेबान पकडकर सुसज्जित सेना सहित बाबर बादशाह के समक्ष ले गई। उस ओर से बाबर बादशाह ने भी प्रस्थान किया। जब दोनो सेनाओं का आमना सामना हुआ तो बाबर बादशाह ने आदेश दिया कि मुग़ल सेना दो भागों मे विभाजित हो जाये। हिरावल अपने स्थान पर रहे। यह दो भाग सुल्तान इबराहीम की सेना के पीछे से पहुचकर युद्ध मे भिड जायें। यद्यपि सुल्तान इबराहीम की सेना की सख्या बडी अधिक थी किन्तु उसके अधिकाश सिपाही और अमीर उससे रुष्ट थे। सक्षेप मे दोनो बादशाहो के मध्य मे पानीपत के रणक्षेत्र मे सूर्योदय मे घोर युद्ध होने लगा और इतना घोर युद्ध हुआ कि युग की आखों ने कभी न देखा होगा। सुल्तान इबराहीम की सेना के बहुत से लोग मारे गये और बहुत से जो उससे रुष्ट थे, जगलों मे भाग गये। इसी बीच मे उसके एक विश्वासपात्र ने कहा, "इस समय यह उचित है कि आप इस रणक्षेत्र से भाग जायें और इसके उपरान्त जो कुछ भी उचित हो, वह करें।" सुल्तान इबराहीम ने कहा कि, "तू

नही देखता कि बादशाह लोग सुर्ख खेमे लगाते हैं और यह उनकी सुर्खरूई का चिह्न होता है। हमने अपने रक्त से अपने आपको सुर्ख कर लिया है। हमने सुर्खरूई के वस्त्र धारण कर लिये है, अब पीले किस प्रकार हो" और यह शेर पढा —

शेर

"हम किसी अन्य ओर जायें, यह पौरुष नही है,
सुर्खरूयों का काम पीला होना नहीं है।"

सुल्तान इबराहीम पाच हज़ार अश्वारोहियो एव अपने विश्वासपात्रो सहित मारा गया। इस युद्ध मे इतने हज़ार आदमी मारे गये कि उनका पता नही। उसके राज्य के पतन का कारण यह हुआ कि वह अमीरो के हृदय की रक्षा एव सेना के दिल को हाथ मे लेने की ओर से उपेक्षा करता था। यहा तक कि उसे इस दिन का सामना करना पडा कि उसकी सल्तनत एव उसका जीवन सभी नष्ट हो गया। कुछ लोगों का कथन है कि सुल्तान इबराहीम को एक उजाड स्थान पर पहिचाना गया। वहा वह अपने कुछ विश्वासपात्रो सहित मरा हुआ पडा था। उसका सिर काटकर बाबर बादशाह के समक्ष लाया गया।

एक व्यक्ति जो इस युद्ध मे उपस्थित था उसने इसका पूर्ण उल्लेख हिन्दी भाषा मे इन शेरो मे किया है —

"नौ से ऊपर हता बतीसा,
पानीपत मे भारत दीसा,
सातवी रजब आपत डारा,
बाबर जीता, बराहम हारा।"

सुल्तान की मृत्यु की एक अन्य कहानी

(१०४) एक अन्य विश्वस्त व्यक्ति से जिसकी अवस्था १२० वर्ष होगी, मैंने सुना है कि "युद्ध के दिन मैं सुल्तान इबराहीम के साथ था। जिस समय सुल्तान इबराहीम की सेना पराजित हुई, सुल्तान पानीपत से हारकर अपने शिविर की ओर जो कि यमुना तट पर था चल दिया। सुल्तान इबराहीम उस दिन काले रग के एराकी घोडे पर शाही वस्त्र धारण किये हुए सवार था। वह अपने आदमियो सहित नदी तट पर पहुचा और हरियाना ग्राम के घाट से जो कि पानीपत के ग्रामो मे से एक ग्राम है नदी पार करके दोआब के मध्य मे पहुचना चाहता था। उसने नौकाओ के विषय मे बहुत कुछ पता लगाया किन्तु नौका न मिली। वह उसी एराकी घोडे पर सवार कुछ अश्वारोहियो सहित नदी मे कूद पडा। घोडा कुछ दूर तक जल मे बढा।" इस कहानी के कहने वाले का कथन है कि "मैं किनारे पर खडा था। मैंने देखा कि सुल्तान इबराहीम उसी वस्त्र तथा घोडे सहित हरियाना ग्राम मे मृत्यु को प्राप्त हो गया।"

तारीखे शाही

अथवा

तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना

लेखक—अहमद यादगार

(प्रकाशन कलकत्ता १९३९)

० सुल्तान इबराहीम लोदी

अमीरों का विद्रोह

(८६) उसके राज्य के विनाश का प्रथम कारण आजम हुमायू की हत्या थी, कारण कि उसके (८७) पुत्र फतह खा के अधीन १०,००० अश्वारोही थे। बिहार के वाली ने दरिया खा लोहानी के पुत्र शहबाज खा के साथ बिहार मे सुल्तान से विद्रोह कर दिया। उसके पास ७०,००० अश्वारोही एकत्र हो गये और उसने सुल्तान मुहम्मद की उपाधि धारण कर ली। उन लोगो ने मिलकर विद्रोह कर दिया और बहुत बडा उपद्रव उठ खडा हुआ। बिहार सुल्तान के अधिकार से निकल गया।

दौलत खाँ लोदी का बुलवाया जाना

इसी बीच मे सुल्तान ने तातार खा के पुत्र दौलत खा लोदी को, जो २० वर्ष से पजाब पर शासन कर रहा था, लाहौर से बुलवाया। उसने आने मे टालमटोल किया और अपने पुत्र दिलावर खा को भेज दिया। सुल्तान ने पूछा, "तेरा पिता क्यो न आया ?" उसने निवेदन किया कि, "रुग्णावस्था के कारण उन्होने मुझे भेज दिया है।" सुल्तान ने कहा, "यदि तेरा पिता शीघ्र ही न आयेगा तो अन्य अमीरो के समान उसको भी बन्दी बना दिया जायेगा।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उसे (दिलावर खा को) उस बन्दीगृह को जहा कुछ बडे-बडे अमीर दीवारो मे चुनवाये गये थे ले जाकर दिखाओ कि आज्ञा का उल्लघन करने वालों की ऐसी दुर्दशा होती है।" दिलावर खा को उस स्थान पर ले जाकर दिखाया गया। वह उस दृश्य को देख कर काप उठा और उसके हृदय से धुआ निकल पडा। जब उसे पुन दरबार मे उपस्थित किया गया तो सुल्तान ने पूछा, "जो लोग मेरी आज्ञाओ का पालन नही करते उनकी दुर्दशा (८८) देखी ?" दिलावर खा ने काप कर भूमि पर सिर रख दिया। कहा जाता है कि सुल्तान ने उसकी आखो मे भी सलाई फिरवा कर दीवार मे चुनवा देने का सकल्प किया था। दिलावर खा अपने आपको सुल्तान के क्रोध से मुक्त न होते हुये देख कर देहली से भाग खडा हुआ और छ दिन मे अपने पिता के पास पहुच गया। उसने उससे कहा, "यदि आप अपना जीवन चाहते हैं तो आप अपनी चिन्ता करें अन्यथा अत्यधिक अपमानित करके आपकी हत्या की जायेगी।"

दौलत खा ने सोचना प्रारम्भ किया कि, "यदि मैं विद्रोह कर देता हू तो मुझ पर नमकहराम होने

का आरोप लगाया जायेगा और यदि मैं सुल्तान के कोप के चंगुल में फंसता हूं तो मेरे प्राण सुरक्षित न रह सकेंगे।" अन्त में उसने यह निश्चय किया कि वह गेती सितानी (बाबर बादशाह) के पास चला जाये। उसने दिलावर खाँ को बाबर बादशाह के पास इस आशय से भेजा कि वह वहां जाकर बादशाह को सुल्तान के कुस्वभाव, अमीरों के विद्रोह तथा सेना की उसके प्रति घृणा से अवगत कराये और बादशाह से हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने के विषय में निवेदन करे।

दिलावर खाँ का काबुल पहुँचना

दिलावर खां शीघ्रातिशीघ्र दस दिन में काबुल पहुंच गया। (बाबर के) राज्य के अधिकारियों ने निवेदन किया कि, "हिन्दुस्तान का एक अफ़ग़ान उस स्थान के बादशाह से रुष्ट हो कर आया है और अपना हाल कहना चाहता है।" बाबर ने उसको उपस्थित करने का आदेश दिया। उसने पहुंचकर (८९) भूमि पर अपना मुंह रखा और हिन्दुस्तान की दुर्दशा के विषय में एक एक बात कहदी। बाबर बादशाह ने कहा, "तुम ३० वर्ष से सुल्तान इब्राहीम तथा उसके बाप दादा का नमक खा रहे हो और २० वर्ष से पंजाब पर अधिकार जमाये हुए हो, इस समय तुम्हें क्या हो गया कि एकाएकी उसके विरोधी हो गये और इस दरबार में उपस्थित हुए?" दिलावर खां ने निवेदन किया कि "४० वर्ष हुए मेरे पिता तथा दादा ने उसके तथा उसके पिता के कार्यों के विषय में अपने प्राणों की बलि दे दी और उसके राज्य की नीवें को दृढ़ बनाया। सुल्तान इब्राहीम ने अपने पिता के अमीरों से दुर्व्यवहार प्रारम्भ कर दिया है और २३ अमीरों की जो कि सल्तनत की नीवें तथा स्तम्भ थे, बिना किसी अपराध के हत्या करादी। उनके वंश को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, कुछ को दीवार में चुनवा दिया और कुछ को अग्नि में जलवा दिया। जब उन्हें उसके आतंक से अपनी रक्षा की कोई आशा न रही तो समस्त अमीरों ने मुझे इस दरबार की सेवा में भेजा है। सभी अमीर बादशाह के दास हैं और शुभ अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

मीर्ज़ा कामरान का विवाह

उन्हीं दिनों में, क्योंकि मीर्ज़ा कामरान का विवाह था, शहर आरा उद्यान में एक भव्य जश्न का आयोजन किया गया था। हाव भाव वाली नर्तकियां एवं गायिकाएं एकत्र थीं। सोने के काम का सायवान[१] (९०) नये बहार के बादल के समान लगाया गया था। नाना प्रकार के फूल बाग़ की क्यारियों में खिले हुए थे। संक्षेप में, ऐसे जश्न का आयोजन किया गया था कि युग की आंखों ने उसके समान कोई जश्न न देखा था। जब अफ़गानों की दृष्टि मुग़लों के उस ऐश्वर्य एवं वैभव पर पड़ी तो वे चकित रह गये।

बाबर द्वारा हिन्दुस्तान विजय हेतु शकुन की इच्छा

जब हितैषियों की इच्छानुसार विवाह का जश्न हो चुका तो शाह बाबर रात्रि में उसी बाग़ में रहा और अन्त में दुगाना[२] पढ़कर परमेश्वर के दरबार में हाथ फैलाकर प्रार्थना की कि, "हे ईश्वर, तू सभी बिगड़े कामों को बनाता है। यदि हिन्दुस्तान का राज्य मेरे तथा मेरी संतान को प्राप्त होने वाला है तो हिन्दुस्तान से पान के बीड़े तथा आम दौलत खां के पास से उपहार स्वरूप आ जायें।" संयोग से आम की

१ शामियाना।
२ दो रकात नमाज़।

फसल होने के कारण दौलत खा ने आधे पके आम मधु के कूज़ों[1] मे लगाकर पान के बीड़ो के साथ अहमद खा सरवनी के हाथ काबुल उपहार स्वरूप भेजे। दिलावर खा ने निवेदन किया कि, "दौलत खा का भेजा हुआ अहमद खा उपस्थित है।" उसने बादशाह की सेवा मे उपस्थित होकर उन उपहारो को प्रस्तुत किया। बाबर बादशाह ने राज सिंहासन से उठकर अपना माथा ईश्वर के दरबार मे भूमि पर मला (९१)और उसे विश्वास हो गया कि पवित्र एव महान् ईश्वर ने उसे हिन्दुस्तान की सल्तनत प्रदान कर दी है और वह दीर्घकाल तक उसके वश मे रहेगी। दिलावर खा तथा अहमद खा को घोड़े एव खिलअत प्रदान की और १० एराकी घोड़े तथा उत्तम वस्त्रों के थान अहमद खा के हाथ दौलत खा के लिये देकर उसे पूर्व ही रवाना कर दिया।

बाबर का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

वह उसी दिन से हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा। उसने जहागीर कुली खा को चार मुग़ुलों सहित मार्ग की रक्षा हेतु पहिले ही से भेज दिया और आदेश दिया कि नदियो पर नौकाए तैयार रक्खी जायें। बुधवार दूसरी शव्वाल, ९३२ हि० (१२ जुलाई १५२६ ई०) को वह शाही वैभव एव ऐश्वर्य से प्रस्थान करते हुए पेशावर की ओर रवाना हुआ और उस नगर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। सम्मानित पताकाओ के अग्रसर होने पर दौलत खा सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने १० हज़ार अशर्फियां और २० हाथी उपस्थित किये।

बाबर द्वारा सेना की भरती

(९२) जब बाबर बादशाह काबुल से रवाना हुआ था तो उसके साथ केवल १० हज़ार अश्वारोही मुग़ुल थे। दौलत खा के साथ उसने नव सेवकों की भरती का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। लाहौर पहुचने तक उसके पास अत्यधिक सेना एकत्र हो गई और पजाब चग़ताई अमीरो के अधिकार मे आ गया।

सुल्तान इबराहीम का पश्चाताप

जब सुल्तान इबराहीम को आगरा मे बाबर बादशाह के आगमन के समाचार प्राप्त हुए और लाहौर पजाब प्रदेश तक उसके अधीन हो गया तो वह बड़ा व्याकुल हुआ और मियां भूवा तथा अन्य अमीरों की हत्या पर लज्जा प्रकट करने लगा किन्तु अब जल सिर से ऊचा हो चुका था अत उससे क्या लाभ हो सकता था। बाबर सरीखा दहाड़ता हुआ सिंह उसके जगल म प्रविष्ट हो गया था। वह आगरा से देहली पहुचा और दौलत खा को फरमान भेजा कि, "तू मेरे पिता की कृपा द्वारा इस श्रेणी को पहुचा था और २० वर्ष से पजाब का हाकिम था। तूने यह क्या किया कि मुग़ुलों को मेरे पैतृक राज्य मे ले आया और अफगानों को अपने हाथ से नगा कर दिया ? अब मैं तुझसे सन्धि करता हू और तेरे तथा तेरे पुत्रो के विषय मे कोई बुराई न सोचूगा। मैं ईश्वर की वाणी[2] की शपथ लेता हू, तू सोच समझ ले और दुर्भावनाओं को अपने हृदय मे प्रवेश मत होने दे।" दौलत खा ने उत्तर भेजा कि, 'नि सदेह मैं आपका आश्रित हू और सिकन्दर ने मुझे सम्मान प्रदान करके भूमि पर से उठाया था। मैंने समस्त जीवन उसकी निष्ठा मे व्यतीत कर दिया। वह स्वर्गीय बादशाह अपने अमीरो का कितना सम्मान करता था और

१ मिट्टी का सकोरा।
२ कुरान शरीफ़।

उन्हें कितना अधिक प्रोत्साहन देता था। उसने किसी प्रकार अमीरों को नष्ट करने का प्रयत्न नही किया। (९३) तुम्हारे सरीखे नवयुवक ने २-३ अल्पदर्शी लोगो के बहकाने से अपनी सल्तनत की नीवें को नष्ट कर दिया और अपने पिता के इतने दासो को जो कि बादशाही के स्तम्भ थे बरबाद कर दिया, यहा तक कि तुम्हारा विश्वास उठ गया। मैं मुगुलों को नही लाया हू, तुम्हारे अनुचित व्यवहार उन्हें लाये हैं।"

इबराहीम के अफ़गान शत्रुओ की पराजय

सक्षेप मे, जब पजाब से लेकर सरहिन्द एव हिसार फीरोज़ा, चगताई अमीरो के अधीन हो गये तो वे देहली की ओर रवाना हुए। जब वे थानेश्वर के समीप मे पहुचे तो उस नगर के अधिकाश विद्वान् एव हाफिज़ लोग मार डाले गये[1]। सुल्तान इबराहीम सोनपथ मे था कि समाचार प्राप्त हुए कि कुछ प्रतिष्ठित अमीरो ने बाबर बादशाह के आगमन के समाचार सुनकर लगभग ४० हज़ार अश्वारोहियों को लेकर देहली का अवरोध कर लिया है। सुल्तान यह समाचार सुनकर भयभीत होकर पुन देहली की ओर लौट गया ताकि विद्रोहियो का दमन कर सके। विद्रोहियो ने निश्चय किया था कि, "दिन मे सुल्तान से युद्ध करना उचित नही कारण कि अपने आश्रयदाता के प्रति लज्जा का ख्याल है। हम लोग रात्रि मे छापा मारें।" रात्रि के अन्त मे वे सुल्तान की सेना मे पहुचे। उस रात्रि मे कुछ अन्य अमीर सुल्तान की सेना से भागकर विरोधियो से मिल गये। सूर्योदय के उपरान्त जब सुल्तान की दृष्टि विरोधियों की सेना के मध्य भाग पर पडी तो उसने देखा कि आलम खा कुछ लोगो के साथ खडा है। उसने उस पर आक्रमण किया। आलम खा भाग खडा हुआ। विद्रोहियो को नमकहरामी से कोई लाभ न हुआ। ४० हज़ार अश्वारोही एक स्थान पर एकत्र होने के बावजूद भी कुछ न कर सके।

ज्योतिषियो द्वारा सुल्तान इबराहीम की विजय की भविष्य-वाणी

(९४) तदुपरान्त बादशाह सुल्तान इबराहीम की सेना के छिन्न भिन्न होने के समाचार सुनकर देहली की ओर रवाना हुआ। सुल्तान इबराहीम किनौर परगने के उपान्त मे पहुचा। उसने एक दिन ज्योतिषियों से पूछा कि, "आकाश की दशा देखकर बताओ कि विजय किसकी होगी।" ज्योतिषियो ने बडी सावधानी से देखकर निवेदन किया कि, "सितारों की चाल से ऐसा ज्ञात होता है कि हमारे समस्त हाथी तथा घोड मुगुलो की सेना मे प्रविष्ट हो गये है।" सुल्तान ने कहा, "तो इसका यह अर्थ है कि हम मुगुलों पर विजय पायेंगे।" उन लोगो न कहा कि, "ऐसा ही होगा।" ज्योतिषी लोग बाबर बादशाह की विजय के समाचार पाकर भाग खडे हुए।

बाबर का पानीपत की ओर प्रस्थान

यमीन खा उसी मज़िल से भागकर बाबर बादशाह के समक्ष उपस्थित हुआ। इसी बीच में हमीद खा, सुल्तान का खासाखेल चार हज़ार अश्वारोहियो सहित सुल्तान की सहायतार्थ पहुच गया। मुहम्मद हुमायू शाहज़ादा करावली के लिये निकला था। उससे उसकी मुठ-भेड हो गई और युद्ध होने लगा। हमीद खा की सेना पराजित हो गई। अधिकाश लोग मारे गये और अन्य लोग छिन्न भिन्न हो गये।

1 कुछ पोथियों के अनुसार विद्वान् तथा हाफ़िज़ संगठित हो गये।

बृहस्पतिवार को सुल्तान (इबराहीम) ने समस्त अमीरो तथा सैनिको को बुलवाया और उनके पास जो कुछ सामग्री तथा पहिनने के वस्त्र थे, उनके विषय मे आदेश दिया कि वह उन्हें धारण करें। खेमे, ज़रदोज़ी तथा अतलस का सायवान लगाकर उन्होंने जश्न का आयोजन किया। जो कुछ सोना, (९५) जवाहिरात, मोती तथा अशर्फिया थी, उन्हें न्योछावर किया और कहा कि, "हे मित्रो, कल के दिन हम लोग मुग़ुल सेना से घोर युद्ध करें। यदि हमको विजय प्राप्त हुई तो हम तुम्हें उचित रूप से प्रसन्न करेंगे अन्यथा तुम लोग हमसे सतुष्ट रहना।" इस प्रकार वह पूरा दिन भोगविलास मे व्यतीत करता रहा। दूसरे दिन युद्ध प्रारम्भ हुआ। इस ओर से सुल्तान इबराहीम ने प्रस्थान करके पश्चिम की ओर पानीपत से दो कुरोह[1] पर पडाव किया। बाबर ने सराय खरौदा से सवार होकर पूर्व की ओर दो कुरोह पर पडाव किया। मुग़ुल सेना की सख्या २४ हज़ार तथा सुल्तान इबराहीम की सेना की सख्या ५० हज़ार एव दो हज़ार पर्वत रूपी हाथी थे किन्तु सुल्तान इबराहीम से सभी सेना रुष्ट एव उसके दुर्व्यवहार से दुखी थी।

बाबर तथा इबराहीम का युद्ध

शुक्रवार ८ रजब, ९३२ हि० (२० अप्रैल १५२६ ई०) को सुल्तान इबराहीम की मौत उसका (९६) गरेबान पकडकर रण-क्षेत्र मे ले गई। बाबर भी उस ओर से युद्ध के लिये निकला। जब दोनो सेनाए एक दूसरे के आमने सामने हुई तो बाबर मीर्ज़ा ने कहा कि, "मुग़ुल सेना तीन भागो मे विभाजित की जाये। हिरावल[2] अपने स्थान पर रहे। दो अन्य भाग सुल्तान की सेना के पीछे पहुचकर युद्ध करें।" यद्यपि सुल्तान की सेना की सख्या बडी अधिक थी किन्तु उसकी अधिकाश सेना उसके दुर्व्यवहार के कारण रुष्ट एव दुखी थी। दोनो बादशाहो के मध्य मे पानीपत कस्बे के पूर्व मे ऐसा घोर युद्ध हुआ कि युग की आखों ने न देखा होगा। सुल्तान इबराहीम की अधिकाश सेना मारी गई। जो सेना सुल्तान से रुष्ट थी, वह युद्ध किये बिना भाग गई। सुल्तान अपने थोडे से साथियो के साथ खडा हुआ था। महमूद खा ने निवेदन किया कि, "बहुत कठिन विपत्ति आ गई है अच्छा हो कि आप स्वय रणक्षेत्र से बाहर निकल आयें। यदि बादशाह सलामत सुरक्षित रहेंगे तो बहुत बडी सख्या मे सेना पुन एकत्र हो जायेगी। और (९७) हम लोग मुग़ुलो से युद्ध कर सकेंगे। समय को दृष्टि मे रखते हुए जो कुछ उचित हो वही करना चाहिये। इसके बाद जो कुछ भी आपका आदेश होगा वह किया जायेगा। सुल्तान ने कहा कि, "महमूद खा! बादशाहो के लिये रणक्षेत्र से भागना बडे ही लज्जा की बात है। देखो हमारे इतने अमीर सहचर तथा निष्ठावान् मित्र शहीद पडे हुए है। अब हम कहा भागकर जायें। मैं अपने घोडे का पाव सीने तक रक्त से डूबा हुआ पाता हू। जितने समय तक मेरे भाग्य मे था, मैंने राज्य किया और अपनी इच्छा की पूर्ति की। इस समय धूर्त आकाश मुग़ुलो का सहायक है, मेरे जीवन से क्या लाभ? अच्छा तो यही है कि हम तथा मित्र लोग सब एक ही स्थान पर धूल एव रक्त मे मिल जायें।"

इबराहीम की हत्या

यह कह कर अपने विशेष पाच हज़ार वीर अश्वारोहियो सहित रणक्षेत्र मे प्रविष्ट हो गया और

१ कोस।
२ अग्रभाग।

अत्यधिक मुगुलों की हत्या कर दी। तदुपरान्त दिन के अन्तिम पहर शहीद हो गया। उसकी हिन्दी तारीख इस प्रकार है —

साखी हिन्दवी

"नो से ऊपर बढला बतीसा,
पानी पथ मे भारथ दीसा।
(९८) चौथी रजब शुक्कर वारा,
बाबर जित, बराहिम हारा।"

इस समय जहा उसकी कब्र है वही वह मारा गया।

बाबर की विजय

जब बाबर बादशाह को उसके शहीद होने के समाचार प्राप्त हुए तो उसने दिलावर खा को इस विषय मे पूछताछ करने के लिये भेजा। वह रणक्षेत्र मे पहुचा और उसने सुल्तान इबराहीम को धूल तथा रक्त मे सना हुआ पाया। मुकुट सिर से पृथक् हो गया था और आफ़्ताबगीर[1] अलग पडा था। दिलावर खा वह दृश्य देखकर बहुत रोया और उसने जाकर इस विषय मे निवेदन किया। बाबर बादशाह स्वय उस स्थान पर पहुचा और प्रतापी बादशाह को धूल और रक्त मे सना हुआ देखा। वह शोकप्रद दृश्य को देखकर काप उठा और उसके शरीर को मिट्टी से उठाकर कहा कि, "तेरी वीरता को धन्य है।" उसने आदेश दिया कि *ज़रबफ्त के थान लाये जायें और मिश्री का हलुवा तैयार किया जाये।* दिलावर खा तथा अमीर खलीफा एव जहागीर कुली को आदेश दिया कि वे स्वर्गीय सुल्तान के जनाज़े को नहला कर उस स्थान पर जहा वह शहीद हुआ है, दफ़न करद। तदुपरान्त विभिन्न स्थानो पर आदमियों को इस आशय से नियुक्त किया कि सेना, धन सम्पत्ति, ख़ेमे, बारगाह[2], ख़ज़ाने, हाथी एव समस्त शाही असबाब (९९) अधिकार मे कर लिये जायें। उसी दिन २७०० घोडे, १५०० हाथी, ख़ज़ाना एव बारगाह जो कुछ भी रणक्षेत्र मे था, वह बाबर बादशाह के समक्ष लाया गया।

दूसरे दिन वहा से प्रस्थान करके पश्चिम दिशा मे जहा सुल्तान का बारगाह था, उसने पडाव किया। वहा से अमीर खलीफा तथा अलाहवर्दी खा एव रुस्तम बहादुर को २-३ हज़ार वीर मुगुल अश्वारोहियों सहित इस आशय से आगे रवाना कर दिया कि वे शाही खज़ाने एव धन सम्पत्ति की जो देहली तथा आगरा मे हैं, रक्षा करें। ७० वर्ष से अफगान लोग अपने राज्य मे निसाब[3] वाले हो गये थे। वे अपने निवास स्थानो एव धन सम्पत्ति तथा खज़ानो से हाथ धोकर बगाल की ओर भाग खडे हुए। उन लोगो की बडी विचित्र दुर्दशा हो गई। तदुपरान्त बाबर बादशाह ने वहा की लूट की धन सम्पत्ति को एकत्र करके देहली की ओर प्रस्थान किया और वहा पहुचकर भूतकाल के सुल्तानो के राजसिंहासन पर आरूढ हुआ।

× × ×

१ छत्र।
२ शाही ख़ेमा।
३ ज़कात अदा करने के लिये जो कम से कम धन आवश्यक होता है वह निसाब कहलाता है।

जहीरुद्दीन बाबर शाह

पानीपत का प्रबन्ध

(११३) जब ९३२ हि० (१५२६ ई०) मे ससार को विजय करने वाले बादशाह बाबर ने उस युद्ध मे विजय प्राप्त कर ली[1] तो वह एक सप्ताह तक उस रणक्षेत्र मे जहा विजय प्राप्त हुई थी ठहरे रहे। समस्त धन-सम्पत्ति हाथी एव सुल्तान इबराहीम के अस्त्र शस्त्र पर अधिकार जमा लिया। उस भूमि को शुभ समझकर उस नगर के समस्त सम्मानित व्यक्तियो को बुलवाया। प्रत्येक को इनाम द्वारा सम्मानित एव प्रसन्न किया। सुल्तान मुहम्मद ऊगली को जिसने उस युद्ध मे अत्यधिक वीरता एव पौरुष प्रदर्शित किया था, दस हज़ार अश्वारोहियो सहित पानीपत का हाकिम नियुक्त कर दिया और एक फसल (की आय) उसे वृत्ति के रूप म प्रदान कर दी।

देहली की ओर प्रस्थान

(११४) तदुपरान्त उन्होंने देहली की ओर प्रस्थान किया। देहली तथा कस्बो के लोग मुगुलो के आतक से भयभीत होकर छिन्न भिन्न हो गये थे। उन्होने हिन्दुस्तान के अच्छे-अच्छे आदमियो को देहली एव कस्बों के सम्मानित एव प्रतिष्ठित लोगो को प्रोत्साहन देने के लिये इस आशय से नियुक्त किया कि वे उन्हें लौटा लायें और पादशाही कृपा का आश्वासन दिलाकर उन्हें दरबार मे उपस्थित करें।

बाबर की उदारता

जब शाही पताकाए सोनपथ मे पहुची तो नगर के प्रतिष्ठित लोग चौधरियो सिपाहियो एव सर्राफो के विभिन्न समूह सम्मानित दरबार मे पहुँचने लगे और आश्रय एव सम्मान प्राप्त करने लगे। गती सितानी ने अपने सिंहासनारोहण के प्रथम मास ही मे लोगों के प्रति इस प्रकार दया तथा कृपा प्रदर्शित की कि उनके हृदय से भय एव डर का अन्त हो गया और वे उसके राज्य की ओर आकर्षित होने लगे।

आगरा का प्रबन्ध

एक मास तथा कुछ दिन तक वे इन्दपथ[2] किले के समीप यमुना नदी के तट पर एक रमणीक स्थान पर अपने शिविर लगाये रहे। अमीर खलीफा तथा अमीर कुली सुल्तान को आगरा म नियुक्त किया (११५) कारण कि सुल्तान इबराहीम की माता तथा अफगानो के परिवार वाले वहीं थ। वे लोग निरन्तर यात्रा करते हुए वहा पहुच गये। सुल्तान इबराहीम की माता ने खज़ाने की धन सम्पत्ति अश फिया सोने, अस्त्रशस्त्र, जवाहिरात, हाथी, घोडा ऊट, समा बारगाह दास एव दासिया की सूचिया तैयार करवाकर खलीफा की सेवा मे भेजी और अपनी मुक्ति के विषय म प्रार्थना की। सुल्तान इबराहीम

१ एक पोथी में निम्नांकित सूची भी दी हुई है :—
शाहज़ादा मुहम्मद हुमायूँ, मीर्ज़ा कामरान शाहज़ादा, मीर्ज़ा अस्करी शाहज़ादा, अमीर निज़ामुद्दीन, महदी ख्वाजा, अमीर हिन्दू बेग, शाहम खा, अमीर अली दीवाना, मजनूँ बेग, करा बेग, सूफी सुल्तान, कूस बेग, इबराहीम अफ़शार, जूकी बेग, नूरम बेग, बख्तियार बेग, मीरक बेग, मीर हुसेन, नौरंग बेग, क़राचा बेग, क़ासिम बेग, अहमद बेग, आका रज़ी, आज़म बेग, मीरक बेग, जलाएर खा, तरदी बेग।
२ इन्द्रप्रस्थ।

के दास महमूद खा ने खलीफा की सेवा मे उपस्थित होकर उन्हें पढा। खलीफा ने उन्हे गेती सितानी की सेवा मे भेज दिया और स्वय बहुत बडी सेना सहित किले के निवासियो की रक्षा करने लगा।

जौनपुर के विद्रोह का दमन

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान इबराहीम के कुछ अमीरों ने एकत्र होकर लूटमार प्रारम्भ कर दी है। गेती सितानी ने अमीर कुली बेग तथा शाहज़ादा मीर्ज़ा कामरान को उस क्षेत्र मे (११६) भेजा। वे लोग निरन्तर यात्रा करते हुए वहा पहुच गये। अफगान लोग भाग्यशाली शाह्-ज़ादे के आगमन के समाचार पाकर पटना की ओर पलायन कर गये और जौनपुर अधिकार में आ गया। शाहज़ादा अमीर कुली बेग को एक भारी सेना सहित वहा छोडकर बादशाह की सेवा मे पहुचा।

पंजाब, मुल्तान तथा ठट्टा का प्रबन्ध

तदुपरान्त उसे पजाब प्रान्त मे नियुक्त किया गया और मीर्ज़ा कुली बेग को मुल्तान मे। ठट्टा के कार्य उसको सौप दिये गये। मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा, जो ज्येष्ठ पुत्र तथा बादशाह का वलीअह्द था, बादशाह की सेवा मे रह गया।

हसन खाँ मेवाती तथा राणा सांगा का विद्रोह

जब भाग्यशाली शाहज़ादे तथा प्रभुत्वशाली अमीर विभिन्न स्थानों पर पहुच गये तो हसन खा मेवाती एव राणा सागा के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुए और पता चला कि वे एक भारी सेना सहित मेवात मे एकत्र हो गये है। बादशाह ने आदेश दिया कि नये सेवको की भरती की जाये और इबराहीम शाह का खजाना सैनिको को बाट दिया जाये। हसन खा के वश मे कई पीढियो से सिक्का तथा खुत्बा[1] चला आ रहा था और फीरोज़ शाह के राज्यकाल से उसके वश मे राज्य एव प्रतिष्ठा जमा हो गई थी। राणा सागा भी उन दिनो बहुत बडा राणा था। उसने हसन खा के पास सदेश भेजा कि "मुगुलो ने हिन्दु-स्तान मे अपने पाव जमा लिये है और सुल्तान इबराहीम की हत्या करके देश को अपने अधिकार मे कर लिया है, यह निश्चय है कि वह हमारे और तुम्हारे ऊपर भी चढाई करेगा, यदि तुम मेरा साथ दो तो हम (११७) लोग सगठित होकर अपने राज्य मे उन्हें न प्रविष्ट होने दे।" हसन खा ने अपनी सख्या के अभि-मान एव राणा के मार्ग-भ्रष्ट कर देने के कारण जो पेशकश[2] गेती सितानी के लिये तैयार की थी उसने पास न भेजी। बादशाह का वकील निराश होकर वहा से लौट आया। यह बात गेती सितानी को आगरा मे ज्ञात हुई।

राणा सांगा तथा हसन खा मेवाती

मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मुहम्मद महदी ख्वाजा ने अपने जामाता को अपार सेना सहित रवाना करके स्वय भी उनके पीछे प्रस्थान किया। जब हसन खा को शाही सेना के समाचार प्राप्त हुए तो उसने राणा सागा को सूचना कराई और गेती सितानी की सेना के पहुच जाने के समाचार से उसे अवगत कराया। राणा भी अपने निवास स्थान से सेना एकत्र करके युद्ध के उद्देश्य से रवाना हुआ और हसन खा से मिल गया।

१ राज्य।
२ अधीन राज्यों के उपहार एवं खराज।

जब उन्हें शाही सेना के पहुचने के समाचार प्राप्त हुए तो फीरोज़पुर के समीप वे रणक्षेत्र मे युद्ध के लिये डट गये। राणा सागा ने हसन खा को अपनी दायी ओर रखखा और स्वय बायी ओर खडा हुआ। क्योकि वह हृदय से हसन खा से रुष्ट था अत वह चाहता था कि उसे किसी न किसी युक्ति से नष्ट करादे। वह गुप्त रूप से मीर्जा हिन्दाल तथा ख्वाजा महदी से मिल गया और एक वकील भेजा कि "मैं बादशाह का दास एव आज्ञाकारी हू। मुझे बादशाह का 'खुत्बा एव सिक्का'[1] स्वीकार है। हसन खा मुझे ज़बरदस्ती युद्ध के लिये लाया है। मैं बादशाह की सेना से युद्ध न करूगा और तुम्हारे साधारण से आक्रमण के उपरान्त (११८) भाग जाऊगा। तुम ऐसा प्रयत्न करो कि हसन खा या तो बन्दी बना लिया जाये और या उसकी हत्या हो जाये। यदि आप लोग उसकी हत्या कर देंगे तो मेवात भी अधिकार मे आ जायेगा।'

हसन खाँ की हत्या

सक्षेप मे जब दोनों ओर से युद्ध आरम्भ हुआ तो बडी घमासान लडाई हुई। महदी ख्वाजा ने हसन खा पर आक्रमण किया और उसे युद्ध करने का अवसर न दिया। हसन खा भाग खडा हुआ और उसके आदमी छिन्न-भिन्न हो गये। हसन खा का दास लाद खा अपने स्वामी के विरुद्ध था, वह उसके भाइयों से मिल गया था और उसने उनके बहकाने से अपने स्वामी के प्रति विश्वासघात किया। जब हसन खा के आदमियो मे से उसका कोई विश्वासपात्र एव निकटवर्ती उसके पास न रहा तो वह एक कुए पर पहुचा। उसने अपने दास से कहा कि, "यदि तेरे पास भोजनार्थ कोई वस्तु हो तो ला।" उसने कुछ रोटिया तथा पक्षियो के कबाब हसन खा के समक्ष रख दिये। उसने कुछ ग्रास खाये ही थे कि बाबर बादशाह की सेना का एक अमीर निकट पहुच गया। हसन खा घबडाकर सवार होने के उद्देश्य से उठ खडा हुआ। उस दास ने उस पर तलवार का वार किया और उसे आहत करके कुए मे डाल दिया तथा उसके घोडे को लेकर भाग खडा हुआ।

राणा सागा की पराजय

(११९) राणा सागा भी उस ओर से भाग खडा हुआ और हिन्दू बेग ने उसका पीछा किया तथा उसकी सेना को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। गेती सितानी की सेना को इतनी अधिक लूट की धन-सम्पत्ति, घोडे, ऊट, एव अस्त्रशस्त्र प्राप्त हुए कि वर्षों तक वे काम मे आते रहे और एक महान् विजय प्राप्त हुई। वह राज्य पूर्ण रूप से अधिकार मे आ गया। उन्होंने विभिन्न स्थानो पर आमिल नियुक्त कर दिये और अपने नाम का सिक्का तथा खुत्बा चलवा दिया और उस राज्य को अपने भाग्यशाली शाहज़ादे हुमायू को प्रदान करके पुन आगरा लौट आया।

कामरान की लाहौर से वापसी

सिंहासनारोहण के एक वर्ष उपरान्त मीर्जा कामरान लाहौर से वापस आया। वह अत्यधिक धन-सम्पत्ति तथा घोडे भट्टो एव खुक्खरों से छीनकर लाया था। उसने कई बार करके उन्हें गेती सितानी के समक्ष प्रस्तुत किया।

१ राज्य।

जौनपुर के विद्रोह का शान्त किया जाना

इसी बीच मे जौनपुर से समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान मुहम्मद अफगान ने, जिसने बिहार मे अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चला दिया था, मीर्जा हिन्दाल पर आक्रमण कर दिया। वह उसका मुकाबला न कर सका और जौनपुर से भाग खडा हुआ। सुल्तान मुहम्मद की सेना ने उसका पीछा करके युद्ध किया। मीर्जा के अधिकाश सिपाही मारे गये। गेती सितानी ने सुल्तान जुनैद बरलास तथा जहागीर कुली बेग को अन्य मगुलो सहित नियुक्त किया। सुल्तान जुनैद दो पडावो को एक पडाव बनाता (१२०) हुआ वहा पहुचा और सुल्तान मुहम्मद की सेना से युद्ध किया। ऐसा घोर युद्ध हुआ कि युग की आखो ने कभी न देखा होगा। अफगान लोग मुगुलो के वाणों के सामने न ठहर सके और भाग खडे हुए। जौनपुर पर पुन अधिकार जमा लिया गया और गेती सितानी की सेवा मे फतह नामा[1] एव लूट की धन-सम्पत्ति तथा घोड़े आगरा भेज दिये गये। बादशाह ने आदेश दिया कि, "सुल्तान जुनैद वही रहे और मीर्जा हिन्दाल को सेवा मे भेज दे।" सुल्तान जुनैद ने अफगानो से इस प्रकार व्यवहार किया कि वे जौनपुर की ओर मुख न करते थे। उसका आतक तथा भय अफगानो के हृदय एव उस ओर के विद्रोहियों पर आरूढ हो गया।

हिन्दाल का कंधार भेजा जाना

गेती सितानी ने मीर्जा हिन्दाल को इस आशय से कन्धार भेज दिया कि वह उस ओर से सचेत रहे।

बाबर द्वारा क्यारियो का आविष्कार

गेती सितानी ने अपने सिंहासनारोहण के दूसरे वर्ष यमुना तट के ऊपर एक अद्वितीय उद्यान का निर्माण कराया। क्यारियो की व्यवस्था सर्वप्रथम हिन्दुस्तान मे उसी के द्वारा दृष्टिगत हुई अन्यथा हिन्दुस्तान मे इससे पूर्व क्यारियो की इस प्रकार व्यवस्था न होती थी। वह रात दिन मुगुलों के साथ भोगविलास मे ग्रस्त रहता था, और उस स्वर्ग रूपी उद्यान मे अपने मुसाहिबों तथा रमणियों के साथ समय व्यतीत किया करता था।

मुगुलों को वर्षों से हिन्दुस्तान विजय की अभिलाषा थी और ईश्वर की कृपा से वह उनके अधीन हो गया। मुगुल भोगविलास मे ग्रस्त रहने लगे।

मीर्जा कामरान द्वारा लाहौर में बाग का लगवाया जाना

मीर्जा कामरान ने लाहौर मे इसी उद्यान के समान एक दूसरा उद्यान तैयार करवाया। अमीर (१२१) खलीफा राज्य व्यवस्था सम्पादित करता था और उसके आदेश सुल्तान के आदेश के समान समझे जाते थे।

चन्देरी के राजा द्वारा मुगुल सरदारो की पराजय

सक्षेप मे, जब हिन्दुस्तान मे उनकी बादशाही भली भाति दृढ हो गई और बहने वाले जल के समान

१ विजय पत्र।

उनके आदेश समुद्र एव स्थल मे प्रवाहित होने लगे तो चन्देरी के राजा ने विद्रोह कर दिया और बादशाह के आदेशो की उपेक्षा करने लगा। उसने अरगून खा से, जो कि उस प्रान्त मे नियुक्त था, युद्ध किया और उसे पराजित कर दिया। अरगून खा ने अमीर खलीफा को इस बात की सूचना भेजी। अरगून खा के भाई को एक भारी सेना सहित भेजा गया। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ वहा पहुचा। चन्देरी का राजा अरगून खा की पराजय से अभिमानी हो गया था और वह अपनी सेना सहित चन्देरी के बाहर निकला। पाधरा नामक रणक्षेत्र मे जो कि चन्देरी के समीप एक ग्राम है, युद्ध किया और अरगून खा के भाई को भी पराजित कर दिया। अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति लेकर वह विजय तथा सफलता प्राप्त करके चन्देरी लौट गया।

बाबर का चन्देरी के विरुद्ध प्रस्थान

जब इस सेना की पराजय के समाचार अमीर खलीफा ने गेती सितानी की सेवा मे प्रस्तुत किये तो गेती सितानी ने आदेश दिया कि उनके कारखाने तैयार कराये जायें। कारखानो की सामग्री की व्यवस्था हो जाने के उपरान्त वह बादशाह बड ऐश्वर्य एव वैभव से आगरा के बाहर निकला और निरन्तर यात्रा करते हुये उस ओर प्रस्थान किया। अमीर हिन्दू बेग को ६ हजार अश्वारोहियो सहित आगे रवाना कर दिया। अलाह वर्दी खा शामलू को भी, जो कि मालवा मे था, यह फरमान भेजा गया कि (१२२) अमीर हिन्दू बेग के साथ उस काफिर को दड देने के लिये प्रस्थान करे। वे दोनो चन्देरी की ओर रवाना हुए।

चन्देरी के राजा की पराजय

चन्देरी के राजा ने अभिमानवश प्रत्येक दिशा से आदमी एकत्र किये और अपने भतीजे को उन दो अमीरो से, जो कि अपने समय के बहुत बडे योद्धा थे, युद्ध करने के लिये भेजा। यमुना तट पर युद्ध हुआ। काफिर लोगो ने प्रथम आक्रमण ही मे प्राण हथेली पर रखकर ऐसा घोर युद्ध किया कि गेती सितानी की सेना के अधिकाश लोग रणक्षेत्र मे मारे गये। जब उन दोनो अमीरो न अपनी सेना को काफिरो के आक्रमण के कारण निराश देखा तो उस रणक्षेत्र से पीछे हटकर एक उद्यान मे पडाव किया। राजा के भतीजे ने शेर होकर उनके समक्ष पडाव कर दिया। जब उन दोनो अमीरों की पराजय के समाचार गेती सितानी को ज्ञात हुए तो वे बडी लम्बी यात्रा करके उस ओर पहुचे। जब उन दोनो अमीरों को सम्मानित पताकाओं के आगमन के समाचार प्राप्त हुए तो एक एसी रात्रि मे, जो कि अत्याचारियों के हृदय से भी अधिक अधेरी थी, दो सेनाए तैयार की और उन काफिरो पर रात्रि मे छापा मारा और उन कलकित लोगो को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। राजा का भतीजा मारा गया। अन्य लोग बन्दी बना लिये गये। गेती सितानी की सेना को इतनी अधिक लूट की धन-सम्पत्ति काफिरों की सेना द्वारा प्राप्त हुई कि वर्षों तक उनका काम चलता रहा। उनके सिरों का ढेर लगाया गया और उनके रक्त की नदी बहा दी गई तथा बादशाह की सेवा मे फतहनामा भेजा गया।

गेती सितानी ने भी चन्देरी की ओर प्रस्थान किया। जब राजा ने अपनी सेना का हाल तथा (१२३) अपने भतीजे की हत्या के विषय मे सुना तो वह बडा परेशान हुआ कारण कि उस दुष्ट एव अभागे का सबसे बडा योद्धा वही था। विवश होकर उसने सेना एकत्र की और शाही सेना से युद्ध करने के लिये पहुचा। उस दुष्ट को इस बात का पता न था कि मच्छर आधी का मुकाबला नही कर सकता। मुगलों ने प्रथम आक्रमण मे ही उस कलकित को पराजित कर दिया। जब उस राजा का सिर मस्त

छापा मारकर जला डाला है और वहा जो मवेशी थे उन्हें नष्ट कर दिया और हमारे पुत्र की हत्या कर दी।"
(१२६) गेती सितानी ने अली कुली हमदानी को तीन हज़ार अश्वारोहियो सहित इस आशय से नियुक्त किया कि मन्दाहर की प्रतिकार हेतु हत्या कर दे। अली कुली ने वहा पहुचकर उस ग्राम को जहा मन्दाहर निवास करते थे नष्ट भ्रष्ट कर दिया। सयोग से उस समय मन्दाहर के पुत्र का विवाह था। बहुत बडी सख्या मे वहा मन्दाहर एकत्र थे। वे लोग युद्ध के लिये अग्रसर हुए। शीत ऋतु थी। शाही सिपाही रात भर की यात्राके उपरान्त प्रात काल वहा पहुचे थे। जाडे के कारण उनके हाथ बध गये थे, वे धनुष न खीच सकते थे। मन्दाहर लोग अपने घरो से आग के सामने से गरमागरम युद्ध हेतु आये थे। उन्होंने इस प्रकार बाण चलाये कि शाही सेना ठहर न सकी और अधिकाश प्रतिष्ठित मुगुल रणक्षेत्र मे मारे गये। यद्यपि अली कुली ने घोर प्रयत्न किया किन्तु मन्दाहरो ने किसी को ग्राम मे प्रविष्ट न होने दिया। सेना वहा से वापस होकर एक जगल मे प्रविष्ट हुई और अत्यधिक ईंधन एकत्र करके जला दिया। सेना को जाडे से मुक्ति प्राप्त हो गई। उन्होने पुन उस ग्राम पर आक्रमण किया किन्तु उससे भी कोई लाभ न हुआ।

मन्दाहरो की पराजय

जब ये समाचार गेती सितानी को पानीपत मे प्राप्त हुए तो उन्होंने तरसुम बहादुर एव नौरग बेग को चार हज़ार अश्वारोहियो एव अत्यधिक हाथियो सहित नियुक्त किया। वे रातो रात वहा पहुच (१२७) गये। सयोग से उस रात्रि मे दूसरे मन्दाहरके यहा विवाह था। वे लोग मदिरापान करके भोगविलास मे ग्रस्त थे। रात्रि के अन्त मे मुगुलो न तीन सेनाये तैयार की, तरसुम बहादुर पश्चिम दिशा की सेना मे, अली कुली पूर्व मे एव नौरग बेग उत्तर मे सेना सहित खडे हुए। तरसुम बहादुर ने पश्चिम से पहुच कर अपने आपको प्रकट किया। मन्दाहर लोग अली कुली को पराजित करके अभिमानी हो गये थे, अत वे युद्ध के लिये बढे। जैसा कि निश्चय हो चुका था, तरसुम बहादुर पीठ दिखाकर भागा। मन्दाहरो ने पीछा किया। जब वे ग्राम छोडकर एक कुरोह[1] आगे बढ गये तो नौरग बेग एव अली कुली ने अकस्मात् आने वाली विपत्ति के समान उस ग्राम पर छापा मारा और उसम आग लगाकर वहा के निवासियो का सहार प्रारम्भ कर दिया। मन्दाहर लोग अग्नि को देखकर अपने ग्राम की ओर पुन लौटे। उस ओर से तरसुम बहादुर पलट पडा। शाही सेना ने उन्हें बीच मे करके तलवार चलाना प्रारम्भ कर दिया। लगभग एक हज़ार आदमियो की हत्या कर दी गई और एक हज़ार के लगभग स्त्री तथा बालक बन्दी बना लिये गये। रक्त की नदी बह निकली और सिरो का ढेर लगवाया गया। वह मन्दाहर जीवित बन्दी बना लिया गया। गेती सितानी के पास उस ग्राम का फतहनामा भेज दिया गया। उस ग्राम को भूमि मे मिला दिया गया और आज तक जब कि १३० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं वह ग्राम अभी तक आबाद नही हो सका है। सक्षेप मे अमीर लोग विजय द्वारा प्राप्त लूट की धन सम्पत्ति लेकर आकाशतुल्य राजसिहासन के पायो के चुम्बन हेतु उपस्थित हुए और धन सम्पत्ति राजसिहासन के समक्ष प्रस्तुत की। गेती सितानी ने उन स्त्रियों को देखकर २० को राजसिंहासन की सेवा हेतु रख लिया और शेष को अमीरों को बाट दिया।
(१२८) जो मन्दाहर जीवित बन्दी बनाकर लाया गया था, उसके आधे शरीर को भूमि मे गाडकर बाणो की वर्षा की गई। शाही सेना का आतक हिन्दुस्तान वालो के हृदय मे इस प्रकार आरूढ हो गया कि फिर कोई विद्रोह करने का साहस न कर सका।

१ कोष।

बाबर का आगरा पहुंचना

तदुपरान्त गेती सितानी ने दो मास देहली के समीप व्यतीत किये और सैर शिकार के उपरान्त आगरा पहुंचे। भाग्यशाली शाहज़ादे मुहम्मद हुमायू को एक भारी सेना सहित सम्भल के सूबे मे नियुक्त कर दिया और यह आदेश दिया कि वह ईद के उपरान्त प्रस्थान करे।

बाबर का हुमायूं को वली अहद बनाना

कहा जाता है कि जाडे की एक रात्रि मे बादशाह ने प्याला पिया और किसी कार्य हेतु मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा को बुलवाया। जब वह उपस्थित हुआ तो गेती सितानी नशे में होने के कारण तकिये पर सिर रखकर सो गये। शाहज़ादा उसी प्रकार हाथ बाधे खडा रहा। जब आधी रात्रि मे गेती सितानी जागे तो उसे खडा हुआ देखकर पूछा कि, "तू कब आया ?" शाहज़ादे ने निवेदन किया कि, "जिस समय आपने मुझे बुलाया था।" बादशाह को याद आया। वे बडे प्रसन्न हुये और उससे कहा कि, "यदि ईश्वर तुझे राजसिंहासन और मुकुट प्रदान करे तो अपने भाइयो की हत्या न करना और उन्हें क्षमा करते रहना।" शाहज़ादे ने भूमि पर सिर रखकर स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त बादशाह ने उसे वलीअहद की उपाधि से सम्मानित किया और प्रसन्न करके बिदा कर दिया। यही कारण था कि मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा अस्करी (१२९) तथा मीर्ज़ा हिन्दाल ने सैकडों प्रकार से धृष्टता की और युद्ध किया किन्तु बादशाह विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त उनकी धृष्टता की ओर कोई ध्यान न देता था और उनके उपस्थित होने पर वह उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करता था। उनके दुराचार का उनसे कोई बदला न लेता था। सक्षेप मे शाहज़ादे को एक भारी सेना देकर सम्भल प्रान्त मे, जोकि मवास था, भेज दिया गया।

बाबर की मृत्यु

दो तीन मास उपरान्त गेती सितानी रुग्ण हो गये। लोग उन्हें उस उद्यान मे जो उन्होंने यमुना तट पर लगवाया था, ले गये। अमीर निज़ामुद्दीन खलीफा उनका उपचार करने लगा और शासन प्रबन्ध का भी सचालन करता था। जब उनके रोग के चिह्न बढ़ने लगे तो उसने सोचा कि जन्नत आशियानी का रोग इस सीमा तक बढ गया है, ऐसा उपाय करना चाहिये कि यह राज्य साहब किरान के वश मे रहे और किसी अन्य के वश मे न जाने पाये। सक्षेप मे जब बादशाह का रोग नित्यप्रति बढ़ने लगा तो (१३०) शुक्रवार ४ तारीख ९३७ हि० (१५३० ई०) को आगरा मे उनकी मृत्यु हो गई।

मुहम्मद हुमायूं बादशाह

४ शाबान ९३७ हि० मे आगरा मे बाबर बादशाह की मृत्यु हुई। अमीर निज़ामुद्दीन खलीफ़ा जिसे उस समय अत्यधिक अधिकार प्राप्त था और सल्तनत के कारखानों का प्रबन्ध जिसके सिपुर्द था, भाग्यशाली शाहज़ादे मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा से कुछ ऐसे कार्यों से जोकि सासारिक व्यवहार मे चलते (१३१) रहते हैं भयभीत था और उन्हे बादशाह न बनने देना चाहता था। अन्य शाहज़ादे दूर थे। हज़रत फ़िरदौस मकानी का जामाता महदी ख्वाजा दानी, युवक एव सखी था और अमीर खलीफ़ा का मित्र था अत खलीफ़ा ने यह निश्चय किया कि उसे बादशाह बना दे। यह बात लोगों मे प्रसिद्ध हो गई और वे उसके अभिवादन को जाया करते थे। एक दिन महदी ख्वाजा दरबार मे गया ।। सयोग से अमीर खलीफ़ा उसके दर्शनार्थ पहुचा। वह खेमे मे अकेला था। उस स्थान पर खलीफ़ा, महदी ख्वाजा एव

मुकीम हरवी के अतिरिक्त कोई अन्य न था। थोड़ी देर उपरान्त अमीर खलीफा विदा हो गया। महदी ख्वाजा खेमे के द्वार तक उसके साथ साथ गया और द्वार के मध्य मे खड़ा हो गया। ख्वाजा मुकीम उसके सम्मान की दृष्टि से उसके पीछे खड़ा था। इस कारण कि महदी ख्वाजा मे कुछ कुछ पागलपन था अत वह उसके विषय मे बिल्कुल भूल गया और खलीफा से विदा होने के उपरान्त अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो तेरी खाल खिचवाऊगा।" यह कह कर मुकीम हरवी के विषय मे वह चौकन्ना हो गया और उससे प्रेमपूर्वक कहा 'हे ताजीक, लाल जिह्वा हरे भरे को नष्ट कर देती है।"

(१३२) तदुपरान्त ख्वाजा मुकीम विदा हो कर बाहर निकला और शीघ्रातिशीघ्र खलीफा के पास पहुचा और कहा कि, "मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा एव अन्य योग्य भाइयो के होते हुए तूने नमक हलाली की ओर से क्यो आख फेर ली है और चाहता है यह राज्य दूसरे को चला जाये? इसका परिणाम इसके अतिरिक्त कुछ अन्य न होगा।" और महदी ख्वाजा की वह बात बताई।

खलीफा ने तत्काल आदमियो को मुहम्मद हुमायू मीर्ज़ा को, जोकि सम्भल मे था, बुलवाने के लिये भेजा और यसावलो को आदेश दिया कि वह महदी ख्वाजा से कह दें कि वह अपने घर चला जाये। उस समय महदी ख्वाजा भोजन लगवा चुका था और दस्तरख्वान चुना हुआ था। यसावलो ने निरन्तर पहुच कर उसे वहा से उसके घर भेज दिया। तदुपरान्त अमीर खलीफा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि, "कोई भी महदी ख्वाजा के अभिवादन हेतु न जाये और वह भी दरबार मे उपस्थित न हो।' इसी बीच मे शाहज़ादा मुहम्मद हुमायू सम्भल से पहुच गया और अमीर निज़ामुद्दीन खलीफा के प्रयत्न से जो कि वकील एव सल्तनत का स्तम्भ था, ९ जमादि उल-अव्वल ९३७ हि० (२९ दिसम्बर १५३० ई०) को सिहासनारूढ हुआ।

भाग द

बाबर नामा (१४९४–१५०४ ई०)

बाबर नामा (सुल्तान हुसेन मोर्ज़ा व उसके दरबार का हाल)

बाबर नामा

फरगाना

मैं[1] रमज़ान ८९९ हि० (जून १४९४ ई०) मे फरगाना की विलायत[2] मे १२ वर्ष की अवस्था में[3] बादशाह[4] हुआ।

फरगाना ५वी इकलीम[5] मे है और आबाद भूभाग के अत पर स्थित है। इसके पूर्व मे काशगर, पश्चिम मे समरकन्द, दक्षिण म बदख्शा की सीमा की पर्वतीय शृखलायें और उत्तर म यद्यपि भूत काल मे आलमालीग, अलमातू तथा यागी सरीखे जो इतिहास की पुस्तको म तराज़ के नाम से प्रसिद्ध है, थे किन्तु ऊज़बेगो एव मुग़ूल लोगो के कारण अब वहा कोई आबादी नही रह गई है।

फरगाना एक छोटी सी विलायत है किन्तु उसमे मेवो तथा अनाज की बहुतायत है। पश्चिम दिशा अर्थात खुजन्द एव समरकन्द के अतिरिक्त यह चारो ओर से पर्वतो से घिरा है। शीत ऋतु मे शत्रु केवल इसी दिशा से प्रविष्ट हो सकते हैं।

सैहून नदी जो कि खुजन्द नदी के नाम से प्रसिद्ध है, पूर्व-उत्तर की ओर से निकल कर इस विलायत मे होती हुई पश्चिम की ओर जाती है। खुजन्द के उत्तर तथा फनाकत[6] से जो अब शाहरुखिया के नाम से प्रसिद्ध है, दक्षिण से होती हुई उत्तर दिशा की ओर मुड जाती है और तुर्किस्तान की ओर चली जाती है। यह किसी समुद्र म नही गिरती अपितु तुर्किस्तान से काफी नीचे की ओर समस्त नदी मरुस्थल मे पहुच कर लुप्त हो जाती है।

१ प्रकाशित फ़ारसी अनुवाद में निम्नांकित प्रस्तावना भी है —
"ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बिन मीर्ज़ा उमर शेख़ तीमूर वशीय अपने काल की कुछ घटनाओं तथा इतिहास के विषय में संक्षिप्त रूप में इस कारण कुछ पंक्तियां लिखता है कि वे उसकी सन्तान के पास उसके स्मृति चिह्न के रूप में रहे।"

२ राज्य।

३ बाबर का जन्म शुक्रवार ६ मुहर्रम ८८८ हि० (१४ फ़रवरी १४८३ ई०) को हुआ और वह अपने पिता उमर शेख़ का, जिसकी मृत्यु ४ रमज़ान ८९९ हि० (८ जून १४९४ ई०) में हुई, उत्तराधिकारी हुआ।

४ रक्षा करने वाला स्वामी, ९१३ हि० (१५०७ ई०) के पूर्व इस शब्द का अनुवाद बादशाह अथवा शहशाह करना उचित नहीं। कारण कि उस समय तक सभी तीमूरी, यहा तक कि बादशाह भी अपने आप को मीर्ज़ा कहते थे, अत बाबर को १५०७ ई० तक बाबर मीर्ज़ा कहना अधिक उचित होगा।

५ जलवायु के प्रदेश, मध्यकालीन भूगोल वेत्ता समस्त ससार को सात इकलीमों में विभाजित करते थे।

६ यह स्थान बनाक्त, बनाक्स, फ़ीआकत फ़नाकन्द के नाम से प्रसिद्ध है। डा० रियु के अनुसार यह स्थान शाश कहलाता था और आजकल ताशकीन्त। बाबर फ़नाक्त और अपने समय के ताशकीन्त को एक नहीं बताता अपितु फ़नाक्त एवं शाहरुखिया को एक बताता है और ताशकीन्त शाश तथा फ़नाक्त शाहरुखियों को अलग बताता है।

अन्दिजान

इस विलायत मे ७ कस्बे है, ५ सैहून नदी के दक्षिण मे और दो उत्तर मे।

दक्षिण की ओर के कस्बो मे से एक अन्दिजान है जो मध्य मे होने के कारण फरगाना की विलायत की राजधानी है। यहा अनाज तथा मेवो का अत्यधिक बाहुल्य है। अगूर तथा खरबूजे भी बडे ही उत्तम होते हैं। खरबूजे की फस्ल मे यहा खरबूजा बेचने की प्रथा नही है। अन्दिजान की नाशपाती से अच्छी नाशपाती कही नही होती।

मावराउन्नहर मे समरकन्द तथा केश के अतिरिक्त अन्दिजान के किले से बडा कोई किला[1] नही है। इसमे ३ द्वार हैं। अरक[2] दक्षिण की ओर स्थित है। किले मे ९ जलधारायें बहती है और यह बडे आश्चर्य की बात है कि सभी का उद्गम स्थान एक नही है। किले की खाई के बाहर की ओर पत्थर की एक बडी चौडी सडक है। किले के आस पास के स्थानों को यही चौडी सडक पृथक् करती है।

यहा अत्यधिक सख्या मे शिकारी जानवर पाये जाते हैं। यहा के तीतर[3] बड मोटे होते हैं। कहा जाता है कि एक तीतर से ४ व्यक्तियो का पेट भर जाता है और फिर भी वह समाप्त नही होता।

अन्दिजान के सभी निवासी तुर्क हैं। कस्बे तथा बाजार मे कोई ऐसा व्यक्ति नही मिलता जो तुर्की न जानता हो। यहा के बोल्ने तथा लिखने दोनो की भाषा में कोई अन्तर नही है। मीर अली शेर नवाई के ग्रन्थो को देख लीजिये, यद्यपि वह हेरी मे पला और बडा हुआ किन्तु वे इसी बोलने वाली भाषा में हैं। यहा के लोग बडे ही रूपवान् होते हैं। प्रसिद्ध ख्वाजा सगीतज्ञ यूसुफ अन्दिजान का निवासी था। यहा की जलवायु से मलेरिया हो जाता है और पतझड मे लोगो को अधिकाश ज्वर चढ आता है।

ऊश, अन्दिजान के दक्षिण-पूर्व म है किन्तु पूर्व की ओर इसका अधिक झुकाव है। अन्दिजान से यहा की दूरी ४ यीगाच[4] है। यहा की जल-वायु बडी ही उत्तम है। अत्यधिक जल धारायें बहती रहती है। यहा की बहार बडी ही उत्तम होती है। ऊश के गौरव के विषय मे हदीस[5] मे भी उल्लेख है। चहार-दीवारी के कस्बे के दक्षिण-पूर्व मे एक पर्वतीय शृखला है जो बरा कोह कहलाती है। इसकी चोटी पर सुल्तान महमूद खा ने एक कोठरी का निर्माण कराया था। इस कोठरी के नीचे पर्वत के बाजू मे मैंने ९०२ हि० (१४०९ ई०) मे एक एवानदार हुजरे[6] का निर्माण कराया। यद्यपि वह कोठरी जिसका इसके पूर्व उल्लेख हुआ इस हुजरे की अपेक्षा ऊची है किन्तु मेरा हुजरा बडे ही उत्तम स्थान पर स्थित है। समस्त शहर एव मुहल्ले उसके नीचे दृष्टिगत होते है।

अन्दिजान जल धारा ऊश के मुहल्लो के बीच से होती हुई अन्दिजान की ओर जाती है। इसकी दोनो ओर उद्यान लगे हुये है। समस्त उद्यान इससे सम्मान प्राप्त करते हैं। यहा का बनफशा बडा ही उत्तम होता है। यहा जल धारायें बहा करती है और बहार मे लाला तथा गुलाब अधिक सख्या मे होते है।

१ चहार दीवारी के भीतर जो आबादी इत्यादि होती है, वह सब किले में सम्मिलित रहती थी।
२ भीतरी दुर्ग।
३ कीरगावल।
४ बाबर ने इस शब्द का प्रयोग विभिन दूरियों के सम्बन्ध में किया है जो ४ मील से ८ मील तक की होती रही है। अन्दिजान से ऊश ३३ मील १$\frac{3}{4}$ फ़रसाग है।
५ हदीस—मुहम्मद साहब की वाणी का संग्रह।
६ दालान सहित कोठरी।

वरा कोह के आचल मे जौज़ा नामक एक मस्जिद है। इस मस्जिद एव नगर के मध्य से पर्वत की ओर से एक बहुत बडी नहर बहती है। मस्जिद के बाहरी प्रागण के नीचे एक बडा ही छायादार एव आनन्दवर्धक तीनपतिया घास का मैदान है। जो कोई यात्री यहा पहुच जाता है वह विश्राम करता है। यहा के आवारा लोग यह मजाक किया करते हैं कि जो कोई इस मैदान में सोता रहता है उसकी ओर जल-धारा को मोड देते है। उमर शेख मीर्ज़ा के राज्यकाल के अन्त मे इसी पर्वत से एक प्रकार का लाल तथा सफ़ेद लहरदार पत्थर मिलने लगा था जिनसे चाकू के दस्ते तथा पेटियो के बकलस बनने लगे हैं। फरगाना की विलायत मे जलवायु की उत्कृष्टता एव उसकी स्थिति को देखते हुए ऊश के समान कोई अन्य कस्बा नही है।

मर्गीनान

मर्गीनान एक अन्य कस्बा है जो अन्दिजान के पश्चिम मे ७ यागीच[1] की दूरी पर स्थित है। यह बडा ही उत्तम कस्बा है। यहा के अनार तथा ख़ूबानी बडी ही उत्तम होती हैं। यहा एक प्रकार का अनार होता है जिसे दानये कला[2] कहा जाता है। इसकी मिठास मे ज़र्द आलू के उत्तम स्वाद का आनन्द मिलता है। यह अनार सिमनान[3] के अनार से उत्तम होता है। यहा वाले ज़र्द आलू की गुठली निकाल कर बादाम की गिरी उसके स्थान पर भर कर सुखा लेते हैं और उसे सुबहानी कहते हैं। वह बडी स्वादिष्ट होती है। यहा जानवर तथा शिकार बहुत होते है। सफेद मृग निकट ही पाये जाते हैं। यहा के लोग फारसी भाषा-भाषी ताजीक[4] होते है। वे बडे ही झगडालू तथा फसादी लोग होते है। समरकन्द तथा बुखारा के कुप्रसिद्ध लडाकू लोग मर्गीनी ही हैं। हिदाया[5] के लेखक मर्गीनान के रशदान ग्राम के निवासी थे।

अस्फरा

एक अन्य स्थान अस्फरा है जो पर्वतीय प्रदेश म मर्गीनान के दक्षिण-पश्चिम मे ९ यीगाच[6] पर स्थित है। यहा विभिन्न प्रकार के वृक्ष बहुत बडी सख्या मे पाये जाते है। किन्तु उद्यानो मे बादाम के वृक्षो की बहुतायत है। यहा के निवासी फारसी भाषा भाषी ताजीक होते है। पहाडियो के मध्य मे, कस्बे के दक्षिण मे एक छोटी सी चट्टान है जिसे दर्पण का पत्थर कहा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग १० कारी[7] और ऊचाई किसी स्थान पर मनुष्य के शरीर की ऊचाई के बराबर और किसी स्थान पर मनुष्य की कमर के बराबर है। दर्पणके समान प्रत्येक वस्तु का प्रतिबिम्ब उसमे देखा जा सकता है।

अस्फरा की विलायत[8] पर्वतीय प्रदेश मे चार भागो मे विभाजित है। एक अस्फरा, दूसरी वारुख,

१ लगभग ४७ मील ४½ फ़रलाग।
२ बड़ा दाना।
३ ख़ुरासान तथा एराक के मध्य में दमग़ान के समीप एक कस्बा।
४ सार्ट।
५ हिदाया के लेखक शेख़ बुरहानुद्दीन अली कीलीच का जन्म लगभग ५३० हि० [११३५ ई०] और मृत्यु ५९३ हि० [११९७ ई०] में हुई थी। हिदाया सुन्नी फ़िक्ह का प्रसिद्ध ग्रंथ है।
६ लगभग ६५ मील।
७ हाथ।
८ राज्य, सम्भवत ज़िला।

तीसरी सूख, चौथा हुशियार। जब मुहम्मद शैबानी खा ने, सुल्तान महमूद खा तथा अलचा खा को पराजित करके ताशकीन्त[1] एव शाहरुखिया पर अधिकार जमा लिया था तो मैं सूख तथा हुशियार के पर्वतीय प्रदेश मे चला गया था और वहा एक वर्ष बडे कष्ट मे व्यतीत कर के मैंने काबुल की ओर प्रस्थान किया।[2]

खुजंद

इनके अतिरिक्त एक स्थान खुजद है जो अन्दिजान के पश्चिम मे २५ यीगाच की दूरी तथा समरकन्द के पूर्व मे २५ यीगाच पर स्थित है।[3] यह प्राचीन नगर है। शेख मसलहत तथा ख्वाजा कमाल[4] खुजद के ही निवासी थे। यहा के मेवे बडे उत्तम होते हैं और यहा के अनार अपनी उत्तमता के लिए बडे प्रसिद्ध है। समरकन्द के सेव तथा खजद के अनार उदाहरण स्वरूप प्रसिद्ध हैं किन्तु आजकल मर्गीनान के अनार अधिक सख्या मे आते है।[5] यहा का किला एक उच्च स्थान पर स्थित है। सैहून नदी इसके उत्तर में है और किले से एक बाण के मार की दूरी पर बहती है। किले तथा सैहून के उत्तर मे एक पहाडी है जो मुनूगूल कहलाती है। लोगों का कथन है कि इसमे फीरोजे की खान तथा अन्य खानें पाई जाती हैं। कहा जाता है कि इस पहाडी मे सर्प बहुत बडी सख्या मे होते है। खुजद के शिकारगाह बडे उत्तम हैं। सफेद मृग, पहाडी बकरे, बारहसिंग जगली पक्षी तथा खरगोश बहुत बडी सख्या मे होते हैं। यहा की वायु बडी दूषित है। इसके कारण मलेरिया हो जाता है। यहा तक कि कहा जाता है कि यहा के गौरैयों को भी ज्वर चढ आता है। कहा जाता है कि यहा की वायु दूषित होने का कारण उत्तर की ओर के पर्वत हैं।

कन्दे बादाम

इसके अधीन कन्दे बादाम[6] है। यद्यपि यह कस्बा नही है किन्तु कस्बे ही के समान एक छोटा सा उत्तम स्थान है। यह अपने बादामो की उत्कृष्टता के कारण इस नाम से प्रसिद्ध हो गया है। हुरमुज तथा हिन्दुस्तान मे इस स्थान से बादाम भेजे जाते हैं और यह खुजद के पूर्व मे ५-६ यीगाच[7] पर स्थित है। खुजद तथा कन्दे बादाम के मध्य मे दरवेश नामक एक उजाड स्थान है। यहा सर्वदा तेज बवडर उठते रहते हैं और यहीं से पूर्व की ओर मर्गीनान मे और यहीं से खुजद की ओर पश्चिम मे, हवा चलती रहती है। यह बडा ही उग्र रूप धारण किये रहती है। कहा जाता है कि इस उजाड स्थान मे कुछ दरवेश बवडर मे फस कर एक दूसरे से पृथक् हो गये और हाय दरवेश! हाय दरवेश! पुकारते ही पुकारते नष्ट हो गये। उसी समय से इस उजडे स्थान को 'हा दरवेश' कहने लगे।

१ फ़ारसी में ताश्कन्द।
२ वह सूख के पर्वतीय प्रदेश के ऊपर से ६१० हि० (जून १५०४ ई०) के मध्य में रवाना हुआ।
३ खुजन्द से अन्दिजान १८७ मील २ फ़रलाग।
४ कमालुद्दीन खुजन्दी, हाफ़िज़ के समकालीन, फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि थे। उनकी मृत्यु ७६२ हि० (१३६० ई०) में हुई और वे तबरेज़ में दफ़न हुये।
५ सम्भवत. हिन्दुस्तान में, जहा बाबर ने यह वर्णन लिखा था, मर्गीनान के ही अनार पहुंचते होंगे।
६ बादाम का ग्राम।
७ लगभग २८ मील।

अक्सी

सैहून नदी के उत्तर मे जो कस्बे हैं उनमे से एक अक्सी है। पुस्तको मे इसे अख्सीकीत लिखते है। इसी कारण कवि असीरुद्दीन को असीरुद्दीन[1] अख्सीकीती कहते हैं। फरगाना की विलायत मे अन्दिजान कस्बे को छोड कर इससे बडा कोई कस्बा नही है। यह अन्दिजान के पश्चिम म ९ यीगाच[2] की दूरी पर स्थित है। उमर शेख मीर्जा ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। सैहून नदी इस किले की दीवार के नीचे से बहती है। इसका किला ऊंचाई पर स्थित है। खाई के स्थान पर इसके चारो ओर ढालू गहरी कन्दरायें हैं। जब उमर शेख मीर्जा ने इसे अपनी राजधानी बनाया तो एक-दो बार इन बाहिरी कन्दराओं से अन्य कन्दराओ को पृथक् करा दिया। फरगाना मे इससे बढ कर कोई अन्य किला नही है। किले से दो मील तक इससे सम्बन्धित स्थान चले गये हैं। लोगों ने अक्सी के विषय मे यह लोकोक्ति बना ली है कि, "ग्राम कहा है? वृक्ष कहा हैं?" यहा खरबूजे बडे ही उत्तम होते है। एक प्रकार का खरबूजा मीर तैमूरी कहलाता है। इस प्रकार का खरबूजा पता नही ससार मे कही पाया जाता है अथवा नही। बुखारा के खरबूजे भी प्रसिद्ध हैं किन्तु जब मैंने समरकन्द पर अधिकार जमा लिया था तो अक्सी तथा बुखारा दोनो स्थानो के खरबूजे मगवाये। जब वे एक दावत मे काटे गये तो अक्सी के खरबूजे का बुखारा के खरबूजे कोई मुकाबला न कर सकते थे। यहा पशुओं तथा पक्षियों का बडा ही उत्तम शिकार होता है। सैहून नदी की ओर अक्सी का जो जगल है, वहा सफ़ेद मृग बडी सख्या मे पाये जाते है। अन्दिजान की दिशा म जो उजाड स्थान है वहा बूगू मराल[3] बडी सख्या मे पाये जाते है। यहा जगली पक्षी तथा खरगोश भी बहुत बडी सख्या मे होते है और बडे मोटे ताजे होते हैं।

कासान

एक अन्य कस्बा कासान है जो अक्सी के उत्तर में है। यह बडा छोटा सा कस्बा है। जिस प्रकार अन्दिजान की नदी ऊश से आती है उसी प्रकार अक्सी की नदी कासान से आती है। यहा की जलवायु बडी उत्तम तथा उद्यान छोटे-छोटे और बडे ही सुन्दर हैं। क्योंकि यहा के उद्यान जल धारा के दोनों ओर लगे है अत वे कबा का उत्तम अगला भाग कहलाते है। ऊश तथा कासान निवासी अपने कस्बों की जलवायु एव सुन्दरता के विषय मे एक दूसरे से वाद-विवाद करते रहते हैं।

पर्वत

फरगाना के पर्वतो के चारो ओर बडे ही उत्तम यीलाक[4] हैं। केवल इसी पर्वतीय इलाके में तबल्गू नामक लकडी पाई जाती है जो किसी अन्य स्थान पर नही पाई जाती। यह लकडी लाल रग की होती है और डण्डे, कोडो के दस्ते तथा जानवरो के पिंजडे इससे तैयार किये जाते हैं। इसमे बाण की लकडी भी तैयार की जाती है। यह लकडी बडी ही अप्राप्य है और उपहार स्वरूप लोग इसे दूर दूर के स्थानों को ले जाते हैं। कुछ ग्रन्थो मे लिखा हुआ है कि यबरूजुस्सनम[5] भी इन पर्वतो मे पाया जाता है किन्तु इसके

१ असीरुद्दीन, खाकानी का समकालीन था। उसकी मृत्यु १२११ ई० में हुई।
२ लगभग ५० मील।
३ एक प्रकार का सफ़ेद मृग।
४ गरमी की चरागाहें।
५ आलू के पौधे के समान एक विषैला पौधा। मेहर गयाह।

विषय मे बहुत समय से कुछ नही सुना गया। कहा जाता है कि यीतीकीन्त मे एक पौधा पाया जाता है जिसमे वही विशेषतायें होती हैं जो यबरूजुस्सनम मे। लोग इसे आयीक ऊती कहते हैं। सभवत मुहर गयाह वही हो जिसे लोग इस नाम से पुकारते है। इन पर्वतो मे फीरोजे एव लोहे की खाने भी होती है।

राजस्व

यदि फरगाना की विलायत के राजस्व को ठीक से व्यय किया जाये तो ३-४ हजार व्यक्तियो का पालन-पोषण हो सकता है।

उमर शेख मीर्ज़ा

क्योकि उमर शेख मीर्ज़ा बडे ही साहसी तथा महत्वाकाक्षी बादशाह थे अत वे सर्वदा अन्य राज्यो को विजय करने की योजना बनाया करता थे। उन्होने कई बार समरकन्द पर चढाई की, कभी पराजित होते और कभी अपनी इच्छा के विरुद्ध लौट आते। उन्होने कई बार अपने ससुर अर्थात मेरे नाना यूनुस खा को जो खान चिंगीज खा के दूसरे पुत्र चगताई खा[1] की नस्ल से थे और जो उस समय मुग़लो के खान थे, चगताई खान के राज्य मे सहायता हेतु बुलवाया। जब जब मीर्ज़ा खान को वह बुलाते थे तो उन्हे विलायतें[2] प्रदान करते थे। कभी तो मीर्ज़ा के अनुचित व्यवहार[3] के कारण और कभी अन्य मुग़ल कबीलो के विश्वासघात के कारण, उसकी इच्छानुसार सफलता न हुई। यूनुस खा इस कारण ठहर न सका और मुग़लिस्तान चला गया। अन्तिम बार जब मीर्ज़ा खान को लाया तो ताशकीन्त[4] की विलायत, जिसे पुस्तको मे शाश लिखा जाता है और जिसे कभी कभी कुछ लोग चाच भी कहते है, जहा के चाची धनुष प्रसिद्ध है उमर शेख मीर्ज़ा के अधिकार में थी। उसने उसे खान को दे दिया। उस समय[5] से लेकर ९०८ हि० (१५०३ ई०) तक ताशकीन्त तथा शाहरुखिया की विलायत चगताई खानों के अधिकार मे रही।

इस समय[6] मुग़लों के कबीलो की खानी, यूनुस खा के छोटे सुल्तान महमूद खा के अधीन थी। वह मेरी माता का सौतेला भाई था। उसने तथा समरकन्द के बादशाह, सुल्तान अहमद मीर्ज़ा ने, जो मेरे पिता उमर शेख का बडा भाई था, उमर शेख मीर्ज़ा के व्यवहार से रुष्ट होकर आपस मे मेल कर लिया। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा ने सुल्तान महमूद खा से अपनी पुत्री का विवाह[7] कर दिया था। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा तथा सुल्तान महमूद खा ने मिल कर इस समय उमर शेख मीर्ज़ा पर चढाई की। सुल्तान अहमद

१ ऐसा ज्ञात होता है कि जब चगताई खा को चिंगीज खा के राज्य से उसका हिस्सा मिला तो उसे मुग़लों का एक कबीला भी सेना हेतु एव तुर्की आबादी पर अपना अधिकार जमाये रखने को मिला।
२ ज़मीन, राज्य का भाग।
३ एक बार मीर्ज़ा, यूनुस को अक्शी में शीत ऋतु व्यतीत न करने देना चाहता था जिसके कारण टीका सीकरी तक का युद्ध हुआ जिसमें उमर शेख पराजित हुआ। (तारीखे रशीदी पृ० ९६)।
४ ताशकन्द।
५ ८९० हि० (१४८५ ई०)।
६ ८९९ हि० (१४९४ ई०)।
७ राबेआ सुल्तान का विवाह ८९३ हि० [१४८८ ई०] में हुआ।

मीर्ज़ा खुजन्द नदी के दक्षिण की ओर से रवाना हुआ और सुल्तान महमूद खा उसके उत्तर की ओर से चला। उसी समय यह शोकमयी घटना घटी। यह लिखा जा चुका है कि अक्शी का किला एक ढालू पर्वतीय करारे पर स्थित है। उसके किनारे पर महल के भवन बने हुए हैं। सोमवार ४ रमज़ान (८ जून) को उमर शेख मीर्ज़ा करारे के ऊपर से कबूतर उडा रहे थे कि वे कबूतर एव ढावली सहित गिर कर मृत्यु को प्राप्त हो गये।

उनकी अवस्था ३९ वर्ष की थी।[1] उनका जन्म समरकन्द मे ८६० हि० (१४५६ ई०) मे हुआ था। वे सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के चौथे पुत्र थे और सुल्तान अहमद मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा तथा सुल्तान महमूद मीर्ज़ा से छोटे थे। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा के पुत्र थे। सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा मीरान शाह के पुत्र थे। मीर्ज़ा मीरान शाह तीमूर बेग के तीसरे पुत्र थे और उमर शेख मीर्ज़ा तथा जहागीर मीर्ज़ा से छोटे एव शाहरुख मीर्ज़ा से बडे थे।

उमर शेख मीर्ज़ा का राज्य

सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने सर्व प्रथम उमर शेख मीर्ज़ा को काबुल प्रदान कर दिया था और बाबा काबुली को उनका बेग अत्का[2] नियुक्त कर के बिदा कर दिया था किन्तु मीर्ज़ा लोगों के खतने के समारोह के कारण उन्हे तमरिस्क[3] घाटी से समरकन्द बुलवा लिया। समारोह के उपरान्त इस दृष्टि से कि तीमूर बेग ने अपने पुत्र उमर शेख मीर्ज़ा को फरगाना[4] की विलायत प्रदान की थी, अबू सईद ने नामे की मुनासबत से उमर शेख मीर्ज़ा को अन्दिजान प्रदान कर दिया और खुदाई बीरदी तूगची तीमूर ताश को बेग अत्का नियुक्त कर के बिदा कर दिया।

चरित्र

उनका डीलडौल ठिगना, शरीर गठा हुआ, दाढी गोल तथा चेहरा भरा हुआ था। वे बडे तग वस्त्र धारण करते थे। कबा का बन्द बाधते समय अपने पेट को भीतर कर के पिचका लेते थे और बाधने के उपरान्त जब पेट अपनी दशा मे आता तो अधिकाश ऐसा होता था कि बन्द टूट जाते थे। खाने तथा पहनने में वे कोई आडम्बर पसन्द नही करते थे। वे पगडी को दस्तार पेंच[5] प्रथानुसार बाधते थे। उस समय पगडियो को चार पेंच[6] प्रथानुसार बाधा जाता था। लोग उस समय बिना मडोरे पगडी बाधते थे और पीछे थोडा सा टुकडा लटकने देते थे। ग्रीष्म ऋतु मे दरबार के अतिरिक्त वे अधिकाश मुग़ल टोपी पहनते थे।

वे अपने आचार व्यवहार मे हनफी[7] धर्म का पालन करते थे और बडे पवित्र विचारो के व्यक्ति थे। पाचों समय की नमाज़ कभी न त्यागते थे। वे अपने जीवन काल मे जितनी नमाज़ें न पढ सके थे

१ चन्द्रमा के साल से।
२ वह व्यक्ति जो शाहज़ादों का संरक्षक नियुक्त होता था।
३ दरा ए गज़, बल्ख के दक्षिण में। यह समारोह सर्व में ८७० हि० [१४६५ ई०] में हुआ। उमर शेख़ मीर्ज़ा की अवस्था उस समय १० वर्ष से कम थी।
४ अन्दिजान।
५ एक पलेट की बधाई।
६ चार पलेट की बधाई।
७ इमाम अबू हनीफ़ा [जन्म ७०२ ई०] की सुन्नी धर्म की व्याख्या के अनुयायी।

उनके बदले मे नमाज़े पूरी कर चुके थे।[1] वे अपना काफी समय कुरान के पाठ मे लगाते थे और ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरारी[2] के मुरीद थे। उमर शेख मीर्ज़ा, ख्वाजा की गोष्ठी मे उपस्थित रहा करते थे और ख्वाजा भी उन्हे सम्मानित करने के लिये उन्हे अपना पुत्र कहते थे। वे खमसे[3] तथा मसनवी[4] का अध्ययन किया करते थे। इतिहास मे वे शाहनामा[5] का अध्ययन करते रहते थे। यद्यपि वे कविता कर सकते थे किन्तु कविता करने से उन्हे रुचि न थी। वे इतने बड़े न्यायकारी थे कि जब उन्होने सुना कि खिताई से लौटता हुआ एक कारवान उत्तरी अन्दिजान के पर्वतो मे बरफ के कारण इस प्रकार नष्ट हो गया कि दो व्यक्तियो के अतिरिक्त कोई भी न बच सका तो उन्होने तत्काल मुहसिलो को भेज कर कारवान वालो की समस्त धन सपत्ति को एकत्र कराया। यद्यपि उनका कोई उत्तराधिकारी उपस्थित न था किन्तु फिर भी उन्होने बड़ी सावधानी से उस सपत्ति को सुरक्षित रक्खा। एक अथवा दो वर्ष उपरान्त खुरासान तथा समरकन्द मे सपत्ति के वारिसो को बुला कर समस्त सपत्ति बिना किसी कमी के सुरक्षित उन्हे सौंप दी, यद्यपि उन्हे उस समय धन की बड़ी आवश्यकता थी।

वे बड़े दानी थे और उनके चरित्र मे अत्यधिक उदारता पाई जाती थी। वे बड़े ही सुशील, शिष्टाचारी, वाक्पटु मीठी वाणी बोलने वाले, वीर तथा पराक्रमी थे। दो बार उन्होंने अपने समस्त जवानो के आगे बढ कर तलवार चलाने मे अत्यधिक कुशलता दिखलाई, अख्शी द्वार पर और एक बार शाहरुखिया द्वार पर। वाण चलाने मे वे मध्य श्रेणी के थे। उनके घूसे की चोट बड़ी दृढ होती थी। ऐसा कभी न हुआ कि उन्होंने किसी को घूसा मारा हो और वह गिर न पड़ा हो। अन्य राज्यो पर अधिकार जमाने की महत्वाकांक्षा के कारण वे बहुत सी सधिया युद्ध मे तथा मित्रता शत्रुता मे परिवर्तित कर देते थे।

वे अपने प्रारम्भिक जीवन-काल मे अत्यधिक मदिरापान किया करते थे। बाद मे सप्ताह में एक बार अथवा दो बार मदिरापान की गोष्ठी होने लगी। गोष्ठियो मे वे बड़ा ही उत्तम ढग से व्यवहार करते थे। ऐसे अवसरो पर वे बड़े उत्तम शेर पढा करते थे। जीवन के अन्तिम काल मे वे माजून का

१ यदि किसी समय की नमाज़ किसी कारणवश न पढ़ी जा सके तो उसके बदले मे बाद में शीघ्रातिशीघ्र नमाज़ पढ लेना परमावश्यक बताया गया है।

२ ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार नक्शबन्दी बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी संत हुये हैं। उनकी मृत्यु १४६१ ई० में हुई।

३ ख़मसे के लेखक निज़ामुद्दीन गजवी थे। उनकी मृत्यु १२०६ ई० के लगभग हुई। ख़मसे में ५ मसनवियाँ [काव्य] सम्मिलित हैं —

अ-मख़ज़ने असरार।
ब-लैला मजनू।
स-ख़ुसरो व शीरीं।
द-हफ़्त पैकर।
ई-सिकन्दर नामा।

४ मसनवी के लेखक मौलाना जलालुद्दीन रूमी थे। वे बहुत बड़े सूफ़ी थे और उनकी मसनवी को फ़ारसी की सूफ़ीवाद की कविता में बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त है। उनका जन्म १२०७ ई० तथा मृत्यु १२७२ ई० में हुई।

५ शाहनामा का लेखक फ़िरदौसी तूसी है। उसका नाम अबुल क़ासिम हसन बिन शरफ़ शाह था। शाहनामा में ईरान के प्राचीन बादशाहों का हाल काव्य में लिखा गया है। फ़िरदौसी की मृत्यु १०२० ई० में हुई।

अत्यधिक सेवन करने लगे थे। नशे की तरग मे वे बहक जाया करते थे। वे बडे रसिक व्यक्ति थे और प्रेमियो के अनेक गुण उनमे पाये जाते थे। वे शतरज बहुत खेलते थे और कभी कभी पासे का खेल भी खेलते थे।

युद्ध

उन्होंने तीन युद्ध किये। प्रथम बार युनूस खा से अन्दिजान के उत्तर मे सैहून नदी के तट पर, टीका सीकरी तकू[1] नामक स्थान पर। इस नाम का कारण यह है कि नदी पर्वत के आचल मे बहते बहते इतनी सकरी हो जाती है कि कहा जाता है कि एक बार एक पहाडी बकरा एक तट से दूसरे तट पर कूद गया था। उस युद्ध मे वे पराजित होकर बन्दी बना लिये गये थे। यूनुस खा ने उनके प्रति बडी उदारता प्रदर्शित की और उन्हें उनकी विलायत[2] मे जाने की अनुमति दे दी। इस स्थान पर युद्ध होने के कारण यह युद्ध टीका सीकरी तकू का युद्ध कहलाता है और उस ओर एक भवत् बन गया है।

उनका दूसरा युद्ध तुर्किस्तान मे उरस[3] के तट पर हुआ। यह युद्ध उन ऊजबेकों से हुआ जो समरकन्द के आसपास के स्थानों पर आक्रमण कर के लौट रहे थे। उरस नदी का जल जम कर बरफ बन गया। उन्होंने बरफ को पार करके उन्हे बुरी तरह पराजित किया और जो धन-सपत्ति तथा बन्दी ले जा रहे थे, उनसे छीन कर उन्होंने उनके स्वामियो को वापस कर दिया और किसी भी वस्तु की कोई इच्छा न की। तीसरी बार उन्होंने सुल्तान अहमद मीर्जा[4] से शाहरुखिया तथा औरातीपा के मध्य मे ख्वास नामक स्थान पर युद्ध किया किन्तु पराजित हुये।

उमर शेख का राज्य

उनके पिता ने उन्हे फरगाना की विलायत दे दी थी। कुछ समय तक ताशकीन्त तथा सैराम, जो उन्हे उनके बडे भाई सुल्तान अहमद मीर्जा ने प्रदान किये थे, उनके अधिकार मे रहे। शाहरुखिया को उन्होंने एक युक्ति द्वारा अपने अधिकार मे करके कुछ समय तक उस पर कब्जा रखा। अन्त मे ताशकीन्त तथा शाहरुखिया उनके हाथ से निकल गये और केवल फरगाना, खुजन्द, औरातीपा उनके अधिकार में रह गये। औरातीपा का वास्तविक नाम ऊरूशनाया है जिसे कुछ लोग ऊरूश कहते हैं। कुछ लोगो का मत है कि खुजद फरगाना मे सम्मिलित नही है। जब सुल्तान अहमद मीर्जा ने ताशकीन्त मे मुगलो पर चढाई की किन्तु चीर नदी पर पराजित हो गया[5] तो उस समय औरातीपा हाफिज बेग दूल्दाई के हाथ मे था। उसे उसने उमर शेख मीर्जा को प्रदान कर दिया और वे उस समय उस पर अपना अधिकार जमाये रहे।

सतान

उनकी सतान मे ३ पुत्र तथा ५ पुत्रिया थी। ज्येष्ठतम पुत्र, मैं जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर था।

१ बकरे की छलांग।
२ अन्दिजान।
३ सैहून नदी की एक शाखा, ताशकन्द के उत्तर में।
४ वह उमर शेख मीर्जा का भाई था।
५ ८९३ हि० (१४८८ ई०)।

मेरी माता कूतलूक निगार खानम थी। दूसरा पुत्र जहागीर मीर्जा था जो मुझसे दो वर्ष छोटा था उसकी माता मुग़ल कौम के तूमान[1] के एक अमीर की पुत्री थी। उसका नाम फातिमा सुल्तान था। तीसरा पुत्र नासिर मीर्जा था। उसकी माता अन्दिजान की थी और उसका नाम उम्मीद था। वह रखेली स्त्री थी। नासिर मीर्जा मुझसे ४ वर्ष छोटा था।

उमर शेख मीर्जा की सब से बडी पुत्री मेरी सगी बहिन खानज़ादा बेगम थी। वह मुझसे पाच वर्ष बडी थी। जब मैंने समरकन्द को दूसरी बार विजय किया[2] तो यद्यपि मेरी सेना सरे पुल पर पराजित हो चुकी थी किन्तु मैं किले मे प्रविष्ट हो कर ५ मास तक किले की रक्षा करता रहा। आसपास के किसी शासक तथा बेग[3] द्वारा किसी प्रकार की सहायता प्राप्त न होने पर मैं उसे छोड कर चल दिया। उस परेशानी के समय खानज़ादा बेगम, मुहम्मद शैबानी खा को प्राप्त हो गई। उससे एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम खुर्रम शाह रखा गया। वह बडा ही रूपवान् था। मुहम्मद शैबानी ने उसे बल्ख की विलायत प्रदान कर दी थी। वह अपने पिता के निधन के कुछ वर्ष बाद मृत्यु को प्राप्त हो गया। जिस समय शाह इस्माईल सफ़वी ने ऊज़बेकों को मर्व के समीप पराजित किया[4] तो खानज़ादा बेगम मर्व मे थी। मेरे कारण शाह इस्माईल ने बेगम की भली भाति देखभाल की और उससे बडा ही उत्तम व्यवहार किया और कुछ लोगों की रक्षा मे मेरे पास भेज दिया। बेगम कून्दूज़ मे जा कर मुझसे मिल गई। वह मुझसे १० वर्ष तक पृथक् रही थी। जब मुहम्मदी कूकूल्दाश तथा मैं उससे भेंट करने गये तो बेगम तथा उसके सेवक हमें न पहचान सके यद्यपि मैंने बात भी की। उन्होंने कुछ समय उपरान्त हमे पहचाना। दूसरी पुत्री मिहर बानू बेगम, नासिर मीर्जा की माता की पुत्री थी और मुझसे २ वर्ष छोटी थी। शहर बानू बेगम भी एक अन्य पुत्री थी जो नासिर मीर्जा की सगी बहिन और मुझसे ८ वर्ष छोटी थी। यादगार सुल्तान बेगम एक अन्य पुत्री थी। उसकी माता आगा सुल्तान रखेली स्त्री थी। रुकय्या सुल्तान बेगम एक अन्य पुत्री थी। उसकी माता को लोग काले नेत्रों वाली बेगम कहते थे। आखरी दोनो का जन्म मीर्जा के निधन के उपरान्त हुआ। यादगार सुल्तान बेगम का पालन पोषण मेरी दादी ईसान दौलत बेगम ने किया था। जब शैबानी खा ने अख़्शी तथा अन्दिजान पर अधिकार जमा लिया[5] तो यादगार सुल्तान बेगम अब्दुल लतीफ सुल्तान नामक हमज़ा सुल्तान के एक पुत्र को प्राप्त हो गई। जब मैंने खुतलान मे हमज़ा सुल्तान तथा अन्य सुल्तानो को जो उसके साथ थे पराजित कर के हिसार पर अधिकार जमा लिया[6] तो यादगार सुल्तान बेगम मेरे पास आ गई। रुकय्या सुल्तान बेगम भी उन्ही परेशानी के दिनो मे जानी बेग सुल्तान (ऊजबेक) को प्राप्त हो गई। उससे एक दो पुत्र हुए किन्तु जीवित न रहे। हमारे आजकल के शान्ति के दिनो मे[7] समाचार प्राप्त हुए हैं कि उसकी मृत्यु हो गई है।

१ १०,००० व्यक्तियों का कबीला।
२ ९०५ हि० (१५०० ई०)।
३ अमीर।
४ ९१६ हि० (१५१० ई०) में।
५ ९०८ हि० (१५०३ ई०)।
६ ९१७ हि० (१५११ ई०)।
७ फ़ुरसतलार, आराम तथा शाति के दिन जब कि हिन्दुस्तान विजय हो चुका था और 'बाबर नामा' लिखा जा रहा था।

उमर शेख मीर्ज़ा की पत्नियाँ

कूतलूक निगार खानम यूनुस खा की दूसरी पुत्री थी। वह सुल्तान महमूद खा तथा खान अहमद की बडी (सौतेली) बहिन थी।

बाबर की माता के वश का हाल

यूनुस खा चगताई खान के वश से थे। चगताई खा चिंगीज़ खा का दूसरा पुत्र था। (वशावली) इस प्रकार है —यूनुस खा, पुत्र वैस खा, पुत्र शेर अली उगलान, पुत्र मुहम्मद खा, पुत्र खिज्र ख्वाजा खा, पुत्र तुगलुक तीमूर खा, पुत्र ईसान बूगा खा, पुत्र दावा खा, पुत्र बराक खा, पुत्र यीसूनतवा खा, पुत्र मूआतूकान, पुत्र चगताई खा, पुत्र चिंगीज खा।

जब इतना उल्लेख हो चुका तो सक्षेप मे कुछ उल्लेख खानो का भी कर देना चाहिये। यूनुस खा[1] तथा ईसान बूगा खा[2] वैस खा[3] के पुत्र थे। यूनुस खा की माता तीमूर बेग के एक विश्वासपात्र तुर्किस्तानी कीपचाक शेख नूरुद्दीन बेग की पुत्री अथवा पौत्री थीं। जब वैस खा की मृत्यु हो गई तो मुगूल उलूस[4] दो भागो मे विभाजित हो गये। कुछ यूनुस खा की ओर हो गये और अधिकाश ईसान बूगा खा की ओर हो गये। इससे पूर्व यूनुस खा की बडी बहिन की मगनी उलूग बेग मीर्ज़ा ने अपने पुत्र अब्दुल अजीज मीर्ज़ा से कर दी थी। इस बात से प्रेरित हो कर ईरज़ीन नामक बारीन तूमान के एक बेग तथा बेग मीरिक तुर्कमान खिरास के तूमान के एक बेग यूनुस खा को मुगूल उलूस के ३-४ हज़ार घर वालो सहित उलूग बेग मीर्ज़ा के पास इस आशय से ले गये कि उससे सहायता प्राप्त कर के वे पुन समस्त मुगूल उलूस को यूनुस खा के अधिकार मे ले आयें। उलूग बेग मीर्ज़ा ने उनकी ओर कोई ध्यान न दिया। कुछ को उसने बन्दी बना लिया और कुछ को एक-एक करके पूरे राज्य मे छिन्न भिन्न कर दिया। ईरजीन के इस प्रकार छिन्न भिन्न का समय एक सम्वत् के रूप मे मुगूलो मे स्मरणीय बन गया।

यूनुस खा को एराक की ओर चले जाने पर विवश कर दिया गया। एक वर्ष उसने तबरेज़ मे व्यतीत किया। वहा जहान शाह बारानी करा कुईलूक[5] राज्य करता था, वहा से वह शीराज़ पहुचा। शीराज मे मीर्ज़ा शाहरुख का दूसरा पुत्र इबराहीम सुल्तान मीर्ज़ा राज्य करता था। ५-६ मास उपरान्त इबराहीम सुल्तान मीर्ज़ा की मृत्यु हो गई।[6] उसका पुत्र अब्दुल्लाह मीर्ज़ा उसका उत्तराधिकारी बना। यूनुस खा, अब्दुल्लाह मीर्ज़ा के सेवको मे सम्मिलित हो गया और उसे अभिवादन करने लगा। १७, १८ वर्ष तक यूनुस खा, शीराज़ तथा उन विलायतो मे निवास करता रहा।

जिस समय उलूग बेग मीर्ज़ा तथा उसके पुत्रो के मध्य मे युद्ध छिडा था, ईसान बूगा खा ने अवसर पा कर फरगाना की विलायत पर आक्रमण कर दिया और कन्दे बादाम तक लूट मार करता चला गया। अन्दिजान पर अधिकार जमा कर के वहा के समस्त लोगो को बन्दी बना लिया। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा

१ यूनुस खां की मृत्यु ८९२ हि० (१४८७ ई०) में हुई।
२ ईसान बूगा खा की मृत्यु ८६६ हि० (१४६२ ई०) में हुई।
३ वैस खा की मृत्यु ८३२ हि० (१४२८ ई०) में हुई।
४ कबीले।
५ काली भेड़ों का।
६ ४ शव्वाल ८३८ हि० (३ मई १४३५ ई०)।

राजसिंहासन पर अधिकार जमाते ही एक सेना एकत्र कर के यागी (तराज) के आगे बढ़ गया और ईसान बूगा खा को अस्फरा नामक मुगुलिस्तान के एक कस्बे मे बुरी तरह पराजित कर दिया। उसके आक्रमणों से बचने के लिये और इस कारण कि उसने हाल ही मे यूनुस खा की बडी बहिन तथा अब्दुल अजीज मीर्जा की भूतपूर्व पत्नी से विवाह कर लिया था, यूनुस खा को खुरासान तथा एराक से बुलवाया और एक दावत करके उसका मित्र हो गया और उसे मुगूलो का खान घोषित कर दिया। उसी समय सागारीची तूमान के बेग ईसान बूगा खा से रुष्ट हो कर मुगूलिस्तान आ गये थे। यूनुस खां उन लोगों के पास चला गया और ईसान दौलत बेगम से, जो उनके सरदार अली शेर बेग की पुत्री थी, विवाह कर लिया। उन लोगो ने यूनुस खा तथा ईसान दौलत बेगम को सफद नम्दे पर बैठा कर यूनुस खा को खान के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

खान के ईसान दौलत बेगम से ३ पुत्रिया थी। ज्येष्ठतम मिहर निगार खानम थी। उसकी सुल्तान अबू सईद मीर्जा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान अहमद मीर्जा से मगनी कर दी थी। मीर्जा के कोई पुत्र अथवा पुत्री न हुई। मेरी परेशानी के समय[1] वह शैबानी खा को प्राप्त हो गई। वह शाह बेगम के साथ समरकन्द मे खुरासान[2] पहुची और दोनो मेरे पास काबुल[3] आ गईं। जिस समय शैबानी खा नासिर मीर्जा को कधार मे घेरे था और मैं लमगान[4] पर चढाई करने के लिये रवाना हो गया तो वे खान मीर्जा (वैस) के साथ बदख्शा चली गईं। जब मुबारक शाह ने खान मीर्जा को जफर नामक किले मे बुलवाया, तो वे शाह बेगम, मिहर निगार खानम तथा उनके समस्त परिवार वाले, अबा बक्र काशगरी के लुटेरा द्वारा बन्दी बना ली गई और उस दुष्ट अत्याचारी की बन्दीगृह म वे मृत्यु को प्राप्त हो गईं[5]।

मेरी माता कुतलूक निगार खानम यूनुस खा की दूसरी पुत्री थी। वे मेरे छापामार युद्धों एव राजसिंहासन से वचित होने के समय मेरे साथ रहती थी। काबुल पर विजय प्राप्त करने के ५-६ मास उपरान्त मुहर्रम ९११ हि० (जून १५०५ ई०) म उनका निधन हो गया।

तीसरी पुत्री खूब निगार खानम थी जिसका विवाह मुहम्मद हुसेन गूरगान दूगलात से कर दिया गया था[6]। उससे एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म हुआ। पुत्री[7] का उबैद खा से विवाह हो गया था। जब मैंने समरकन्द तथा बुखारा[8] पर अधिकार जमा लिया तो वह भाग न सकने के कारण वहीं ठहर गई। जब उसका चाचा सैयद मुहम्मद मीर्जा दूगलात सुल्तान सईद खा की ओर से दूत बन कर समरकन्द मे मेरे पास आया तो वह उसके साथ काशगर चली गई। वहा सुल्तान सईद खा[9] से उसका विवाह हो गया। हैदर[10] मीर्जा खूब निगार का पुत्र था। जब ऊजबेको ने उसके पिता की हत्या कर दी तो वह मेरी सेवा मे

१ ९०५ हि० (१४९९-१५०० ई०)।
२ ९०७ हि० (१५०१-१५०२ ई०)।
३ ९११ हि० (१५०५-६ ई०)
४ ९१३ हि० (१५०७-८ ई०)।
५ लगभग ९१३ हि० (१५०७ ई०)।
६ ८९९ हि० (१४९३-९४ ई०)
७ हबीबा।
८ ९१७ हि० (१५११-१२ ई०)।
९ काशगर का हाकिम।
१० मुहम्मद हैदर मीर्जा गूरगान दूगलात चगताई, मुग़ल 'तारीखे रशीदी' के लेखक, का जन्म ९०५ हि० (१४९९ ई०) तथा मृत्यु ९५८ हि० (१५५१ ई०) में हुई।

चला आया और ३-४ वर्ष तक मेरी सेवा मे रहा। तदुपरान्त आज्ञा लेकर खान के पास काशग़र चला गया।

शेर

"अपनी असल की ओर हर चीज लौट जाती है,
शुद्ध सोना, चादी अथवा टीन।"

कहा जाता है कि आजकल उसने तोबा कर के पवित्र जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया है। वह बहुत सी बातो मे अद्वितीय है—लिखने, चित्र बनाने, बाण तथा बाण की नोक बनाने और वीणा का तार खीचने का अगुश्ताना बनाने का उसे अच्छा ज्ञान है। वह कविता भी कर लेता है। उसका प्रार्थना पत्र मेरे पास आया था। उसकी रचना शैली बुरी नही है।

यूनुस खा की एक अन्य स्त्री शाह बेगम थी। यद्यपि उसके अन्य स्त्रिया भी थी किन्तु सतान केवल उससे तथा ईसान दौलत बेगम से थी। शाह बेगम, बदख्शा के बादशाह शाह सुल्तान मुहम्मद[1] की पुत्री थी। बदख्शा के बादशाह अपने वश को सिकन्दर फैलकूस[2] तक पहुचाते हैं। उसके एक अन्य पुत्री का, जो शाह बेगम की बडी बहिन थी, सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा से विवाह हुआ था और अबाबक्र मीर्ज़ा नामक उसका पुत्र था। शाह बेगम से यूनुस खा के दो पुत्र तथा दो पुत्रिया हुई थी। इनमे सुल्तान महमूद खा तीना पुत्रियो से जिनका उल्लेख हो चुका है छोटा तथा अन्य तीन बच्चो से बडा था। समरकन्द तथा उसके आसपास के स्थानो म लोग उसे खानिका खा[3] कहते है। सुल्तान अहमद खा सुल्तान महमूद खा से छोटा था। वह अलचा खान[4] के नाम से प्रसिद्ध था। इस नाम का कारण यह बताया जाता है कि उसने कई बार कालमाकों को पराजित करके उनकी हत्या करा दी। मुग़ल तथा कालमाक भाषा म हत्या करने वाले को आलाची कहते हैं। यह शब्द बोलते-बोलते अलचा हो गया। इन दोनो खानों का उल्लेख इस इतिहास मे उचित स्थान पर किया जायेगा।

सुल्तान निगार खानम, एक पुत्री के अतिरिक्त समस्त परिवार मे सब से छोटी थी। उसका विवाह सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के पुत्र सुल्तान महमूद मीर्ज़ा से हो गया था। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा से उसके एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम वैस था। उसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा। सुल्तान महमूद[5] मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान निगार खानम अपने पुत्र को लेकर किसी को भी सूचना दिये बिना ताशकीन्त[6] म अपने भाइयो के पास चली गयी। कुछ वर्ष उपरान्त उसके भाइयो ने उसका विवाह अदिक सुल्तान से, जो चिंगीज़ खा के ज्येष्ठ पुत्र जूजी खान की नस्ल का क़ज़ाक़ सुल्तान था, कर दिया। जिस समय शैबानी खा ने खानों[7] को पराजित कर के ताशकीन्त तथा शाहरुखिया पर अधिकार जमा लिया[8] था वह १०, १२ मुग़ल सेवकों सहित भाग कर अदिक सुल्तान[9] के पास चली गई।

१ उसके ६ पुत्रिया थीं।
२ फ़िलिप का पुत्र सिकन्दर।
३ खान का बच्चा।
४ हत्यारा।
५ ९०० हि० (१४९५ ई०)।
६ ताशकन्द।
७ उसके भाइयों।
८ ९०८ हि० (१५०२-३ ई०)।
९ अपने पति।

अदिक सुल्तान की मृत्यु के उपरान्त, उसके भाई कासिम खा ने, जो काजाक समूह का सरदार हुआ, उससे विवाह कर लिया। कहा जाता है कि काजाक सुल्तानों तथा खानों मे से किसी ने भी कासिम खा के समान उस समूह को सुव्यवस्थित नही रखा। उसकी सेना का अनुमान लगभग ३ लाख किया जाता था। कासिम खा की मृत्यु के उपरान्त खानम सुल्तान सईद खा के पास काशगर चली गई।

यूनुस खा की सब से छोटी पुत्री दौलत सुल्तान खानम थी। ताशकीन्त की दुर्घटना के समय[1] वह शैबानी खा के पुत्र तीमूर सुल्तान को प्राप्त हो गई। उससे एक पुत्री का जन्म हुआ जो समरकन्द से मेरे साथ आई थी[2] और ३, ४ वर्ष तक बदख्शा मे निवास करती रही। तदुपरान्त[3] वह सुल्तान सईद खा के पास काशगर चली गई।

उमर शेख मीर्ज़ा का अन्त पुर

उमर शेख के अन्त पुर मे ख्वाजा हुसेन बेग की पुत्री ऊलूस आगा थी। उससे एक पुत्री का जन्म हुआ जिसकी शिशुअवस्था मे मृत्यु हो गई। वर्ष डेढ वर्ष उपरान्त उसे अन्त पुर से निकाल दिया गया। उनकी एक अन्य पत्नी फातिमा सुल्तान आगा थी। वह मुग़ल तूमानों के एक बेग की पुत्री थी। उमर शेख मीर्ज़ा ने अन्य पत्नियों के पूर्व उससे विवाह किया था। करागूज़ मख्दूम सुल्तान बेगम भी उनकी एक पत्नी थी जिससे उन्होंने अपने जीवन काल के अन्तिम वर्षों म विवाह किया था और उससे वे बडा प्रेम करते थे। उमर शेख मीर्ज़ा की चाटुकारी हेतु लोग उनके वश को सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के बडे भाई मनूचेहर मीर्ज़ा से सम्बन्धित बताया करते थे। उनके अनेक कनीज़ एव रखैली स्त्रिया थी। उम्मीद आगाचा भी उन्ही म से एक थी जिसकी मीर्ज़ा के निधन के पूर्व मृत्यु हो गई थी। मीर्ज़ा के जीवन काल के अन्तिम दिनों म एक तून सुल्तान थी जो मुग़ल वश से थी। एक अन्य आगा सुल्तान थी।

उमर शेख मीर्ज़ा के अमीर—खुदाई बीरदी तीमूर ताश

एक अमीर खुदाई बीरदी तूगची तीमूर ताश था जो कि हेरी[4] के हाकिम आक बूगा बेग के भाई के वश से था। जब सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने तुर्की मीर्ज़ा को शाहरुखिया मे घेर लिया था[5] तो उसने फरग़ाना का विलायत को उमर शेख मीर्ज़ा को दे दिया और खुदाई बीरदी बेग को द्वार की रक्षा करने वालों का सरदार नियुक्त कर के उसके साथ कर दिया। खुदाई बीरदी की अवस्था उस समय २५ वर्ष की थी। किन्तु उसका सम्मान एव गौरव, शासन प्रवन्ध तथा राज्य व्यवस्था बडी ही उत्तम थी। एक दो वर्ष उपरान्त जब कि इबराहीम बेगचीक ने ऊश के आसपास के स्थानों मे लूट-मार प्रारम्भ कर दी तो खुदाई बीरदी ने उसका पीछा किया। युद्ध मे वह पराजित हुआ और मारा गया। जिस समय यह घटना घटी उस समय सुल्तान अहमद मीर्ज़ा आक काचगाई की ग्रीष्म ऋतु की चरागाह मे, जो औरातीपा मे समरकन्द से पूर्व की ओर १८ यीगाच की दूरी पर है, था। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा बाबाखाकी मे था जो कि हेरी से पूर्व की ओर १२ यीगाच की दूरी पर है। यह समाचार लोगा ने अब्दुल वह्हाब शागावल द्वारा

१ ६०८ हि० (१५०२-३ ई०) में।
२ ९१८ हि० (१५१२ ई०) में।
३ ९२६ हि० (१५२० ई०) में।
४ हिरात।
५ ८६८ हि० (१४६४ ई०) में।

शीघ्रातिशीघ्र मीर्ज़ाओं के पास भिजवा दिये। चार दिन मे ये समाचार १२० यीगाच[1] की दूरी पर पहुच गये।

हाफिज मुहम्मद बेग दूल्दाई

हाफिज मुहम्मद बेग दूल्दाई भी एक अन्य अमीर था जो सुल्तान मलिक काशगरी का पुत्र और अहमद हाजी बेग का छोटा भाई था। खुदाई बीरदी बेग की मृत्यु के उपरान्त उमर शेख मीर्जा के द्वारो की रक्षा हेतु उसे भेज दिया गया। किन्तु अन्दिजान के बेगो से उसकी न बनी, और सुल्तान अबू सईद मीर्जा की मृत्यु के उपरान्त वह समरकन्द चला गया और वह सुल्तान अहमद मीर्जा की सेवा मे पहुच गया। पीर की पराजय के समय वह औरातीपा का हाकिम था। जब उमर शेख मीर्जा समरकन्द की विजय के उद्देश्य से औरातीपा पहुचा तो वह औरातीपा को मीर्जा के सेवको को प्रदान करके स्वय मीर्जा की सेवा मे प्रविष्ट हो गया। उमर शेख मीर्जा ने उसे अन्दिजान का राज्य प्रदान कर दिया। अन्त मे वह सुल्तान महमूद खा के पास ताशकीन्त चला गया। उसने उसे खान मीर्ज़ा का अतालीक बना दिया और दीजाक उसे प्रदान कर दिया। मेरे काबुल पर अधिकार जमाने के पूर्व[2] उसने मक्का को हिन्दुस्तान की ओर से प्रस्थान कर दिया था किन्तु मार्ग मे ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह बडा ही सरल, कम बात करने वाला तथा साधारण व्यक्ति था।

ख्वाजा हुसेन बेग

एक अन्य ख्वाजा हुसेन बेग बडा ही नेक आदमी तथा सरल स्वभाव का मनुष्य था। उस समय की प्रथानुसार मदिरापान के समय तूईयूक नामक एक प्रकार का मुगूल गाना गाया जाता था, जिसे वह भली भाति गाता था।

शेख मज़ीद बेग

शेख मज़ीद भी एक अन्य अमीर था। सर्व प्रथम उसे मेरा अतका[3] बना दिया गया था। उसका शासन बडा ही अच्छा था। वह बाबर मीर्जा[4] के भी अधीन रहा होगा। उमर शेख मीर्जा का उससे बडा कोई अमीर न था। वह बडा ही व्यभिचारी था और गुदामैथुन मे सलग्न रहता था।

अली मज़ीद कूचीन

अली मज़ीद कूचीन भी एक अमीर था। उसने दो बार विद्रोह किया, एक बार अक्शी मे और दूसरी बार ताशकीन्त मे। वह बडा ही विश्वासघाती नमकहराम तथा अयोग्य व्यक्ति था।

हसन पुत्र याकूब बेग

इसके अतिरिक्त हसन बिन याकूब था जो बडा ही खुश मिजाज, चतुर एव तेज़ आदमी था। यह शेर उसी की रचना है।

१ लगभग ५०० मील।
२ ९१० हि० (अक्तूबर १५०४ ई०)।
३ देख भाल करने वाला एवं शिक्षा दीक्षा देने वाला।
४ बाबर मीर्ज़ा पुत्र बैसंगर, पुत्र शाहरुख, पुत्र तीमूर बेग। उसकी मृत्यु १४५७ ई० में हुई। वह कुछ समय तक खुरासान का हाकिम रहा।

वह बडा ही वीर और बाण चलाने मे कुशल था। चौगान भी खूब खेलता था। मेंढक फाद[1] मे वह बडा दक्ष था। उमर शेख मीर्ज़ा के निधन के उपरान्त मेरे द्वारो की देख रेख उसी के सिपुर्द थी। उसमे अधिक योग्यता न थी। वह बडा ही अल्पदर्शी एव फितना पैदा करने वाला व्यक्ति था।

कासिम बेग कूचीन

इनके अतिरिक्त कासिम बेग कूचीन था। वह अन्दिजान की सेना के प्राचीन अमीरो मे से थ। हसन याकूब बेग के उपरान्त मेरे फाटकों की देख रेख उसी के सिपुर्द हुई। जब तक वह जीवित रहा उसके प्रति मेरे विश्वास एव उसके अधिकारो मे वृद्धि होती रही और कमी कमी न हुई। वह बडा पराक्रमी था। एक बार जब कि ऊजबेग लोग कासान के समीप के स्थानो को विध्वस कर के लौट रहे थे तो उसने उनका पीछा किया और उनके पास पहुच कर युद्ध किया तथा भली भाति पराजित कर दिया। उमर शेख मीर्ज़ा के सामने भी उसने तलवार चलाने की योग्यता प्रदर्शित की थी। यासी कीजीत के युद्ध मे[2] भी उसने बडी वीरता से आक्रमण किये। जिन दिनो मे छापा मार युद्ध किया करता था तो वह उस समय, जब कि मैं सुल्तान महमूद खा के पास माचा के पर्वतीय प्रदेश मे जाने की तैयारी कर रहा था, खुसरो शाह के पास चला गया।[3] ९१० हि० (१५०४ ई०) में जब मैंने खुसरो शाह का अपने साथ लेकर काबुल मे मुकीम को घेर लिया तो कासिम बेग पुन मेरे पास चला आया। मैंने उसके प्रति प्राचीन प्रथानुसार कृपादृष्टि प्रदर्शित की। जब कि मैंने तुर्कमान हजारा पर दर्रये खुश मे आक्रमण किया[4] तो कासिम ने वृद्धावस्था के बावजूद युवको से बढ कर पौरुष दिखाया। मैने उसे बगश की विलायत प्रदान कर दी। तदुपरान्त काबुल वापस आने के उपरान्त उसे हुमायू का अत्का नियुक्त कर दिया। जिस समय जमीन दावर पर विजय प्राप्त हुई, लगभग उसी समय उसकी मृत्यु हो गई।[5] वह बडा ही सदाचारी तथा नेक मुसलमान था। वह सभी सदिग्ध आहारो से बचता था। उसकी निर्णय-शक्ति बडी ही उत्तम थी और परामर्श करने मे वह बडा कुशल था। यद्यपि वह पढ न सकता था किन्तु व्यग्य पूर्ण बातें बडे ही अच्छे ढग से करता था।

बाबा बेग का बाबा कुली

इनके अतिरिक्त बाबा बेग का बाबा कुली था जो शेख अली बहादुर[6] के वश से था। शेख मज़ीद बेग की मृत्यु के उपरान्त उसे मेरा बेग अत्का नियुक्त कर दिया गया था। जब सुल्तान अहमद मीर्ज़ा ने अन्दिजान पर चढाई की[7] तो वह उसके पास चला गया और औरातीपा मीर्ज़ा को समर्पित कर दिया। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त वह समरकन्द से चल खडा हुआ और मेरी सेवा मे

१ एक प्रकार का खेल जिसमें एक व्यक्ति हाथ पीछे करके झुक जाता है और दूसरा उसके ऊपर से कूदता है।
२ लगभग ६०४ हि० (जुलाई १४६६ ई०)।
३ ६०७ हि० (१५०१-२ ई०)।
४ ६११ हि० (१५०५-६ ई०)।
५ लगभग ६२८ हि० (१५२२ ई०)।
६ तीमूर का एक बेग।
७ ८६६ हि० (१४६३-८४ ई०)।

आ रहा था[1] कि सुल्तान अली मीर्ज़ा ने औरातीपा से निकल कर उससे युद्ध किया और उसे पराजित करके उसकी हत्या कर दी। वह अपने सैनिकों को अत्यधिक सुव्यवस्थित रखता था और उनके साज व सामान को भी बडी अच्छी दशा में रखता था। वह अपने सेवकों के विषय में सावधान रहता था। वह न तो नमाज़ पढता और न रोजे रखता। वह बडा अत्याचारी एव काफिरों के समान था।

अली दोस्त तगाई

इनके अतिरिक्त अली दोस्त तगाई था जो सागारीची तूमान के बेगों[2] मे से था। वह मेरी नानी ईसान दौलत बेगम का सम्बन्धी था। मैंने उसके प्रति उमर शेख मीर्ज़ा के राज्यकाल की अपेक्षा अधिक आश्रय प्रदर्शित किया। मुझे बताया गया था वह बडा ही उपयोगी सिद्ध होगा किन्तु जितने वर्ष तक वह मेरे साथ रहा उसने कोई ऐसा कार्य जिनके विषय मे वह प्रसिद्ध था न किया। उसने सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की सेवा की होगी। वह इस बात का दावा करता था कि वह एक प्रकार के पत्थर से पानी बरसा सकता है। वह बडा कुशल शिकारी था किन्तु उसका चरित्र अच्छा न था। वह कृपण, उपद्रवी, कठोर, विश्वासघाती, यथेच्छाचारी, कटुवचन कहने वाला तथा लडाकू था।

वैस लागरी

इनके अतिरिक्त वैस लागरी था। वह समरकन्द का था और तूकची कबीले से सम्बन्धित था। अन्त में वह उमर शेख मीर्ज़ा का बडा ही विश्वासपात्र हो गया था। छापा मार युद्ध के समय वह मेरे साथ था। यद्यपि वह फितना परदाज था किन्तु बडा ही उत्तम परामर्शदाता एव बडी सूझ बूझ का व्यक्ति था।

मीर गयास तगाई

इनके अतिरिक्त मीर गयास तगाई था। वह अली दोस्त का छोटा भाई था। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के घरों की रक्षा करने वालों मे उससे अधिक श्रेष्ठ कोई अन्य न था। मीर्ज़ा सुल्तान अबू सईद की चौकठी मुहर उसके पास रहती थी। उमर शेख मीर्ज़ा के राज्यकाल के अन्तिम दिनों में वह उनका बडा ही विश्वासपात्र हो गया था। वह वैस लागरी का मित्र था। जब कासान सुल्तान महमूद खाँ[3] को प्रदान कर दिया गया तो वह निरन्तर खान की सेवा मे रहा। खान भी उसको अत्यधिक आश्रय प्रदान करता था। वह बडा ही खुश मिज़ाज था। हँसी मज़ाक में वह बडा दक्ष था। दुराचार मे भी वह निर्भीक था।

अली दरवेश खुरासानी

इनके अतिरिक्त अली दरवेश खुरासानी था। उसने सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के खुरासानी दल मे बडी उत्तम सेवायें की। जब सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा समरकन्द तथा खुरासान को सुव्यवस्थित करने लगा तो उसने दोनों देशों के योग्य युवकों के दो दल बनाये। एक का नाम खुरासान दल तथा दूसरे का

१ ६०० हि० (१४९४ ९५ ई०) में।
२ अमीरों।
३ ८९९ हि० (१४९४ ई०)।

समरक़न्द दल रक्खा। अली दरवेश बडा ही पराक्रमी था। बीशकारान के फाटक पर उसने मेरे समक्ष बडी वीरता से युद्ध किया। वह नस्तालीक़ लिपि बडी साफ लिखता था। वह बडा चापलूस एव लालची था।

कम्बर अली मुगुल

इनके अतिरिक्त कम्बर अली मुग़ूल था। वह अस्तची[1] था। जब उसका पिता यहा[2] सर्व प्रथम आया तो वह खाल का व्यापार करता था इसी कारण उसे भी कम्बर अली सेलाख[3] कहने लगे। वह यूनुस खा का आफ्तावची[4] था। अन्त मे वह बेग की श्रेणी तक पहुच गया। इस श्रेणी तक पहुचने के पूर्व वह बडा ही कार्य-कुशल था। बाद मे वह बडा ही आलसी एव लापरवाह हो गया। वह बातो म और मूर्खता-पूर्ण बातो से भरा था। अधिक बात करने वाले को मूख होना ही चाहिये। उसकी योग्यता सीमित एव मस्तिष्क गदा था।

सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष का हाल

जिस समय उमर शेख मीर्ज़ा के ऊपर यह घातक दुर्घटना घटी मैं अन्दिजान के चारबाग म था[5]। मगलवार ५ रमज़ान (९ जून) को यह समाचार अन्दिजान म प्राप्त हुये। मैं तत्काल घोड पर सवार हुआ और जो सेवक एव साथी उपस्थित थे उन्ह अपने साथ लेकर किले म प्रविष्ट होना चाहता था किन्तु जब हम मीर्ज़ा के फाटक पर पहुचे तो शेरीम तगाई मेरे घोड की लगाम पकड कर नमाजगाह[6] की ओर चल दिया। उसने यह सोचा होगा कि यदि सुल्तान अहमद मीर्ज़ा सरीखा बादशाह बहुत बडी सेना लेकर आ जायेगा तो अन्दिजान के बेग नि स देह मुझ तथा राज्य को उसी को सौप देंगे। यदि वह मुझ ऊज़कीन्त तथा उस ओर की पहाडियो म पहुचा देगा तो मैं किसी प्रकार समर्पित न किया जा सकूगा और अपनी माता के सौतेले भाइयो—सुल्तान महमूद खा अथवा सुल्तान अहमद खा—के पास चला जाऊगा[7]। जब ख्वाजा मौलाना काजी तथा किले के बेगो का इस बात का पता चला तो उन्होने ख्वाजा मुहम्मद दरज़ी को जो मेरे पिता का एव प्राचीन सवक था और उसकी एक पुत्री का अतका था मेरे पास भेजा। ख्वाजा मौलाना काज़ी, सुल्तान अहमद काज़ी का पुत्र तथा बुरहानुद्दीन अली कीलीच[8] की नस्ल से था। अपनी माता की ओर से वह अपने आपको सुल्तान ईलीक माज़ी[9] की नस्ल से बताता था। इस उच्च वश

१ घोड़ों की देख रेख करने वालों का अधिकारी। सम्भवत घोड़ों को उसी की देख रेख में बधिया बनाया जाता था।
२ फ़रग़ाना में।
३ खाल का व्यापार करने वाला।
४ वह व्यक्ति जो बादशाह के पीने के जल का प्रबन्ध करता, हाथ मुह धुलाता तथा स्नान कराता था।
५ बाबर अन्दिजान का हाकिम था और यह ग्रीष्म ऋतु होने के कारण वह बाहर निवास कर रहा होगा।
६ ईदगाह।
७ सुल्तान महमूद ताशकीन्त तथा सुल्तान अहमद काशग़र मे अथवा आक्सू में थे।
८ हिदाया के लेखक।
९ ईलीक माज़ी—भूतपूर्व ईलीक, सम्भवत सातूक बूग़रा खा (जन्म ३८४ हि०। ९९४ ई०) का वशज।

के कारण उसके परिवार वाले फरगाना मे सम्मानित एव शेखुल इस्लाम[1] थे[2]। ख्वाजा मुहम्मद ने हमारी शकाओ का समाधान करा दिया। नमाजगाह से लौटा कर वह मुझे अपने साथ अरक[3] मे ले गया। ख्वाजा मौलाना काज़ी तथा बेग लोग मेरे पास आये। उनसे परामर्श के उपरान्त किले के बुर्जो एव चहारदीवारी की रक्षा की व्यवस्था आरम्भ कर दी। कुछ दिन उपरान्त हसन पुत्र याकूब, कासिम कूचीन तथा कुछ अन्य बेगो सहित, जो मर्गीनान तथा उस ओर पर्यवेक्षण हेतु भेजे गये थे[4] मेरी सेवा मे उपस्थित हुए और सभी सगठित एव एक दिल हो कर उत्साह पूर्वक किले की रक्षा मे व्यस्त हो गये।

इसी बीच मे सुल्तान मीर्ज़ा ने औरातीपा, खुजन्द तथा मर्गीनान को अपने अधिकार मे करके अन्दिजान से ४ यीगाच पर कबा नामक स्थान पर पडाव किया। इस अवसर पर अन्दिजान के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति दरवेश गौ की अनुचित व्यवहार करने के कारण हत्या करा दी गई। इस मृत्यु-दण्ड के कारण सभी लोग शात हो गये।

ख्वाजा काज़ी तथा ऊज़ून हसन (के भाई) ख्वाजा हुसेन को दूत बना कर सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के पास इस सदेश के साथ भेजा गया कि "यह बात स्पष्ट है कि आप इस राज्य मे अपने किसी न किसी सेवक को नियुक्त करेंगे। मैं सेवक भी हू और पुत्र (समान) भी। यदि आप यह सेवा मुझे प्रदान कर दें तो आप का उद्देश्य भली भाति एव सुगमतापूर्वक पूरा हो जायगा।" सुल्तान अहमद मीर्ज़ा बडा साधारण एव कमज़ोर आदमी था, वह बहुत कम बोलता था। जो बात अथवा कार्य उसे करना होता, उन्हे वह बिना अपने बेगो के परामर्श के सपन्न न करता था। बेग लोगो को यह प्रस्ताव पसन्द न था अत वे कठोर उत्तर देकर आगे बढ गये।

पवित्र तथा महान् ईश्वर अपनी पूर्ण शक्ति से बिना किसी मनुष्य के एहसान के मेरा समस्त कार्य उचित रूप से सपन्न कराता आ रहा है। इस स्थान पर भी उसने कुछ ऐसी व्यवस्था करा दी कि वे लोग इस अभियान से परेशान अपितु लज्जित होकर (कबा) से वापस लौट गये।

एक बात यह थी कि कबा की नदी दलदली है और उसका जल गति रहित है। उसे पुल के बिना अन्य स्थान से नही पार किया जा सकता। बहुत बडी सेना न पहुच कर पुल की ओर अग्रसर होना प्रारम्भ कर दिया। बहुत से घोडे एव ऊट धक्के मे नदी मे गिर कर नष्ट हो गय। इस घटना के ३-४ वर्ष पूर्व चीर घाट पर यह सेना बुरी तरह पराजित हुई थी। इस समय उन्हे उसी घटना का स्मरण हो आया। सेना वाले घबडा गये। दूसरी बात यह हुई कि उस समय घोडों मे महामारी फैल गई और वे इतनी अधिक सख्या मे मरने लगे यहा तक कि घोडो के तबेले के तबेले साफ होने लगे। तीसरे उन्होने हमारी प्रजा तथा सेना को इस प्रकार सगठित एव दृढ पाया कि वे जब तक उनके शरीर मे प्राण रहते तब तक वीरता पूर्वक प्राणो की बलि देने मे सकोच न करते। इन कारणो से परेशान हो कर उन्होंने अन्दिजान से एक यीगाच पर पहुच कर दरवेश मुहम्मद तरखान को हमारे पास भेजा। किले के भीतर से हसन का याकूब बात करने गया। नमाजगाह के समीप एक दूसरे ने भेंट की और सधि कर के लौट गये। इसके उपरान्त सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की सेना लौट गई। इसी बीच मे खुजद नदी के उत्तर की ओर से सुल्तान महमूद

१ इस्लाम के धार्मिक विषयों का नेता।

२ यह वाक्य बाबर ने ख्वाजा मौलाना काज़ी के विषय में पाद टिप्पणी के रूप में लिखा है।

३ भीतरी किला।

४ सम्भवत वे लोग उमर शेख मीर्ज़ा के निधन के पूर्व सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के विषय में पता लगाने के लिये भेजे गये थे।

खा आ गया और अक्शी को घेर लिया। जहागीर मीर्ज़ा उस स्थान पर था। बेगो मे से अली दरवेश बेग, मीर्ज़ा कुली कूकूल्दाश, मुहम्मद बाकिर बेग तथा शेख़ अब्दुल्लाह ईशक आका' थे। वैस लागरी तथा मीर गयास तग़ाई भी उस स्थान पर थे, किन्तु (अक्शी के) बेगो से कुछ मतभेद के कारण वे कासान को जहा वैस लागरी हाकिम था चले गये। क्योकि वैस लागरी बेग नासिर मीर्ज़ा का बेग था अत नासिर मीर्ज़ा कासान मे निवास करता था। जब सुल्तान मुहम्मद खा अक्शी के समीप पहुचा तो वे उसके पास चले गये। मीर गयास उसकी सेवा मे सम्मिलित हो गया। वैस लागरी नासिर मीर्ज़ा को सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के पास ले गया। उसने उसे मुहम्मद मज़ीद तरख़ान के सिपुर्द कर दिया। ख़ान ने अक्शी के समीप पहुच कर कई बार युद्ध किया किन्तु कोई सफलता प्राप्त न कर सका। कारण कि अक्शी के बेग तथा जवान वीरतापूर्वक अपने प्राणो की बलि देने के लिये तैयार थे। इसी बीच मे सुल्तान महमूद खा रुग्ण हो गया और युद्ध से थक कर अपनी विलायत' को लौट गया।

अबाबक्र काशग़री दूगलात ने कई वर्ष से किसी व्यक्ति के समक्ष सिर न झुकाया था और काशगर तथा ख़ुतन का शक्तिशाली हाकिम था। वह भी अन्य लोगो की भाति मेरे राज्य पर अधिकार जमाने में ऊज़कीन्त के समीप पहुचा। वहा एक किले का निर्माण कर के आसपास के स्थानो को विध्वस करने मे वह व्यस्त हो गया। ख्वाजा काज़ी तथा बहुत से बेग उसे निकालने के उद्देश्य से भेजे गये। जब वे निकट पहुचे तो उसने देखा कि वह इतनी बडी सेना का मुकाबला नही कर सकता। ख्वाजा काज़ी को बीच मे डाल कर उसने बडी धूर्तता तथा छल से मुक्ति प्राप्त की।

उस समय जो महान् घटनायें हुई उनमे उमर शेख मीर्ज़ा के बेग तथा जवान वीरतापूर्वक प्राणो की बलि देने पर तैयार रहे। मीर्ज़ा की माता शाह सुल्तान बेगम तथा जहागीर मीर्ज़ा एव अन्त पुर वाले तथा खानदानी बेग अक्शी से अन्दिजान पहुचे। शोक सम्बन्धी प्रथाओं को सम्पन कराने के उपरान्त भिखारियो तथा दरिद्रियो को भोजन वितरण किया गया।

इन कार्यों से अवकाश के उपरान्त राज्य को सुशासित तथा सेना को सुव्यवस्थित करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया गया। अन्दिजान का शासन तथा मेरे फाटक का अधिकार हसन बिन (पुत्र) याकूब के सिपुर्द किया गया। ऊश, कासिम कूचीन के लिये निश्चय किया गया। अक्शी तथा मर्गीनान ऊज़ून हसन एव अली दोस्त तग़ाई को प्रदान किये गये। उमर शेख मीर्ज़ा के शेष बेगो तथा वीरो को उनकी योग्यतानुसार विलायत, भूमि, पद, सरदारी अथवा वजह' प्रदान की गई।

जब सुल्तान अहमद मीर्ज़ा वापस हुआ तो दो तीन मंजिल की यात्रा के उपरान्त उसकी दशा बिगड गई और उसे ज्वर आने लगा। औरातीपा के समीप आकसू पहुचने पर वह शव्वाल ८९९ हि० के मध्य मे (मध्य जुलाई १४९४ ई०) ४४ वर्ष की अवस्था मे इस नश्वर ससार से विदा हो गया।

सुल्तान अहमद मीर्ज़ा का जन्म तथा वश

वह ८५५ हि० (१४५१ ई०) मे, जब कि उसका पिता सुल्तान मुहम्मद अबू सईद मीर्ज़ा सिहासनारूढ हुआ,' पैदा हुआ। वह सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का ज्येष्ठ पुत्र था। उसकी माता ऊर्दू बूगा

१ फाटक का रक्षक।
२ ताशकीन्त (ताशकन्द)।
३ वृत्ति।
४ समरकन्द में।

तरखान की पुत्री तथा दरवेश मुहम्मद तरखान की सब से बडी बहिन थी। मीर्जा की पत्नियो मे उसे बडा सम्मान प्राप्त था।

उसका डील डौल लम्बा, शरीर गठा हुआ, दाढी भूरी तथा चेहरा लाल था। उसकी ठुड्डी पर दाढी थी किन्तु चेहरे पर न थी। वह बडा ही शिष्ट था और उस काल की प्रथानुसार पगडी को चारमाक[1] नियम से लपेट कर किनारे को सामने लाकर भौ के समक्ष छोड देता था।

चरित्र तथा व्यवहार

वह हनफी धर्म का पालन करता था। उसके विचार बडे शुद्ध थे और कभी भी पाचो समय की नमाज़ न त्यागता था। वह ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरारी का मुरीद था। ख्वाजा उसे धार्मिक शिक्षा देते और उसके धार्मिक विश्वास मे दृढता रखते थे। वह बडा शिष्ट था, विशेष रूप से ख्वाजा की गोष्ठी मे। कहा जाता है कि वह जब तक ख्वाजा की गोष्ठी मे उपस्थित रहता वह अपने घुटनो को न बदलता था।[2] एक बार वह अपनी प्रथा के प्रतिकूल ख्वाजा की गोष्ठी मे पाव समेट कर बैठ गया। मीर्जा के चले जाने के उपरान्त ख्वाजा ने आदेश दिया कि जिस स्थान पर वह बैठा था उस स्थान का निरीक्षण किया जाय। वहा एक हड्डी पडी हुई थी। उसने कुछ पढा लिखा न था। यद्यपि उसका पालन पोषण नगर मे हुआ था किन्तु सरल एव साधारण स्वभाव का व्यक्ति था। उसमे कोई प्रतिभा न थी। वह बडा ही न्यायकारी था। हजरत ख्वाजा के उसका पथ-प्रदर्शक होने के कारण उसके कार्य शरा के अनुसार सम्पन्न हो जाते थे। वह अपनी प्रतिज्ञा तथा वचन का पक्का था। कभी भी कोई बात उसके विरुद्ध प्रकट न हुई। वह बडा साहसी था। यद्यपि उसे कभी भी किसी के आमने सामने हो कर युद्ध करने का अवसर न मिला था किन्तु कहा जाता है कि कुछ अभियानो मे उसने अत्यधिक पौरुष का प्रदर्शन किया। वह वाण चलाने म बडा कुशल था। उसका निशाना बडा अच्छा था। वह अपने वाणो तथा तीर गिज से साधारणत सुगमता-पूर्वक निशाना लगा लेता था। मैदान मे एक ओर से दूसरी ओर घोडा दौडाते हुए वह निशाना लगा लेता था। अन्त मे जब वह बडा मोटा हो गया तो वह बटेर तथा तीतर को एक प्रकार के छोटे बाज से लडवाया करता था और बहुत कम चूकता था। बाज उडाने मे उसे बडी रुचि थी और वह भला भाति बाज उडाया करता था। उलुग बेग मीर्जा के बाद से उसके समान कोई बादशाह इतना बडा शिकारी नही हुआ है। वह अत्यधिक शिष्ट था। कहा जाता है कि एकान्त मे भी और अपन विश्वासपात्रो तथा अपने निकटवर्तियो के समक्ष भी अपने पाव न खोलता था। जब वह मदिरापान करने बैठ जाता तो लगातार २०-३० दिन तक मदिरा-पान किया करता था। जब कभी मदिरापान न करता तो २०-३० दिन तक बिना मदिरा के रहता। उसे मदिरा-पान करने से बडी रुचि थी। जिन दिनो वह मदिरा-पान न करता वह बिना किसी आमोद प्रमोद के भोजन करता था। वह बडा लोभी था। वह दयालु था और बहुत कम बातचीत करता था। उसके कार्य उसके बेगो के अधिकार मे थे।

उसके युद्ध

उसने ४ युद्ध किये। प्रथम युद्ध शेख जमाल अरगून के छोटे भाई नेमत अरगून के विरुद्ध जमीन के समीप आबार तूजी मे हुआ। इसे उसने विजय कर लिया। दूसरा युद्ध उमर शेख मीर्जा से ख्वाम मे

१ चार पलेटें डाल कर पगड़ी बाधने की प्रथा।
२ एक प्रकार से घुटनों के बल बैठा रहता था।

हुआ। उसने उसे भी जीत लिया। तीसरा युद्ध वह था जिसमे उसने सुल्तान महमूद खा से ताशकीन्त के समीप चीर नदी पर युद्ध किया।[1] यद्यपि नियमानुसार कोई युद्ध न हुआ किन्तु कुछ मुग़ल लुटेरे एक-एक, दो-दो कर के उसकी सेना के पीछे पहुच कर लूट मार करते रहे। यद्यपि उसकी सेना की सख्या इतनी अधिक थी किन्तु फिर भी वे लोग बिना युद्ध किये अथवा बिना तलवार चलाये या लडे भिडे छिन्न भिन्न हो गये। उसकी सेना का मुख्य भाग चीर नदी मे डूब गया। चौथी बार उसने यार यीलाक के समीप हैदर कूकूल्दाश[2] से युद्ध किया और उस पर विजय प्राप्त कर ली।

उसका राज्य

उसके अधीन समरकन्द तथा बुखारा का राज्य था जो उसे उसके पिता ने प्रदान किया था। वह ताशकीन्त एव सैराम पर अधिकार जमा कर उन्हे कुछ समय तक अपने अधीन रक्खे रहा। किन्तु उन्हे उसने अपने भाई उमर शेख मीर्ज़ा को दे दिया। अब्दुल कुद्दूस के शेख जमाल की हत्या कर देने के उपरान्त खुजन्द एव औरातीपा भी कुछ समय तक उसके अधिकार मे रहे।

सतान

उसके दो पुत्र हुये थे और अल्पावस्था ही मे मृत्यु को प्राप्त हो गये। उसके पाच पुत्रिया थी। चार कताक बेगम से थी। इनमे सब से बडी राबेआ सुल्तान बेगम थी जिसे काले नेत्र वाली बेगम कहा जाता था। अपने जीवन काल मे ही उसने उसका विवाह सुल्तान महमूद खा से कर के उसे विदा कर दिया था। खान से एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम बाबा खान रखा गया। यह बडा ही होनहार था। जिस समय ऊजबेको ने खुजद मे खान की हत्या की[3] तो उन लोगो ने उसे तथा उसके समान कुछ अन्य बालको की हत्या करा दी। सुल्तान महमूद खा की मृत्यु के उपरान्त जानी बेग सुल्तान ने उससे विवाह कर लिया।

उसकी दूसरी पुत्री साल्हा सुल्तान बेगम थी जिसे लोग आक बेगम कहते थे। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान महमद मीर्ज़ा ने उसका विवाह अपने ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा के साथ बड समारोह से कर दिया।[4] अन्त मे वह शाह बेगम तथा मिहर निगार खानम के साथ काशगरियो को प्राप्त हो गई।

तीसरी पुत्री आयेशा सुल्तान बेगम थी। जब मै ५ वर्ष की अवस्था मे समरकन्द पहुचा तो उसकी मगनी मुझसे कर दी गई। छापा मार युद्ध के समय वह खुजन्द पहुची और मैने उससे विवाह कर लिया।[5] जब मैने दूसरी बार समरकन्द पर अधिकार जमाया तो उससे एक पुत्री का जन्म हुआ। कुछ दिन उपरान्त वह मृत्यु को प्राप्त हो गई। वह अपनी एक बडी बहिन के बहकाने से स्वय मुझे छोड कर चली गई।

चौथी पुत्री सुल्तान बेगम थी जिसका विवाह सुल्तान अली मीर्ज़ा से हुआ था। उसके उपरान्त तीमूर सुल्तान से उसका विवाह हुआ और फिर सुल्तान महदी सुल्तान से हुआ।

सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की सब से छोटी पुत्री मासूमा सुल्तान बेगम थी। उसकी माता हबीबा

१ ८६५ हि० [१४६६ ई०]।
२ कुकुल्ताश।
३ ६१४ हि० [१५०८ ई०] में।
४ ६०० हि० [१४६४ ६५ ई०]।
५ ६०५ हि० [१४६६-१५०० ई०]।

सुल्तान बेगम अरगूनो मे से थी। वह सुल्तान हुसेन अरगून के भाई की पुत्री थी। जब मैं खुरासान पहुचा[1] तो उस देख कर बडा प्रसन्न हुआ और उससे विवाह का प्रस्ताव रख कर काबुल ले आया और उससे विवाह कर लिया।[2] उससे एक पुत्री का जन्म हुआ। पुत्री के जन्म के समय ही वह मृत्यु को प्राप्त हो गई। उसकी माता का नाम, उसकी पुत्री को तत्काल दे दिया गया।

उसकी पत्नियाँ

उसकी मुख्य पत्नी यनुस खा की सब से बडी पुत्री मिहर निगार खानम थी। सुल्तान अबू सईद मीर्जा ने उसकी मगनी सुल्तान अहमद से कर दी थी। मेरी माता की वह सगी बहिन था।

दूसरी तरखान बेगम थी जो तरखाना से सम्बन्धित थी। इनके अतिरिक्त कातात बगम था जो इसी तरखान बेगम की धर्म बहिन थी। सुल्तान अहमद मीर्जा ने उस पर आसक्त हो जाने के कारण उससे विवाह कर लिया। मीर्जा उससे बडा प्रेम करता था और उसी के वश मे था। वह मदिरापान भी करती थी। उसके अधिकार-काल मे मीर्जा अपने अन्त पुर की किसी अन्य स्त्री के पास न गया। अन्त मे उसको समझ आ गई और उसने उसके कुप्रभाव से अपने आपको बचा लिया। इसके अतिरिक्त खानजादा बेगम थी वह तिरमिज़ के खानो के वश से थी। जब मैं ५ वर्ष की अवस्था म सुल्तान अहमद मीर्जा के पास समरकन्द गया हुआ था तो उस समय मीर्जा ने उससे विवाह किया ही था। तुर्को की प्रथानुसार मुझसे कहा गया कि मैं उसका मुह खोलू।[3]

इनके अतिरिक्त अहमद हाजी बेग दूलदाई (बरलास) की एक पुत्री की पुत्री थी, जिसका नाम लतीफ बेगम था। मीर्जा की मृत्यु के उपरान्त हमज़ा सुल्तान ने उससे विवाह कर लिया। हमज़ा सुल्तान से उसके तीन पुत्र हुए। जब मैंने हमजा सुल्तान तथा तीमर सुल्तान को पराजित करके हिसार पर अपना अधिकार जमाया तो य शाहजादे तथा अन्य सुल्तानो के पुत्र बन्दी बना लिये गये। मैंने सब को मुक्त कर दिया।

इनके अतिरिक्त हबीबा सुल्तान बेगम थी। वह सुल्तान हुसेन अरगून के भाई की पुत्री थी।

उसके अमीर—जानी बेग दूल्दाई

जानी बेग दूल्दाई[4] सुल्तान मलिक काशगरी का छोटा भाई था। सुल्तान अबू सईद मीर्जा ने *समरकन्द का राज्य उसे दे दिया था। सुल्तान अहमद मीर्जा ने अपने फाटकों का अधिकार उसे दे दिया* था। उसका आचार व्यवहार बडा विचित्र था। उसके सम्बन्ध म बडी विचित्र बातें बताई जाती हैं। उनमे से एक यह है कि जब वह समरकन्द का हाकिम था तो ऊज़बेको का एक राजदूत आया जो ऊज़बेको म अपनी शक्ति के लिए बडा प्रसिद्ध था। ऊज़बेक लोग शक्तिशाली व्यक्ति को बुकुह[5] कहते हैं।

१ ९१२ हि० [१५०६ ई०]।
२ ९१३ हि० [१५०७-८ ई०]।
३ तुर्को की प्रथानुसार दुलहिनें ससुराल में आने के कुछ समय बाद तक मुह ढाके ही रहती हैं। कुछ दिन उपरान्त किसी बालक को संकेत कर दिया जाता है और वह उसके मुंह की नकाब खींच कर भाग जाता है।
४ जानी बेग दूल्दाई बरलास।
५ सांड।

जानी बेग ने उससे पूछा कि, 'क्या तू बूबुह है ? यदि तू बूबुह हो तो मुझसे मल्लयुद्ध कर।" राजदूत ने यद्यपि बडी आपत्तिया प्रकट की किन्तु उसने स्वीकार न किया और उससे लिपट कर उसे पटक दिया। वह बडा ही वीर था।

अहमद हाजी

इसके अतिरिक्त अहमद हाजी बेग[1] था जो सुल्तान मलिक काशगरी का एक पुत्र था। सुल्तान अबू सईद मीर्जा ने उसे हेरी[2] का राज्य कुछ समय के लिये दे दिया था किन्तु उसके चाचा जानी बेग की मृत्यु के उपरान्त उसे समरकन्द भेज दिया। उसका स्वभाव बडा ही उत्तम था और वह बडा ही पराक्रमी था। उसका तखल्लुस वफाई था। उसने एक दीवान[3] की रचना की थी। उसकी कविता बुरी न होती थी। यह शेर उसी का है

शेर

हे मुहतसिब[4] आज के दिन मैं नशे मे हू मुझे छोड दे,
मेरा एहतिसाब[5] उस दिन कर जब कि मैं सावधान हू।"

मीर अली शेर नवाई जिस समय हेरी से समरकन्द आया तो अहमद हाजी बेग उसके साथ था। जब सुल्तान हुसैन मीर्जा को पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया[6] तो वह हेरी पहुचा और अत्यधिक सम्मानित हुआ।

अहमद हाजी बेग के पास उत्तम प्रकार के तीपूचाक[7] थे जिस पर वह सवारी करता था। यद्यपि वह बडा ही पराक्रमी था किन्तु जैसा वह वीर था वैसी सरदारी न कर सकता था। वह किसी कार्य को सावधानी से न करता था। उसके कार्यों की व्यवस्था उसके सेवक इत्यादि करते रहते थे। जब सुल्तान अली मीर्जा ने बाईसुगर मीर्जा को बुखारा मे पराजित कर दिया तो वह बन्दी बना लिया गया और दरवेश मुहम्मद तरखान की हत्या के अपराध मे अपमानित कर के उसकी हत्या करा दी गई।

दरवेश मुहम्मद तरखान

इसके अतिरिक्त दरवेश मुहम्मद तरखान था। वह ऊर्दू बूगा तरखान का पुत्र तथा सुल्तान अहमद मीर्जा तथा सुल्तान महमूद मीर्जा की माता का सगा भाई था। सुल्तान अहमद मीर्जा की सेवा मे जितने बेग थे, उन सब मे वह सब से अधिक प्रतिष्ठित तथा विश्वस्त था। वह बडा ही कट्टर मुसलमान था। वह बडा दयालु था और उसमे दरवेशो सरीखे गुण पाये जाते थे। वह सर्वदा कुरान की प्रतिया तैयार किया करता था। शतरज भी वह भली भाति खेलता था। पक्षियो के शिकार का उसे बडा ही

१ अहमद हाजी दूल्दाई बरलास।
२ हिरात।
३ कविताओं का संग्रह।
४ वह अधिकारी जो सद्र के अधीन होता था और शरा के आदेशों के पालन की देख-रेख करता था।
५ जाच, पूछ-ताछ।
६ ८७३ हि० (१४६८ ई०) में।
७ एक प्रकार के घोड़े जो चलने एव डील डौल में बड़े उत्तम होते थे।

अच्छा ज्ञान था और वह बाज उडाने में बडा निपुण था। सुल्तान अली मीर्ज़ा तथा बाईसुगर मीर्ज़ा के युद्ध के समय यद्यपि वह बडी उच्च श्रेणी को प्राप्त हो चुका था किन्तु वह बदनाम होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अब्दुल अली तरखान

इसके अतिरिक्त अब्दुल अली तरखान था जो दरवेश मुहम्मद तरखान का एक निकटवर्ती था। उसने दरवेश मुहम्मद तरखान की छोटी बहिन से जो बाकी तरखान की माता थी विवाह कर लिया था। यद्यपि दरवेश मुहम्मद तरखान मुगूल प्रथा एव अपनी श्रेणी के अनुसार उससे अधिक प्रतिष्ठित था किन्तु वह फिरऔन[1] को कुछ न समझता था। कुछ समय तक बुखारा का राज्य उसके अधिकार मे रहा। उसके सेवको की सख्या ३ हजार तक पहुच गई थी। वह अपने सेवको की भली भाति देख भाल करता था। उसके उपहार, पूछ-ताछ के ढग, दरबार के नियम, उसकी योग्यता, दावतें एव गोष्ठिया सभी बादशाहो के समान होती थीं। वह बडा ही सुव्यवस्थापक, परन्तु अत्याचारी, दुराचारी तथा अभिमानी था। यद्यपि शैबानी खा उसका सेवक न था किन्तु कुछ समय तक उसके साथ रह चुका था। छोटे छोटे सुल्तान[2] अधिकाश उसके सेवक रह चुके थे। इसी अब्दुल अली तरखान के कारण शैबानी खा को इतनी उन्नति प्राप्त हुई और इतने सम्मानित वशों[3] का विनाश हुआ।

सैयिद यूसुफ ऊगलाकची

इसके अतिरिक्त सैयिद यूसुफ ऊगलाकची[4] था। उसका दादा मुगूल कबीले से सम्बन्धित था। उसके पिता को उलूग बेग मीर्ज़ा ने आश्रय प्रदान किया था। वह बडा ही अच्छा परामर्शदाता था और उसकी सूझ बूझ बडी उत्तम थी। पौरुष भी उसमे पाया जाता था। वह तम्बूरा खूब बजाता था। मेरे काबुल में प्रथम आगमन के समय वह मेरे साथ था। मैंने उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान किया था। वास्तव में वह इसका पात्र भी था। जब मैंने हिन्दुस्तान के ऊपर प्रथम आक्रमण किया तो मैंने उसको काबुल में छोड दिया था। उसी समय उसकी मृत्यु हो गई।[5]

दरवेश बेग

इसके *अतिरिक्त दरवेश बेग था। वह ईकू तीमूर बेग की, जो तीमूर बेग का बहुत बडा विश्वस्त* था, नस्ल से था। वह हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह (एहरारी) का मुरीद था। सगीत का भी उसे ज्ञान था। वह साज भी बजा लेता था तथा कविता भी कर लेता था। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पराजय के समय वह चीर नदी मे डूब कर मर गया।

१ अर्थात् अब्दुल अली तरखान। मिस्र-नरेश जो बड़ा अत्याचारी एवं निरंकुश तथा मूसा पैग़म्बर का समकालीन था। अहकारी एव निरंकुश लोगों को 'फ़िरऔन' कहा जाता है।
२ दीवान सुल्तान।
३ चग़ताई एवं तीमूरी वंशों का।
४ एक प्रकार के गेंद के खेल का खिलाड़ी।
५ ज़िलहिज्जा ९१० हि० (मई १५०५ ई०)।

मुहम्मद मजीद तरखान

एक अन्य मुहम्मद मजीद तरखान था जो दरवेश मुहम्मद तरखान का सगा छोटा भाई था। वह कुछ वर्ष तक तुर्किस्तान का हाकिम रह चुका था। शैबानी खा ने तुर्किस्तान को उससे विजय किया था। वह बड़ा ही अच्छा परामर्शदाता था किन्तु धृष्ठ तथा दुराचारी था। जब मैंने दूसरी तथा तीसरी बार समरकन्द पर अधिकार जमाया तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। मैंने उसके प्रति अत्यधिक कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। कूले मलिक के युद्ध मे[1] उसकी मृत्यु हो गई।

बाकी तरखान

उसके अतिरिक्त बाकी तरखान था। वह अब्दुल अली तरखान तथा सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की चाची का पुत्र था। उसके पिता की मृत्यु के उपरान्त उसे बुखारा प्रदान कर दिया गया था। सुल्तान अली मीर्ज़ा के राज्यकाल मे वह अत्यधिक प्रतिष्ठित हो गया था। उसके सेवको की सख्या पाच छ हजार हो गई थी। वह सुल्तान अली मीर्ज़ा का अधिक आज्ञाकारी न था। शैबानी खा से उसने दबूर्सी[2] मे युद्ध किया और पराजित हुआ। उसी पराजय के उपरान्त शैबानी खा ने बुखारा पहुच कर उसे अपने अधिकार मे कर लिया। उसे बाज़ द्वारा पक्षियो का शिकार कराने से अत्यधिक रुचि थी। कहा जाता है कि उसके पास ७०० बाज़ थे। उसके आचार व्यवहार ऐसे न थे जिनका उल्लेख किया जाये। उसका पालन-पोषण एव शिक्षा-दीक्षा मीर्ज़ाओ के समान हुई। क्योकि उसके पिता ने शैबानी खा के प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित की थी अत वह उसके पास चला गया। किन्तु उस कृतघ्न ने उसके पिता की कृपाओ को देखते हुए उसे किसी प्रकार का प्रोत्साहन न प्रदान किया और वह बडी ही अपमानित तथा शोचनीय दशा मे अक्सी मे मृत्यु को प्राप्त हो गया।

सुल्तान हुसेन अरगून

इसके अतिरिक्त सुल्तान हुसेन अरगून था। क्योकि कुछ समय तक वह कराकूल के राज्य का हाकिम रह चुका था अत वह सुल्तान हुसेन कराकूली के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। उसके परामर्श तथा उसकी सूझ बूझ बडी ही उत्तम थी। वह बहुत समय तक मेरी सेवा मे भी रहा।

कुली मुहम्मद बूगदा

उसके अतिरिक्त कुली मुहम्मद बूगदा था, वह कुचीन था, उसमे वीरता भी पाई जाती थी।

अब्दुल करीम इशरत

उसके अतिरिक्त अब्दुल करीम इशरत था। वह ऊईगूर तथा सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के द्वारो का रक्षक था। वह बडा ही दानी तथा पराक्रमी था।

१ ९१८ हि० (१५१२ ई०)।
२ ९०५ हि० (१४९९-१५०० ई०)।

मलिक मुहम्मद मीर्ज़ा द्वारा समरकन्द पर अधिकार जमाने का प्रयत्न

सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त बेगों ने सर्वसम्मति से एक व्यक्ति को पर्वतीय मार्ग से सुल्तान महमूद के पास भेज कर उसे बुलवाया। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के बड़े भाई मनूचेहर मीर्ज़ा का पुत्र मलिक महमूद मीर्ज़ा राज्य पर अधिकार जमाना चाहता था। इस विचार से उसने कुछ निर्भीक एव आततायी लोगो को अपने साथ मिला लिया। वे सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के शिविर से पृथक् होकर समरकन्द पहुचे किन्तु वह कोई सफलता न प्राप्त कर सका। वह अपनी हत्या तथा कुछ शाही वश के निर्दोषो की मृत्यु का कारण बना।

सुल्तान महमूद मीर्ज़ा का समरकन्द में राज्य

सुल्तान महमूद मीर्ज़ा अपने भाई की मृत्यु के समाचार पाते ही अविलम्ब समरकन्द पहुचा और वहा बिना किसी कठिनाई के सिंहासनारूढ हो गया। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा के कुछ कार्यो के कारण साधारण तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति, सेना वाले एव प्रजाजन उससे घृणा करने लगे और वे उससे पृथक् हो गये।

उसने सर्व प्रथम मलिक मुहम्मद को, जो उसके चाचा का पुत्र तथा स्वय उसका जामाता था, कूक सराय[1] भेज दिया। उसके साथ चार अन्य मीर्ज़ा भी भेजे गये। दो को तो उसने जीवित रहने दिया किन्तु मलिक मुहम्मद मीर्ज़ा तथा एक अन्य मीर्ज़ा की हत्या करा दी। यद्यपि मलिक मुहम्मद मीर्ज़ा थोडा बहुत अपराधी भी था किन्तु अन्य मीर्ज़ाओं ने कोई अपराध न किया था। इनमे से सब शाही वश से भी न थे। दूसरी बात यह थी कि यद्यपि वह सर्वोत्कृष्ट शासक एव मालगुज़ारी के प्रबन्ध मे दक्ष था, किन्तु उसके स्वभाव मे अत्याचार एव अन्य दोष पाये जाते थे। वह सीधे समरकन्द पहुच कर शासन प्रबध करने लगा। मालगुज़ारी एव कर की उसने नई व्यवस्था कराई।

हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरारी के आश्रितो को, जिनके कारण इससे पूर्व बहुत बडी सख्या मे फकीर तथा दरिद्र अत्याचार से मुक्ति प्राप्त कर लेते थे, अब नाना प्रकार के कष्ट दिये जाने लगे और उन पर जुल्म होने लगा। नाना प्रकार के अत्याचार द्वारा उनसे भी कर वसूल किया गया यहा तक कि ख्वाजा की सतान को भी मुक्ति न मिली। जितना दुष्ट तथा अत्याचारी वह था, उतने ही अत्याचारी एव दुष्ट उसके बेग तथा छोटे बडे सेवक थे। हिसार निवासी विशेष रूप से खुसरो शाह के सेवक दुराचार एव मदिरापान मे ग्रस्त रहने लगे। एक बार उसका एक सेवक एक व्यक्ति की पत्नी को भगा ले गया। उस स्त्री के पति ने खुसरो शाह से न्याय की याचना की। उसने उत्तर दिया कि, "वह बहुत समय तक तेरे पास रही अब कुछ समय तक उसके पास रहने दे।"

शहर तथा बाजार वालो अपितु तुर्को तथा सैनिको के पुत्र भी इस भय से कि कही लौंडेबाज उन्हें पकड न ले जायें, अपने घरो से न निकल पाते थे। समरकन्द वाले २५ वर्ष से सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के राज्य-काल मे सुख शाति से जीवन व्यतीत कर चुके थे। हज़रत ख्वाजा[2] के कारण बहुत से मामलों का शरा तथा न्याय के अनुसार निर्णय हो जाता था। अब उन लोगो को अत्याचार एव जुल्म का सामना

१ कूक सराय अथवा हरा भवन, समरकन्द के किले में था जहाँ शाहज़ादे इत्यादि बन्दी बना दिये जाते थे। वहाँ से वापस लौटना सम्भव न था।
२ ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार।

करना पड रहा था। साधारण तथा सम्मानित व्यक्ति, फकीर तथा दरिद्र उसके प्रति घृणा करने लगे और उन्होने उसका बुरा चाहना प्रारम्भ कर दिया।

पद्य

"घायल हृदय वालों के भीतरी धुयें से भय कर,
भीतरी घाव अन्ततोगत्वा बढ जाता है।
किसी के हृदय को जहा तक सम्भव हो, कष्ट मत पहुचा,
कारण कि एक अकेली आह पूरे ससार को हिला कर रख देगी।"

इन अत्याचारों एव दुराचारों के कारण सुल्तान महमूद मीर्ज़ा समरकन्द मे ५-६ मास से अधिक राज्य न कर सका।

याकूब यह समाचार पाते ही रातोरात उन जवानों पर, जो आगे भेजे गये थे, और मुख्य सेना से पृथक् हो गये थे, टूट पडा। जो स्थान उन लोगो ने रात्रि मे अपने ठहरने के लिये बनाया था, उसे घेर लिया और बाणो की वर्षा करने लगा। अंधेरी रात मे उसी के आदमियो का एक बाण हसन याकूब के नितब पर लगा। वह भाग न सका और उसे उसके कुकर्मों का फल मिल गया।

शेर

"यदि तू कुकर्म करता है तो अपने आपको सुरक्षित मत समझ,
प्रतिकार प्रकृति का अधिनियम है।"[१]

इसी वर्ष से मैंने उन समस्त भोजनो को त्यागना प्रारम्भ कर दिया जो शरा के विरुद्ध अथवा सदिग्ध होते थे, यहा तक कि मैं चाकू, चम्मच एव दस्तरख्वान के विषय मे भी सावधान रहता था। मैं इस समय से तहज्जुद की नमाज भी बहुत कम त्यागता था।

सुल्तान महमूद मीर्जा की मृत्यु

रबी-उल-आखिर (जनवरी १४९५ ई०) मे सुल्तान महमूद मीर्जा बहुत बुरी तरह रुग्ण हो गया और छ दिन मे इस ससार से विदा हो गया। उसकी अवस्था ४३ वर्ष की थी। उसका जन्म ८५७ हि० (१४५३ ई०) मे हुआ था। वह सुल्तान अबू सईद मीर्जा का तीसरा पुत्र था।

उसका रूप, रग तथा चरित्र

वह ठिगना, शरीर गठा हुआ, दाढी केवल कही कही, तथा कुरूप था।

• वह नमाज कभी न त्यागता था। उसके आचार व्यवहार बडे उत्तम थे और वह बडा गुणवान् था। उसके कार्य करने का ढग एव व्यवहार के नियम बड उत्तम थे। स्याक[२] के ज्ञान से वह भली भाति परिचित था। उसके राज्य के राजस्व मे से एक दिरहम तथा एक दीनार भी उसकी सूचना बिना व्यय न हो सकता था।[३] वह अपने सेवको की वृत्ति बडे नियम से अदा किया करता था। उसका दरबार दान-पुण्य मे प्रसिद्ध था। वहा दावतें भी बडी ही उत्तम होती थीं। उसके सभी कार्य एव उसकी सभी बातें एक नियम से होती थी। जो नियम वह बना देता था, सैनिक तथा प्रजा कदापि उसका उल्लघन न कर सकती थी। प्रारम्भ म बाज उडाने मे उसे बडी रुचि थी। अन्त मे वह हावे का शिकार[४] करने लगा। अत्याचार तथा दुराचार मे वह बहुत बढ गया था। वह सर्वदा मदिरा पान किया करता था, और लौंडेबाजी मे ग्रस्त रहता था। उसके राज्यकाल मे जहा कहीं भी उसे कोई रूपवान् तरुण मिल जाता तो उसे वह यथासभव बुल्वा कर लौंडेबाजी करता था। अपने बेग के पुत्रों तथा अपने पुत्रों के बेगो के पुत्रों यहा तक कि अपने कोका भाइयों एव कोका भाइयो के पुत्रों के साथ वह लौंडेबाजी करता था। यह कुप्रथा उसके राज्यकाल मे इतनी उन्नति कर गई थी कि कोई व्यक्ति बिना तरुण के न होता था,

१ निजामी की 'खुसरो व शीरीं' से।
२ हिसाब किताब।
३ कोई साधारण से साधारण रकम भी उसे सूचना दिये बिना व्यय न की जा सकती थी।
४ मृगों को हाँक कर ऐसे स्थान पर पहुंचा दिया जाता था जहा कोई रोक होती थी और मृग आगे न बढ़ पाते थे तथा सुगमतापूर्वक उनका शिकार हो जाता था।

अपितु तरुण का न रखना बुरा समझा जाता था। उसके दुर्भाग्य, अन्याचार तथा दुराचार के कारण उसके पुत्रों की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई।

वह कविता भी कर लेता था। उसने एक दीवान की रचना कर ली थी किन्तु उसके शेरों मे कोई रस न था। इस प्रकार की कविता मे कविता न करना अच्छा होता है। उसके धार्मिक विश्वास दृढ न थे। वह हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह मे अधिक श्रद्धा न रखता था। उसमे साहस तथा मर्यादा की बडी कमी थी। उसके अनेक मसख़रे भरे दरबार मे गदी एव अश्लील हरकतें सब के सामने किया करते थे। वह बडी खराब बातें किया करता था, और उसकी बहुतसी बातें समझ मे न आती थी।

उसके युद्ध

उसने दो युद्ध किये और दोनों सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा[1] से, प्रथम बार अस्तराबाद[2] मे और दूसरी बार अन्दिख़ूद[3] के समीप चिकमान नामक स्थान पर। दोनों स्थान पर वह पराजित हुआ। उसने दो बार बदख्शा के दक्षिण की ओर काफ़िरिस्तान मे पहुँच कर जिहाद किया। इसी कारण फ़रमानों के तुग़रा में[4] उसे सुल्तान महमूद ग़ाज़ी लिखा जाता था।

उसका राज्य

सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने उसे अस्तराबाद प्रदान कर दिया था। एराक़ की दुर्घटना के उपरान्त[5] वह ख़ुरासान चला गया। उस समय हिसार का हाकिम ख़ुस्रव शाह बेग सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के आदेशानुसार हिन्दुस्तान[6] की सेना ले कर उसकी सहायता हेतु उसके पीछे रवाना हो रहा था। वह ख़ुरासान पहुँच कर सुल्तान महमूद मीर्ज़ा से मिल गया किन्तु सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के पहुँचने के समाचार पाते ही ख़ुरासान वालों ने एकत्र होकर सुल्तान महमूद मीर्ज़ा को ख़ुरासान से निकाल दिया। तदुपरान्त सुल्तान महमूद मीर्ज़ा अपने बडे भाई अहमद मीर्ज़ा के पास समरक़न्द पहुँच गया। कुछ मास उपरान्त सैयिद बद्र तथा ख़ुसरो शाह एव कुछ जवान अहमद मुश्ताक़ के नेतृत्व मे सुल्तान महमूद को ले कर ख़ुस्रव अली के पास हिसार भाग गये। उस समय से कूहका के दक्षिण का राज्य, कोहतिन का पर्वतीय प्रदेश हिन्दूकुश पर्वत तक का भूभाग, उदाहरणार्थ तिरमिज़, चग़ानियान, हिसार, ख़ुतलान तथा कुन्दुज़ एव बदख्शा सुल्तान महमूद मीर्ज़ा के अधीन हो गये। उसके बडे भाई सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त उसका राज्य भी उसी के अधिकार मे आ गया।

उसकी संतान

उसकी संतान मे से ५ पुत्र तथा ११ पुत्रियां थीं। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा उसका ज्येष्ठ पुत्र था। उसकी माता ख़ानज़ादा बेगम तिरमिज़ के बडे मीर की पुत्री थी। उसका एक पुत्र बाईसुग़र मीर्ज़ा था।

१ सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा बाईक़रा जिसकी मृत्यु १५०६ ई० में हुई।
२ कैस्पियन के दक्षिण-पूर्वी कोने पर।
३ बल्ख तथा मर्व के मध्य में, बल्ख के पश्चिम में ८८ मील पर।
४ फ़रमानों का रंगीन शीर्षक जिसमें बादशाहों की उपाधियाँ इत्यादि लिखी रहती हैं।
५ एराक़ की दुर्घटना, जिसमें अबू सईद तथा उसकी सेना नष्ट हो गई, १४६९ ई० में घटी।
६ सम्भवतः बदख़्शा, तिरमिज़ तथा हिसार से तात्पर्य है।

उसकी माता पाशा बेगम थी। एक अन्य पुत्र सुल्तान अली मीर्ज़ा था। उसकी माता, जुहरा़बेगी आगा, ऊज़बेक तथा कनीज़ थी। एक अन्य पुत्र सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा था। उसकी माता खानज़ादा बेगम, तिरमिज के बड़े मीर की पोती थी। वह अपने पिता के जीवनकाल में ही १३ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो गई। एक अन्य पुत्र सुल्तान वैस मीर्ज़ा[1] था। उसकी माता सुल्तान निगार खानम यूनुस ख़ा की पुत्री थी और मेरी माता की सौतेली छोटी बहिन थी। इन चारों मीर्ज़ाओं का हाल इस इतिहास में उचित स्थान पर दिया जायेगा।

सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की पुत्रियों में तीन पुत्रियां बाईसुगर मीर्ज़ा की माता से हुई थीं। उनमें से बाई सुगर मीर्ज़ा से बड़ी को सुल्तान महमूद मीर्ज़ा ने मलिक मुहम्मद मीर्ज़ा के पास जो उसके चाचा मनूचेहर मीर्ज़ा का पुत्र था भेज दिया था।[2] अन्य ५ पुत्रियां तिरमिज़ के बड़े मीर की पोतियां तथा खानज़ादा बेगम के गर्भ से थी। सब से बड़ी[3] का उसके पिता की मृत्यु के उपरान्त अबाबक्र[4] काशगरी से विवाह कर दिया गया। दूसरी पुत्री बेगा बेगम थी। जिस समय सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने हिसार का अवरोध किया[5] तो उसने उसे अपने पुत्र हैदर मीर्ज़ा के लिये जो सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री पायन्दा सुल्तान बेगम के गर्भ से थी प्राप्त कर लिया[6] और सन्धि कर के हिसार छोड़ कर चला गया। तीसरी पुत्री आक बेगम थी। चौथी की मगनी जहांगीर मीर्ज़ा से उस समय हुई जब सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने कुन्दूज़ पर आक्रमण किया था और उमर शेख मीर्ज़ा ने अपने पुत्र जहांगीर मीर्ज़ा को अन्दिजान की सेना सहित सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की सहायता हेतु भेजा था। ९१० हि० (१५०४ ई०) में जब बाक़ी चगानियानी आमू नदी के तट पर मेरी सेवा में उपस्थित हुआ तो यह दोनों बेगमें अपनी माता के साथ तिरमिज़ में थी। ये भी बाक़ी चगानियानी के परिवार के साथ आकर मुझसे मिल गईं। जब हम काहमर्द पहुचे तो जहांगीर मीर्ज़ा का विवाह उससे कर दिया गया। उससे एक पुत्री का जन्म हुआ जो आजकल अपनी दादी के साथ बदख्शां में है। ५वीं पुत्री जैनब सुल्तान बेगम थी। जिस समय मैंने काबुल[7] पर अधिकार जमाया तो उससे मैंने अपनी माता[8] के आग्रह के कारण विवाह कर लिया किन्तु उससे मेरी अधिक न बनी। दो तीन वर्ष उपरान्त वह चेचक के रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गई। एक अन्य पुत्री मख्दूम सुल्तान बेगम थी जो सुल्तान अली मीर्ज़ा की सगी बहिन थी। वह इस समय बदख्शां की विलायत में है। उसकी दो अन्य पुत्रियां रजब सुल्तान तथा मुहिब सुल्तान रखेली स्त्रियों से थी।

अन्त पुर की स्त्रियाँ

उसकी मुख्य पत्नी तिरमिज के बड़े मीर की पुत्री खानज़ादा बेगम थी। मीर्ज़ा को वह बड़ी ही प्रिय थी। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा उसी का पुत्र था। उसके निधन के उपरान्त सुल्तान महमूद मीर्ज़ा ने

१ मीर्ज़ा ख़ान।
२ विवाह कर दिया था।
३ 'तारीखे रशीदी' के अनुसार ख़ानज़ादा बेगम।
४ अबाबक्र दूगलात काशगरी।
५ ६०१ हि० (१४९५-९६ ई०) में।
६ यह केवल मगनी थी, विवाह गुलबदन बेगम के अनुसार ६०३ हि० (१४९७-९८ ई०) में हुआ।
७ ६१० हि० (अक्तूबर १५०४ ई०)।
८ कुतलूक़ निगार ख़ानम।

अत्यधिक शोक मनाया। बाद मे उसने उसके भाई की पुत्री तथा तिरमिज के बडे मीर की पोती से विवाह कर लिया। उसका भी नाम खानज़ादा बेगम था, वह उसकी पाच पुत्रियो तथा एक पुत्र की माता थी। इसके अतिरिक्त पाशा बेगम थी जो अली शुक्र बेग की पुत्री थी। अली शुक्र बेग बहारलू ईमाक की "काली भेंड' कबीले का तुर्कमान बेग था। वह जहान शाह की जो "काली भेंड" वाले तुर्कमानो से सम्बन्धित था, पत्नी रह चुकी थी। जिस समय कि एराक तथा अज़रबाईजान को ऊजून हसन बेग ने, जो श्वेत भेंड का तुर्कमान था, जहान शाह मीर्ज़ा की सतान से छीन लिया[1] तो अली शुक्र बेग के पुन ४, ५ हज़ार 'काली भेंड' के तुर्कमान कबीलो के साथ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की सेवा मे पहुच गये। अबू सईद मीर्ज़ा की पराजय के उपरान्त[2] वे इन प्रदेशो मे आ गये और सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की सवा मे सम्मिलित हो गये। यह घटना उस समय घटी जब सुल्तान महमूद मीर्ज़ा समरकन्द से हिसार पहुच गया था। मीर्ज़ा ने उस समय पाशा बेगम से विवाह कर लिया। वह उसके एक पुत्र तथा तीन पुत्रिया की माता थी। उसके अतिरिक्त सुल्तान निगार खानम थी। उसके वश का उल्लेख (चगताई) खाना के सम्बन्ध मे किया जा चुका है।

उसकी अनेको कनीजें तथा रखेली स्त्रिया थी। उसकी सब से अधिक सम्मानित रखेली स्त्री जुहराबेगी आगा थी। उसे उसने अपने पिता के जीवन काल मे रख लिया था। वह उसके एक पुत्र तथा एक पुत्री की माता बनी। उसके अन्य बहुत सी रखेली स्त्रिया थी। जैसा कि उल्लेख हो चुका है उसकी दो पुत्रिया दो रखेली स्त्रियो से थी।

उसके अमीर

खुसरो शाह नामक एक अमीर तुर्किस्तानी कीपचाक था। प्रारम्भ से वह तरखान बेगो की सेवा मे रह चुका था, और गुदा भोग्य था। तदुपरान्त वह मज़ीद बेग अरगून का सेवक हो गया। वह उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान करता था। एराक के महा् सकट के अभियान के समय वह सुल्तान महमूद मीर्ज़ा के साथ हो गया। पलायन के समय उसने बडी योग्यता से उसकी सेवा की। इस कारण मीर्ज़ा न उसे अत्यधिक सम्मानित किया। अन्त मे वह बडा ही प्रतिष्ठित हो गया था। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा के राज्य काल मे उसके सेवक ५, ६ हज़ार की सख्या तक पहुच गये थे। केवल बदख्शा ही नही अपितु आमू नदी से हिन्दूकुश तक का समस्त प्रदेश उसके अधीन था और वह वहा के राजस्व को व्यय करता था। उसके यहा से बहुत बडी सख्या मे लोगो को भोजन मिलता रहता था। वह बडा दानी था। जो कुछ उसे प्राप्त होता वह खर्च कर डालता था।

सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्रो के राज्यकाल मे वह अत्यधिक प्रतिष्ठित हो गया। उसके सेवक २० हज़ार की सख्या तक पहुच गये। यद्यपि वह नमाज पढता था और शरा द्वारा वर्जित भोजन न करता था, किन्तु वह बडा ही धूर्त, दुराचारी, नीच, अधम, कृतघ्न तथा नमकहराम था। ५ दिन के इस नश्वर ससार के लिये उसने अपने आश्रयदाता के एक पुत्र को अधा बना दिया और एक की हत्या कर दी। ईश्वर के दरबार मे वह पापी तथा अन्य लोगा की दृष्टि मे कयामत तक धिक्कार तथा घृणा का पात्र बन गया। इस नश्वर ससार के लिए उसने ऐसे अनुचित कार्य किये। इतने विशाल राज्य

1 ८७२ हि० (१४६७ ई०) में।
2 ८७३ हि० (१४६८ ई०) में ऊज़ून हसन द्वारा

एव अगणित सैनिको के बावजूद वह एक मुर्गी के चूजे तक का मुकाबला न कर सकता था। इस इतिहास मे इसका उल्लेख उचित स्थाना पर किया जायेगा।

उसके अतिरिक्त पीर मुहम्मद ईलची बूगा कूचीन था। हज़ार अस्पी[1] के युद्ध मे बल्ख द्वार के समीप सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के समक्ष उसने मुक्को द्वारा वीरता का प्रदर्शन किया। वह बडा ही वीर और सर्वदा मीर्ज़ा (महमूद) की सेवा मे रहा करता था, और उसे परामर्श दिया करता था। जिस समय सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने कून्दूज़ को घेर लिया तो पीर मुहम्मद ने खुसरो शाह के प्रतिस्पर्धी होने के कारण थोडे से आदमियो को लेकर जो भली भाति अस्त्र-शस्त्र न धारण किये थे, शत्रु पर रात्रि मे छापा मारा किन्तु सफलता प्राप्त न कर सके। इतनी भारी सेना के विरुद्ध बिना किसी योजना अथवा व्यवस्था के वह कर ही क्या सकता था? कुछ अश्वारोहियो ने उसका पीछा किया और वह नदी मे कूद पडा तथा डूब गया।

उसके अतिरिक्त अयूब[2] था जिसने सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की खुरासान की सेना में सेवा की थी। वह बडा ही वीर तथा बाईसुगर मीर्ज़ा का सरक्षक था। खाने पहनने मे बडे सयम से कार्य करता था। हसी मज़ाक से उसे बडी रुचि थी और वह बडा बातूनी था। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा उसे बेहया कह कर पुकारता था और यह उपाधि उसके अनुकूल भी थी।

उनके अतिरिक्त वली था जो खुसरो शाह का सगा छोटा भाई था। अपने सेवक की वह भली भाति रक्षा करता था। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा की आखो मे सलाई फिरवाने एव बाईसुगर मीर्ज़ा की हत्या का वही कारण था। वह सभी लोगो मे दोष निकाला करता था। बडा ही बदज़बान, गाली बकने वाला, अभिमानी तथा विवेकहीन व्यक्ति था। वह अपने अतिरिक्त किसी के कार्य को पसन्द न करता था। जब मैं कून्दूज़ से दूशी के समीप पहुचा[3] और खुसरो शाह को उसके सहायको से पृथक् कर के उसे निकाल दिया तो वली भी ऊज़बेको के भय से अन्दराब तथा सीर पहुच गया था। इस क्षेत्र के ईमाको ने उसे पराजित कर के लूट लिया। वह तदुपरान्त मेरी अनुमति से काबुल पहुचा। वली बाद मे स्वय शैबानी खा के पास चला गया। उसने समरकन्द मे उसका सिर कटवा लिया।

शेख अब्दुल्लाह बरलास भी एक अमीर था। उसने शाह सुल्तान मुहम्मद की एक पुत्री से विवाह कर लिया था जो सुल्तान महमूद खा तथा अबाबक्र मीर्ज़ा की खाला होती थी। वह बडी तग कबा पहनता था। वह सीधा सादा एव सरल स्वभाव का व्यक्ति था।

महमूद बरलास, नूनदाक के बरलासो से था। वह सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का भी बेग रह चुका था। जब मीर्ज़ा ने एराक विजय किया तो उसने करमान महमूद बरलास को प्रदान कर दिया। जब अबा बक्र मीर्ज़ा[4] मज़ीद बेग तरखान तथा काली भेडो के तुर्कमानो के साथ हिसार के विरुद्ध पहुचा और सुल्तान महमूद मीर्ज़ा अपने बडे भाई के पास तथा सुल्तान अहमद मीर्ज़ा समरकन्द चला गया तो

१ हज़ार अस्पी का तात्पर्य मीर पीर दरवेश हज़ार अस्पी से है। वह तथा उसका भाई मीर अली बल्ख के हाकिम थे। सम्भवत हज़ार अस्पी एव ईलची बूगा के ८५७ हि० (१४५३ ई०) के युद्ध की ओर संकेत है जिसमें एक दूसरे ने आमने सामने होकर युद्ध किया।

२ अयूब बेगचीक मुग़ूल था।

३ ९१० हि० (१५०३ ई०)।

४ अबाबक्र मीर्ज़ा मीरान शाही।

महमूद बरलास ने हिसार को समर्पित न किया और उसकी रक्षा करता रहा। वह बड़ा अच्छा कवि था और उसने एक दीवान की रचना की थी।

खुसरो शाह का समरकन्द से निर्वासन

सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त खुसरो शाह ने इस घटना को लोगों से छिपा कर राजकोष अपने अधिकार में कर लिया किन्तु इस प्रकार के समाचार गुप्त किस प्रकार रह सकते हैं। तुरन्त ही समस्त नगर वालों को सूचना प्राप्त हो गई। समरकन्द वालों के लिए वह दिन बहुत बड़ी खुशी का दिन था। सैनिकों तथा प्रजा ने सगठित हो कर खुसरो शाह पर आक्रमण कर दिया। अहमद हाजी बेग तथा तरखानी अमीरों ने इस उपद्रव को शात करके खुसरो शाह को नगर से निकाल कर हिसार की ओर भेज दिया।

बाई सुगर मीर्ज़ा का सिंहासनारोहण

सुल्तान महमूद मीर्ज़ा ने अपने जीवन काल में सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा को हिसार तथा बाईसुगर मीर्ज़ा को बुखारा प्रदान कर के उनके राज्यों में भेज दिया था। इस दुर्घटना के समय उनमें से कोई भी उपस्थित न था। समरकन्द तथा हिसार के अमीरों ने खुसरो शाह को निकाल देने के उपरान्त बाईसुगर मीर्ज़ा के पास बुखारा में आदमी भेजे और उसे बुलवा कर समरकन्द में सिंहासनारूढ कर दिया। जिस समय बाईसुगर मीर्ज़ा बादशाह हुआ उसकी अवस्था १८ वर्ष की थी।

सुल्तान महमूद खा का समरकन्द पर आक्रमण

उसी समय सुल्तान जुनैद बरलास तथा समरकन्द के कुछ प्रतिष्ठित लोगों के कहने पर सुल्तान महमूद[1] खा ने समरकन्द की विजय के उद्देश्य से चढाई की और कानबाई के समीप पहुच गया। बाईसुगर मीर्ज़ा शीघ्रातिशीघ्र बड़ी तेज़ी के साथ एक दृढ सेना लेकर अग्रसर हुआ और कानबाई के समीप युद्ध किया। हैदर कूकूल्दाश, जो कि मुगूल सेना का बहुत बड़ा स्तम्भ था, सेना के अग्रिम दल को लेकर आगे बढ़ा। वह तथा उसके सब आदमी घोड़ों से उतर पड़े और बाणों की वर्षा करने लगे। उसी समय हिसार के जवानों की सशस्त्र सेना ने उन पर बड़ी वीरता से आक्रमण किया और उन्हें अपने घोड़ों के पावों के नीचे रौंद डाला। इस दल के पराजित हो जाने के उपरान्त, शेष मुगूल सेना मुकाबला न कर सकी और बुरी तरह हार गई। बहुत बड़ी सख्या में मुगूल मारे गये। बाईसुगर मीर्ज़ा के समक्ष इतनी अधिक सख्या में लोगों की हत्या की गई कि लाशों की अधिकता के कारण मीर्ज़ा के शिविर को तीन बार हटाना पड़ा।

इबराहीम सारू का अस्फरा में विद्रोह

उसी समय इबराहीम सारू जो मीगलीग क़ौम से था और मेरे पिता की बाल्यावस्था से ही कई पदों पर रह कर सेवा कर चुका था किन्तु बाद में और किसी अपराध के कारण पदच्युत हो गया था

[1] सुल्तान महमूद खा चगताई।

अस्फरा के किले मे प्रविष्ट हुआ और वहा बाईसुग़र मीर्ज़ा के नाम का खुत्बा पढवा कर मेरा विरोध करने लगा।

बाबर द्वारा उस पर आक्रमण

इबराहीम के विद्रोह को शात करने के लिए शाबान (मई) मे हमारी सेना ने प्रस्थान किया और इसी मास के अत मे अस्फरा को घेर कर उतर पडी। हमारे वीरो ने अपने उत्साह मे जिस दिन वे किले के समीप पहुचे थे उसी दिन वीरता प्रदर्शित करते हुए किले की नई दीवार को, जिसका उमी समय किले के बाहर निर्माण हो रहा था, अधिकार मे कर लिया। सैयिद कासिम मेरे द्वार के रक्षक ने उस दिन सब से अधिक वीरता प्रदर्शित की और लोगो को तलवार के घाट उतार दिया। सुल्तान अहमद तम्बल तथा मुहम्मद दोस्त तगाई ने भी खूब तलवार चलाई किन्तु सैयिद कासिम को ही विजय ऊलूश[1] प्राप्त हुआ।

विजय ऊलूश मुगूलों की बडी प्राचीन प्रथा है। जो कोई अपनी तलवार से सब से अधिक वीरता प्रदर्शित करता है वह सभी दावतो मे विजय ऊलूश का पात्र होता है।

जब मैं शाहरुखिया मे अपने मामा सुल्तान महमूद खा से भेंट करने पहुचा तो उसने वहा विजय ऊलूश प्राप्त किया।

प्रथम दिन के युद्ध मे मेरा अत्का[2] खुदाई बीरदी बेग बाण द्वारा घायल हो कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। क्योकि बिना कवच के युद्ध किया गया था अत बहुत से जवान नष्ट हो गये और कुछ घायल हो गये। इबराहीम सारु के पास एक बडा ही अच्छा बाण चलाने वाला था। मैंने इस प्रकार का धनुर्धर अभी तक नही देखा। उसी ने अधिकाश लोगो को घायल कर दिया। अस्फरा की विजय के उपरान्त वह मेरी सेवा मे सम्मिलित हो गया।

जब अवरोध मे अधिक समय व्यतीत हो गया तो आदेश दिया गया कि दो-तीन स्थानो पर सरकोबों[3] का निर्माण करके सुरग लगाई जायें और किले पर अधिकार जमाने के लिये जो यत्र आवश्यक हो वे तैयार किये जायें। अवरोध ४० दिन तक चलता रहा। अन्त मे इबराहीम सारू ने विवश होकर ख्वाजा मौलाना काज़ी को मध्यस्थ बना कर मेरी सेवा मे सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया। शव्वाल मास (जून १४९५ ई०) मे वह तलवार तथा निषग को अपनी गर्दन मे लटकाये हुए मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और किले को समर्पित कर दिया।

बाबर द्वारा खुजन्द पर अधिकार

खुजद बहुत समय तक उमर शेख मीर्ज़ा के दरबार से सम्बन्धित था। इस सकट काल में[4] कुछ समय से, फरगाना राज्य के उथल पुथल के कारण सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के अधिकार मे आ गया था। इस समय अवसर मिलने पर हमने उसके विरुद्ध प्रस्थान किया। खुजद मे मीर मुगूल का पिता अब्दुल वहहाब शगावल था। उसने हमारे पहुचते ही नि सकोच किला हमे सौंप दिया।

१ ऊलूश उस भोजन को कहते हैं जो शाही दस्तरख्वान से प्राप्त होता है।
२ संरक्षक।
३ एक प्रकार का मचान जो लकड़ी अथवा मिट्टी से तैयार कराया जाता था और उसे किले की दीवार के बराबर अथवा थोड़ा सा ऊँचा बनाया जाता था। किले से जो कोई सिर निकालता उसे सरकोब से मार दिया जाता था।
४ उमर शेख मीर्ज़ा के जीवनकाल के अंतिम समय से।

सुल्तान महमूद खा से भेंट

उन्ही दिनो मे सुल्तान महमूद खा शाहरुखिया मे था। यह लिखा जा चुका है कि जब सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के अन्दिजान पहुचने पर[1] खान ने भी वहा पहुच कर अक्शी को घेर लिया, मैंने सोचा कि "हम इस समय उसके बडे निकट पहुच गये है और वह मेरे पिता तथा बडे भाई के समान है अत मैं उसकी सेवा मे उपस्थित हो जाऊ और पिछली घटनाओ के कारण उसे कोई शका हो तो उसका समाधान करा दू। वहा पहुच कर उसके दरबार के विषय मे मुझे निकट से ज्ञान प्राप्त हो जायेगा।"

यह सोच कर मैं शाहरुखिया के बाहर उस उद्यान मे जिसका निर्माण हैदर बेग ने कराया था खान की सेवा मे उपस्थित हुआ। खान उस खेमे मे बैठा था जो उसके लिये उद्यान के मध्य मे लगवाया गया था। उसमे चार द्वार थे। मैं उसमे प्रविष्ट हो कर ३ बार घुटने के सहारे झुका। खान ने खडे हो कर मेरे प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। हम दोनों एक दूसरे को आखो ही आखो मे देखते रहे और वह अपने स्थान को वापस चला गया। मैं एक बार फिर झुका। उसने मुझे अपने पास बुलाया और अत्यधिक कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की।

अक्शी के मार्ग से वापस होना

दो-तीन दिन उपरान्त मैंने कां दीरलीक दर्रे से अक्शी तथा अन्दिजान की ओर प्रस्थान किया। अक्शी पहुचकर मैंने अपने पिता के मजार का तवाफ[2] किया। अक्शी से शुक्रवार की नमाज के समय[3] निकल कर बन्द सालार के मार्ग से होते हुए मैं सायकाल तथा सोने की नमाज के मध्य मे अन्दिजान पहुचा। बद सालार का यह मार्ग ९ यीगाच की दूरी का मार्ग बताया जाता है।

जीगराक को लूटना

अन्दिजान के जगली कबीलो मे जीगराक नामक एक कबीला है। इसके आदमियो की सख्या बडी अधिक है। इनमे ५, ६ हज़ार घर हैं। यह काशगर तथा फरगाना के पर्वतो मे रहते है। इनके घोडो तथा भेंडो की सख्या बडी अधिक है। ये लोग कूता[4] भी रखते है। साधारण पशुओं के स्थान पर इनके पास कूता होते है। क्योकि ये लोग दुर्गम पर्वतो मे निवास करते है अत कर नही अदा करते। कासिम बेग के नेतृत्व मे एक सेना उनके विरुद्ध इस आशय से भेजी गई कि उन लोगो से जो कर मिल जाये वह सैनिको मे बाटा जा सके। कासिम बेग ने जा कर २० हजार भेंडे और हज़ार डेढ हजार घोडे प्राप्त कर लिये। वे सब सेना वालो को बाट दिये गये।

औरातीपा के विरुद्ध प्रस्थान

सेना जीगराक से वापसी के उपरान्त औरातीपा के विरुद्ध रवाना हो गई। औरातीपा बहुत समय तक उमर शेख मीर्जा के अधीन रह चुका था किन्तु जिस वर्ष मीर्जा की मृत्यु हुई वह उसके

१ ८९९ हि० (१४९३-९४ ई०)।
२ श्रद्धापूर्वक चक्कर लगाना।
३ मध्याह्नोत्तर में।
४ चामर अथवा सुरा गाय।

हाथ से निकल गया था। इस समय सुल्तान अली मीर्जा अपने भाई बाईसुगर मीर्जा की ओर से वहा था। सुल्तान अली मीर्जा हमारे आगमन के समाचार पाकर, अपने अत्का शेख जुन्नून अरगून को छोड कर मचा के पर्वतीय प्रदेश मे चला गया। खुजद तथा औरातीपा के मध्य से खलीफा को शेख जुन्नून के पास दूत बना कर भेजा गया किन्तु उस असावधान दुष्ट ने उचित उत्तर न दिया और खलीफा को बन्दी बना कर उसकी हत्या का आदेश दे दिया। क्योकि खलीफा की मृत्यु के विषय मे ईश्वर की इच्छा न थी अत वह मुक्त हो गया और अत्यधिक परिश्रम तथा कठिनाइयो से दो-तीन वर्ष उपरान्त नगे पाव तथा नगे शरीर मेरे पास पहुचा। हम लोग औरातीपा के समीप पहुच गये। क्योकि शीत ऋतु आ गई थी और लोग अनाज तथा जो कुछ भी उनके पास था वहा से हटा ले गये थे अत हम लोग अन्दिजान वापस चले गये। हमारी वापसी के उपरान्त खान के आदमियो ने औरातीपा पर चढाई की। औरातीपा वाले मुकाबला न कर सके और उन्होने नगर समर्पित कर दिया। खान ने औरातीपा मुहम्मद हुसेन गूरगान दूगलात को दे दिया। उस समय से ९०८ हि० (१५०३ ई० तक) औरातीपा मुहम्मद हुसेन गूरगान के अधीन रहा।

६०१ हि०

(२१ सितम्बर १४९५ ई० से ९ सितम्बर १४९६ ई०)

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के खुसरो शाह पर आक्रमण

इस वर्ष शीत ऋतु मे सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने खुरासान से हिसार पर चढाई की और तिरमिज पहुचा। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा भी सेना एकत्र कर के (हिसार से) तिरमिज़ पहुचा और उसका मुकाबला करने के लिए डट गया। खुसरो शाह ने अपने आपको कुन्दूज मे दृढ बना कर अपने छोटे भाई वली को सेना सहित सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा की सहायता हेतु भेजा। शीत ऋतु के अधिकाश समय दोनो सेनायें नदी तट पर पडी रही और कोई भी नदी को पार न कर सकी। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा बडा ही योग्य तथा अनुभवी सेनापति था। उसने कुन्दूज़ की ओर नदी के चढाव की तरफ प्रस्थान किया। और सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा को असावधान पाकर अब्दुल लतीफ बख्शी को ५, ६ सौ योग्य व्यक्तियो सहित नदी के उतार पर किलीफ घाट पर भेजा। सुल्तान मसऊद के सावधान होने के पूर्व अब्दुल लतीफ बख्शी ने अपने आदमियो सहित नदी को पार कर के अपनी गढबन्दी कर ली। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा को जब यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने खुसरो शाह के भाई वली के शत्रुओं की उस सेना पर जो पार उतर चुकी थी, आक्रमण के सम्बन्ध मे अत्यधिक आग्रह के बावजूद या तो बाकी चगानियानी, जो वली से घृणा करता था, के मार्ग भ्रष्ट कर देने और या अपनी कायरता के कारण उनके विरुद्ध प्रस्थान न किया और अपनी सेना को छिन्न-भिन्न करके हिसार की ओर चल दिया। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने नदी पार कर के बदी उज्जमान मीर्ज़ा, इबराहीम हुसेन मीर्ज़ा तथा जुन्नून अरगून और मुहम्मद वली बेग को खुसरो शाह के विरुद्ध शीघ्रातिशीघ्र आक्रमण करने के लिए भेजा। मुज़फ्फर हुसेन मीर्ज़ा तथा मुहम्मद बरन्दूक बुरलास को खुतलान के विरुद्ध भेजा और स्वय हिसार की ओर रवाना हुआ। जब हिसार वालो को इस बात की सूचना हुई तो वे सतर्क रहने लगे। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा ने हिसार मे ठहरना उचित न समझा और कामरूद घाटी के ऊपर की ओर पहुचा और वहा से सराताक के मार्ग से अपने छोटे भाई बाईसुगर मीर्ज़ा के पास समरकन्द चला गया। वली भी खुतलान की ओर चला गया। हिसार के किले को बाकी चगानियानी, महमूद बरलास तथा कूच बेग के पिता सुल्तान अहमद ने दृढ बना लिया। हमज़ा सुल्तान तथा महदी सुल्तान (ऊज़बेक), जो कुछ वर्ष पूर्व शैबानी खा का साथ छोड कर सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की सेवा मे सम्मिलित हो गये थे, इस उथल पुथल मे अपने समस्त ऊज़बेको के साथ करातीगीन चले गये। उनके साथ मुहम्मद दूगलात, सुल्तान हुसेन दूगलात तथा हिसार के समस्त मुग़ूल भी चले गये।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने यह समाचार पाकर अबुल मुहसिन मीर्ज़ा को सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा के विरुद्ध कामरूद घाटी के ऊपर की ओर भेजा। जब वे दर्रे पर पहुचे तो कोई सफलता न प्राप्त कर सके। मीर्ज़ा बेग फिरगी बाज़[1] ने अत्यधिक वीरता प्रदर्शित की। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने इबराहीम तरखान

१ फ़िरंगी (एक प्रकार की छोटी तोप) चलाने में कुशल।

तथा याकूब अयूब को हमजा सुल्तान का पीछा करने के लिये करातीगीन भेजा। इस दल ने उनके पास पहुच कर युद्ध किया किन्तु सुल्तान हुसेन मीर्जा के सैनिक पराजित हो गये। उसके अधिकाश बग घोडो से गिरा दिये गये किन्तु बाद मे उन्हे मुक्त कर दिया गया।

ऊजबेक सुल्तानों का बाबर के पास पहुँचना

इस वहिर्गमन के कारण हमज़ा सुल्तान तथा उसका पुत्र, ममाक सुल्तान महदी सुल्तान, मुहम्मद दूगलात, जो बाद मे हिसारी कहलाया उसका भाई सुल्तान हुसेन दूगलात तथा सुल्ताना एव मुगूलो के आश्रित ऊज़बेक जो हिसार म सुल्तान महमूद मीर्जा के सेवक समझे जाते थे, सूचना देकर मेरी सेवा मे रमज़ान (मई-जून) मास मे अन्दिजान मे उपस्थित हुये। ऐसे अवसरो पर तीमूरी सुल्तानो की जो प्रथा है उसके अनुसार मैं तूशुक[1] पर आसीन हुआ। जब हमजा सुल्तान ममाक सुल्तान, मेहदी सुल्तान उपस्थित हुए तो मैंने उठ कर उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। हमने एक दूसरे की ओर देखा और उन्ह अपनी दायी ओर बागीशदा[2] बैठाया। बहुत से मुगूल मुहम्मद हिसारी के नेतृत्व मे उपस्थित हुए और मेरी सेवा मे सम्मिलित हो गये।

सुल्तान हुसेन मीर्जा का वर्णन

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने हिसार पहुच कर किले को घेर लिया और दिन रात किले की विजय हेतु परिश्रम करने लगा

इसी बीच मे हिसार की बहार की वर्षा के कारण सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सेना को बडा कष्ट हने लगा अत उसने सधि कर ली मीर्जा ने सुल्तान महमूद मीर्जा की सब से बडी पुत्री को जो खान-ज़ादा बेगम से थी,[3] अपने पुत्र हैदर मीर्ज़ा के लिये, जो पायन्दा बेगम के गर्भ से था ले लिया। वह पायन्दा बेगम द्वारा सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का नाती था। इसके उपरान्त वह हिसार से कून्दुज की ओर चला गया। कून्दुज़ मे भी सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने कुछ खाइया खुदवा कर किले को घेर लिया किन्तु बदी उज़-ज़मान मीर्ज़ा के मध्यस्थ बन जाने के कारण सधि हो गई

जब मीर्जा बल्ख पहुचा तो उसने मावराउन्नहर के हित को दृष्टि मे रखते हुए उसे बदी उज्-ज़मान मीर्जा को दे दिया। बदी उज्ज़मान मीर्ज़ा के अस्तराबाद को मुजफ्फर हुसेन मीर्ज़ा को दे दिया और एक ही दरबार म एक ने बल्ख के लिये और दूसरे ने अस्तराबाद के लिये अभिवादन किया। इस वितरण से बदी उज्ज़मान मीर्ज़ा बडा रुष्ट हुआ और इसके कारण वर्षों तक विद्रोह एव उपद्रव होते रहे।

समरकन्द में तरखानियो का विद्रोह

इसी वर्ष रमज़ान मास (मई-जून १४९६ ई०) मे तरखानियो ने समरकन्द म विद्रोह कर दिया

१ तूशक- गद्दा जो चबूतरे अथवा किसी ऊँचे स्थान पर बिछा दिया जाता होगा।

२ इस शब्द का अनुवाद बड़ा कठिन है। सम्भवत इसका अर्थ यह है कि बाबर ने उन्ह उनके सम्मान के अनुसार बैठाया और वे पाल्थी मार कर सम्मानित लोगों की भाति बैठे।

३ बेग बेगम।

वावर का समरकन्द के विरुद्ध प्रस्थान

यह समाचार शव्वाल मास (जून-जुलाई) मे अन्दिजान मे हमे प्राप्त हुए। हमने भी समरकन्द को विजय करने के उद्देश्य से उसी शव्वाल मास मे चढाई की। क्योकि सुल्तान हुसेन मीर्जा हिसार तथा कून्दूज़ को छोड चुका था और क्योकि सुल्तान मसऊद मीर्जा तथा खुसरो शाह निश्चिन्त थे अत सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा भी समरकन्द को विजय करने के उद्देश्य से शहरे सब्ज के समीप से वढा। खुसरो शाह ने अपने छोटे भाई वली को मीर्जा के साथ कर दिया। हम[1] समरकन्द का तीन चार मास तक तीन ओर से अवरोध किये रहे। तदुपरान्त ख्वाजा यहया, सुल्तान अली मीर्जा के पास से उपस्थित हुआ और उसने संधि तथा मेल का इस योग्यता से प्रयत्न किया कि यह निश्चय हुआ कि हम लोग मिल कर बात कर लें। मैं अपनी सेना लेकर सुगद से कस्बे के नीचे कोई ८ मील पर पहुचा। सुल्तान अली मीर्जा अपनी ओर से अपनी सेना लाया। सुल्तान अली मीर्जा उस ओर से ४-५ व्यक्तियो के साथ और इस ओर से मैं ४ ५ व्यक्तियो के साथ कोहिक नदी के मध्य मे पहुचे और एक दूसरे के विषय में घोडे पर बैठे-बैठे पूछ कर दोनो अपने-अपने मार्ग से वापस हो गये।

मैंने मुल्ला बिनाई तथा मुहम्मद सालेह से जो ख्वाजा यहया की सेना म थे भेंट की। मुहम्मद सालेह को मैंने इस बार के अतिरिक्त फिर कभी नही देखा। मुल्ला बिनाई इसके बाद कुछ समय तक मेरी सेवा मे रहा।

सुल्तान अली मीर्जा से भेंट के उपरान्त शीत ऋतु के निकट आ जाने के कारण तथा समरकन्द मे खाद्य सामग्री की कमी हो जाने की वजह से मैं अन्दिजान तथा सुल्तान अली मीर्जा बुखारा चला गया। सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा का शेख अब्दुल्लाह बरलास की एक पुत्री से अत्यधिक प्रेम था। उससे विवाह कर के राज्य पर अधिकार जमाने के विचार को त्याग कर वह हिसार चला गया। वास्तव मे उसके समरकन्द पर चढाई करने का उद्देश्य यही था। जब मैं शीराज तथा कानवाई के समीप पहुचा तो महदी सुल्तान समरकन्द भाग गया। हमज़ा सुल्तान भी ज़मीन नामक स्थान से आज्ञा लेकर समरकन्द चला गया।

1 तीनों मीर्ज़ा।

६०२ हि०

(९ सितम्बर १४९६ ई०—३० अगस्त १४९७)

बाबर का समरकन्द के लिये दूसरा प्रयत्न

इस शीत ऋतु मे बाईसुगर मीर्जा के कार्य उन्नति पर रहे। जब अब्दुल करीम इशरत सुल्तान अली मीर्जा की ओर से कूफीन के समीप आक्रमण हेतु पहुचा तो महदी सुल्तान बाईसुगर मीर्जा के सैनिको को लेकर उससे युद्ध के लिये रवाना हुआ। अब्दुल करीम इशरत तथा महदी सुल्तान दोनो एक दूसरे से भिड गये। महदी सुल्तान ने अपनी चिरक्स[1] तलवार अब्दुल करीम के घोडे के शरीर मे भोक दी। घोडा अब्दुल करीम सहित गिर पडा। जब वह खडा होने लगा तो महदी सुल्तान ने तलवार का ऐसा वार किया कि उसकी कलाई कट गई। उसे बन्दी बना कर उसके सैनिको को बुरी तरह पराजित कर दिया गया। ये सुल्तान समरकन्द की दुर्दशा एव मीर्ज़ाओ के दरबार को अव्यवस्थित दशा मे देख कर दूरदर्शिता की दृष्टि से शैबानी खा के पास चले गये।

(अब्दुल करीम पर) अपनी साधारण सी विजय से प्रोत्साहित होकर समरकन्द वाले सेना एकत्र करके सुल्तान अली मीर्जा से युद्ध करने के लिये रवाना हुये। बाईसुगर मीर्ज़ा सरे पुल की ओर अग्रसर हुआ और सुल्तान अली मीर्जा ख्वाजा काजरून की ओर बढा। इसी बीच मे, ख्वाजा अबुल मकारिम, ऊश के ख्वाजा मुनीर के कहने से बुखारा के विरुद्ध थोडे से सवारो को लेकर रवाना हुआ। अन्दिजान के बेगों मे से वैस लागरी तथा मुहम्मद बाकिर और कासिम दूल्दाई तथा बाईसुगर मीर्ज़ा के कुछ घर के सैनिक उसके साथ थे। उन लोगो के नगर के समीप पहुचने के पूर्व बुखारा वाले सचेत हो गये और वे कोई सफलता प्राप्त न कर सके अत लौट आये।

सुल्तान अली मीर्ज़ा से भेंट के समय[2] यह निश्चय हुआ था कि इस वर्ष ग्रीष्म ऋतु मे वह बुखारा से प्रस्थान करे और मैं अन्दिजान से और इस प्रकार समरकन्द को घेर लिया जाये। इस योजना के अनुसार मैं रमज़ान मास (मई) मे अन्दिजान से रवाना हुआ। यार यीलाक के समीप पहुचने पर ज्ञात हुआ कि दोनो मीर्ज़ा एक दूसरे के मुकाबले मे पडाव डाले हुये हैं। मैंने तूलून ख्वाजा मुगूल को २-३ सौ छापा-मार युद्ध करने वाले जवानो के साथ आगे भेजा। उनके निकट पहुच जाने के कारण बाईसुगर मीर्जा को हमारे अग्रसर होने की सूचना मिल गई। वह तुरन्त उस स्थान से अपनी सेना को अव्यवस्थित दशा मे छोडकर चल दिया। उसी रात्रि मे हमारे जवान उसकी सेना के पिछले भाग के पास पहुच गये और बहुत से आदमियो की बाण द्वारा हत्या कर दी और कुछ लोगो को बन्दी बना लाये। उन्हे पर्याप्त धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई।

दो दिन उपरान्त हम शीराज पहुच गये। वह कासिम बेग दूल्दाई के अधीन था। उसका

१ सरकेशियन।
२ सम्भवत: ख़्वाजा यहया से।

दारोग़ा[1] उसकी रक्षा न कर सका और उसने उसे समर्पित कर दिया। वह इबराहीम सारू को सौंप दिया गया। दूसरे दिन ईदुल फ़ित्र[2] की नमाज़ पढ़ कर हम लोग समरक़न्द की ओर चल दिये और आबे यार के मैदान में ठहरे। उसी दिन क़ासिम दूल्दाई, क़ैंग लाग़री, मुहम्मद सिग़ाल का पौत्र, हसन तथा सुल्तान मुहम्मद वैस ३००-४०० आदमियों सहित मेरी सेवा में उपस्थित हो गये। उन लोगों ने बताया कि, "बाईसुग़र मीर्ज़ा आकर वापस चला गया अतः हम लोग उसका साथ छोड़कर पादशाह की सेवा में आ गये हैं।" बाद में ज्ञात हुआ कि वे लोग शीराज़ की रक्षा हेतु मीर्ज़ा से उसके आग्रह पर पृथक् हुये होंगे किन्तु जब उन्होंने शीराज़ की दशा देखी तो फिर उनके लिये हमारी सेवा में उपस्थित होने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया।

जब हम लोग क़राबूलाक़ में ठहरे तो बहुत से मुग़ल बन्दी बना कर लाये गये। उन लोगों ने उन ग्रामों में जिनमें से होकर वे गुज़रे थे, बड़े अत्याचार किये थे। क़ासिम बेग क़ूचीन ने अन्य लोगों की शिक्षा हेतु उनमें से दो-तीन के टुकड़े-टुकड़े करा दिये। चार पाच वर्ष उपरान्त, जब मैं छापा मार युद्ध किया करता था[3] तो वह मेरे मामा से ख़ान के पास जाते समय मुझसे पृथक् होकर हिसार चला गया।

क़राबूलाक़ से प्रस्थान करके हमने (ज़र अफ़शा नामक) नदी पार की और याम के समीप पड़ाव किया। उसी दिन नगर के उद्यान में हमारे आदमियों तथा बाईसुग़र मीर्ज़ा के आदमियों से युद्ध हो गया। इस युद्ध में सुल्तान अहमद तम्बल की गरदन में एक भाला लगा किन्तु वह घोड़े से न गिरा। ख़्वाजका मुल्ला सद्र की, जो ख़्वाजा कलाँ का बड़ा भाई था, गरदन में एक बाण लगा और वह तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह बड़ा ही उत्तम सैनिक था। मेरे पिता ने मेरे पूर्व उसे आश्रय प्रदान किया था। वह उनका मुहरदार[4] था। वह बहुत बड़ा विद्वान् था। शब्दार्थ का उसे अच्छा ज्ञान था। उसकी रचना शैली बड़ी उत्तम थी। बाज़ द्वारा पक्षियों के शिकार में उसे बड़ी कुशलता प्राप्त थी। जादू के पत्थर से वह पानी बरसा सकता था।

जिस समय हम लोग याम में थे तो नगर से अधिक संख्या में जन-साधारण व्यापारी एवं अन्य लोग एकत्र हो गये और शिविर क्रय विक्रय का बाज़ार बन गया। एक दिन मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय अचानक शोर गुल होने लगा और वे सब मुसलमान[5] लूट लिये गये किन्तु हमारी सेना में इतना अधिक अनुशासन था कि जब यह आदेश दिया गया कि प्रत्येक वस्तु लौटा दी जाये तो दूसरे दिन प्रथम पहर के पूर्व कोई ऐसी वस्तु न थी जो उनके स्वामियों को लौटा न दी गई हो, यहा तक कि धागे का एक टुकड़ा तथा टूटी हुई सुई तक हमारे आदमियों के पास न रही।

याम से प्रस्थान करके हम लोग ख़ान यूरती[6] में, जो समरक़न्द से लगभग ३ कुरोह[7] पर है, ठहरे। हम लोग वहा ४०-५० दिन ठहरे रहे। इस बीच में हमारी ओर के आदमियों तथा वहा वालों में कई बार उद्यान में झड़पें हुईं। इन झड़पों में से एक में इबराहीम बेगचीक के मुह पर एक घाव लगा। इसके उप-

१ रक्षक।
२ २६ जून १४९७ ई०, रमज़ान के बाद की ईद।
३ ९०७ हि० (१५०१-२ ई०)।
४ मुहर रखने वाला।
५ व्यापारी।
६ ख़ान का शिविर।
७ ६ मील।

रान्त लोग उसे इबराहीम चापूक[1] कहने लगे। एक अन्य अवसर पर, उद्यान में, मगाक पुल पर अबुल कासिम कोहबर चगताई ने गदा चलाने का प्रदर्शन किया। एक बार इसी उद्यान में पनचक्की की नहर के फाटक के समीप मीर शाह कूचीन ने कुशलतापूर्वक गदा चलाई किन्तु उसके ऐसी तलवार लगी कि उसकी आधी गरदन कट गई किन्तु सौभाग्य से धमनी न कटी।

जब हम लोग खान यूरती में थे तो कुछ लोगों ने किले में धूर्ततापूर्वक यह समाचार भेजे कि, 'यदि तुम लोग रात्रि में गारे आशिका की ओर आ जाओ, तो हम लोग किला समर्पित कर देंगे।" इस विचार से सवार होकर हम उस रात्रि में मगाक के पास पहुचे और वहा से कुछ उत्तम अश्वारोहियों एव पदातियों के दल को निश्चित स्थान पर भेजा। घर के पदातियों में से चार पाच अग्रसर हुये ही थे कि इस बात का पता चल गया। वे बडे अनुभवी वीर थे। उनमें से एक हाजी बाल्यावस्था में मेरी सेवा करता चला आया था। एक अन्य महमूद कून्दूर सगक था। वे सब के सब मार डाले गये।

जिन दिनों हम लोग खान यूरती में थे तो समरकन्द के नगर निवासी एव व्यापारी इतनी बड़ी सख्या में वहा पहुच गये थे कि शिविर नगर बन गया था। जो वस्तुयें नगर में मिलती हैं वे शिविर में मिलने लगी थी। इसी बीच में समरकन्द के अतिरिक्त सभी किले, पर्वतीय एव मैदानी स्थान हमारे अधीन होने लगे थे। थोड से सैनिको का एक दल ऊरगूत के किले की, जो शवदार नामक पहाडी के आचल में है, दृढतापूर्वक रक्षा कर रहा था अत हम लोग विवश होकर खान यूरती से उनके विरुद्ध रवाना हुये। वे हम लोगो का मुकाबला न कर सके, और ख्वाजा काजी को मध्यस्थ बना कर किला समर्पित कर दिया। हम उन लोगो के अपराध क्षमा करके समरकन्द के अवरोध हेतु लौट आये।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा में विरोध, बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा की पराजय, सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का बल्ख़ अपने अधिकार में करना, बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा का शरण हेतु ख़ुसरो शाह के पास क़ुन्दूज़ पहुचना, ख़ुसरो शाह द्वारा उसका स्वागत, तथा ख़ुसरो शाह का वली के साथ बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा को सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा के विरुद्ध हिसार भेजना, हिसार वालों से सधि तथा बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा का ज़ुन्नून अरग़ून के पास प्रस्थान।[2]

१ कटे चेहरे वाला।
२ इन घटनाओं के वर्णन का अनुवाद नहीं किया गया है।

९०३ हि०

(३० अगस्त १४९७ ई० से १९ अगस्त १४९८ ई०)

बाबर द्वारा समरकन्द का अवरोध

जिस समय हम कुलबा के घास के मैदान मे बागे मैदान के पीछे पडाव किये हुये थे तो समरकन्द निवासी बहुत बडी सख्या मे मुहम्मद चप के पुल की ओर पहुच गये। हमारे आदमी तैयार न थे। उनके तैयार होने के पूर्व बाबा अली के पुत्र बाबा कुली को घोड से गिरा कर वे लोग किले म ले गय। कुछ दिन उपरान्त हम लोग कुल्बा नामक पहाडी पर कोहिक के पीछे चले गये। उसी दिन सैयद यूसुफ बेग समरकन्द के बाहर निकल कर इस पडाव पर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। जब समरकन्द वालो न हमे एक पडाव से दूसरे पडाव की ओर जाते देखा तो यह समझकर कि हमने प्रस्थान कर दिया है सैनिक एव नगरवासी बहुत बडी सख्या मे निकल पडे और मीर्जा के पुल तक बढते चले गये और शेखजादा के फाटक से निकल कर मुहम्मद चप के पुल तक चले गये। हमने अपने जवाना को सवार हो जाने का आदेश दिया। उन पर दोना ओर से तीव्र आक्रमण किये गये—मुहम्मद चप के पुल की ओर से और मीर्जा के पुल की ओर से—किन्तु ईश्वर की कृपा हमारे साथ रही। हमारे शत्रु पराजित हो गये। बहुत से चुने हुये बेग एव वीर हमारे आदमिया द्वारा घोडा से गिरा दिय गये और बन्दी बना कर लाये गये। उनमे से हाफिज दूल्दाई का पुत्र मुहम्मद मिस्कीन बन्दी बना कर लाया गया। उसकी तर्जनी कट गई थी। मुहम्मद कासिम नबीरा भी घोडे से गिरा दिया गया था और अपने छोटे भाई हसन नबीरा[1] द्वारा लाया गया। इसी प्रकार बहुत से अन्य सैनिक तथा प्रतिष्ठित लोग थे। नगर के जन साधारण म से दीवाना नामक एक जामा[2] बुनने वाला तथा कालकाशूक[3] थे। वे लोग जन साधारण एव उपद्रवियो के नेता थे और उन्हाने पत्थरो से युद्ध किया था। उन लोगा को दारुण कष्ट देकर मरवा डालने का आदेश हुआ। उन्हे यह दड हमारे उन पदातिया की हत्या के कारण दिया गया जो गारे आशिका के समीप मारे गये थे।

समरकन्द वाले पूर्ण रूप से पराजित हो गये। इसके उपरान्त उन्होने कोई आक्रमण न किया। यहा तक कि हमारे आदमी खाई के सिरे तक पहुच जाते थे और उन लोगो के दास तथा दासियो को जो दीवार के समीप होते थे पकड लाते थे।

सूर्य अब तुला राशि मे प्रविष्ट हो चुका था और जाडा अधिक होता जाता था। मैंने बेगो को एकत्र करके परामर्श किया। हमने यह निश्चय किया कि 'समरकन्द वाले बडी दुर्दशा को प्राप्त हो चुके

१ मुहम्मद सीगाल का पौत्र।
२ कबा (एक प्रकार का लम्बा कोट) जो सब वस्त्रों के ऊपर पहना जाता है।
३ काल एक प्रकार का बिस्कुट होता है और काशूक का अर्थ चम्मच है। सम्भवत किसी प्रकार के व्यापारी से तात्पर्य है।

हैं। ईश्वर की कृपा से हम समरकन्द आज या कल मे ले ही लेंगे। मैदान मे ठहरने के कारण हमें ठंडक की वजह से अत्यधिक कष्ट भोगने पड रहे है। हम इस स्थान से किसी समीप के किले मे शीत ऋतु व्यतीत करने के लिये चले जायें। बाद मे यदि हमे उस स्थान को छोडना भी पडेगा तो हम बिना किसी अधिक कठिनाई के ऐसा कर लेंगे।" ख्वाजा दीदार नामक किला इस कार्य हेतु सबसे अधिक उपयुक्त दृष्टिगत हुआ। हम लोग अपने उस पडाव से प्रस्थान करके ख्वाजा दीदार के समक्ष घास के मैदान मे ठहरे। किले का निरीक्षण किया। शीत ऋतु के लिये झोपडियो एव घरों के निर्माण हेतु स्थान निश्चित करके मज़दूर एव निरीक्षक नियुक्त कर दिये और घास के मैदान मे अपने शिविर मे लौट गये। वहा उन थोडे से दिनो तक जब तक शीत ऋतु के घरो का निर्माण न हो गया, हम लोग ठहरे रहे।

इसी बीच मे बाईसुगर मीर्जा के दूत शैबानी खा के पास उससे सहायता की याचना करने के लिये पहुचने लगे। जिस दिन हमारे शीत ऋतु के घर इत्यादि तैयार हो गये और हम ख्वाजा दीदार मे चले गये तो खान तुर्किस्तान[१] से थोडी सी सेना लेकर उस स्थान पर, जहा हमारे शिविर थे, पहुच गया। हमारे सब आदमी एक स्थान पर न थे। कुछ लोग शीत ऋतु व्यतीत करने के लिये रबाती चले गये थे, कुछ कबुद और कुछ शीराज़। इसके बावजूद जितने लोग हमारे साथ थे, उन्हें हमने सगठित किया और उनसे युद्ध करने के लिये निकले। शैबानी खा ने युद्ध न किया और समरकन्द की ओर रवाना हो गया। वह किले की ओर बढता चला गया किन्तु बाईसुगर मीर्जा ने यह देखकर कि शैबानी खा ने उसकी इच्छानुसार उसे सहायता नही प्रदान की है उसका कोई स्वागत न किया। शैबानी खा निराश होकर कुछ दिन उपरान्त तुर्किस्तान चला गया और कोई सफलता न प्राप्त कर सका।

बाईसुगर मीर्जा ७ मास से अवरोध का मुकाबला कर रहा था। उसे केवल शैबानी खा का सहारा था। उसकी यह आशा भी पूरी न हुई। वह अपने २०० ३०० भूखे सहायकों को लेकर समरकन्द से खुसरो शाह के पास कून्दूज चला गया। जब वह तिरमिज के समीप आमू नदी के घाट पर पहुचा तो तिरमिज का हाकिम सैयिद हुसेन अकबर, जो सुल्तान मसऊद मीर्जा का विश्वास-पात्र तथा सम्बन्धी था, उसके विषय म सूचना पा कर उसके विरुद्ध रवाना हुआ। मीर्ज़ा ने स्वय नदी पार कर ली थी किन्तु मीरीम तरखान नदी मे डूब गया और उसके शेष सहायक, जो वही रह गये थे, बन्दी बना लिये गये। समस्त असबाब तथा उसके सामान से लदे हुए ऊट अधिकार मे कर लिये गये। मुहम्मद ताहिर नामक उसका एक सेवक लडका भी सैयिद हुसेन अकबर द्वारा बन्दी बना लिया गया। खुसरो शाह ने मीर्जा के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की।

जब हमे उसके प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुये तो हम लोग घोडो पर सवार होकर ख्वाजा दीदार मे समरकन्द की ओर रवाना हुये। बेग तथा जवान हमारे स्वागतार्थ निरन्तर मार्ग पर आते रहे। रबी-उल-अव्वल मास के अन्तिम १० दिनो (नवम्बर १४९७ ई०) मे हम किले मे प्रविष्ट हुये और बोस्तान सराय मे उतरे। इस प्रकार ईश्वर की कृपा से समरकन्द के कस्बे एव प्रदेश पर अधिकार जमा लिया गया।

समरकन्द

समस्त ससार मे समरकन्द के समान विरले ही कोई हृदयग्राही कस्बा होगा। यह पाचवी इकलीम

१ ताशकन्द के उत्तर-पश्चिम में, सिर के उत्तर तथा अरल के पूर्व जो ऊज़बेकों की बुखारा की विजय के पूर्व राजधानी था।

मे ४०° ६' अक्षाश और ९९° २' देशातर मे स्थित है। कस्बे का नाम समरकन्द है। समरकन्द प्रदेश को लोग मावराउन्नहर कहते है। क्योकि इसे कोई शत्रु विजय नही कर सका है अत यह बलदये महफूजा[1] कहलाता है। यहा वाले अमीरुल मोमनीन हजरत उस्मान[2] के समय मे मुसलमान हुये होगे। कसम इब्ने अब्बास नामक एक सहाबी[3] यहा पहुचे होगे। उनका मजार, शाह जिन्दा के मजार के नाम से प्रसिद्ध है और लोहे के फाटक के बाहर है। समरकन्द को इस्कन्दर ने बसाया होगा। तुर्क तथा मुगल कबीले इसे सीमीज़ कीन्त कहते है। तीमूर बेग ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। इतने बड बादशाह ने इससे पूर्व इसे कभी अपनी राजधानी न बनाया था। मैंने नगर की चहार-दीवारी को लोगा से कदमा द्वारा नापने का आदेश दिया। यह १०,००० कदम निकली। समरकन्द निवासी कट्टर सुन्नी है और शरीअत का कठोरतापूर्वक पालन करते है। मुहम्मद साहब के समय से इस समय तक जितने मुसलमानो के प्रतिष्ठित आदमी समरकन्द मे हुये हैं उतने किसी अन्य स्थान पर नही हुये। .

समरकन्द के पूर्व मे फरगाना तथा काशगर, पश्चिम म बुखारा तथा ख्वारिज्म, उत्तर मे ताश-कीन्त एव शाहरुखिया—जिन्हें पुस्तकों मे शाश तथा बनाकत लिखा जाता है, और दक्षिण मे बल्ख तथा तिरमिज हैं। कोहिक नदी समरकन्द के उत्तर मे २ कुरोह[4] पर बहती है। नदी तथा नगर के मध्य म एक पहाडी है जो कोहिक कहलाती है। क्योकि नदी इस पहाडी को छूती हुई बहती है अत इसका नाम कोहिक पड गया।

समरकन्द तथा उसके आस पास तीमूर बेग एव उलूग बेग मीर्जा के बनवाये हुये भवन तथा उद्यान हैं

उलूग बेग मीर्जा के बनवाये हुये उत्तम भवनो मे एक वधशाला अर्थात् जीच[5] लिखने का यत्र है। इस वेधशाला मे तीन मजिलें हैं। इसके द्वारा मीर्जा ने कूरकानी ज़ीच तैयार किया था जो आजकल समस्त ससार म प्रचलित है। अन्य जीचो का बहुत कम प्रयोग होता है। इसके तैयार होने के पूर्व लोग ईल्खानी जीच का प्रयोग करते थे। इस ख्वाजा नसीर तूसी[6] ने हुलाकू खा के समय मे मरागा में तैयार किया था। हुलाकू खा, ईलखानी कहलाता था।

समस्त ससार में ७ ८ से अधिक वेधशालाओ का निर्माण नही हुआ है। मामून खलीफा[7] ने एक वेधशाला बनवाई थी जिसके द्वारा मामूनी जीच लिखा गया था। बतलीमूस[8] ने एक अन्य वेधशाला बनवाई। एक वेधशाला का हिन्दुस्तान मे उज्जैन तथा धार अथवा माल्वा प्रदेश मे जो माडू कहलाता है राजा विक्रमादित्य हिन्दू के समय मे निर्माण हुआ था। हिन्दुस्तान के हिन्दू इसी वेधशाला के जीच

१ सुरक्षित नगर।
२ मुसलमानों के तीसरे खलीफ़ा। वे ६४४ ई० से ६६५ ई० तक खलीफ़ा रहे।
३ मुहम्मद साहब के मित्र।
४ चार मील।
५ ज्योतिष की पुस्तक जिसमें ग्रहों की गति का विवरण एवं तत्सम्बधी अन्य बातें लिखी होती हैं।
६ ख्वाजा नसीरुद्दीन तूसी बहुत बड़े ज्योतिषी तथा दार्शनिक हुये हैं। उन्होंने बहुत से ग्रन्थों की रचना की जिसमें 'एखलाके नासिरी' बड़ी प्रसिद्ध है। उनकी मृत्यु २४ जून १२७४ ई० को हुई।
७ सातवाँ अब्बासी खलीफ़ा, जो ८१३ ई० से ८३३ ई० तक खलीफ़ा रहा।
८ टालमी।

का प्रयोग करते हैं। वे १५८४ वर्ष पूर्व तैयार हुये थे।[1] अन्य जीचा से तुलना करने पर इसमे कुछ दोष निकलते है।

समरकन्द वडे आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर नगर है। उसमे एक विशेपता, जोकि सम्भवत अन्य स्थाना पर विरले ही पाई जाती हो यह है कि विभिन्न व्यवसाय करने वाले एक ही बाजार मे नही बैठते अपितु प्रत्येक के पृथक बाजार है। यह एक वडी आश्चयजनक योजना है। यहा के नानबाई तथा बावरची वडे अच्छे होते है। ससार का सर्वोत्तम कागज़ यही बनता है।

समरकन्द मे बडी उत्तम विलायतें[2] तथा तूमान है। उसकी एक बहुत बडी विलायत जो समरकन्द के बराबर ही है, बुखारा है जो समरकन्द के पश्चिम म २५ यीगाच[3] पर स्थित है। बुखारा म कई तूमान है। यह वडा ही उत्तम कस्बा है। यहा फल अधिक सरया मे तथा अच्छ होते हैं। यहा के खरबूज वड ही उत्तम होते है। मावराउन्नहर मे यहा के खरबूज़ा के समान कही खरबूज़े नही होते। यद्यपि अक्शी का मीर तीमूरी खरबूज़ा बुखारा के समस्त खरबूज़ा मे मीठा तथा उत्तम होता है किन्तु फिर भी बुखारा मे कई प्रकार के वड उत्तम खरबूज बहुत वडी सरया मे हाते हैं। बुखारा के आलू प्रसिद्ध है। यहा के आलू के समान कही आलू नही होते। लोग इसका छिलका उतारकर इस सुखा लेते है और विभिन्न देशो मे उपहार स्वरूप ले जाते हैं। यह वडी उत्तम रचक औषधि है। बुखारा म पालतू पक्षी एव हस बहुत वडी सख्या म होते है। बुखारा की मदिरा उन मदिराओ की अपेक्षा जो मावराउन्नहर म बनती है वडी तेज होती है। जिन दिनो मैं समरकन्द म मदिरापान किया करता था तो मैं बुखारा की मदिरा पीता था।

इसके अतिरिक्त कीश की विलायत है जो समरकन्द के दक्षिण मे ९ यीगाच[4] की दूरी पर है। समरकन्द तथा कीश के मध्य म पहाडिया है जा ईतमाक दर्रा कहलाती है। यहा से भवना के लिये पत्थर निकाले जाते हैं। बहार मे यहा के उजाड स्थान दीवारें तथा कोठ तक हरे हो जाते हैं और उसे शहरे सब्ज (हरा नगर) कहते है। क्योकि तीमूर वेग का जन्म तथा पालन पोषण कीश नगर मे हुआ था अत उसने इस नगर को अपनी राजधानी बनाने का अत्यधिक प्रयत्न किया और कीश म भव्य भवना का निर्माण कराया। अपने दरबार के लिए एक भव्य मेहराबदार हाल का निर्माण कराया। इसमे उसके सेनापति वेग तथा दरबारी बेग उसकी दाईं एव बाईं ओर बैठते थे। जो लोग दरबार मे उपस्थित होते थे, उनके लिये उसने दो छोटे हाल बनवाये और जो लोग उसके दरबार म प्रार्थना करने आते थे उनके लिये उसने दरबार के भवन के चारो ओर छोटे छोटे कमरे बनवाये। इस प्रकार की भव्य मेहराबें ससार मे बहुत कम हागी। कहा जाता है कि यह किसरा[5] के मेहराब से उत्तम है। इसके अतिरिक्त तीमूर वेग ने कीश म एक मदरसे तथा मकबरे का निर्माण कराया। जहागीर मीर्ज़ा की कब्र तथा उसकी सतान के कुछ

१ अर्सकिन के अनुसार बाबर ने यह वर्णन ६३४ हि० (१५२७ ई०) में लिखा होगा। वह विक्रमी संवत् का १५८४वाँ वर्ष था।

२ प्रान्त।

३ १६२ मील।

४ ४८ मील ३ फ़रलाग।

५ ताक़े किसरा बग़दाद के नीचे १०५ फ़ीट ऊँची, ८४ फ़ीट बीच की दूरी तथा १५० फ़ीट गहराई। नूशीरवा किसरा ईरान का प्रसिद्ध बादशाह था जो ५३१ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ और ५७६ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अन्य लोगों की कब्र वही है। क्योंकि कीश समरकन्द के समान नगर बनने योग्य न थी अत तीमूर बेग ने समरकन्द को ही अपनी राजधानी बनाया।

इसके अतिरिक्त करशी नामक विलायत है जिसे नशफ तथा नखशब भी कहते हैं। करशी मुगूली नाम है। कूरखाना[1] को मुगूलो की भाषा मे करशी कहते हैं। सभवत यह नाम चिगीज खा के राज्य पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त पडा होगा। करशी म जल की बडी कमी है। वहाँ की बहार बडी ही उत्तम होती है और वहाँ के अनाज तथा खरबूजे बडे अच्छे होते हैं। यह समरकन्द के दक्षिण म कुछ कुछ पश्चिम की ओर १८ यीगाच[2] पर है। वहाँ बागरीकरा के समान एक छोटा सा पक्षी होता है जिसे कीश यूकीरूग कहते हैं। क्योंकि करशी की विलायत मे वह इतनी अधिक सख्या म होता है अत उस क्षेत्र म उसे करशी पक्षी कहते है।

इसके अतिरिक्त कोहज़र तथा करमीना की विलायतें है जो बुखारा तथा समरकन्द के मध्य म स्थित है। उसके अतिरिक्त कराकूल की विलायत है जो बुखारा से उत्तर-पश्चिम म ७ यीगाच[3] पर नदी की अन्तिम सीमा पर है

समरकन्द का राज्य तीमूर बेग ने अपने ज्येष्ठ पुत्र जहागीर मीर्ज़ा[4] को प्रदान कर दिया था। जहागीर मीर्ज़ा की मृत्यु[5] के उपरान्त उसे उन्होने उसके ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद सुल्तान जहागीर को दे दिया। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त यह तीमूर बेग के लघु पुत्र शाहरुख मीर्ज़ा को प्राप्त हो गया। शाहरुख मीर्ज़ा ने मावराउन्नहर की समस्त विलायतें अपने ज्येष्ठ पुत्र उलूग बेग मीर्ज़ा को प्रदान कर दी थी।[6] उलूग बेग मीर्ज़ा से उसके पुत्र अब्दुल लतीफ मीर्ज़ा ने इस ५ दिन के नश्वर ससार के लिए इतने बुद्धिमान् पिता की हत्या करके ले लिया।[7]

अब्दुल लतीफ मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त[8] शाहरुख मीर्ज़ा का पौत्र अब्दुल्लाह पुत्र इबराहीम मीर्ज़ा सिहासनारूढ हुआ। वह इबराहीम सुल्तान मीर्ज़ा का पुत्र था। उसने डढ वर्ष और अधिक से अधिक दो वर्ष तक राज्य किया। उसके पश्चात् सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा सिहासनारूढ हुआ।[9] उसने अपने जीवनकाल म उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान अहमद मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त[10] भी सुल्तान अहमद मीर्ज़ा वहा राज्य करता रहा। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त[11] सुल्तान महमूद मीर्ज़ा सिहासनारूढ हुआ। सुल्तान महमूद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त[12]

१ 'कूर खाना' अथवा 'क़ूर ख़ाना' महल को कहते हैं।
२ जाम से होकर लगभग ६४ मील ६½ फ़रलाग।
३ लगभग ३४ मील।
४ ७७६ हि० (१३७५ ई०) म।
५ ८०१ हि० (१४०३ ई०) में।
६ ८५१ हि० (१४४७ ई०)।
७ ८५३ हि० (१४४६ ई०)।
८ २२ जमादि-उल-अव्वल ८५४ हि० (२२ जून १४५० ई०)।
६ ८५५ हि० (१४५१ ई०)।
१० ८७३ हि० (१४६६ ई०)।
११ ८६६ हि० (१४६४ ई०)।
१२ ६०० हि० (१४६५ ई०)।

बाईसुगर मीर्ज़ा सिहासनारूढ हुआ। तरखानियो के विद्रोह[1] के समय बाईसुगर मीर्ज़ा को कुछ दिनो के लिये बन्दी बना लिया गया था और उसके छोटे भाई सुल्तान अली मीर्ज़ा को सिंहासनारूढ कर दिया गया था किन्तु बाद में बाईसुगर मीर्ज़ा ही जैसा कि उल्लेख हो चुका है सिंहासनारूढ हो गया। बाईसुगर मीर्ज़ा से मैंने समरकन्द प्राप्त किया।[2] इसके इतिहास का अधिक विस्तार से बाद मे उल्लेख किया जायेगा।

बाबर का समरकन्द पर राज्य

समरकन्द के सिंहासन पर आरूढ होते ही मैंने समरकन्द के बेगो के प्रति उसी प्रकार कृपा दृष्टि प्रदर्शित की जिस प्रकार उनके प्रति पूर्व मे की जाती थी। जो बेग हमारे साथ थ मैंने उनकी श्रेणी के अनुसार उनको पद तथा आश्रय प्रदान किया। सुल्तान अहमद तम्बल के विषय मे अत्यधिक रियायत की। वह घर के दस्ते के बेगो मे था। मैंने उसे बडे बेगो की श्रेणी तक पहुचा दिया।

समरकन्द पर हमने ७ मास के अवरोध के उपरान्त बडी कठिनाई से अधिकार प्राप्त किया था। जब हम किले में प्रविष्ट हुए तो हमारे आदमियो को कुछ न कुछ प्राप्त हुआ। समरकन्द के अतिरिक्त समस्त विलायतें या तो मुझे और या सुल्तान अली मीर्ज़ा को इसके पूर्व प्राप्त हो गई थी किन्तु उन्हे किसी प्रकार नष्ट भ्रष्ट न किया गया था। जिस विलायत पर इतने समय से आक्रमण हो रहे थे उसमे से प्राप्त ही क्या हो सकता था। सेना वालो को जो कुछ प्राप्त हुआ था वह समाप्त हो गया। जिस समय हम समरकन्द मे प्रविष्ट हुये तो वह इस दुर्दशा को प्राप्त हो चुका था कि उसे बीज तथा तकावी की आवश्यकता थी। वहा से किसी को कुछ मिल ही क्या सकता था। इस कारण सेना वालो को अत्यधिक कष्ट उठाने पडे। हम भी किसी को कुछ न प्रदान कर सके थे। वे अपने घरो को जाने की इच्छा करने लगे और एक-एक दो-दो करके भागने लगे। सर्व प्रथम ब्यान कुली का पुत्र खान कुली भागा। तदुपरान्त इबराहीम बेगचीक मुग़ल, सब के सब भाग गये। तदुपरान्त सुल्तान अहमद तम्बल भी भाग गया। ऊज़ून हसन अपने आपको ख्वाजा काज़ी का बडा हितैषी एव निष्ठावान् मित्र समझता था। इस प्रकार मे लोगो के भागने को रोकने के लिये हमने ख्वाजा को उसके पास भेजा ताकि वे मिल कर कुछ भागने वालो को दण्ड दें और कुछ को हमारे पास वापस भेज दे किन्तु इस उपद्रव तथा जो लोग भाग कर चले गये थे उनका नेता ऊज़ून हसन नमकहराम ही था। सुल्तान अहमद तम्बल के चले जाने के उपरान्त शेष लोग खुल्लमखुल्ला उपद्रव की बाते करने लगे।

बाबर से जहागीर मीर्ज़ा के लिए अन्दिजान तथा अक्शी की माग

इन वर्षों मे जब कि समरकन्द की विजय हेतु मैं अपनी सेना लिये बाहर पडा रहा तो सुल्तान महमूद खा ने मुझे किसी प्रकार की कोई सहायता न प्रदान की थी किन्तु समरकन्द की विजय के उपरान्त वह अन्दिजान की इच्छा करने लगा। इसके अतिरिक्त ऊज़ून हसन तथा सुल्तान अहमद तम्बल उसी समय जब हमारे सैनिक एव मुग़ल भाग कर अक्शी तथा अन्दिजान पहुचे इन विलायतो को जहागीर मीर्ज़ा के लिये मागने लगे। अनेक कारणो से यह सभव न था कि उन लोगो को वह विलायतें प्रदान कर दी जायें। एक कारण यह था कि ऐसे अवसर पर जब कि हमारे आदमी भाग कर उनके पास

१ ९०१ हि० (१४९६ ई०)।
२ ९०३ हि० (१४९७ ई०)।

पहुंच गये थे उन विलायतो की माग आदेश के समान थी। यदि यह बात पहले कही गई होती तो इस समस्या का किसी न किसी प्रकार समाधान कर दिया जाता किन्तु आदेश को कौन सहन कर सकता है? इस समय जब कि मुगुल एव अन्दिजान की सेना वाले तथा हमारे घर के दस्ते अन्दिजान भाग गये थे तो समरकन्द में मेरे पास केवल १००० आदमी, जिनमें छोटे बडे बेग सम्मिलित थे, रह गये थे। जब ऊज़ून हसन तथा सुल्तान अहमद तम्बल जो कुछ चाहते थे, उसे प्राप्त न कर सके तो उन लोगो ने उन कायर भागने वालो[1] को सगठित किया। भागने वाले अपने अपराध के दड के कारण मुझसे इतने अधिक भयभीत थे कि वे इस विद्रोह को दैवी वरदान समझने लगे। उन्होंने खुल्लम खुल्ला विद्रोह कर दिया और अखसी से अपनी सेना लेकर अन्दिजान पर चढाई की। तूलून ख्वाजा बारीन का बडा ही वीर, पराक्रमी एव साहसी जवान था, मेरे पिता उमर शेख मीर्ज़ा ने उसे आश्रय प्रदान किया था और मैं भी उसे आश्रय प्रदान कर रहा था। मैंने स्वय उसे उन्नति दे कर बेग बना दिया था। वास्तव में वह आश्रय का पात्र था। उसकी वीरता एव उसके साहस को देख कर आश्चर्य होता था। जिस समय समरकन्द से मुगुल कबीले भागने लगे तो मैंने तूलून ख्वाजा को इस आशय से उनके पास भेजा कि वह उन लोगो को परामर्श देकर उनके हृदय से शका का अत करा दे और वे भय के कारण छिन्न भिन्न न हो जायें। उन दोनो नमकहरामो तथा उपद्रवियो ने कबीलो को ऐसा मार्ग-भ्रष्ट कर दिया था कि उन पर प्रोत्साहन, वचन, परामर्श तथा डाट फटकार का कोई भी प्रभाव न हुआ। तूलून ख्वाजा ईकी-सू-आरासी के मार्ग से जो खातीक ऊरचीनी के नाम से प्रसिद्ध है रवाना हुआ था। ऊज़ून हसन ने सेना का एक दल तूलून ख्वाजा के विरुद्ध भेजा जिसने पहुचते ही उसे असावधान पाकर उसकी हत्या कर दी। इसके उपरान्त वे जहागीर मीर्ज़ा को लेकर अन्दिजान के अवरोध हेतु पहुचे।

अन्दिजान का बाबर के हाथ से निकलना

जिस समय मैंने अपनी सेना लेकर समरकन्द पर चढाई की तो अन्दिजान मे मैं ऊज़ून हसन तथा अली दोस्त तगाई को छोड गया था।[2] ख्वाजा काज़ी वहा बाद मे पहुचा। वहा समरकन्द से आये हुए मेरे बहुत से वीर थे। ख्वाजा काज़ी ने अवरोध के समय मेरे प्रति निष्ठा के कारण अपनी १८ हज़ार भेंडे उन लोगो को, जोकि किले मे थे तथा उन लोगो के परिवार को जोकि अब भी हमारे साथ थे, बाट दी। अवरोध के समय मेरी माताओं[3] तथा ख्वाजा काज़ी के पास से लगातार इस आशय के पत्र आते रहते थे कि, "*हम लोग इस प्रकार घिरे हैं और यदि आप आकर हमारी सहायता न करेंगे तो सब कार्य बिगड* जायेंगे। समरकन्द को अन्दिजान की शक्ति से ले लिया गया था। यदि अन्दिजान अधिकार मे रहेगा तो ईश्वर की कृपा से समरकन्द पुन मिल जायगा।" इसी आशय के पत्र लगातार प्राप्त हुए।

बाबर का रुग्ण होना

उन दिनो एक बार रुग्ण हो कर मैं स्वस्थ हुआ था। अपनी रुग्णावस्था मे मै अपनी भली भाति देख भाल न कर सका। चिन्ता एव परेशानी के कारण मैं इतनी बुरी तरह बीमार हो गया कि चार दिन तक मेरी जिह्वा बन्द रही। मेरे मुह मे रुई से पानी टपकाया जाता था। छोटे-बडे बेग तथा जवान मेरे

[1] मुगुलों।
[2] रमजान ६०२ हि० (मई १४६७ ई०)।
[3] कुतलुक निगार खानम ईसान दौलत बेगम तथा सम्भवत: शाह सुल्तान बेगम।

जीवन से निराश होकर अपने विषय मे चिन्ता करने लगे। जब मेरी यह दशा थी तो वे लोगों ने भूल से मुझे ऊज़ून हसन के एक सेवक को दिखला दिया जो उसकी ओर से दूत बन कर आया था, और संधि के लिये बडी कठोर शर्तें लाया था। तदुपरान्त उन लोगो ने उसे विदा कर दिया। ४-५ दिन उपरान्त मैं कुछ स्वस्थ हो गया किन्तु मैं बोल न सकता था। जब मेरी माता और मेरी माता की माता ईसान दौलत बेगम, मेरे गुरू तथा पीर ख्वाजा मौलाना काज़ी के इस प्रकार के चिन्ताजनक एव आग्रह पूर्ण पत्र आये तो मैं कैसे प्रभावित न होता।

रजब मास (फरवरी-मार्च) मे एक शनिवार को हम समरकन्द से अन्दिजान के लिये रवाना हुये। मैं वहा १०० दिन तक राज्य कर चुका था। दूसरे शनिवार को हम खुजद पहुचे। उसी दिन अन्दिजान से एक व्यक्ति यह समाचार लाया कि उसी शनिवार से ७ दिन पूर्व जब कि हम समरकन्द से रवाना हुए थे, अली दोस्त तगाई ने अन्दिजान के किले को विरोधियों को समर्पित कर दिया। इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है ऊज़ून हसन के सेवक ने, जो मुझे देखने के उपरान्त अन्दिजान वापस चला गया था, वहा जाकर कहा कि "बादशाह की जिह्वा बन्द हो चुकी है और रुई से जल टपकाया जा रहा है।" उसने अली दोस्त तगाई से भी शपथ लेकर यही बात कह दी। अली दोस्त खाकान द्वार मे था। इस बात से वह नि सहाय हो गया और उसने शत्रुओं को बुलवा कर उनसे प्रतिज्ञा कराई और किला समर्पित कर दिया। किले मे खाद्य सामग्री तथा योद्धाओ की कमी न थी। उस विश्वासघाती नमकहराम कायर ने उस समाचार की आड लेकर किला समर्पित कर दिया।

अन्दिजान पर अधिकार प्राप्त कर लेने के उपरान्त जब शत्रुओं ने मेरे खुजद पहुचने के समाचार सुने तो ख्वाजा मौलाना काज़ी को अपमानित करके किले के द्वार पर फासी दे दी। वह ख्वाजा मौलाना काज़ी के नाम से प्रसिद्ध था किन्तु उसका नाम अब्दुल्लाह था। उसका वश पिता की ओर से शेख बुरहानुद्दीन अली कलीच तक और माता की ओर से सुल्तानुल ईलीक मीर्ज़ा तक पहुचता था। फरगाना की विलायत मे इस वश के लोग पीर, शेखुल इस्लाम तथा काज़ी होते आये है। वह हज़रत उबैदुल्लाह एहरारी का मुरीद था और उसने उनसे शिक्षा-दीक्षा पाई थी। इस बात मे मुझे कोई सदेह नही है कि ख्वाजा मौलाना काजी वली[1] थे। उनकी विलायत[2] के सम्बन्ध मे इस बात से बढ कर कौन सी अन्य बात हो सकती है कि उनके हत्यारो का अल्प समय ही मे कोई चिह्न शेष न रहा। ख्वाजा मौलाना काज़ी बडे विचित्र व्यक्ति थे और किसी बात से भय न करते थे। मैंने उनके समान पराक्रमी कोई अन्य व्यक्ति नही देखा। यह भी वली होने का एक प्रमाण है। अन्य वीरो मे थोडी बहुत चिन्ता एव भय अवश्य होता है किन्तु ख्वाजा मौलाना काज़ी में किसी प्रकार की कोई चिन्ता न थी। ख्वाजा की हत्या के उपरान्त जो लोग *ख्वाजा से सम्बन्धित थे उदाहरणार्थ सेवक, कबीले वाले तथा सहायक सभी बन्दी बना कर नष्ट कर* दिये गये। अन्दिजान के लिए हमने समरकन्द को खो दिया और अब अन्दिजान भी हाथ से निकल गया। यह इस लोकोक्ति के अनुसार हुआ कि 'असावधानी मे इस स्थान को छोडा और अब वहा का भी न रहा।" मेरे लिये यह अवसर बडा ही कठिनाई का तथा कष्टदायक था। जब से मैं बादशाह हुआ था उस समय से लेकर अब तक मैं इस प्रकार अपने सेवको तथा राज्य से वचित न हुआ था। जब से मुझे बुद्धि प्राप्त हुई उस समय से लेकर अब तक मैंने इस प्रकार का कोई कष्ट अथवा दुख सहन न किया था।

१ प्रतिष्ठित संत।
२ प्रतिष्ठित संत होने।

बाबर खुजन्द में

हमारे खुजन्द पहुचने पर कुछ विश्वासघातियो ने जो बाह्य रूप से अपने आपको हमारा हितैषी प्रदर्शित करते थे और जो खलीफा को हमारे फाटक पर न देख सकते थे, मुहम्मद हुसेन मीर्जा दूगलात तथा अन्य लोगों को इस प्रकार प्रभावित किया कि उसे ताशकीन्त की ओर निर्वासित कर दिया गया। कासिम बेग कूचीन को पूर्व ही मे खान से अन्दिजान के विरुद्ध प्रस्थान करने का आग्रह करने के लिये भेज दिया था। खान जो मेरा मामा था सेना एकत्र करके आहनगरान घाटी के मार्ग से कींदीरलीक दर्रे के नीचे पहुचा। मै वहा खुजद से आया और अपने खान दादा के दर्शन किये। तदुपरान्त हमने दर्रे का पार किया और अकसी की ओर ठहरे। शत्रु भी अपनी सेना एकत्र करके अकसी पहुचे। उसी समय पाप नामक स्थान वालो ने सूचना भेजी कि उन्होंने किले को दृढ कर लिया है। किन्तु खान के अग्रसर होने की योजना मे कुछ बातें स्पष्ट न थी अत शत्रुओ ने उस पर आक्रमण करके उस पर अधिकार जमा लिया। यद्यपि खान मे अनेको उत्तम गुण थे किन्तु सिपाहिया तथा सेनापतियो के गुण से वह पूर्णत शून्य था। जिस समय काय इस सीमा तक पहुच गया था कि यदि वह एक पडाव और आगे बढ जाता तो सम्भवत उस प्रदेश पर बिना युद्ध के अधिकार प्राप्त हो जाता, वह शत्रुओं की धूर्ततापूर्ण बातो से मार्ग भ्रष्ट हो गया। सधि की वार्ता करने लगा। उसने ख्वाजा अबुल मकारिम तथा अपने द्वार की रक्षा करने वाला के सरदार तम्बल बेग के बडे भाई बेग तिल्बा को राजदूत बना कर भेजा। उन लोगा ने[1] अपनी मुक्ति हेतु इस प्रकार झूठी-सच्ची बातें कहीं और खान तथा उन लोगों को जो कि मध्यस्थ थे उपहार एव घूस देकर तथा चिकनी चुपडी बातें करके इस प्रकार प्रभावित किया कि खान लौट गया।

जो अमीर, सरदार तथा वीर मेरे साथ थे उनमे से अधिकाश के परिवार वाले अन्दिजान म थ। जब वे अन्दिजान पर अधिकार प्राप्त करने से निराश हो गये तो छोटे बडे अमीर तथा युवक लगभग ७०० या ८०० की सख्या मे मुझसे पृथक् हो गये। बेगो मे अली दरवेश बेग अली मजीद कूचीन, मुहम्मद बाकिर बेग, शेख अब्दुल्लाह ईशक आका, मीरीम लागरी थे। जो लोग मेर साथ रह गये और जिन्होने मेरा साथ देने के लिये अपनी मातृभूमि से पृथक् होना तथा कष्ट भोगना स्वीकार किया उनम अच्छे बुरे मिला कर कुल २०० और ३०० के बीच मे रहे होगे। बेगो में कासिम कूचीन बेग, वैस लागरी बेग इबराहीम साए मीगली बेग, शेरीम तगाई, सैयिदी करा बेग, मेरे घर के सरदारा मे मीर शाह कूचीन, सैयिद कासिम जलाएर ईशक आकाई, कासिम उजब, अली दोस्त तगाई का पुत्र मुहम्मद दोस्त, मुहम्मद अली मुबश्शिर, खुदाई बीरदी तूगची मुगूल, यारीक तगाई, बाबा अली का पुत्र बाबा कुली पीर वैस, शेख वैस, यार अली बलाल, कासिम मीर आखूर तथा हैदर रिकाबदार थे।

मै बडी कठिनाई मे था। मैं बिना खूब रोये अपने आपको रोक न सकता था। मैं खुजन्द वापस चला गया। वहा शत्रुओं ने मेरी माता, मेरी दादी तथा कुछ अन्य लोगो के परिवार को, जो मेरे साथ थे, मेरे पास खुजद भेज दिया। मैंने रमजान मास (अप्रैल-मई) खुजद मे व्यतीत किया। तदुपरान्त मैंने एक आदमी सुल्तान महमूद खा के पास इस आशय से भेजा कि वह उससे समरकन्द पर आक्रमण हेतु सहायता का आग्रह करे। उसने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद खानिका एव (उसके सरक्षक) अहमद बेग को ४-५ ००० आदमियों सहित मेरी सहायतार्थ नियुक्त किया और स्वय औरातीपा तक

१ हसन तथा तम्बल।

पहुचा। उस स्थान पर मैं उससे भेंट करके यार ईलाक के मार्ग से रवाना हुआ। सुल्तान मुहम्मद तथा अहमद बेग मेरे पूर्व अन्य मार्ग से यार ईलाक पहुच चुके थे। मैं बूरका ईलाक से सगरज पहुचा जो कि मुख्य नगर है और यार ईलाक के दारोगा[1] की राजधानी है किन्तु मेरे पहुचने के पूर्व सुल्तान मुहम्मद तथा अहमद बेग, शैबान खां के आक्रमण तथा शीराज़ एव उसके समीप के स्थानो के विध्वस होने के समाचार पाकर शीघ्रातिशीघ्र लौट गये थे। अब मेरे लिये कोई आशा न रह गई थी। मुझे भी विवश होकर खुजन्द वापस होना पडा।

क्योकि मुझे राज्य पर अधिकार करने तथा बादशाह बनने की आकाक्षा थी अत मैं एक या दो बार की असफलता से निराश होकर बैठा न रह सकता था। अन्दिजान को विजय करने के विचार से सहायता की याचना हेतु मैं खान के पास ताशकीन्त पहुचा। इसके अतिरिक्त मैंने ७-८ वर्षों से शाह बेगम[2] तथा अन्य सम्बन्धियो से भेंट न की थी। इस बहाने से मैंने उनसे भी भेंट करली। कुछ दिन उपरान्त खान ने सैयिद मुहम्मद हुसेन दूगलात, अयूब बेगचीक तथा जान हसन बारीन को ७-८ हज़ार आदमियो सहित सहायतार्थ नियुक्त किया। यह सहायता लेकर मैं खुजद पहुचा और वहा पर बिना ठहरे ही शीघ्रातिशीघ्र बढता हुआ कन्दे बादाम को बायें हाथ पर छोडता रातो रात नसूख पहुच कर किले को सीढिया लगा कर अधिकार मे कर लिया। यह खुजन्द से ९-१० यीगाच और कन्दे बादाम से ३ यीगाच[3] है। उस समय खरबूजे की फसल थी। नसूख मे एक प्रकार का खरबूजा होता है जो इस्माईल शेखी कहलाता है। उसके ऊपर का छिलका पीला होता है। उसका बीज लगभग सेब के बीज के बराबर होता है और गूदा चार अगुल मोटा होता है। वह बडा ही स्वादिष्ट होता है। इस प्रकार के खरबूजे उस क्षेत्र मे नही पाये जाते। दूसरे दिन मुग़ल बेगो ने निवेदन किया कि, "हमारे आदमियो की सख्या बडी थोडी है अत इस किले पर अधिकार करके हम क्या कर लेंगे?" वास्तव मे उस समय वही बात उचित थी। वहा ठहर कर किले को दृढ करने से कोई लाभ न था अत हम लोग पुन खुजद लौट गये।

खुसरो शाह तथा बाईसुग़र मीर्ज़ा का हिसार पर अधिकार जमाना, सुल्तान मसऊद का शरण हेतु सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास पहुचना, खुसरो शाह द्वारा बल्ख का अवरोध। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का जुन्नून बेग के विरुद्ध प्रस्थान, सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पुत्रो का विद्रोह, सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा का उसके दरबार से प्रस्थान, खुसरो शाह का अंधा कराना।[4]

१ हाकिम।
२ बाबर की सौतेली दादी, यूनुस खां की विधवा और अहमद तथा महमूद चग़ताई की माता।
३ १२ से १८ मील।
४ इन घटनाओं से सम्बन्धित वर्णन का अनुवाद नहीं किया गया है।

९०४ हि०

(१९ अगस्त १४९८ ई० से ८ अगस्त १४९९ ई०)

हम खुजन्द से दो बार निकले थे, एक बार अन्दिजान के लिये और एक बार समरकन्द के लिए और दोनो बार हमे, इस कारण कि हमारे भाग्य न खुले थे, वापस होना पडा। खुजन्द एक बडा साधारण स्थान है। २००-३०० आदमियों तक के साथ तो वहा बडे कष्ट से जीवन निर्वाह हो सकता है तो फिर एक महत्वाकाक्षी का वहा क्या भला हो सकता था ?

बाबर का जाडे के लिये पशागर प्राप्त करना

क्योकि हम समरकन्द वापस जाना चाहते थे अत हमने मुहम्मद हुसेन कूरकान दूगलात के पास औरातीपा मे यह आग्रह करने के लिये आदमी भेजे कि वह शीत ऋतु के लिये हमें पशागर प्रदान कर दे ताकि हम वहा उस समय तक जब तक समरकन्द पर आक्रमण करना सम्भव हो ठहर सके। उसकी अनुमति पा कर मैं खुजन्द से पशागर के लिये रवाना हो गया। पशागर यार ईलाक का एक ग्राम है। वह हज़रत ख्वाजा[1] के अधिकार मे था किन्तु हाल की उथल-पुथल मे वह मुहम्मद हुसेन मीर्ज़ा के अधिकार मे आ गया।

जब हम ज़मीन पहुचे तो मुझे ज्वर चढ आया। ज्वर के बावजूद ज़मीन से प्रस्थान करके शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए पर्वत के मार्ग को पार करके हम रबाते ख्वाजा[2] पहुचे। रबात ख्वाजा शादवार के तूमान के दारोगा[3] की राजधानी है। हमें आशा थी कि हम वहा पहुच कर सीढिया लगा कर किले पर चढ जायेंगे और किसी को सूचना न हो पायेगी। इस प्रकार हम किले पर अधिकार जमा लेंगे। इस आशय से हम वहा प्रात काल पहुचे किन्तु हमने वहा के आदमियो को चौकन्ना पाया। वहा से मुड कर हम बिना रुके हुए पशागर की ओर रवाना हुए। ज्वर के बावजूद मैंने १४-१५ यीगाच[4] की यात्रा की। पशागर मे कुछ दिन ठहर कर हमने इबराहीम सारू वैस लागरी, शेरीम तगाई तथा कुछ घर के जवानो एव वीरो को यार ईलाक के किले पर आक्रमण करने तथा उन्हे अधिकार मे करने के लिए नियुक्त किया। उन दिनो म यार ईलाक सैयिद यूसुफ बेग के अधिकार मे था। हमारे समरकन्द से प्रस्थान करने के समय वह वही रह गया था। सुल्तान अली मीर्ज़ा ने उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान किया। सैयिद यूसुफ बेग ने किले की व्यवस्था हेतु अपने छोटे भाई के पुत्र अहमद यूसुफ को नियुक्त किया था। अहमद यूसुफ आजकल सियालकोट का हाकिम है। उन दिनो वह उसी किले में था। हमारे बेगो तथा वीरो ने उस शीत ऋतु मे चक्कर लगा कर कुछ किलो पर सधि तथा युक्ति द्वारा और कुछ किलो पर युद्ध द्वारा अधिकार जमा लिया।

१ ख्वाजा उबैदुल्लाह एह्रार।
२ समरकन्द के पश्चिम में।
३ हाकिम।
४ ७० ८० मील।

उस विलायत मे मुगुलो तथा ऊजबेको के कारण कोई ऐसा ग्राम नही है जहा प्रतिरक्षा या प्रबध न हो। उन्ही दिनो मे हमारे कारण सुल्तान अली मीर्जा ने सैयिद यूसुफ बेग तथा उसके भतीजे से शकित होकर दोनो को खुरासान भेज दिया।

समस्त शीत ऋतु इसी रस्साकशी मे व्यतीत हो गई। ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ मे सुल्तान अली मीर्जा ने ख्वाजा यहया को मुझसे सधि की वार्ता करने के लिए भेजा और वह स्वय अपनी सेना[1] के आग्रह पर शीराज तथा कबूद की ओर रवाना हुआ। मेरे सैनिको की सख्या २०० से अधिक और तीन सौ से कम रही होगी, और मैं चारो ओर से शत्रुओ से घिरा था। भाग्य मेरा साथ न दे रहा था। मैंने कुछ समय तक अन्दिजान के चक्कर लगाये, समरकन्द पर अधिकार जमाया किन्तु कही कोई सफलता न मिली। मुझे सधि करके पशागर से लौट जाने पर विवश होना पडा।

खुजन्द एक बडा साधारण सा स्थान है। एक बेग का भी समय वहा बडी कठिनाई से व्यतीत होता होगा। वहा हम हमारे परिवार वालो तथा सहायको को लगभग आधे वर्ष तक ठहरना पडा। उन दिनो वहा के मुसलमानो ने हमारे लिये यथासभव व्यय करने तथा सेवा करने म कोई कमी न की। अब हम किस मुह से खुजन्द की ओर प्रस्थान करते और यदि खुजन्द पहुच भी जाते तो वहा जाने से लाभ ही क्या होता? न हमारा कोई ठिकाना था और न हम कही ठहर सकते थे। इसी असमजस मे हम औरातीपा के दक्षिण की ग्रीष्म ऋतु की चरागाह मे पहुचे। कई दिन तक वहा हम परेशानी म पडे रहे। हमारी समझ मे न आता था कि कहाँ जायें और कहाँ ठहरें। हम बडी दुर्दशा को प्राप्त हो चुके थे। उन्ही दिनो मे एक दिन ख्वाजा अब्दुल मकारिम जोकि अपनी मातृ भूमि से मेरे ही समान निर्वासित कर दिया गया था और परेशान था, मुझसे भेंट करने आया। मैंने उससे अपने ठहरने तथा प्रस्थान करने के स्थान एव क्या करने और क्या न करने के सबन्ध में परामर्श किया। वह बडा प्रभावित हुआ और उसने मेरी दशा पर शोक प्रकट करते हुये मेरे लिए फातेहा पढा[2] और चला गया। मैं भी बडा प्रभावित हुआ और उसके विषय मे चिन्तित रहा।

बाबर द्वारा मर्गीनान पर अधिकार

उसी दिन मध्याह्नोपरान्त की नमाज के समय एक सवार घाटी की तलहटी मे दृष्टिगत हुआ। वह सम्भवत अली दोस्त तगाई का सेवक था। उसका नाम यूलचूक था। उसे यह लिखित सदेश देकर भेजा गया था कि, 'यद्यपि इससे पूर्व मैंने बडे बडे अपराध किये है किन्तु यदि कृपापूर्वक आप मेरे पास आ जायेंगे तो मैं आपको मर्गीनान देकर एव निष्ठापूर्वक सेवा करके अपने पापो का प्रायश्चित कर सकूगा।'

इस हैरानी तथा परेशानी मे यह समाचार पाते ही हम नि सकोच तत्काल जब कि सूर्य अस्त हो रहा था मर्गीनान की ओर इस प्रकार चल खडे हुये कि मानो हमे वहा अचानक छापा मारना हो। वहा से मर्गीनान लगभग २४ अथवा २५ यीगाच[3] पर होगा। रात भर और प्रात काल से मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय तक कही भी विश्राम न किया गया और निरन्तर यात्रा करते हुए मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय तग आब नामक स्थान में जो खुजद के अधीनस्थ एक ग्राम है पडाव किया गया। घोडों को वहा

१ समरकन्द की सेना।
२ शुभकामना हेतु कुरान के प्रथम सूर का पाठ।
३ लगभग ४५ मील।

ठण्डा करके दाना दिया गया। सधि-प्रकाश के नक्कारे के बजने के समय हम लोगो ने प्रस्थान कर दिया। रात भर तथा प्रात काल तक और दूसरे दिन सूर्य अस्त होने तक एव दूसरे दिन रात भर तथा प्रात काल तक यात्रा करके हम मर्गीनान से एक यागीच पर पहुच गये। यहा वैस बेग तथा कुछ अन्य लोगो ने चिन्ता प्रकट करते हुये निवेदन किया कि "अली दोस्त बड़ा दुष्ट है। हमारे और उसके दूत तो एक दूसरे के पास आये गये हैं और हमने एक दूसरे से कोई शर्त नही की है। ऐसी अवस्था मे किस भरोसे पर उसके पास जा रहे हैं?" वास्तव मे उनकी चिन्ता ठीक ही थी। कुछ देर ठहर कर हमने आपस म परामर्श किया। अन्त मे यह निश्चय हुआ कि "यद्यपि यह चिन्ता ठीक ही थी किन्तु इसे पहले करना चाहिये था। इस समय वहा हम ३ रात और दो दिन की यात्रा के उपरान्त बिना कही ठहरे अथवा विश्राम किये हुए पहुचे है। किसी मनुष्य अथवा घोडे मे अब कोई दम नही रह गया है। अब जिस स्थान पर हम पहुच चुके हैं वहा से कैसे लौट सकते हैं। और यदि लौटे भी तो कहा जायें? अब जब हम यहा तक पहुच चुके हैं तो फिर आगे प्रस्थान करना ही चाहिये। ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी नही हो सकता।" यह निश्चय करके हम लोग ईश्वर पर भरोसा करके चल खडे हुये और कोई अधिक बात न की।

सुन्नत की नमाज़[1] के समय हम मर्गीनान के किले मे पहुचे गये। अली दोस्त ने बन्द द्वार के पीछे से शर्तें प्रस्तुत करने को कहा। जब वे स्वीकार हो गईं तो उसने किले के द्वार खोल दिये। उसने दो फाटको के मध्य मे मेरे प्रति अभिवादन किया। तदुपरान्त हमने उससे भेट की और वह हमे किले के भीतर एक उपयुक्त भवन मे ले गया। हमारे साथ छोटे बडे मिला कर २४० आदमी थे।

अन्दिजान की दशा

ऊज़ून हसन तथा तम्बल बडा अत्याचार एव कठोरता प्रदर्शित कर रहे थे। उस प्रदेश के सभी कबीले मेरी इच्छा करने लगे थे। मर्गीनान पहुचने के दो-तीन दिन उपरान्त मैंने कासिम बेग के साथ पशागर के १०० से अधिक आदमी तथा मर्गीनान के नये सैनिक एव अली दोस्त के सहायक इस आशय से भेजे कि वे किसी न किसी प्रकार बहला फुसला कर अन्दिजान के दक्षिण उदाहरणार्थ अशपारी, तूरूकशार, चीकराक और आस पास के पहाडियो को मेरी ओर मिलाने का प्रयत्न कर। इबराहीम सारू, वैस लागरी तथा सैयिदी करा को आदेश दिया गया कि वे खुजन्द नदी पार करके जायें और जिस प्रकार सम्भव हो उस ओर के आदमियो को मेरी ओर मिलाने का प्रयत्न करें।

ऊज़ून हसन का आक्रमण

ऊज़ून हसन तथा तम्बल ने जो सैनिक एव मुग़ूल उन्हें मिल सके, उन्हे एकत्र किया और जो लोग अन्दिजान तथा अक्सी की सेनाओ मे सेवा करने के आदी थे, उन्हें बुलवाया। तदुपरान्त हमारे पहुचने के कुछ दिन उपरान्त जहागीर मीर्ज़ा को अपने साथ लेकर, मर्गीनान से २ मील पूर्व की ओर सपान नामक ग्राम मे पहुचे। वहा वे मर्गीनान के अवरोध के उद्देश्य से उतर पडे। एक-दो दिन उपरान्त वे आक्रमण करने के लिये निकट पहुच गये। यद्यपि कासिम बेग, इबराहीम सारू तथा वैस लागरी सरीखे सेनापतियो के चले जाने के उपरान्त मेरे साथ बडे थोडे से आदमी रह गये थ किन्तु उनको युद्ध हेतु तैयार किया गया और पक्तियो को सुव्यवस्थित करके शत्रुओ पर छापा मार कर उन्हें आगे बढने से रोक दिया

१ सूर्योदय के उपरान्त की नमाज जो अनिवार्य नहीं है।

गया। उस दिन खलील नामक दस्तार पेच[1] चुहरा[2] ने बड़ी वीरता से युद्ध किया। यद्यपि वे पहुच गये थे किन्तु कोई सफलता न प्राप्त कर सके। एक दो-दिन तक वे किले के समीप न पहुच सके।

कासिम वेग एवं इवराहीम सारू इत्यादि की सफलता

जब कासिम वेग अन्दिजान के दक्षिण की पहाड़ियो मे पहुँचा तो समस्त अशपारी, तूरुकशार तथा चीकराक तथा कृषक एव पर्वतों और मैदानो के कबीले हमारे सहायक बन गये। जब इवराहीम सारू तथा वैस लागरी इत्यादि ने नदी को अक्शी की ओर पार कर लिया तो पाप एव कुछ अन्य किले अधिकार मे आ गये। ऊजून हसन (तथा तम्बल) बडे अत्याचारी एव दुष्ट थे। विमान एव कबीले वाले सभी उनके आचार व्यवहार से तग थे। अक्शी के हसन दीकचा नामक एक प्रतिष्ठित आदमी ने अपने सहायको तथा अक्शी के जन साधारण एव गवारों ने लाठी-डडे मार मार कर ऊजून हसन तथा तम्बल के आदमियों को बाहरी किले से, भीतरी किले मे खदेड दिया। तदुपरान्त उन्होंने इवराहीम सारू, वैस लागरी एव सैयिदी करा को किले के भीतर बुलवा लिया।

सुल्तान महमूद खा ने मेरी सहायता हेतु हैदर कूकूल्दाश के पुत्र बन्दे अली तथा हाजी गाजी मगीत को नियुक्त किया था। हाजी उसी समय शैवानी खा के पास से भाग कर (महमूद) खा के पास बारीन तूमान और उसके बेगो के साथ आया था। वे लोग ठीक इसी समय मेरे पास पहुच गये।

ऊजून हसन का अक्शी को सेना भेजना

ऊजून हसन इन समाचारों को पाकर बडी चिन्ता मे पड गया। उसने तत्काल अपने विश्वस्त सहायकों एव उपयोगी वीरो को अक्शी के भीतरी किले वालों की सहायता हेतु भेजा। उसकी सेना पौ फटते फटते नदी तट पर पहुच गई। जब मेरी सेना वालो तथा मुग़ूलों को ये समाचार ज्ञात हुये तो अश्वारोहियों के एक दल को आदेश दिया गया कि वे अपने घोडों पर से सब सामान उतार दें और नदी मे घुसने के लिये तैयार रहें। ऊजून हसन के आदमी जल्दी मे घाट की नौकाओ को नदी के चढाव की ओर न ले जा सके और इस कारण जहा नदी को पार करके पहुचना चाहिये था वहा न पहुच सके अपितु उतार की ओर निकल गये। यह देखकर हमारे आदमी तथा मुग़ूल घोडो की नगी पीठो पर नदी के दोनो तट से जल मे प्रविष्ट हो गये। जो लोग नौका मे थे, वे कोई युद्ध न कर सके। कारलूगाच बख्शी ने एक मुग़ूल बेग के पुत्र को बुलवा कर उसका हाथ पकड लिया और अपनी तलवार से उसकी हत्या कर दी। इस विश्वासघात से क्या लाभ हो सकता था? मामला इस सीमा से निकल चुका था। उसके इस अत्याचार के कारण ही नौका के बहुत से आदमियो की हत्या करा दी गई। हमारे आदमियो ने तत्काल सब को पकड लिया और कुछ को छोड कर सब की हत्या कर दी। ऊजून हसन के विश्वास-पात्रो मे से कारलूगाच बख्शी, खलील दीवान तथा काजी गुलाम भाग गये। काजी गुलाम अपने आपको गुलाम कह कर बचा सका। उसके विश्वस्त वीरो मे से सैयिद अली, जो अब[3] मेरा विश्वास पात्र है, हैदर कुली तथा किलका काशगरी बच कर भाग सके। उसके ७० ८० आदमियों मे से इन ५-६ बेचारों के अतिरिक्त कोई न बच सका।

१ पगड़ी बाँधने वाला।
२ सेवक, विशेष रूप से छोकरा।
३ हिन्दुस्तान में।

ऊज़ून हसन तथा तम्बल की मर्गीनान से वापसी

ऊज़ून हसन तथा तम्बल इस घटना के समाचार सुनकर मर्गीनान के समीप न ठहर सके और घबडाहट एव जल्दी में अन्दिजान की ओर चल दिये। वहा वे ऊज़ून हसन की वहिन के पति नासिर बेग को नियुक्त कर गये थे। यदि वह ऊज़ून हसन से दूसरे स्थान पर न था तो तीसरे स्थान पर होने मे क्या सन्देह है।[1] वह अनुभवी था और वीर भी। जब उसने ये समाचार सुने तो उसने समझ लिया कि अब उन्हें विजय प्राप्त नही हो सकती। उसने अन्दिजान को दृढ करके मेरे पास एक आदमी भजा। जब ऊज़ून हसन के आदमियों ने देखा कि किला उनके लिये दृढ़तापूर्वक बन्द कर लिया गया है तो वे छिन्न-भिन्न हो गये। ऊज़ून हसन अपनी पत्नी के पास अक्शी चला गया। तम्बल, ऊश चला गया। जहागीर मीर्ज़ा के घर के कुछ सैनिक तथा वीर ऊज़ून हसन के पास से भाग गये और उसके ऊश पहुचने के पूर्व तम्बल से मिल गये।

बाबर का अन्दिजान पर अधिकार

जैसे ही हमने यह सुना कि अन्दिजान वालो ने उनके लिये किला बन्द कर लिया है तो मैं प्रात -काल मर्गीनान से रवाना हो गया और मध्याह्न तक अन्दिजान[2] पहुच गया। वहा मैंने नासिर बेग तथा उसके दो पुत्रो दोस्त बेग एव मीरीम बेग से भेट की और उनके विषय मे पूछ ताछ करके उन्हे कृपा एव आश्रय का आश्वासन दिलाया। इस प्रकार ईश्वर की कृपा से मेरे पिता का राज्य जो दो वर्ष हुये मेरे हाथ से निकल गया था ज़ीकाद ९०४ हि० (जून १४९८ ई०) मे मेरे अधिकार मे आ गया।[3]

सुल्तान अहमद तम्बल जहागीर मीर्ज़ा को लेकर ऊश चल दिया। जैसे ही वे वहा पहुचे तो वहा के जन साधारण एव गवार लोग अक्शी वालो के समान लाठी डडे लेकर उनपर टूट पडे और उनपर बडा आक्रमण करके उन्हे नगर से निकाल दिया। तदुपरान्त उन लोगो ने एक आदमी भेज कर मुझे सूचना कराई कि वे लोग किले पर मेरे लिये अधिकार किये हैं। जहागीर मीर्ज़ा तथा तम्बल अपने थोडे से सहायको को लेकर ऊज़कीन्त नामक किले मे भाग गये।

ऊज़ून हसन के विषय मे समाचार प्राप्त हुये कि अन्दिजान पर अधिकार प्राप्त करने मे असमर्थ होने के कारण वह अक्शी चला गया था और ऐसा समझा जाता था कि वह किले मे प्रविष्ट हो गया है। वह विद्रोह का नेता था अत हम लोग ये समाचार पाकर अन्दिजान मे ४-५ दिन से अधिक न ठहर कर अक्शी की ओर रवाना हो गये। हमारे वहा पहुचने पर उसके पास अक्शी को समर्पित कर देने तथा सन्धि कर लेने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया था।

हम लोग अक्शी तथा कास्पन एव उस क्षेत्र की शासन व्यवस्था ठीक करने के लिये कुछ दिन तक ठहरे रहे। जो मुग़ल हमारी सहायता हेतु आये थे, उन्हें हमने ताशकीन्त चले जाने की अनुमति दे दी। हम ऊज़ून हसन, उसके परिवार वालो एव आश्रितो को लेकर अन्दिजान चले आये। अक्शी मे

1 सम्भवत तम्बल दूसरे स्थान का स्वामी होगा।
2 ४७ मील ४½ फ़रलांग।
3 बाबर लगभग २ वर्ष तक अन्दिजान के बाहर रहा किन्तु राज्य से केवल १६ मास ही के लिये वंचित रहा।

कुछ समय के लिये कासिम उजब रह गया जो पहले घर के वीरों मे से था और अब वेगों की श्रेणी को प्राप्त हो गया है।

मुगुलो के विद्रोह

सन्धि हो जाने के कारण, ऊज़ून हसन के प्राण अथवा धन-सम्पत्ति को कोई हानि पहुचाये बिना उसे करातीगीन मार्ग से हिसार की ओर जाने की अनुमति दे दी गई। उसके सहायकों में से थोड़े से उसके साथ गये, शेष लोग उसका साथ छोडकर वही रह गये। यही वे लोग थे जिन्होने पिछली परेशानियो मे मेरे मुसलमान[1] सहायको तथा ख्वाजा काज़ी के आदमियो को लूटा मारा था। बहुत से बेगों के परामर्श से यह निश्चय हुआ कि, "इन्ही लोगो ने हमारे हितैषी मुसलमान सहायको को लूटा मारा है। उन्होने अपने ही मुग़ूल बेगों के प्रति कौन सी निष्ठा प्रदर्शित की है जो वे मेरे हितैषी रहेंगे? यदि वे बन्दी बना लिये जायें तथा लूट लिये जायें तो कौन सा अपराध होगा, और विशेष रूप से ऐसी दशा मे जब कि वे हमारी ही आखो के सामने हमारे ही वस्त्र धारण किये और हमारे ही घोडों पर सवार टहला करेंगे तथा हमारी ही भेडो का मास खाया करेंगे? इसे कौन सहन कर सकता है? यदि दया-भाव की दृष्टि से इन्हें बन्दी न बनाया जाय अथवा न लूटा जाये तो इस बात को बहुत बडी कृपा समझा जाये, यदि उन्हें यह आदेश दे दिया जाये कि उन लोगों के पास हमारे छापा मार युद्ध के समय के सहायको का जो माल असबाब हो वे उसे लौटा द।"

वास्तव मे यह ठीक ही प्रतीत होता था। हमने अपने आदमियों को आदेश दे दिया कि वे उनसे अपना माल असबाब ले लें। यद्यपि यह आदेश उचित तथा न्याय-युक्त था किन्तु मैं अब समझता हू कि इसके देने मे जल्दी की गई। जहागीर सरीखी चिन्ता मेरे पास ही बैठी थी, ऐसी अवस्था मे लोगों को भयभीत न करना चाहिये था। विजय एव शासन की दृष्टि से यद्यपि बहुत सी बातें बाह्य रूप से ठीक एव न्याय-युक्त ज्ञात होती थी कि तु उनके विषय मे आदेश देने के पूर्व लाखो बार सोच विचार कर लेना उचित एव आवश्यक होता है। केवल हमारे इस असावधानी मे दिये गये आदेश के कारण, कितने कष्ट तथा कितने विद्रोह उठ खड हुये। अन्त म इसी बिना अधिक सोचे समझे आदेश के कारण हमें अन्दिजान से दूसरी बार निर्वासित होना पडा। इसके कारण मुग़ूल चिन्तित एव भयभीत हो गये। वे रबातोक ऊरचीनी अर्थात् ईंटी सू-आरामी होते हुये, ऊजकीन्त पहुचे और एक आदमी तम्बल के पास भेजा।[2]

तम्बल का अन्दिजान पर आक्रमण

तम्बल जहागीर मीर्ज़ा को अपने साथ लेकर अन्दिजान के पूर्व मे पहुचा और दो मील दूर ऐश नामक पहाडी के समक्ष चरागाह मे उतर पडा। एक दो-बार उसने अपनी सेना की पक्तिया सुव्यवस्थित करके चेहल दुख्तरान से एश की ओर छापा मारा। हमारे सैनिक भी युद्ध के लिये तैयार होकर उद्यानों तथा आस पास के स्थान तक पहुचे। वह आगे न बढ सका और पहाडी के दूसरी ओर लौट गया। इस

१ यहाँ मुग़ुलों की उन आदतों से तुलना की गई है जो उनमें इस्लाम स्वीकार करने के पूर्व थीं और जिनके कारण उन्होंने बाबर के सहायकों को कष्ट पहुँचाये।
२ इसके बाद के कुछ वाक्यों का अनुवाद नहीं किया।

दिशा में सर्व प्रथम पहुंचने के उपरान्त उसने मीरीम लागरी तथा तूका बेग, दो बेगों की हत्या करा दी। लगभग एक मास तक वह आस पास पडा रहा किन्तु कोई सफलता प्राप्त न कर सका। तदुपरान्त वह ऊश की ओर वापस चला गया। ऊश इबराहीम सारू को दे दिया गया था और उसके आदमी अब उसकी रक्षा कर रहे थे।

६०५ हि०

(८ अगस्त १४९९ ई० से २८ जुलाई १५०० ई०)

अहमद तम्बल मुगुल के विरुद्ध प्रस्थान

राजदूतो को शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करने का आदेश दिया गया ताकि कुछ विलायतो से अश्वारोहियो तथा पदातियो को बुला लायें और कुछ लोग कम्बर अली को तथा उन लोगो को, जो अपनी विलायतो मे चले गये हैं उन्हें बुला लायें। कुछ दूतो एव अधिकारियो को, तोरे[1] फावडे, कुठार तथा अन्य युद्ध-सामग्री और जो खाद्य सामग्री हमारे साथ थी, उन्हें एकत्र करने के लिये भेजा गया।

जैसे ही अश्वारोही तथा पदाती जो विभिन्न विलायतो से सेना का साथ देने के लिये बुलवाये गये थे और सैनिक एव सेवक जो अपने कार्यों के लिये विभिन्न दिशाओ मे छिन्न भिन्न हो गये थे, एकत्र हो गये तो मैं ईश्वर पर भरोसा करके १८ मुहर्रम (२५ अगस्त) को हाफिज़ बेग के चार बाग मे पहुच गया और वहा अपना सामान ठीक करने के लिये कुछ दिन तक ठहरा रहा। तदुपरान्त हमने अपने दायें बायें मध्य एव अग्रभाग की पक्तियो तथा अश्वारोहियो और पदातियो को सुव्यवस्थित किया और मैं अपने शत्रुओं के विरुद्ध सीधा ऊश की ओर चल दिया।

ऊश पहुच कर समाचार प्राप्त हुये कि तम्बल उस क्षेत्र मे ठहरने मे असमर्थ होने के कारण उत्तर की ओर रबाते सरहग चला गया है। उस रात्रि मे हम लोग लात-कीन्त मे ठहरे। दूसरे दिन जब हम ऊश से गुजर रहे थे तो समाचार प्राप्त हुये कि तम्बल के विषय मे कहा जाता है कि वह अन्दिजान चला गया है। हम लोग ऊज़कीन्त तक बढ गये और कुछ लोगो को उन भागो मे छापा मारने के लिये पृथक् कर दिया[2]। हमारे शत्रु अन्दिजान चले गये और रात्रि मे किले की खाई मे पहुच गये किन्तु जब वे किले की चहार दीवारी पर सीढिया लगा रहे थे तो किले वालो को सूचना मिल गई। वे कोई भी सफलता न प्राप्त कर सके और वापस चले गये। हमारे छापा मारने वाले भी ऊज़कीन्त के चारो ओर छापा मार कर बिना कोई ऐसी वस्तु प्राप्त किये हुये जिससे उन्हें कष्ट के अनुकूल सतोष प्राप्त होता लौट आये।

खुसरो शाह द्वारा बाईसुगर मीर्ज़ा की हत्या

खुसरो शाह ने इस वर्ष बल्ख के विरुद्ध आक्रमण करना निश्चय करके बाईसुगर मीर्ज़ा को अपने साथ चलने के लिये बुलवाया। उसे वह अपने साथ कून्दुज ले गया और बल्ख की ओर चल दिया। जब वे उबाज घाट पर पहुचे तो उस कृतघ्न काफिर ने बादशाह बनने के लोभ मे मीर्ज़ा की हत्या

१ तोरों का बाबर के ग्रंथ मे विभिन्न स्थानों पर उल्लेख हुआ है किन्तु किसी स्थान पर इनका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है। कुछ विद्वानों के अनुसार तोरे लकड़ी के टुकड़ों को कीलों तथा जंजीरों से जकड़ कर तैयार किये जाते थे। वे एक प्रकार की ढाल का काम देते थे। उनके पीछे सैनिक आक्रमण हेतु अग्रसर होते थे।

२ अन्दिजान से ऊश लगभग ३३ मील है। तम्बल जिस मार्ग पर था, वह बाबर के पूर्व में था।

करा दी। १० मुहर्रम १७ अगस्त को उसने बादशाही के ऐसे अकुर (सन्तान), इतने योग्य, इतने मधुर स्वभाव वाले तथा इतने उच्च वश वाले की हत्या करा दी। उसने मीर्जा के कुछ बेगो तथा घर के सैनिको को मरवा डाला।

वाईसुगर मीर्जा का जन्म तथा वश

उसका जन्म हिसार की विलायत मे ८८२ हि० (१४४७ ई०) म हुआ था। वह सुल्तान महमूद मीर्जा का दूसरा पुत्र था और सुल्तान मसऊद मीर्जा से छोटा तथा सुल्तान अली मीर्जा, सुल्तान हुसेन मीर्जा तथा सुल्तान वैस मीर्जा से, जो खान मीर्जा के नाम से प्रसिद्ध था बडा था। उसका माता पाशा बेगम थी।

उसका राज्य

उसके पिता सुल्तान महमूद मीर्जा ने उसे बुखारा प्रदान कर दिया था। जब सुल्तान महमूद मीर्जा की मृत्यु हो गई तो उसके बेगो ने एकत्र होकर परामर्श करके बाईसुगर मीर्जा को समरकन्द का बादशाह बना दिया। कुछ समय तक बुखारा उसके समरकन्द के राज्य मे सम्मिलित रहा किन्तु तरखानो के विद्रोह[1] मे वह उसके हाथ से निकल गया। जब वह समरकन्द छोडकर खुसरू शाह के पास चला गया तो मैने समरकन्द पर अधिकार जमा लिया। खुसरो शाह ने हिसार पर अधिकार जमा कर उसे प्रदान कर दिया।[2] . ...

तम्बल की पराजय

जब हम साका ग्राम मे जो खूबान[3] के पूर्व मे दो मील पर है पहुचे तो शत्रु सेना की पक्तिया सुव्यवस्थित करके खूबान के बाहर निकला। हम लोग तेजी से अग्रसर हुये। युद्ध के समय हमारे पदाती जिनके लिये तोरो[4] की बडे परिश्रम से व्यवस्था की गई थी बहुत पीछे रह गये थ। ईश्वर की कृपा से उनकी कोई आवश्यकता न पडी। उनके पहुचने के पूर्व ही हमारी सेना की बाई पक्ति ने उन लोगो की दायी पक्ति से युद्ध प्रारम्भ कर दिया था। युद्ध हमारी सेना के अग्र भाग तथा दायी पक्ति तक न पहुच सका। हमारे आदमियो ने उनके बहुत से वीरों को गिरा दिया। हमने आदेश दिया कि सब के सिर काट डाले जायें। सावधानी एव उत्तम सैन्य कला की दृष्टि से, हमारे बेगो मे से कासिम बेग और विशेष रूप से अली दोस्त ने अधिक दूर तक शत्रुओं का पीछा करना उचित न समझा। इस कारण उनके बहुत से आदमी हमारे हाथ न लग सके। हम लोग खूबान ग्राम मे ठहरे। यह मेरा प्रथम सुव्यवस्थित युद्ध था। परमेश्वर ने अपनी महान् कृपा से हमे विजय एव सफलता प्रदान की। यह हमारे लिय बडा शुभ शकुन था।

दूसरे दिन मेरे पिता की माता, मेरी दादी शाह सुल्तान बेगम अन्दिजान से इस आशय से आई कि यदि जहागीर मीर्जा बन्दी बना लिया गया हो तो उसे क्षमा करा दे।

१ ६०१ हि० (१४९६ ई०) में।
२ ६०३ हि० (१४९७ ई०) में।
३ अन्दिजान के समीप लगभग १५ मील पर।
४ देखिये पृ० ५२६।

बाबर का शीत ऋतु व्यतीत करने के लिये दोआब जाना

अब शीत ऋतु प्रारम्भ हो गई थी। खुले मैदान मे कोई अनाज अथवा फल न रह गया था और तम्बल के विरुद्ध ऊज़कीन्त की ओर प्रस्थान उचित न समझा गया अत हम लोग अन्दिजान वापस चले आये। कुछ दिन उपरान्त परामर्श के बाद यह निश्चय हुआ कि हमारे शीत ऋतु मे नगर मे रहने से शत्रुओ को कोई हानि न पहुचेगी अपितु वे धावे मार मार कर तथा छापा मार युद्ध से और भी शक्तिशाली बन जायेंगे। हमारे लिये भी यह आवश्यक था कि हम ऐसे स्थान पर शीत ऋतु व्यतीत करें जहा हमारे आदमी अनाज की कमी से शक्तिहीन न होने पायें और शत्रुओं को रोक कर परेशान कर सकें। इन कारणो से हमने अन्दिजान से रबातीक ऊरचीनी मे जो दोआब के नाम से प्रसिद्ध है अरमियान तथा नूशाब के समीप शीत ऋतु व्यतीत करना निश्चय किया। उपर्युक्त दोनो ग्रामो मे पहुचकर हमने शीत ऋतु मे ठहरने के लिये स्थान निश्चित कराये।

बाबर के सैनिको द्वारा तम्बल के सैनिकों पर छापे, क़म्बर अली के आग्रह पर उसे अस्फरा तथा कन्दे बादाम चले जाने की अनुमति, बाबर का अन्य सैनिको को भी जाने की अनुमति देना और स्वयं अन्दिजान वापस चला जाना, सुल्तान महमूद ख़ा का तम्बल की सहायता हेतु मुग़ुलो को नियुक्त करना, कासिम उजब बाबर के अक्शी के हाकिम का बन्दी बनाया जाना, तम्बल का सुआरसी की ओर प्रस्थान, अहमद बेग तथा सुल्तानोम का कासान को घेर लेना, बाबर का उनके विरुद्ध प्रस्थान, उनका भागना, तम्बल का अग्रसर होना किन्तु अरख़ियान की ओर प्रस्थान, बाबर का उसका पीछा करना, क़म्बर अली का असतोष, बाबर का बिशाखारान की ओर प्रस्थान, तम्बल और जहांगीर मीर्ज़ा, तथा बाबर में सधि[1], बाबर की अन्दिजान को वापसी, अली दोस्त बेग का बाबर के प्राचीन सहायको के प्रति अत्याचार।[2]

बाबर का प्रथम विवाह

आयेशा सुल्तान बेगम से, जो सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पुत्री थी, मेरी मगनी मेरे पिता तथा चाचा ही के जीवन काल मे हो गई थी। खुजन्द पहुच कर शाबान (मार्च १५०० ई०) मे मैंने उससे विवाह कर लिया। यह मेरे वैवाहिक जीवन का प्रथम अवसर था। यद्यपि मुझे उसके प्रति कुछ कम स्नेह न था, किन्तु लज्जा व सुशीलता के कारण मैं उसके पास १०, १५ अथवा २० दिन मे एक बार जाता था। बाद मे जब मेरा उसके प्रति प्रथम स्नेह भी समाप्त हो गया तो मेरी लज्जा भी बढ गई, यहा तक कि मेरी माता खानम मुझसे ज़बरदस्ती करती और मुझे डाट फटकार कर महीने अथवा ४० दिन मे एक बार अपराधी के समान उसके पास भेजती थी।

१ सन्धि की यह शर्त रक्खी गई कि ख़ुजन्द नदी के उस ओर का भाग जो अक्शी की तरफ़ है जहांगीर मीर्ज़ा के अधीन रहे और अन्दिजान की ओर का मेरे अधीन रहे। ऊज़कीन्त भी मुझे प्रदान कर दिया जाय। जब वे लोग अपने परिवार सहित वहाँ से हट जाय और जब हम अपने-अपने राज्य को सुव्यवस्थित कर लें तो मैं जहांगीर मीर्ज़ा के साथ समरकन्द पर आक्रमण करू। जब मैं समरकन्द विजय कर लूँ और उस पर अधिकार जमा लूँ तो मैं अन्दिजान जहांगीर मीर्ज़ा को दे दूँ।

२ इन अंशों का अनुवाद नहीं किया गया है।

बाबुरी से प्रेम

इन दिनों शिविर के बाजार मे बाबुरी नामक एक तरुण रहता था। उसके और मेरे नाम मे एक विचित्र अनुरूपता थी। इससे पूर्व मेरी तबीयत किसी पर न आई थी और न किसी से प्रेम तथा इश्क की बातें सुनता था और न कहता था। इस अवसर पर मैंने फारसी में कुछ शेरों की रचना की। उनमे से एक शेर यह है :—

शेर

"मेरे समान कोई आशिक खराब तथा अपमानित नही हुआ है,
कोई माशूक तेरे समान निष्ठुर एव उपेक्षणीय नही हुआ है।"

यदि कभी सयोग से बाबुरी मेरे सामने आजाता तो मैं लज्जा एव मर्यादा के कारण बाबुरी की ओर सीधी दृष्टि भी न डाल सकता था। उससे मेल जोल तथा बात चीत तो बडे दूर की बात रही। मैं उन्माद एव झेंप मे उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता था ? मुझमे इतनी शक्ति भी तो न थी कि उसका उचित रूप से स्वागत ही कर लेता। एक दिन प्रेम के उन्माद मे मैं अपने मित्रो के साथ एक गली मे जा रहा था। अचानक मेरा और उसका सामना हो गया। झेंप एव घबराहट मे मेरी यह दशा हो गई कि मैं उससे आख भी न मिला सका और न एक शब्द कह सका। झेप तथा घबराहट मे मैं मुहम्मद सालेह के इस शेर का स्मरण करता हुआ उसे छोड़कर चल दिया।

शेर

"जब मैं अपने माशूक को देखता हू तो झेंप जाता हू,
मेरे मित्र मेरी ओर देखते है और मैं दूसरे की ओर।"

ये शेर बडे आश्चर्यजनक रूप से मेरे अनुरूप थे। इश्क एव मुहब्बत के उत्साह एव जवानी की मस्ती मे नगे सिर तथा नगे पाव, गलियो, छोटे-छोटे और बडे-बडे बागों मे मारा मारा फिरा करता था। न मैं मित्र की चिन्ता करता था और न शत्रु की, न अपने की और न पराये की।

शेर

"बिना मेरे ज्ञान के, मेरे भीतर से इच्छा निकल गई,
यही हाल होता है एव परी चेहरा माशूक का
न तो मेरा घूमना फिरना अपने वश मे था और न उठना बैठना।"

शेर

"न तो मुझमे जाने की शक्ति थी और न ठहरने की ताक्त,
हे मेरे चित्त-चोर तूने मुझे जो बना दिया, मैं वही था।"

सुल्तान अली मीर्जा तथा तरखानियों में झगडा, मुहम्मद मजीद तरखान का समरकन्द से पलायन, खान मीर्जा का समरकन्द के विरुद्ध प्रस्थान, सुल्तान अली मीर्जा द्वारा पराजय। बाबर का समरकन्द बुलाया जाना, कर्श के हाथ से निकल जाने के समाचार सुनना, बाबर

का अपनी यात्रा जारी रखना, क़म्बर अली का तम्बल द्वारा बन्दी बनाया जाना और उसका भाग जाना।[1]

समरकन्द से सम्बन्धित घटनायें

हमारे खान यूरती मे पहुचने के उपरान्त, समरकन्द के बेगों ने मुहम्मद मज़ीद तरखान की अधीनता मे उपस्थित होकर मेरे प्रति अभिवादन किया। उनसे नगर पर अधिकार जमाने के विषय मे वार्ता की गई। उन लोगों ने कहा, "ख्वाजा यहया भी पादशाह के लिये इच्छुक है। उसकी सहायता मे नगर पर सुगमतापूर्वक बिना युद्ध अथवा लडे भिडे अधिकार जमाया जा सकता है।' ख्वाजा ने हमारे दूत को अन्तिम उत्तर न दिया कि उसने हमे नगर मे बुलाना निश्चय कर लिया है। किन्तु उसने कोई ऐसी बात भी न कही जिससे हम निराश हो जाते।

खान यूरतो से रवाना होकर हम लोग दरे गम की ओर रवाना हो गये। वहा से हमने अपने किताबदार[2] ख्वाजा मुहम्मद अली को ख्वाजा यहया के पास भेजा। उसने आकर हमें बताया कि हमारे पहुचने पर नगर समर्पित कर दिया जायगा। तदनुसार हम लोग रात्रि मे दरे गम से सीधे नगर की ओर बढते चले गये किन्तु हमारी योजना सफल न हो सकी कारण कि सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई के पिता सुलतान महमूद ने, जो हमारे शिविर से भाग गया था, (सुल्तान अली के साथियो को) ऐसी सूचना दे दी जिसके फलस्वरूप वे लोग चौकन्ने हो गये। हम लोग दरे गम तट पर वापस चले गये।

जिस समय मैं यार ईलाक मे था, मेरा एक विश्वासपात्र बेग, इबराहीम सारू जिसे अली दोस्त ने लूट कर निकाल दिया था मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसके साथ मुहम्मद यूसुफ, सैयिद यूसुफ (ऊगलाकचीं) का पुत्र भी था। एक एक दो-दो करके मेरे वश के प्राचीन सेवक, बेग तथा कुछ घर के सेवक मेरे पास एकत्र होने लगे। सभी अली दोस्त के शत्रु थे। कुछ को उसने निकाल दिया था, कुछ को लूट लिया था और कुछ को बन्दी बना लिया था। वह भयभीत हो गया। इसका कारण यह था कि तम्बल की सहायता से उसने मुझे तथा मेरे हितैषियों को परेशान किया तथा कष्ट पहुचाया था। मुझे उस नमक-हराम से हार्दिक घृणा हो गई थी। लज्जा तथा भय के कारण वह हमारे साथ अधिक ठहर न सका। उसने जाने की अनुमति मागी और मैंने प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा दे दी। वह तथा उसका पुत्र मुहम्मद दोस्त मेरी अनुमति पाकर तम्बल के पास चले गये और विश्वासपात्र हो गये। पिता एव पुत्र दोनो ही ने अत्यधिक षड्यत्र रचा था। अली दोस्त कुछ वर्ष उपरान्त हाथ मे नासूर के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया। मुहम्मद दोस्त ऊज़बेकों के पास चला गया। यह भी कुछ अधिक बुरा न था किन्तु वहा से भी नमकहरामी करके वह अन्दिजान की पहाडियो के आचल मे भाग गया। उसने वहा बडा विद्रोह तथा उपद्रव मचाया। अन्त मे वह ऊज़बेको के हाथ मे पड गया और उन्होंने उसे अधा बना दिया। इस लोकोक्ति "नमक ने उसकी आख ले ली" का अर्थ उसके विषय मे सत्य निकला।

हमारे वहा कुछ सप्ताह के निवास के उपरान्त यह समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान अली मीर्ज़ा ने समरकन्द शैबानी खा को दे दिया है। यह इस प्रकार हुआ —

१ इस अंश का अनुवाद नहीं किया गया है।
२ पुस्तकों की देख रेख करने वाला अधिकारी।

मीर्ज़ा की माता, जुहराबेगी आगा ने अपनी अज्ञानता एवं मूर्खता में शैबानी खां को गुप्त रूप से लिख दिया कि यदि वह उससे विवाह कर लेगा तो उसका पुत्र उसे समरकन्द समर्पित कर देगा। जब शैबानी खां (उसके पुत्र) के पिता के देश पर अधिकार जमा ले तो वह उसके पुत्र को कोई देश प्रदान कर दे। सैयिद यूसुफ को इस षड्यन्त्र का ज्ञान होगा। यह षड्यन्त्र उसी ने रचा होगा।

९०६ हि०

(२८ जुलाई १५०० से १७ जुलाई १५०१ ई०)

समरकन्द ऊज़बेकों के हाथों में

जब उस स्त्री के वचनानुसार शैबानी खां समरकन्द पहुंचा तो वह मैदान के बाग मे उतरा। मध्याह्न के समय, सुल्तान अली मीर्ज़ा किसी से भी परामर्श लिये बिना अपने कुछ विश्वासपात्रो को जिन्हें अधिक ज्ञान न था, अपने साथ लेकर चार मार्गों के फाटक से शैबानी खां के पास पहुंचा। खान ने उसका भली भांति स्वागत न किया। जब वे एक दूसरे से भेंट कर चुके तो खान ने उसे कम सम्मानित हाथ की ओर बैठाया।[1] ख्वाजा यहया, मीर्ज़ा के प्रस्थान के विषय मे सुनकर बडा परेशान हुआ किन्तु विवश होकर वह भी चला गया।[2] खान ने बिना खडे हुये उसकी ओर देखा और ऐसे शब्द कहे जिनसे शिकायत टपकती थी किन्तु जब ख्वाजा जाने लगा तो शैबानी खां ने उठकर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया।

जैसे ही ख्वाजा अली बाय के पुत्र ने रबाते ख्वाजा मे मीर्ज़ा के शैबानी खां के पास जाने के विषय मे सुना तो वह भी शैबानी खां के पास चला गया। जहां तक उस अभागिनी मूर्ख स्त्री का सम्बन्ध है उसने पति प्राप्त करने के लोभ मे अपने पुत्र के घर-बार को नष्ट करा दिया किन्तु शैबानी खां ने उसकी कण भर भी चिन्ता न की अपितु उसे कनीज तथा रखेली स्त्री की भी श्रेणी प्रदान न की।

सुल्तान अली मीर्ज़ा भी अपने किये पर व्याकुल और शैबानी खां के पास आने पर अत्यधिक लज्जित था। उसके विश्वासपात्रो ने जब यह देखा तो वे इस बात का प्रयत्न करने लगे कि वे उसे भगा ले जायें। सुल्तान अली मीर्ज़ा राज़ी न हुआ। उसकी मौत आ चुकी थी। वह मुक्त न हो सका। वह तीमूर सुल्तान की (हवेली) मे ठहरा हुआ था। तीन चार दिन उपरान्त किले के ऊलाग मे उसकी हत्या करा दी गई।[3] इस पांच दिन के नश्वर जीवन के लिये वह कुख्याति के साथ मृत्यु को प्राप्त हुआ। एक स्त्री की बातो मे आकर उसने अपने आप को नेकनामो के समूह से निकाल दिया। ऐसे व्यक्ति के कार्यों के विषय मे इससे अधिक नही लिखा जा सकता। इन कुकृतियो के विषय मे इससे अधिक नहीं सुना जा सकता।

मीर्ज़ा की हत्या के उपरान्त, शैबानी खां ने जान अली को उसके मीर्ज़ा के पीछे भेजा। वह ख्वाजा यहया से भी शंकित था अत उसने उसे तथा उसके दोनो पुत्रो ख्वाजा मुहम्मद ज़करिया तथा ख्वाजा बाक़ी को खुरासान की ओर भेज दिया। उसने उनके पीछे कुछ ऊज़बेगो को लगा दिया जिन्होने ख्वाजा

१ अपनी दाईं ओर। 'हबीबुस्सियर' के अनुसार अली का भली भांति स्वागत किया गया।
२ 'शैबानी नामा' के लेखक मुहम्मद सालेह मीर्ज़ा के अनुसार उसने नगर की रक्षा का प्रयत्न किया। वह कहा करता था कि, 'ईश्वर करे बाबर मीर्ज़ा आ जाता।'
३ 'शैबानी नामा' तथा 'नसरत नामा' (९०८ हि०) में अली की हत्या के अपराध को शैबाक खां पर से हटाने का प्रयत्न किया गया है। 'नसरत नामा' में लिखा है कि 'वह नशे में कोहिक नदी में डूब कर मर गया।'

कार्दज़ान के समीप ख्वाजा तथा उसके दोनो छोटे बालको की हत्या कर दी। शैबानी खा कहा करता था कि, "ख्वाजा की हत्या मैंने नही कराई। कम्बर बी एव कुपुक बी ने उनकी हत्या की।" यह तो उससे भी बुरा है जैसा कि मसल है पाप करके बहाना बनाना पाप से भी निंद्य होता है कारण कि यदि बेग लोग ऐसे कार्य अपने खान तथा बादशाह की सूचना के बिना करने लगें तो फिर खानी तथा बादशाही कहा रह जायेगी।

बाबर का केश से मूरा दर्रे की ओर प्रस्थान

क्योकि ऊज़बेगो ने समरकन्द पर अधिकार जमा लिया था अत हम लोग केश छोडकर हिसार की ओर चल दिये। मुहम्मद मज़ीद तरखान तथा समरकन्द के बेग भी उसके साथ अपने परिवार एव परिजनो सहित हमारे साथ रवाना हुये किन्तु जब हम चगानियान की चुल्तू नामक चरागाह मे उतरे तो वे भी हमसे पृथक् होकर खुसरो शाह के पास चले गये और उसकी सेवा मे प्रविष्ट हो गये।

हम अपने शहर तथा अपनी विलायत से वचित हो चुके थे। हमे यह मालूम न था कि कहा जायें अथवा कहा ठहरें। यद्यपि खुसरो शाह ने हमारे वश के ऊपर न जाने कितने अत्याचार किये थे फिर भी हमें विवश होकर उसकी विलायत से होकर गुज़रना पडा।

हमारी एक योजना यह थी कि मैं अपने खान दादा अर्थात् अलचा खान के पास करातीगीन तथा अलाई होता हुआ चला जाऊ किन्तु इसकी व्यवस्था न हो सकी। दूसरी योजना यह थी कि हम काम जल धारा तथा सराताक दर्रे की ओर चले जायें। जब हम लोग नूनदाक के समीप थे तो खुसरो शाह का एक सेवक मेरे पास ९ घोडे तथा ९ कपडे के थान लाया।[1] जब हम लोग काम घाटी के मुह पर उतरे तो शेर अली चुहरा, हमारे पास से भाग कर खुसरो शाह के भाई वली के पास तथा दूसरे दिन कूच बेग हमसे पृथक् होकर हिसार चला गया।[2]

हम घाटी मे प्रविष्ट होकर उसके ऊपर की ओर बढने लगे। उसके ढालू एव सकरे मार्ग पर तथा उसके ऊबड-खाबड एव दुर्गम रास्ते की यात्रा के कारण बहुत से घोडो तथा ऊटो को छाड देना पडा। सराताक दर्रे तक पहुचने के पूर्व हमे तीन-चार रात्रि पडाव करने पडे। यह बडा ही विचित्र दर्रा था। हमने ऐसा सकरा तथा ढालू दर्रा कभी न देखा था और न कभी ऐसी कठिन कन्दराओ तथा करारो की यात्रा की थी। उन खतरनाक सकरे मार्गों, अचानक उतारो, खतरनाक ऊचाइयो, चाकू की धार के समान करारो की यात्रा बडी ही कठिनाई एव अत्यधिक कष्ट भोग कर की गई। फान पर्वत मे एक बहुत बडी झील है जिसकी परिधि एक कुरोह शरई[3] है। यह बडी ही सुन्दर झील है और वैचित्र्य से शून्य नही है।

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुये कि इबराहीम तरखान शीराज़ के किले को दृढ बना कर वहा आरूढ है। उसके अतिरिक्त कम्बर अली तथा अबुल कासिम कोहबर दोनो यार ईलाक पहुच गये हैं और वहा के नीचे के किले को दृढ बना कर वही जमे है। अबुल कासिम कोहबर ख्वाजा दीदार मे था। ऊज़बेगो द्वारा समरकन्द पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त वह वहा न ठहर सका था।

फान को अपनी दाई ओर छोडते हुये हम लोग केशतूद की ओर बढ गये। फान का मलिक अपने सौजन्य, दान-पुण्य, सेवा एव दया भाव के लिये प्रसिद्ध था। जिस समय सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा हिसार

१ तुर्क तथा मुग़ल ९ ९ के सेट मे उपहार देते हैं।
२ उसका घर हिसार मे रहा होगा।
३ २ मील।

पहुच गया था, और सुल्तान मसऊद मीर्जा अपने छोटे भाई बाईसुगर मीर्जा के पास फान के मार्ग से समरकन्द की यात्रा के उद्देश्य से फान पहुचा तो उसने उसे ७० या ८० घोडे उपहार स्वरूप भेंट किये। इसी प्रकार उसने अन्य लोगो की भी सेवा की थी। उसने मेरे पास एक साधारण सा घोडा भेजा और स्वय मरी सेवा मे उपस्थित न हुआ। जो लोग अपने दान-पुण्य के लिये प्रसिद्ध थे, वे मेरे प्रति व्यवहार के समय कृपण तथा जो लोग सौजन्य के लिये प्रसिद्ध थे, वे धृष्ट हो जाते थे। खुसरो शाह अपने दान-पुण्य तथा दया भाव के लिये प्रसिद्ध था। बदी उज्जमान मीर्जा की उसने कितनी अधिक सेवायें की, बाक़ी तरखान तथा अन्य बेगो के प्रति उसने अत्यधिक सौजन्य प्रदर्शित किया। मैं उसके राज्य से दो बार[1] होकर गुजरा। उसने जितनी कृपा-दृष्टि मेरे बेगो के प्रति प्रदर्शित की थी उसकी तो चर्चा ही नही अपितु उसने मेरे साधारण से साधारण सेवक के साथ जो सौजन्य प्रदर्शित किया था वह भी उसने मेरे साथ प्रदर्शित न किया। वास्तव मे उसने हमारे प्रति उससे भी कम सौजन्य प्रदर्शित किया।

शेर

हे, मेरे दिल किसने कोई सौजन्य देखा है सासारिक व्यक्तियो से
उससे सौजन्य की आशा ही मत करो जिसमे सौजन्य नही।

इस विचार से कि ऊजबेग लोग केशतूद मे हैं, हम लोग फान से होते हुये उधर की ओर रवाना हुये। केशतूद के विषय म यह समझा जाता था कि वह नष्ट हो गया होगा और कोई भी उसमे न होगा। हम कोहिक नदी के तट पर पहुचे और वहा उतर पडे। उस स्थान से हमने थोडे से बेगों को क़ासिम कूचीन के अधीन रबाते ख्वाजा पर अचानक धावा करने के लिये भेजा। उसके उपरान्त हमने यारी के समक्ष एक पुल द्वारा नदी पार की और यारी होते हुये शुकार खाने की पर्वतीय श्रेणियो से यार इलाक पहुचे। हमारे बेग लोग रबाते ख्वाजा पहुच गये। वे सीढिया लगा चुके थे कि किले के भीतर वालो को पता चल गया और उन्होने उन्हें पीछे हट जाने पर विवश कर दिया। किला न ले सकने के कारण वे हमारे पास वापस आ गये।

बाबर का समरकन्द पर पुन आक्रमण

कम्बर अली अब भी सगज़ार पर अधिकार जमाये हुये था। उसने आकर मुझसे भेंट की। अबुल क़ासिम कोहबर तथा इबराहीम तरखान ने हमारी सेवा हेतु योग्य आदमियो को भेज कर निष्ठा एव सेवा भाव प्रदर्शित किया। हम लोग अस्फीदिक पहुचे जो यार ईलाक के अधीनस्थ एक ग्राम है। उस समय शैबाक खा ख्वाजा दीदार के समीप ३-४,००० ऊजबेगो तथा उन सैनिका सहित जो उस स्थान से एकत्र हो सकने थे, पडाव किये हुये था। उसने समरकन्द का राज्य जान वफा को प्रदान कर दिया था। जान वफा उस समय किले मे ५०० या ६०० आदमियो सहित था। हमज़ा सुल्तान तथा महदी सुल्तान कुएल के समीप के एक किले मे पडाव किये हुये था। हमारे आदमियो की सख्या जिसमे अच्छे बुरे सभी सम्मिलित थे २४० थी।

हमने अपने समस्त बेगों और अन्य अधिकारियो से विचार विनिमय के उपरान्त यह निश्चय किया

१ दूसरा अवसर उस समय था जब बाबर ने कुन्दुज से काबुल की ९१० हि० (१५०४-५ ई०) में यात्रा की थी।

कि क्योंकि शैबानी खा ने समरकन्द पर हाल ही में अधिकार जमाया है अत समरकन्द निवासियो का न तो उसके प्रति कोई स्नेह होगा और न उसका स्नेह वहा के निवासियो के प्रति हुआ होगा। यदि कुछ किया जा सकता है तो वह इसी समय। यदि समरकन्द निवासी हमें कोई सहायता न भी देंगे तो वे ऊज़-बेगों की ओर से हमसे युद्ध भी न करेंगे। यदि एक बार समरकन्द हमारे हाथ मे आ जाये तो फिर जो कुछ होना है वह होगा।

यह निश्चय करके हम लोग यार ईलाक से मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त रवाना हो गये। वहा से प्रस्थान करके अधेरे मे आधी रात की यात्रा के उपरान्त खान यूरती पहुचे। यहा हमे सूचना प्राप्त हुई कि समरकन्द के सैनिक हमारे आगमन से अवगत है। इस कारण हम लोग नगर के समीप न गये अपितु खान यूरती से वापस हो गये और सुबह होते होते कोहिक नदी स्वाजे ख्वाजा के नीचे पार करके हम लोग एक बार पुन यार ईलाक पहुच गये।

एक दिन अस्फीदिक मे हमारे घर के सैनिकों का एक दल मेरी सेवा मे बैठा था। उनमे दोस्ते नासिर, नुयान कूकूल्दाश, खान कुली करीम दाद, शेख दरवेश, मीरीमे नासिर सभी वहा थे। नाना प्रकार के विषयों पर वार्ता हो रही थी। मैंने कहा, "बताओ, ईश्वर की कृपा से हम समरकन्द पर अधिकार जमा सकेंगे?" किसी ने कहा, "हम गरमियों मे उस पर अधिकार कर लेंगे—वह शरद् काल का अन्त था।" कुछ लोगों ने कहा, "एक मास मे" कुछ ने कहा, "४० दिन," कुछ ने कहा, "२० दिन।" नुयान कूकूल्दाश ने कहा, "हम १४ दिन मे अधिकार जमा लेंगे।" ईश्वर ने उसकी बात सच कर दी। हमने समरकन्द पर ठीक १४ दिन मे अधिकार जमा लिया।

उन्ही दिनों मे मैंने एक आश्चर्यजनक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि मानो हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह (एहरार) आ रहे हैं। मैं उनके स्वागतार्थ बढा। ख्वाजा मेरे पास आकर बैठ गये। लोगो ने उनके समक्ष दस्तरख्वान बिछाया। सम्भवत सफाई की ओर उचित ध्यान न दिया गया था। इससे हज़रत ख्वाजा कुछ खिन्न दृष्टिगत हुये। मुल्ला बाबा ने यह देख कर मेरी ओर सकेत किया। मैंने भी सकेत में उत्तर दिया कि "यह दस्तरख्वान बिछाने वाले की भूल है।" ख्वाजा समझ गये और उन्होंने मेरी बात स्वीकार कर ली। जब वे उठ खडे हुए तो मैं उन्हें पहुचाने गया। उस घर के बड़े कमरे मे मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने मेरा दाया अथवा बाया बाजू पकड कर उठाया, यहा तक कि मेरा एक पाव धरती से उठ गया। उन्होंने मुझसे तुर्की मे कहा, 'शेख मसल्हत'[1] ने समरकन्द प्रदान कर दिया है।" मैंने वास्तव मे इसके कुछ दिन उपरान्त समरकन्द पर अधिकार जमा लिया।

बाबर का समरकन्द पर अचानक अधिकार जमाना

इस स्वप्न के दो-तीन दिन उपरान्त हम अस्फीदिक से वशमन्द के किले मे चले गये। यद्यपि इससे पूर्व एक बार मैं समरकन्द पर अचानक अधिकार जमाने के उद्देश्य से उसके बहुत निकट पहुच गया था, किन्तु किले के सैनिको के सावधान हो जाने के कारण हमे वापस आजाना पड़ा था किन्तु फिर भी ईश्वर पर भरोसा करके हम एक बार पुन मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त वशमन्द के किले से इस उद्देश्य से रवाना हो गये। आधी रात मे हम ख्याबान के मगाक नामक पुल पर पहुच गये। वहा से

१ शेख मसलहत का मकबरा खजन्द में है। बाबर ने ९०३ हि० (१४९७-९८ ई०) में यहां शरण ली थी। तीमूर ने भी ७९० हि० (१३९० ई०) में इसका तवाफ़ किया था।

हमने ७०-८० वीरों के दल को इस आशय से भेजा कि वे गारे आशिका के सामने किले की दीवार पर सीढिया लगाकर किले के भीतर उतर जायें और तत्काल फीरोज़ा द्वार पर पहुच कर वहा अधिकार जमा लें और मेरे पास एक आदमी को भेज दें। इन वीरों ने पहुच कर गारे आशिका के समक्ष किले की दीवार पर सीढिया लगा दी और किले मे प्रविष्ट होते ही विना किसी के सावधान हुये द्वार पर पहुच गये। फाज़िल तरखान पर आक्रमण करके उसकी तथा उसके सैनिकों की हत्या कर दी। कुठार से ताला तोड़ डाला और फाटक खोल दिया। मैं वहा पहुच कर किले मे प्रविष्ट हो गया।

फाज़िल तरखान (समरकन्द) के तरखानियों में से न था। वह तुर्किस्तान का एक व्यापारी तरखान था। वह तुर्किस्तान में शैबानी खा की सेवा में था और शैबानी खा का विश्वास-पात्र था।

अबुल कासिम कोहबर हमारे साथ स्वय न आया था अपितु अपने ३०-४० परिजन अपने अनुज अहमद कासिम के अधीन भेज दिये थे। इबराहीम तरखान का कोई आदमी हमारे साथ न था। उसका छोटा भाई अहमद तरखान मेरे नगर में प्रविष्ट होने तथा खानकाह मे स्थान ग्रहण करने के उपरान्त कुछ परिजनों के साथ उपस्थित हुआ।

शहर वाले अब भी सो रहे थे। कुछ दूकानदारो ने अपनी दूकानो से झाक कर हमे देखा। और मेरे लिये शुभकामनायें करने लगे। जब कुछ देर उपरान्त यह समाचार शहर मे प्रसारित हुये तो वे हर्ष उल्लास एव प्रसन्नता का प्रदर्शन करने लगे। उन लोगों ने गली-कूचों मे पागल कुत्तों के समान ऊज़बेगों की हत्या करनी प्रारम्भ कर दी। ४००-५०० इस प्रकार मार डाले गये। जान वफा, जो ऊज़बेगों की ओर से हाकिम था, ख्वाजा यह्या के घर मे निवास कर रहा था। वह भाग कर शैबाक खा के पास चला गया।

फीरोज़ा द्वार मे प्रविष्ट होकर मैंने सीधे मदरसे की ओर वहा पहुच कर खानकाह के ताक मे स्थान ग्रहण किया। दिन निकलने तक मारो-मारो का शोर होता रहा। कुछ प्रतिष्ठित लोगों एव दूकानदारों को जब इन बातो का पता लगा तो वे प्रसन्नतापूर्वक मुझसे भेंट करने आये और जो भोजन उनके पास उपस्थित था उसे वे मेरे लिये लाये और मेरे लिये शुभकामनायें करने लगे। दिन निकलने के समय हमें पता चला कि ऊज़बेग लोग लोहे के फाटक पर, बाहरी तथा भीतरी फाटक को दृढ बनाये युद्ध कर रहे हैं। १०-१५-२० आदमियों को लेकर मैं तत्काल फाटक की ओर लपका किन्तु मेरे पहुचने के पूर्व सर्व साधारण, जो शहर के कोने कोने मे लूट मार कर रहे थे, ने ऊज़बेगों को वहा से भगा दिया था। शैबाक खा को जब इस बात की सूचना मिली तो वह दिन निकलने पर १००-१५० आदमियों को लेकर लोहे के फाटक की ओर बढा। सयोग से वह बडे विचित्र समय पर पहुचा किन्तु जैसा कि उल्लेख हो चुका है मेरे आदमियों की सख्या बडी कम थी। यह देखकर कि उसे कोई सफलता प्राप्त नही हो सकती, वह तत्काल वापस चला गया। लोहे के फाटक से मैं भीतरी किले में पहुचा और वहा बूस्तान महल में उतर पडा। शहर के प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति तथा उच्च श्रेणी के लोग मुझसे भेंट करके मुझे बधाई देने लगे।

समरकन्द १४० वर्ष से हमारे वश की राजधानी रह चुका था। ऊज़बेग सरीखे शत्रु ने इसपर अपना अधिकार जमा लिया था और वह मेरे हाथ से निकल गया था। यद्यपि वह लुट चुका था और नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था किन्तु ईश्वर की कृपा से हमारा राज्य हमें वापस मिल गया।

सुल्तान मीर्ज़ा ने हिरात[1] पर उसी प्रकार अचानक आक्रमण करके अधिकार जमा लिया था जिस

[1] ८७५ हि० (१४७० ई०) में। हुसेन की उस समय अवस्था ३२ वर्ष की थी।

प्रकार हमने किन्तु न्यायकारी, अनुभवी एव समझदार लोग भली भाति समझ सकते है कि मेरी विजय तथा उसकी विजय मे बडा अन्तर है।

१ वह कई वर्ष से राज्य कर रहा था और बडा अनुभवी था।

२ उसका विरोधी यादगार मुहम्मद नासिर मीर्जा था जो १७-१८ वर्ष का अनुभव-शून्य बालक था।

३ यादगार मीर्जा के एक विश्वासपात्र मीर अली ने एक व्यक्ति को, जो पूर्ण स्थिति से परिचित था, सुल्तान हुसेन मीर्जा के पास अचानक धावा करने के लिये आमन्त्रित करने को भेजा था।

४ उसके शत्रु किले मे न थे अपितु बागे रागान मे थे। इसके अतिरिक्त यादगार मुहम्मद नासिर मीर्जा तथा उसके सहायक इतना अधिक नशे मे चूर थे कि केवल तीन ही आदमी फाटक पर थे और वे भी बद-मस्त थे।

५ उसने एक बार ही मे उन लोगो को असावधान पाकर समरकन्द पर अधिकार जमा लिया। इसके विपरीत जब मैंने समरकन्द पर अधिकार जमाया तो

अ मेरी अवस्था १९ वर्ष की थी।

ब मेरा शत्रु शैबाक खा बडा ही अनुभवी तथा कार्य कुशल और अधिक अवस्था का था।

स मेरे पास समरकन्द से कोई भी नही आया यद्यपि यहां वाले हृदय से मुझे चाहते थे। कोई भी शैबाक खा के भय के कारण आने के विषय मे सोच भी न सकता था।

द मेरे शत्रु किले मे थे। केवल किले पर ही नही अधिकार जमाया गया अपितु शत्रु को भी भगा दिया गया।

क मैं एक बार इससे पूर्व भी वहा पहुच चुका था अत मेरे शत्रु मेरे विषय मे चौकन्ने हो गये थे। दूसरी बार हमारे पहुचने पर ईश्वर ने सब कुछ ठीक कर दिया। समरकन्द विजय हो गया।

इन बातो के कहने का उद्देश्य यह नही है कि मैं किसी की प्रसिद्धि को घटाना चाहता हू अपितु जो तथ्य था वह लिख दिया गया। इस लिखने का उद्देश्य यह नही कि मैं अपनी बडाई करना चाहता हू अपितु केवल जो सत्य बात थी वह लिख दी गई।

कवियो ने इस विजय की तारीख के विषय मे कविताओ की रचनायें की। एक तारीख मुझे याद रह गई है — बुद्धि ने उत्तर दिया, 'जान ले यह तारीख बाबर बहादुर के विजय की तारीख है।"

समरकन्द की विजय के उपरान्त, शादवार, सुगद तथा आस पास के तूमान एव किले एक एक करके मुझे प्राप्त होने लगे। कुछ किलो से ऊज़बेग हाकिम भय के कारण भाग गये; कुछ क़िलो मे से उनके निवासियो ने उन्हें निकाल दिया और मेरे पास चले आये। कुछ किलो मे ऊज़बेग हाकिम बन्दी बना लिये गये और हमारी ओर से किले की रक्षा करते रहे।

उसी समय शैबाक खा के परिवार वाले, उसकी पत्निया एव उसके ऊज़बेग तुर्किस्तान से आ गये। उन्होंने ख्वाजा दीदार तथा अलीआबाद के समीप पडाव किया किन्तु जब उसे ज्ञात हो गया कि क़िला हमे प्राप्त हो गया और किले वाले हमारे सहायक बन गये हैं तो वह बुखारा वापस चला गया। ईश्वर की कृपा से सुगद एव मियान काल के समस्त किले तीन-चार मास मे मुझे प्राप्त हो गये। इसके अतिरिक्त

बाकी तरखान ने इस अवसर से लाभ उठाकर करशी, खुज़ार तथा करशी[1] पर अधिकार जमा लिया और दोनो ऊजबेगो के हाथ से निकल गये। अबुल मुहसिन मीर्ज़ा[2] के आदमियो ने मर्व से आकर कराकूल पर अधिकार जमा लिया। मेरे कार्य भली-भाति सम्पन्न हो रहे थे।

बाबर की पुत्री का जन्म

(पिछले वर्ष) हमारे अन्दिजान से प्रस्थान के उपरान्त मेरी माताय, मेरी पत्निया तथा अन्य सबधी सैकडो कठिनाइया एव कष्ट भोगते हुये औरातीपा पहुचे। अब हमने उन्हे समरकन्द बुलवाया। उनके आने के थोडे दिन बाद आयेशा सुल्तान द्वारा, जो मेरी पहली पत्नी तथा सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पुत्री थी, मेरे एक पुत्री का जन्म हुआ। उसका नाम फख्रुन्निसा रक्खा गया। वह मेरी प्रथम सतान थी। उस समय मेरी अवस्था १९ वर्ष की थी। एक मास अथवा ४० दिन मे उसकी मृत्यु हो गई।

बाबर समरकन्द मे

समरकन्द पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त दूतो एव समाचार वाहको को खानो, सुल्तानो तथा बेगो के पास प्रत्येक दिशा मे सहायता प्रदान करने के विषय मे आग्रह करने के लिये भेजा गया। कुछ लोगो ने, यद्यपि वे अनुभवी थे, बडी मूर्खता से मना कर दिया। कुछ लोग, जिनके सम्बन्ध हमारे वश से अच्छे एव सतोषजनक न थे, अपने विषय मे चिन्तित थे अत वे मौन रहे। कुछ लोगो ने यद्यपि सहायता भेजी किन्तु वह अपर्याप्त थी। इनमे से प्रत्येक के विषय मे उचित स्थान पर उल्लेख किया जायेगा।

जब मैंने समरकन्द को दूसरी बार विजय किया तो अली शेर[3] बेग जीवित था। हमने उससे पत्र-व्यवहार किया। उसके नाम जो पत्र मेरी ओर से लिखा गया उसके पीछे मैंने अपना एक तुर्की शेर लिख दिया। उसका उत्तर आने के पूर्व अशान्ति एव झगडा प्रारम्भ हो गया था।[4] मुल्ला बीनाई को जब शैबाक खा ने समरकन्द विजय कर लिया था तो उसके समक्ष प्रस्तुत किया गया था। वह उसके साथ कुछ दिन तक रहा। जब मैंने शहर पर अधिकार जमा लिया तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। कासिम बेग को उसके प्रति सदेह था अत उसने उसे शहरे सब्ज़ की ओर भिजवा दिया किन्तु उसके योग्य तथा निरपराध होने के कारण उसे वापस बुलवा लिया। वह सर्वदा मेरी सेवा मे कसीदा[5] तथा गज़लें लाया करता था। वह नवा की प्रथानुसार मेरे नाम पर एक गीत बना कर लाया और एक रुबाई की भी रचना करके लाया।

१ सम्भवत केश, किन्तु बाद में केवल दो ही स्थानों का नाम लिखा गया है अत इस स्थान को बाबर काटना भूल गया होगा।
२ अबुल मुहसिन मीर्ज़ा बाईकरा।
३ अली शेर की मृत्यु ३ जनवरी १५०१ ई० में हुई।
४ यह बात स्पष्ट नहीं कि किस झगड़े तथा अशान्ति की ओर सकेत है कारण कि २० अप्रैल १५०२ ई० तक इस प्रकार की कोई बात पैदा न हुई थी। सम्भवत अली शेर बेग तथा मुल्ला बीनाई के झगड़ों की ओर सकेत है।
५ वह कविता जिसमें किसी की प्रशंसा हो।

रुबाई

"कोई गल्ला मेरे पास नही जिसे मैं खा सकू
न तो कोई "मल्ला" है जिसे पहिन सकू।
जिस आदमी के पास भोजन तथा वस्त्र न हो,
वह अपनी योग्यता एव विद्वता किस प्रकार प्रदर्शित कर सकता है?'

उन दिनो मे मैं जी बहलाने के लिये एक दो शेर की रचना कर लेता था किन्तु मैं गजल न पूरी कर सका था। मुल्ला बीनाई के उत्तर मे मैंने इस साधारण सी रुबाई की रचना की और उसके पास भेज दी —

रुबाई

"जो तुम्हारी हार्दिक इच्छा है, वही होगा,
उपहार तथा वृत्ति दोनो के लिये आदेश हो जायेगा।
तुमने जो 'गल्ला' तथा 'मल्ला' का उल्लेख किया है, उसे मैं समझता हू
तुम्हारे शरीर पर वस्त्र ही वस्त्र हो जायेगे और घर मे भोजन ही भोजन।"

मुल्ला बीनाई ने एक अन्य रुबाई की रचना करके मेरे पास भेजा। उसने इसमे मेरी बहर[1] का अनुसरण किया किन्तु अपनी रदीफ[2] का प्रयोग करके इसे दूसरी बहर मे कर दिया —

रुबाई

"मेरा मीर्जा, जमीन तथा समुद्र का स्वामी होगा,
वह अपनी योग्यता के लिये ससार मे प्रसिद्ध हो जायेगा।
यदि एक बिना अर्थ के शब्द का इनाम यह है,
तो फिर यदि मैं समझ बूझ कर कहता तो पता नही क्या मिलता।

अबुल बरका ने जिसका तखल्लुस[3] 'फिराकी' था और जो उसी समय शहरे सब्ज से समरकन्द आया था कहा कि बीनाई को उसी बहर मे इस प्रकार कहना चाहिये था —

रुबाई

"आकाश जो अत्याचार करता है उसके विषय मे पूछ-ताछ की जायेगी,
यह दानी सुल्तान उस की कुकृतियो का न्याय कर देगा।
हे साकी! यदि तूने अभी तक मेरा प्याला लबालब नही भरा है
तो अब इस बार वह लबालब भर जायेगा।"

इस शीत ऋतु मे मुझे अत्यधिक सफलता प्राप्त रही और शैबाक खा के कार्य पतनशील रहे। केवल दो एक दुर्घटनायें घटी।

१ शेर का वजन, वृत्त।
२ गजल में काफिये के बाद मे आने वाला शब्द अथवा शब्द समूह।
३ कवि का वह नाम जिसे वह अपनी कविता में लिखता है, उपनाम।

१ मर्व के आदमी, जिन्होने कराकूल पर अधिकार जमा लिया था, वहा न ठहर सके और वह पुन उज़बेगो के अधिकार मे आ गया।

२ शैबाक खा ने इबराहीम तरखान के छोटे भाई अहमद को दबूसी मे घेर लिया और उस स्थान पर अधिकार जमा कर वहा के निवासियों का सेना के एकत्र होकर पहुचने के पूर्व कत्ले आम करा दिया।

समरकन्द की विजय के समय मेरे साथ कुल २४० आदमी थे। बाद के ५-६ मास मे ईश्वर की कृपा से हमारी सेना की सख्या इतनी बढ गई कि हम लोग शैबाक खा सरीखे शत्रु से खुले मैदान म युद्ध कर सके जो लोग हमारे आस पास थे, उन्होने हमें निम्नाकित सहायता भेजी —

खान के पास से ४०००-५००० आदमी, अयूब बेगचीक तथा कश्का महमूद आये। जहागीर मीर्ज़ा की ओर से खलील तम्बल का छोटा भाई १००-२०० आदमियो सहित आया। सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा सरीखे अनुभवी बादशाह के पास से जिसे शैबाक खा की योजनाओ का पूर्ण ज्ञान था कोई भी न आया। बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा के पास से भी कोई न आया। खुसरो शाह जिसने हमारे वश को इतनी हानि पहुचाई थी, शैबाक खा की अपेक्षा हमसे अधिक डरता था।

बाबर का शैबाक खा के विरुद्ध प्रस्थान

शव्वाल मास[1] मे मैं समरकन्द से शैबाक खा के विरुद्ध युद्ध करने की इच्छा से निकला और बागे नव मे ५-६ दिन तक सेना एकत्र करने एव युद्ध की सामग्री जमा करने के लिये ठहरा रहा। हमने खाई एव वृक्षों की डालो से अपने शिविर की रक्षा कर ली। नव रोज़ बाग से एक पडाव के बाद दूसरा पडाव पार करते हुए हम सरे पुल की ओर बढे और वहा पडाव कर दिया। शैबाक खा दूसरी दिशा से अग्रसर हुआ और ख्वाजा कार्देज़न म लगभग एक यीगाच[2] की दूरी पर उतर पडा। हम लोग वहा ३-४ दिन पडाव किये रहे। रोज़ाना हमारे आदमी हमारी ओर से और उसके आदमी अपनी दिशा से अग्रसर होते और आपस मे झडप होती थी। एक दिन वे बडी अधिक सख्या मे आये और घोर युद्ध हुआ किन्तु किसी को भी विजय न प्राप्त हुई। उस युद्ध से हमारा एक आदमी खाई को बडे शीघ्र ही वापस हो गया। उसके पास पताका थी। कुछ लोगो का मत है कि वह सैयिदी करा बेग की पताका थी। वह वास्तव में बातें करने मे पक्का किन्तु तलवार चलाने मे कच्चा था। शैबाक खा ने हमारे ऊपर एक रात्रि मे छापा मारा किन्तु शिविर के चारो ओर खाई एव शाखाओ के कारण वह कोई सफलता प्राप्त न कर सका।

होने वाले युद्ध के लिये मैंने अत्यधिक परिश्रम किया और हर प्रकार की सावधानी पर ध्यान रक्खा। कम्बर अली ने भी अत्यधिक प्रयत्न किया। केश मे बाकी तरखान १०००-२००० आदमियो को लिये दो-चार दिन मे हमारे पास पहुच जाने के उद्देश्य से पडाव किये हुये था। दियूल मे ४ यीगाच दूर सैयिद मुहम्मद मीर्ज़ा दूगलात था जो मेरे खान दादा के पास से १०००-२००० आदमी लाया था। यह भी प्रात काल हमारे पास पहुच जाता। इस स्थिति के कारण हमने युद्ध करने मे जल्दी की।

शेर

'जो जल्दी में अपना हाथ तलवार की ओर बढाता है,
उसे पश्चाताप के कारण अपने हाथ को दातो से चबाना पडता है।'[3]

१ शव्वाल मास २० अप्रैल १५०१ ई० से प्रारम्भ हुआ।
२ लगभग ५ मील।
३ शेख सादी की 'बोस्ता' से उद्धृत।

युद्ध के लिये मेरे इतना इच्छुक होने का कारण यह था कि युद्ध के दिन ८ सितारे दोनो सेनाओ के मध्य मे थे। यदि उस दिन युद्ध न होता तो वे १३ या १४ दिन तक शत्रु के पीछे रहते। मैं अब समझ गया हू कि इन बातो का कोई मूल्य नही और हमारी जल्दी निराधार थी।

क्योकि हम युद्ध करना चाहते थे अत हम अपने शिविर से प्रात काल रवाना हो गये। हम कवच धारण किये थे। हमारे घोडो पर लोहे की झूल इत्यादि पडी थी। सेना को दायें, बायें, मध्य एव अग्र-भाग मे विभाजित करके पक्तिया ठीक कर दी गई थी। हमारी सेना के दायें भाग मे इवराहीम सारू, इवराहीम जानी, अबुल कासिम कोहबर, तथा अन्य बेग थे। हमारी सेना के बायें भाग मे मुहम्मद मजीद तरखान, इवराहीम तरखान, तथा अन्य समरकन्दी बेग, और सुल्तान हुसेन अरगून, करा बरलास, पीर अहमद तथा ख्वाजा हुसेन थे। कासिम बेग मेरे साथ मध्य भाग मे था तथा मेरे कई विश्वासपात्र एव घर के सैनिक मेरे साथ थे। अग्र भाग मे कम्बर अली सलाख, बन्दे अली, ख्वाजा अली, मीर शाह कूचीन सैयिद कासिम ईशक आका, बन्दे अली का छोटा भाई खलदार और हैदर कासिम का पुत्र कूच थे। उनके साथ अन्य उत्तम वीर तथा घर के सैनिक भी थे।

इस प्रकार पक्तिया सुव्यवस्थित करके हम अपने शिविर से अग्रसर हुये। सेना वाले भी अपनी पक्तिया सुव्यवस्थित करके अपनी ओर से आगे बढे। उसकी सेना का दाया भाग महमूद, जानी तथा तीमूर सुल्तान के और बाया भाग हमजा, महदी, तथा कुछ अन्य सुल्ताना के अधीन था। जब हमारी सेनायें एक दूसरे के सामने आई तो उसने अपनी सेना के दायें भाग को चक्कर लगवा कर हमारे पीछे पहुचा दिया। मुझे भी अपनी सेना की व्यवस्था मे परिवर्तन करना पडा। इसके कारण सेना का अग्र भाग जिसमे अनुभवी एव बहुत बडे-बडे सैनिक थे, दायें भाग की ओर हो गया और हमारे अग्र भाग की रक्षा के लिये मुश्किल से ही कोई रह गया। इसके बावजूद जिन लोगा ने सामने से आक्रमण किया हमने उनका मुकाबला किया और उन्हें उनके मध्य भाग की ओर पीछे ढकेल दिया। हम लोगो ने इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर ली कि शैबाक खा के अनुभवी सरदार यह राय देने लगे कि, "हमे चल देना चाहिये। अब ठहरने का समय नही रहा।" किन्तु वह दृढ रहा। शत्रु की सेना का दाया भाग इस बीच मे मेरी सेना के बायें भाग को बुरी तरह पराजित करके मेरी सेना के पीछे के भाग पर बुरी तरह आक्रमण करने लगा। जैसा कि कहा जा चुका है, हमारी सेना का अग्र भाग, कारण कि वे दायें भाग मे पहुच गये थे, खाली रह गया था। शत्रुओ ने हमारे ऊपर सामने एव पीछे से आक्रमण प्रारम्भ कर दिया और हमारे ऊपर बाणो की वर्षा करते रहे। अयूब बेगचीक की मुगल सेना हमारी सहायतार्थ पहुची किन्तु वह युद्ध के काम की न थी। उसने हमारे ही आदमियो को घोडो से गिराना तथा लूटना प्रारम्भ कर दिया। यह कार्य उन्होने केवल पहिले-पहल ही न किया था। इन अभागे मुगलो की यही प्रथा है। यदि वे जीतने लगते है तो वे तत्काल शत्रु को लूटने लगते हैं और यदि हारने लगते हैं तो अपनी ही ओर वालो को लूटना मारना प्रारम्भ कर देते है। हमने ऊजबेगो को जिन्होंने हमारे सामने के भाग पर कई कडे आक्रमण किये पीछे हटा दिया किन्तु जो लोग चक्कर लगाकर हमारी सेना के पीछे पहुच गये थे, वे हमारी पताका पर बाणो की वर्षा करते रहे। इस प्रकार आगे तथा पीछे से आक्रमण करके उन्होंने हमारे आदमियों को भगा दिया।

ऊज़बेको के युद्ध की विशेषता

युद्ध मे ऊजबेग लोग तूलग़मा पर बडा अधिक भरोसा रखते है। वे तूलग़मा की व्यवस्था के बिना युद्ध नही करते। उनके युद्ध की दूसरी विशेषता यह है कि वे सब, बेग तथा परिजन अग्रदल से पीछे के

दल वाले सभी, घोडो को सरपट भगाते बाणो की वर्षा करते हुये चिल्ला-चिल्ला कर आक्रमण करते है और यदि पराजित हो जाते हैं तो छिन्न-भिन्न नही होते अपितु सगठित होकर घोडो को सरपट भगाते निकल जाते है।

बाबर की पराजय

हमारे साथ १०-१५ आदमी रह गये थे। कोहिक नदी पास थी। मेरी सेना के दायें भाग का अन्तिम सिरा नदी पर था। हम शीघ्र नदी की ओर बढे। इस ऋतु मे नदी मे बाढ आ जाती है। हम नदी मे उतर गये। हम तथा घोडे कवच धारण किये थे। आधी दूर के उपरान्त नदी को तैर कर पार करना पडता था। एक बाण की दूरी तक हमें घोडो को इतने अधिक बोझ के बावजूद तैराना पडा। नदी से बाहर निकल कर हमने अपने घोडो के भारी सामान को पृथक् करके वही फेंक दिया। इस प्रकार नदी के उत्तरी तट पर पहुच कर हम अपने शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षित थे। सब लोगो से अधिक मुगूल लोग हमें घोडो से गिराने एव लूटने मे आगे-आगे रहे।[1] इबराहीम तरखान तथा कुछ अन्य उत्तम वीरो को मुगूलो ने घोडो से गिरा दिया और उनकी हत्या कर दी। हम लोग कोहिक नदी के उत्तरी तट पर होते हुए बढे और कुलबा के समीप उसे पुन पार करके मैं शहर मे शेखज़ादा द्वार से प्रविष्ट हुआ और भीतरी किले मे मध्याह्नोत्तर के मध्य मे प्रविष्ट हुआ।

हमारे बहुत बडे बडे बेग, सर्वोत्कृष्ट वीर तथा बहुत से आदमी उस युद्ध में नष्ट हो गये। इबराहीम तरखान, इबराहीम सारू तथा इबराहीम जानी मारे गये। यह बडी विचित्र बात है कि इबराहीम नामक तीन बडे बेग मार डाले गये। हैदर कासिम का ज्येष्ठ पुत्र अबुल कासिम कोहबर, खुदाई बीरदी तूगची तथा तम्बल का छोटा भाई खलील, जिनका कई बार उल्लेख हो चुका है, मार डाले गये। हमारे बहुत से आदमी विभिन्न दिशाओ मे भाग गये। मुहम्मद मज़ीद तरखान कुन्दूज तथा हिसार की ओर खुसरो शाह के पास चल दिया। कुछ घर के सैनिक एव वीर उदाहरणार्थ खुदाई बीरदी तुर्कमान का करीम दाद, जान का कूकूल्दाश तथा पशाग़र का मुल्ला बाबा औरातीपा की ओर भाग गये। मुल्ला बाबा उस समय मेरी सेवा मे न था अपितु अतिथि के रूप मे आया था। अन्य लोगो ने भी वही किया जो शेरीम तगाई तथा उसके सहायको ने किया। यद्यपि वह मेरे साथ शहर मे लौट आया था और जब सब लोगो से परामर्श किया गया तो उसने सब लोगो की भाति किले की दृढतापूर्वक रक्षा करने और लडने-मरने के लिये उद्यत रहने की राय दी थी किन्तु इसके बावजूद यद्यपि मेरी मातायें एव बडी-छोटी बहिनें समरकन्द मे थी, उसने अपनी पत्नियो एव परिवार वालो को औरातीपा भेज दिया और केवल स्वय कुछ साधारण सैनिको के साथ ठहरा रहा। उसने केवल इसी अवसर पर यह तुच्छ कार्य नही किया अपितु समस्त कठिनाइयो एव खतरो के अवसरो पर वह इसी प्रकार के कार्य करता चला आया है।

१ एल्फिन्स्टन की पोथी में यह शेर सम्भवतः हुमायूँ के हाथ का लिखा हुआ है —
"यदि मुगुल कौम कहीं फ़िरिश्तों के रूप में हों तो भी बुरे होंगे,
यदि मुगुलों का नाम सोने के अक्षरों में भी लिखा हो तो बुरा होगा।
मुग़ूलों के खेत से एक बाली भी मत तोड़ो,
जो भी मुगूलों के बीज से बोया जायगा, वह बुरा होगा।"

बाबर का समरकन्द में घिर जाना

दूसरे दिन मैंने ख्वाजा अबुल मकारिम, कासिम तथा अन्य बेगो, घर के सैनिको तथा उन वीरो को जो परामर्श हेतु बुलाये जाया करते थे बुलवाया। हमने निश्चय किया कि हम किले की दृढ़तापूर्वक रक्षा करेंगे और वहा जान की बाज़ी लगा देंगे। कासिम बेग तथा मेरे विश्वास-पात्र एव घर के सैनिक सुरक्षित सेना मे रक्खे गये। मैंने सुविधा हेतु शहर के मध्य मे उलूग बेग मीर्ज़ा के मदरसे की छत पर खेमे लगवा कर स्थान ग्रहण किया। अन्य बेगो तथा वीरो को फाटको एव बाहरी किले की चहार दीवारियो पर स्थान प्रदान किये गये।

दो-तीन दिन उपरान्त शैबाक खा ने किले से कुछ दूर पडाव किया। इस पर शहर के सर्व साधारण गलियो एव मुहल्लो से, भीड की भीड, मदरसे के द्वार पर पहुच कर मेरे प्रति शुभ कामनायें करने एव शोर-गुल मचाने लगे। शैबाक खा घोडे पर सवार हो गया था किन्तु शहर के समीप तक न पहुच सका। बहुत दिन इस प्रकार व्यतीत हो गये। सर्वसाधारण को बाण तथा तलवार का कोई अनुभव न था और न उन्हें किसी आक्रमण के विषय मे कुछ ज्ञात था अत इन घटनाओ से उनके साहस मे वृद्धि हो गई और वह बहुत आगे बढ-बढ कर छापे मारने लगे। यदि सेना के जवान उन्हें इस प्रकार असावधानी से अग्रसर होने पर रोकते तो वे लोग उन्हे बुरा भला कहते थे।

एक दिन जब शैबाक खा ने लोहे के फाटक की ओर आक्रमण किया तो सर्वसाधारण पिछली घटनाओ से प्रोत्साहित होकर बडे साहस से दूर तक बढते चले गये। उनकी वापसी की देख भाल के लिये मैंने कुछ जवानो को शुत्रगर्दन की ओर भेजा। कूकूल्दाश लोग, कुछ विश्वासपात्र उदाहरणार्थ नुयान कूकूल्दाश, कुल नजर, तगाई बेग तथा मजीद रवाना हुये। दो-एक ऊज़बेग घोडे बढा कर उन लोगो की ओर बढे और कुल नजर से तलवार द्वारा युद्ध किया। शेष ऊज़बेग लोग घोडो से उतर पडे और सर्व साधारण पर कडा आक्रमण किया और उन्हें पीछे हटा कर लोहे के फाटक के भीतर ढकेल दिया। कूच बेग तथा मीर शाह कूचीन ख्वाजा खिज्र की मस्जिद की ओर उतर कर युद्ध कर रहे थे। जिस समय ऊज़बेग प्यादे शहर के सर्व साधारण को पीछे हटा रहे थे, ऊज़बेग अश्वारोहियो का एक दस्ता मस्जिद की ओर बढा। जब ऊज़बेग निकट पहुचे तो कूच बेग ने आगे बढकर उनसे युद्ध किया। उसने बडा पराक्रम दिखाया और सब लोग देखते रहे। जो लोग भागे आ रहे थे उनके हाथ से बाण चलाने एव डट कर मुकाबला करने का अवसर हाथ से निकल चुका था। मैं फाटक के ऊपर से बाण चला रहा था और जो लोग मेरे साथ थे, वे भी बाण चलाते रहे। ऊपर से बाणो की इस वर्षा से शत्रु लोग ख्वाजा खिज्र की मस्जिद की ओर अग्रसर न हो सके और उन्हें पीछे हटना पडा।

अवरोध के समय प्रत्येक रात्रि मे बाहरी किले की चहारदीवारी का पहरा दिया जाया करता था। कभी मैं (इस कार्य हेतु जाता) था, कभी कासिम बेग और कभी कोई घर का बेग। फीरोज़ा द्वार से शेखज़ादा द्वार तक तो घोडे पर सवार होकर जा सकते थे किन्तु शेष मार्ग पैदल चलना पडता था। जब कुछ लोग बाहरी किले की चहारदीवारी का चक्कर लगाने जाते तो पूरे किले का चक्कर लगाते-लगाते सुबह हो जाती।

एक दिन शैबाक खा ने लोहे के फाटक तथा शेखज़ादो के फाटक के मध्य मे आक्रमण किया। क्योकि मैं सुरक्षित सेना मे था अत मैं बिना गाज़ेरिस्तान[1] तथा सुई बनाने वालो के फाटक की चिन्ता

[1] सम्भवत धोबियों के रहने का मुहल्ला।

लिये हुये उस स्थान पर पहुच गया। उस दिन मैं एक खाकी घोडे[1] पर सवार था और एक पतली धनुष से खूब बाण चला रहा था। वह तत्काल बाण द्वारा मारा गया। शत्रुओं ने इस बार इतना घोर आक्रमण किया कि वे चहारदीवारी के बिल्कुल नीचे तक पहुच गये। लोहे के फाटक के समीप युद्ध मे अत्यन्त व्यस्त होने के कारण हम शहर की अन्य दिशाओं की ओर कोई ध्यान न दे रहे थे। सुई बनाने वालो के फाटक तथा गाज़ेरिस्तान के मध्य की भूमि मे शत्रुओ ने ७००-८०० बडे अच्छे आदमी छिपा रक्खे थे। उनके पास २४-२५ इतनी चौडी सीढ़िया थी कि उनके द्वारा दो-तीन आदमी चढ सकते थे। यह स्थान उस जगह था जहा चहारदीवारी से एक मार्ग मुहम्मद मज़ीद तरखान के घर जाता है। उस स्थान पर कूच बेग तथा मुहम्मद मज़ीद तरखान अपने वीरो सहित नियुक्त थे और मुहम्मद मज़ीद के घर मे ठहरे थे। सुई बनाने वाला के फाटक मे करा बरलास, गाज़ेरिस्तान मे कूतलूक ख्वाजा कूकूल्दाश, शेरीम तगाई तथा उसके बडे और छोटे भाई नियुक्त थे। क्योंकि शहर की दूसरी ओर आक्रमण हो रहा था, इन चौकियो के आदमी सावधान न थे अपितु अपने-अपने स्थाना एव बाज़ारो को अन्य आवश्यक कार्यों के लिये चले गये थे। केवल बेग लोग अपने अपने स्थान पर एक-दो सर्वसाधारण के साथ थे। कूच बेग, मुहम्मद कूली, शाह सूफी तथा एक अन्य वीर ने बडी वीरता का प्रदर्शन किया। कुछ उज़्बेग चहारदीवारी पर चढ आये थे, कुछ चढ रहे थे कि ये चारो आदमी उस स्थान पर पहुच गये और शत्रुओ पर निरन्तर प्रहार करके उन सब को भगा दिया। कूच बेग ने सबसे अधिक वीरता दिखाई। इस अवसर पर उसने अत्यधिक पराक्रम दिखाया और बडी योग्यता से सेवा की। इस अवरोध के समय उसने दो बार बडी ही उत्तम सेवायें की। करा बरलास सुई बनाने वालो के फाटक मे अकेला रह गया था। वह भी अन्त तक भली-भाति दृढ रहा। कूतलूक ख्वाजा तथा कुल नज़र मीर्ज़ा गाज़ेरिस्तान द्वार मे अपने-अपने स्थानो पर थे। वे भली भाति दृढ रहे और उन्होने शत्रुओ की सेना के पीछे के भाग पर आक्रमण किया।

एक बार कासिम बेग ने अपने वीरो सहित सुई बनाने वालो के फाटक से निकल कर ऊज़बेगो का ख्वाजा कफ़शेर तक पीछा किया। कुछ लोगो को घोडो से गिरा दिया और कुछ लोगो के सिर काट कर लौट आया।

अब अनाज पकने का समय आ गया था किन्तु कोई भी शहर मे नया गल्ला न लाया। अवरोध दीर्घ काल तक खिच जाने से शहर वालो को अनाज की कमी के कारण अत्यधिक कष्ट भोगने पडे यहा तक कि लोग कुत्तो तथा गधा का मास खाने पर विवश हो गये। घोडा को दाने के अभाव के कारण पत्तिया खिलानी पडती थीं। अनुभव से यह ज्ञात था कि शहतूत तथा देवदार की पत्तिया बडी अच्छी होती हैं। कुछ लोग वृक्षो की छाल उतार उतार कर और उन्हें भिगो कर घोडो को खिलाने लगे।

तीन चार मास तक शैबाक खा किले के समीप न आया अपितु इसका दूर से अवरोध कराके स्वय एक चौकी से दूसरी चौकी मे घूमा करता था। एक दिन जब आधी रात मे हमारे आदमी सावधान न थे शत्रु फीरोजा द्वार तक पहुच गये और नक्कारे बजा-बजा कर युद्ध के नारे लगाने लगे। मैं मदरसे मे था और कपडे न पहिने था। बडी चिन्ता एव परेशानी फैल गई। इसके उपरान्त वे हर रात मे नक्कारे बजाते और युद्धनाद लगाते पहुच जाते और हमें परेशान करते।

यद्यपि दूत एव समाचार वाहक प्रत्येक दिशा मे भेजे गये किन्तु कही से सहायता एव कुमक न प्राप्त हुई। जिस समय मुझमें पूरी शक्ति थी उस समय भी कही से सहायता न प्राप्त हुई थी तो अब

१ 'यक आतलीक अथवा सद अस्पगी।'

कोई मेरी किस प्रकार सहायता करता ? क्योकि हमे कही से सहायता मिलने की आशा न थी अत अवरोध का अधिक समय तक मुकाबला न किया जा सकता था। एक प्राचीन लोकोक्ति है कि किले की रक्षा हेतु एक सिर दो हाथ एव दो पाव होने चाहिये अर्थात् सेनापति सिर है दो दिशाओ की कुमक दो हाथ हैं, और किले का अन्न-जल दो पाव हैं। जिन आस पास के लोगो से हमे सहायता की आशा थी उनके विचार ही कुछ और थे। सुल्तान हुसेन मीर्जा सरीखे अनुभवी एव वीर बादशाह ने हमारे प्रोत्साहन हेतु कोई सदेश तक न भेजा। इसके विपरीत उसने कमालुद्दीन हुसेन गाजुर गाही को शैबाक खा के पास दूत के रूप मे भेजा।

तम्बल और फरगाना

इस वर्ष तम्बल ने अन्दिजान से बीशकीन्त की ओर प्रस्थान किया। अहमद बेग तथा उसके सहायको ने खान को उसके विरुद्ध प्रस्थान करने पर विवश कर दिया। दोना सेनाओ का आमना सामना लक-लकान तथा तूराक के चारबाग मे हुआ किन्तु वे बिना युद्ध किये पृथक् हो गये। सुल्तान महमूद युद्ध करने वाला आदमी न था। तम्बल के मुकाबले के समय उसने कर्म एव वचन दोनो मे कायरता प्रदर्शित की। अहमद बेग मे शिष्टाचार की कमी थी किन्तु वह वीर एव निष्ठावान था। उसने अपन भद्दे तरीके से कहा, "यह तम्बल क्या कर सकता है कि आप लोग उससे इतना भयभीत एव डरे हुये हैं ? यदि आप लोगो मे उसकी ओर देखने का साहस नही है तो युद्ध मे जाने के पूर्व आखो पर पट्टिया बाध लीजिये।"

९०७ हि०

(१७ जुलाई १५०१ से ७ जुलाई १५०२ ई०)

शैबानी को समरकन्द समर्पित करना

अवरोध मे अधिक समय लग गया। रसद तथा खाद्य सामग्री किसी दिशा से भी न प्राप्त हो सकी और कुमक तथा सहायता किसी ओर से न पहुच सकी। सैनिक तथा प्रजाजन निराश होकर एक-एक, दो-दो करके किले से निकल कर भागने लगे। शैबाक खा ने किले वालो की कठिनाइयो से अवगत होकर गारे आशिका के समीप पडाव कर दिया, मैं भी शैबाक खा के सामने कूये पायान मे मलिक मुहम्मद मीर्जा के घरो मे पहुचा। उन्ही दिनो मे से किसी दिन ख्वाजा हुसेन का भाई ऊज़ून हसन अपने १०-१५ सेवको सहित पहुच कर किले म प्रविष्ट हो गया। ऊज़ून हसन के कारण ही जहागीर मीर्जा ने विद्रोह किया था और उसी की वजह से मुझे समरकन्द मे निकलना पडा था।[1] उसने न जाने कितनी कृतघ्नता और कितना षड्यन्त्र प्रदर्शित किया था। उसका पहुचना वास्तव मे बडी धृष्टता का कार्य था।

सैनिको तथा नागरिको की दुर्दशा बढती गई। मेरे विश्वासपात्र तथा प्राचीन सेवक किले की दीवार से फाद-फाद कर बाहर भागने लगे। उन्ही मे से पीर वैस, शेख वैस तथा वैस लागरी भी थे हमें किसी ओर से भी कुमक मिलने की आशा न रही। वास्तव मे रसद तथा खाद्य सामग्री की बडी दुर्दशा हो गई। जो समाप्त हो जाता उसके स्थान पर किसी ओर से कोई खाद्य सामग्री तथा रसद न पहुच रही थी। इसी बीच मे शैबाक खा ने सधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। यदि किसी ओर से भी आशा होती अथवा खाद्य सामग्री आ जाने की उम्मीद होती तो सन्धि के प्रस्ताव पर कोई ध्यान न दिया जाता किन्तु आवश्यकतावश सन्धि करके लगभग आधी रात के समय शेखज़ादा द्वार से हम लोग नगर के बाहर चले गये।

बाबर का समरकन्द से प्रस्थान

मैं अपनी माता खानम को लेकर चल खडा हुआ। दो अन्य स्त्रिया भी साथ होली। उनमे से एक बीशकाये खलीफा तथा दूसरी मीगलीक कूकूलदाश थी। इसी प्रस्थान के समय मेरी बडी बहिन खानज़ादा बेगम शैबाक खा के हाथो मे पड गई।[2] रात्रि के अधेरे मे हम मार्ग भूल गये और मुगद की नहरो के समीप भटकते रहे। प्रातःकाल सैकडो कठिनाइयो के उपरान्त हम ख्वाजा दीदार को पार कर सके। सुन्नत की नमाज़ के समय हम करावूग नामक पुश्ते पर पहुचे। करावूग पुश्ते के उत्तर की

१ ९०३ हि० (मार्च १४९८ ई०) में।

२ इस स्थान पर बाबर का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन बड़ा भ्रमात्मक है। वास्तव में खानज़ादा का विवाह बाबर ने संधि हेतु अपनी तथा अपनी माता की इच्छा से किया था। 'शैबानी नामा' में इस विवाह का बड़ा सविस्तार वर्णन दिया गया है।

ओर जुद्दुक नामक स्थान के नीचे नीचे होते हुए ईलान ऊती की ओर चल खडे हुये। मार्ग मे मैंने कम्बर अली एव कासिम बेग के साथ घोडा दौडाया। मेरा घोडा आगे निकल गया। मैंने यह देखने के लिये कि उनके घोडे कितना पीछे रह गये है पीछे घूम कर देखा। मेरे घोडे का तग ढीला हो गया था, जीन ढीली हो गई। मैं सिर के बल भूमि पर गिर पडा। यद्यपि मैं तत्काल उठकर सवार हो गया किन्तु रात्रि तक मेरी बुद्धि ठिकाने न रही। यह दशा तथा पिछली घटनायें मेरी आखो के सामने स्वप्न के समान घूमती रही। मध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त हमने ईलान ऊती मे पडाव किया। वहा हमने एक घोडे को ज़िबह करके उसके मास के कबाब बनाये। थोडी देर के लिये घोडो को आराम दिया। तदुपरान्त सवार होकर प्रात काल के पूर्व खलीला नामक ग्राम म पहुचे और वहा उतर पडे। खलीला से हम दीज़क पहुचे।

उन दिनो दीज़क मे हाफिज मुहम्मद दूल्दाई का पुत्र तथा ताहिर थे। वहा उत्तम मास तथा मैंदे की रोटी, मीठे खरबूजो तथा उत्तम अगूरो की बहुतायत थी। उसकी दरिद्रता के उपरान्त इतनी समृद्धि एव उतनी कठिनाई के पश्चात् इतना सुख प्राप्त हो गया।

शेर

"भय तथा भूख से हमे आराम प्राप्त हो गया,
नये ससार का नया जीवन हमे मिल गया।
हमारे मस्तिष्क से मौत के भय का अन्त हो गया,
हमारे आदमियो की भूख का कष्ट समाप्त हो गया।'

हमे अपने जीवन-काल मे इतना सतोष कभी न प्राप्त हुआ था। पूरे जीवन मे शान्ति तथा अल्प मूल्यता के महत्व का इतना अनुभव न हुआ था। कठिनाई के उपरान्त जब सुख एव परिश्रम के उपरान्त जब निश्चिन्तता प्राप्त होती है तो बडा आनन्द आता है। चार पाच बार मुझे इसी प्रकार कठिनाई के उपरान्त सुख एव परिश्रम के उपरान्त निश्चिन्तता प्राप्त हुई।[1] प्रथम शान्ति यही थी। इतने बडे शत्रु के कष्ट तथा भूख की परेशानी से मुक्त हो कर हमे सुख शान्ति एव निश्चिन्तता प्राप्त हो गई।

बाबर दिखकत मे

दीज़क मे तीन चार दिन विश्राम करने के उपरान्त हमने औरातीपा की ओर प्रस्थान किया। पशागर, मार्ग से कुछ हट कर है। क्योकि हम उसे कुछ समय तक अपने अधिकार मे रख चुके थे[2] अत उधर से जाते हुए हमने उसकी सैर की। पशागर के किले मे एक अध्यापिका जो बहुत समय तक मेरी माता खानम की सेविका रह चुकी थी और इस बार घोडे के न होने के कारण समरकन्द मे रह गई थी अचानक मिल गई। मैंने उसके पास जाकर उसके विषय मे पूछा तो पता चला कि वह समरकन्द से, इस स्थान तक पैदल आई थी।

१ दूसरी बार ६०८ हि० (१५०२-३ ई०) में, तीसरी बार ६१४ हि० (१५०८-९ ई०) में, चौथी बार जिसका बाबर नामा में उल्लेख नहीं ६१८ हि० (१५१२-१३ ई०) में ग़जदीवान की पराजय के उपरान्त और पाचवीं बार ९३३ हि० (१५२७ ई०) में विष से बच जाने पर प्रसन्नता हुई।
२ ६०४ हि० (१४९८-९९ ई०)।

मेरी माता खानम की छोटी बहिन खूब निगार खानम इस नश्वर ससार से बिदा हो चुकी थी। यह समाचार भी हमे औरातीपा मे ही पहुचाये गये। मेरे पिता की माता की भी अन्दिजान मे मृत्यु हो चुकी होगी। यह समाचार भी हमे औरातीपा मे ही मिले। खानम ने मेरे (नाना) खान बाबा, यूनुस खा के निधन के उपरान्त अपनी (सौतेली) माता भाई एव बहिनो उदाहरणार्थ (क्रमश) शाह बेगम, सुल्तान महमूद खा, सुल्तान निगार खानम तथा दौलत सुल्तान खानम से भेंट न की थी। उनको पृथक् हुये १३-१४ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। इन सम्बन्धियो से भेंट करने के लिये वह ताशकीन्त की ओर रवाना हुई।

मैने मुहम्मद हुसेन मीर्जा से परामर्श के उपरान्त दिखकत नामक स्थान पर, जो औरातीपा के अधीन है, शीत ऋतु व्यतीत करना निश्चय किया। भारी सामान दिखक्त मे छोडकर, कुछ दिन उपरान्त मैंने शाह बेगम, अपने खान दादा तथा अन्य सम्बन्धियो से भेंट करने के उद्देश्य से ताशकीन्त की ओर प्रस्थान किया। वहा पहुचकर मैंने शाह बेगम तथा अपने खान दादा से भेंट की। वहा मैं कुछ दिन तक ठहरा रहा। मेरी माता की सगी बडी बहिन मिहर निगार खानम[1] भी समरकन्द से आ गई थी और ताशकीन्त मे थी। मेरी माता खानम रुग्ण हो गई और रोग बहुत बढ गया। उन्हे बडे खतरो का सामना करना पडा।

हजरत ख्वाजगाने ख्वाजा समरकन्द से किसी न किसी प्रकार निकल कर फरकत मे निवास करने लगे थे। मैंने वहा जाकर उनसे भेंट की। मुझे आशा थी कि मेरे खान दादा मेरे ऊपर कृपा तथा मेरी सहायता हेतु कोई विलायत अथवा कोई परगना प्रदान कर देगे। उन्होने औरातीपा प्रदान करने का वचन दिया। किन्तु मुहम्मद हुसेन मीर्ज़ा ने उसे न दिया। पता नही उसने स्वय नही दिया अथवा उनकी ओर से कोई सकेत पा गया। वहा (औरातीपा मे) कुछ दिन ठहर कर मैं दिखक्त पहुचा।

दिखकत

दिखक्त पर्वतीय प्रदेश मे स्थित है। पर्वत के नीचे दूसरी ओर माचा नामक प्रदेश है। यहा के निवासी यद्यपि फारसी भाषा भाषी ताजीक है और ग्राम मे निवास करते हैं किन्तु तुर्कों के समान चरवाहे तथा गडरिया के समान है। दिखक्त मे लगभग ४०,००० भेडें होगी। इस ग्राम मे हम किसानो के घरो मे ठहरे। मैं ग्राम के एक सरदार के घर मे ठहरा। वह ७०-८० वर्ष का वृद्ध था। उसकी माता भी जीवित थी। उसकी अवस्था १११ वर्ष की थी। उसका कोई सम्बन्धी तीमूर बेग के साथ उसके हिन्दुस्तान[2] के आक्रमण के समय उसकी सेना मे था। उसे यह बात याद थी। कभी कभी वह इस विषय म वार्तालाप करती थी। दिखक्त ही मे उसकी सन्तान के ९६ व्यक्ति वर्तमान थे, उसके पुत्र, पौत्र के पुत्र तथा पौत्र के पौत्र। उसकी सन्तान मे से २०० व्यक्तियो की मृत्यु हो चुकी थी। उसके पौत्र के पौत्र की अवस्था २५ अथवा २६ वर्ष थी। उसके काली दाढी थी। जिन दिनो मैं दिखक्त मे था तो दिखक्त के पर्वता के आस पास पैदल यात्रा करने जाया करता था। अधिकाश मैं नगे पाव भ्रमण किया करता था जिसके कारण मेरे पाव ऐसे सख्त हो गये थे कि उनपर पत्थर तथा चट्टान का कोई प्रभाव न होता था। इसी भ्रमण के समय मध्याह्नोत्तर तथा सायकाल की नमाज़ के मध्य मे एक सकरे मार्ग पर एक

१ शैबानी खा ने खानज़ादा से विवाह करने के लिये उसे तलाक़ दे दिया था।
२ १३९८-९९ ई० मे।

गाय जाती दिखाई पडी। मैंने कहा "यह मार्ग कहा तक जाता है ? गाय पर दृष्टि रक्खो और किसी ओर दृष्टि न हटाओ यहा तक कि मार्ग के विषय मे तुम्हे ज्ञात हो जाये।" ख्वाजा असदुल्लाह ने परिहास करते हुये कहा, "यदि गाय मार्ग भूल जाये तो फिर हम क्या करे ?"

जहाँगीर मीर्जा तथा तम्बल को उपहार

शीत ऋतु मे मेरे कुछ सिपाहियो ने, इस कारण कि वे धावो मे हमारा साथ न दे सकते थे, अन्दिजान जाने की अनुमति मागी। कासिम बेग ने आग्रह किया, "क्याकि ये लोग जा रहे है अत जहागीर मीर्जा को आप अपने वस्त्रो मे से विशेष रूप से कोई वस्तु भेज दें।" मैंने अपनी रोवदार टोपी भेज दी। कासिम बेग ने पुन आग्रह किया कि, "यदि आप कोई वस्तु तम्बल को भी भेज दें तो कोई आपत्ति न होगी।" यद्यपि मेरी इच्छा न थी किन्तु उसके आग्रह पर मैने तम्बल का एक बडी तलवार जिसे नुयान कूकूलदाश ने अपने लिये समरकन्द मे बनवाया था, भेज दी। जैसा कि अगले वर्ष के वृत्तात में उल्लेख किया जायेगा, यही तलवार मेरे सिर पर लगी।

ईसान दौलत बेगम का आगमन

कुछ दिन उपरान्त, मेरी बडी माता, (नानी) ईसान दौलत बेगम, जो मेरे समरकन्द से प्रस्थान करते समय वही रह गई थी, हमारे परिवार, बचे खुचे सामान तथा कुछ दुर्बल एव भूखे आदमियो सहित दिखकत मे पहुची।

शैबाक खाँ का खान के राज्य मे आक्रमण

उस वर्ष शीत ऋतु मे शैबाक खा ने खुजन्द नदी बरफ पर होकर पार की और शाहरुखिया तथा बीशकीन्त के समीप के स्थानो मे लूटमार की। इस समाचार को पाते ही हमने अपनी सख्या की कमी पर ध्यान दिये बिना शीघ्रातिशीघ्र सवार होकर हश्त यक के समक्ष खुजन्द के नीचे के स्थानो की ओर प्रस्थान किया। कडाके का जाडा पड रहा था। पूरे समय हा दरवेश की वायु से कम गति की वायु न चल रही होगी। ठडक इतनी अधिक थी कि उन्ही दो-तीन दिनो मे जाडे की अधिकता के कारण कई आदमी मृत्यु को प्राप्त हो गये। मुझे स्नान की आवश्यकता थी। मैं एक नहर पर पहुचा जिसके किनारो का जल जमकर बरफ बन गया था किन्तु बीच का जल, नहर की तीव्रगति के कारण बरफ न बना था। उस जल मे प्रविष्ट होकर मैंने स्नान किया। १६ बार जल मे डुबकी लगाई। जल की ठडक मेरे शरीर में घुस गई। दूसरे दिन प्रात काल हम लोगो ने खासलार के सामने से खुजन्द नदी बरफ पर मे होकर पार की। नदी पार करके रात्रि में यात्रा करते हुये हम बीशकीन्त पहुचे। शैबाक खा, शाहरुखिया के समीप के स्थानो पर लूट मार करके तत्काल वापस चला गया होगा।

नुयान कूकूलदाश की मृत्यु

उन दिनो बीशकीन्त मुल्ला हैदर के पुत्र अब्दुल मिनआन के अधीन था। उसका एक छोटा पुत्र मूमिन बडा ही अयोग्य तथा चरित्रहीन व्यक्ति था। जिस समय मैं समरकन्द मे था, वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ था, और मैंने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की थी। मुझे यह ज्ञात नही कि नुयान कूकूलदाश ने उसके प्रति क्या दुर्व्यवहार किया था जो यह गुदा मैथुन करने वाला उससे ईर्ष्या रखता था। जब हमे ऊजबेगो के पलायन के समाचार प्राप्त हुये तो हमने खान के पास आदमी भेजकर बीशकीन्त से

प्रस्थान कर के आहनगरान नामक स्थान पर तीन चार दिन तक पडाव किया। समरकन्द के परिचय के कारण मुल्ला हैदर के पुत्र मूमिन ने नुयान कूकूल्दाश, अहमदे कासिम तथा कुछ अन्य व्यक्तियो को भोजन के लिये आमत्रित किया। मेरे बीशकीन्त से प्रस्थान करने पर वे लोग वही रुक गये। मूमिन ने इन लोगो की दावत एक गहरी कन्दरा के किनारे पर की। हमने वहा से प्रस्थान कर के आहनगरान के अधीनस्थ सामसीरक नामक स्थान पर पडाव किया। दूसरे दिन प्रात काल समाचार प्राप्त हुए कि नुयान कूकूल्दाश मस्ती मे कन्दरा के किनारे से गिर कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। हमने उसकी माता के भाई, हक नज़र तथा कुछ अन्य लोगों को भेजा जिन्होने उस स्थान का जहा वह गिरा था पता लगाया और उसकी लाश को बीशकीन्त मे दफन कर के लौट आये। उन लोगो को नुयान की लाश कन्दरा के किनारे से जहा दावत का आयोजन हुआ था, एक बाण की दूरी पर नीचे की ओर मिली थी। कुछ लोगो को सन्देह हुआ कि मूमिन ने इस कारण कि समरकन्द मे वह नुयान के प्रति ईर्ष्या रखने लगा था उसकी हत्या करा दी। किसी को तथ्य का ज्ञान नही। मेरे ऊपर उसकी मृत्यु का बडा प्रभाव पडा। मैं किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु से बहुत कम इतना प्रभावित हुआ था। ८-१० दिन तक मैं विलाप करता रहा। उसकी मृत्यु की तिथि का वाक्य "फौत शुद नुयान"[1] है।

शैबाक खा का औरातीपा पर आक्रमण

बहार के आते ही शैबाक ख़ा के औरातीपा पर आक्रमण के समाचार लोगो मे प्रसिद्ध होने लगे। दिखक्त की भूमि के समतल होने के कारण हमने आब बुरदन[2] दर्रे को सुगमतापूर्वक पार कर लिया और माचा के पर्वतीय प्रदेश मे प्रविष्ट हो गये। आब बुरदन माचा का अन्तिम ग्राम है। इस आब बुरदन के नीचे एक झरना है जिसका जल नीचे की ओर जर अफशा मे पहुचता है। झरने का ऊपरी भाग माचा में सम्मिलित है। नीचे का भाग पलगर से सम्बन्धित है। इस झरने के बगल मे एक मकबरा है। मैंने वहा की चट्टान पर ये तीन शेर खुदवा दिये —

शेर

'मैंने सुना है कि प्रतापी जमशेद ने,[3]
एक झरने के ऊपर एक चट्टान पर खुदवा दिया।
हमारे सरीखे अनेक व्यक्तियो ने इस झरने पर सास ली है,
और पलक झपकाते उनका अन्त हो गया।
हमने ससार पर वीरता तथा शक्ति द्वारा अधिकार प्राप्त किया,
किन्तु हम उसे कब्र मे न ले जा सके।"

उस पर्वतीय प्रदेश म यह प्रथा है कि पत्थरो पर शेर तथा अन्य लेख खुदवा दिये जाते हैं। जब म माचा ही मे थे, तो मुल्ला हिजरी नामक कवि हिसार से आकर मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। उस मय मैंने निम्नाकित शेर की रचना की —

१ 'नुयान मर गया'।
२ आब बुरदन ग्राम ज़र अफ़शा पर समुद्र से ११२०० फ़ीट की ऊँचाई पर है।
३ सादी की 'बोस्तान' से, अन्तिम शेर 'गुलिस्तान' में भी है।

शेर

"तुम्हारा चित्त तुम्हे इससे अधिक भ्रम मे न डाल दे कि तुम इससे अधिक हो,
लोग तुम्हे अपने प्राण कहते हैं, प्राण से अधिक तुम नि सन्देह हो।"

औरातीपा मे लूट मार करके शैबाक खा वापस चला गया। जब वह वहा था तो हमने अपने आदमियो की सख्या तथा अस्त्र-शस्त्र की कमी पर ध्यान न देते हुये, माचा मे खेमे तथा असबाब छोड कर, आब बुरदन दर्रा पार किया और दिखकत इस आशय से पहुचे कि हम सब लोग निकट ही रहे और किसी अवसर को आने वाली रातो मे हाथ से जाने न दें। शैबाक खा स्वय सीधा वापस चला गया और हम लोग माचा लौट आये।

बाबर का ताशकीन्त की ओर प्रस्थान

मैंने सोचा कि इस प्रकार बिना किसी घर बार, देश अथवा निवास स्थान के पर्वतो म मारे मारे फिरने से कोई लाभ नही। मैंने सोचा कि, खान के पास चला जाना उचित होगा। कासिम बेग वहा जाने पर राज़ी न था कारण कि जैसा कि उल्लेख हो चुका है उसने शासन प्रबन्ध तथा सुव्यवस्था की दृष्टि मे करा बूलाक मे मुग्लो की हत्या करा दी थी। सम्भवत वह इसी लिये वहा जाने मे सकोच कर रहा था। मैंने यद्यपि बहुत आग्रह किया किन्तु उसने हमारा साथ न दिया और अपने भाइया, अन्य छोटे-बडे लोगा तथा अपने समस्त सम्बन्धियो एव सहायको सहित हिसार की ओर चल दिया। हम आब बुरदन दर्रे को पार करके ताशकीन्त मे खान की सेवा मे चल दिये।

बाबर खान के साथ

जिन दिनो मे तम्बल अपनी सेना लेकर आहनगरान की घाटी मे प्रविष्ट हुआ था तो उसकी सेना के विशेष लोगो मे से मुहम्मद दूगलात जो हिसारी के नाम से प्रसिद्ध था और उसके अनुज हुसेन दूगलात तथा कम्बर अली सिलाख ने सगठित हो कर तम्बल की हत्या का प्रयत्न किया। तम्बल को जब इस बात का पता चला तो वे लोग उसके पास न ठहर सके और भाग कर खान के पास चले गये।

ईदे कुर्बान[1] हमने शाहरुखिया मे व्यतीत की। वहा विलम्ब किये बिना मैं ताशकीन्त खान के पास पहुचा।

मैंने एक रुबाई की रचना की थी। मुझे उसके विषय मे सन्देह था कारण कि मैंने उस समय कविताओ के मुहावरो का उतना अध्ययन न किया था जितना अब कर लिया है। खान को कविता मे रुचि थी और वह कवितायें लिखता था, यद्यपि उसकी गज़लें अच्छी न थीं। मैंने रुबाई को खान की सेवा मे प्रस्तुत कर के अपने सन्देह को उसके समक्ष प्रस्तुत किया किन्तु मुझे सतोषजनक उत्तर न प्राप्त हुआ। उसने सम्भवत कविता के मुहावरो का अध्ययन कम किया था। रुबाई इस प्रकार है :

१ बक़रीद, १० ज़िलहिज्जा (१६ जून १५०२ ई०)।

रुबाई

"कभी एक मनुष्य दूसरे को कष्ट में पुकारते हुये नही सुनता,
कोई भी किसी को निर्वासित होने पर सतुष्ट नही कहता।
निर्वासित होने पर मेरे हृदय को भी सतोष नही,
जो सतुष्ट हो वह निर्वासित नही, चाहे मनुष्य वह हो।"

बाद मे मुझे ज्ञात हुआ कि तुर्की काव्य मे कविता हेतु 'से' व 'दाल' तथा 'गैन', 'काफ' और 'काफ'[1] मे अदल-बदल हो सकती है।

पताकाओ की जय जय कार

कुछ दिन उपरान्त तम्बल औरातीपा पहुचा। जैसे ही यह समाचार खान को प्राप्त हुये उसने सेना लेकर ताशकीन्त से प्रस्थान किया। बीशकीन्त तथा सामसीरक के मध्य मे उसने अपनी सेना की बाईं तथा दाईं ओर की पक्तिया ठीक की और अपने सैनिकों की गणना की। तदुपरान्त मुगुलो के नियमानुसार पताकाओं की जयजयकार कराई। खान घोडे से उतर पडा। उसके समक्ष ९ पताकायें लगा दी गईं। एक मुगूल ने एक लम्बा सफेद कपडा एक गाय के अगले पाव म बाध दिया और कपडे का दूसरा सिरा अपने हाथ मे ले लिया। तीन लम्बे लम्बे कपडो के टुकडे ९ पताकाओ मे से ३ पताकाओ के डडो के नीचे बाध दिये गये। एक टुकडे को खान अपने पाव के नीचे रख कर खडा हो गया। एक टुकडे को मैं अपने पाव के नीचे कर के खडा हुआ। एक कपडे का सिरा सुल्तान महमूद खानिका अपने पाव के नीचे करके खडा हुआ। उस मुगूल ने जो उस कपडे का एक सिरा पकडे हुये खडा था, जो गाय के पाव मे बधा था, मुगूली भाषा में कुछ कह कर पताकाओ की ओर देखा और सकेत किया। खान तथा उपस्थित गणो ने पताका की दिशा मे कुमीज[2] छिडका। समस्त तुरहिया तथा नक्कारे बजने लगे। सेना वालो ने तीन बार युद्ध के नारे लगाये। तदुपरान्त सवार होकर एक बार पुन नारा लगाया और पताकाओ के चारो ओर घोडे दौडाये।

चिंगीज खाँ की प्रथाओ का पालन

जो नियम चिंगीज़ खा ने बनाये थे उनका पालन मुगूल लोग अब भी उसी प्रकार करते हैं। प्रत्येक के लिये एक स्थान निश्चित होता है और वह स्थान वही होता है जो उसके पूर्वजो का था। दायें भाग वाले की सतान दायें भाग में, बायें भाग वाले की सतान बायें भाग मे तथा केन्द्र वाले की सन्तान केन्द्र मे स्थान ग्रहण करती है। जो लोग सब से अधिक विश्वास के योग्य होते है, वे दाये तथा बायें भाग के अन्तिम सिरा पर रहते हैं। चीरा तथा बेगचीक कबीले के लोग सर्वदा दायें भाग के सिरे पर रहते है। उस समय चीरा कबीले के तूमान का बेग बडा ही शूर-वीर था। उसका नाम कश्का महमूद था। प्रसिद्ध बेगचीक तूमान का बेग अयूब बेगचीक था। इन दोना मे इस बात पर मतभेद हो गया कि कौन अन्त मे रहे। इस बात पर एक-दूसरे ने तलवारे खीच ली। अन्त मे यह निश्चय हुआ कि एक जिर्गा[3] मे ऊचाई पर खडा हो और एक यसाल[4] मे ऊचाई पर खडा हो।

१ ث, د, غ, ق तथा ک
२ सम्भवत. फेनदार घोडी का दूध।
३ शिकार के घेरे मे।
४ युद्ध की पंक्ति में।

दूसरे दिन प्रात काल सामसीरक के समीप जिर्गे का प्रबन्ध किया गया और शिकार खेला गया। तदुपरान्त तूराक चारबाग की ओर प्रस्थान किया गया। इस दिन मैंने एक गज़ल पूरी की। यह प्रथम गजल थी जो पूरी की गई। इसका प्रथम शेर इस प्रकार है

"अपनी आत्मा के अतिरिक्त मैंने किसी भी मित्र को विश्वास के योग्य नही पाया,
अपने हृदय के अतिरिक्त किसी को भी मैंने भरोसे के काबिल नहीं पाया।"

इसमे छ शेर थे। इसके उपरान्त मैंने जितनी गज़लो की भी रचना की, वह इसी नमूने की थी।

खान सामसीरक से निरन्तर यात्रा करता हुआ, खुजन्द नदी के तट पर पहुचा। एक दिन भ्रमण करते हुए हमने नदी पार की। वहा हमने भोजन बनाया और सभी छोटे बडो ने आनन्द-उल्लास मे समय व्यतीत किया। उस दिन कोई मेरी पेटी का सोने का बन्द चुरा ले गया। दूसरे दिन खान कुली का बयान कुली तथा सुल्तान मुहम्मद वैस भाग कर तम्बल के पास चले गये। सभी का विचार था कि चोरी उन लोगो ने की होगी, किन्तु यह बात प्रमाणित न हो सकी। अहमद कासिम कोहबर भी आज्ञा लेकर औरातीपा चला गया। वह भी वहा जाकर पुन न आया और तम्बल के पास रुक गया।

९०८ हि०

(७ जुलाई १५०२ से २६ जून १५०३ ई०)

बाबर की ताशकीन्त में दरिद्रता

खान के इस अभियान से कोई लाभ न हुआ। न उसने किसी किले को विजय किया न किसी शत्रु को पराजित किया, केवल वह गया और वापस चला आया।

मुझे अपने ताशकीन्त निवास के समय अत्यधिक दरिद्रता एव अपमान का सामना करना पडा। मेरे अधीन न तो कोई राज्य था और न किसी राज्य के मिलने की कोई आशा थी। मेरे अधिकाश सेवक छिन्न भिन्न हो गये। जो रह गये वे भी मेरे साथ दरिद्रता के कारण कही न जा सकते थे। जब मैं अपने खान दादा[1] के द्वार पर जाता तो कभी मेरे साथ एक आदमी और कभी दो आदमी होते थे। यह बडा अच्छा था कि वह कोई अपरिचित व्यक्ति न था अपितु मेरा सगा सम्बन्धी था। खान दादा के प्रति अभिवादन करके मै शाह बेगम की सेवा मे उपस्थित होता था। अपने घर के समान वहा नगे सिर तथा नगे पाव चला जाता था।

चीन की ओर प्रस्थान का सकल्प

अन्त मे इस प्रकार की दरिद्रता एव इस तरह बिना घर बार के रहने के कारण मैं परेशान हो गया। मैंने सोचा कि, "इस जीवन से यह कही अच्छा है कि जहा कही सीग समाये मैं निकल जाऊ और लोगो के बीच मे इतने अपमान तथा दरिद्रता का जीवन न व्यतीत करू। जहा तक मेरे पाव मुझे ले जा सके मैं चला जाऊ।" मैंने खिता[2] जाने का सकल्प कर लिया। मुझे बाल्यावस्था से खिता की यात्रा की इच्छा थी किन्तु राज्य तथा अन्य सम्बन्धो के कारण यह सम्भव न हो पाता था। अब राज्य हाथ से निकल चुका था। मेरी माता भी अपनी (सौतेली) माता तथा अपने भाई के पास पहुच चुकी थी। मेरी यात्रा मे जितनी बाधायें हो सकती थी उनका अन्त हो चुका था। मुझे अपनी माता की ओर से जो चिन्ता थी वह भी न रही थी। मैंने ख्वाजा अबुल मकारिम द्वारा शाह बेगम तथा खान की सेवा मे निवेदन कराया कि, 'इस समय शैबाक खा सरीखा शत्रु प्रकट हो गया है। मुगूल तथा तुर्क दोनो ही को उससे अपनी रक्षा करनी चाहिये। उसके प्रति इससे पूर्व कि वह ऊजबेग दल पर पूर्ण रूप से अधिकार जमा ले अथवा अपनी शक्ति अत्यधिक बढा ले चिन्ता करनी चाहिये कारण कि कहा गया है

पद्य

'यदि तू बुझा सकता है तो आज ही बुझा ले,
यदि अग्नि खूब भडक उठी तो ससार को भस्म कर देगी,

१ माता का भाई, मामा।
२ चीन।

अपने शत्रु को धनुष मे बाण लगाने का अवसर न दे,
जब कि तेरा एक बाण उसे बीध सकता हो।"[1]

छोटे खान (अहमद अलचा) तथा खान दादा मे २०-२५ वर्ष से भेंट नही हुई है। मैंने तो उससे कभी भी भेंट नही की। यदि मै उसके पास चला जाऊ तो मैं केवल उससे भेट ही न कर सकूगा किन्तु उसे उन लोगो से भेंट कराने के लिये भी ला सकूगा।"

मेरा उद्देश्य यह था कि इस बहाने से मैं उन लोगो के पास से चला जाऊ। उस वातावरण से निकल कर एक बार यदि मैं मुगूलिस्तान अथवा तुरफान मे पहुच गया तो फिर मेरे लिये कोई प्रतिबन्ध न होगा। मैंने अपनी योजना की चर्चा किसी से भी न की, कारण कि मेरे लिये यह असम्भव था कि मैं इस योजना को अपनी माता से बता सकता। इसके अतिरिक्त मेरे मुट्ठी भर साथी, जो समस्त कठिनाइयो एव निर्वासन मे मेरा साथ देते रहे थे और मेरे कारण सभी लोगो से अपने सम्बन्ध विच्छेद कर लिये थे और इस दुर्भाग्य मे मेरे सहायक थे, इस योजना से अवगत न कराये जा सकते थे। उनसे इस विषय पर वार्ता करने मे कोई प्रसन्नता न हो सकती थी।

ख्वाजा ने मेरी योजना शाह बेगम तथा खान की सेवा मे प्रस्तुत की और उन्हे समझाया कि वे अनुमति दे दें किन्तु बाद मे उन्होंने सोचा कि सम्भवत मैं पुन कही प्रोत्साहन के अभाव के कारण जाने की अनुमति न मागता हू। इससे उनकी मर्यादा को ठेस पहुचती थी इस कारण वे आज्ञा देने मे विलम्ब करने लगे।

छोटे खान का ताशकीन्त पहुचना

इसी बीच मे मेरे छोटे खान दादा के पास से एक व्यक्ति ने आकर यह समाचार पहुचाये कि खान इस ओर आ रहा है। इस समाचार के कारण मेरी योजना भग हो गई। जब एक दूसरे व्यक्ति ने छोटे खान दादा के निकट आ जाने के समाचार पहुचाये तो हम लोग शाह बेगम, उसकी छोटी बहिनें सुल्तान निगार खानम, दौलत सुल्तान खानम, और मैं तथा सुल्तान मुहम्मद खानिका और खान मीर्जा (वैस) उसके स्वागतार्थ रवाना हुये।

ताशकीन्त तथा सैराम के मध्य मे यगा[2] नामक एक ग्राम तथा कुछ अन्य छोटे छोटे गाव है। वहा इबराहीम अता तथा इसहाक अता की कब्रे है। हम लोग उस स्थान तक पहुचे। मुझे अपने छोटे खान दादा के आने का निश्चित समय ज्ञात न था। मैं बिना किसी चिन्ता के टहलने निकल गया। अचानक वह मेरे समक्ष पहुच गया। मैं आगे बढा। जब मैं रुका तो वह भी रुक गया। वह कुछ असमजस मे पड गया। सम्भवत वह किसी निश्चित स्थान पर घोडे से उतर कर बैठ जाना और मुझसे सम्मानपूर्वक भेंट करना चाहता था। इसके लिये अब समय न था। जब हम लोग एक दूसरे के समीप पहुचे तो मैं घोडे से उतर पडा। उसे घोडे से उतरने का भी समय न मिल सका। मैं घुटनो के बल झुका और आगे बढ कर मैंने उससे भेंट की। उसने जल्दी तथा घबराहट मे सुल्तान सईद खा तथा बाबा खा सुल्तान को आदेश दिया कि वे घोडे से उतर कर घुटनो के बल झुकें और मुझसे भेट करें। खान के पुत्रो मे यही दो सुल्तान आये थे। उनकी अवस्था १३-१४ वर्ष की रही होगी। जब मैं उनसे भेंट कर चुका तो हम लोग सवार हो कर शाह बेगम की सेवा मे पहुचे। मेरे छोटे खान दादा ने शाह बेगम तथा उसकी बहिनों से भेंट

१ शेख सादी की 'गुलिस्तां' से उद्धृत।
२ यगमा के नाम से भी प्रसिद्ध है।

९०८ हि०

(७ जुलाई १५०२ से २६ जून १५०३ ई०)

बाबर की ताशकीन्त मे दरिद्रता

खान के इस अभियान से कोई लाभ न हुआ। न उसने किसी किले को विजय किया, न किसी शत्रु को पराजित किया, केवल वह गया और वापस चला आया।

मुझे अपने ताशकीन्त निवास के समय अत्यधिक दरिद्रता एव अपमान का सामना करना पडा। मेरे अधीन न तो कोई राज्य था और न किसी राज्य के मिलने की कोई आशा थी। मेरे अधिकाश सेवक छिन्न भिन्न हो गये। जो रह गये, वे भी मेरे साथ दरिद्रता के कारण कहीं न जा सकते थे। जब मैं अपने खान दादा[1] के द्वार पर जाता तो कभी मेरे साथ एक आदमी और कभी दो आदमी होते थे। यह बडा अच्छा था कि वह कोई अपरिचित व्यक्ति न था अपितु मेरा सगा सम्बन्धी था। खान दादा के प्रति अभिवादन करके मैं शाह बेगम की सेवा मे उपस्थित होता था। अपने घर के समान वहा नगे सिर तथा नगे पाव चला जाता था।

चीन की ओर प्रस्थान का सकल्प

अन्त मे इस प्रकार की दरिद्रता एव इस तरह बिना घर-बार के रहने के कारण मैं परेशान हो गया। मैंने सोचा कि, "इस जीवन से यह कहीं अच्छा है कि जहा कहीं सीग समाये मैं निकल जाऊ और लोगों के बीच मे इतने अपमान तथा दरिद्रता का जीवन न व्यतीत करू। जहा तक मेरे पाव मुझे ले जा सके मैं चला जाऊ।" मैंने खिता[2] जाने का सकल्प कर लिया। मुझे बाल्यावस्था से खिता की यात्रा की इच्छा थी किन्तु राज्य तथा अन्य सम्बन्धो के कारण यह सम्भव न हो पाता था। अब राज्य हाथ से निकल चुका था। मेरी माता भी अपनी (सौतेली) माता तथा अपने भाई के पास पहुच चुकी थी। मेरी यात्रा मे जितनी बाधायें हो सकती थीं उनका अन्त हो चुका था। मुझे अपनी माता की ओर से जो चिन्ता थी वह भी न रही थी। मैंने ख्वाजा अबुल मकारिम द्वारा शाह बेगम तथा खान की सेवा मे निवेदन कराया कि, "इस समय शैबाक खा सरीखा शत्रु प्रकट हो गया है। मुगूल तथा तुर्क दोनो ही को उससे अपनी रक्षा करनी चाहिये। उसके प्रति इससे पूर्व कि वह ऊजबेग दल पर पूर्ण रूप से अधिकार जमा ले अथवा अपनी शक्ति अत्यधिक बढा ले चिन्ता करनी चाहिये कारण कि कहा गया है

पद्य

'यदि तू बुझा सकता है तो आज ही बुझा ले,
यदि अग्नि खूब भडक उठी तो ससार को भस्म कर देगी,

१ माता का भाई, मामा।
२ चीन।

अपने शत्रु को धनुष मे बाण लगाने का अवसर न दे,
जब कि तेरा एक बाण उसे बीध सकता हो।"[1]

छोटे खान (अहमद अलचा) तथा खान दादा मे २०-२५ वर्ष से भेट नही हुई है। मैंने तो उससे कभी भी भेंट नही की। यदि मैं उसके पास चला जाऊ तो मैं केवल उससे भेट ही न कर सकूगा किन्तु उसे उन लोगो से भेंट कराने के लिये भी ला सकूगा।"

मेरा उद्देश्य यह था कि इस बहाने से मै उन लोगो के पास मे चला जाऊ। उस वातावरण से निकल कर एक बार यदि मैं मुग़ूलिस्तान अथवा तुरफान मे पहुच गया तो फिर मेरे लिय कोई प्रतिबन्ध न होगा। मैंने अपनी योजना की चर्चा किसी से भी न की कारण कि मेरे लिये यह असम्भव था कि मैं इस योजना को अपनी माता से बता सकता। इसके अतिरिक्त मेरे मुट्ठी भर साथी, जो समस्त कठिनाइयों एव निर्वासन मे मेरा साथ देते रहे थे और मेरे कारण सभी लोगों से अपने सम्बन्ध बिच्छेद कर लिये थे और इस दुर्भाग्य मे मेरे सहायक थे, इस योजना से अवगत न कराये जा सक्ते थ। उनसे इस विषय पर *वार्ता करने मे कोई प्रसन्नता न हो सकती थी।*

ख्वाजा ने मेरी योजना शाह बेगम तथा खान की सेवा मे प्रस्तुत की और उन्ह समझाया कि वे अनुमति दे दें किन्तु बाद मे उन्होने सोचा कि सम्भवत मैं पुन कही प्रोत्साहन के अभाव के कारण जाने की अनुमति न मागता हू। इससे उनकी मर्यादा को ठेस पहुचती थी इस कारण वे आज्ञा देने म विलम्ब करने लगे।

छोटे खान का ताशकीन्त पहुचना

इसी बीच मे मेरे छोटे खान दादा के पास से एक व्यक्ति ने आकर यह समाचार पहुचाये कि खान इस ओर आ रहा है। इस समाचार के कारण मेरी योजना भग हो गई। जब एक दूसरे व्यक्ति ने छोटे खान दादा के निकट आ जाने के समाचार पहुचाये तो हम लोग, शाह बेगम, उसकी छोटी बहिन, सुल्तान निगार खानम, दौलत सुल्तान खानम, और मैं तथा सुत्तान मुहम्मद खानिका और खान मीर्जा (वैस) उसके स्वागतार्थ रवाना हुये।

ताशकीन्त तथा सैराम के मध्य मे यगा[2] नामक एक ग्राम तथा कुछ अन्य छोटे छोटे गाव है। वहा इबराहीम अता तथा इसहाक अता की कब्रें है। हम लोग उस स्थान तक पहुचे। मुझे अपने छोटे खान दादा के आने का निश्चित समय ज्ञात न था। मैं बिना किसी चिन्ता के टहलने निकल गया। अचानक वह मेरे समक्ष पहुच गया। मैं आगे बढा। जब मैं रुका तो वह भी रुक गया। वह कुछ असमजस म पड गया। सम्भवत वह किसी निश्चित स्थान पर घोडे से उतर कर बैठ जाना और मुझसे सम्मानपूर्वक भेंट करना चाहता था। इसके लिये अब समय न था। जब हम लोग एक दूसरे के समीप पहुचे तो मैं घोडे से उतर पडा। उसे घोडे से उतरने का भी समय न मिल सका। मै घुटनो के बल झुका और आगे बढ कर मैंने उससे भेंट की। उसने जल्दी तथा घबराहट मे सुल्तान सईद खा तथा बाबा खा सुल्तान को आदेश दिया कि वे घोडे से उतर कर घुटनो के बल झुकें और मुझसे भेट करे। खान के पुत्रो मे यही दो सुल्तान आये थे। उनकी अवस्था १३-१४ वर्ष की रही होगी। जब मैं उनसे भेंट कर चुका तो हम लोग सवार हो कर शाह बेगम की सेवा मे पहुचे। मेरे छोटे खान दादा ने शाह बेगम तथा उसकी बहिनों से भेंट

१ शेख सादी की 'गुलिस्ताँ' से उद्धृत।
२ यगमा के नाम से भी प्रसिद्ध है।

९०८ हि०

(७ जुलाई १५०२ से २६ जून १५०३ ई०)

बाबर की ताशकीन्त मे दरिद्रता

खान के इस अभियान से कोई लाभ न हुआ। न उसने किसी किले को विजय किया, न किसी शत्रु को पराजित किया, केवल वह गया और वापस चला आया।

मुझे अपने ताशकीन्त निवास के समय अत्यधिक दरिद्रता एव अपमान का सामना करना पडा। मेरे अधीन न तो कोई राज्य था और न किसी राज्य के मिलने की कोई आशा थी। मेरे अधिकाश सेवक छिन्न भिन्न हो गये। जो रह गये वे भी मेरे साथ दरिद्रता के कारण कहीं न जा सकते थे। जब मैं अपने खान दादा[1] के द्वार पर जाता तो कभी मेरे साथ एक आदमी और कभी दो आदमी होते थे। यह बडा अच्छा था कि वह कोई अपरिचित व्यक्ति न था अपितु मेरा सगा सम्बन्धी था। खान दादा के प्रति अभिवादन करके मैं शाह बेगम की सेवा मे उपस्थित होता था। अपने घर के समान वहा नगे सिर तथा नगे पाव चला जाता था।

चीन की ओर प्रस्थान का सकल्प

अन्त मे इस प्रकार की दरिद्रता एव इस तरह बिना घर-बार के रहने के कारण मैं परेशान हो गया। मैंने सोचा कि "इस जीवन से यह कहीं अच्छा है कि जहा कहीं सीग समाये मैं निकल जाऊ और लोगो के बीच मे इतने अपमान तथा दरिद्रता का जीवन न व्यतीत करू। जहा तक मेरे पाव मुझे ले जा सकें मैं चला जाऊ।" मैंने खिता[2] जाने का सकल्प कर लिया। मुझे बाल्यावस्था से खिता की यात्रा की इच्छा थी किन्तु राज्य तथा अन्य सम्बन्धो के कारण यह सम्भव न हो पाता था। अब राज्य हाथ से निकल चुका था। मेरी माता भी अपनी (सौतेली) माता तथा अपने भाई के पास पहुच चुकी थी। मेरी यात्रा मे जितनी बाधायें हो सकती थीं उनका अन्त हो चुका था। मुझे अपनी माता की ओर से जो चिन्ता थी वह भी न रही थी। मैंने ख्वाजा अबुल मकारिम द्वारा शाह बेगम तथा खान की सेवा मे निवेदन कराया कि, "इस समय शैबाक खा सरीखा शत्रु प्रकट हो गया है। मुगूल तथा तुर्क दोनो ही को उससे अपनी रक्षा करनी चाहिये। उसके प्रति इससे पूर्व कि वह ऊजबेग दल पर पूर्ण रूप से अधिकार जमा ले अथवा अपनी शक्ति अत्यधिक बढा ले, चिन्ता करनी चाहिये कारण कि कहा गया है

पद्य

'यदि तू बुझा सकता है तो आज ही बुझा ले,
यदि अग्नि खूब भडक उठी तो ससार को भस्म कर देगी,

1 माता का भाई, मामा।
2 चीन।

खान का तम्बल के विरुद्ध फरगाना को प्रस्थान

ताशकीन्त पहुच कर शीघ्र ही खान ने सुल्तान अहमद पर आक्रमण हेतु अन्दिजान[1] की ओर प्रस्थान किया। वह कीदीरलीक दर्रे से होता हुआ आहनगरान की घाटी मे पहुचा। वहा से उसने छोटे खान तथा मुझे आगे प्रस्थान करने का आदेश दिया। दर्रे को पार कर लेने के उपरान्त हम लोग पुन कर्नान के अधीन जरकान[2] मे मिले।[3]

एक दिन करनान के समीप उन लोगो ने अपने आदमियो की गणना की। गणना मे ३०००० की संख्या निकली। उसी समय समाचार प्राप्त हुये कि तम्बल भी सेना एकत्र कर के अक्सी जाने की तैयारी कर रहा है। दोनो खानो ने यह निश्चय किया कि वे अपने कुछ सैनिको का मेरे साथ कर दें ताकि मैं खुजन्द नदी पार कर के ऊश तथा ऊजकीन्त होता हुआ तम्बल के पीछे पहुच जाऊ। यह निश्चय कर के उन्होने अयूब बेगचीक को उसके तूमान सहित, जान हसन बारीन[4] को उसके बारीनो के साथ मुहम्मद हिसारी दूगलात सुल्तान हुसेन दूगलात तथा सुल्तान अहमद मीर्जा दूगलात को और कम्बर अली बेग को मेरे साथ कर दिया। सारीग बाश मीर्जा इटार्ची को सेना का दारोगा[5] बना कर मेरे साथ किया गया।

खानो को करनान मे छोड कर हमने सकन के समीप नदी को लट्ठो की नौकाओ द्वारा पार किया। खूकान से होते हुये, हम क्बा को विजय कर के अलाई लूक के मार्ग से अचानक ऊश पहुच गये। प्रात काल जब वहा के लोग असावधान हुये तो हम वहा पहुच चुके थे। वहा के लोगो के लिये ऊश समर्पित करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न था। वहा के सर्वसाधारण का हमारे प्रति स्नेह स्वाभाविक ही था किन्तु तम्बल के भय तथा हमारे दूर होने के कारण वे कुछ भी न कर सकते थे। हमारे ऊश पहुच जाने पर अन्दिजान के पूर्व तथा दक्षिण की ओर के ईल व उलूस[6] पर्वत तथा मैदान से सब के सब आ गये।

ऊजकीन्त इससे पूर्व फरगाना की राजधानी रह चुका होगा। वहा एक उत्तम किला था और (फरगाना की) सीमा पर स्थित था। वहा के निवासियो ने भी हमारी अधीनता स्वीकार कर ली और अपने आदमी भेज कर हमारी सेवा मे आ गये।

दो तीन दिन उपरान्त मरगीनान निवासियो ने भी अपने दारोगा को भी मार भगाया और हमारे पास आ गये। अन्दिजान के अतिरिक्त खुजन्द नदी के दक्षिण का प्रत्येक किला हमारे अधिकार मे आ गया। यद्यपि किले के बाद किले हमारे अधिकार मे आते जा रहे थे और राज्य मे इतनी अशान्ति तथा इतना उपद्रव फैल गया था, फिर भी तम्बल की बुद्धि ठिकाने न लगी थी। अक्सी तथा करनान के मध्य मे अपने अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित वह खानो से युद्ध करने के लिये उद्यत हो गया। वह अपने आपको वृक्ष के लट्ठो तथा खाई द्वारा दृढ बना कर डटा हुआ था। कई बार इस ओर तथा उस ओर से थोडी बहुत झडपें हुई किन्तु किसी को भी निश्चित रूप से विजय तथा पराजय न हुई।

१ अन्दिजान।
२ 'जबरकान' के नाम से भी प्रसिद्ध है।
३ रौजतुस्सफ़ा के अनुसार खान लोग १५ मुहर्रम (२१ जुलाई १५०२ ई०) को तम्बल से युद्ध करने के लिये रवाना हुये।
४ 'नारीन' भी लिखा गया है।
५ सेनापति।
६ कबीले तथा जत्थे।

की। भेंट के उपरान्त वे सब बैठ गये और आधी रात तक एक दूसरे से बीती हुई बातो की चर्चा करते रहे।

दूसरे दिन प्रात काल मेरे छोटे ख़ान दादा ने मुझे अपने अस्त्र-शस्त्र, ज़ीन सहित अपना एक विशेष घोडा और सिर से पाव तक पहिनने के मुग़ूल वस्त्र—एक मुग़ूल टोपी, एक चीनी अतलस का जामा जिसके हाशियो पर ज़ज़ीरे का काम था, तथा चीनी अस्त्र-शस्त्र जो वहा की प्राचीन प्रथानुसार बाईं ओर लटकाये जाते थे, एक सैनिकों का थैला एक बाहरी थैला तथा तीन चार अन्य वस्तुयें जिन्हे स्त्रिया अपने गले के सामने लटकाये रहती हैं उदाहरणार्थ अबीर दान, बहुत से फूलदान तथा तीन चार अन्य चीजें जो दाईं ओर लटकाई जाती है।

वहा से हम लोग ताशकीन्त की ओर रवाना हुये। मेरा बडा ख़ान दादा भी ताशकीन्त छोड कर तीन चार यीगाच[1] आगे बढ आया था। एक उचित स्थान पर शामियाना लगवा कर मेरा बडा ख़ान दादा बैठ गया। छोटा ख़ान दादा सीधे उसके समक्ष पहुचा और निकट पहुच कर ख़ान के दायें से बाये तक एक चक्कर लगाया और उसके समक्ष पहुच कर घोडे से उतर पडा। अभिवादन के स्थान पर पहुच कर ९ बार घुटने के बल झुका। तदुपरान्त ख़ान के निकट जा कर उससे भेंट की। बडे ख़ान दादा ने भी छोटे ख़ान दादा के निकट पहुचने पर खडे होकर उसका स्वागत किया। बडी देर तक वे लोग आलिंगन किये खडे रहे। छोटा ख़ान पृथक् होते समय ९ बार फिर घुटने के बल झुका। उपहार प्रस्तुत करते समय भी वह कई बार घुटनो के बल झुका। तदुपरान्त वह जा कर बैठ गया।

छोटे ख़ान के सभी आदमियो की वेश भूषा मुग़ूल प्रथानुसार थी। वे मुग़ूल टोपी तथा चीनी अतलस के जामे जिन पर ज़ज़ीरे का काम था, धारण किये हुये थे। उनके पास मुग़ूल निषग और हरी सागरी ज़ीन सहित मुग़ूल प्रथानुसार सजे हुये घोडे थे। छोटे ख़ान दादा के साथ बहुत थोडे से आदमी थे। वे १००० से अधिक तथा २००० से कम रहे होंगे। मेरे छोटे ख़ान दादा का बडा विचित्र स्वभाव था। वह बडा ही कुशल तलवार चलाने वाला तथा वीर था। अस्त्र-शस्त्र मे वह तलवार पर अधिक भरोसा करता था। वह कहा करता था कि "अस्त्र-शस्त्र मे शश पर[2] पियाजी[3], कीस्तिन[4], तबर ज़ीन[5] तथा बालतू[6] होते है। जब उनसे प्रहार किया जाता है उनका प्रभाव सर्व प्रथम उसी (भाग) पर होता है जिसे वे सर्व प्रथम छूते है किन्तु तलवार सिर से पाव तक काटती चली जाती है।" वह अपनी तेज़ धार वाली तलवार कभी भी पृथक् न करता था। वह या तो उसकी कमर मे या उसके हाथ में रहती थी। उसका पालन-पोषण एक दूरस्थ स्थान पर हुआ था अत उसकी बात चीत में कुछ गवारपन था खुर्रा-पन था।

उसी मुग़ल वस्त्र मे जिसका उल्लेख हो चुका है, मैं अपने छोटे ख़ान दादा के साथ जब ख़ान के पास पहुचा तो ख्वाजा अबुल मकारिम ने पूछा, 'यह सम्मानित सुल्तान कौन है ?" जब तक मैंने बात न की वह मुझे पहचान न सका।

१ १२-१५ मील।
२ छ-पहला गदा।
३ खुरदुरी गदा।
४ इसका अर्थ ज्ञात न हो सका।
५ घोड़े की काठी का कुठार।
६ युद्ध में काम आने वाला कुठार।

खान का तम्बल के विरुद्ध फरगाना को प्रस्थान

ताशकीन्त पहुच कर शीघ्र ही खान ने सुल्तान अहमद पर आक्रमण हेतु अन्दिकान[1] की ओर प्रस्थान किया। वह कीदीरलीक दर्रे से होता हुआ आहनगरान की घाटी मे पहुचा। वहा से उसने छोटे खान तथा मुझे आगे प्रस्थान करने का आदेश दिया। दर्रे को पार कर लेने के उपरान्त हम लोग पुन क नान के अधीन जरकान[2] मे मिले।[3]

एक दिन करनान के समीप उन लोगो ने अपने आदमियो की गणना की। गणना मे ३०,००० की सख्या निकली। उसी समय समाचार प्राप्त हुये कि तम्बल भी सेना एकत्र कर के अक्सी जाने की तैयारी कर रहा है। दोनो खानो ने यह निश्चय किया कि वे अपने कुछ सैनिको को मेरे साथ कर दें ताकि मैं खुजन्द नदी पार कर के ऊश तथा ऊजकीन्त होता हुआ तम्बल के पीछे पहुच जाऊ। यह निश्चय कर के उन्होने अयूब बेगचीक को उसके तूमान सहित, जान हसन बारीन[4] को उसके बारीनो के साथ मुहम्मद हिसारी दूगलात, सुल्तान हुसेन दूगलात तथा सुलतान अहमद मीर्जा दूगलात को और कम्बर अली बेग को मेरे साथ कर दिया। सारीग वाश मीर्जा इटार्ची को सेना का दारोगा[5] बना कर मेरे साथ किया गया।

खानो को करनान मे छोड कर हमने सकन के समीप नदी को लट्ठा की नौकाओ द्वारा पार किया। खूकान से होते हुये, हम कबा को विजय कर के अलाई लूक के मार्ग से अचानक ऊश पहुच गये। प्रात काल जब वहा के लोग असावधान हुये तो हम वहा पहुच चुके थे। वहा के लोगो के लिय ऊश समर्पित करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न था। वहा के सर्वसाधारण का हमारे प्रति स्नेह स्वाभाविक ही था किन्तु तम्बल के भय तथा हमारे दूर होने के कारण वे कुछ भी न कर सकते थे। हमार ऊश पहुच जाने पर अन्दिजान के पूर्व तथा दक्षिण की ओर के ईल व उलूस[6] पर्वत तथा मैदान से सब के सब आ गय।

ऊजकीन्त इससे पूर्व फरगाना की राजधानी रह चुका होगा। वहा एक उत्तम किला था और (फरगाना की) सीमा पर स्थित था। वहा के निवासियो ने भी हमारी अधीनता स्वीकार कर ली और अपने आदमी भेज कर हमारी सेवा म आ गये।

दो तीन दिन उपरान्त मरगीनान निवासियो ने भी अपने दारोगा को भी मार भगाया और हमारे पास आ गये। अन्दिजान के अतिरिक्त खुजन्द नदी के दक्षिण का प्रत्यक किला हमारे अधिकार मे आ गया। यद्यपि किले के बाद किले हमारे अधिकार म आते जा रहे थे और राज्य मे इतनी अशान्ति तथा इतना उपद्रव फैल गया था, फिर भी तम्बल की बुद्धि ठिकाने न लगी थी। अक्सी तथा करनान के मध्य म अपने अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित वह खानो से युद्ध करने के लिये उद्यत हो गया। वह अपने आपको वृक्ष के लट्ठो तथा खाई द्वारा दृढ बना कर डटा हुआ था। कई बार इस ओर तथा उस ओर से थोडी बहुत झडपें हुई किन्तु किसी को भी निश्चित रूप से विजय तथा पराजय न हुई।

१ अन्दिजान।
२ 'जवरकान' के नाम से भी प्रसिद्ध है।
३ रौजतुस्सफ़ा के अनुसार खान लोग १५ मुहर्रम (२१ जुलाई १५०२ ई०) को तम्बल से युद्ध करने के लिये रवाना हुये।
४ 'नारीन' भी लिखा गया है।
५ सेनापति।
६ कबीले तथा जत्थे।

अन्दिजान की दिशा के बहुत से वश कबीले, किले तथा प्रदेश मेरे अधिकार मे आ गये थे। अन्दिजान वाले भी स्वाभाविक रूप से मेरे ही पक्ष मे थे किन्तु वे कोई व्यवस्था न कर सकते थे।

एक भूल के कारण बाबर के अन्दिजान के प्रवेश मे बाधा

मैंने सोचा कि रात्रि मे अन्दिजान के समीप पहुच कर हम किसी को ख्वाजा[1] तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो के पास भेज कर यह निश्चय करा लें कि वे हमे किसी न किसी स्थान पर रहने दें। यह सकल्प करके हम ऊश से चल खडे हुए। आधी रात्रि मे हम चेहल दुख्तरान के समक्ष जो अन्दिजान से एक कुरोह[2] है पहुच गये। वहा से हमने कम्बर अली बेग तथा कुछ अन्य बेगो को इस आशय से आगे भेज दिया कि उनमे से कोई गुप्त रूप से वहा पहुच कर ख्वाजा से वार्तालाप करे। उनकी प्रतीक्षा मे हम उसी प्रकार घोडे पर बैठे रहे। कुछ लोग पिनक रहे थे और कुछ नीद मे थे। सभवत तीन पहर रात्रि व्यतीत हुई होगी कि तबल बजाने वालो तथा अश्वारोहियो की आवाज आने लगी। निद्रा से चौंक कर और यह न समझ कर कि शत्रु की सख्या अधिक है अथवा कम, मेरे आदमी बिना एक दूसरे को देखे हुये भाग खडे हुये। मुझे उनको एकत्र करने का भी अवकाश न मिल सका। मैं सीधा शत्रु की ओर बढा। केवल मीर शाह कूचीन, बाबा शेरज़ाद तथा निसार दोस्त मेरे साथ थे। हम चारो के अतिरिक्त अन्य लोग भाग खडे हुए थे। हम लोगो ने थोडी सी ही यात्रा की होगी कि शत्रु बाण चलाते तथा युद्ध का नारा लगाते हुये पहुच गये। एक आदमी, जिसके घोडे के मत्थे पर तिलक के समान चिह्न थे, मेरे समीप पहुचा। मैंने उसकी ओर एक बाण चलाया। वह लुढक कर गिर पडा और मृत्यु को प्राप्त हो गया। वे इस पार ठिठक गये मानो भागने वाले हो। उन तीन व्यक्तियो ने जो मेरे साथ थे, कहा, "रात्रि बडी अधेरी है। शत्रु की सख्या के विषय मे कुछ कहा नही जा सकता कि वे कम है अथवा अधिक। हमारी सेना वाले भाग चुके है। हम चार व्यक्ति इन लोगो का क्या बिगाड सकते हैं। हम लोग चल कर जो लोग भाग चुके है उन्हे एकत्र करके युद्ध करें।" हम लोग शीघ्रातिशीघ्र उन लोगो के पास पहुचे। हमने उनमे से कुछ लोगो के घोडो के कोडे लगाये किन्तु हमारे अत्यधिक प्रयत्न पर भी वे लोग न रुक सके। हम चारो ने पुन वापिस होकर शत्रु पर बाण चलाने प्रारम्भ कर दिये। वे कुछ ठिठक गये। जब उन्होने देखा कि हमारी सख्या तीन चार से अधिक नही तो उन लोगो ने हमारा पीछा करना तथा हमारे आदमियो को घोडो से गिराने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने तीन चार बार जाकर अपने आदमियो को एकत्र करने का प्रयत्न किया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। मैंने अपने उन्ही तीनो आदमियो सहित लौट कर, बाण फेंकते हुय शत्रुओ को रोकना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने दो-तीन कुरोह[3] तक खराबूक तथा पशामून पुश्ते तक हमारा पीछा किया। हमारी मुहम्मद अली मुबश्शिर से भेंट हुई। मैंने उससे कहा, "इनकी सख्या बडी थोडी है। हम लोग रुक कर उन पर आक्रमण करें।" हमने ऐसा ही किया। जब हम लोग उनके पास पहुचे तो वे लोग चुपचाप खडे हो गये।

तदुपरान्त हमारे वे सहायक जो छिन्न भिन्न हो गये थे, इधर-उधर से एकत्र होने लगे किन्तु बहुत से उपयोगी लोग छिन्न भिन्न होते समय ऊश चल दिये।

१ सम्भवत अन्दिजान के ख्वाजाओं के प्राचीन वश का कोई आदमी।
२ दो मील।
३ ४-६ मील।

शत्रु को पराजित करके जब हम ख्वाजा कित्ता नामक स्थान पर, जो समीप था, पहुचे तो सध्या समय हो गया था। मेरा विचार था कि मैं शीघ्रातिशीघ्र द्वार तक पहुच जाऊ किन्तु दोस्त बेग के पिता नासिर बेग तथा कम्बर अली बेग सरीखे वृद्ध तथा अनुभवी अमीरो ने निवेदन किया, "अब समय नही रहा है। अधेरे मे किले के भीतर प्रविष्ट होना उचित नही। इस समय कुछ थाडा सा पीछे हट कर हम लोग उतर पडे। किला समर्पित करने के अतिरिक्त उन लोगो के पास कोई अन्य उपाय नही।" इन अनुभवी लोगो के परामर्श के अनुसार हम लोग वही समीप के स्थान पर उतर पडे। यदि हम किले के द्वार पर पहुच जाते तो नि सन्देह किला अधिकार मे आ जाता।

तम्बल का बाबर पर अचानक आक्रमण

सोने की नमाज के समय हम लोग खाकान नहर का पार करके रबाते जौरक नामक ग्राम मे उतर। यद्यपि हमे ज्ञात था कि तम्बल के सहायक छिन्न भिन्न हो चुके है और वह अन्दिजान पहुच रहा है किन्तु अनुभव की कमी के कारण हमसे असावधानी हो गई। हम लोग खाकान नहर जैसे सुरक्षित स्थान पर न उतरे और नहर पार करके रबाते जौरक नामक ग्राम मे मैदान मे उतर पडे। वहा हम किसी करावल तथा जीगदावल की व्यवस्था किये बिना सो गये।[1]

प्रात काल जब लोग मीठी मीठी निद्रा का आनन्द ले रहे थे, कम्बर अली बेग शोर मचाता हुआ आया कि, "उठो, उठो, शत्रु पहुच गये है।" यह कह कर वह क्षण भर भी रुके बिना चल दिया। मैं सर्वदा उस समय भी जब कि कोई भय न रहता था, बिना वस्त्र उतारे उसी प्रकार सो जाता था। उठते ही तलवार तथा निषग लगा कर मैं तत्काल सवार हो गया। मेरी पताका ले जाने वाले को पताका ठीक करने का भी अवसर न मिल सका। वह पताका को उसी प्रकार हाथ मे लेकर सवार हो गया। जिस ओर से शत्रु आ रहे थे, हम उस ओर चल खडे हुये। इस समय हमारे साथ १०-१५ आदमी रहे होगे। जैसे ही हम लोग एक बाण के फेकने की दूरी तक पहुचे कि शत्रु का समाचार ले जाने वाला अग्रदल पहुच गया। वे १० की सख्या मे रहे होगे। हम शीघ्रातिशीघ्र आगे बढ कर उनके पास पहुच गये। हमने बाण चला कर उनको आगे बढने से रोक दिया। उनको भगा कर हमने उनका पीछा किया। हमने उनका एक बाण के पहुचने की दूरी तक पीछा किया किन्तु इसी समय हमारी मुठभेड शत्रु के मध्य भाग की सेना से हो गई। सुल्तान अहमद तम्बल स्वय लगभग १०० आदमियो सहित पहुच गया था। वह तथा एक अन्य व्यक्ति अपने सैनिको के समक्ष इस प्रकार खडे हो गये कि मानो किसी फाटक की रक्षा कर रहे हो और "मारो मारो" का नारा लगाने लगे। किन्तु उसके आदमी बगल से बचते हुये, "क्या हम भागें और क्या हम न भागें" कहते हुये खडे हो गये। उस समय हमारे साथ केवल तीन आदमी रह गये थे। एक नासिर दोस्त, दूसरा मीर्जा कुली कूकूल्दाश तीसरा खुदाई बीरदी तुर्कमान का करीम दाद। मैंने तम्बल के शिरस्त्र को लक्ष्य करते हुए एक बाण धनुष मे लगा कर चलाया। जब मैंने अपने निषग मे हाथ डाला तो मेरे हाथ मे एक नया गोशा गीर आ गया, जिसे मेरे छोटे खान दादा ने मुझे प्रदान किया था। मुझे उसे फेंकते हुये दु ख हुआ। उसे पुन निषग मे रखने पर दो-तीन बाण चलाने का समय निकल गया। मैं दूसरे बाण को चिल्ले मे रख कर आगे बढा। मेरे वे तीन आदमी भी पीछे रह गये। मेरे आगे जो दो व्यक्ति थे, उनमे से सम्भवत तम्बल आगे बढा। हमारे मध्य मे एक चौडा मार्ग था। मै अपनी

[1] चौकी-पहरे तथा उस दल की व्यवस्था के बिना जो समाचार लाने के लिये नियुक्त किया जाता है।

कर देंगे। उस समय समस्त फरगाना छोटे खान को दे दिया जायेगा। ये शब्द सम्भवत मुझे धोखा देने के लिये कहे गये कारण कि जब उनके उद्देश्य की पूर्ति हो जाती, उस समय वे क्या करते, इसका कोई पता न था। मैं विवश था अत मुझे यह बात स्वीकार करनी ही पडी।

मैं बडे खान की सेवा से बिदा होकर छोटे खान से भेंट करने के लिये घोडे पर सवार होकर रवाना हुआ। मार्ग मे कम्बर अली, जो खाल उतारने वाले के नाम से प्रसिद्ध था, मेरे पास आया और उसने कहा, "आपने देखा। इन लोगो ने राज्य को, जो आपके अधिकार मे आ गया था, ले लिया। आपको इन लोगो से कोई लाभ नही हो सकता। इस समय ऊश, मर्गीनान, ऊजकीन्त, कृषि-योग्य भूमि, तथा कबीले एव जत्थे आपके हाथ मे है। आप ऊश चले जायें। उस किले को दृढ बना लें। किसी आदमी को तम्बल के पास भेज दें। उससे सन्धि करले। तदुपरान्त मुगुलो पर आक्रमण करके उन्हें भगा दें और राज्य को बड भाई और छोटे भाई के हिस्से के समान विभाजित कर लें।" मैंने कहा, "क्या यह उचित होगा ? खान लोग मेरे सगे सम्बन्धी हैं। इन लोगों की सेवा करना मेरे लिये तम्बल की ओर से राज्य करने से अच्छा है।" उसने देखा कि उसकी बात का कोई प्रभाव नही हुआ। वह अपनी बात पर खेद प्रकट करते हुये लौट गया।

मैं अपने छोटे खान दादा से भेंट करने के लिये रवाना हो गया। पहली भेट के समय, मैं उसके पास बिना सूचना के पहुचा था। उसे घोडे से उतरने का अवसर भी न मिल सका था अत वह भेट शिष्टाचार रहित ही थी। इस बार मैं सम्भवत और भी निकट पहुच गया। वह अपने खेमे की रस्सी तक भाग कर पहुचा। मैं पाव में बाण के घाव के कारण, बडी कठिनाई से चल रहा था। हमने एक दूसरे से भेंट की। उसने कहा, "हे मेरे अनुज ! तुम्हे लोग शूर-वीर बताते हैं।" मेरा बाजू पकड कर वह मुझे खेमे के भीतर ले गया। जो खेमे लगाये गये थे, वे बडे छोटे थे। क्योकि वह दूरस्थ स्थानों पर रह चुका था, अत उसने उस खेमे को जिसमें वह बैठा था, बडी ही शोचनीय दशा मे कर रक्खा था। वह किसी छापा मारने वाले के खेमे के समान था। खरबूज़ा, अगूर, असबाब तथा अन्य वस्तुयें उसके बैठने वाले खेमे में थी। मैं उसके पास से सीधे अपने शिविर मे पहुचा। वहा उसने अपने मुगूल जर्राह को मुझे देखने के लिये भेजा। मुगूल लोग जर्राह को भी बख्शी कहते हैं। वह आताका बख्शी कहलाता था।

वह बडा ही कुशल जर्राह था। यदि किसी का भेजा भी निकल आता तो वह उसे अच्छा कर सकता था। धमनी के हर प्रकार के घावो का वह सुगमतापूर्वक उपचार कर सकता था। कुछ घावो के लिये वह मलहम देता था और कुछ घावो के लिये खाने की औषधि देता था। उसने मेरे पाव के घाव पर पट्टी बधवा दी और घाव खुला रखने के लिये कोई बत्ती न रखवाई। उसने मुझे एक तन्तुओ जैसी जड भी खिलवाई। उसने मुझे स्वय बताया, "एक बार एक आदमी का पाव टूट गया और हाथ भर हड्डी चूर्ण हो गई। मैंने मास को काट कर हड्डी के टुकडे जहा जहा थे, निकाल कर वहा एक चूर्ण-औषधि रख दी। वही चूर्ण-औषधि हड्डी के स्थान पर हड्डी बन गई।" उसने इस प्रकार की बहुत सी विचित्र बातें मुझे बताईं जिनका उपचार इस विलायत के जर्राह इस प्रकार नही कर सकते।

तीन-चार दिन उपरान्त कम्बर अली उस बात के भय के कारण जो उसने मुझसे कही थी, अन्दिजान की ओर भाग गया। कुछ दिन उपरान्त खानो ने निश्चय कर के अयूब बेगचीक को उसके तूमान सहित, जान हसन बारीन को बारीन तूमान सहित तथा सारीग़ बाश मीर्ज़ा को सेना का बेग बना कर १०००-२००० व्यक्ति हमारे साथ कर दिये और हमें अख़शी की ओर भेज दिया।

वावर का अक्शी पर आक्रमण

अक्शी तम्वल के छोटे भाई शेख वायजीद के अधिकार मे था। शहबाज कारलूक कासान मे था। उस समय शहबाज नूकीन्त किले के समक्ष पहुच कर पडाव किये था। हमने खुजन्द नदी को बीखराना के सामने से पार किया और उसपर आक्रमण हेतु अग्रसर हुये। प्रात काल के पूर्व जब हम नूकीन्त पहुचने वाले थे कि वेगो ने निवेदन किया कि उसे हमारी सूचना हो गई होगी अत यह उचित नही कि हम सेना की पक्तिया सुव्यवस्थित किये बिना अग्रसर हो। हम लोगो ने धीरे धीरे यात्रा करना प्रारम्भ कर दिया। जब तक हम बिल्कुल निकट नहीं पहुच गये, उस समय तक शहबाज को स्वय कोई सूचना न थी। हमारे विषय मे सूचना पाकर वह बाहर से भाग कर किले मे घुस गया। इस प्रकार की घटनायें अधिकाश घटती रहती हैं। कभी-कभी यह ज्ञात हुआ कि शत्रु सावधान है किन्तु इस विषय की ओर उचित ध्यान न दिया गया और युद्ध का समय जाता रहा। अनुभव मे इसी प्रकार की वार्ते आती रहती हैं अत समय पर किसी प्रकार के परिश्रम तथा प्रयत्न की ओर से उपेक्षा न करनी चाहिये कारण कि बाद मे पश्चाताप करने से कोई लाभ नही होता। प्रात काल किले के चारो-ओर थोडा सा युद्ध हुआ किन्तु हम कोई जोरदार आक्रमण न कर सके।

चारे की सुगमता की दृष्टि से हम लोग नूकीन्त से बीशखारान की दिशा म पर्वत की ओर चले गये। शहबाज कारलूक इस अवसर से लाभ उठा कर नूकीन्त को छोडकर कासान चला गया। हम लोग नूकीन्त पहुच गये और उसे अपने अधिकार मे कर लिया। उन दिनो मे हमारी सेना ने कई बार इधर उधर आक्रमण किये। एक बार उसने अक्शी के ग्रामो पर और एक बार कासान के ग्रामो पर आक्रमण किया। शहबाज तथा मीरीम, जिसे ऊजून हसन ने अपना पुत्र बना लिया था, युद्ध के लिये निकले। युद्ध मे वे पराजित हुये। मीरीम की वही मृत्यु हो गई।

पाप में सैयिद कासिम का पौरुप

पाप, अक्शी का एक दृढ किला है। पाप वालो ने किले को दृढ बनाकर हमारे पास एक आदमी भेजा। हमने सैयिद कासिम को कुछ वीरो सहित उसे विजय करने के उद्देश्य से भेजा। उन लोगो ने अक्शी के ऊपर से नदी पार की और पाप पहुच गये। कुछ दिन उपरान्त सैयद कासिम ने एक आश्चर्य जनक बात की। उन दिनो अक्शी मे शेख बायजीद के साथ, इबराहीम चापूक तगाई, अहमदे कासिम कोहबर तथा कासिम खितिका अरगून थे। शेख बायजीद ने इन लोगो के साथ २०० उपयोगी वीर कर दिये और एक रात्रि मे उन्हें अचानक पाप के किले पर आक्रमण करने के लिये भेजा दिया। सैयिद कासिम ने कोई सावधानी न बरती थी और असावधान निद्रा मे पडा था। उन्होंने किले पर पहुच कर सीढिया लगा दी और द्वार पर अधिकार जमा कर उठने वाले पुल को नीचे डाल दिया। जब ७०-८० वीर प्रविष्ट हो गये तो सैयिद कासिम को सूचना मिली। नीद मे डूबा हुआ कुर्ता पहने वह उठ खडा हुआ। अपने ५-६ आदमियो को लेकर उसने शत्रु पर आक्रमण किया और उनको मार मार कर भगा दिया। उसने कुछ लोगो के सिर काट कर मेरे पास भेज दिये। यद्यपि उसके लिये यह उचित न था कि वह इस प्रकार असावधानी से सोता किन्तु थोडे से आदमियो को लेकर इतने सशस्त्र आदमियो को मार पीट कर भगा देना बहुत बडे पौरुप का काम था।

इस बीच मे खान लोग अन्दिजान के अवरोध मे व्यस्त थे किन्तु किले वाले उन्हें किले के समीप फटकने न देते थे और किले के बाहर निकल कर वीर लोग युद्ध किया करते थे।

बाबर का अक्शी बुलाया जाना

अक्शी से शेख बायज़ीद ने निष्ठा प्रदर्शित करते हुए आदमी भेज कर मुझे बड़े आग्रह से बुलवाया। उसका उद्देश्य यह था कि जिस प्रकार भी सम्भव हो मुझे ख़ानों से पृथक् कर दे। मेरे ख़ानों से पृथक् हो जाने के उपरान्त उन्हें उनसे संधि की आशा थी। उसने मुझे अपने बड़े भाई तम्बल की सहमति से आमन्त्रित किया था। ख़ानों से पृथक् होकर उन लोगों से मिल जाना मेरे लिये बड़ा कठिन था। मैंने ख़ानों से इस निमन्त्रण के विषय में संकेत किया। ख़ानों ने कहा, "चले जाओ और जिस प्रकार सम्भव हो शेख बायज़ीद को बन्दी बना लो।" मैं इस प्रकार के विश्वासघात तथा धूर्तता का आदी न था। प्रतिज्ञा के उपरान्त मैं उसे किसी प्रकार भंग न कर सकता था किन्तु मैंने सोचा कि जिस प्रकार हो सके मैं अक्शी पहुंच जाऊँ और शेख बायज़ीद को किसी न किसी प्रकार तम्बल से पृथक् करके अपनी ओर मिला लूं या कोई अन्य ऐसी घटना घट जाये जो मेरे सौभाग्य का कारण बन जाये। हमने एक आदमी को उसके पास भेजा और उससे (शेख बायज़ीद से) प्रतिज्ञा करा ली गई एवं उससे आश्वासन ले लिया गया। हम उसके निमन्त्रण पर अक्शी पहुंचे। वह हमारे स्वागतार्थ आया और अपने साथ मेरे अनुज नासिर मीर्ज़ा को भी लाया। वह मुझे अक्शी के किले के भीतर ले गया। उसने बाहरी किले में मेरे पिता के घर में निवास करने के लिये मुझे स्थान प्रदान किया। मैं वहां जाकर उतरा। अन्य लोगों के लिये शिविर के लिये भी उसने स्थान दिये।

तम्बल का शैबाक ख़ां से सहायता मांगना

तम्बल अपने बड़े भाई बेग तीलबा को शैबाक ख़ां के पास भेज चुका था और उसकी अधीनता स्वीकार करने का वचन देकर उसने उसे फरगाना में आमन्त्रित किया था। उसी बीच में शैबाक ख़ां का उत्तर प्राप्त हो गया। उसने लिखा था, 'मैं आऊंगा।' यह सुन कर ख़ान लोग परेशान हो गये। वे अन्दिजान में न ठहर सके और उन्होंने वहां से प्रस्थान कर दिया।

छोटा ख़ान अपने न्याय तथा अपनी धर्मनिष्ठता के लिये प्रसिद्ध था किन्तु ऊश मर्गीनान तथा अन्य स्थानों पर जो मेरे अधिकार में आ गये थे उसके मुग़ुलों ने, जिन्हें उसने वहां नियुक्त कर दिया था, वहां की प्रजा के प्रति अत्याचार तथा निष्ठुरता का व्यवहार प्रारम्भ कर दिया। ख़ानों के अन्दिजान से प्रस्थान करते ही, ऊश तथा मर्गीनान निवासियों ने विद्रोह कर दिया और जो मुग़ुल किले में थे, उन्हें बन्दी बना लिया। तदुपरान्त उन्हें लूटमार कर भगा दिया।

ख़ानों ने (कंदीरलीक दर्रे) के कारण खुजन्द नदी न पार की, किन्तु इस प्रदेश से मर्गीनान तथा कन्दे बादाम के मार्ग से होते हुए खुजन्द के बाहर चले गये। तम्बल ने मर्गीनान तक उनका पीछा किया। हम लोग उस समय बड़े असमंजस में थे। हमें इस बात पर अधिक विश्वास न था कि वे हमारा साथ देंगे, किन्तु हमारे लिये अकारण उन्हें छोड़कर चला जाना उचित ज्ञात न होता था।

बाबर द्वारा अक्शी की प्रतिरक्षा

एक दिन प्रातःकाल जहांगीर मीर्ज़ा मर्गीनान से तम्बल के पास से भाग कर अक्शी पहुंचा। मैं उस समय गरम स्नानागृह[1] में था। मैंने मीर्ज़ा से भेंट की। उसी समय शेख बायज़ीद बड़ी व्याकुल

१ हम्माम।

तथा भयभीत अवस्था मे पहुचा। मीर्ज़ा तथा इबराहीम बेग ने कहा कि, 'शेख़ बायज़ीद को बन्दी बना लेना तथा दुर्ग को अपने अधिकार मे कर लेना चाहिये।' वास्तव मे यह प्रस्ताव बडा उपयुक्त था। मैंने कहा, "हम लोग वचनवद्ध हो चुके हैं। हम किस प्रकार विश्वासघात कर सकते हैं?" शेख़ बायज़ीद दुर्ग के भीतर प्रविष्ट हो गया। पुल के ऊपर आदमियो को नियुक्त कर देना आवश्यक था। हमने वहा किसी को भी नियुक्त न किया था। यह महान् भूल अनुभवशून्यता का परिणाम थी। प्रात-काल होते ही तम्बल स्वय २-३ हजार सशस्त्र सैनिको सहित पुल पार करके दुर्ग मे प्रविष्ट हो गया। मेरे साथ बहुत थोडे से आदमी थे। जब मैं सर्व प्रथम अख़्शी पहुचा तो कुछ लोग अन्य दुर्गो का भेज दिये गये थे। कुछ लोग दारोगा[1] नियुक्त हो गये थे और कुछ लोग तहसील[2] हेतु भेज दिये गये थे। अख़्शी मे मेरे साथ १०० आदमिया से कुछ अधिक रह गये थे। जितने आदमी हमारे साथ थे उन्ही को लेकर हम सवार हो गये। प्रत्येक गली मे वीर लोग नियुक्त कर दिये गये। हम लोग युद्ध की व्यवस्था कर ही रहे थे कि शेख़ बायज़ीद, कम्बर अली सिलाख़ तथा मुहम्मद दोस्त घोडे भगाते हुए तम्बल के पास से सन्धि के विषय मे वार्तालाप करने पहुचे।

जिन लोगो को मैंने युद्ध के लिए नियुक्त कर दिया था उन्हें उन स्थाना पर जहा व थे खडा करके मैं परामर्श हेतु अपने पिता के मकबरे मे पहुचा। मैंने वहा जहागीर मीर्ज़ा को भी बुलवा लिया। मुहम्मद दोस्त तम्बल के पास वापस चला गया किन्तु कम्बर अली तथा शेख़ बायज़ीद वहा उपस्थित रहे। हम लोग मकबरे के दक्षिणी दालान मे बैठकर वार्तालाप करने लगे। जहागीर मीर्ज़ा जिसने इबराहीम चापूक से उन लोगो को बन्दी बनाने के विषय मे वार्ता कर ली थी ने मेरे कान मे कहा "इन लोगा को बन्दी बना लेना चाहिए।" मैंने कहा, "जल्दी मत करो। कार्य इस सीमा से आगे बढ चुका है। देखो सम्भवत सन्धि द्वारा कुछ काम बन जाये कारण कि इन लोगो की सख्या बडी अधिक है और हम बहुत थोडी सख्या मे हैं। वे लोग इस शक्ति के बावजूद दुर्ग के भीतर है और हम लोग शक्तिहीन होने के बावजूद किले के बाहरी भाग मे है।" शेख़ बायज़ीद तथा कम्बर अली दोना इस परामर्श गोष्ठी मे उपस्थित थे। जहा-गीर मीर्ज़ा ने इबराहीम बेग की ओर देखते हुये, उसे सकेत द्वारा मना किया। पता नही कि वह सकेत को समझा अथवा नही, उसने न समझने का बहाना करके बायज़ीद को बन्दी बनाने का दुष्कर्म किया। वीर लोग चारो ओर से टूट पडे और उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फलत सन्धि की योजना समाप्त हो गई। इन दोनो आदमिया को अन्य लोगो को सौप कर हम लोग युद्ध हेतु घोडो पर सवार हो गये।

नगर के एक ओर जहागीर मीर्ज़ा को नियुक्त कर दिया गया। मीर्ज़ा के सैनिका की सख्या बडी थोडी थी। मैंने अपने सैनिका का एक दल मीर्ज़ा की सहायतार्थ तैनात कर दिया। सर्व प्रथम मैंने *उसके पास पहुच कर प्रत्येक स्थान पर युद्ध हेतु सैनिको की नियुक्तिया की। तदुपरान्त मैं नगर के अन्य* भागो मे पहुचा। नगर के मध्य मे एक खुली हुई भूमि थी। मैं वहा वीरो का एक दल नियुक्त करके वहा से जा चुका था कि इस दल को अत्यधिक अश्वारोहिया एव पदातियो ने पहुचकर वहा से भगा दिया। वे एक गली मे पहुच गये। उसी समय मैं वहा पहुच गया। मैं वहा पहुचते ही घोडा भगा कर उनकी ओर बढा। वे लोग ठहर न सके। मैं उन्हें गली से भगा कर मैदान मे लाया। जिस समय मैं तलवार चला रहा था, उन लोगो ने मेरे घोडे के एक बाण मारा। घोडा लुढक गया और मैं शत्रु के मध्य मे भूमि पर गिर पडा। मैंने शीघ्रातिशीघ्र उठ कर एक बाण चलाया। मेरे सेवक 'काहिल' के पास एक बडा

१ सेना के सरदार।

२ राजस्व वसूल करने।

ही निकृष्ट खच्चर था। उसने उतर कर वह मुझे दे दिया। मैं उस पर सवार होकर दूसरी गली की ओर अग्रसर हुआ। सुल्तान मुहम्मद वैस मेरे पास खराब सा खच्चर देखकर अपने घोड़े से उतर पड़ा और उसने अपना घोड़ा मुझे दे दिया। मैं उस घोड़े पर सवार हो गया। उसी समय कासिम बेग का पुत्र, कम्बर अली बेग जहांगीर मीर्ज़ा के पास से, आहत पहुचा। उसने कहा, "थोडी देर हुई शत्रुओं ने जहांगीर मीर्ज़ा पर आक्रमण करके उसे भगा दिया।" हम आश्चर्यचकित हो गये। उसी समय पाप के किले का सेनापति सैयिद कासिम पहुच गया। उसका आगमन बड़े बुरे समय पर हुआ। ऐसी कठिनाई के समय पर उस जैसे दृढ़ किले का हमारे हाथ में होना परमावश्यक था। मैंने इबराहीम बेग से पूछा, "अब क्या करना चाहिये ?" वह थोड़ा बहुत आहत हो चुका था। इस कारण अथवा असमजस के कारण वह उचित उत्तर न दे सका। मैंने सोचा कि पुल पार करके और उसे नष्ट करके अन्दिजान की ओर चला जाऊं। बाबा शेरज़ाद ने इस अवसर पर बड़ी योग्यता प्रदर्शित की। उसने कहा, 'हम लोग इसी द्वार पर छापा मार कर निकल चले।" बाबा शेरज़ाद की बात पर हम द्वार की ओर बढ़े। ख्वाजा मीर मीरान ने भी इस समय अत्यधिक वीरता-युक्त वाक्य कहे। गली में प्रविष्ट होने के समय सैयिद कासिम तथा नासिरे दोस्त, बाक़ी खीज़ के पास से पृथक् हो गये। मैं, इबराहीम बेग तथा मीर्ज़ा कुली कूकूल्दाश आगे आगे थे। जब हम द्वार के समक्ष पहुचे तो हमने देखा कि शेख बायज़ीद कुर्ते पर फर्जी पहने, तीन-चार अश्वारोहियों सहित द्वार से होता हुआ आ रहा है। प्रातःकाल जब वह मेरी इच्छा के विरुद्ध बन्दी बना लिया गया था तो वह जहांगीर के आदमियों की देख रेख में रहा होगा। जब वे लोग भागे तो उसे भी अपने साथ लेते गये होंगे। उन्होंने सोचा था कि उसकी हत्या करा देना अच्छा होगा किन्तु उन्होंने उसे मुक्त कर दिया। जब वह मुझे फाटक पर मिला तो वह मुक्त किया जा चुका था। मैंने बाण को चिल्ले में चढ़ा कर चलाया। वह उसकी ग्रीवा पर लगा। निशाना अच्छा बैठा। वह घबराहट में फाटक तक आया और दायीं ओर मुड़कर एक गली में भाग गया। हमने तत्काल उसका पीछा किया। मीर्ज़ा कुली कूकूल्दाश ने एक प्यादे पर अपनी गदा से प्रहार किया और वहां से चला गया। मीर्ज़ा कुली के चले जाने के उपरान्त एक आदमी (शत्रु) ने इबराहीम बेग की ओर बाण चलाना चाहा किन्तु उसके 'हाय हाय" चिल्लाने पर उसने उसे छोड़ दिया और इतने निकट से जितना फाटक से कोई रक्षक हो, एक बाण मुझ पर चलाया। बाण मेरी बगल में लगा। मेरे कमलाक कवच के दो टुकड़े कट गये। वह बाण चला कर भाग गया। मैंने उसका पीछा करके उस पर बाण चलाया। उसी समय किले की चहारदीवारी पर एक पदाती भागा जा रहा था। मैंने किले की मुंडेर को लक्ष्य करते हुये उसकी टोपी पर बाण चलाया। अपनी टोपी को मुंडेर पर लटका छोड़कर वह अपनी पगड़ी को हाथ में लपेटता हुआ भाग गया। एक अन्य अश्वारोही मेरे बराबर से उसी गली में से, जहां से शेख बायज़ीद भागा था, जा रहा था। मैंने तलवार की नोक से उस पर प्रहार किया। वह घोड़े की पीठ से झुक गया किन्तु गली की दीवार का सहारा लेकर गिरने से बच गया और बड़ी कठिनाई से भाग खड़ा हुआ। समस्त शत्रुओं को फाटक के पास से भगा कर हमने उस पर अधिकार जमा लिया। किन्तु इस समय कोई अन्य उपाय सम्भव न था। वे लोग दुर्ग में थे और उनकी संख्या २००० अथवा ३००० थी। हम लोग बाहरी किले में थे और हमारे साथ केवल १००-२०० आदमी थे। इससे पूर्व वे जहांगीर मीर्ज़ा को भगा चुके थे और उन्होंने उसका इतनी देर तक पीछा किया जितना समय दूध उबलने में लगता है। उसके साथ हमारे आदमियों में से आधे लोग जा चुके थे। इसके बावजूद जब हम लोग फाटक पर थे तो हमने उसके पास एक आदमी द्वारा यह संदेश भेज दिया था, "यदि तुम कहीं निकट हो तो लौट आओ। हम लोग पुनः आक्रमण करें" किन्तु अब इससे भी कुछ न हो सकता था। इबराहीम बेग ने, या तो उसका घोड़ा वास्तव में कमज़ोर था अथवा घायल होने

के कारण, कहा, "मेरे घोडे मे कोई दम नही।" इस पर मुहम्मद अली मुवश्शिर के सेवक सुलेमान ने बडी उदारता प्रदर्शित की, कारण कि उस समय ऐसी स्थिति थी कि कोई उससे ज़बरदस्ती नही कर सकता था, किन्तु जब हम लोग फाटक पर थे तो वह अपने घोडे से उतर पडा और उसने अपना घोडा इबराहीम बेग को दे दिया। कीचीक अली ने भी, जो इस समय कोल का शिकदार है[1] जब हम फाटक पर थे, बडा पौरुष प्रदर्शित किया। वह सुल्तान मुहम्मद वैस का सेवक था। उसने दो बार बडी उत्तम सेवाय सम्पन्न की, यहा तथा ऊश[2] म। हम फाटक पर उन लोगो के आगमन की जिन्हे जहागीर मीर्ज़ा के पास भेजा गया था, प्रतीक्षा करते रहे। उस व्यक्ति ने आकर कहा कि जहागीर मीर्ज़ा बहुत समय पूर्व ही जा चुका है।" वहा ठहरने से कोई लाभ न था। हम लोग भी चल खडे हुये। हम लोग जितनी देर तक वहा खडे रहे उतनी देर तक भी खडा रहना उचित न था। मेरे साथ २० अथवा ३० आदमी रह गये थे। जैसे ही हम फाटक के बाहर निकले बहुत से सशस्त्र लोगो ने हम पर आक्रमण कर दिया। हम लोग उठने वाले पुल को पार कर चुके थे। वे लोग नगर की उस दिशा से जिस दिशा मे पुल था, पहुच गये। बन्दे अली ने जो कासिम बेग के पुत्र हमज़ा का नाना था, इबराहीम बेग से कहा, "तुम सर्वदा अपने उत्साह की डीग मारा करते थे। अब आओ थोडी देर तलवार चलाये।" इबराहीम बेग मेरे पास था। उसने कहा, "क्या बात है! आओ।" इतनी बडी पराजय के उपरान्त वे मूर्ख उत्साह दिखा रहे थे। असामयिक उत्साह! रुकने अथवा विलम्ब करने का अब समय शेष न रह गया था। हम शीघ्रातिशीघ्र चल खडे हुये। शत्रुओ ने हमारे आदमियो को घोडो से गिराते हुये हमारा पीछा किया।

तम्बल के आदमियों के सामने से बाबर का पलायन

अक्शी से गुम्बज़े चमन एक शरई (कोस) पर[3] है। हम गुम्बज़ चमन का पार कर चुके थे, कि इबराहीम बेग ने चिल्ला कर मुझे पुकारा। मैंने पीछे मुड कर देखा। मैंने देखा कि शेख बायज़ीद का एक सेवक उस पर वार कर रहा है। मैंने अपने घोडे की लगाम मोडी। बयान कुली का खान कुली मेरे समीप था। उसने कहा कि, 'वापस लौटने का यह उचित अवसर नही है।" उसने मेरे घोडे की लगाम पकड कर मोड दी। हम लोग तेज़ी से चल खडे हुये। हमारे सग पहुचने तक हमारे अधिकाश आदमियो के घोडे नष्ट हो चुके थे। सग अक्शी से दो शरई[4] पर है। सग पर यह देख कर कि कोई हमारा पीछा नही कर रहा है, हम लोग उस स्थान से होते हुये सीधे उसकी नदी की ओर बढे। इस समय हमारे साथ कुल ८ आदमी थे, नासिरे दोस्त, कासिम बेग का कम्बर अली, बयान कुली का खान कुली, मीर्ज़ा कुली नासिरे शाहम, सैयिदी करा का अब्दुल कुद्दूस, ख्वाजा हुसेनी और ८वा मैं। नदी के चढाव की ओर हमें चौडी घाटी मे एक छोटी सी उत्तम सडक बहुत दूर मिली। हम लोग सीधे घाटी के ऊपर बढते चले गये और नदी को दाई ओर छोड दिया। हम घाटी के उस भाग मे पहुच गये जहा जल का अभाव था और लगभग मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के समय वहा से निकल कर एक समतल मैदान मे पहुच गये।

१ अली कोल में ६३३ हि० म था किन्तु बाद मे बन्दी बना लिया गया था, बाद मे उसे मुक्त करके पुन कोल प्रदान कर दिया गया होगा।

२ इस सेवा का उल्लेख बाबरनामा म किसी अन्य स्थान पर नहीं है, सम्भवत यह ६०८ अथवा ६०६ ई० की घटना है।

३ दो मील।

४ चार मील।

मैदान मे हमे दूर पर अधकार सा दिखाई पडा। मैं अपने आदमियों को एक शरण के स्थान पर खडा करके स्वय घोडे से उतर कर एक पुश्ते पर पहुचा और वहा से शत्रुओं के विषय में पता लगाने लगा। इसी बीच मे बहुत से आदमी घोडों को सरपट भगाते हुये पुश्ते पर हमारे पीछे पहुच गये। उनकी सख्या का पता लगाये बिना कि वे कम है अथवा अधिक, हम घोडो पर सवार होकर चल दिये। वे २० या २५ थे। हम लोग जैसा कि कहा जा चुका है ८ थे। यदि हमें उनकी सख्या के विषय मे पता चल जाता तो हम उनका ठीक से मुकाबला कर लेते किन्तु हमने सोचा कि यदि वे अधिक सख्या मे न होते तो हमारा पीछा न करते। भागे हुये शत्रु की सख्या चाहे अधिक ही हो वह पीछा करने वाला का मुकाबला नही कर सकता कारण कि मसल है —

मिसरा

"पराजित व्यक्तियो के लिये एक हू ही बहुत होती है।"

खान कुली ने कहा, "इस प्रकार कुछ नही हो सकता। वे हम सबको बन्दी बना लेंगे। जितने घोडे इस समय है वे और दो उत्तम घोडे ले लें और मीर्जा कुली कूकूल्दाश के साथ शीघ्रातिशीघ्र आगे चले जायें। हर एक के पास एक-एक कोतल घोडा रहेगा। सम्भव है आप बच कर निकल जाय।" उसने बुरी बात न कही थी। इस समय युद्ध करना किसी प्रकार सम्भव न था। बचत उसी बात मे थी जो उसने कही थी किन्तु किसी आदमी को शत्रुओ के मध्य में बिना घोडे के अकेला छोडना अच्छा न लगता था। अन्त मे एक एक करके वे स्वय ही छूटते ही गये। मैं जिस घोडे पर सवार था वह थक गया था। खान कुली अपने घोडे से उतर पडा और उसने अपना घोडा मुझे दे दिया। मैं अपने घोडे से उतर कर उसके घोडे पर सवार हो गया और वह मेरे। उसी समय शत्रुओ ने सैयिदी करा के अब्दुल कुद्दूस तथा नासिर के शाहम को, जो पीछे रह गये थे, घोडे से गिरा दिया। खान कुली भी पीछे रह गया। इस समय किसी की सहायता करना अथवा रक्षा करना सम्भव न था। घोडों को भगाते हुये हम चले जा रहे थे। जिसका घोडा बेकार होकर रह जाता वह छूट जाता। दोस्त बेग का घोडा बेकार हो गया और वह रह गया। मैं जिस घोडे पर था वह भी सुस्ती करने लगा। कम्बर अली ने अपने घोडे से उतर कर मुझे अपना घोडा दे दिया। मैं उसके घोडे पर सवार हो गया और वह मेरे। वह भी छूट गया। ख्वाजा हुसेनी लगडा था। वह पुश्तो की ओर चल दिया। मैं रह गया और मीर्जा कुली कूकूल्दाश। हमारे घोडे सरपट न भाग सकते थे। वे दुल्की चल रहे थे। मीर्जा कुली कूकूल्दाश का घोडा सुस्ती करने लगा। मैंने कहा, "यदि तुम भी छूट गये तो फिर मेरी क्या दशा हो जायगी? हम लोग साथ रहे, चाहे जीवित रहें और चाहे मरें।" मैंने उसकी ओर कई बार देखा। अन्त मे उसने कहा, 'मेरे घोडे मे अब कोई दम नही। यह आगे नही जा सकता। आप मेरी चिन्ता न करें। आप चले जायें। सम्भवत आप बच कर निकल जाये।" मेरे लिये यह वडे सकट का समय था। वह छूट गया। मैं अकेला रह गया।

शत्रुओं के दो आदमी दिखाई देने लगे। एक सैराम का बाबा तथा दूसरा बन्दे अली था। वे मेरे अत्यधिक निकट आ गये। मेरे घोडे मे कोई दम न रह गया था। पर्वत एक कुरोह की दूरी पर थे। चट्टानो का एक ढेर मेरे मार्ग में था। मैंने सोचा, "मेरा घोडा बेकार हो चुका है और पहाडी अभी कुछ दूर है। मैं किधर जाऊ। मेरे निषग मे अब भी २० बाण हैं, मैं उतर पडू और चट्टानो के इस ढेर पर से उनपर बाण चलाता रहू।' फिर मैंने सोचा कि सम्भवत मैं पहाडी पर पहुच ही जाऊ। मेरे पास कुछ बाण पडे ही रहें तो काम आयेंगे। मुझे अपने निशाने पर बडा भरोसा था। यह सोच कर मैं चलता ही गया। मेरा घोडा भाग न सकता था। दोनो आदमी बाण के मार की दूरी तक पहुच गये। मैंने अपने

बाणो को नष्ट न करने की दृष्टि से उनपर बाण न चलाये। सावधानी की दृष्टि से वे भी निकट न आये। सूर्यास्त होने के समय तक मैं पहाडी के समीप पहुच गया। अचानक उन लोगो ने चिल्लाकर कहा, "तुम इस प्रकार कहा जा रहे हो? जहागीर मीर्जा बन्दी बना लिया गया है। नासिर मीर्जा भी उन्ही के अधिकार मे है।" मैंने कोई उत्तर न दिया और पहाडी की ओर बढता चला गया। जब मैं और काफी आगे निकल गया तो उन्होंने पुन पुकारा और इस समय अधिक शिष्टता प्रदर्शित करते हुये मुझसे उतर कर बात करने को कहा। मैंने उनकी बात पर कोई ध्यान न दिया, और एक दर्रे की ओर बढता गया यहा तक कि सोने की नमाज के समय मैं एक चट्टान पर पहुच गया जो एक घर के बराबर थी। मैंने देखा कि वहा ऐसे स्थान हैं जहा कूद कर पहुचा जा सकता है और घोड वहाँ नही पहुच सकते। वे पुन घोडो से उतर पडे और सेवको के समान नम्रतापूर्वक कहने लगे "आप इस प्रकार अधेरे मे कहा जा रहे हैं? इधर कोई मार्ग नही। सुल्तान अहमद तम्बल आपको बादशाह बना देगा।" उन्होंने यह बात शपथ लेकर कही। मैंने कहा, "मेरा दिल नही मानता। मैं उसके पास नही जा सकता। यदि तुम मेरी कोई सेवा करना चाहते हो तो फिर वर्षो मे सेवा का ऐसा अवसर न मिलेगा। मुझे वह मार्ग बता दो जिससे मैं खानो के पास चला जाऊ। यदि तुम लोग यह कार्य करोगे तो मैं तुम लोगो की इच्छा से भी बढकर तुम्हारे प्रति कृपा प्रदर्शित करूगा। यदि तुम यह नही कर सकते तो जिस मार्ग से आये हो लौट जाओ। यह भी मेरी सेवा है।" उन लोगो ने कहा, "काश हम लोग न आये होते किन्तु इस प्रकार जब हम लोग आप का पीछा करते हुये आ ही गये हैं तो अब हम आप के पास से कहा जायें। यदि आप हमारे साथ नही चल सकते तो हम लोग आपकी सेवा मे उपस्थित हैं। आप जहा कहे वहा चलें।" मैंने कहा, "शपथ लो कि सच कहते हो।" उन लोगो ने निष्ठापूर्वक कुरान शरीफ की शपथ ली।

मैं कुछ सतुष्ट हो गया। मैंने कहा 'मुझे इसी दर्रे के आस पास किसी चौडी घाटी का मार्ग बताया गया है। मुझे उस ओर ले चलो।" यद्यपि वह लोग वचनबद्ध हो चुके थ किन्तु मुझे पूरा भरोसा न था। उन लोगो को आगे करके मैं पीछे पीछे रवाना हुआ। एक-दो कुरोह की यात्रा के उपरान्त हम लोग एक जल-धारा पर पहुचे। मैंने कहा कि 'चौडी घाटी का यह मार्ग न होगा।' उन लोगो ने बात बनाते हुए कहा, "वह मार्ग बहुत आगे है।" किन्तु हम जिस मार्ग पर यात्रा कर रहे थे, वह वही रहा होगा और वे मुझे धोखा देने के लिये इस बात को छिपा रहे थे। आधी रात के लगभग हम एक अन्य जल-धारा पर पहुचे। इस बार उन लोगो ने कहा, "हमसे असावधानी हो गई। हमें ऐसा ज्ञात होता है कि चौडी घाटी का मार्ग पीछे से है।" मैंने कहा, "अब क्या करना चाहिये?" उन लोगो ने कहा कि "गवा-मार्ग निश्चय ही आगे है। इस मार्ग से लोग फरकत की ओर जाते है।" वे मुझे उस ओर ले चले और हम रात्रि के तीसरे पहर तक चलते रहे और करनान के जलमार्ग पर पहुचे जो गवा से आता है। यहा पर बाबा सैरामी ने कहा, "आप यहा थोडी देर ठहर जायें। मैं गवा मार्ग का ठीक से पता लगा कर आता हू।" उसने थोडी देर बाद आकर कहा, "इस मार्ग पर कुछ लोग एक व्यक्ति के अधीन जो मुगूल टोपी पहिने हुये था, आये है। इस मार्ग से कही नही पहुच सकते।" मैं इन शब्दो पर बडा चौकन्ना हुआ। सुबह होने वाली थी और हम लोग खुले हुये मैदान मे थे। जिस मार्ग पर मैं जाना चाहता था वह बडी दूर था। मैंने कहा, "मुझे ऐसे स्थान पर ले चलो जहा मैं दिन मे छिपा रह सकू। रात्रि मे जब तुम लोग घोडो के लिये कुछ ले आना, उस समय हम लोग खुजन्द नदी पार करके, नदी के उस पार मे खुजन्द जायेंगे।" उन लोगो ने कहा, "यहा एक पुश्ता है। वहा छिपा जा सकता है।"

करनान का दारोगा बन्दे अली था। उसने कहा, "हम लोगो तथा हमारे घोडो का बिना खाये पिये जीवित रहना सम्भव नही। मैं करनान जाकर जो कुछ मिले ले आऊ।" हम लोग करनान के बाहर

एक कुरोह पर ठहरे। वह चला गया। बडी देर तक उसका कोई पता न रहा। दिन चढ चुका था कि वह भागता हुआ तीन रोटिया लेकर आया किन्तु घोडो के लिये दाना न लाया। हममे से प्रत्येक ने एक एक रोटी अपनी कबा मे रख ली और हम छिपने के लिये पुश्ते पर पहुच गये। हमने खुली हुई घाटी मे अपने घोडो को लम्बी रस्सियो मे बाध कर छोड दिया और प्रत्येक व्यक्ति एक दिशा मे होकर पहरा देने लगा।

मध्याह्न के समीप, अहमद कूशजी चार अश्वारोहियो सहित गवा के मार्ग से अक्शी की ओर जाता हुआ दिखाई पडा। मैंने सोचा कि उसे बुलाकर उसे वचन देकर तथा लोभ दिला कर उनके घोडे ले लू कारण कि हमारे घोडे एक रात्रि तथा एक दिन से मार-काट एव अत्यधिक परिश्रम के कारण थक कर चूर हो गये थे और दाने बिना अब उनमे कोई दम न रहा था किन्तु हम उनपर पूरा विश्वास भी न कर सकते थे। हमने निश्चय किया कि क्योकि जिन लोगो को बाबा सैरामी ने मार्ग पर देखा था वे रात्रि मे करनान मे रहेंगे अत दोनो आदमी जा कर उनके घोडो को छिपा कर उडा लायें और फिर हम लोग अपने अपने मार्ग पर चल दें।

मध्याह्न के समय बडी दूर पर एक घोडे पर कोई चमकती हुई वस्तु दिखाई पडी। हमे कुछ न पता चल सका कि वह क्या है। वह मुहम्मद बाकिर बेग रहा होगा। वह हमारे साथ अक्शी मे था। जब हम वहा से निकल कर छिन्न-भिन्न हुये तो वह इस ओर आ लिया होगा और किसी एसे स्थान की खोज मे होगा जहा वह छिप सके।

बन्दे अली तथा बाबा सैरामी ने कहा, "घोडो को दो दिन तथा दो रात से कोई दाना नही मिला है। हम लोग नीचे जाकर उन्हें चरा लायें।" तदनुसार हमने नीचे पहुच कर उन्हे घास चरने के लिये छोड दिया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय एक अश्वारोही उस पुश्ते पर से जाता हुआ दिखाई पडा जहा हम थे। हमने पहचान लिया कि वह उस गवा का सरदार कादिर बीरदी था। मैंने कहा "उसे बुलाओ।" उन लोगो ने उसे बुलाया। वह आ गया। उसके कुशल समाचार पूछ कर हमने उसे कृपा, दया एव नाना प्रकार के आश्वासन देकर उससे, हसिया कुठार, नदी पार करने की सामग्री तैयार करने के यत्र, घोडो के लिये दाना, भोजन तथा यदि सम्भव हो तो अन्य घोडे लाने का आग्रह किया और उससे यह निश्चय हुआ कि वह सोने की नमाज के समय उसी स्थान पर पहुचा जायेगा।

सायकाल की नमाज़ के समय एक अश्वारोही करनान से गवा की ओर जाता दिखाई पडा। हमने पूछा, "तुम कौन हो?" उसने कोई उत्तर न दिया। वह मुहम्मद बाकिर बेग रहा होगा जो उस स्थान से जहा हमने उसे पहले देखा था, रात्रि हो जाने पर किसी अन्य स्थान पर छिपने के लिये जा रहा था किन्तु उसने अपनी आवाज़ इतनी बदल ली थी कि यद्यपि वह मेरे साथ वर्षो तक रह चुका था किन्तु मैं उसे न पहचान सका। यह अच्छा ही होता, यदि मैं उसे पहचान लेता और वह हमारे साथ हो जाता। उसके उस ओर से गुजरने के कारण हमारी चिन्ता बढ गई। गवा का कादिर बीरदी अपने वचन का पालन न कर सका। बन्दे अली ने कहा, "करनान के समीप ही कुछ उद्यान हैं जहा बडा एकान्त है। किसी को इस बात की शका न हो सकेगी कि हम वहा हैं। हम वहा चले चलें और किसी को भेज कर कादिर बीरदी को बुलवायें।" इस विचार से हम लोग घोडो पर सवार होकर करनान के समीप पहुचे। बडा कडाके का जाडा पड रहा थे। वे लोग मेरे लिये कही से एक फटा पुराना पोस्तीन ले आये। मैंने उसे पहन लिया। वे लोग एक प्याला भर बाजरे की लप्सी मेरे लिये लाये। मैंने उसे पी लिया। उसे पीकर मैंने बडी विचित्र स्फूर्ति का अनुभव किया। मैंने बन्दे अली से पूछा, "तुमने कादिर बीरदी को

बुलाने के लिये कोई आदमी भेज दिया है?" उसने कहा, "हा भेज दिया", किन्तु उन अभागे दुष्टो ने अक्शी मे तम्बल के पास आदमी भेजना निश्चय कर लिया था।

हम लोग एक घर मे चले गये। थोडी देर के लिये निद्रा के कारण मेरी आखें बन्द हो गईं। उन दुष्टो ने धूर्ततापूर्वक मुझसे कहा कि, "जब तक कादिर बीरदी के विषय मे पता न चल जाये आप करनान से कही न जायें। यहा के आस पास के स्थानो के उद्यान खाली हैं। यदि हम वहा चले जायें तो किसी को इस बात की शका न हो सकेगी कि हम वहा हैं।" तदनुसार हम घोडे पर सवार होकर आधी रात के समय एक दूर के उद्यान मे चले गये। बाबा सैरामी एक घर की छत से पहरा दे रहा था। मध्याह्न के समय उसने आकर कहा, "दारोगा यूसुफ आ रहा है।" मैंने कहा, "पता लगाओ कि वह इस कारण आ रहा है कि उसे मेरे इस स्थान पर होने की सूचना है?" उसने जाकर कुछ बात चीत की और वापस आकर कहा कि, "वह कहता है कि, 'मुझे अक्शी के द्वार पर एक पदाती मिला जिसने मुझे बताया कि पादशाह अमुक स्थान पर हैं। मैं वली खाज़िन को जिसे मैंने बन्दी बनाया था, उसी आदमी के सिपुर्द करके आया हू। किसी अन्य को इस बात की कोई सूचना नही।" मैंने पूछा, "तेरी समझ मे क्या बात आती है?" उसने कहा, "वे सब आपके सेवक है। वे आपको अपना बादशाह बना लेगे।" मैंने कहा, "एसे विद्रोह एव युद्ध के बाद मैं किस भरोसे पर जा सकता हू?' हम यह बात कर रहे थे कि यूसुफ आकर घुटनो के बल झुका और उसने कहा, "आप से क्या बात छिपाई जाय। सुल्तान अहमद तम्बल को आपके विषय मे कोई सूचना नही किन्तु शेख बायज़ीद को पता है और उसने मुझे भेजा है।" यह सुनकर मेरी दशा बडी ही शोचनीय हो गई कारण कि यह प्रसिद्ध है कि ससार मे प्राण के भय से बढकर कोई बडा भय नही। मैंने कहा, "सच-सच बताओ। यदि दूसरी ही बात होने वाली है तो मैं वजू कर लू।" यूसुफ ने शपथ ली किन्तु उन लोगो का विश्वास कौन कर सकता था। मैं अपनी शोचनीय दशा से परिचित था। मैं उठकर उद्यान के एक कोने मे यह सोचता हुआ चला गया कि, "चाहे कोई मनुष्य सैकडो तथा हज़ारो वर्ष रहे, अन्त मे कुछ भी नही ..."[1]

१ यहा से लगभग १६ मास का हाल किसी भी हस्तलिखित पोथी में नहीं मिलता।

हत्या कर देने पर खून का बदला मांगने वालो को सौंप दिया और दारुल क़ज़ा[1] मे भेज दिया। सिंहासनारूढ होने के ६-७ वर्ष तक उसने मदिरा-पान न किया। तदुपरान्त वह मदिरा-पान के अपमान मे ग्रस्त हो गया। अपने खुरासान के लगभग ४० वर्ष के राज्यकाल[2] मे कोई दिन भी ऐसा व्यतीत न हुआ होगा जब उसने मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के उपरान्त मदिरा-पान न किया हो। इसके पूर्व वह कभी मदिरा-पान न करता। उसके पुत्रों, समस्त सैनिकों एव नगरवासियों की यही दशा थी। वे भोग-विलास मे अत्यधिक तल्लीन रहते थे। वह बडा ही वीर एव साहसी था। उसने अनेक बार तलवार चलाने की योग्यता का प्रदर्शन किया। तीमूर बेग की सतान मे किसी मे सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के बराबर तलवार चलाने की योग्यता न थी। उसे कविता करने से भी रुचि थी और उसने एक दीवान का भी सकलन किया था। तुर्की मे वह हुसेनी तख़ल्लुस करता था। उसके कुछ शेर बुरे नही हैं किन्तु उसका पूरा दीवान एक ही वज़न मे है। उसके राज्य की अवधि तथा विस्तार सभी को देखते हुये वह यद्यपि एक महान् बादशाह था किन्तु साधारण लोगो के समान मेढे लडाता, कबूतर उडाता तथा मुर्ग़े भी लडवाता था।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के युद्ध

अपने छापा मार युद्ध के दिनो मे उसने गुरगान[3] नदी को तैर कर पार किया और ऊज़बेको के एक दल को बुरी तरह पराजित किया।

एक बार वह ६० जवानो को लेकर मुहम्मद अली बख़्शी पर, जिसे सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने ३००० सवार दे कर भेजा था, टूट पडा और उन्हे बुरी तरह पराजित कर दिया।[4] यह उसका बहुत बडा पौरुष एव पराक्रम था।

एक बार उसने सुल्तान महमूद मीर्ज़ा से अस्तराबाद के समीप युद्ध करके उसे पराजित कर दिया[5]। फिर अस्तराबाद मे ही उसने युद्ध किया और हुसेन तुर्कमान के पुत्र सईदलीक़ सईद को पराजित कर दिया।[6]

हेरी मे सिंहासनारूढ होने के पश्चात्[7] उसने यादगार मुहम्मद मीर्ज़ा को चनारान मे युद्ध कर के पराजित कर दिया।[8]

फिर मुर्ग़ाब पुल से शीघ्रातिशीघ्र पहुच कर वह अचानक यादगार मुहम्मद मीर्ज़ा पर, जो बाग़ रागान मे मदिरा के नशे मे मस्त पडा था, अचानक टूट पडा।[9] उसी विजय से पूरा खुरासान शान्त हो गया।

१ *न्यायालय।*
२ इसमें किसी निश्चित अवधि की ओर संकेत नहीं कारण कि यादगार की मृत्यु ८७५ हि० (१४७०-७१ ई०) में हो गई और मीर्ज़ा की ९११ हि० (१५०५-६ ई०) में। यदि इस समय को मीर्ज़ा के मर्व के शासन से गिना जाय तो यह अवधि ८६१ हि० (१४५६-५७ ई०) से गिनने में कम बैठती है।
३ कैस्पियन सागर के दक्षिणी पूर्वी किनारे पर, रूस तथा फ़ारस की प्राचीन सीमा।
४ ८६८ हि० (१४६३-६४ ई०)।
५ ८६५ हि० (१४६० ६१ ई०)।
६ सम्भवत ८७३ हि० (१४६८ ६९ ई०)।
७ रमज़ान ८७३ हि० (मार्च १४६९ ई०)।
८ ८७४ हि० (१४६९-७० ई०)।
९ ८७५ हि० (१४७० ७१ ई०)।

फिर उसने सुल्तान महमूद मीर्ज़ा से अन्दिखद एव शिबरगान के समीप चीकमान सराय में युद्ध करके उसे पराजित कर दिया।[1]

फिर वह अबा बक्र मीर्ज़ा[2] पर अचानक टूट पड़ा। मीर्ज़ा अबा बक्र कराकूनीलूक तुर्कमाना को साथ ले कर एराक से आया था। उसने ऊलूग बेग मीर्ज़ा (काबुली) को तकाना तथा खिमार म पराजित कर दिया था, काबुल पर अधिकार जमा लिया था और एराक में अशाति के कारण उसे त्याग कर खैबर पार किया था और खुशाब तथा मुल्तान पहुचा और फिर सीवी और वहा से करमान किन्तु वहा भी न ठहर सकने के कारण खुरासान म प्रविष्ट हो गया था।[3]

फिर उसने अपने पुत्र वदी उज्जमान मीर्ज़ा को पुले चिराग पर पराजित कर दिया।[4]

उसने अपने पुत्रो अबुल मुहसिन मीर्ज़ा तथा कूपुक मीर्ज़ा को हलवा झरने पर पराजित कर दिया।[5]

इसके अतिरिक्त वह कुन्दूज पहुचा और उसका अवरोध कर लिया। वह उस पर भी अधिकार न जमा सका और वापस हो गया। उसने हिसार का अवरोध किया किन्तु उसे भी विजय न कर सका और वहा से भी वापस चला आया।[6] वह जुनून के राज्य मे पहुचा। वहा के दारोगा[7] ने उसे वस्त्र दे दिया। इससे अधिक कुछ न कर के वह वापस चला गया।[8]

एक इतना महान् एव वीर बादशाह इन दो तीन युद्धो मे बादशाहाना सकल्प करके पहुचा और बिना कुछ किये ही वापस लौट आया।

इसके अतिरिक्त उसने अपने पुत्र वदी उज्जमान मीर्ज़ा से नीशीन की चरागाह मे युद्ध कर के उसे पराजित कर दिया। वह वहा जुनून के पुत्र शाह बेग के साथ पहुचा था।[9]

इस युद्ध मे निम्नाकित विचित्र घटनायें घटी। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सेना की सख्या बडी कम रही होगी। उसके अधिकाश सैनिक अस्तराबाद जा चुके थे। जिस दिन युद्ध हुआ, उसी दिन उसकी एक सेना अस्तराबाद से वापस आ गई और मुल्तान मसऊद मीर्ज़ा सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास, बाईसुगर मीर्ज़ा को हिसार पर अधिकार जमा लेने के लिये छोड कर पहुच गया और हैदर मीर्ज़ा, वदी उज्जमान मीर्ज़ा का सब्जवार मे पर्यवेक्षण कर लौट आया।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का राज्य

वह खुरासान के राज्य का स्वामी था। उसके राज्य के पूर्व मे बल्ख, पश्चिम मे बिस्ताम तथा दमगान, उत्तर मे ख्वारिज्म तथा दक्षिण म सीस्तान एव कधार थे। जब हेरी सरीखा नगर उसके

१ ८७६ हि० (१४७१-७२ ई०)।
२ बदख्शी बेगम द्वारा अबू सईद का पुत्र। वह बदख्शा में अपने पिता की ओर से हाकिम हो गया था और हुसेन बाईकरा की पुत्री बेगम सुल्तान से ८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) के उपरान्त युद्ध किया।
३ अबा बक्र रजब ८८४ हि० (अक्तूबर १४७९ ई०) के अन्त में युद्ध में मारा गया। वह सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा से ८८४ हि० में पराजित होकर वापस जा रहा था।
४ ९०२ हि० (१४९६-९७ ई०)।
५ ९०४ हि० (१४९८-९९ ई०)।
६ ९०१ हि० (१४९५-९६ ई०)।
७ सम्भवत: सेनापति।
८ ९०३ हि० (१४९७-९८ ई०)।
९ ९०३ हि० (१४९७-९८ ई०)।

अधिकार मे आ गया तो रात-दिन भोग-विलास के अतिरिक्त उसके पास कोई अन्य कार्य न रहा। उसके सेवको एव परिजनो मे भी कोई ऐसा न था जो भोग विलास मे ग्रस्त न रहता हो। वह विजय एव युद्ध के जीवन के कष्ट भोगने को तैयार न था। अत उसके रहते[1] तक उसके राज्य एव परिजनो मे कमी ही होती गई, वृद्धि न हुई।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सतान पत्नियाँ एवं कनीजें[2]

उसके १४ पुत्र एव ११ पुत्रिया हुई। बदीउज्जमान मीर्ज़ा सब से बड़ा था। मव के सुल्तान सजर की एक पुत्री[3] उसकी माता था।

मीर्ज़ा की पुत्रियो मे सुल्तानम बेगम सब से बडी थी। उसके कोई सगा भाई अथवा बहिन न थी। उसकी माता जो चूली बगम[4] कहलाती थी, अज़ाक बेगो मे से किसी की पुत्री थी। वह बात बहुत से कर्मा न चकती थी। किन्तु उसकी बातो मे न तो किसी को कोई आनन्द आता था और न उसमे कोई तत्व होता था। उसके पिता ने उसका विवाह सुल्तान वैस मीर्ज़ा से जो उसके (पिता के) बडे भाई बाईकरा मीर्ज़ा का मझला पुत्र था कर दिया था। उसके एक पुत्र एव एक पुत्री हुई। पुत्री का विवाह शैबान सुल्ताना के यौली बार्स के छोटे भाई ईसान कुली सुल्तान से हो गया था। उसका पुत्र मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा है जिसे मैंने कन्नौज प्रदान कर दिया है।[5] इन्ही तारीखों मे सुल्तानम बगम अपने पौत्र के साथ काबुल से हिन्दुस्तान आ रही थी कि नीलाब पर मृत्यु को प्राप्त हो गई। उसकी हड्डिया लेकर उसके आदमी वापस चले गये। उसका पौत्र आ गया।[6]

मीर्ज़ा की पुत्रियो मे से एक आयेशा सुल्तान बेगम थी। उसकी माता जुबैदा आगाचा नामक एक कनीज थी। वह हुसेन शेख तीमूर की पोती थी। उसका विवाह शैबान सुल्तानों के कासिम सुल्तान से कर दिया गया था। उससे उसके एक पुत्र हुआ। जिसका नाम कासिम हुसेन सुल्तान था। वह हिन्दुस्तान मे मेरी सेवा मे पहुचा और राणा सागा से जिहाद के समय वह मेरी सेवा मे था। उसे बदायू प्रदान कर दिया गया था।[7] जब कासिम सुल्तान की मृत्यु हो गई तो (उसकी विधवा) आयेशा सुल्तान बेगम से उसके एक सम्बन्धी बूरान सुल्तान ने विवाह कर लिया। उससे उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अब्दुल्लाह सुल्तान है और जो अब मेरी सेवा मे है। यद्यपि उसकी अवस्था अधिक नही किन्तु उसकी सेवायें बुरी नही।

उसकी कनीजो मे एक अपाक बेगम थी। उसके कोई सतान न थी। पापा आगाचा जो मीर्ज़ा को बडी प्रिय थी उसकी कूकूल्ताश थी। अपनी कोई सतान न होने के कारण अपाक बेगम ने पापा आगाचा की सतान का पालन-पोषण किया था। मीर्ज़ा की रुग्णावस्था मे उसने मीर्ज़ा की बडे प्रशसनीय ढग से सेवा की। उसकी पत्नियो मे से कोई भी उसकी इतनी सेवा न कर सकी। जिस वर्ष मैं हिन्दुस्तान आया उस

१ मृत्यु तक।
२ केवल उन्हीं अंशों का अनुवाद किया गया है जिनका महत्त्व बाबर के इतिहास के लिये था।
३ बेगा बेगम।
४ रेगिस्तानी बेगम।
५ सम्भवत यह नियुक्ति ९३३ हि० (१५२७ ई०) में हुई होगी और ९३४ हि० में भी वह उसी पद पर आरूढ रहा होगा।
६ यह बालक सम्भवत उलूग मीर्ज़ा, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा का ज्येष्ठ पुत्र अपने पिता के घर बार के साथ आ रहा होगा।
७ ९३३ हि० (१५२७ ई०)

वर्ष वह हेरी से काबुल पहुची और मैं उसके प्रति जितना आदर सम्मान प्रदर्शित[1] कर सकता था, मैंने प्रदर्शित किया। जब मैं चन्देरी को घेरे हुये था[2] तो समाचार प्राप्त हुये कि वह काबुल मे मृत्यु को प्राप्त हो गई।

यह बडे आश्चर्य की बात है कि सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा सरीखे महान् बादशाह के, जिसके अधिकार मे हेरी जैसा नगर था, १४ पुत्रो मे केवल तीन विवाहित पत्नियो द्वारा हुये। उसमे, उसके पुत्रो, कबीलो एव समूहो मे दुराचार एव व्यभिचार अत्यधिक प्रचलित थे। इसी कारण इतने महान् वश के इतने पुत्रो मे से ७ ८ वर्ष के भीतर मुहम्मद जमान मीर्ज़ा के अतिरिक्त किसी का चिह्न शेष न रह गया।

सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के अमीर

मुहम्मद बरन्दूक बरलास

उसके अमीरो मे से एक मुहम्मद बरन्दूक बरलास था जो चाकू बरलास के वश से था—मुहम्मद बरन्दूक पुत्र अली पुत्र बरन्दूक, पुत्र जहान शाह पुत्र चाकू[3] बरलास। वह बाबर मीर्ज़ा की सेवा मे भी बेग रह चुका था। तदुपरान्त सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने उसे आश्रय प्रदान कर के जहागीर बरलास के साथ काबुल प्रदान कर दिया और उसे ऊलूग बेग मीर्ज़ा का अत्का बना दिया। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त, ऊलूग बेग मीर्ज़ा दोनो बरलासो को हानि पहुचाने का प्रयत्न करने लगा। उन्हे इस बात का पता चल गया। उन्होंने मीर्ज़ा को अपने अधिकार में कर लिया। वे अपने ईल व उलूस[4] को रवाना कर के कुन्दूज की ओर चल दिये। जब वे हिन्दूकुश के ऊपर गये तो उन्होंने बडे सौजन्य से मीर्ज़ा को काबुल भेज दिया और वे स्वय सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास खुरासान चले गये। उसने उन्हे अत्यधिक आश्रय प्रदान किया।

मुहम्मद बरन्दूक अत्यधिक बुद्धिमान् था और उसमे सरदारी के अत्यधिक गुण पाये जाते थे। उसे शिकरो से इतनी अधिक रुचि थी कि यदि उसका कोई शिकरा खो जाता अथवा मर जाता तो वह अपने पुत्रो का नाम ले कर कहता कि यदि अमुक शिकरे के मर जाने अथवा खो जाने के स्थान पर अमुक पुत्र मर जाता अथवा उसकी गरदन टूट जाती तो कोई आपत्ति न थी।

मुजफ्फर बरलास

एक अन्य अमीर मुजफ्फर बरलास था। वह छापा-मार युद्ध के समय मीर्ज़ा की सेवा मे था और किन्ही अज्ञात कारणो से उसने मीर्ज़ा द्वारा अत्यधिक आश्रय प्राप्त किया था। वह उसका इतना बडा विश्वास-पात्र था कि सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने छापा मार युद्ध के दिनो मे स्वय उससे यह शर्त की थी कि जो विलायत भी विजय होगी उसमे से चार दाग मीर्ज़ा के होंगे और दो दाग उसके। यह बडी ही विचित्र शर्त थी। बादशाही मे निष्ठावान् सेवक तक को भी साझीदार बनाना किस प्रकार उचित हो सकता है

१ बाबर काबुल से १ सफ़र ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को रवाना हुआ अत. बेगम इससे पूर्व ही काबुल पहुच गई होगी।
२ ९३४ हि०।
३ वह तीमूर का बहुत बड़ा विश्वास-पात्र था।
४ समूह तथा जत्थे।

जब कि अनुज अथवा पुत्र मे भी यह शर्त नहीं की जा सकती। बेग से फिर इस प्रकार शर्त कैसे हो सकती है? राज सिंहासन पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त मीर्ज़ा को इस शर्त पर पश्चात्ताप हुआ किन्तु इससे कोई लाभ न हो सकता था। वह अधे मस्तिष्क का तुच्छ व्यक्ति इतना अधिक आश्रय प्राप्त करने के बावजूद अत्यधिक उद्दंडता प्रदर्शित करने लगा। मीर्ज़ा ने बुद्धि से काम न लिया था। कहा जाता है कि अन्त मे मुज़फ्फर बरलास को विष दे दिया गया। ईश्वर को ही सच बात ज्ञात है।[1]

अली शेर नवाई

अली शेर नवाई, मीर्ज़ा का मुसाहिब अधिक तथा अमीर कम था। बाल्यावस्था मे वे सहपाठी भी रह चुके थे और एक दूसरे के बडे घनिष्ठ मित्र थे। यह ज्ञात नहीं कि सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा ने अली शेर बेग को किस अपराध के कारण हेरी से निकलवा दिया। वह वहा से समरकन्द चला गया। वहा वह जितने वर्ष रहा अहमद हाजी बेग उसे आश्रय एव प्रोत्साहन प्रदान करता रहा। वह अपनी नाजुक मिजाजी के लिये बडा प्रसिद्ध था। लोग उसकी नाजुक मिजाजी को उसके अभिमान का कारण समझते थे। ऐसी बात न थी कारण कि उसकी यही नाजुक मिज़ाजी समरकन्द मे भी थी।[2] तुर्की काव्य मे वह अद्वितीय माना जाता है। तुर्की भाषा मे किसी ने इतनी अधिक और इतनी उत्तम कविताओ की रचना नही की। उसने ६ मसनवियां की रचना की। पाच खमसे[3] के वज़न मे और एक मतिकुत्तैर[4] के वजन मे लिसानुत्तैर[5]। उसने ग़ज़लों के चार दीवानो का सकलन किया। गरायेबुस्सिग्र[6], नवादिरे शबाब[7], बदी उल वस्त[8], फ़वाएदुल किब्र[9]। उसने बहुत सी रुबाइयों की भी रचना की। उसकी कुछ अन्य रचनायें भी है जो इतनी उच्च श्रेणी की नही। इनमे उसकी इन्शा[10] का एक सकलन है जिसे उसने मौलाना अब्दुर्रहमान जामी की इशा का अनुसरण करते हुये सकलित कराया। इसमे उसने प्रत्येक व्यक्ति के नाम जिस आवश्यकता से भी कोई पत्र लिखवाया उसे एकत्र कराया। उसने अरूज़ के विषय पर 'मीज़ानुल अवज़ान' नामक पुस्तक लिखी जो किसी काम की नही। इसम २४ रुबाइयों के वज़न मे से उसने ४ मे भूल की है। कुछ बहरो के वजन मे उसने ऐसी भूले की है जिसका पता यदि किसी को अरूज़ का थोडा बहुत ज्ञान भी हो तो वह चला लेगा। उसने फारसी दीवान का भी सकलन किया। फारसी मे वह 'फानी' तखल्लुस करता

१ ख्वदमीर के अनुसार वह अपनी स्वाभाविक मौत मरा।
२ उस समय वह एक अमीर का आश्रित था। वह सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के आग्रह पर ८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) में हेरी वापस चला गया।
३ निज़ामी की ५ मसनवियां : मखज़नुल असरार, लैला व मजनू, खुसरो व शीरीं, हफ्त पैकर, सिकन्दर नामा। निज़ामी की मृत्यु १२०६ ई० में हुई।
४ फ़रीदुद्दीन अत्तार (मृत्यु १२३०) की रचना, "पक्षियों की वार्त्ता"।
५ पक्षियों की वाणी।
६ अल्पावस्था की आश्चर्यजनक बातें।
७ युवावस्था की अप्राप्य बातें।
८ जीवन के मध्य की विचित्र बातें।
९ वृद्धावस्था की लाभदायक बातें।
१० पत्रों तथा अल्प कोटि की भाषा में छोटी छोटी टिप्पणियां।

था। उसके कुछ शेर बुरे नहीं है किन्तु अधिकांश साधारण है। सगीत मे भी उसने बडी उत्तम रचनायें की जिनमे बडी उत्तम धुनें एव प्रारम्भिक राग सम्मिलित है। अली शेर वेग के समान विद्वानो एव कला कारो के किसी अन्य आश्रयदाता का पता नही। यह भी नही कहा जा सकता कि कोई एसा व्यक्ति पैदा भी हुआ होगा। उसी के आश्रय के कारण उस्ताद कुल मुहम्मद एव शेखी नाई[1], हुसेन ऊदी[2], सरीखे वादक इस उच्च श्रेणी को प्राप्त कर सके। उसी के प्रयत्न एव देख रेख के कारण उस्ताद वेहजाद एव शाह मुजफ्फर को चित्र-कला मे इतनी प्रसिद्धि प्राप्त हो सकी। एसे बहुत कम लोग होग जिन्होंने गुणो की नीवें भविष्य के लिये इस प्रकार रक्खी हो जिस प्रकार उसने रक्खी। उसके पुत्र, पुत्री परिवार कोई भी न था। वह ससार से अकेला ही अपना कोई भार छोड बिना विदा हो गया।

सर्व प्रथम वह मुहरदार था। अपने जीवन काल के मध्य म वह वेग[3] हो गया और कुछ समय तक अस्तराबाद मे शासन करता रहा। तदुपरान्त उसन सैनिक जीवन त्याग दिया। उसने मीर्जा से कुछ नही लिया अपितु हर वर्ष मीर्जा को पर्याप्त उपहार प्रस्तुत किया करता था। जब मीर्जा अस्तराबाद के अभियान से वापस आ रहा था तो अली शेर वेग उससे भेंट करने पहुचा। उन्होने एक दूसरे से भट की किन्तु अली शेर पर उठ कर जाते समय कुछ ऐसी दशा व्यापक हो गई कि वह उठ न सका। उसको उठा कर ले जाया गया। चिकित्सक लोग उसके रोग के विषय म कुछ न बता सके। और दूसरे दिन वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसका एक शेर उसकी दशा के अनुकूल है।

अहमद बिन तवक्कुल

तवक्कुल बरलास का पुत्र अहमद एक अन्य अमीर था। कुछ समय तक वह कधार का हाकिम रहा।

वली बेग

वली वेग एक अन्य अमीर था। वह हाजी सैफुद्दीन बग के वश से था और मीर्जा के पिता[4] के प्रतिष्ठित अमीरों मे से था। सुल्तान हुसेन मीर्जा के सिंहासनारूढ होने के उपरान्त वह अधिक जीवित न रहा और शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह शरीअत का कट्टर पन स पालन करना नमाज पढता रहता था और तुर्क[5] तथा निष्ठावान् था।

शेख तीमूर का हुसेन

शेख तीमूर का हुसेन एक अन्य व्यक्ति था। बाबर मीर्जा न उसे आश्रय प्रदान कर के बग नियुक्त कर दिया था।

नुयान वेग

एक अन्य अमीर नुयान वेग था। वह अपन पिता की ओर से तीरमीज़ का सैयिद था और अपनी

१ वीणाकार।
२ ऊद बजाने वाला। ऊद बरबत के समान एक बाजा होता है। कुछ लोग बरबत और ऊद दोनों को एक बताते हैं।
३ अमीर।
४ मनसूर।
५ सीधा साधा, खुर्रे स्वभाव का व्यक्ति।

माता की ओर से सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा तथा सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा दोनों से सम्बन्धित था। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का वह बहुत बडा विश्वास पात्र था। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा के दरबारियों मे भी उसे बडा सम्मान प्राप्त था और जब वह सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सेवा मे पहुचा तो उसे वहा भी बडा आश्रय प्राप्त हुआ। वह हँसी खुशी जीवन व्यतीत करता खूब मदिरा-पान करता और भोग विलास मे व्यस्त रहता। उसके पिता की सेवा मे रह चुकने के कारण याकूब का हसन, नुयान के हसन के नाम से भी पुकारा जाता था।

जहाँगीर बरलास

एक अन्य अमीर जहागीर बरलास था। कुछ समय तक वह मुहम्मद बरन्दूक बरलास के साथ काबुल का हाकिम रहा। तदुपरान्त वह सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सेवा मे चला गया जहा उसे अत्यधिक आश्रय प्राप्त हुआ। उसका आचरण एव व्यवहार सुन्दर एव हृदयग्राही था। उसका स्वभाव बडा उत्तम था। शिकार एव शिकरो की देख रेख के नियमो मे दक्ष होने के कारण मीर्ज़ा ने उसे मुख्य रूप से तत्सबधी सेवायें सौंप दी थी। वह बदी उज्जमान मीर्ज़ा का बहुत बडा विश्वासपात्र था और उस मीर्ज़ा की मित्रता को ध्यान मे रखते हुये वह उसकी प्रशसा किया करता था।

मीर्ज़ा अहमद

अली फारसी बरलास का मीर्ज़ा अहमद एक अन्य अमीर था। यद्यपि वह कविता न करता था किन्तु वह कविता के विषय मे खूब समझता था। वह बडा ही हँसमुख एव उत्तम स्वभाव का व्यक्ति था।

अब्दुल ख़ालिक बेग

एक अन्य अमीर अब्दुल ख़ालिक बेग था। शाहरुख मीर्ज़ा का अत्यधिक विश्वासपात्र बेग, फीरोज़ शाह उसका दादा था अत लोग उसे फीरोज शाह का अब्दुल ख़ालिक कहा करते थे। वह कुछ समय तक ख्वारिज्म का हाकिम रहा।

इबराहीम दूल्दाई

एक अन्य अमीर इबराहीम दूल्दाई था। उसे राजस्व एव शासन सम्बन्धी बडा उत्तम ज्ञान था। *कार्य मे वह दूसरा मुहम्मद बरन्दूक था।*

जुन्नून अरगून

जुन्नून अरगून एक अन्य अमीर था। वह बहुत बडा योद्धा था। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की सेवा में उसने तलवार चलाने मे बडी कुशलता दिखलाई और बाद मे भी जिस युद्ध मे वह पहुचा उसने इस कुशलता का प्रदर्शन किया। उसकी वीरता में कोई सन्देह नही किन्तु वह कुछ मूर्ख था। हमारे मीर्ज़ाओं[1] को छोड कर जब वह सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की सेवा मे पहुचा तो मीर्ज़ा ने उसे गूर तथा निक्दीरी प्रदान कर दिया। ७०-८० आदमियो को ले कर उसने उस भूभाग मे बडी उत्तम सेवायें सम्पन्न की और बहुत थोडे

१ मीरान शाही।

आदमियों की सहायता से वह हजारा तथा निकदीरी कबीलों के समूह के समूह को पराजित किया करता था। इन कबीलों को सुव्यवस्थित रखने में कोई उसका मुकाबला न कर सकता था। कुछ समय उपरान्त उसे जमीनदावर प्रदान कर दिया गया। उसका पुत्र शाह शुजा अरगून उसके साथ इधर-उधर घूमा करता था और बाल्यावस्था में तलवार चलाने में कुशलता दिखाया करता था। मीर्जा, शाह शुजा को बहुत चाहता था और उसके पिता की इच्छा के विरुद्ध उसने उसे उसके पिता के साथ कधार का हाकिम नियुक्त कर दिया। अन्त में इस पिता एव पुत्र ने विद्रोह किये और बडा उत्पात मचाया। जब मैंने खुसरो शाह पर विजय प्राप्त कर ली और उसके सहायकों को उससे पृथक् करा दिया और जब मैंने जुनून अरगून के पुत्र मुकीम से काबुल छीन लिया तो जुनून बेग एव खुसरो शाह दोनो विवश हो कर सुल्तान हुसेन मीर्जा की सेवा मे पहुचे। जुनून अरगून, मीर्जा की मृत्यु के उपरान्त और भी शक्तिशाली हो गया कारण कि कोह दामन के उवा एव चच्चरान नामक भाग भी उसे प्रदान कर दिये गये। उसे बदी उज्जमान मीर्जा के फाटकों का मुख्य अधिकारी नियुक्त कर दिया गया।[1] महम्मद बरन्दूक बरलास को मुजफ्फर हुसेन मीर्जा के फाटकों का अधिकारी नियुक्त कर दिया गया। यह उस समय हुआ जब दोनों मीर्जा हेरी के सयुक्त शासक हो गये थे। यद्यपि वह बडा वीर था किन्तु वह कुछ पागल और छिछला व्यक्ति था। यदि वह छिछला न होता तो चापलूसी को इतना अधिक पसन्द न करता और अपने आपको इतना बदनाम न करा देता। इस घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है। जिस समय हेरी मे उसको अत्यधिक अधिकार एव विश्वास प्राप्त था तो कुछ शेखों एव मुल्लाओं ने उससे जाकर कहा, 'नक्षत्र तेरा साथ दे रहे हैं। तू हिज्ब्रुल्लाह[2] कहलायेगा और ऊजबेगों पर विजय प्राप्त कर लेगा।' इस चापलूसी पर विश्वास करके उसने अपनी लुगी अपनी ग्रीवा में लपेट कर उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया। जब शैबाक खा ने मीर्जाओं पर आक्रमण करके उनमें से एक-एक को बादगीस के समीप पराजित कर दिया तो जुनून अरगन ने मुल्लाओं की बात पर विश्वास करके १००-१५० सैनिकों को लेकर करा रबात के समीप, ऊजबेगों का मुकाबला किया। ऊजबेगों के एक बहुत बडे समूह ने उस पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया। वह स्वय बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या कर दी गई। वह बडा धर्मनिष्ठ था, और नमाज कभी न त्यागता था अपितु अतिरिक्त नमाजें पढा करता था। वह शतरज के पीछे पागल रहता था। उसका जैसा जी चाहता वह शतरज खेलता था और यदि अन्य लोग एक हाथ से शतरज खेलते थे तो वह दोनों हाथ से खेलता था।[3] वह बहुत बडा कजूस एव कृपण था।

दरवेश अली

एक अन्य अमीर दरवेश अली बेग था। वह अली शेर बेग का सगा छोटा भाई था। कुछ समय तक वह बल्ख का हाकिम रहा जहा उसने बेगों के समान उत्तम कार्य किये किन्तु वह जड-बुद्धि वाला और गुणों से शून्य था। जड-बुद्धि के कारण वह बल्ख से पृथक् कर दिया गया था और उसने मीर्जा के कुन्दूज एव हिसार के प्रथम युद्ध में बाधायें डाली थीं। मैं ९१६ हि० (१५१० ई०) में कुन्दूज पहुचा तो वह मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। वह बडा मूर्ख एव बुद्धि से शून्य ज्ञात होता था और केवल शाति से घर में बैठने योग्य था। उसे जो कुछ आश्रय प्राप्त हुआ वह अली शेर बेग के कारण मिला होगा।

१ बदी उज्जमान मीर्जा ने जुन्नून की एक पुत्री से विवाह कर लिया था जिसकी मृत्यु ९११ हि० १५०५-६ ई०) में हो गई।
२ ईश्वर का सिंह।
३ अन्य लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक रुचि थी।

मुगूल बेग

एक अन्य अमीर मुगूल बेग था। वह हेरी का कुछ समय तक हाकिम रह चुका था और बाद मे उसे अस्तराबाद प्रदान कर दिया गया था। वहा से वह याकूब बेग के पास एराक भाग गया। वह बडा कामी एव जुआडी था।

सैयिद बद्र

सैयिद बद्र एक अन्य अमीर था। वह बडा ही शक्तिशाली, उत्तम चरित्र तथा सिद्धान्तो का व्यक्ति था। वह बडे ही आश्चर्यजनक रूप से उत्तम नृत्य करता था। एक नृत्य तो वह बडे ही विचित्र ढग से करता था जो उसी का आविष्कार था। वह सर्वदा मीर्ज़ा की सेवा मे रहा और मदिरा-पान एव आनन्द मगल मे उसका सहचर रहता था।

इस्लाम बरलास

इस्लाम बरलास एक अन्य अमीर था। वह सीधा सादा (तुर्क) व्यक्ति था। शिकरे से बडे उत्तम ढग से शिकार करता और कुछ बात भली भाति करता था। ३०-४० बातमान की धनुष पर चिल्ला चढा कर वह बडा अच्छा निशाना लगाता था। कबक[1] के मैदान मे घोडा सरपट दौडाते हुए वह अपनी धनुष का चिल्ला उतार कर पुन चिल्ला चढाता तथा निशाना लगाता था। वह अपनी ज़ेहगीर[2] को डोरी के एक सिरे पर १ १½ गज पर बाध लेता और दूसरे सिरे को एक वृक्ष म बाध देता और लक्ष्य को उछाल कर जब वह घूमता हुआ आता रहता तो निशाना लगा लेता था। वह ऐसे अनेक आश्चर्यजनक करतब कर सकता था। वह निरन्तर मीर्ज़ा की सेवा करता रहा और प्रत्येक महफिल मे उपस्थित रहता था।

सुल्तान जुनैद बरलास

सुल्तान जुनैद बरलास एक अन्य अमीर था। वह अपने जीवन-काल के अन्तिम दिनो मे सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की सेवा मे चला गया। वह उस सुल्तान जुनैद बरलास का पिता था जा इस समय जौनपुर का सयुक्त हाकिम है।[3]

शेख अबू सईद खा

एक अन्य अमीर शेख अबू सईद खा दरमियान[4] था। यह नही कहा जा सकता कि वह दरमियानी इस कारण कहलाता है कि वह एक युद्ध के दरमियान मे मीर्ज़ा के पास एक घोडा ले गया और या उसन

[1] एक समतल मैदान जहा एक खम्बे पर एक लक्ष्य बाध दिया जाता था और धनुर्धारी घोडा दौडाते हुये उस पर बाण चलाते थे।
[2] वह अगूठी जो बाण चलाने वाले अगुली की रक्षा हेतु पहनते हैं।
[3] उसे रबी उल अव्वल ९३३ हि० (जनवरी १५२७ ई०) म जौनपुर का हाकिम बनाया गया किन्तु रमज़ान ९३५ हि० जून १५२९ ई०) म उसे चुनार प्रदान कर दिया गया।
[4] बीच, मध्य।

अपने आपको मीर्जा तथा एक अन्य व्यक्ति के, जो मीर्जा की हत्या करना चाहता था, दरमियान मे डाल दिया।

वेहबूद वेग

एक अन्य अमीर वेहबूद वेग था। वह छापा मार युद्ध के समय चुहरो[1] के साथ कार्य कर चुका था। उसने अपनी सेवाओं से मीर्जा को इतना अधिक सतुष्ट कर दिया कि मीर्जा ने तमगे तथा सिक्के मे उसके नाम को डलवा दिया।

शेखीम वेग

शेखीम वेग एक अन्य अमीर था। लोग उसे शेखीम सुहैली कहते थे कारण कि उसका तखल्लुस 'सुहैली' था। वह हर प्रकार के शेर लिखता रहता था और भारी भरकम शब्दो एव भयानक विचारो का प्रयोग करता था। उसका एक शेर निम्नाकित है —

शेर

'मेरे दुखो की रात्रि की आहो का भवर आकाश को घेर लेता है,
मेरे आसुओ का सैलाव, अजगर के समान समस्त ससार को निगल जाता है।"

कहा जाता है कि जब उसने अपना यह शेर मौलाना अब्दुर्रहमान जामी की सेवा मे पढा तो सम्मानित मौलाना ने कहा, "तुम शेर कहते हो अथवा लोगो को डराते हो?' उसने एक दीवान का सकलन किया। उसकी मसनवियाँ भी मिलती हैं।

मुहम्मदे वली वेग

एक अन्य अमीर मुहम्मदे वली वेग था। वह वली वेग का, जिसका उल्लेख हो चुका, पुत्र था। बाद मे वह मीर्जा का एक बहुत बडा वेग हो गया। यद्यपि वह बहुत बडा वेग हो गया था किन्तु वह अपनी सेवाओ की ओर से कभी उपेक्षा न करता था और रात-दिन फाटक पर टेक लगाये बैठा रहता था। इस अवस्था मे फाटक के बाहर उसका भोजन बटता रहता एव दस्तरख्वान फैला रहता था। जो व्यक्ति सेवा मे इस प्रकार निरन्तर लगा रहे, उसे जो आश्रय प्राप्त हुआ वह मिलना ही चाहिये था। आजकल रोग फैला है कि जिस किसी के पास पाच छ गजे-अधे एकत्र हो गये वह वेग बनने का प्रयत्न करने लगता है। उस प्रकार की सेवा अब कहा? यह उनका दुर्भाग्य है। मुहम्मदे वली वेग के आम दस्तरख्वान तथा भोजन बडे उत्तम होते थे। वह अपने सेवको को साफ सुथरे एव उत्तम वस्त्र पहनाये रहता था। वह गरीबो एव दरिद्रियो को अपने हाथ से अत्यधिक दान-पुण्य किया करता था। वह अप-शब्द बोला करता तथा बद ज़बान था। जब मैंने ९१७ हि० (अक्तूबर १५११ ई०) मे समरकन्द पर अधिकार जमाया तो वह तथा दरवेश अली किताबदार[2] मेरी सेवा मे थे। उस समय उसे पक्षाघात हो गया था। उसकी बातो

१ तरुण सेवक, छोकरा नौकर।
२ पुस्तकालयाध्यक्ष।

मे कोई आनन्द न रहा था और उसे जिन कारणो से आश्रय प्राप्त हुआ था, उनका अन्त हो चुका था। उसकी अत्यधिक सेवाओ ने ही उसे इतनी उन्नति दिलाई थी।

बाबा अली

बाबा अली ईशक आका[1] एक अन्य अमीर था। सर्व प्रथम अली शेर बेग ने उसे आश्रय प्रदान किया, फिर मीर्ज़ा ने उसके योग्य के कारण उसे अपनी सेवा मे ले लिया और उसे ईशक आका नियुक्त कर दिया तथा बेग के पद पर उन्नति प्रदान कर दी। उसका एक पुत्र इस समय[2] मेरी सेवा मे है। वह अली का यूनुस है जो इस समय मेरा बेग एव विश्वास पात्र है। उसका उल्लेख विभिन्न स्थानो पर होगा।

बद्रुद्दीन

एक अन्य अमीर बद्रुद्दीन था। वह सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के सद्र मीरक अब्दुर्रहीम की सेवा मे था। कहा जाता है कि वह बडा फुरतीला एव तेज था और ७-७ घोडो पर फादता चला जाता था। वह तथा बाबा अली घनिष्ठ मित्र थे।

हसन

अली जलाएर का हसन एक अन्य अमीर था। वास्तव मे उसका नाम हुसेन जलाएर था किन्तु वह अली के हुसन के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। उसके पिता अली जलाएर को बाबर मीर्ज़ा ने आश्रय प्रदान करके बेग नियुक्त कर दिया होगा। तदुपरान्त जब यादगार महम्मद मीर्ज़ा ने हेरी पर अधिकार जमा लिया तो अली जलाएर से अधिक श्रेष्ठ कोई व्यक्ति न था। अली का हसन, सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का कूर बेगी था। वह कवि था और 'तुर्फ़ली' तखल्लुस करता था। वह बडे उत्तम क़सीदे लिखता था और अपने समय मे इस कला मे अद्वितीय समझा जाता था। जब ९१७ हि० (१५११ ई०) मे मैंने समरकन्द पर अधिकार जमा लिया तो वह मेरी सेवा मे पहुच कर ५-६ वर्ष तक रहा और मेरे विषय मे उत्तम क़सीदो की रचना की। वह बडा ही निलज्ज एव मुक्तहस्त था। वह चुहरे[3] रखता था और निरन्तर नर्द[4] एव जुआ खेला करता था।

ख़्वाजा अब्दुल्लाह् मरवारीद

एक अन्य अमीर ख़्वाजा अब्दुल्लाह मरवारीद था। वह सर्वप्रथम सद्र था किन्तु बाद मे मीर्ज़ा का बडा ही विश्वास-पात्र बेग हो गया। वह बहुत बडा गुणवान् था। उसके बराबर कानून[5] कोई न बजा सकता था और उसने कानून के स्वरो का आविष्कार किया। वह कई प्रकार की लिपिया लिख सकता था। तालीक[6] बडे सुन्दर ढग एव उत्तम प्रकार से लिखता था। इन्शा भी वह अच्छी लिखता था। उसके शेर

१ फाटक की रक्षा करने वालों का अफ़सर।
२ लगभग ६३४ हि० (१५२७-२८ ई०)।
३ तरुण दास।
४ चौसर।
५ एक प्रकार का तारों का बाजा जिसमे ५०-६० तार होते हैं और दोनों हाथ से बजाये जाते हैं, किसी धनुष इत्यादि का प्रयोग नहीं होता।
६ नस्तालीक।

बडे अच्छे होते थे और वह 'ब्यानी' तखल्लुस करता था। वह बडा ही उत्तम सहचर था। उसके अन्य गुणो की तुलना मे उसके शेरो को उच्च स्थान न प्राप्त था किन्तु वह शेरों को भलीभाति परख लेता था। वह व्यभिचारी एव निर्लज्ज था। व्यभिचार के कारण "आबला"[1] नामक रोग मे ग्रस्त हो गया और उसके हाथ-पाव काम के न रहे। कई वर्ष तक नाना प्रकार के कष्ट एव दारुण पीडा भोग कर उमी रोग की वजह से वह ससार से बिदा हो गया।

सैयिद मुहम्मदे ऊरूस

एक अन्य अमीर सैयिद मुहम्मदे ऊरूस था। वह ऊरूस अरगून का पुत्र था। जब सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा सिहासनारुढ हुआ तो ऊरूस अरगून उसका बेग था और उसे मुख्य अधिकार प्राप्त थे। उस समय अनेक धनुष धारी जवान थे, जिनमे प्रमुख सैयिद मुहम्मद ऊरूस था। उसकी धनुष बडी दृढ और उसके सिरे बडे लम्बे थे। वह बडा ही वीर एव उत्तम निशानेबाज़ रहा होगा। वह कुछ समय तक अन्दिखूद का हाकिम रह चुका था।

मीर कम्बर अली

मीर (कम्बर) अली अमीर आखूर एक अन्य व्यक्ति था। उसी ने सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पास एक आदमी भेजकर प्रतिरक्षा-हीन यादगार मुहम्मद मीर्ज़ा पर आक्रमण करा दिया।

सैयिद हसन ऊगलाकची

सैयिद हसन ऊगलाकची एक अन्य अमीर था। वह सैयिद ऊगलाकची का पुत्र एव सैयिद यूसुफ बेग का अनुज था। उसका पुत्र मीर्ज़ा फर्रुख बडा योग्य एव गुणवान् था। ९१७ हि० (१५११ ई०) मे मेरे समरकन्द पर अधिकार जमाने के पूर्व वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। यद्यपि उसने बहुत कम शेर कहे थे किन्तु जितने शेर भी उसने कहे वे अच्छे कहे। उसे उस्तरलाब एव ज्योतिष का बडा उत्तम ज्ञान था। गोष्ठियो एव वार्तालाप मे भी वह बडा अच्छा था। किन्तु वह बुरी तरह मदिरापान करता था। वह गजदवान के युद्ध मे मारा गया[2]।

तीगरी बीरदी

तीगरी बीरदी सामानची[3] एक अन्य अमीर था। वह तुर्क[4], वीर एव तलवार चलाने मे कुशल था। जैसा कि उल्लेख हो चुका है, उसने खुसरो शाह के प्रतिष्ठित सेवक नज़र बहादुर पर बल्ख के फाटक के बाहर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर ली।[5]

तुर्कमान अमीर

इनके अतिरिक्त कुछ तुर्कमान अमीर भी थे जिन्हें मीर्ज़ा की सेवा मे पहुचने के उपरान्त आश्रय

१ सम्भवत· उपदश।
२ ३ रमज़ान ९१८ हि० (१२ नवम्बर १५१२ ई०)।
३ शाही असबाब का प्रबध करने वालों का अधिकारी।
४ सीधा सादा, खुर्रा।
५ ९०३ हि० (१४९७-९८ ई०)।

प्राप्त हुआ। जो लोग पहिले पहलउ आये नमे एक अली खा बायदार था। उसके अतिरिक्त असद वेग तथा तहमतन वेग थे। वे बड़े-छोटे भाई थे। बदी उज्जमान मीर्ज़ा ने तहमतन वेग की पुत्री से विवाह कर लिया था और उससे मुहम्मद जमान मीर्ज़ा का जन्म हुआ। मीर उमर वेग एक अन्य अमीर था। बाद मे वह बदी उज्जमान मीर्ज़ा की सेवा मे चला गया। वह वीर, सीधा-सादा एव वडा ही अच्छा आदमी था। उसका पुत्र, जिसका नाम अबुल फतह था, एराक से मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह बडा ही कोमल, अस्थिर एव कमजोर आदमी है। ऐसे पिता का ऐसा पुत्र हो!

शाह इस्माईल के खुरासान पर आक्रमण कर लेने के बाद आने वाले

जो लोग शाह इस्माईल सफवी के एराक एव अज़रबाईजान पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त[1] उपस्थित हुये उनमे तीमूर वेग की नस्ल का अब्दुल बाकी मीर्ज़ा था। वह मीरान शाही[2] था। उसके पूर्वज बहुत समय पूर्व उस भूभाग मे चले गये होंगे और अपने मस्तिष्क से बादशाही के विचार निकाल कर, वहा के हाकिमों की सेवा में सम्मिलित हो गये होंगे और उन लोगो द्वारा आश्रय प्राप्त किया होगा। तीमूर उस्मान जो याकूब वेग का प्रतिष्ठित एव विश्वस्त वेग था और जिसने एक बार बहुत बडी सख्या मे जिन लोगो को एकत्र कर लिया था, उन्हें खुरासान पर आक्रमण हेतु भेजना निश्चय किया था, अब्दुल बाकी मीर्ज़ा का चाचा रहा होगा। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने अब्दुल बाक़ी मीर्ज़ा को तुरन्त अपना विश्वास-पात्र बना लिया और मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा की माता सुल्तानम बेगम[3] को उससे विवाह करके उसे अपना जामाता बना लिया। बाद के आने वालों मे एक मुराद वेग बायदरी था।

उसके सद्र

मीर सरे बरेहना

उनमें से एक मीर सरे बरेहना था। वह अन्दिजान के किसी गाँव का था और सैयिद होने का दावा करता था।[4] वह बडा ही हँस-मुख, उत्तम सहचर एव मीठी वाणी वाला था। खुरासान के कवि एव विद्वान् उसके निर्णय एव बातो को प्रामाणिक मानते थे। अमीर हमज़ा के किस्से के समान उसने एक ग्रथ की रचना मे अपना समय नष्ट कर दिया। यह ग्रथ झूठी, समझ में न आने वाली एव अस्वाभाविक कहानियो का पुलिन्दा है।

कमालुद्दीन हुसेन गाज़ुर गाही

कमालुद्दीन हुसेन गाज़ुर गाही एक अन्य सद्र था। यद्यपि वह सूफी न था किन्तु सूफियों की नक्ल

१ ९०६ हि० (१५०० ई०)।
२ अब्दुल बाकी, पुत्र उस्मार, पुत्र सैयिदी अहमद, पुत्र मीरान शाह।
३ सुल्तानीम का विवाह वैस से ८९५ अथवा ८९६ हि० (१४८९-९० ई० या १४९०-९१ ई०) के बाद न हुआ होगा। उसका विवाह अब्दुल बाकी से ९०८ हि० (१५०२-३ ई०) में हुआ।
४ मुतसैयिद था।

था[१]।अली शेर बेग की सेवा में ऐसे ही सूफी एकत्र होकर वज्द[२] एवं समा[३] मे तल्लीन रहते थे। कमालुद्दीन का वंश उनमें से बहुतों के वंश से अच्छा रहा होगा। उसको उसके उच्च वंश के कारण उन्नति प्राप्त हुई होगी कारण कि उसमें कोई अन्य उल्लेखनीय गुण न था। 'मजालिसुल उश्शाक' नामक उसकी एक रचना मिलती है जिसे उसने प्रस्तावना में सुल्तान हुसेन मीर्जा की बताया है। यह नितांत झूठ है और बिना किसी स्वाद का झूठ है। उसमें उसने कुछ ऐसी बिना सिर-पैर की बातें लिखी हैं जिनमें कुफ्र का आभास होता है। इस प्रकार उसने बहुत से नबियों एवं वलियों[४] को इश्क मजाजी[५] में ग्रस्त बताया है और प्रत्येक के लिये कोई न कोई माशूक अथवा प्रियतमा को पैदा कर दिया है। एक बड़ी ही विचित्र एवं वाहियात बात यह है कि यद्यपि वह प्रस्तावना में लिखता है कि "यह सुल्तान हुसेन मीर्जा के अपने शब्द एवं उसकी रचना है किन्तु बीच पुस्तक में बहुत सी बातों को वह अपनी कृति बताता है। जिन शेरों का उसमें प्रयोग हुआ है, वे सब के सब उसी के हैं। उसी ने चापलूसी में जुनून अरगून को हिजब्रुल्लाह की उपाधि दे दी थी।

उसके वज़ीर

मजदुद्दीन मुहम्मद

उसका एक वजीर मजदुद्दीन मुहम्मद था जो ख्वाफ के ख्वाजा पीर अहमद का पुत्र था। वह मीर्जा का एक कल्म[६] दीवान[७] था। सर्व प्रथम सुल्तान हुसेन मीर्जा के दीवान[८] में कोई सुव्यवस्था एवं सुप्रबन्ध न था। अपव्यय एवं अनावश्यक व्यय बड़ा अधिक होता था। न तो प्रजा ही सुखी थी और न सैनिक ही संतुष्ट थे। उस समय जब मजदुद्दीन मुहम्मद परवानची[९] ही था और मीरक कहलाता था तो मीर्जा को कुछ धन की अत्यधिक आवश्यकता पड़ गई। जब उसने दीवान के अधिकारियों से धन मांगा तो उन्होंने उत्तर दिया कि कोई धन नहीं है और न वसूल हुआ है। मजदुद्दीन मुहम्मद इसे सुनकर मुस्कराया होगा कारण कि मीर्जा ने उससे मुस्कराने की वजह पूछी। उसके निवेदन पर सब लोग हटा दिये गये और उसने जो कुछ उसके दिल में था, मीर्जा से कहा और निवेदन किया कि, "यदि मीर्जा यह वचन दें कि मुझे अधिकार देकर मेरी बात के विरुद्ध कुछ न करेंगे तो मैं अल्प समय में ऐसा करूंगा कि प्रजा समृद्ध एवं सैनिक संतुष्ट हो जायेंगे और खजाना भर जायेगा।' मीर्जा ने उसकी इच्छानुसार वचन दे दिया और प्रतिज्ञा करके मजदुद्दीन मुहम्मद को पूरे खुरासान में पूर्ण रूप से अधिकार-सम्पन्न कर दिया और उसे पूरा शासन प्रबंध सौंप दिया। उसने पूर्ण रूप से यथा सम्भव प्रयत्न करके अल्प समय में सैनिकों एवं प्रजा को संतुष्ट कर दिया। खजाने में अत्यधिक धन एकत्र करके राज्य को समृद्ध एवं सुव्यवस्थित कर दिया। उसने समस्त बेगों एवं प्रतिष्ठित लोगों के विरोध के बावजूद इतनी सफलता प्राप्त की।

१ मुतसव्विफ़।
२ वह मूर्च्छा जो ईश्वर के प्रेम में सूफ़ियों पर आ जाती है।
३ सूफ़ियों का संगीत।
४ सूफ़ी, संतों।
५ सांसारिक प्रेम।
६ पूर्ण अधिकार सम्पन्न।
७ वित्त विभाग का मन्त्री।
८ वित्त विभाग।
९ सचिव जो शाही आदेशों को लिखता था।

अली शेर बेग उसके विरोधियों का नेता था और वे सब के सब मजदुद्दीन मुहम्मद से रुष्ट थे। उनके प्रयत्न एवं षड्यन्त्र के कारण वह पदच्युत कर दिया गया तथा बन्दी बना लिया गया। उसके स्थान पर ख्वाफ के निज़ामुलमुल्क को दीवान बना दिया गया। किन्तु अल्प समय में उन लोगों ने उसे भी बन्दी बनवा दिया और उसकी हत्या करवा दी। तदुपरान्त उन्होंने ख्वाजा अफ़ज़ल को एराक से बुलवाया और उसे दीवान बनवा दिया। जब मैं काबुल पहुँचा¹ तो वह उसी समय बेग नियुक्त किया गया और दीवान मे मुहर भी लगाया करता था।

ख्वाजा अता

ख्वाजा अता एक अन्य वज़ीर था। यद्यपि जिन लोगों का उल्लेख हो चुका है उनके समान उसे न तो कोई उच्च पद प्राप्त था और न वह दीवान था किन्तु पूरे खुरासानात मे उसके परामर्श के बिना कोई बड़ा कार्य न हो सकता था। वह बडा ही पवित्र, नमाज़ी एवं ईमानदार था। वह अपने कार्यों मे बडा परिश्रमी था।

मौलाना अब्दुर्रहमान जामी

जिन लोगो का उल्लेख हो चुका है वे सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के सेवक एवं परिजन थे। उसका युग बड़ा ही आश्चर्यजनक था। इसमे खुरासान, विशेष रूप से हेरी विद्वानों एवं अद्वितीय व्यक्तियों से परिपूर्ण थे। जो कोई भी जिस कार्य मे हाथ डालता उसका उद्देश्य यही होता कि वह उसे उन्नति के शिखर पर पहुंचा दे। उनमे एक मौलाना अब्दुर्रहमान जामी थे जो अपने युग मे जाहिरी² एवं बातिनी³ ज्ञानो मे अद्वितीय थे। उनकी कवितायें बडी प्रसिद्ध हैं। मौलाना को जो यश प्राप्त था, वह ऐसा नहीं जिसे किसी परिचय की आवश्यकता हो। मेरे हृदय में आया कि इन तुच्छ पृष्ठों मे आशीर्वाद हेतु उनके नाम का उल्लेख हो जाये और उनके गुणो मे से कुछ की चर्चा कर दी जाये।

शेखुल इस्लाम सैफुद्दीन

शेखुल इस्लाम सैफुद्दीन अहमद एक अन्य व्यक्ति थे। वे मुल्ला सादुद्दीन तफ़ताज़ानी⁴ के वंश से थे जिनके उत्तराधिकारी उनके समय से लेकर अब तक खुरासान में शेखुल इस्लाम का पद प्राप्त करते रहे हैं। वे बहुत बड़े विद्वान् थे। अरबी के ज्ञानों एवं नक़ली⁵ ज्ञानो मे उन्हें बडी कुशलता प्राप्त थी। वे बड़े ही पवित्र एवं ईमानदार आदमी थे। यद्यपि वे स्वयं शाफ़ई थे किन्तु अन्य धर्म वालों के प्रति भी उदार थे। वे ७० वर्ष तक जीवित रहे और इस बीच मे कभी जमाअत⁷ की नमाज़ न त्यागी। जब शाह इस्माईल ने हेरी पर अधिकार जमाया तो उनकी हत्या करा दी गई।⁸ अब उनके सम्मानित वंश का कोई व्यक्ति जीवित नही।

१ ९१० हि० (१५०४-५ ई०)।
२ वह ज्ञान जिनका सम्बंध सांसारिक जीवन से है।
३ आध्यात्मिक अथवा ईश्वर को प्राप्त करने से सम्बंधित ज्ञान।
४ मुल्ला सादुद्दीन मसऊद तफ़ताज़ानी, पुत्र उमर, यज़्द के तफ़्त नामक स्थान के निवासी थे। उनकी मृत्यु ७९२ हि० (१३९० ई०) में हुई।
५ व्याकरण, भाषा, साहित्य इत्यादि।
६ हदीस, फ़िक़्ह इत्यादि।
७ सामूहिक नमाज़।
८ ९१६ हि० (१५१०-११ ई०)।

मौलाना शेख हुसेन

एक अन्य मौलाना शेख हुसेन थे। यद्यपि उन्हें सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के समय मे उन्नति प्राप्त हुई किन्तु वे सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के समय मे भी जीवित थे। अत उनका उल्लेख यहा कर दिया गया। दर्शन शास्त्र, अकली ज्ञानो[1] तथा कलाम[2] के वे बहुत बडे विद्वान् थे। थोडे से शब्दो से वे अधिक अर्थ निकाल लेते थे, और वार्तालाप मे उचित रूप से उसका प्रयोग करते थे। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा के वे बहुत बडे विश्वास-पात्र थे और (उसके समय मे) उन्हें अत्यधिक अधिकार प्राप्त थे अत राज्य के समस्त शासन प्रबध मे उनका हाथ था। उनसे बढकर कोई अन्य मुहतसिब[3] नही हुआ है। इसी कारण उनको इतना अधिक विश्वास प्राप्त था। सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का विश्वास-पात्र होने के कारण, सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के समय मे ऐसे अद्वितीय व्यक्ति का अपमान किया जाता था।

मुल्लाज़ादा मुल्ला उस्मान

मुल्ला जादा मुल्ला उस्मान एक अन्य व्यक्ति थे। वे चीर्ख़ के निवासी थे जो काबुल के तूमानो मे से लोहूगुर तूमान मे है। वे जन्म-जात मुल्ला कहलाते थे कारण कि लूग बेग मीर्ज़ा के समय मे १४ वर्ष की अवस्था मे वे शिक्षा दिया करते थे। वे हज के लिये समरकन्द से जाते हुये हेरी पहुचे। वहा उन्हें रोक लिया गया और सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने उन्हें अपने पास रख लिया। वे अपने युग के बहुत बडे विद्वान् थे। कहा जाता है कि उन्हे इजतेहाद[4] की श्रेणी प्राप्त थी किन्तु उन्होने कोई इजतेहाद नही किया। प्रसिद्ध है कि उन्होने एक बार पूछा कि, "लोग एक बात सुन कर किस प्रकार भूल जाते हैं?" उनकी स्मरण-शक्ति बडी ही दृढ थी।

मीर जमालुद्दीन मुहद्दिस

एक अन्य अमीर जमालुद्दीन मुहद्दिस थे। हदीस के ज्ञान मे ख़ुरासान मे उनके बराबर कोई अन्य न था। उन्होंने बडी अधिक आयु पाई और अब भी जीवित हैं।[5]

मीर मुरताज़

एक अन्य मीर मुरताज़ थे। उन्हे दर्शन-शास्त्र एव आत्मविद्या मे बडी दक्षता प्राप्त थी। शतरज के पीछे तो वे पागल थे। यदि उन्हें दो शतरज के खिलाडी मिल जाते तो वे एक से शतरज खेलते समय दूसरे का दामन इस आशय से पकडे बैठे रहते कि कही वह भाग न जाये।

मीर मसऊद

मीर मसऊद शेरवान निवासी एक अन्य व्यक्ति थे।

१ जिनका सम्बंध तर्क वितर्क से हो अर्थात् दर्शन शास्त्र, तर्क-शास्त्र इत्यादि।
२ शरीअत के सिद्धांतों पर आधारित दर्शन शास्त्र।
३ वह अधिकारी जो शरा के विरुद्ध कार्यों पर रोक टोक रखता था।
४ वह व्यक्ति जिसे शरा के सिद्धान्तों की सीमा के भीतर नई परस्थिति के अनुसार अपना मत व्यक्त करने का अधिकार हो।
५ सम्भवतः ९३४ हि० से ९३७ हि० के मध्य में।

मीर अब्दुल गफूर

लार के मीर अब्दुल गफूर भी एक व्यक्ति थे। वे मौलाना अब्दुर्रहमान जामी के शिष्य भी थे और मुरीद भी। उन्होंने मौलाना की अधिकांश रचनायें उनके समक्ष पढ़ी थीं और नफ़हात[1] की टीका लिखी। उन्हें ज़ाहिरी एवं बातिनी विद्याओं का ज्ञान था। वे बड़े ही सीधे सादे एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। जो कोई भी मुल्ला कहलाता था उसे उनकी सेवा में व्याख्या हेतु कुरान शरीफ का भाई अश प्रस्तुत करने की कोई रोक-टोक न थी। जहां कहीं वह किसी दरवेश के विषय में सुन पाते तो जब तक उसकी सेवा में न पहुंच जाते उन्हें चैन न आता। जब मैं खुरासान में था तो वे रुग्ण थे। जब मैं मुल्ला[2] के मज़ार का तवाफ़[3] कर चुका तो मैं मुल्ला के मदरसे में जहां वे थे उनके स्वास्थ्य के विषय में पूछने पहुंचा। कुछ दिन उपरान्त उसी रोग के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

मीर अताउल्लाह

मशहद के मीर अताउल्लाह एक अन्य व्यक्ति थे। उसे अरबी विद्याओं का बड़ा उत्तम ज्ञान था। फ़ारसी में क़ाफ़िये[4] के विषय में उसने एक पुस्तक की रचना की। यह बड़ी ही उत्तम रचना है किन्तु इसमें दोष यह है कि उदाहरण स्वरूप उसने अपने शेर प्रस्तुत किये हैं और उन्हें ठीक समझते हुये प्रत्येक शेर के पूर्व दास ने इस प्रकार कहा है लिखना परमावश्यक समझा है। इस पुस्तक में उसने बहुत से प्रतिस्पर्धियों की बड़ी उत्तम आलोचना है। उसने एक अन्य पुस्तक सनाय[5] के विषय में लिखी और उसका नाम बदी उस्सनाय रक्खा। यह पुस्तक भी बड़ी अच्छी है। उसके धर्म के विषय में बड़ा मतभेद है।

क़ाज़ी इख़्तियार

काज़ी इख़्तियार भी एक अन्य व्यक्ति था। वह बड़ा ही उत्तम काज़ी था और उसने फ़िक़ह पर एक पुस्तक की रचना की। यह बड़ी ही उत्तम पुस्तक है। व्याख्या हेतु प्रत्येक विषय पर उसने कुरान की आयतें संकलित कीं। जब मैंने मीर्ज़ाओं से मुर्गाब पर भेंट की तो वह मुहम्मद यूसुफ के साथ मुझसे भेंट करने आया।[6] बाबरी लिपि के विषय में वार्ता होने लगी। उसने मुझसे उसके प्रत्येक अक्षर के विषय में पूछा। मैंने प्रत्येक अक्षर को लिखा। उसने प्रत्येक अक्षर का अध्ययन किया और इस लिपि की योजना को समझकर इस लिपि में वहीं कुछ लिखा।

मीर मुहम्मद यूसुफ

मीर मुहम्मद यूसुफ एक अन्य व्यक्ति था। वह शेखुल इस्लाम[7] का शिष्य था और बाद में उसे शेखुल इस्लाम नियुक्त कर दिया गया था। किसी सभा में वह और किसी में काज़ी इख़्तियार उच्च

१ तसव्वुफ़ के सम्बंध में मौलाना अब्दुर्रहमान जामी की एक रचना।
२ मुल्ला अब्दुर्रहमान जामी।
३ चारों ओर श्रद्धा पूर्वक चक्कर लगाना।
४ कविता का एक विषय।
५ कविता के गुण दोष का ज्ञान।
६ ९१२ हि० (१५०६-७ ई०)।
७ सम्भवतः सैफ़ुद्दीन अहमद।

आसन ग्रहण करता था। अपनी अन्तिम अवस्था मे वह सैनिक जीवन एव सेना के नेतृत्व के पीछे इतना पागल हो गया था कि उसके वार्तालाप से इन दो बातो के अतिरिक्त न तो उसकी विद्वत्ता का पता चलता था और न उसकी बुद्धि का। यद्यपि वह उन दोनो मे असफल रहा परन्तु उसकी उन दोनो महत्वाकाक्षाओ के कारण उसकी धन-सम्पत्ति एव उसका घर-बार नष्ट हो गया। वह शीआ रहा होगा।

सुल्तान हुसेन मीर्जा के दरबार के कवि

कवियो म सर्व श्रेष्ठ एव इस समूह के नेता मौलाना अब्दुर्रहमान जामी थे। इनके अतिरिक्त शेख़ीम सुहैली तथा अली जलाएर के हसन थे। सुल्तान हुसेन मीर्जा के बेगो एव विश्वास-पात्रो के प्रसग मे उनका उल्लेख हो चुका है।

आसफी

उनके अतिरिक्त आसफी था। उसने वजीर का पुत्र होने के कारण 'आसफी' तख़ल्लुस ग्रहण किया था।[1] उसके शेर, भाव एव सौन्दर्य से शून्य नही किन्तु प्रेम के उन्माद का उनमे अभाव है। उसका यह दावा था कि "मैं ने अपनी किसी गज़ल मे (शेरो की) सख्या बढाने का प्रयत्न नहीं किया है।" सम्भवत यह बनावट है। उसके अनुज एव अन्य सम्बन्धियो ने उसकी गज़लो का सकलन किया। गज़लो के अतिरिक्त उसने अन्य प्रकार की कविता बहुत कम की। जब मैं ख़ुरासान[2] पहुचा तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

बनाई

बनाई एक अन्य कवि था। वह हेरी निवासी था, उसने अपने पिता उस्ताद मुहम्मद सब्ज बना के कारण बनाई तख़ल्लुस ग्रहण किया। उसकी गजलो मे सौन्दर्य एव भावोन्माद बहुत है। फलो के विषय मे उसकी एक मसनवी मुतक़ारिब[3] बहर मे हैं। इसमे बिना मतलब के शेर भरे हैं। उसकी एक छोटी-सी मसनवी खफीफ[4] बहर मे है। इसी प्रकार एक बडी मसनवी इसी बहर मे है जो उसने अपने जीवन के अन्त मे पूरी की। उसे युवावस्था मे सम्भवत सगीत का कोई ज्ञान न था जिसके लिये अली शेर बेग ने उसे ताना दिया। अत एक शीत ऋतु मे जब मीर्जा, अली शेर बेग को अपने साथ लेकर मर्व मे शीत ऋतु व्यतीत करने चला गया तो बनाई हेरी ही मे ठहरा रह गया और सगीत का इतना अधिक अभ्यास कर लिया कि वह सगीत सम्बन्धी रचनायें करने लगा। ग्रीष्म-ऋतु आते आते जब मीर्जा हेरी वापस आया तो उसने स्वर इत्यादि इस प्रकार प्रस्तुत किये कि सभी को बडा आश्चर्य हुआ और अली शेर बेग ने भी बडी प्रशसा की। उसकी सगीत सम्बन्धी रचनायें बडी पूर्ण हैं। उनमे एक "नुह रग" है जिसमे दोनो विषय भी पाये जाते हैं[5] और स्वरो मे विभिन्नता भी। बनाई, अली शेर बेग का प्रतिस्पर्धी था। इसी कारण उसके प्रति बडा दुर्व्यवहार होता था। जब अन्त मे वह इसे सहन न कर सका तो वह अज़रबाईजान

१ यह ख्वाजा नेमतुल्लाह का, जो सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा का वज़ीर था, पुत्र था।
२ ९१२ हि० (१५०६-७ ई०)।
३ शेर की एक बहर।
४ शेर की एक बहर।
५ यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

एव एराक में याकूब बेग के पास चला गया। याकूब बेग की मृत्यु के उपरान्त[1] वह उस भूभाग मे भी न रहा और हेरी वापस चला गया। उसके व्यग्य एव परिहास की वही दशा रही। एक व्यग्य इस प्रकार है—एक दिन शतरज की गोष्ठी मे अली शेर बेग ने जब अपने पाव फैलाये तो मुल्ला बनाई की गुदा तक पहुच गये। अली शेर बेग ने व्यग्य करते हुए कहा, 'हेरी मे बडी मुसीबत है। यदि कोई अपने पाव फैलाये तो कवि के नितब मे पहुच जाते है।" बनाई ने कहा, "यदि सिकोडे तो भी कवि के नितब मे पहुचते है।" अन्ततोगत्वा अपने व्यग्य के कारण उसे पुन हेरी से समरकन्द की ओर प्रस्थान करना पडा।[2] करशी के किले के क़त्ले आम में उसकी हत्या कर दी गई। अली शेर बेग ने बहुत-सी वस्तुओं का आविष्कार किया था। जो कोई किसी वस्तु मे कोई भी आविष्कार करता तो उसकी प्रसिद्धि एव उसे प्रचलित करने के लिये अली शेरी कहा जाता था। एक बार अली शेर के कानो मे पीडा हुई तो उसने अपने सिर को एक तिकोने रूमाल से लपेट लिया। स्त्रिया जब उस प्रकार शीत ऋतु मे रूमाल बाधती तो उस विधि को अली शेरी कहने लगे। जब बनाई ने हेरी से चला जाना निश्चय कर लिया तो उसने अपने गधे के लिये नये प्रकार की गद्दिया बनवाईं और उनका नाम अली शेरी रख दिया।

मौलाना सैफी बुखारी

बुखारा का मौलाना सैफी एक अन्य कवि था। वह पूरा मुल्ला था और अपनी मुल्लाई के प्रमाण मे उन ग्रथो की सूची प्रस्तुत किया करता था जिनका उसने अध्ययन किया था। उसने दो दीवानो का सकलन किया। एक दीवान समस्त कारीगरो के लिये सकलित किया था। वह बहुत सी कहानिया लिखा करता था। निम्नाकित रुबाई से पता चलता है कि उसने किसी मसनवी की रचना नही की—

रुबाई

'मसनवी यद्यपि सुन्नत[3] है,
किन्तु मैं ग़ज़ल को फर्ज़[4] समझता हू।
पज बैती[5] हृदय ग्राही होती है,
मैं उसे ख़मसों[6] से अच्छी समझता हू।"

उसने फारसी ऊरुज़ के विषय मे भी एक रचना की जो यद्यपि सक्षिप्त है किन्तु एक प्रकार से बकवास है कारण कि उसमे कोई लाभदायक बात नही लिखी है। स्पष्ट एव प्रचलित वाक्य को एराब[7] लगा कर लिखा है। कहा जाता है कि वह बडा बुरा शराबी था। घूसा मारने की उसमे बडी अधिक शक्ति थी।

१ ८९६ हि० (१४९१ ई०)।
२ बाबर ने बनाई से ९०१ हि० (१४९६ ई०) में समरकन्द में भेंट की।
३ वह बातें जो शरा के अनुसार अनिवार्य नहीं।
४ वह बातें जो शरा के अनुसार अनिवार्य हैं।
५ एक प्रकार की कविता।
६ एक प्रकार की कविता।
७ ज़ेर, ज़बर और पेश।

अब्दुल्लाह

अब्दुल्लाह मसनवी रचियता एक अन्य कवि था। वह जाम का निवासी तथा मुल्ला[1] का भागिनेय था। उसका तखल्लुस 'हातिफी' था। उसने खमसे का अनुकरण करते हुए मसनवी की रचना की और हफ्त पैकर की नकल मे उसका नाम हफ्त मजर रक्खा। 'सिकन्दर नामा' की नकल मे उसने 'तीमूर नामा' की रचना की। उसकी सबसे अधिक प्रसिद्ध मसनवी लैला-मजनूं है यद्यपि उसका सौन्दर्य उसकी प्रसिद्धि के अनुकूल नही।

मीर हुसेन मुअम्माई

मीर हुसेन मुअम्माई[2] एक अन्य कवि था। सम्भवत मुअम्मे की उसके समान किसी ने भी रचना नही की। उसने अपना पूरा जीवन मुअम्मे की चिन्ता मे व्यतीत किया। वह बडा ही फकीरी स्वभाव असतुष्ट एव ऐसा व्यक्ति था जिससे किसी को कोई हानि नही हुई।

मीर मुहम्मद बदख्शी

इस्कीमीश का मीर मुहम्मद बदख्शी भी एक कवि था। क्योकि इस्कीमीश, बदख्शा मे नही है, अत यह बडे आश्चर्य की बात है कि उसने 'बदख्शी' तखल्लुस रक्खा। उसकी कविताय उनकी श्रेणी की नही है जिनका पूर्व मे उल्लेख हो चुका है। यद्यपि उसने मुअम्मे के विषय मे सम्बन्धित एक पुस्तक की रचना की किन्तु उसके मुअम्मे अधिक अच्छे नही हैं। वह बडा ही उत्तम सहचर था। वह समरकन्द मे मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।[3]

यूसुफ बदी

यूसुफ बदी भी एक कवि था। वह फरगाना निवासी था। उसकी गज़लें बुरी नही बताई जाती।

आही

आही भी एक कवि था। वह बडी उत्तम गजलो की रचना करता था। वह बाद मे इब्ने हुसन मीर्जा की सेवा मे पहुच गया और उसने दीवान का सकलन भी किया।

मुहम्मद सालेह

एक अन्य कवि मुहम्मद सालेह था। उसकी गजलो मे बडा रस पाया जाता है यद्यपि रस के समान उनमे शुद्धता नही। वह तुर्की शेरो की भी रचना करता था जो बुरे न होते थे। वह बाद मे शैबाक खा की सेवा मे पहुँच गया और वहा उसे पूर्ण रूप से आश्रय प्राप्त हुआ। उसने शैबाक खा के नाम पर तुर्की भाषा मे एक मसनवी की रचना की[4] जो लैला मजनू के रमल मुसद्दस वजन मे है जा

१ अब्दुर्रहमान जामी।
२ मुअम्मा (पहेली) की रचना करने वाला।
३ ९१७ हि० (१५११ १२ ई०)।
४ 'शैबानी नामा' जो जर्मन अनुवाद सहित प्रकाशित भी हो चुका है, और रूसी टिप्पणियों सहित भी प्रकाशित हुआ है।

सुबहा' का वज़न है। यह बडी साधारण कविता है। मुहम्मद सालेह के शेरों के अध्ययन के उपरान्त उसमें किसी को कोई श्रद्धा नही रहती। उसका एक उत्तम शेर इस प्रकार है

शेर

"एक मोटे आदमी (तम्बल) ने फरगाना पर अधिकार जमा लिया,
फरगाना को मोटे आदमी का घर (तम्बल खाना) बना लिया।"

फरगाना तम्बल खाना के नाम से भी प्रसिद्ध है। मुझे ज्ञात नहीं कि जिस मसनवी का उल्लेख हो चुका है उसमे यह शेर है अथवा नहीं। वह बडा ही दुष्ट, अत्याचारी एव निष्ठुर था।

मौलाना शाह हुसेन

मौलाना शाह हुसेन कामी एक अन्य कवि था। उसके शेर भी बुरे नहीं। वह गजलों की रचना करता था। सम्भवत उसने एक दीवान का सकलन कर लिया था।

हिलाली

हिलाली[2] भी एक कवि था। वह अब भी जीवित है। यद्यपि उसके शेर शुद्ध एव सुन्दर होते हैं किन्तु उनका कोई प्रभाव नही होता। उसका एक दीवान भी है। खफीफ बहर म उसने एक मसनवी की भी रचना की जिसका शीर्षक शाह व दरवेश' है। यद्यपि उसके बहुत से शेर अच्छे है किन्तु उनके अर्थ एव निष्कर्ष बडे ही स्वादहीन एव निकृष्ट है। प्राचीन कवि इश्क एव आशिकी के सम्बन्ध म रचना करते समय आशिक को पुरुष एव माशूक को स्त्री प्रस्तुत करते है किन्तु हिलाली ने आशिक को दरवेश एव माशूक को बादशाह दिखाया है फलत बादशाह के कर्म एव वचन म निर्लज्जता एव घृणा टपकती है। हिलाली की यह बहुत बडी धृष्टता है कि मसनवी के लिये उसने एक युवक को चुना जो बादशाह था और जिसे उसने बडा ही निर्लज्ज एव चरित्रहीन दिखलाया। कहा जाता है कि हिलाली की स्मरण शक्ति बडी दृढ थी और उसे ३० ४० ००० शेर और खमसा के अधिकाश शेर कठस्थ थे। वह अरूज एव काफिय के ज्ञान म बडा प्रसिद्ध था।

अहली

अहली एक अन्य कवि था। वह एक साधारण व्यक्ति था, और बुरे शेर न कहता था। उसने एक दीवान का भी सकलन किया।

कलाकार

खुश नवीस

यद्यपि उसके समय के खुश नवीसों[3] की सख्या बडी अधिक है किन्तु नस्ख[4] एव तालीक[5] मे सर्व-

१ जामी की मसनवी 'सुबहतुल अबरार'।
२ मौलाना बद्रुद्दीन हिलाली, अस्तराबाद निवासी था।
३ सुलेख लिखने वाले।
४ एक लिपि जिसमें अधिकाश अरबी लिखी जाती है।
५ एक लिपि जिसमें हिन्दुस्तान में अधिकाश उर्दू एवं फ़ारसी पुस्तकें छपती हैं।

श्रेष्ठ सुल्तान अली मशहदी था। उसने मीर्ज़ा एव अली शेर वेग के लिए बहुत से ग्रथ नकल किये। वह प्रथम के लिये रोजाना ३० शेर और द्वितीय के लिये २० शेर नकल किया करता था।

चित्रकार

चित्रकारो मे वेहज़ाद था। वह बडी नाजुक चित्रकारी करता था। किन्तु बिना दाढी के चेहरे अच्छे न बना पाता था। वह गब्गब[1] को बहुत बडा बना देता था। दाढी वाले चेहरे वह बडे ही उत्तम बनाता था।

एक अन्य शाह मुज़फ्फर था। वह बडे नाजुक चित्र बनाता था और बालो के बनाने मे बडी नज़ाकत पैदा करता था। उसे बडी कम आयु मिली और जब उसकी प्रसिद्धि उन्नति कर रही थी तो वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(वादक)

गायकों मे ख्वाजा अब्दुल्लाह मरवारीद के समान जैसा कि कहा जा चुका है कोई भी कानून न बजा पाता था।

कुले मुहम्मद ऊदी[2], गीशक[3] बडे अच्छे ढग से बजाता था और उसमे तीन तार जोड दिये थे। गायको एव वादको मे प्रारम्भिक रागो के गाने वालो एव वादकों मे कोई उसका मुकाबला नही कर सकता था किन्तु यह आरम्भ के गानो के लिये ही ठीक है।

शेखी नाई एक अन्य गायक था। कहा जाता है कि वह ऊद एव गीशक भी बडा अच्छा बजा लेता था और वीणा तो वह १२-१३ वर्ष की अवस्था से बजाने लगा था। उसने एक बार बदी उज्ज़मान मीर्ज़ा की महफिल मे वीणा पर एक बडा अच्छा राग निकाला। कुले मुहम्मद उसे गीशक पर भी न निकाल सका और कह दिया कि, "यह किसी काम का बाजा नही।" शेख नाई ने तत्काल कुले मुहम्मद के हाथ से गीशक ले लिया और उस पर बडे ही उत्तम ढग एव स्वर मे वह राग बजा दिया। कहा जाता है कि उसे सगीत मे इतनी अधिक कुशलता प्राप्त थी कि वह किसी भी धुन को एक बार सुनकर यह बता सकता था कि, "यह अमुक व्यक्ति की धुन या राग अथवा अमुक व्यक्ति की वीणा की धुन या राग है।" उसने बहुत थोडी सी ही रचनायें की। उसकी एक आध धुनें ही प्रसिद्ध है।

शाह कुली गीशक बजाने वाला भी एक व्यक्ति था। वह एराक का निवासी था और उसने खुरासान पहुच कर वादन सीखा और उसमे सफलता प्राप्त की। उसने बहुत सी धुनें, प्रारम्भिक स्वर एव राग ईजाद किये।

एक अन्य हुसेन ऊदी था। उसके सगीत एव वादन मे बडा आनन्द आता था। वह अपने ऊद के तारो को बट कर एक कर देता था और फिर बजाता था। वह बजाते समय बडा नखरा करता था। एक बार जब शैबाक खा ने उसे बजाने का आदेश दिया तो उसने बडा नखरा किया और बडी बुरी तरह ही नही बजाया अपितु एक निकृष्ट बाजा जो वह अपने बाजे के स्थान पर लाया था बजाया। शैबाक खा समझ गया और उसने आदेश दिया कि उसकी गरदन वही पर खूब कुचली जाये। ससार मे शैबाक

१ वह मांस जो ठोड़ी के नीचे होता है।
२ ऊद (बरबत) बजाने वाला।
३ गिटार।

ख़ा ने यही एक उत्तम कार्य किया। ऐसे नखरे बाज दुष्टो को इससे भी अधिक दड मिलना चाहिये।

गायक

गुलाम शादी, शादी गायक का पुत्र भी एक सगीतज्ञ था। यद्यपि वह बजाता भी था किन्तु जिन लोगो का उल्लेख हो चुका है उनसे अच्छा नही। उसके राग एव धुनें बडी ही उत्तम हैं। उसके समय मे कोई भी ऐसे रागो एव धुनो की रचना न कर पाता था। अन्त मे शैबाक खा ने उसे काज़ान खा मुहम्मद अमीन के पास भेज दिया और फिर उसका कोई पता न चला।

मीर अज़ू भी गायक था, वादक न था। उसने बडी कम रचनायें की किन्तु उसकी थोडी सी रचनायें बडे मज़ की है।

बनाई भी बडा ही उत्तम गायक था। उसने भी बडी उत्तम धुनें एव राग निकाले।

पहलवान

पहलवान मुहम्मद बू सईद एक अद्वितीय व्यक्ति था। वह पहलवानो मे सर्वश्रेष्ठ था और कविता भी करता था। धुन एव राग भी निकालता था। उसकी एक उत्तम धुन चारगाह मे है। वह बडा ही उत्तम सहचर था। यह बड आश्चर्य की बात है कि ऐसे गुणो के साथ साथ उसे पहल्वानी का भी ज्ञान था।

परिशिष्ट

ख़्वन्द मीर

(अ) हबीबुस्सियर

मीर्ज़ा हैदर

(ब) तारीख़े रशीदी

मुल्ला अहमद इत्यादि

(स) तारीख़े अलफ़ी

सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी

(द) तारीख़े सिन्ध

(ध) अयोध्या की बाबरी मस्जिद के दो शिलालेख

(ङ) एहसनुस्सियर

परिशिष्ट अ

हबीबुस्सियर

(भाग ३ खड ४)

लेखक—ख्वन्द मीर

(प्रकाशन—तेहरान १२७१ हि० १८५५ ई०)

मियां जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह एवं ऊजबेक सुल्तानो के युद्ध और अमीर नज्म सानी का मावराउन्नहर की ओर प्रस्थान एवं दुर्घटनायें जो उस समय घटीं

बाबर का शाह इस्माईल की अधीनता स्वीकार करना

(३६०) जिन दिनो राजधानी हिरात मे शाह इस्माईल सफवी की विजयी पताकाओ का शिविर लगा हुआ था, जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह ने वाक् पटु राजदूत अत्यधिक उपहार सहित उनकी चौखट म भेज कर निष्ठा एव स्वामी-भक्ति का प्रदशन किया। क्याकि उस सम्मानित बादशाह के विश्वास का सिक्का, विश्व विजय करने वाले पादशाह की कसौटी पर खरा उतरा था, अत उनके दूता को अपार इनाम एव उपकार द्वारा सम्मानित किया गया और यह पवित्र आदेश दिया गया कि मावरा उन्नहर का जो भाग वे विजय कर लगे वह उन्ही के पास रहने दिया जायेगा अत मुहम्मद बाबर पादशाह ९१७ हि० (१५११-१२ ई०) म ज़ाबुलिस्तान[1] की सेना के साथ अपने पैतृक राज्य की ओर रवाना हुये। बदख्शा के क्षेत्र मे पहुचने के उपरान्त, मीर्जा सुल्तान वैस को अपने साथ मिला कर, सर्व प्रथम प्रस्थान की पताका हिसार एव शादमान की ओर बलन्द की। उस राज्य के हाकिमो—हमजा सुल्तान एव महदी सुल्तान—को जब उस राज्य के उत्तराधिकारी के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुये तो वे अपनी सेना एकत्र करके युद्ध हेतु अग्रसर हुये। वख्श एव रफ्श के समीप बाबर की पताकायें भी पहुच गईं। दोनो ओर की सेनाओ म घोर युद्ध हुआ। दैवी कृपा एव हजरत पादशाह (इस्माईल) के आशीर्वाद से बाबर को विजय प्राप्त हो गई और ऊजबेक सेना पराजित हो गई। हमजा सुल्तान एव महदी सुल्तान युद्ध मे मारे गये। हिसार, शादमान, खुतलान, कुन्दूज़ एव बक्लान अमीर तीमूर गूरगन के वश के उस चुने हुये व्यक्ति[2] के अधिकार मे आ गये। उन्होंने अपनी प्रशसनीय प्रथानुसार, न्याय एव प्रजा को आश्रय प्रदान करने की पताकायें बलन्द कर के, उस उत्कृष्ट विजय का विवरण, गौरव के अधिनियमा वाले पादशाह को लिख

१ काबुल, ग़ज़नी इत्यादि, रुस्तम का वतन।
२ बाबर।

भेजा और यह निवेदन किया कि "यदि किसी प्रतिष्ठित अमीर को गाजियो की सेना सहित इस हितैषी के पास भेज दिया जाये तो आशा है कि शीघ्रातिशीघ्र मावराउन्नहर के समस्त प्रदेश विजय हो जायेंगे और इस राज्य का खुत्बा एव सिक्का, भाग्यशाली नवाब[1] के नाम से सुशोभित हो जायेगा और ऊजबेक बादशाहो का समूलोच्छेदन हो जायेगा। जब हजरत बाबर के दूत यह सन्देश लेकर जमशेद सरीखे अमीरो द्वारा शाह की सेवा मे पहुचे तो पवित्र आदेश हुआ कि अहमद बेग सूफी ऊगली एव शाहरुख बेग अफशार युद्ध के सिंहो के समूह के साथ, हिसार एव शादमान पहुच कर मुहम्मद बाबर पादशाह की सहायता करें और ससार के उस सर्वोत्कृष्ट सुल्तान के साथ मिल कर ऊजबेको से युद्ध करे। वे पवित्र हृदय वाले दोनो अमीर, हिसार पहुचे। मुहम्मद बाबर पादशाह उनके साथ मिल कर समरकन्द की ओर रवाना हुये। *उस प्रदेश के हाकिम मुहम्मद तीमूर सुल्तान एव बुखारा के वाली उबैदुल्लाह खा* को जब इस बात का पता चला तो वे अपनी राजधानी को खाली छोड कर तुर्किस्तान की ओर रवाना हुये।

बाबर का समरकन्द पर अधिकार

बाबर की विजयी पताका के शिशु चन्द्र का उदय समरकन्द की क्षितिज से हुआ और उस राज्य की चारो दिशाओ को न्याय एव उपकार से सुशोभित कर के अन्याय तथा अत्याचार का निराकरण करा दिया गया और खुत्बे एव सिक्के को मासूम इमामो[2] तथा सैयिदो की शरण सिकन्दर सरीखे शाह (इस्माईल) के नाम से शोभा प्राप्त हुई[3] और मुहम्मद बाबर पादशाह दूसरी बार अपने पूर्वजो की राजधानी मे सिंहासनारूढ हुये और हिसार, शादमान खुतलान एव बदख्शा को खान मीर्जा को प्रदान कर *दिया और बुखारा के उत्कृष्ट नगर मे एव चारो ओर के स्थानो पर*, जो *विजय हुए थे, न्यायकारी हाकिम* नियुक्त कर दिये। अहमद बेग सूफी ऊगली एव शाहरुख बेग को इनाम इकराम एव घोडे प्रदान कर के वापस हो जाने की अनुमति दे दी और नवाब कामियाब खिलाफत अयाब[4] को नाना प्रकार के शाहाना बहुमूल्य उपहार भेजे किन्तु मुहम्मद जान बेग के ईशक आकासी को प्रोत्साहन देने के प्रति, जो ससार को शरण प्रदान करने वाले शाह के दरबार से उनके पास दूत बना कर भेजा गया था, उपेक्षा प्रदर्शित की। इस कारण जब मुहम्मद जान उस स्थान पर जहा शाह के शीत ऋतु के शिविर थे,[5] सम्मानित राजसिंहासन[6] के समक्ष पहुचा तो उसने निवेदन किया कि हजरत बाबर, जैसा कि उल्लेख हो चुका है विरोध एव विद्रोह के विषय मे सोच रहे है। अमीर नज्म एव अमीरो एव राज्य के उच्च अधिकारियो की बहुत बडी सेना, उदाहरणार्थ जैनुल आबेदीन बेग, बादिन्जान बेग एव ख्वाजा कमालुद्दीन महमूद मावराउन्नहर की ओर

१ शाह इस्माईल सफ़वी ('खुत्बा व सिक्का व इस्म व अल्काबे नव्वाब कामियाब मुज़य्यन गश्त ')।
२ मुहम्मद साहब के जामाता हज़रत अली की सतान के १२ इमाम। शीआ अस्ना अशअरी इन्हीं इमामों को मानते हैं और मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी तीनों ख़लीफ़ों हज़रत अबू बक्र, उमर, एव उस्मान) और १२ इमामों के अतिरिक्त सभी ख़लीफ़ाओं को अपहरणकर्ता समझते हैं। शाह इस्माईल सफ़वी ने ईरान में इसी धर्म को चलाया।
३ 'खुत्बा व सिक्का व जिक्रे मासिर व मफ़ाख़िरे हज़रत अइम्मये मासूमीन व इस्म व लकबे पादशाहे सियादत पनाह सिकन्दर आईन सम्ते ज़ेब व ज़ीनत याफ़्त'।
४ शाह इस्माईल सफ़वी।
५ कुम में।
६ शाह इस्माईल के।

रवाना हुये किन्तु उनके उस क्षेत्र मे पहुचने के पूर्व यह समाचार प्रसिद्ध हो गये कि ऊजबेक सुल्तानो ने पुन मावराउन्नहर पर चढ़ाई कर दी है और मुहम्मद बाबर पादशाह को पराजित कर दिया है।

बाबर की पराजय

इस बात का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि मुहम्मद तीमूर सुल्तान एव उबैदुल्लाह खा अहमद बेग एव शाहरुख बेग शाही अमीरो की वापसी के समाचार सुन कर पुन मावराउन्नहर विजय की कल्पना करने लगे और जानी बेग सुल्तान एव समस्त सम्बन्धियो से मिल कर इनाम एव उपकार के द्वार ऊजबेक समूह के सरदारो पर खोल दिये और एक बहुत बडी सेना एव वीर लश्कर एकत्र किया। ९१८ हि० के प्रारम्भ (१५१२-१३ ई०) म कूच की पताका बुखारा की ओर उडाई और उनकी सेनाओ के दल के दल वहा पहुच कर अचानक उस नगर पर टूट पडे। जब यह समाचार मीर्जा मुहम्मद बाबर पादशाह को प्राप्त हुए तो अत्यधिक वीरता प्रदर्शित करते हुये थोडी सी सेना, जो उनके अधीन थी, को लेकर शत्रुओ को हटाने के लिये समरकन्द से रवाना हुए। यद्यपि मुहम्मद मजीद तरखान एव कुछ अन्य परामर्शदाताओ एव बुद्धिमानो ने निवेदन किया कि इस प्रकार बिना सामान के शत्रुओ पर आक्रमण कर देना राज्य के हित मे नही है और सावधानी की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सेना एव वीरो के एकत्र हो जाने के उपरान्त योद्धा लोग इस सकल्प के अनुसार कार्य करें किन्तु उन्होने स्वीकार न किया। बुखारा के समीप उन्हें ज्ञात हुआ कि कुछ सुल्तान [1]एकत्र हैं। इससे उनका साहस और भी बढ गया और उन्होंने उनका पीछा करने के लिये घोडे की लगाम मोडी। जब वे दो पडाव पार कर चुके तो अचानक ऊजबेक सुल्तान भारी सेना लिये हुए युद्ध एव रक्तपात हेतु उस उजाड स्थान पर दृष्टिगत हुये। जही-रुस्सल्तनत मुहम्मद बाबर ने अत्यधिक पौरुष प्रदर्शित करते हुए सेना को सुव्यवस्थित किया और शत्रुता की तलवार को बदला की मियान से निकाल कर ऊजबेको के एक बहुत बडे समूह की हत्या कर दी। अरूस बे, कोपक बे, अमीर ख्वाजा किफ़रात ऊजबेक सेना के कुछ वीरो सहित प्रथम आक्रमण मे ही बन्दी बना लिये गये और हज़रत पादशाह के समक्ष प्रस्तुत किये गये और उन सबकी हत्या करा दी गई किन्तु ऊजबेक सुल्तानो की सेना के समस्त अमीरो एव वीरो ने प्रयत्न करके प्रतिकार हेतु वीरता के मैदान मे पाव जमा कर हत्याकाड प्रारम्भ कर दिया और बाबरी सेना के अधिकाश वीरो की हत्या कर दी। हज़रत (बाबर) यथासम्भव दृढता के मैदान मे पाव जमाये रहे किन्तु सेना के छिन भिन्न हो जाने एव ऊजबको के प्रभुत्व प्राप्त कर लेने के कारण बुखारा की ओर रवाना हुये किन्तु वहा भी ठहरना उचित न समझकर वहा से समरकन्द की ओर प्रस्थान किया और समरकन्द मे ऊरक को मिला कर हिसार एव शादमान की ओर चल दिये। ऊजबेक सुल्तानो ने पुन समरकन्द बुखारा एव उनके अधीनस्थ स्थान अपने राज्य म मिला लिये। प्रत्येक अपने अपने स्थान को चला गया और प्रजा को प्रोत्साहन देकर किसी को कष्ट न पहुचाया। उस वर्ष (९१८ हि०) के जमादि-उल-अव्वल मास (जुलाई-अगस्त १५१२ ई०) मे उन्होंने[2] पुन सगठित होकर, प्रस्थान की पताका, हिसार एव शादमान की ओर उडाई।

बाबर द्वारा हिसार की प्रतिरक्षा

बाबर पादशाह को जब शत्रुओ के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुये तो उन्होंने खान मीर्जा की

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं। सम्भवत "युद्ध के लिये एकत्र हैं"।
२ ऊजबेकों ने।

सहायता से हिसार के किले को दृढ बना लिया। नगर के चारो ओर खाइया खोदी गईं। मुहल्लो की गलियो की प्रतिरक्षा का प्रबध किया गया। उन्होने कुछ आदमी सहायता की प्रार्थना करने बल्ख के वाली बैराम बेग करामानलू के पास भेजे। बैराम बेग ने अमीर मुहम्मद शीराज़ी को ३०० योद्धाओं के साथ सहायतार्थ भेजा। उज़बेक लोग चगाइयान तक पहुच गये। तदुपरान्त जब उन्हें किले की दृढता एव वीर गाज़ियो के पहुचने के समाचार प्राप्त हुये तो वे मावराउन्नहर की ओर लौट गये और प्रत्येक अपने अपने स्थान को चला गया।

अमीर नज्म बेग को ऊज़बेकों के प्रभुत्व के समाचार प्राप्त होना और उसका शीघ्रातिशीघ्र विजयी यर्ज़कियों की सेना लेकर आमू नदी के तट पर पहुंचना और ऊज़बेकों को पराजित करने के लिये उस महान् नदी का पार करना

(३६१) जब ख़ुरासान के हाकिमो की सूचनाओ से, मुहम्मद तीमूर सुल्तान, एव उबैदुल्लाह खा के मावराउन्नहर मे प्रभुत्व के समाचार नज्म बेग को प्राप्त हुये तब वह ऊज़बेकों के विनाश का सकल्प करके १०-१२,००० गाजियो को साथ लेकर ख़ुरासान के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गया। हुसेन बेग लला[1] हिरात से एव समस्त विलायतो के हाकिम तथा दारोगा लोग उसके पास पहुच गये और न्योछावर एव उपहार प्रस्तुत किये तथा आज्ञाकारिता की गाशिया[2] अपने कधे पर रख कर मावराउन्नहर की ओर चल खडे हुए। इसी प्रकार, सैयिद, काज़ी, सम्मानित लोग एव उच्च पदाधिकारी ख़ुरासान के आस-पास से अमीर नज्म की सेवा मे पहुचे और उसके प्रति शुभकामनायें एव आज्ञाकारिता प्रदर्शित की। उसने उन लोगो को नाना प्रकार से इनाम-इकराम देकर सम्मानित किया और उनकी जो समस्यायें थी उनका समाधान किया। अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद बिन अमीर यूसुफ को रोक कर समस्त प्रतिष्ठित लोगों को विदा कर दिया। उस समय जाम के मार्ग से मुर्ग़ाब नदी के तट पर पहुचा और वहा से बल्ख। बैराम बेग करामानी[3] ने उसकी सेना का स्वागत करके उचित प्रकार से आतिथ्य-सत्कार की प्रथाओं का पालन किया। अमीर नज्म लगभग २० दिन तक बल्ख मे ठहरा रहा और सेना के सरदारो की एक फौज नदी-तट पर भेजी ताकि वे लोग तिरमिज़ घाट पर नौकायें एकत्र कर सकें। अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद को आदेश दिया कि वह हिसार जाकर मुहम्मद बाबर पादशाह को शाह की अपार कृपाओ का आश्वासन दिलाये ताकि उस क्षेत्र की सेना उनमे मिल जाये। तदुपरान्त तिरमिज़ घाट पर पहुच कर उस वर्ष (९१८ हि०) रजब मास (सितम्बर-अक्तूबर १५१२ ई०) मे नदी पार की। अभी वह तिरमिज के समीप था कि अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद हिसार से लौट आया और बाबर की सेना के आगमन के समाचार पहुंचाये। अमीर नज्म बेग ने कुछ अमीरो एव शाह के थोडे से विशेष सेवको को लेकर उनका स्वागत किया और चकचक दर्रे पर, जिसे बन्दे आहिनी भी कहते हैं, दोनो की भेंट हुई और दोनो ओर से

१ गुरु, उस्ताद।
२ ज़ीन पोश जिसे बादशाहों के सामने जुलूस में लेकर चलते हैं और जिसे अधीनता का चिह्न समझा जाता है। ग़ाशिया को बादशाहों के अतिरिक्त किसी अन्य के जुलूस मे नहीं ले जा सकते।
३ करामानलू।

न्योछावर एव उपहार प्रस्तुत किये गये। उस ओर जब ऊज़बेक सुल्तानो को नज्म बेग के पार करने की सूचना मिली तो वे अनाज एव दाने क़िले के भीतर उठा ले गये और मावराउन्नहर के प्रत्येक बल्दे[1] को किसी न किसी विश्वस्त सुल्तान को इस आशय से सौप दिया कि वह अपने बल्दे को दृढ बना ले।

अमीर नज्म सानी के ऐश्वर्य एव गौरव का सक्षिप्त उल्लेख एव दुर्भाग्यवश उसकी हत्या

क्योकि अमीर यार अहमद इस्फ़हानी जिसे नज्मे सानी की उपाधि प्राप्त थी, बुद्धिमत्ता, अनुभव, सूझ बूझ एव शासन व्यवस्था के कार्यो से भली भाति परिचित था और सुव्यवस्था, सुशासन, समस्याओ के समाधान एव राज्यो के विजय इत्यादि के कार्य मे जैसा कि पूर्व मे उल्लेख हो चुका है, अद्वितीय था, अत धर्म के रक्षक शाह ने अमीर नज्म जरगर की मृत्यु के उपरान्त वकालत के समस्त कार्य उसे सौंप दिये और उसे पूर्ण रूप से अधिकार सम्पन्न कर दिया और उसे समस्त अमीरो वजीरो उपचकियो एव विश्वास-पात्रो पर प्रभुत्व प्रदान कर दिया। अमीर नज्म ३-४ वर्ष तक पूर्ण प्रभुत्व एव स्वतत्र रूप से शाह का वकील रहा। वह राज्य व्यवस्था, राज्य सम्बन्धी एव अन्य छोटे बडे कार्य को न्यायपूर्वक सम्पन्न करता था। इस कारण कि उस समय मानव-जाति के समस्त हाकिम एव ससार के प्रतिष्ठित लोग एव उच्च पदाधिकारी, शाह के दरबार मे एकत्र होते रहते थे अत ऐश्वर्य एव वैभव के इतने साधन उसकी[2] सरकार मे एकत्र हो गये थे, कि उसका आदर एव सम्मान समस्त बडे-बडे अमीरो अपितु अधिकाश सुल्तानों से भी बढ गया था। उससे सम्बन्धित सेवको मे ५००० पूर्ण रूप से अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित अश्वारोही सम्मिलित हो गये। उसके खज़ाना एव धन सम्पत्ति का हिसाब एव गणना असम्भव थी। प्रति दिन लगभग १०० भेडें उसके यहा खर्च होती थी। मुर्ग काज, अन्य भोजन की सामग्री, चावल, इत्यादि का अनुमान इसी से लगा लेना चाहिए। इस अभियान मे यद्यपि उसका समस्त असबाब नदी के पार न लाया गया था तो भी रोज़ाना चादी के १३ देग उसके भोजन के पकाने के लिये नष्ट किये जाते थे। उस भोजन को सोने चाँदी एव चीनी की प्लेटो मे लोगो के समक्ष उपस्थित किया जाता था। मैंने एक विश्वासपात्र से सुना है, जो नदी के उस ओर उसके पादशाहो सरीखे अमीर के दस्तर-ख्वान पर उपस्थित रहता था, कि उसने आश्चर्य से उसके भोजन के प्रबधक से पूछा कि "रोज़ाना इतनी अधिक सामग्री शत्रु के देश मे किस प्रकार प्राप्त हो जाती है।" उसने उत्तर दिया कि "ईश्वर की कृपा से भेंडें, मुर्ग, मिश्री शक्कर, आटा, चावल एव भोजन की समस्त आवश्यक वस्तुयें हमारी सरकार मे बडी अधिक मात्रा मे है किन्तु रोज़ाना मुझे दस मन दालचीनी, जाफ़रान, अदरक, गरम औषधियो एव कुछ अन्य दवाओ की आवश्यकता पडती रहती है, उनके उपलब्ध करने मे कठिनाई होती रहती है।" उसके इस ऐश्वर्य एव वैभव के उल्लेख का उद्देश्य यह है कि वह अपने गौरव एव परिजन इत्यादि पर इतना अभिमान करने लगा था, कि विजयी एव सफल पादशाह से अनुमति प्राप्त किये बिना मावराउन्नहर-विजय का सकल्प कर लिया और ऊज़बेक सेना का विनाश निश्चय कर लिया और इतने महान् एव कठिन-कार्य को सरल समझ लिया। आमू नदी को पार करने एव हज़रत ज़हीरुस्सल्तनत से मिल जाने के उपरान्त, प्रस्थान की पताका खुज़ार की ओर बलन्द की। आक फौलाद सुल्तान ने जो उस स्थान का हाकिम था जब यह देखा कि प्रतिष्ठित ग़ाज़ियो से युद्ध करना सम्भव नही, तो उसने अपने परामर्शदाताओ एव अन्य प्रतिष्ठित लोगो के निवेदन पर सन्धि कर ली, और खुज़ार के किले एव नगर के द्वार खोल दिये। अमीर नज्म ने उसे बन्दी बना लिया। कूतूज़ यूज़-

१ नगर अथवा कस्बा।
२ अमीर नज्म सानी की।

बेगी की ऊजबेक समूह के साथ, जो वहा थे, हत्या करा दी और प्रजा से कोई रोक-टोक न की। वहा से उसने करशी की ओर प्रस्थान किया। वहा के हाकिम शेख़ीम मीर्जा ने प्रतिरक्षा एव उसके रोकने का प्रयत्न किया। नज्म बेग ने नगर के चारो दिशाओ के भाग अमीरो को बाट दिये। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्थान पर उतर पडा और बाण एव बन्दूक चलाना प्रारम्भ कर दिया। बादल के समान गरजते हुये पत्थरो से करशी के बुर्ज एव कोट मे दरारें डाल दी और बलपूर्वक एव अपने आतक से उस नगर पर अधिकार जमा लिया। शेख़ीम मीर्जा[1] अपने सहायको सहित बन्दी बना लिया गया और क्तले आम का आदेश दे दिया गया। यद्यपि अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद एव अन्य प्रतिष्ठित अधिकारियो ने, जो उसके साथ थे, कुछ निरपराध व्यक्तियो को जो किले मे थे, क्षमा कर देने के विषय मे आग्रह किया किन्तु उसने स्वीकार न किया। लगभग १५००० सैनिकों एव प्रजा को तलवार के घाट उतरवा कर वह बुख़ारा की ओर रवाना हुआ कारण कि जानी बेग सुल्तान, उबैदुल्लाह खा एव प्रतिष्ठित ऊज़बेक, सेना सहित उस स्थान पर ठहरे हुये थे और युद्ध एव मुकाबले की तैयारी कर ली थी। जब अमीर नज्म बुख़ारा से दो फरसख पर पहुँच गया तो उसने सुना कि मुहम्मद तीमूर सुल्तान एव अबू सईद सुल्तान, समरकन्द की सेना सहित युद्ध हेतु रवाना हुये हैं। उसने उसी मज़िल पर पडाव करके बैराम बेग करामानी को योद्धाओ का एक बहुत बडा समूह देकर उनसे युद्ध करने के लिये नियुक्त किया। वे दोनो सुल्तान बैराम बेग एव गाज़ियो के प्रस्थान से अवगत होकर गजदवान के किले मे बन्द हो गये। बैराम बेग ने इस घटना की सूचना भेजी। नज्म बेग समस्त सेना लेकर गजदवान की ओर अग्रसर हुआ। मुहम्मद तीमूर एव अबू सईद सुल्तान किले के चारो दिशाओ के स्थानो को दृढ बना कर नित्य प्रति खूख्वार ऊज़बेको की सेना युद्ध हेतु भेजते थे। इस ओर से भी गाज़ी लोग अग्रसर होते और कभी विजय प्राप्त करते तथा कभी पराजित हो जाते। जब कई दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये तो सैनिको के पास खाद्य सामग्री न रही। ख्वाजा कमालुद्दीन महमूद जिसे ऊज़बेक सुल्तानो की युद्ध प्रणाली का ज्ञान था, समझता था कि उस किले की विजय युद्ध द्वारा सम्भव नही। उसने अमीर नज्म से निवेदन किया कि 'इस शीत ऋतु मे गजदवान के अवरोध से कोई लाभ नही हो सकता कारण कि इस किले मे खाद्य सामग्री एव युद्ध के सामानो की बहुतायत है और दो सुल्तान अत्यधिक वीरो के साथ यहा ठहरे हुये हैं। यदि विजयी सेना का कुछ दिन और यहा पडाव रहा तो गाज़ी लोग खाद्य सामग्री के अभाव के कारण कम होने लगेंगे। यह उचित होगा कि इस स्थान से प्रस्थान करके करशी एव खुज़ार के समीप शीत ऋतु व्यतीत करे ताकि विलायतो[3] एव बल्ख की सरकार से शिविर के बाज़ार वाले एव व्यापारी, विजयी शिविर मे खाद्य सामग्री लायें। जब शीत ऋतु समाप्त हो जायेगी तो ऊज़बेको के भडार मे कमी हो जायेगी। चौपायो के लिये चारा मैदानो मे उपलब्ध हो जायेगा। उस समय हम नगरो एव किलो की विजय हेतु प्रस्थान करे। अमीर नज्म ने उत्तर दिया कि, 'यदि हम गजदवान से प्रस्थान करके नदी की ओर चले जायेंगे तो ऊज़बेक लोग यह सोचेंगे कि हमने भय के कारण ऐसा किया है। इससे उनका साहस और बढ जायेगा।" अभी यह बात पूरी भी न हुई थी कि ज़हीरस्सल्तनत वल ख़िलाफ़ा मुहम्मद बाबर पादशाह वहा पहुँच गये और उन्होंने भी यह बात कही और अवरोध को त्याग देने एव खुज़ार तथा करशी की ओर प्रस्थान करने के विषय मे आग्रह किया। अमीर नज्म ने ज़ाहिर मे उनकी बात स्वीकार कर ली और कहा कि, "कि हम लोग

१ यह उबैदुल्लाह खा का चाचा था।
२ इन्हीं में बनाई भी सम्मिलित था।
३ आस पास के प्रान्तों अथवा जिलों।

कल उस ओर प्रस्थान करेंगे।" दूसरे दिन मगलवार ३ रमजान ९१८ हि० (१२ नवम्बर १५१२ ई०)[1] को प्रात काल ऊजबेक सैनिकों का तलीआ[2] गजदवान के वृक्षों के मध्य से दृष्टिगत हुआ।

ऊजबेको की विजय

इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है कि जब बुखारा में जानी वेग एव सुल्तान उबैद खा को ज्ञात हुआ कि अमीर नज्म सानी को गजदवान मे कोई सफलता प्राप्त नही हो रही है और रोजाना उनके सैनिक खाद्य-सामग्री एव चौपायो के लिये चारा एकत्र करने के लिये छिन्न भिन्न हो जाते हैं तो वे युद्ध का सकल्प करके अश्वारोहियो एव पदातियो की सशस्त्र सेना लेकर शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुये गजदवान की ओर अग्रसर हुये। उस प्रदेश मे पहुचने के उपरान्त वे दोनो सुल्तान जो उस किले मे थे उनसे मिल गये और साथ साथ रणक्षेत्र की ओर अग्रसर हुये। अमीर नज्म सानी यह देखकर युद्ध हेतु तैयार हो गया और अपनी सेना के दायें एव बायें भाग को प्रतिष्ठित अमीरो द्वारा दृढ बनाया और स्वय मध्य भाग मे स्थान ग्रहण करके जहीरुद्दीन बाबर को आदेश दिया कि जिधर कुमक की आवश्यकता हो, वे पहुँचते रहें। पक्तियो के सुव्यवस्थित हो जाने के उपरान्त ऊजबेक सेना के दायें भाग से २०० योद्धाओ ने नज्म बेग की सेना के बाये भाग पर आक्रमण किया। बैराम बेग, जो उस ओर था, उस समूह के उत्पात को रोकने के लिये अग्रसर हुआ। उसके पाव मे एक बाण लगा। इससे ऊजबेको का साहस बढ गया और उन्होंने एक साथ एराक एव अजरबाईजान की सेना पर आक्रमण किया। अमीर लोग अपनी आपस की शत्रुता के कारण युद्ध किये बिना ही भाग खडे हुये। नज्म बेग की सेना पराजित हुई।

बाबर का हिसार की ओर प्रस्थान

जहीरस्सल्तनत बाबर पादशाह अपनी सेना सहित, जो उपस्थित थी, हिसार की ओर चले गये। अमीर गयासुद्दीन महमूद एव ख्वाजा कमालुद्दीन महमूद उनकी सेना के पीछे रवाना हुये। हुसेन बेग लला और अहमद बेग सूफी ऊगली किरकी घाट की ओर रवाना हुये। ऊजबेक सुल्तानो की पताका के चन्द्र शिशु को विजय प्राप्त हो गई।

अमीर नज्म की हत्या

(३६२) मावराउन्नहर की सेना ने रक्तपात एव लूट-मार प्रारम्भ कर दिया। उबैदुल्लाह खाँ की सेना के एक दल ने युद्ध के समय अमीर नज्म के पास पहुच कर उसे भाग्य के चगुल मे बन्दी बना लिया और अपने बादशाह के पास ले गये तथा उसके आदेशानुसार उसकी हत्या करा दी। जैनुल आबेदीन बेग भी गाजियो के एक बहुत बडे समूह के साथ मारा गया। जो लोग पर्वतो एव दुर्गम स्थानो को भाग गये थे, उदाहरणार्थ ख्वाजा मुहीउद्दीन यहया वल्द ख्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद मरवारीद,

१ मीर यहया अब्दुल लतीफ हुसैनी सैफी कजवीनी (मृत्यु १५५५ ई०) के इतिहास 'लुब्बुत्तवारीख' के अनुसार ७ रमजान। मीर यहया के दो पुत्र अकबर के राज्यकाल में बड़े प्रसिद्ध हुये। उनमें से एक मीर अब्दुल लतीफ कजवीनी, अकबर का गुरू और दूसरा मीर अलाउद्दौला कजवीनी "कामी", 'नफायसुल मआसिर' का लेखक था।

२ वह सेना जो शिविर की रक्षा करती एवं शत्रुओं के विषय में चौकसी रखती है।

ख्वाजा मीर जान बिन ख्वाजा किवामुद्दीन मुहम्मद बिन उस्ताद अब्दुल्लाह मेमार, वे भी समरकन्द वालो द्वारा बन्दी बना लिये गये और विनाश का प्याला पी लिया।

हिरात की प्रतिरक्षा

१७ रमज़ान (२६ नवम्बर १५१२ ई०) को यह समाचार राजधानी हिरात मे पहुँचे। अमीर एमादुद्दीन मुहम्मद इस्फहानी, जो वज़ीर एव खुरासान के शासन प्रबध एव राजस्व के विषय मे पूर्ण रूप से अधिकार सम्पन्न था, बुर्ज एव कोट की चहारदीवारी तथा द्वारो की प्रतिरक्षा मे तल्लीन हो गया। चार दिन उपरान्त हुसेन बेग लला, अहमद बेग सूफी ऊगली सुरक्षित वहा पहुचे। क्योकि शाह के आदेशानुसार उस उत्कृष्ट नगर का राज्य, अहमद बेग सूफी के अधीन था, अत उसने इख्तियारुद्दीन[1] के किले मे पडाव किया एव लोगो के प्रति न्याय करने का वचन दिया। किन्तु अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद, जो मुहम्मद बाबर पादशाह के पीछे-पीछे हिसार एव शादमान की ओर गया था, उनके द्वारा प्रोत्साहन एव कृपा प्राप्त करके ख्वाजा कमालुद्दीन महमूद के साथ बल्ख की ओर रवाना हो गया और १५ रमज़ान (२४ नवम्बर १५१२ ई०) को उस नगर मे पहुँचा। ख्वाजा महमूद बल्ख मे ठहर गया। अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद हिरात की ओर रवाना हुआ और अमीर एमादुद्दीन मुहम्मद एव समस्त अमीरो तथा हाकिमो के साथ मिल कर उस स्वर्गरूपी स्थान को दृढ बनाने का घोर प्रयत्न करने लगा। यह समाचार जब बादशाह (इस्माईल) शीत ऋतु बाहर व्यतीत कर रहे थे तब उन्हे प्राप्त हुये और उन्होंने पुन खुरासान-आक्रमण एव ऊज़बेको के अत्याचार के निराकरण का सकल्प कर लिया।

१ यह किला हिरात के उत्तर में स्थित है।

परिशिष्ट व

तारीखे रशीदी

लेखक—मीर्जा हैदर

(अलीगढ़ विश्व-विद्यालय हस्तलिपि)

बाबर पादशाह का जन्म तथा उनके पूर्वज मुगूलों से उनका सम्बंध एवं उनका प्रारम्भिक इतिहास

प्राचीन समय मे चगताई तथा मुगूलो मे बडी वैमनस्यता थी। इसके अतिरिक्त अमीर तीमूर के समय से लेकर सुल्तान अबू सईद मीर्जा के समय तक, चिंगीज़ खा के पुत्र चगताई खा के वश का कोई न कोई व्यक्ति सिंहासनारुढ होता रहा और उसे बादशाह की उपाधि द्वारा सुशोभित किया जाता रहा, हालांकि वास्तव मे वह बन्दी ही रहता था जैसा कि शाही फरमानो से अनुमान लगाया जा सकता है। जब सुल्तान अबू सईद मीर्जा सिंहासनारुढ हुआ, उसने इस प्राचीन प्रथा का अन्त कर दिया। यूनुस खा को शीराज से बुलवाया गया और उसे अपने भाई ईसान बूगा खा का विरोध करने के लिये मुगूलिस्तान भेज दिया गया। इस इतिहास मे खान को हटा कर शीराज भेज दिये जाने, ईसान बूगा खा के खान नियुक्त होने अथवा सुल्तान अबू सईद मीर्जा के राज्यकाल का उल्लेख करना सम्भव नही।

सक्षेप मे, सुल्तान अबू सईद मीर्जा ने यूनुस खा से कहा, "प्राचीन प्रथाओ का अन्त हो चुका है। अब आप अपने (पिछले) समस्त दावो को त्याग दे अर्थात् अब इस वश के नाम से फरमान जारी किये जायेंगे और अब हममे परस्पर मित्रता एव मेल रहना चाहिये।"

जब यूनुस खा मुगूलिस्तान पहुचा तो उसने ३० वर्ष की कठिनाइयो एव कष्टो के उपरान्त ईसान बूगा खा पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। इसका सक्षिप्त उल्लेख सुल्तान सईद खा तथा मीर्जा अबा बक्र के इतिहास के सम्बन्ध मे किया जायेगा।

इस प्रकार यूनुस खा का चित्त शात हो गया। सुल्तान अबू सईद मीर्जा ने एक प्राचीन शत्रु को नया मित्र बना लिया। यूनुस खा उसकी कृपा का बदला चुकाना चाहता था। उसने सोचा कि 'जिस प्रकार उसने[1] एक प्राचीन शत्रु को एक नया मित्र बना लिया है, उसी प्रकार मैं सम्भवत मित्र को सबधी बना लूँ।" इस उद्देश्य से उसने मीर्जा सुल्तान अबू सईद के तीन पुत्रो सुल्तान अहमद मीर्जा, सुल्तान महमूद मीर्जा तथा उमर शेख मीर्जा से अपनी तीन पुत्रिया, मिहर निगार खानम, सुल्तान निगार खानम तथा कूतलूक़ निगार खानम का विवाह कर दिया।

1 सुल्तान अबू सईद ने।

क्योकि उमर शेख का राज्य फरगाना के मुगुलिस्तान की सीमा से मिला था, अत (यूनुस खा) की उससे उसके अन्य भाइयो की अपेक्षा अधिक घनिष्ठता हो गई। वास्तव मे खान उसमे तथा अपनी सतान मे कोई अन्तर न समझता था और जब उनका जी चाहता तो वे एक दूसरे के राज्य मे आते जाते रहते थे और कोई किसी प्रकार के दिखावे की आशा न करता था, अपितु जो कुछ प्राप्त हो जाता वे उसी मे सतुष्ट हो जाते थे।

बाबर पादशाह के जन्म पर यूनुस खा के पास एक व्यक्ति सुखद समाचार लेकर भेजा गया। यूनुस खा ने मुगुलिस्तान से आकर कुछ समय (उमर शेख) के साथ व्यतीत किया। जब बालक का मूडन हुआ तो सभी ने दावतें की और समारोह आयोजित हुये। जितनी मित्रता एव घनिष्ठता उमर शेख तथा यूनुस खा म थी, उतनी किन्ही अन्य दो बादशाहा मे न रही होगी। सक्षेप मे, पादशाह का जन्म ६ मुहर्रम ८८८ हि० (१४ फरवरी १४८३ ई०) को हुआ। उलूग बेग मीर्ज़ा के एक अमीर मौलाना मुनीर मर्गीनानी ने "शश मुहर्रम"[1] के अक्षरो से तारीख निकाली। हज़रत ख्वाजा से नाम रखने का आग्रह किया गया और उन्होने उनका नाम ज़हीरुद्दीन मुहम्मद रक्खा। उन दिना चगताई बडे साधारण एव खुर्रे स्वभाव के थे। उनके स्वभाव मे वह नफ़ासत न थी, अत उन्हे ज़हीरुद्दीन मुहम्मद के उच्चारण मे कठिनाई होती थी। इस कारण उन्होने उनका नाम बाबर रक्खा। खुत्बो एव फरमानो मे उन्हे ज़हीरुद्दीन बाबर मुहम्मद ही लिखा जाता है, किन्तु वे बाबर पादशाह के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध है। उनकी वशावली इस प्रकार है —उमर शेख गूरगान, बिन सुल्तान अबू सईद गूरगान, बिन सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा, बिन मीरान शाह मीर्ज़ा, बिन अमीर तीमूर गूरगान। माता की ओर से कुतलूक निगार खानम पुत्री यूनुस खा बिन वैस खा, बिन शेर अली खा, बिन मुहम्मद खा, बिन खिज्र ख्वाजा खा, बिन तुगलुक़ तीमूर खा। इस शाहज़ादे म नाना प्रकार के गुण थे और वह विभिन्न प्रकार की विशेषताओ से सुशोभित था। उनमे पौरुष एव सौजन्य सबसे अधिक पाये जाते थे। तुर्की कविता करने मे अमीर अली शेर के अतिरिक्त कोई भी उनकी बराबरी न कर सकता था। उन्होने एक दीवान की बडी ही शुद्ध एव स्पष्ट तुर्की भाषा मे रचना की है। उन्होने "मुबीन" नामक मसनवी की रचना की और तुर्की छन्द शास्त्र के विषय मे एक पुस्तक की रचना की जो इस विषय की पुस्तको मे बडी उत्तम है। उन्होने हज़रत ख्वाजा के 'रिसालये वलदिया" को कविता का रूप दिया। इसके अतिरिक्त उनकी एक रचना "वकाये" अथवा तुर्की इतिहास है जिसकी बडी ही सरल, सुबोध एव शुद्ध शैली मे रचना हुई है। उस ग्रथ की कुछ कहानियाँ यहा उद्धृत की जायगी। सगीत एव अन्य कलाओ मे उन्हे बडी कुशलता प्राप्त थी। वास्तव मे उनके वश मे उनसे पूर्व कोई भी इतना अधिक प्रतिभाशाली नही हुआ है। और न तो उनके वश मे से उनके समान किसी के ऐसे आश्चर्यजनक कारनामे है और न किसी ने इतने विचित्र कार्य किये।

उन्होंने अपने 'वकाये मे, जो यद्यपि तुर्की भाषा मे है किन्तु बडी ही उत्तम शैली मे है, लिखा है, "सोमवार ४ रमज़ान (८ जून) को उमर शेख मीर्ज़ा अपने कबूतर खाने की छत के करारे से कबूतर के साथ उडकर मृत्यु को प्राप्त हो गये।" यह घटना ८९९ हि० (१४९४ ई०) मे घटी। अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वे १२ वर्ष की अवस्था मे सिंहासनारूढ हुये। सुल्तान महमूद बिन अबू सईद के पुत्रो, बाईसुगर मीर्ज़ा एवं सुल्तान अली मीर्ज़ा मे इतनी अधिक वैमनस्यता थी कि दोनो मे से किसी मे

[1] ६ मुहर्रम।

भी समरक़न्द की रक्षा करने की शक्ति न थी। जब अन्दिजान मे इस बात के समाचार प्राप्त हुये तो पादशाह समरक़न्द पर आक्रमण हेतु रवाना हुये। यद्यपि मीर्ज़ा लोग बडे शक्तिहीन हो गये थे किन्तु उन्होने उनका डट कर मुकाबला किया। अन्त मे बाईसुगर मे कोई शक्ति न रह गई और वह नगर छोडकर हिसार की ओर चल दिया, जहा खुसरो शाह ने जैसा कि उल्लेख हो चुका है, उसकी हत्या करा दी। पादशाह ने समरक़न्द पर अधिकार जमा लिया और वहा अन्दिजान के जितने सैनिको को स्थान दे सकते थे, स्थान दे दिया। शेष मे से कुछ अनुमति लेकर और कुछ बिना अनुमति के अन्दिजान वापस चले आये।

तम्बल ने पहुचने पर, जिसका उल्लेख हो चुका है उसने कुछ अन्य अमीरो से मिल कर, पादशाह के छोटे भाई जहागीर मीर्ज़ा को सिहासनारूढ कर दिया।

अन्दिजान के क़ाज़ी, जो बडा ही पवित्र एव धर्म-निष्ठ व्यक्ति था और जो पादशाह के हितो की यथा सम्भव रक्षा किया करता था,की हत्या करा दी गई। क़ाज़ी की हत्या के कुछ पूर्व पादशाह के हितैषियो ने अन्दिजान के क़िले को दृढ बना कर एव उसकी प्रतिरक्षा का प्रबध करके, पादशाह के पास आग्रह करते हुये पत्र भेजे कि यदि वह शीघ्रातिशीघ्र न आयेगा तो अन्दिजान हाथ से निकल जायेगा और तदुपरान्त समरक़न्द भी। इन पत्रो की प्राप्ति के उपरान्त, पादशाह समरक़न्द से निकल कर अन्दिजान की ओर रवाना हुये। जब वे खुजन्द पहुँचे तो उन्हे समाचार प्राप्त हुये कि शत्रुओ को विजय प्राप्त हो चुकी है। पादशाह एक स्थान को छोडकर चले आये थे। दूसरा स्थान भी हाथ से निकल गया। वे बडे असमजस मे पडे और अपने चचा सुल्तान महमूद ख़ा के पास चले गये।

पादशाह की माता और उसकी माता ईसान दौलत बेगम, अपने पुत्र एव बहिन के पास चली गईं। यह बहिन मेरी माता थी। इस कारण पादशाह भी हमारे देश मे ठहरे। उनके सैनिको ने उनकी ओर से घोर प्रयत्न किये और अनेक कठिनाइयो के, विजयो एव पराजय के उपरान्त पादशाह ने एक बार पुन समरक़न्द पर अधिकार प्राप्त कर लिया। समरक़न्द के राज्य के कई दावा करने वालो से उन्होने अनेक युद्ध किये। कभी उन्हे विजय होती और कभी पराजय। अन्ततोगत्वा उन्हे घेर लिया गया और जब उनकी सघर्ष की समस्त शक्ति समाप्त हो गई तो उन्होने ख़ानज़ादा बेगम का विवाह शाही बेग ख़ा से कर दिया और एक प्रकार से सन्धि करके समरक़न्द से चले गये जो शाही बेग ख़ा के अधिकार मे पुन आ गया। यदि मैं इस सम्बन्ध मे सभी बातो का सविस्तार उल्लेख करूँ तो यह बडा कठिन होगा। सक्षेप म, पादशाह अपने मामा के पास पुन चले गये। समरक़न्द पर अधिकार जमाने की समस्त आशाये त्याग कर, उन्होंने अन्दिजान पर अधिकार जमाने का सकल्प कर लिया। ख़ानो ने पैतृक स्नेह की कमर के चारो ओर, प्रयत्न की पेटी बाध कर, अन्दिजान पर अधिकार जमाने का घोर प्रयत्न किया ताकि वे उसे पादशाह को दिला सकें किन्तु उसका वही परिणाम हुआ जिसका उल्लेख हो चुका है। अन्तिम युद्ध के उपरान्त, जिसमे ख़ानो ने शाही बेग ख़ा को बन्दी बना लिया, पादशाह फ़रग़ाना के दक्षिणीय प्रदेश की पहाडियो मे भाग गये, जहाँ उन्हें घोर कष्टो एव नाना प्रकार की विपत्तियो का सामना करना पडा। इसके अतिरिक्त उनकी माता उनके साथ थी। उसी प्रकार उनके अधिकाश सेवक तथा उनके परिवार वाले एव उनकी सन्तान उनके साथ थी। उस यात्रा मे जैसा कि मुहम्मद साहब ने कहा है, "यात्रा, नरक के स्वाद के समान होती है", वे सबमे अत्यधिक कठिनाइयो को सहन करते हुये, हिसार प्रदेश मे, जो खुसरो शाह की राजधानी है इस आशय से पहुँचे कि वे उसके उस सौजन्य से जिसके लिये वह प्रसिद्ध था लाभ उठा सकें किन्तु भाग्य के समान उसने भी मुख मोड लिया और सौजन्य से विमुख होकर उदारता

के उस अधिकारी[1] के प्रति निष्ठुरता की पीठ दिखा दी[2] किन्तु इसके अतिरिक्त उसने उन्हे कोई हानि न पहुचाई। इस प्रकार उसी नैराश्य, दु ख, खेद, भय एव तिरस्कार की अवस्था मे वे गूरी तथा बक्लान पहुचे। जब वे इस क्षेत्र मे पहुँचे तो उनकी शक्ति की पीठ टूट गई और दृढता का पाव बध गया और वे कुछ दिन तक ठहरे रहे।

दुर्भाग्य मे कभी कभी सौभाग्य निहित रहता है। यद्यपि उस स्थान पर प्रतीक्षा करते रहना उनके लिये घोर कष्ट का विषय था, किन्तु वह उनके भाग्य के लिये बडा ही शुभ निकला और वह भी इस प्रकार कि दूरदर्शी से दूरदर्शी लोग इसका अनुमान न लगा सकते थे कारण कि इसी सकट के समय, शाही बेग खा की पताकाओं के हिसार की ओर तथा महमूद सुल्तान के नक्कारो के कुन्दूज की ओर पहुँचने के समाचार से अभिमानी खुसरो शाह, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, अपने राज्य को छोड कर चला गया। वह भी गूरी की पहाडियो की ओर भाग गया। वहा पहुचने पर उसे पता चला कि पादशाह अभी तक पर्वतो मे ही हैं। उसी रात्रि मे उसके सेवक एव परिजन छोटे से बडे, अमीर से साईस तक, पादशाह के दरबार मे पहुँच गये। खुसरो शाह के पास भी इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नही रह गया कि वह भी अधीनता स्वीकार कर ले, यद्यपि इस व्यक्ति ने पादशाह के एक भाई सुल्तान मसऊद मीर्ज़ा की आँखें निकलवा ली थी और मसऊद के भाई बाईसुगर मीर्ज़ा को सिंहासन पर आरूढ करके जनाज़े तक पहुचा दिया। इसके अतिरिक्त जब पादशाह उसके राज्य की सीमात पर पहुच गये तो उसने अत्यधिक निष्ठुरता प्रदर्शित करते हुये उन्हे अपने राज्य से निकल जाने का आदेश दे दिया था।

इसके अतिरिक्त जिन मीर्जाओ के प्रति इतना अत्याचार हुआ था, उनका एक छोटा भाई जिसके माता-पिता पादशाह के माता-पिता के सम्बन्धी थे, और जिसने पादशाह के साथ पर्वतो मे घोर कष्ट सहन किये थे, पादशाह के साथ था। जब खुसरो शाह पादशाह की सेवा मे पहुँचा, मीर्ज़ा खान ने आग्रह किया कि उस अत्याचार के कारण जो उसने उसके दोनो भाइयो के प्रति किया था, उसकी हत्या करा दी जाये। पादशाह ने, जिनमे स्वाभाविक रूप से सौजन्य पाया जाता था कहा, "यह अनर्थ एव घोर अनर्थ होगा, यदि दो अच्छे फिरिश्तो की उस शैतान बादशाह से तुलना की जाये।" पादशाह ने मीर्ज़ा खान के प्रति इतना अधिक स्नेह एव दया-भाव प्रदर्शित किया कि मीर्ज़ा खान सन्तुष्ट हो गया और उसने अपनी माग के प्रति कोई आग्रह न किया। जब खुसरो शाह ने पादशाह एव मीर्ज़ा खान की ओर देखा तो उसकी मूर्खता का ललाट, लज्जा के पसीने से भीग गया किन्तु पादशाह ने उसे अपनी क्षमा की आस्तीन एव उपकार के दामन से पोछ दिया। जब दरबार विसर्जित हुआ तो पादशाह ने कोषाध्यक्ष को आदेश दिया कि वह समस्त धन-सम्पत्ति, खज़ाना, घोडे इत्यादि जो उसके पास लाये गये थे, लौटा ले जाये यद्यपि *उस समय उनके योग्य केवल एक ही घोडा उनके पास था और वह भी उनकी माता के प्रयोग मे आता था।* इससे इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि वे कितनी हीन दशा को प्राप्त हो गये थे। उन्होने आदेश दिया कि खुसरो शाह के किसी असबाब पर अधिकार न जमाया जाये। यद्यपि उन्हे उस समय अत्यधिक आवश्यकता थी किन्तु पादशाह ने कोई उपहार स्वीकार न किया अपितु बिना हाथ लगाये उसके समस्त अस्त्र-शस्त्र एव खज़ाने वापस कर दिये और जो कुछ भी उन्हे दिया गया, उसे उन्होंने स्वीकार न किया। पादशाह के चरित्र के सहस्रो गुणो मे से यह एक गुण है। खुसरो शाह को जब खुरासान

१ बाबर।
२ निष्ठुरता प्रारम्भ कर दी।

जाने की अनुमति मिल गई, तो वह पादशाह से पृथक् होकर अपने निर्धारित स्थान की ओर रवाना हुआ। यह बडे आश्चर्य की बात है कि इतनी अधिक सेना के बावजूद जो उसके अधीन थी उसने अपने राज्य की प्रतिरक्षा का कोई प्रबध न किया। खुरासान से कुछ सहायता लेकर वह कुन्दूज पहुचा और उस पर आक्रमण किया। वहा उसकी बिना किसी कठिनाई के हत्या कर दी गई। वास्तव मे अपने स्वामी अथवा स्वामी के पुत्र की हत्या करना बडा निंद्य कर्म है।

पादशाह एक रात्रि मे २०,००० आदमियो तथा बडे-बडे अमीरा उदाहरणार्थ बाकी चगानियानी, सुल्तान अहमद कराउल, बाकी नीला फुरश इत्यादि के स्वामी हो गये।

आवश्यक तैयारी करके उन्होने काबुल पर चढाई की। पादशाह के चाचा काबुल के उलुग बेग मीर्ज़ा के निधन के उपरान्त, जुनून अरगून के, जो सुल्तान हुसेन का एक मीर्जा था पुत्र ने काबुल पर अधिकार जमा लिया था। पादशाह के पहुँचते ही वह उनका मुकाबला करने के लिये निकला किन्तु शत्रुओ की सख्या की अधिकता को देख कर वह वापस हो गया और काबुल की प्रतिरक्षा का प्रयत्न करने लगा। अन्त मे जब वह प्रतिरक्षा न कर सका उसने क्षमा-याचना कर ली और किला समर्पित कर दिया। अपनी प्रतिज्ञानुसार पादशाह ने उसे अपने समस्त माल असबाब एव परिजनो सहित कधार चले जाने की अनुमति दे दी। उस तिथि ९०९ हि० (१५०३ ४ ई०) से आज ९४८ हि० (१५४१ ४२ ई०) तक काबुल पादशाह तथा उनके उत्तराधिकारियो के अधीन है।

बाबर पादशाह का खुरासान की ओर प्रस्थान तथा काबुल मे विद्रोह

पादशाह के खुरासान की ओर प्रस्थान के उपरान्त शीत ऋतु के मध्य तक काबुल म शाति एव सुव्यवस्था रही। वे वहा अधिक समय तक ठहर गये और नाना प्रकार की अफवाहे फैलने लगी। हजारा लुटेरो ने भी मुख्य मार्ग को रोक लिया। यूनुस खा की सन्तान की जो सूची ऊपर दी जा चुकी है, उसमे इस बात का उल्लेख कर दिया गया है कि उसके ५ पुत्रियाँ एव २ पुत्र थे।

उसकी पत्नी ईसान दौलत बेगम से उसके तीन पुत्रिया थी —

(१) मिहर निगार खानम जिसके विषय म लिखा जा चुका है कि वह शाह बेगम के साथ समरकन्द से काबुल पहुच गई थी।

(२) कूतलुक निगार खानम, पादशाह की माता, जो शाह बेगम अथवा खानम और मेरे पिता के काबुल पहुचने के पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुकी थी।

(३) मेरी माता जो ताशकन्द मे शाति के समय जैसा कि उल्लेख हो चुका है मृत्यु को प्राप्त हो गई।

शाह बेगम से उसके चार सतानें हुईं (१) सुलतान महमूद खा, (२) सुल्तान अहमद खा, (३) सुल्तान निगार खानम जो मीर्ज़ा सुल्तान महमूद बिन मीर्ज़ा सुलतान अबू सईद की पत्नी एव मीर्ज़ा खान की माता थी, (४) दौलत सुल्तान खानम जो तीमूर सुल्तान बिन शाही बेग खा की पत्नी थीं। इन सब का पूर्व मे उल्लेख हो चुका है। इससे पता चल गया होगा कि शाह बेगम, पादशाह तथा मेरी दोनो की सौतेली नानी एव मीर्ज़ा खान की (सगी) नानी थी। खानो की पराजय के उपरान्त, जब पादशाह हिसार के पर्वतीय प्रदेश मे पहुँचे तो मीर्ज़ा खान उनकी सेवा मे उपस्थित हो गया और जहा जहा पादशाह पहुचे वह उनके साथ साथ जाता रहा। पादशाह उससे अपने पुत्र के समान व्यवहार करता था कारण कि, जैसा कि उल्लेख हो चुका है मीर्ज़ा खान के पिता एव माता उसी वश के थे, जिसके पादशाह के पिता तथा माता।

कुछ कठिनाइयो के कारण (मीर्ज़ा खान) पादशाह के साथ उस यात्रा मे न जा सका और अपनी नानी शाह बेगम के पास ठहरा रहा। जैसे जैसे पादशाह तथा खुरासान के मीर्ज़ाओ के विषय में विभिन्न समाचार प्राप्त होते गये, शाह बेगम की ममता उनके हृदय को जलाने लगी और उन्होंने यह विश्वास करना प्रारम्भ कर दिया कि पादशाह, खुरासान के मीर्ज़ाओ द्वारा बन्दी बना लिये गये हैं। इसके अतिरिक्त सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा तथा अबू सईद मीर्ज़ा की पारस्परिक शत्रुता तथा तत्सम्बन्धी रक्तपात के कारण उसने सोचा कि पादशाह उनके चगुल से कभी न निकल सकेंगे। इसके अतिरिक्त इस विचार की पुष्टि मे निरन्तर सूचनायें प्राप्त होती रहती थी और यह उचित समझा गया कि मीर्ज़ा खान को सिंहासनारूढ कर दिया जाये।

जब मेरे पिता के समक्ष यह योजना प्रस्तुत की गई तो उन्होंने इसे स्वीकार न किया। इस विषय मे बडा सघर्ष हुआ जिसके कारण बडी कटुता बढी और शाह बेगम की चिन्ता के कारण खान लोग बडे रुष्ट हुये। इससे मेरे पिता को बडे कष्ट भोगने पडे जिन्होंने तग आकर कह दिया, "तुम लोग मेरी चेतावनी पर ध्यान नही देते तो अब मैं तुम्हे परामर्श न दूंगा।" किन्तु पादशाह के अमीर, जो अरक के बाहर से मेरे पिता की सेवा मे उपस्थित हुआ करते थे, उसी प्रकार उपस्थित होते रहे। एक मास के वादविवाद एव कलह के उपरान्त, शाह बेगम ने मीर्ज़ा खान को पादशाह के स्थान पर सिंहासनारूढ करने का सकल्प कर लिया। मेरे पिता ने तब अमीरो से कहा, कि, "अब तुम लोग मेरे पास मत आया करो।" जब अमीर लोग अरक मे पुन प्रविष्ट हुये तो मेरे पिता आब-बारा नामक एक स्थान पर जो काबुल से एक दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है चले गये और शासन प्रबध से अपने आप को पृथक् कर लिया। शाह बेगम तथा कुछ मुग़ूलो ने मीर्ज़ा खान के नाम का खुत्बा पढवा दिया और काबुल के किले पर अधिकार जमाने का अत्यधिक प्रयत्न किया। इस पर कई युद्ध हुये। शाह बेगम ने मेरे पिता के पास पत्र भेजकर आग्रह किया कि वे वापस चले आयें। विनय एव आग्रह की सीमा से अधिक हो जाने के कारण मेरे पिता के पास वापस होने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रहा। २४ दिन तक वे काबुल के अरक का अवरोध किये रहे। इसी बीच मे पादशाह स्वय वापस आ गये।

बाबर बादशाह की खुरासान की यात्रा और उनकी खुरासान से काबुल को वापसी

जब बाबर पादशाह जहागीर के पीछे रवाना हुए तो वे हजारा पर्वतो मे उसके पास पहुच गये। विचार विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि सर्वोत्कृष्ट बात तो यह होगी कि खुरासान की ओर प्रस्थान किया जाये कारण कि सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पुत्र कुछ सहायता के उपरान्त शाही बेग खा का मुकाबला कर सकेंगे। इस उद्देश्य से वे खुरासान की ओर रवाना हुए। जब यह दोनो भाई खुरासान पहुचे तो वहा वालो ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। दोनो मीर्ज़ा उन लोगो के पहुचने पर अत्यधिक प्रसन्न हुए किन्तु दोनो मीर्ज़ाओ म किसी प्रकार का मेल न था। सर्वप्रथम बाबर पादशाह को ज्ञात हो गया कि उनमें एकता नही है। उन्होने यह भी समझ लिया कि मेल के बिना वे कुछ भी नही कर सकते। इसके अतिरिक्त जहागीर मीर्ज़ा अत्यधिक मदिरापान के कारण आमातिसार के रोग मे बुरी तरह ग्रस्त था और उसको ज्वर आने लगा था। यह प्रसिद्ध हो गया था कि खदीजा बेगम ने उसकी मदिरा मे विष मिला दिया है। इन्ही कारणो से वह आशा लेकर काबुल की ओर वापस हो गया।

हज़ारा पर्वतो मे पहुचने पर उन्हे ज्ञात हुआ कि मीर्ज़ा खान तथा मुहम्मद हुसेन मीर्ज़ा काबुल

का अवरोध किये हुए हैं। भारी सामान को मीर्जा जहागीर के साथ, जो रुग्ण था और पालकी मे यात्रा कर रहा था, छोडकर वे बडी तीव्र गति से हिन्दूकुश दर्रे की ओर थोडे से सहायको को लेकर रवाना हुए। दर्रे बरफ से ढके हुए थे। उन्होने उन्हे बडी कठिनाई से पार किया और बडी तीव्र गति से काबुल पहुचे। एक दिन प्रात काल वे अचानक नगर के समीप पहुच गये। जो लोग काबुल के किले के बाहर थे और उन लोगो पर आक्रमण कर रहे थे जो किले के भीतर थे वे इधर-उधर छिप गये। जो लोग भीतर थे वे बडी तेजी से बाहर निकले और जो कुछ बाहर तथा भीतर उनके हाथ लगा उसे उठा ले गये। शहशाह अपनी उदार प्रवृत्ति के कारण बिना किसी आडम्बर अथवा कटुता का चिह्न प्रदर्शित किये हुए अपितु बडी प्रसन्न मुद्रा मे अपनी सौतेली नानी के समक्ष, जिसने अपने स्नेह से उन्हे वचित कर दिया था और उनके स्थान पर अपने नाती को बादशाह बना दिया था, पहुचे। शाह बेगम घबडा गयी और उनकी समझ मे न आया कि वे क्या कहे।

शहशाह अपने घुटनो के बल झुके और स्नेहपूर्वक आलिगन होते हुए कहा "यदि कोई माता अपने एक पुत्र के स्थान पर दूसरे पुत्र के प्रति कृपा करने लगे तो पहिले को रुष्ट होने का क्या अधिकार है? माता को अपने पुत्रो के ऊपर पूर्ण अधिकार प्राप्त है"। इसके अतिरिक्त उन्होने कहा "मैं रात भर सो नही सका हूँ और बहुत दूर से यात्रा करता हुआ आ रहा हूँ।" यह कहकर उन्होंने शाह बेगम की गोद मे अपना सिर रख दिया और सोने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने यह केवल बेगम के प्रोत्साहन के लिये किया। अभी उन्हे नीद भी न आई थी कि उनकी खाला मिहर निगार खानम पहुच गयी। शहशाह तुरन्त उठ खडे हुए और अपनी खाला को आलिगन करते हुए स्नेह एव प्रेम प्रदर्शित किया। खानम ने कहा "तुम्हारे पुत्र, पत्नियाँ एव घर वाले तुम्हारे दर्शन के अभिलाषी है। ईश्वर के प्रति धन्य है कि हम तुम्हारे पुन दर्शन प्राप्त हुए। उठो और चलकर अपने परिवार से अरक के भीतर मिलो, मैं भी वही जा रही हू।"

इस प्रकार वे अरक की ओर रवाना हुईं। उनके पहुचने पर समस्त अमीर एव अन्य लोग ईश्वर की दया के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगे। उन्होंने अपने प्रिय पादशाह के चरणो की धूल को अपने नेत्रो का अजन बनाया। तब खानम मीर्जा खान तथा मेरे पिता को शहशाह के समक्ष ले गईं। वे पादशाह के समीप पहुचे। पादशाह उनका स्वागत करने के लिये बढे। खानम ने कहा 'हे जाने मादर, मैं अपने अपराधी पुत्रो तथा तेरे अभागे भाइयो को भी लाई हू। इनके प्रति तेरा क्या आदेश होता है?" उन्होने मेरे पिता की ओर सकेत किया। जब पादशाह की दृष्टि मेरे पिता की ओर पडी तो वे तत्काल आगे बढे और उनके कुशल समाचार पूछते हुए स्नेह प्रदर्शित किया। तदुपरान्त उन्होने इसी प्रकार मीर्जा को आलिगन किया और प्रेम तथा स्नेह के सैकडा प्रमाण प्रस्तुत किये। उन्होने यह सब कार्य बडे साधारण एव सरल ढग से किया और अपने वचन तथा कर्म से यह प्रदर्शित किया कि उन्हे उन लोगो के प्रति कोई भी क्रोध नही। पादशाह ने अपने सौजन्य तथा नरमी की पालिश से उनकी लज्जा के मोर्चे को बहुत साफ करना चाहा किन्तु उनकी आशाओ के दर्पण के ऊपर अपमान की जो धूल पड चुकी थी, वह किसी प्रकार हट न सकी।

मेरे पिता तथा मीर्जा खान ने कधार चले जाने की अनुमति मागी। पादशाह ने शाह बेगम तथा खानम से अत्यधिक आग्रह करके उन्हे रोक लिया। जब वे कधार पहुँचे तो मीर्जा खान वहा ठहर गया किन्तु मेरे पिता फरह तथा सीस्तान की ओर इस उद्देश्य से चले गये कि खुरासान मे उन्होंने जो सकल्प किया है, उसको वे पूर्ति कर सकें।[1] जब वे फरह पहुचे तो उन्होंने शाही बेग खा मे खुरासान विजय एव

[1] हज कर सकें।

कुछ कठिनाइयों के कारण (मीर्ज़ा खान) पादशाह के साथ उस यात्रा में न जा सका और अपनी नानी शाह बेगम के पास ठहरा रहा। जैसे जैसे पादशाह तथा खुरासान के मीर्ज़ाओं के विषय में विभिन्न समाचार प्राप्त होते गये, शाह बेगम की ममता उनके हृदय को जगाने लगी और उन्होंने यह विश्वास करना प्रारम्भ कर दिया कि पादशाह, खुरासान के मीर्ज़ाओं द्वारा बन्दी बना लिये गये हैं। इसके अतिरिक्त सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा तथा अबू सईद मीर्ज़ा की पारस्परिक शत्रुता तथा तत्सम्बन्धी रक्तपात के कारण उसने सोचा कि पादशाह उनके चंगुल से कभी न निकल सकेंगे। इसके अतिरिक्त इस विचार की पुष्टि में निरन्तर सूचनायें प्राप्त होती रहती थी और यह उचित समझा गया कि मीर्ज़ा खान को सिंहासनारूढ़ कर दिया जाये।

जब मेरे पिता के समक्ष यह योजना प्रस्तुत की गई तो उन्होंने इसे स्वीकार न किया। इस विषय में बड़ा संघर्ष हुआ जिसके कारण बड़ी कटुता बढ़ी और शाह बेगम की चिन्ता के कारण खान लोग बड़े रुष्ट हुये। इससे मेरे पिता को बड़े कष्ट भोगने पड़े जिन्होंने तंग आकर कह दिया, "तुम लोग मेरी चेतावनी पर ध्यान नहीं देते तो अब मैं तुम्हें परामर्श न दूंगा।" किन्तु पादशाह के अमीर, जो अरक के बाहर से मेरे पिता की सेवा में उपस्थित हुआ करते थे, उसी प्रकार उपस्थित होते रहे। एक मास के वाद-विवाद एवं कलह के उपरान्त, शाह बेगम ने मीर्ज़ा खान को पादशाह के स्थान पर सिंहासनारूढ़ करने का सकल्प कर लिया। मेरे पिता ने तब अमीरों से कहा, कि, "अब तुम लोग मेरे पास मत आया करो।" जब अमीर लोग अरक में पुनः प्रविष्ट हुये तो मेरे पिता आब-बारा नामक एक स्थान पर जो काबुल से एक दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है चले गये और शासन प्रबंध से अपने आप को पृथक् कर लिया। शाह बेगम तथा कुछ मुल्ला ने मीर्ज़ा खान के नाम का खुत्वा पढ़वा दिया और काबुल के क़िले पर अधिकार जमाने का अत्यधिक प्रयत्न किया। इस पर कई युद्ध हुये। शाह बेगम ने मेरे पिता के पास पत्र भेजकर आग्रह किया कि वे वापस चले आयें। विनय एवं आग्रह की सीमा से अधिक हो जाने के कारण मेरे पिता के पास वापस होने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रहा। २४ दिन तक वे काबुल के अरक का अवरोध किये रहे। इसी बीच में पादशाह स्वयं वापस आ गये।

बाबर बादशाह की खुरासान की यात्रा और उनकी खुरासान से काबुल को वापसी

जब बाबर पादशाह जहांगीर के पीछे रवाना हुए तो वे हज़ारा पर्वतों में उसके पास पहुँच गये। विचार विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि सर्वोत्कृष्ट बात तो यह होगी कि खुरासान की ओर प्रस्थान किया जाये कारण कि सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पुत्र कुछ सहायता के उपरान्त शाही बेग खाँ का मुक़ाबला कर सकेंगे। इस उद्देश्य से वे खुरासान की ओर रवाना हुए। जब यह दोनों भाई खुरासान पहुँचे तो वहाँ वालों ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। दोनों मीर्ज़ा उन लोगों के पहुँचने पर अत्यधिक प्रसन्न हुए किन्तु दोनों मीर्ज़ाओं में किसी प्रकार का मेल न था। सर्वप्रथम बाबर पादशाह को ज्ञात हो गया कि उनमें एकता नहीं है। उन्होंने यह भी समझ लिया कि मेल के बिना वे कुछ भी नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त जहाँगीर मीर्ज़ा अत्यधिक मदिरापान के कारण आमातिसार के रोग में बुरी तरह ग्रस्त था और उसको ज्वर आने लगा था। यह प्रसिद्ध हो गया था कि खदीजा बेगम ने उसकी मदिरा में विष मिला दिया है। इन्हीं कारणों से वह आज्ञा लेकर काबुल की ओर वापस हो गया।

हज़ारा पर्वतों में पहुँचने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि मीर्ज़ा खान तथा मुहम्मद हुसेन मीर्ज़ा काबुल

का अवरोध किये हुए है। भारी सामान को मीर्ज़ा जहागीर के साथ, जो रुग्ण था और पालकी मे यात्रा कर रहा था, छोडकर वे बडी तीव्र गति से हिन्दूकुश दर्रे की ओर थोडे से सहायको को लेकर रवाना हुए। दर्रे बरफ से ढके हुए थे। उन्होने उन्हे बडी कठिनाई से पार किया और बडी तीव्र गति से काबुल पहुचे। एक दिन प्रात काल वे अचानक नगर के समीप पहुच गये। जो लोग काबुल के किले के बाहर थे और उन लोगो पर आक्रमण कर रहे थे जो किले के भीतर थे वे इधर-उधर छिप गये। जो लोग भीतर थे वे बडी तेजी से बाहर निकले और जो कुछ बाहर तथा भीतर उनके हाथ लगा उसे उठा ले गये। शहशाह अपनी उदार प्रवृत्ति के कारण बिना किसी आडम्बर अथवा कटुता का चिह्न प्रदर्शित किये हुए अपितु बडी प्रसन्न मुद्रा में अपनी सौतेली नानी के समक्ष, जिसने अपने स्नेह से उन्हे वचित कर दिया था और उनके स्थान पर अपने नाती को बादशाह बना दिया था, पहुचे। शाह बेगम घबडा गयी और उनकी समझ मे न आया कि वे क्या कहे।

शहशाह अपने घुटनो के बल झुके और स्नेहपूर्वक आलिंगन होते हुए कहा "यदि कोई माता अपने एक पुत्र के स्थान पर दूसरे पुत्र के प्रति कृपा करने लगे तो पहिले को रुष्ट होने का क्या अधिकार है? माता को अपने पुत्रो के ऊपर पूर्ण अधिकार प्रा त है'। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा 'मैं रात भर सो नही सका हूँ और बहुत दूर से यात्रा करता हुआ आ रहा हूँ।" यह कहकर उन्होंने शाह बेगम की गोद मे अपना सिर रख दिया और सोने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने यह केवल बेगम के प्रोत्साहन के लिये किया। अभी उन्हे नीद भी न आई थी कि उनकी खाला मिहर निगार खानम पहुच गयी। शहशाह तुरन्त उठ खडे हुए और अपनी खाला को आलिंगन करते हुए स्नेह एव प्रेम प्रदर्शित किया। खानम ने कहा "तुम्हारे पुत्र, पत्नियाँ एव घर वाले तुम्हारे दर्शन के अभिलाषी है। ईश्वर के प्रति धन्य है कि हमे तुम्हारे पुन दर्शन प्राप्त हुए। उठो और चलकर अपने परिवार से अरक के भीतर मिलो, मैं भी वही जा रही हू।"

इस प्रकार वे अरक की ओर रवाना हुईं। उनके पहुचने पर समस्त अमीर एव अन्य लोग ईश्वर की दया के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगे। उन्होने अपने प्रिय पादशाह के चरणो की धूल को अपने नेत्रो का अजन बनाया। *तब खानम मीर्ज़ा खान तथा मेरे पिता को शहशाह के समक्ष ले गईं।* वे पादशाह के समीप पहुचे। पादशाह उनका स्वागत करने के लिये बढे। खानम ने कहा "हे जाने मादर, मैं अपने अपराधी पुत्रों तथा तेरे अभागे भाइयो को भी लाई हू। इनके प्रति तेरा क्या आदेश होता है?" उन्होने मेरे पिता की ओर सकेत किया। जब पादशाह की दृष्टि मेरे पिता की ओर पडी तो वे तत्काल आगे *बढे और उनके कुशल समाचार पूछते हुए स्नेह प्रदर्शित किया। तदुपरान्त उन्होंने इसी प्रकार मीर्ज़ा* को आलिंगन किया और प्रेम तथा स्नेह के सैकडो प्रमाण प्रस्तुत किये। उन्होने यह सब कार्य बडे साधारण एव सरल ढग से किया और अपने वचन तथा कर्म से यह प्रदर्शित किया कि उन्हे उन लोगो के प्रति कोई भी क्रोध नही। पादशाह ने अपने सौजन्य तथा नरमी की पालिश से उनकी लज्जा के मोर्चे को बहुत साफ *करना चाहा किन्तु उनकी आशाओ के दर्पण के ऊपर अपमान की जो धूल पड चुकी थी, वह किसी प्रकार* हट न सकी।

मेरे पिता तथा मीर्ज़ा खान ने कधार चले जाने की अनुमति मागी। पादशाह ने शाह बेगम तथा खानम से अत्यधिक आग्रह करके उन्हे रोक लिया। जब वे कधार पहुँचे तो मीर्ज़ा खान वहा ठहर गया *किन्तु मेरे पिता फरह तथा सीस्तान की ओर इस उद्देश्य से चले गये कि खुरासान मे उन्होने जो सकल्प* किया है उसकी वे पूर्ति कर सकें।[1] जब वे फरह पहुचे तो उन्होंने शाही बेग खा से खुरासान विजय एव

[1] दफन कर सकें।

चगताई की पराजय के समाचार सुने। मार्ग तथा दर्रे बडी खतरनाक अवस्था को पहुच चुके थे और वे एक प्रकार से बद से हो गये थे। इस कारण मेरे पिता अपने उद्देश्य की पूर्ति न कर सके। यह घटना ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) मे घटी।

बाबर बादशाह के काबुल में निवास का संक्षिप्त हाल तथा तत्सम्बन्धी कहानियाँ

इस बात का उल्लेख हो चुका है कि पादशाह ने ९०९ हि० (१५०३-४ ई०) मे मुकीम बिन जुन्नून अरगून से काबुल विजय कर लिया। इस अभियान मे उनके साथ खुसरो शाह की सेना के लगभग २० हजार आदमी थे। क्योकि काबुल मे इतनी बडी सेना का जीवन निर्वाह न हो सकता था अत पादशाह ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का सकल्प किया किन्तु उस अभियान मे मार्गों मे अपरिचित होने के कारण वे अधिकाश ऐसे स्थानो पर पहुच गये जहा खाद्य-सामग्री का अभाव था और उनके अधिकाश पशु नष्ट हो गये थे। यद्यपि इस अभियान मे कोई भी युद्ध न हुआ किन्तु सेना को अत्यधिक हानि उठानी पडी। काबुल वापस होने पर, खुसरो शाह के बहुत से आदमी उनका साथ छोडकर चले गये। इस कठिनाई के समय शाह बेगम तथा मेरे पिता काबुल पहुच गये और पादशाह खुरासान, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, चले गये।

पिछली घटनाओ के फलस्वरूप हमारे कधार पहुचने पर लोगो को अत्यधिक कष्ट भोगने पडे। इसके अतिरिक्त जहागीर मीर्जा, जो उस समय पादशाह के राज्य का सहायक था, मृत्यु को प्राप्त हो गया। इन घटनाओ के उपरान्त उन्होने जिन साधनो से भी सम्भव हो सका अपने आप को काबुल मे दृढतापूर्वक जमाये रखने के लिये अपनी शक्ति का सगठन किया। इस उद्देश्य से उन्होंने शाह बेग के पास कधार मे एक दूत भेजा। शाह बेग जुन्नून अरगून[1] का पुत्र था। वह मीर्जा सुल्तान हुसेन का एक प्रतिष्ठित अमीर था जिसके अधीन वह ३० वर्ष तक कधार एव जमीनदावर का प्रबध कर चुका था। यद्यपि वह वीर तथा प्रतिभाशाली था किन्तु उसने सभी बातो से विमुख होकर अत्यधिक धन सम्पत्ति एकत्र कर ली थी। वह स्वय मीर्जाओं की सहायतार्थ खुरासान पहुचा। जब शाही बेग खा ने हिरात पर आक्रमण किया तो वह स्वय ऊजबेगों की सेना के मुकाबिले मे रवाना हुआ। इस युद्ध मे वह मारा गया। कधार मे उसके स्थान पर उसका पुत्र शाह बेग सिंहासनारूढ हुआ। पादशाह ने शाह बेग के पास दूत भेजकर कहलवाया कि, "क्योकि मीर्जा सुल्तान हुसेन की सतान नष्ट हो चुकी है अत यह उचित होगा कि अधीनता एव आज्ञाकारिता के द्वार खोल दिये जायें। इस समय हमारे राज्य मे तुमसे अधिक उच्च पद पर कोई अधिकारी नही।" किन्तु पादशाह के आश्वासनो तथा वचन के बावजूद शाह बेग ने स्वीकार न किया कारण कि उसकी दृष्टि म अधीनता से बढकर प्रतिष्ठा के उच्च विचार थे। सक्षेप मे इसके कारण युद्ध प्रारम्भ हो गया। पादशाह कधार की ओर रवाना हुए। इस नगर के समीप युद्ध हुआ और वह बडा घोर युद्ध था। अन्ततोगत्वा पादशाह को विजय हुई। शाह बेग के आदमियो के नेत्रो मे पलायन की धूल भर गई और वे ऐसी अव्यवस्थित दशा को प्राप्त हो गये कि कधार के किले मे प्रविष्ट न हो सके। इस प्रकार वे बिना किसी सामान के सूई मे चले गये और उनके सौभाग्य का अन्त हो गया। पादशाह को इतनी

१ जुन्नून अरगून।

अधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई कि सोना, जवाहिरात तथा शाहरुखियाँ ढालो में भरकर बाटी गई।

मीर्ज़ा खान[1] जो कधार मे ठहर गया था पादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ। पादशाह लूट की धन सम्पत्ति लेकर काबुल वापस चले आये और जहागीर मीर्ज़ा के छोटे भाई सुल्तान नासिर मीर्ज़ा को कधार सौंप गये।

उनके काबुल वापस हो जाने के उपरान्त बदख्शा से महत्वपूर्ण समाचार प्राप्त हुए। जब ऊज़बेगो ने खुसरो शाह[2] के राज्य पर अधिकार जमा लिया तो बदख्शा के कुछ लोगो ने अधीनता न स्वीकार की और कई अवसरो पर ऊज़बेग सेना को भगा दिया। इस प्रकार प्रत्येक मीर हज़ारी[3] सरदार हो गया उन्होने ऊज़बेगो के सिरो को कुचल दिया। उनका सरदार जुबैर रागी[4] था।

शाह बेगम ने बदख्शा के राज्य का दावा किया और यह कहा कि, 'यह राज्य तीन हज़ार वर्ष से हमारे वश मे चला आ रहा है। यद्यपि मैं स्त्री हूँ और स्वय राज्य नही कर सकती किन्तु मेरा नाती मीर्ज़ा खान राज्य कर सकता है। मेरे तथा मेरी सतान के पुत्रो को कोई भी अस्वीकार न करेगा।" पादशाह ने उसकी बात मान ली और शाह बेगम तथा मीर्ज़ा खान बदख्शा चले गये। मेरे भाई मुहम्मद शाह भी, जो बेगम की सेवा मे था, उनके साथ गया। जैसे ही वे बदख्शा पहुचे तो मीर्ज़ा खान को जुबैर रागी के पास बेगम के आगमन के समाचार पहुचाने तथा उसके उद्देश्य की सूचना देने के लिये भेजा गया। मीर्ज़ा खान के प्रस्थान करते ही अबा बक्र की सेना ने जो काशगर से आ रही थी, उन पर आक्रमण कर दिया। समस्त लोग तथा बेगम, जो साथ थी, बन्दी बना लिये गये और काशगर पहुचा दिये गये। अबा बक्र[5] का उल्लेख शीघ्र ही किया जायेगा।

मीर्ज़ा खान को जब इस घटना का पता चला तो वह शीघ्रातिशीघ्र जुबैर रागी के पास पहुचा। सर्वप्रथम जुबैर ने उसके प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित किया किन्तु बाद मे वह उसकी इतनी उपेक्षा करने लगा कि उसके पास केवल एक या दो सेवक रहने दिये। जब अल्प समय मे कार्य इस सीमा को पहुच गया तो मीर्ज़ा खान के एक प्राचीन सेवक यूसुफ अली कूकूल्दाश दीवाना ने १८ अन्य व्यक्तियो सहित षड्यन्त्र रच कर एक रात्रि मे जुबैर पर छापा मारा और उसकी हत्या कर दी तथा मीर्ज़ा खान को सिंहासनारूढ कर दिया। उस तिथि अर्थात् ९१३ हि० (१५०७-८ ई०) से जीवन के अन्त तक मीर्ज़ा खान बदख्शा मे राज्य करता रहा।

कधार की विजय के उपरान्त बाबर पादशाह काबुल मे ठहर गये। खुसरो शाह की सेना के उन मुग़लो ने जो ठहर गये थे और जिनकी सख्या लगभग तीन हज़ार थी, अब्दुर्रज़्ज़ाक़ को सिंहासनारूढ कर दिया और पादशाह के विरुद्ध जिनके साथ केवल पाच सौ आदमी थे, विद्रोह कर दिया। उन्होंने उनका उन्ही पांच सौ आदमियो से मुकाबला किया। यह पादशाह का बहुत बडा युद्ध था। हाथों-हाथ घोर युद्ध के उपरान्त पादशाह ने शत्रुओ को पराजित कर दिया। इस युद्ध मे उन्होंने स्वय शत्रुओं के

१ मीर्ज़ा खान बिन सुल्तान महमूद मीर्ज़ा, सुल्तान अबू सईद का तीसरा पुत्र और बाबर का चाचा होता था। उसकी माता निगार खानम बाबर की बहिन थी। उसका नाम सुल्तान वैस मीर्ज़ा था।

२ कुन्दूज़ अथवा कत्तागान प्रात, जिसकी राजधानी कुन्दूज़ थी।

३ १००० सैनिकों का सेनापति।

४ राग निवासी, राग बदख्शा के उत्तर-पश्चिम में एक ज़िला, पंजाह के बायें तट पर कुलाब के सामने।

५ लेखक के चाचा सैयिद मुहम्मद मीर्ज़ा का पुत्र।

पाच योद्धाओ से युद्ध किया अली सैयिद गूर, अली सीनार तथा तीन अन्य व्यक्ति, और युद्ध के उपरान्त इन सब को भगा दिया।

इसी युद्ध मे अब्दुर्रज्जाक़ मीर्जा पादशाह द्वारा बन्दी बना लिया गया किन्तु उन्होंने उसके प्रति सौजन्यपूर्ण व्यवहार करके उसे मुक्त कर दिया।

इन घटनाओ के उपरान्त पादशाह के कार्य काबुल मे सुगमतापूर्वक चलने लगे जहा वे ९१६ हि० (१५१० ई०) तक, जब कि शाही बेग खा की हत्या कर दी गई, जैसा कि उल्लेख किया जायेगा, रहे।

शाही बेग खां तथा शाह इस्माईल की एक दूसरे के प्रति शत्रुता का प्रारम्भ, शाह इस्माईल द्वारा शाही बेग खां की हत्या

इस भाग के प्रारम्भ मे लिखा जा चुका है तथा ९०५ हि० (१४९९-१५०० ई०) मे जो बादशाह विभिन्न देशो मे राज्य कर रहे थे उनकी सूची के सम्बन्ध मे यह उल्लेख हो चुका है कि, 'शाह इस्माईल ने एराक पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था। उसके वश ने शरीअत को उस देश से निकाल दिया तथा क़त्ले आम कर दिया था।' इस इतिहास मे उसके कुकृत्यो के उल्लेख का स्थान नही। जब शाही बेग खा के राज्य की सीमाए एराक की सीमाओ से मिल गई तो ऊज़बेग लोग एराक के उस भाग मे जो कि खुरासान से मिला हुआ था, छापे मारा करते थे। इस कारण शाह इस्माईल ने शाही बेग खा के पास उचित उपहार सहित एक दूत भेजा जिसके हाथ एक पत्र प्रेषित किया जिसमे लिखा हुआ था कि "इस समय तक हमारे विचारो के दामन मे विरोध की धूल इस सीमा तक न पडी थी कि शत्रुता के बादल उठ खडे होते। आप अपनी ओर से पिता के समान व्यवहार करें, इस ओर से मैं पुत्र के समान निष्ठा प्रदर्शित करूगा।"

शेर

"मित्रता का वृक्ष लगाओ, कारण कि इसका फल तुम्हारे हृदय की इच्छा होगा
शत्रुता के पौधे को उखाड डालो, जिससे सहस्रो दुख होते हैं।"

जब यह पत्र लेकर दूत खान के दरबार मे पहुचा तो उसे निम्नाकित उत्तर दिया गया —"यह उचित होगा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पिता के पेशे को करता रहे, यदि वह अपनी माता के पेशे को करने लगेगा तो वह अपने पेशे की उपेक्षा करेगा। ऊजून हसन ने उसी दिन अपने आप को पादशाहो के क्षेत्र से पृथक् कर लिया जिस दिन उसने अपनी पुत्री का विवाह तुम्हारे पिता से कर दिया, इसी प्रकार सुल्तान याकूब ने भी जो हसन का पुत्र था और जिसने अपनी बहिन का विवाह किया। तुम अपनी माता की ओर से उसी समय तक हक़ जता सकते थे जब तक कि ससार मे मेरे सरीखा कोई पुत्र न होता जो कि स्वय सुल्तान तथा सुल्तान का पुत्र है। यह मसल मशहूर है कि पुत्र को पिता का और पुत्री को माता का कार्य करना चाहिये।"

शेर

"बादशाह लोगो को राज्य के कार्यों के रहस्य का ज्ञान है,
हे हाफ़िज़! तू भिखारी, कोने मे बैठा हुआ, शिकायत न कर।"

शाही बेग खाँ ने रचना शैली का पूरा ज़ोर समाप्त कराते हुए दूत को एक डडा तथा कमडल

देकर वापस कर दिया और यह कहलाया कि "यदि तुम अपने पिता का पेशा भूल गये हो तो मैं तुम्हें उसका स्मरण दिलाता हूँ।

शेर

"हे मेरे पुत्र ! यदि तुझे अपने प्राण प्रिय हैं, तो तू सद्परामर्श स्वीकार कर,
हे युवको ! वृद्ध बुद्धिमानो की बात सुनो।"

यदि तुम राज्य के कार्य मे हाथ डालोगे तो तुम्हे खतरे का अनुभव कर लेना चाहिये।

शेर

"वही राज्य की नववधु को दृढतापूर्वक आलिंगन करता है,
जो उसका तेज़ तलवारो के मध्य मे चुम्बन कर सकता है।'

यह कहकर उसने एराक के दूत को भेज दिया और स्वय एक सेना लेकर हजारा के विरुद्ध चल खडा हुआ। दूत ने वापस होकर शाह इस्माईल को उत्तर प्रस्तुत किया। शाह इस्माईल ने उसे सुनकर उत्तर भेजा कि, "यदि प्रत्येक पुत्र के लिये अपने पिता ही का व्यवसाय करना अनिवार्य होता तो हम लोगो मे से प्रत्येक को आदम की सतान होने के कारण पैगम्बर होना चाहिये था। यदि राज्य पिता से पुत्र ही को प्राप्त होता रहता तो पेशदादी ही पादशाह रहते कियानी नही। चिगीज स्वय किस प्रकार बादशाह हो सकता था और तुम किस प्रकार ?

शेर

"हे नव-युवक ! अपने मरे हुए पिता के विषय मे डीग न मारो,
कुत्ते के समान हड्डियो मे आनन्द न लो।"

शाही बेग खा के उपहारो के बदले मे उसने उसे चरखा तथा टकुई भेजते हुए लिखा कि तुमने अपने पत्र मे मुझे लिखा था —

शेर

"वही राज्य की नववधु को दृढता पूर्वक आलिंगन करता है,
जो उसका तेज़ तलवारो के मध्य मे चुम्बन कर सकता है।"

मैं भी यही बात कहता हूँ देखो क्या होता है। मैं तुमसे युद्ध करने के लिये कटिबद्ध हो गया हूँ और युद्ध का पाव घोर रक्तपात के रिकाब मे रख लिया है। यदि तुम आमने-सामने मेरा मुकाबला करने के लिये आओगे तो हमारे हको का निर्णय हो जायेगा, यदि तुम नही आते तो जाकर कोने मे बैठो और जो तुच्छ उपहार मैंने भेजा है उससे अपना जी बहलाओ।

शेर

"प्रतिकार की इस खानकाह मे हमे बहुत से अनुभव हुये,
जिसने मुहम्मद साहब के वश से झगडा किया, वही नष्ट हुआ।"

शाही बेग खा ने अपनी सेना का विघटन कर दिया था और जिस समय पत्र पहुचा वह मर्व मे निवास कर रहा था। उसने सेना एकत्र करने के लिये अपने द्रुतगामी दूत चारो ओर भेजे किन्तु पास के स्थानो की सेनाएँ भी एकत्र न हो पाई थी कि शाह इस्माईल पहुच गया और उसने मर्व के समीप अपने

शिविर लगा दिये। तीन दिन तक लगातार झडपें होती रही और शाही बेग खा की सेना समस्त दिशाओ से एकत्र होती रही। शाह इस्माईल एक असमतल भूमि पर अपने शिविर लगाये हुए था। वह वहा से निकला। जब ऊजबेग सेना ने यह देखा तो इसकी सूचना दी। ऊजबेगो ने सोचा कि शत्रु आक्रमण के प्रति पछताकर वापस जा रहे है। वे मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय रमजान ९१६ हि० (दिसम्बर १५१० ई०) मे रोज शक[1] को दो हजार आदमियो को लेकर निकले। उसके[2] कुछ परामर्शदाताओं ने उदाहरणार्थ अमीर कम्बर तथा अमीर राई ने निवेदन किया कि, "आज अच्छा होता कि हम अपना युद्ध स्थगित कर देते और शाह इस्माईल का पीछा न करते कारण कि उबैदुल्लाह सुल्तान तथा तीमूर सुल्तान २० हजार आदमियो सहित एक फरसख[3] ऊपर ठहरे हुए है, कल वे अपनी सेना लेकर हमारे पास पहुच जायेंगे। इसके अतिरिक्त यह निश्चय रूप से पता चल चुका है कि शत्रु इस प्रकार वापस होकर या तो पीछे हटना चाहता है और या हम युद्ध मे खीचना चाहता है। यदि वे युद्ध करना चाहते है तो हमे प्रतीक्षा करनी चाहिये ताकि आस पास से और भी सेनाएँ हमारे पास आ जायें और अधिक से अधिक सेना लेकर हम उनसे युद्ध कर सकें और यदि वे वास्तव मे भाग ही रहे हैं तो सरदार के लिये स्वय उनका पीछा करना आवश्यक नही। उबैदुल्लाह सुल्तान, तीमूर सुल्तान तथा कुछ अन्य अमीर उनका पीछा कर सकते है और खान स्वय धीरे-धीरे एराक की ओर प्रस्थान करें। यह स्पष्ट है कि इस स्थान से पलायन कर जाने के उपरान्त हमारे आदमी उन्हे और भी भगा सकते तथा छिन्न-भिन्न कर सकते है। इस प्रकार उनमे इतनी शक्ति न रहेगी कि वे एराक मे भी ठहर सकें।' खान ने उत्तर दिया कि, "तुम लोग ठीक कहते हो किन्तु शाह इस्माईल से युद्ध जिहाद है और बडा ही महत्वपूर्ण कार्य है। इसके अतिरिक्त लूट म अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त होगी। इस प्रकार अन्य सुल्तानो के साथ मुझे भी इस लोक तथा परलोक से लाभ होगा। हमे साहस से कार्य लेना चाहिये।' यह कहकर वह तत्काल घोडे पर सवार हो गया और शाह इस्माईल के पीछे रवाना हो गया। जब वह ऊबड खाबड स्थान को पार करके खुले मैदान मे पहुचा तो उन्होने देखा कि शत्रु ठहर गये और उनकी सख्या ४० हजार है। अभी ऊजबेग सेना युद्ध के लिये तैयार भी न हो पाई थी कि तुर्कमानो ने उन पर आक्रमण कर दिया। जब शाही बेग खा के आदमियो ने देखा कि शत्रुओ ने उन्हे शक्तिहीन कर दिया है तो वे अपना धैर्य त्याग कर भाग खडे हुए किन्तु सेना के सरदार अपने स्थान पर डटे रहे यहा तक कि शाही बेग खा तथा उसके समस्त अधिकारी मार डाले गये। किसी इतिहास मे भी अथवा किसी युद्ध के विवरण म भी कोई ऐसी घटना नही मिलती जिसमे सेना के सभी सरदार मार डाले गये हो।

जब भागने वाले मर्व के किले मे पहुचे तो जिस किसी से भी हो सका वह अपने परिवार को लेकर भाग खडा हुआ। जो लोग भाग न सके उन्होने अपने परिवार से विदा के सम्बन्ध मे कुरान की आयत पढी और चल खडे हुए।

शाही बेग खा ने मुगलो की बहुत बडी सेना खुरासान मे इस आशय से भेज दी थी कि वे खानो तथा मुगुलिस्तान से दूर रहे। जब ऊजबेग लोग आमू नदी पर पहुँचे तो वे उन मुगलो के हाथ लग गये। उन्होने उन्हे लूट लिया। तदुपरान्त २० हजार मुगल पृथक् होकर कुन्दुज पहुचे। उबैदुल्लाह सुल्तान

१ १५ रमजान (१६ दिसम्बर १५१० ई०)।
२ शाही बेग खा।
३ लगभग १८,००० फीट की दूरी।

पहिचान सकते। तुम धर्म के विषय मे क्या समझ सकते हो। तुम शैतान तथा ईश्वर मे भेद-भाव नही कर सकते। किस विद्वत्ता, ज्ञान, बुद्धि तथा प्रतिभा से जीवन के सन्मार्ग तथा कुमार्ग को पहिचान सकते हो—" इन घृणापूर्ण वाक्यो को सुनकर पादशाह ने अपना धनुष हाथ मे लेकर शेख की ओर एक बाण चलाया। शेख ने बाण को खीचकर अपने सम्मानित माथे तथा सफेद दाढी पर घाव का रक्त मलकर कहा, "ईश्वर को धन्य है कि ८० वर्ष तक सुव्रत आचरण करने के उपरान्त तथा झूठे धर्मों का खडन करने के पश्चात् मैने अपनी सफेद दाढी को शहादत के रक्त से रजित देख लिया।' उस दुष्ट काफिर ने अपने निषग से दूसरा बाण निकाला और शेख के ऊपर चलाया। तदुपरान्त उसने आदेश दिया कि उन्हे ले जाकर एक वृक्ष पर लटका दिया जाये और वृक्ष को जड से काट डाला जाये। शेख वृक्ष के साथ गिर पडे और लोगो ने ले जाकर उन्हें मलिक बाजार मे जला दिया। उन्होने अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु वे शेख की छाती को जला न सके और वह बाजार मे कुछ समय तक पडी रही और काफिर लोग उसे ठुकराते रहे।

शाह इस्माईल द्वारा शाही बेग खां की पराजय के समाचार प्राप्त होना, पादशाह का काबुल से क़ुन्दूज की ओर प्रस्थान

रमजान ९१६ हि० (दिसम्बर १५१० ई०) के प्रारम्भ मे एक व्यक्ति मीर्जा खान के पास से पत्र लेकर पादशाह के पास आया। दर्रे बरफ से अटे हुए थे। मकर राशि लग चुकी थी। पत्र मे यह लिखा हुआ था कि शाह इस्माईल न एराक से पहुच कर शाही बेग खा को मर्व में पराजित कर दिया। उसमे यह पूर्ण रूप मे स्पष्ट न था कि शाही बेग की हत्या हो गई या नही। पत्र म यह भी लिखा था कि समस्त ऊज़बेग लोग आमू नदी पार करके कून्दूज की ओर भाग गये है। वहा उस समय अमीर उरुस दरमान था।

लगभग २० हज़ार मुगूल उज़बेगो से पृथक् होकर कून्दूज से मर्व पहुच गये है। उसमे लिखा हुआ था कि ,"मैं भी कून्दूज पहुच गया हू। यदि आप शीघ्रातिशीघ्र कून्दूज़ पहुंच जायें तो मैं आपकी सवा म मम्मिलित हो जाऊगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने पैतृक राज्य को प्राप्त कर लेंगे।" पादशाह ने जैसे ही उस पत्र का पढा वह शीघ्रातिशीघ्र शीत ऋतु के मध्य मे चल खडे हुये। वह आबदरा के मार्ग की ओर बढे कारण कि उस ओर अधिक ऊँचे दर्रे न थे। उन्होने रमजान मास बामियान मे व्यतीत किया और शव्वाल के प्रारम्भ म (जनवरी १५११ ई०) कून्दूज पहुचे जहा मीर्जा खान तथा उन मुगूलो ने जो ऊजबेगो के साथ थे, उनका स्वागत किया। कून्दूज मे कुछ दिन विश्राम करके जब मार्ग की थकावट कम हो गई तो यह निश्चय हुआ कि वे हिसार की ओर जहा हमजा सुल्तान तथा महदी सुल्तान नामक दो प्रतिष्ठित ऊज़बेग राज्य कर रहे थे, रवाना हो। शीत ऋतु लगभग समाप्त हो चुकी थी कि उन्होने आमू नदी को तुजुक्ताराम घाट पर पार किया। जब हमजा सुल्तान को उनके आगमन के समाचार प्राप्त हुए तो वह हिसार से रवाना हुआ और वख्श की ओर पहुचा। पादशाह कूलक मैदान की ओर, जो खुतलान का एक प्रसिद्ध स्थान है, अग्रसर हुए। वहा उन्हे पता चला कि हमजा सुल्तान वख्श म है। रात्रि मे वे सुल्तान हमजा के समीप और सूर्योदय के समीप शिविर के पास पहुच गये। वहा कोई भी न था। उन्होने प्रत्येक दिशा मे खोज की। उन्हे थोडे से किसान मिले जिन्होने हमजा सुल्तान के विषय मे सूचना दी कि उस मध्याह्नोपरान्त की नमाज़ के समय पादशाह के कूलक के मैदान मे शिविर लगाने के समाचार प्राप्त हुए। यह सुनकर वह तत्काल नीचे के मार्ग से चल खडा हुआ। पादशाह उसके पीछे पीछे उस मार्ग के ऊपर जिधर हमजा सुल्तान गया था, रवाना हुए और मध्याह्नोपरान्त की नमाज़ के

समय वे उसी स्थान पर पहुच गये जहा वह पिछली रात को था। हमजा सुल्तान भी शिविर मे प्रात काल पहुच चुका था और उसने भी वही दशा पाई। वह भी हमारी सेना के पीछे पीछे रवाना हुआ और मध्याह्नोपरान्त की नमाज के समय अपने शिविर मे पहुच गया। पादशाह तथा उनके सहायको का विश्वास था कि हमजा सुल्तान उनसे युद्ध नहीं कर सकेगा। उधर हमजा सुल्तान समझता था कि पादशाह के साथ थोडे ही से आदमी काबुल से आये हैं और क्योंकि मुगुल सेना अभी पहुची है अत उसने युद्ध की तैयारी न की होगी। क्योंकि दोनो पक्षो के हृदय मे इसी प्रकार के विचार थे अत वे एक दूसरे के प्रति भयभीत रहे। उसी रात्रि को पादशाह ने कुन्दूज पर आक्रमण किया और हमजा सुल्तान हिसार की ओर भाग गया। कुछ दिन उपरान्त दोनो मे से प्रत्येक को एक दूसरे के पलायन के समाचार प्राप्त हुए और दोनो ने अपनी मुक्ति पर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए यह आयत पढी· "ईश्वर को धन्य है जिसने हमे इस कष्ट से बचा लिया।" कुन्दूज पहुचकर पादशाह को ज्ञात हुआ कि शाह इस्माईल के पास से एक राजदूत मित्रता के आश्वासन लेकर आया है। इसी बीच मे पादशाह की बहिन खानजादा बेगम खुरासान से आ गयी। उन्हे शाह इस्माईल ने भेजा था। इस बात का उल्लेख हो चुका है कि किस प्रकार पादशाह ने समरकन्द के अवरोध के समय अपनी बहिन खानजादा बेगम का विवाह शाही बेग खा से अपने प्राणों की रक्षा हेतु कर दिया था और इस प्रकार वे बच निकले थे। बेगम शाही बेग खा के अन्त पुर मे प्रविष्ट हो गईं और शाही बेग खा से उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम खुर्रम शाह सुल्तान था। इसके उपरान्त शाही बेग खा को इस बात का भय रहने लगा कि कही वह अपने भाई से मिलकर उसके जीवन के प्रति षड्यन्त्र न रचे अत उसने उसे तिलाक दे दिया और उसका विवाह सैयिद हाई के एक प्रतिष्ठित सैयिद हादी से कर दिया। वह तथा समस्त सुल्तान और ऊजबेग उसका बडा आदर सम्मान करते थे। सैयिद [illegible] मर्व के युद्ध मे मारा गया और बेगम तथा उसका पुत्र तुर्कमानो द्वारा बन्दी बना लिये गये। जब [illegible] इस्माईल को पता चला कि वह बाबर पादशाह की बहिन है तो उसने उसके प्रति बडा आदर [illegible] प्रदर्शित किया और उसे पादशाह के पास बहुमूल्य उपहारो सहित भिजवा दिया। खानजादा [illegible] पहुचने पर पादशाह बडे प्रसन्न हुए और शाह इस्माईल के पास मीर्जा खान को अत्यधिक [illegible] भेजा और अपनी अधीनता, एव निष्ठा के आश्वासन देकर उससे सहायता की याचना की। [illegible] ने उसका भली-भाति स्वागत किया और उसकी प्रार्थनाओ को स्वीकार करके [illegible] चले जाने की अनुमति दे दी।

इसी बीच मे एक दूत मेरे चाचा के पास से यह समाचार लाया कि [illegible] मे खाली करा लिया है और उस प्रदेश को अपने अधिकार मे कर लिया है। [illegible] का विनाश तथा मावराउन्नहर की विजय सरल हो जायेंगी।

बाबर बादशाह का मावराउन्नहर में सिंहास[illegible]

जब खान को अन्दिजान भेजा जा चुका, तो मीर्जा खान शाह [illegible] पहुचा और इस प्रकार पादशाह को पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया। [illegible] हिसार की ओर रवाना हुये। यह समाचार पा कर ऊजबेग लोगों न [illegible] सुल्तान, महदी सुल्तान, तीमूर सुल्तान एव उनके कई बडे सुल्तान, [illegible] हुये। कूचूम खा जो शाही बेग खा के स्थान पर नियुक्त हुआ था [illegible] उबैदुल्लाह सुल्तान एव अन्य ऊजबेग सुल्तान, करशी मे जो [illegible] हुये पडे थे। जब पादशाह पुले सगी के पास पहुचे, हमजा सुल्तान [illegible]

लगभग १ मास तक दोनों ओर की सेनायें शिविर लगाये रहीं। अन्त में यह स्पष्ट हो गया कि ऊज़बेगों की सेना की संख्या बड़ी अधिक है, उनके सुल्तान बड़े प्रतिष्ठित हैं और उनसे मुकाबला करना कठिन हो जायेगा। ऊज़बेग भी अपने स्थान पर समझ गये कि पादशाह उनका मुकाबला नहीं कर सकते। और उन्होंने नदी को तैर कर पुले सगी के नीचे पार किया। पादशाह को मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के समय इस बात के समाचार प्राप्त हुये। वे तत्काल अपने शिविर को विसर्जित कर के आबदरा की ओर, जो दृढ़ पर्वतों के समीप है, रवाना हुये। वे रात भर बड़ी तीव्र गति से यात्रा करते रहे और दूसरे दिन भी मध्याह्नोपरान्त की नमाज़ तक यात्रा करते हुये एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जिसे बड़े बड़े अनुभवी लोग बड़ा ही दृढ़ एवं सुरक्षित तथा ठहरने योग्य समझते थे। आधी रात के समय समाचार प्राप्त हुये कि ऊज़बेग लोग पूरे दल बल के साथ बढ़ते चले आ रहे हैं। सेना के सरदारों ने पूरी सेना वालों को एक साथ यह समाचार पहुंचा दिये और प्रातःकाल प्रत्येक व्यक्ति युद्ध हेतु अपने अस्त्र-शस्त्र ठीक कर के तैयार हो गया। लगभग सूर्योदय के समय हमारी सेना के करावलों ने आकर सूचना दी कि ऊज़बेग सेना आ रही है। यह सुन कर पादशाह घोड़े पर सवार हो गये और किसी टीले तक पहुंचे। उन्हें केवल एक मार्ग ही ऐसा मिला जिससे शत्रु अग्रसर हो सकते थे। उस टीले के जिस पर वे खड़े थे बाईं ओर एक अन्य पहाड़ी थी। दोनों के मध्य में एक गहरी कन्दरा थी जिससे एक ही मार्ग जाता था। जब शत्रुओं की सेना की पंक्तियां समतल मैदान में फैल गईं, तो उन्होंने देखा कि उस पहाड़ी पर जिसका पहिले उल्लेख हो चुका है, चढ़ना सरल नहीं। तीमूर सुल्तान तथा कुछ अन्य सुल्तान, लगभग १०,००० आदमियों को लेकर शेष सेना से पृथक् हो गये और दूसरी पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पादशाह ने वीरों की एक सेना सहित मीर्ज़ा ख़ान को उनके मुकाबले के लिये भेजा। इस समय उनकी दृष्टि सेना के एक दल पर पड़ी। उन्होंने पूछा, 'वे कौन हैं?" जब मेरे पिता काबुल से रवाना हुये थे तो उनके साथ उनके लगभग ३००० पैतृक परिजन थे जो मुग़ुलों के साथ ख़ुरासान से कुन्दूज़ पहुंचे थे। इन लोगों के सरदारों को पादशाह ने अपनी सेवा में ले लिया था और थोड़े से मेरे अधीन रह गये थे। पादशाह की दृष्टि इन्हीं लोगों पर पड़ी। उन्होंने उत्तर दिया, "हम मीर्ज़ा हैदर के सहायक हैं"। पादशाह ने तब मुझसे कहा, "ऐसे युद्धों में भाग लेने के लिये तुम्हारी अवस्था बड़ी कम है। तुम मेरे पास ठहरो, मौलाना मुहम्मद तथा कुछ अन्य लोगों को अपने साथ रख लो और शेष को मीर्ज़ा ख़ान की सहायतार्थ भेज दो।"

जब मेरे परिजन, मीर्ज़ा ख़ान के साथ पहुंचे, तो ऊज़बेगों ने आक्रमण किया और मीर्ज़ा ख़ान के समक्ष जितने लोग थे, उन्हें पराजित कर दिया और मीर्ज़ा के ठीक सामने पहुंच गये। ऐसे संकट में मेरे *परिजन वहां पहुंच गये। उनका सरदार अल्का फ़कीर था, जिसका नाम जान अहमद अल्का था।* इसके बाद जहां कहीं भी उसका उल्लेख होगा उसका नाम जान अहमद अल्का लिखा जायगा। उसने अपने साथियों सहित ऊज़बेगों पर आक्रमण किया और उन्हें भगा दिया। तदुपरान्त जो लोग मीर्ज़ा ख़ान के पास से भाग गये थे, युद्ध हेतु लौट आये और शत्रुओं को पीछे हटा दिया। इस गड़बड़ एवं झड़प में मेरे एक आदमी ने शत्रुओं में से एक को बन्दी बना लिया और पादशाह के समक्ष ले गया। उन्होंने इसे अच्छी फ़ाल[1] समझ कर कहा, "इस प्रथम विजय को मीर्ज़ा हैदर के नाम से कर दो।" इस प्रकार सेना के बायें भाग में सायंकाल तक युद्ध होता रहा किन्तु पादशाह की दिशा में जो सेना थी, उधर मार्ग के

१ फ़ाल: शकुन।

सकरे होने के कारण युद्ध न हो सका और उनके पास कोई भी किसी ओर से सुगमतापूर्वक न पहुच सकता था। मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के समय वीर योद्धा पादशाह के सामने से हट कर घोडे से उतर पडे और ठहर गये। रात्रि के समय शत्रु जिस स्थान पर ठहरे थे वहा जल के अभाव के कारण न रुक सके। एक फरसख से कम पर जल अप्राप्य था अत जल के समीप होने के उद्देश्य से रात्रि हो जाने पर वे पीछे हट गये। जो पैदल सेना (पहाडी पर) ठहरी हुई थी, वह उनके पीछे 'हाय हाय' चिल्लाती और शोर मचाती हुई लपकी। शत्रु की सेना के उस भाग ने, जो मीर्जा खान के समक्ष था जब यह देखा कि हमज़ा सुल्तान, जो उनकी सेना के मध्य भाग मे था, भाग रहा है तो वह भी भागने के लिये व्याकुल हो उठा। जब तक दोनो सेनायें आमने-सामने रही, तो कोई भी दूसरे के ऊपर विजय न प्राप्त कर सका किन्तु जब शत्रु वापस होने लगे तो मीर्जा खान के आदमी जो उनका मुकाबला कर रहे थे उन पर अचानक टूट पडे और शत्रु तत्काल भाग गये। जब सेना के मध्य भाग ने इस दल का पलायन करते हुये देखा तो उन्होंने दृढता के हाथों से धैर्य की लगाम छोड दी और भाग खडे हुये। सायंकाल की नमाज़ के समय हमज़ा सुल्तान, महदी सुल्तान एव ममाक सुल्तान जो बन्दी बना लिये गये थे, पादशाह के समक्ष लाये गये। उन्होंने उनके साथ वही व्यवहार किया जो शैबानी ने मुगूल खानाना तथा चगताई सुल्ताना के साथ किया था।[1]

रात्रि से प्रात काल तक और प्रात काल से दूसरी रात तक हमारे आदमी ऊज़बेगो का दरबन्दे आहिनी की सीमान्त तक पीछा करते रहे। समस्त विजयी सेना हिसार मे एकत्र हुई। आस-पास के कबीलो के अतिरिक्त शाह इस्माईल के पास से भी सहायता आ गई। इस प्रकार पूरी सेना की सख्या ६०,००० हो गई। वे फिर हिसार के बाहर निकले और करशी की ओर अग्रसर हुये। अधिकाश ऊज़बेग सुल्तान समरकन्द मे थे। उबैदुल्लाह खा ने करशी के किले की प्रतिरक्षा का पूर्ण प्रबंध कर लिया था। पादशाह के परामर्शदाता, जो राज्य की जटिल समस्याओ का समाधान किया करते थे, करशी का अवरोध करने के पक्ष मे न थे। उनका मत था कि "बुखारा की ओर प्रस्थान करना अधिक उचित होगा कारण कि यदि उबैदुल्लाह करशी के किले की प्रतिरक्षा किया करता है तो बुखारा जो सैनिकों से शून्य एव मूर्खो से परिपूर्ण है, सुगमतापूर्वक हमारे अधिकार मे आ जायगा। उन्हे करशी मे ठहर रहने से कोई लाभ न होगा। ईश्वर न करे कि वहा ठहरने के कारण, वह[2] किला छोड कर निकल आय।" पादशाह इस विचार मे सहमत हो गये और करशी को छोड कर उसके आगे एक मजिल पर पडाव किया। करावल निरन्तर आ आ कर यह समाचार पहुचाते रहते थे कि उबैदुल्लाह, करशी के किले के बाहर आ चुका है और बुखारा की ओर अग्रसर हो रहा है। उसी समय पादशाह घोडे पर सवार हुये और जितनी तेज़ी मे सम्भव हो सका ऊज़बेगो के पीछे रवाना हुये। वे दिन रात यात्रा करते रहे, यहा तक कि नगर मे पहुच गये। पीछा करने वालो ने ऊज़बेगो को बुखारा से तुर्किस्तान के रेगिस्तानो मे भगा दिया और मार्ग मे लूट मार करते गये।

जो ऊज़बेग सुल्तान समरकन्द मे एकत्र थे, उन्हे जब यह समाचार ज्ञात हुये तो वे अचानक बडे भयभीत हो गये और आतकित होकर तुर्किस्तान के विभिन्न भागो मे भाग गये।

जब पादशाह बुखारा मे पहुचे, उन्होंने शाह इस्माईल की सेना को उसकी सेवाओ की प्रशसा

१ यह युद्ध १५११ ई० के प्रारम्भ में हुआ।
२ उबैदुल्लाह खां।

करते हुये तथा उचित इनाम इकराम दे कर वापस कर दिया और वे स्वय विजय प्राप्त कर के तथा सफलतापूर्वक समरकन्द की ओर अग्रसर हुये। मावराउन्नहर के नगरो के सभी छोटे-बडे निवासियो, सम्मानित एव दरिद्रियो प्रतिष्ठित लोगो एव कारीगरो, शाहजादो तथा कृपको ने समान रूप से पादशाह के आगमन पर हर्ष एव प्रसन्नता प्रदर्शित की। प्रतिष्ठित लोगो ने उनका स्वागत किया तथा अन्य लोग नगर के सजाने मे व्यस्त रहे। गलिया तथा बाजार कपडो एव जरदोजी से सजाये गये। पादशाह रजब ९१७ हि० के मध्य मे (अक्तूबर १५११ ई०) ऐसे ऐश्वर्य एव वैभव से नगर मे प्रविष्ट हुये जिसके समान ऐश्वर्य किसी ने न देखा था। फिरिश्तो ने नारा लगाया कि, 'आप सलामती से प्रविष्ट हो", और अन्य लोगो ने परमेश्वर की प्रशसा की। मावराउन्नहर के लोग, विशेष रूप से समरकन्द निवासी, वर्षो मे उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे ताकि उनकी रक्षा की छाया उन लोगो के सिरो पर पडे। यद्यपि आवश्यकता के समय पादशाह ने किजीलवाशो के वस्त्र धारण कर लिय थे जो नितात कुफ्र अपितु पूर्ण रूप से अधर्म था, किन्तु जब वे समरकन्द के राजसिहासन पर जो मुहम्मद साहब की शरीअत का सिंहासन है आरूढ हुये और जब उन्होने मुहम्मद साहब की सुन्नत का मुकुट धारण किया तो लोगा को पूर्ण आशा हो गई कि वे शाह के मुकुट को जो कुफ्र रूपी एव गध की दुम के समान था पृथक् कर देंगे, किन्तु समरकन्द वालो की आशायें पूरी न हुईं कारण कि उस समय तक पादशाह शाह इसमाईल की सहायता की उपेक्षा न कर सकते थे और न वे अपने आपको इतना शक्तिशाली समझते थे कि वे ऊजबेगो से अकेले युद्ध कर सकेंगे अत उन्होने किजीलवाशा की दुष्टता की ओर ध्यान न दिया। इस कारण मावराउन्नहर वालो के उस उत्साह मे कमी हो गई जो उनके आगमन के पूर्व उनके हृदय म था। उनके प्रति जो स्नेह था, वह समाप्त हो गया। इस कारण पादशाह तुर्कमानो की चापलूसी करने तथा उन लोगो से मेल बढाने लगे।

उबैदुल्लाह खां का तुर्किस्तान से बुखारा के विरुद्ध प्रस्थान, बाबर बादशाह से कोल मलिक पर युद्ध, बाबर की पराजय तथा अन्य घटनायें

जब रजब ९१७ हि० (अक्तूबर १५११ ई०) मे पादशाह समरकन्द के राजसिहासन पर आरूढ हुये, तो जैसा कि उल्लेख हो चुका है मावराउन्नहर के आलिम एव प्रतिष्ठित लोग, उनसे शाह इस्माईल से सम्बन्ध रखने तथा तुर्कमानो की वेष भूषा धारण करने पर बडे रुष्ट हुये। जब शीत ऋतु समाप्त हो गई और बहार आ गई तो उस ऋतु की पर्याप्त वर्षा ने भूमि को घास से ढक दिया, और ऊजबेग लोग तुर्किस्तान के बाहर निकले। उनकी मुख्य सेना ताशकन्द के विरुद्ध रवाना हुई किन्तु उबैदुल्लाह, यती कूदूक मार्ग से बुखारा की ओर रवाना हो गया। क्योकि ताशकन्द के किले को अमीर अहमद कासिम कोहबर दृढ बनाये था, एव उसकी प्रतिरक्षा कर रहा था, अत पादशाह अमीर दोस्ते नासिर, सुल्तान मुहम्मद दूलदाई एव अन्य लोगो को वहा सहायता हेतु भेज कर, स्वय बुखारा की ओर अग्रसर हुये। जब वे नगर के समीप पहुचे, तो उबैदुल्लाह खा को उनके पहुचने के समाचार प्राप्त हुये। उसने चौकन्ने हो कर तत्काल अपने घोडे की लगाम खीच ली और जिस मार्ग से आया था, उसी से वापस चला गया। पादशाह ने उसका पीछा किया और कोल मलिक के समीप उसके पास पहुच गये और उसे पीछे हटने पर विवश कर दिया। उबैदुल्लाह खा के साथ ३००० आदमी थे और पादशाह के साथ ४०,०००। उबैदुल्लाह खा ने यह आयत पढ कर कि, "और कितनी बार एक छोटी सेना ने बडी सेना को ईश्वर के

कर, वे कून्दुज की ओर रवाना हुये। किले को छोड कर पूरा हिसार प्रदेश, मुगुलो के अधिकार मे आ गया। मुगूलो मे प्रसिद्ध लोकोक्ति के अनुसार जब कोई स्थान खाली छोड दिया जाता है तो मुअर पहाडी पर चढ जाते हैं। अत्याचार एव निष्ठुरता के हाथ हिंसा एव शत्रुता की आस्तीन से निकाल कर समस्त लोगो के घर-बार, परिवार एव धन-सम्पत्ति को लूटना प्रारम्भ कर दिया। इन मुगूलो मे से एक सर्व श्रेष्ठ व्यक्ति (जो एक समय मे मेरी सेवा मे था) मुझसे कहा करता था, कि, "उन्होने एक बार मेरे मदाजिब[1] के बदले मे मुझे, सामग्री प्राप्त करने के लिये बरात[2] दे दिया जो वश के किसी निम्न श्रेणी के अधिकारी के नाम था। मैं उसके घर उतरा और मैंने उसे बरात दिखाया। वह कुछ समय तक सोचता रहा। तदुपरान्त उसने मुझे २०० घोडे, उसी अनुपात से भेडें, ऊट, दास, घरेलू सामान, वस्त्र एव अन्य सामग्री दिखलाई और कहा, 'मैं आप से आग्रह करता हू कि मैं, मेरे बच्चे एव स्त्रिया जो कुछ पहिने है, उसे छोड दो और जो कुछ हमारे पास है ले जाओ तथा बरात मे लिखा जो धन शेष रह जाये उसके लिये मुझे क्षमा करो।' जब मैंने मवेशियो एव असबाब के मूल्य का हिसाब किया तो यद्यपि धन अधिक था, किन्तु जो कुछ बरात मे लिखा था उसका आधा ही था।" इस कहानी से पता चलता है कि उन्होंने कितना अधिक अत्याचार, निष्ठुरता एव हिंसा प्रारम्भ कर रक्खी थी। हिसार वालो के पास उन्हे जो भी धन-सम्पत्ति मिली, उसे उन्होने उसके अधिकारियो से छीन लिया और उन्हे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। मुसलमानो[3] मे घोर अकाल फैल गया और पूरे हिसार नगर मे केवल ६० व्यक्ति जीवित रह सके। जिन्दा लोग मुर्दे खाने लगे और जब उनकी इस अवस्था मे मृत्यु हो गई कि मुर्दो मे मास न रहा, तो जीवित लोग एक-दूसरे पर टूट पडे। इस घृणित एव हिंसात्मक दृश्य का परिणाम यह हुआ कि ३०-४०,००० लोगो मे कुल २,००० अपनी धन-सम्पत्ति छोड कर भाग सके और शेष उस हिंसात्मक समुद्र मे डूब गये अ वा प्रतिकार की तलवार द्वारा नष्ट कर दिये गये। स्त्रियो एव बालको को ऊज़बेगो ने बन्दी बना लिया और आज तक वे अपमान का जीवन व्यतीत कर रहे है।

इन कष्टो एव दुखो के साथ साथ शीत ऋतु इतनी बढ गई और इतना अधिक हिमपात हुआ कि मैदान, पहाडियो के समान तथा पहाडिया मैदानो के समान हो गई किन्तु जहा तक उस घृणित कौम का सम्बन्ध है, जैसे जैसे उनके अत्याचार एव उनकी हिंसा मे वृद्धि हुई, उतनी ही उनकी समृद्धि भी बढती गई। उन्हे भी अनाज की कमी के कारण कष्ट होने लगा और क्योकि मैदानो मे चारा बरफ के नीचे दब गया था, अत उन्हे अपने घोडो को देने के लिये कुछ न रहा और न उन्हे अपने लिये अनाज मिलता था। इस प्रकार इन घृणित लोगो को भी बडे कष्ट उठाने पडे और वे शक्ति-हीन हो गये।

जब उबैदुल्लाह खा को उनकी शोचनीय दशा का पता चला तो इस कारण कि उसके अधिकाश प्रयत्न सद्भावनाओ पर आधारित थे उसने शाति स्थापित करने एव न्याय की दृष्टि से वहा पहुच कर अन्याय एव अत्याचारियो का दमन अपने लिये परमावश्यक समझा। शीत ऋतु के उपरान्त वह हिसार से चल खडा हुआ। जब मुगूलो को ऊज़बेगो के आगमन के समाचार ज्ञात हुये तो उन्हे यह न पता चल सका कि वे क्या कर सकते है कारण कि उन्होंने स्वय पादशाह के लिये मार्ग बन्द कर दिया था और न उन्हे अन्दिजान मे खान के पास जाना उचित ज्ञात हुआ कारण कि जब कभी वे खान की सेवा मे

१ वेतन तथा भत्ता।
२ किसी स्थान से धन वसूल करने का फ़रमान
३ सुन्नियो से तात्पर्य है।

उपस्थित होने उन्हे ऐसे कार्य करने पडते जिन्हें वे अपने सम्मान के प्रतिकूल समझते। उनके अत्याचार के हाथ कटवा दिये जाने और उनकी उद्दडता का दमन कर दिया जाता। इस कारण वे खान के दरबार मे जाने के पक्ष मे न थे। इसके अतिरिक्त बरफ की वजह से याना असम्भव थी। इन सब कारणो से उन्होंने मूर्खाब एव वख्श के पर्वतो मे अपने आप को दृढ बना लिया। वह स्थान एक ओर मूर्खाब नदी से और दो अन्य दिशाओ मे पर्वतो के कारण सुरक्षित था और शेष ओर गहरी बरफ जमी थी, जिस पर उन्हे बडा भरोसा था।

जब ऊजबेग लोग समीप पहुचे, तो उन्होंने चारो ओर से पता लगाया किन्तु उन्होंने शत्रुओ को पूर्ण रूप से अपनी प्रतिरक्षा का प्रबध किये हुये पाया। जैसा कि उस्ताद ने कहा है, "प्राण, ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के नीचे बरफ के समान होते हैं, एक ओर की बरफ जिस पर वे अत्यधिक भरोसा किये हुये थे, कुछ दिन उपरान्त पिघल गई और एक बडा चौडा मार्ग निकल आया। यह चौडा मार्ग देख कर ऊजबग लोग बडे प्रसन्न हुये एव दुष्ट लोगो को बडा शोक हुआ। एक दिन प्रात काल ऊजबेगो ने मुगूलो पर आक्रमण किया। मुगूल उन्हें आता देख कर नदी मे कूद पडे। इन दुष्टो मे से अधिकाश जल द्वारा नरक की अग्नि मे पहुच गये। केवल थोडे से बच सके। जो लोग नदी तक न पहुच सके थे, वे चमकती हुई तलवार द्वारा नरक को पहुच गये। जो लोग बच रहे, वे बन्दी बना लिये गये। उन लोगो ने हिसार वालो पर जो अत्याचार साल भर मे किये थे, उनका बदला परमेश्वर ने उबैदुल्लाह खा से एक घटे मे ले लिया।

जो लोग हिसार नदी तथा चमकती हुई तलवार द्वारा बच सके, वे खान के पास अन्दिजान उस दशा म पहुचे जिसका उल्लेख हो चुका है अथवा उनकी दशा का उल्लेख ही सम्भव नही।

सक्षेप मे उस कौम की दुष्टता के कारण, हिसार पादशाह के हाथ से निकल गया और ऊजबेगो के अधिकार मे आ गया। जब तक पादशाह को हिसार पर अधिकार जमाने की कोई आशा रही, वे कुन्दुज मे अत्यधिक कष्टो एव कठिनाइयो का सामना करते हुये ठहरे रहे। वह प्रदेश मीर्जा खान के अधिकार मे था, किन्तु वह अपनी पादशाह के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के भाव के बावजूद उन्हे अपना राज्य न दे सका। पादशाह अपने स्वाभाविक सौजन्य के कारण, स्थिति का धैर्य धारण किये हुये सामना करते रहे और मीर्जा खान को उसके राज्य से वचित करने का कोई प्रयत्न न किया। अन्ततोगत्वा हिसार पर अधिकार जमाने की ओर से निराश होकर वे काबुल वापस चले गये।

जब उन्होंने मावराउन्नहर विजय कर लिया था तो वे सुल्तान नासिर मीर्जा को काबुल के राजसिंहासन पर छोड गये थे। पादशाह के आगमन के समाचार पाकर, सुल्तान नासिर मीर्जा अपनी निष्ठा एव स्वामी भक्ति के भाव प्रदर्शित करते हुये स्वागतार्थ पहुचा और कहा, "जब आप अपने चरण काबुल के उत्कृष्ट राजसिंहासन से हटा कर बाहर गये तो इस राज्य का सम्मान मुझे सौंप गये थे। मैं आपके शाही खजाने का उस समय तक प्रबन्ध करता रहा। दुर्भाग्य एव आकाश के परिवर्तन के कारण आप पुन इस राजसिंहासन पर अपने चरण कमल रखने के लिय आ गये हैं। मैं अब आप से अपने पिछले राज्य गजनी चले जाने की अनुमति चाहता हू और मैं अत्यधिक आभारी हूगा, यदि थोडे से अमीर जिनकी मुझे आवश्यकता है, मेरी सेवा हेतु नियुक्त कर दिये जायें।" पादशाह सुल्तान नासिर मीर्जा की इस निष्ठा से अत्यधिक प्रभावित हुये। उन्होंने उसके प्रति नाना प्रकार की कृपायें प्रदर्शित करके कृतज्ञता प्रकट की और उसे गजनी वापस चले जाने की अनुमति दे दी। वहा पहुचने के कुछ समय उपरान्त ही सुल्तान नासिर मीर्जा की मृत्यु हो गई। इस पर गजनी के अमीरो मे बडे झगडे उठे जिनका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा। पादशाह कधार विजय तक काबुल मे रहे। तदुपरान्त उन्होंने हिन्दुस्तान विजय किया। इसका भी उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा।

शैबानी जो मावराउन्नहर में आज तक लगातार राज्य कर रहे हैं

ऊजबेग शैबान ने ९१८ हि० (१५१२-१३ ई०) मे शीत ऋतु के प्रारम्भ मे मीर नजम की हत्या कर दी थी और तुर्कमानों एव पादशाह को पराजित कर दिया था। उसी वर्ष बहार मे उन्होंने शाह इस्माईल के प्रतिकार एव कासिम खा[1] के आक्रमण के भय से, किसी ओर आक्रमण करने के विचार त्याग दिये।

९१९ हि० की शीत ऋतु मे (१५१३ ई०) शाह इस्माईल, रूमी[2] के सुल्तान सलीम का मुकाबला करने के लिये एराक वापस चला गया और कासिम खा अपने राज्य की देख भाल के लिये उबैरा-सुबैरा लौट गया। इन दोनो शत्रुओं की ओर से शैबान की चिन्ताओ का अन्त हो गया। उबैदुल्लाह खा शीत ऋतु के प्रारम्भ मे हिसार की ओर रवाना हुआ, उसे मुग़ूलो के अत्याचार से बचा लिया और जैसा कि उल्लेख हो चुका है, उनका अन्त कर दिया। ९२० हि० (१५१४ ई०) की बहार म शैबान ने अन्दिजान पर चढाई की। सोच विचार के उपरान्त, खान यह समझ गया कि ऊजबेगो से अन्दिजान के लिये युद्ध करने से कोई लाभ न होगा अपितु उन्ही की कठिनाइयो मे वृद्धि होगी। जो लोग उनका मुकाबला कर सकते थे वे शैबान-क्षेत्र को त्याग कर जा चुके हैं उदाहरणार्थ बाबर पादशाह निराश होकर काबुल लौट गये है। उन्होने सोचा कि उनके हित मे यही उचित होगा कि वे शत्रुओ के पहुचने के पूव अपने राज्य मे वापस चले जाये। इस प्रकार खान काशगर की ओर मुग़ूलिस्तान होता हुआ लौट गया। फरगाना प्रान्त, मावराउन्नहर मे ऊजबेगो के राज्य मे सम्मिलित हो गया।

प्राचीन प्रथानुसार, सबसे वृद्ध सुल्तान खान नियुक्त हुआ करता था। वह कूचूम सुल्तान था। सूयूजूक सुल्तान उसका उत्तराधिकारी था किन्तु उसकी मृत्यु कूचूम सुल्तान के पूर्व ही हो गई और जानी वेग सुल्तान उत्तराधिकारी हुआ। सूयूजूक सुल्तान के उपरान्त ही उसकी भी मृत्यु हो गई और कूचूम भी शीघ्र ही उसी पथ का पथिक हो गया। अबू सईद, जो कूचूम खा का पुत्र था, खान नियुक्त कर दिया गया और उसके उपरान्त उसके स्थान पर उबैदुल्लाह खा, खान हुआ। ९११ हि० (१५०५-६ ई०) से अबू सईद खान की मृत्यु तक वास्तव मे वही राज्य के सभी कार्यो का सचालन करता रहता था और यदि उसने खान बनने की इच्छा की होती तो किसी ने उसका विरोध न किया होता किन्तु ऊजबेग प्राचीन प्रथा का पालन करते रहे और सबसे वृद्ध को खान बनाते रहे। अबू सईद के उपरान्त उबैदुल्लाह से बढ कर कोई भी वृद्ध न रह गया अत वही खानो के राजसिंहासन पर आरूढ हुआ और ससार को न्याय की सुगधि से सुगधित करता रहा। ९४६ हि० (१५३९-४० ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

मैंने न तो स्वय देखा है और न किसी को यह कहते सुना है कि उसने पिछले १०० वर्ष मे कोई इतना उत्कृष्ट बादशाह देखा है। सर्व प्रथम वह बडा सच्चा मुसलमान था, पवित्र एव जाहिद। वह धर्म सम्बन्धी, राज्य, सेना एव अपनी प्रजा की समस्त समस्याओं का शरीअत के अनुसार समाधान कराता था और उनसे बाल बराबर भी विचलित न होता था। वह अपनी वीरता एव अपने दान-पुण्य के लिये अद्वितीय था। वह सात विभिन्न लिपियो मे लिख सकता था किन्तु नस्ख[3] सब से अच्छी लिखता था।

१ कासिम खा अथवा कासिम बेग बिन जानी बेग खां।
२ पैंज़ंटाइन।
३ वह लिपि जिसमें अरबी पुस्तकें अधिकाश छपती हैं।

उसने कुरान शरीफ की कई नकलें करके दोनो पवित्र नगरो[1] मे भेजी। वह नस्ख-तालीक[2] भी अच्छी लिख लेता था। बहुत से तुर्की, अरबी एव फारसी कवियो के दीवान[3] उसके पास थे। उसे सगीत का बडा उत्तम ज्ञान था और उसकी बहुत सी रचनाओ को गायक लोग गाया करते हैं। सक्षेप मे, वह बादशाह उत्तम गुणो द्वारा सुशोभित था और उसके जीवन काल मे उसकी राजधानी बुखारा, कला एव ज्ञान-विज्ञान का इतना बडा केन्द्र हो गई कि लोगो को मीर्जा सुल्तान हुसेन के दिना का स्मरण हो आता था ।

बाबर बादशाह का काबुल की वापसी के बाद का शेष हाल, उनके भाई सुल्तान नासिर मीर्ज़ा की मृत्यु, उसके अमीरों की उद्दंडता का कारण

बाबर पादशाह के इतिहास मे यहा तक लिखा जा चुका है कि वे कून्दूज से काबुल पहुच गये। उन्होंने काबुल अपने भाई सुल्तान नासिर मीर्ज़ा को सौंप दिया था जो अधिक मदिरा-पान के कारण ९२१ हि० (१५१५ ई०) मे मृत्यु को प्राप्त हो गया।

गजनी सुल्तान नासिर मीर्ज़ा के अधीन था। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके अमीरा म उस नगर के लिये आपस मे झगडा हो गया जिसने बाद में विद्रोह का रूप धारण कर लिया जिसम समस्त मुगूलो एव पादशाह के शेष आदमियो ने भाग लिया उदाहरणार्थ मीर शेरीम, जो पादशाह की माता के चाचा थे और जो आजीवन पादशाह की सेवा करते रहे, उसका भाई, मीर मजीद, जका, गुल नज़र इत्यादि और चगताई एव ताजीक अमीरो मे मौलाना बाबा पशागरी तथा उसका भाई बाबा शेख। मौलाना बाबा समरकन्द के पशागर नामक स्थान का शरीक[4] था। वह पादशाह का इतना बडा विश्वास-पात्र था, कि जब उन्होंने मावराउनहर पर अधिकार जमा लिया तो उन्होंने मौलाना बाबा को समरकन्द, ऊरातीपा तथा कोहिस्तान के राज्य प्रदान कर दिये। अन्य विद्रोहियो मे मीर अहमद भी था जिसकी कहानी का ऊपर उल्लेख हो चुका है। इसके अतिरिक्त उसका भाई कित्ता बेग था जिनमे मे एक ताशकन्द का हाकिम था और दूसरा सैराम का। मक्सूद करक, सुल्तान कुली, चूनाक इत्यादि। किन्तु शैतान ने उनके मस्तिष्क पर अधिकार जमा रक्खा था और विवेक के स्थान पर, अभिमान एव दुष्टता ने जो निंद्य प्रवृति का फल है, स्थान ग्रहण कर लिया था।

उन्होंने मीर अयूब का छोडा हुआ निंद्य पट्टा अपनी गर न मे डाल कर विद्रोह कर दिया। सक्षेप मे, थोडे से षड्यन्त्र एव झडपो के बाद उनमे तथा पादशाह मे खुले मैदान मे युद्ध हुआ। जैसे ही दोनो ओर की सेनायें अपनी पक्तिया सुव्यवस्थित करके खडी हुई, अमीर कासिम कूचीन का पुत्र अमीर कम्बर अली, कून्दूज मे एक शक्तिशाली सेना लेकर पहुँच गया और विद्रोही पराजित हो गये. उनकी बहुत बडी सख्या बन्दी बना ली गई और उन्हे उचित दड दिया गया और अन्य लोग अपमानित हो कर काशगर भाग गये। इनमे मीर शेरीम एव उसके भाई थे जो खान की प्रथम भेंट तथा मनसूर खा से

१ मक्का, मदीना।
२ नस्तालीक़ जिसमें हिन्दुस्तान में अधिकांश उर्दू पुस्तकें छपती हैं।
३ ग़ज़लों एवं कविताओं का संग्रह।
४ शासन में सहायक था।

संधि हो जाने के उपरान्त खान के पास चले गये थे और कुछ समय तक उसकी सेवा मे रहे। वे लज्जित एव निराश रहे। मीर मजीद जीवन-निर्वाह की कठिनाई के कारण, लूट-मार की आशा मे तिब्बत चला गया किन्तु गजवा[1] मे उसके सिर पर एक पत्थर लगा और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

मीर शेरीम के लिये भी खान के पास ठहरना असम्भव हो गया और वह पादशाह के पास चला गया। उन्होंने अपनी स्वाभाविक उदारता के कारण, उसका कृपापूर्वक स्वागत किया और उसकी कुकृतियो की ओर से क्रोध की आख बन्द करके, उसकी पिछली सेवाओं के प्रति कृपा के नेत्र खोले। वह शीघ्र ही इस नश्वर ससार से बिदा हो गया।

पादशाह ने काबुल मे दृढतापूर्वक अपना राज्य स्थापित करके कधार पर आक्रमण किया जो जुन्नून अरगून के पुत्र, शाह बेग के, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, अधिकार मे था। वे उसे ५ वर्ष तक घेरे रहे। अन्ततोगत्वा शाह बेग भाग जाना निश्चय करके, सीवी चला गया और वहा से थट्टा जिसे उसने उच्च तथा भक्कर के साथ जैसा कि उचित स्थान पर उल्लेख होगा विजय कर लिया।

पादशाह कधार विजय करके हिन्दुस्तान की ओर अग्रसर हुये। उन्होने कई आक्रमण किये किन्तु प्रत्येक आक्रमण के उपरान्त वापस लौट आये। अन्त मे पानीपत मे सुल्तान सिकन्दर लोदी के पुत्र उगान[2] सुल्तान इबराहीम से, जो उस समय पादशाह था, युद्ध हुआ। इबराहीम की सेना की सख्या १००,००० से अधिक थी किन्तु पादशाह ने उसे अपने १०,००० आदमियों से छिन्न-भिन्न कर दिया।

खान का बदख्शां पर दूसरा आक्रमण तथा कुछ समकालीन घटनाओं के कारण

९३५ हि० (१५२८-२९ ई०) मे बाबर पादशाह ने हुमायू मीर्ज़ा को हिन्दुस्तान बुलवा लिया। इसका यह कारण था कि मीर्ज़ा खान बिन सुल्तान महमूद मीर्ज़ा बिन अबू सईद मीर्ज़ा की बदख्शा मे जैसा कि उल्लेख हो चुका है, मृत्यु हो चुकी थी और सुलेमान नामक उसका एक पुत्र रह गया था। बाबर पादशाह ने इस बालक को अपने पास रख लिया और अपने सम्मानित पुत्र हुमायू को बदख्शा का हाकिम नियुक्त कर दिया था जहा वह ९२६ हि० (१५१९-२० ई०) से ९३५ हि० (१५२८-२९ ई०) तक राज्य करता रहा।

जिस समय बाबर पादशाह ने हिन्दुस्तान विजय कर लिया था और अपने शत्रुओं को पराजित कर दिया था तो उनके दो पुत्र बडे हो चुके थे, हुमायू मीर्ज़ा तथा कामरान मीर्ज़ा। कामरान मीर्ज़ा को कधार मे छोड कर उन्होने हुमायू को इस आशय से अपने पास बुलवाया कि उनका एक पुत्र सर्वदा उनके पास रहे और यदि उनकी अचानक मृत्यु हो जाये तो एक उत्तराधिकारी उनके निकट रहे। इन कारणो से उन्होने हुमायू मीर्ज़ा को हिन्दुस्तान बुलवा लिया किन्तु बदख्शा वालो ने हुमायू मीर्ज़ा से निम्नांकित प्रार्थना की, "बदख्शा ऊजबेगो के राज्य की सीमान्त पर स्थित है। वे लोग प्राचीन काल से बदख्शा वालो के हृदय से शत्रु हैं। यदि उन्होने बदख्शा पर आक्रमण कर दिया तो हमारे अमीर उनका मुकाबला न कर सकेंगे।" हुमायू मीर्ज़ा ने इसका यह उत्तर दिया, "तुम लोग जो कुछ कहते हो वह सत्य है

१ यह नाम स्पष्ट नहीं।
२ अफ़ग़ान।

किन्तु फिर भी मैं अपने पिता की आज्ञाओ का उल्लघन नही कर सकता। मै शीघ्रातिशीघ्र अपने किसी भाई को तुम्हारे पास भेज दूगा।" इस प्रकार लोगो को आश्वासन देकर वे हिन्दुस्तान की ओर चल खडे हुए।

उसके जाते ही बदख्शा निवासी भयभीत रहने लगे। समस्त अमीरो ने सुल्तान उवैस को सरदार बना कर, खान[1] के पास दूत भेजे और निवेदन कराया 'हुमायू मीर्जा हिन्दुस्तान चले गये हैं और इस प्रदेश को फकीर अली के हाथ मे छोड दिया है जो ऊजबेगो का कदापि मुकाबला नही कर सकता अत वह बदख्शा मे शाति स्थापित न रख सकेगा। यदि अमुक तिथि तक खान आ जायेंगे तो बडा अच्छा है अन्यथा हमे ऊजबेग लोग हडप कर लेगे। यदि ऊजबेगो ने खान के पहुचने के पूर्व हम पर आक्रमण कर दिया तो वे (अमुक तारीख) तक अपने कदम न जमा सकेंगे। हम आप से सहायता के लिये आग्रह करते हैं। सम्भवत आपके द्वारा हमे मुक्ति प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त शाह बेगम के सम्बन्ध से, जो आपकी नानी है, बदख्शा आप का ही है। आपके अतिरिक्त कोई अन्य इसका अधिकारी नही।" उन्होने इतना अधिक आग्रह किया कि खान इस बात से सतुष्ट हो गया कि यदि वह उनकी सहायतार्थ नही पहुचता तो बदख्शा पर ऊजबेग लोग अधिकार जमा लेंगे, अत मुहर्रम ९३६ हि० (१५२९-३० ई०)के प्रारम्भ मे वह बदख्शा के लिये रवाना हो गया और रशीद सुल्तान को यारकन्द में छोड गया।

इस बात का ऊपर उल्लेख हो चुका है कि ताहिर खा अकेला रह गया था और शीत ऋतु म कीरगीज़ वाले एव उसके सहायक उसका साथ छोड कर चले गये थे। इस कारण खान ने उसके प्रति उदारता प्रदर्शित की और कुछ न किया। उसके कुछ समय तक कीरगीज मे निवास करने के कारण लगभग २०-३०,००० ऊज़बेग उसके चारो ओर एकत्र हो गये और उसने हर प्रकार से युद्ध की तैयारी कर ली। अत खान अपने प्रस्थान के समय काशगर प्रात की प्रतिरक्षा हेतु रशीद सुल्तान को छोड गया। सारीग चौपान पहुच कर, खान ने मुझे सेना के अग्रदल के साथ मेरे पास भेज दिया और वह स्वय पीछे पीछे पहुचा। मैं बदख्शा पहुचा तो मुझे ज्ञात हुआ कि पादशाह के सबसे छोटे पुत्र हिन्दाल मीर्जा को हुमायू मीर्जा ने काबुल से भेज दिया है और मेरे पहुचने के १२ दिन पूर्व वह किलये जफर मे प्रविष्ट हो गया है। क्योकि वह मकर राशि तथा शीत ऋतु का मध्य था, अत वापस होना बडा कठिन था, इस लिये हम लोग किलये जफर मे जाने के लिये विवश थे जहा हमने यह शर्त प्रस्तुत की कि हमे बदख्शा के कुछ जिले प्रदान कर दिये जायें और शीत ऋतु के अन्त मे खान वापस चला जायेगा, किन्तु उन्होंने हमारे ऊपर विश्वास न किया और उन्हे आशका थी कि हम विश्वासघात करेंगे अत हमने लूट-मार प्रारम्भ कर दी यहा तक कि खान आ गया। किलये जफर के चारो ओर के स्थान पर छापे मार कर मैंने आदमी, पशु और वास्तव मे हर चीज़ जिसे चीज़ कहा जा सकता है, प्राप्त कर ली। कुछ दिन उपरान्त खान स्वय आ गया और तीन मास तक किलये जफर का अवरोध किये रहा। उसके आदमी आसपास से जो कुछ हमसे छूट गया था, उसे भी उठा ले गये। शीत ऋतु के अन्त मे, बहुत से अमीर जिन्होंने खान को बुलवाया था, आ गये और उसकी सेवा मे उपस्थित हुये और क्षमा-याचना करते हुये निवेदन किया कि यदि हिन्दाल मीर्जा न आ गया होता तो वे खान के स्वागतार्थ अवश्य जाते। खान ने उत्तर दिया कि, 'मेरे लिये बाबर पादशाह का विरोध करने का प्रश्न ही नही उठता। तुम लोगो ने मेरे पास विनय से परिपूर्ण पत्र

[1] अबुल फतह सुल्तान सईद खां गाज़ी, बिन सुल्तान अहमद खां बिन यूनुस खां बिन शेर अली खां, बिन मुहम्मद खा, बिन खिज़्र ख्वाजा खां बिन तुगलुक तीमूर खां।

भेजे और यह लिखा कि तुम लोगो को ऊज़बेग हडप कर लेंगे और बदख्शा मे ऊज़बेगो की उपस्थिति दोनो ओर वालो के लिये हानिकारक होगी अत मैं आ गया। अब जो स्थिति है उसमे प्रत्येक को अपने अपने घर वापस चले जाना चाहिये।" इस पर खान विलये ज़फर से काशगर की ओर चला गया।

जब खान के बदख्शा मे प्रवेश के समाचार पादशाह को प्राप्त हुये तो वे बड़े रुष्ट हुये और अत्यधिक सोच विचार के उपरान्त उन्होने सुलेमान शाह मीर्ज़ा को बदख्शा भेज दिया और हिन्दाल मीर्ज़ा को बुलवा लिया। उसी के साथ साथ खान को लिखा, "मेरे अत्यधिक उपकारो एव हमारे पारस्परिक सम्बन्धो को देखते हुए मुझे इस घटना पर बडा आश्चर्य होता है। मैंने हिन्दाल मीर्ज़ा को बुलवा लिया है और सुलेमान को भेज दिया है। यदि तुम पूर्वजो के हक पर ध्यान दोगे तो सुलेमान शाह के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करोगे और बदख्शा उसके अधिकार म रहने दोगे कारण कि वह हम दोनो का पुत्र है। यह बडा अच्छा होगा अन्यथा मैं अपने उत्तरदायित्व को पूरा करके विरासत को उसके वारिस को दिलवा दूगा। शेष तुम जानो।"

जब सुलेमान शाह मीर्ज़ा काबुल पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ कि खान कुछ समय पूर्व वापस चला गया है। हिन्दाल मीर्ज़ा उन आदेशो का पालन करते हुये जो उसे प्राप्त हुय थे, बदख्शा सुलेमान शाह मीर्ज़ा को देकर हिन्दुस्तान चला गया। उस समय से अब तक सुलेमान बदख्शा मे राज्य कर रहा है।

परिशिष्ट स

तारीखे अलफी

लेखक—मुल्ला अहमद इब्न नसुल्लाह् देवली टट्टवी,

आसफ खा इत्यादि

(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रिप्ट, रियु, भाग १, पृ० ११७ अ)

९३२ हि०

(१८ अक्तूबर १५२५ ई०—७ अक्तूबर १५२६ ई०)

(५३४ ब) इस वर्ष ९३२ हि० (१५२५ ई०) को शुक्रवार के दिन १ सफर (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को हज़रत जहीरुद्दीन बाबर पादशाह काबुल से हिन्दुस्तान की विजय के उद्देश्य से रवाना हुये। रबी-उल-अव्वल (दिसम्बर १५२५ ई०) में सिंध नदी पार की और अमीरो एव वग़ियो की गणना कराई। १०,००० की सख्या लिखी गई। झेलम[1] के समीप विहत नदी पार की। १४ रबी-उल-अव्वल[2] (२९ दिसम्बर १५२५ ई०) को सियालकोट परगने मे उनका पडाव हुआ। सुल्तान सिकन्दर का भाई आलम खा, जो सुल्तान इबराहीम[3] द्वारा पराजित हुआ था, तथा दौलत खा एव उसका पुत्र गाजी खा, भाग कर उनकी सेवा मे पहुचे थे और उन्हे अत्यधिक आश्रय प्रदान किया जा चुका था। वे (५३५ अ) लोग हज़रत पादशाह के प्रस्थान पर शत्रुओं से मिल गये थे और (सेना की) गणना के समय रावी के घाट पर लाहौर की ओर ठहरे हुये थे। (हज़रत पादशाह) के आगमन के समाचार पा कर वे छिन्न भिन्न हो गये। दौलत खा मिलवट के किले मे भाग गया और गाज़ी खा ने पर्वद मे शरण ले ली। पादशाह मिलवट के किले के समीप पहुचे। क्योकि पादशाह के पहुचने के पूर्व उसने कमर मे दो तल्वारें बाध रक्खी थी और डीगें मार-मार कर हज़रत पादशाह से युद्ध का दावा करता था अत इस समय उसकी गर्दन मे दो तलवारें लटकाई गईं और जब अभिवादन के समय वह घुटने के बल झुकने मे सकोच कर रहा था तो उसे विवश करके घुटने के बल झुकाया गया। नाना प्रकार के आश्रय के बावजूद उसके विरोध का कारण पूछा गया। क्योकि उसके पास कोई उत्तर न था, अत वह मौन हो रहा। विश्वास-पात्र अमीरो का एक दल उस धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमाने के लिए, जो किले मे थी, पहुचा। क्योकि सर्वसाधारण को प्रारम्भ मे लूट-मार से न रोका गया था, अत हज़रत पादशाह प्रजा की रक्षा हेतु सवार हुये। कुछ बाण भीड की ओर फेंके। सयोग मे हज़रत जन्नत आशियानी हुमायू मीर्ज़ा के किस्सा

१ देखिये पूर्व पृ० १३६।
२ मूल में ४ रबी-उल-अव्वल।
३ मूल में 'सुल्तान सिकन्दर'।

ख्वान के एक घातक बाण लगा और लोग सावधान हो गये। अफगानो के परिवार वाले नगर के बाहर निकल गये। गाजी खा का पीछा करने के लिये पर्वत की ओर प्रस्थान किया गया। गाजी खा का भाई दिलावर खा, इस कारण कि दौलत खा सर्वदा बादशाह रहता था और इस कारण कि उसका पिता उससे रुष्ट रहता था, उस मजिल पर सेवा मे उपस्थित हुआ[1]। हज़रत पादशाह एक सेना को गाजी खा के विरुद्ध नियुक्त करके, साहस के पाव सौभाग्य की रिकाब मे रख कर, सुल्तान इबराहीम से युद्ध करने के लिये रवाना हुये। जो सम्पत्ति मिलवट की विजय मे प्राप्त हुई थी, उसे काबुल वालो के पास उपहार-स्वरूप भेज दिया।

बनूर सनूर नदी के, जो कक्खर[2] नदी के नाम से प्रसिद्ध है, हज़रत पादशाह को समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान इबराहीम ने जो देहली के इस ओर था प्रस्थान कर दिया है और युद्ध करने का इरादा रखता है। हमीद खा हिसार फीरोजा का हाकिम[3] सेना लेकर उस क्षेत्र के १० १५ कोस इस ओर आ गया है। कित्ता बेग, इबराहीम के लश्कर के समाचार लाने के लिये रवाना हुआ और मोमिन अत्का, हिसार फीरोजा की ओर चल दिया। जब प्रमाणित समाचार मिल गए तो हजरत हुमायू मीर्जा, दायें भाग की सेना के समस्त आदमियो उदाहरणार्थ ख्वाजा कला सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, वली खाज़िन, खुसरो बेग हिन्दू बेग, अब्दुल अजीज एव मुहम्मद अली जगजग इत्यादि, हमीद खा से युद्ध हेतु रवाना हुये। जब शत्रु निकट आ गए तो कुछ अनुभवी लोग आगे बढे और उन्होने अपनी सियाही[4] शत्रुओ को दिखाई। अफगानो तथा हिन्दुस्तानियो ने उनकी सख्या को कम समझ कर आक्रमण किया। युद्ध के बीच मे शाहजादा हुमायू मीर्जा पहुच गया और प्रथम आक्रमण मे ही हमीद खा को पराजित कर दिया। शत्रुओ की ओर के लगभग २०० आदमी इस युद्ध मे मार डाले गये तथा ८ हाथी प्राप्त हो गये। वे विजय एव सफलता (५३५ ब) प्राप्त करके बादशाह की सेवा मे पहुचे। क्योकि यह शाहज़ादा हुमायू का प्रथम युद्ध था अत हजरत बादशाह बडे प्रसन्न हुये। हिसार फीरोजा एव उससे सम्बन्धित स्थान जिनकी "जमा" एक करोड थी तथा एक करोड का नकद धन शाहजादे को इनाम मे दे दिया। वहा से प्रस्थान करके विजयी शिविर शाहाबाद[5] मे लगे।

२८ जमादि-उल-अव्वल (१३ मार्च १५२६ ई०) को, जो नवरोज का दिन था, समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान इबराहीम निरन्तर बढता हुआ इस ओर चला आ रहा है। हज़रत पादशाह ने भी प्रस्थान करके यमुना नदी तट पर मिरसावा[6] के सामने पडाव किया। करावल लोग समाचार लाये कि अफगानो ने दाऊद खा एव हातिम खा[7] को ६ ००० अश्वारोहियो सहित दोआब के आगे भेजा है और वह सेना सुल्तान इबराहीम के लश्कर से ३ ४ कोस पर पडाव किये हुये है। हजरत पादशाह ने चीन तीमूर खा महदी ख्वाजा मुहम्मद सुल्तान मीर्जा एव आदिल सुल्तान तथा दायें भाग के समस्त लोगो को जिनमे से सुल्तान जुनैद, शाह मीर हुसेन एव कूतलूक कदम थे तथा एक अन्य दल उनसे युद्ध करने के लिए नियुक्त

१ मूल में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।
२ घग्गर, देखिये पूर्व पृ० १४६।
३ बाबर नामा में शिकदार पूर्व पृ० १५०।
४ सेना।
५ देखिये पृ० १५१।
६ मूल में सेह सावह।
७ मूल में क़ायुम खाँ।

किया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय उन लोगों ने नदी पार कर ली और सूर्योदय के समय शत्रु की सेना के शिविर मे पहुच गये। शत्रु युद्ध की शक्ति न पा कर विजयी सेना के पहुचते ही पराजित हो गये और हातिम खां की हत्या कर दी गई। बहुत बडी सख्या मे लोग बन्दी बना लिये गये। ७ हाथी पकड लिये गये और विजय तथा सफलता प्राप्त करके यह सेना भी बादशाह के पास पहुच गई।

प्रस्थान के समय, दायें, बायें एव मध्य भाग की सेना को सुव्यवस्थित करके रवाना होते थे। क्योंकि हजरत (पादशाह) की सेना की सख्या शत्रुओं की सेना की सख्या के मुकाबले म बडी कम थी अत आदेश दिया गया कि समस्त सेना अपनी शक्ति के अनुसार अराबे[1] लाये। ७०० अराब लाये गये। उस्ताद अली कुली खाली ने रूम की प्रथानुसार एक दूसरे से अराबे बाध कर समस्त प्यादा तोपचियो को सुरक्षित कर दिया। हजरत पादशाह के सेना वाले अत्यधिक चिन्तित थे कारण कि शत्रुओ की सेना किसी को १००,००० से कम नही ज्ञात हो रही थी और पादशाह की सेना की सख्या १०-१२,००० से अधिक न थी। इनके अतिरिक्त शत्रु की सेना मे १००० खूख्वार हाथी मौजूद थे।

अत्यधिक परामर्श के उपरान्त हजरत पादशाह ने ५००० व्यक्तियो को सुल्तान इबराहीम के लश्कर की ओर रात्रि में छापा मारने के लिए भेजा। सेना वाले क्योंकि शत्रुओं की शक्ति से परिचित थे अत उन्होंने भलीभांति मिल कर कार्य न किया और प्रात काल शत्रु के लश्कर के समीप पहुचे। शत्रु सावधान होकर अपनी सेना सुव्यवस्थित करके युद्ध के लिये निकले। य लोग ठहर न सके और लौट गये। कुछ मुगूल वीर युद्ध के लिये डट गये और उन लोगो को सलामती से उस खतरे से निकाल लाय। मुहम्मद अली जगजग आहत हुआ। हजरत पादशाह को जब इस बात का पता लगा तो उन्होंने शाहजादा हुमायू मीर्जा को उसकी सेना सहित लगभग २ कुरोह तक कुमक हेतु भेजा और स्वय सवार होकर (५३६ अ) शत्रुओं के विरुद्ध रवाना हुये किन्तु उनके पहुचने तक प्रथम सेना शाहजादये आलमिया[2] के पास पहुच गई। वे लौट गये। उस दिन हजरत पादशाह अपने पडाव ही पर रहे।

दूसरे दिन प्रात काल समाचार प्राप्त हुए कि शत्रु अपनी सेनाओं को एकत्र करके पहुच गये। हजरत पादशाह ने भी युद्ध के अस्त्र शस्त्र धारण किये और सवार हुये। दायें भाग म हजरत हुमायू मीर्जा, ख्वाजा कला, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, हिन्दू बेग, वली खाजिन एव पीर कुली सीस्तानी को नियुक्त किया। बायें भाग का प्रबन्ध, मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, महदी ख्वाजा, आदिल सुल्तान, शाह मीर हुसेन, सुल्तान जुनैद बरलास, कुतलूक कदम, जानी बेग, मुहम्मद बख्शी[3], शाह हुसेन यारगी मुगूल गाची क सिपुर्द हुआ। मध्य भाग के दायें बाजू की ओर चीन तीमूर सुल्तान, मुहम्मदी कूकूल्दाश, शाह मनसूर बरलास, यूनुस अली खा, दरवेश मुहम्मद सारबान, एव अब्दुल्लाह किताबदार को नियुक्त किया गया। मध्य भाग के बायें बाजू की ओर, खलीफा, मीर मीरान, अहमदी परवानची, कूज बेग का भाई तरदी बेग, खलीफा का मुहिब अली तथा मीर्जा बेग तरखान थे। अग्र भाग मे खुसरो कूकूल्दाश तथा मुहम्मद अली जगजग थे। अब्दुल अजीज मीर आखूर को सुरक्षित सेना सौपी गई। दाय भाग की सेना के तूलकमे मे वली किजील एव बाबा कश्का को नियुक्त किया गया। बायें भाग के तूलकमे म अबुल मुहम्मद नेजाबाज, शेख अली एव शेख जमाल नियुक्त हुये। सुल्तान इबराहीम की सेना भी निकट आ पहुची और शीघ्रता से आक्रमण किया। किन्तु जब वह निकट पहुचा तो उसकी गति मद पड गई। तूलकमा वाले दायें बाजू

१ गाड़ियां, देखिये पूर्व पृ० १५२।
२ हुमायूँ।
३ मूल में मुहम्मद यहया।

एव बायें बाज़ू को पार करके, शत्रुओ (की सेना) के पीछे की ओर पहुच गये और बायें एव दायें भाग वाले भी हज़रत पादशाह के आदेशानुसार शत्रु तक पहुच गये और युद्ध करने लगे। महदी ख्वाजा बायें भाग मे सबके पहिले पहुच गया। शत्रुओ की ओर से एक सेना एव हाथी महदी ख्वाजा का मुकाबला करने के लिये बढे। घोर युद्ध हुआ। महदी ख्वाजा को विजय प्राप्त हो गई। दायें भाग मे भी युद्ध होने लगा। मध्य भाग से एक दल बायें भाग की कुमक एव एक दल दायें भाग की सहायता हेतु बढा। दो घडी से मध्याह्न तक युद्ध की अग्नि धधकती रही। सुल्तान इबराहीम ५-६ हज़ार व्यक्तियो सहित मारा गया। हज़रत पादशाह ने विजय एव सफलता प्राप्त कर के शेष शत्रुओ का पीछा किया। प्रामाणिक रूप से इस यद्ध मे [1] व्यक्ति मारे गये। सर्वसाधारण के अनुसार ५०,००० व्यक्तियों की हत्या हो गई। क्योंकि अभी तक इबराहीम की हत्या के विषय मे कोई प्रमाण न मिला था, अत एक बहुत बडा समूह भागने वालो का पीछा करने के लिये भेजा गया। हाथियो के झुड-के झुड पकड लिये गये। हज़रत पादशाह इबराहीम के शिविर मे पहुचे और उसके राज्य की सम्पत्ति का निरीक्षण कर के दो कुरोह आगे बढ कर एक ठहरे हुये जल के तट पर पडाव किया।

पादशाह ने आदेश दिया कि शाहज़ादा हुमायू मीर्ज़ा, ख्वाजा कला, मुहम्मदी, शाह मन्सूर (५३६ ब) बरलास, वली खाज़िन एव एक अन्य सेना शीघ्रातिशीघ्र आगरा पहुच कर, ख़ज़ानो पर अधिकार जमा लें। महदी ख्वाजा मुहम्मद सुल्तान एव जुनैद बरलास देहली के ख़ज़ानो पर अधिकार जमाने के लिये नियुक्त हुये। हज़रत (पादशाह) देहली पहुचे। किले एव बादशाहो के महलो की सैर के उपरान्त आगरा की ओर रवाना हुये।

शुक्रवार २२ रजब (४ मई १५२६ ई०) को आगरा मे विजयी शिविर का पडाव हुआ। किले वालो ने अभी तक किले को शाहज़ादा हुमायू मीर्ज़ा को समर्पित न किया था। इस भय से कि कही खजाने नष्ट न हो जायें उसने किले वालो से युद्ध प्रारम्भ न किया था। इसके अतिरिक्त अजीत से जो प्रारम्भ में ग्वालियर के हाकिमो मे से था, हुमायू मीर्ज़ा को आगरा पहुचने के समय ८ मिस्काल का हीरा उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ। प्रसिद्ध है कि जौहरियो ने उसका मूल्य पूरे ससार के २½ दिन के व्यय के बराबर आका था। हज़रत मीर्ज़ा ने वह हीरा हज़रत पादशाह को भेंट कर दिया। हज़रत पादशाह ने उस बहुमूल्य रत्न को हज़रत मीर्ज़ा को लौटा दिया।

आगरा के किले वालो ने, जिनमें दाद करररानी एव फीरोज खा मेवाती थे, हानि न पहुचाये जाने का आश्वासन लेकर किले को ५ दिन उपरान्त समर्पित कर दिया। इबराहीम की माता, जो उस किले मे थी, बाहर निकली। किले वालो मे से प्रत्येक के प्रति उसकी श्रेणी के अनुसार अनुकम्पा प्रदर्शित की गई। इबराहीम की माता को ७ लाख के मूल्य का परगना प्रदान हुआ।

इस प्रसग मे हज़रत पादशाह ने 'वाकेआत' मे लिखा है कि "९१० हि०(१५०४-५ ई०) से सर्वदा मुझे हिन्दुस्तान की विजय की महत्वाकाक्षा रही। ५ बार मैंने हिन्दुस्तान पर चढाई की, यहा तक कि हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त हो गई। हज़रत मुहम्मद के समय से लेकर आज तक तीन पादशाह हिन्दुस्तान के प्रदेशो पर राज्य कर सके हैं। एक सुल्तान महमूद गाज़ी था जो (स्वय) एव जिसकी सतान बहुत समय तक हिन्दुस्तान पर राज्य करती रही। दूसरा शिहाबुद्दीन गूरी एव उसके सेवक जो वर्षो तक हिन्दुस्तान मे राज्य करते रहे। तीसरा मैं हू किन्तु मेरे कार्यों एव (उन) बादशाहो के कार्यों मे कोई समानता नही

१ सख्या मूल में स्पष्ट नहीं।

कारण कि सुल्तान महमूद हिन्दुस्तान विजय के समय खुरासान, ख्वारिज्म, एव मावराउन्नहर का बादशाह था। उसकी सेना की सख्या यदि २००,००० न थी तो १००,००० से अधिक थी। उस समय हिन्दुस्तान मे एक राजा न था। सब राजा लोग अपने अपने प्रदेश मे राज्य करते थे। शिहाबुद्दीन गूरी, यद्यपि (५३७ अ) खुरासान का बादशाह न था किन्तु उसका भाई सुल्तान गयासुद्दीन गूरी, खुरासान का बादशाह था। तबकात मे लिखा है कि एक बार सुल्तान शिहाबुद्दीन १२०,००० सशस्त्र अश्वारोही लेकर हिन्दुस्तान मे प्रविष्ट हो गया। उसके विरोधी भी हिन्दुस्तान के राजा ही थे जिन्होने कभी एक दूसरे की आज्ञाकारिता स्वीकार न की थी। *प्रथम बार जब मैं हिन्दुस्तान मे प्रविष्ट हुआ तो मेरे साथ १५०० अथवा २००० व्यक्ति थे।*

"अन्तिम बार १२,००० व्यक्ति साथ थे। बदख्शा, कून्दूज काबुल एव कधार मेरे अधिकार मे थे। मुझे अपने राज्य से सतोषजनक लाभ न होता था अपितु बहुत से प्रदेशो के शत्रुओ के निकट होने के कारण उन्हे सहायता की आवश्यकता रहती थी। समस्त मावराउन्नहर, ऊजबग सुल्तानो के अधिकार मे थी जो प्राचीन शत्रु थे, उनकी सख्या १००,००० से अधिक थी। हिन्दुस्तान का राज्य भीरा से बिहार तक अफगानो के अधीन था। उनके प्रातो की जमा के अनुसार, ५००,००० अश्वारोही तक भरती हो सकते हैं। उनकी वर्तमान सेना मे १००,००० आदमी तथा १००० हाथी थे। *इस स्थिति एव शक्ति के बावजूद* ईश्वर पर भरोसा करके ऊजबेग सरीखे शत्रुओ को पीछे छोड कर, सुल्तान इब्राहीम सरीखे शक्तिशाली शत्रु से युद्ध किया। ईश्वर पर भरोसा होने के कारण मेरा परिश्रम नष्ट न हुआ। हिन्दुस्तान विजय हो गया। मैं इस सौभाग्य को अपनी भुजाओ की शक्ति एव अपने साहस के प्रयत्न का फल नही समझता अपितु यह ईश्वर की महान् अनुकम्पा है।" यहा तक उनके वाक्या का अनुवाद दिया गया। *अब जैसा कि* पूर्व मे वचन दिया जा चुका है, हिन्दुस्तान के सुल्ताना का, जो चारो ओर राज्य कर रहे है उल्लेख किया जाता है ।[1]

(५४२ अ) जब हिन्दुस्तान जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह के अधिकार मे आ गया तो वे शनिवार २९ रजब ९३२ हि० (११ मई १५२६ ई०) को हिन्दुस्तान के बादशाहो के खजानो का निरीक्षण करने पहुचे। ७० लाख तन्के जो ३५० हजार रुपयो के बराबर होते है शाहजादे हुमायू मीर्जा को इनाम मे दे दिये। एक घर[2] जिसकी (सम्पत्ति के) विषय मे अभी तक कुछ न लिखा गया था, उसी प्रकार बन्द शाहजादे को प्रदान कर दिया गया। समस्त उपस्थित एव अनुपस्थित मीर्जाओ, अमीरो एव सैनिको को उनकी श्रेणी के अनुसार खजाने से धन प्राप्त हुआ और समरकन्द, खुरासान, काशगर एव एराक वालो तथा परिचितो एव सम्बन्धियो को उपहार भेजे गये। *मक्का और मदीना मे भी अत्यधिक चढावे* प्रेषित किये गये। सक्षेप मे हिन्दुस्तान के बादशाहो ने जो धन सम्पत्ति दीर्घकाल से सचित की थी उसे उन्होने अल्प-समय मे बाट दिया। अत्यधिक लोग उससे लाभान्वित हुए। काबुल वालो मे से प्रत्येक नर-नारी, स्वतत्र तथा दास, छोटे तथा बडे को सिर की गणनानुसार १-१ मिस्काल चादी प्रदान की गई। उनके दान-पुण्य की प्रसिद्धि समस्त ससार मे फैल गई और उनकी वीरता की धाक जम गई।

क्योकि हिन्दुस्तान वाले मुगलो से अत्यधिक भयभीत थे अत हिन्दुस्तान के प्राचीन अमीरो मे से, जो जिस स्थान पर था, उसने उस प्रदेश को दृढ बना लिया। सम्भल मे कासिम सम्भली, मेवात मे हसन

१ आगे हिन्दुस्तान का संक्षिप्त भूगोल एव प्रांतीय इतिहास दिया गया है। इसका अनुवाद नहीं किया गया।
२ खजाने का घर अथवा 'खजाना खाना' होना चाहिये।

(५४२ ब) खा मेवाती, धौलपुर मे मुहम्मद जैतून, ग्वालियर मे तातार खा सारगखानी, रापरी मे हुसेन खा नोहानी, इटावा मे कुतुब खा एव काल्पी मे आलम खा ने विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। कन्नौज तथा नदी के उस पार का भाग विद्रोही अफगानो ने अपने अधिकार मे कर लिया था। सुल्तान इबराहीम की हत्या के पूर्व भी यह भाग उन्ही के अधीन था और वे सुल्तान इबराहीम के भी आज्ञाकारी न थे। इन लोगो मे नसीर खा नोहानी एव मारुफ फर्मुली अपनी सेना की सख्या के लिये अधिक प्रसिद्ध थे। उस समय उन्होने विहार खा वल्द दरिया खा को सुल्तान मुहम्मद की उपाधि प्रदान कर दी और अपने ऊपर हाकिम बना लिया और कन्नौज से २-३ मज़िल आगे आगरा की ओर पड़ाव किया।

हज़रत फ़िरदौस मकानी के अमीरो ने जब राज्य की दशा अस्त व्यस्त देखी तो वे बार बार आग्रह करने लगे कि काबुल लौट जाना ही उचित है। हज़रत पादशाह अत्यधिक क्रोधित हुए कारण कि इतना विशाल राज्य जो अधिकार मे आ चुका है उसे छोड कर चला जाना उचित नही। ख्वाजा कला जा कि प्रतिष्ठित अमीर था और जिसके प्रयत्न के फलस्वरूप अधिकाश स्थान विजय हुए थे, काबुल की ओर प्रस्थान के विषय मे सब से अधिक प्रयत्नशील था। हज़रत पादशाह ने आवश्यकतावश अमीरो के समूह को एकत्र करके कहा कि हमने हिन्दुस्तान म ठहरना निश्चित कर लिया है जो यहा ठहरना चाहता हो वह ठहरे जिसकी इच्छा काबुल जाने की हो उसके लिये कोई आपत्ति नही। जब अमीरो ने समझ लिया कि वे किसी प्रकार हिन्दुस्तान को न छोडगे तो उन्हें विवश होकर यही दिल लगाना पडा। ख्वाजा कला, जिसे काबुल जाने की तीव्र इच्छा थी हज़रत पादशाह के आदेशानुसार काबुल तथा गजनी की व्यवस्था हेतु चल दिया।

जब हिन्दुस्तान के सैनिको को ज्ञात हुआ कि वे आगरा म ठहरगे तो उन्होने सेवा में उपस्थित होना प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम शेखगूरन आया और दो-तीन हजार सैनिको को अपने साथ सेवा हेतु लाया। अली खा भी अपने पुत्रो के कारण जो बन्दी बना लिये गये थे मेवात से उपस्थित हुआ, और सम्मानित किया गया। फीरोज़ खा शेख बायजीद महमूद खा नोहानी तथा काजी जिया दरबार में उपस्थित हुए और अपनी इच्छा से अधिक सम्मानित हुए। फीरोज खा को एक कराड और कुछ अधिक जानीपुर[1] से प्रदान हुआ। मुहम्मदी कूकूल्दाश शीघ्रातिशीघ्र सम्बल पहुचा कारण कि समाचार प्राप्त (५४३ अ) हुए थे कि बिबन ने कासिम सम्बली को घर लिया है। मुहम्मदी ने अपनी सेना सहित शीघ्राति शीघ्र बढते हुए गगा[2] नदी पार की। बिबन युद्ध न कर सका और भाग खडा हुआ। कासिम सम्बली किले के बाहर निकला मुहम्मदी की सेवा में उपस्थित हुआ और किसी न किसी प्रकार किले का समर्पित कर दिया।

हज़रत हुमायू मीर्जा अमीरो की बहुत बडी सेना सहित अफगान अमीरो से युद्ध करने के लिये, जिन्होंने कन्नौज पार कर के जाजमऊ मे पडाव कर दिया था, रवाना हुए। विरोधी युद्ध न कर सके और भाग खडे हुए। जाजमऊ मे विजयी सेना के शिविर लगे। फतह खा सरवानी शाहजादे की सेवा म उपस्थित हुआ।[3]

१ जौनपुर।
२ मूल पुस्तक में यमुना।
३ इसके आगे, उबैद खा, गुजरात एव अन्य स्थानों का इतिहास दिया गया है।

९३३ हि०

(८ अक्तूबर १५२६ ई०--२७ सितम्बर १५२७ ई०)

(५४४ अ) हजरत हुमायू मीर्जा अफगानो से युद्ध करने के लिये जानीपुर भेजे जा चुके थे। ब्याना के हाकिम निज़ाम खा ने जो राणा सागा मे भयभीत था आदमी भेजकर आज्ञाकारिता प्रदर्शित की किन्तु वह स्वय सेवा मे उपस्थित न हुआ। इस कारण हजरत ने एक सेना उस विलायत पर आक्रमण करने के लिए भेजी। निजाम खा ने उन लोगो के असावधान होने के कारण उन पर आक्रमण करके उन्हे पराजित कर दिया। राणा सागा को जब यह ज्ञात हुआ कि निजाम खा ने हजरत बाबर से युद्ध किया है तो वह निश्चिन्त होकर उसकी ओर अग्रसर हुआ। ब्याना के हाकिम ने परेशान होकर इतने बडे अपराध के बावजूद दरबार मे आदमी भेजे और पश्चाताप प्रदर्शित करते हुए आज्ञाकारिता स्वीकार की। सैयिद रफी के मध्यस्थ होने के कारण उसके अपराध क्षमा कर दिये गये। वह सेवा मे उपस्थित हुआ। दोआब मे से २० लाख तन्के उसकी अक्ता मे दे दिये गये। महदी ख्वाजा को ब्याना मे नियुक्त किया गया।

तातार खा सारगखानी ग्वालियर के किले मे था। उस धर्मान्कित जो ग्वालियर का प्राचीन राजा था तथा खाने जहा ने बडा परेशान किया। विवश होकर उसने हज़रत पादशाह की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। रहीम दाद एव शेख गूरन बहुत बडी सेना लेकर उस किले पर अधिकार जमाने के लिये रवाना हुये। जब वे ग्वालियर के समीप पहुचे तो तातार खा अपनी बात पर पछताने लगा और (५४४ ब) उसने इस सेना को किले मे प्रविष्ट न होने दिया। शेख मुहम्मद गौस, जिनके चेलो की सख्या बडी अधिक थी, ग्वालियर के किले मे थे। उन्होने रहीम दाद के पास आदमी भेजे कि "जिस प्रकार हो सके किले म प्रविष्ट हो जा कारण कि तातार खा विश्वासघात कर रहा है।" रहीम दाद ने तातार खा के पास आदमी भेजे कि, "किले के बाहर हम लोग काफिरो से सुरक्षित नही हैं, यदि तू आज्ञा दे तो कुछ प्रतिष्ठित लोगो सहित हम किले मे प्रविष्ट हो जायें और पूरी सेना बाहर ही रहे।" तातार खा चकमे मे आ गया। रहीम दाद थोडे से आदमियो को लेकर किले में प्रविष्ट हुआ। जब रहीम दाद ने शहर के भीतर पाव रखे तो उसने कहा कि, "दरवाजे पर हमारा भी एक आदमी रहे।" तातार खा ने स्वीकार कर लिया। प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने स्थान पर जो उसके लिये निश्चित था, चला गया। रहीम दाद उसी रात्रि म एक सेना को उसी द्वार से जहा उसने अपने आदमी नियुक्त किये थे, किले मे ले आया। जब प्रात काल तातार खा को रहीम दाद की सेना की सूचना मिली तो उसने विवश होकर किले को रहीम दाद को सौप दिया और आगरा मे हज़रत पादशाह की सेवा मे पहुचा। उसे आश्रय प्रदान हुआ। उसे २० लाख की अक्ता प्रदान हुई।

मुहम्मद ज़ैतून भी उसी समय सेवा मे उपस्थित हुआ। फतह खा सरवानी, जिसने हज़रत हुमायू की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली थी, इन दिनो मे शाहज़ादे के आदमियो के साथ दरबार मे उपस्थित हुआ। उसे अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान हुआ।

हमीद खा, सारग खा एवं अफगानों का एक अन्य समूह हिसार फीरोजा के समीप उपद्रव मचाने लगे। चीन तीमूर सुल्तान एक सेना सहित उनको दड देने के लिये नियुक्त किया गया। उसने उन्हें उचित रूप से दड दिया।

१६ रबी-उल-अव्वल (२१ दिसम्बर १५२६ ई०) को सुल्तान इबराहीम की माता ने, जिसका हज़रत पादशाह ने सम्मान कर के उसके आराम के समस्त साधन एकत्र करा दिये थे, बावर्चियों एव अहमद चाशनीगीर को मिला कर उनके भोजन मे विष डलवा दिया। उन्होने उस भोजन से जैसे ही

एक ग्राम लिया, उनका हृदय घबडाने लगा और चिन्ता व्यापक हो गई। भोजन से हाथ खीच लिया कई बार कै की। ईश्वर ने उन्हे मुक्ति प्रदान कर दी। बावरचियो को बन्दी बनवा लिया गया। पूछताछ के उपरान्त तथ्य का पता चल गया। परीक्षा हेतु उस भोजन मे से थोडा सा एक कुत्ते को दिया गया। उसके वरम हो गया और एक दिन तथा रात तक वह हिल न सका। दो विश्वस्त सेवको ने भी उसमे से थोडा सा खाया था। बडी कठिनाई से वे बच सके। चाशनीगीर की खाल खिंचवा ली गई। बावरची के टुकडे टुकडे कर दिये गये। जो लोग उनसे मिले हुए थे उनमे से प्रत्यक को नाना प्रकार के दड देकर उनकी हत्या करा दी गई। इबराहीम की माता की धन सम्पत्ति नष्ट कर दी गई। वह बन्दी बना ली गई। इबराहीम के पुत्र को कामरान मीर्जा के पास भेज दिया गया।

शाहजादा हुमायू मीर्जा ने, जो कि पूर्व की ओर गया था, जौनपुर को विजय कर लिया। उसे सुल्तान जुनैद के सिपुर्द कर दिया। एक सेना उसकी सहायता हेतु नियुक्त कर दी गई। शैख बायजीद एव (५४५ अ) काज़ी जिया इन्ही लोगो मे थे। जब वे (हुमायू) उस ओर के अभियानो की ओर से निश्चिन्त हो गये तो पादशाह के आदेशानुसार, जिन्होने राणा सागा के निकट पहुच जाने के कारण उन्हे बुलाया था, कडा तथा मानिकपुर के मार्ग से लौट आये और गगा नदी पार की। कालपी का हाकिम आलम खा शाहजादे की सेवा मे कालपी के समीप उपस्थित हुआ। वे रविवार ३ रबी-उल-आख़िर (६ जनवरी १५२७ ई०) को पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए।

महदी ख्वाजा इन दिनो मे निरन्तर आदमी भेज कर राणा सागा के पहुचने की सूचना भेजा करता था। हसन खा मेवाती भी राणा सागा से मिल गया था। हजरत पादशाह ने एक सेना मुहम्मद सुल्तान मीर्जा के अधीन ब्याना भेजी और स्वय शनिवार ९ जमादि उल-अव्वल (११ फरवरी १५२७ ई०) को राणा सागा से धर्मयुद्ध के उद्देश्य से राजधानी से प्रस्थान किया। क्योकि हिन्दुस्तानी अमीरो पर, जो इन दिनो नौकर हुए थे, अधिक विश्वास न था अत उनमे से प्रत्येक को किसी न किसी सेवा हेतु सीमान्ता पर भेज दिया। राणा सागा ब्याना के समीप पहुचा। जो करावल ब्याना से समाचार भेजने के लिय नियुक्त हुए थे उन्हे समाचार भेजने अपितु किले मे प्रविष्ट होने तक का भी अवसर न मिला। किले वाले बाहर निकले और बिना किसी मतलब के युद्ध करके तथा पराजित होकर किले मे वापस चले गये। किता बेग युद्ध मे घायल हुआ। जो कोई भी समाचार लाने जाता था वह काफिरो की अधिक सख्या एव वीरता के समाचार लाता था। इस कारण हजरत पादशाह की सेना मे परेशानी फैल गई थी, किन्तु हजरत पादशाह को अपनी अत्यधिक वीरता के कारण कोई भी चिंता न थी। वे निरन्तर यात्रा करते हुए शत्रु की आर रवाना हुए और अमीरो को बारी बारी से करावली के लिए नियुक्त करते रहते थे।

अब्दुल अज़ीज़ अपनी करावली के समय डेढ हज़ार व्यक्तियों सहित शत्रु की सेना के समीप पहुच गया। काफिरो के ४-५ हज़ार अश्वारोही अब्दुल अज़ीज़ से युद्ध करने के लिये निकले। घोर युद्ध हुआ। काफिरो को विजय प्राप्त हो गई। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। मुहिब्ब अली खलीफा को उसके पिता के सेवको सहित अब्दुल अज़ीज़ की कुमक हेतु भेजा। कुछ देर उपरान्त मुहम्मद अली जगजग भी सहायतार्थ रवाना हुआ। मुहिब अली के पहुचते ही, उसके मामा ताहिर तिबरी ने काफिरो की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया। किसी ने उसकी सहायता न की। वह मारा गया। मुहिब अली ने स्वय आक्रमण किया। युद्ध मे वह घोडे से गिर कर पैदल हो गया। बालतू उसकी सहायता हेतु पहुच गया और उसे रणक्षेत्र के बाहर ले आया। मुहिब अली की सेना भी भाग गई। काफिरो ने पीछा किया। मुहम्मद अली जगजग पहुच गया। काफिरो की दृष्टि जब मुहम्मद अली की सेना पर पडी तो वे लौट गये।

क्योंकि क्षण क्षण पर शत्रुओ के प्रभुत्व के समाचार प्राप्त हो रहे थे अत हज़रत पादशाह स्वय अस्त्र शस्त्र धारण करके सवार हुए और लगभग एक कुरोह तक शीघ्रातिशीघ्र अग्रसर हुए। जो सैनिक आग बढ चुके थे वे लौट आये और उन्होंने शत्रुओ के वापस होने के समाचार पहुचाये। उसी स्थान पर एक झील के किनारे पडाव किया गया। इस कारण कि लोग बडे भयभीत एव परेशान थे, उन्होने अपने (५४५ ब) 'वाकेआत' मे लिखा है कि, "कोई भी व्यक्ति वीरता एव पौरुष के वाक्य नही कहता था। मौलाना मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी लोगो के भय की अधिकता का कारण बन गया था। उसके पास जो कोई जाता था वह उससे यह कहता कि इन दिनो मगल ग्रह पश्चिम दिशा की ओर है। जो कोई उस ओर से आकर युद्ध करेगा वह पराजित होगा। लोग इससे और अधिक हतोत्साहित एव निराश हो गये। मैं इन बातो पर ध्यान न देकर युद्ध के लिये तैयार हुआ।" इस स्थान तक उनके वाक्या का अनुवाद है। उन्ही दिनो मे हजरत पादशाह ने शरा के विरुद्ध बातो पर आचरण करने से तोबा कर ली। मुसलमानो को तमगे से मुक्त कर दिया। समस्त अमीरो एव सेना के युवको को बुला कर कहा कि, "बदनामी से जीना यश की मृत्यु से बेहतर है।

हमे यश चाहिये कारण कि शरीर नश्वर है।

ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि मरने वाला शहीद और मारने वाला गाजी होगा। इस समय हमें शपथ लेनी चाहिये कि कोई भी युद्ध से भागने के विषय मे न सोचेगा।" सब लोगों ने ईश्वर की वाणी की शपथ ली कि, "यदि इस युद्ध मे विजयी न हुए तो जीवित बाहर न निकलेगे।"

आसपास के अफगान लोगो को राणा सागा के आक्रमण एव हज़रत पादशाह के व्यस्त होने का ज्ञान प्राप्त हो गया। प्रत्येक उपद्रव मचाने लगा और राज्य का अपहरण करने लगा। जो लोग सेना मे थे, वे छिन्न भिन्न हो गये। हैबत खा सम्बल की ओर भाग गया। हसन खा बारीवाल भाग कर काफिरो के पास चला गया।

मगलवार ९ जमादि-उल-आखिर (१३ मार्च १५२७ ई०) के दिन हज़रत पादशाह ने सेना की पक्तिया सुव्यवस्थित की। अराबो को, जिन्हे ज़जीर द्वारा बाध दिया गया था, रूम की प्रथा अनुसार सेना के आगे आगे भेजा गया। उस्ताद अली कुली तोप चलाने वाला समस्त बदूक चलाने वालो सहित अराबो के साथ साथ रवाना हुआ। हज़रत पादशाह स्वय समस्त सेना मे जा-जाकर युद्ध एव मार-काट के नियमो की शिक्षा देते थे। इस प्रकार एक कुरोह यात्रा करके पडाव किया गया। उस समय शत्रुओ की एक सेना प्रकट हुई। योद्धा लोग सेना से पृथक् हुए। थोडा सा युद्ध हुआ। साधारण सी झडप के उपरान्त विद्रोहियो के कुछ लोग मारे गये। मलिक कासिम ने उस दिन बडी वीरता प्रदर्शित की। सेना मे अत्यधिक साहस एव शक्ति उत्पन्न हो गई। दूसरे दिन इस मजिल से भी प्रस्थान किया गया। पिछले दिन की भाति एक कुरोह की यात्रा के उपरान्त पडाव हुआ। अभी फरंगो ने खेमे एकत्र न किये थे कि शत्रु लोग सेना सुव्यवस्थित किये हुए दृष्टिगत हुए। क्योकि हज़रत पादशाह ने अपने 'वाकेआत' मे युद्ध का विवरण देने के लिये उस 'फतहनामा' को मूल रूप मे उद्धृत किया है जो उन्होन काबुल भेजा था अत उनका अनुकरण करते हुए मैं उस "फतहनामे" का जिसमे युद्ध एव शत्रुओ की सेना का सविस्तार वृत्तान्त है, उल्लेख करता हू।[१]

(५४९ अ) जब शत्रु भाग गये तो हज़रत एक सेना शत्रुओ का पीछा करने के लिये भेज कर

१ फतहनामे के लिये तुजुके बाबरी का अनुवाद देखिये।

स्वय राणा के शिविर मे प्रविष्ट हुए। सेना वालो को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी जो कि युद्ध के पूर्व, नक्षत्रों के ऊपर दोष लगा रहा था, लज्जित होकर बधाई हेतु उपस्थित हुआ। क्योंकि पूर्व मे उसने बडी उचित सेवाए सम्पन्न की थी अत उसकी हत्या न कराई गई। हज़रत पादशाह ने उससे अत्यधिक कठोर वचन कह कर उसे एक लाख इनाम प्रदान किया और अपनी राजधानी से निकल जाने का आदेश दे दिया।

उसी मज़िल से मुहम्मद अली जंगजग, शेख गूरन एव अब्दुल मलिक कूरची को इलयास खा से युद्ध करने के लिये, जिसने दोआब के मध्य मे विद्रोह कर दिया था और कोल पर अधिकार जमा लिया था, भेजा गया। वह मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। उसके आदमी छिन्न भिन्न हो गये। कुछ समय उपरान्त वह बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। हज़रत पादशाह के आदेशानुसार पर्वत के ऊपर, जो कि रणक्षेत्र के समीप था, विद्रोहियो के सिरो का एक मीनार बनवाया गया।

मेवात की विजय के उद्देश्य से रणक्षेत्र से उस ओर प्रस्थान किया गया। हसन खा का पुत्र नाहर खा, जो एक बार इबराहीम के युद्ध मे पादशाह की सेना द्वारा बन्दी बना लिया गया था, जब हज़रत पादशाह के प्रस्थान के विषय मे अवगत हुआ, तो उसने क्षमा-याचना कर ली। जब वह सतुष्ट हो गया तो वह दरबार मे उपस्थित हुआ। मेवात, चीन तीमूर सुल्तान को, जिसने राणा से युद्ध मे बडी वीरता से कार्य किया था, प्रदान कर दिया गया।

इस कारण कि शाहज़ादा हुमायू मीर्ज़ा के लश्कर मे अधिकाश लोग बदख्शा एव आसपास के थे और वे सर्वदा अपने वतन जाने की इच्छा किया करते थे, अत उस प्रदेश की व्यवस्था करने के लिये उन लोगों को शाहज़ादा हुमायू मीर्ज़ा के अधीन आगरा लौटने के समय, काबुल एव बदख्शा भेज दिया गया।

मुहम्मद अली जगजग, तर्दी बेग के साथ, हुसेन खा एव दरयाखानियो से युद्ध करने के लिये जिन्होंने चन्देरी के राणा के उपद्रव के समय रापरी पर अधिकार जमा लिया था, रवाना हुआ। हुसेन खा ने हाथी पर सवार होकर यमुना नदी पार करने का सकल्प किया किन्तु वह डूब गया। कुतुब खा जिसने इटावा मे विद्रोह कर दिया था, इस समाचार को सुन कर भाग खडा हुआ। इटावा भी विजय कर लिया गया। महदी ख्वाजा का पुत्र जाफर ख्वाजा इटावा पर शासन करने के लिये नियुक्त हुआ।

मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा कन्नौज पर शासन करने और उन विद्रोहियो के दमन हेतु जिन्होने लखनऊ का अवरोध कर लिया था, नियुक्त हुआ। वह आदेशानुसार वहा पहुचा। बिबन, जो कि शत्रुओ का सरदार था, विजयी सेना के पहुचने के समाचार पाकर भाग खडा हुआ और खैराबाद पहुचा। हज़रत पादशाह २९ ज़िलहिज्जा (२४ सितम्बर १५२७ ई०) को कोल तथा सम्बल की सैर के लिये सवार हुए।

९३४ हि०

(२७ सितम्बर १५२७ ई०—१५ सितम्बर १५२८ ई०)

(५५० ब) हज़रत फिरदौस मकानी ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह इस वर्ष सम्बल तथा कोल की सैर एव शिकार से लौट कर आगरा पहुचे। कुछ दिन तक वे रुग्ण रहे। स्वस्थ होने के उपरान्त वे चदेरी की विजय हेतु रवाना हुए। शेख बायज़ीद के विरोध एव अफगान शत्रुओ के सगठन के समाचार प्राप्त होने पर मुहम्मद अली जगजग को प्रतिष्ठित अमीरो की एक अन्य सेना सहित नियुक्त किया

गया ताकि वह मुहम्मद सुल्तान मीर्जा के साथ कन्नौज से शत्रुओ के विनाश हेतु रवाना हो। बाबा सुल्तान, सुल्तान सईद खां का भतीजा जो अपने चाचा से रुष्ट था, उस समय हज़रत पादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ। सम्मानित पताकाए कालपी पहुची। चीन तीमूर सुल्तान को ६-७ हजार व्यक्तियो सहित चदेरी की ओर आगे भेजा गया। वे स्वय एरिज एव बान्दीर के मार्ग से होते हुए चदेरी के किले के समीप पहुचे। मेदनी राय चदेरी का हाकिम किले मे बन्द हो गया। दो दिन तक चदेरी के किले को विजयी सेना घेरे रही। प्रतिष्ठित काफिरो का एक समूह मेदनी राय के घर मे प्रविष्ट हो गया। उनमे से एक तलवार ले लेता था और दूसरे से इस बात का आग्रह करता था कि वह उसकी हत्या कर दे। अधिकाश इसी प्रकार नष्ट हो गये। विजयी सहायको द्वारा किला विजय हो गया।

उसी समय यह समाचार प्राप्त हुए कि जो लोग अफगानो से युद्ध करने के लिए भेजे गये थे उन्होने असावधानी से युद्ध किया और पराजित हुए। विवश होकर उन्होने चदेरी का राज्य उसके प्राचीन उत्तराधिकारी अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन नासिरुद्दीन को, जो मालवा के हाकिम सुल्तान महमूद का भतीजा था और उनकी सेवा मे था, सौंप दिया तथा अफगानो से युद्ध हेतु रवाना हुए। जो लोग इससे पूर्व अफगानो से युद्ध करने के लिए गये थे, वे पराजय के उपरान्त कनौज मे भी ठहरने की शक्ति न देखकर भाग खडे हुए थे। हज़रत पादशाह ने नदी पार[1] की ओर सेना के एक दल को समाचार लाने के लिये भेजा। शत्रु अवगत होकर कन्नौज के बाहर चले गये। गगा नदी पार करके उन्होने घाट रोक लिये। सम्मानित पताकाओ ने वृहस्पतिवार ६ जमादि उल-आखिर (२७ फरवरी १५२८ ई०) को शत्रुओ के समक्ष गगा तट पर पडाव किया। तत्काल नदी के ऊपर तथा नीचे के भागो से विजयी सेना ने ३०-४० नौकाए प्राप्त कर लीं। आदेश हुआ कि पुल बनाने की सामग्री एकत्र करके पुल तैयार किया जाये। नित्यप्रति वीरों के समूह नौका मे बैठ कर उस ओर जाते थे और युद्ध करके लौट आते थे। वे अधिकाश (५५१ अ) विजय प्राप्त करते थे। मलिक कासिम ने एक सेना सहित नौका मे बैठ कर नदी पार की। जो शत्रु नदी तट पर थे, उनको पराजित कर देने से उसका साहस बढ गया और बिना देखे भाले वह शत्रुओ की सेना तक पहुच गया। वे लोग उस पर अचानक टूट पडे और उसे पराजित कर दिया। भागने वाले नौका तक पहुच गये और लौटने का सकल्प करने लगे। उस समय एक हाथी ने नौका मे पहुच कर नौका को डुबा दिया। मलिक कासिम इस युद्ध मे मारा गया।

जब पुल तैयार हो गया तो हज़रत पादशाह सवार हुए। सेना वालो को नदी पार करने का आदेश दिया। पूरे दिन सेना युद्ध करती हुई नदी पार करती रही। सायकाल तक युद्ध होता रहा। दूसरे दिन करावल लोग समाचार लाये कि शत्रु रात्रि को बहुत बडी देन समझकर भाग गये है। चीन तीमूर सुल्तान पीछा करने के लिए नियुक्त हुआ। हज़रत पादशाह ने नदी पार की और शत्रुओ के पीछे रवाना हुए। दो दिन उपरान्त चीन तीमूर की ओर से समाचार प्राप्त हुए कि शत्रु सरयू के उस ओर डटे हुए है। एक हज़ार विश्वस्त सशस्त्र अश्वारोही चीन तीमूर की कुमक पर भेजे गए। शत्रु कुमक पहुचने पर ठहर न सके और भाग खडे हुए। चीन तीमूर सुल्तान ने नदी पार करके उनका पीछा किया और अफगानो के परिवार के पास पहुच कर उनमे से बहुतो को बन्दी बना लिया। सम्मानित शिविर का सरयू के समीप पडाव हुआ। क्योकि उस जगल मे शिकार बडा अधिक था अत कुछ दिन तक वे शिकार से जी बहलाते रहे और फिर राजधानी को लौट आये। . .

१ नदी का नाम स्पष्ट नहीं।

९३५ हि०

(१५ सितम्बर १५२८ ई०—५ सितम्बर १५२९ ई०)

(५५२ अ) हजरत फिरदौस मकानी रविवार ५ मुहर्रम (२० सितम्बर १५२८ ई०) को ग्वालियर की सैर के उद्देश्य से रवाना हुए। मुहम्मद जमान मीर्जा आगरा मे ठहरा रहा। हजरत पादशाह निश्चिन्त होकर ग्वालियर तथा आस पास की सैर कर के आगरा लौट आये। कुछ दिन तक उनको ज्वर आता रहा, किन्तु निष्ठावान् चिकित्सको के प्रयत्न के फलस्वरूप वे शीघ्र स्वस्थ हो गये। स्वस्थ होने के उपरान्त उद्यान मे एक भव्य समारोह आयोजित हुआ। आसपास के किजीलबाश, ऊजबेग एव हिन्दुओ के राजदूत इस समारोह मे उपस्थित थे। उन्हें सोना चादी प्रदान किया गया। सब लोगो को अर्थात् अमीरो, दरबार के उपस्थित गणो तथा परिवार वालो को उनकी श्रेणी के अनुसार इनाम प्रदान किया गया। खानो, सुल्ताना तथा अमीरो ने अत्यधिक उपहार प्रस्तुत किये।

९३६ हि०

(५ सितम्बर १५२९ ई०—२५ अगस्त १५३० ई०)

हजरत फिरदौस मकानी ने इस वर्ष यह सकल्प किया कि अस्करी मीर्जा को बगाले की विजय हेतु भेजें। बगाले के हाकिम ने विनय एव नम्रता प्रदर्शित करते हुए राजदूत एव उपहार भेजकर आज्ञाकारिता स्वीकार की। हजरत पादशाह ने उसके ऊपर कृपा कर के आदेश दिया कि अमीर लोग मुल्तान के ऊपर आक्रमण के लिए तैयार हो जायें कारण कि उस क्षेत्र के बिलोचियो ने अपनी सीमा के बाहर पाव निकाले है। इस विषय[1] के पत्र सीमान्तो पर भेजे गये किन्तु दूसरे दिन समाचार प्राप्त हुए कि महमूद वल्द सिकन्दर खा अफगान ने बिहार की विलायत को अपने अधिकार म कर लिया है। हजरत फिरदौस मकानी ने यह समाचार पाकर बगाल एव बिहार की ओर प्रस्थान करने का सकल्प किया और १० जमादि-उल-अव्वल को बिहार की ओर रवाना हुए। हुमायूं मीर्जा के नाम बदख्शा इस आशय का पत्र भेजा कि वह बल्ख बुखारा तथा समरकन्द पर आक्रमण करने की तैयारी करता रहे और बदख्शा तथा काबुल एव उस क्षेत्र के सैनिको को तैयार करता रहे।

(५५२ ब) वे स्वय बगाले की ओर रवाना हुए और निरन्तर यात्रा करते हुए कडा तक पहुचे। सुल्तान जलालुद्दीन ने जो कडा मे था आतिथ्य-सत्कार का प्रबध किया और अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त किया। सम्मानित शिविर चौसा के घाट तक गये। आसपास के अमीर विजयी रिकाब के अधीन एकत्र हुये। मुहम्मद जमान मीर्जा बिहार की विजय हेतु नियुक्त हुआ। वह अत्यधिक लोगो को साथ लेकर उस ओर रवाना हुआ। सुल्तान महमूद वल्द सुल्तान सिकन्दर को जब मुहम्मद जमान मीर्जा के प्रस्थान के समाचार मिले तो वह मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। बिहार की विलायत मुहम्मद जमान मीर्जा को प्रदान हो गई। २-३ दिन उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि अत्यधिक विरोधियो ने गडक नदी पार कर के उसे दृढ बना लिया है और युद्ध के उद्देश्य से वे ठहरे हुए है। बगाले की सेना भी उनसे मिल गई है। विवश होकर मुहम्मद जमान मीर्जा बिहार मे कुछ दिन तक ठहरा रहा। सुल्तान जुनैद

[1] इन घटनाओं का उल्लेख बाबर ने ६३५ हि० के सम्बन्ध में किया है।

बरलास जौनपुर का हाकिम सेवा मे उपस्थित हुआ। आने मे विलम्ब करने के कारण उसके प्रति क्रोध प्रदर्शित किया गया। कुछ दिन उपरान्त उसके अपराध क्षमा कर दिये गये। परामर्श के उपरान्त अस्करी मीर्ज़ा को अत्यधिक सेना सहित हल्दी नामक घाट पर इस आशय से भेजा गया कि वह नदी पार करे। थोडी सी सेना नदी पार करके शत्रु के समक्ष पहुची। सम्मानित शिविर भी गगा नदी पार करने की तैयारी करने लगा। ईमान तीमूर सुल्तान ने उस दिन बडी वीरता का प्रदर्शन किया। उसके ३०-४० आदमी अपने घोडो को नौका के किनारे लिए हुये, शत्रुओ की ओर रवाना हुये। उसके पीछे पीछे अन्य नौकाए भी रवाना हुई। बगाले की सेना ने जब ईमान तीमूर के आदमियो की सख्या कम देखी तो वह उसकी ओर अग्रसर हुई। (ईसान तीमूर) सुल्तान तथा उसके आदमी सवार हुए और उन्होने उन लोगो पर आक्रमण किया और अपनी वीरता द्वारा उन्हे पराजित कर दिया। तूख्ता बूगा सुल्तान भी नदी पार करके युद्ध के लिए डट गया। उस ओर से मीर्ज़ा अस्करी की सेना भी दृष्टिगत हुई। बगाले के लोग मुकाबले की शक्ति न ला सके और भाग खडे हुए। मक्का ख्वाजा नदी पार करते हुए नदी मे डूब गया। उसके सेवक एव उसकी विलायत उसके भाई कासिम ख्वाजा को प्रदान कर दी गई। मीर्ज़ा अस्करी विजय प्राप्त करके (हज़रत पादशाह) की सेवा मे उपस्थित हुआ। मुगूल सुल्तान, जिन्होने अत्यधिक पौरुष प्रदर्शित किया था, सम्मानित किये गये।

उन्ही दिनो मे बिबन तथा बायजीद के विषय मे निरन्तर समाचार प्राप्त होते रहते थे कि वे सरयू नदी पार करना चाहते हैं। चीन तीमूर सुल्तान का प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ कि बिलोचियो को पूर्ण रूप से कुचल दिया गया। चीन तीमूर सुल्तान, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई एव उस ओर के अन्य अमीरो को आदेश हुआ कि वे आगरा मे एकत्र हो और तैयार रहे। यदि शत्रु उस ओर पहुचें तो वे सुगमतापूर्वक उनको हटा सके। यहया नोहानी, दरिया खा का पौत्र जलाल खा, उस समय सेवा मे उपस्थित हुए। (५५३ अ) उन्हें बिहार मे जागीर प्रदान हुई। जानीपुर मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान को प्रदान हुआ। बगाले के हाकिम नुसरत खा ने सधि की प्रार्थना की। क्योकि बरसात निकट आ चुकी थी अत हज़रत पादशाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। ईसान तीमूर सुल्तान को उसकी वीरता के कारण नारनोल प्राप्त हुआ। तूख्ता बूगा सुल्तान को शम्साबाद प्रदान किया गया। भाग्यशाली पताकाए बिबन तथा बायज़ीद से युद्ध करने के लिये रवाना हुई। सरयू नदी पार की गई। शत्रु लखनऊ की ओर भाग खडे हुए। एक बहुत बडी सेना उनका पीछा करने के लिये नियुक्त हुई। सुल्तान जुनैद बरलास भी उनका पीछा करने के लिए नियुक्त हुआ। सारन, शाह मुहम्मद मारुफ को प्रदान किया गया, कारण कि उसने उत्तम सेवाए सम्पन्न की थी। इस्माईल जिलवानी को ७० लाख सरकार की विलायत से अक्ला के रूप मे प्रदान किये गये। सुल्तान जुनैद तथा उस समूह ने लखनऊ को शत्रुओ से छीन लिया। शत्रु दलमऊ की ओर चल दिये। चुनार की विलायत सुल्तान जुनैद बरलास को जानीपुर के स्थान पर प्रदान कर दी गई। ईसान तीमूर सुल्तान, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, तूख्ता बूगा सुल्तान, कासिम हुसेन सुल्तान, मुज़फ्फर हुसेन सुल्तान, कासिम ख्वाजा, जाफर ख्वाजा एव हिन्दुस्तान के अमीरो का एक अन्य समूह बिबन तथा बायज़ीद के दमन हेतु शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ अग्रसर हुआ। वर्षा ऋतु अधिक होने लगी थी। बिबन तथा बायजीद महोबा की ओर भाग गये। अमीर लोग शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए उनके करावलो के पास पहुच गये। बहुत से लोगो की हत्या कर दी गई।

हज़रत फिरदौस मकानी शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए आगरा पहुचे। कालपी से उस सेना को, जो कि शीघ्रातिशीघ्र बढती हुई पहुँची थी, आदेश हुआ कि क्योकि ५-६ मास से वे युद्ध कर रहे है अत घोडो मे शक्ति नही रही होगी, इस कारण वे लोग जहा पहुच चुके है वही ठहर जायें। हज़रत पादशाह स्वय

शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए आगरा पहुचे। अगूर तथा खरबूजे जिन्हे हिन्दुस्तान मे उन्होंने उस समय तक न देखा था, मालियो ने उनके समक्ष प्रस्तुत किये। इससे वे बडे प्रसन्न हुए। महिलाओ का काफिला भी काबुल से आ गया।

गुजरात का हाकिम सुल्तान बहादुर रमज़ान मास मे खम्बायत पहुचा और अपने पूर्वजो की कब्र के दर्शन कर के महमदाबाद लौट आया। राणा सागा का भतीजा पृथ्वीराज सुल्तान बहादुर की सेवा मे उपस्थित हुआ और सम्मानित किया गया।

९३७ हि०

(२५ अगस्त १५३० ई० – १४ अगस्त १५३१ ई०)

(५५३ ब) हज़रत फिरदौस मकानी ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह गाज़ी इस वर्ष हिन्दुस्तान के अधिकाश भागो पर अपना राज्य स्थापित किये रहे। हज़रत जन्नत आशियानी हुमायू मीर्ज़ा को इस वर्ष बदख्शा से हिन्दुस्तान बुलवाया। हिन्दाल मीर्ज़ा को बदख्शा के शासन हेतु भेजा।[1]

(५५४ ब) पिछले वर्ष रजब मास (मार्च १५३० ई०) मे हज़रत फिरदौस मकानी अत्यधिक रुग्ण हो गये। उनका रोग नित्यप्रति बढने लगा।[2] जितना अधिक उपचार होता वह शुभकामनाओ के विरुद्ध सिद्ध होता। यहा तक कि वे समझ गये कि मृत्यु का समय आ गया है। विवश होकर हज़रत जन्नत आशियानी हुमायू मीर्ज़ा को, जिन्हे कालपी की विजय हेतु भेजा था बुलवाया। उचित लाभदायक परामर्श दिए और अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। सोमवार ५ जमादि उल-अव्वल (२५ दिसम्बर १५३० ई०) को उनकी मृत्यु हो गई।

वे १२ वर्ष की अवस्था मे सिंहासनारूढ हुए और ३१ वर्ष बादशाही[3] की। इन पृष्ठो के अध्ययन करने वालो से यह बात छिपी नही है कि जितनी वीरता का प्रदर्शन उन्होने किया उतना किसी अन्य सुल्तान के विषय मे प्रसिद्ध नही। क्योकि उनकी वीरता का इन पृष्ठो मे उल्लेख हो चुका है अत उसकी पुनरावृत्ति की आवश्यकता नही किन्तु उनका दान पुण्य इस सीमा तक बढा हुआ था कि हिन्दुस्तान के बादशाहो का कई वर्षो का सचित किया हुआ खज़ाना जो उन्हें प्राप्त हुआ उसे उन्होने एक वर्ष से कम मे इनाम मे दे दिया। यहा तक कि जब उन्होने बगाल तथा बिहार पर आक्रमण करने का सकल्प किया तो खज़ाने मे इतना धन न था कि वह तोपचियो के वेतन तथा बदूक का बारूद के लिये पर्याप्त होता। मावराउन् नहर तथा एराक एव खुरासान के अधिकाश आदमियो को हिन्दुस्तान का खज़ाना बाट दिया गया। काबुल वालो का उनकी जनगणना के अनुसार ईनाम दिया गया। वहा का कोई भी जीव इससे वचित न रहा। मक्का मदीन, नजफ तथा करबला को भी इतना अधिक चढावा भेजा गया कि वहा के समस्त रहने वाले लाभान्वित हुए। उन्होंने हिरात के समस्त कलाकारो को धनी बना दिया। फरगाना, ताशकन्द, यारकन्द, अन्दिजान यहा तक कि खिता तक के लोग इस आम इनाम से लाभान्वित हुए। मुग़ल सुल्तानो को इतने अधिक उपहार भेजे गये कि उसका हिसाब सम्भव नही। इस मास की ९ तारीख को समस्त अमीरो एव सुल्तानो ने हज़रत जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायू पादशाह के राज्य के प्रति सहमति प्रकट

१ ब्रिटिश म्युज़ियम की पोथी में यह घटना ६३८ हि० के वृत्तात में लिखी गई है।
२ मूल में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।
३ मूल में स्पष्ट नहीं।

की। जब वे बादशाह हो गये तो उन्होने आदेश दिया कि जिस किसी को हज़रत फिरदौस मकानी के राज्यकाल मे जो पद एव सेवाए प्राप्त थी, वह उसी के पास रहने दी जायें। मीर्ज़ा हिन्दाल को जो इस वर्ष बदख्शा से आया था, अत्यधिक सम्मानित किया गया। पूर्वजो के खज़ानो मे से दो खज़ाने उसे प्रदान किये गये। समस्त काबुल, गज़नी, कधार तथा पजाब मीर्ज़ा कामरान को प्रदान कर दिये गये। उन्होंने सैनिको तथा प्रजा के प्रति उचित व्यवहार कर के सब को अपनी ओर से सतुष्ट कर लिया। वे इतने उदार थे कि उनके सेवको मे से कई बार लोगो ने उनसे पृथक् होकर उनके राज्य का अपहरण करने का प्रयत्न किया किन्तु जब कभी उन्हे उन लोगो पर अधिकार प्राप्त हो गया उन्होंने उनके प्रति कृपादृष्टि ही प्रदर्शित की।

परिशिष्ट द

तारीखे सिंध

अथवा

तारीखे मासूमी

लेखक--सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी

(प्रकाशन--बम्बई १९३८ ई०)

मीर्ज़ा मुहम्मद मुक़ीम वल्द अमीर जुन्नून द्वारा काबुल की विजय तथा तत्सम्बंधी घटनायें

(९८) ९०७ हि० (१५०१-२ ई०) मे मीर्ज़ा उलुग बेग इब्न (पुत्र) अबू सईद मीर्ज़ा की काबुल मे मृत्यु हो गई और उसका पुत्र मीर्ज़ा अब्दुर्रज़्ज़ाक उस प्रदेश का हाकिम हो गया और अपने पिता के स्थान पर शासन की मसनद पर आरूढ हुआ। शाहज़ादे की अल्पावस्था के कारण अमीरो एव राज्य के उच्च पदाधिकारियो मे विरोध हो गया। शेरीम ज़का ने समस्त छोटे-बडे कार्यों को अपने हाथ मे ले लिया। अमीर यूसुफ, मुहम्मद कासिम बेग, अमीर यूनुस अली एव कुछ अन्य अमीर तथा उच्च पदाधिकारी नगर के बाहर निकल कर अवसर की खोज मे रहने लगे। ईदुज्जुहा (१६ जून १५०२ ई०) को प्रात काल शेरीम ज़का सुल्तान के दीवानखाने मे बैठा दावत की तैयारी करा रहा था कि वे लोग ३०० सशस्त्र सैनिको को लेकर काबुल पर अचानक टूट पडे और प्रतिकार की मियान से तलवारें निकाल कर उसके जीवन की नीवें को तत्काल गिरा दिया। इस कारण काबुल वालो मे परेशानी फैल गई।

यह समाचार गरम सीर मे अमीर जुन्नून के लघु पुत्र मीर्ज़ा मुहम्मद मुकीम को प्राप्त हुये। ९०८ हि० के अन्त (१५०३ ई०) मे उसने हज़ारा एव तकदर (कबीलो) को एकत्र करके काबुल विजय करना निश्चय किया और उस ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा अब्दुर्रज़्ज़ाक भाग खडा हुआ और मुहम्मद मुकीम उस राज्य का हाकिम हो गया तथा उलुग बेग मीर्ज़ा की पुत्री से विवाह कर लिया। जिस समय बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा एव अमीर जुन्नून अरगून आमोया नदी तट पर थे, उन्हें यह समाचार प्राप्त हुये। इससे वे बडे प्रसन्न हुये किन्तु इसके कारण अमीर जुन्नून बडा चिन्तित हुआ। वहा से उसने एक पत्र अपने पुत्र को फटकारते एव प्रोत्साहन देते हुए लिखा कि, "उसने जो इस साहस का प्रदर्शन किया तो यह अच्छा न किया।" अब उसे चाहिये कि वह अपने आपसे असावधान न हो और काबुल के अमीरो को अपने पास न फटकने दे। इस कारण मीर्ज़ा मुहम्मद मुकीम काबुल के अधिकाश प्राचीन आदमियो को विदा करके अपने आदमियो को लेकर काबुल की व्यवस्था एव शासन प्रबध मे लग गया।

बाबर का आक्रमण

(९९) ९१० हि० के प्रारम्भ (१५०४ ई०) मे हज़रत ज़हीरुस्सल्तनत वल ख़िलाफ़ह मुहम्मद बाबर बादशाह समरकन्द से लौटने के उपरान्त अन्दिख़ुद से काबुल की ओर रवाना हुये और शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करके उन्होंने उस नगर के वातावरण को अपने शुभ आगमन से ताज़गी प्रदान की। अमीर मुहम्मद मुक़ीम वल्द मीर ज़ुन्नून अरग़ून मुक़ाबले की शक्ति अपने मे न पाकर नगर मे बन्द हो गये। काबुल के अवरोध के कुछ दिन उपरान्त उलूस एव ईमाक़[1] के लोग ससार विजय करने वाले बादशाह की सेवा की ओर प्रेरित हो गये। जो लोग काबुल मे थे, वे भी उनके हितैषी बन गये। मुहम्मद मुक़ीम के कार्य सतोष के क्षेत्र के बाहर हो गये और उसने बाबर बादशाह के आकाश तुल्य दरबार मे प्रार्थना पत्र भेजकर क्षमा-याचना की ताकि वह उनकी सेवा मे उपस्थित होकर किले की कुजिया सौप दे। हज़रत बाबर बादशाह ने अमीर मुहम्मद मुक़ीम की प्रार्थना स्वीकार कर ली और शपथ ली कि यदि मुहम्मद मुक़ीम नगर के द्वार खोल देगा तो उसके प्रति उचित रूप से कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की जायेगी। मुहम्मद मुक़ीम बादशाही कृपाओ की आशा करके काबुल के बाहर निकला और फ़र्श चूमने का सम्मान प्राप्त करके उचित उपहार प्रस्तुत किये। हज़रत बादशाह ने प्रतिज्ञानुसार उसे शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित करके उसको वतन जाने की अनुमति दे दी।

अमीर ज़ुन्नून की हत्या

शैबानी का ख़ुरासान पर आक्रमण

मुहर्रम ९१३ हि० (जून-जुलाई १५०७ ई०) के नव चन्द्र के उदय के उपरान्त मुहम्मद ख़ा शैबानी ऊज़बेक असख्य सेना एव अपार सहायको को जो चीटियो एव टिड्डियो से अधिक थे, लेकर कज़क को पार करके ख़ुरासान विजय हेतु रवाना हुआ। विजयी ख़ाक़ान की सतान मुहम्मद ख़ा के प्रस्थान से अत्यधिक भयभीत हुई। बदी उज्ज़मान मीर्ज़ा ने एक द्रुतगामी दूत अमीर ज़ुन्नून के पास भेजकर इस विषय मे सूचना कराई। अमीर ज़ुन्नून ने अपनी सतान एव निकटवर्तियो से परामर्श किया। (१००) प्रत्येक ने अपना अपना मत प्रकट किया। अमीर ज़ुन्नून ने कहा कि "हमारे लिये प्रस्थान करना परमावश्यक है। इस समय पौरुष एव सौजन्य की (दृष्टि से) यही आवश्यक है कि विलम्ब न किया जाय। वापस आना असम्भव है कारण कि ऊज़बेक सेना सख्या, शक्ति एव प्रभुत्व मे अत्यधिक बढी-चढी है। विजयी ख़ाक़ान[2] का प्रताप पतनशील है।" सक्षेप मे अमीर ज़ुन्नून अरग़ून सैनिको को लेकर शाहज़ादा बदी उज्ज़मान मीर्ज़ा के लश्कर की ओर रवाना हुआ। उसने दो-तीन पडाव पार किये थे कि समाचार प्राप्त हुये कि उसकी पुत्री चोचक बेगम राजधानी हिरात मे मृत्यु को प्राप्त हो गई। यह समाचार सुनकर यद्यपि उसे अत्यधिक दु ख एव शोक हुआ किन्तु ईश्वर की स्तुति एव प्रशसा द्वारा अपने हृदय को सात्वना देकर शाह बेग के पास एक द्रुतगामी दूत इस आशय से भेजा कि वह हिरात की ओर रवाना हो जाये और अन्त पुर की कुछ स्त्रियो को अपने साथ लेता जाये तथा जल एव भोजन बटवाकर उन्हें शोक के वस्त्र

१ मुग़ल समूह एवं दल।
२ सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा।

से निकाल कर शीघ्र कधार लौट आये। मुहम्मद मुकीम, ज़मीनदावर मे, अमीर सुल्तान अली सीस्तान मे, अमीर जाफ़र अरगून, अब्दुल अली तरखान, जैनक तरखान, आकिल अत्का, फाजिल कूकुल्ताश कधार ही मे रहे और सावधानी एव प्रतिरक्षा की ओर से उपेक्षा न करें और चौकन्ने रहें।

जब अमीर जुन्नून वहा से शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ तो अल्प समय मे शाहज़ादा बदी उज्जमान मीर्जा शिविर मे पहुच कर उसके हाथों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसका वहा बडा आदर-सम्मान किया गया। शाहजादे ने मीर जुन्नून एव समस्त प्रतिष्ठित अमीरो से परामर्श किया। वे समझ गये कि भाग्य के बाण को उपाय की ढाल से नही रोका जा सकता। क्योंकि ईश्वर की इच्छा (१०१) यही थी कि खुरासान का राज्य मुहम्मद खा शैबानी एव ऊजबेक सेना के अधिकार मे आ जाये और विजयी खाकान की सतान के राज्य की अवधि समाप्त हो जाये अत असख्य सेना के एकत्र करने एव बुद्धिमत्ता-पूर्ण परामर्श से कोई लाभ न हुआ। उन्ही दिनों मे ऊज़बेक सेना ने मावराउन्नहर एव आमोया नदी पार की। खुरासान के सुल्तान एव अमीर आश्चर्य के समुद्र मे डूब गये और पुन आपस मे परामर्श किया। अमीर जुन्नून ने अपनी स्वाभाविक वीरता के कारण युद्ध करना उचित समझा। अमीर मुहम्मद बरन्दूक बरलास को हिरात कस्बे की गढबन्दी उचित दृष्टिगत हुई। इससे पूर्व कि इन दो बातो मे से कोई एक निश्चय हो, दूसरे दिन प्रात काल मुहम्मद शैबानी की क्यामतरूपी सेना के आगमन के चिह्न दृष्टिगत हो गये। हज़रत खाकान[1] की सेना अपनी दाईं एव बाईं ओर की पक्तिया सुव्यवस्थित करके रण-क्षेत्र मे पहुची। शाहज़ादो ने भी सेना की व्यवस्था करके रक्तपात हेतु पक्तिया सजाईं। दोनो ओर के वीरो के नारो, नक्कारो, नफीरी एव युद्ध नाद का शोर आकाश को पार कर गया।

अमीर जुन्नून की हत्या

अमीर जुन्नून ने रण क्षेत्र के सिंहो के साथ समर-भूमि मे अजगर रूपी तलवार की मार से पहलवानी के मार्ग के बहुत से पथिको को विनाश के भवर मे डुबा दिया और अनेक बार शत्रुओ की सेना पर आक्रमण किया किन्तु इस कारण कि ऊजबेको की सेना खुरासानियो की सेना की अपेक्षा बडी अधिक थी और समुद्र के समान एक लहर की कुमक को दूसरी लहर पहुच जाती थी, शाहज़ादो की सेना युद्ध मे असमर्थ होकर पराजित हो गई और प्रत्येक समूह परेशान तथा बिना किसी सामान के खुरासान से इधर उधर चल दिया। अमीर जुन्नून दृढतापूर्वक कदम जमाकर कभी (शत्रु की सेना के) दायें बाज़ू पर और कभी बायें बाज़ू पर आक्रमण करता था और तलवार तथा कटार के घाव से रण-क्षेत्र को लाल करके अत्यधिक वीरता एव पौरुष प्रदर्शित करता था। ऊज़बेको ने आस-पास से पहुच कर युद्ध के मैदान के उस शहसवार को बुरी तरह आहत करके घोडे से गिरा दिया। वे उसे बन्दी बनाकर मुहम्मद खा के पास (१०२) ले जाना चाहते थे किन्तु अमीर जुन्नून ने अपमान पसन्द न किया और उसी प्रकार युद्ध करता रहा, यहा तक कि मारा गया।

शाह् बेग एवं मुहम्मद मुकीम अरगून से सम्बंधित कुछ घटनायें

अमीर जुन्नून की मृत्यु के उपरान्त शाह बेग एव मुहम्मद मुकीम दोनो भाई कधार मे एकत्र हुये और अपने पिता की मृत्यु की शोक सम्बन्धी प्रथाओ को सम्पन्न कराया तदुपरान्त उसी सभा मे मुहम्मद

१ सुल्तान हुसेन मीर्जा।

मुकीम एव समस्त अरगून एव तरखान अमीरो, यक्का[1] एव शाह बेग के समस्त सैनिको ने शाह बेग को अपना सरदार स्वीकार कर लिया। शाह बेग ने उस दिन की अस्र की नमाज पढी और नौबत का नक्कारा उसी प्रकार बजता रहा। जिस किसी को जुन्नून के समय मे जो मसब प्राप्त था, उसे उस पर आरूढ रहने दिया गया और कोई रोक-टोक न की गई। इस कारण लोग हृदय से शाह बेग की सेवा हेतु प्रेरित हो गये। शाह बेग को अपनी युवावस्था मे विद्या एव साहित्य से बडा प्रेम था और उसे समस्त विद्याओ का ज्ञान था और वह सर्वदा विद्वानो एव विद्यार्थियो की गोष्ठी से लाभान्वित हुआ करता था।

जब मुहम्मद खा शैवानी खुरासान का राज्य विजय करके फरह के समीप पहुचा और कधार विजय की इच्छा से उस ओर रवाना हुआ तो उसके गरम सीर के क्षेत्र मे पहुचने के उपरान्त शाह बेग एव अमीर मुहम्मद मुकीम ने उसके पास दूत भेज कर आज्ञाकारिता एव अधीनता प्रदर्शित की और खुत्बा तथा सिक्का मुहम्मद खा के नाम एव उपाधि द्वारा सुशोभित कराने की प्रतिज्ञा की और उसकी सेवा मे उपस्थित होने का वचन दिया। मुहम्मद खा उनसे सतुष्ट होकर खुरासान की ओर लौट गया। ३ घोडे उत्तम खिलअत एव खरगाह[2], अब्दुल हादी ख्वाजा, एव तीमूर ताश द्वारा भेजे। शाह बेग ने उनके आगमन की सूचना पाकर यह सोचा कि सम्भवत वे दोनो व्यक्ति दो कार्यों के लिये आये हो, एक प्रतिज्ञा को दृढ कराने के लिये और दूसरे हमारी स्थिति एव सेना का पता चलाने के लिये। उसने तत्काल इधर-उधर (१०३) आदमियो को भेज कर अपने सैनिको को बुलवाया ताकि अत्यधिक दल-बल के साथ उनका स्वागत करे। दूतो को सतुष्ट करके विदा कर दिया।

बाबर का कधार पर आक्रमण

९१३ हि० (१५०७ ई०) मे जहीरुस्सल्तनत वल खिलाफत मुहम्मद बाबर बादशाह ने काबुल एव गजनी से विजयी सेना लेकर सफल पताकायें कधार एव जमीनदावर की विजय हेतु बलन्द की। शाह बेग एव मुहम्मद मुकीम अत्यधिक सेना लेकर युद्ध के उद्देश्य से निकले और घोर युद्ध हुआ। अत्यधिक सघर्ष एव प्रयास के उपरान्त विजय एव सफलता का शीतल पवन बाबर बादशाह की पताका पर प्रवाहित हुआ और शाह बेग एव मुहम्मद मुकीम पराजित हो गये। समस्त कधार एव जमीनदावर प्रदेश पादशाह के अधिकार मे आ गये। उन्होने अमीर जुन्नून के खजानो को जो उसने बडे अधिक समय से एकत्र किये थे अमीरो एव सेना के सरदारो को बाट दिया और कधार के शासन की बागडोर अपने सम्मानित भाई सुल्तान नासिरुद्दीन मीर्जा के हाथ मे देकर काबुल की ओर लौट गये और मुहम्मद मुकीम की पुत्री माह बेगम को भी बन्दी बना कर ले गये।

शाह बेग द्वारा काबुल पर पुन अधिकार

कुछ मास उपरान्त शाह बेग एव मुहम्मद मुकीम एक दृढ सेना लेकर कधार वापस हुये और उस राज्य के लिये सुल्तान नासिरुद्दीन मीर्जा से युद्ध किया। मीर्जा काबुल वापस चला गया। शाह बेग एव मुहम्मद मुकीम अपने राज्य की सुव्यवस्था मे तल्लीन हो गये। इसी बीच मे मुहम्मद मुकीम की मृत्यु हो गई।

१ जवानों, वीरों।
२ बड़ा खेमा।

माह् बेगम का विवाह

हज़रत ज़हीरुस्सल्तनत वल ख़िलाफ़ह् ने माह् बेगम का विवाह शरा के नियमानुसार मुहम्मद कासिम कोका से कर दिया। कुछ समय उपरान्त उसके एक पुत्री हुई जिसका नाम नाहीद बेगम रक्खा गया। कासिम कोका ऊज़बेकों के युद्ध मे मारा गया।

शाह् बेग से सम्बंधित कुछ घटनायें

शाह् बेग द्वारा बाबर तथा शाह् इस्माईल सफवी से संधि

(१०७) जब जमशेद[1] सरीखे ख़ाक़ान शाह् इस्माईल ने शाबान ९१७ हि० के मध्य (नवम्बर १५११ ई० के प्रारम्भ) मे ख़ुरासान के राज्य पर अधिकार जमा लिया और अपने प्रभुत्व एव ऐश्वर्य की पताका बलन्द की और मुहम्मद ख़ा शैबानी एव ऊज़बेको की हत्या एव पराजय के उपरान्त आश्चर्य-जनक शक्ति पैदा करली तो निकट तथा दूर के लोग उसके प्रभुत्व एव ऐश्वर्य के कारण भयभीत रहने लगे। इसी बीच मे दुरमिश ख़ा ने फरह् एव सीस्तान के क्षेत्र मे पहुच कर राज्य की पताका बुलन्द की। शाह् बेग को इससे भय होने लगा और उसने अपने साथियो से परामर्श किया कि 'हम दो प्रभुत्व-शाली बादशाहो के मध्य मे जल एव अग्नि के समान पड गये है। एक ओर से शाह् इस्माईल और दूसरी ओर से बाबर पादशाह।" सब लोगो ने यह निश्चय किया कि दुरमिश ख़ा द्वारा जमशेद सरीखे ख़ाक़ान शाह् इस्माईल के पास पहुचना चाहिये और ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह से भी संधि की बात चीत करानी चाहिये। सक्षेप मे, काज़ी अबुल हसन एव मौलाना यार अली को काबुल रवाना किया, उपहार एव पेशकश भेजे एव अपनी निष्ठा और शुभ कामनाये पहुचवाई और वह स्वय दुरमिश ख़ा द्वारा शाह् की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसे नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित किया गया। शाह् बेग को सिज्दा करने से माफ कर दिया गया, और आदेश हुआ कि चगताई तोरे[2] के अनुसार वह घुटने के बल झुके।

शाह् इस्माईल सफवी का शाह् बेग से रुष्ट होना

(१०८) जब कुछ समय तक शाह् बेग (शाह् इस्माईल की) सेवा मे समय व्यतीत कर चुका तो नवरोज़ के दिन शाह् बेग की इच्छाओ की पूर्ति करके कंधार वापस जाने की अनमति देना निश्चय हुआ। इसी बीच मे शाह् ने दुरमिश ख़ा को इख़्तियार दीन नामक किले की ओर भेजा दिया और कुछ साथियों ने शाह् को शाह् बेग से रुष्ट करा दिया। जब नवरोज़ का समय निकट आ गया तो शाह् (इस्माईल) ने शाह् बेग को किलये ज़फर मे बन्दी बना दिया। जो लोग उसके साथ थे वे निराश होकर कंधार चले गये और थोड़े से इधर उधर छिप गये।

मेहतर सुम्बुल का शाह् बेग को बन्दीगृह से मुक्त कराना

जब शाह् इस्माईल ने एराक की ओर प्रस्थान किया तो शाह् बेग का दास मेहतर सुम्बुल किलये

१ ईरान का एक प्रतापी पौराणिक बादशाह।
२ विधान।

जफर पहुचा और जिस बुर्ज के समक्ष वन्दी था, एक हलवाई की दूकान खोल ली और मिठाई द्वारा वन्दीगृह के रक्षकों से मित्रता करके अपने उद्देश्य की पूर्ति का मार्ग निकाला और सकेत द्वारा वास्तविक स्थिति का पता चलाया करता था। अन्त मे १२ वीरो ने यह निश्चय किया कि जिस उपाय से सम्भव हो शाह वेग को कधार पहुचा दिया जाये। जब उपर्युक्त समूह किला पहुचा तो एक-एक करके मेहतर सुम्बुल की दूकान पर पहुचने लगे। शाह वेग के कष्ट के समय का अन्त हो गया और उसके प्रताप ने उसका पथ प्रदर्शन तथा भाग्य ने सहायता की। एक रात्रि मे मेहतर सुम्बुल ने मिठाई बनवाकर और उसमे वेहोशी की औषधि मिलाकर उसके थाल के थाल पूर्व निश्चित योजनानुसार वन्दीगृह के रक्षको को पहुचवा दिये। वन्दीगृह के रक्षको ने मिठाई खाकर सावधानी की लगाम अपने हाथ से छोड दी। मेहतर सुम्बुल ने दो अन्य व्यक्तियो सहित बुर्ज पर पहुच कर सौभाग्य की राशि के उस सितारे[1] को बुर्ज से निकाल लिया। सयोग से जब वह रस्सी पकड कर उतर रहा था तो रस्सी छोटी पड गई। इस कारण कि उसके पाव मे वेडी थी, वह भूमि पर गिर पडा और उसका एक दात टूट गया। सक्षेप मे हवा के घोडो पर सवार हो कर वे दो रात और दिन तक भागते चले गये। तदुपरान्त वहा उन घोडो को छोडकर तथा अन्य घोडो को लेकर उन्होने शीघ्रातिशीघ्र अपने आप को अपनी निश्चित मजिल पर पहुचा दिया। रक्षक जब (१०९) सावधान हुये तो उनके पीछे दौडे किन्तु उनकी धूल को भी न पहुच सके और पश्चाताप करते हुये लज्जित होकर वापस चले गये।

मुहम्मद बाबर बादशाह का कधार की ओर प्रस्थान

इस बीच मे शाह वेग के वन्दी होने के समाचार सम्मानित बादशाह जहीरुस्सल्तनत वल खिलाफह तक पहुचे। वे सर्वदा कधार विजय का प्रयत्न किया करते थे किन्तु नाना प्रकार के कारणो से, जो मावराउन्नहर एव बदख्शा मे घटते रहते थे, इस उद्देश्य की पूर्ति न कर पाते थे। उस समय उस सम्मानित बादशाह ने निश्चित हो जाने के कारण अधिक सेना लेकर कधार की ओर प्रस्थान की पताका बलन्द की। शाह वेग के पास किले की रक्षा के जो सामान एव खाद्य सामग्री कधार के बाहर एव समीप के स्थाना पर थी उन सबको लेकर वह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया और किले की रक्षा करना निश्चय करके बुर्ज एव चहारदीवारी अनुभवी आदमियो के सिपुर्द कर दी। इसी बीच मे गुप्तचरो को सम्मानित शिविर मे इस आशय से भेजा कि वे (बाबर के) लश्कर से सबधित दैनिक समाचार पहुचाते रहें। जब वे लोग विजयी शिविर मे पहुचे तो उन्होंने सूचना दी कि बादशाह बहुत बडी सेना लेकर इस ओर आया है। शाह वेग ने उच्च साहस प्रदर्शित करते हुए निश्चय किया कि रणक्षेत्र मे युद्ध हेतु पाव जमाये जायें। इस विषय मे उसने अपने साथियों से परामर्श किया। सबने निश्चय किया कि "एक साथ युद्ध करना चाहिये और यदि विजय हो जाये तो बडा अच्छा है अन्यथा हम किले मे बन्द होकर युद्ध एव रक्तपात के द्वार खोले रख सकेंगे।"

बाबर का रुग्ण होना और शाह वेग से संधि

जब जहीरुस्सल्तनत वल खिलाफह कधार के समीप पहुचे तो वे रुग्ण हो गये और इतना अधिक कमजोर हो गये कि लश्कर वाले निराश हो गये। शाह वेग को जब इस विषय मे सूचना हुई तो उसने

1 शाह वेग।

(११०) उत्तम उपहार कधार के प्रतिष्ठित लोगो के हाथ सफल खाकान[1] के पास भेजकर सधि की नीव रक्खी। बुद्धिमान् बादशाह ने ख्वाजा जलालुद्दीन को घोडे एव खिलअत देकर शाह बेग के पास भेजा और स्वय लौट गये।

बाबर के आक्रमण के सम्बध में शाह बेग के विचार

जब सम्मानित शिविर कधार के क्षेत्र से काबुल की ओर रवाना हुये तो शाह बेग सीवी पहुचा और कुछ समय तक उस क्षेत्र मे रहा। उसने अपने अमीरो एव लश्कर वालो से कहा कि, "हज़रत ज़हीरुस्सल्तनत वल खिलाफ्ह ने इस बार पधार कर कधार का मार्ग देख लिया है। दूसरे वर्ष वे विजय हेतु प्रस्थान की पताका बलन्द करेंगे और जब तक हमे इस स्थान से हटा न देंगे चैन न लेंगे। इसके दो कारण हैं एक यह कि क्योकि मुहम्मद मुकीम ने ऐसी धृष्टता की जो उनके पवित्र हृदय मे काटे के समान खटकती रहती है। वे समझते है कि यदि वे किसी राज्य की विजय हेतु रवाना हो तो वही अरगून लोग पुन उस प्रकार की कोई धृष्टता न कर दें[2] कारण कि मुहम्मद मुकीम की उस धृष्टता के कारण हज़रत ज़हीरुस्सल्तनत उसके बदले मे उस नि सहाय[3] को कधार से ले गये। इस कारण अरगनो को अत्यधिक कष्ट पहुचा है। दूसरा कारण यह है कि बहुत से बादशाहजादे एकत्र हो गये है। उनके हाथ ऊज़बेको एव क़िज़ीलबाशा तक नही पहुच पाते। वे कधार पर अधिकार जमाना चाहते है। हमे अपनी चिन्ता करनी चाहिए।'

शाह बेग के सैनिको का काहान एव बागबानान पर आक्रमण

शीत ऋतु के प्रारम्भ मे १००० अश्वारोही तैयार करके सीवी से सिन्ध भेजे। उन लोगो ने १७ ज़ीकाद ९२१ हि० (२३ दिसम्बर १५१५ ई०) को काहानो एव बागबाना के ग्राम मे पहुच कर छापे मारे। मख्दूम जाफर ने जो सिन्ध के आलिमो म से था, इस घटना का जो उन्होने मीर्ज़ा ईसा तरखान से सुना था, उल्लेख इस प्रकार किया है कि इस आक्रमण के समय बागो के रहट से १००० ऊट जो रात्रि मे कार्य करते थे वे लोग ले गये। इससे अन्य वस्तुओ एव उस प्रदेश की समृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। लश्कर उस क्षेत्र मे एक सप्ताह तक रह कर लौट आया।

बाबर द्वारा पुन आक्रमण

(१११) जैसा कि शाह बेग ने कहा था, दूसरे वर्ष हज़रत बादशाह कधार विजय का सकल्प करके रवाना हुये। हज़ारा एव तकदर लोगो पर आक्रमण करके लौट गये। उस वर्ष कधार मे अकाल एव *महामारी का प्रकोप हो गया। ९२१ हि० (१५१५-१६ ई०) मे हज़रत बादशाह कधार के समीप पहुचे* और किले को घेर कर सुरग लगाने का प्रयत्न करने लगे। घेरा अधिक होता गया। नगर मे अकाल पड गया। अन्त म सधि करके वे तीर मास की प्रथम को जब सम्मानित शिविर मे सेना वालो को ज्वर आने लगा था लौट गये।

१ बाबर।
२ काबुल विजय।
३ माह बेगम, मुहम्मद मुकीम की पुत्री।

मीर्ज़ा शाह हसन का बाबर की सेवा में पहुंचना

उसी वर्ष मीर्ज़ा शाह हसन अपने पिता से रुष्ट होकर बाबर बादशाह की सेवा मे पहुचा और बादशाह की दया एव कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित हुआ। दो वर्ष तक वह दरबार मे रहा। हज़रत बादशाह कहा करते थे कि "शाह हसन बेग हमारी सेवा म न आया था अपितु सल्तनत के तारे' एव बादशाही के कानून हमसे सीखने आया था।" इसी बीच मे मह्तर मुम्बुल थोडी सी खाद्य सामग्री लेकर कधार के किले मे प्रविष्ट हो गया। अन्त मे मीर्ज़ा शाह हसन बिदा होकर कधार की ओर रवाना हुआ।

बाबर का कधार पर पुन आक्रमण एव सधि

९२२ हि० (१५१६-१७ ई०) मे बाबर बादशाह की विजयी पताकाओ ने कधार को ओर प्रस्थान किया। अभी महमूल मैदान मे ही था' कि कधार का अवरोध कर लिया गया। शाह बेग ने बादशाह के बार बार आगमन से परेशान होकर हज़रत शेख अबू सईद पूरानी को सधि हेतु भेजा। उस ओर से भी ख्वाजा खुदावन्द महमूद एव ख्वाजा अब्दुल अजीम ने कधार पहुँच कर प्रतिज्ञा पत्र लिखे कि दूसरे वर्ष कधार सम्मानित खाकान के दासो' को सौंप दिया जायेगा।

कधार पर बाबर का अधिकार

इस प्रतिज्ञानुसार बाबर बादशाह की शुभ सेना लौट गई। शाह बेग ने शाल के किले को दृढ (११२) करके शाल एव सीवी के क्षेत्र मे प्रवेश करना प्रारम्भ कर दिया। और प्रतिज्ञानुसार ९२३ हि० (१५१७-१८ ई०) मे मीर अबुल मकारिम के पिता मीर गयासुद्दीन के हाथ कधार की कुजिया ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार मे भेज दी।

शाह बेग का गुजरात पर आक्रमण

(१२५) ९२८ हि० (१५२१-२२ ई०) की शीत ऋतु के प्रारम्भ मे पायन्दा मुहम्मद तरखान को भक्कर पर राज्य करने के लिये नियुक्त करके वह स्वय एक भारी सेना लेकर गुजरात विजय हेतु रवाना हुआ और नदी के दोनो तट के आस पास के अपवित्र लोगो से उन्हे मुक्त कर दिया। जब वह चन्दूका पहुचा तो मीर फाज़िल को ज्वर आने लगा। वह वापसी की अनुमति लेकर भक्कर पहुचा। शाह बेग ने मीर फाज़िल के सम्मानित पुत्र बाबा अहमद को भी इस आशय से भेज दिया कि वह अपने पिता की सेवा करे किन्तु शाह बेग मीर फाज़िल की बीमारी को देखकर बडा दुखी हुआ यहा तक कि समाचार प्राप्त हुये कि मीर फाज़िल की मृत्यु हो गई। शाह बेग एव मीर्ज़ा शाह हसन को इस घटना से बडा शोक हुआ और उसी रात्रि मे सुल्तान महमूद खा, मीर अब्दुर्रज्ज़ाक, अब्दुल फत्ताह एव उसके समस्त सबधियो को बिदा कर दिया। वे लोग इस आशा से कि मीर फाज़िल जीवित है, शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुये यहा तक कि प्रात काल भक्कर पहुच गये। उन्होने देखा कि मीर फाज़िल का निधन हो चुका

१ विधान
२ कर वसूल न हुआ था अथवा अनाज खलियान में था।
३ अर्थात् बाबर बादशाह को।

है। उसका अन्त्येष्टि क्रियाकर्म करके उसे दफ्न कर दिया। शाह बेग तीन दिन उपरान्त शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ भक्कर पहुचा एव शोक सम्बन्धी प्रथाओं को पूरा कराया। मीर फाज़िल की सन्तान को शोक के वस्त्र से निकाल कर कहा कि "मीर फाज़िल की मृत्यु मेरी मौत का प्रमाण है। हम भी पीछे पीछे रवाना होगे। दरबारियों ने इस बात के प्रति ईश्वर से क्षमा मागी और कहा। "आप दीर्घायु (१२६) हो।' वहा से दु ख प्रकट करते हुए अन्त पुर की ओर पहुचे और वहा के सेवको से भी यही बात कही। उन लोगो ने कहा, "आप कैसी बातें कर रहे है"। अन्त मे मीर्ज़ा शाह बेग, मीर्ज़ा शाह हुसेन एव समस्त अमीर शोक सम्बन्धी प्रथाओ को पूरा कराके रवाना हुए और नदी के दोना ओर के लोगो को दड देते हुये सिविस्तान पहुचे। वहा भी १५ दिन ठहरे और उस क्षत्र से निश्चित होकर गुजरात की विजय के उद्देश्य से थट्टा के मार्ग से एक मजिल के बाद दूसरी पार करते हुए रवाना हुये और अगहम नामक स्थान के समीप पहुचे। जाम फीरोज़ को बुलवाने के लिये तवाचियो[1] को भेज कर कुछ दिन तक वहा ठहरे रहे।

शाह बेग की मृत्यु

जब शाह बेग ने भक्कर एव सिविस्तान की ओर से निश्चिन्त होकर गुजरात विजय का सकल्प किया और उस समय जब वह भक्कर से वापस होकर प्रस्थान की पताका बलन्द कर रहा था समाचार प्राप्त हुये कि जहीरुस्सल्तनत वल खिलाफह मुहम्मद बाबर बादशाह भीरा एव खुशाब के समीप पहुच गये है और हिन्दुस्तान पर आक्रमण करना चाहते है, तो उसने उपस्थित गणो से कहा 'बादशाह सिन्ध म हमे रहने न देगा और अन्त मे इस देश को हमसे एव हमारी सतान से ले लेगा। हमारे लिये यह आवश्यक है कि हम किसी अन्य स्थान को चले जायें।" इस चिन्ता मे उसके हृदय म पीडा होने लगी। यद्यपि अत्यधिक उपचार किया गया किन्तु कोई लाभ न हुआ और गुजरात पहुचने के पूर्व उसकी मृत्यु हो गई। (१२७) यह घटना २२ शाबान ९२८ हि० (१७ जुलाई १५२२ ई०) को घटी।

उसी रात्रि मे अमीरो एव उच्च पदाधिकारियो ने मीर्ज़ा शाह हुसेन[2] की आज्ञाकारिता स्वीकार करके शोक सबधी प्रथाओ का पालन कराया तथा चिंगीज़ी प्रथाओ का अनुसरण किया गया। उनकी लाश भक्कर भेज दी गई और तीन वर्ष उपरान्त शाह बेग का तावूत[3] मक्का भेज दिया गया और जन्नतुल मुअल्ला म दफन करके एक भव्य इमारत का निर्माण करा दिया गया।

क़ंधार के आश्चर्यजनक स्थान

(१३१) पेशताक[4] नामक एक भवन फिरदौस मकानी बाबर बादशाह ने एक पर्वत मे जो सरपूज़ा के नाम से प्रसिद्ध है, पत्थर मे से कटवाया है। यह ताक बडा ही भव्य है। उसे ९ वर्ष मे ८०

१ वे अधिकारी जो सम्मानित लोगों को बुलाने के लिये भेजे जाते थे अथवा इसी प्रकार के अन्य कार्य करते थे।

२ उसका नाम शाह हसन तथा हुसेन दोनों लिखा गया है। वह शाह बेग का पुत्र तथा मीर जुन्नून अरगून का पौत्र था। उसका जन्म ८९६ हि० (१४९० ९१ ई०) में हुआ था (मासूम 'तारीखे सिंध पृ० १९४)।

३ कफ़न

४ हाल अथवा बड़ा कक्ष।

पत्थर काटने वालो ने रोजाना कार्य करके पूरा किया है। वास्तव मे वह बडा उत्तम एव हृदयग्राही स्थान है। क्योकि वह अरगदाव नदी द्वारा सम्मानित है[1] और उस प्रदेश के अधिकाश बागात एव खेत वहा पर हैं अत बहार के समय अधिकाश लोग यात्रा करते हुए वहा पहुचते हैं किंतु अत्यधिक ऊचाई के कारण वहा जाना बडा कठिन है। बहुत से लोग भय के कारण वहा नही पहुच पाते। वहा हजरत फ़िरदौस मकानी बाबर बादशाह, मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा अस्करी एव मीर्ज़ा हिन्दाल, जो उसके प्रबधक रहे हैं, के नाम के शिलालेख हैं। क्योकि हजरत जन्नत आशियानी हुमायू बादशाह ने वहा निवास नही किया अत उनके सम्मानित नाम का उस शिलालेख म उल्लेख नही। उनके अधीनस्थ राज्य मे केवल इसी कधार का नाम नही लिखा है। लेखक जब वहा पहुचा और देखा कि जन्नत आशियानी एव हज़रत खलीफये (१३२) इलाही[2] के अधीनस्थ राज्यो के नाम वहा नही लिखे हैं यद्यपि कधार एव काबुल सरीखे सहस्रो स्थान उनके दासो के अधीन है, तो उसने सोचा कि उनके नाम तथा उनके अधीनस्थ नगरो एव राज्यो के नाम वहा लिखा देना चाहिये। तदनुसार सुलेख लिखने वालो एव पत्थर काटने वालो को भक्कर से बुलवा कर वहा एक शिलालेख तैयार कराया जिसमे हज़रत जन्नत आशियानी एव हज़रत शाहशाही और बगाला से लेकर लाहरी बन्दर तथा काबुल एव गजनी से दखिन तक के उनके राज्य के अधिकाश नगरो के नाम उसमे लिखवा दिये। चार वर्ष मे वह कार्य पूरा हुआ। वास्तव मे वह ऐसा सकलन हुआ है कि लोग वहा दर्शनार्थ जाते हैं। .

मीर्ज़ा शाह हुसेन के थट्टा में राज्य का प्रारम्भ एवं जाम फीरोज़ का पलायन

(१४१) जब मीर्ज़ा शाह हसन नसरपुर मे राज्य की मसनद पर अपने पिता के स्थान पर आरूढ हुआ तो सैयिद, काजी, प्रतिष्ठित लोग एव उच्च पदाधिकारी एकत्र हो गये थे। उसने सबको (१४२) इनाम इकराम देकर सम्मानित किया। क्योकि यह घटना पहली शव्वाल (१४ अगस्त १५२२ ई०) को घटी जो ईद का दिन है अत समस्त अमीरो एव उच्च पदाधिकारियो ने निवेदन किया कि यह उचित ज्ञात होता है कि आप अपने सम्मानित नाम का खुत्वा पढवाय। यह सुनते ही उसने इसका विरोध किया और ईश्वर से क्षमा-याचना करते हुए कहा कि, 'जब तक साहब किरान की सतान मे से कोई जीवित रहेगा यह कार्य हम नही कर सकते' और हजरत जहीरुस्सल्तनत वल खिलाफह मुहम्मद बाबर बादशाह के नाम का खुत्बा पढवाया।

(१४७) जब ज़हीरुस्सु ल्तनत वल खिलाफ़ह मुहम्मद बाबर बादशाह के हिन्द की ओर प्रस्थान के समाचार प्रसारित हुये, तो मीर्ज़ा शाह हसन ने उचित उपहार प्रार्थना पत्र सहित दूतो के हाथ बादशाह की सेवा मे भेजे। जिस समय मीर्ज़ा शाह हसन बादशाह की सेवा मे था तो उसने मीर खलीफा का, जो बादशाह का वकील एव दीवान बेगी था, जामाता बनने का प्रस्ताव रक्खा था और उसकी यह प्रार्थना बादशाह द्वारा स्वीकार कर ली गई थी अत इस विशेष सम्बन्ध को नये सिरे से दृढ करने के लिये अब्दुल बाकी की दादी मुसम्मात शाह सुल्तान को, जो सैयिद जाफर की सतान मे थी, जहीरुस्सल्तनत फिरदौस मकानी की सेवा मे भेजकर प्रार्थना कराई। हज़रत फिरदौस मकानी ने मीर खलीफा की पुत्री गुलबर्ग

१ अरगंदाब नदी पर स्थित है।
२ अकबर।

बेगम का विवाह् मीर्ज़ा शाह् हसन से करके, उसे मीर खलीफा के छोटे पुत्र हुसामुद्दीन मीरक के साथ भक्कर भेज दिया। मीर्ज़ा शाह् हसन उसे दुलहिन बना कर अपने महल मे ले गया और पातर एव बाग़-बानान के परगने दावत के रूप मे हुसामुद्दीन मीरक को सौंप कर मुल्तान विजय हेतु रवाना हुआ। हज़रत बाबर बादशाह् ने इसी सबध को दृष्टि मे रखते हुये, माह् बेगम की पुत्री नाहीद बेगम का, जिसे माह् बेगम अल्पावस्था मे काबुल छोडकर कधार चली गई थी, मुहिब अली खा वल्द मीर ख़लीफा से विवाह कर दिया ताकि दोनो ओर के सम्बन्ध दृढ हो जायें। . . . .

(१५९) दो मास ठहरने के उपरान्त मीर्ज़ा शाह् हसन भक्कर की ओर लौट गया और दोस्त (१६०) मीर आखुर एव ख्वाजा शम्सुद्दीन माहौनी को २०० अश्वारोहियो, १०० पदातियो एव १०० तोपचियो सहित मुल्तान के शासन हेतु नियुक्त कर दिया और शेष शुजा बुखारी एव सुल्तान महमूद लगाह के कुछ खासा खेलो[1] को कठोर दड देकर उनसे पर्याप्त धन वसूल किया। मीर्ज़ा शाह् हसन लौट कर भक्कर पहुचा। उसी समय थट्टा के अमीरो के इस आशय के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये कि खिंगार थट्टा पर आक्रमण करना चाहता है। मीर्ज़ा शाह् हसन भक्कर से थट्टा पहुचा और दोस्त मीर आखुर, ख्वाजा शम्सुद्दीन एव लगर खा को नियुक्त किया। ये लोग लगभग ११ मास तक मुलतान मे ठहरे रहे। लगर खां पृथक् होकर हज़रत फिरदौस मकानी मुहम्मद बाबर बादशाह् की सेवा मे पहुचा। मीर्ज़ा शाह् हसन ने यह समाचार सुनकर प्रार्थना-पत्र भेजकर मुल्तान को बादशाह् को भेंट कर दिया। दोस्त मीर आखुर एव ख्वाजा शम्सुद्दीन भक्कर लौट गये। हज़रत फिरदौस मकानी ने मुल्तान मीर्ज़ा मुहम्मद कामरान को प्रदान कर दिया।

१ विशेष सहायक।

परिशिष्ट घ

अयोध्या की बाबरी मस्जिद के दो शिला लेख

بفرموده شاه بابر که عدلش
بنایست تا کاح گردوں ملاقی
بنا کرد ایں مهبط قدسیاں
امیر سعادت نشاں میر باقی
بود خیر باقی چوسال بنایش
عیاں شد که گفتم بود خیر باقی

ब फरमूदये शाह बाबर कि अदलश
बिनायेस्त ता काखे गर्दूं मुलाकी।
बिना कद ईं मुहबते कुदसिया,
अमीरे सआदत निशान मीर बाकी।
बुवद खैरे बाकी[1] चो साले बिनायश
अया शुद कि गुफ्तम बुवद खैर बाकी।

अनुवाद

शाह बाबर के आदेशानुसार जिसका न्याय,
एक ऐसी एमारत है जो आकाश की ऊचाई तक पहुचती है।
निर्माण कराया इस फिरिश्तो के उतरने के स्थान को
सौभाग्यशाली अमीर मीर बाकी ने
बवद खैरे बाकी[1] (यह सदाचरण अनन्त तक रहे) जो उसके निर्माण का वर्ष है
यह स्पष्ट हो गया जो मैं कहू कि यह सदाचरण अनन्त तक रहे।

१ बवद खैरे बाकी से ६३५ हि० (१५३० ई०) इस प्रकार निकलते हैं —

बे	(ب)	=	२
वाव	(و)	=	६
दाल	(د)	=	४
खे	(ح)	=	६००
यें	(ی)	=	९०
रे	(ر)	=	२००
बे	(ب)	=	२
अलिफ़	(ا)	=	१
क़ाफ़	(ق)	—	१००
ये	(ی)	=	१०
			६३५

بنام آنکه دانا هست اکبر
که خالق جمله عالم لا مکانی
درود مصطفی بعد از ستایش
که سرور انبیای دو جهانی
فسانه در جهاں بابر قلندر
که شد در دور گیتی کامرانی

बनाम आकि दाना हस्त अकबर,
कि ख़ालिके जुमला आलम ला मकानी।
दरूदे मुस्तफा बाद अज़ सताइश
कि सरवरे अम्बियाये दो जहानी।
फसाना दर जहा बाबर कलन्दर
कि शुद दर दौरे गेती कामरानी।

अनुवाद

उसके नाम से जो कि महान् ज्ञानी है
जो समस्त ससार का सृष्टा और बिना घर का है।
उसकी स्तुति के उपरान्त मुस्तफा[1] पर दरूद[2],
जो दोनो लोको के नबियो[3] के सरदार है।
ससार मे चर्चा है कि बाबर कलन्दर,
काल चक्र मे उसे सफलता प्राप्त हुई।[4]

१ हज़रत मुहम्मद।
२ प्रशसा एव उनके लिये ईश्वर से शुभ कामना।
३ ईश्वर के दूत।
४ लेख अपूर्ण है।

परिशिष्ट ङ

एहसनुस्सियर

प्रोफेसर रश ब्रुक विलियम्स को रामपुर के नवाब अब्दुस् सलाम खा ने हबीबुस्सियर की हस्त-लिखित प्रति की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए यह बताया कि मीर्जा बरखुरदार तुर्कमान कृत एहसनुस सियर की एक प्रति उनके पुस्तकालय मे है। २३ दिसम्बर, १९१५ ई० को प्रोफेसर रश ब्रुक विलियम्स ने रामपुर के नवाब अब्दुस् सलाम खा को एक पत्र लिखा जिसमे नवाब साहब को यह सूचना दी कि जहा तक कि उन्हे ज्ञात है युरोप मे न तो इस लेखक के विषय मे कोई जानकारी है और न इस ग्रथ के विषय मे।[1] तदुपरान्त वे रामपुर पहुचे और उन्होने हस्तलिपि का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और एशियाटिक सोसायटी बगाल की १९१६ की पत्रिका म एक टिप्पणी भेजी[2] जिसमे इस बात का उल्लेख किया कि एहसनुस् सियर नामक मूल ग्रथ चार भागा मे रहा होगा और प्रस्तुत ग्रथ जो कि नवाब अब्दुस् सलाम खा के पुस्तकालय मे है अन्तिम तथा चौथा भाग है। प्रस्तावना मे प्रो० रश ब्रुक विलियम्स के अनुसार लेखक ने इस बात का उल्लेख किया है कि उसने शीआ होने के कारण खवन्द मीर ने हबीबुस् सियर मे इस काल के विषय मे जो निराधार बाते लिखी हैं उनका खडन किया है। इसके साथ साथ प्रो० रश ब्रुक विलियम्स ने यह भी लिखा है कि हबीबुस् सियर की रचना ९२७ हि० मे हुई और एहसनुस् सियर ९३० हि० मे समाप्त हुई। प्रो० रश ब्रुक विलियम्स ने इस ग्रथ का उल्लेख अपने सुप्रसिद्ध ग्रथ "बाबर"[3] मे भी किया है और उसम यह चर्चा की है कि मीर्जा बरखुरदार तुर्कमान का एहसनुस् सियर नामक ग्रथ इस कारण महत्वपूर्ण है कि उसका लेखक शीआ था। उसने इस ग्रथ की रचना हबीबुस् सियर की भूलो के सुधार के उद्देश्य से की। किन्तु जहा तक समस्त महत्वपूर्ण बातो का सम्बन्ध है एहसनुस् सियर, हबीबुस् सियर का समर्थन ही करता है।

यह बडे आश्चर्य की बात है कि प्रो० रश ब्रुक विलियम्स ने हबीबुस् सियर तथा एहसनुस् सियर नामक दोनो ग्रथो का अध्ययन किया किन्तु उन्हे कभी इस प्रकार का कोई सदेह नही हो सका कि हबीबुस् सियर तथा एहसनुस् सियर नामक दोनो ग्रथ एक ही है। सम्भवत प्रो० रश ब्रुक विलियम्स को हबीबुस् सियर की रचना-तिथि से कुछ भ्रम हुआ होगा जो कि ९२७ हि० मे प्रारम्भ की गई थी, किन्तु वह ९३० हि० मे समाप्त हुई।

रामपुर के नवाब अब्दुस् सलाम खा के सुपुत्र ने नवाब साहब के समस्त ग्रथ अलीगढ विश्वविद्यालय को दान स्वरूप प्रदान कर दिये हैं अत एहसनुस् सियर नामक ग्रथ भी अब अलीगढ विश्वविद्यालय मे पहुच गया है। अनुवादक ने अलीगढ विश्वविद्यालय की हस्तलिपियो का कैटलाग बनाते समय प्रोफेसर

१ यह पत्र हस्तलिपि में चिपका हुआ है।

२ A New Persian Authority on Babur By L F Rushbrook Williams (*Journal Asiatic Society Bengal* 1916, pp 297-298)

३ An Empire Builder of the Sixteenth Century 1918, p VIII

नुरुल हसन के साथ हबीबुस् सियर तथा एहसनुस् सियर दोनो ही को ध्यानपूर्वक मिलाया जिससे यह पता चलता है कि हबीबुस् सियर नामक ग्रथ ही को किसी धूर्त पुस्तक विक्रेता ने एहसनुस् सियर लिख कर बेच दिया है। प्रथम पृष्ठ का आधा भाग जिस पर सम्भवत हबीबुस् सियर लिखा रहा होगा काटकर एक आधा पृष्ठ चिपका दिया गया है जिस पर एहसनुस् सियर, लेखक मीर्जा बरखुरदार तुर्कमान लिखा हुआ है। इसके अतिरिक्त बीच बीच में भी जहा जहा पर हबीबुस् सियर लिखा हुआ था वहा हबीबुस् सियर के स्थान पर कागज चिपका कर एहसनुस् सियर लिख दिया है।[1] इसके अतिरिक्त पृष्ठ २ से ६ तक कही भी इस बात का उल्लेख नही है कि लेखक शीआ है और वह हबीबुस् सियर की भूलो का सुधार करना चाहता है। सम्भवत प्रो० रश ब्रुक विलियम्स ने हबीबुस् सियर तथा एहसनुस् सियर दोनो को ध्यानपूर्वक मिलाने का प्रयत्न नही किया अन्यथा वे जिस भ्रम मे पड गये उसम न पडते।

१ मूल पुस्तक (अब्दुस्सलाम न० ४२१।१७) पृ० ४, लाइन १५, पृ० ४१० लाइन ७।

मुख्य सहायक ग्रन्थों की सूची

फारसी

अफीफ, शम्स सिराज — तारीखे फीरोजशाही (कलकत्ता १८९० ई०)

अबुल फजल — अकबर नामा (कलकत्ता १८७३-८७ ई०)

अबुल फजल — आईने अकबरी (नवल किशोर प्रेस १८९२ ई०)

अब्दुल बाकी निहावन्दी — मआसिरे रहीमी (कलकत्ता १९१०-३१ ई०)

अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी — अखबारुल अखियार (देहली १३३२ हि०)
तारीखे हक्की (अलीगढ, हस्तलिपि)

अब्दुल्लाह — तारीखे दाऊदी (अलीगढ १९५४ ई०)

अमीर खुर्द, सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी — सियरुल औलिया (देहली १८८५ ई०)

अमीर खुसरो — वस्तुल हयात (अलीगढ)
खज़ायनुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
क़ेरानुस्सादैन (अलीगढ १९१८ ई०)
दिवल रानी तथा खिज्र खा (अलीगढ १९१७ ई०)
मिफताहुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
नुह सिपेहर (इस्लामिक रिसर्च एसोसियेशन १९५० ई०)
तुग़लुक़ नामा (हैदराबाद १९३३ ई०)

अलाउद्दौला कजवीनी — नफायसुल मआसिर (अलीगढ विश्वविद्यालय हस्त लिपि, एव रामपुर रिजा पुस्तकालय, हस्तलिपि)

अली कुली खा वालेह दागिस्तानी — रियाजुश् शुअरा (अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिपि)

आजाद, मीर गुलाम अली — सर्वे आज़ाद (लाहौर १९१३ ई०)
खज़ानये आमेरा (कानपुर १८७१ ई०)

आरिफ कधारी, मुहम्मद — तारीखे अकबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय, हस्तलिपि)

अहमद यादगार — तारीखे शाही (कलकत्ता १९३९ ई०)

इस्कन्दर मुंशी — तारीखे आलम आराये अब्बासी (तेहरान १३१३-१४ हि०/१८९६-९७ ई०)

एसामी — फुतुहुस्सलातीन (मद्रास १९४८ ई०)

कामगार हुसेनी, ख्वाजा — मआसिरे जहागीरी (अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिपि)

कबीर	अफसानये शाहान (ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)
केवल राम	तज़किरतुल उमरा (हबीबगज, अलीगढ, हस्तलिपि)
खाने खाना, अब्दुर्रहीम	**बाबर नामा, मासूम व तुज़ुके बाबरी व फ़ुतूहाते बाबरी** (बम्बई १३०८/हि० १८९० ई० अलीगढ विश्वविद्यालय की हस्तलिपि)
ख्वंद मीर, गयासुद्दीन इब्ने हुसामुद्दीन मुहम्मद	**हबीबुस्सियर** (तेहरान १२७१ हि० १८५५ई०)
	हुमायू नामा अथवा क़ानूने हुमायूनी (कलकत्ता)
ख्वाफी, शेख जैनुद्दीन,वफाई	**तुज़ुके बाबरी** (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय, हस्तलिपि)
गुलबदन बेगम	**हुमायू नामा** (लन्दन १९०२ ई०)
गुलाम हुसेन सलीम	**रियाजुस्सलातीन** (कलकत्ता १८९० ई०)
जहांगीर	**तुज़ुके जहांगीरी** (गाजीपुर तथा अलीगढ १८६३-६४ ई०)
जौहर, मेहतर, आफताबची	**तज़किरतुल वाकेआत** (अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिपि)
तकी औहदी	**अरफ़ातुल आरेफ़ीन** (खुदाबख्श बाकीपुर पटना, पुस्तकालय, हस्तलिपि)
ताहिर नसाबादी	**तज़किरये ताहिर नसाबादी** (तेहरान १३१६-१७ हि० १९३७-३८ ई०)
तैमूर, सुल्तान (?)	**मलफ़ूज़ाते तैमूरी** (अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिपि)
दौलत शाह समरकन्दी	**तज़किरतुश् शुअरा** (बम्बई १८८७ ई०)
निजामुद्दीन अहमद	**तबक़ाते अकबरी** (कलकत्ता १९२७ ई०)
पायदा हसन गजनवी तथा मुहम्मद कुली मुग़ल हिसारी	**तुज़ुके बाबरी** (ब्रिटिश म्युजियम, रियु, भाग २, ७९९ ब)
फ़िरिश्ता, मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह	**तारीखे फ़िरिश्ता** (नवल किशोर प्रेस)
फीरोज शाह तुग़लुक़	**फ़ुतूहाते फीरोज़शाही** (अलीगढ)
फ़ैजी सरहिन्दी	**जवाहिर शाही** (इंडिया आफिस हस्तलिपि, ईथे २११, आई-ओ ३९४६)
बदायूनी, अब्दुल क़ादिर	**मुन्तख़बुत्तवारीख़** (कलकत्ता)
बरनी, जियाउद्दीन	**तारीखे फीरोज़शाही** (कलकत्ता १८६०-६२ ई०)
	तारीखे फीरोज़शाही (रामपुर, हस्तलिपि)
	फतावाये जहांदारी (इंडिया आफिस लन्दन, हस्तलिपि)
	सहीफ़ये नाते मुहम्मदी (रामपुर, हस्तलिपि)
बायज़ीद ब्यात	**तारीखे हुमायू** (कलकत्ता १९४१ ई०)
माहरू	**इन्शाये माहरू** (अलीगढ)

मुतहर कडा — **दीवान** (प्रोफेसर मसऊद हसन रिजवी अदीव, लखनऊ का हस्तलिपि पुस्तको का सग्रह)

मुश्ताकी, शेख रिज्कुल्लाह — **वाकेआते मुश्ताकी** (ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)

मुहम्मद बिहामद खानी — **तारीखे मुहम्मदी** (हस्तलिपि, ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)

मुहम्मद मासूम — **तारीखे सिन्ध** (पूना १९३७ ई०)

मुहसिन फानी — **दबिस्ताने मजाहिब** (बम्बई)

मोतमद खा — **इकबाल नामये जहागीरी** (लखनऊ १८७० ई०)

यज़दी, शरफुद्दीन अली — **ज़फर नामा भाग ३** (कलकत्ता १८८५ ८८ ई०)

यहया बिन अहमद सिहरिन्दी — **तारीखे मुबारकशाही** (कल्कत्ता १९३१ ई०)

सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ मझ — **मिरआते सिकन्दरी** (बम्बई १३०८ हि०/ १८९०-९१ ई०)

शाह नवाज़ खा — **मआसिरुल उमरा** (कलकत्ता १८८८ ९१ ई०)

शेर खा लोदी — **मिरआतुल ख्याल** (कलकत्ता १८९१ ई०)

सरखुश — **कलेमातुश् शुअरा** (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय एव अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिपि)

साम मीर्ज़ा — **तुहफये सामी** (तेहरान १९३६ ई०)

हमीद क्लन्दर — **खैरुल मजालिस** (अलीगढ)

हसन, अमीर, सिजज़ी — **फवाएदुल फुआद** (देहली १२७२ हि०)

हसन बेग रूमलू — **एहसनुत्तवारीख़** (बडौदा १९३१ ई०)

हाजी अब्दुल हमीद मुर्हरिर — **दस्तरुल अलबाब फी इल्मिल हिसाब** (हस्तलिपि, रामपुर)

हैदर, मीर्ज़ा — **तारीखे रशीदी** (अलीगढ विश्वविद्यालय, हस्तलिपि)

अरबी

इब्ने बतूता — **यात्रा का विवरण** (पेरिस १९४९ ई०)

क्लकशन्दी — **सुबहुल आशा फी सिनअतिल इन्शा** (काहिरा १९१५ ई०)

शिहाबुद्दीन अल उमरी — **मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार**

हाजी-उद्-दबीर — **जफरुल वालेह** (लन्दन १९१० ई०)

तुर्की

बाबर, ज़हीरुद्दीन मुहम्मद — **बाबर नामा** (लेईडन तथा लन्दन १९०५ ई० गिब मेमोरियल सीरीज, १)

उर्दू

सर सैयिद अहमद खा — आसारुस्सनादीद (कानपुर १९०४ ई०)

हिन्दी

रिज़वी, सैयिद अतहर अब्बास — आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ १९५६ ई०)

खलजी कालीन भारत (अलीगढ १९५४ ई०)

तुग़लुक कालीन भारत भाग १ (अलीगढ १९५६ ई०)

तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २ (अलीगढ १९५७ ई०)

उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग १ (अलीगढ १९५८ ई०)

उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ (अलीगढ १९५९ ई०)

ENGLISH

Arberry, A. J. — *Classical Persian Literature* (London 1958)

Beveridge, A. S. — *Humayun Nama* (London 1902).

The Babur Nama in English (London 1921)

Notes on the Manuscripts of the Turki Text of the Babar's Memoirs (*Journal of the Royal Asiatic Society, London* 1900, pp. 439-480)

Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar's Memoirs (*Journal of the Royal Asiatic Society, London* 1902, pp 635-659).

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat-i-Babari (*Journal of the Royal Asiatic Society, London* 1905, pp 741-762).

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat-i-Babari (*Journal of the Royal Asiatic Society, London* 1906, pp. 79-93).

Further Notes on the Babar Nama Manuscripts (*Journal of the Royal Asiatic Society, London* 1907, pp. 131-144).

The Babar Nama—The Material Now Available for a Definitive Text of this Book (*Journal of the Royal Asiatic Society, London* 1908, pp 73-98)

Beveridge, H — *The Akbarnama of Abul Fazl* (Calcutta 1897-1921)

Note on the Tarikh i Salatin Afaghinah (*Journal of the Asiatic Society of Bengal* 1916, pp 297-298)

Blochmann, H — Contributions to the Geography and History of Bengal (Muhammadan Period) *Journal Asiatic Society Bengal*, XIII, Part I, pp 209 310 (1873)

Blochmann, H and Jarret, H S — *The Ain i Akbari* by Abul Fazl Allami (Calcutta 1868 1894)

Browne, E G — *Literary History of Persia*, 4 Volumes

Codrington, O — *Coins of the Bahmani Dynasty* Numismatic Chronicle, 3rd Series, Vol XVIII

Dames, Mansel Longworth, — *The Book of Duarte Barbosa*, Vols I and II Hakl Society, 1918, 1921

Elias, N, and Ross, E D — *The Tarikh e Rashidi* (London 1895)

Elliot, H M — *History of India as told by its historians*, Edited by John Dowson, 8 Vols (London 1867-77)

Erskine, William, — *Memoirs of Zehir ed Din Muhammad Baber*, Emperor of Hindustan, (London 1826)

Erskine, W. — *History of India*, (Baber and Humayun), (London 1854)

Ethe, H — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of India Office*

Faridi — *English Translation of Mirat i-Sikandari*

Forbes, A K — *Ras Mala, or Hindoo Annals of the Province of Goozerat in Western India*, 2 Vols (London 1856)

Gibb, H A R — *Ibn Battuta* (London 1929).

Haig, Sir, Wolseley — *The Cambridge History of India*, Vol III, (Cambridge 1928)

Muntakhab-ut-Tawarikh (Calcutta 1925)

Haig, T. W. — The Chronology and the Genealogy of the Muhammadan Kings of Kashmir. *Journal Royal Asiatic Society, Bengal*, pp. 451-468 and a table, (1918).

Haig, T. W. — Some Notes on the Bahmani Dynasty, Part I, Extra No., pp. 1-15.

Hodivala, S. H. — *Studies in Indo-Muslim History*, Vol. I (Bombay 1939).

Hughes, T. P. — *Dictionary of Islam* (London 1935).
Supplement, Volume II (Bombay 1957).

Ibbetson, Sir D. — *A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North-West Frontier Province* (Lahore 1919).

King, Major J. S — History of the Bahmani Dynasty, (Indian Antiquary, 1899).

King, Sir Lucas — *Memoirs of Zehir-ed-Din Muhammad Babur* translated by J Leyden (Annotated and revised).

Leyden, L, and Erskine, W. — *Life of Babar Emperor of Hindostan* (London 1844).

Mirza, M. W — *The Life and Works of Amir Khusrau* (Calcutta 1935).

Moreland, W. H. — *The Agrarian System of Moslem India* (Cambridge 1929).

Qureshi, I. H. — *The Administration of the Sultanate of Delhi* (Lahore 1944).

Notes on Afghanistan (London 1888).

Raverty, H G — The Mihran of Sind and its tributaries, a Geographical and Historical Study (*Journal Asiatic Society, Bengal*, LXI, Pt. 1, pp. 155-508 9 plates, 1892-93).

Rieu, C. — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London*

Rodgers, C J. — The square silver coins of the Sultans of Kashmir (*Journal Asiatic Society, Bengal*, LIV, Pt i, pp 92-139, 3 pls, 1885).

Rogers, A, and Beveridge, H. — *Memoirs of Jahangir* (London 1904-1914).

Rushbrook Williams, L. F. — *An Empire Builder of the Sixteenth Century* (Longmans Green And Co. 1918).

A new Persian Authority on Babur (*Journal of the Asiatic Society of Bengal*, 1916, pp 297-298)

Saxena, B P — Memoirs of Baizid (*Allahabad University Series*, Vol VI, Pt I, 1930, pp 71-148)

Scott, J — *History of Deccan* (London 1794)

Sewell, R — *A Forgotten Empire* (Vijayanagar), (London 1900)

Sewell, Robert and Diksit, S B — *Indian Calendar* (London 1896)

Spranger, A — *A Catalogue of the Arabic, Persian and Hindustani Manuscripts*, Vol I (Calcutta 1854)

Stein, Sir Aurel — *Kalhana's Rajatarangini*, Vols I, II (Westminster 1900)

Stewart, C — *The History of Bengal* (London 1913)

Stewart, Major C — *The Tezkereal Vakiat* (London 1832)

Storey, C A — *Persian Literature, A Bio bibliographical Survey*

Thomas, E — *The Chronicles of the Pathan Kings of Delhi* (London 1871)

पारिभाषिक शब्दों की अनुक्रमणिका

नामानुक्रमणिका

क्ष